हिंदी शब्दसागर

नवाँ भाग

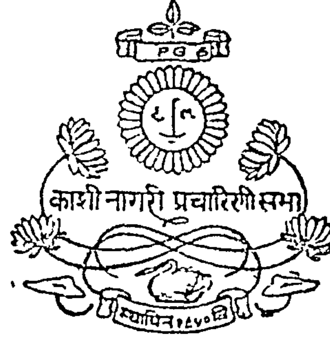
['व' से 'व्युत्पत्ति' तक, शब्दसंख्या–२०,०००]

मूल संपादक

श्यामसुंदरदास

मूल सहायक संपादक

बालकृष्ण भट्ट   रामचंद्र शुक्ल
अमीरसिंह   जगन्मोहन वर्मा
भगवानदीन   रामचंद्र वर्मा



संपादकमंडल

कमलापति त्रिपाठी

धीरेंद्र वर्मा   हरवंशलाल शर्मा
नगेंद्र   शिवनंदनलाल दर
रामधन शर्मा   सुधाकर पांडेय

करुणापति त्रिपाठी (संयोजक संपादक)

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

हिंदी शब्दसागर के संशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामंत्रालय ने वहन किया ।

परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९४ सं० २०२९ वि० १९७२ ई०

नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी
मूल्य २५०)

पूर्ण दस भागों का २५०)

शंभुनाथ वाजपेयी
द्वारा
नागरी मुद्रण, वाराणसी
में मुद्रित

प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ के दिशानिर्देशक के रूप मे प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओ ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० में मूर्त रूप दिया था। तब से निरतर यह ग्रथ इस क्षेत्र मे गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज मे प्रकाशस्तभ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रथ के रूप में इसका मूल्य लोगो को सहस्र मुद्राओ से भी अधिक देना पडा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशो का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरतर इसकी पुन अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साघन के अभाव मे अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मातक पीड़ा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बडे व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप मे डा० सपूर्णानद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एव हिंदीजगत् का ध्यान निम्नाकित शब्दो मे इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ गया है। हिंदी मे एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका बृहत् सस्करण निकालने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारो का सहारा मिलता रहे।'

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण मे सभा ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया सस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला सस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातो में और हिंदी के अलावा ससार मे बहुत बातो में बड़ी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वचित नही रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियो के लिये भी साधारणत पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयो का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया सस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षो मे बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम मे अग्रसर होगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन सपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामत्रालय ने अपने पत्र स० एफ।४—३।५४ एच० दिनाक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपया पाँच वर्षो मे, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमडल का गठन किया गया, इस सबध में देश के विभिन्न क्षेत्रो के अधिकारी विद्वानो की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमडल के अनेक सदस्यो का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानो की राय के अनुसार इस कार्य का सयोजन करना चाहती थी, वह भी नही उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानो तथा परामर्शमडल के सदस्यो ने गभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के सपादन हेतु सिद्धात स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मत्रालय देता रहा और कोश के सशोधन, सवर्धन और पुन सपादन का कार्य लगातार होता रहा, परतु इस अवधि मे सारा कार्य निपटाया नही जा सका। मत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बडे मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५०००) अनुदान प्रदान करने की सस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार सपूर्ण कोश का सशोधन सपादन दिसबर, १९६५ मे पूरा हो गया।

इस ग्रथ के सपादन का सपूर्ण व्यय ही नही, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खडो तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसी लिये यह ग्रथ इतना सस्ता निकालना सभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामत्रालय के अधिकारियो का प्रशसनीय-सहयोग हमे प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी है।

जिस रूप मे यह ग्रथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमे अद्यतन विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की ओर हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रथो के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव मे वैसा कर सकना सभव नही हुआ। फिर भी यह कहने मे हमे सकोच नही कि अद्यतन प्रकाशित कोशो मे शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे अतुलनीय है, और इस क्षेत्र मे काम करनेवाले प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओ के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते है कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का सकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवर्धन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सबधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप मे शब्दो की सख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य (पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एव पुरस्कृत ग्रथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से सकलित किए गए हैं। परिशिष्ट खड मे प्राविधिक एव वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दो की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित सस्करण कुल दस खडो मे पूरा होगा। इसका पहला खड पौष, सवत् २०२२ वि० मे छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतत्र के प्रधान मत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग मे ३ पौष, स० २०२२ वि० (१८ दिसबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पडाल मे काशी, प्रयाग एव अन्यान्य स्थानो के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियो, पत्रकारो तथा गण्यमान्य नागरिको की उपस्थिति मे सपन्न हुआ। समारोह मे उपस्थित महानुभावो मे विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान सपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानदन जी पत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित सवर्धित सस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य मे इसके समस्त सपादको को एक एक फाउ टेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा भेंट की गई। उन्होने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण मे इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियो की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढग की अकेली सस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी सस्था ने नही की। भिन्न भिन्न विषयो पर जो पुस्तकें इस सस्था ने प्रकाशित की है वे अपने ढग के अनूठे ग्रथ हैं और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ मे लिए हैं जिनकी इस समय नितात आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत नवें खड मे 'व' से लेकर 'प्ठ्यूति' तक के शब्दो का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से सवलित इस भाग का शब्दसख्या लगभग २०,००० है। अपने मूल रूप मे यह अश कुल ४२८ पृष्ठो मे था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित सस्करण मे लगभग ४४९ पृष्ठो मे आ पाया है।

सपादकमडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण मे योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड नियमित रूप से नित्य सभा मे पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके सपादन और सयोजन मे प्रगाढ निष्ठा के साथ घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य सपन्न होना सभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। सभव है, हम सबके प्रयत्न मे त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहे क्योकि ऐसे ग्रथ का कार्य अस्थायी नही, सनातन है।

अत मे शब्दसागर के मूल सपादक तथा सभा के सस्थापक स्व० डा० श्यामसुदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह सकल्प हम पुन दुहराते है कि जब तक हिंदी रहेगी तब तक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र मे यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया सस्करण और भी अधिक प्रभोज्ज्वल होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी
निर्जला एकादशी २०२९ वि०

सुधाकर पाडेय
प्रधान मंत्री

संकेतिका

[उद्धरणों में प्रयुक्त संदर्भग्रंथों के इस विवरण में क्रमशः ग्रंथ का संकेताक्षर, ग्रंथनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं ।]

अँधेरे०	अँधेरे की भूख, डा० रांगेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण
अंबिकादत्त (शब्द०)	अंबिकादत्त व्यास
अकबरी०	अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७
अखबार	'आज' दैनिक, वाराणसी
अखिलेश (शब्द०)	अखिलेश कवि
अग्नि०	अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अजात०	अजातशत्रु, जयशंकर प्रसाद, १६वाँ सं०
अणिमा	अणिमा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', युग मंदिर, उन्नाव
अतिमा	अतिमा, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अधखिला (शब्द०)	अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिंह उपाध्याय
अनामिका	अनामिका, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० सं०
अनुराग०	अनुरागसागर, संपा० स्वामी युगलानंद विहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० सं०
अनुराग बाग (शब्द०)	अनुराग बाग
अनेक (शब्द०)	अनेकार्थ नाममाला (शब्दसागर)
अनेकार्थ०	अनेकार्थमंजरी और नाममाला, संपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आफ इलाहाबाद स्टडीज, प्र० सं०
अपरा	अपरा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग
अपलक	अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई०
अभिशप्त	अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई०
अमिट०	अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई०
अमृतसागर (शब्द०)	अमृतसागर
अयोध्या (शब्द०)	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
अरस्तू०	अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २०१४ वि०
अर्चना	अर्चना, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कला-मंदिर, इलाहाबाद
अर्थ०	अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), संपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस, मैसूर, प्र० सं०, १९१९ ई०
अर्ध०	अर्धकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं०
अष्टांग (शब्द०)	अष्टांगयोग संहिता
अष्टांग०	अष्टांगयोग संहिता
आँधी	आँधी, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
आ० अ० रा०	आज की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मंदिर, पटना, १९५१ ई०
आकाश०	आकाशदीप, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
आचार्य०	आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चंद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० सं०
आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०)	आत्रेय अनुक्रमणिका
आदि०	आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० सं०, १९५३ ई०
आधुनिक०	आधुनिक कविता की भाषा
आनंदघन (शब्द०)	कवि आनंदघन
आराधना	आराधना, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, प्र० सं०
आर्द्रा	आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०, १९८४ वि०
आर्य भा०	आर्यकालीन भारत
आर्यो०	आर्यों का आदिदेश, संपूर्णानंद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० सं०
इंद्र०	इंद्रजाल, जयशंकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
इंद्रा०	इंद्रावती, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०

ईशा०	ईशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, सपा०, ब्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथ-माला, बुलानाला, काशी, प्र० स०
इति०	इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, प्र० सं०
इतिहास	हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ स०
इत्यलम्	इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली
इनशा (शब्द०)	इनशा अल्ला खाँ
इरा०	इरावती, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
उत्तर०	उत्तररामचरित नाटक, अनु०प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पचम स०
एकात०	एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९८६ वि०
कंकाल	कंकाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स०
कठ० उप० (शब्द०)	कठवल्ली उपनिषद्
कढी०	कढी मे कोयला, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स०
कबीर ग्र०	कबीर ग्र थावली, सपा० श्यामसु दरदास, ना० प्र० सभा, काशी
कबीर० बानी	कबीर साहब की बानी
कबीर बीजक	कबीर बीजक, कबीर ग्र थ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर बी०	कबीर बीजक, सपा० हसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर म०	कबीर मसूर (२ भाग), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई, सन् १९०३ ई०
कबीर० रे०	कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेख्ते, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद
कबीर० श०	कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८
कबीर(शब्द०)	कबीरदास
कबीर सा०	कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई
कबीर सा० सं०	कबीर साखी सग्रह, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
कमलापति (शब्द०)	कवि कमलापति
करुणा०	करुणालय, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
कर्ण०	सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०
कर्पूर मजरी (शब्द०)	कर्पूरमजरी नाटक, भारतेंदु लिखित
कविंद (शब्द०)	कविंद कवि

कविता कौ०	कविता कौमुदी (१-४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, तृ० स०
कवित्त०	कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशंकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग
कादंबरी (शब्द०)	कादंबरी ग्रंथ अनुवाद
कानन०	काननकुसुम, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पचम स०
कामायनी	कामायनी, जयशकर प्रसाद, नवम स०
काया०	कायाकल्प, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ९वाँ स०
काले०	काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग, २००७ वि०
काव्य०	काव्यशास्त्र
काव्य० निबध	काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
काव्य० प्र०	काव्य प्रभाकर (शब्द०)
काव्य० य० प्र०	काव्य यथार्थ और प्रगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा, प्र० स०, २०१२ वि०
काशीराम (शब्द०)	काशीराम कवि
काश्मीर०	काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
काष्ठजिह्वा (शब्द०)	काष्ठजिह्वा स्वामी
कासीराम (शब्द०)	कासीराम कवि
किन्नर०	किन्नर देश में, राहुल साकृत्यायन, इडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स०
किशोर (शब्द०)	किशोर कवि
कीर्ति०	कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० सं०
कुकुर०	कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमदिर, उन्नाव
कुणाल	कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी
कृषि०	कृषिशास्त्र
केशव (शब्द०)	केशवदास
केशव ग्र०	केशव ग्रंथावली, सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
केशव० अमी०	केशवदास की अमीघूंट
कोई कवि (शब्द०)	अज्ञातनाम कोई कवि
कुलार्णव तत्र(शब्द०)	कुलार्णव तत्र
कौटिल्य अ०	कौटिल्य का अर्थशास्त्र
क्वासि	क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई०
खानखाना (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
खालिक०	खालिकबारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि०
खिलौना	खिलौना (मासिक)

खुदाराम	खुदाराम श्रौर चद हसीनो के खतूत, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर श्राठवाँ स०
खुसरो (शब्द०)	श्रमीर खुसरो
खेती की पहली पुस्तक (शब्द०)	खेती की पहली पुस्तक
गग क०	गंग कवित्त (ग्रथावली), सपा० बटेकृष्ण ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
गदाधर०	श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी
गदाधर सिंह (शब्द०)	गदाधर सिंह
गबन	गबन, प्रेमचद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स०
गर्ग संहिता (शब्द०)	गर्ग संहिता
गालिब०	गालिब की कविता, स० कृष्णदेवप्रसाद गौड, वाराणसी, प्र० स०
गि० दा०, गि० दास गिरिधरदास (शब्द०)	गिरिधरदास (बा० गोपालचद्र)
गिरिधर (शब्द०)	गिरिधर राय (कुडलियावाले)
गीतिका	गीतिका, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
गुजन	गुजन, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
गुमान (शब्द०)	गुमान मिश्र
गुरुदास (शब्द०)	गुरुदास कवि
गुलाब (शब्द०)	कवि गुलाब
गुलाल०	गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
गोकुल (शब्द०)	कवि गोकुल
गोदान	गोदान, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० स०
गोपाल उपासनी (शब्द०)	गोपाल उपासनी
गोपाल० (शब्द०)	गिरिधर दास (गोपालचद्र)
गोपालभट्ट (शब्द०)	गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक
गोरख०	गोरखबानी, स० डा० पीतांबरदत्त बडथ्वाल, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
गोल० (शब्द०)	गोलघिनोद (ग्रथ)
ग्राम०	ग्राम साहित्य, सपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, प्र० स०
ग्राम्या	ग्राम्या, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
घट०	घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
घनानद	घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
घाघ०	घाघ श्रौर भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
घासीराम (शब्द०)	घासीराम कवि
चद०	चद हसीनो के खतूत, 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० स०
चद्र०	चद्रगुप्त, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, नवाँ स०
चक्र०	चक्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, प्र० स०
चरण (शब्द०)	चरणदास
चरणचद्रिका (शब्द०)	चरणचद्रिका
चरण० बानी	चरणदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
चाँदनी०	चाँदनी रात श्रौर अजगर, उपेंद्रनाथ 'अश्क', नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० स०
चाणक्य नीति (शब्द०)	चाणक्य नीति
चाणक्य (शब्द०)	चाणक्य नीति दर्पण
चिता	चित, अज्ञेय सरस्वती प्रेस, प्र० सं०, सन् १९४० ई०
चिंतामणि	चिंतामणि (२ भाग), रामचद्र शुक्ल, इडियन प्रेस, लि०, प्रयाग
चिंतामणि (शब्द०)	कवि चिंतामणि त्रिपाठी
चित्रा०	चित्रावली, स० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
चुभते०	चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०
चोखे०	चोखे चौपदे, ,, ,, ,,
चोटी०	चोटी की पकड़, 'निराला,' किताब महल इलाहाबाद, प्र० स०
छद०	छद प्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०
छत्र०	छत्रप्रकाश, स० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२९ ई०
छिताई०	छिताई वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
छीत०	छीत स्वामी, सपा० व्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, काँकरोली, प्र० स०, सवत् २०१२
जंतुप्रबंध (शब्द०)	जतुप्रबंध ग्रथ

जग० बानी	जगजीवन साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०६, प्र० सं०
जग० श०	जगजीवन साहब की शब्दावली
जगन्नाथ (शब्द०)	जगन्नाथप्रसाद 'भानु'
जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)	जगन्नाथ शर्मा (लेखक)
जनमेजय०	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पंचम सं०
जनानी०	जनानी ड्योढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ
जमाना (शब्द०)	जमाना अखबार (शब्द०)।
जय० प्र०	जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०, १९९५ वि०
जयसिंह (शब्द०)	जयसिंह कवि
जरासंधवध (शब्द०)	जरासंधवध नाम का काव्य
जायसी ग्रं०	जायसी ग्रंथावली, संपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० सं०
जायसी ग्रं० (गुप्त)	जायसी ग्रंथावली, संपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५१ ई०
जायसी (शब्द०)	मलिक मुहम्मद जायसी
जिप्सी	जिप्सी, इलाचंद्र जोशी, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५२ ई०
जुगलेश (शब्द०)	जुगलेश कवि
ज्ञानदान	ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई०
ज्ञानरत्न	ज्ञानरत्न, दरिया साहब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
झरना	झरना, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ सं०
झाँसी०	झाँसी की रानी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० सं०
टैगोर०	टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०
ठंडा०	ठंडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० सं०, १९५२ ई०
ठाकुर०	ठाकुर शतक, संपा० काशीप्रसाद, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, संवत् १९६१
ठेठ०	ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं०
ढोला०	ढोला मारू रा दूहा, संपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
तितली	तितली, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ सं०
तिथितत्व (शब्द०)	तिथितत्व निर्णय
तुलसी	तुलसीदास, 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ सं०
तुलसी ग्रं०	तुलसी ग्रंथावली, संपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय सं०
तुलसी सुधाकर (शब्द०)	तुलसी सुधाकर
तुरसी श०, तुलसी श०	तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९,१९११
तेग अली (शब्द०)	बदमाश दर्पण के रचयिता तेग अली
तेग०, तेगबहादुर (शब्द०)	गुरु तेगबहादुर
तेज०	तेजविंदूपनिषद्
तोष (शब्द०)	कवि तोष
त्याग०	त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं०
द० सागर	दरिया सागर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
दक्खिनी०	दक्खिनी का गद्य और पद्य, संपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० सं०
दयानंद (शब्द०)	स्वामी दयानंद जी
दयानिधि (शब्द०)	दयानिधि कवि
दरिया० बानी	दरिया साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० सं०
दश०	दशरूपक, संपा० डा० भोलाशंकर व्यास, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं०
दशम० (शब्द०)	भाषा दशम स्कंध, भागवत
दहकते०	दहकते अंगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद
दादू०	श्री दादूदयाल की बानी, संपा० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी
दादूदयाल ग्रं०	दादूदयाल ग्रंथावली
दादू० (शब्द०)	दादूदयाल
दिनेश (शब्द०)	कवि दिनेश
दास (शब्द०)	कवि भिखारीदास
दिल्ली	दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० सं०
दिव्या	दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई०
दीन० ग्रं०	दीनदयाल गिरि ग्रंथावली, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
दीनदयाल (शब्द०)	कवि दीनदयाल गिरि

दीप०	दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई०
दी० ज०, दीप ज०	दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग
दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद मिश्र
दुर्गाप्रसाद (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद कवि
दुर्गेशनंदिनी (शब्द०)	दुर्गेशनंदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद)
दूलह (शब्द०)	कवि दूलह
देवकीनंदन (शब्द०)	देवकीनंदन खत्री
देव० ग्र०	देव ग्रंथावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र०स०
देव (शब्द०)	देव कवि
देव (शब्द०)	देव कवि (मैनपुरीवाले)
देवदत्त (शब्द०)	देवदत्त कवि
देवीप्रसाद (शब्द०)	मुंशी देवीप्रसाद
देशी०	देशी नाममाला
दैनिकी	दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९९९ वि०
दो सौ बावन०	दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता (दो भाग), शुद्धाद्वैत एकेडमी, काँकरोली, प्रथम स०
द्वंद्व०	द्वंद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
द्वि० अभि० ग्रं०	द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी
द्विज (शब्द०)	द्विज कवि
द्विजदेव (शब्द०)	अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव'
द्विवेदी (शब्द०)	आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
धरनी० बानी	धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
धरम० शब्दा०, धरम०	धरमदास की शब्दावली
धीर (शब्द०)	'धीर' कवि
धूप०	धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर,' अजंता प्रेस, लि०, पटना ४
ध्रुव०	ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग
नंद० ग्र०, नंददास ग्र०	नंददास ग्रंथावली, सपा० ब्रजरत्नदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स०
नई०	नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५३
नकछेदी (शब्द०)	नकछेदी तिवारी, कवि
नट०	नटनागर विनोद, सपा० कृष्णबिहारी मिश्र, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०

नदी०	नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई०
नया०	नया साहित्य नए प्रश्न, नंददुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर, वाराणसी, २०११ वि०
नरेश (शब्द०)	'नरेश' कवि
नागयज्ञ	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम सं०
नागरी (शब्द०)	नागरीदास कवि
नागरी० उर्दू०	नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गौरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यंत्रालय, मेरठ, प्र० स०
नाथ (शब्द०)	नाथ कवि
नाथसिद्ध०	नाथसिद्धों की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
नानक (शब्द०)	संत नानक गुरु
नाभादास (शब्द०)	नाभादास संत
नारायणदास (शब्द०)	नारायणदास
निबंधमालादर्श (शब्द०)	निबंधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबंधसंग्रह
निश्चलदास (शब्द०)	संत निश्चलदास जी
नील०	नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स०
निहाल (शब्द०)	निहाल कवि
नूतनामृतसागर (शब्द०)	नूतनामृतसागर नाम का ग्रंथ
नूर (शब्द०)	'नूर' उपनाम के कवि
नृपशंभु (शब्द०)	शिवाजी के पुत्र महाराज शंभाजी
नेपाल०	नेपाल का इतिहास, पं० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, १९६१ वि०
पंचवटी	पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
पजनेस०	पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यंत्रालय, काशी, प्र० स०
पदमावत	पदमावत, स० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
पदु०, पदुमा०	पदुमावती, सपा० सूर्यकांत शास्त्री, पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई०
पद्माकर ग्र०	पद्माकर ग्रंथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
पद्माकर (शब्द०)	पद्माकर भट्ट
प० रा०, प० रासो	परमाल रासो, सपा० श्यामसुंदरदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स०
परमानंद०	परमानंदसागर
परमेश (शब्द०)	परमेश कवि

परिमल	परिमल, 'निराला', गगा ग्र थागार, लखनऊ, प्र० स०
पर्दे०	पर्दे की रानी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि०
पलटू०	पलटू साहब की बानी (१-३ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई०
पल्लव	पल्लव, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स०
पाणिनि०	पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स०
पारिजात०	पारिजातहरण
पार्वती	पार्वती, रामानद तिवारी शास्त्री, भारतीनवन, मगलभवन, नयापुरा, कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई०
पा० सा० सि०	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धात, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०
पिंजरे०	पिंजरे की उडान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
पीतल०	पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पाँच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स० सं०, १९७४ वि०
पूर्ण (शब्द०)	पूर्ण कवि
पू० म० भा०	पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २००९ वि०
पृ० रा०	पृथ्वीराज रासो (५ खड), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पड्या, श्यामसुदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
पृ० रा० (उ०)	पृथ्वीराज रासो (४ खड), स० कविराज मोहनसिंह, साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स०
पोद्दार अभि० ग्र०	पोद्दार अभिनदन ग्र०, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमडल, मथुरा, स० २०१० वि०
प्र० सा०	प्रगतिशील (वादी) साहित्य
प्रताप ग्र०	प्रतापनारायण मिश्र ग्र थावली, सपा० विजयशकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
प्रताप (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि
प्रताप सिंह (शब्द०)	प्रताप सिंह
प्रबध०	प्रबधपद्म, 'निराला', गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० स०
प्रभावती	प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भडार, लखनऊ, प्र० स०
प्राण०	प्राणसगली, सपा० सत सपूरणसिंह, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
प्रा० भा० प०	प्राचीन भारतीय परपरा और इतिहास डा० रागेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स०, १९५३ ई०
प्रिय०	प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ स०
प्रिया० (शब्द०)	प्रियादास
प्रेम०	प्रेमपथिक, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
प्रेम० और गोर्की	प्रेमचद और गोर्की, सपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बबई, १९५५ ई०
प्रेमघन०	प्रेमघन सर्वस्व, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, प्र० स०, १९९६ वि०
प्रे० सा० (शब्द०)	प्रेमसागर
प्रेमाजलि	प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई०
फिसाना०	फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ स०
फूलो०	फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स०
बगाल०	बगाल का काल, हरिवश राय 'बच्चन,' भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई०
बदन०	बदनवार, देवेंद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४६ ई०
बद०	बदमाश दर्पण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स०
बलबीर (शब्द०)	बलबीर कवि
बलभद्र (शब्द०)	बलभद्र कवि
बाँकी० ग्र०, बाँकीदास ग्र०	बाँकीदास ग्रथावली (तीन भाग), सपा० रामनारायण दुगड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
बाँगेदरा	बाँगेदरा
बापू	बापू, कवितासग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० स०
बालकृष्ण (शब्द०)	बालकृष्ण
बालमुकुद (शब्द०)	बालमुकुद गुप्त
बिरहा (शब्द०)	प्रचलित बिरहा गीत
बिल्ले०	बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमदिर, उन्नाव, प्र० स०
बिसराम (शब्द०)	बिसराम कवि
बिहारी र०	बिहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गगा ग्र थगार, लखनऊ, प्र० स०
बिहारी (शब्द०)	कवि बिहारी

बी० रासो	बीसलदेव रासो, सपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
बीसल० रास	बीसलदेव रास, सपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० स०
बी० श० महा०	बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपाल सिंह, ओरिएटल बुकडिपो, देहली, प्र० स०
बुद्ध च०	बुद्धचरित, रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
वृहत्०	वृहत्संहिता
वृहत्संहिता (शब्द०)	वृहत्संहिता
वेनी (शब्द०)	कवि बेनी प्रवीन
बेला	बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद, प्र० स०
बेलि०	बेलि क्रिसन रुक्मिणी री, सपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९३१ ई०
वैताल (शब्द०)	वैताल कवि
बोधा (शब्द०)	कवि बोधा
ब्रज०	ब्रजविलास सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, तृ० स०
ब्रज० ग्रं०	ब्रजनिधि ग्रथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
ब्रजमाधुरी०	ब्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, तृ० स०
ब्रह्म (शब्द०)	ब्रह्म कवि (बीरबल)
भक्तमाल (प्रि०)	भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेकटेश्वर प्रेस, बबई, १९५३ वि०
भक्तमाल (श्री०)	भक्तभाल, श्रीभक्तिसुधाबिंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० स०, १९८३ वि०
भक्ति०	भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६० वि०
भक्ति प०	भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, सवत् १९६०
भगवतरसिक (शब्द०)	भगवत रसिक
भजन (शब्द०)	भजन
भट्ट (शब्द०)	बालकृष्ण भट्ट
भस्मावृत०	भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
भा० इ० रू०	भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचद्र विद्यालकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९३३ वि०
भा० प्रा० लि०	भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशकर हीराचद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड, प्र० स०, १९५१ वि०
भारत०	भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, नवम स०
भा० भू०, भारत० नि०	भारत भूमि और उसके निवासी, जयचद्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० स०, १९८७ वि०
भारतीय०	भारतीय राज्य और शासनविधान
भारतेंदु ग्र०	भारतेंदु ग्रथावली (४ भाग), सपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
भा० सैन्य०	भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी, भोपाल, प्र० स०
भा० शिक्षा	भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १९५३ ई०
भाषा शि०	भाषाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी
भिखारी ग्र०	भिखारीदास ग्रथावली (दो भाग), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा काशी
भीखा श०,	भीखा शब्दावली प्र० स०
भुवनेश (शब्द०)	भुवनेश कवि
भूधर (शब्द०)	भूधर कवि
भूपति (शब्द०)	भूपति कवि
भूमि०	भूमि की अनुभूति (कवितासग्रह)
भूषण ग्र०	भूषण ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं०
भूषण (शब्द०)	कवि भूषण त्रिपाठी
भोज० भा० सा०	भोजपुरी भाषा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र०स०
मतपरीक्षा (शब्द०)	मतपरीक्षा (पुस्तक)
मति० ग्र०	मतिराम ग्रथावली, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० स०
मतिराम (शब्द०)	कवि मतिराम त्रिपाठी
मधु०	मधुकलश, हरिवशराय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९३९ ई०
मधुज्वाल	मधुज्वाल, सुमित्रानदन पंत, भारती भडार, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९३९ ई०
मधु मा०	मधुमालती वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
मधुशाला	मधुशाला, हरिवश राय 'बच्चन,' सुषमा निकुज, इलाहाबाद, प्र० स०
मधुसूदन (शब्द०)	मधुसूदनदास कवि
मनविरक्त०	मनविरक्तकरन गुटका सार (चरणदास)
मनु०	मनुस्मृति
मन्नालाल (शब्द०)	कवि मन्नालाल
मलूक० बानी	मलूकदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

मलूक० (शब्द०)	मलूकदास
महा०	महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं०
महावीरप्रसाद (शब्द०)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी
महाभारत (शब्द०)	महाभारत
महाराणा प्रताप (शब्द०)	महाराणा प्रताप, ग्रंथ
माधव०	माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ सं०
माधवानल०	माधवानल कामकंदला, बोधा कवि, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० सं०, १८९१ ई०
मान०	मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
मानव	मानव, कवितासंकलन, भगवतीचरण वर्मा
मानव०	मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०
मानस	रामचरितमानस, संपा० शंभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
मा० सं०, मा० सं० रू०	मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा
मिट्टी०	मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि०
मिलन०	मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'बच्चन,' भारतीय ज्ञानपीठ काशी, प्र० सं०, १९५० ई०
मीरा (शब्द०)	भक्त मीरा बाई
मीर हसन (शब्द०)	मीर हसन
मुंशी अभि० ग्रं०	मुंशी अभिनंदन ग्रंथ, संपा० डा० विश्वनाथप्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
मुकुंदलाल (शब्द०)	मुकुंदलाल कवि
मुबारक (शब्द०)	मुबारक कवि
मुरारिदान (शब्द०)	कवि मुरारिदान
मृग०	मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी
मैला०	मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु,' समता प्रकाशन, पटना—४, प्र० सं०
मोहन०	मोहनविनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० सं०
यमुना (शब्द०)	यमुनाशंकर
यशो०	यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
यामा	यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० सं०
युग०	युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
युगपथ	युगपथ ,, ,, ,,

युगलेश (शब्द०)	कवि युगलेश
युगांत	युगांत, सुमित्रानंदन पंत, इंद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोड़ा, प्र० सं०
योग०	योगवासिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बंबई, सं० १९६७ वि०
रंगभूमि	रंगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०, १९८१ वि०
रघु० रू०	रघुनाथ रूपक गीतांरो, संपा० महताबचंद्र खारैड़, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०)	रघुनाथदास
रघुनाथ (शब्द०)	रघुनाथ
रघुराज, रघुराजसिंह (शब्द०)	रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह, सं० १८८०-१९३६ वि०
रजत०	रजतशिखर, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि०
रज्जब०	रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि०
रतन०	रतनहजारा, संपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, १९८२ ई०
रति०	रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९५३ ई०
रत्न० (शब्द०)	रत्नसार
रत्नपरीक्षा (शब्द०)	रत्नपरीक्षा
रत्नाकर	रत्नाकर [दो भाग], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम सं० १९८०
रत्नावली (शब्द०)	रत्नावली नाटिका
रश्मि०	रश्मिबंध, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रस०	रसमीमांसा, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
रस क०	रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय सं०
रसखान०	रसखान और घनानंद, संपा० अमीरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० सं०
रसखान (शब्द०)	सैयद इब्राहिम रसखान
रस र०, रसरतन	रसरतन, संपा० शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
रसनिधि (शब्द०)	राजा पृथ्वीसिंह
रसिया (शब्द०)	रसिया कवि ? रसिया गीत ?
रहिमन (शब्द०)	रहीम कवि

रहीम (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
रहीम०	रहीम रत्नावली
राज० इति०	राजपूताने का इतिहास, गौरीशकर हीराचद ओझा, अजमेर, १६६७ वि०, प्र० स०
राज०	राजतरंगिणी
रा० रू०	राजरूपक, सपा० प० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
रा० वि०	राजविलास, सपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
राजनीतिक०	राजनीतिक विचारधाराएँ
राज्यश्री	राज्यश्री, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ स०
राम०	रामचरितमानस, सपा० विजयानद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १६७३ वि०
राम, रामकवि (शब्द०)	राम कवि
रामकृष्ण (शब्द०)	रामकृष्ण
राम० च०	सक्षिप्त रामचद्रिका, सपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ स०
राम० धर्म०	रामस्नेह धर्मप्रकाश, सपा० मालचद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
राम० धर्म० सं०	रामस्नेह धर्मसग्रह, सपा० मालचद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
रामरसिका०	रामरसिकावली (भक्तमाल)
रामसहाय (शब्द०)	रामसहाय कवि कृत सतसई
रामानद०	रामानद की हिंदी रचनाएँ, संपा० पीताबरदत्त बडथ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० स०
रामाश्व०	रामाश्वमेध, ग्रथकार, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १६३६ वि०
रिखिनाथ (शब्द०)	कवि रिखिनाथ
रेणुका	रेणुका, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
रै० बानी	रैदास बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
लक्ष्मणसिंह (शब्द०)	राजा लक्ष्मणसिंह
लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०)	लल्लूलाल
लवकुश चरित्र (शब्द०)	लवकुश चरित्र
लहर	लहर, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
लाल (शब्द०)	लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले)
वर्ण०, वर्णरत्नाकर	वर्णरत्नाकर
वाल्मीकीय० (शब्द०)	वाल्मीकीय रामायण

विद्यापति	विद्यापति, सपा० खगेंद्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना
विनय०	विनयपत्रिका, टीका० प० रामेश्वर भट्ट, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० स०
विशाख	विशाख, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
विश्राम (शब्द०)	विश्रामसागर
विश्वनाथसिंह (शब्द०)	रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (स० १८४६-१६११ वि०)
विश्वप्रिया	विश्वप्रिया, अज्ञेय
विश्वास (शब्द०)	विश्वास ?
वीणा	वीणा, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० स०
वेणी (शब्द०)	वेणी (या बेनी) कवि
वेनिस (शब्द०)	वेनिस का बाँका
वैशाली०, वै० न०	वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० स०
वो दुनिया	वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १६४१ ई०
व्यग्यार्थ०	व्यग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, सवत् १६५७
व्यग्यार्थ (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी
व्यास (शब्द०)	अबिकादत्त व्यास
ब्रज (शब्द०)	ब्रज विलास
श० दि० (शब्द०)	शकरदिग्विजय
शकर (शब्द०)	शकर कवि
शकर०	शकरसर्वस्व, सपा० हरिशकर शर्मा, गयाप्रसाद ऍड सस, आगरा, प्र० स०
शंभु (शब्द०)	शभु कवि, शिवाजी के पुत्र सभाजी
शकु०	शकुतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
शकुतला	शकुतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, चतु० स०
शब्दावली (शब्द०)	शब्दावली ग्रथ
शाहजहाँनामा (शब्द०)	शाहजहाँनामा
शार्ङ्गधर स०	शार्ङ्गधर सहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मुबई वैभव मुद्रणालय, सवत् १६७१
शिखर०	शिखर वशोत्पत्ति सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०, १६८५
शिरमौर (शब्द०)	कवि शिरमौर
शिवप्रसाद (शब्द०)	राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद

शिवराम (शब्द०)	शिवराम कवि
शिवशंभु (शब्द०)	शिवशंभु का चिट्ठा
शुक्ल० अभि० ग्रं०	शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समेलन
शृं० सत० (शब्द०)	शृंगार सतसई
शृंगार सुधाकर (शब्द०)	शृंगार सुधाकर
शेखर (शब्द०)	शेखर कवि
शेर०	शेर श्रो सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र स
शैली	शैली, प० करुणापति त्रिपाठी, प्र० स०
श्यामविहारी (शब्द०)	श्यामविहारी मिश्र ('मिश्रबंधु')
श्यामा०	श्यामास्वप्न, संपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रद्धानंद (शब्द०)	स्वामी श्रद्धानंद
श्रद्धाराम (शब्द०)	श्रद्धाराम फुल्लौरी
श्रीकृष्णसंदेश (शब्द०)	श्रीकृष्णसंदेश
श्रीधर (शब्द०)	श्रीधर कवि
श्रीधर पाठक (शब्द०)	श्रीधर पाठक
श्रीनिवास ग्रं०	श्रीनिवास ग्रंथावली, संपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रीपति (शब्द०)	श्रीपति कवि
संतति०	चंद्रकांता संतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी
संचिता	संचिता (कवितासंग्रह)
संत तुरसी०	संत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।
सं० दरिया, संत० दरिया	संत कवि दरिया, सं० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, प्र० स०
सं० दा० (शब्द०)	संगीत दामोदर
सं० शा० (शब्द०)	संगीत शाकुंतल
संत र०	संत रविदास और उनका काव्य स्वामी रामानंद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासंघ, हरिद्वार, प्र० स०
संतवाणी०, संत०सार०	संतवाणी सार संग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
संन्यासी	संन्यासी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
संपूर्णा० अभि० ग्रं०	संपूर्णानंद अभिनंदन ग्रंथ, संपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी
स० दर्शन	समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सत्य०	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, द्वि० स०

सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)	सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानंद
सबल (शब्द०)	सबलसिंह चौहान (महाभारत)
सभा० वि० (शब्द०)	सभाविलास
सरस्वती (शब्द०)	सरस्वती मासिक पत्रिका
सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०)	सर्पाघात चिकित्सा
स० शास्त्र	समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० स०
स० सप्तक	सतसई सप्तक, संपा० श्यामसुंदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
सरलाबाई (शब्द०)	सरलाबाई, कवयित्री।
सहजो०	सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि०
साकेत	साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
सागरिका	सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सात सतक	हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शंभु कवि
साम०	सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० सं०
सा० दर्पण	साहित्यदर्पण, संपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्युंजय औषधालय, लखनऊ, प्र० स०
सा० द०	साहित्य दर्शन
सा० लहरी	साहित्यलहरी, संपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना
सा० समीक्षा	साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इंडियन प्रेस, प्रयाग
साहित्य०	साहित्यालोचन, श्री श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस इलाहाबाद
सिद्धांतसंग्रह (शब्द०)	सिद्धांतसंग्रह
सीतल (शब्द०)	कवि सीतल
सीताराम (शब्द०)	सीताराम कवि
सुंदर० ग्रं०	सुंदरदास ग्रंथावली (दो भाग), संपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
सुंदरीसिंदूर (शब्द०)	सुंदरी सिंदूर, कवितासंग्रह
सुकवि (शब्द०)	सुकवि उपनाम के कवि
सुखदा	सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
सुखदेव (शब्द०)	कवि सुखदेव
सुधाकर (शब्द०)	महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी
सुजान०	सुजानचरित (सूदनकृत), संपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स०

सुधानिधि	कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० स०
सुनीता	सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यमंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० स०
सुंदर (शब्द०)	सुंदर कवि, सुंदरदास जी
सूत०	सूत की माला, पंत और बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० स०
सूदन (शब्द०)	सूदन कवि (भरतपुरवाले)
सूर०	सूरसागर (दो भाग), ना०प्र० सभा, द्वितीय स०
सूर० (शब्द०)	सूरदास
सूर० (राधा०)	सूरसागर, संपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० स०
सेवक (शब्द०)	'सेवक' कवि
सेवक श्याम (शब्द०)	सेवक श्याम कवि
सेवासदन	सेवासदन, प्रेमचंद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, द्वि० सं०
सैर कु०	सैर कुहसार, पं० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, च० स०, १९३४ ई०
सौ अजान० (शब्द०)	सौ अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
स्कंद०	स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वर्ण०	स्वर्णकिरण, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वाधीनता (शब्द०)	स्वाधीनता
स्वामी रा०	स्वामी रामकृष्ण
स्वामी राम कृष्ण (शब्द०)	
स्वामी हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हंस०	हंसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
हंसराज (शब्द०)	हंसराज
हकायके०	हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० संपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
हनुमन्नाटक (शब्द०)	हनुमन्नाटक
हनुमान, हनुमान कवि (शब्द०)	हनुमान कवि
हम्मीर०	हम्मीरहठ, संपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर,' इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग
ह० रासो०	हम्मीर रासो, संपा० डा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
हरिजन (शब्द०)	कवि हरिजन
हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हरिश्चंद्र (शब्द०)	भारतेंदु हरिश्चंद्र
हरिसेवक (शब्द०)	हरिसेवक कवि
हरी घास०	हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई०
हर्ष०	हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०, १९५३ ई०
हालाहल	हालाहल, हरिवंशराय बच्चन, भारती भंडार, प्रयाग, १९४६ ई०
हिंदी आ०	हिंदी आलोचना
हिंदी का०	हिंदी काव्य की अंतश्चेतना
हिं० का० प्र०	हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं०
हिं० क० का०	हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
हिं० ना०	हिंदी के नाटक
हिंदी प्रदीप (शब्द०)	हिंदी प्रदीप
हिंदी प्रेमगाथा०	हिंदी प्रेमगाथा काव्यसंग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई०
हिंदी प्रेमा०	हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड
हिं० प्र० चि०	हिंदी काव्य मे प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग
हिं० सा० भू०	हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, तृ० सं०, १९४८
हिंदु० सभ्यता	हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
हित हरिवंश (शब्द०)	वैष्णव संत हित हरिवंश दास
हिम कि०	हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, तृ० सं०
हिम त०	हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
हिम्मत०	हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
हिल्लोल	हिल्लोल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० स०
हुमायूँ०	हुमायूँनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० स०
हृदय०	हृदयतरंग, सत्यनारायण कविरत्न
हृदयराम (शब्द०)	कवि हृदयराम

[व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण]

अं०	अंग्रेजी
अ०	अरबी
अक० रूप	अकर्मक रूप
अनु०	अनुकरण शब्द
अनुध्व०	अनुध्वन्यात्मक
अनु० मू०	अनुकरणार्थमूलक
अनुर०	अनुरणनात्मक रूप
अप०	अपभ्रंश
अर्ध मा०	अर्धमागधी
अल्पा०	अल्पार्थक
अव०	अवधी
अव्य०	अव्यय
इता०	इतालवी
इब०	इबरानी
उ०	उदाहरण
उच्चा०	उच्चारण सुविधार्थ
उडि०	उडिया
उप०	उपसर्ग
उभय०	उभयलिंग
एकव०	एकवचन
कनाडी	कन्नड भाषा
कहावत	कहावत
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र
[को०], (को०)	अन्य कोश
ॐ	संभाव्य व्युत्पत्ति
?	अनिश्चित व्युत्पत्ति
कोंक०	कोंकणी
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्व०	क्वचित्
गीत	लोकगीत
गुज०	गुजराती
चो०	चीनी भाषा
छ०	छद
जापा०	जापानी
जावा०	जावा द्वीप की भाषा
जी०, जीवन०	जीवनचरित
ज्या०	ज्यामिति
ज्यो०	ज्योतिष
डिं०	डिंगल
त०	तमिल
तर्क०	तर्कशास्त्र
ति०	तिब्बती भाषा
तु०	तुर्की
दू०	दूहा या दूहला
तुल०	तुलनीय
दे०	देखिए
देश०	देशज
देशी	देशी
धर्म०	धर्मशास्त्र
नाम०	नामधातु
ना० धा०	नामधातुज क्रिया
नामिक धातु	नामिक धातु
ने०	नेपाली
न्याय०	न्याय या तर्कशास्त्र
पं०	पजाबी
परि०	परिशिष्ट
पा०	पाली
पुं०	पुंलिंग
पुर्त०	पुर्तगाली
पु० हिं०	पुरानी हिंदी
पू० हिं०	पूर्वी हिंदी
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रकाशकीय या प्रस्तावना
प्रत्य०	प्रत्यय
प्रा०	प्राकृत
प्रे०	प्रेरणार्थक रूप
फ०	फरांसीसी भाषा
फकीर०	फकीरो की बोली
फा०	फारसी
बँग०	बँगला भाषा
बरमी०	बरमी भाषा
बहुव०	बहुवचन
बुं० खं०	बुंदेलखंड की बोली
बुंदेल०	" "
बोल०	बोलचाल
भाव०	भाववाचक संज्ञा
भू०	भूमिका
भू० कृ०	भूत कृदंत
मरा०	मराठी
मल०	मलयाली या मलयालम भाषा
मला०	मलाया की भाषा
मि०	मिलाइए
मुसल०	मुसलमानो द्वारा प्रयुक्त
मुहा०	मुहावरा

यू०	यूनानी	संयो० क्रि०	संयोजक क्रिया
यौ०	यौगिक	स०	सकर्मक
राज०	राजस्थानी	सक० रूप	सकर्मक रूप
लश०	लशकरी	सधु०	सधुक्कड़ी भाषा
ला०	लाक्षणिक	सर्व०	सर्वनाम
लै०	लैटिन	सिंहली	सिंहली भाषा
व० कृ०	वर्तमान कृदंत	स्पे०	स्पेनी भाषा
वर्ण वि०	वर्णविपर्यय	स्त्रि०	स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त
वि०	विशेषण	स्त्री०	स्त्रीलिंग
वि० द्वि० मू०	विषमद्विरुक्तिमूलक	हि०	हिंदी
वै०	वैदिक	ⓟ	काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी
व्या०	व्याकरण	>	व्युत्पन्न
व्यंग्य	व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त	†	प्रांतीय प्रयोग
(शब्द०)	हिंदी शब्दसागर प्र० सं०	‡	ग्राम्य प्रयोग
सं०	संस्कृत	√	धातुचिह्न
संयो०	संयोजक अव्यय		

हिंदी शब्दसागर

व

व—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अंतस्थ अर्धव्यंजन माना जाता है। इसका उच्चारणस्थान दंत्योष्ठ है अर्थात् दाँत और ओठ से इसका उच्चारण होता है। प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट होता है, अर्थात् उच्चारण के समय दाँतो का ओठ से कुछ स्पर्श होता है। हिंदी मे इस वर्ण का उच्चारण अधिकतर केवल ओठ से होता है, केवल संस्कृताभ्यासी लोग ही शुद्ध दंत्योष्ठ उच्चारण करते है।

वंक¹—वि० [स० वङ्क या वक्र] कुछ झुका हुआ। टेढा। वक्र।

वंक²—सज्ञा पु० १ नदी का मोड। वकर। २. टेढापन। कुटिलता (को०)। ३ पल्ययन। दे० 'वंका'। (को०)। ४ आवारा व्यक्ति (को०)।

वंकट—वि० [स० वङ्क] १ टेढा। बाँका। २ कुटिल। जो सीधा न हो। ३ विकट। दुर्गम। उ०—रही है घूँघटपट की ओट। मनो कियो फिर मान मवासो मन्मथ वंकट कोट।—सूर (शब्द०)।

वंकटक—सज्ञा पु० [स० वङ्कटक] एक पर्वत जिसे वंकाटक भी कहा गया है।

वंकनाल—सज्ञा पु० [स० वङ्कनाल] शरीर की एक नाडी का नाम। सुषुम्ना।

वंकनाली—सख्या स्त्री० [हिं० वंक+नाडी] साधुओ की बोलचाल मे सुषुम्ना नामक नाडी, जो मध्य मे मानी गई है। उ०—वंकनालि सदा रस पीवै, तब यहु मनुवाँ कही न जाय। विगसै कँवल प्रेम जब उपजै ब्रह्म जीव को करै सहाय।—दादू (शब्द०)।

वंकर—सज्ञा पुं० [स० वङ्कर] वह स्थान जहाँ से नदी मुडी हो। नदी का मोड।

वंकसेन—सज्ञा पुं० [स० वङ्कसेन] अगस्त का वृक्ष।

वंका—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्का] चारजामे की अगली मेंडी।

वंकाटक—सज्ञा पु० [स० वङ्काटक] एक पर्वत का नाम।

वंकाला—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्काला] राजतरंगिणी के अनुसार बंगाल की प्राचीन राजधानी का नाम जिसके कारण उस देश का बंगाल नाम पडा। (राज०)।

वंकिणी—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्किणी] एक क्षुप का नाम।

वंकिम—वि० [स० वङ्किम] ईषत् वक्र। कुछ टेढा या झुका हुआ। बाँका। उ० - निद्रालस वंकिम विशाल नेत्र मूँदे रही। किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिए।—अपरा, पृ० ५।

वंकिल—सज्ञा पु० [स० वङ्किल] कटक। काँटा।

वंक्य—वि० [स० वङ्क्य] टेढा। लचीला। वक्र [को०]।

वंक्रा—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्रा] दे० 'वंक्रि'।

वंक्रि—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्रि] १ पशुओ की पसली की हड्डी। २. काँडी। कडी। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

वंक्षण—सज्ञा पु० [स० वङ्क्षण] मूत्राशय और जंघास्थल का सधि-स्थान। वह स्थान जो पेडू और जाँघ के बीच मे है और जहाँ 'वर्म' नामक रोग की गाँठ निकला करती है।

वंक्षु—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्षु] १ आक्सस नदी जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर मध्य एशिया मे बहती हुई आरल समुद्र मे गिरती है।

विशेष—इस नदी का नाम वेदो मे कई जगह आया है। पुराणो मे यह केतुमाल वर्ष की एक नदी कही गई है। महाभारत मे इसकी गणना पवित्र नदियो मे की गई है। रघुवंश की प्राचीन प्रतियो मे भी रघु के दिग्विजय के अंतर्गत इस नदी का उल्लेख है और इसके किनारे हूणो की बस्ती कही गई है।

२ गंगा की एक छोटी सी शाखा (को०)।

वंग—सज्ञा पुं० [स० वङ्ग] १ मगध या बिहार के पूर्व पडनेवाला प्रदेश। बंगाल।

विशेष—ऋग्वेद मे सबसे पूर्व पडनेवाले जिस प्रदेश का उल्लेख है, वह 'कीकट' (मगध) है। अथर्व सहिता मे 'अंग' देश का भी नाम मिलता है। सहिताओ मे 'वंग' नाम नही मिलता। ऐतरेय आरण्यक मे ही सबसे पहले वंग देश की चर्चा आई है, और वहाँ के निवासियो की दुर्बलता और दुराहार आदि का उल्लेख पाया जाता है। बात यह है कि सहिता काल मे कीकट और वंग देश मे अनार्यो का ही निवास था। आर्य लोग वहाँ तक न पहुँचे थे। बौधायन धर्मसूत्र मे लिखा है कि वंग, कलिंग, पुंड्र आदि देशो मे जानेवाले को लौटने पर पुनस्तोम यज्ञ करना चाहिए। मनुस्मृति मे तीर्थयात्रा के लिये जाने की आज्ञा है। इससे जान पडता है कि उस समय आर्य वहाँ बस गए थे। शतपथ ब्राह्मण

के समय मे मिथिला मे विदेह वश प्रतिष्ठित था। रामायण मे प्राग्ज्योतिपुर (रगपुर से लेकर आसाम तक प्रागज्योतिष प्रदेश कहलाता था) की स्थापना का उल्लेख है।

महाभारत (आदिपर्व) मे लिखा है कि क्षत्रिय राजा बलि को कोई सतति न हुई। तब उन्होने अवे दीर्घतमा ऋषि द्वारा अपनी रानी के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न कराए, जिनके नाम हुए—अग, वग, कलिंग, पुड्र और सुह्म। इन्ही के नाम पर देशो के नाम पडे।

२ रांगा नाम की धातु। ३ रांगे का भस्म। ४ कपास। ५ बैंगन। भटा। ६ राजा बलि का पुत्र। एक चद्रवशी राजा (को०)। ७ एक धातु। सीसा। सीसक।

वगज¹—सज्ञा पु० [स० वङ्गज] १ सिंदूर। २ पीतल।

वंगज²—वि० १ वगाल मे उत्पन्न होनेवाला। २ बगाली।

वगजीवन—सज्ञा पु० [स० वङ्गजीवन] चाँदी।

वगन—सज्ञा पु० [स० वङ्गन] बैंगन।

वगमल—सज्ञा पु० [स० वङ्गमल] सीसा नामक धातु।

विशेष—प्राचीनो की यह धारणा थी कि रांगा और सीसा दोनो एक ही धातु हैं और वे सीसे को रांगे का मल समझते थे।

वगला—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गला] वगाला या वगालिका नाम की रागिनी। विशेष दे० 'बगाली'।

वगशुल्यज—सज्ञा पु० [स० वङ्गशुल्यज] कांसा। कास्य [को०]।

वगसेन—सज्ञा पु० [स० वङ्गसेन] लाल फूलवाला अगस्त।

वगा—सज्ञा पु० [स० वङ्ग] दे० 'वग'। उ०—तेलगा, वगा, चोला, कलिंगा राआ पुत्ते मडिया।—कीर्ति०, पृ० ४८।

वगारि—सज्ञा पु० [स० वङ्गारि] हरताल।

वगाल—सज्ञा पु० [स० वङ्गाल] एक राग। दे० 'वगाल'–२।

वगाली—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गाली] भैरव राग की एक रागिनी।

विशेष—यह ओड़व जाति की है और इसमे ऋषभ तथा धैवत स्वर नही लगते। कल्लिनाथ के मत से यह सपूर्ण जाति की है और इसमे दो बार मध्यम आता है।

वगाष्टक—सज्ञा पुं० [स० वङ्गाष्टक] एक रसौषध जिसमे रांगा आदि आठ धातुएँ एक साथ मिलाकर फूंकी जाती हैं। यह प्रमेह रोग पर दिया जाता है।

विशेष—पारा, गधक, लोहा, चाँदी, खपरिया, अभ्रक और तांवा बरावर लेकर जितना सब हो, उतना रांगा लेकर सब को एक साथ मर्दन करके गजपुट द्वारा फूंकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसको वगाष्टक कहते हैं। वगाष्टक की मात्रा दो रत्ती है, और मधु, हलदी के चूर्ण तथा आमले के रस मे इसे खाते हैं।

वगेरिका—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गेरिका] चगेरी। डलिया। टोकरी [को०]।

वगेरी—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गेरी] चँगेरी। डलिया [को०]।

वगेश्वर—सज्ञा पु० [स० वङ्गेश्वर] एक प्रसिद्ध रस।

विशेष—पारे का भस्म ८ तोला, वग का भस्म ८ तोला, तांबे का भस्म ३२ तोला और गधक ३२ तोला लेकर मदार के दूध मे मलकर फिर पिंडी बनाकर 'भूधर यत्र' द्वारा फूंकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसे वगेश्वर कहते हैं। इसकी मात्रा २ रत्ती है। इसे गुल्मोदर रोग मे घी के साथ देते हैं, और ऊपर से पुनर्नवा का रस और गोमूत्र या हल्दी का रस पिलाते हैं।

वघ—सज्ञा पु० [स० वङ्घ] एक वृक्ष का नाम [को०]।

वचक¹—वि० [स० वञ्चक] १ धूर्त। धोखेबाज। ठग। २ खल।

वचक²—सज्ञा पुं० १ गीदड। २ गोसियार। ३. चोर। ठग। ४ गृहवभ्रु। गधमूषक (को०)।

वचति—सज्ञा पुं० [स० वञ्चति] अग्नि [को०]।

वचथ—सज्ञा पुं० [स० वञ्चथ] १ धर्तता। छलना। २ धूर्त। छली। ३ पिक। कोकिल। ४ मरण। मृत्यु [को०]।

वचन—सज्ञा पु० [स० वञ्चन] [वि० वचित] १ धोखा देना। धूर्तता। ठगी। २ धोखा खाना। ठगा जाना। ३ भ्राति। व्यामोह (को०)। ४ क्षति। हानि (को०)।

यौ० – वचनचचुता = वंचन कार्य मे कुशलता। वचनपटुता = दे० 'वचनचचुता। वचनप्रवण = धोखा देने की ओर प्रवृत्त। वचन योग = ठगो या धोखा देने का अभ्यास।

वचना¹—सज्ञा स्त्री० [स० वञ्चना] धोखा। जाल। फरेब। छल। वंचन।

यौ०—वचनापडित = कुशल धोखेबाज। वचनापटु, वचना-कुशल = वचना करने मे पडित।

वचना(पु)²—क्रि० स० [स० वञ्चना] धोखा देना। ठगना। उ०—दभ विलोक्यो कहल जो, दिल्ली नगरी जाइ। वचतु जग जैसे फिरतु मो पै वरनि न जाइ।—केशव (शब्द०)।

वचना(पु)³—क्रि० स० [स० वाचन] पढना। वाँचना।

वचनीय—वि० [स०] १. त्याज्य। परित्याग करने लायक। छोडने के काबिल। २ भोला भाला। जिसे धोखा दिया जा सके। जो ठगा जा सके [को०]।

वचयिता—वि० [स० वञ्चयितृ] वचना करनेवाला। दे० 'वचक' [को०]।

वचित—वि० [स० वञ्चित] १ धोखे मे आया हुआ। जो ठगा गया हो। २ अलग किया हुआ। ३ विमुख। अलग। हीन। रहित। जैसे—मैं इस कृपा से वचित रखा गया हूँ।

वचिता—सज्ञा स्त्री० [स० वञ्चिता] प्रहेलिका। गूढ प्रश्न। पहेली [को०]।

वचुक¹—वि० [स० वञ्चुक] [वि० स्त्री० वचुकी] धूर्त। ठग। चालाक। वेईमान [को०]।

वचुक²—सज्ञा पुं० गीदड। स्यार [को०]।

वचुलक—सज्ञा पु० [स० वञ्चुलक] १ एक प्रकार का वृक्ष। दे० 'वजुल'। २ एक पक्षी [को०]।

वछित—वि० [स० वाञ्छित] दे० 'वाछित'। उ०—कितहूँ न भयो वछित कछू अब तौ तृष्णा मोहि तजि।—व्रज० ग्र०, पृ० १०७।

वजुल—सज्ञा पु० [स० वञ्जुल] १ बेत। उ०—मजु वजुल की लता और नील निचुल के निकुज जिनके पता ऐसे सघन जो सूय को

किरनों को भी नहीं निकलने देते ।—श्यामा०, पृ० ४१ । २. तिनिश का पेड । ३ अशोक का पेड । ४ स्थलपद्म । ५ एक प्रकार के पक्षी का नाम ।

यौ०—वंजुलद्रुम = अशोक । वंजुलप्रिय = वेतस ।

वंजुला—संज्ञा स्त्री० [सं० वञ्जुला] १ अधिक दूध देनेवाली गौ । दुधारी गाय । दुधारू गाय । २ एक नदी का नाम जो मत्स्यपुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलती है ।

वंजुलावती—संज्ञा स्त्री० [सं० वञ्जुलावती] एक नदी का नाम जो दक्षिण के एक पर्वत से निकलती है ।

वंट¹—संज्ञा पुं० [सं० वण्ट] १ भाग । बाँट । २ हँसिया आदि की मूठ । बेंट । वह । ३. वह जिसकी पूँछ न हो या कट गई हो । लँडूरा । बाँडा । ४. अविवाहित पुरुष ।

वंट²—वि० १ बाँडा । लँडूरा । २ अविवाहित [को०] ।

वंटक¹—संज्ञा पुं० [सं० वण्टक] भाग । बाँट ।

वंटक²—वि० बाँटनेवाला । विभाजक ।

वंटन—संज्ञा पुं० [सं० वण्टन] अंश या भाग लगाना । विभक्त करना । बाँटना [को०] ।

वंटनीय—वि० [सं० वण्टनीय] बाँटने लायक । वंटन के योग्य ।

वंटाल—संज्ञा पुं० [सं० वण्टाल] १ शूरों का युद्ध । २. नौका । ३ खोदने का औजार । खनती ।

वंठ¹—वि० [सं० वण्ठ] १ जिसका कोई अंग खंडित हो । हीनांग । जैसे—लूला, लँडूरा, खंजा आदि । २. अविवाहित (को०) ।

वंठ²—संज्ञा पुं० १ अविवाहित पुरुष । २. दास । सेवक । ३ वामन । बौना । ४ कुंत । भाला ।

वंठर—संज्ञा पुं० [सं० वण्ठर] १. ताड के वृक्ष का कोपल । २ बाँस के कल्ले का वह मोटा पत्ता जो उसे छिपाए रहता है ।

विशेष—यह पत्ता गाँठ गाँठ पर होता है और बहुत कडा तथा भूरे रंग का होता है ।

३ कुत्ते की पूँछ । ४. वह रस्सी जिससे बकरी, गाय आदि को गले से बाँधते हैं । ५ स्तन । थन । ६. मेघ । ७ कुत्ता ।

वंठाल—संज्ञा पुं० [सं० वण्ठाल] दे० 'वंटाल' ।

वंड¹—संज्ञा पुं० [सं० वण्ड] १ वह जिसकी लिंगेंद्रिय के अग्र भाग पर वह चमडा न हो, जो सुपारी को ढाँके रहता है । २ ध्वजभंग नामक रोग ।

पर्या०—दुश्चर्मा । द्विनग्नक । शिपिविष्ट ।

वंड²—वि० १ बाँडा । हीनांग । २ अविवाहित (को०) ।

वंडर—संज्ञा पुं० [सं० वण्डर] १ मक्खीचूस । सूम । कंजूस । २ वह नपुंसक जो अंतःपुर का रक्षक हो । खोजा ।

वंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० वण्डा] रंडा । पुंश्चली स्त्री ।

वंडाल—संज्ञा पुं० [सं० वण्डाल] दे० 'वंटाल' ।

वंद—वि० [सं० वन्द] १. स्तुति या प्रशस्ति करनेवाला । २. परोपजीवी [को०] ।

वंदक—संज्ञा पुं० [सं० वन्दक] १ स्तुतिकर्ता । चारण । वंदी । २ एक परोपजीवी पौधा । विशेष दे० 'वंदा' । ३ बौद्ध भिक्षु [को०] ।

वंदका संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दका] दे० 'वंदा' [को०] ।

वंदथ—संज्ञा पुं० [सं० वन्दथ] १ वंदीजन । चारण । २ वंदनीय व्यक्ति [को०] ।

वंदन—संज्ञा पुं० [सं० वन्दन] १ स्तुति और प्रणाम । पूजन ।

विशेष—वंदन षोडशोपचार पूजन में है । यह समस्त पदों के अंत में 'वंदन' शब्द से पूजित या पूज्य का अर्थ देता है । (जैसे,—जगवंदन)

२ शरीर पर बनाए हुए तिलक आदि चिह्न । ३ एक विष का नाम । ४ एक असुर का नाम । ५ एक ऋषि का नाम । ६ वंदाक । बाँदा ।

वंदनक—संज्ञा पुं० [सं०] विनम्र भाव से नमस्कार [को०] ।

वंदनमाल—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाल] वंदनवार ।

वंदनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाला] दे० 'वंदनमाल' ।

वंदनमालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमालिका] दे० 'वंदनमाल' ।

वंदनवार—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनमाल] वह माला जो सजावट के लिये घरों के द्वार पर या मंडप के चारों ओर उत्सव के समय बाँधी जाती है । उ०—सेजहि सुधारै एक, रोशनी उज्यारै एक, बाँधती वंदनवारै भारै फूल क्यारी को ।—राम (शब्द०) ।

विशेष—इस माला में फूल पत्तियाँ गुथी रहती हैं । यज्ञादि के अवसर पर इसमें आम के पल्लव गूँथे जाते हैं ।

वंदना—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दना][वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति । २ प्रणाम । वंदन । ३ वह तिलक जो होम के भस्म से यज्ञ के अंत में लगाया जाता है ।

वंदनी—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनी] १ स्तुति । २ जीवातु नामक ओषधि । ३. गोरोचन । ४ तिलकादि चिह्न जो शरीर पर बनाए जाते हैं । ५ याचनाकर्म । ६. बटी ।

वंदनीय¹—वि० [सं० वन्दनीय] वंदना करने योग्य । आदर करने योग्य ।

वंदनीय²—संज्ञा पुं० पीत भृंगराज । पीली भँगरैया [को०] ।

वंदनीया—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दनीया] गोरोचना [को०] ।

वंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दा] दूसरे पेडों के ऊपर उसी के रस से पलनेवाला एक प्रकार का पौधा । वंदाक । बाँदा ।

पर्या०—वृक्षादनी । वृक्षरुहा । वंदाका । जीवंतिका । शेखरी । संध्या । वंदका । वंदक । नीलवल्ली । वंदाकी । परवासिका । वशिनी । पुत्रिणी । वध्या । परपुष्टा । पराश्रया । कामवृक्षा । केशरूपा । गंधमादनी । कामिनी । श्यामा । कामवृक्ष ।

विशेष—इसका स्वाद तिक्त होता है, और वैद्यक में यह कफ, पित्त, तथा श्रम को दूर करनेवाला कहा गया है ।

२ भिक्षुणी (को०) ।

वंदाक—संज्ञा पुं० [सं० वन्दाक] दे० 'वंदा' ।

वंदाका—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दाका] दे० 'वंदा' ।

वंदाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दाकी] दे० 'वंदा'।

वंदार—संज्ञा पुं० [सं० वन्दार] परोपजीवी पौधा। वंदा। बाँदा [को०]।

वंदारु¹—संज्ञा पुं० [सं० वन्दारु] १ स्तोत्र। २ बाँदा। वंदाक। ३ वैतालिक। चारण। स्तुतिपाठक। स्तुतिकर्ता। भाट (को०)।

वंदारु²—वि० वंदशील। नम्र।

वंदि—संज्ञा पुं० [सं० वन्दि] १ दे० 'बंदी'। २ कैद। ३ सोपान। सीढी। ४ स्तुति। ५ स्तुतिपाठक। वंदी [को०]।

वंदिग्राह—संज्ञा पुं० [सं० वन्दिग्राह] डाकू।

वंदिचौर—संज्ञा पुं० [सं० वन्दिचौर] १ चोर। तस्कर। २ डाकू [को०]।

वंदित—वि० [सं० वन्दित] [वि० स्त्री० वंदिता] १ आदृत। पूजित। २ पूज्य। आदरणीय।

वंदितव्य—वि० [सं० वन्दितव्य] दे० 'वंद्य'।

वंदिता—संज्ञा पुं० [सं० वन्दितृ] स्तुति करनेवाला। प्रशंसा करनेवाला [को०]।

वंदिपाल—संज्ञा पुं० [सं० वन्दिपाल] कैदखाने का अधिकारी [को०]।

वंदी—संज्ञा पुं० [वन्दिन्] १ दे० 'बंदी'। २ दे० 'वंदि'।

वंदीक—संज्ञा पुं० [सं० वन्दीक] इंद्र।

वंदीगृह—संज्ञा पुं० [सं० वन्दीगृह] कैदखाना।

वंदीजन—संज्ञा पुं० [सं० वन्दीजन] राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।

वंद्य—वि० [सं० वन्द्य] वंदना करने योग्य। वंदनीय। आदरणीय। पूजनीय।

वंद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्द्या] १ बाँदा। वंदा। २ गोरोचन [को०]।

वंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वन्द्र] १ अभ्युदय। मंगल। २ प्राचुर्य। प्रचुरता। ३ भक्त। उपासक [को०]।

वंधु—संज्ञा पुं० [सं० वन्धु] दे० 'बंधु'।

वंधुर—संज्ञा पुं० [सं० वन्धुर] १ रथ या गाडी का आश्रय जिसमे दोनो हरसे और धुरा प्रधान है। २. गाडी मे का वह स्थान जहाँ सारथी या गाडीवान बैठकर उसे चलाता है।

वंधुर²—वि० दे० 'बंधुर'।

वंध्य—वि० संज्ञा पुं० [सं० वन्ध्य] दे० 'वंध्य'।

यौ०—वंध्यफल।

वंध्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्ध्या] बाँझ स्त्री जिसे संतान न उत्पन्न हो। दे० 'वंध्या'।

यौ०—वंध्यातनय। वंध्यापुत्र। वंध्यासुत। वंध्यासूनु = दे० 'वंध्यापुत्र'।

वंन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वर्ण, प्रा० वण्ण] दे० 'वर्ण'। उ०—मारुवणी मुँह वन्न आदित्ता हूँ उज्जली।—ढोला०, दू० ४६४।

वंभ—संज्ञा पुं० [सं० वम्भ] बाँस [को०]।

वंभारव—संज्ञा पुं० [सं० वम्भारव] रँभाना। जानवर के रँभाने का शब्द [को०]।

वंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २ बँडेर। ३ पीठ की हड्डी। ४ नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ५ बाँसुरी। ६ एक प्रकार की ईख। ७ खड्ग के बीच का वह भाग जो ऊँचा हो, अर्थात् जहाँ पर वह अधिक चौडा होता है। ८ बारह (कुछ के मत मे दस) हाथ का एक मान। ९ बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ। १० युद्ध की सामग्री। जैसे, रथ, ध्वजा इत्यादि। ११ विष्णु। १२ वंशलोचन। १३. फूल। १४. कुल। परिवार। जाति (को०)। १५. संतान। पुत्र (को०)। १६ एक ही जैसी वस्तुओं का समूह या वर्ग (को०)। १७ शाल का वृक्ष (को०)। १८ अभिमान। दर्प (को०)। १९ दृढ ग्रंथि। मजबूत गाँठ (को०)। २० बबडर।

यौ०—वंशज। वंशकृत। वंशक्षय। वंशच्छेद, इत्यादि।

वंशऋषि—संज्ञा पुं० [सं०] वे ऋषि जिनके नाम वंश ब्राह्मण मे आए हैं।

वंशकज—संज्ञा पुं० [सं० वंशकज] काले अगर की लकडी। कृष्णागुरु।

वंशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगर नामक गंधद्रव्य। अगुरु। २ एक प्रकार की मछली। ३ एक प्रकार का गन्ना या ईख।

विशेष—वैद्यक मे इसे शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, सारक, वृष्य और कफनाशक लिखा है। इसके रस का स्वाद कुछ खारीपन लिए भारी होता है। इसे 'कडऊख' कहते हैं।

४ बाँस की गाँठ या संधि (को०)। ५. छोटी जाति का बाँस।

वंशकठिन—संज्ञा पुं० [सं०] जहाँ बाँस परस्पर गुथे हुए हों। बाँस का जंगल (को०)।

वंशकपूर—संज्ञा पुं० [सं० वंशकर्पूर] बंसलोचन।

वंशकफ—संज्ञा पुं० [सं०] सेमल आदि का घूआ जो आकाश मे उडता फिरता है।

वंशकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ हुआ हो। मूल पुरुष। पूर्वज। पुरखा। २. पुत्र (को०)।

वंशकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराणानुसार एक नदी जो महेंद्र पर्वत से निकलती है। वंशधारा।

वंशकर्पूर—संज्ञा पुं० [सं०] बंसलोचन।

यौ०—वंशकर्पूररोचना, वंशकर्पूररोचनी, वंशकर्पूरलोचना = दे० 'वंशलोचन', 'बंसलोचन'।

वंशकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वंशकर्मन्] बँसोर का काम। बाँस की डलिया, सूप, टोकरी आदि बनाने का काम [को०]।

यौ०—वंशकर्मकृत् = दे० 'बंसोर'।

वंशकार—संज्ञा पुं० [सं०] गंधक।

वंशकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का मूल पुरुष [को०]।

वंशकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] वंशीवादन। बाँसुरी बजाना [को०]।

वंशक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश की तालिका। वंशानुक्रम [को०]।

वंशक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] वंश या कुल का विनाश [को०]।

वंशक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन।

वंशगोप्ता—संज्ञा पुं० [सं० वंशगोप्तृ] वह जो कुल या वंश का संरक्षक हो [को०]।

वंशघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिव्यावदान के अनुसार एक प्रकार का खेल।

वंशचर्मकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाँस और चमड़े की वस्तुएँ बनाता हो [को०]।

वंशचरित—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का इतिहास [को०]।

वंशचिंतक—संज्ञा पुं० [सं० वंशचिन्तक] कुल या वंश का कुर्सीनामा तैयार करनेवाला [को०]।

वंशच्छेत्ता—संज्ञा पुं० [सं० वंशच्छेत्तृ] वंश का अंतिम पुरुष [को०]।

वंशज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का चावल या बीज। २ पुत्र। ३ कुल में उत्पन्न पुरुष। संतान। संतति। औलाद। ४ वंशलोचन (को०)।

वंशज²-वि० १. बाँस का बना हुआ। २ अच्छे कुल मे उत्पन्न। ३ (किसी) वंश मे उत्पन्न [को०]।

वंशजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वंशलोचन। २ कन्या।

वंशतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० वंशतण्डुल] बाँस का चावल या बीज [को०]।

वंशतालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशवृक्ष। कुर्सीनामा (को०)।

वंशतिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद का नाम।

वंशदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीरिका तृण। बाँसा। विशेष दे० 'वंशपत्री' [को०]।

वंशधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुल मे उत्पन्न। वंशज। संतति। संतान। २ वंश की मर्यादा रखनेवाला।

वंशधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो महेंद्र पर्वत से निकली है। यह नदी मध्य प्रदेश मे है। इसे वंशकरा भी कहते हैं। इसका आधुनिक नाम वंशधारा है।

वंशधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का चावल।

वंशनर्ती—संज्ञा पुं० [सं० वंशनर्तिन्] भाँड।

वंशनाडिका, वंशनाडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी। २ बाँस की पुपली या नली [को०]।

वंशनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] वंश का प्रधान पुरुष। जाति का मुखिया या प्रधान व्यक्ति [को०]।

वंशनाश—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो शनि और राहु के सूर्य के साथ एक लग्न मे, विशेषत पंचम मे पड़ने पर होता है।

वंशनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ईख के अंकुरवाले डंठल जिन्हें जमीन मे गाड़ने से ईख का नया पौधा उत्पन्न होता है। आँख।

वंशपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरताल। २ बाँस का पत्ता (को०)। ३. एक प्रकार का सरकंडा (को०)।

वंशपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की ईख जो सफेद होती है। २. एक प्रकार की मछली। ३. हरताल। ४. सरकंडा (को०)।

वंशपत्रपतित—संज्ञा पुं० [सं०] १७ वर्णों के एक छंद का नाम जिसमे क्रम से भगण, रगण, नगण, भगण, नगण और अंत मे एक लघु और एक गुरु होता है।

वंशपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की हींग। २ एक घास जिसे बाँसा कहते हैं।

विशेष—इसकी पत्तियाँ बाँस की पत्तियों से मिलती है। वैद्यक मे यह शीतल, मधुर, रुचिकारी तथा रक्तपित्त के दोषों को शांत करनेवाली कही गई है।

पर्या०—वंशदला। जीरिका। जीर्णपत्रिका। वेणुपत्री। पिंडा। शिराटिका।

वंशपरंपरा—संज्ञा स्त्री० [सं० वंशपरम्परा] १ वंशतालिका। वंशवृक्ष। २ पूर्वपुरुषों से चली आती हुई रीति। कुलगत आचार।

वंशपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का बना पात्र। जैसे, डलिया, टोकरी आदि [को०]।

वंशपीत—संज्ञा पुं० [सं०] गुग्गुल।

वंशपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षुप जाति की एक वनौषधि। सहदेई। विशेष दे० 'सहदेई'।

वंशपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] ईख या गन्ने की पोर [को०]।

वंशपोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का अंकुर। करइल। २ अच्छे कुल की संतान [को०]।

वंशबाह्य—वि० [सं०] वंश से बाहर किया गया। वंशच्युत [को०]।

वंशब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] सामवेद के ब्राह्मणों मे एक प्रधान ब्राह्मण, जिसमे सामवेदी ब्राह्मणों के वंशकार ऋषियों की नामावली है।

वंशभव—वि० [सं०] १ बाँस का बना हुआ। २. कुलीन। पालनकर्ता।

वंशभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] वंश का प्रधान [को०]।

वंशभोज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संपत्ति जिसपर वंशगत अधिकार हो। मौरूसी जायदाद। २ वंशगत अधिकार की शासनप्रणाली।

वंशयव—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का बीज [को०]।

वंशराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत लंबा बाँस। २ खानदान का मालिक। कुल का प्रधान।

वंशरोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन।

वंशलून—वि० [सं०] जिसके वंश का लून अर्थात् उच्छेद हो गया हो। संसार मे अकेला [को०]।

वंशलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] वंसलोचन।

पर्या०—त्वक्क्षीरा। वंशलोचना। तुगाक्षीरी। वांशी। वंशजा। क्षीरिका। तुगा। त्वक्क्षीरी। शुभ्रा। शुभा। वंशक्षीरी। त्वक्सारा। कर्म्मरी। श्वेता। वंशकर्पूर। रोचना। रोचनिका। पिंगा। वंशशर्करा। वेणुलवण। वैणवी।

वंशलोचना—वि० स्त्री० [सं०] वंसलोचन।

वंशवन—संज्ञा पुं० [सं०] बाँसों का जंगल [को०]।

वंशवर्धन—सज्ञा पुं० [सं०] वंश की वृद्धि करनेवाला । पुत्र [को०] ।

वंशवितति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिवार । २ बाँसों का झुरमुट [को०] ।

वंशविस्तर—सज्ञा पुं० [सं०] वंशवृक्ष [को०] ।

वंशवृक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का पेड । २ किसी वंश की वृक्ष की आकृति मे बनाई गई तालिका [को०] ।

वंशशर्करा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन ।

वंशशलाका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वीन, सितार आदि बाजों का डंडा ।

वंशसंपत्—सज्ञा स्त्री० [वंशसम्पद्] उच्च कुल मे जन्म एवं प्रभूत वैभव [को०] ।

वंशस्थ—सज्ञा पुं० [सं०] बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसका व्यवहार संस्कृत काव्यों मे अधिक मिलता है। इसमे जगण, तगण, जगण और रगण आते हैं। जैसे,—प्रथा जु वंशस्थ विलधि धावती। नसाय तीनो कुल को लजावती। इसे 'वंशस्थविल' भी कहते है।

वंशस्थविल—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस के भीतर का खोखला हिस्सा । २ एक वर्णिक छंद । वंशस्थ [को०] ।

वंशहीन—वि० [सं०] जिसके वंश मे कोई न हो । निर्वंश । २ अपुत्र ।

वंशांकुर—सज्ञा पुं० [सं० वंशाङ्कुर] १ बाँस का कोपल । करइल । २ पुत्र [को०] ।

वंशागत—वि० [सं०] कुल परंपरा से आता हुआ ।

वंशाग्र—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वंशांकुर' [को०] ।

वंशानुक्रम—सज्ञा पुं० [सं०] वंशावली ।

वंशानुकीर्तन—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वंशानुचरित' [को०] ।

वंशानुचरित—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन राजवंशों की कथा ।

विशेष—यह पुराणों के लक्षण मे से एक है ।

वंशावली—सज्ञा स्त्री० [सं०] किसी वंश मे उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची ।

वंशाह्व—सज्ञा पुं० [सं०] वंसलोचन ।

वंशिक—सज्ञा पुं० [सं०] १ अगर की लकडी । २ काला गन्ना । केतारा । ३ प्राचीन काल की एक माप जो चार स्तोम की कही गई है (को०) । ४. एक जाति जो शूद्र और वैश्या से उत्पन्न कही गई है (को०) ।

वंशिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अगर की लकडी । २ वंसी । मुरली । ३ पिप्पली ।

वंशी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बाँस मे सुर निकालने के लिये छेद करके बनाया जाता है। बाँसुरी । मुरली ।

विशेष—पुराने ग्रथों मे लिखा है कि वंशी बाँस ही की होनी चाहिए, पर खैर, लाल चंदन आदि की लकडी की अथवा सोने, चाँदी की भी हो सकती है। यह वास्तव मे बाँस की एक पोली नली होती है, जिसके बजानेवाले छोर पर एक जीभ लगी होती है और दूसरी ओर नली के ऊपर एक पंक्ति मे सुर निकलने के छेद होते है। मातंग ऋषि का मत है कि नली का छेद कनिष्ठा उँगली के मूल के बराबर होना चाहिए। जो छोर मुँह मे रखकर फूँका जाता है, उसे 'फूत्काररध्र' और सुर निकालनेवाले सात छेदों को 'ताररध्र' कहते है। इस वंसी के अतिरिक्त मातंग के अनुसार चार प्रकार की मुरलियाँ और होती हैं, जिन्हे मदानदा, नदा, विजया और जया कहते है। मदानदा मे ताररध्र फूत्काररध्र से दस अंगुल पर, नदा मे ग्यारह अंगुल पर, विजया मे बारह अंगुल पर और जया मे चौदह अंगुल पर होते हैं। आजकल वह वंशी जो एक साथ दो बजाई जाती है, अलगोजा कहलाती है। प्राचीन काल के गोपों मे इस बाजे का प्रचार बहुत था।

यौ० – वंशीधर ।

२ चार कर्ष का एक मान, जो आठ तोले के बराबर होता है। ३ वंसलोचन । ४ धमनी । नाडी (को०) ।

वंशीधर—सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण, जो वंशी बजाया करते थे ।

वंशीधारी—सज्ञा पुं० [सं० वंशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण । २ वह जो बाँसुरी बजाता हो । बाँसुरीवादक [को०] ।

वंशीय—वि० [सं०] वंशोद्भव । कुल मे उत्पन्न । जैसे,—चंद्रवंशीय ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत मे हुआ करता है।

वंशीवट—सज्ञा पुं० [सं०] वृंदावन मे वह बरगद का पेड जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे ।

वंशीवादन—सज्ञा पुं० [सं०] वंशी बजाना ।

वंशोद्भव—वि० [सं०] वंशज । कुल मे उत्पन्न ।

वंशोद्भवा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वंसलोचन ।

वंश्य¹—वि० [सं०] १ वंशी । वंशज । २ मेरुदंड संबंधी । मुख्य अस्थि से संबद्ध (को०) । ३ अच्छे कुल का । कुलीनवंश संबंधी [को०] ।

वंश्य²—सज्ञा पुं० १ पीठ की रीढ । २ वह बडी लकडी जो छाजन के बीचोबीच रीढ के समान होती है। बँडेर । ३ पूर्व पुरुष । पूर्वज (को०) । ४ संतति । संतान (को०) ५ परिवार या कुल का कोई व्यक्ति (को०) । ६ शिष्य (को०) । ७ वे संबंधी व्यक्ति जो सात पुश्त पूर्व और सात पीढी बाद के हों (को०) ।

वंश्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] धनिया [को०]

वंस—सज्ञा पुं० [सं० वंश] दे० 'वंश' । उ०—एक पुत्र हे, सो तेरो वंस चल्यो जायगो ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७२ ।

वंसग—सज्ञा पुं० [सं०] साँड । वृषभ [को०] ।

वँसली‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० बाँसुरी] दे० 'बाँसुरी' । उ०—गावणहार माँडइ (अ) र गाई । रास कइ (सम) यइ वँसली वाई ।—बी० रासो, पृ० ५ ।

व¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ वायु । २ बाण । ३ वरुण । ४ बाहु । ५ मंत्रणा । ६ कल्याण । ७ सांत्वना । ८ वसति । बस्ती । ९ वरुणालय । समुद्र । १०. शार्दूल । ११ वस्त्र । १२ कोई का कंद । सेरकी । १३. जल मे उत्पन्न होनेवाले कंद । शालूक ।

१४ वंदन। १५ अस्त्र। १६ खड्गधारी पुरुष। १७ मूर्वा नामक लता। १८ वृक्ष। १९ कलण से उत्पन्न ध्वनि। २० मद्य। २१ प्रचेता। २२। पानी। जल (को०)। २३ आदर। समान (को०)। २४- राहु (को०)।

व२—वि० बलवान्।

व३—अव्य० [फा०] और। जैसे,—राजा व रईस।

वअन(पु)—सज्ञा पु० [स० वचन, प्रा० वयण, वअन] दे० 'वचन'। उ०—कुटिल राजनीति चतुरहु, मोर वअन आकएणे करहु।—कीर्ति०, पृ० २०।

वइठना(पु)†—क्रि० अ० [स० √विश्, विप्ट, प्रा० बिट्ठ+हिं० ना (प्रत्य०) या स० वितिष्ठति, प्रा० वइट्ठइ] दे० 'बैठना'। उ०—वइठहि ठामहि ठामा।—कीर्ति०, पृ० ६६।

वइराग(पु)†—सज्ञा पु० [स० वैराग्य, प्रा० वइराग] दे० 'वैराग्य'। उ०—मनि वइराग न थाइ, वाँलभ वीछुडिया तणी।—ढोला०, दू० १७१।

वइसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० बैठाना] दे० 'बैठाना'। उ०—अमरापति चढि चाल्यो राय। लीं अस्त्री अरधग वइसाय।—वी० रासो, पृ० २७।

वक—सज्ञा पु० [सं०] १ बगला नाम का पक्षी। २ अगस्त का पेड या फूल। ३ एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था मे मारा था। ४ एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ५ कुबेर। ६ एक यक्ष का नाम। ७ एक जाति का नाम। ८ वचक। ठग। ढोगी (को०)।

वकअत—सज्ञा स्त्री० [अ० वकअत] इज्जत। मान। गौरव। साख। ऊँचाई। प्रतिष्ठा। उ०—सबमे ज्यादा जिस बात से तअज्जुब होता है, यह है कि खान देहली की जबान और उर्दू को भी वकअत की निगाह से नही देखते।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ८७।

वककच्छ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा के किनारे था।

विशेष—कथासरित्सागर मे लिखा है कि उज्जयिनी के राजा सातवाहन सर्ववर्मा ने कलाप व्याकरण का अध्ययन करके अपने गुरु को यह राज्य गुरुदक्षिणा मे दिया था।

वकचर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वकवृत्ति'।

वकचिंचिका—सज्ञा स्त्री० [स० वकचिञ्चिका] एक प्रकार की छोटी मछली।

वकजित्—सज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण। २ भीमसेन।

वकत—सज्ञा स्त्री० [अ० वकत] दे० 'वकअत' (को०)।

वकनख—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वकनिषूदन—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बकनिषूदन' (को०)।

वकधूप—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बकधूप' (को०)।

वकपचक—सज्ञा पु० [स० वकपञ्चक] कार्तिक के शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पाँच तिथियाँ।

वकयंत्र—सज्ञा पु० [स० वकयन्त्र] आसव आदि भवके से उतारने के लिये एक यत्र या बरतन, जिसके मुँह पर बगले की गरदन की तरह टेढी नली लगी रहती है।

वकवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] धोखा देकर काम निकालने की घात मे रहने की वृत्ति। कदाचार।

वकल—सज्ञा पु० [स० वल्कल] भीतर की छाल (को०)।

वकव्रत—सज्ञा पु० [स०] बगले की तरह घात मे रहनेवाला। कपटी। चालबाज मनुष्य।

वकाची—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मछली (को०)।

वकार—सज्ञा पुं० [अ० वकार] १ प्रतिष्ठा। बडप्पन। इज्जत। २ गुरुता। गभीरता (को०)।

वकारना—क्रि० अ० [देश०] गरजना। ललकारना। हुंकारना। उ०—भये त्रिपत बीराधिवर, पूरन डकरु डकार। अति आनंदत उल्हसत, बोलत वयन वकार।—पृ० रा०, ६।१७०।

वकालत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दूसरे के किसी काम का भार लेना। दूसरे के स्थानापन्न होकर काम करना। २ दूसरे का संदेसा जोर देकर कहना। दूतकर्म। ३ दूसरे के पक्ष का मडन दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। जैसे,—उन्हे जो कुछ कहना होगा आप कहेगे, तुम क्यो उनकी ओर से वकालत करते हो। ४ अदालत या कचहरी मे किसी मामले मे वादी या प्रतिवादी की ओर से प्रश्नोत्तर या वादविवाद करने का काम। मुकदमे मे किसी फरीक की तरफ से बहस करने का पेशा।

मुहा०—वकालत चलना या चमकना = वकालत के पेशे मे आमदनी होना। वकालत जमना = वकालत के पेशे मे लाभ होने लगना।

यौ०—वकालतनामा।

वकालतन्—क्रि० वि० [अ०] वकील के द्वारा। असालतन् का उलटा।

वकालतनामा—सज्ञा पुं० [अ० वकालत+फा० नामह्] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे मे बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।

वकाली—सज्ञा स्त्री० [स० वक+आलि] वकपक्ति। उ०—नभ मे मेघावलि है काली, क्षिति मे है मजुल हरियाली, है दोनो के बीच वकाली। विद्युन्माला की माला सी, है वह सुदर श्वेत सुमन की।—प्रेमाजलि, पृ० ११६।

वकासुर—सज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम।

विशेष—इस नाम के दो राक्षस हुए हैं। एक को श्रीकृष्ण ने अपनी बाल्यावस्था मे मारा था। वत्सासुर और अघासुर नाम के इसके दो भाइयों का भी कृष्ण ने सहार किया था। यह पूतना नाम की राक्षसी का भाई और कस का अनुचर था। दूसरे को भीमसेन ने उस समय मारा था, जब पाँचो पाडव लाक्षागृह से निकलकर वन मे जाकर रहते थे।

वकी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक राक्षसी का नाम।

वकीअ—वि० [अ० वकीअ] १ इज्जतदार। प्रतिष्ठित। २. ऊँचा। बलद।

वकीअत—संज्ञा स्त्री० [अ० वकीअत] १ कुत्सा । निंदा । २ युद्ध । लडाई [को०] ।

वकील—संज्ञा पुं० [अ०] १ दूसरे के काम को उसकी ओर मे करने का भार लेनेवाला । २ दूसरे का सदेसा ले जाकर उसपर जोर देनेवाला । दूत । ३ राजदूत । एलची । उ०—सूरज कही नवाब के है आनद सरीर । तब वकील विनती करी कृपा पाइ जदुबीर ।—सूदन (शब्द०) । ४ प्रतिनिधि । ५ दूसरे का पक्ष मडन करनेवाला । दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात करनेवाला । ६ कानून के अनुसार वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जिसे हाईकोर्ट की ओर से अधिकार मिला हो कि वह अदालतो मे मुद्दई या मुद्दालेह की ओर से बहस करे ।

वकीली[†]—संज्ञा स्त्री० [अ० वकील + हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'वकालत' ।

वकुल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड या फूल । २ मौलसिरी । उ०—सूखा है यह मुख यहाँ, रूखा है मन आज । किंतु सुमन-सकुल रहे प्रिय का वकुल समाज ।—साकेत, पृ० २९३ । ३. शिव । दे० 'बकुल' ।

वकुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुटकी नामक ओषधि ।

वकुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली नाम की ओषधि । २ वकुल । मौलसिरी ।

वकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह त्यागी यती, साधु जिसे अपने ग्रथो, शरीर और भक्तो या शिष्यो की कुछ कुछ चिंता रहती हो । (जैन) । २ पत्तो के झुरमुट मे रहनेवाला एक जतु (को०) ।

वकूअ—संज्ञा पुं० [अ० वकूअ] घटित होना । प्रकट होना ।

मुहा०—वकूअ मे आना = प्रकट होना । घटित होना ।

वकूआ—संज्ञा पुं० [अ० वकूआ] १ फसाद । झझट । २ घटना । वारदात । हादसा (को०) ।

वकूफ—संज्ञा पुं० [अ० वकूफ] १ जानकारी । ज्ञान । २ बुद्धि । समझ ।

यौ०—वेवकूफ = मूर्ख ।

वक्त[1]—संज्ञा पुं० [अ० वक्त] १ समय । काल ।

मुहा०—वक्त काटना = (१) किसी प्रकार समय बिताना । (२) जी बहलाना । वक्त की चीज = (१) किसी समय या ऋतु विशेष मे मिलनेवाली चीज । (२) किसी विशेष समय मे गाया जानेवाला गीत या राग । जैसे,—कोई वक्त की चीज गाइए । वक्त खोना = समय नष्ट करना ।

२ किसी बात के होने का समय । अवसर । मौका ।

मुहा०—वक्त पर = अवसर आने पर । कोई विशेष परिस्थिति होने पर । जैसे,—इसे रख छोडो, वक्त पर काम आवेगी । वक्त ताकना = मौका देखना । इस बात की प्रतीक्षा मे रहना कि कब उपयुक्त अवसर मिले और कोई बात करूँ । वक्त हाथ से देना = अवसर चूकना । मौका आने पर भी काम न करना ।

३ इतना समय कि कोई काम किया जा सके । अवकाश । फुरसत ।

क्रि० प्र०—निकलना ।—निकालना ।—मिलना ।

४ विपत्काल । मुसीबत का समय (को०) । ५ मौसिम (को०) । ६ मरने का नियत समय । मृत्युकाल ।

क्रि० प्र०—आ जाना ।—आ पहुँचना ।

वक्त(पु)[2]—वि० सं० वक्तृ, वक्ता दे० 'वक्ता' । उ०—उनईस सहस सग-ग्रह पुरान । श्रोतान वक्त भक्ती उरान ।—पृ० रा० १।५० ।

वक्तन् फौक्तन्—क्रि० वि० [अ० वक्तन् फौक्तन्] यदाकदा । कभी कभी । २ यथासमय ।

वक्तव्य[1]—वि० [सं०] १ कहने योग्य । वाच्य । २ कुछ कहने सुनने लायक । ३ हीन । तुच्छ । ४ जिम्मेदार । उत्तरदायी । ५ आधारित । निर्भर । आश्रित (को०) ।

वक्तव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन । वचन । २ वह बात जो किसी विषय मे कहनी हो । ३ निंदा । बुराई (को०) । ४ नियम (को०) । ६ सीख । शिक्षा (को०) ।

वक्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दोषारोपण । तिरस्कार । २. निर्भरता । पराधीनता [को०] ।

वक्तव्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वक्तव्यता' [को०] ।

वक्ता—वि० [सं० वक्तृ] १ वाग्मी । बोलनेवाला । २ भाषणपटु । वदान्य । ३ ईमानदार (को०) ।

वक्ता[2]—संज्ञा पुं० १ कथा कहनेवाला पुरुष । व्यास । उ०—सूत तहँ कथा भागवत की कहत है ऋषि अठासी सहस सुने श्रोता । राम को देखि सनमान सब ही कियो सूत नहिं उठ्यो निज जानि वक्ता ।—सूर (शब्द०) । २ शिक्षक । अध्यापक (को०) । ३ बुद्धिमान् । मेधावी व्यक्ति (को०) ।

वक्तुकाम—वि० [सं०] बोलने की इच्छा रखनेवाला [को०] ।

वक्तुमना—वि० [सं० वक्तुमनस्] जो बोलना चाहता हो । जिसके मन मे बोलने की इच्छा हो [को०] ।

वक्तृक—वि० [सं०] बोलनेवाला । वक्तृता देनेवाला [को०] ।

वक्तृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाग्मिता । वाक्पटुता । २ व्याख्यान । ३ कथन । भाषण ।

वक्तृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्तृता । वाग्मिता । २ व्याख्यान । प्रवचन । ३ कथन । भाषण ।

वक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख । २ तगर की जड । ३ एक प्रकार का छद जो अनुष्टुप छद के अनुरूप होता है । ४ काम का आरभ । ५ मुखाकृति । चेहरा (को०) । ६ दाँत (को०) । ७ बाण की नोक (को०) । ८ एक प्रकार का पहनावा ।

यौ०—वक्त्रज ।

वक्त्रखुर—संज्ञा पुं० [सं०] दत । दाँत [को०] ।

वक्त्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण । २ दाँत [को०] ।

वक्त्रताल—संज्ञा पुं० [सं०] वह ताल जो मुँह से उत्पन्न किया जाय । जैसे, वशी को बजाने से या मुँह मे वायु भरकर छोडने स ।

वक्त्रतुड—संज्ञा पुं० [सं० वक्त्रतुण्ड] गणेश ।

वक्त्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] तालु । तालू ।
वक्त्रपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] तोबडा [को०] ।
वक्त्रपरिस्पद—संज्ञा पुं० [सं० वक्त्रपरिस्पन्द] वार्ता । बात [को०] ।
वक्त्रबाहु संज्ञा पुं० [सं०] बाराही कद ।
वक्त्रभेदी—वि० [सं० वक्त्रभेदिन्] बहुत तीखा या चरपरा [को०] ।
वक्त्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] नारगी ।
वक्त्रशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुजा । घुँघची ।
वक्त्रशोधी[१]—संज्ञा पुं० [सं० वक्त्रशोधिन्] जमीरी नीबू [को०] ।
वक्त्रशोधी[२]—वि० मुख को शुद्ध करनेवाला [को०] ।
वक्त्रासव—संज्ञा पुं० [सं०] लाला । थूक [को०] ।
वक्फ—संज्ञा पुं० [अ० वक्फ] १ वह भूमि या सपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो । किसी धर्म के काम मे लगी हुई जायदाद ।
क्रि० प्र०—करना ।
२ किसी धर्म के काम मे धन आदि देना । धर्मार्थ दान । ३ किसी के लिये चीज या धन सपत्ति आदि छोड देना (क्व०) ।
वक्फनामा—संज्ञा पुं० [अ० वक्फ् + फा० नामह्] वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्फ की जाय । दानपत्र ।
वक्फा—संज्ञा पुं० [अ० वक्फ़ा] १. अवकाश । अतर । छुट्टी । मोहलत ।
क्रि० प्र०—देना ।—मिलना ।
२. काम करने से विराम ।
क्रि० प्र०—मिलना ।
वक्र[१]—वि० [सं०] १ टेढा । बाँका । ऋजु का उलटा । २ झुका हुआ । तिरछा । ३ कुटिल । दाँवपेच चलनेवाला । ४ बेईमान (को०) । ५ निर्दय । क्रूर (को०) ।
वक्र[२]—संज्ञा पुं० १ नदी का मोड । बाँका । २ तगरपादुका । ३. शनैश्चर । ४ भौम । मगल । ५ रुद्र । ६ पर्पट । ७ वह ग्रह जिसमे तीस अश के अदर ही सूर्य हो । वक्री गह । ८ एक राक्षस का नाम । ९ त्रिपुरासुर । १० नासिका । नाक (को०) । ११ अस्थिभग का एक प्रकार (को०) ।
वक्रकट—संज्ञा पुं० [सं० वक्रकण्ट] बैर का वृक्ष । वक्रकटक ।
वक्रकटक—संज्ञा पुं० [सं० वक्रकण्टक] १. बैर का वृक्ष । २. खैर का पेड (को०) ।
वक्रकील—संज्ञा पुं० [सं०] अकुश [को०] ।
वक्रगति—संज्ञा पुं० [सं०] १ भौम । मगल । २ ग्रहलाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें हो । इस प्रकार मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, बृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है ।
वक्रगल—संज्ञा पुं० [सं० वक्र + गला] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है ।
वक्रगामी—वि० [सं० वक्रगामिन्] १ टेढ़ी चाल चलनेवाला । २. शठ । कुटिल ।
वक्रगुल्फ—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट ।
वक्रग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट । क्रमेलक [को०] ।
वक्रचचु—संज्ञा पुं० [सं० वक्रचञ्चु] तोता । शुक पक्षी ।
वक्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढापन । २ पीछे की ओर मुडने की क्रिया । ३ विफलता । असफलता । चूक । ४ कुटिलता [को०] ।
वक्रताल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाया जाता है । वक्रनाल ।
वक्रताली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वक्रताल' ।
वक्रतुड—संज्ञा पुं० [सं० वक्रतुण्ड] १. शुक पक्षी । तोता । २ गणेश ।
वक्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वक्रता' ।
वक्रदष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] शूकर । सूअर ।
वक्रदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टेढी दृष्टि । २ क्रोध की दृष्टि । ३ मद दृष्टि ।
वक्रधर—संज्ञा पुं० [हिं० वक्र + धर] द्वितीया का टेढा चंद्रमा धारण करनेवाले, शिव ।
वक्रधी[१]—वि० [सं०] टेढ़ी बुद्धिवाला । धूर्त । बेईमान [को०] ।
वक्रधी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] धूर्तता । बेईमानी । मक्कारी ।
वक्रनक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिशुन । चुगुलखोर । २ शुक पक्षी । तोता ।
वक्रनाल—संज्ञा पुं० [सं०] वक्रताल नाम का बाजा जो मुंह से फूँककर बजाया जाता है ।
वक्रनासिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] उल्लू ।
वक्रनासिक[२]—वि० टेढ़ी नाकवाला ।
वक्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] विभिन्न प्रकार की नक्काशी से युक्त कपडा । छीट [को०] ।
वक्रपाद—वि० [सं०] जिसका पैर टेढा हो ।
वक्रपुच्छ, वक्रपुच्छिक—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता ।
वक्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड । २ पलाश ।
वक्रबुद्धि—वि० [सं०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।
वक्रभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ टेढापन । २ धूर्तता [को०] ।
वक्रभुज—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश [को०] ।
वक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] भागना । अवक्रम । पलायन [को०] ।
वक्रमति—वि० [सं०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।
वक्रय[१]—संज्ञा पुं० [सं०] मूल्य । दाम ।
वक्रय[२]—संज्ञा पुं० [सं०] अवक्रम । भागना [को०] ।
वक्रवक्त्र—संज्ञा पुं० [वि०] शूकर । सूअर [को०] ।
वक्रशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कडवा कद्दू या घीया । २ लाल फूल की विपलागली ।
वक्रांग[१]—वि० [सं० वक्राङ्ग] जिसका अग टेढा हो ।
वक्रांग[२]—संज्ञा पुं० १. हस । २. सर्प । साँप ।

वक्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] टीन [को०]।

वक्रि—वि० [सं०] असत्यभाषी। झूठा [को०]।

वक्रित—वि० [सं०] जो टेढा हो गया हो।

वक्रिम—वि० [सं०] टेढा। कुटिल।

वक्रिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रिमन्] १ टेढापन। कुटिलता। २ कथन की भंगी [को०]।

वक्री¹—वि० [सं० वक्रिन्] १ अपने मार्ग को छोडकर पीछे लौटनेवाला।

विशेष—फलित ज्योतिष मे जो ग्रह अपनी राशि से एकबारगी दूसरी राशि मे चला जाता है, उसे अतिवक्री या महावक्री कहते हैं। यह वक्रता मंगल आदि पाँच ग्रहो मे भी होती है। विशेष दे० वक्रगति'।

२ कुटिल। टेढा (को०)। ३ धूर्त। मक्कार। फरेबी (को०)।

वक्री²—संज्ञा पुं० १ वक्र ग्रह। २ वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढे हों। ३ बुद्धदेव या जैन जिन्होने टेढी युक्तियो से वैदिक मत का विरोध किया था।

वक्रोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकर जिसमे काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २ काकूक्ति। ३ वह उक्ति जिसमे चमत्कार हो। बढिया उक्ति।

विशेष—किसी किसी आचार्य (जैसे 'वक्रोक्तिजीवितम्' के कर्ता) ने वाक्चातुर्य को ही काव्य की आत्मा कह दिया है, जिसका और आचार्यों ने खंडन किया है।

वक्रोक्तिजीवित—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य शास्त्र का एक ग्रंथ जिसमे वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा माना गया है। इसके रचयिता आचार्य 'कुंतक' थे।

वक्रोष्ठि, वक्रोष्ठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी मंद हँसी जिसमे दाँत न खुलें केवल ओठ कुछ टेढे हो जायँ। मुसकान। स्मित।

वक्वस—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मद्य।

वक्ष.स्थल—संज्ञा पुं० [सं०] उरस्थल। वक्ष।

वक्ष—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] १ पेट और गले के बीच मे पडनेवाला भाग जिसमे स्त्रियों के स्तन और पुरुषो के स्तन के से चिह्न होते हैं। छाती। उरस्थल। २. बैल। वृषभ। ३ शक्ति। बल। ताकत (को०)।

वक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाती। सीना। २ शक्ति वा स्फूर्तिदायक पदार्थ। ३ अग्नि। पावक [को०]।

वक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेट। उदर। २ नदी का पाट या चौडाई। ३ नदी [को०]।

वक्षथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ उगना। बडा होना।

वक्षस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] उर। छाती।

वक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्निशिखा।

वक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वंक्षु'।

वक्षोग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वक्षोज—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। कुच।

वक्षोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। कुच।

वक्षोमंडली—संज्ञा पुं० [सं० वक्षोमण्डलिन्] नृत्य में हाथों की एक मुद्रा या स्थिति [को०]।

वक्षोमणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मणि या रत्न जो वक्ष पर धारण किया जाय [को०]।

वक्ष्यमाण—वि० [सं०] १ वाच्य। वक्तव्य। २ जिसे कह रहे हो अथवा जो आगे या बाद मे कहा जानेवाला हो। जो कथन का प्रस्तुत विषय हो।

वखरुहं—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुह से निकला हुआ शब्द। बोल। वकार। २ अंश। भाग। वखरा। उ०—वखरु मानु करे वा पारु। नानक पाए मुक्ति द्वार।—प्राण०, पृ० १०४।

वखाणं—संज्ञा पुं० [हिं० बखान] दे० 'बखान'। उ०—मालव दस वखोडिया, मारू किया वखाण। मारू सोहागिणि वइ, सुंदरि मगुरा सुजाण। - ढोला०, दू० ६७२।

वगपती—संज्ञा स्त्री० [सं० वकपङ्क्ति] बगलो की पाँत। वकपंक्ति। उ०—दामन चलत मेत मिर दती। स्याम घटा मानहु वगपती—हिं० क० का०, पृ० २२३।

वगर¹—अव्य० [फा०] दे० 'अगर'। उ०—मेरे बर मे दोनो के नवा रग है। वगर नहीं तो तुम मूँ मेरा जग है।—दक्खिनी०, पृ० ३४८।

वगर(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० प्रघण, प्रा० पघण] महल। निवास। दे० 'वगर'। उ०—जडित नीलमणि जानु वगर सुदर चामीकर। नगर परम रमनीय सुथर सुरलोकहु ते वर।—दीन० ग्रं०, १४६।

वगरना—अव्य० [फा० वगरह्] अन्यथा। वर्ना। नही तो [को०]।

वगराना—क्रि० स० [सं० विकीर्णन] फैलाना। दे० 'बगराना'। उ०—कुसुम समूह रहत सुदर सुगंध वगराई।—प्रेमघन०, पृ० १६।

वगलवंदी—संज्ञा स्त्री० [फा० वगलबंदी] मिरजई। उ०—अत. वगलवंदी आई, पर वह भी न भई।—प्रेमघन० भा० २, पृ० २१६।

वगला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वगलामुखी'।

वगलामुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं मे से एक जिसकी पूजा का महत्व तंत्रों मे वर्णित है।

वगा—संज्ञा स्त्री० [अ० वगा] युद्ध। लडाई [को०]।

वगाह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'अवगाह' [को०]।

वगैरह—अव्य० [अ० वगरह] एक अव्यय जिसका अर्थ यह होता है कि 'इसी प्रकार और भी समझिए'। इत्यादि। आदि। जैसे,—बैल, ऊँट, हाथी, वगैरह बहुत से जानवर वहाँ आए थे।

विशेष—इसका प्रयोग वस्तुओं को गिनाने मे उनके नामो के अंत मे संक्षेप या लाघव के लिये होता है।

वग्ग¹—संज्ञा पुं० [सं० वर्ग, प्रा० वग्ग (=बाडा)] १ दे० 'वर्ग'। समूह। शाला। (लाच०)। उ०—ढोलह चित्त विमासियउ, मारू देस अलग्ग। आपण जाए जोइयउ, करहा हुदउ वग्ग। —ढोला०, दू० ३०७।

वग्ग(पु)[2]—संज्ञा पुं० [अ० बाग] बगीचा । बाग । उ०—फूले सुगंध के बरन फूल । देखत वग्ग पावस्स भूल ।—पृ० रा०, १४।६८ ।

वग्ग[3]—संज्ञा स्त्री० [स० वल्गा, प्रा० वग्ग] लगाम । उ०—फेरे वग्ग तुरग री, तोले खग्ग करग्ग । —रा० रू०, पृ० ३२ ।

वग्गना(पु)—क्रि० अ० [सं०√वल्ग्, प्रा० वग्ग (=दहाड़ना) + हिं० ना (प्रत्य०)] तीव्र ध्वनि करना । गरजना । बजना । उ०—बजे त्रब जंगी गढे नाल वग्गी । लजावत जंगी दूहूँ दीठ लग्गी ।—रा० रू०, पृ० १८६ ।

वग्नु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक्ता । वाचक । २ शब्द । आवाज । ध्वनि । ३ (किसी पशु की) चिल्लाहट [को०] ।

वग्नु[2]—वि० बकवादी [को०] ।

वग्वनु—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि [को०] ।

वचंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० वचण्डी] १ सारिका । मैना । २ दीप की बत्ती । बत्ती । ३ एक शस्त्र का नाम ।

विशेष—मेदिनी कोश मे इस शब्द का पाठ 'वचडा' और 'वरडा' है ।

वचंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० वचन्दा] दे० 'वचंडी' [को०] ।

वच[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ तोता । शुक पक्षी । २ वजह । कारण । हेतु । ३ सूर्य ।

यौ०—वचार्च=सूर्यपूजक ।

वच[2]—संज्ञा पुं० [वचस्, वचन] १ वचन । वाक्य । २. आज्ञा । आदेश (को०) । ३ सलाह । मत्रणा । परामर्श (को०) । ४ चिड़ियों की चहचह ध्वनि (को०) । ५ स्तुति । स्तवन (को०) । ६. (व्याकरण मे) शब्द के रूप मे वह विधान जिससे एकत्व आदि का बोध होता है । दे० 'वचन'–३ ।

वचक्नु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण [को०] ।

वचक्नु[2]—वि० बकवादी । वग्नु । बहुत बोलने या बडबडानेवाला [को०] ।

वचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द । वाणी । वाक्य ।

पर्या०—इरा । सरस्वती । ब्राह्मी । भाषा । गिरा । गीर्देवी । भारती । वरजा । वर्णमातृका । व्याहार । लपित ।

२ कही हुई बात । कथन । उक्ति ।

यौ०—वचनबद्ध । वचनगुप्ति ।

३ व्याकरण मे शब्द के रूप मे वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है ।

विशेष—हिंदी मे दो ही वचन होने है—एकवचन और बहुवचन । पर कुछ और प्राचीन भाषाओं के समान संस्कृत मे एक तीसरा वचन द्विवचन भी होता है ।

४. बोलना । बोलने की क्रिया । उच्चारण । वाचन (को०) । ५ शास्त्रों का उधृत अंश । जैसे शास्त्रवचन, श्रुतिवचन (को०) । ६. आदेश (को०) । ७ मंत्रणा । परामर्श (को०) । ८ घोषणा । प्रख्यापन (को०) । ९. शब्द का अर्थ या भाव (को०) । १०. सोंठ शुंठी (को०) ।

वचनकर—वि० [सं०] १. दे० 'वचनकारी' । २. किसी नियम या आदेश का लेखक या उद्घोषक ।

वचनकारी—वि० [सं० वचनकारिन्] आज्ञाकारी ।

वचनक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] आज्ञापालन [को०] ।

वचनगुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन धर्म के अनुसार वाणी का ऐसा संयम जिससे वह अशुभ वृत्ति मे प्रवृत्त न हो ।

वचनगोचर—वि० [सं०] जो वाणी द्वारा व्यक्त हो । कथन द्वारा व्यक्त [को०] ।

वचनगौरव—संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा की गुरुता । आदेश के प्रति आदर भाव [को०] ।

वचनग्राही—वि० [सं० वचनग्राहिन्] आज्ञा का पालन करनेवाला [को०]

वचनपटु—वि० [सं०] बातचीत करने मे कुशल [को०] ।

वचनबद्ध—वि० [सं०] प्रतिज्ञाबद्ध । प्रतिश्रुत [को०] ।

वचनरचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कथन, लेखन, भाषण की प्रभावशाली शब्दावली [को०] ।

वचनलक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसका उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता है । जैसे,—अगन की छबि भूषन की रघुनाथ सराहि सबै सिहराते । आपनी प्रीति, मया उनकी प्रगटी प्रगटे सुख के हियरातें । काहे के आजु छिपावति हौ हमसो करि ये चतुराई की घातें । मै निज कान सुनी जो कही यह काल्हि सखी सो गोपाल की बातें ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

वचनविदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नायिकाओं का एक भेद । वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो । जैसे,—जब लौं घर को धनी आवै घरै तब लौं तो कहूँ चित दैबो करो । पदमाकर ये बछरा अपने बछरान के सग चरैबो करो । अरु औरन के घर तें हम सो तुम दूनी दुहावन लैबो करो । नित साँझ सकारे हमारी हहा । हरि गैयन को दुहि जैबो करो ।—पद्माकर (शब्द०) ।

वचनव्यक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी उक्ति का ठीक ठीक आशय । २ भाष्य । विवृति । निर्वचन । व्याख्या [को०] ।

वचनसहाय[1]—वि० [सं०] सहायता का वचन देनेवाला [को०] ।

वचनसहाय[2]—संज्ञा पुं० १. कथन द्वारा की गई सहायता । २ मित्र [को०] ।

वचनस्थित—वि० [सं०] बात पर दृढ रहनेवाला [को०] ।

वचनावक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] अवक्षेप से भरे वचन का कथन [को०] ।

वचनीय—वि० [सं०] १ कथनीय । २ निंदनीय (को०) ।

वचनीय[2]—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा । शिकायत ।

वचनोपक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्य का आरंभ [को०] ।

वचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुक्कुट । २ शठ ।

वचलु—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुश्मन । शत्रु । २. दुष्ट व्यक्ति [को०] ।

वचस[1]—वि० [सं०] १ कुशल । चतुर । २. वाचाल [को०] ।

वचसांपति—संज्ञा पुं० [सं० वचसाम्पति] बृहस्पति [को०] ।

वचसा—अव्य० [सं०] वचन द्वारा । कथन द्वारा [को०] ।

वचस्कर—वि० [स०] १ आज्ञाकारी । २ बोलनेवाला [को०] ।

वचस्वी—वि० [स० वचस्विन्] बोलने मे पटु । प्रवक्ता ।

वचा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वच नाम की ओषधि । विशेष दे० 'वच' । २ सारिका पक्षी । मैना ।

वचार—सज्ञा पु० [?] दे० 'विचार' । उ०—वाँहे सुदरि वहरखा, चासू चुडस वचार । मनुहरि कटि वल मेसता, पग झाँझर झणकार ।—ढोला०, दू० ४८१ ।

वचोग्रह—सज्ञा पु० [स०] कर्ण । कान [को०] ।

वचोहर—सज्ञा पु० [स०] दूत । सदेशवाहक [को०] ।

वच्छ(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० वक्षस्, प्रा० वच्छ] उर । छाती ।

वच्छ[२]—सज्ञा पु० [स० वत्स, प्रा० वच्छ] दे० 'वत्स' ।

वजग—सज्ञा पु० [अ० वजग] दे० 'वजगा' [को०] ।

वजगा—सज्ञा पु० [अ० वज़्ग़ह्] १ मडूक । मेढक । २ गृहगोधा । छिपकिली । ३ गिरगिट । कृकलास [को०] ।

वजन—सज्ञा पु० [अ० वज़न] १ भार । बोझ । २ तौल । ३ तौलने की क्रिया । ४ मान । मर्यादा । गौरव ।

क्रि० प्र०—करना ।—रखना ।

यौ०—वजनदार = दे० 'वजनी' ।

वजनी—वि० [अ० वज़्न + ई] १ जिसका बहुत बोझ हो । भारी । २ जिसका कुछ असर हो । मानने योग्य ।

वजर(पु)†[१]—सज्ञा, पु० [स० वज्र] दे० 'वज्र' । उ०—एक अनेकाँ सूँ हिचै, छाती वजर कपाट ।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ५ ।

यौ०—वजरकपाट = वज्र के समान दरवाजा ।

वजर[२]—सज्ञा पु० [अ०] भय । डर । खौफ [को०] ।

वजह—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कारण । हेतु । २ प्रकृति । ३ तत्व । ४ मुखाकृति । चेहरा (को०) ।

वजा—सज्ञा स्त्री० [अ० वजअ] १ सघटन । बनावट । रचना । २ चालढाल । सजधज । ३ रूप । आकृति । ४ दशा । अवस्था । ५ रीति । प्रणाली । तौर तरीका । उ०—इनकी रहन सहन वजा अदाज और कार्यो मे.. ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७७ । ६ मुजरा । मिनहा । कटती । ७ जनना । प्रसव (को०) ८ रखना (को०) । ९ सदैव एक समान रहना और यथायोग्य व्यवहार करना । (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वजादार—वि० [अ० वजा + फा० दार] १ जिसकी बनावट या गठन आदि बहुत अच्छी हो । तरहदार । दर्शनीय । २ अपनी रीतिनीति पर कायम रहनेवाला । जो अपनी वजा का पाबद हो (को०) ।

वजादारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वजा + फ़ा० दारी] १ कपडे वगैरह पहनने का सुदर ढग । फैशन । २ सजावट का उत्तम ढग । ३ किसी प्रकार की मर्यादा आदि का भली भाँति निर्वाह । ३ उ०—प्राय स्त्रियो के नाज व अदाज के कारण नजाकत वजादारी से रहित न हो प्रचलित थी ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ५ ।

वजारत—सज्ञा स्त्री० [अ० वज़ारत] १ मत्री, वजीर या अमात्य का पद । वजीरी । २ मत्री या अमात्य का कार्य । ३, अमात्य का कार्यालय ।

वजाहत[१]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुदरता । भव्यता । चेहरे का रोब । उ०—कहते हैं जो था कोई सौदागर एक । वजाहत मन पाक सीरत मे नेक ।—दक्खिनी०, पृ० ७ । २ प्रतिष्ठा । महत्व । बडप्पन ।

वजाहत[२]—सज्ञा स्त्री० [अ० वज़ाहत] १, स्पष्टता । विवरण । २ विस्तार । फैलाव [को०] ।

वजीफा—सज्ञा पु० [अ० वज़ीफ़ह्] १ वृत्ति । उ०—याद करना हर घडी तुझ यार का । है वजीफा मुझ दिले बीमार का ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६ । २ वह वृत्ति या आर्थिक महायता जो विद्वानो, छात्रो, सन्यासियो, दीनो या बिगडे हुए रईसो आदि को दी जाती है । ३ निवृत्त वेतन । पेनशन (को०) । ४ वह जप या पाठ जो नियमपूर्वक प्रतिदिन किया जाता है । (मुसलमान) । उ०—प्रात काल नमाज वजीफा पढिके चट पट ।—प्रमघन०, भा० १, पृ० २० ।

क्रि० प्र०—पढना ।

वजीफादार—वि० [अ० वजीफह् + फा० दार] वजीफा पानेवाला ।

वजीर—सज्ञा पु० [अ० वज़ीर] १, वह जो बादशाह का रियासत के प्रबध मे सलाह या सहायता दे । मत्री । अमात्य । दीवान । २ शतरज की एक गोटी ।

विशेष—यह बादशाह से छोटी और शेष सब मोहरो से बडी होती है । यह गोटी आगे, पीछे, दाहिने, बाए और तिरछे जिधर चाहे, उधर और जितने घर चाहे, उतने घर चल सकती है ।

यौ०—वजीरे आजम = प्रधान मत्री । वजीरे इसाफ = न्यायमत्री । वजीरे खारिजा = परराष्ट्रमत्री, वजीरे गिजा = खाद्यमत्री । वजीरे जग = युद्धमत्री । वजीरे तालीम = शिक्षामत्री । वजीरे दाखिला = गृहमत्री । वजीरे माल = अर्थमत्री ।

वजीरी[१]—सज्ञा स्त्री० [अ० वजीरी] वजीर का काम या पद ।

वजीरी[२]—सज्ञा पुं० १ सरहदी पठानो का एक वर्ग या कबीला । २ घोडो की एक जाति जो बलूचिस्तान मे पाई जाती है ।

विशेष—इस जाति के घोडे बडे परिश्रमी और दौडने मे बहुत तेज होते है । इनके कधे ऊँचे और पुट्ठे चौडे होते हैं ।

वजीह—वि० [अ०] दृढ । मजबूत [को०] ।

वजीहा—वि० [अ० वजीहह्] १ सुदर । भव्य । रोबदार । २ सामान्य । विशिष्ट [को०] ।

वजू—सज्ञा पुं० [अ० वुज़ू] नमाज पढने के पूर्व शौच के लिये हाथ पाँव आदि धोना । उ०—का भो वजू व मजन कीन्हे का मसजिद सिर नाएँ । हृदया कपट निमाज गुजारै का भो मक्का जाएँ । कबीर (शब्द०) ।

विशेष—मुसलमानो का नियम है कि नमाज पढने के पूर्व वे पहले तीन बार हाथ धोते, फिर तीन बार कुल्ली करके नथनो मे पानी देते ह। फिर मुँह धोकर कुहनियो तक हाथ धोते है, और सिर पर पानी लगे हाथ फेरते है। अत मे पाँव धोते हैं। इसी आचार का नाम वजू है।

क्रि० प्र०—करना।

वजूद—सज्ञा पुं० [अ०] १ सत्ता। स्थिति। अस्तित्व। उ०—नाही खबर वजूद की मै फकीर दिवाना।—मलूक० बानी, पृ० ७। २ शरीर। देह। उ०—वजूद खजाना अलह का, जर अदर अरि वाहि। रज्जब पीर खजानची, दसत न सकई बाहि।—रज्जब०, पृ० १८। ३ सृष्टि। ४ प्रकट या घटित होना। अभिव्यक्ति।

मुहा०—वजूद पकडना = प्रकट होना। अस्तित्व मे आना। वजूद मे आना = उत्पन्न होना। प्रकट होना। वजूद मे लाना = उत्पन्न करना।

वजूहात—सज्ञा स्त्री० [अ० वजूह का बहु० रूप] कारणो का समूह।

विशेष—यह बहुवचन शब्द है, और इसका प्रयोग भी सदा बहुवचन मे ही होता है।

वजेकता—सज्ञा पु० [अ० वजए+कत्अ्] बनावट। तर्ज। ढग। उ०—और फकीराना मकान होने की शहादत अपनी वजेकता और तर्जे तामीर से ब जवाने हाल खुद ही दे रहा है।—सुदर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० ५३।

वजेदारी—सज्ञा स्त्री० [फा० वज्अदारी] दे० 'वजादारी'। उ०—पडित पुरुषोत्तमदास ने बडी वजेदारी से कहा।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १७०।

वजोग(पु)—सज्ञा पु० [स० वियोग] दे० 'वियोग'। उ०—किसन वजोग चारणाँ कारण गलियो जुजठल राव गत।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ११२।

वज्जित(पु)—सज्ञा, पु० [स० वादित्र] वादित्र। बाजा। उ०—वज्जित्त नृघोष अरि घोष पर, छोरि पग दिष्षे सु हय।—पृ० रा०, २६।१४।

वज्द—सज्ञा पु० [अ०] १ आनदातिरेक मे होनेवाली आत्मविस्मृति। २. काव्य या सगीत की रसानुभूतिजन्य तन्मयता। ३ आनद की स्थिति मे आपा भूला हुआ व्यक्ति [को०]।

वज्र[१]—सज्ञा पु० [स०] १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है।

विशेष—इसकी उत्पत्ति की कथा ब्राह्मण ग्रथो और पुराणो मे लिखी हुई है। ऋग्वेद मे उल्लेख है कि दधीचि ऋषि की हड्डी से इंद्र ने राक्षसो का ध्वस किया। ऐतरेय ब्राह्मण मे इसका इस प्रकार विवरण है। दधीचि जब तक जीते थे, तब तक असुर उन्हे देखकर भाग जाते थे पर जब वे मर गए, तब असुरो ने उत्पात मचाना आरभ किया। इद्र दधीचि ऋषि की खोज मे पुष्कर गए। वहाँ पता चला कि दधीचि का देहावसान हो गया। इसपर इद्र उनकी हड्डी ढूँढने लगे। पुष्कर क्षेत्र मे सिर की हड्डी मिली। उसी का वज्र बनाकर इंद्र ने असुरो का सहार किया। भागवत मे लिखा है कि इद्र ने वृत्रासुर का वध करने के लिये दधीचि की हड्डी से वज्र बनवाया था। मत्स्यपुराण के अनुसार जब विश्वकर्मा ने सूर्य को भ्रमयत्र (खराद) पर चढाकर खरादा था, तब छिलकर जो तेज निकला था, उसी से विष्णु का चक्र, रुद्र का शूल और इद्र का वज्र बना था। वामनपुराण मे लिखा है कि इद्र जब दिति के गर्भ मे घुस गए थे, तब वहाँ उन्हे बालक के पास ही एक मासपिंड मिला था। इंद्र ने जब उसे हाथ मे लेकर दबाया, तब वह लबा हो गया और उसमे सौ गाँठें दिखाई पडी। वही पीछे कठिन होकर वज्र बन गया। इसी प्रकार और और पुराणो मे भी भिन्न भिन्न कथाएँ है।

पर्या०—ह्लादिनी। कुलिश। भिदुर। पवि। शतकोटि। स्वरु। शब। दभोलि। अशनि। स्वरुम्। जभारि। शतार। शतधार। आपोत्र। अब्जज। गिरिकटक। गो। अक्षोभ्य। दभ, इत्यादि। वदिक निघटु के अनुसार—विद्युत्। नेमि। हेति। नम। पवि। सृक्। वृक। वच। अर्क। कुत्स। कुलिश। तुज। तिग्म। मेनि। स्वधिति। सायक परशु।

२ विद्युत्। बिजली।

क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।

मुहा०—वज्र पडे = दैव से भारी दड मिले। सत्यनाश हो। (स्त्रियाँ)।

३ हीरा। उ०—मुझे बडी दयापूर्वक एक अमोल वज्र की अँगूठी केवल स्मरणार्थ दे गए थे।—श्यामा०, पृ० १२७। ४ एक प्रकार का लोहा। फौलाद।

विशेष—वैद्यक के ग्रथो मे वज्रलौह के अनेक भेद कहे गए है। यथा—नीलपिड, अरुणाभ, मोरक, नागकेसर, तित्तिराग, स्वर्णवज्र, शैवालवज्र, शेणवज्र, रोहिणी, काकोल, ग्रथिवज्रक, और मदन।

५ भाला। बरछा। उ०—हरत रुक्मिनी होत है, दुहूँ ओर भई भीर। अति अघात, कछु नाहिन सूझत, वज्र, चलहि ज्यो नीर। सूर० (शब्द०)। ६ ज्योतिष मे २२ व्यतीपात योगो मे से एक। ७ वास्तुविद्या के अनुसार वह स्तंभ (खभा) जिसका मध्य भाग अष्टकोण हो। ८ विष्णु के चरण का एक चिह्न। ९ अभ्रक। १० कोकिलाक्ष वृक्ष। ११ श्वेत कुश। १२ काँजी। १३ वज्रपुष्प। १४ धात्री। १५. थूहर का पेड। सेहुँड। १६ कृष्ण के एक प्रपौत्र जो अनिरुद्ध के पुत्र थे। १७ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। १८ बौद्ध मत मे चक्राकार चिह्न। १९ बालक। शिशु (को०)। २०. आसन की एक मुद्रा या स्थिति। बैठने का एक प्रकार (को०)। २१ एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)। २२ रत्न, मणि आदि छेदने का एक औजार (को०)। २३ वज्रवत् कठोर एव घातक अस्त्र (को०)। २४. कठोर भाषा। वज्र की तरह कठोर भाषा (को०)। २५. अकलबीर नाम का पौधा।

वज्र[२]—वि० १. वज्र के समान कठिन। बहुत कडा या मजबूत। अत्यत

दृढ और पुष्ट । जैसे,—यह मसाला जब सूखेगा, तब वज्र हो जायगा । २ घोर । दारुण । भीषण । उ०—वज्र अगिनि बिरहिनि हिय जारा । सुलगि सुलगि दहि कै भइ छारा ।—जायसी (शब्द०) । ३ जिसमे अनी या शल्य हो । अनीदार । काँटेदार ।

वज्रककट—संज्ञा पु० [सं० वज्रकङ्कट] हनुमान का एक नाम ।

वज्रकटक—संज्ञा पु० [सं० वज्रकण्टक] स्नुही वृक्ष । थूहर । सेंहुड । २ कोकिलाक्ष वृक्ष ।

वज्रकटशाल्मली—संज्ञा पु० [सं० वज्रकण्टशाल्मली] भागवत पुराण के अनुसार अट्ठाईस नरको मे से एक नरक का नाम ।

वज्रकद—संज्ञा पु० [सं० वज्रकन्द] १. जगली सूरन या जिमीकद । २ शकरकद । कदा । ३. ताल के वृक्ष का फूल ।

वज्रक—संज्ञा पु० [सं०] १. वज्रक्षार । २. फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य के आठ उपग्रहो में से एक, जो सूर्य से तेईसवा नक्षत्र होता है । ३ एक प्रकार का तेल (को०) । ४ हीरा (को०) ।

वज्रकपाली—संज्ञा पु० [सं० वज्रकपालिन्] बौद्धो की महायान शाखा के अनुसार एक बुद्ध का नाम ।

वज्रकर्ण—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वज्रकद' (को०) ।

वज्रकपण—संज्ञा पु० [सं०] इद्र (को०) ।

वज्रकवच—संज्ञा पुं० [सं०] १ समाधि का एक भेद । एक प्रकार का समाधि । २ वह कवच जिसे काटा न जा सके । वज्र के समान दुर्भेद्य कवच (को०) ।

वज्रकारक—संज्ञा सं० [सं०] नख नामक सुगंधित द्रव्य ।

वज्रकालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध की माता मायादेवी का नाम ।

वज्रकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनो की एक शक्ति (को०) ।

वज्रकीट—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का कीडा जो पत्थर या काठ को काटकर उसमे छेद कर देता है ।

विशेष—कहते हैं, गडक नदी मे इन कीटो के द्वारा काटी हुई शिला ही शालग्राम की बटिया बन जाती है ।

वज्रकील—संज्ञा पु० [सं०] सौदामिनी । तडित् । बिजली (को०) ।

वज्रकुच—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि ।

वज्रकूट—संज्ञा पु० [सं०] १ एक पर्वत का नाम । २ हिमालय की चोटी पर का एक प्राचीन नगर ।

वज्रकेतु—संज्ञा पु० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक राक्षस जो नरक का राजा था । नरकासुर ।

वज्रक्षार—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक मे एक रसायन योग जिसका व्यवहार गुल्म, शूल, अजीर्ण, शोथ तथा मदाग्नि आदि उदर रोगो मे होता है ।

विशेष—साँभर, सैंधव, काच और सौवर्चल लवण तथा जवाखार और सज्जी सम भाग लेकर चूर्ण करते हैं, और उसको थूहर के दूध मे भिगोकर तीन दिन तक छाया मे सुखाते हैं । इसके उपरात उस चूर्ण को आक (मदार) के पत्तो मे लपेटकर एक घडे मे गजपुट द्वारा फूँकते हैं । जब वह भस्म हो जाता है, तब उसमे सोठ, मिर्च पीपल, त्रिफला, अजवायन, जीरा और चित्रक (चीता) का चूर्ण उतना ही मिलाकर खरल कर लेते है और दो टक मात्रा मे सेवन कराते है । इसका अनुपान उष्ण जल, गोमूत्र, घी या काँजी है ।

वज्रगर्भ—संज्ञा पु० [सं०] बौद्धो की महायान शाखा के अनुसार एक बोधिसत्व का नाम ।

वज्रगोप—संज्ञा पु० [सं०] बीरबहूटी नाम का कीडा । इद्रगोप ।

वज्रघात—संज्ञा पु० [सं०] १ वज्र की चोट । २ वह चोट जो वज्र की चोट के समान भयकर हो (को०) ।

वज्रघोष—संज्ञा पु० [सं०] १ बिजली की कडक । २ बिजली की कडक के समान भीषण ध्वनि (को०) ।

वज्रचचु—संज्ञा पु० [सं० वज्रचञ्चु] गृद्ध (को०) ।

वज्रचर्मा—संज्ञा पु० [सं० वज्रचर्मन्] गैडा ।

वज्रजित्—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड का एक नाम (को०) ।

वज्रज्वाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरोचन दैत्य की पौत्री का नाम । २ कुभकर्ण की पत्नी । ३ बिजली की अग्नि (को०) ।

वज्रटीक—संज्ञा पुं० [सं०] वज्रकपाली बुद्ध का एक नाम (को०) ।

वज्रडाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महायान शाखा के तांत्रिक बौद्धो की उपास्य डाकिनियो का एक वर्ग ।

विशेष—इस वर्ग के अतर्गत ये आठ डाकिनियाँ मानी जाती हैं,—लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा और गधा । इनकी पूजा तिब्बत मे होती है ।

वज्रतर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार का जोडने या पलस्तर करने का मसाला । वज्रलेप (को०) ।

वज्रतुड—संज्ञा पु० [सं० वज्रतुण्ड] १ गरुड । २ गणेश । ३ गीध । ४ मशक । मच्छड । ५ थूहर । सेहुँड ।

वज्रतुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम (को०) ।

वज्रदड—संज्ञा पुं० [सं० वज्रदण्ड] एक अस्त्र का नाम जिसे इद्र ने अर्जुन को प्रदान किया था ।

वज्रदत—संज्ञा पु० [सं० वज्रदन्त] १ चूहा । २ सूअर ।

वज्रदती—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रदन्ती] एक प्रकार का पेड या पौधा ।

विशेष—इसकी दतुवन अच्छी होती है और वैद्यक मे इसकी जड वमनकारक कही गई है ।

वज्रदष्ट्र—संज्ञा पु० [सं०] १ इद्रगोप नाम का कीडा । बीरबहूटी । २ भागवत के अनुसार एक असुर का नाम ।

वज्रदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] इद्र का एक नाम (को०) ।

वज्रदशन—संज्ञा पुं० [सं०] चूहा (को०) ।

वज्रदेह—वि० [सं०] वज्र के समान कठोर शरीरवाला (को०) ।

वज्रदेहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम ।

वज्रद्रुम—संज्ञा पु० [सं०] थूहर का वृक्ष । स्नुही । सेहुड़ ।

वज्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ बौद्धों की महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध।

विशेष—तिब्बत के तांत्रिक बौद्ध मतानुसार ये प्रधान बुद्ध, प्रधान जिन, गुह्यपति तथा सब तथागतों के प्रधान मंत्री आदि अनंत और वज्रसत्व हैं। अपदेवताओं ने उनसे हार मानकर प्रतिज्ञा की थी कि बौद्ध धर्म के विरुद्ध कभी प्रयत्न न करेंगे।

३ उल्लू। उलूक।

वज्रधात्वीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक देवी जिसकी उपासना तांत्रिक करते हैं। २ वैरोचन की पत्नी [को०]।

वज्रधार—वि० [सं०] जिसका धार हीरे की तरह कठिन होता है [को०]।

वज्रधारण—संज्ञा पुं० [सं०] नकली सोना। कृत्रिम सोना [को०]।

वज्रनख—संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह।

वज्रनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्कंद के एक अनुचर का नाम। २. एक दानवराज। ३. राजा उक्थ के पुत्र का नाम। ४ विष्णु के चक्र का नाम को (को०)।

वज्रनिर्घोष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वज्रघोष'।

वज्रपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हीरे की परख [को०]।

वज्रपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ ब्राह्मण। ३ बौद्धशास्त्रानुसार एक प्रकार की देवयोनि। ४. एक बोधिसत्व। ध्यानी बोधिसत्व। ५ उलूक। उल्लू (को०)।

वज्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजली का गिरना। २ भारी विपत्ति का आना [को०]।

वज्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ तिल का फूल। २ एक विशिष्ट गुणवान कीमती पुष्प [को०]।

वज्रपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतपुष्पा [को०]।

वज्रप्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक विद्याधर का नाम।

वज्रबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २. रुद्र। ३ अग्नि।

वज्रबीजक—संज्ञा पुं० [सं०] लता [को०]।

वज्रभृकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार तंत्र की एक देवी जिसकी उपासना तांत्रिक करते हैं [को०]।

वज्रभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र [को०]।

वज्रभैरव—संज्ञा पुं० [सं०] महायान शाखा के बौद्धों के एक देवता, जिन्हें भूटान में 'यमांतक शिव' कहते हैं। इनके अनेक मुख और हाथ माने जाते हैं।

वज्रमणि—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।

वज्रमय—वि० [सं०] १ कठोर। कठिन। २ क्रूर हृदय। कठिन हृदयवाला [को०]।

वज्रमति—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व [को०]।

वज्रमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का कीड़ा। वज्रकीट। २ एक प्रकार की समाधि [को०]।

वज्रमुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. एक राक्षस का नाम। ३ जंगली सूरन। ४. वीर। क्षत्रिय। योद्धा (को०)। ५. एक अस्त्र (को०)। ६ वज्र के समान हाथ की बँधी हुई मुट्ठी (को०)। ७ तीर चलाने के समय हाथ की मुद्रा (को०)।

वज्रमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] माषपर्णी।

वज्रयान—संज्ञा पुं० [सं०, प्रा० वज्जजाण] वह बौद्ध मत जिसपर तंत्र का बहुत अधिक प्रभाव था। उ०—उस काल की रचना के नमूने बौद्धों की वज्रयान शाखा के सिद्धों की कृतियों के बीच मिले हैं।—इतिहास, पृ० ६।

वज्रयोगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार एक देवी। इसे वरदयोगिनी भी कहते हैं।

वज्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रिय।

वज्ररद—संज्ञा पुं० [सं०] सूकर [को०]।

वज्रलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिखने की एक विशेष रीति [को०]।

वज्रलेप—संज्ञा पुं० [सं०] एक मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि अत्यंत दृढ़ और मजबूत हो जाती है।

विशेष—यह दो तरह से बनता है। एक में तो तेंदू और कैथ के कच्चे फल, सेमल के फूल, शल्लकी (सलई) के बीज, धन्वन की छाल और बच को लेकर एक द्रोण पानी में उबालते हैं। जब जलकर आठवाँ भाग रह जाता है, तब उसे उतारकर उसमें गंधाबिरोजा, बोल, गूगल, भिलावाँ, कुंदुरु, गोंद, राल, अलसी और बेल का गूदा घोटकर मिलाते हैं। दूसरा मसाला इस प्रकार है—लाख, कुंदुरु, गोंद, बेल का गूदा, गँगेरन का फल, तेंदू का फल, महुए का फल, मजीठ, राल, बोल और आँवला इन सबको द्रोण भर पानी में उबालते हैं। जब अष्टमांश रह जाता है, तब काम में लाते हैं।

वज्रलोहक—संज्ञा पुं० [सं०] चुंबक [को०]।

वज्रवध—संज्ञा पुं० [सं०] १ अशनिपात जन्य मृत्यु। वज्रपात से हुई मौत। २ वज्र के समान कठोर आघात [को०]।

वज्रवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्थिसंहार नाम की लता [को०]।

वज्रवारक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार जैमिनि, सुमंत, वैशंपायन, पुलस्त्य, और पुलह नामक पाँच ऋषि, जिनका नाम लेने से वज्रपात का भय नहीं रहता।

वज्रवाराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बौद्धों की एक देवी का नाम।

पर्या०—मारीची। त्रिमुखा। वज्रकालिका। विकटा। गौरी।

२ बुद्ध की माता मायादेवी का नाम।

वज्रविष्कंभ—संज्ञा पुं० [सं० वज्रविष्कम्भ] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

वज्रवीर—संज्ञा पुं० [सं०] महाकाल रुद्र का एक नाम।

वज्रवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेहुँड [को०]।

वज्रवेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक राक्षस का नाम। २ एक विद्याधर का नाम।

वज्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सेना की रचना, जो दुधारे खड्ग के आकार में स्थित की जाती थी।

वज्रशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] साही नाम का वन्य जंतु। शल्यक [को०]।

वज्रशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मत के एक संप्रदाय का नाम जिसे वज्रस्वामी ने चलाया था।

वज्रशृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रशृङ्खला] जैन मतानुसार सोलह महाविद्याओं में से एक।

वज्रसंघात—संज्ञा पुं० [सं० वज्रसङ्घात] १ भीमसेन। २ पत्थर जोड़ने का एक मसाला जिसमें आठ भाग सीसा, दो भाग काँसा और एक भाग पीतल होता था। इससे पत्थर की जोड़ाई की जाती थी।

वज्रसंहत—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

वज्रसत्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक ध्यानी बुद्ध का नाम।

वज्रसमाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

वज्रसार¹—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।

वज्रसार²—वि० अत्यंत कठोर [को०]।

वज्रसूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह सुई जिसकी नोक पर हीरा लगा हो। २ एक उपनिषद्। ३ अश्वघोषप्रणीत एक ग्रंथ [को०]।

वज्रसूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

वज्रसेन—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

वज्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। २ अग्नि (को०)। ३ मरुत (को०)। ४ शिव (को०)।

वज्रहृदय—वि० [सं०] कठोर। क्रूर।

वज्रांक—वि० [सं० वज्राङ्क] हीरा जड़ा हुआ [को०]।

वज्रांग—संज्ञा पुं० [सं० वज्राङ्ग] १ सर्प। साँप। २. हनुमान। उ०—जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव। वज्रांग तेज घन बना पवन को।—अनामिका, पृ० १५३।

वज्रांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राङ्गी] १ गवेधुक। कौडिल्ला। २ हड़जोड़ नाम की लता जो चोट लगने पर लगाई जाती है।

वज्रांबुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राम्बुजा] बौद्धों की एक देवी का नाम। [को०]

वज्रांशु—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम [को०]।

वज्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्नुही। थूहर। २ गुडुच। ३ दुर्गा।

वज्राकर—वि० पुं० [सं०] हीरे की खान [को०]।

वज्राकार—वि० [सं०] १ वज्र के समान। वज्र जैसा। २ वज्र के आकार का [को०]।

वज्राक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेहुँड नाम का कँटीला पौधा [को०]।

वज्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक रत्न। एक मूल्यवान् पत्थर। [को०]।

वज्राग—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राग्नि] वज्र की आग। उ०—राठौड़ा उण वार रा जोस पराक्रम जोर। की वडवाग वज्राग की निधन अगन सोर—रा० रू०। ७८।

वज्राग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राग्नि] वज्र की ज्वाला। बिजली की आग। उ०—परि है वज्राग्नि ताकै ऊपर अचानचक्र घूरि उड़ि जाइ कहूँ ठौहर न पाइ है।—सुंदर ग्र, भा० २, पृ० ५००।

वज्राघात—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र की चोट। बिजली का आघात [को०]।

वज्राचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] नेपाली बौद्धों के अनुसार तांत्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत में लामा कहते हैं।

विशेष—यह बौद्ध आचार्य गृहस्थ होता है और अपने पुत्र कलत्र के साथ विहार में रह सकता है। नेपाल और तिब्बत में ऐसे आचार्यों का बड़ा मान है।

वज्राभ—संज्ञा पुं० [सं०] दुग्ध पाषाण। स्फटिक मृत्तिका। एक मूल्यवान् पत्थर [को०]।

वज्राभिषवन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अनुष्ठान जिसमें तीन दिन तक जौ का सत्तू पीकर रहते थे।

वज्राभ्र—संज्ञा [सं०] एक प्रकार का अभ्रक जो काले रंग का होता है।

वज्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वज्रावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक मेघ का नाम। उ०—सुनत मेघवर्तक सजि सैन लै आए। जलवर्त, वारिवर्त, पवनवत, वज्रावर्त, आगिवर्तक जलद संग लाए।—सूर। (शब्द०)।

वज्राशनि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रास्त्र। वज्र [को०]।

वज्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हठ योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें गुदा और लिंग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एड़ी से दबाकर उसके ऊपर दाहिना पैर रखकर पालथी लगाकर बैठते हैं। २ वह शिला जिसपर बैठकर बुद्धदेव ने बुद्धत्व लाभ किया था। यह गया जी में बोधिद्रुम के नीचे थी।

वज्रास्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेहुँड [को०]।

वज्रास्थिशृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रास्थिशृङ्खला] तालमखाना। कोकिलाक्ष [को०]।

वज्रिजित्—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

वज्री¹—संज्ञा पुं० [सं० वज्रिन्] १ इंद्र। २ एक प्रकार की ईंट। ३ वह जो वज्र से युक्त हो (को०)। ४ उल्लू (को०)। ५ बौद्ध भिक्षु [को०]।

वज्री²—संज्ञा स्त्री० १ थूहर। स्नुही। २ तिधारा। नरसेज।

वज्रेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बौद्धों की एक देवी। २ एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहनिका भी कहते हैं।

विशेष—इसमें वज्र बनाकर मंत्रों द्वारा अभिषेक करते हैं और उसपर सोने से मंत्र लिखते हैं। इसके उपरांत उस वज्र को किसी जितेंद्रिय पुरुष के हाथ में दे देते हैं और लाख बार मंत्र जाप करके वज्रकुंड में हवन करते हैं। इस प्रयोग से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

वज्रोद्गम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

वज्रोली—संज्ञा स्त्री० [सं० या हिं० वज्र+ओली] हठयोग की एक मुद्रा का नाम।

वट—संज्ञा पुं० [सं०] १ बरगद का पेड़। उ०—लेकर वट का दूध जटा प्रभु ने रची, अब सुमंत्र के लिये न कुछ आशा बची।—साकेत, पृ० १२६। २ गोली वस्तु। गेंद। गोल (को०)। ३. एक खाद्य। बड़ा या पकौड़ा (को०)। ४ साम्य। एकरूपता

(को०)। ५ शृंखला। लडी या डोरी (को०)। ६ एक पक्षी (को०)। ७ कौडी। कपर्दक (को०)। ८ गवक (को०)। ९. शून्य। सिफर (को०)। १०. शतरज का प्यादा (को०)।

वटक—सज्ञा पु० [स०] १ बडी टिकिया या गोला। वट्टा। २ बडा। पकौडा। ३ एक तौल जो आठ माशे की होती है और सोना तौलने के काम मे आती था। इसे क्षुद्रम, प्रक्षुण और कोक भी कहते थे। यह १० गुजा या शोण के बराबर कही गई है,— १० गुजा = १ माशा, ४ माशा = १ शोण, २ शोण = १ वटक।

वटका—सज्ञा पु० [देश०] टुकडा। उ०—दोह घटका खिरै वट वटका दुवै, आध जगनाथ राजाण अटका हुवै।—रघु० रू०, पृ० १८४।

वटच्छद—सज्ञा पु० [स०] श्वेत बर्वरा। सफेद बनतुलसी।

वटपत्र—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वटच्छद' २ वट का पत्ता (को०)।

वटपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वृत्तमल्लिका नामक फूल का पौधा।

वटपत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] पाखानभेद। पथरफोड।

वटर¹—वि० [स०] दुष्ट। खल। शठ (को०)।

वटर²—सज्ञा पु० [स०] १ चोर। २ बटेर नामक पक्षी। ३ पगडी। ४ बिस्तर। चटाई। ५ मथानी। ६ एक सुगधित घास (को०)। ७ मुर्गा (को०)।

वटवासी—सज्ञा पु० [स० वटवासिन्] यक्ष (को०)।

वटसावित्री—सज्ञा स्त्री० [स०] एक व्रत का नाम जिसमे स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं। दे० 'बरसायत'।

वटाकर, वटारक—सज्ञा पु० [स०] रज्जु। रस्सी।

वटावीक—सज्ञा पु० [स०] छद्मतापस। दाभिक (को०)।

वटाश्रय—सज्ञा पु० [स०] कुबेर का एक नाम (को०)।

वटि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कृमि। कीट। २. चिउँटी। चीटी। ३ दे० 'वटिका' (को०)।

वटिक—सज्ञा पु० [स०] शतरज का प्यादा या मोहरा (को०)।

वटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोली। वटी। २ शतरज का मोहरा। वटिक (को०)। ३ एक खाद्य पदार्थ जो चावल और उडद के मिश्रण से बनता है (को०)।

वटी¹—वि० [स० वटिन्] जिसमे डोरी या सिकडी लगी हो। वर्तुल या गोलाकार (को०)।

वटी²—सज्ञा पु० शतरज की गोटी। वटिक (को०)।

वटी³—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोली या टिकिया। बटी। २ रस्सी। सिकडी। रज्जु (को०)।

वटु—सज्ञा पु० [स०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। माणवक।

वटुक—सज्ञा पु० [स०] १ बालक। २ माणवक। ब्रह्मचारी। ३ एक भैरव। बटुकभैरव। ४ मूर्ख। अज्ञ (लाक्ष०)।

वटुरी वि० [स० वटुरिन्] चौडा। विस्तृत। फैलावदार (को०)।

वटेस्वर—सज्ञा पु० [स० वटेश्वर] शिव। महादेव। उ०—पुज्जि वटेश्वर मल्ल सौं परी सरसव जाय।—प० रासो, पृ० ६१।

वटोदका—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार एक नदी जो पवित्र मानी जाती है।

वटोरना (पु) †—क्रि० स० [स० वर्तुल + करण] दे० 'बटोरना'। उ०—परम ब्रह्म परमत्थ बुज्झइ, वित्ते वटोरइ कित्ति।—कीर्ति०, पृ० ८।

वट्ट¹—सज्ञा पु० [स० वर्त्म, प्रा० वट्ट] बाट। मार्ग। रास्ता।

वट्ट²—सज्ञा पु० [देश०] १ प्याला। कटोरा। (तुल० गुज० वाटको)। २ हानि। नुकसान (तुला० गुज० बट्टो, हिं० बट्टा)। ३. बट्टा। लोढा (को०)।

वट्टक—सज्ञा पु० [स०] गोली। वटिका (को०)।

वट्टा—सज्ञा पु० [स० वर्त्मन्, प्रा० वट्टअ] रास्ता। बाट। पथ।

वठर¹—सज्ञा पु० [स०] १ अम्बष्ठ नामक एक वर्णसकर जाति। २ २ शब्दकार। ३ चिकित्सक। हकीम (को०)। ४ जलपात्र (को०)।

वठर²—वि० १ मूर्ख। २ शठ। ३ मद।

वडफर‡—सज्ञा स्त्री० [देश०] ढाल। उ०—अति खीजे सुण मुण असुर, जण जण छीजे प्राण। अवदल खाँ पढियौ अकस, कस वडफर केवाँण।—रा० रू०, पृ० २२९।

वड्ब—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वड्वा] घोडा।

वडवा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वडवा' (को०)।

वडभा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की चिडिया (को०)।

वडभी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह शाला या घर जो किसी प्रासाद के शिखर पर हो। गृहचूडा। चौरहर। वरहरा।

पर्या०—गोपानसी। चंद्रशाला। कूटागार। वलभी।

वडवा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वडवा¹' (को०)।

वडवाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'बडवाग्नि'।

वडवाभर्ता—सज्ञा पु० [स० वडवाभर्तृ] इद्र का अश्व जिसका नाम उच्चैःश्रवा है (को०)।

वडवामुख—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वडवाग्नि। २ शिव। ३ एक प्राचीन जनपद। ४ एक पौराणिक समुद्र। दे० 'बडवामुख' (को०)।

वडवासुत—सज्ञा पु० [स०] अश्विनीकुमार (को०)।

वडहसिका, वडहसी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी। दे० 'बडहसिका' (को०)।

वडा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक पक्वान्न। दे० 'बडा'। २ छोटा गोला। वटिका (को०)।

वडिल—सज्ञा पु० [स०] दे० वडिश (को०)।

वडिश—सज्ञा पु० [स०] १ बसी जिसमे मछली फँसाई जाती है। कँटिया। २ चिकित्सको का एक अस्त्र जिससे वे वेधते या नश्तर लगाते है। (वैद्यक)।

वड्ड—वि० [देशी या स० वड्ड] बडा। महान्।

वड्डिपन (पु)—सज्ञा पु० [अप० वड्डप्पण, हिं० बड़प्पन] बड़प्पन।

वडाई। महत्ता। उ०—वा कुल केरा वड्डिपन कहवा कवन उपाए।—कीर्ति०, पृ० १०।

वड़—वि० [स०] वडा। महान्। श्रेष्ठ [को०]।

वण(ु)¹—सञ्ज्ञा पु० [देश०] धनुष। उ०—वण छेद मुजेह, कवाण वणी। फव ईस धके फिर सेस फणी।—रा० रू०, पृ० ३४।

वण²—सञ्ज्ञा पु० [स०] शब्द। ध्वनि। शोर [को०]।

वणिक्—सञ्ज्ञा पु० [स० वणिज्] १ वह जो वाणिज्य के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। रोजगार करनेवाला। २ वैश्य। वनिया। उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की। सोचकर घटना वणिक् के वित्त की।—शकु०, पृ० ५१।

यौ०—वणिक्कटक = वणिक्सार्थ। वणिक्कर्म = सौदागरी। वणिक्कर्मा। वणिक्क्रिया = वणिक्कर्म। सौदागरी। वणिक्पथ = दे० 'वणिक्पथ'। वणिक्सार्थ = व्यापारियो का काफिला। कारवाँ। वणिग्ग्राम = व्यापारियो का दल। वणिग्जन। वणिग्बधु। वणिग्भाव = व्यापार। वणिग्वह। वणिग्वीथी = हाट। वाजार। वणिग्वृत्ति = वणिक् की जीविका। व्यापार।

वणिक्कर्मा—सञ्ज्ञा पु० [स० वणिक्कर्मन्] व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिग्जन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ वैश्य। वनिया। २ व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिग्बधु—सञ्ज्ञा पु० [स० वणिग्बन्धु] नील का पौधा [को०]।

वणिग्वह—सञ्ज्ञा पु० [स०] क्रमेलक। ऊँट [को०]।

वणिग्वृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यापार। सौदागरी। २ लाभ की दृष्टि से काम करना [को०]।

वणिज—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ व्यापार। वनिज। २ व्यापारी। सौदागर। ३ तुला राशि। ४ शिव का एक नाम। ५ ज्योतिष मे एक करण [को०]।

वणिजक—सञ्ज्ञा पु० [स०] व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] सौदागरी। व्यापार [को०]।

वणिजार(ु)†—सञ्ज्ञा पु० [स० वणिज + हिं० आर (प्रत्य०)] वनजारा। व्यापारी। उ०—बहुले भाँति वणिजार हाट हिंडए जवे आवथि।—कीर्ति०, पृ० ३०।

वणिज्य—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वणिज्या] व्यापार। सौदागरी [को०]।

वतड—सञ्ज्ञा पुं० [स० वतण्ड] साधु। संत। महात्मा [को०]।

वतस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'अवतस'।

वतसित—वि० [स०] अवतसित। विभूषित [को०]।

वत¹—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ खेद। २ अनुकंपा। ३ सतोष। ४ विस्मय। ५ आमत्रण।

वत²—अव्य० [स०] शब्दो एव विचारो पर जोर देने के लिये प्रयुक्त शब्द। विशेष दे० 'वत'।

विशेष—हिंदी मे इसका प्रयोग नही मिलता है।

वतक—सञ्ज्ञा पु० [देश० या गुज० वाडको] वत्तख के गर्दन के आकार की सुराही जिनमे शराब रखी जाती है। उ०—मतवाला री वतक ज्यऊँ, पिय नइँ परहरियाह।—ढोला०, दू० ४१८।

वतन—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ निवासस्थान। वासस्थान। २ जन्मभूमि। स्वदेश।

यौ०—वतनपरस्ती = देशभक्ति।

वतनी—सञ्ज्ञा पु० [अ० वतन] अपने देश का निवासी। उ०—एते जीव ज्याचे वतनी सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनी।—दक्खिनी०, पृ० ३०।

वतास(ु)†—सञ्ज्ञा पु० [स० वातमह] दे० 'वातास'। उ०—काहु होंग्र अइसनो आस कउमे लागन आचर वतास।—कीर्ति०, पृ० ३६।

वतीरा—सञ्ज्ञा पु० [अ०] १ ढग। रीति। प्रथा। २ चाल ढाल। ३ लत। टेव। बान।

वतू¹—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्ग की एक नदी [को०]।

वतू²—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ सडक। २ आँख का एक रोग [को०]।

वतोका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वन्ध्या स्त्री। २ वह स्त्री या गाय जिसका गर्भ किसी दुर्घटना से गिर जाय [को०]।

वत्—अव्य० [स०] समान। तुल्य। सदृश। जैसे, पुत्रवत्। मित्रवत्।

वत्री†—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वार्ता, प्रा० वत्तडी] दे० 'वार्ता'। उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसे विगत हमैं सुण वत्री। खडे मैं वसुधा विण खत्री कीधो वार इकीसे।—रघु० रू०, पृ० ६०।

वत्स—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ गाय का वच्चा। वछडा। २ शिशु। वालक। वच्चा। ३ वत्सर। वर्ष। ४ कस का एक अनुचर। वत्सासुर। ५ इद्रजौ। ६ वक्ष। उर। छाती। ७ एक देश का नाम जो कोशावी की राजधानी था और जहाँ का राजा उदयन था।

वत्सक—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ पुष्प कसीस। २ कुटज। ३ इद्रजौ। ४ निर्गुडी। ४ छोटा वछडा (को०)। ५ शिशु। वच्चा (को०)।

वत्सकामा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वच्चो को प्यार करनेवाली स्त्री या गाय [को०]।

वत्सघोष—सञ्ज्ञा पु० [स०] वृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम जो नक्षत्रो के प्रथम वर्ग मे है।

वत्सतत्री—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० वत्सतन्त्री] वछडा वाँधने की रस्सी।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार वछडा बाँधने की रस्सी को लाँघना नही चाहिए।

वत्सतर—सञ्ज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वत्सतरी] जवान वछडा जो जोता न गया हो। दोहान।

वत्सतरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] वह वछिया जो तीन वर्ष की हो। कलोर।

विशेष—वृषोत्सर्ग मे चार वत्सतरी के साथ एक वृष उत्सर्ग करने का विधान है।

वत्सदंत—सञ्ज्ञा पु० [स० वत्सदन्त] एक प्रकार का वाण [को०]।

वत्सनाभ—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ एक विष जिसे 'वछनाग' या 'वच्छनाग' भी कहते हैं। मीठा जहर।

विशेष—इसका पौधा हिमालय के कम ठढे भागो मे होता है। इसकी जड विशेषत नेपाल से आती है। इसके पत्ते सँभालू के पत्तो के समान होते हैं। विष जड मे होता है। यह विष शोधकर औषधो मे दिया जाता है। शोधन के लिये जड के छोटे छोटे

टुकडे काटकर तीन दिन तक गोमूत्र मे भिगोते है। फिर छाल अलग करके लाल सरसो के तेल मे भिगोए हुए कपडे मे पोटली बाँधकर रखते हैं। उपयुक्त मात्रा और युक्ति के साथ सेवन करने से यह रसायन, योगवाही, वातनाशक और त्रिदोषघ्न कहा गया है। वैद्य लोग इसे ज्वर और लकवा रोग मे देते है। इसके प्रयोग मे वडी सावधानी चाहिए, क्योकि अधिक मात्रा मे होने से यह विष प्राणनाशक होता है। इसके योग से मृत्युजय रस, आनदभैरव रस, पचवक्त्र रस आदि कई प्रसिद्ध औषधे बनती है।

पर्या०—अमृत। विष। उग्र। महौषध। गरल। मारण। नाग। स्तोकक। प्राणहारक। स्थावर।

२ एक वृक्ष का नाम।

वत्सपत्तन सज्ञा पु० [स०] कौशाबी नगरी का प्राचीन नाम। जहाँ का राजा उदयन था [को०]।

वत्सपद—सज्ञा पु० [स०] बछडे के खुर का निशान। गोपद [को०]।

वत्सपाल—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो बछ गायो का पालन करता हो। गोपाल। २ कृष्ण। ३ बलराम [को०]।

वत्सपालक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वत्सपाल'।

वत्सपीता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गाय जिसका दूध बछडा पी चुका हो [को०]।

वत्सबधा—सज्ञा स्त्री० [स० वत्सबन्धा] वह गाय जिसका बछडा बँधा हुआ हो। गाय जो अपने बछडे को पाना चाहती हो [को०]।

वत्सर—सज्ञा पु० [स०] उतना काल या समय जितने मे पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है और सब ऋतुओ की एक उद्धरणी हो जाती है। काल का वह मान जो बारह महीनो या ३६५ दिनो का होता है। वर्ष। साल। बरस।

वत्सरातक—सज्ञा पु० [स० वत्सरान्तक] वर्ष का आखिरी महीना [को०]।

वत्सराज—सज्ञा पु० [स०] एक राजा का नाम।

विशेष—इस नाम के अनेक राजा हो गए है। एक तो कौशाबी का प्रसिद्ध राजा था, जो गौतम बुद्ध का समसामयिक था। चौहान वश मे भी एक वत्सराज हुआ। लाट देश का एक चौलुक्यवशी राजा भी इस नाम का हुआ है। महोबे के चदेल राजाओ का एक मत्री भी वत्सराज था जो आल्हा गानेवालो मे आल्हा का पिता कहा गया है और 'बच्छराज' के नाम से प्रसिद्ध है।

वत्सरादि—सज्ञा पु० [स०] मार्गशीर्ष। अगहन का महीना [को०]।

वत्सराण—सज्ञा पु० [स०] ऋण जो एक वर्ष के लिये लिया अथवा दिया गया हो [को०]।

वत्सरूप—सज्ञा पु० [स०] छोटा बछड़ा [को०]।

वत्सल[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वत्सला] १ पुत्र या संतान के प्रति पूर्ण स्नेह से युक्त। बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। जैसे,—पुत्रवत्सल पिता, पुत्रवत्सला माता। २ अपने से छोटो के प्रति अत्यत स्नेहवान् या कृपालु। जैसे,—प्रजावत्सल राजा।

वत्सल—सज्ञा पु० १ साहित्य मे कुछ लोगो के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस। वात्सल्य रस, जिसमे पिता या माता का अपनी सतति के प्रति रतिभाव या प्रेम प्रदर्शित होता है। २ घास फूस की आग (को०)। ३ विष्णु का एक नाम (को०)।

वत्सशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] बछडे बाँधने की जगह। वह स्थान जहाँ बछडे रखे जायँ [को०]।

वत्साक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] तरबूज। कलीदा।

वत्सादन—सज्ञा पु० [स०] वृक। भेडिया [को०]।

वत्सादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] गुडुच। गिलोय।

वत्सासुर—सज्ञा पु० [स०] कस का अनुचर एक राक्षस जिसे कृष्ण ने बाल्यावस्था मे मारा था।

वत्सिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बछिया। बाछी [को०]।

वत्सिमा—सज्ञा स्त्री० [स० वत्सिमन्] शिशुता। बचपन [को०]।

वत्सी[१]—सज्ञा पु० [स० वत्सिन्] विष्णु।

वत्सी[२]—वि० जिसे बहुत बच्चे हो [को०]।

वत्सीय[१]—सज्ञा पु० [स०] गोपालक [को०]।

वत्सीय[२]—वि० वत्स सबधी। बछडा सबधी [को०]।

वदति, वदती—सज्ञा स्त्री० [स० वदन्ति, वदन्ती] कथा। कहानी। २ बात। वार्ता।

वद—वि० [स०] बोलनेवाला।

विशेष—यह शब्द समासात मे जुडता है। जैसे,—वशंवद, प्रियवद, आदि।

वदक—सज्ञा पु० [स०] वक्ता। कहनेवाला।

वदतोव्याघात—सज्ञा पु० [स०] कथन का एक दोष, जिसमे कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

वदन—सज्ञा पु० [स०] १ मुख। मुँह। २ अगला भाग। ३. कथन। बात कहना। ४ त्रिभुज का शीर्ष भाग (को०)। ५. चेहरा। आकृति। स्वरूप (को०)।

वदनपवन—सज्ञा पु० [स०] मुख की हवा। साँस [को०]।

वदनमदिरा—सज्ञा स्त्री० [स०] अधरासव। अधरामृत [को०]।

वदनश्यामिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मुख का एक रोग। मुँह पर पडी हुई झाई। २ मुँह का कालापन [को०]।

वदनामय—सज्ञा पु० [स०] मुख का रोग [को०]

वदनासव—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वदनमदिरा'। २ लार। लाला।

वदनोदर—सज्ञा पु० [स०] मुखगह्वर। मुख का गड्ढा [को०]।

वदन्य—वि० [स०] दे० 'वदान्य' [को०]।

वदर—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बदर' [को०]।

वदान्य—वि० [स०] १ अतिशय दाता। उदार। २. मधुरभाषी। अपनी बात से दूसरो को सतुष्ट करनेवाला।

वदाम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'बादाम' [को०]

वदाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाठीन मत्स्य। पहिना मछली। २. आवर्त। भँवर (को०)।

वदालक—संज्ञा पुं० [सं०] पाठीन मत्स्य (को०)।

वदावद—वि० [सं०] वाग्मी। वाचाल। बड़बड़िया (को०)।

वदि—संज्ञा पुं० [सं० अवदिन] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।

वदितव्य—वि० [सं०] बोलने योग्य। कहने लायक (को०)।

वदिता—संज्ञा पुं० [सं० वदितृ] बोलनेवाला। कहनेवाला। वक्ता।

वदीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अमानत। धरोहर।

वदुसाना(पु)—क्रि० स० [सं० विदूषण] दोष देना। भला बुरा कहना। इलजाम लगाना। उ०—हम सब जानत हरि की घातें। तुम जो कहत हरि राज करत नहिं जानत हौ कछु का तें? उग्रसेन बैठारि सिंघासन लोग कहत कुल नाते। तप तें राज, राज तें आगे तुम सन समुझन बातें। सूरश्याम यहि भाँति सयाने हमहीं को वदुसाते।—सूर (शब्द०)।

वदेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विदेश] परदेश। विदेश। उ०—बहु वचालू आव घरि, कांसू करइ वदेस। सपत सघाले सपज, आ दिन कहा लहेस।—ढोला०, दू० १७८।

वद्दल—संज्ञा पुं० [देशी०] दुर्दिन। बरसात।

वद्य[1]—वि० [सं०] १ कथनीय। २ अनिंद्य। निर्दोष (को०)।

वद्य[2]—संज्ञा पुं० १ कृष्ण पक्ष। २ बात। कथन (को०)।

यौ०—वद्यपक्ष = कृष्णपक्ष।

वध—संज्ञा पुं० [सं०] १ घात। नाश। मरण। विशेष दे० 'बध'। २ प्रहार। अभिघात। मार (को०)। ३ लकवा (को०)। ४ तिरोधान। लोप। ओझल। ओट (को०)। ५ (गणित में) गुणन क्रिया (को०)। ६ वधक। मारनेवाला (को०)। ७ जेता। जयी (को०)। ८ मृत्युदंड (को०)। ९ विफलता। हार। पराजय (को०)। १० दोष। दूषण (को०)। ११ उत्पत्ति। उपज (बीजगणित)।

वधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ घातक। हिंसक। २ व्याध। ३ मृत्यु। ४ एक प्रकार का सरकंडा (को०)।

वधकर्माधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० वधकर्माधिकारिन्] जल्लाद।

वधजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वधजीविन्] वह जो वध करके जीविका निर्वाह करता हो।

वधत्र—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्र। हथियार।

वधनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्युदंड। फाँसी की सजा (को०)

वधनिर्णेक—संज्ञा पुं० [सं०] हत्या का प्रायश्चित्त।

वधभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'बधभूमि'।

वधागक—संज्ञा पुं० [सं० वधाट्टक] कारागार। कैदखाना।

वधाव(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० वद्धव] दे० 'बधावा'। उ०—शोक बधाव जिन सम करि माना। ताकी बात इद्रहुँ नहिं जाना।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० २५४।

वधावरा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० वधाव + रा (प्रत्य०)] दे० 'बधावा'। उ०—सोक को जनम ब्रज ओक मे भयो है ऊधो साँवरे विरह तैं वधावरे वजत ये।—दीन० ग्रं०, पृ० ४०।

वधिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मृगमद। कस्तूरी। २ दे० 'बधिक' (को०)।

वधित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। २ कामासक्ति (को०)।

वधिर—वि० [सं०] दे० 'बधिर'।

वधु—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वधुका'।

वधुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुत्र की स्त्री। बहू। २ दुलहन। स्त्री।

वधुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वधूटी'।

वधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नव विवाहिता स्त्री। दुलहन। २ पत्नी। भार्या। ३ पुत्र की बहू। पतोहू।

यौ०—वधूगृहप्रवेश, वधूप्रवेश = विवाहिता स्त्री का पति के घर मे पहली बार प्रवेश करने की विधि। वधूधन = स्त्री की निजी संपत्ति। वधूपक्ष = कन्यापक्ष। वधूवस्त्र = विवाह के समय कन्या को दिया जानेवाला वस्त्र।

वधूटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नई व्याही हुई स्त्री। दुलहिन। २ भार्या। पत्नी। ३ पुत्रवधू। पतोहू।

वधूत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अवधूत] दे० 'अवधूत'। उ०—श्रवन कुंडल गरल कंठ करुणाकंद सच्चिदानंद वदे वधूत।—तुलसी (शब्द०)।

वध्य—वि० [सं०] मार डालने योग्य। वधार्ह।

यौ०—वध्यघ्न = जल्लाद। वध्यचिह्न = प्राणदंड पाए हुए अपराधी का चिह्न। वध्यडिंडिम, वध्यपटह = फाँसी देने के समय की जनानेवाली सूचना। वध्यपट = वध दंड दिए जाने के समय का काला या लाल वस्त्र। वध्यपाल = जेलर। वध्यशिला = वह वेदी या शिला जिसपर वध किया जाता है।

वध्र—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा नाम की धातु।

वध्रि—संज्ञा पुं० [सं०] बधिया।

वध्रिका—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जो बधिया हो। खोजा।

वध्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमडे का तसमा (को०)

वध्य—संज्ञा पुं० [सं०] पदत्राण। जूता (को०)।

वध्र्यश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ आखता घोडा। २ एक प्राचीन राजा का नाम।

वन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन। जंगल। २ वाटिका। ३ जल। ४ घर। आलय। ५ चमसा नामक यज्ञपात्र जो काठ का होता था। ६ रश्मि। ७ शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि। ८. फूलों का गुच्छा। ९ समूह। झुंड। १० काष्ठ। लकडी (को०)। ११ बादल (को०)। १२ पहाड (को०)। १३ जंगल का निवास (को०)। १४. झरना। सोता। १५ अर्चन। पूजन (को०)।

वनकणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनपिप्पली।

वनकदली—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली केला (को०)

वनकरी—संज्ञा पुं० [सं० वनकरिन्] जंगली हाथी (को०)।

वनकुंजर—संज्ञा पुं० [सं० वनकुञ्जर] दे० 'वनकरी'।

वनकुंडल—संज्ञा पुं० [सं० वनकुण्डल] अच्छी जाति का सूरन या जिमींकद।

वनकोकिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का छंद (को०)।

वनकोलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली बेर (को०)।

वनग—संज्ञा पुं० [सं०] वन में रहनेवाला। वनवासी (को०)।

वनगज—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली हाथी (को०)।

वनगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ संन्यासग्रहण (को०)। २ सब कुछ छोड़कर वन को यात्रा करना।

वनगव—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बैल (को०)।

वनगहन—संज्ञा पुं० [सं०] घना जंगल (को०)।

वनचंदन—संज्ञा पुं० [सं० वनचन्दन] १. अगुरु। अगर। २ देवदारु।

वनगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] जासूस (को०)।

वनगोचर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिकारी। व्याधा। २ वनवासी। वन। ३ जंगल (को०)।

वनगोचर[2]—वि० १ जंगल में रहनेवाला। २ जल में रहनेवाला (को०)।

वनग्रामक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली गाँव। २ गरीब गाँव (को०)।

वनग्राही—संज्ञा पुं० [सं०] व्याधा। बहेलिया (को०)।

वनचंद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वनचन्द्रिका] मल्लिका।

वनचंपक—संज्ञा पुं० [सं० वनचम्पक] एक प्रकार का चंपा का पुष्प।

वनचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन में भ्रमण करने या रहनेवाला। २ जंगली मनुष्य या प्राणी। ३. शरभ नामक वनजंतु।

वनचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन भ्रमण या वनवास (को०)।

वनछाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली बकरा। २. सूअर (को०)।

वनछिद—संज्ञा पुं० [सं० वनच्छिद] लकड़ी काटनेवाला। लकड़हारा (को०)।

वनज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २ कमल। ३ मुस्तक। मोथा। ४ तुंबुरु का फल। ५ जंगली बिजौरा नीबू। ६. वनकुलथी।

वनजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुद्गपर्णी। २ निर्गुंडी। ३ सफेद कटवारि। ४. वनतुलसी। ५ अश्वगंधा। ६ वनकपासी।

वनजीर—संज्ञा पुं० [सं०] काली जीरी।

वनजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वनजीविन्] १ वनवासी। २ लकड़हारा (को०)।

वनतिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] हरीतकी। हड़।

वनतिक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा। २ पथरी नाम का शाक।

वनद—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वनदाह—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि।

वनदीप—संज्ञा पुं० [सं०] वनचंपक पुष्प।

वनदेव, वनदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] वन का अधिष्ठाता देवता।

वनदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की अधिष्ठात्री देवी।

वनद्विप—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली हाथी (को०)।

वनद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली पेड़ पौधा (को०)।

वनधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली गाय। गवय (को०)।

वनधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली धान्य। वन का अनाज (को०)।

वनन—संज्ञा पुं० [सं०] घन सघन। ठोस (को०)।

वनप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनरक्षक। २ वनमाली। उ०—वन जगत की देखभाल करनेवाले (वनप), बगीचा आग बुझानेवाले (नावप)। हिंदु० सभ्यता, पृ० ९८।

वनपल्लव—संज्ञा पुं० [सं०] शोभांजन वृक्ष। सहिंजन (को०)।

वनपांसुल—संज्ञा पुं० [सं०] शिकारी। व्याध (को०)।

वनपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. बागबान। २ वनरक्षक। उ०—सुरधर यथा वधावणा, हरख करइ नाम। ज्यूँ वनपालै पाठियो, सिर आणी पैगाम।—रा० रू०, पृ० २६।

वनपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पीपल।

वनपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बिजौरा नीबू (को०)।

वनप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] तपस्वी।

वनप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोकिल। २ बहेड़े का वृक्ष। ३ कपूरकचरी। ४ साभर हिरन।

वनभूषणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोकिला। कोयल (को०)।

वनभक्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाँस। डंस (को०)।

वनमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवती का पौधा या फूल।

वनमल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनमल्लिका' (को०)।

वनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन के फूलों की माला। २. एक विशेष प्रकार की माला।

विशेष—यह सब ऋतुओं में होनेवाले अनेक प्रकार के फूलों से बनती और घुटने तक लंबी होती थी। ऐसी माला श्रीकृष्ण धारण करते थे।

वनमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारिका पुरी का एक नाम।

वनमाली[1]—वि० [सं० वनमालिन्] वनमाला धारण करनेवाला।

वनमाली[2]—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

वनमुक्—संज्ञा पुं० [सं० वनमुच्] बादल। मेघ (को०)।

वनमुद्ग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मूँग (को०)।

वनमूत—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वनमूर्द्धजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जंगली बिजौरा नीबू। २ काकनासिका।

वनमोचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन्य कदली। जंगली केला (को०)।

वनर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वानर' (को०)।

वनरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगल की देखभाल करनेवाला। वनरखा (को०)।

वनराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह। २ अश्मंतक वृक्ष।

वनराजि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की श्रेणी। वनसमूह। वृक्षसमूह। २ वन के बीच गई हुई पगडंडी। ३. [illegible] का नाम।

वनराजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनराजि'।

वनरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

वनलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की शोभा। वनश्री। २ कदली। केला।

वनलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जगली बेल।

वनवर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बत्तक। बटेर। लवा पक्षी (को०)।

वनवसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरती जिसका वस्त्र वन है। पृथिवी। उ०—नमित शालि से भरी हुई, सुदर वनवसना।—अपरा, पृ० १९५।

वनवह्नि—संज्ञा पुं० [सं०] दावाग्नि (को०)।

वनवास¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन का निवास। जगल मे रहना। २ बस्ती छोडकर जगल मे रहने की व्यवस्था या विधान।

मुहा०—वनवास देना = जगल मे रहने की आज्ञा देना। बस्ती छोडने की आज्ञा देना। वनवास लेना = बस्ती छोडकर जगल मे रहना। अगीकार करना।

वनवास²—वि० जगल मे रहनेवाला। वनवासी।

वनवासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शाल्मली कद। २ एक प्राचीन नगर जो कादब राजाओं की राजधानी था।

वनवासन—संज्ञा पुं० [सं०] गधबिलाव (को०)।

वनवासी¹—वि० [सं० वनवासिन्] [वि० स्त्री० वनवासिनी] वन मे रहनेवाला। बस्ती छोडकर जगल मे निवास करनेवाला।

वनवासी²—संज्ञा पुं० १ ऋषभ नामक ओषधि। २ वाराही कद। ३ शाल्मली कद। ४ नीलमहिष कद। ५ द्रोण काक। डोम कौआ। ६ दक्षिण मे तुगभद्रा की शाखा वरदा नदी के किनारे बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो कादब राजाओं का प्रधान नगर था। ७ वानप्रस्थ आश्रमी। तपस्वी (को०)।

वनविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शखपुष्पी लता।

वनवीज, वनवीजक—संज्ञा पुं० [सं०] जगली नीबू (को०)।

वनवृताकी—संज्ञा स्त्री० [सं० वनवृन्ताकी] जगली बैगन। भंटा (को०)।

वनव्रीहि—संज्ञा पुं० [सं०] तिन्नी नाम का जगली अन्न।

विशेष—यह अपने आप पैदा होता है और इसे अन्नो मे नही गिना जाता। इसका व्यवहार फल के रूप मे व्रतादि मे होता है।

वनशूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपिकच्छु। केवाँच। २ जगली मादा सूअर।

वनशृंगाट—संज्ञा पुं० [सं० वनशृङ्गाट] गोखरू।

वनशृंगाटक—संज्ञा पुं० [सं० वनशृङ्गाटक] दे० 'वनशृंगाट'।

वनशोभन—संज्ञा पुं० [सं०] कमल (को०)।

वनश्वा—संज्ञा पुं० [सं० वनश्वन्] १ स्यार। गीदड। २ गंधबिलाव। ३ चीता। बाघ (को०)।

वनसकट—संज्ञा पुं० [सं० वनसङ्कट] मसूर।

वनसवासी—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो वानप्रस्थ आश्रम का हो। वन मे रहनेवाला। वनवासी (को०)।

वनसमूह—संज्ञा पुं० [सं०] निविड वन। घना जगल (को०)।

वनसरोजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनकपासी (को०)।

वनसिंधुर—संज्ञा पुं० [सं० वनसिन्धुर] जगली हाथी। वनकुजर (को०)।

वनस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौंदर्य। लावण्य। २ कीर्ति। यश। ३ धनदौलत।

वनस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन मे रहनेवाला। २ वानप्रस्थ आश्रम। ३ मृग। हिरन।

वनस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनभूमि। अरण्यदेश। जगली जमीन।

वनस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अश्वत्थ। पीपल का पेड। २ वट। न्यग्रोध वृक्ष (को०)।

वनस्थी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनस्था' (को०)।

वनस्पति¹—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं०] १ वह वृक्ष जिसमे फूल न हो (अर्थात् न दिखाई पडे) केवल फल ही हो। जैसे,—गूलर, बड पीपल आदि वट वर्ग के वृक्ष। (मनु०)। २ वृक्ष मात्र। पेड पौधा। ३ वट वृक्ष। बरगद। ४ सोम नाम का पौधा (को०)। ५ पेड का तना। स्कध (को०)। ६ धरन। बडेर। लट्ठा (को०)। ७ यज्ञस्तभा। यूप (को०)। ८ काठ का रक्षा कवच (को०)। ९ वध्यपत्र। फासी का तख्ता (को०)। १० यती। तपस्वी। योगी (को०)। ११ मूँगफली, बिनौला, नारियल आदि का जमाया हुआ तेल।

वनस्पति²—संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वनस्पतिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता हो कि पौधा और वृक्ष आदि के क्या क्या रूप और कौन कौन सी जातियाँ होती है, उनके भिन्न भिन्न अगो की बनावट कैसी होती है और कलम आदि के द्वारा किस प्रकार के नए पौधे या वृक्ष उत्पन्न होते है। वनस्पति विज्ञान।

वनस्रक्—संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्रज्] दे० 'वनमाला' (को०)।

वनहरिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जगली हल्दी।

वनहव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ। एकाह यज्ञ (को०)।

वनहास, वनहासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ काश। कास। २ कुद का फूल।

वनहुताशन—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। वनवह्नि (को०)।

वनात—संज्ञा पुं० [सं० वनान्त] वनप्रात। जगली भूमि या मैदान।

वनातर—संज्ञा पुं० [सं० वनान्तर] १ दूसरा वन। २ वन का भीतरी भाग (को०)।

वनाखु—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश। शशक (को०)।

वनाखुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का माष। उरद (को०)।

वनाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दावानल। वन मे अपने आप लगनेवाली आग (को०)।

वनाज—संज्ञा पुं० [सं०] वन्य अज। जगली बकरा (को०)।

वनाटु—संज्ञा पुं० [सं०] नीली जगली मक्खी (को०)।

वनानी—संज्ञा स्त्री० [सं० वनाली] वन का समूह। घना और विस्तृत वन। उ०—काफल थे रँग रहे, फूल मे थी फल लिए

खुवानी। लाल बुरूसों के मधु छत्तों से थी भरी वनानी।—अतिमा, पृ० १५।

वनायु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश का नाम जहाँ का घोडा अच्छा होता था। २ इस देश मे रहनेवाली जाति। ३ पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

वनायुज—संज्ञा पुं० [सं०] वनायु देश का घोडा।

वनारिष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनहरिद्रा। वनहल्दी [को०]।

वनार्चक—संज्ञा पुं० [सं०] माली। माला या हार बनानेवाला [को०]।

वनार्द्रका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन अदरक जिसे ऐंद्र भी कहते है [को०]।

वनालक्त—संज्ञा पुं० [सं०] गेरू।

वनालक्तक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वनालक्त' [को०]।

वनालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] हस्तिशुंडी लता। हाथी सूँडी।

वनाश¹—वि० [सं०] केवल जल पीकर रहनेवाला [को०]।

वनाश²—संज्ञा पुं० १ वनविहार। पिकनिक। २ एक प्रकार का छोटा जौ [को०]।

वनाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] वानप्रस्थ आश्रम [को०]।

वनाश्रमी—संज्ञा पुं० [सं० वनाश्रमिन्] वानप्रस्थी। तपस्वी [को०]।

वनाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला कौआ। डोम कौआ। २ वह जो जगल का निवासी हो (को०)।

वनाहिर—संज्ञा पुं० [सं०] वन्य शूकर। जगली सूअर [को०]।

वनि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ याचना। २ राशि। ढेर। ३. आग। अग्नि [को०]।

वनि²—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना [को०]।

वनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंजवन। उपवन।

वनित—वि० [सं०] १ पूजित। २ इच्छित। ३. याचित [को०]।

वनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुरक्ता स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २ स्त्री। औरत। ३ छह वर्णो की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते हैं। इसमे दो सगण होते है। जैसे,—ससि बाल धरो। शिव भाल धरो। ४ मादा (को०)।

वनिताद्विष्—संज्ञा पुं० [सं० वनिताद्विट्] स्त्रीविद्वेषी [को०]।

वनितामुख—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार मनुष्यो की एक जाति।

वनिताविलास—संज्ञा पुं० [सं०] वनिताओ का विहार। स्त्रियो की क्रीडा [को०]।

वनिष्णु—वि० [सं०] मागनेवाला। याचक [को०]।

वनी¹—संज्ञा पुं० [सं० वनिन्] १ वानप्रस्थ। २ वृक्ष (को०)। ३ सोमलता (को०)।

वनी²—वि० १ पूजित। २ अभिलषित। ३ दिया हुआ। ४ जल के ऊपर निर्वाह करनेवाला। ५. जगल मे रहनेवाला [को०]।

वनी³—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा वन। वनस्थली। उ०—अति चचल जहँ चलदलै, विधवा वनी, न नारि।—केशव (शब्द०)।

वनीक—संज्ञा पुं० [सं०] याचक। भिखारी [को०]।

वनीपक—संज्ञा पुं० [सं०] भिखारी [को०]।

वनीयक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वनीपक' [को०]।

वनीयस—वि० [वनीयस्] अत्यत उदार [को०]।

वनेकिंशुक—संज्ञा पुं० [सं०] वह वस्तु जो वैसे ही, बिना माँगे मिले जैसे वन मे किंशुक बिना माँगे या प्रयास किए मिलता है।

वनेक्षुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] करज [को०]।

वनेचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन मे फिरनेवाला मनुष्य। वनचर। जगली आदमी। २ यती। तपस्वी (को०)। ३ जगली पशु। जगली जानवर (को०)। ४. प्रेत। भूत। पिशाच (को०)।

वनेजा—संज्ञा पुं० [सं०] १ आम। २ पर्पट। पापडा।

वनेज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पापडा। २. उत्तम जाति का आम [को०]।

वनेसर्ज—संज्ञा पुं० [सं०] पीतसाल का वृक्ष। असन [को०]।

वनेबिल्वक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वनेकिंशुक' [को०]।

वनोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवमदिर, वापी, कूप, उपवन, आदि का उत्सग जो शास्त्रविधि से किया जाता है। मदिर कुआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिये दान करना। २ ऐसे दान या उत्सर्ग की विधि।

वनोत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] गैंडा [को०]।

वनोद्भवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनकपासी जिसे वनोद्भवा भी कहा गया है [को०]।

वनोपप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] वनदाह। जगल मे आग लगना [को०]।

वनोपल—संज्ञा पुं० [सं०] कडा। करीष। सूखा गोबर [को०]।

वनौकस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका घर वन मे हो। वनवासी। २ जगली पशु। बदर, शूकर आदि। ३ तपस्वी। यती।

वनौका—संज्ञा पुं० [सं० वनौकस्] दे० 'वनौकस्' [को०]।

वनौषध—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की ओषधियाँ। जगली जडी बूटी।

वन्न—संज्ञा पुं० [सं०] हिस्सेदार। साझीदार [को०]।

वन्य¹—वि० [सं०] १. वन मे उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २. जगली।

यौ०—वन्य गज = वन्यद्विप। वन्यचर। वन्यद्विप = जगली हाथी। वन्यपक्षी = वन के पक्षी। वन्यवृत्ति = जगल मे उत्पन्न पदार्थो से जीवननिर्वाह करनेवाला।

वन्य²—संज्ञा पुं० १. वनसूरन। २ क्षीर विदारी। ३ वाराही कद। ४ शख। ५. जगली जानवर (को०)। ६. जगली पौधा (को०)। ७ बदर (को०)। ८. जगल मे उत्पन्न होनेवाले फल (को०)। ९. त्वचा। छाल (को०)।

वन्यचर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वनचर'। उ०—वस, पत्र पुष्प हम वन्यचरो की सेवा।—साकेत, पृ० २०६।

वन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुद्गपर्णी। २. गोपाल ककडी। ३. गुजा। ४. भद्रमुस्ता। ५. अश्वगंध। असगध। ६. सघन जगल। वन-

समूह। ७ बाढ। जलप्लावन। ९ अप्रकेत जलराशि। १० लता। उ०—परतु मेरा तो निज का कोई स्वार्थ नही, हृदय के एक एक कोने को छान डाला—कही भी कामना की वन्या —नही। स्कद०, पृ० ९३।

वन्योपोदकी—सज्ञा स्त्री० [स०] लताविशेष। वन पोय (को०)।

वन्न—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वन्न' (को०)।

वप—सज्ञा पु० [स०] १ बीज बोना। २ बीज बोनेवाला। ३ क्षौर। मुडन। ४ बुनाई।

वपन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वपनीय] १ केशमुडन। २ बीज बोना। ३ शुक्र। बीज (को०)। ४ बाल बनाने का अस्तुरा (को०)। ५ क्रम मे रखना। गणना (को०)।

वपनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ नाई क्षौरकार्य करते हैं। वह स्थान जहाँ हज्जाम बैठकर हजामत बनाते हैं। २ वह स्थान जहाँ जुलाहे कपडा बुनते हैं। ३ कपडा बुनने का औजार। करघा (को०)।

वपनीय—वि० [स०] १ बोने योग्य। २ वपन के योग्य। मूँडने लायक (को०)।

वपा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चरबी। मेद। २ वल्मीक। बाँबी। ३ विवर। छिद्र (को०)। ४ आँतो की झिल्ली। अत्रावरण (को०)। ४ बाहर निकली हुई नाभि (को०)।

वपाकृत्—सज्ञा पु० [स०] मज्जा (को०)।

वपित—वि० [स०] बोया हुआ (को०)।

वपिल—सज्ञा पु० [स०] पिता। जनक (को०)।

वपु[1]—सज्ञा पु० [स० वपु] १ शरीर। देह। २ रूप। ३ सौंदर्य (को०)। ४ सत्व। सत्ता। नैसर्गिक प्रवृत्ति (को०)। ५ पानी (वेद)। ६ आश्चर्य (को०)। ७ अश (को०)।

यौ०—वपुर्गुण। वपु प्रकर्ष। वपुर्धर। वपु स्रव।

वपु[2]—सज्ञा स्त्री० दक्ष की एक कन्या का नाम जो धर्मराज की पत्नी थी (को०)।

वपु प्रकर्ष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वपुर्गुण' (को०)।

वपु स्रव—सज्ञा पुं० [स०] शरीरस्थ रस धातु (को०)।

वपुन—सज्ञा पु० [स०] देवता (को०)।

वपुमान—वि० [स०] १ सुदर शरीरवाला। २ साकार। मूर्त (को०)।

वपुरा(पु)—वि० [देश०] बेचारा। उ०—तुम्हे रा होसउँ असहना जइ सुनिअउँ रिउ नाम। इअर वपुरा को करओ वीरत्तरा निज ठाम।—कीर्ति०, पृ० ६०।

वपुर्गुण—सज्ञा पु० [स०] आकृति का सौंदर्य (को०)।

वपुर्धर—वि० [स०] १ सौंदर्ययुक्त। सुदर। २ शरीरी। मूर्त (को०)।

वपुप(पु)[1]—सज्ञा पु० [स० वपुम्] शरीर। देह। उ०—विन नाथ की मैं दीन। विधवा सु वपुप नवीन। जग सिंधु घोर अपार। ता मद्धि मो तनु डारि।—प० रासो, पृ० ११।

वपुप[2]—वि० [स०] १ सुदर। सलोना। २ आश्चर्यजनक (को०)।

वपुप[3]—सज्ञा पु० [स०] आकार या शरीर का सौंदर्य (को०)।

वपुष्टमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद्मचारिणी लता। २ हरिवश के अनुसार काशिराज की एक कन्या, जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय से व्याही थी।

विशेष—हरिवश मे लिखा है कि राजा जनमेजय ने एक अश्वमेध यज्ञ किया। उनकी पत्नी, वपुष्टमा साथ ही बैठी थी। इद्र ने अश्व के शरीर मे प्रविष्ट होकर उसके साथ सहवास किया। जब मरा हुआ अश्व जीवित दिखाई पडा, तब इद्र की चाल का पता लगा। जनमेजय ने क्रुद्ध होकर इद्र को शाप दिया कि अब से अश्वमेध मे तुम्हारा कोई पूजन न करेगा। उन्होने ऋत्विक् ऋषियो को भी देश से निकाल दिया और वपुष्टमा का भी तिरस्कार किया। उसी समय गधर्वराज विश्वावसु ने आकर राजा को समझाया कि इद्र ने तुम्हारे अश्वमेध यज्ञ मे डरकर रभा अप्सरा को वपुष्टमा का शरीर धारण करा के भेजा है। ऋत्विजो को निकालने से तुम्हारा अश्वमेध का पुण्य क्षीण हो गया।

वपुष्मान्—वि० [स० वपुष्मत्] १ मूर्तिमान्। शरीरी। २ सुदर। ३ हृष्टपुष्ट। ४ पूर्ण। अक्षत। ५ देहात्मवादी (को०)।

वपोदर वि० [स०] तुदिक। तोंदवाला (को०)।

वप्ता—सज्ञा पु० [स० वप्तृ] १ पिता। जनक। २ कवि। ३. नापित। नाई। ४ बीज बोनेवाला। ५ कपक। किसान (को०)।

वप्प(पु)—सज्ञा पुं० [स० वप्तृ>वप्ता, प्रा० वप्प, वप्पा] दे० 'बाप'। उ०—जें सत्तु समर सम्मदि कहू वप्प वैर उद्धरिअ धुअ।—कीर्ति०, पृ० ८।

वप्पीओ(पु)—सज्ञा पु० [देशी] चातक। पपीहा।—देशी०, पृ० २८५।

वप्पो(पु)—सज्ञा पु० [स० वपुम्] शरीर। तनु। देह।—देशी०, पृ० ३०७।

वप्र—सज्ञा पु० [स०] १ मिट्टी का ऊँचा धुस्स, जो गढ या नगर की खाई से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारो ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। चय। मृत्तिकास्तूप। २ क्षेत्र। खेत। ३ रेणु। धूल। ४ ऊँचा किनारा। कगार। (नदी आदि का)। ५ पहाड की चोटी। ६ टीला। भीटा। ७ सीसा नाम की धातु। ८ प्रजापति। ९ द्वापर युग के एक व्यास। १० चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम। ११ साँड अथवा हाथी का अपनी सीग या दाँत से मिट्टी का ढूह गिराना (को०)। १२ पिता। जनक (को०)। १३ सोना (को०)। १४ नीव (को०)। १५. परिखा। खाई (को०)। १६. घेरा (को०)। १७ मैदान (को०)।

वप्रक—सज्ञा पु० [स०] वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। चक्कर।

वप्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वप्रक्रीडा'।

वप्रक्रीड़ा—सज्ञा स्त्री० [स० वप्रक्रीडा] टीले या ऊँचे उठे हुए मिट्टी के ढेर को हाथी, साँड आदि का दाँतो या सीगो से मारना, जो उनकी एक क्रीडा है।

वप्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मजीठ। २ जैनो के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम। ३ मिट्टी का चिपटे सिरे का बाँध (को०)। ४. उद्यानशय्या (को०)।

वप्राभिघात—सज्ञा पु० [स०] १ तटाघात । २ दे० 'वप्रक्रिया' [को०]।

वप्रि—सज्ञा पु० [स०] १ क्षेत्र । २ समुद्र । ३. स्थान की दुर्गमता । दुर्गति ।

वप्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्मीक । बाँबी । २ मिट्टी का ढूह (को०)।

वफा—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा] १ वादा पूरा करना । बात निबाहना ।

यौ०—वफादार । वफादारी । वफापरस्त = दे० 'वफादार' । वफापरस्ती = वफादार होना । वफादारी । वफाशनास = वफा की पहचान रखनेवाला । वफाशनासी = वफा को पहचानना ।

२ निर्वाह । पूर्णता । उ०—अब कूच ही करना सही इस खेत से न वफा लही ।—मुदन (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।

३ मुरौवत । सुशीलता । उ०—वे खाए ते बेवफा वफा रहै ठहराइ। मीनै कीनै दूर ज्यौं तेही तैं रह जाइ ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वफात—सज्ञा स्त्री० [अ० वफात] मौत । मृत्यु ।

क्रि० प्र०— करना ।—पाना ।—होना । उ०—नवाब आलिफ खाँ कोट कागडे मे वफात प्राप्त हुआ और लाश फतेहपुर मे लाके रक्खी ।—मुदर० ग्र० (जी०), भाट० १, पृ० ५१ ।

वफादार—वि० [अ० वफा + फा० दार] [सज्ञा वफादारी] १. वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला । २ अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला । ३ सच्चा ।

वफादारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा + फा० दारी] १ प्रतिज्ञापालन । बात को पूरा करना । २ मित्र या स्वामी का तन, मन, धन से साथ निभाना [को०] ।

वफीक—सज्ञा पु० [अ० वफीक] अनुकूल आचरण करनेवाला, मित्र । दोस्त । उ०—जा को साहब देत वफीक, चारि पियाला करु तहकीक ।—धरनी०, पृ० २० ।

वफ्क—सज्ञा पु० [अ० वफ्क] अनुकूल । मुआफिक [को०] ।

वफ्द—सज्ञा पु० [अ० वफ्द] दूतमडल । प्रतिनिधि मडल [को०] ।

वबर—सज्ञा पु० [अ०] ऊन । बाल [को०] ।

वबा—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरी । महामारी । फैलनेवाला भयकर रोग । जैसे,— हैजा, प्लेग आदि । २. छूत का रोग ।

क्रि० प्र०—आना ।—पडना ।—फैलना ।

वबाई—सज्ञा स्त्री० [अ०] वबा सबधी । फैलनेवाली । छुतही [को०]।

वबाल—सज्ञा पु० [अ०] १ बोझ । भार । २ आपत्ति । कठिनाई । ३ घोर विपत्ति । आफत । ४ ईश्वरीय कोप । ५ पाप का फल ।

क्रि० प्र०—होना ।

मुहा०—किसी का वबाल पडना = किसी को दु ख पहुँचाने का फल मिलना । दुखिया की आह पडना । जैसे,—इसका वबाल तेरे ऊपर पडेगा ।

वभ्रु—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का सर्प । (सुश्रुत) । २ एक यदुवशीय योद्धा । विशेष दे० 'बभ्रु' ।

वभ्रुवाहन—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बभ्रुवाहन' ।

वम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वमन' [को०] ।

वमति—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन करना । वमनक्रिया [को०] ।

वमथु—सज्ञा पु० [स०] १ वमन । २ थूक । ३ हाथी के सूँड से निकला हुआ पानी । ४ खाँसी [को०] ।

वमन—सज्ञा पुं० [स०] १ कै करना । उलटी करना । छर्दन । २ वमन किया हुआ पदार्थ । ३ आहुति । ४ पीडा । ५. भाँग (को०) ।

वमना—क्रि० स० [स० वमन] कै करना । उलटी करना [को०] ।

वमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जोक । २ कपास का पौधा (को०) ।

वमनीया—सज्ञा स्त्री० [स०] मक्खी ।

वमि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक रोग, जिसमे मनुष्य का जी मतलाता है, मुँह से पानी छूटता है और जो कुछ वह खाता पीता है, उसे मुँह के रास्ते निकालकर बाहर फेंक देता या कै कर देता है।

विशेष—यह वमन रोग पाँच प्रकार का माना गया है,—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, और आगतुक । वातज मे बगल और छाती मे दर्द, मस्तक और नाभि मे शूल तथा अगो मे सूई छेदने की सी पीडा होती है । वमन बडे वेग से और बडे शब्द के साथ अधिक मात्रा मे निकलता है । पित्तज मे मूर्छा, प्यास, मुँह सूखना, तालू और आँखो मे जलन और आखो के सामने अँधेरा छाना आदि लक्षण होते है और वमन कुछ हरा और तीता होता है । कफज मे मुँह मीठा रहता है, कुछ कफ निकलता है । भोजन की अनिच्छा होती है, शरीर भारी जान पडता है और वमन सफेद, गाढा और मीठा होता है, तथा वमन के समय रोगटे खडे हो जाते ह और बडी पीडा होती है । आगतुक वमन कोई बुरी वस्तु खा लेने या घृणित वस्तु देखने या सूँघने से एकबारगी हो जाता है ।

२ वमन करानेवाली दवा

वमि[2]—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि । २ धतूरा । ३ दुष्ट ।

वमित—वि० [स०] वमन किया हुआ । जो वमन किया गया हो [को०] ।

वमी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन । छर्दि । दे० 'वमि' ।

वमी[2]—वि० [स० वमिन्] वमन रोग का रोगी [को०] ।

वम्य—वि० [स०] (औषध आदि) जिससे वमन हो । वमन करानेवाली [को०] ।

वम्र—सज्ञा पु० [स०] दीमक । वम्री [को०] ।

वम्रक[1]—सज्ञा पुं० [स०] दीमक या चीटा [को०] ।

वम्रक[2]—वि० अत्यत छोटा । बहुत छोटा [को०] ।

वम्री—सज्ञा स्त्री० [स०] दीमक ।

वम्रीकूट—संज्ञा [सं०] वल्मीक । बाँबी । बिमौट ।

वम्ह्‌ (पु)†—संज्ञा पुं० [देशी] बल्मीक । बिमौट ।—देशी०, पृ० २८४ ।

वम्हरा (पु)†—संज्ञा पुं० [सं० ब्राह्मण, प्रा० बम्हन] दे० 'ब्राह्मण' । उ०—बहुल वम्हरा बहुल काअथ राजपुत्त कुल बहुल बहुल जाति मिलि वइस ।—कीर्ति०, पृ० ३० ।

वय (पु)—सर्व० [सं० अस्मद् शब्द का प्र० पु० बहुवचन] हम । उ०—विकटतर वक्र छुर धार प्रमदा तीव्र दर्प कदर्प खर खड्गधारा । धीर गभीर मन पीर कारक तत्र के वराका वय विगत सारा ।—तुलसी (शब्द०) ।

वय क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] क्रमागत जीवन काल । अवस्था । उम्र ।

वय परिणति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अवस्था की परिपक्वता । प्रौढ अवस्था [को०] ।

वय परिणाम—संज्ञा पुं० [सं०] वय परिणति ।

वय प्रमाण—संज्ञा पुं० [सं०] जीवन का पूरा समय [को०] ।

वय सधि—संज्ञा स्त्री० [सं० वय सन्धि] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति । लड़कपन और जवानी के बीच का काल ।

वय स्थ—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'वयस्य' ।

वय स्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयस्या' ।

वय स्थान—संज्ञा पुं० [सं०] जवानी । दे० 'वयस्थान' [को०] ।

वय[1]—संज्ञा पुं० [सं० वयस्] १ बीता हुआ जीवनकाल । अवस्था । उम्र । २ बल । शक्ति । ३ पक्षी । ४ युवावस्था । जवानी (को०) । ५ कौवा (को०) । ६ यज्ञ प्रयुक्त बलि पदार्थ । बलि या अन्न (वेद) (को०) । ७ स्वास्थ्य । पुष्टता (को०) ।

वय[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ तंतुवाय । जुलाहा । २ बया पक्षी ।

वय[3]—संज्ञा स्त्री० जुलाहों के करघे में सूत का एक जाल । विशेष दे० 'बै' या 'बय' ।

वयताल (पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वैताल] उ०—कालीदास भोज कै ज्यों विक्रम के वयताल ।—बाकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० १३३ ।

वयन—संज्ञा पुं० [सं०] बुनने की क्रिया या भाव । बुनना ।

वयराट (पु)—वि० [सं० वैराट] दे० 'विराट्' । उ०—वयराट रूप गावत निगम । निज दासन (दाता) अभय ।—नट०, पृ० १० ।

वयस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीता हुआ जीवन काल । अवस्था । उम्र । २ पक्षी ।

वयस—संज्ञा पुं० [सं० वयस्] दे० 'वयस्' ।

वयसिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयस्या' ।

वयस्क—वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १ उमर का । अवस्थावाला ।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग समस्तपद के अंत में होता है । जैसे, अल्पवयस्क, समवयस्क इत्यादि ।

२ पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ । जो अब बालक न हो । सयाना । बालिग ।

वयस्कर—वि० [सं०] दे० 'वयस्कृत्' ।

वयस्कृत—वि० [सं०] आयु प्रद । जीवन देनेवाला ।

वयस्थ[1]—वि० [सं०] [स्त्री० वयस्था] १ प्राप्तवयस्क । २. युवा । युवक । ३ समवयस्क ।

वयस्थ[2]—संज्ञा पुं० समवयस्क पुरुष ।

वयस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आमलकी । आँवला । २ हरीतकी । हड़ । ३ गुडूच । ४ छोटी इलायची । ५ काकोली । ६. सेमल । ७. युवती । ८ मत्स्याक्षी (को०) । ९ मत्स्यपर्णी (को०) । १० सोमवल्लरी । सोमलता (को०) । ११ आली । सखी । सहेली । (को०) ।

वयस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] यौवन ।

वयस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. समवयस्क । एक उमरवाले । हमजोली । २. मित्र । उ०—प्रिय वयस्य ? आज तुम्हें आए तीन दिन हुए ।—स्कंद० पृ० १२७ ।

यौ०—वयस्यभाव = मित्रता । मैत्री । दोस्ती ।

वयस्यक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वयस्य' [को०] ।

वयस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सखी । सहेली । उ०—देखकर अपनी सगी को पलक सी ध्यानलग्ना, एक ने संकेत कर यों वयस्या से दबे स्वर में कहा ।—ग्रंथि०, पृ० ७२ । २ इष्टका । ईंट ।

वयस्यिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'वयस्या'-१ । २ अंतरंग चेटी वा दासी [को०] ।

वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वयाक' [को०] ।

वयाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ डाली । टहनी । २. लता (को०) ।

वयार (पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'बयार' ।

वयाला (पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्याल] १ दे० 'व्याल' । २ वायु । हवा । उ०—अधा भया बनाय वेद की बात न मानै । विषय वयाला खाय करै संजय का जानै ।—पलटू०, पृ० ६० ।

वयुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्ञान । बुद्धि । बौद्धिक चेतना । २ मंदिर । देवागार । ३ आज्ञा । आदेश । नियम । ४ कर्म । ५ रीति । पद्धति । सरणि । ६ स्पष्टता [को०] ।

वयोगत[1]—वि० [सं०] प्रौढ । अधिक वय का ।

वयोगत[2]—संज्ञा पुं० युवावस्था का गमन । प्रौढावस्था [को०] ।

वयोधा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वयोधस्] १ अन्न । २ युवा अथवा मध्यम वय का व्यक्ति । प्रौढ़ व्यक्ति [को०] ।

वयोधा[2]—वि० [सं०] १. शक्तिशील । ताकतवर । २ शक्तिदायक वा स्वास्थ्यप्रद । ३ भोजन देनेवाला । अन्न देनेवाला [को०] ।

वयोधा[3]—संज्ञा स्त्री० शक्ति । ताकत । सामर्थ्य [को०] ।

वयो बाल—वि० [सं०] छोटी उम्र का । बाल्यावस्था का [को०] ।

वयोरग—संज्ञा पुं० [सं० वयोरङ्ग] सीसा धातु [को०] ।

वयोरग—संज्ञा पुं० [सं० यौवङ्ग] सीसक । सीसा धातु [को०] ।

वयोविशेष—संज्ञा पुं० [सं०] वय की विशेषता । उम्र का अंतर [को०] ।

वयोवृद्ध—वि० [सं०] जो अवस्था में बड़ा हो । बड़ा बूढ़ा ।

वयोहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बल या शक्ति का कम होना। २. बुढ़ाना। वृद्धावस्था होना (को०)।

वरंच—अव्य [सं० वरञ्च] १ ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। अपितु। २. परंतु। लेकिन। किंतु।

वरंड—संज्ञा पुं० [सं० वरण्ड] १ बमी की डोर। शिम्त। २. समूह। ३. मुहाँसा। ४ घास का गट्ठर ५ फीलखाने आदि मे की वह दीवार जो दो लडाके हाथियो के बीच मे लडाई बचाने के लिये बनाई जाती है। ६ कोष। थैली। झोला (को०)। ७. अलिंद। बरामदा। दालान (को०)।

वरंडक[1]—संज्ञा पुं० [सं० वरण्डक] १ मिट्टी का भीटा। ढूह। २ दो लडाके हाथियो के बीच की दीवार। ३ हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा। ४ मुँहासा (को०)। ५ दीवार (को०)।

वरंडक[2]—वि० १ लंबा। बडा। विस्तृत। २ भयानक। डरावना। भयभीत। ३ दुखी। पीडित। ४ गोल। वर्तुलाकार (को०)।

वरंडलबुक—संज्ञा पुं० [सं० वरण्डलम्बुक] वसी की डोरी (को०)।

वरंडा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० वरण्डा] १ कटारी। कर्त्ती। २ वत्ती। ३ मैना। सारिका (को०)।

वरंडा[2]—संज्ञा पुं० दे० 'बरामदा'।

वरंडालु—संज्ञा पुं० [सं० वरण्डालु] एरड वृक्ष। रेंड का पेड (को०)।

वर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। वह बात जिसके लिये किसी देवी, देवता या बडे से प्रार्थना की जाय। जैसे,—उसने शिव से यह वर माँगा।

क्रि० प्र०—माँगना।

२ किसी देवता या बडे से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। वह बात जो किसी देवता या बडे की प्रसन्नता से प्राप्त हुई हो। जैसे,—उसे यह वर था कि वह किसी के हाथ से न मरेगा।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३. जामाता। ४. पति या दूल्हा। ५ गुग्गुल। ६ कुकुम। केसर। ७ दारचीनी। ८ बालक। ९ अदरक। आर्द्रक। १० सुगध तृण। ११ सेंधा नमक। १२. पियाल या चिरौंजी का पेड। १३ वकुल। मौलसिरी। १४ हलदी। १५ गौरा पक्षी। १६ चुनाव (को०)। १७ पसद (को०)। १८ इच्छा (को०)। १९ लपट या छिछोरा व्यक्ति (को०)। २० वह जो किसी से प्रेम करता हो। प्रेमी (को०)। २१ दहेज (को०)।

वर[2]—वि० १ श्रेष्ठ। उत्तम। २ सर्वोत्तम (को०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय श्रेष्ठता सूचित करने के लिये संज्ञा या विशेषणो के आगे होता है। जैसे,—पडितवर, विज्ञवर, वीरवर, मित्रवर।

वरकंठ—संज्ञा पुं० [सं० वर+कण्ठ] सुग्रीव। उ०—वरकंठ वामा घरी धामा किता कामा वद किया। भय मेट भारी धनुष धारी अरज सारी येह।—रघु० रू०, पृ० १४६।

वरक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधारण वस्त्र। गमछा, दुपट्टा आदि। उ०—गुरु के चरन अनद जाय करि, अनुभव वरक उतारी।—धरनी०, पृ० ३। २ नाव का आच्छादन। ३ वनमूँग। ४ काकुन। प्रियगु। ५ जगली बेर। झडबेरी। ६ अभिलाषा। मनोरथ। इच्छा (को०)। ७. घडी। घटा (को०)। ९ किसी स्त्री से विवाह की प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति (को०)।

वरक[2]—संज्ञा पुं० [अ० वरक] १ पत्र। २ पुस्तको का पन्ना। पत्रा। ३ दल। पत्र। पखुडी (को०)। ४ सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर, जो कूटकर बनाए जाते है और मिठाइयो पर लगाने और औषध मे काम आते है।

यौ०—वरकसाज = सोने चाँदी के वरक बनानेवाला। वरकसाजी = वरकसाज का काम।

वरका—संज्ञा पुं० [अ० वरकह्] दल। पत्र। पत्ता (को०)।

वरकी—वि० [अ० वरकी] वरक की तरह पतला (को०)।

वरकोद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] कोविदार। कचनार का पेड।

वरक्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] इद्र।

वरग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वर्ग, प्रा० वग्ग] दे० 'वर्ग'। उ०—मालवणी मनि दूमणी आवी वरग विमासि।—ढोला०, दू० ३१६।

वरचदन—संज्ञा पुं० [सं० वरचन्दन] १ काला चदन। २ देवदारु।

वरज—वि० [सं०] ज्येष्ठ। बडा।

वरजिश—संज्ञा स्त्री० [फा० वरजिश] १. व्यायाम। कसरत। शारीरिक परिश्रम। २ अभ्यास। मश्क। ३. ग्रहण। इख्तियार (को०)।

यौ०—वरजिशखाना, वरजिशगाह = व्यायामशाला। अखाड़ा।

वरजिशी—वि० [फा० वर्जिशी] कसरती (को०)।

वरजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वरजीविन्] १ एक वर्णसकर जाति जो स्मृतियो मे गोप और ततुवाय के सयोग से उत्पन्न कही गई है। २ ब्राह्मण का औरस पुत्र जो शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हो।

वरट—संज्ञा पुं० [सं०] १ हस। २. कुद का फूल। ३ भिड। बर्रे। ४ एक प्रकार का अन्न (को०)। ५ कुसुम का बीज (को०)।

वरटक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वरटिका, वरट्टिका] कुसुम का बीज। बर्रे का बीज।

वरटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी। २ गधिया कीडा। गधकीट। ३ बर्रे। ततैया। भिड। ४ कुसुम का बीज (को०)।

वरटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी। २ गधिया कीडा। ३ पीली मक्खी। उ०—वरटी (पीली माँखी), भोगर आदि आपसे चौगुने भारी भी हैं।—माधव०, पृ० १९२।

वरण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को पसद करके किसी कार्य के लिये नियुक्त करना। किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. मगल कार्य के विधान मे होता आदि कार्यकर्ताओ को नियत करके दान आदि से उनका सत्कार करना। ३. मगल कार्य मे नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान। जैसे,—विवाह मे ११ आदमियो को वरण मिला है।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

४. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ५ पूजा। अर्चना। सत्कार। ६ ढकने या लपेटने की वस्तु। आवरण। आच्छादन। वेष्ठन। ७ किसी स्थान के चारो ओर घेरी हुई दीवार। ८ ऊँट। ९ वरुण वृक्ष। १० पुल। सेतु। ११ धनुष की सज्जा या अलकार (को०)। १२. इद्र (को०)। १३ एक प्रकार का अस्त्र का मत्र (को०)। १४. वृक्ष। पेड (को०)। १५. याचना। प्रार्थना।

वरण(पु)[2]—सज्ञा पु० [स० वर्ण] १ रग। दे० 'वर्ण'। २ मनुष्यो के चार विभाग या वर्ण। उ०—जो कोइ भक्त हमारा होई। जात वरण को त्यागै सोई।—कबीर सा०, पृ० ८२०।

वरणक—सज्ञा पु० [स०] १ आच्छादन। आवरण। २ वह जो किसी का आच्छादन करे। आच्छादन करनेवाला (को०)।

वरणजथा(पु) सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का डिंगल छद।—रघु० रू०, पृ० २५३।

वरणना(पु)—क्रि० स० [स० वर्णन] वर्णन करना। कहना। उ०—नभ वायु तेज चल धरणी। पीछे वहु विधि करि वरणी।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६७।

वरणमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] जयमाल [को०]।

वरणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] वाराणसी।

वरणा—सज्ञा स्त्री० [स० वरुण ?] १. एक छोटी नदी का नाम जो काशी के उत्तर मे वहती है। यह नदी वाराणसी क्षेत्र की उत्तरीय सीमा है। वरुणा। २. पजाव देश की एक नदी का नाम जो सिंधु नद मे दक्षिण ओर से अटक के विपरीत दिशा से आकर मिलती है। ३. अरहर।

वरणी—सज्ञा स्त्री० [स० वरण] दे० 'वरण'—३।

वरणीय—वि० [स०] [वि० स्त्री० वरणीया] १. पूजनीय। पूज्य। २. श्रेष्ठ। वडा। ३. चुनने या ग्रहण करने योग्य। उ०—थी अनत की गोद सदृश जो विस्तृत गुहा वहाँ रमणीय। उसमे मनु ने स्थान वनाया सुदर स्वच्छ और वरणीय।-कामायनी, पृ० ३०।

वरततु—सज्ञा पुं० [सं० वरतन्तु] एक ऋषि का नाम।

वरत(पु)—सज्ञा पु० [स० व्रत] उपवास। दे० 'व्रत'-२। उ०—विकट करो तीरथ वरत, धरा भेष के भार। विनै नाम रघुवीर रै, परत न उतरै पार।—रघु० रू०, पृ० ३४।

वरतनु[1]—वि० [स०] सुदर शरीरवाला [को०]।

वरतनु[2]—सज्ञा स्त्री० सुदरी स्त्री [को०]।

वरतमान(पु)—वि० [स० वर्तमान] दृश्य जगत् जो वर्तमान है। उ०—वरतमान मँह सतगुरु सारा। सतगुरु भव तारन कडिहारा।—कबीर सा०, पृ० ४३०।

वरति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० व्रत] दे० 'व्रत'। उ०—वरति करइ घरि आपणाइँ।—वी० रासो, पृ० ४९।

वरतिक्त—सज्ञा पुं० [स०] १ कुटज। कोरैया। २ नीम। ३. पर्पट। पापडा। ४. रोहितक। रोहिना का पेड।

वरतिक्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पाठा।

वरत्त(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वरयात्रा, प्रा वरत्त] दे० 'बारात'। उ०—नायदवारे परसवा, आवी धार वरत्त।—रा० रू०, पृ० ३५६।

वरत्र—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वरत्रा' [को०]।

वरत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वरेत। वरेता। २. हाथी खींचने का रस्सा। ३. चमडे का तसमा।

वरत्वच—सज्ञा पु० [स०] नीम का पेड।

वरद[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वरदा] वर देनेवाला। अभीष्टदाता। २ प्रसन्न। हर्षयुक्त (को०)।

यौ०—वरदचतुर्थी = वरदा चतुर्थी। वरदहस्त = वर देने की मुद्रा। हाथ की वरद मुद्रा।

वरद[2]—सज्ञा पु० [स०] १ उपकारी। कल्याणकर। २ पितृगणो का एक वर्ग [को०]।

वरदक्षिणा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है। दहेज। दायजा।

वरदा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कन्या। २ अश्वगध। ३ अडहुल। ४ आदित्यभक्ता। हुरहुर। ५ वाराही कद। ६ एक नदी का नाम [को०]।

वरदाई[1]—वि० [स० वरदायिन्] वरदायी। वर देनेवाला। उ०—इद्र को इद्र, देव देवन को, ब्रह्मा को ब्रह्म महा वरदाई।—नद० ग्र०, पृ० ३४३।

वरदाई[2]—सज्ञा पु० पृथ्वीराज रासो के रचयिता चद का उपनाम।

वरदा चतुर्थी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी। वरदा चौथ।

वरदाता—वि० [स० वरदातृ] [वि० स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला। वरद। उ०—जीवन समीर शुचि नि श्वसना, वरदात्री।—अपरा, पृ० २०३।

वरदान—सज्ञा पु० [स०] १ किसी देवता या वडे का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। उ०—देन कहेहु वरदान दुइ तेउ पावत सदेह।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।

२ किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता स हो।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

वरदानी—सज्ञा पु० [स० वरदानिन्] वर प्रदान करनेवाला। मनोरथ पूर्ण करनेवाला। वरदायक।

वरदायक[1]—वि० [स०] दे० 'वरदाता'।

वरदायक[2]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

वरदारुक—सज्ञा पु० [स०] विषैली पत्तियोवाला एक पौधा [को०]।

वरदी—सज्ञा स्त्री० [अ०] वह परिधान जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियो के लिये नियत हो। वह पोशाक या पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरो और नौकरो के लिये मुकर्रर हो। जैसे,—पुलिस की वरदी, फौज की वरदी।

वरद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अगर, जिसका वृक्ष बहुत बडा होता है।

वरन्—अव्य० [सं० वरम्] ऐसा नहीं। बल्कि।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग अब उठता जा रहा है।

वरनⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० वर्ण] दे० 'वर्ण'। उ०—इनकी अंग वोहोत सुंदर और गौर वरन है, श्री स्वामिनी जी सदृश।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

वरनाⓅ[1]—संज्ञा पुं० [सं० वरण] ऊँट। उ०—वरना भख कर मे अवलोकत केश पास कृतवंद। अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखकंद।—सूर (शब्द०)।

वरना[2]—अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो। जैसे,—आप बैठिए, वरना मैं भी उठकर चला जाऊँगा।

वरनाⓅ[3]—क्रि० स० [सं० वरण] वरण करना। उ०—और चाहते होगे फिर से मर्त्य धरा पर आकर, जीवन श्रम के शोभा सुख को वरना।—युगपथ, पृ० ११५।

वरपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ बरात। २ बराती [को०]।

वरपर्णाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीरकंचुकी का वृक्ष [को०]।

वरपीतक—संज्ञा पुं० [सं०] अबरक। अभ्रक [को०]।

वरप्रद—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वरप्रदा] १ वर देनेवाला। २ प्रसन्न।

वरप्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा [को०]।

वरप्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना।

क्रि० प्र०—**करना**।—**होना**।

वरप्रभ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व [को०]।

वरप्रभ[2]—वि० शोभायुक्त। अच्छी कांतिवाला [को०]।

वरप्रस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वरयात्रा' [को०]।

वरफल—संज्ञा पुं० [सं०] नारिकेल। नारियल।

वरबाह्लिक—संज्ञा पुं० [सं०] केसर [को०]।

वरमⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वर्म] दे० 'वर्म'।

वरमनाⓅ†—क्रि० अ० [देश० या सं० विरमण] रमना। झुकना। उ०—झिरिहिरि वहै बयारि अमी रस ढरकै हो। वरमी नौरँगिया कै डारि, चँदन गछ मह्कै हो।—पलटू०, भा० ३, पृ० ७३।

वरमेल्हो—संज्ञा पुं० [पुर्त०] एक प्रकार का लाल चंदन जो मलाया द्वीप से आता है।

वरम्मⓅ—संज्ञा पुं० [सं० वर्म] दे० 'वर्म'। उ०—नमसकार सूराँ नराँ, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजाळै साँम रौ, पाळै साँम धरम्म।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १३।

वरमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधद्रव्य। रेणुका [को०]।

वरयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाह के लिये वर का अपने इष्ट-मित्रों और संबंधियों के सहित धूमधाम के साथ कन्या के घर जाना। दूल्हे का बाजे गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। २ वह भीड भाड जो दूल्हे के साथ चलती है। बरात।

वरयिता—संज्ञा पुं० [सं० वरयितृ] १ वरण करनेवाला। २. पति। भर्ता।

वरयुवति, वरयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री [को०]।

वररुचि—संज्ञा पुं० [सं०] एक अत्यंत प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।

विशेष—अष्टाध्यायीवृत्ति, प्राकृतप्रकाश, लिंगानुशासन, राक्षस काव्य आदि अनेक ग्रंथ इनके नाम से प्रसिद्ध हैं, पर सब इनके नहीं बनाए हैं। इनका प्राकृत का व्याकरण 'प्राकृत प्रकाश' बहुत प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है। ये कब हुए, इसका ठीक ठीक निश्चय विद्वानों को अभी नहीं हुआ है। कथा सरित्सागर में ये पाणिनि के सहाध्यायी और प्रतिद्वंद्वी कहे गए हैं, पर यह कल्पना मात्र है। उसी ग्रंथ में वररुचि और कात्यायन एक हो गए हैं, पर यह भी ठीक नहीं है। इसी प्रकार ज्योतिर्विदाभरण का नवरत्नवाला वह श्लोक भी, जिसमें वररुचि का नाम है, कपोलकल्पना मात्र है। 'प्राकृतप्रकाश' की भूमिका में कावेल साहब ने वररुचि को ईसा की पहली शताब्दी का ठहराया है, और कोई कोई इन्हें चंद्रगुप्त मौर्य से भी पहले ईसा से ४०० वर्ष पूर्व का मानते हैं। फिर भी ये पतंजलि (ई० पू० १५७) से एक दो शती पूर्ववर्ती थे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

वरल—संज्ञा पुं० [सं०] भिड। बर्रे [को०]।

वरलब्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंपक वृक्ष। २ वह जो वररूप में प्राप्त हो। वरदान के रूप में प्राप्त वस्तु [को०]।

वरला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हंसी। २ भिड। बर्रे (को०)।

वरली—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिड। बर्रे [को०]।

वरवत्सला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सास। पत्नी की माता [को०]।

वरवराह—संज्ञा पुं० [सं०] घुँघराले बालोंवाला जंगली आदमी। वर्बर।

वरवर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण। सोना [को०]।

वरवर्णिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तम स्त्री। २ लाख। ३ हल्दी। ४ गोरोचन। ५ कँगनी। काकुन। ६ गौरी। ७ लक्ष्मी। ८ सरस्वती। ९ महिला। स्त्री (को०)। १०. प्रियंगु लता (को०)।

वरबाह्लीक—संज्ञा पुं० [सं०] कुंकुम। केसर।

वरवृद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव [को०]।

वरशिख—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसे इंद्र ने सपरिवार मारा था।

वरशीत—संज्ञा पुं० [सं०] दालचीनी। विशेष दे० 'दारचीनी' [को०]।

वरसालⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० वर्षाकाल] वर्षाऋतु। बरसात का मौसम। उ०—बिना नीर जहाँ कमल है बिन बरखा बरसाल।—राम० धर्म०, पृ० ६१।

वरसावरसⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० वर्ष+प्रतिवर्ष] सालोसाल। प्रतिवर्ष। उ०—सीदौ उदियासिंघ सूँ, कीधौ राम करार। सोभल लौ वरसावरस रुपिया सात हजार।—रा० रू०, पृ० २२४।

वरसुरत—वि० [सं०] १. रति के भेदों का ज्ञाता। रतिज्ञ। २. कामी। भोगी। विलासी (को०)।

वरस्रक्—संज्ञा स्त्री० [सं० वरस्रज्] वरमाल। वर को पहनाई जानेवाली माला [को०]।

वरहक—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद का नाम ।

वरही[1]--संज्ञा पुं० [हिं० वर] सोने की एक लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है । टीका ।

वरही(पु)[2]--संज्ञा पुं० [सं० बर्हिन्] मयूर । दे० 'बर्ही'[1] ।

वरही[3]--संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह + ई (प्रत्य०)] प्रसूता का बारहवें दिन स्नान । दे० 'बरही' ।

वरही[4]—संज्ञा स्त्री० [देश०] मोटी रस्सी । दे० 'बरही[3]' ।

वरांग[1]—संज्ञा पुं० [सं० वराङ्ग] १ मस्तक । २ गुदा । ३ योनि । ४ हस्ती । ५ विष्णु का एक नाम । ६ एक प्रकार का नक्षत्र-वत्सर जो ३२४ दिनों का होता है । ७ दारचीनी । ८ पेड की टहनी का सिरा । ९ कामदेव का एक नाम (को०) । १० मुख्य भाग । उत्कृष्ट अंश (को०) । ११ सुंदर रूप (को०) ।

वरांग[2]—वि० सुंदर एवं सुघटित अंश युक्त [को०] ।

वरांगक—संज्ञा पुं० [सं० वराङ्गक] दारचीनी ।

वरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं० वराङ्गना] सुंदर स्त्री ।

वरांगी—संज्ञा पुं० [सं० वराङ्गिन्] १ हाथी । २ अमलबेल ।

वरांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वराङ्गी] १ हल्दी । २. नागदंती । ३ मजीठ ।

वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ त्रिफला । रेणुका नामक गंधद्रव्य । ३ गुरुच । ४ मेदा । ५ ब्राह्मी । ६ विडंग । ७ पाठा । ८ हल्दी । ९ बैंगन । १० अडहुल । जपा । देवीफूल । ११ मद्य । १२ सोमराजी लता । १३ अपराजिता । १४ शतमूली । १५ पार्वती का एक नाम (को०) ।

वराक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ युद्ध । ३ पापडा ।

वराक[2]—वि० १ शोचनीय । २ नीच । ३ अशुचि । अशुद्ध (को०) ।

वराकक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ युद्ध । लडाई [को०] ।

वराकी—वि० स्त्री० [सं०] दीन । भाग्यहीन । दुखिनी [को०] ।

वराजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वराजीविन्] ज्योतिषी । गणक ।

वराट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पद्मबीज । कँवलगट्टे का बीज ।

वराटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पद्म का बीज ।

वराटकरजा—संज्ञा पुं० [सं० वराटकरजस्] नागकेसर का पेड ।

वराटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कौडी । २ तुच्छ वस्तु । ३ नागकेसर ।

वराटी, वराडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार का राग [को०] ।

वराण—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र । २ वरुण वृक्ष । वरना ।

वराणसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाराणसी । काशी [को०] ।

वरानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री ।

वरान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ दला हुआ उत्तम अन्न । २ उत्तम खाद्य । उत्कृष्ट भोजन (को०) ।

वराभिद, वराभिध—संज्ञा पुं० [सं०] अम्लवेतस् । अमलबेद ।

वराम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] करौंदा ।

वरारक—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा । हीरक ।

वरारणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] माता ।

वरारुह—संज्ञा पुं० [सं०] वृषभ । बैल । साँड [को०] ।

वरारोह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ एक प्रकार का पक्षी । ३ चतुर सवार । ४ अश्वारोही या गजारोही (को०) । ५ सवार होना । सवारी करना (को०) ।

वरारोह[2]—वि० [वि० स्त्री० वरारोहा] १ श्रेष्ठ सवारीवाला । २ जिसकी कटि या नितंब सुंदर हो (को०) ।

वरारोहा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर स्त्री । वरवर्णिनी । २ कटि । कमर । [को०] ।

वरारोहा[2]—वि० स्त्री० नितंबिनी । ऊँचे चक्राकार नितंबोंवाली [को०] ।

वरार्द्धक—संज्ञा पुं० [सं०] पूजा की सामग्री जिसमें चंदन, कुंकुम और जल सम भाग होता है ।

वराल, वरालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लवंग । लौंग । २ दानी । दाता [को०] ।

वराला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हंसिनी [को०] ।

वरालि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

वरालिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

वराशि—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा कपडा ।

वरासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उत्तराधिकार । दायाधिकार । २. मृत पुरुष की संपत्ति जो उत्तराधिकार में प्राप्त हो । रिक्थ । तरका [को०] ।

वरासतन्—वि० [अ०] उत्तराधिकार के रूप में [को०] ।

वरासतनामा--संज्ञा पुं० [अ० वरासत + फा० नामह्] उत्तराधिकार-पत्र । वरासत का कानूनी दस्तावेज [को०] ।

वरासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रेष्ठ आसन । ऊँचा आसन । २ विवाह में वर के बैठने का आसन या पाटा । ३ जपा । देवी फूल । अडहुल । ४ हिजडा । खोजा । ५ द्वारपाल ।

वरासि--संज्ञा पुं० [सं०] १ मोटा कपडा । २ कृपाणधर पुरुष ।

वरासी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नहाने का मोटा कपडा । २ मैला कपडा । मलिन वस्त्र [को०] ।

वराह—संज्ञा पुं० [सं०] १ शूकर । सूअर । २ विष्णु । ३ मुस्ता । मोथा । ४ एक पर्वत का नाम । ५ एक मान । ६ सूँस । शिशुमार । ७ वराहीकंद । ८ अठारह द्वीपों में से एक छोटा द्वीप । ९ भेडा । मष (को०) । १० साँड (को०) । ११ बादल । मेघ (को०) । १२ मगर । घडियाल (को०) । १३ सेना का एक व्यूह । दे० 'वराह व्यूह' (को०) । १४ वराहमिहिर का नाम (को०) । १५ सिक्का (को०) । १६ एक प्रकार का तृण (को०) । १७ एक पुराण जो १८ पुराणों में से है ।

वराहकंद—संज्ञा पुं० [सं० वराहकन्द] वराहीकंद [को०] ।

वराहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा । २ शिशुमार । सूँस ।

वराहकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण [को०] ।

वराहकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अस्त्र का नाम [को०]।

वराहकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगंधा। असगंध।

वराहकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्प या काल जिसमें विष्णु ने वराह अवतार धारण किया था [को०]।

वराहकांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाराही' [को०]।

वराहक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० वराहक्रान्ता] १ वाराही। २ लज्जालु। लजालू।

वराहकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्यमुखी का फूल [को०]।

वराहपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगंधा। असगंध।

वराहमिहिर—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका और बृहज्जातक नामक ग्रंथ प्रचलित हैं।

विशेष—इनके समय के संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद कुछ वचनों के आधार पर प्रचलित हैं। जैसे,— ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक में कालिदास, धन्वंतरि आदि के साथ वराहमिहिर भी विक्रम की सभा के नौ रत्नों में गिनाए गए हैं। पर इन नौ नामों में से कई एक भिन्न भिन्न काल के सिद्ध हो चुके हैं। अतः यह श्लोक प्रमाण के योग्य नहीं। इसी प्रकार कुछ लोग ब्रह्मगुप्त के टीकाकार पृथुस्वामी के इस वचन का आश्रय लेते हैं—'नवाधिक पंचशतसंख्य शाके वराहमिहिराचार्यो दिवंगतः।' और शक ५०९ में वराहमिहिर की मृत्यु मानते हैं। पर अपनी पंचसिद्धांतिका में 'रोमकसिद्धांत' का 'अहर्गण' स्थिर करते हुए वराहमिहिर ने शक संवत् ४२७ लिया है। ज्योतिषी लोग अपना समय लेकर ही अहर्गण स्थिर करते हैं। अतः इससे ईसा की पाँचवीं शताब्दी में वराहमिहिर का होना सिद्ध होता है। अपने बृहज्जातक के उपसंहाराध्याय में आचार्य ने अपना कुछ परिचय दिया है। उसके अनुसार ये अवंती (उज्जयिनी) के रहनेवाले थे। 'कापित्थ' स्थान में सूर्यदेव को प्रसन्न करके इन्होंने वर प्राप्त किया था। इनके पिता का नाम आदित्यदास था।

वराहमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोती।

विशेष—जैसे, 'गजमुक्ता' हाथी से उत्पन्न मानी जाती है, वैसे ही यह सूअर से उत्पन्न मानी जाती है।

वराहव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्यूह या सेना की रचना, जिसमें अग्र भाग पतला और बीच का भाग चौड़ा रखा जाता था।

वराहशिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक विचित्र पवित्र शिला जो हिमालय के शिखर पर है।

वराहशृंग—संज्ञा पुं० [सं० वराहश्रृङ्ग] शिव।

वराहशैल—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

वराहसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष की बृहत्संहिता नाम की प्रसिद्ध पुस्तक।

वराहांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वराहाङ्गी] क्षुद्रदंती।

वराहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंच।

वराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअरी। शूकरी। २ भद्रमुस्ता। नागरमोथा। ३ वाराहीकंद। ४ अश्वगंधा। ५ एक प्रकार का पक्षी जो गौरैया के बराबर और काले रंग का होता है। ६. दे० 'वाराही'।

वराहु—संज्ञा पुं० [सं०] शूकर। सूअर।

वरिता—वि० [सं० वरितृ] १ वरण करनेवाला। २ ढकनेवाला [को०]।

वरिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० वरिमन्] १ श्रेष्ठता। उत्तमता। प्रमुखता। २ विस्तार। आयाम। परिणाह। ३ मंडल। घेरा [को०]।

वरिवसित—वि० [सं०] पूजित। संमानित। उपासित [को०]।

वरिवसिता—संज्ञा पुं० [सं० वरिवसितृ] उपासक। भक्त [को०]।

वरिवस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उपासना। पूजा। २ सेवा। शुश्रूषा।

वरिवस्यित—वि० [सं०] दे० 'वरिवसित'।

वरिशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मछली फँसाने की काँटिया। बंसी [को०]।

वरिष—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। वत्सर।

वरिषा—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा ?] वर्षा ऋतु। बरसात [को०]।

यौ०—वरिषाप्रिय चातक पक्षी।

वरिष्ठ[1]—वि० [सं०] १ श्रेष्ठ। पूजनीय। उ०—भाव देख उन एक महा व्रतनिष्ठ के, भर आए युग नेत्र वरिष्ठ वशिष्ठ के।—साकेत, पृ० १०८। २ बहुत बड़ा। अत्यंत विस्तृत (को०)। ३ बहुत वजनी। अत्यंत भारी (को०)। ४ खराब। अत्यंत दुष्ट (को०)।

वरिष्ठ[2]—संज्ञा पुं० १ तित्तिर पक्षी। तीतर। २ चाक्षुष मनु के पुत्र का नाम। ३ धर्म सावर्णि मन्वंतर के सप्त ऋषियों में से एक। ४ ताम्र। ताँबा। ५ मिर्च। ६ उरुतमस् ऋषि का एक नाम। ७ नारंगी का पौधा (को०)।

वरिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हलदी। २ हुरहुर नाम का पौधा।

वरिस ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० वरिष] दे० 'बरिस' या 'वर्ष'। उ०—दरबार बरहे दिवस भइट्टे, वरिसहु भेट्ट न पावता।—कीर्ति०, पृ० ४६।

वरिहिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ उशीर। खस। २ सुगंधबाला।

वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतावरी। सतावर। २ सूर्य की पत्नी। छाया।

वरीता—वि० [सं० वरीतृ] दे० 'वरिता' [को०]।

वरीमा—संज्ञा स्त्री० [सं० वरीमन्] दे० 'वरिमा' [को०]।

वरीयान्[1]—वि० [सं० वरीयस्] १ श्रेष्ठ। २ अति युवा।

वरीयान्[2]—संज्ञा पुं० १ फलित ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से अठारहवाँ योग।

विशेष—इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु दाता, सुंदर, सत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का होता है।

२ पुलह ऋषि के एक पुत्र का नाम।

वरीवर्द—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'बलीवर्द' [को०]।

वरीपु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

वरीसिय(पु) — वि० [स० वरीयस्] प्रगाढ। घनघोर। बहुत बडा। उ०—मनु सहित उडगन नवग्रहनु मिल जुद्ध रच्चि वरीसिय।—सुजान०, पृ० १९।

वरीसणहार(पु) वि० [स० वर्षण, हिं० वरीसना + हार] बरसनेदेनेवाला। उ० — लक वरीसणहार मुण, दमकवर दुख मोह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ४६।

वरु— अव्य० [अ० बल्कि, हिं० वरुक, वरु] बल्कि। उ०—छेदि देहे वरु निकलि जाउ, मोरे नामे भिखि मागि खाउ।— विद्यापति, पृ० १३।

वरुक- संज्ञा पु० [स०] एक मोटा अन्न। एक कदन्न [को०]।

वरुट—संज्ञा पु० [स०] म्लेच्छो की एक जाति [को०]।

वरुड—संज्ञा पु० [स०] बाँस, बेंत आदि से कुर्सी, चटाई आदि बनानेवाली एक जाति का नाम [को०]।

वरुण—संज्ञा पु० [स०] १ एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओ का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है। पुराणो मे वरुण की गिनती दिक्पालो मे है और वह पश्चिम दिशा का अधिपति माना गया है। वरुण का अस्त्र पाश है।

विशेष—बहुत प्राचीन वैदिक काल मे वरुण प्रधान देवता थे, पर क्रमश उनकी प्रधानता कम होती गई और इंद्र की प्रधानता प्राप्त हुई। वरुण अदिति के आठ पुत्रो मे कहे गए है। निरुक्तकार इन्हे द्वादश आदित्यो मे बतलाते हैं। ऋग्वेद मे वरुण के अनेक मत्र है, जिनमे से कुछ के सबध मे ऐतरेय ब्राह्मण मे शुन-शेफ की प्रसिद्ध गाथा है। इसके अनुसार 'हरिश्चद्र वैधम' नामक एक राजा ने पुत्रप्राप्ति के लिये वरुण की उपासना की। वरुण ने पुत्र दिया, पर यह वचन लेकर कि उसी पुत्र से तुम मेरा यज्ञ करना। पुत्र का नाम रोहित हुआ। जब वह कुछ बडा हुआ और उसे यह पता चला कि मुझे वरुण के यज्ञ मे बलिपशु बनना पडेगा, तब वह जगल मे भाग गया। वहाँ उसे इंद्र घर लौटने को बराबर मना करते रहे। अत मे राजा ने अजीगर्त नामक एक ऋषि को सौ गौएँ देकर उनके पुत्र शुन शेफ को बलि के लिये मोल लिया। जब शुन शेफ यूप मे बाँधा गया, तब वह अपने छुटकारे के लिये प्रजापति, अग्नि, सविता आदि कई देवताओ की स्तुति करने लगा। अत मे वरुण की स्तुति करने से उसका उद्धार हुआ। ऋग्वेद मे वरुण के कुछ मत्र वे ही हैं, जिन्हे पढकर शुन शेफ ने स्तुति की थी।

पुराणो मे वरुण कश्यप के पुत्र कहे गए हैं। भागवत मे लिखा है कि चर्षणी नाम्नी पत्नी स वरुण को भृगु और वाल्मीकि नामक दो पुत्र हुए थे। वरुण अब तक जल के देवता माने जाते है और जलाशयोत्सर्ग मे इनका पूजन होता है। साहित्य मे ये करुण रस के अधिष्ठाता माने गए हैं।

पर्या०—प्रचेतस। पाशी। यादशापति। अपति। अप्पति। याद पति। अपापति। जबूक। मेघनाद। परजय। वारिलोम। कुडली।

२. वरना का पेड। ३. जल। पानी। ४. समुद्र (को०)। ५. आकाश (को०)। ६ सूर्य। ७ एक ऋषि का नाम। ८ एक ग्रह का नाम जिसे अँगरेजी मे 'नेपच्यून' कहते हैं। (आधुनिक)।

वरुणक—संज्ञा पुं० [स०] वरना का वृक्ष।

वरुणकुमार— संज्ञा पु० [स०] अगस्त्य ऋषि। उ० — उन वरुणकुमार अगस्त्य जी की स्तुति करने का फल हम कहाँ तक कहे।—बृहत्०, पृ० ७९।

वरुणगृहीत वि० [स०] जलोदर रोग से पीडित। जलोदर का रोगी [को०]।

वरुणग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] घोडो का एक रोग जो अचानक हो जाता है।

विशेष—इस रोग मे घोडे का तालू, जीभ, आँख और लिंगेंद्रिय आदि अग काले रग के हो जाते हैं। उसका शरीर भारी हो जाता है और पसीना छूटता है। यह रोग भयानक होता है और बहुत यत्न करने पर घोडे के प्राण बचते हैं।

२ वरुण नाम का ग्रह। नेपच्यून।

वरुणघृत—संज्ञा पु० [स०] घृत मे बनी हुई एक औषध जो अश्मरी (पथरी) रोग मे दी जाती है।

विशेष—इसमें बरना नामक पेड की छाल को जल और घी में जलाकर क्वाथ बनाया जाता है।

वरुणदेव — संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वरुणदैवत' [को०]।

वरुणदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] शतभिषा नक्षत्र।

वरुणपाश—संज्ञा पुं० [स०] १ वरुण का अस्त्रपाश या फंदा। २ नाक नामक जलजतु। नक्र।

वरुणप्रघास—संज्ञा पुं० [स०] एक व्रत या कृत्य जो आषाढ या श्रावण की पूर्णिमा के दिन किया जाता है।

विशेष— इसमे लोग जौ का सत्तू खाकर रहते हैं। इस व्रत का फल यह कहा गया है कि व्रत करनेवाला जल मे डूबता नही और उसे मगर, घडियाल आदि जलजतु नही पकडते।

वरुणप्रघासा—संज्ञा स्त्री० [स०] पति द्वारा पत्नी से उसके प्रेमियो के बारे मे पूछताछ की रीति। उ०—वरुणप्रघासा उस रीति को कहते थे, जिसमे पति अपनी पत्नी से उसके प्रेमियो के बारे मे पूछता था।—प्रा० भा० प०, पृ० ९०।

वरुणप्रस्थ—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के पश्चिम मे था।

वरुणमडल—संज्ञा पुं० [स० वरुणमण्डल] नक्षत्रो का एक मडल जिसमे रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद और शतभिषा है। उ० — रेवती आदि सात नक्षत्र वरुणमडल के है।—बृहत्०, पृ० १४६।

वरुणा—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वरुणा'। उ०—वरुणा असी गग के तीरा।—कबीर सा०, पृ० १५८१।

वरुणागरुह—संज्ञा पु० [स० वरुणाङ्गरुह] वरुणकुमार। अगस्त्य मुनि का एक नाम [को०]।

वरुणात्मज—संज्ञा पु० [स०] जमदग्नि ऋषि [को०]।

वरुणात्मजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वारुणी । सुरा । मदिरा । शराब ।
 विशेष—पुराणों में यह समुद्रमथन से उत्पन्न कही गई है ।

वरुणादिगण—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ों और पौधों का एक वर्ग ।
 विशेष—सुश्रुत में इस वर्ग के अंतर्गत वरुन, नील झिंटी, सहिजन, जयंती मेढासींगी, पूतिका, नाटकरंज, अग्निमंथ (अगेंथू), चीता, शतमूली, बेल, अजश्रृंगी, डाभ, वृहती और कटकारी (भटकटैया) हैं । (सुश्रुत) ।

वरुणानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री ।

वरुणालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

वरुणावास—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । [को०] ।

वरुणावि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण से आविर्भूत, लक्ष्मी [को०] ।

वरुणेश—संज्ञा पुं० [सं०] शतभिषा नक्षत्र । दे० 'वरुण दैवत' [को०] ।

वरुणोद—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

वरुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] उपरना । उत्तरीय [को०] ।

वरुल—वि० [सं०] १ सभक्त । वितरित । विभाजित । २ सर्वोत्तम । श्रेष्ठ । [को०] ।

वरूथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ तनुत्राण । बकतर । २ ढाल । ३ लोहे की चद्दर या सीकड़ों का बना हुआ आवरण या झूल जो शत्रु के आघात से रथ को रक्षित करने के लिये उसके ऊपर डाली जाती थी । ४ सैन्य । सेना । फौज । ५ एक प्राचीन ग्राम (रामायण) । ६ दल । झुंड । समूह (को०) । ७ रक्षण । बचाव (को०) । ८ परवार (को०) । ९ कोयल । कोकल (को०) । १० गृह । घर (को०) । ११ समय । काल (को०) ।

वरूथप—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

वरूथवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना । फौज [को०] ।

वरूथाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

वरूथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना । २. वैशाख कृष्ण एकादशी (को०) ।

वरूथी[1]—संज्ञा पुं० [सं० वरूथिन्] [स्त्री० वरूथिनी] १ हाथी की काठी । २ रक्षक । प्रहरी । (को०) ३ रक्षास्थान या घेरा (को०) । ४ रथ (को०) ।

वरूथी[2]—वि० १ रथारूढ़ । २ कवच या बकतर धारी । ३ सेना में घिरा हुआ या रक्षित । ४ रक्षक । बचानेवाला [को०] ।

वरूनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० वरण] बरनी । वरण । उ०—सो ब्राह्मन ने रुपैया ले कै बरनी कराई । महादेव के नाम को जज्ञ कियो । बेहोत जतन किए ।—दो सौ बावन—भा० २, पृ० ४५ ।

वरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वरेन्द्र] १ राजा । २ इंद्र । ३ बंगाल का एक भाग ।

वरेंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० वरेन्द्री] गौड देश [को०] ।

वरे—अव्य० [हिं०] परे । उधर ।

वरेण—संज्ञा पुं० [सं०] बर्रे । भिड़ [को०] ।

वरेणुक—संज्ञा पुं० [सं०] अनाज । अन्न [को०] ।

वरेण्य[1]—वि० [सं०] १ प्रधान । मुख्य । २ वरणीय । पूजनीय । ३ जिसकी कामना की जाय (को०) ।

वरेण्य[2]—संज्ञा पुं० १ भृगु के एक पुत्र का नाम । २ महादेव । ३ कुंकुम । केसर । ४ पितृगणों का एक वर्ग (को०) ।

वरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०] ।

वरोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ मरुवा । मरुआक । २ मरुवा का पुष्प (को०) ।

वरोरु—वि० स्त्री० [सं०] १ श्रेष्ठ जंघोंवाली । २ सुंदरी ।

वरोरू—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'वरोरु' ।

वरोल—संज्ञा पुं० [सं०] बर्रे । भिड़ । [को०] ।

वर्क—संज्ञा पुं० [अं०] कार्य । काम ।

वर्कट—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी का बंधन जो लकड़ी का बना हुआ और काँटेदार होता है । २ काँटा । कील । ३ अगरी । अर्गल ।

वर्कण—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान बकरी । पठिया ।

वर्कर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जवान पशु । २ बकरा । ३ भेड़ का बच्चा । मेमना । ४ आमोद प्रमोद । परिहास ।
 यौ०—वर्कर कर्कर = मेढा, बकरा आदि बाँधने का चमड़े का फीता या रस्सी ।

वर्कर[2]—संज्ञा पुं० [अं०] कार्यकर्ता । काम करनेवाला ।

वर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान बकरी । पठिया [को०] ।

वर्कराट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कटाक्ष । २ मध्याह्न के सूर्य की प्रभा । ३ स्त्री के कुच के किनारे लगा हुआ नखक्षत ।

वर्किंग कमिटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] कार्यकारिणी समिति । जैसे—कांग्रेस वर्किंग कमिटी ।

वर्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] किल्ली । कील [को०] ।

वर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह । जाति । कोटि । गण । श्रेणी । २ आकार प्रकार में कुछ भिन्न, पर कोई एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह । जैसे, अतिरिक्त वर्ग शूद्र वर्ग, ब्राह्मण वर्ग । ३ शब्दशास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाला स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह । जैसे,—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, इत्यादि ।
 विशेष—ज्योतिष में स्वर अंतस्थ और ऊष्म वर्णों को (जैसे,—अ, य, श,) क्रमशः अवर्ग, यवर्ग और शवर्ग के अंतर्गत रखे गए हैं । इस प्रकार ज्योतिष के व्यवहार के लिये सब वर्णों के विभाग 'वर्ग' के अंतर्गत किए गए हैं और अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, तथा शवर्ग के स्वामी क्रमशः सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और चंद्रमा कहे गए हैं ।
 ४ ग्रंथ का विभाग । परिच्छेद । प्रकरण । अध्याय । ५ दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणनफल । जैसे,—३ का ९, ५ का २५ (३ × ३ = ९ । ५ × ५ = २५) । ६. वह चौकोर क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारो कोण समकोण हों । (रेखागणित) । ७ शक्ति । सामर्थ्य (को०) । ८. धर्म, अर्थ तथा काम का त्रिवर्ग (को०) ।

वर्गचर—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ना या पढ़िना मछली। पाठीन।

वर्गघन—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ग का घन।

वर्गण—संज्ञा पुं० [सं०] गुणन। घात।

वर्गणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुणन। घात। २ संचयन। एकत्रीकरण। राशि। ३ श्रेणी। विभाग। विभाजन [को०]।

वर्गपद—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसके घात से कोई वर्गांक बना हो। वर्गमूल।

वर्गफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुणनफल जो दो समान राशियो के घात से प्राप्त हो। वह अंक जो किसी अंक को उसी अंक के साथ गुणा करने से आवे। जैसे,—५ का वर्गफल २५ होता है।

वर्गभेद—संज्ञा पुं० [सं०] दो या अधिक वर्गों वा श्रेणियो का पारस्परिक अंतर। उ०—इसलिये वर्गभेद और द्वेष दिन पर दिन बढ़ता ही गया।—भा० इ० रू०, पृ० ६७।

वर्गमूल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें, तो गुणन वही वर्गांक हो। जैसे,—४ वर्गांक का वर्गमूल २ और २५ का ५ होगा।

वर्गवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वर्ग का वर्ग। जैसे,—३ का वर्ग ९ और उसका वर्ग ८१ (९ × ९) हुआ [को०]।

वर्गलाना—क्रि० स० [फ़ा० 'वरगला नीदन' से] १ कोई काम करने के लिये उभारना। कुछ करने के लिये उत्तेजित करना। उकसाना। २ बहकाना। फुसलाना।

वर्गश—क्रि० वि० [सं० वर्गशस्] वर्गों के अनुसार। वर्गो के क्रम से [को०]।

वर्गस्थ—वि० [सं०] वर्ग के साथ रहनेवाला। पक्षपाती। तरफदार [को०]।

वर्गांक—संज्ञा पुं० [सं० वर्ङ्गाकि] वह अंक जो किसी अंक का वर्ग हो [को०]।

वर्गांत्य—संज्ञा पुं० [सं० वर्गान्त्य] व्याकरण मे वर्ग का अंतिम अक्षर। नासिक्य वर्ण।

वर्गाष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] व्यंजनो के आठ वर्ग। जैसे, कवर्ग, चवर्ग आदि [को०]।

वर्गी¹—वि० [सं० वर्गिन्] किसी वर्ग या पक्ष मे संबंधित।

वर्गी²—संज्ञा पुं० वर्ग का नेता [को०]।

वर्गीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओ को विभिन्न वर्गों में बाँटना [को०]।

वर्गीकृत—वि० [सं०] १ वर्गो मे बँटा हुआ। २ गणित मे जिसका वर्ग किया गया हो [को०]।

वर्गीण—वि० [सं०] वर्गी। वर्ग से संबद्ध [को०]।

वर्गीय¹—वि० [सं०] किसी वर्ग से संबद्ध [को०]।

वर्गीय²—सहपाठी [को०]।

वर्गोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १ फलित ज्योतिष मे राशियो के वे श्रेष्ठ अंश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

विशेष—चर राशि (मेष, कर्कट, तुला, मकर) का प्रथम अंश, स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) का पंचम अंश और द्वयात्मक राशि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) का नवम अंश वर्गोत्तम कहा जाता है। इसके अतिरिक्त राशियो का नवांश भी वर्गोत्तम कहा जाता है।

२ नासिक्य वा अनुनासिक वर्ण। दे० 'वर्गांत्य' (को०)।

वर्ग्य¹—वि० [सं०] एक ही वर्ग, जाति या समूह से संबद्ध। (व्यक्ति, पदार्थ आदि)।

वर्ग्य²—संज्ञा पुं० १ सहयोगी। २ वर्गीय। सहाध्यायी [को०]।

वर्चःस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] पाखाना। (परा० स्मृति)।

वर्चटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। पातुर। २ एक प्रकार का धान [को०]।

वर्चस्—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्चस्वान्, वर्चस्वी] १ रूप। २ तेज। कांति। दीप्ति। ३ अन्न। ४ विष्ठा। ५ शक्ति। शौर्य (को०)। ६ शुक्र। वीर्य (को०)।

वर्चस्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति। तेज। २ विष्ठा। ३ शौर्य। शक्ति (को०)।

वर्चस्य—वि० [सं०] १ तेजवर्धक। २ रेचक। दस्तावर (को०)।

वर्चस्व—संज्ञा पुं० [सं० वर्चस्] १ शक्ति। २ प्रधान्य। उ०—मेरी प्रार्थना यह है कि वे महानुभाव जीवन को सर्वांगरूप में समझने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं जब वे काव्य या कला में घोर पदार्थमूलक उपयोगितावाद का ही वर्चस्व चाहने लगते है।—कुकुम, पृ० ७।

वर्चस्वान्—वि० [सं० वर्चस्वत्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ वर्चस् युक्त। शक्तिमान्। २ तेजवान्। दीप्तियुक्त। समुज्वल।

वर्चस्वी¹—वि० [सं० वर्चस्विन्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ तेजस्वी। दीप्तियुक्त। २ शौर्यशाली। शक्तिमान।

वर्चस्वी²—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

वर्चा—संज्ञा पुं० [सं० वर्चस्] बुध। चंद्रमा का पुत्र [को०]।

वर्चोग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] कब्ज। कोष्ठबद्धता [को०]।

वर्चोभेद—संज्ञा पुं० [सं०] अतीसार [को०]।

वर्चोमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] गुदा [को०]।

वर्चोविनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्चोग्रह' [को०]।

वर्ज¹—संज्ञा पुं० [सं०] परित्याग। छोड़ देना [को०]।

वर्ज²—वि० छोड़ा हुआ। परित्यक्त [को०]।

वर्जक—वि० [सं०] १ वर्जन करनेवाला। २ त्यागनेवाला [को०]।

वर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोड़ना। २ ग्रहण या आचरण का निषेध। मनाही। मुमानियत। ३ हिंसा। मारण। ४ अपवाद (को०)।

वर्जना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्जन। निषेध। मनाही। उ०—प्रभु की वह सौम्य वर्जना।—साकेत, पृ० ३५७।

वर्जना²—क्रि० स० [सं० वर्जन] १ बरजना। मना करना। निषेध करना। २ त्यागना। छोड़ना।

वर्जनीय—वि० [सं०] १ छोड़ने योग्य। न ग्रहण करने योग्य। त्याज्य। २ निषेध के योग्य। निषिद्ध। मना।

वर्जयिता—वि० [सं० वर्जयितृ] १ वर्जन करनेवाला । २ त्यागनेवाला । छोडनेवाला ।

वर्जित—वि० [स०] १ त्यागा हुआ । छोडा हुआ । त्यक्त । २ जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो । अग्राह्य । निषिद्ध । जैसे,—कलि मे नियोग वर्जित है । ३ रहित । जैसे, गुणवर्जित ।

वर्जिश—सज्ञा स्त्री० [फा० वर्जिश] दे० 'वरजिश' ।

वर्जी—वि० [स० वर्जिन्] दे० 'वर्जक' [को०] ।

वर्ज्य[1]—वि० [स०] १ छोडने योग्य । त्याज्य । वर्जनीय । २ जिसका निषेध किया गया हो । जो मना हो । ३ अपवाद योग्य (को०) ।

वर्ज्य[2]—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा की एक विशेष स्थिति जिसमे नया काम निषिद्ध होता है [को०] ।

वर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ पदार्थो के लाल, पीले आदि भेदो का नाम । रग । विशेष दे० 'रग' । २ जनसमुदाय के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जो प्राचीन आर्यो ने किए थे । जाति ।

विशेष—इस शब्द का प्राचीन प्रयोग ऋग्वेद मे है। वहाँ यह जनता के दो वर्गो आर्यो और दस्युओ को सूचित करने के लिये हुआ है। यह विभाग पहले रग के आधार पर था, क्योकि आर्य गोरे थे और दस्यु या अनार्य काले । पर पीछे यह विभाग व्यवसाय के आधार पर हुआ और चार वर्ण माने गए । पुरुषसूक्त मे चारो वर्णों की उत्पत्ति का आलकारिक रूप से इस प्रकार वर्णन है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से, क्षत्रिय बाहु से, वैश्य जघे से और शूद्र पैर से उत्पन्न हुए। इस व्यवस्था के अनुसार 'वर्ण' शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से बताई जाती है, जिसका अर्थ है 'चुनना' । अत 'वर्ण' शब्द का अर्थ हुआ व्यवसाय । स्मृतियो मे भिन्न भिन्न वर्णों के धर्म निरूपित हैं । जैसे, ब्राह्मण का धर्म—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म—प्रजारक्षा, दान, यज्ञानुष्ठान और अध्ययन, वैश्य का धर्म—पशुपालन, कृषि, दान, यज्ञ और अध्ययन, शूद्र का धर्म—तीनो वर्णों की सेवा । व्यवसायभेद और सब देशो में भी चला आ रहा है, पर भारतीय आर्यो की लोकव्यवस्था मे वह व्यवसायो के विचार से जातिगत या जन्मना माना गया है। इसी 'वर्ण' और 'आश्रम' की व्यवस्था को भारतीय आर्य अपना विशेष लक्षण मानते थे और अपने धर्म को 'वर्णाश्रम धर्म कहते थे ।

३. भेद । प्रकार । किस्म । ४. अकारादि शब्दो के चिह्न या सकेत अक्षर । ५ गुण । ६ यश । कीर्ति । ७ स्तुति । बडाई । ८ स्वर्ण । सोना । ९ मृदग का एक ताल जो चार प्रकार का होता है—पाट, विधि पाट, कूट पाट और खड पाट । १० रूप । ११. अंगराग । विलेपन । १२ कुकुम । केसर । १३ चित्र । तसवीर । १४ रग । रोगन (को०) । १५. रग ढग । आकृति । बाह्य रूप (को०) । १६. पोशाक । वेशभूषा (को०) । १७. एक प्रकार का ढीला ढाला अँगरखा । लबादा (को०) । १८ ढक्कन । आवरण (को०) । १९ हाथी की झूल (को०) । २० उपवास । व्रत (को०) । २१ अज्ञात राशि (को०) । २२ एक की सख्या (को०) । २३ एक माप (को०) । २४ एक गधद्रव्य (को० ।

वर्णकट—सज्ञा पुं० [स० वर्णकण्ट] तूतिया ।

वर्णक—सज्ञा पु० [स०] १ हरताल । २ अनुलेपन । उबटन । ३ ३ चदन । ४ पिसी हुई हल्दी आदि जो देवताओ को चढाई जाती है । ५ मडल । ६ चारण । ७ रग । ८ अभिनेताओ के परिधान या परिच्छद । ९ चित्रकार । १० विभाग । अध्याय । परिच्छेद (को०) । ११ सिंदूर (को०) । १२ चित्रलेखन (को०) । १३ ढाँचा । रूपरेखा (को०) । १४ अक्षर । वर्ण । १५ वक्ता । व्याख्याता (को०) । १६ कलम । लेखनी । उ०—ललितविस्तर के अध्याय १० (अग्रेजी अनुवाद, पृ० १८१–१८५) मे बुद्ध का लिपिशाला मे जाकर अध्यापक विश्वामित्र से चदन की पाटी पर वर्णक (कलम) से लिखना सीखने का वृत्तात मिलता है ।—भा० प्रा० लि०, पृ० ६ ।

वर्णका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नृत्यादि के समय अभिनेताओ का परिच्छद या परिधान । २ रग । रोगन । ३ उच्च कोटि का सोना । ४ सेंदुर । ईंगुर [को०] ।

वर्णकवि—सज्ञा पु० [स०] कुबेर के एक पुत्र का नाम [को०] ।

वर्णकूपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दावात । मसिपात्र [को०] ।

वर्णक्रम—सज्ञा पु० [स०] १ अक्षरानुक्रम । २ जाति या रगो का क्रम [को०] ।

वर्णखडमेरु—सज्ञा पु० [स० वर्णखण्डमेरु] पिंगल या छदशास्त्र मे वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए मेरु का काम निकल जाता है । अर्थात् यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त मे कितने गुरु और कितने लघु होगे ।

विशेष—जितने वर्णों का खडमेरु बनाना हो, उतने से एक कोष्ठ अधिक बाईं से दाहिनी ओर को बनावे । फिर उन्ही कोष्ठो के नीचे पहला स्थान छोड़कर दूसरे स्थान से आरंभ करके ऊपर से एक कोष्ठ कम बनावे । इसी प्रकार उसी स्थान से नीचे एक कोष्ठ कम बराबर बनाता जाता जाय, जब तक एक कोष्ठ न आ जाय । इन कोष्ठो को इस प्रकार भरे, कोष्ठो की पहली पक्ति मे बाईं ओर से सब मे एक एक का अक लिखे। दूसरी पक्ति के पहले कोष्ठ से आरंभ करके क्रमश २, ३, ४, ५, ६, आदि अत तक लिख जाय । इसके अनतर कोष्ठो की प्रथम पक्ति के तीसरे अक से उत्तरोत्तर नीचे की ओर वक्रगति से अको को जोडकर अगले खानो मे रखता जाय । अतिम कोष्ठो मे जो अक होगे, वे लघु गुरु के हिसाब से वृत्तो के भेद सूचित करेंगे। उदाहरणार्थ आठ वर्णो का खडमेरु बनाना हो, तो इस प्रकार करे—

वर्णखंडमेरु की आकृति—

१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२	३	४	५	६	७	८	
	३	६	१०	१५	२१	२८		
	४	१०	२०	३५	५६			
	५	१५	३५	७०				
	६	२१	५६					
	७	२८						
	८							

वर्ण वृत्तो मे एक भेद ऐसा होगा जिसमे सब गुरु होगे, और एक ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होगे अत सर्वगुरु से आरभ करके एक एक गुरु घटाते जायँ, तो भेदो की सख्या इस प्रकार होगी। १ भेद ऐसा होगा, जिसमे सब (८) गुरु होगे। ८ भेद ऐसे ऐसे होगे जिनमे १ लघु और ७ गुरु होगे। ८ भेद ऐसे होगे जिनमे २ लघु और ६ गुरु होगे। ५६ भेद ऐसे होगे, जिनमे ३ लघु और ५ गुरु होगे। ७० भेद ऐसे होगे, जिनमे ४ लघु और ४ गुरु होगे। ५६ भेद ऐसे होगे, जिनमे ५ लघु और ३ गुरु होगे। २८ भेद ऐसे होगे, जिनमे ६ लघु और २ गुरु होगे। ८ भेद ऐसे होगे जिनमे ७ लघु और १ गुरु होगा। एक भेद ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होगे।

वर्णगत—वि० [स०] १ रगीन। रग या वर्ण युक्त। २ बीज गणित सबधी [को०]।

वर्णगुरु—सज्ञा पु० [स०] राजा का पुत्र। राजकुमार। राजा [को०]।

वर्णग्रथणा—सज्ञा पुं० [स०] पद्यरचना की एक पद्धति [को०]।

वर्णचारक—सज्ञा पुं० [स०] चित्रकार [को०]।

वर्णचित्र—सज्ञा पु० [स०] रगो के द्वारा बना चित्र। रगीन चित्र। उ०—इस काल मे भी वर्णचित्र और रेखाचित्र भी बने जरूर होगे।—भा० इ० रू०, पृ० ३७।

वर्णज्येष्ट—सज्ञा पु० [सं०] सब वर्णो मे बडा, ब्राह्मण।

वर्णतर्णक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वर्णतर्णिका] चटाई या बिछाने के काम मे प्रयुक्त ऊनी वस्त्र। ऊन की दरी [को०]।

वर्णतूलि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते हैं। कलम।

वर्णतूलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्णतूलि'।

वर्णतूली—सज्ञा स्त्री० [स०] चित्र बनाने की कूँची। दे० 'वर्णतूलि'।

वर्णद[1]—सज्ञा पु० [स०] कालीयक। एक प्रकार की पीली लकडी [को०]।

वर्णद[2]—वि० रग देनेवाला। रँगनेवाला [को०]।

वर्णदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] हरिद्रा। हल्दी [को०]।

वर्णदूत—सज्ञा पु० [स०] लिपि। लेख।

वर्णदूषक—सज्ञा पु० [स०] अपने ससर्ग से दूमरे को जातिभ्रष्ट करनेवाला। पक्तिदूषक। पतित मनुष्य।

वर्णधर्म—सज्ञा पु० [स०] वर्णो या जातियो का पृथक् पृथक् धर्म। जातिधर्म [को०]।

वर्णधर्मी—वि० [स० वर्णधर्मिन्] वर्णव्यवस्था को माननेवाला। वर्णो के धर्म मे विश्वास रखनेवाला। उ०—यह मर्यादा उन आर्य, अनार्य, अनुलोम, सकर सभी पर लागू हो, जो वर्णधर्मी हो।—वैशाली०, पृ० ३४०।

वर्णधातु—सज्ञा पु० [स०] गेरू, ईंगुर आदि रग के काम मे आनेवाली धातु।

वर्णन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १ चित्रण। रँगना। २ किसी बात को सविस्तार कहना। कथन। बयान। उ०—सो चौबीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार।—सुर (शब्द०)। ३. स्तवन। प्रशसा। गुणकथन। तारीफ। ४ लिखना। लेखन (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वर्णनष्ट—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णो के वृत्तो के अमुक सख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिमाब से कैसा होगा।

विशेष—जितने वर्ण के प्रस्तार के किसी भेद का रूप निकालना हो, उतने लघु के चिह्न लिखकर उनके सिरे पर क्रमश वर्णोद्दिष्ट अक (१ से आरभ करके क्रमश दूने दूने अक) लिखे। फिर अतिम अक का दूना करके उसम से पूछी हुई सख्या घटावे। जो अक शेष रहे, वह जिन जिन उद्दिष्टा के योग से बना हो, उनके नीचे की लघु मात्राओ के चिह्नो को गुरु कर दे। जो रूप सिद्ध होगा, वही उत्तर होगा। जैसे,—किसी ने पूछा कि चार वर्णो के प्रस्तार मे तेरहवें भेद का रूप क्या होगा ? इसके लिये हमने यह क्रिया की—

१	२	४	८
|	|	|	|

अतिम अक ८ का दूना १६ हुआ। उसमे से १३ घटाया, तो ३ रहा। अब हमने देखा कि ३ संख्या ऊपर दिए हुए उद्दिष्टाको में से १ और २ जोडने से आ जाती है। अत. उनके नीचे गुरु बनाया तो यह रूप ऽऽ।। सिद्ध हुआ।

वर्णना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गुणकथन। २ चित्रकारी। ३ व्याख्या। किसी विषय का ब्यौरेवार कथन। ४ लेखन (को०)।

वर्णनातीत—वि० [स०] जिसका वर्णन न हो सके। अवर्णनीय [को०]।

वर्णनात्मक—वि० [स०] वर्णनप्रधान। जिसमे वर्णन की प्रमुखता हो।

वर्णन संबंधी। उ०—ऐसी अलकृत भाषा मे जो भिन्न भिन्न भागो मे भिन्न भिन्न रीतियो से चमत्कृत हो—वर्णनात्मक रीति से नही वरन् कार्यात्मक रीति से।— पा० सा० सि०, पृ० ३।

वर्णनाश—सज्ञा पु० [स०] निरुक्तकार के अनुसार शब्द मे किसी वर्ण का नष्ट हो जाना। जैसे,—'पृषोदर' शब्द मे 'पृषतोदर' शब्द के 'त' का नाश पाया जाता है।

वर्णनीय—वि० [स०] १ चित्रण करने योग्य। २ वर्णन करने योग्य [को०]।

वर्णपताका—सज्ञा स्त्री० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तो के भेदो मे से कौन सा (पहला, दूसरा या तीसरा आदि) ऐसा है, जिसमे इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

वर्णपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ लघु तल्प। २ रग रखने का पात्र।

वर्णपरिचय—सज्ञा पुं० [स०] १ अक्षरो का बोध करानेवाली पुस्तक। २ सगीत का ज्ञान [को०]।

वर्णपरिध्वंस—सज्ञा पु० [स०] जातिच्युति। जातिभ्रंश [को०]।

वर्णपात—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णनाश'।

वर्णपाताल—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णो के कुल कितने वृत्त हो सकते है और उन वृत्तो मे से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वंत तथा कितने सर्वगुरु और कितने सर्वलघु होगे।

विशेष—जितने वर्णो का पाताल बनाना हो, उतनी ही खडी रेखाएँ और उन्हे काटती हुई पाँच आडी रेखाएँ खीचे। इस प्रकार कोष्ठ बन जाने पर कोठो की पहली पक्ति मे क्रम से १, २, ३, ४ आदि अक भरे। दूसरी पक्ति मे २, ४, ८, १६ आदि वर्णसूची के अक लिखे। तीसरी पक्ति मे सूची के अको के आधे लिखे, और चौथी पक्ति मे पहली और तीसरी पक्ति के अको का गुणनफल लिखे। उदाहरण के लिये ९ वर्णों का पाताल इस प्रकार होगा।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	वर्णसख्या।
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	सर्वसख्या।
१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	लघ्वादि, लघ्वत, गुर्वादि, गुर्वंत।
१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	सर्वगुरु, सर्वलघु।

इस पाताल से विदित हुआ कि ९ वर्णो के ५१२ वृत्त हो सकते हैं। इन वृत्तो मे २५६ ऐसे वृत्त होगे, जिनके आदि मे लघु होगे, २५६ ऐसे होगे, जिनके अत मे लघु होगे, फिर २५६ ऐसे होगे जिनके आदि मे गुरु होगे, और २५६ ऐसे होगे, जिनके अत मे गुरु होगे। सब वृत्तो मे कुल मिलाकर २३०४ गुरु और २३०४ लघु होगे।

वर्णपात्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णपत्र' [को०]।

वर्णपुर—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध राग का एक भेद।

वर्णपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] १ पारिजात। २ राजतरुणी नाम का फूल का वृक्ष [को०]।

वर्णपुष्पक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णपुष्प [को०]।

वर्णप्रकर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ रग की विशिष्टता। २ जाति की उत्तमता [को०]।

वर्णप्रणाली—सज्ञा स्त्री० [स० वर्ण + प्रणाली] वर्णो या जातियो मे एक क्रम के स्थापन की पद्धति। वर्णव्यवस्था। उ०—यज्ञविधियो के विस्तार के साथ ही साथ उस वर्णप्रणाली का भी विकास और सगठन होने लगा जिसमे ब्राह्मणो को सामाजिक एव धार्मिक श्रेष्ठता प्राप्त हुई।—सत० दरिया (भू०), पृ० ५३।

वर्णप्रत्यय—सज्ञा पु० [स०] छद शास्त्र या पिंगल मे वे क्रियाएँ जिनके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णवृत्तो के कितने भेद हो सकते है और उनके स्वरूप क्या होग, इत्यादि।

विशेष—जिस प्रकार मात्रिक छदो मे ९ प्रत्यय होते है, उसी प्रकार वर्णवृत्तो मे भी ९ प्रत्यय होते हैं—प्रस्तार, सूची, पाताल, उद्दिष्ट, नष्ट, मेरु, खडमेरु, पताका और मर्कटी।

वर्णप्रसादन—सज्ञा पु० [स०] अगुरु [को०]।

वर्णप्रस्तार—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णो के वृत्तो के इतने भेद हो सकते है और उन भेदो के स्वरूप इस प्रकार होगे।

विशेष—जितने वर्णो का प्रस्तार बढाना हो, उतने वर्णो का पहला भेद (सर्वगुरु) लिखे। फिर गुरु के नीचे लघु लिखकर शेष ज्यो का त्यो लिखे। फिर सबसे बाईं ओर के गुरु के नीचे लघु लिखकर आगे ज्यो का त्यो लिखे, और बाई ओर जितनी न्यूनता रहे, उतनी गुरु से भरे। यह क्रिया अत तक अर्थात् सर्वलघु भेद के आने तक करे। उदाहरण के लिये तीन वर्णो का प्रस्तार इस प्रकार होगा—

रूप	भेद
S S S	पहला
I S S	दूसरा
S I S	तीसरा
I I S	चौथा
S S I	पाँचवाँ
I S I	छठा
S I I	सातवाँ
I I I	आठवाँ

इस प्रस्तार से प्रकट हुआ कि तीन वर्णो के आठ ही भेद हो सकते है, अर्थात् आठ ही प्रकार के वृत्त बन सकते है, अधिक नही।

वर्णबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षर या ध्वनिजन्य सबद्ध आशय अथवा बोध [को०]।

वर्णभिन्न—सज्ञा पुं० [स०] सगीत का एक ताल [को०]।

वर्णभीरु—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वर्णभिन्न' [को०]।

वर्णभेद—सज्ञा पु० [स०] शरीर के वर्ण या जाति के कारण होनेवाला भेदभाव [को०]।

वर्णभेदिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] मोटा अन्न जिसमे बाजरा, कोदो, मडुवा, जोन्हरी आदि है [को०]।

वर्णमचिका—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णमञ्चिका] सगीत का एक ताल [को०]।

वर्णमर्कटी—सज्ञा स्त्री० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णो के इतने वृत्त हो सकते हैं, जिनमे इतने गुर्वादि, गुर्वंत और इतने लघ्वादि लघ्वत होगे, तथा सब वृत्तो मे मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु, लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिंड (= दो कल) होगे।

विशेष—जितने वर्ण हो, उतने खाने बाएँ से दाहिने बनावे। फिर उन खानो के नीचे उतने ही खानो की छह पक्तियाँ और बनावे। कोष्ठो की पहली पक्ति मे १, २, ३, आदि अक लिखे, दूसरी में वर्णसूची के अक (२, ४, ८, १६ आदि) लिखे, तीसरी पक्ति मे दूसरी पक्ति के अको के आधे अक भरे, चौथी मे पहली और दूसरी पक्ति के अको के गुणनफल लिखे, पाँचवीं मे चौथी पक्ति के आधे अक भरे, छठी पक्ति मे चौथी और पाँचवी पक्ति के अको का योग लिखे, और सातवी पक्ति मे छठी पक्ति के आधे अक भरे। उदाहरण के लिये छह वर्णो की मर्कटी इस प्रकार होगी।

१	२	३	४	५	६	वर्णसख्या
२	४	८	१६	३२	६४	वृत्तो की सख्या
१	२	४	८	१६	३२	गुर्वादि, गुर्वंत, लघ्वादि, लघ्वत
२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण
१	४	१२	३२	८०	१९२	गुरु लघु
३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला
१३	६	१८	४८	१२०	२८८	पिंड

इस मर्कटी से प्रकट हुआ कि ६ वर्णो के ६४ वृत्त हो सकते हैं। ३२ वृत्त ऐसे होगे जिनके आदि मे गुरु, ३२ ऐसे जिनके अत में गुरु, ३२ ऐसे जिनके आदि मे लघु और ३२ ही ऐसे जिनके अत मे लघु होगे। सब वृत्तो को मिलाकर ३८४ वर्ण होगे, इत्यादि, इत्यादि।

वर्णमाता—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णमातृ] कलम। लेखनी [को०]।

वर्णमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती। विद्या देवी। २ वर्णमाला [को०]।

वर्णमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] अक्षरो के रूपो की यथाश्रेणी लिखित सूची। किसी भाषा मे आनेवाले सब हरफ जो ठीक सिलसिले से रखे हो। जैसे देवनागरी मे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ।

क	ख	ग	घ	ङ।
च	छ	ज	झ	ञ।
ट	ठ	ड	ढ	ण।
त	थ	द	ध	न।
प	फ	ब	भ	म।
य	र	ल	व।	
श	ष	स	ह।	
अं	अः।			

वर्णपति—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक एक ताल का नाम [को०]।

वर्णरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] खडिया मिट्टी [को०]।

वर्णलेखा, वर्णलेखिका—सज्ञा स्त्री० [स०] खडिया [को०]।

वर्णवती—सज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी।

वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. चित्र बनाने की कूँची या कलम। २ पेंसिल [को०]।

वर्णवादी—सज्ञा पु० [स० वर्णवादिन्] स्तुतिपाठक। वदीजन चारण। वतालिक [को०]।

वर्णविकार—सज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दो मे एक वर्ण का बिगडकर दूसरा वर्ण हो जाना। जैसे 'हल्दी' शब्द मे 'हरिद्रा' के 'र' का 'ल' हो गया है। 'द्वादश' के 'द' का 'बारह' शब्द मे 'र' हो गया है।

वर्णविक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] जातिगत विद्वेष। किसी जाति के प्रति दुर्भावना [को०]।

वर्णविचार—सज्ञा पु० [स०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमे वर्णों के आकार, उच्चारण और सधि आदि के नियमो का वर्णन हो।

विशेष—प्राचीन वेदाग मे यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था और व्याकरण से बिलकुल स्वतत्र माना जाता था।

वर्णविन्यास—सज्ञा पु० [स०] १ रूपयोजना। चित्रण। रूपाकन। २ अक्षरो की योजना। वर्णो का चुनाव। उ०—जिस प्रकार की रूपरेखा या वर्णविन्यास से किसी की तदाकार परिणति होती है, उसी प्रकार की रूपरेखा या वर्णविन्यास उसके लिये सुदर है।—रस०, पृ० ३०। ३ वर्ण नवृत्ति। हिज्जे।

वर्णविपर्यय—सज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दो मे वर्णों का उलटफेर हो जाना। जैसे, 'हिंस' शब्द से बने 'सिंह' शब्द मे हुआ है।

वर्णविभाग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णव्यवस्था'।

वर्णविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी।

वर्णविलोडक—सज्ञा पु० [स०] १ काव्य का चोर। काव्यार्थचोर। रचना का चोर। २ सेंध खोलकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर [को०]।

वर्णविवृति—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्णविन्यास। हिज्जे [को०]।

वर्णवृत्त—संज्ञा पुं० [स०] वह पद्य जिसके चरणो मे वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमो मे समानता हो ।

वर्णव्यतिक्रांता—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णव्यतिक्रान्ता] वह औरत जो अपने से नीची जातिवाले के साथ सबध करे [को०] ।

वर्णव्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्णों के आधार पर समाज की योजना एव सघटन । विशेष दे० 'वर्ण' । उ०—ऋग्वेद के समय तक वर्णव्यवस्था कायम नही हुई थी ।—हिंदू० सभ्यता पृ० ३३ ।

वर्णवैचित्र्य—सज्ञा पुं० [स० वर्ण+वैचित्र्य] रगो की विचित्रता। विविध रगो का अनूठापन । वर्णो के सयोजन का अनूठापन । उ०—बाहर नयनाभिराम रूपरेखा, विकसित वर्णवैचित्र्य, चमक दमक इत्यादि है तो भीतर सौंदर्य की मादक अनुभूति, प्रेमोल्लास, स्वप्न, दर्शनपिपासा, इत्यादि ।—रस०, पृ० ७४ ।

वर्णश्रेष्ठ—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण ।

वर्णसकर—सज्ञा पु० [स० वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियो के स्त्री पुरुष के सयोग से उत्पन्न हो ।

विशेष—स्मृतियो मे ऐसी बहुत सी जातियाँ गिनाई गई हैं । इस विषय मे एक दूसरे के मत भी नही मिलते । वर्णसकर दो प्रकार के कहे गए है, अनुलोमज और दूसरा प्रतिलोमज । अनुलोमज का पिता माता से श्रेष्ठ वर्ण का होता है और प्रतिलोमज की माता पिता से श्रेष्ठ वर्ण की होती है । प्रतिलोमज सकर प्राचीन काल मे निषिद्ध माने जाते थे । अनुलोम विवाह का प्रचार प्राचीन काल मे था, पर पीछे बद हो गया । धर्मशास्त्रो मे यद्यपि वर्णसकरता के ये कारण गिनाए गए हैं—(१) व्यभिचार, (२) अवेद्यावेदन और (३) स्वकर्मत्याग, पर लोक मे अतिम बात पर ध्यान नहीं दिया जाता ।

२ वह व्यक्ति जो ऐसे स्त्री पुरुष के सयोग से उत्पन्न हुआ हो, जो धर्मानुसार विवाहित न हो । व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य । दोगला ।

वर्णसघात—सज्ञा पु० [स० वर्णसङ्घात] वर्णमाला । वर्णसमाम्नाय । अक्षरसमूह [को०] ।

वर्णसयोग—सज्ञा पु० [सं०] किसी एक जाति के भीतर परस्पर विवाह सबध [को०] ।

वर्णसंसर्ग—सज्ञा पु० [स०] जातियो का घालमेल । दूसरी जाति मे विवाह सबध [को०] ।

वर्णसहार—सज्ञा पु० [स०] १ प्रतिमुख सधि के तेरह अगो मे एक । २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारो वर्णों के लोगो का एक स्थान पर सम्मेलन । (नाट्यशास्त्र) ।

विशेष—भरत नाट्यशास्त्र के व्याख्याता अभिनवगुप्ताचार्य (अभिनव भारती) का मत है कि नाटक के विभिन्न पात्रो के एक स्थान पर सम्मेलन को वर्णसहार कहना चाहिए ।

वर्णसमाम्नाय—सज्ञा पु० [स०] वर्णमाला ।

वर्णसि—सज्ञा पु० [स०] १ जल । पानी । २. कमल [को०] ।

वर्णसूची—सज्ञा स्त्री० [स०] छद शास्त्र या पिंगल मे एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तो की सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आदि अत लघु और आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है ।

विशेष—जितने वर्णो की सूची देखनी हो उतने वर्णो की सख्या तक क्रम से २, ४, ८ इत्यादि अर्थात् उत्तरोत्तर दूने अक लिखे । इस क्रिया के अत मे जो सख्या आएगी, वह वृत्तभेद की सख्या होगी । अत के अक से बाई ओर जो अक होगा, उतने आदिलघु और अतलघु तथा आदिगुरु और अंतगुरु होगे । फिर उससे भी बाई ओर अर्थात् अत से तीसरे कोष्ठ मे जो अक होगा उतने ही आद्यत लघु और आद्यत गुरु वृत्त होगे । उदाहरणार्थ ४ वर्णो की सूची यह है —

२	४	८	१६
	आद्यत लघु आद्यत गुरु	आदि लघु अत लघु आदि गुरु अंत गुरु	सब वृत्त

वर्णस्थान—सज्ञा पु० [स०] वर्णो के उच्चारण का स्थान, कठ, गला आदि [को०] ।

वर्णहीन—वि० [स०] जाति से बहिष्कृत [को०] ।

वर्णाका—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्णाङ्का] कलम । लेखनी ।

वर्णातर—सज्ञा पु० [स० वर्णान्तर] दूसरा वर्ण । दूसरी जाति [को०] ।

यौ०—वर्णातर गमन = (१) अन्य वर्ण मे जाना । जाति या धर्म परिवर्तन । (२) व्याकरण मे ध्वनि या अक्षर का बदलना ।

वर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] अरहर ।

वर्णागम—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण मे किसी शब्द के बीच किसी वर्ण का आगम होना । जैसे,—'हस' शब्द मे ह के ऊपर अनुस्वार का आगम हो जिससे इस शब्द का व्युत्पन्न रूप 'हस' हो जाता है । (निरुक्त) ।

वर्णाट—सज्ञा पु० [स०] १ चित्रकार । गायक । ३ स्त्री के द्वारा उपार्जित धन से जीविका करनेवाला । ४ प्रेमी [को०] ।

वर्णात्मक वि० [स०] वर्णमय । वर्णरूप । उ०—दूसरा वर्णात्मक शब्द वर्णविन्यास युक्त होता है ।—रस क०, (भू०), पृ० २ ।

वर्णात्मा—सज्ञा प्र० [स० वर्णात्मन्] शब्द [को०] ।

वर्णाधम—सज्ञा पु० [स०] वह जो वर्णो वा जातियो मे निम्न श्रेणी का हो ।

वर्णाधिप—सज्ञा पुं० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार ब्राह्मणादि वर्णों के अधिपति ग्रह ।

विशेष—ब्राह्मण के अधिपति बृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भौम और रवि, वैश्य के चद्र, शूद्र के बुध और अत्यज के शनि माने जाते है ।

वर्णानुप्रास—सज्ञा पुं० [स०] एक शब्दालकार विशेष ; दे० 'अनुप्रास' ।

वर्णापसद—सज्ञा पु० [स०] जातिच्युत व्यक्ति [को०] ।

वर्णापेत—वि० [स०] वर्णहीन । जातिच्युत [को०] ।

वर्णार्ह—सञ्ञा पु० [स०] मूँग [को०] ।

वर्णावकृष्ट—सञ्ञा पु० [स०] शूद्र [को०] ।

वर्णावर—वि० [स०] निम्न जाति का [को०] ।

वर्णावली—सञ्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णमाला' । उ०—हमारी सरकार से वहाँ की एक दूसरी ही भाषा और वर्णावली स्वीकार की जाती है ।—प्रेमघन, भा० २, पृ० ४१४ ।

वर्णाश्रम—सञ्ञा पु० [स०] वर्ण और आश्रम । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम । उ —वर्णाश्रम की नव स्फुरित ज्योति, नूतन विलास ।—अपरा, पृ० २०१ ।

यौ०—वर्णाश्रम गुरु=शिव । वर्णाश्रम धर्म=वर्णों और आश्रमो के कर्तव्य ।

वर्णि—सञ्ञा पु० [स०] १ स्वर्ण । सोना । २. बलि । ३ सुगधित अगराग (को०) ।

वर्णिक[1]—सञ्ञा पु० [स०] लेखक ।

वर्णिक[2]— वि० वर्ण से सबध रखनेवाला । जैसे, वर्णिक वृत्त ।

वर्णिकवृत्त—सञ्ञा पु० [स०] वह वृत्त या छद जिसके प्रत्येक चरण के वर्णो की सख्या और लघु गुरु के स्थान समान हों ।

वर्णिका—सञ्ञा स्त्री० [स०] १ कठिनी । खडिया । २ मसि । स्याही । ३ सोने का पानी । ४ चद्रमा । ५ विलेपन । ६ नट की वेशभूषा या पहनावा । अभिनेताओ का परिच्छद या पोशाक (को०) । ७ चित्र मे विशिष्ट वर्णो या रगो का सयोजन (को०) ।

वर्णित—वि० [स०] १ कथित । कहा हुआ । २ जिसका वर्णन हो । बयान किया हुआ । ३ चित्रित । अकित (को०) । ४ प्रशसित स्तुत (को०) ।

वर्णिनी—सञ्ञा स्त्री० [स०] १ स्त्री । नारी । २ चार वर्णो मे से किसी एक वर्ण की स्त्री । ३ हरिद्रा हल्दी [को०] ।

वर्णिलिंगी—सञ्ञा पु० [स० वर्णिलिङ्गिन्] ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण करनेवाला व्यक्ति [को०] ।

वर्णी[1]—सञ्ञा पु० [स० वर्णिन्] १ लेखक । २ चित्रकार । ३ ब्रह्मचारी । उ०—बाण के अनुसार निम्नलिखित सप्रदाय अधिक प्रचलित थे । ' भागवत, वर्णी (ब्रह्मचारी) आदि ।—प्राचीन भा०, पृ० ४५२ । ४ चारो वर्णो मे स किसी वर्ण का व्यक्ति (को०) ।

वर्णी[2]—वि० १ विशेष आकृति या रगवाला । जैसे, देववर्णी । २ किसी जाति से सबध रखनेवाला ।

वर्णु—सञ्ञा पु० [स०] १ एक नदी का नाम । बन्नू । आदित्या । २ बन्नू नामक देश । ३ सूर्य ।

वर्णोदक—सञ्ञा पु० [स०] रगीन जल । रग मिला हुआ पानी [को०] ।

वर्णोद्दिष्ट—सञ्ञा पु० [स०] छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है ।

विशेष—जो भेद दिया गया हो, उसमे लघु गुरु के ऊपर क्रम से दूने अक अर्थात् १, २, ४, ८ इत्यादि लिखे । फिर लघु के ऊपर जितने अक हो, उन्हे जोडकर उसमे १ और जोड दें । जैसे,— किसी ने पूछा कि चार वर्ण के वृत्तो मे ।।ऽऽ कौन सा भेद है तो यह क्रिया की—

१ २ ४ ८
। । ऽ ऽ

अब लघु वर्णो के ऊपर अक (१+२) जोडने से ३ हुए ' इससे विदित हो गया कि यह चौथा भेद है ।

वर्ण्य[1]—सञ्ञा पुं० [स०] १ कुकुम । २ वनतुलसी । बबई । ३ प्रस्तुत विषय । ४ उपमेय ।

वर्ण्य[2]—वि० १ वर्णन के योग्य । २ जो वर्णन का विषय हो । उ०— वर्ण्य वस्तु और वर्णन प्रणाली बहुत दिनो से एक दूसरे से अलग कर दी गई है ।—रस०, पृ० ५० ।

वर्ण्यमान—वि० [स० वर्ण्यमत्] जिसका वर्णन या उल्लेख किया जा रहा हो । उ०—उसके अत करण मे यह दृढ सस्कार होना चाहिए कि वर्ण्यमान नदी, पर्वत तथा वन के सम्मुख वह स्वय उपस्थित होकर उसकी शोभा देख रहा है ।—हि० भा० प०, पृ० ६६ ।

वर्ण्यविषय—सञ्ञा पुं० [स०] वह विषय जिसका वर्णन किया जाए या किया गया हो । उ०—तीसरे अध्याय मे उपर्युक्त कवियो की रचनाओ तथा उनके वर्ण्य विषय का परिचय दिया गया है ।—अकबरी०, पृ० ६ ।

वर्ण्यसम—सञ्ञा पु० [स०] एक प्रकार का हेत्वाभास [को०] ।

वर्त सञ्ञा पु० [स०] जीविका । आहार । समासात मे प्रयुक्त, जैसे, कल्यवर्त [को०] ।

वर्तक[1]—सञ्ञा पुं० [स०] १ बटुवा । २ नर बटेर । ३ घोडे का खुर । ४ एक प्रकार का पीतल या काँसा (को०) ।

वर्तक[2]—वि० १ रहनेवाला । अस्तित्वयुक्त । २ अनुरक्त [को०] ।

वर्तका - सञ्ञा स्त्री० [स०] दे० बटेर ।

वर्तनी—सञ्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्तका' ।

वर्तजन्मा—सञ्ञा पु० [स० वर्तजन्मन्] बादल । मेघ [को०] ।

वर्ततीक्ष्ण—सञ्ञा पु० [स०] १ दे० वर्तलोह' । २ एक प्रकार का पीतल या काँसा धातु [को०] ।

वर्तन[1]—सञ्ञा पुं० [स०] [वि० वर्तित] १ बरताव । व्यवहार । २ व्यवसाय । जीवनोपाय । वृत्ति । रोजी । ३ फेरना । घुमाना । बटना । ४ परिवर्तन । फेर फार । ५ स्थिति । ठहराव । ६ स्थापन । रखना । ७ सिल बट्टे से पीसना । पेषण । बटना । ८ वर्तमान । ९ चरखे की वह लकडी जिसमे तकला लगा रहता है । १० बटलोई । बकला । ११ पात्र । बरतन । १२ घाव मे सलाई डालकर हिलाना डुलाना, जिससे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है । शल्यकपन कर्म । १३ विष्णु । १४ कौआ । १५ गोल । वर्तुल । गेंद (को०) । १६ वामन । बौना (को०) । १७. रजन । लगाना ।

संचालित करना। १८ घोड़े के लोटने की जगह (को०)। १९. वेतन। भृति (को०)। २० तकला। तर्कु (को०)। २१ क्वाथ (को०)। २२ व्याक. ध्वनित शब्द। बारबार कहा हुआ शब्द (को०)।

वर्तन३—वि० १. रहनेवाला। ठहरनेवाला। २. चलता। ग्रटल। ३ जीवित रखनेवाला। ४. गतिमान करनेवाला (को०)।

वर्तनदान—संज्ञा पुं० [सं०] रोटी देना। जीविका देना (को०)।

वर्तनविनियोग—संज्ञा पुं० [सं०] वेतन। भृति (को०)।

वर्तना—क्रि० स०, क्रि० स० [सं० वर्तन] दे० 'बरतना'।

वर्तनार्थी—वि० [सं०] रोजी या जीविका चाहनेवाला। नौकरी का इच्छुक (को०)।

वर्तनि१—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्व दिशा। पूर्व देश। २ बाट। रास्ता। ३. राग का एक भेद। ४ स्तोत्र। सूक्त (को०)।

वर्तनि२—संज्ञा स्त्री० १ सड़क। पथ। २ पहिया। चक्र। ३. लीक। गाड़ी के पहिए का निशान। ३ अक्षिलोम। बरौनी (को०)।

वर्तनी१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटने की क्रिया। पेषण। पिसाई। २ बाट। रास्ता। ३. तकला। टेकुग्रा (को०)। ४ भेजने या प्रेषण करने की क्रिया (को०)। ५ रहना। वर्तमान होना (को०)।

वर्तनी२—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तन] ग्रक्षरक्रम या न्यास। हिज्जे। दे० 'बरतनी'।

वर्त्मं—संज्ञा पुं० [सं० वर्त्मन्] मार्ग। रास्ता। उ०—वर्त्म ग्रध्वा सरनि पथ सचर पादविहार।—अनेकार्थ०, पृ० ७७।

वर्तमान१ - वि० [सं०] १ चलता हुग्रा। जो जारी हो। जो चल रहा हो। २. उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। ३. साक्षात्। ४ ग्राधुनिक। हाल का।

वर्तमान२—संज्ञा पुं० १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया ग्रभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है।

विशेष—वर्तमान के कई भेद होते हैं। 'वह ग्राता है' इस क्रिया में ग्रारंभ ग्रौर चला चलना पाया जाता है, समाप्ति नहीं, इससे यह 'सामान्य वर्तमान' है। कभी कभी वर्तमान के प्रयोग द्वारा 'नित्य प्रवृत्ति' भी पाई जाती है। जैसे,—'भारत के उत्तर में हिमालय है।' कभी कभी 'वृत्ताविरतता' भी पाई जाती है। जैसे,—'इस मैदान में लड़के खेलते हैं' इस वाक्य से यह सूचित होता है कि चाहे कहने के समय लड़के न खेलते रहे हों, पर उसके पूर्व कई बार खेल चुके हैं और ग्रागे भी बराबर खेलेंगे। इसी प्रकार 'वह मांस नहीं खाता' इस वाक्य में 'प्रवृत्तोपरतता' पाई जाती है, ग्रर्थात् वह जन्म से ही मांस नहीं खाता। इसी प्रकार ग्रौर भी भेद हैं।

२. वृत्तांत। समाचार। ३ चलता व्यवहार। उ०—तुम पाँच सात पीढ़ियों के वर्तमान को सदाचार व्यवहार मानते हो।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)।

वर्तंहद—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ शीशे का चोकना। ३. द्वारपाल। ४. गतिहीन या स्थिर जल। ५ ग्रावर्त। भँवर (को०)। ६ छोटा तालाब या पोखर जिसका जल पंक के कारण मलिन हो। गड्ढा (को०)।

वर्तलोह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लोहा।

विशेष—वैद्यक में गोले हुए वर्तलोह को कफ, दाह ग्रौर पित्त का नाशक ग्रौर उसके स्वाद को कटु मधुर ग्रौर तिक्त लिखा है। यह वही लोहा है जिसके विदेशी बरतन बनते हैं।

पर्या०—वर्तलोहक। वर्तक। लोहसंकर। नीलक। नीलज। नीललोह।

वर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बत्ती। २ ग्रंजन। ३ वह बत्ती जो वैद्य घाव में देता है। ४ ग्रौषध बनाना। ५ ग्रनुलेपन। उबटन। ६ गोली। बटी। ७ लकीर। रेखा (को०)। ८ गले की सूजन (को०)। ९. ऐंद्रजालिक का या ग्राभिचारिक तिलक (को०)। १०. कपड़े के किनारे की झालर (को०)। ११ चिराग। दीपक (को०)।

वर्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर।

वर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटेर। २ ग्रजश्रृंगी। ३ बत्ती। ४ शलाका। सलाई। ५ तूलिका। चित्र बनाने की कूँची (को०)। ६ रंग। रोगन (को०) ७ छड़ा। यष्टि (को०)।

वर्तिकाबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० वर्तिकाबिन्दु] हीरे का एक दोष।

विशेष—'रत्नपरीक्षा' के ग्रनुसार इस प्रकार के हीरे को धारण करने से भय उत्पन्न होता है।

वर्तित—वि० [सं०] १ संपादित। निष्पादित। किया हुग्रा। २. चलाया हुग्रा। जारी किया हुग्रा। ३ कुरेदा हुग्रा। ४ व्यतीत। बीता हुग्रा। जैसे, वर्तित जीवन या काल (को०)।

वर्तितजन्मा—वि० [सं० वर्तितजन्मन्] उत्पादित। जनित। उत्पन्न किया हुग्रा (को०)।

वर्तिर—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर।

वर्तिष्णु—वि० [सं०] १ वर्तुलाकार। २ चक्कर खानेवाला। ३ स्थिर। ४ युद्ध में ग्रविचल। ५ रहनेवाला (को०)।

वर्ती१—वि० [सं० वर्तिन्] [वि० स्त्री० वर्तिनी] १ वर्तनशील। बरतनेवाला। २ स्थित रहनेवाला। जैसे,—समीपवर्ती।

वर्ती२—संज्ञा स्त्री० १ बत्ती। २ शलाका। सलाई।

वर्तीर—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर (को०)।

वर्तुल१—वि० [सं०] गोल। वृत्ताकार।

वर्तुल२—संज्ञा पुं० १ वृत्त। गाजर। २ मटर। ३ गुंडतृण। ४ सुहागा। ५ गोला गेंद (को०)। ६ वृत्त। घेरा (को०)। ७. लिंग का एक गण।

वर्तुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तकुए के सिरे की घुंडी (को०)।

वर्तुलाकार—वि० [सं० वर्तुल+आकार] गोल। वृत्ताकार। उ०—(क) घर महर्षि का ग्राश्रम तट है गुरु वर्तुलाकार।—गुरु ग्रं०, भा० १, पृ० ५२। (ख) गुरु वर्तुलाकार साधं समय

हस्ती के अंगों की नाईं गजती थी मानो किसी ने उलटे स्तंभ लगा दिए हों।—श्यामा०, पृ० ७८।

वर्तुलाक्ष—संज्ञा पुं० [स०] श्येन। बाज पक्षी। [को०]।

वर्तुली—संज्ञा स्त्री० [स०] गजपिप्पली [को०]।

वर्त्म—संज्ञा पुं० [स० वर्त्मन्] १ मार्ग। पथ। २ गाडी के पहिए का मार्ग। लीक। ३ किनारा। ओंठ। वारी। ४ आँख की पलक। ५ आधार। आश्रय। ६ प्रथा। परपरा। कार्यविधि (को०)। ७ अवकाश। क्षेत्र (को०)।

वर्त्मकर्दम—संज्ञा पुं० [स०] आँख का एक रोग जिसमे पित्त और रक्त के प्रकोप से आँखो मे कीचड भरा रहता है।

वर्त्मकर्म—संज्ञा पुं० [स० वर्त्मकर्मन्] रास्ता बनाना। राह बनाना। पथ निर्माण [को०]।

वर्त्मनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पथ। राह। २ सडक राजमार्ग [को०]।

वर्त्मनी—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्त्मनि' [को०]।

वर्त्मपात—संज्ञा पुं० [स०] १ पथ का अतिक्रमण। मार्गभ्रंश। २ राह पर आना। मार्ग पर आना। रास्ता पकडना [को०]।

वर्त्मपातन—संज्ञा पुं० [स०] लूटने के लिये राह मे घात लगाए रहना [को०]।

वर्त्मबंध—संज्ञा पुं० [स० वर्त्मबन्ध] आँख का एक रोग जिसमे पलक मे सूजन हो आती है, खुजली तथा पीडा होती है और आँख नही खुलती।

वर्त्मबंधक—संज्ञा पुं० [स० वर्त्मबन्धक] एक नेत्ररोग। दे० 'वर्त्मबंध' [को०]।

वर्त्ममाक्षिका—संज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्णमाक्षिका। सोनामाखी।

वर्त्मरोग—संज्ञा पुं० [स०] आँख का एक रोग जिसमे पलको मे विकार उत्पन्न हो जाता है और आँखो को खोलने मे बडी पीडा होती है।

विशेष—वैद्यक मे इस रोग के २१ भेद माने गए हैं। उत्संगिनी, कुंभिका, पोथकी, वर्त्मशर्करा वर्त्मार्श, शुष्कार्श, अंजनदूषिका, बहुलवर्त्म, वर्त्मबंधक, क्लिष्टवर्त्म, वर्त्मकर्दम, श्याववर्त्म, क्लिन्नवर्त्म, अक्लिन्नवर्त्म, वातहतवर्त्म, वर्त्मार्बुद, निमेष, शोणितार्श, लगण, बिसवर्त्म और कुंचन।

वर्त्मशर्करा—संज्ञा स्त्री० [स०] आँख का एक रोग जिसमे पलको मे छोटी छोटी फुंसियो के सहित एक बडी और कडी फुंसी हो जाती है।

वर्त्मस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँखो का एक रोग। वर्त्मरोग।

वर्त्मार्बुद—संज्ञा पुं० [सं०] आँखो का एक रोग जिसमे पलक के अंदर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है। यह टेढी और लाल रंग की होती है और इसमे पीडा नही होती।

वर्त्मायास—संज्ञा पुं० [सं०] यात्राजन्य श्रम [को०]।

वर्त्मावरोध—संज्ञा पुं० [स०] वर्त्मरोग।

वर्त्स—संज्ञा पुं० [स०] बाँध। पुश्ता। सेतु। पुल [को०]।

वर्दी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ती (=वर्त्ती)] मूँज की पत्ती जो गज के टूटे होने पर चरखे मे लगाई जाती है।

वर्दी[2]—संज्ञा स्त्री० [अं०] दे 'वरदी'।

वद्‌र्ध, वर्ध—संज्ञा पुं० [स०] १ सीसा धातु। २ भारगी। ३. काटना। तराशना। ४ पूर्ति। पूरण। ५ बढोतरी। वृद्धि (को०)। ७ ब्राह्मणयष्टिका। एक क्षुप। छडी।

वद्‌र्धक, वर्धक[1] वि० [स०] १ बढानेवाला। पूरक। २ काटनेवाला। छीलनेवाला।

वर्द्धक, वर्धक[2]—संज्ञा पुं० १ बढई। २ एक वृक्ष का नाम। भारग।

वर्द्धकि, वर्धकि—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'वर्द्धकी' [को०]।

वर्द्धकी वर्धकी[1]—संज्ञा पुं० [स० वर्द्धकि, वर्द्धकिन्] बढई। लकडी का काम करनेवाला।

वर्द्धकी, वर्धकी[2]—संज्ञा स्त्री० [स०] गणिका। वेश्या। कुलटा स्त्री।

वर्द्धन, वर्धन[1]—संज्ञा पुं० [स०] [वि० वर्द्धित] १ बढाना। २. वृद्धि। बढती। उन्नति। ३ छेदना। काटना। छीलना। तराशना। ४ दाँत पर जमनेवाला दूसरा दात (को०)। ५ शिव (को०)। ६ शिक्षण (को०)। ७ पूर्ति। पूरण (को०)। ८ वह जिससे बल, शक्ति आदि बढे। सत्व वर्धक (को०)।

वर्द्धन, वर्धन[2]—वि० १ अभ्युदय या वृद्धि करनेवाला। जैसे, हर्ष-वर्धन। वशवर्धन।

वर्द्धनक, वर्धनक - वि० [स०] अभ्युदय करनेवाला। उल्लास और आनंददायक को०]।

वर्द्धनिका, वर्धनिका—संज्ञा स्त्री० [स०] वह छोटा घडा या पात्र जिसमे पवित्र जल रखा जाता है [को०]।

वद्‌र्धनी, वर्धनी—संज्ञा स्त्री० [संज्ञा] १ झाड़ू। २ कलसा। छोटा घडा। ३. अरथी [को०]।

वद्‌र्धमान, वर्धमान[1]—वि० [सं०] १ बढता हुआ। जो बढता जा रहा हो। उ०—कज्जल का वर्धमान भूधर, उतरा नभ पर, उतरा भू पर।—अपलक, पृ० ६६। २ बढनेवाला। वर्धनशील।

वद्‌र्धमान, वर्धमान्[2]—संज्ञा पुं० [स०] १ एक वर्णवृत्त जिसके चारो चरणो मे वर्णो की सख्या भिन्न भिन्न होती है, अर्थात् १४, १३, १८ और १५।

विशेष—इसके चारो चरणो मे वर्णो की सख्या इस प्रकार होती है। प्रथम चरण—मगण, मगण, जगण, भगण, गुरु, गुरु, द्वितीय चरण—सगण, नगण, जगण रगण, गुरु, तृतीय चरण—नगण, नगण, मगण, नगण, नगण, सगण, और चतुर्थ चरण—नगण, नगण, नगण, जगण, यगण। यथा—गोविंद पद मे जु मित्त चित्त लगैहो। निहचै यहि भवसिधु पार जैहो। भ्रमत सकल जग मोह मर्दहि सब तज रे। तन मन धन सन भजिए हरि को रे।

२. मिट्टी का प्याला। सकोरा। ३ जैनियो के २४ वें जिन महावीर का नाम। ४ बगाल का एक जिला और नगर। आधुनिक वर्दवान। ५ एरंड वृक्ष। रेंड (को०)। ६ एक प्रकार की पहेली (को०)। ७. विष्णु का एक नाम (को०)। ८ मीठा नीबू। ९ हाथो की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)। १० नृत्य की एक मुद्रा (को०)। ११ वह मकान जिसमे दक्षिण दिशा मे दरवाजा न

हो (को०)। १२ वास्तु सबधी एक तात्रिक यत्र वा रेखाकित आकार (को०)। १३ एक विशिष्ट प्रकार का प्रासाद या मदिर जो उक्त तात्रिक यत्र के आधार पर निर्मित हो (को०)। १४ ईशान कोण मे स्थित दिग्गज।

वर्द्धमानक, वर्धमानक—सज्ञा पु० [स०] १ कसोरा। मकोरा। २ ढक्कन [को०]।

वद्‌र्धमानगृह—सज्ञा पु० [स०] क्रीडागृह। प्रमोदमंदिर को०]।

वद्‌र्धमानपुर—सज्ञा पु० [स०] एक नगर। आधुनिक वर्दवान [को०]।

वद्‌र्धयिता, वर्धयिता—सज्ञा पु० [स० वर्द्धयितृ] [स्त्री० वर्द्धयित्री] बढानेवाला।

वद्‌र्धा, वर्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम जो सतपुरा के पर्वतो से निकलकर गोदावरी मे गिरती है। मध्यप्रदेश की अमरावती नगरी इसी नदी के किनारे वसी है।

वद्‌र्धापन, वर्धापन—सज्ञा पु० [स०] १ कर्णवेध। नाडीछेदन। कनछेदन। २ महाराष्ट्र देश मे अभ्यगादि क्रिया जो किसी पुरुष की जन्मतिथि को की जाती है। ३ जन्मदिन का उत्सव (को०)। ४ वह उत्सव जिसमे किसी के अभ्युदय की कामना की जाय, अथवा वधाई दी जाय (को०)। ५ काटना। छेदना (को०)।

वर्द्धापनिक, वर्धापनिक—सज्ञा पु० [स०] १ अभिनदन। २ अभिनदन के समय दी जानेवाली भेंट [को०]।

वर्द्धापिका, वर्धापिका—सज्ञा स्त्री० [स०] धाय। धात्री [को०]।

वर्द्धित, वर्धित—वि० [स०] १ बढा हुआ। २ पूर्ण। ३ छिन्न। कटा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु—वि० [स०] वृद्धिशील। बढने की कामना करनेवाला [को०]।

वर्द्धीणस, वर्धीणस—सज्ञा पु० [स०] वह सफेद रग का बकरा जिसके कान नदी मे पानी पीते समय पानी मे छू जायँ।

वद्‌र्ध्म, वर्ध्म—सज्ञा पु० [स० वर्ध्मन्] १ वह फोडा जो जाँघ के मूल मे सधिस्थान मे निकल आता है। यह फोडा कठिन होता है। इसके रोगी को ज्वर आता है, शूल होता है और वह सुस्त पड़ा रहता है। वद। २ अत्रवृद्धि रोग। आँत उतरने का रोग।

वद्‌ध्र, वर्ध्र—सज्ञा पु० [स०] १ खाल। चमडा। २ चमडे की बद्धी। वध्रिका। ३ सीसा। राँगा।

वर्द्ध्रिका, वर्ध्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चमडे की रस्सी। बद्धी। २ एक प्रकार का आभूषण जिसे बद्धी कहते है।

वद्‌र्ध्री, वर्ध्री—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वद्‌ध्रिका'।

वर्नन(पु)—सज्ञा पु० [स० वर्णन] दे० 'वर्णन'। उ०—दीपक वर्नन कह कहौं, सवै मनोरथ काज।—कवीर सा०, पृ० ५६७।

वर्प—सज्ञा पुं० [स०] आकृति। आकार। रूप [को०]।

वर्म—सज्ञा पु० [स० वर्म्मन्] १ कवच। वकतर। २ घर। आश्रय। ३ पित्त पापडा। पर्पटक। ४ वल्कल। छाल (को०)।

वर्मक—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम, जिसे अब 'बरमा' कहते हैं।

वर्मकटक—सज्ञा पु० [स० वर्मकण्टक] पित्तपापडा। पर्पटक।

वर्मकशा, वर्मकषा—सज्ञा स्त्री० [स०] सातला। सप्तला।

वर्मण—सज्ञा पु० [स०] नारगी का पेड़ [को०]।

वर्मधर—वि० [स०] कवची। वर्महर।

वर्महर—वि० [स०] १ वर्मधर। कवचधारी। २ जो वर्म धारण न कर सके। जैसे, अत्यत वृद्ध (को०)।

वर्मा—सज्ञा पु० [स० वर्म्मन्] क्षत्रियो आदि की उपाधि जो उनके नाम के अत मे लगाई जाती है।

वर्मि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

वर्मिक—वि० [स०] दे० 'वर्मित' [को०]।

वर्मित—वि० [स०] कवचधारी। कृतसन्नाह।

वर्मिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सडक का महसूल। पथकर (को०)।

वर्मी—वि० [स० वर्मिन्] दे० 'वर्मिक' [को०]।

वर्मुष—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली [को०]।

वर्य[1]—वि० [स०] १. प्रधान। २ निर्वाचित या चुनने योग्य। ३. श्रेष्ठ।

विशेष—इसका प्रयोग विशेषत समस्त पदो मे होता है। जैसे,—विद्वद्वर्य।

वर्य[2]—सज्ञा पु० कामदेव।

वर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कन्या। २. पतिवरा वधू। ३ अरहर।

वर्वट—सज्ञा पु० [स०] लोविया। वोडा। वजरवट्टू।

वर्वणा—सज्ञा स्त्री० [स०] नीली मक्खी।

वर्वर—सज्ञा पु० [स०] १ एक देश का नाम। २ इस देश का असभ्य निवासी जिसके वाल घुँघराले कहे गए हैं।

विशेष—यद्यपि वर्वर देश का उल्लेख महाभारत (भीष्मपर्व) तथा वामन, मार्कडेय आदि पुराणो मे है, तथापि यह जनपद कहाँ था, इसका ठीक ठीक पता नही। कही कही वर्वरो के बाल घुँघराले कहे गए है। पुराने यूनानी और रोमन भौगोलिको ने सिंधु नद के मुहाने के आसपास के प्रदेश को बर्बर (बारवेरियन) देश कहा है। कुछ भारतीय ग्रथकारो ने महाराष्ट्र देश के एक विशेप भाग को वर्वर कहा है। वर्वर नाम की एक प्राकृत भाषा का उल्लेख भी 'प्राकृतचद्रिका' मे है। इसमे सदेह नही कि इस जनपद के निवासी असभ्य समझे जाते थे और घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। पीछे से दूर दूर तक की सभ्य जातियो मे यह शब्द 'म्लेच्छ' और जगली' का वाचक हुआ। प्राचीन यूनानी अपनी जाति के लोगो के अतिरिक्त औरो को 'वर्वर' कहा करते थे। रोमनो मे भी ऐसा ही था।

३ पामर। नीच। ४ घुँघराले बाल। ५ काली वनतुलसी। ६ हिंगुल। ईंगुर। ७ पीला चदन। ८ मूर्ख। अज्ञ (को०)। ९ नीच जाति (को०)। १०. जातिभ्रष्ट व्यक्ति (को०)। ११. नृत्य का एक प्रकार। एक प्रकार का नाच (को०)। १२. शस्त्रो का परस्पर टकराना।

वर्वर¹—वि० १ घुँघराला। छल्लेदार। २. जो स्पष्ट न हो (को०)।

वर्वरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

विशेष—इसका गुण शीतल, कफ, वायु, पित्त, कोढ़, खाज और व्रण तथा रक्तदोष का नाशक और स्वाद कडुवा माना गया है।

पर्या०—वर्वरशैत्य। शीत। पित्तारि।

वर्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की मक्खी। नीली मक्खी। २ वर्वरी। वनतुलसी (को०)।

वर्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनतुलसी। २ दे० 'वर्वरा'।

वर्वरीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारंगी। २ वनतुलसी। ३. महाकाल। ४ भीम के पौत्र का नाम जो घटोत्कच का पुत्र था। ५ घुँघराले केश। छल्लेदार बाल (को०)।

वर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्वरी। वनतुलसी (को०)।

वर्वि—वि० [सं०] बहुत खानेवाला। पेटू (को०)।

वर्वुर—स्त्री० पुं० [सं०] एक वृक्ष। विशेष दे० 'बबूल' (को०)।

वर्वूर—संज्ञा पुं० [सं०] बबूल।

वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृष्टि। जलवर्षण। २ काल का एक मान जिसमे दो अयन और बारह महीने होते हैं। उतना समय जितने मे सब ऋतुओं की एक आवृत्ति हो जाती है। संवत्सर। साल।

विशेष—वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र। सौर वर्ष ३६५ दिन, ५ घंटे, ४८ मिनट और ४६ सेकंड का होता है। यह उतना समय है, जितने मे पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेती है। पृथ्वी के इसी भ्रमण के कारण सूर्य का सत्ताईस नक्षत्रों और बारह राशियों मे गमन दिखाई पडता है। लोग कहते हैं कि अब सूर्य अमुक नक्षत्र या राशि मे है। घूमते समय पृथ्वी की धुरी सीधी न रहकर कुछ टेढी रहती है और उसके मार्ग की कक्षा गोल न होकर अंडाकार होती है। इसी से सूर्य कुछ महीनों तक भूमध्यरेखा के उत्तर और कुछ महीनों तक दक्षिण मे उदय होता दिखाई पडता है। ये दोनों 'उत्तर अयन' और 'दक्षिण अयन' कहलाते हैं। वर्ष मे केवल दो दिन सूर्य भूमध्य या विषुवत् रेखा पर उदय होता है। इन दोनों को सायन कहते। एक सायन तुला राशि मे और दूसरा मेष मे होता है। सूर्य कर्क राशि मे आकर दक्षिण की ओर बढने लगता है और धनु राशि मे पहुँचने तक भूमध्यरेखा के दक्षिण ही रहता है। मकर राशि से फिर उत्तर की ओर बढने लगता है और कर्क राशि मे पहुँचने तक उत्तर ही रहता है। प्राचीन भारतीय आर्यों मे राशियों का व्यवहार न था; इससे सौर वर्ष दो अयनों का ही माना जाता था। ग्रहों का उदय राशियों मे न माना जाकर २७ नक्षत्रों मे माना जाता था। इससे कभी कभी बडी अव्यवस्था होती थी। चांद्र वर्ष ३५४ दिन, ८ घंटे, ४८ मिनट और ३६ सेकंड का होता है। इतने काल मे चंद्रमा पृथ्वी की बारह परिक्रमाएँ कर लेता है। इस प्रकार सौर वर्ष और चांद्र वर्ष मे प्रति वर्ष १० दिन, २१ घंटे का अंतर पड़ता है। हिंदू पंचांग मे यह अंतर प्रति तीसरे वर्ष, १३ महीने का वर्ष मानकर दूर किया जाता है। उस बढ़े हुए महीने को 'अधिमास' या 'मलमास' कहते हैं। सावन वर्ष पूरे ३६० दिनों का होता है और उसके महीने तीस तीस दिन के होते हैं। वैदिक काल मे सावन मान ही अधिक चलता था और प्रत्येक मास की तिथि की गणना चंद्रमा से ही हिसाब से होती थी। शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १५ दिन का शुक्ल पक्ष और कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक १५ दिन का कृष्ण पक्ष होता था। नाक्षत्र वर्ष ३२४ दिन का और उसका प्रत्येक महीना २७-२७ दिन का होता है। इन चार प्रकार के वर्षों के अतिरिक्त प्राचीन काल में और कई प्रकार के वर्षों का प्रचार था। जैसे,—बार्हस्पत्य वर्ष।

३ पुराणों मे माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग। ४ किसी द्वीप का प्रधान भाग, जैसे,—भारतवर्ष। ५ मेघ। बादल।

वर्षकर—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ।

वर्षकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झिल्ली। झींगुर।

वर्षकाम—वि० [सं०] वृष्टि की कामना करनेवाला। वृष्टि चाहनेवाला।

वर्षकामेष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो वर्षा के लिये किया जाता था।

वर्षकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीरा।

वर्षकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग की पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

वर्षकोश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षकोष' (को०)।

वर्षकोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ दैवज्ञ। ज्योतिषी। २. माष। उड़द।

वर्षगाँठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वर्ष + गाँठ] वह उत्सव जो किसी पुरुष के जन्मदिन पर किया जाता है। विशेष दे० 'बरसगाँठ'।

वर्षगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] संसार का विभाग करनेवाले सात पर्वत जो वर्षपर्वत कहे जाते हैं। इनमे हिमवान्, हेमकूट, निषध, मेरु, चैत्र, कर्णी और शृंगी नामक पर्वत हैं (को०)।

वर्षघ्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पवन। २ ग्रहों का वह योग जिससे वर्षा नष्ट हो जाता है।

वर्षघ्न²—वि० वर्षा से बचानेवाला।

वर्षज—वि० [सं०] १ वर्षा से उत्पन्न। २ एक वर्ष का (को०)।

वर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्षित] १ वृष्टि। बरसना। उ०—भाव बदला हुआ—पहले की घनघटा वर्षण बनी हुई।—अपरा, पृ० १४३। २ छिड़कना। नीचे किसी पर डालना या फेंकना। जैसे, द्रव्यवर्षण, पुष्पवर्षण (को०)।

वर्षणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृष्टि। वर्षा। २ कर्म। क्रिया। कृति। ३ निवास। वर्तन। ४. यज्ञकर्म। यज्ञ (को०)।

वर्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छत्र। छाता (को०)।

वर्षत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षत्र' (को०)।

वर्षधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २ अंत पुर का रक्षक। नपुंसक। खोजा। ३. पर्वत। पहाड़ (को०)। ४ वर्ष (पृथ्वी) का

खड) का अधिपति (को०)। ६ पृथ्वी को वर्षों (खडो) मे विभाजित करनेवाले पहाड। (जैन)।

वर्षधर्प—सज्ञा पु० [सं०] अत पुर का रक्षक। नपुमक। खोजा।

वर्षप—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्षपति'।

वर्षपति—सज्ञा पु० [स०] वर्ष के अधिपति ग्रह।

विशेप—फलित ज्योतिप मे वर्षप्रवेश होने पर कोई न कोई ग्रह उस वर्ष का अधिपति या राजा माना जाता है। इसी अधिपति के विचार से यह बताया जाता है कि वर्ष शुभ होगा या अशुभ।

वर्षपद—सज्ञा पु० [स०] पचाग। पत्रा। जत्री (को०)।

वर्षपर्वत—सज्ञा पु० [स०] पृथ्वी को सात भागो मे बाँटनेवाले पहाड। वर्षगिरि (को०)।

वर्षभार्की—सज्ञा पु० [स० वर्षपाकिन्] आम्रातक। आमडा।

वर्षपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] सहदेई नाम की लता (को०)।

वर्षपूग—सज्ञा पु० [स०] वर्षशृखला। वर्ष का समूह (को०)।

वर्षप्रतिबध—सज्ञा पु० [स० वर्षप्रतिबन्ध] वृष्टि का न होना। अनावृष्टि। अवर्षण। सूखा (को०)।

वर्षप्रवेग—सज्ञा पु० [स०] घनघोर वर्षा (को०)।

वर्षप्रवेश—सज्ञा पु० [स०] नववर्षारभ (को०)।

वर्षप्रिय—सज्ञा पु० [स०] पपीहा। चातक (को०)।

वर्षफल—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिप मे जातक के अनुमार वह कुडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहो के शुभाशुभ फलो का विवरण जाना जाता है।

क्रि० प्र०—निकालना।—बनाना।

वर्षरात्र—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु (को०)।

वर्षवर—सज्ञा पु० [स०] नपुसक। अत पुर का रक्षक। खोजा (को०)।

वर्षवसन—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु मे किसी एक निवास मे रहना। (बौद्ध)।

वर्षवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्षगाँठ। जन्मदिन (को०)।

वर्षशत—सज्ञा पु० [स०] सौ वर्ष। शताब्दी (को०)।

वर्षसहस्र—सज्ञा पु० [स०] एक हजार वर्ष (को०)।

वर्षांग—सज्ञा पु० [स० वर्षाङ्ग] मास। महीना।

वर्षांगी—सज्ञा स्त्री० [स० वर्षाङ्गी] पुनर्नवा (को०)।

वर्षांबु—सज्ञा पु० [स०] वर्षा का जल (को०)।

वर्षांश—सज्ञा पु० [स०] महीना।

वर्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह ऋतु जिसमे पानी बरसता है।

विशेप—छह ऋतुओ के हिसाब से सावन और भादो के दो महीने वर्षा ऋतु के माने जाते हैं। पर साधारण व्यवहार मे जाडा, गरमी और बरसात के हिसाब से वर्षा काल आषाढ से कुआर तक चार महीने का लिया जाता है जिसे चातुर्मास या 'चौमासा' कहते है।

पर्या०—प्रावृट्। पावस। घनागम। घनाकर।

२ पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = (१) बहुत अधिक परिमाण मे ऊपर से गिरना। जैसे,—फूलो की वर्षा होना। (२) बहुत अधिक सख्या मे मिलना। जैसे,—वहाँ रुपयो की वर्षा होती है।

वर्षाकाल—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु। बरसात।

वर्षागम—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु का आगमन। वर्षारभ।

वर्षाघोष—सज्ञा पु० [स० वर्षा + आघोष] बडा मेढक (को०)।

वर्षाधिप—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो सवत्सर के वर्ष का अधिपति हो। वि० दे० 'वर्षपति'।

वर्षाप्रिय—सज्ञा पु० [स०] चातक। पपीहा।

वर्षाबीज—सज्ञा पु० [स०] मेघ। बादल।

वर्षाप्रभजन—सज्ञा पु० [स० वर्षाप्रभञ्जन] आँधी (को०)।

वर्षाभव—सज्ञा पु० [स०] रक्त पुनर्नवा। पुनर्नवा जिसके फूल लाल होते हैं (को०)।

वर्षाभू¹—सज्ञा पु० [स०] १ भेक। दादुर। मेढक। २ इद्रगोप। ग्वालिन नाम का कीडा। ३ लाल रग की पुनर्नवा। ४ कीडे मकोडे।

वर्षाभू²—वि० वर्षा मे उत्पन्न होनेवाला।

वर्षाभ्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मादा मेढक। छोटा मेढक। २ पुनर्नवा। ३ केचुआ (को०)।

वर्षामद—सज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर।

वर्षायस—वि० [स०] नब्बे बरस से ऊपर की अवस्था का। अति वृद्ध।

वर्षारात्र—सज्ञा पु० [स०] १ वर्षा ऋतु। २ वर्षा की रात (को०)।

वर्षारात्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्षारात्र'

वर्षार्चि—सज्ञा पु० [स० वर्ष + अर्चिस्] मगल ग्रह।

वर्षार्ह—वि० [स०] वर्ष भर के लिये पर्याप्त (को०)।

वर्षालंकायिका—सज्ञा स्त्री० [स० वर्षालङ्कायिका] पृक्का। असवर्ग।

वर्षाल—सज्ञा पु० [स०] फतिगा। पतग।

वर्षावसान—सज्ञा पु० [स०] शरद् ऋतु (को०)।

वर्षाशन—सज्ञा पु० [स०] वर्ष भर के लिये दिया जानेवाला अन्न का दान (को०)।

वर्षाहिक—सज्ञा पु० [स०] बरसाती साँप जिसमे विप नही होता।

वर्षिक¹—वि० [स०] १. वर्षा सबधी। २ एक वर्ष का। वार्षिक (को०)।

वर्षिक²—सज्ञा पु० अगुरु (को०)।

वर्षित¹—सज्ञा पु० [स०] वृष्टि। वर्षा (को०)।

वर्षित²—वि० बरसा हुआ (को०)।

वर्षिता—वि० [स० वर्षितृ] बरसने या वर्षा करनेवाला (को०)।

वर्षिष्ठ—वि० [स०] बहुत वृद्ध (को०)।

वर्षी—वि० [सं० वर्षिन्] १. वर्षा करनेवाला। २ वर्ष का। साल का। समासात मे प्रयुक्त। जैसे, घनवर्षी। वारिवर्षी (को०)।

वर्षीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त [को०]।

वर्षीण—वि० [सं०] (इतने) वर्ष का [को०]।

वर्षीय - वि० [सं० वर्षीयस्] दे० 'वर्षीण।

वर्षीयस्—वि० [सं०] १ वर्षा युक्त। २ वृद्ध। अत्यत बूढा। ३ अत्यत शक्तिशाली। ४ महत्तम। विशिष्ट [को०]।

वर्षुक—वि० [सं०] १ जलयुक्त। २ वर्षा करनेवाला [को०]।

वर्षेज—वि० [सं०] दे० 'वपज'।

वर्षेश—संज्ञा पु० [सं०] वर्षाधिप। विशेष दे० 'वर्षपति'।

वर्षोपल—संज्ञा पु० [सं०] १ ओला। करका। २ एक तरह की गोलाकार मिठाई [को०]।

वर्ष्म—संज्ञा पु० [सं०] शरीर। दे० 'वर्ष्मा' [को०]।

वर्ष्मवान्—वि० [सं० वष्मवत्] शरीरवाला। शरीरधारी [को०]।

वर्ष्मा—संज्ञा पु० [सं० वर्ष्मन्] १ शरीर। २ प्रमाण। ३ इयत्ता। ४ जलरोधक बाँध। ५ नाप। उँचाई (को०)। ६ अत्यत सुदर या कोमल आकृति। ७ वर्षीयान्। अत्यत वृद्ध (को०)।

वर्ह—संज्ञा पु० [सं०] १ मोर का पख। २ गठिवन। ग्र थिपर्णी। ३ पत्र। पत्ता। ४ दे० 'परीवार' (को०)।

वर्हण—संज्ञा पु० [सं०] पत्र। पत्ता।

वर्हा—संज्ञा पु० [सं० वर्हस्] १ अग्नि। २ दीप्ति। ३ यज्ञ। ४ कुश। ५ चित्रक। चीते का पेड। ६ एक राजा का नाम। ७ जल। पानी (को०)।

वर्हिशुष्मा—संज्ञा पु० [सं० वर्हिशुष्मन्] आग। अग्नि [को०]।

वर्हि—संज्ञा पु० [सं० वर्हिस्] १ जल। २ अग्नि। ३ यज्ञ। ४. कुश। ५ चित्रक वृक्ष। ६. दीप्ति। ७ एक राजा [को०]।

वर्हिकुसुम—संज्ञा पु० [सं०] गठिवन। ग्र थिपर्णी [को०]।

वर्हिज्योति—संज्ञा पु० [सं० वर्हिज्योतिस्] अग्नि [को०]।

वर्हिण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोर। २ भारतवर्ष के एक द्वीप का नाम। ३ तगर [को०]।

यौ०—वर्हिणवाहन = स्कद का एक नाम। वर्हिणवाण = 'वर्हिवासा'।

वर्हिण²—वि० मोरपख से सज्जित [को०]।

वर्हिध्वज—संज्ञा पु० [सं०] स्कद [को०]।

वर्हिवर्ह—संज्ञा पु० [सं०] एक गधद्रव्य।

वर्हिमुख - संज्ञा पु० [सं०] १ देवता। २ अग्नि [को०]।

वर्हिवासा—वि० [सं० वर्हिवासस्] वह वाण जिसमे मोर का पख लगा हो [को०]।

वर्हिवाहन—संज्ञा पु० [सं०] स्कद।

वर्हिषद्—संज्ञा पु० [सं०] एक पितर का नाम।

वर्हिष्केश—संज्ञा पु० [सं०] अग्नि। पावक [को०]।

वर्ही—संज्ञा पु० [सं० वर्हिन्] १. मयूर। मोर। २ कश्यप के एक पुत्र का नाम। ३. तगर।

वलतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वलन्तिका] अगविक्षेप या हाव भाव की एक विशेष मुद्रा [को०]।

वलव—संज्ञा पु० [सं० वलम्ब] १ अवलब। सहारा। २ लब (ज्यामिति)। आधार (को०)।

वल—संज्ञा पु० [सं०] १ मेघ। २ एक असुर का नाम।

विशेष—यह देवताओ की गौएँ चुराकर एक गुहा मे जा छिपा था। इद्र उस गुहा को तोड़कर उसमे से गौओ को छुडा लाए थे। फिर वल ने बैल का रूप धारण किया और वह बृहस्पति के हाथ से मारा गया। दे० 'वल'।

वलक संज्ञा पुं० [सं०] मार्कडेयपुराणानुसार तामस मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम। २ यात्रा (को०)। ३ शहतीर (को०)। ४ जुलूस (को०)।

वलक्ष—वि० [सं०] धवल। श्वेत। उ०—मानव की पूजा की मैंने सुर के समक्ष, नर की महिमा का लिखा पृष्ठ नूतन, वलक्ष। सामधेनी, पृ० ५३।

वलग्न—संज्ञा पु० [सं०] कटि। कमर [को०]।

वलज—संज्ञा पु० [सं०] १ अन्न का ढेरी। २ खेत। क्षेत्र। ३ अन्न। ४ युद्ध। लडाई। ५, प्राकार। चहारदीवारी [को०]।

वलजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुदरी स्त्री [को०]।

वलद्विप—संज्ञा पु० [सं० वलद्विप्] इद्र।

वलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का सायनाश मे हटकर चलना। विचलन। वक्रगति। २ गोल मे घूमना। चक्कर खाना (को०)। ३ क्षोभ (को०)।

वलनाश—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने या वक्रगति की दूरी का अश।

वलनाशन, वलभित्—संज्ञा पु० [सं०] इद्र [को०]।

वलभि, वलभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह मडप जो घर के ऊपर शिखर पर बना हो। रावटी। वडभी। २ घर की चोटी। ३ छानी। ४ एक पुरानी नगरी जो काठियावाड मे थी और जिसके खँडहर अब तक मिलते है।

विशेष—यहाँ एक प्रसिद्ध राजवश का राज्य था, जिसके सस्थापक सेनापति भट्टार्क थे।

वलय—संज्ञा पु० [सं०] १ मडल। २ ककण। ३ चूडी। ४ वेष्ठन। ५ अठारह प्रकार के गलगड रोगो मे से एक।

विशेष—इसमे कफ के कारण गले के अदर उस नली मे जिसमे से होकर अन्न जल पेट मे जाता है, एक गाठ उत्पन्न हो जाती है। यह गाँठ ऊँची और बडी होती है और अन्न जल के जाने का मार्ग रोक देती है। वैद्य लोग इसे असाध्य मानते हैं।

६ दड व्यूह का एक भेद। सैनिको की दो दो पक्तियो मे स्थिति। (कौटिल्य अर्थशास्त्र)। ८ कुडल। वाला (को०)। ९ कटिबध। मेखला। कमरपेटी (को०)। १० प्राकार। चहारदीवारी (को०)। ११ शाखा। डाली (को०)। १२ शरीर की गोल हड्डियां। १३ प्राचुर्य। विविधता। आधिक्य (को०)।

वलयित—वि० [स०] १, वेष्ठित । परिवृत्त । घेरा हुआ । २. चक्कर खाता हुआ (को०) । ३ गोल मुडा हुआ (को०) ।

वलयिता—वि० [स० वलयितृ] वेष्ठित करनेवाला । घेरनेवाला [को०] ।

वलयी—वि० [स० वलयिन्] १ वलय या कंकरण पहननेवाला । २ आवेष्ठित । घिरा हुआ [को०] ।

वलवंड⑤—वि० [स० वलवन्त] दे० 'बरिवंड' । उ०—अर्पसिंह अयनैत इक खल खडन वलवंड ।—सुजान०, पृ० ५ ।

वलवला—सज्ञा पु० [अ०] उमग । आवेश ।

वलसूदन—सज्ञा पु० [स०] इंद्र ।

वलहता—सज्ञा पु० [स० वलहन्तृ] इंद्र ।

वलाक—सज्ञा पु० [स०] बगला । बक [को०] ।

वलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] बगला । दे० 'बलाका' ।

वलाकी—वि० [स० वलाकिन्] दे० 'बलाकी' ।

वलाट—सज्ञा पु० [स०] मूँग ।

वलायत—सज्ञा पु० [अ०] १ विलायत । इंग्लैंड । २. वली होना । सरदार होना (को०) ।

वलासक—सज्ञा पु० [स०] १ कोकिल । २ मेढक । भेक [को०] ।

वलाहक—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ । बादल । २ पर्वत । ३ एक दैत्य का नाम । ४ साँपो की एक जाति जो दर्वीकर के अतर्गत मानी जाती है । ५. मुस्तक । मोथा । ६ श्रीकृष्ण के रथ के एक घोडे का नाम । ७ एक नद का नाम । ८ कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम । दे० 'बलाहक' ।

वलि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रेखा । लकीर । २ चदन आदि से बनाई हुई रेखा । ३ सिकुडन के कारण पडी हुई लकीर । झुर्री । ४ पेट के दोनो ओर पेटी के सिकुडने से पडी हुई रेखा । वल । जैसे,—त्रिवली । ५ देवता को चढाने की वस्तु । ६ राजकर । ७ एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र या और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । विशेष—दे० 'वलि' । ८ कौटिल्य कथित एक प्रकार का धार्मिक कर । धर्मकार्य के लिये लगाया हुआ कर । ९, श्रेणी । पक्ति । १० ववासीर का मस्सा । ११ छाजन की ओलती । १२ गधक । १३ एक प्रकार का बाजा ।

वलिक—सज्ञा पु० [स०] घर की छत या छाजन की ढाल का अत जहाँ से पानी गिरता है । ओलती ।

वलित[1]— वि० [स०] १ बल खाया हुआ । लचका हुआ । २ झुका हुआ । मोडा हुआ । ३ परिवृत्त । आवेष्ठित । घेरा हुआ । ४ जिसमे झुर्रियाँ पडी हो । जो जगह जगह से सिकुडा हो । ५ लिपटा हुआ । लगा हुआ । उ०—उरज मलय शैल शील सम मुनि देखि अलक वलित व्याल आशा कर आए है ।—केशव (शब्द०) । ६ आच्छादित । ढका हुआ । उ०—कटक कलित तृन वलित विध जल ।—केशव (शब्द०) । ७ युक्त । सहित । उ०—श्री रघुवर के इष्ट अश्रु वलित सीतानयन ।—केशव (शब्द०) ।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग 'कलित' आदि के समान काव्य की भाषा मे बहुत अधिक होता है ।

वलित[2]—सज्ञा पु० १ काली मिर्च । २. नृत्य मे हाथ मोडने की एक मुद्रा ।

वलितक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का आभूषण । एक गहना [को०] ।

वलिन, वलिम—वि० [स०] झुर्रीदार । सिकुडनवाला [को०] ।

वलिमान्—वि० [स० वलिमत्] दे० वलि युक्त । 'वलिन ।'

वलिमुख—सज्ञा पु० [स०] १. वानर । २ गरम दूध मे मट्ठा मिलाने से उत्पन्न छठा विकार ।

वलिर—वि० [स०] ऐंचाताना [को०] ।

वलिस—सज्ञा पु० [स०] वडिश । कँटिया । वसी [को०] ।

वलिशि, वलिशी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वलिश' [को०] ।

वली[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ झुर्री । शिकन । २ अवली । श्रेणी । ३ रेखा । लकीर । ४ चदन आदि से बनाई हुई लकीर । ५ पेट के दोनो ओर पेटी के सुकडने से पडी हुई लकीर । जैसे,—त्रिवली । उ०—यह रोग गुदा की तीन वली के भीतर होय है ।—माधव०, पृ० ५३ ।

वली[2] - सज्ञा पु० [अ०] १ मालिक । स्वामी । उ०—बेवहा मेरे सिर पर सदा वली अल्लाह मदद बेवहा की, दोहाई दरिया साहब की, दोहाई ।—सत० दरिया, पृ० ३५ । २ शासक । हाकिम । अधिपति ।

यौ०—वलीअहृद ।

३ साधु । फकीर । उ०—करम उनका मदद जब तें न होवे । वला हर्गिज विलायत कूँ न पावे ।—दक्खिनी०, पृ० ११४ ।

यौ०—वली खगर = साधू होने का झूठा दावा रखनेवाला । धर्मध्वजी साधु ।

४ [स्त्री० वलीया] उत्तराधिकारी । वारिस (को०) । ५ मित्र । दोस्त । सहायक (को०) ।

वलीअह्द—सज्ञा पु० [अ०] युवराज । टीका । टिकैत ।

वलीक—सज्ञा पु० [स०] १ घर की छत या छाजन का ओलती । २ सरकडा ।

वलीभृत्—वि० [स०] घुँघराला । मुडा हुआ । वलियुक्त [को०] ।

वलीमुख—सज्ञा पुं० [स०] १ वानर । २ दे० 'वलिमुख' [को०] ।

वलीवदन, वलीवक्त्र—सज्ञा पु० [स०] वानर । कपि [को०] ।

वलीवर्द—सज्ञा पु० [स०] वृषभ । बैल [को०] ।

वलूक—सज्ञा पु० [स०] १ पद्ममूल । भिस्सा । भसीड । कमल की जड । २ एक प्रकार का पक्षी ।

वलूल— वि० [स०] शक्तिमान् । वली [को०] ।

वले, वलेक—अव्य० [फा० वलेकिन का सक्षिप्त रूप] लेकिन । मगर उ०—नुमाइश मे गरचे मुठा भर हूँ मैं । वले इल्म के फन मे बेहतर हूँ मैं ।—दक्खिनी०, पृ० ७९ ।

वलेकिन—अव्य० [फा०] किंतु । परतु । मगर [को०] ।

वल्क¹—संज्ञा पुं० [सं०√वल्क् (=भाषण, कथन)] वक्ता। वावदूक [को०]।

वल्क²—संज्ञा पुं० [सं०] १ पेडों के धड और कांड पर का आवरण। वल्कल। छाल। २ मछली के ऊपर की छाल। चोई। शल्क (को०)। ३ खंड। भाग (को०)। ४ एक प्रकार का वस्त्र (को०)। ५ पट्टिका लोध्र। पठानी लोध (को०)।

यौ०—वल्कतरु। वल्कद्रुम। वल्कपत्र। वल्कफल। वल्कलोध्र। वल्कवासा = वल्कल या छाल का परिधान।

वल्कतरु—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी का वृक्ष।

वल्कद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र का वृक्ष।

वल्कपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] हिंताल।

वल्कफल—संज्ञा पुं० [सं०] अनार का पेड [को०]।

वल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष की छाल। पेडों के धड और कांड पर का आवरण।

पर्या०—त्वक्। वल्क। चोच। चोलक। शल्क। छल्लक। छल्लि। छल्ली।

२ वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे अरण्यवासी मुनि और तपस्वी पहना करते थे उ०—वल्कल की चोली हँस हँसकर ढीली करती थी आली।—शकु०, पृ० ५। ३ ऋग्वेद की वाष्कल नामक शाखा। ४ एक प्रकार की लोध (को०)। ५ एक दैत्य (को०)।

यौ०—वल्कलसचीत = वृक्ष की छाल का परिधान धारण करनेवाला।

वल्कला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद रंग का एक प्रकार का पत्थर जिसका गुण शीतल और शांतिकारक माना जाता है। शिलावल्का। २ तेजबल।

वल्कली—वि० [सं० वल्कलिन्] वल्कल या पेड की छाल पहननेवाला। वल्कलधारी।

वल्कलोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की लोध। पठानी लोध।

वल्कवान्¹—संज्ञा पुं० [सं० वल्कवत्] वह जिसमें शल्क या चोई हो, मछली मीन [को०]।

वल्कवान्²—वि० दे० 'वल्कली' [को०]।

वल्किल—संज्ञा पुं० [सं०] कंटक। काँटा।

वल्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] छाल। वल्कल [को०]।

वल्गक वि० [सं०] उछलनेवाला। नाचने कूदनेवाला [को०]।

वल्गन—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोडे का कूदते या उछलते हुए चलना। दुलकी। २ बहुत सी इधर उधर की बातें कहना। बहुत बकना।

वल्गर—वि० [अं०] ग्राम्य। भोंडा। अशिष्ट। उ०—वल्गर शब्द ही इस आशय को व्यक्त कर सकता है।—रंगभूमि, भा० २, पृ० ५००।

वल्गा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लगाम। बाग।

वल्गित—वि० [सं०] १ घूमता या नाचता हुआ। नचता हुआ। उ०—अपलक था आकाश चपल वल्गित गति लक्ष्मी।—साकेत, पृ० ४०३। २ उछलता कूदता हुआ।

वल्गित²—संज्ञा पुं० १ डींग। बढा चढा कर की गई बात। २ घोडे की एक चाल। प्लुत गति [को०]।

वल्गु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाग। बकरा। २ बौद्धों के बोधिद्रुम के चार अधिष्ठाता देवताओं में से एक।

वल्गु²—वि० १ सुंदर। खूबसूरत। २ मीठा। मधुर (को०)। ३ अमूल्य। बहुमूल्य (को०)।

वल्गु³—क्रि० वि० सुंदरता से। सुन्दरतापूर्वक [को०]।

वल्गुक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंदन। २ विपिन। वन। ३ पण। बाजी। ४ सौदा। ५ मूल्य (को०)।

वल्गुक²—वि० रुचिर। सुंदर।

वल्गुजंघ—संज्ञा पुं० [सं० वल्गुजङ्घ] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वल्गुज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वल्गुजा] छाग। बकरा।

वल्गुदंतीसुत—संज्ञा पुं० [सं० वल्गुदन्तीसुत] इंद्र।

वल्गुनाद—वि० [सं०] मधुर कूजन या गान करनेवाला [को०]।

वल्गुपत्र संज्ञा पुं० [सं०] वनमूँग।

वल्गुपोदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लहसुआ नाम का साग। २ एक प्रकार की लता।

वल्गुल—संज्ञा पुं० [सं०] चमगादड। गादुर।

वल्गुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बकुची। २ चमगादड।

वल्गुलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कत्थई रंग का पतंग जाति का कीडा जिसे 'तैलपायी' भी कहते हैं। चपड़ा। २ मंजूषा। झाबा। पिटारा।

वल्गुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमगादड। गादुर। २ मंजूषा। झाबा। पिटारा।

वल्द—संज्ञा पुं० [अ०] औरस बेटा। पुत्र।

विशेष—किसी मनुष्य के कुल के परिचय के लिये उसके नाम के आगे इस शब्द का व्यवहार करके उसके पिता का नाम रखा जाता है। जैसे,—गोकुल वल्द बलदेव' अर्थात् गोकुल, बेटा बलदेव का'। दस्तावेजों और सरकारी कागजों आदि में, जिनकी भाषा उर्दू होती है, इस शब्द का प्रयोग अधिक होता है।

वल्दियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय। बाप के नाम का पता। जैसे,—अपनी वल्दियत और सकूनत लिखाओ।

वल्मन—संज्ञा पुं० [सं०] १ आहार। भोजन। २ खाना। भोजन करना [को०]।

वल्मिक, वल्मिकि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वल्मीक' [को०]।

वल्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दीमक। चीटी [को०]।

यौ०—वल्मीकूट।

वल्मीक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट।

यौ०—वल्मीकभौम, वल्मीकराशि, वल्मीकवपा = बाँबी। विमौट। वल्मीकशीर्ष। वल्मीक सभव।

२ वाल्मीकि मुनि। ३. वह मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पडती हो। ४ एक प्रकार का रोग।

विशेष—इस रोग मे त्रिदोष के कारण गले, कधे, कॉख, हाथ, पैर और सधि स्थानो (जोडो) में सूजन हो जाती है, जो क्रमश गाँठ की तरह कडी हो जाती है। इसमे सूई चुभने की सी पीडा होती है और पकने पर अनेक छेद हो जाते हं। यदि आरभ मे ही इसकी चिकित्सा न की जाय, तो यह रोग असाध्य हो जाता है।

वल्मीकशीर्ष—सज्ञा पु० [स०] स्रोताजन। लाल सुरमा।

वल्मीकसंभवा—सज्ञा स्त्री० [स० वल्मीकसम्भवा] एक प्रकार की ककडी [को०]।

वल्मीकाग्र—सज्ञा पु० [स०] रामगिरि पर्वत का एक शृग [को०]।

वल्मीकूट—सज्ञा पु० [स०] विमौट [को०]।

वल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ लीलावती के अनुसार एक मान जो तीन गुजा या रत्ती के बराबर तौल मे होता है।

विशेष—वैद्यक मे दो गुजा का एक 'वल्ल' माना गया है और राजनिघटु सार्ध एक घुँघची का ही वल्ल मानता है।

२ खलिहान मे भूसा अलग करना। बरसाना। ओसाना। ३ निषेध। ४ आवरण। ५ सलई का पेड। ६ वौंरा। ७ एक माशा चाँदी (को०)। ८ एक किस्म का गेहूँ (को०)।

वल्लक—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र मे रहनेवाला एक प्रकार का जतु। २ चिडिया। पक्षी (को०)।

वल्लकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वीणा। उ०—वही वल्लकी मैं लिए गोद मे, उसे छेडती थी महामोद मे।—साकेत, पृ० ३०४। २. सलई का वृक्ष।

वल्लणहार—वि० [स० √वल् या वल्ल् (=गमन)+हिं० हार] गमनशील। चलनेवाला। चलायमान। उ०—सज्जण वल्ले, गुण रहे, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी वेलडी, गयाज मीचणहार।—ढोला०, दू० ३७४।

वल्लभ[1]—वि० [स०] १ अत्यत प्रिय। प्रियतम। प्यारा। २ सर्वश्रेष्ठ। सर्वप्रधान (को०)।

वल्लभ[2]—सज्ञा पु० १ अत्यत प्यारा व्यक्ति। प्रिय मित्र। नायक। २ पति। स्वामी। जैसे,—राधावल्लभ। ३ अध्यक्ष। मालिक। ४ सुदर लक्षणो से युक्त घोडा। ५ एक प्रकार की सेम। ६ वैष्णव सप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका सप्रदाय वल्लभ सप्रदाय कहलाता है।

विशेष—इनके माता पिता का पता नही। लक्ष्मण भट्ट नामक एक दाक्षिणी ब्राह्मण ने चुनारगढ के पास एक बालक पडा पाया, और उसे अपने घर लाकर पुत्र के समान पाला। फिर वही बालक प्रसिद्ध वल्लभाचार्य हुआ। जबतक लक्ष्मण भट्ट जीते रहे, तबतक वल्लभ उन्ही के पास अध्ययन करते थे। उनके मरने पर वे विष्णुस्वामी के मदिर मे जाकर शिष्य हुए और काशी मे आकर सन्यास लिया। सन्यास छोडकर ये फिर गृहस्थ हो गए थे। इनके कई पुत्र हुए, जो गद्दियो के मालिक गोस्वामी हुए। इन्होंने राधाकृष्ण की बडी आडबरपूर्ण उपासना चलाई और अपना वेदात सबधी एक स्वतत्र सिद्धात भी स्थापित किया जो 'विशुद्धाद्वैतवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। इस कारण ये वेदात के चार मुख्य आचार्यो मे माने जाते हैं। इनका जन्म सन् १४७९ ई० और मृत्यु १५३१ ई० मे हुई। सूरदास आदि अष्टछाप के कवि इन्ही के शिष्य थे।

वल्लभपाल, वल्लभपालक—सज्ञा पु० [स०] साईस। अश्वरक्षक [को०]।

वल्लभमत—सज्ञा पु० [स०] विशुद्धाद्वैतवाद। उ०—वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र विट्ठलनाथ ने 'वल्लभ मत' के आठ प्रधान भक्त कवियो को लेकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।—अकबरी०, पृ० ५।

वल्लभा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रिय स्त्री। प्रिय पत्नी। प्यारी जोरू।

वल्लभा[2]—वि० स्त्री० प्यारी। प्रिया।

वल्लभाचार्य—सज्ञा पु० [स०] वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य। विशेष दे० 'वल्लभ'—६। उ०—चैतन्य महाप्रभु एव वल्लभाचार्य द्वारा कृष्णभक्ति को प्रश्रय मिला।—अकबरी०, पृ० ५।

वल्लभायित—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रतिबध [को०]।

वल्लभी—सज्ञा पु० [स०] १. दे० 'वलभी'। २ गोपिका। गोपी (को०)।

वल्लर—सज्ञा पु० [स०] १ लता। २ निकुंज। ३ वन। ४ कृष्णागुरु। अगर। ५ मजरी। दे० 'वल्लुर'।

वल्लरि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वल्लरी'।

वल्लरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्ली। लता। २ मजरी। ३ मेथी। ४ वच। ५. एक प्रकार का बाजा।

वल्लव—सज्ञा पु० [स०] १ गोप। उ०—छीत स्वामी सकल जीव उद्धरन हित प्रगट वल्लव सदन दनुज हारी।—छीत०, पृ० १। २ सूपकार। सुआर। रसोइया। ३ भीम का एक नाम। दे० 'वल्लभ' (को०)।

वल्लवी—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी। अहीरिन [को०]।

वल्लह(पु)—सज्ञा पु० [स० वल्लभ, प्रा० वल्लह] दे० 'वल्लभ'। उ०—सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिण खिण अतर सभरइ, नही विसारइ सोइ।—ढोला०, दू० २३।

वल्लाह—अव्य० [अ०] ईश्वर की शपथ। सचमुच। उ०—इन नए नखरो ने तो वल्लाह बस बेतरह आफत मचा दिया।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

वल्लि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लता। २ पृथिवी [को०]।

वल्लिकटकारिका—सज्ञा स्त्री० [स० वल्लिकण्टकारिका] अग्निदमनी। शोला।

वल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता । २ बेला । ३ पोई नाम की लता जिसकी पत्तियो का साग बनाकर खाया जाता है ।

वल्लिकाग्र—संज्ञा पु० [सं०] मूँगा [को०] ।

वल्लिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वल्लकी' [को०] ।

वल्लिज—संज्ञा पु० [सं०] मरिच । मिर्च ।

वल्लिदूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा । सफेद दूब ।

वल्लिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वल्लिदूर्वा' [को०] ।

वल्लिपापाणसंभव—संज्ञा पु० [सं० वल्लिपापाणसम्भव] मूँगा [को०]।

वल्लिय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्ली] लता । उ०—विना वृक्ष वल्लिय आरोहति ।—प० रासो०, पृ० ६३ ।

वल्लिशरण, वल्लिसरण—संज्ञा पु० [सं०] अत्यम्लपर्णी लता । रामचना । रपटुआ ।

वल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता । २ केवटी मोथा । कैवर्तिका । ३ अग्निदमनी । शोला । ४ काली अपराजिता । ५ चव्य । चाव (को०) । ७ अजमोदा ।

वल्लीकर्ण—संज्ञा पु० [सं०] कानो का वैरूप्य । श्रवणेंद्रिय की विरूपता [को०] ।

वल्लीगड—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की मछली [को०] ।

वल्लीज—संज्ञा पुं० [सं०] मिर्च ।

वल्लीपद—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र [को०] ।

वल्लीबदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की बेर [को०] ।

वल्लीवृक्ष—संज्ञा पु० [सं०] शाल वृक्ष ।

वल्लुर—संज्ञा पु० [सं०] १ कुंज । २ मजरी । फूलो का गुच्छा ३ क्षेत्र । ४ निर्जन स्थान । सूखी जगह ।

वल्लूर—संज्ञा पु० [सं०] १ धूप में सुखाया हुआ मास । २ शूकर का मास । ३ ऊषर । ऊसर । रेगिस्तान । ४ जगल । ५ वीरान । उजाड । ६ विना जोती हुई भूमि । परती (को०) । ७ कुंज । लतामडप (को०) । ८ मजरी (को०) । १०, निर्जल भूमि (को०) ।

वल्लूरक—संज्ञा पु० [सं०] कान की कुरूपता । वल्लीकर्ण । [को०] ।

वल्ल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] धात्री वृक्ष । आँवला [को०] ।

वल्वग—संज्ञा पु० [सं०] आँवला ।

वल्वज—संज्ञा पु० [सं०] ओखली ।

वल्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तृण या घास ।

पर्या०—दृढपत्री । तृणेक्षु । दृढक्षुरा । मौंजीपत्री ।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह और तृषा को दूर करनेवाली कही गई है ।

वल्वल—संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था । इल्वल । उ०—राम दिन कइक ता ठौर औरहु रहे, आइ वल्वल तहाँ दियो दिखाई । रुधिर अरु मास की लग्यो वर्षा करन, ऋषिमकल देखि कै गए डराई ।—सूर (शब्द०) ।

वल्हिक, वल्हीक—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वल्हीक' [को०] ।

वव—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारह करणो मे एक करण, जिसमे जन्म लेनेवाले मनुष्य का बलवान्, धीर, कृती, और विचक्षण होना माना जाता है ।

ववजा—संज्ञा पुं० [सं० व्यपगम या देशज] विघ्न । बाधा । उ०—सदेमाँहि ववज पडयो ।—बी० रासो, पृ० ८७ ।

ववणी—संज्ञा स्त्री० [दश०] कपास ।—देशी०, पृ० २८४ ।

ववहार—संज्ञा पु० [सं० व्यवहार] दे० 'व्यवहार' ।

ववना—क्रि० स० [प्रा० √वव] बोना ।

वशंकर—वि० [सं० वशङ्कर] वश या काबू मे करनेवाला [को०] ।

वशकृत—वि० [सं० वशङ्कृत] वशीभूत [को०] ।

वशगत—वि० [सं० वशङ्गत] वशवर्ती [को०] ।

वशवद—वि० [सं०] १ वशीभूत । वशवर्ती । २ आज्ञाकारी । दास ।

वश[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. इच्छा । चाह । २ एक व्यक्ति पर दूसरे का ऐसा प्रभाव कि दूसरा उसके साथ जो चाहे कर सके, या उससे जो चाहे करा सके । काबू । इख्तियार । अधिकार । जैसे,—(क) इस समय वह तुम्हारे वश मे है, जो चाहो करा लो । (ख) मैं उसके वश मे हूँ, जैसा वह कहेगा, वैसा करूँगा । (ग) उसपर मेरा कोई वश नहीं है ।

मुहा०—(किसी का किसी के) वश में होना = (१) अधिकार मे होना । काबू मे होना । कब्जे मे होना । अधीन होना । (२) कहे मे होना । आज्ञानुवर्ती होना । दबाव मानना । किसी पर वश होना = किसी पर अधिकार होना । किसी पर ऐसा प्रभाव होना कि उसे इच्छानुकूल चलाया जा सके । जैसे,—उस लड़के पर हमारा कोई वश नहीं है । वश का = जिसपर अधिकार हो । जो इच्छानुसार चलाया जा सके । अधीन । जैसे,—अब वह सयाना हुआ, हमारे वश का नहीं है ।

३ किसी वस्तु या बात को अपने अनुकूल घटित करने का सामर्थ्य । शक्ति की पहुँच । काबू । जैसे,—(क) जो अपने वश की बात नहीं उसके लिये शोक क्या ? । (ख) हार जीत अपने वश की बात नहीं ।

मुहा०—वश का = इच्छा के अधीन । वश चलना = शक्ति काम करना । कुछ करने का सामर्थ्य होना । काबू चलना । जैसे,—यदि मेरा वश चलता, तो मैं उसे निकाल देता ।

४ अधीन करने का भाव । अधिकार । कब्जा । प्रभुत्व । उ०—हरि कछु ऐसो टोना जानत । सबके मन अपने वश आनत ।—सूर (शब्द०) । ५ जन्म । ६ वेश्याओं के रहने का स्थान । चकला । ७ आर्यो का एक समूह । उ०—मध्यदेश मे कुरुओ और पचालो के अलावा वश और उशीनर भी थे ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७ ।

वश[2]—वि० १ अधीन । २ आज्ञाकारी । ३. मुग्ध [को०] ।

वश[3]—प्रत्य० [फा०] समान । तुल्य ।

वशका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आज्ञाकारिणी पत्नी [को०] ।

वशकारक—वि० [स०] वश या अधिकार मे करनेवाला । वशीभूत कराने योग्य [को०] ।

वशक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे लाने की क्रिया । वशीकरण प्रयोग [को०] ।

वशग—वि० सज्ञा पु० [स०] दे० 'वशवर्ती' [को०] ।

वशगा—सज्ञा स्त्री० [स०] आज्ञाकारिणी स्त्री । दशका [को०] ।

वशन—सज्ञा पु० [स०] इच्छा या आकाक्षा करना । चाहना । अभिलाषा करना [को०] ।

वशवर्ती[1]—वि० [स० वशवर्तिन्] जो दूसरे के वश मे रहे । जो दूसरे के आज्ञानुसार चलता हो । अधीन । तावे । उ०—उसके सपादक आग्रह और हठ के वशवर्ती हो अपनी मर्यादा को सर्वथा भूल गए हैं ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८५ ।

वशवर्ती[2]—सज्ञा पु० सेवक । चाकर । दास [को०] ।

वशा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वन्ध्या स्त्री । बाँझ । २ नारी । स्त्री । ३ पत्नी । ४ गाय । ५ हथिनी । ६ वन्ध्या गाय । ठाँठ । ७. पति की बहन । ननद । ८. कन्या । बेटी । पुत्री (को०) । ९ वेश्या । वारागना (को०) ।

वशाकु—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की चिडिया ।

वशाढ्यक—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार सूँस ।

वशानुग[1]—सज्ञा पु० [स०] आज्ञाकारी सेवक । अधीन दास ।

वशानुग[2]—वि० वशीभूत ।

वशापायी—सज्ञा पु० [स० वशापायिन्] कुत्ता । श्वान [को०] ।

वशालोभ—सज्ञा पु० [स०] हथिनी के द्वारा हाथी को पकडने का ढग या तरीका [को०] ।

वशि—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे करना । सम्मोहित करना [को०] ।

वशिक—वि० [स०] शून्य । खाली ।

वशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] अगरु । अगर की लकडी ।

वशिता[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अधीनता । तावेदारी । २ मोहने की क्रिया या भाव । मोहन । ३ दे० 'वशित्व' (को०) ।

वशिता[2]—वि० [स० वशितृ] स्वतत्र । २ सयमी [को०] ।

वशित्व—सज्ञा पु० [स०] १ वशता । अधीनता । २. योग के अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों मे से एक । कहते हैं कि इस सिद्धि से साधक सबको अपने वश मे कर लेता है । ३ आत्मसयम (को०) ।

वशिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शमी का पेड । २ एक वनस्पति । बाँदा (को०) । ३ पत्नी । स्त्री (को०) ।

वशिमा—सज्ञा स्त्री० [स० वशिमन्] योग की आठ सिद्धियो मे से एक वशित्व । सिद्धि ।

वशिर—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्रलवण । समुद्री नमक । २ एक प्रकार का वृक्ष । ३. एक प्रकार की लाल मिर्च । मिर्चा । ४. चव्य (को०) । ५ अपामार्ग (को०) । ६ राजपिप्पली (को०) ।

वशिष्ठ—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वसिष्ठ' ।

वशी[1]—वि० [स० वशिन्][वि० स्त्री० वशिनी] १ अपने को वश मे रखनेवाला । २ वश मे किया हुआ । काबू मे लाया हुआ । अधीन । ३ शक्तिशाली (को०) ।

वशी[2]—सज्ञा पु० १ ऋषि । २ शासक । राजा [को०] ।

वशीकर—वि० [स०] वश मे करनेवाला । अधीन बनानेवाला [को०] ।

वशीकरण—सज्ञा पु० [स०] [वि० वशीकृत] १ वश मे लाने की क्रिया । नियमन । निग्रह । २ मणि, मत्र या औषध आदि के द्वारा किसी को अपने वश मे करने का प्रयोग । अधीन करना ।

विशेष—तत्र मे चार प्रकार के प्रयोग कहे जाते हैं—मारण, मोहन, वशीकरण और उच्चाटन । अथर्ववेद मे मत्र सिद्ध करके मणि और औषध द्वारा वश मे करने का उल्लेख है ।

वशीकरणीय—वि० [स०] वश मे किए जाने योग्य । अपना लेने लायक । उ०—तुम वशीकरणीय, प्रियतम, तुम रुचिर वरणीय साजन । लाजनत तव नयन मे अब विरति के रग राग ये क्यो ?—क्वासि, पृ० ४३ ।

वशीकार—सज्ञा पु० [स०] वश मे करना ।

वशीकृत—वि० [स०] १ किसी प्रकार वश मे किया हुआ । २ मत्र द्वारा वश मे किया हुआ । मत्रमुग्ध । ३ मोहित । मुग्ध ।

वशीभूत—वि० [स०] १ वश मे आया हुआ । अधीन । तावे । २. दूसरे की इच्छा के अधीन । ३ शक्तिशाली । शक्तिपूर्ण (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वशीर—सज्ञा पु० [स०] गजपिप्पली [को०] ।

वशेद्रिय—वि० [स० वशेन्द्रिय] इद्रियो को अधीन रखनेवाला । जितेंद्रिय [को०] ।

वश्य[1]—वि० [स०] १ वश मे आनेवाला । तावे होनेवाला । २ किसी की इच्छा के अधीन । दूसरे की आज्ञा या कहने मे रहनेवाला । वश मे रहनेवाला । उ०—तुम्हारा धन है मान अवश्य, किंतु हूँ मै तो यो ही वश्य ।—साकेत, पृ० ४४ ।

वश्य[2]—सज्ञा पु० १ दास । सेवक । २ मातहत । ३ मार्कडेयपुराण के अनुसार अग्नीध्र का पाँचवाँ पुत्र । ४. लवग । लौंग (को०) ।

वश्यक—वि० [स०] आज्ञापालक । वश मे रहनेवाला [को०] ।

वश्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] वश्या । आज्ञाकारिणी स्त्री [को०] ।

वश्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे होने की अवस्था या भाव । अधीनता । (राष्ट्र या राजा) ।

वश्यमित्र—सज्ञा पु० [स०] वह (राष्ट्र या राजा) मित्र जिसका बहुत प्रकार से उपयोग किया जा सके । यह तीन प्रकार का होता है । —(१) एकतोभोगी, (२) उभयतोभोगी और (३) सर्वतोभोगी ।

वश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लगाम । २ नीला पराजिता । ३ गोरोचन । ४ आज्ञाकारिणी या वशीभूता स्त्री (को०) ।

वषट्—अव्य० [स०] एक शब्द जिसका उच्चारण अग्नि मे आहुति देते समय यज्ञो मे होता है । अगन्यास और करन्यास मे शिखा और मध्यमा के साथ इसका व्यवहार होता है ।

वषट्कर्ता—संज्ञा पुं० [सं० वषट्कर्तृ] वषट् का या देवाहुति के मंत्रों का उच्चारण करनेवाला होता (को०)।

वषट्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। होम। होत्र। २. वेदोक्त तैंतीस देवताओं में से एक।

वषट्कृत—वि० [सं०] देवताओं के निमित्त अग्नि में डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

वषट्कृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] होम।

वष्कय—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ष का बछड़ा (को०)।

वष्कयणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वष्कयिणी'।

वष्कयिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकेना गाय।

वसंत—संज्ञा पुं० [सं० वसन्त] [वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती] १ वर्ष की छह ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और बैसाख के महीने माने गए हैं। नई पत्ती लगने और बहुत से फूल फूलने की सुंदर ऋतु। बहार का मौसम।

विशेष—प्राचीन वैदिक काल में यह ऋतु चैत और बैसाख में ही पड़ती थी, पर क्रमशः अयन खिसकने से आजकल प्रकृति में कुछ अंतर दिखाई पड़ता है। इसी से पीछे के कुछ ग्रंथों में फागुन और चैत के महीने वसंत ऋतु के कहे गए हैं। पर काव्य आदि में परंपरानुसार अबतक चैत और बैसाख ही इस ऋतु के महीने माने जाते हैं। वसंत ऋतु के ये लक्षण कहे गए हैं—पेड़ों में फूल लगना और नई पत्तियाँ आना, शीतल, मंद और सुगंधयुक्त वायु चलना, सायंकाल अत्यंत मनोरम होना और स्त्री पुरुषों का उमंग से भरना, आदि। इस ऋतु में प्राचीन काल में वसंतोत्सव और मदनपूजा होती थी। आजकल होली का उत्सव उसी की परंपरा है। पुराणों में इस ऋतु का अधिष्ठाता देवता कामदेव का सहचर कहा गया है।

२ अतिसार रोग। ३ शीतला रोग। विस्फोटक। चेचक। ४ मसूरिका रोग। ५ छह रागों में दूसरा राग। (संगीत)।

विशेष—इस राग की उत्पत्ति पंचवक्त्र शिव के पाँचवें मुख से कही गई है। इसकी छह रागिनियाँ ये हैं—देशी, देवगिरी, वैराटी, तोड़िका, ललिता और हिंडोला। कल्लिनाथ के अनुसार छह रागिनियाँ ये हैं—अंधूली, गमकी, पटमंजरी, गौडकेरी, धामकली और देवशाखा। संगीतदामोदर का मत है कि श्रीपंचमी से हरिशयनी एकादशी तक वसंत राग गा सकते हैं। पर संगीतदर्पण के अनुसार इसे वसंत ऋतु में ही गाना चाहिए। इसका सरगम इस प्रकार है—सा, रि, ग, म, प, नि, सा। कुछ लोग इस राग को हिंदोल राग का पुत्र मानते हैं।

६ एक ताल का नाम। (संगीत)। ७ फूलों का गुच्छा। ८ नाटक में विदूषकों की आख्या या नाम (को०)। ९ एक वृत्त का नाम (को०)।

वसंतक—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तक] १ वसंत ऋतु (को०)। २ श्योनाक। सोनापाढ़ा। टेंटू। अरलू।

वसंतकाल—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तकाल] बहार का मौसम। वसंत ऋतु (को०)।

वसंतकुसुम—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तकुसुम] गोदनी नाम का वृक्ष। विशेष दे० 'गोंदी' (को०)।

वसंतकुसुमाकर—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तकुसुमाकर] एक उत्तम रसौषध। (वैद्यक)।

वसंतघोष—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तघोष] कोकिल। कोयल (को०)।

वसंतघोषी—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तघोषिन्] कोकिल।

वसंतजा—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तजा] १ वासंती या माधवी लता। २ सफेद जुही। ३ वसंतोत्सव।

वसंततिलक—संज्ञा पुं० [सं० वसन्ततिलक] १ एक प्रकार के फूल का नाम। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण, और दो गुरु, इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते हैं। जैसे,—लाला ललाम मृदुता अवलोकनीया।

वसंततिलका—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्ततिलका] एक वर्णवृत्त। दे० 'वसंततिलक'।

वसंतदूत—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तदूत] १ आम का वृक्ष। २ कोयल। ३ पंचम राग। ४ चैत्र मास।

वसंतदूती—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तदूती] १ कोकिला। २ पटोली वृक्ष। पाँडरी। पाडर। ३ माधवी लता।

वसंतद्रु—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तद्रु] आम्रवृक्ष (को०)।

वसंतद्रुम—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तद्रुम] आम का वृक्ष (को०)।

वसंतपंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तपञ्चमी] माघ महीने की शुक्ल पंचमी।

विशेष—इस दिन वसंत और रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है। वसंत राग के सुनने का महाफल है। इस दिन एकाहार व्रत भी किया जाता है।

वसंतपुष्प—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तपुष्प] १. वसंत ऋतु के पुष्प। २ एक प्रकार का कदंब पुष्प (को०)।

वसंतबंधु—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तबन्धु] कामदेव।

वसंतभैरवी—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तभैरवी] एक रागिनी का नाम।

वसंतमहोत्सव—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तमहोत्सव] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंतपंचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसंत की पूजा के उपलक्ष्य में मनाया जाता था। २ होलिकोत्सव।

वसंतमारु—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तमारु] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

वसंतमालतीरस—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तमालतीरस] एक प्रसिद्ध रसौषध का नाम (को०)।

वसंतमालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तमालिका] एक वर्णवृत्त। एक छंद का नाम (को०)।

वसंतयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तयात्रा] वसंतोत्सव।

वसंतयोध—संज्ञा पुं० [सं० वसन्तयोध] कामदेव (को०)।

वसतंतु—संज्ञा पु० [सं० वसन्ततु] ऋतुराज वसंत। बहार का मौसम [को०]।

वसंतवाक्—संज्ञा पु० [सं० वसन्तवाक्] संगीतदामोदर के अनुसार चौदह तालों में से एक।

वसंतव्रत—संज्ञा पु० [सं० वसन्तव्रत] कोकिल।

वसंतसखा—संज्ञा पु० [सं० वसन्तसखः] १ कामदेव। मदन। २ मलय पवन।

वसंतसखा—संज्ञा पु० [सं० वसन्तसखा] १ मदन। कामदेव। २ मलयानिल।

वसंतसहाय—संज्ञा पु० [सं० वसन्तसहाय] जिसका सहायक वसंत हो, कामदेव [को०]।

वसंता—संज्ञा पु० [हिं० वसंता] हरे रंग की एक सुंदर चिड़िया जिसका कंठ और सिर लाल होता है।

वसंतार्त—संज्ञा पु० [सं० वसन्तार्त] विभीतक वृक्ष। बहेड़ा।

वसंती[1]—संज्ञा पु० [हिं० वसंत] एक रंग जो हलका पीला होता है। सरसों के फूल के रंग का। वसंती।

वसंती[2]—वि० वसंती रंग का।

विशेष—वसंतोत्सव में इस रंग के कपड़े पहने जाते हैं।

वसंतोत्सव—संज्ञा पु० [सं० वसन्तोत्सव] १ एक उत्सव, जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था।

विशेष—इसे 'मदनोत्सव' भी कहते थे। इसमें उद्यानों में जाकर लोग वसंत और कामदेव का पूजन करते थे। होली का उत्सव इसी की परंपरा है।

२ होली का उत्सव।

वसअत—संज्ञा स्त्री० [अ० वसअत] १. विस्तार। फैलाव। २ समाई। अँटने की जगह। ३ चौड़ाई। ४ सामर्थ्य। शक्ति। जैसे—सब काम अपना वसअत देखकर करना चाहिए।

वसति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वास। रहना। २ घर। ३ बस्ती। आबादी। ४ जैन साधुओं का मठ। ५. रात। रात्रि। विश्राम काल। ६ शिविर। पड़ाव (को०)।

वसती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वास। रहना। २. रात। ३. घर। दे० 'वसति'।

वसत्त(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्तु] दे० 'वस्तु'। उ०—हुता सज्जण हीयड़ै सयणाँ हुदा हत्त। जउ सोहणो साचइ होग्रइ, सोहणो वडी वसत्त।—ढोला०, दू० ५०६।

वसथ—संज्ञा पु० [सं०] १ रहने का स्थान। २ वास। घर। ४. पक्षियों का घोसला [को०]।

वसन—संज्ञा पु० [सं०] १ वस्त्र। २ ढकने की वस्तु। आवरण। छादन। ३ घेरा। अवरोध। परिवेष्ठन (को०)।

यौ०—वसनपर्याय = वस्त्रपरिवर्तन। वस्त्र बदलना। वसनसद्म = तंबू। खेमा। रावटी।

वसना[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।

वसना[2]—वि० (समास में) १ वस्त्र धारण करनेवाली। जैसे, शुभ्रवसना। २ घिरी हुई। आवेष्टित। जैसे समुद्रवसना। ३ निमग्न। लीन [को०]।

वसनार्णवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूमि। पृथिवी।

वसनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वसना' [को०]।

वसमा—संज्ञा पु० [अ० वसमह्] १ नील का पत्ता। २ खिजाब। ३ उबटन। ४ एक प्रकार का छपा कपड़ा जो चाँदी के वर्क लगाकर छापा जाता है।

वसवस्त—संज्ञा पु० [अ०] दे० 'वसवास' [को०]।

वसवास—संज्ञा पु० [अ०] [वि० वसवासी] १ भ्रम। दुबधा। संदेह। २ भुलावा। बहकावा। प्रलोभन या मोह। उ०—सरगहुँ ते दोउ निकसे नारद के वसवास।—जायसी (शब्द०)।

वसवासी—वि० [अ० वसवास] १ विश्वास न करनेवाला। शक्की। संशयात्मा। २ भुलावे में डालनेवाला। बहकानेवाला।

वसह(पु)—संज्ञा पु० [सं० वृषभ, प्रा० वसह] बैल। वसह।

वसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेद। २ चरबी। ३ भेजा। मगज (को०)।

वसाकेतु—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के धूमकेतु जो पश्चिम में उदय होते हैं और जिनका पूँछ का विस्तार उत्तर की ओर होता है। ये देखने में स्निग्ध जान पड़ते हैं और इनके उदय से सुभिक्ष होता है।

वसाच्छटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मस्तिष्कपिंड। भेजा [को०]।

वसाढ्य—संज्ञा पु० [सं०] शिशुमार। सूँस।

वसाढ्यक—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वसाढ्य'।

वसातनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीला शीशम।

वसाति[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ वसाति नामक जनपद का अधिवासी। उ०—दक्षिणी पश्चिमी पंजाब में अवष्ठों, क्षत्रियों तथा वसातियों के छोटे छोटे संघ थे।—प्रा० भा० पृ० २८०। २ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। ३ जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

वसाति[2]—संज्ञा स्त्री० १ उत्तर के एक जनपद का नाम। २. उषा (को०)।

वसादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीला शीशम [को०]।

वसान—वि० [सं०] निवास करनेवाला। रहनेवाला [को०]।

वसापायी—संज्ञा पु० [सं० वसापायिन्] कुत्ता।

वसापावन—संज्ञा पु० [सं० वसापावन्] एक प्रकार के वैदिक देवता। पशुभाजा।

वसाप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मेह रोग जिसमें मूत्र के साथ चरबी मिलकर निकलती है।

विशेष—आधुनिक डाक्टरी चिकित्सा में यह बहुमूत्र का भेद है, जिसमें मूत्र के साथ शरीर का सत निकलता है और रोगी बहुत क्षीण हो जाता है।

वसाप्रमेही—वि० [सं० वसाप्रमेहिन्] चर्बीयुक्त अथवा चर्बी के समान

पेशाब करनेवाला । उ०—वसाप्रमेही वसा (चर्बी) युक्त अथवा वसा के समान मूते '—माधव०, पृ० १८४ ।

वसामूर—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद का नाम ।

वसामेह—संज्ञा पुं० [सं०] वसाप्रमेह ।

वसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ इच्छा । २ वश । ३ अभिप्राय ।

वसारोह—संज्ञा पुं० [सं०] कुकुरमुत्ता । खुमी ।

वसि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भवन । घर । २ वस्त्र । कपड़ा [को०] ।

वसित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ निवासस्थान । २ वस्त्र ।

वसित—वि० १ बसा हुआ । निवसित । २ पहना हुआ । ३ इकट्ठा किया हुआ [को०] ।

वसितव्य—वि० [सं०] १ धारण के योग्य । पहनने लायक । २ निवास करने या ठहरने के उपयुक्त [को०] ।

वसिता—वि० [सं० वसितृ] १ निवास करनेवाला । २ पहननेवाला [को०] ।

वसिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्रलवण । २ गजपिप्पली । ३ लाल रंग का अपामार्ग । लाल चिचड़ा । ४ जलनीम ।

वसिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि, जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत, पुराणों आदि तक में है ।

विशेष—वेदों में ये मित्र और वरुण के पुत्र कहे गए हैं । यज्ञस्थल में एक बार उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण का वीर्यपात हो गया । वह वीर्य एक यज्ञकुंभ में रखा गया । कुंभ से वसिष्ठ और अगस्त्य का जन्म हुआ । 'बृहद्देवता' में लिखा है कि कुंभ के जल में मत्स्य, स्थल में वसिष्ठ और कुंभ में अगस्त्य उत्पन्न हुए थे । ऋग्वेद के अनुसार ये वसिष्ठ गांधार और काबुल की ओर राज्य करनेवाले त्रित्सु वंश के राजा दिवोदास के पौत्र और पिजवन के पुत्र सुदास के पुरोहित थे । सुदास ने इनको बहुत कुछ दान दिया था । एक बार सुदास ने यज्ञ करने के लिये विश्वामित्र को बुलाया, इसपर वसिष्ठ बहुत क्रुद्ध हुए । उन्होंने अपने अन्य यजमानों, भरतों के द्वारा विश्वामित्र को बहुत तंग किया । विश्वामित्र तो चले आए, पर सुदास के पुत्रों ने वसिष्ठ के सौ पुत्रों का नाश कर दिया । फिर वसिष्ठ ने 'एकस्मान्न' इत्यादि ५० मंत्रों द्वारा यज्ञ करके सौदासों को पराभूत किया ।

पुराणों में वसिष्ठ ब्रह्मा के मानसपुत्र कहे गए हैं । राजा निमि और वसिष्ठ के बीच एक बार झगड़ा हुआ । वसिष्ठ ने निमि को और निमि ने वसिष्ठ को शाप दिया । निमि तप करके शरीररहित होकर अमर हुए और उनका वंश विदेह कहलाया । वसिष्ठ ने शरीर को त्यागकर मित्रावरुण के वीर्य से जन्म ग्रहण किया । कामधेनु के लिये वसिष्ठ और विश्वामित्र (जो पहले राजा थे) से बहुत दिनों तक झगड़ा होता रहा । विश्वामित्र के सौ पुत्रों को वसिष्ठ ने केवल हुंकार से जला दिया था । विश्वामित्र अंत में हारकर ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिये तप करने लगे । पुराणों में वसिष्ठ की अनेक पत्नियों के नाम मिलते हैं, जिनमें से एक अरुंधती थी, जो कर्दम की कन्या थी और वसिष्ठ को सबसे प्रिय थी । इनकी एक और स्त्री अक्षमाला नीच जाति की थी । किसी और पत्नी से इन्हें शक्तृ नामक एक पुत्र हुआ था जो गोत्रकार ऋषि हुआ । ऋग्वेद के अनेक मंत्रों के द्रष्टा वसिष्ठ हैं । सप्तम मंडल के द्रष्टा ये ही माने जाते हैं ।

२. सप्तर्षिमंडल का एक तारा जिसके पास का छोटा तारा अरुंधती कहलाता है । ३ नाम । ४ एक स्मृतिकार (को०) ।

वसिष्ठक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वसिष्ठ' [को०] ।

वसिष्ठनिह्व, वसिष्ठनिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण जिसका उल्लेख देवी भागवत में है । कुछ लोग कहते हैं कि लिंगपुराण ही वसिष्ठ पुराण है ।

वसिष्ठप्राची—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक जनपद का नाम ।

वसिष्ठशफ—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठसंसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का संन्यासी ।

वसिष्ठसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक स्मृति का नाम ।

वसिष्ठसिद्धांत—संज्ञा पुं० [सं० वसिष्ठसिद्धान्त] ज्योतिष का एक सिद्धांत ग्रंथ ।

वसिष्ठांकुश—संज्ञा पुं० [सं० वसिष्ठाङ्कुश] एक साम का नाम ।

वसिष्ठानुपद—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वसिष्ठापवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वती नदी के किनारे का एक प्राचीन स्थान ।

विशेष—कथा है कि जब वसिष्ठ और विश्वामित्र के बीच घोर युद्ध हुआ था, तब सरस्वती नदी ने वसिष्ठ को विश्वामित्र से बचाने के लिये इसी स्थान पर छिपा लिया था ।

वसिष्ठोपपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] वसिष्ठपुराण नाम का एक उपपुराण [को०] ।

वसी[1]—पुं० [सं० वसिन्] ऊदबिलाव [को०] ।

वसी[2]—संज्ञा पुं० [अ०] वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो [को०] ।

वसीअ—वि० [अ० वसीअ़] विस्तृत । लंबा चौड़ा [को०] ।

वसीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'वसीयत' ।

यौ०—वसीअतनामा = वसीयतनामा ।

वसीक—वि० [अ० वसीक] मजबूत । टिकाऊ । ठोस । दृढ़ [को०] ।

वसीका—संज्ञा पुं० [अ० वसीकह्] १ मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार वह धन जो विधर्मी या काफिर से नगद रुपए के मुनाफे के तौर पर लिया जाय । २. वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे अथवा किसी धर्मकार्य, मकान की मरम्मत आदि में लगाया जाय । उ०—आपको पाँच सौ रुपए महीने का वसीका सरकार से मिलता है । —प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८४ । ३. ऐसे धन से आया हुआ सूद । वृत्ति । ४. वक्फ का इकरारनामा ।

वसीकादार—संज्ञा पुं० [अ० वसीकह् + फ़ा० दार] वसीका पानेवाला । पेंशनयाफ्ता (को०) ।

वसीम—वि० [अ०] १ चारु । सुंदर । मनोहर । २ अंकित । चिह्नित (को०) ।

वसीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह अंतिम आदेश जो विदेश जानेवाला या मरणासन्न पुरुष इस उद्देश्य से करता है कि मेरी अनुपस्थिति में अमुक काम इस प्रकार किया जाय । २. अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है । विल ।

वसीयतनामा—संज्ञा पुं० [अ० वसीयत + फ़ा० नामह्] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो । विल ।

वसीरो†—वि० [सं० √वस्] बसा या बसाया हुआ । प्रजा । उ०—हुवै वसीरो वाणियो, पातर हुवै खवास ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६२ ।

वसीला—संज्ञा पुं० [अ० वसीलह्] १ संबंध । २ आश्रय । सहायता । उ०—बिना वसीला सत नाम से भेंट न होई ।—पलटू०, पृ० ७ । ३ किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग । जरिया । द्वार । जैसे,—(क) किस वसीले से वह यहाँ आया । (ख) नौकरी के लिये जाता हूँ, कोई वसीला निकल ही आवेगा ।

मुहा०—वसीला पैदा करना = (१) किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग निकालना । सहारा पैदा करना । (२) आमदनी आदि का रास्ता निकालना । वसीला रखना = (१) संबंध रखना । (२) आसरा रखना ।

वसुंधरा—संज्ञा स्त्री० [सं० वसुन्धरा] १ धरा । पृथ्वी । २. श्वफलक की कन्या जो सात्र से ब्याही थी । ३ एक देवी का नाम । ४ देश । राज्य (को०) ।

वसुंधराधर—संज्ञा पुं० [सं० वसुन्धराधर] भूधर । पर्वत (को०) ।

वसुंधराधव—संज्ञा पुं० [सं० वसुन्धराधव] भूपति । राजा (को०) ।

वसुंधराभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ (को०) ।

वसु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं ।

विशेष—वेदों में वसु शब्द का प्रयोग अग्नि, मरुद्गण, इंद्र, उषा, अश्वी, रुद्र और वायु के लिये मिलता है । वसु को आदित्य भी कहा है । बृहदारण्यक में इस गण में पृथिवी, वायु, अंतरिक्ष, आदित्य, द्यौ, अग्नि, चंद्रमा और नक्षत्र माने गए हैं । महाभारत के अनुसार आठ वसु ये हैं—धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास । श्रीमद्भागवत में ये नाम हैं—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वास्तु और विभावसु । अग्निपुराण में आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास वसु कहे गए हैं । भागवत के अनुसार दक्ष प्रजापति की कन्या 'वसु' ने, जो धर्म को ब्याही थी, वसुओं को उत्पन्न किया ।

देवीभागवत में कथा है कि एक बार वसुओं ने वसिष्ठ की नंदिनी गाय चुरा ली थी, जिससे वसिष्ठ जी ने शाप दिया था कि तुम लोग मनुष्य योनि में जन्म लोगे । उसी शाप के अनुसार वसुओं का जन्म शांतनु की पत्नी गंगा के गर्भ से हुआ, जिनमें सात को तो गंगा जनमते ही गंगा में फेंक आई, पर अंतिम भीष्म बचा लिए गए । इसी से भीष्म वसु के अवतार माने जाते हैं ।

२. शब्दों द्वारा संख्या सूचित करने की रीति के अनुसार आठ की संख्या । ३ रत्न । ४ धन । ५ बक वृक्ष । अगस्त का पेड़ । ६ अग्नि । ७ रश्मि । किरण । ८. जल । ९. सुवर्ण । सोना । १० योक्त्र । जोत । ११. कुबेर । १२ पीली मूँग । १३ वृक्ष । पेड़ । १४ शिव । १५ सूर्य । १६ विष्णु । १७ मौलसिरी । बकुल । १८ साधु पुरुष । सज्जन । १९ सरोवर । तालाब । २० राजा नृग के एक पुत्र का नाम । २१ छप्पय के हो सकनेवाले भेदों में से ६९ वाँ भेद । २२ घृत । घी (को०) । २३ वस्तु । पदार्थ (को०) । २४ एक प्रकार का नमक (को०) । २५ रास । लगाम । बागडोर (को०) । २६ रज्जु । रस्सी (को०) । २७ हाथ की कुहनी से लेकर बँधी हुई मुट्ठी तक की लंबाई या दूरी (को०) ।

वसु[2]—संज्ञा स्त्री० १ दीप्ति । आभा । २ वृद्धौषध । वृद्धि । ३ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिससे द्रोण आदि आठ वसुओं का जन्म हुआ था । ४ अमरावती । इंद्रपुरी (को०) । ५ अलका । कुबेर की नगरी (को०) ।

वसु[3]—वि० १ जो सबमें वास करता हो । २ जिसमें सबका वास हो । ३ मीठा । मधुर (को०) । ४ सूखा । शुष्क (को०) । ५. धनी । संपन्न । ६ अच्छा । उत्तम ।

वसुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँभर नमक । २ पांशु लवण । रेह । ३ वास्तुक शाक । बथुआ । ४ काला अगर । कृष्णागुरु । ५ क्षार लवण । ६ मदार का वृक्ष । ७. वनहला वृक्ष । बड़ी मौलसिरी । ८ एक प्रकार का ताल (को०) । ९ एक प्रकार का पुष्प (को०) ।

वसुकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि ।

वसुकीट—संज्ञा पुं० [सं०] भिखारी (को०) ।

वसुकृत—संज्ञा पुं० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि ।

वसुकृमि—संज्ञा पुं० [सं०] भिक्षुक । भिखारी (को०) ।

वसुकोटर—संज्ञा पुं० [सं०] तालीशपत्र ।

वसुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम ।

विशेष—इस नाम के दो ऋषि हुए हैं । एक इंद्र के गोत्र में उत्पन्न हुए थे, दूसरे वसिष्ठ के गोत्र के थे ।

वसुचरण—संज्ञा पुं० [सं०] टगण के चौथे भेद का नाम जिसके आदि में गुरु और फिर दो लघु होते हैं । (पिंगल) ।

वसुचारुक—संज्ञा पुं० [सं०] सोना ।

वसुच्छिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा ।

वसुद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर । २ विष्णु ।

वसुद[2]—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्कंदमाताओं मे से एक । २ पृथ्वी । ३ माली राक्षस की पत्नी ।

विशेष—यह नर्मदा नाम की गधर्वो की पुत्री थी । इसके अनल, निल, हर और सपति नामक चार पुत्र थे, जो विभीषण के अमात्य थे ।

वसुदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदेहराज के एक पुत्र का नाम । २. बृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वासुदामन्] बृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कदमाताओं मे से एक का नाम ।

वसुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ यदुवशियो के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे ।

विशेष—इनके पिता का नाम देवमीढ और माता का मारिषा था । इनके जन्म के समय स्वर्ग मे दुदुंभि का शब्द सुनाई पडा था इससे ये 'आनकदुंदुभी' कहलाते थे । ये अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे । इनकी बारह स्त्रियाँ थी—पौरवी, रोहिणी, मदिरा, धरा, वैशाखी, भद्रा, सुनाम्नी, सहदेवा, शांतिदेवा, सुदेवा, देवरक्षिता और देवकी । इन पत्नियो के अतिरिक्त इनके सुतनु और वडवा नाम की दो परिचारिकाएँ भी थी । रोहिणी के गर्भ से बलराम और देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था । वसुदेव की बहन कुंती थी, जिससे पाडव उत्पन्न हुए थे ।

२ एक राजा जो पहले वसुभूति का अमात्य था और पीछे उसे मारकर आप राजा हुआ । ३ धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेवत—संज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धनिष्ठा नक्षत्र । २ पक्ष की नवमी तिथि ।

वसुदैव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वसुदैवत' [को०] ।

वसुदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] उदुंबर । गूलर ।

वसुधर्मा—संज्ञा पुं० [सं० वसुधर्मन्] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

वसुधार्मिक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वसुधार्मिका] स्फटिक पत्थर [को०] ।

वसुधा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । भूतल । २ देवलोक ।

वसुधा[2]—वि० वसु अर्थात् धन देनेवाला । धनदाता ।

वसुधातल—संज्ञा पुं० [सं०] धरातल । पृथ्वीतल [को०] ।

वसुधाधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत । २ विष्णु ।

वसुधाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] राजा ।

वसुधान—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी ।

वसुधार—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

वसुधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जैनो की एक देवी का नाम ।

पर्या०—तारा । नीलसरस्वती । महाश्री । स्वाहा । श्री । जया । अनंता । शिवा । भद्रा । गभिनी । महातारा । त्रिलोचना । तारिणी ।

२ कुबेर की पुरी, अलका । ३ एक तीर्थ का नाम । ४ नांदीमुख श्राद्ध का अग एक कृत्य, जिसमें राजा वसु के लिये घी की सात धारें दी जाती हैं । पहले दीवार मे चदन से सात चिह्न बनाए जाते हैं । फिर वेदमत्र पढ़ते हुए धारें दी जाती हैं । ५ एक नदी का नाम । स्वर्गगंगा । मदाकिनी ।

वसुधारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी [को०] ।

वसुधार्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्फटिक । स्वरबिल्लौर । २ सगमर्मर ।

वसुनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, जिन्हें चार मुख होने के कारण आठ आँखें हैं [को०] ।

वसुनीत—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा ।

वसुनीथ—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वसुपति—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण [को०] ।

वसुपाता—संज्ञा पुं० [सं० वसुपातृ] कृष्ण [को०] ।

वसुपाल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा [को०] ।

वसुप्रद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ स्कंद के एक अनुचर का नाम । ३ कुबेर ।

वसुप्रद[2]—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक । ४ कुबेर की नगरी । अलका [को०] ।

वसुप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि [को०] ।

वसुबंधु—संज्ञा पुं० [सं० वसुबन्धु] एक प्राचीन बौद्ध आचार्य जो महायान शाखा के अनुयायी थे । इन्होंने अनेक ग्रंथ रचे थे, जिनमे से कुछ के अनुवाद चीनी भाषा मे भी वर्तमान है ।

वसुभ—संज्ञा पुं० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुभारत—वि० [सं०] धनपूर्ण । धनाढ्य [को०] ।

वसुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ छह वर्णो का एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे तगण और सगण होते हैं । उ०—तासो परिहरो जो है । हित खरो । रारी जडमती । धारी वसुमती । ३ धनी या सपन्न स्त्री (को०) । ४ देश । राज्य । प्रदेश (को०) ।

वसुमना—संज्ञा पुं० [सं० वसुमनस्] पुराणानुसार एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम ।

वसुमान[1]—संज्ञा पुं० [सं० वसुमत्] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो उत्तर दिशा मे है । २ वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम (को०) । ३ कृष्ण का एक नाम (को०) ।

वसुमान[2]—वि० धनवान् । धनी । समृद्ध [को०] ।

वसुमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बौद्ध आचार्य ।

विशेष—ये महायान शाखा के अंतर्गत वैभाषिक संप्रदाय के थे। ये काश्मीर के पश्चिम अश्मापरांत देश के निवासी कहे गए हैं।

वसुर वि० [सं०] कीमती। मूल्यवान् [को०]।

वसुरक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] एक बौद्ध आचार्य का नाम।

वसुरात—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम।

वसुरुच—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के देवता।

वसुरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गंधर्व का नाम।

वसुरूप—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

वसुरेता—संज्ञा पुं० [सं० वसुरेतस्] १ अग्नि। २ शिव।

वसुरोचि—संज्ञा पुं० [सं० वसुरोचिस्] १ यज्ञ। २ अग्नि [को०]।

वसुरोधी—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

वसुल—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

वसुवन—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार ईशान कोण मे स्थित एक देश।

वसुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम।

वसुविंद—वि० [सं० वसुविन्द] धन पानेवाला [को०]।

वसुविद्—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

वसुव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुष्ठान। एक तरह की तपस्या जिसमे १२ दिनो तक पृथ्वी पर गिरे हुए अन्न को खाकर रहा जाता है [को०]।

वसुश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० वसुश्रवस्] शिव [को०]।

वसुश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

वसुश्रुत—संज्ञा पुं० अत्रिगोत्रीय एक ऋषि का नाम।

वसुश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाँदी। रजत। २ कृष्ण। ३. नकली सोना। कृत्रिम स्वर्ण [को०]।

वसुषेण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्ण। २ विष्णु [को०]।

वसुसारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका।

वसुसेन—संज्ञा पुं० [सं०] कर्णराज [को०]।

वसुस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका।

वसुहंस—संज्ञा पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम। उ०—चल्यो वीर वसुहंस हंस दुति हंस वरन पट। जादवकुल अवतंस शत्रु विध्वंसकरन भट।—गोपाल (शब्द०)।

वसुहट्ट, वसुहट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त का वृक्ष।

वसुहोम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणो के अनुसार अंग देश के एक राजा का नाम।

वसूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड़ या फूल। २ साँभर नमक। ३. दे० 'वसुक'।

वसूज—संज्ञा पुं० [सं०] अत्रिगोत्रीय एक ऋषि जो ऋग्वेद के एक सूक्त के द्रष्टा थे।

वसूत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] पितामह भीष्म का एक नाम [को०]।

वसूदम—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जीखार [को०]।

वसूरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०]।

वसूल[1]—वि० [अ०] १ पास पहुँचा हुआ। मिला हुआ। प्राप्त। जैसे,—खत का वसूल होना। २. जो चुका लिया गया हो। जो हाथ मे आ गया हो। प्राप्त। लब्ध। जैसे,—लगान वसूल करना, रुपया वसूल करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वसूल पाना = दूसरे से जो पाना हो, वह मिल जाना।

वसूल[2]—संज्ञा पुं० दे० 'उसूल'।

वसूली—संज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] १ चुकता कराने की क्रिया। दूसरे से रुपया पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति। जैसे,—इन्हे रुपया देते तो हो, पर वसूली मे बड़ी दिक्कत होगी। २ बाकी निकला या चाहता हुआ रुपया लेने का काम। जैसे,—उस गाँव मे वसूली शुरू हो गई।

वस्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. जाना। चलना। गमन। २ परिश्रम। अध्यवसाय [को०]।

वस्कय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वष्कय'।

वस्कयणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वष्कयणी'।

वस्कराटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू [को०]।

वस्त[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बकरा। २ निवास की जगह। ३. मकान। घर (को०)।

वस्त[2]—अव्य० [अ०] मध्य। बीच।

वस्त[3]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वस्तु'।

वस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] कृत्रिम लवण। बनाया हुआ नमक।

वस्तकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] शाल वृक्ष। साखू का पेड़।

वस्तगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्तगन्धा] अजगंधा [को०]।

वस्तमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा।

वस्तर—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्र] दे० 'वस्त्र'। उ०—कामकंदला विरहवसि, वस्तर गात मलीन। मुख माधौ माधौ रटै, होइ सो छिन छिन छीन।—हिं० क० का०, पृ० २१२।

वस्तव्य—वि० [सं०] १ निवास योग्य। रहने लायक। २ बिताने या व्यतीत करने लायक [को०]।

वस्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निवास। रहना [को०]।

वस्तांत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृषपत्रिका नामक पौधा। अजांत्री [को०]।

वस्ता—वि० [सं० वस्तृ] १ द्योतित या दीप्त होनेवाला। चमकनेवाला। २. पहनने या धारण करनेवाला। ३ रखनेवाला। ऊपर रखनेवाला [को०]।

वस्ताद[1]—संज्ञा पुं० [अ० उस्ताद] दे० 'उस्ताद'। उ०—अव्वल याद करो वस्ताद की। गुरु, पीर, पैगंबर की और याद किए करतार की।—दक्खिनी०, पृ० ५७।

वस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाभि के नीचे का भाग। पेड़ू। २ मूत्राशय। ३. पिचकारी। ४ रहना। रुकना। पड़ाव। निवास (को०)। ५. वस्त्र का आँचल। छोर (को०)।

वस्तिकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वस्तिकर्मन्] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों मे पिचकारी देने की क्रिया।

वस्तिकर्माढ्य—संज्ञा पुं० [सं०] रीठे का पेड़। अरिष्ट वृक्ष [को०]।

वस्तिकुंडलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्तिकुण्डलिका] एक रोग।

विशेष—इस रोग मे मूत्राशय मे गाँठ सी पड जाती है, उसमे पीडा तथा जलन होती है और पेशाव कठिनता से उतरता है। गाँठ को दबाने से कभी तो बूँद बूँद करके पेशाव गिरता है, और कभी धार भी निकल पडती है। यह रोग असाध्य कहा जाता है। अधिक परिश्रम करने, दौडकर चलने या चोट लगने से इस रोग की उत्पत्ति कही गई है।

वस्तिकोश—संज्ञा पुं० [सं०] मूत्राशय [को०]।

वस्तिमल—संज्ञा पुं० [सं०] मूत्र। पेशाव।

वस्तिवात—संज्ञा पुं० [सं०] एक मूत्र रोग जिसमे वायु विगडकर वस्ति (पेडू) मे मूत्र को रोक देता है।

वस्तिशिर—संज्ञा पुं० [सं० वस्तिशिरस्] १ पिचकारी का अग्रभाग या टोंटी। २ मूत्राशय का ऊपरी सकीर्ण भाग [को०]।

वस्तिशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मदन वृक्ष। मैनफल का पेड। २ मदनफल। मैनफल।

वस्ती¹—वि० [अ०] दरम्यानी। बीच का। मध्यवर्ती [को०]।

वस्ती(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्ति = (रहना)] रहने की जगह। जनपद।

वस्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १. वह जिसका अस्तित्व हो। वह जिसकी सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। जैसे,—डर कोई वस्तु नही। २ सत्य। ३ वह जिसका नाम-रूप हो। गोचर पदार्थ। चीज। जैसे,—घर मे बहुत सी वस्तुएँ इधर उधर पडी हैं। ४ इतिवृत्त। वृत्तात। ५ आधार। पीठ (को०)। ६ उपकरण। सामग्री। ७ नाटक का कथन या आख्यान। कथावस्तु।

विशेष—नाटकीय कथावस्तु दो प्रकार की कही गई है—आधिकारिक जिसमे नायक का चरित्र हो, और प्रासगिक जिसमे नायक के अतिरिक्त और किसी का चरित्र बीच मे आ गया हो। विशेष दे० 'नाटक'।

८ धन। सपत्ति (को०)। ९ ढाँचा। आकार। रूपरेखा (को०)।

वस्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] बथुआ का साग [को०]।

वस्तुकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बथुआ नाम का साग। श्वेत चिल्ली।

वस्तुगत—वि० [सं०] वस्तुनिष्ठ। कथागत। वस्तु या आख्यान मे स्थित। उ०—सक्षेप मे ये विचार साहित्य और जीवन का यथार्थ, अविच्छिन्न और वस्तुगत सबध मानते हैं।—न० सा० न० प्र०, पृ० १४१।

वस्तुजगत्—संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यक्ष ससार। दृश्यमान् विश्व [को०]।

वस्तुजात—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओ का योग या समूह [को०]।

वस्तुज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु की पहचान। २ मूल तथ्य का बोध। सत्य की जानकारी। तत्वज्ञान।

वस्तुत¹—अव्य० [सं० वस्तुतस्] यथार्थत। सचमुच। असल में।

वस्तुनिर्देश—संज्ञा पुं० [सं०] मगलाचरण का एक भेद, जिसमे कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है। यह एक तरह की सूची होती है।

वस्तुनिष्ठ—वि० [सं०] वस्तु अर्थात् वृत्तात, कथा आदि से सबद्ध। वस्तुपरक। जैसे,—वैसी लवी वस्तुनिष्ठ कविताएँ वे पहले लिख चुके है।

वस्तुपरक—वि० [सं०] वस्तुनिष्ठ। वस्तुगत। जैसे,—विज्ञानवेत्ता का परीक्षण वस्तुपरक होगा।

वस्तुपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] नायक [को०]।

वस्तुबल—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तु का गुण।

वस्तुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यता। यथार्थता [को०]।

वस्तुभेद—संज्ञा पुं० [सं०] तात्विक अतर [को०]।

वस्तुमात्र—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय या पदार्थ का बाहरी रूप [को०]।

वस्तुरचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] शैली।

वस्तुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धात जिसमे जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे,—न्याय और वैशेपिक।

विशेष—यह सिद्धात अद्वैतवाद का विरोधी है, जिसमे नामरूपात्मक जगत् की सत्ता नही मानी जाती।

वस्तुविनिमय—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओ का पारस्परिक लेन देन। अदला बदली [को०]।

वस्तुविवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] दर्शन मे सत्व या सत्ता का प्रसार [को०]।

वस्तुवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ यथार्थ वात। यथार्थ कथा। २ सुदर चरित्र [को०]।

वस्तुव्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] वस्तु का स्वभाव और धर्म। उ०—प्राकृतिक वस्तुव्यापार का सूक्ष्म निरीक्षण धीरे धीरे कम होता गया।—रस०, पृ० १२६।

वस्तुशून्य—वि० [सं०] यथार्थतारहित [को०]।

वस्तुस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सच्ची स्थिति [को०]।

वस्तूत्प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद। विशेष दे० 'उत्प्रेक्षा'।

वस्तूपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलकार का भेद, जिसमें साधारण धर्म का लोप होता है। विशेष दे० 'उपमा'।

वस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] वसने की जगह। घर।

वस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपडा। २ पहनावा। पोशाक (को०)। ३ दारचीनी का पत्ता (को०)।

वस्त्रक—संज्ञा पुं० [सं०] कपडा [को०]।

वस्त्रकुट्टिम—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाता। २ खेमा। डेरा।

वस्त्रगृह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वस्त्रभवन' [को०]।

वस्त्रगोपन—संज्ञा स्त्री० [सं०] ६४ कलाओ मे से एक का नाम। विशेष दे० 'कला'।

वस्त्रग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्त्रग्रन्थि] नीवी । नाडा । इजारबंद ।

वस्त्रघर्घरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का बाजा । २ छनना या छानने का वस्त्र (को०) ।

वस्त्रदशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपडे की किनारी [को०] ।

वस्त्रधारणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] खूँटी । नागदंतिका । अलगनी [को०] ।

वस्त्रधावी—वि० [सं० वस्त्रधाविन्] कपडा धोनेवाला [को०] ।

वस्त्रनिर्णेजक—संज्ञा [सं०] धोबी [को०] ।

वस्त्रपंजल—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्रपञ्जल] कोलकंद [को०] ।

वस्त्रापथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक तीर्थ स्थान, जिसका नाम पुराणों में वस्त्रापथक्षेत्र मिलता है । यह आजकल का गिरनार है, जो गुजरात में है । २ शुक्रनीति के अनुसार रेशम, ऊन तथा सब प्रकार के वस्त्रों को पहचानने और उनके भाव आदि का पता रखनेवाला राजकर्मचारी ।

वस्त्रपुत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपडे की बनी गुडिया । पुतरी [को०] ।

वस्त्रपूत—वि० [सं०] कपडे से छना हुआ ।

वस्त्रपेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झालर [को०] ।

वस्त्रबंध—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्रबन्ध] नीवी ।

वस्त्रभवन—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्र + भवन] कपड़े का बना हुआ घर । जैसे,—रावटी, खेमा आदि ।

वस्त्रभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] रक्तांजन ।

वस्त्रभूषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ ।

वस्त्रभेदक—संज्ञा पुं० [सं०] दरजी [को०] ।

वस्त्रभेदी—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्रभेदिन्] कपडा सीनेवाला दरजी [को०] ।

वस्त्रभौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] रावटी । खेमा । डेरा । उ०—वस्त्रभौन स्यो वितान आसने विछावने, दायजो विदेहराज भाँति भाँति को दियो ।—केशव (शब्द०) ।

वस्त्रयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वस्त्र का उपादान । जैसे,—रुई आदि [को०] ।

वस्त्ररंजन—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्ररञ्जन] कुसुम का वृक्ष ।

वस्त्ररंजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्त्ररञ्जनी] मजीठ ।

वस्त्रवेश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वस्त्रवेश्म' ।

वस्त्रवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्रवेश्मन्] रावटी । वस्त्रभवन [को०] ।

वस्त्रांचल, वस्त्रांत—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्राञ्चल, वस्त्रान्त] कपडे का किनारा या छोर [को०] ।

वस्त्रांतर—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्रान्तर] उपरना । ऊर्ध्ववस्त्र [को०] ।

वस्त्रागार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपडे की दुकान । २ कपडे का घर । रावटी । खेमा [को०] ।

वस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] भवन । घर [को०] ।

वस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'अवस्था' [को०] ।

वस्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेतन । २ मूल्य । ३ वस्त्र । ४ द्रव्य । चीज । ५. धन । ६. त्वक् । वल्कल । छाल । ७. मृत्यु (को०) ।

वस्नन—संज्ञा पुं० [सं०] कटिभूषण । करधनी ।

वस्नसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्नायु । नस [को०] ।

वस्निक—वि० [सं०] धनलोलुप । । भृतिभोगी [को०] ।

वस्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूल्यवान् थाती । बहुमूल्य धरोहर [को०] ।

वस्फ—संज्ञा पुं० [अ० वस्फ़] १ प्रशंसा । स्तुति । उ०—करें सब वस्फ उस शाहशाह के ।—कबीर मं०, पृ० ३९९ । २ गुण । सिफत । उ०—फिर मुझे लिखना जो वस्फे रुए जानां हो गया । वाजिब इस जा पर कलम को सर झुकाना हो गया ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, ८४९ । ३ विशेषता ।

वस्म—संज्ञा पुं० [सं० वस्मन्] १ कपडा । २ वासस्थान (वैदिक अर्थ) ।

वस्य—वि० [सं० वस्यस] १ उत्कृष्ट । उत्तम । २ बहुत संपत्तिशाली । धनी ।

वस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन । २ घर । मकान । २ निवास । ३ वह स्थान जहाँ मार्ग मिलें , चौराहा ।

वस्ल—संज्ञा पुं० [अ०] १ दो चीजों का आपस में मिलना । मिलन । २ संयोग । मिलाप । विशेषत. प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप । उ०—बगैर उसके वस्ल के सब रँडरोना है यह हँसी नहीं ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १ पृ० ५७० ।

वस्वौकसारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रपुरी । २. कुबेरपुरी । ३ गंगा । ४ इंद्र नामक नदी ।

वहंत—संज्ञा पुं० [सं० वहन्त] १ वायु । २ बालक । ३ रथ (को०) ।

वह[1]—सर्व० [सं० स या असौ] १. एक शब्द जिसके द्वारा दूसरे मनुष्य से बातचीत करते समय किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है । जैसे,—तुम जाओ, वह आता ही होगा । २ एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर का या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते है । जैसे,—यह और वह दोनों एक ही हैं ।

विशेष—इस अर्थ में यह शब्द संज्ञा के पहले विशेषण की तरह भी आता है । जैसे,—यह आदमी और वह आदमी ।

वह[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल का कंधा । २. घोडा । ३. वायु । ४. मार्ग । पथ । ५. नद । ६ वाहन (को०) । ७. प्रवाह । धारा (को०) । ८ ले जाने या ढोने की क्रिया (को०) । ९. चार द्रोण का एक मान (को०) । १०. गाय के रंभाने का शब्द (को०) ।

वह[3]—वि० १. बोझ उठाकर ले जानेवाला । जैसे, काष्ठभारवह । २ संवाहक । जैसे, धवह (समास में) ।

वहत—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल । २ यात्री । पथिक (को०) । ३ जिनपर लोग चलते है, पथ । मार्ग (?) ।

वहतान्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं० वहतान्त्री] धावलाक्षा क्षुप ।

विशेष—वैद्यक में यह पौधा कटु तथा कास रोग का नाशक और शुक्रवर्धक कहा गया है ।

पर्या०—वृषगवा । मवान्त्री । वृषपानिका ।

वहति[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु । २ सचिव । परामर्शदाता मित्र ३ बैल । वृष (को०) ।

वहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय । २ नदी जो प्रवहमान रहती है ।

वहतु—संज्ञा पुं०[सं०] १. बैल । २ पथिक (वेद) । ३. विवाह (वेद) । ४ स्त्रीधन । दायज । दहेज (को०) ।

वहदत—संज्ञा स्त्री० [अ०] एकत्व । वाहिद या एक होने का भाव । अद्वैतवाद । उ०—परीखे वे गर इस राज का खास । के जे वहदत की दरिया का है गव्वास —द० प० ग०, पृ० १५५ ।

वहदानी—वि० [अ०] एक ईश्वर से ही संबंध रखनेवाला । अद्वैतवाद को माननेवाला । अद्वैतवादी [को०] ।

वहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १ बेडा । तरेंदा । नौका नाव । २ खीचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना । जैसे,—भार वहन करना । रथ वहन करना । ३. कंधे या सिर पर लेना । ४ ऊपर लेना । उठाना । ५ वास्तु विद्या मे खंभे के नौ भागो मे से सब से नीचे का भाग । ६ बहना । प्रवाहित होना (को०) । ७ यान । सवारी (को०) ।

वहनभंग संज्ञा पुं० [सं०] पोतभंग । पोत आदि का डूब जाना [को०] ।

वहनीय—वि० [सं०] १ उठा या खीचकर ले जाने योग्य । २. ऊपर लेने या धारने योग्य ।

वहम—संज्ञा पुं० [अ०] १ बिना संकल्प के चित्त का किसी बात पर जाना । मिथ्या धारणा । झूठा खयाल । २ भ्रम । ३ व्यर्थ की शंका । मिथ्या संदेह । फजूल शक । जैसे,—वहम की तो कोई दवा ही नही । उ०—जिस वस्तु की संसार मे सृष्टि ही न हो वह भी वहम समा जाने से तत्काल दिखाई देने लगती है । —श्रीनिवास ग्र०, पृ० २४५ ।

वहमी—वि० [अ० वहम] १ वृथा संदेह द्वारा उत्पन्न । भ्रमजन्य । २ झूठे खयाल मे पडा रहनेवाला । ३ वहम करनेवाला । जो व्यर्थ संदेह मे पडे । किसी बात के संबंध मे जो व्यर्थ भला बुरा सोचे । संशयात्मा ।

वहल¹—संज्ञा पुं० [सं०] नौका । नाव ।

वहल²—वि० १ दृढ । मजबूत । २ दे० 'बहल' ।

वहलगंध—संज्ञा पुं० [सं० वहलगन्ध] शबर चंदन ।

वहलचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० वहलचक्षुस्] मेढासींगी । मेषशृंगी ।

वहलत्वच्—संज्ञा पुं० [सं०] लोध ।

वहला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतपुष्पा । २. बडी इलायची । ३. दीपक राग की एक रागिनी का नाम ।

वहवाँ†—क्रि० वि० [हिं० वहाँ] उस स्थान पर । उस जगह । वहाँ । उ०—यहवाँ सूरज क्रांति प्रकाशा । वहवाँ जोती स्थिर निवासा ।—कबीर सा०, पृ० ९८ ।

वहश—संज्ञा पुं० [अ०] वन्य पशु जंगली पशु [को०] ।

वहशत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जंगलीपन । असभ्यता । बर्बरता । २ उजड्डपन । ३ पागलपन । बावलापन । ४ चित्त की चंचलता । अधीरता । ५ विकलता । घबराहट । ६ चहल-पहल या रौनक न होना । सन्नाटापन । उदासी । उ०—ऐ खिरदमंदो मुबारक हो तुम्हे फर्जानगी । हम हो औ सहरा हो औ वहशत हो औ दीवानगी ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४३ । ७ डरावनापन ।

मुहा०—वहशत उछलना = (१) सनक होना । खब्त होना । (२) धुन होना । वहशत बरसना = (१) उदासी छाना । करुणा या दुःख का भाव प्रकट होना । रौनक न रहना । (२) जंगलीपन प्रकट होना ।

वहशतजदा—वि० [अ० वहशत + फा० जदह्] भयभीत । उद्विग्न [को०] ।

वहशियाना—वि० [फा०] वहशी जैसा । वहशी के समान [को०] ।

वहशी—वि० [अ०] १ जंगल मे रहनेवाला । जंगली । उ० ये लोग भी एक किस्म के वहशी हैं, इनमे दुनियाँ के लोगो को किसी तरह का फायदा नहीं पहुँचता ।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १८ । २ जो पालतू न हो । जो आदमियो मे रहना न जानता हो । ३ असभ्य । ४ भडकनेवाला ।

वहसा†—संज्ञा पुं० [देश०] सम । तुक । उ०—विषम मम विषम सम दवाले वेद तुक ठीक गुर, अंत तुक वहस ठाला ।—रघु० रू०, पृ० ५० ।

वहाँ अव्य० [हिं० वह] उस जगह । उस स्थान पर । उहाँ ।

विशेष—जैसे 'यहाँ' का प्रयोग पास के स्थान के लिये होता है, वैसे ही इस शब्द का प्रयोग दूर के स्थान के लिये होता है ।

वहा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी । स्रोतस्विनी [को०] ।

वहा²—वि० स्त्री० वहन या धारण करनेवाली । जैसे, स्रोतोवहा ।

वहाबी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानो का एक संप्रदाय जो अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ है ।

विशेष—अब्दुलवहाब अरब के नज्द नामक स्थान मे उत्पन्न हुआ था । वह मुहम्मद साहब के सर्वोच्च पद को अस्वीकार करता था । इस मत के अनुयायी किसी व्यक्ति या स्थानविशेष की प्रतिष्ठा नही करते । अब्दुलवहाब ने अनेक मसजिदों और पवित्र स्थानो को गिराया और मुहम्मद साहब की कब्र को भी खोदकर फेंक देना चाहा था । इस मत के अनुयायी अरब और फारस मे अधिक हैं ।

वहाल—संज्ञा पुं० [सं०] वायु [को०] ।

वहि—अव्य० [सं० वहिर्] जो अंदर न हो । बाहर ।

विशेष—हिंदी मे इस शब्द का प्रयोग अकेले नही होता, समस्त रूप मे होता है । संस्कृत व्याकरण के अनुसार समास मे इसके रूप वहिर्, वहिश्, वहिष् आदि होते है । जैसे,—वहिर्गत । वहिश्चर । वहिरंग । वहिष्कार इत्यादि ।

वहित—वि० [सं०] १ ढोया हुआ । वहन किया हुआ । २ अवहित । ३. प्रसिद्ध । ख्यात । ४ प्राप्त [को०] ।

वहित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाव । जहाज । २. स्तंभयुक्त । एक प्रकार का वर्गाकार रथ [को०] ।

वहित्रकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक योगासन जिसमे दोनो पैर एक में मिलाकर सामने फैलाए जाते है [को०] ।

वहित्रक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वहित्र' [को०] ।

वहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौका । नाव ।

वहिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाढ़] बाढ़ । धारा । सोता । उ०—बंगाल मे तो चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण को केंद्र मे रखकर भक्ति की बहिया ही बहा दी ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९२ ।

वहिरंग¹—संज्ञा पु० [सं० वहिरङ्ग] १ शरीर का बाहरी भाग। देह का बाहरी हिस्सा। २ ऊपर या बाहर का हिस्सा। बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। ३ वह जो किसी वस्तु के भीतरी तत्व को न जानना चाहता हो। ४ आगंतुक पुरुष। कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। ५ वह मनुष्य जो अपने दल या मडली का न हो। बायबी आदमी। ६. पूजा में वह कृत्य जो आदि में किया जाय।

वहिरंग²—वि० १ ऊपर ऊपर का। बाहर का। जो अंतरंग न हो। बाहरी। २ जो सार रूप न हो। जो भीतरी तत्व न हो। ३ अनावश्यक। फालतू।

वहिरंतर—वि० [सं० वहिर्+अन्तर] बाहरी और भीतरी। आंतरिक और बाह्य।

उ०—'ज्योत्सना' में मैंने जीवन की वहिरंतर मान्यताओं का समन्वय करने का प्रयत्न किया है।—हिं० आ० प्र०, पृ० २५३।

वहिरिंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० वहिरिन्द्रिय] १. कर्मेंद्रिय। २ बाह्यकरणमात्र। कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय।

वहिर्गत—वि० [सं०] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।

वहिर्देश—संज्ञा पु० [सं०] १. बाहर का स्थान। २ विदेश। ३. अज्ञात स्थान। ४. द्वार। दरवाजा।

वहिर्द्वार—संज्ञा पु० [सं०] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।

वहिर्ध्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

वहिर्भूत—वि० [सं०] वहिर्गत।

वहिर्मुख—वि० [सं०] विमुख।

वहिर्योग—संज्ञा पु० [सं०] हठयोग।

वहिर्लंब—संज्ञा पु० [सं० वहिर्लम्ब] रेखागणित में वह लंब जो किसी क्षेत्र के बाहर बढ़ाए हुए आधार पर गिराया जाता है।

वहिर्लापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोई ऐसा टेढ़ा वाक्य या प्रश्न जिसका उत्तर बतलाने के लिये श्रोता से कहा जाय। पहेली।

विशेष—पहेलियाँ दो प्रकार की होती हैं। जिनके उत्तर का शब्द पहेली के वाक्य के अंदर ही रहता है, उसे 'अंतर्लापिका' कहते हैं। और जिनके उत्तर का पूरा शब्द पहेली के अंदर नहीं होता, वे 'वहिर्लापिका' कहलाती हैं। जैसे,—भाखै काह सज्जन को? कौन शंभु वाहन है? काको सुख होत? काको माल शिव धारो है? कहा गज वदन? छबीले रंग का के अति? कौन हरपुत्र? सीमुत को सुप्यारो है। शोभा को सुनाम का है? कृष्ण नख धारो कहा? सिंधु से मिलत कौन? काह अनियारो है?। उत्तर के वर्णन में आदि अंत छाँड़ि दीजै, मध्य लीजै सो हिये मनोरथ हमारो है।

इन प्रश्नों के उत्तर क्रमश ये होंगे—(१) सयाने। (२) वरद। (३) मुकती। (४) कपाल। (५) साँकल। (६) हरिणी। (७) गनेश। (८) मुकता। (९) पानिप। (१०) पहाड़। (११) सरिता। (१२) नयन। उत्तर के इन शब्दों के मध्याक्षर लेने से यह उत्तर वाक्य निकलता है,—यार कृपा करि नेक निहारिय।'

वहिर्वेगज्वर—संज्ञा, पु० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर में ताप, प्यास आदि उपद्रव होते हैं। उ०—तृष्णादिक लक्षण थोड़े होवे ये वहिर्वेगज्वर के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० ३७।

वहिश्चर—संज्ञा पु० [सं०] केवड़ा।

वहिष्क—वि० [सं०] बाहरी। बाह्य [को०]।

वहिष्करण—संज्ञा पु० [सं०] बाहर की इंद्रियाँ। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ। बाह्येंद्रिय। (मन या अंत करण को भीतर की इंद्रिय कहते हैं।)

वहिष्कार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वहिष्कार' [को०]।

वहिष्कृत—वि० [सं०] १ निकाला हुआ। बाहर किया हुआ। २ अलग किया हुआ। त्यागा हुआ। त्यक्त।

वहिष्ठ—वि० [सं०] अधिक भार उठानेवाला।

वहिष्प्राण—संज्ञा पु० [सं०] १ जीवन। २ श्वास। वायु। ३. अर्थ।

वहीं—अव्य० [हिं० वहाँ+ही] उसी स्थान पर। उसी जगह।

विशेष—जब वहाँ शब्द पर जोर होता है तब 'ही' लगाने के कारण उसका यह रूप हो जाता है।

वही¹—सर्व० [हिं० वह+ही] १ उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से सकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके सबध में कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। जैसे,—(क) यह वही आदमी है जो कल आया था। २. निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नहीं। जैसे—जो पहले वहाँ पहुँचेगा, वही इनाम पावेगा।

वही²—संज्ञा पु० [सं० वहिन्] १ बैल। २ मोटिया। भारवाहक। बोझा ढोनेवाला [को०]।

वहीर—संज्ञा पु० [हिं० भीर, बहीर या देश०] परिजन। प्रजा। दे० बहीर'। उ०—चाली अहमद वेगमरी, दिल्ली दिसा वहीर।—रा० रू०, पृ० ३१७।

वहीरु—संज्ञा पु० [सं०] १ रक्तवाहिनी नाड़ियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। ३ मांसपेशी। पुट्ठा।

वहूदक—संज्ञा पु० [सं०] चार प्रकार के सन्यासियों में से एक।

विशेष—सूतसंहिता के अनुसार कुटीचक, वहूदक, हंस और परमहंस ये चार प्रकार के सन्यासी कहे गए हैं। वहूदकों के लिये यह नियम है कि वे एक घर से पूरी भिक्षा न ग्रहण करें, सात घरों से लें। उन्हें अपने साथ में गाय की पूँछ के रोयों से बँधा हुआ त्रिदंड, शिक्य, जलपूर्ण पात्र, कौपीन, कमंडलु, कथा, पादुका, छत्र, रुद्राक्ष की माला, योगपट्ट, खनित्र और कृपाण रखना चाहिए। मरने पर वहूदक सन्यासी जल में डुबाए जाते हैं।

वहेटक, वहेडुक, वहैडुक—संज्ञा पु० [सं०] विभीतक वृक्ष [को०]।

वह्नि—संज्ञा पु० [सं०] १. अग्नि। २ कृष्ण के एक पुत्र का नाम, जो मित्रविंदा से उत्पन्न हुआ था। ३. तुवसु के पुत्र का नाम। ४. कुक्कुर वंशी एक यादव का नाम। ५. चित्रक। चीता।

६ भिलावाँ । ७ तीन की सख्या । ८ राम की सेना के सेनापति एक वदर का नाम । ९ जैनो के अनुसार लौकातिक जीवो का तीसरा वर्ग । १० पाचन शक्ति । पाचन । जठराग्नि (को०) । ११ यान (को०) । १२. देवता (को०) । १३. मरुत् (को०) । १४ सोम (को०) । १५ सवारी खीचनेवाले जानवर । बैल, घोडा आदि (को०) । १६ निंबुक । विजौरा नीबू । चकोतरा नीबू (को०) । १७ तत्र के अनुसार रेफ, स्वर्ण (को०) । १८ आठवाँ कल्प (को०) । १९ पुरोहित (को०) । २० क्षुधा । भूख (को०) ।

वह्निक¹—सज्ञा पु० [स०] उष्णता । गरमी (को०) ।

वह्निक²—वि० गरम । उष्ण (को०) ।

वह्निकर¹—सज्ञा पु० [स०] १ विद्युत् । बिजली । २ जठराग्नि । ३ चकमक । पथरी ।

वह्निकर² वि० १ उत्तापक । उद्दीपक । २ पाचक । क्षुधावर्धक (को०) ।

वह्निकरी - सज्ञा स्त्री० [स०] धौ का फूल ।

वह्निकाष्ठ —सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का अगुरु । दाहागुरु (को०) ।

वह्निकुड—सज्ञा पु० [स० वह्निकुण्ड] अग्निकुड ।

वह्निकुमार —सज्ञा पु० [स०] भुवनपति देवगण मे से एक ।

वह्निकोण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'अग्निकोण' (को०) ।

वह्निकोप—सज्ञा पुं० [स०] १. ज्वलन । जलना । प्रदाह । २ प्रलयाग्नि । ३ दावाग्नि (को०) ।

वह्निगध—सज्ञा पु० [स० वह्निगंध] १ धूप । लोबान । २ यक्षधूप । राल (को०) ।

वह्निगर्भ सज्ञा पु० [स०] १ बाँस । २ शमीवृक्ष ।

वह्निगर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] शमीवृक्ष (को०) ।

वह्निचक्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष ।

वह्निजाया—सज्ञा स्त्री० [स०] वह्नि की पत्नी स्वाहा । स्वाहा मत्र (को०) ।

वह्निज्वाल—सज्ञा पु० [स०] एक नरक का नाम (को०) ।

वह्निज्वाला—सज्ञा स्त्री० [स०] धव का पेड ।

वह्निदमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्निदमनी नाम का पौधा ।

वह्निदीपक—सज्ञा पु० [स०] कुसुभ का वृक्ष ।

वह्निदीपिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा ।

वह्निदैवत—वि० [स०] अग्नि की पूजा करनेवाला । अग्नि का उपासक अग्निपूजक (को०) ।

वह्निधौत—वि० [स०] अग्नि के समान पवित्र (को०) ।

वह्निनामा—सज्ञा पुं० [स० वह्निनामन्] १ चित्रक । चीते का पेड । २ भिलावाँ ।

वह्निनी—सज्ञा स्त्री० [स०] जटामासी ।

वह्निपुष्पा, वह्निपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [सं०] धव का वृक्ष ।

वह्निवीज—सज्ञा पु० [सं०] १ स्वर्ण । सोना ।

विशेष—ब्रह्मवैवर्त पुराण के कृष्णजन्म खड मे स्वर्ण की उत्पत्ति की कथा यह है—स्वर्ग की सभा मे एक बार सब देवता बैठे हुए थे और रभा नाच रही थी । रभा को देखकर अग्निदेव कामपीडित हुए और उनका वीर्य गिरा, जिसे उन्होने लज्जावश कपडो से ढांक लिया । कुछ दिना पीछे वह वीर्य दमकती हुई धातु होकर वस्त्र भेदकर नीचे गिरा, जिससे सुवर्ण की उत्पत्ति हुई ।

२ तत्र मे 'र' वीज । ३ नीबू ।

वह्निभूतिक—सज्ञा पुं० [स०] चाँदी ।

वह्निभोग्य—सज्ञा पुं० [सं०] घी ।

वह्निमथ—सज्ञा पुं० [स० वह्निमन्थ] गनियारी का पेड । अग्निमथ वृक्ष । अगेथू का पेड ।

वह्निमथन—सज्ञा पुं० [स० वह्निमन्थन] गनियारी का पेड ।

वह्निमारक—सज्ञा पुं० [स०] पानी । जल (को०) ।

वह्निमित्र —सज्ञा पुं० [स०] वायु । हवा ।

वह्निमुख—सज्ञा पुं० [स०] देवता ।

विशेष—यज्ञ की अग्नि मे डाला हुआ भाग देवताओ को पहुचता है इसी से वे वह्निमुख कहलाते हैं ।

वह्निरेता—सज्ञा पु० [स० वह्निरेतस्] शिव ।

वह्निलोह -सज्ञा पु० [स०] ताम्र । ताँबा ।

वह्निलोहक —सज्ञा पु० [स०] १ काँसा । २. ताँबा (को०) ।

वह्निवक्त्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष ।

वह्निवधू —सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वह्निजाया' (को०) ।

वह्निवर्ण—सज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल ।

वह्निवल्लभ —सज्ञा पुं० [स०] सर्ज रस । यक्षधूप (को०) ।

वह्निवल्लभा —सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वह्निजाया' ।

वह्निवीज—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वह्निवीज' ।

वह्निशिख—सज्ञा पु० [स०] १. केसर । २ कुसुम (को०) ।

वह्निशिखर—सज्ञा पु० [स०] रुद्रजटा नाम का पौधा ।

वह्निशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिहारी या कलियारी नाम का विष । २. धव का पेड । ३ काकुन नाम का अन्न । प्रियगु । ४ गजपिप्पली ।

वह्निशेखर—सज्ञा पुं० [स०] केसर (को०) ।

वह्निसज्ञक—सज्ञा पुं० [स०] चित्रक वृक्ष (को०) ।

वह्निसख—सज्ञा पु० [स०] १. जीरक । जीरा । २ पवन (को०) ।

वह्निसाक्षिक—सज्ञा पुं० [स०] साक्षीस्वरूप अग्नि ।

वह्निसात्—सज्ञा पुं० [स०] जल जाना । भस्मीभूत होना (को०) ।

वह्निसुत—सज्ञा पु० [स०] पयोलस । पायस क्षीरिका । अन्नरस । रस ।

वह्नीक—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'वह्निक' ।

वह्नीश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी (को०) ।

वह्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वाहन । यान । २ शकट । गाडी ।

वह्यक —सज्ञा पुं० [सं०] उठाकर ले जानेवाला । वाहक ।

वह्या —सज्ञा स्त्री० [सं०] मुनिपत्नी । ऋषिवधू (को०) ।

वाक—सज्ञा पुं० [स० वाङ्क] समुद्र [को०]।

वागाल—सज्ञा पु० [स० वाङ्गाल] सगीत मे एक राग [को०]।

वागाली— सज्ञा स्त्री० [स० वाङ्गाली] एक रागिनी (सगीत) [को०]।

वाछक—वि० [स० वाञ्छक] चाहने या वाछा करनेवाला। अभिलाषी। इच्छुक [को०]।

वाछन—सज्ञा पु० [स० वाञ्छन] चाहना। इच्छा करना [को०]।

वाछनीय—वि० [स० वाञ्छनीय] १ चाहने या कामना के योग्य। २ जिसकी इच्छा हो।

वाछा—सज्ञा स्त्री० [स० वाञ्छा] [वि० वाछित, वाछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

विशेष—सिद्धात मुक्तावली के अनुसार वाछा नामक आत्मवृत्ति दो प्रकार की होती है। एक उपायविषयिणी, दूसरी फलविषयिणी। फल का अर्थ है—सुख की प्राप्ति और दुःख का न होना। जिस वाछा का कारण फलज्ञान हो, अर्थात् जो वाछा इस रूप मे हो कि अमुक सुख मुझे मिले, वह फलविषयिणी है। जो वाछा किसी ऐसे उपाय के सबध मे हो, जिससे इष्टसाधन हो, वह उपायविषयिणी है।

वाछातीत – वि० [स० वाञ्छातीत] इच्छा के परे। जिसकी अभिलाषा न की जा सके। उ०—उन्मेष इसकी गति तीव्र हो या मद, प्रत्यक्ष हो या परोक्ष, वाछित हो या वाछातीत।—नदी०, पृ० ८८।

वाछित१—वि० [स० वाञ्छित] अभिलषित। इच्छित। चाहा हुआ। जिसकी इच्छा हो।

वाछित२—सज्ञा पु० १. इच्छा। आकाक्षा। चाह। २ संगीत मे एक ताल [को०]।

वाछितव्य—वि० [स० वाञ्छितव्य] दे० 'वाछनीय'।

वाछिनी—सज्ञा स्त्री० [स० वाञ्छिनी] १. कुलटा। पुंश्चली। २ कामार्थिनी या अत्यत कामुक स्त्री [को०]।

वाछी—वि० [स० वाञ्छित] १ इच्छुक। चाहनेवाला। २ कामुक। लपट। विषयी [को०]।

वाछेय—वि० [स० वाञ्छच] दे० 'वाछनीय'।

वात१—सज्ञा पुं० [स० वान्त] १ वमन। कै। २ वमन किया हुआ पदार्थ [को०]।

वात२—वि० १ वमन किया हुआ। २ निःसृत। त्यक्त। उद्गिरित। ३ गिराया हुआ। चूआ हुआ। ४ जिसने कै किया हो [को०]।

वाताद—सज्ञा पुं० [स० वान्ताद] १ कुत्ता। श्वान। २. एक पक्षी का नाम। [को०]।

वातान्न—सज्ञा पु० [स० वान्तान्न] वमित अन्न। कै किया हुआ अन्न।

वाताशी१—वि० [स० वान्ताशिन्] वमन खानेवाला।

वाताशी२—सज्ञा पु० १ कुत्ता। २ वह ब्राह्मण जो भोजन के लिये अपने कुल या गोत्र की प्रशंसा करे। ३ दूषित या निषिद्ध पदार्थों को खानेवाला राक्षस (को०)।

वाति—सज्ञा स्त्री० [स० वान्ति] १. वमन। वात। कै। २. वमन करने की क्रिया [को०]।

वातिका—सज्ञा स्त्री० [सं० वान्तिका] कुटकी।

वातिकृत्१—सज्ञा पु० [स० वान्तिकृत्] मदनफल वृक्ष। मैनफल का पेड़।

वातिकृत्२—वि० वमनकारक। वमन करानेवाला [को०]।

वातिदा—सज्ञा स्त्री० [स० वान्तिदा] कुटकी।

वातिशोधनी—सज्ञा स्त्री० [स० वान्तिशोधनी] जीरक। जीरा।

वातिहृत्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वातिकृत्'।

वाश—वि० [स०] वश सबधी। बाँस का बना हुआ [को०]।

वाशिक—सज्ञा पु० [स०] १ बाँसुरी बजानेवाला। २. बाँस काटनेवाला [को०]।

वाशी - सज्ञा स्त्री० [स०] वशरोचना। वसलोचन [को०]।

वाँ—अव्य० [हिं० वहाँ का सक्षिप्त रूप] उस जगह। उस स्थान पर। उ०—घर बैठत वाँ जल सो रजए।—हम्मीर रा०, पृ० ५५।

वाँकम†—सज्ञा पु० [हिं० वाक्रमन् या वक्रम्] वक्रता। बाँकापन। उ०—सखी अमीणो साहिबो, वाँकम सूँ भरियोह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ७।

वाँग†—सज्ञा पु० [फ़ा० बाँग] दे० 'बाँग'। उ०—कतहु वाँग कतहु वेद, कतहु मिसिमल कतहु छेद।—कीर्ति०, पृ० ४२।

वाँचण—क्रि० स० [स० वाचन, हिं० बाँचना] दे० 'बाँचना'। उ०—सदेसा मति मोकलउ, प्रीतम तूँ आवेस। आँगलडी ही गलि गयाँ, नयण न वाँचण देस।—ढोला०, दू० १५४।

वाँलम(पु)—सज्ञा पुं० [स० वल्लभ] दे० 'वल्लभ—२'। उ०—वाँलम एक हिलोर दे, आइ सकइ तउ आइ। वाहडियाँ वे थक्कियाँ, काग उडाइ उडाइ।—ढोला०, दू० १६७।

वाँस(पु)—सज्ञा पु० [स० पार्श्व, प्रा० पास, वास] दे० 'पास'। उ०—साल्ह कुँवर करहइ चढ्यउ, वाँसइ चाढी नार।—ढोला०, दू० ६२५।

वा—सज्ञा पु० [स० वार्] जल। पानी [को०]।

वा किटि—सज्ञा पु० [स०] जल का कीट वा शूकर, शिशुमार। सूँस।

वा पुष्प—सज्ञा पु० [स०] लवग। लौंग।

वा सदन—सज्ञा पु० [स०] जलपात्र [को०]।

वा स्थ—वि० [स०] पानी मे स्थित। पानी मे टिका हुआ [को०]।

वा१—अव्य० [स०] विकल्प या सदेहवाचक शब्द। या। अथवा।

वा(पु)२—सर्व० [हिं० वह] व्रजभाषा मे प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप, जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे,—वाने वाको, वासे, वासो इत्यादि। उ०—(क) वा सुरतरु महँ अवर एक अद्भुत छबि छाजै। साखा दल फल फूलनि हरि प्रतिबिंब बिराजै।—नद० ग्र०, पृ० ६। (ख) रहै देह वाके परस याहि दृगन ही देखे।—बिहारी (शब्द०)। (ग) और प्रभु जब किवाड खोलन पधारते तब

श्री ठाकुर जी वा इ पुकार सो पूछने ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०१ ।

वा॰—वि॰ [फा॰] कुशादा । खुला या फैला हुआ । खुले । उ०—दिन के वा दतुग्न के दर्बार मे रौनक अफरोज हुए ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७ ।

वाइ(पु)¹—सर्व० [हि० वह] दे० 'वाहि' । उ०—नैन कमल छ्या लगत है कमल लगत है वाइ । कमल काल सज्जन हियो दोनो एक सुभाइ ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वाई†²—सज्ञा स्त्री० [स० वापी] वापिका दे० 'वाय' ।

वाइक(पु)—वि० [सं० वाचिक] कहा हुआ । वाणी या वचन द्वारा व्यक्त । उ०—काइक वाइक मानस हू करि है गुरु देव ही वदन मेगे ।—सुदर० ग्र ०, भा० २, पृ० ३८३ ।

वाइकौंट—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० वाइकौटेस] इगलैड के सामतो और बडे बडे भूम्यधिकारियो को वशपरपरा के लिये दी जानेवाली एक प्रतिष्ठासूचक उपाधि जिसका दर्जा 'अर्ल' के नीचे और 'बैरन' के ऊपर है । विशेष दे० 'ड्यूक' ।

वाइज—वि० सज्ञा पु० [अ० वाइज] धर्मोपदेष्टा । उपदेशक । मजहबी नसीहत देनेवाला । उ०—रगे शराब से मेरी नीयत वदल गई । वाइज की वात रह गई साकी की चल गई ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६२० ।

वाइदा—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'वादा' ।

वाइन—सज्ञा स्त्री० [अं०] शराब । मद्य । सुरा ।

वाइस(पु)¹—सज्ञा पुं० दे० [स० वायस] 'वायस' । उ०—कक वाइस उलू गिद्ध सुर असुभ कहि ।—सुजान०, पृ० १६ ।

वाइस²—सज्ञा पु० [अ०] प्रतिनिधि । दूसरे के स्थान पर या सहायक रूप मे काम करनेवाला व्यक्ति । जैसे, वाइस चासलर, वाइस प्रेसिडेंट आदि ।

वाइस चासलर—सज्ञा पु० [अ०] विश्वविद्यालय का वह ऊँचा मुख्याधिकारी जो चासलर के सहायतार्थ हो और प्राय उसकी अनुपस्थिति के कारण उसके अधिकाश कामो को कर सकता हो । हिंदी मे इसके पर्याय रूप मे कहा कुलपति और कही उपकुलपति शब्द प्रयुक्त हो रहा है ।

वाइस चेयरमैन—सज्ञा पु० [अ०] वह जिसका दर्जा चेयरमैन या सभाध्यक्ष के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति मे उसका काम करता है । उपाध्यक्ष । उपसभापति । जैसे,—म्युनिसिपैलिटी के वाइस चेयरमैन ।

वाइस प्रेसिडेंट—सज्ञा पु० [अ०] वह जिसका दर्जा प्रेसिडेंट या सभापति के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति मे सभा का सचालन करता है । उपसभापति । जैसे,—कौंसिल के वाइस प्रेसिडेंट ।

वाइसराय—सज्ञा पुं० [अ०] अग्रेजो के शासन काल मे हिंदुस्तान का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि (बडा लाट) के रूप मे कार्य करता था और भारत का सर्वोच्च अधिकारी था । बडे लाट साहब ।

वाई†—सज्ञा स्त्री० [स० वायु] दे० 'वायु' । उ०— सकसे का जैतवार अकसे का वाई । अरिदल समुद्र आए कुभज के भाई ।—रा० रू०, पृ० ६७ ।

वाउ†—सज्ञा पुं० [सं० वायु] दे० 'वायु' । उ०—आति गनै मो लवै न वाउ ।—प्राण०, पृ० ३३ ।

वाउचर—सज्ञा पुं० [अ०] वह कागज या पुरजा या वही जिसमे किसी प्रकार के हिसाब का ब्योरा हो ।

वाक्—पु० [सं० वाच्] १ वाणी । वाक्य । २ सरस्वती । ३ बोलने की इद्रिय । ४ शब्द । ५ ध्वनि (को०) । ६ कथन । वक्तव्य (को०) । ७. वादा । प्रतिज्ञा । ८ उक्ति (को०) ।

वाक'—सज्ञा पुं० [सं०] १ वगलो का समूह । २ वगलो की उडान (को०) । ३ वाणी । वाक्य । ४ वेद का एक भाग । ५ खेत की वह कूत जो विना खेत नापे का जाती है ।

वाक²—वि० वक सवधी । बगलो का ।

वाकई¹—वि० [अ० वाकई] ठीक । यथार्थ । सच । वास्तव । जैसे,—जो कुछ कहता हूँ, वह वाकई कहता हूँ ।

वाकई²—अव्य० सचमुच । यथार्थ मे । वास्तव में । जैसे—क्या आप वाकई वहाँ गए थे ?

वाकफियत—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकफियत] १ वाकिफ होने का भाव जानकारी । २ जान पहचान । परिचय ।

वाकया—सज्ञा पुं० [अ० वाकिअह्] १ कोई बात जो घटित हो । व्यापारसयाग । घटना । २. वृत्तात । समाचार ।

यौ०—वाकयानवीस, वाकयानिगार=मुसलमानी साम्राज्य मे वह कर्मचारी जिसका कार्य इतिहास के रूप मे घटनाओ को लिखना होता था ।

वाकयात—सज्ञा पुं० [अ० वाकिआत] वाकया का बहुवचन ।

वाका—सज्ञा पु० [अ० वाकअ] १ होनेवाला । घटनेवाला ।

मुहा०—वाका होना=घटना के रूप मे उपस्थित होना । घटित होना ।

२ स्थित । खडा । प्रतिष्ठित । जैसे,—वह मकान दरिया के किनारे वाका है ।

वाकिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] तत्र के अनुसार एक देवी का नाम ।

वाकिफ—वि० [अ० वाकिफ] १ जानकार । ज्ञाता । जैसे,—मैं इस वात से वाकिफ न था । २ वात को समझने बूझनेवाला । वातो का जानकारी रखनेवाला । अनुभवी । जसे —किसी वाकिफ आदमी को इतजाम के लिये भेजना चाहिए ।

वाकिफकार—वि० [अ० वाकिफ+फा० कार] काम को समझने बूझनेवाला । जो अनाडी न हो । कार्याभिज्ञ उ०—ने हैं वाकिफकार मिलन की राह वतावै ।—पलटू०, पृ० ७ ।

वाकिफकारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफकारी] परिचय । जानकारी । अभिज्ञता (को०) ।

वाकिफीयत—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफीयत] दे० 'वाकफियत' (को०) ।

वाकुची—सज्ञा स्त्री० [स०] वकुची ।

वाकुल—सज्ञा पुं० [स०] बकुल या मौलसिरी का पेड वा पुष्प ।

वाकै—सज्ञा पु० [अ० वाकअ] दे० 'वाका' । उ०—इस सब से उसकी कारवाई मे अक्सर खलल वाकै होते रहते हैं ।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ३१ ।

वाकोवाक—संज्ञा पुं० [सं०] कथोपथन। बातचीत।

वाकोवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर कथोपकथन। बातचीत। २ परस्पर तर्क। ३ तर्क विद्या।

विशेष—छांदोग्योपनिषद् मे नारद ने सनत्कुमारो से अपनी जिन जिन विद्याओ के ज्ञाता होने की बात कही थी, उनमे 'वाकोवाक्य' विद्या भी थी।

वाकौ†—संज्ञा पुं० [अ० वाकअह्] दे० 'वाकया'। उ०—वाकौ झूठी अक्खयौ, दक्खिण गयो सदूर।—रा० रू०, पृ० ३२४।

वाक्कलह—संज्ञा पुं० [सं०] कहासुनी। वाक् युद्ध। उ०—मुख्य विवादग्रस्त विषय छूट कर व्यर्थ घृणित वाक्कलह उत्पन्न हो जाता। प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३०३।

वाक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] चरक के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

वाक्कीर—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। श्यालक [को०]।

वाक्केलि, वाक्केली—संज्ञा स्त्री० [सं०] हास परिहास [को०]।

वाक्क्षत—संज्ञा पुं० [सं०] बात की चोट।

वाक्चपल—वि० [सं०] १ बहुत बातें करनेवाला। बातें करने मे तेज। मुँहजोर। २ भडभडिया।

वाक्छल—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदो मे से एक।

विशेष—जब वक्ता के साधारण रूप से कहे हुए कथन मे दूसरे पक्ष द्वारा अभिप्रेत अर्थ से अन्य अर्थ की कल्पना उसे केवल चक्कर मे डालने के लिये की जाती है, तब वाक्छल कहा जाता है। जैसे,—वक्ता ने कहा,—यह बालक नवकबल है। (नवकवलोऽयं बालक) अर्थात् नए कबलवाला है। इसका प्रतिवादी यदि यह अर्थ लगावे कि इस बालक के पास सख्या मे नौ कबल हैं, और कहे—'नौ कबल कहाँ है, एक ही तो है'। तो यह वाक्छल होगा।

वाक्पटु—वि० [सं०] बात करने मे चतुर। वाक्कुशल।

वाक्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २. विष्णु। ३ पुष्य नक्षत्र (को०)। ४ अनवद्य वचन। पटु वाक्य। निर्दोष बात।

वाक्पतिराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक कवि जो राजा यशोवर्मा के आश्रित थे। इन्होने प्राकृत मे गौडवहो (गौडवध) नामक काव्य की रचना की है। ये भवभूति के समसामयिक थे। २. मालवा का एक परमार राजा जो सीयक का पुत्र था। (इस नाम का एक और राजा हुआ है।)

वाक्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोलने के लिये उपयुक्त क्षण। २ वाणी का क्षेत्र। भाषण का क्षेत्र [को०]।

वाक्पाटव—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्पटुता। भाषण की योग्यता। [को०]।

वाक्पारीण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वाणी या कथन के क्षेत्र को पार कर गया हो।

वाक्पारुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वचन की कठोरता। बात का कडुआपन। मुँहजोरी। २. धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषो को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्वेग उत्पन्न हो।

वाक्पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] डीगभरी बात। बे सिर पैर की बात [को०]।

वाक्प्रचोदन—संज्ञा पुं० [सं०] मौखिक या शाब्दिक आज्ञा [को०]।

वाक्प्रतोद—संज्ञा पुं० [सं०] वाणी का अकुश। व्यग्य। ताना। [को०]।

वाक्प्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती नदी [को०]।

वाक्प्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्पटुता। वाग्मिता [को०]।

वाक्प्रसारी—वि० [सं० वाक्प्रसारिन्] भाषणकुशल। लबी चौडी बातें करनेवाला [को०]।

वाक्फियत—संज्ञा स्त्री० [अ० वाक्फियत] जानकारी। परिज्ञान।

वाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। भाषा की भाषावैज्ञानिक आर्थिक इकाई का बोधक पद समूह। वाक्य मे कम से कम कारक (कर्तृ आदि) जो संज्ञा या सर्वनाम होता है, और क्रिया का होना आवश्यक है। क्रियापद और कारक पद से युक्त साकाक्ष अर्थबोधक पदसमूह या पदोच्चय। उद्देश्याश और विधेयाशवाले सार्थक पदों का समूह।

विशेष—नैयायिको और अलंकारियो के अनुसार वाक्य मे (१) आकाक्षा, (२) योग्यता और (३) आसक्ति या सन्निधि होनी चाहिए। 'आकाक्षा' का अभिप्राय यह है कि शब्द या ही रखे हुए न हो, वे मिलकर किसी एक तात्पर्य का बोध कराते हो। जैसे, कोई कहे—'मनुष्य चारपाई पुस्तक' तो यह वाक्य न होगा। जब वह कहेगा—'मनुष्य चारपाई पर पुस्तक पढता है।' तब वाक्य होगा। 'योग्यता' का तात्पर्य यह है कि पदो के समूह से निकला हुआ अर्थ असगत या असंभव न हो। जैसे, कोई कहे—'पानी मे हाथ जल गया' तो यह वाक्य न होगा। 'आसक्ति' या 'सन्निधि' का मतलब है सामीप्य या निकटता। अर्थात् तात्पर्यबोध करानेवाले पदो के बीच देश या काल का व्यवधान न हो। जैसे, कोई यह न कहकर कि 'कुत्ता मारा, पानी पिया' यह कहे—'कुत्ता पिया मारा पानी' तो इसमे आसक्ति न होने से वाक्य न बनेगा, क्योंकि 'कुत्ता' और 'मारा' के बीच 'पिया' शब्द का व्यवधान पडता है। इसी प्रकार यदि कोई 'पानी' सवेरे कहे और 'पिया' शाम को कहे, तो इसमे काल सबंधी व्यवधान होगा।

काव्य भेद का विषय मुख्यत न्याय दर्शन के विवेचन से प्रारभ होता है और यह मीमासा और न्यायदर्शनो के अतर्गत आता है। दर्शन शास्त्रीय वाक्यो के ३ भेद-विधिवाक्य, अनुवाद वाक्य और अर्थवाद वाक्य किए गए हैं। इनमे अंतिम के चार भेद-स्तुति, निंदा, परकृति और पुराकल्प बनाए गए हैं।

वक्ता के अभिप्रेत अथवा वक्तव्य की अबाधकता वाक्य का मुख्य उद्देश्य माना गया है। इसी की पृष्ठ भूमि मे संस्कृत वैयाकरणो ने वाक्यस्फोट की उद्भावना की है। वाक्यपदीयकार द्वारा स्फोटात्मक वाक्य का अखड सत्ता स्वीकृत है।

भाषावैज्ञानिको की दृष्टि मे वाक्य सश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक होते हैं। शब्दाकृतिमूलक वाक्य के शब्दभेदानुसार चार भेद है—समासप्रधान, व्यासप्रधान, प्रत्ययप्रधान और विभक्तिप्रधान। इन्ही के आधार पर भाषाओ का भी वर्गी-

करण विद्वानो ने किया है। आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं—सरल वाक्य मिश्रित वाक्य और सयुक्त वाक्य।

२ कथन। उक्ति (को०)। ३ न्याय मे युक्ति। उपपत्ति। हेतु ४. विधि। नियम। अनुशासन (को०)। ५ ज्योतिप मे गणना की सौर प्रक्रिया (को०)। ६ प्रतिज्ञा। पूर्व पक्ष (को०)। ७. आदेश। प्रभुत्व। शासन (को०)। ८ विधिसंमत साक्ष्य वा प्रमाण (को०)। ९ वाक्प्रदत्त होना (को०)।

वाक्यकठ—वि० [स० वाक्यकण्ठ] जिसके कठ मे बात आ गई हो। जो बोलना ही चाहता हो [को०]।

वाक्यकर– सज्ञा पु० [स०] १ एक की बात दूसरे से कहनेवाला। दूत। २ बातें बनानेवाला।

वाक्यखड—सज्ञा पुं० [स० वाक्यखण्ड] वाक्य के भीतर आया हुआ वाक्य। उपवाक्य [को०]।

वाक्यखडन—सज्ञा पु० [स० वाक्यखण्डन] तर्क का खडन करना [को०]।

वाक्यग्रह—सज्ञा पुं० [स०] किसी कारण से वाणी का रुकना। वाक्स्तभन [को०]।

वाक्यज्ञान—सज्ञा पु० [स०] केवल वार्तालाप करना। वाचक ज्ञान। विद्या का ज्ञान। उ०—वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुनभव पार न पावै कोई। निशि गृह मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहिं होई। सतवाणी०, भा० २, पृ० ८५।

वाक्यपदीय—सज्ञा पु० [सं०] भर्तृहरि द्वारा विरचित एक व्याकरण ग्रंथ जिसमे तीन काड हैं। वाक्यपद सबधी व्याकरण दर्शन के सिद्धातो का कारिकाओ मे गूढ विवेचन है। व्याकरण दर्शन के प्राचीनतम और प्रामाणिक ग्रथो मे इसकी गणना है। शब्दब्रह्म, स्फोटब्रह्म और स्फोटवाद का इसमे प्रतिपादन है। इसे 'हरिकारिका' भी कहते है। इसकी दो प्राचीन टीकाएँ प्राप्त होती है।

वाक्यपद्धति—सज्ञा स्त्री० [स०] वाक्यरचना की पद्धति, प्रणाली या ढग। शैली [को०]।

वाक्यप्रबध—सज्ञा पु० [स०] १. निबंध। लेख। २ वाक्य की गति। वाक्य का प्रवाह [को०]।

वाक्यभेद—सज्ञा पुं० [स०] मीमासा के एक ही वाक्य का एक ही काल मे परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।

वाक्यरचना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाक्यविन्यास'।

वाक्यवक्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] वाक्यगत वक्रता। वाक्य की भगिमा। उ०—अलकार, चाहे अप्रस्तुत वस्तुयोजना के रूप मे हो (जैसे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा इत्यादि मे), चाहे वाक्यवक्रता के रूप मे हो (जैसे अप्रस्तुतप्रशसा, परिसख्या, व्याजस्तुति, विरोध इत्यादि मे), चाहे वर्णविन्यास के रूप मे (जैसे अनुप्रास मे) लाए जाते हैं वे प्रस्तुत भाव या भावना के उत्कर्ष के लिये ही।—रस०, पृ० ४९।

वाक्यविन्यास—सज्ञा पुं० [स०] वाक्यरचना। वाक्यो का संयोजन या गठन [को०]।

वाक्यविलेख—सज्ञा पु० [स०] लेखा जोखा तथा आदेश आदि लिखने का प्रधान अधिकारी [को०]।

वाक्यविशारद—वि० [स०] बात करने में कुशल [को०]।

वाक्यशेष—सज्ञा पुं० [स०] १ अधूरी बात। अधूरा भाषण। २ अपूर्ण वाक्य। न्यूनपद वाक्य [को०]।

वाक्यसारथि—सज्ञा पु० [स०] प्रवक्ता। प्रमुख बोलनेवाला [को०]।

वाक्यस्थ—वि० [स०] आज्ञाकारी। विनत। नम्र (को०)।

वाक्यहारक—सज्ञा पु० [स०] दूत। सदेशवाहक [को०]।

वाक्यहारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दूती। संदेशवाहिका [को०]।

वाक्याडबर—सज्ञा पुं० [स० वाक्यआडम्बर] दीर्घ और क्लिष्ट शब्दो तथा लवे लबे समासो से युक्त वाक्य [को०]।

वाक्यार्थ—सज्ञा पु० [स०] १ वाक्य का अर्थ। २ वाक्य प्रमाण के बल पर प्राप्त किया हुआ वाक्य का अभिप्राय। सामान्य ढंग से अभिप्रवृत्त, पदार्थों का विशेष मे अवस्थान (सामान्येनाभिप्रवृत्ताना पदार्थाना यद्विशेषेऽवस्थानं स वाक्यार्थ)।

वाक्यालाप –सज्ञा पु० [स०] बात चीत। सभाषण। प्रवचन [को०]।

वाक्यैकवाक्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] मीमासा के अनुसार एक वाक्य को दूसरे वाक्य से मिलाकर उसके सुसगत अर्थ का बोध कराना।

वाक्यशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी। सरस्वती। उ०— ईश्वरीय वाक्शक्ति अर्थात् वाणी या सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७१।

वाक्शलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कडी बात। २ लगनेवाली बात। ३ श्राप। शाप [को०]।

वाक्शल्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वाक्शलाका'।

वाक्सग –सज्ञा पु० [स०वाक्सङ्ग] १ धीरे धीरे कहना। २ वाणी का रुक जाना। वाक्यस्तभ [को०]।

वाक्सतक्षण—सज्ञा पुं० [स० वाक्य सन्तक्षण] व्यंग्यात्मक वचन [को०]।

वाक्सयम—सज्ञा पु० [वि०] वाणी का संयम। अन्यथा बात न कहना। व्यर्थ बातें न करना।

वाक्सवर—सज्ञा पु० [स०] वाणी को प्रतिरुद्ध या सीमित करना वाक्यसयम [को०]।

वाक्सरणि—सज्ञा स्त्री०[स०] वाणी की पद्धति या राह। वाक्यप्रकार। बात कहने का ढग। उ०—वाक्सरणि जिसके द्वारा पात्रो के विचार व्यक्त होते है।—पा० सा० सि०, पृ० १३१।

वाक्सार– सज्ञा पु० [स०] व्यग्य [को०]।

वाक्सिद्ध –सज्ञा पु० [स०] वह जिसकी कही हुई बात ठीक निकले। वह जिसने वाक्सिद्धि प्राप्त कर ली हो [को०]।

वाक्सिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी की सिद्धि, अर्थात् इस प्रकार का सिद्धि या शक्ति कि जो भी बात मुँह से निकले, वह ठीक ठीक घटे।

वाक्स्तभ—सज्ञा पु० [स० वाक्स्तम्भ] वाणी का रुक जाना। वाणी को लकवा मार जाना। बोली बद हो जाना [को०]।

वागत—सज्ञा पु० [स० वागन्त] सबसे ऊँचा स्वर [को०]।

वाग(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वागा] दे० 'वागा'। उ०—धाली टापर वाग मुखि, भेलयउ राज दुआरि। करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि।—ढोला०, दू० ३४५।

वागतीत—सज्ञा पु० [स०] एक मिश्र वा सकर जाति [को०]।

वागधिप—सज्ञा पु० [स०] बृहस्पति [को०]।

वागना (पु)—क्रि० अ० [सं० √वक् = (चलाना)] दे० 'वागना'।

वागपहारक—वि०, संज्ञा पु० [सं०] १ दूसरों की उक्ति को चुराने वाला। २ मिथ्यावादी [को०]।

वागपेत—वि० [सं०] मूक। गूँगा [को०]।

वागर—संज्ञा पु० [सं०] १. वारक। २ शाण। सान। ३. निर्णय। ४ वृक। भेड़िया। ५ पंडित। ६ मुमुक्षु। ७. निर्भय। निडर। नायक। ८. वडवाग्नि। (को०)। ९. सूर्य का एक घोडा।

वागरवाल (पु)—वि० [सं० वागर] वाक्चतुर। विद्वान्। पंडित। उ०—नरवर गढ ढोलइ कन्हइ, जावउ वागरवाल।—ढोला०, दू०, पृ० १०५।

वागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वल्गा। लगाम।

वागाडंबर—संज्ञा पुं० [सं० वाक् + आडम्बर] वाग्जाल। व्यर्थ की लंबी चौड़ी बात। उ०—किसी जन विशेष को मनस्ताप देने ही के अर्थ व्यर्थ वागाडंबर।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २९९।

वागात्मा—वि० [सं० वाक् + आत्मन्] शब्दमय [को०]।

वागारु—संज्ञा पु० [सं०] आशा देकर निराश करनेवाला। आसरे मे रखकर पीछे धोखा देनेवाला। विश्वासघाती।

वागाशनि—संज्ञा पु० [सं०] बुद्धदेव।

वागीश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३ वाग्मी। कवि। ४ पुष्य नक्षत्र [को०]।

वागीश²—वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

वागीशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वागीश्वर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ मंजुघोष बोधिसत्व। ४. वाग्मी। कवि।

वागीश्वर²—वि० अच्छा बोलनेवाला। सद्वक्ता।

वागीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वागुजार—संज्ञा पु० [सं० वागुज्जार] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की मछली।

वागुजार—वि० [फा० वागुजार] छोड़ने या त्यागनेवाला [को०]।

वागुजारी—संज्ञा स्त्री० [फा० वागुज़ारी] १ मुक्ति। त्यागना। २ छूट (जायदाद आदि की)।

वागुजारता—वि० [फा० वागुजाश्तह्] छूटा या छोड़ा हुआ [को०]।

वागुजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची नाम की ओषधि। सोमराजी।

वागुण—संज्ञा पु० [सं०] १. कमरख। २ बैंगन। भंटा।

वागुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृगों या पक्षियों के फँसाने का जाल। जाल। यौ०—वागुरावृत्ति = (१) शिकारी। बहेलिया। (२) पशु फँसाने जीविका।

वागुरिक—संज्ञा पु० [सं०] हिरन फँसानेवाला शिकारी। मृगव्याध।

वागुरीक—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वागुरिक'। उ०—एक तंतुवाय के सेवक के रूप में, वागुरीक मृगयाशिक अथवा बढ़ई का काम करते हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ३०४।

वागुलि—संज्ञा पु० [सं०] डिब्बा। पानदान।

वागुलिक—संज्ञा पु० [सं०] राजाओं का वह सेवक जिसका काम उनको पान खिलाना होता है। खवास।

वागुस—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का बड़ा मत्स्य [को०]।

वागृषभ—संज्ञा पु० [सं०] १. उत्तम वक्ता। २. विद्वान् [को०]।

वाग्गुण—संज्ञा पु० [सं०] वक्तृत्व की श्रेष्ठता। बोलने का एक गुण या पद्धति।

विशेष—हेमचंद्र ने ३५ प्रकार के वाग्गुण कहे हैं।

वाग्गुद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—मनुस्मृति मे लिखा है कि जो गुड चुराता है. वह दूसरे जन्म मे वाग्गुद पक्षी होता है।

वाग्गुलि, वाग्गुलिक—संज्ञा पु० [सं०] राजाओं का वह खवास जो उनको पान खिलाता है।

वाग्जाल—संज्ञा पु० [सं०] बातो की लपेट। बातो का आडंबर या भरमार।

वाग्जीवन—संज्ञा पु० [सं०] विदूषक [को०]।

वाग्डंबर—संज्ञा पु० [सं० वाग्डंबर] १ दर्पवचन। अतिशयोक्ति। २ विदग्धतापूर्ण भाषा [को०]।

वाग्दंड—संज्ञा पु० [सं० वाग्दण्ड] १. भला बुरा कहने का दंड। मौखिक दंड। डाँट डपट। लिथाड़। २. वाक्संयम। वाणी का नियंत्रण (को०)।

वाग्दत्त—वि० [सं०] मुँह से दिया हुआ। वचनों द्वारा प्रदान किया हुआ। जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों।

वाग्दत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो, केवल विवाह संस्कार होने को बाकी हो। उ०—यह विधि वाग्दत्ता कन्या के लिये है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १९९।

विशेष—पूर्व काल मे प्रथा थी कि कन्या का पिता जामाता के पास जाकर कहता था कि मैं अपनी कन्या तुम्हें दूँगा। इस प्रकार देने को कही हुई कन्या वाग्दत्ता कही गई है। आजकल इस प्रकार तो नहीं कहा जाता, पर बरच्छा या फलदान का टीका चढाया जाता है।

वाग्दरिद्र—वि० [सं०] बहुत कम बोलनेवाला। अल्पवक्ता [को०]।

वाग्दल—संज्ञा पु० [सं०] ओष्ठाधर। ओठ।

वाग्दान—संज्ञा पु० [सं०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा।

विशेष—प्राचीन काल मे कन्या का पिता जिसे उत्तम वर समझता था, उसके पास जाकर कहता था—'मैं अपनी कन्या तुम्हें दूँगा'। यही कथन वाग्दान कहलाता था।

वाग्दुष्ट¹—वि० [सं०] १. परुषभाषी। कटुभाषी। २ जिसे किसी ने शाप दिया हो। जिसे किसी ने कोसा हो। अभिशप्त। ३ अशुद्ध वा व्याकरण के प्रतिकूल भाषा का प्रयोग करनेवाला (को०)।

वाग्दुष्ट²—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो निंदा करता हो। निंदक। वह ब्राह्मण जिसका उपयुक्त समय पर उपनयन संस्कार न हुआ हो [को०]।

वाग्देवता—संज्ञा पु० [सं०] वाणी। सरस्वती।

वाग्देवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती। वाणी।

वाग्देवत्यचरु—संज्ञा पु० [सं०] वह चरु जो सरस्वती के उद्देश्य से पकाया गया हो।

वाग्दोष—संज्ञा पु० [सं०] १ बोलने की त्रुटि। जैसे, वर्णों का ठीक उच्चारण न करना इत्यादि। २. व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ या दोष। ३. निंदा या गाली।

वाग्धारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी की अप्रतिहत गति। वाणी की अटूट धारा। उ० -रामानंद और वल्लभाचार्य ने जिस भक्तिरस का प्रभूत संचय किया, कबीर, सूर आदि की वाग्धारा ने उसका संचार जनता के बीच किया।—आचार्य०, पृ० ६४।

वाग्निबंधन—वि० [सं० वाग्निबन्धन] जो शब्दों पर निर्भर या आधारित हो [को०]।

वाग्बंधन—संज्ञा पुं० [सं० वाग्बन्धन] बोलने से विरत करना। बोलने न देना।

वाग्बद्ध—वि० [सं०] मौन। चुप [को०]।

वाग्बाहुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वागाडंबर'। उ०—उनकी कृति वाग्बाहुल्य से भरा रहती है।—साहित्य०, पृ० २५१।

वाग्भट—संज्ञा पुं० [सं०] १ अष्टांगहृदय संहिता नामक वैद्यक के ग्रंथ के रचयिता जिनके पिता का नाम सिंहगुप्त था। ग्रंथकार का वैद्यक के ग्रंथकारों मे बड़ा समान और प्रामाण्य है। २ पदार्थचंद्रिका, भावप्रकाश, रसरत्न समुच्चय, शास्त्रदर्पण आदि के रचयिता। ३ वैद्यक निघंटु के रचयिता। ४. एक जैन पंडित जिनके पिता का नाम नेमिकुमार था। इनके रचे अलंकारतिलक, वाग्भटालंकार और छंदानुशासन प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

वाग्मिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पांडित्य। २ उत्तम वक्तृत्व शक्ति [को०]।

वाग्मित्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाग्मिता' [को०]।

वाग्मी—संज्ञा पुं० [सं० वाग्मिन्] १ वाचाल। अच्छा वक्ता। २. पंडित। ३ बृहस्पति। ४. एक पुरुवंशी राजा। ५. विष्णु (को०)। ६ शुक। तोता (को०)।

वाग्य¹—वि० [सं०] १. परिमितभाषी। २ सत्य वक्ता [को०]।

वाग्य²—संज्ञा पुं० १ निर्वेद। २ विनम्रता। विनय। शालीनता (को०)। ५. संदेह। शंका। विकल्प (को०)।

वाग्यत—वि० [सं०] वाणी का संयम या निरोध करनेवाला मितभाषी। [को०]।

वाग्यम—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने वाणी का निरोध कर लिया हो, मुनि [को०]।

वाग्यमन—संज्ञा पुं० [सं०] वाणी का संयम। बोलने मे संयम।

वाग्याम—संज्ञा पुं० [सं०] मूक। गूँगा [को०]।

वाग्युद्ध—संज्ञा पुं० [सं०]। कहासुनी। वादविवाद।

वाग्वज्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अशुद्ध रूप से कहा हुआ वाक्य। २ कठोर वाक्य। ३. शाप।

वाग्वद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चमगादड [को०]।

वाग्वादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्विद—वि० [सं०] दे० 'वाग्विदग्ध' [को०]।

वाग्विदग्ध—वि० [सं०] १ पंडित। २ बातचीत करने मे चतुर।

वाग्विदग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० वाग्वैदग्ध्य'।

वाग्विनि सृत—वि० [सं०] कथन से व्यंजित [को०]।

वाग्विभव—संज्ञा पुं० [सं०] वाणीरूपी संपत्ति। वाणी का वैभव। भाषा पर विशेष अधिकार [को०]।

वाग्विरोध—संज्ञा पुं० [पुं०] वादविवाद। कहासुनी [को०]।

वाग्विलास—संज्ञा पुं० [सं०] आनंदपूर्वक परस्पर संभाषण। आनंदपूर्वक बातचीत करना। २. व्यर्थ का वागाडंबर।

वाग्विलासी—संज्ञा पुं० [सं० वाग्विलासिन्] १ कपोत। कबूतर। २ पडुक। पडुखी [को०]।

वाग्विस्तर—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्प्रपंच। वाणी का विस्तार [को०]।

वाग्वीर—संज्ञा पुं० [सं०] खूब लंबी चौड़ी बातें करनेवाला व्यक्ति। बातचीत मे वीरता दिखानेवाला आदमी [को०]।

वाग्वैचित्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] चमत्कारप्रियता। भाषा की विचित्रता। उ०—अभिव्यंजनावाद तो बेचारी अभिव्यंजना को छोड़कर किसी वाग्वैचित्र्य की बात ही नही करता।—आचार्य०, पृ० १२०।

वाग्वैदग्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बात करने की चतुरता। २ सुंदर अलंकार और चमत्कारपूर्ण उक्तियों का निपुणता। उ०—कवि गंग के छंदों मे जैसा काव्यगत चमत्कार, वाग्वैदग्ध्य, भाषासौष्ठव वर्तमान है, उनके प्रकाश मे रीतिकालीन कवियों का पृथक्ता स्पष्ट हो जाती है।—अकबरी०, पृ११८।

विशेष—काव्य मे वाग्वैदग्ध्य की प्रधानता मानते हुए भी काव्य की आत्मा रस ही कहा गया है। अग्निपुराण मे स्पष्ट लिखा है—'वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्'।

वाग्व्यय—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्कृत। वाक्च्यय [को०]।

वाग्व्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] वाचिक विचारणा। मौखिक निरूपण या कथन [को०]।

वाग्व्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन की पद्धति। २ भाषण शैली। ३ बातचीत। वार्तालाप [को०]।

वाघंभर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्राम्बर] दे० 'बाघंबर'। उ० शिव विभूत गोला लिये, वाघंभर धरि अंग।—प० रासो, पृ० १७६।

वाघंमर†—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्राम्बर] दे० 'बाघंबर'।

वाङ् निमित्त—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्वसूचना [को०]।

वाङ् निश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] वाणी द्वारा विवाह की बातचीत पक्की होना [को०]।

वाङ् निष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वचनबद्धता। वचन का पालन [को०]।

वाङ् मती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो नैपाल से निकलती है और आजकल 'वागमती' कहलाती है।

विशेष—वराहपुराण (गोकर्ण महात्म्य) मे इस नदी को अत्यंत पवित्र, गंगा से भी पावन, कहा है और इसमे स्नान करने तथा इसके किनारे मरने से विष्णुलोक की प्राप्ति बतलाई है।

वाङ्मधुर—वि० [सं०] मिष्टभाषी। मधुर बोलनेवाला [को०]।

वाङ्मय¹—वि० [सं०] १ वाक्यात्मक। वचन संबंधी। २. वचन द्वारा किया हुआ। जैसे,—वाङ् मय पाप।

विशेष—वचनों द्वारा किए हुए पाप चार प्रकार के कहे गए हैं—पारुष्य, अनृत, पैशुन्य और असंबद्ध प्रलाप।

३. जो पठन पाठन का विषय हो। ४ वाक्पटु। वाक्चतुर [को०]।

वाङ्मय²—संज्ञा पुं० १ गद्य पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो। साहित्य। उ०—इस्लाम के प्रवेश ने भारतवर्ष की ललित कलाओं तथा वाङ् मय के क्षेत्रों पर अपना विशेष प्रभाव डाला।—अकबरी० (भू०) पृ० २। २. वाक्पटुता। वाग्मिता (को०)। ३. अलंकारशास्त्र। साहित्यशास्त्र (को०)।

वाङ्मयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाङ्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का गद्यकाव्य। उपन्यास। २ भूमिका। प्रस्तावना।

वाङ्मूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाणी। सरस्वती [को०]।

वाचयम—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुनि। २ मौन व्रत धारण करनेवाला पुरुष। मौनी।

वाच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाचा। वाणी। वाक्य।

वाच[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० वाच्] दे० 'वाच्'। उ०—काय मन वाच सब धर्म करिवो करै।—केशव (शब्द०)।

वाच[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की मछली। २. मदन नाम का एक पौधा (को०)।

वॉच—संज्ञा स्त्री० [अं०] जेब मे रखने की या कलाई पर बाँधने की छोटी घडी।

वाचक[1]—वि० (सं०) १ बतानेवाला। कहनेवाला। द्योतक। सूचक। बोधक। जैसे—उपमावाचक शब्द, लिंगवाचक प्रत्यय। २. मौखिक। शाब्दिक (को०)।

वाचक[2]—संज्ञा पुं० १ वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो। नाम। संज्ञा। संकेत। २ वक्ता। ३ पाठक (को०)। ४. दूत। संदेशवाहक (को०)।

वाचकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सूचकत्व। वाचक होने का भाव। बोधकत्व। उ०—मेरी समझ मे रसास्वादन का प्रकृत स्वरूप आनंद शब्द से व्यक्त नही होता। लोकोत्तर, अनिवर्चनीय आदि विशेषणो से न तो उसके वाचकत्व का परिहार होता है, न प्रयोग का प्रायश्चित्त होता है —आचार्य०, पृ० ४।

वाचकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाचकत्व'।

वाचकधर्मलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमे वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो, जैसे ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सब सुतबधू देवसरि बारी।—तुलसी। यहाँ उपमान और उपमेय तो है पर उपमावाचक शब्द और साधारण धर्म नही है।

वाचकपद—संज्ञा पुं० [सं०] बोधक पद या शब्द [को०]।

वाचकलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमे उपमावाचक शब्द का लोप होता है। जैसे,—नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन।—तुलसी (शब्द)।'

वाचकोपमानधर्मलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमे वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो केवल उपमेय भर हो। जैसे,—जेहि वर बाजि राम असवारा। तेहि सारदौ न बरनै पारा।—तुलसी।

वाचकोपमानलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमालंकार का एक भेद जिसमे वाचक और उपमान का लोप होता है। यथा,—तेरे ये कटु वचन हूँ सुनत हियो हरखात।

वाचकोपमेयलुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमालंकार का एक भेद जिसमे वाचक और उपमेय का लोप होता है। जैसे,—अटा उदय होतै भयो छविधर पूरन चंद।

वाचक्नवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वचक्नु ऋषि की अपत्या। गार्गी। वाचक्नवी।

वाचन—संज्ञा पुं० [सं०] पढना या उच्चारण करना। पठन। बाँचना। २ कहना। बताना। ३ प्रतिपादन।

वाचनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहेली। २ एक प्रकार की मिठाई (को०)।

वाचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाठ। २ पाठ का अंश। ३ अध्याय। परिच्छेद [को०]।

वाचनालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें और समाचारपत्र आदि पढने को मिलते हो। (अं०) रीडिंग रूम।

वाचनिक—वि० [सं०] १ वचन संबंधी। मौखिक। शब्दो द्वारा व्यक्त २ वाचन करनेवाला [को०]।

वाचयिता—वि० [सं० वाचयितृ] १ वाचक। बाँचनेवाला। २ पाठ करानेवाला। पाठसंचालक (को०)।

वाचसांपति—संज्ञा पुं० [सं० वाचसांपति] बृहस्पति।—(सोम, ब्रह्मा, प्रजापति, विश्वकर्मा आदि के लिये भी प्रयुक्त।)

वाचस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २ शब्द प्रतिपालक। ३ पुष्य नक्षत्र (को०)। ४. सुवक्ता (को०)। ५. एक कोशकार (को०)। ६. एक ऋषि का नाम (को०)। ७ एक दार्शनिक का नाम (को०)। ८ वेद (को०)।

वाचस्पत्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाषणकुशलता। २ उत्तम वक्तव्य। ३ संस्कृत का एक कोशग्रंथ [को०]।

वाचस्पत्य[2]—वि० १ वाचस्पति संबंधी। २ बृहस्पति द्वारा कथित या उक्त [को०]।

वाचा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाणी। सरस्वती। २. वाक्य। वचन। शब्द। ३. सूक्त। ऋचा (को०)। ४ शपथ। कसम (को०)।

वाचा[2]—वि० वचन द्वारा। वचन या कथन से।

वाचाट—वि० [सं०] १. वाचाल। २ बकी। बकवादी।

वाचापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञापत्र।

वाचाबध(पु)—वि० [सं० वाचाबद्ध]। प्रतिज्ञाबद्ध। वचनबद्ध। उ०—वाचाबध कस कार छाँड्यो तब बसुदेव पतीज हो। याके गर्भ अवतरे जे सुत सावधान ह्वै लाज हो।—सूर (शब्द०)।

वाचाबंधन—संज्ञा पुं० [सं० वाचाबन्धन] प्रतिज्ञाबद्ध होना।

वाचाबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वादे मे बँधा हुआ। वचन देने के कारण विवश। प्रतिज्ञाबद्ध।

वाचाल—वि० [सं०] १. बोलने मे तेज। वाक्पटु। २ बकवादी। व्यर्थ बकनेवाला।

वाचालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुभाषिता। बहुत बोलना। २. बातचीत मे निपुणता।

वाचासहाय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वाणी द्वारा सहायक हो, मित्र। मधुरभाषी सखा [को०]।

वाचिक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वाचिका, वाचिकी] १ वाणी संबंधी। २. वाणी से किया हुआ। ३ संकेत से कहा हुआ।

वाचिक[2]—संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्यविन्यास द्वारा अभिनय का कार्य संपन्न होता है।

यौ० वाचिकपत्र—(१) प्रतिज्ञापत्र। (२) समाचारपत्र। (३) चिट्ठी। पत्र। वाचिकहारक = संदेशहारक, दूत।

वाची—वि० [सं० वाचिन्] १ वाक्ययुक्त। २ प्रकट करनेवाला। बोध करानेवाला। सूचक।

विशेष—यह शब्द समास मे समस्त पद के अंत मे आने से वाचक और विधायक का अर्थ देता है। जैसे,—पुरुषवाची = पुरुषवाचक।

वाचोयुक्ति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर भाषण। २ वक्तव्य (को०)।

वाचोयुक्ति[2]—वि० भाषणपटु। वक्तव्य मे निपुण (को०)।

वाचोयुक्तिपटु—सं० [सं०] वाग्मी (को०)।

वाच्य[1]—वि० [सं०] १ कहने योग्य। जो कथन मे आवे। २ शब्द-संकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधा द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।

विशेष—जिस शब्द द्वारा बोध होता है, उसे 'वाचक' कहते हैं, और जिस वस्तु या अर्थ का बोध होता है, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

३ जिसे लोग भला बुरा कहें। कुत्सित। हीन।

वाच्य[2]—संज्ञा पुं० १ अभिधेयार्थ। वाच्यार्थ। शब्दयोजना से प्राप्त अर्थ। व्यंग्य का उलटा। विशेष दे० 'वाच्यार्थ'। उ०—एक मे भाव वाच्य द्वारा प्रकट किया गया, दूसरे मे अलंकार रूप व्यंग्य द्वारा।—रस०, पृ० १२३। ४ प्रतिपादन।

वाच्यचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] निम्न कोटि का काव्य (को०)।

वाच्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाच्य होने का भाव। २ कुत्सा। निंदा। अपयश (को०)।

वाच्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाच्यता' (को०)।

वाच्यार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। संकेत रूप से स्थिर शब्दों का नियत अर्थ। मूल शब्दार्थ।

विशेष—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना ये तीन शक्तियाँ शब्द की मानी जाती हैं। इनमें से प्रथम के सिवा और सब का आधार 'अभिधा' है, जो शब्दसंकेत मे नियत अर्थ का बोध कराती है। जैसे,—'कुत्ता' और 'इमली' कहने से पशुविशेष और वृक्षविशेष का ही बोध होता है। इस प्रकार का मूल अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है। विशेष दे० 'शब्दशक्ति'।

वाच्यावाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] भली बुरी या कहने न कहने योग्य बात। जैसे,—उसे वाच्यावाच्य का विचार नहीं है।

वाछो(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वत्सक, प्रा० वच्छअ, वच्छय] दे० 'वत्स'। उ०—पांच कोपर चरावे। चित सौ वाछा राखीला।—दक्खिनी०, पृ० ३३।

वाजती(पु)—वि० [हिं० बाजना, बजना] बजती हुई। उ०—बोली वीणा हंस गत, पग वाजती पाल। रायजादी घर अगणइ छुटे पटे छछाल।—ढोला०, दू०, ५४०।

वाज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ घृत। घी। २ यज्ञ। ३. अन्न। ४ जल। ५ संग्राम। युद्ध। ६ बल। ७ वाण में वा पंख जो पीछे लगा रहता है। ८ पलक। निमेष। ९. वेग। उ०—अवलबत, रव, जव, चपल, रहसि, रय, त्वर, वाज। सहसा, सत्वर, रभ, तुरा, तुरन वेग के साज।—नंद० ग्रं०, पृ० १०७। १० मुनि। ११. शब्द। आवाज। १२ श्राद्ध मे दिया जानेवाला चावल का पिंड (को०)। १३ पंख। पर (को०)। १४ चैत्र मास का एक नाम (को०)। १५ यज्ञ के अंत मे पढा जानेवाला एक मंत्र (को०)। १६ प्रतियोगिता मे प्राप्त पुरस्कार (को०)। १७ तीव्र गतिवाला घोडा (को०)। १७. तीन ऋतुओं मे से एक ऋतु (को०)। १८. प्राप्ति। लाभ (को०)।

वाज[2]—संज्ञा पुं० [अ० वाज] १. उपदेश। शिक्षा। २. धार्मिक व्याख्यान। ३. धार्मिक उपदेश। कथा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

वाजकर्मा—वि० [सं० वाजकर्मन्] युद्ध मे संलग्न (को०)।

वाजकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] लडाई (को०)।

वाजगंध्य—वि० [सं० वाजगन्ध्य] जिसके पास गाडी भर धन या लूट का माल हो। (को०)।

वाजजित्—वि० [सं०] प्रतियोगिता या युद्ध मे विजयी होनेवाला (को०)।

वाजदा—वि० [सं०] वाज अर्थात् बल या वेग प्रदान करनेवाली (को०)।

वाजदावर्पा—संज्ञा पुं० [सं० वाजदावर्पस्] एक साम का नाम।

वाजदावा—वि० [सं० वाजदावन्] धनद्रव्य, इनाम आदि देनेवाला (को०)।

वाजना(पु)†—क्रि० अ० [हिं०] बजना। ध्वनित होना।

वाजपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ अन्नपति।

वाजपेई(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वाजपेयिन्, वाजपेयी] दे० 'वाजपेयी'। उ०—व्याध अपराध की साध राखी कौन, पिंगलै कौन मति भक्तिभेई। कौन धौं सामजाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं वाजपेई?—तुलसी (शब्द०)।

वाजपेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों मे पाँचवाँ है।

वाजपेयक—वि० [सं०] वाजपेय यज्ञ संबंधी (को०)।

वाजपेयी—संज्ञा पुं० [सं० वाजपेयिन्] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि जो कान्यकुब्जों मे होती है। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष। जैसे,—वे कौन बड़े भारी वाजपेयी हैं।

वाजप्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाजप्यायन कहलाते हैं।

वाजबी—वि० [फा० वाजिबी] दे० 'वाजिबी'।

वाजभर्मीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

वाजभृत—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

वाजभोजी—संज्ञा पुं० [सं० वाजभोजिन्] वाजपेय यज्ञ (को०)।

वाजयु—वि० [स०] १. युद्ध या प्रतियोगिता के लिये इच्छुक । २ तेजस्वी । शक्तिशाली । ३ उत्साही । ४. धन देनेवाला [को०] ।

वाजवत—सज्ञा पु० [स०] [अपत्य वाजवतायनि] एक गोत्रकार ऋषि, जिनके गोत्र के लोग 'वाजवतायनि' कहलाते हैं ।

वाजवाल—सज्ञा पु० [सं०] मरकत [को०] ।

वाजश्रव—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम ।

वाजश्रवस—सज्ञा पु० [स०] १ वाजश्रवा ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष । २ एक ऋषि जिनके पुत्र का नाम 'नचिकेता' था और जो अपने पिता के क्रुद्ध होने पर यमराज के यहाँ चला गया था । वहाँ उसने उनसे ज्ञान प्राप्त किया था ।

वाजश्रवा—सज्ञा पुं० [स० वाजश्रवस्] १ अग्नि । २ एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

वाजस—सज्ञा पु० [स०] एक साम ? का नाम ।

वाजसन—सज्ञा पु० [स०] १. शिव । २. विष्णु [को०] ।

वाजसनि—सज्ञा पु० [स०] १. सूर्य । २ अन्नदाता (को०) ।

वाजसनेय—सज्ञा पु० [स०] १. यजुर्वेद की एक शाखा का नाम ।

विशेष—इसे याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशपायन पर क्रुद्ध होकर उनकी पढाई हुई विद्या उगलने पर सूर्य के तप से प्राप्त की थी । मत्स्य पुराण के अनुसार वैशंपायन के शाप से वाजसनेय शाखा नष्ट हो गई । पर आजकल शुक्ल यजुर्वेद की जो सहिता मिलती है , वह वाजसनेय सहिता कहलाती है । यजुर्वेद के दो पाठ है शुक्ल और कृष्ण । शुक्ल मे १५ शाखा है, कराव, माध्यदिन; जावाल, बुधेय, शाकेय, तापनीय, कापील, पौड्रवहा, आवर्तिक, परमावर्त्तिक, पाराशरीय, वैनेय, बौधेय, औधेय और गालव । यह सव एकत्रित होकर वाजसनेयी शाखा भी कहलाती हैं ।

२ याज्ञवल्क्य ऋषि जो सूर्य के छात्र थे ।

वाजसनेयक—वि० [स०] १. वाजसनेय सबधी । २ याज्ञवल्क्य द्वारा रचित [को०] ।

वाजसनेयी[1]—सज्ञा पुं० [स० वाजसनेयिन्] १ वाजसनेय शाखा के प्रवर्तक याज्ञवल्क्य । २ इस शाखा के अनुयायी लोग [को०] ।

वाजसनेयी[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] शुक्ल यजुर्वेद की पद्रहो शाखाओ का नाम ।—प्रा० भा० प०, पृ० १८२ ।

वाजसाम—सज्ञा पु० [स० वाजसामन्] एक साम का नाम ।

वाजस्रजाक्ष—सज्ञा पु० [स०] वेरा राजा का नाम ।

वाजा(पु)†—सज्ञा, पु० [स० वाद्य] दे० 'वाजा' । उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजा रग । जिण वाटइ सज्जण गया, सा वाटड़ी सुरग ।—ढोला०, दू० ३५६ ।

वाजिगधा—सज्ञा स्त्री० [स० वाजिगन्धा] अश्वगधा । असगध ।

वाजित—वि० [सं०] वाज युक्त । पखोवाला । जैसे, वाण [को०] ।

वाजित्र—सज्ञा पु० [स० वादित्र] वाजा । वाद्य । वाद्ययत्र । उ०—हुई सोपारी मनि हरष्यो छइ राव । वाजित्र वाजइ नीसाँणो घाव ।—वी० रासो, पृ० ६ ।

वाजिदंत, वाजिदंतक—सज्ञा पुं० [स० वाजिदन्त, वाजिदन्तक] वासक । अडूसा ।

वाजिन—सज्ञा पुं० [स०] १ शक्ति (वेद) । २ सघर्ष । होड । ३. उलझन । ४ छेने का पानी [को०] ।

वाजिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ घोडी । २ अश्वगधा । असगध । ३ उषा (को०) । ४ अन्न (वेद) ।

वाजिब—वि० [अ०] उचित । ठीक । मुनासिब । उ०—वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब ।—कबीर० ग्र०, पृ० ३० ।

वाजिबी—वि० [अ०] उचित । ठीक । मुनासिब ।

मुहा०—वाजिबी बात = ठीक बात । यथार्थ या सच्ची बात । वाजिबी खर्च = आवश्यक खर्च ।

वाजिबुल्अदा[1]—वि० [अ०] (रकम या धन) जिसके देने का समय आ गया हो । (वह रकम) जिसका दे देना उचित हो, या जिसे देने का समय पूरा हो गया हो ।

वाजिबुल् अदा[2]—सज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे देने का समय पूरा हो चुका हो ।

वाजिबुल् अर्ज—सज्ञा पु० [अ० वाजिबुल अर्ज] वह शर्त जो कानूनी बदोबस्त के समय जमीदारो और काश्तकारो के बीच गाँव के रिवाज आदि के सबध मे लिखी जाती है ।

वाजिबुल् वसूल[1]—वि० [अ०] (धन) जिसके वसूल करने का वक्त आ गया हो ।

वाजिबुल् वसूल[2]—सज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे वसूल करना उचित हो ।

वाजिपृष्ठ—सज्ञा पु० [स०] अम्लान वृक्ष । दे० 'अम्लान' [को०] ।

वाजिभ—सज्ञा पुं० [पुं०] अश्विनी नक्षत्र ।

वाजिभक्ष—सज्ञा पुं० [स०] चना । चणक [को०] ।

वाजिभोजन—सज्ञा पुं० [सं०] मूँग । मुद्ग ।

वाजिमान्—सज्ञा पुं० [सं० वाजिमत्] परवल । पटोल [को०] ।

वाजिमेघ —सज्ञा पु० [स०] एक यज्ञ । अश्वमेध ।

वाजियोजक—सज्ञा पु० [स०] सारथी । साईस [को०] ।

वाजिराज—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु । २ उच्चैःश्रवा ।

वाजिविष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] वट का वृक्ष । बरगद [को०] ।

वाजिशत्रु —सज्ञा पुं० [स०] अश्वमार । कनेर का पेड ।

वाजिशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] मदुरा । अस्तबल । घुडसाल [को०] ।

वाजिशिरा—सज्ञा पुं० [स० वाजिशिरस्] १ भगवान् के एक अवतार का नाम । २ एक दानव का नाम ।

वाजी[1]—सज्ञा पुं० [स० वाजिन्] १ घोडा । २. वासक । अडूसा । ३ फटे हुए दूध का पानी ।

विशेष—वैद्यक मे इसे रुचिकर तथा तृष्णा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर का नाशक लिखा है ।

४ हवि । ५. बाण । तीर (को०) । ६ वह जो वाजसनेयी शाखा का अनुयायी हो (को०) । ७. आदित्य । सूर्य (को०) । ८. इंद्र ।

९ बृहस्पति (को०)। १० पक्षी (को०)। ११. सात की संख्या (को०)। १२ लगाम। वल्गा (को०)।

वाजी—वि० १ तीव्र। वेगयुक्त। तेज। २ सुदृढ। मजबूत। ३ अन्नवाला। जिसके पास अन्न हो। ४ पखोंवाला। पक्षयुक्त [को०]।

वाजीकर वि० [स०] १ कामोद्दीपक। २ शक्तिवर्धक [को०]।

वाजीकरण—सज्ञा पु० [स०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य मे वीर्य, स्तभनशक्ति और प्रमत्त्व की वृद्धि हो। उ०—जिस औषध से स्त्री विषये अभिलाषा उत्पन्न हो और धातु बढे तिसको वाजीकरण कहते हैं।—शाङ्‌र्गधर०, पृ० ३९।

विशेष—जिस प्रयोग से मनुष्य अश्व के समान रतिशक्तिवाला हो, उसे वाजीकरण कहते हैं। मनुष्य मे जब वीर्य की अल्पता होती है, तब वाजीकरण औषधो का व्यवहार किया जाता है। साधारणत घी, दूध, मास आदि पदार्थ वीर्यवर्द्धक होते है। पर आयुर्वेद मे वाजीकरण पर एक अलग प्रकरण रहता है, जिसमे अनेक प्रकार की काष्ठौषधो और रसौषधो की व्यवस्था रहती है।

वाजीत्र—सज्ञा पुं० [सं० वादित्र] वाजा। वाद्ययत्र। उ०—मोती चउक पुरावीया, वाजीत्र वाजै घुरइ निसाण।—बी० रासो, पृ० २२।

वाजूँ—वि० [अ० व जूँ] अधोमुख। उलटा।

वाजे वि० [अ० वाजेअ] १ रखने या धर देनेवाला। वजा करनेवाला। २ रचनेवाला बनानेवाला [को०]।

वाट—सज्ञा पु० [स०] १ मार्ग। रास्ता। उ०—जिण वाटड सज्जण गया सा वाटडी सुरग।—ढोला०, दू० ३१६। २ वास्तु। इमारत। ३ मडप। ४ आवृत स्थान। घेरेदार जगह (को०)। ५ उद्यान। उपवन (को०)। ६ एक अन्न (को०)। ७ तट पर लगाया हुआ लकडी का बाँध (को०)। ८ उरुसधि। वक्षण (को०)। ९ प्रात। प्रदेश (को०)।

वाटक—सज्ञा पु० [स०] १ उद्यान। उपवन। २ घेरा। बाड। दे० 'वाट' [को०]।

वाटडी सज्ञा स्त्री० [स०] वाट + (राज०) डी (प्रत्य०) मार्ग। राह। पथ। उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारग। जिण वाइट सज्जण गया सा वाटडी सुरग।—ढोला०, दू० ३५६

वाटधान—सज्ञा पु० [स०] १ एक जनपद जो काश्मीर के नैऋत्य कोण मे कहा गया है। नकुल के दिग्विजय मे इसे पश्चिम मे और मत्स्यपुराण मे उत्तर दिशा मे लिखा है। २ स्मृति के अनुसार ब्राह्मणी माता और वर्ण ब्राह्मण या कर्महीन ब्राह्मण से उत्पन्न एक सकर जाति। ३ वह सैन्याधिकारी जो अपनी सेना की प्रकृति एव प्रवृत्ति से परिचित हो (को०)। ४ भूस्वामी। जमीदार (को०)।

वाटर—सज्ञा पु० [अ०] पानी।

यौ०—वाटरकलर = (१) एक प्रकार का रग। (२) इस रग से बना चित्र। वाटर पेंटिंग = वाटरकलर से चित्र बनाना। वाटरपोलो = एक खेल का नाम। वाटरप्रूफ। वाटर मार्क = (१) जल की गहराई का सूचक चिह्न। (२) कागज पर छपा विशेष प्रकार का चिह्न आदि जो प्रकाश के सामने करने पर दिखाई पडता है, जैसे मुद्राविनिमय के नोटो आदि पर रहता है। वाटर वर्क्स। वाटरशूट। सोडावाटर आदि।

वाटरप्रूफ—वि० [अ०] जिसपर पानी का प्रभाव न पडे। जो पानी मे न भीग सके। जैसे, वाटरप्रूफ कपडा।

वाटरवर्क्स—सज्ञा पु० [अ०] १ नगर मे पानी पहुँचाने का विभाग। पानी पहुँचाने का कल का कार्यालय। २ पानी पहुँचाने की कल। जलकल।

वाटरशूट—सज्ञा स्त्री० [अ०] पानी मे कूदकर तैरने की क्रीडा। जलक्रीडा।

वाटली पु—सज्ञा स्त्री० [स० वर्तुली, प्रा० वट्टुली, राज०, वाटला, अथवा देश० वट्टु या वट्ट, गुज० वाटको०] पात्र। छोटी कटोरी। उ०—मोती जडी म हाथि, नुरह सुगधी वाटली। सूती मॉफिम राति, जाणूँ ढोलू जागली।—ढोला० दू०, ५०५।

वाटशृंखला—सज्ञा स्त्री० [स० वाट शृङ्खला] वह शृंखला या जजीर जिससे कोई स्थान घेर दिया गया हो [को०]।

वाटि¹—सज्ञा स्त्री० [स०] घिरा हुआ भूभाग [को०]।

वाटि(पु)²—सज्ञा स्त्री० [स० वर्ति, प्रा० वट्टि, राज० वाटि] दे० 'वत्ती'। उ०—ढोला मारुडी मुई, मइं मारडी न लब्भ। दीवा केरी वाटि जिम, खोडी खोडी दव्व।—ढोला०, दू० ६०९।

वाटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वास्तु। इमारत। २ बाग। बगीचा। ३ हिंगुपत्री। ४ पर्णशाला। कुटीर (को०)। ५ अतिबला। बरियारा (को०)।

वाटिदीर्घ—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वाटिदीर्घा] सरपत। एक प्रकार का लबी घास [को०]।

वाटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वास्तु। इमारत। घर। २ वह भूभाग जहाँ कोई घर बनाया गया हो (को०)। ३ अहाता। बाडा (को०)। ४ उद्यान। उपवन (को०)। ५ सडक। रथ्या (को०)। ६ जाँघ का जोड। उरुसधि (को०)। ७ एक प्रकार का अन्न (को०)। ८ अतिबला। बरियारा (को०)।

वाट्टक—सज्ञा पु० [स०] भुना हुआ जौ। बहुरी।

वाट्य¹—सज्ञा पु० [स०] १ बला। बरियारा। खिरैटी। २ भुना हुआ जौ।

वाट्य²—वि० १ उपवन। २ वटकाष्ठ का बना हुआ। वट निर्मित (को०)।

वाट्यपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ चदन। २ कुकुम।

वाट्यपुष्पी—सज्ञा स्त्री [स०] अतिबला। बरियारा

वाट्यमड—सज्ञा पुं० [स० वाट्यमण्ड] बिना भूसी या छिलके के भुने हुए और दले हुए जौ का माड।

विशेष—एक भाग दले हुए जौ को चौगुने पानी मे पकाने से वाट्यमड बनता है। वैद्यक मे यह हलका, रुचिकर, दीपन, हृद्य तथा पित्त, श्लेष्मा, वायु और अनाहनाशक कहा गया है।

वात्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वरियारा । बीजवद ।

वात्याल—सज्ञा पुं० [स०] वरियारा । बीजवद ।

वात्यालक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वात्याल' ।

वात्यालिका, वात्याली—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा वरियारा ।

वाड—सज्ञा पु० [स०] घेरा । बाड । वेष्टन [को०] ।

वाड पु—सज्ञा स्त्री० [स० वाड] दे० 'बाड' । उ०—सील सतोष की वाड करायलो गुरु शब्द रखवारी ।—राम० धर्म०, पृ० ५२ ।

वाडव¹ सज्ञा पुं० [स० वाडव] १ दे० 'वाडव'² । २ ब्राह्मण (को०) । ३ एक वैयाकरण का नाम (को०) । ५. वडवा का समूह । अश्वसमूह (को०) । ६ एक मुहूर्त का नाम (को०) । ७ एक रतिवध । ८ पाताल (को०) ।

वाडव²—वि० दे० 'बाडव'² ।

वाडवहरण—सज्ञा पुं० [स०] घोडो का चारा । घोडे को दिया जानेवाला चारा, दाना, घास आदि [को०] ।

वाडवहारक—सज्ञा पु० [स०] एक समुद्री जतु [को०] ।

वाड़वाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स० वाडवाग्नि] १ समुद्र के अदर की आग । २ समुद्री आग । वह आग जो समुद्र मे दिखाई देती है ।

वाडवानल—सज्ञा पु० स० वाडवानल] बडवानल । दे० वाडवाग्नि [को०] ।

वाडवेय—सज्ञा पु० [स०] १. अश्विनीकुमार । २ ब्राह्मण । ३ अश्व । घोडा । ४ साँड [को०] ।

वाडव्य—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण समुदाय [को०] ।

वाढ—वि० [स०] दे० 'बाढ'² [को०] ।

वाढम्—अव्य० [स०] अलम् । बस । काफी है । बहुत हो चुका ।

वाण—सज्ञा पु० [स०] धारदार फल लगा हुआ छडी के आकार का छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खीचकर छोडा जाता है। तीर ।

विशेष—बृहत् शार्ङ्गधर मे धनुष और वाण बनाने के सबध मे बहुत से नियम दिए गए है । उसमे लिखा है कि वाण या तीर का फल शुद्ध लोह का होना चाहिए । फल कई आकार के बनाए जाते थे, जैसे,—आरामुख, क्षुरप्र, गोपुच्छ, अधचद्र, सूचीमुख, भल्ल, वत्सदन, द्विभल्ल, कीर्णक और काकतुड । ये सब भिन्न भिन्न कामो के लिये होते थे । जैसे,—आरामुख वाण वर्म (बकतर) भेदने के लिये, अधचद्र सिर काटने के लिये, आरामुख और सूचीमुख ढाल छेदने के लिये, क्षुरप्र धनुष काटने के लिये, भल्ल हृदय भेदने के लिये, द्विभल्ल धनुष की डोरी काटने के लिये, आदि । वाण के फल पर अच्छी जिला होनी चाहिए । पीपल, सेंधा नमक और गुड को गोमूत्र मे पीसकर फल पर लेप करे, फिर फल को आग मे तपाकर तेल मे बुझावे, तो अच्छी जिला होगी । शर कैसा होना चाहिए, इसके सबध मे भी बहुत सी बातें है । वाण ठीक सीधा जाय, रास्ते मे इधर उधर न हो, इसके लिये पिछले भाग मे कुछ दूर तक कौवे, हस, बगले, गीध और मयूर आदि किसी पक्षी के पर लगाने चाहिए । विशेष विवरण के लिये देखिए 'धनुर्वेद' और 'बाण' शब्द ।

वाणावली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वाणो की अवली । तीरो की कतार। तीरो की लगातार वर्षा । २ एक साथ बने हुए पाँच श्लोक । श्लोको का पचक ।

वाणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बुनना (कपडा आदि) । २ करगह । करघा । ३ सरस्वती । ४ बादल । ५ मूल्य । कीमत । ६. शब्द । वाणी [को०] ।

वाणिज—सज्ञा पु० [स०] १ वणिक । २ बडवानल । ३. तुला राशि का चिह्न (को०) ।

वाणिजक—सज्ञा पु० [स०] वणिक् । व्यापारी ।

वाणिजिक—सज्ञा पु० [स०] १ वणिक् । व्यापारी । २. धूर्त । ठग । ३ वडवानल [को० ।

वाणिज्य—सज्ञा पु० [स०] व्यापार । वाणिज्य ।

वाणिज्यक—सज्ञा पु० [स०] व्यापारी [को०] ।

वाणिज्य दूत—सज्ञा पु० [स०] वह मनुष्य जो किसी स्वाधीन राज्य या देश के प्रतिनिधि रूप मे दूसरे देश मे रहता और अपने देश के व्यापारिक स्वार्थो की रक्षा करता हो । कान्सल । उ०—दोनो सरकार महावाणिज्य दूतो, वाणिज्य दूतो, उपवाणिज्य दूतो, तथा अन्य वाणिज्य दूताभिकर्ताओ की नियुक्ति के लिये समत हैं ।—नेपाल०, पृ० २५६ ।

वाणिज्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाणिज्य' [को०] ।

वाणिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त [को०] ।

वाणिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नर्तकी । २ मत्त । ३ शृगारप्रिय और स्वेच्छाचारिणी औरत (लाक्ष०) । ४ एक वर्णवृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण अर्थात् क्रमानुसार नगण, जगण, भगण, फिर जगण और अत मे रगण और गुरु होता है ।

वाणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सरस्वती । २ मुह मे निकले हुए सार्थक शब्द । वचन । उ०—इसमे भी मन और भाव है किंतु नही वैसी वाणी ।—पचवटी, पृ० ६ ।

मुहा०—वाणी फुरना = मुँह से शब्द निकलना ।

३ वाक्शक्ति । उ०—इतनी कहत गरुड पर चढिकै तुरतहि मधुवन आए । कबु कपोल परसि बालक के वाणी प्रगट कराए । —सूर (शब्द०) । ४ वागिद्रिय । जीभ । रसना । उ०—नैन निरखि चकित ह्वै गए । मन वाणी दोऊ थकि रए ।—सूर (शब्द०) । ५ स्वर । ६ साहित्यिक रचना या कृति । ग्रथ (को०) । ७ प्रशसा । स्तवन । स्तुति (को०) । ८ एक छद (को०) । ९ बुनाई [को०] ।

वाणीवाद—सज्ञा पु० [स०] एक पक्षी (को०) ।

वाणीमय—वि० [स०] शब्दित । शब्दायमान । ध्वनित । उ०—वाणीमय मरु प्रातर, छई है विपरण लाज ।—आराधना, पृ० ३१ ।

वातंड—संज्ञा पुं० [सं० वातण्ड] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिनके गोत्रवाले वातंड्य कहलाते हैं।

वातंड्य—संज्ञा पुं० [सं० वातण्ड्य] [स्त्री० वातंड्यादिनी] वातंड ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

वात[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

विशेष—शरीर में इसका स्थान पक्वाशय माना गया है। कहते हैं, शरीर की सब धातुओं और मल आदि का परिचालन इसी से होता है, और श्वास प्रश्वास, चेष्टा, वेग आदि इंद्रियों के कार्यों का भी यही मूल है।

३ वायु का देवता। वायु का अधिष्ठाता देवता (को०)। ४ गठिया। संधिवात (को०)। ५ धृष्ट नायक (को०)।

वात[2]—वि० १ बही हुई। २ इच्छित। अभीष्ट। प्रार्थित [को०]।

वातकंटक—संज्ञा पुं० [सं० वातकण्टक] एक प्रकार का वात रोग

विशेष—इसमें पाँव की गाँठों में वायु के घुसने के कारण जोड़ों में बड़ी पीड़ा होती है। यह रोग ऊँचे नीचे पैर पड़ने या अधिक परिश्रम करने से हो जाता है।

वातक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अशनपर्णी। २ उपपति। जार (को०)।

वातकपिंडक—संज्ञा पुं० [सं० वातक पिण्डक] जन्मजात नपुंसक [को०]।

वातकर—वि० [सं०] वायुकारक। शरीर में वात पैदा करनेवाला।

वातकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वातकर्मन्] अपानवायु का निकालना। पादना [को०]।

वातकी—वि० [सं० वातकिन्] १ वात संबंधी। वात दोष से उत्पन्न। उ०—स्वरभेद और सूखी खाँसी उठे ये वातकी खाँसी के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० ८६। २ वात रोग का रोगी (को०)।

वातकुंडलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वातकुण्डलिका] एक प्रकार का मूत्ररोग। उ०—इस दारुण व्याधि को वातकुंडलिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० १७४।

विशेष—मूत्रकृच्छ का रोगी यदि कुपथ्य करके रूखी वस्तुएँ खाता है, तो यह उपद्रव होता है। इस व्याधि में वायु कुंडलाकार होकर पेड़ू में घूमता रहता है, रोगी को पेशाब करने में पीड़ा होती है, और बूँद बूँद करके पेशाब उतरता है।

वातकुंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० वात कुण्डली] एक मूत्ररोग। विशेष दे० 'वातकुंडलिका' [को०]।

वातकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० वातकुम्भ] हाथी के माथे का निचला भाग। हाथी का गंडस्थल [को०]।

वातकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] धूल। गर्द।

वातकेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर आलाप। प्रेमियों की कानाफूसी। २. उपपति के दाँतों या नखों का क्षत।

वातकोपन—वि० [सं०] शरीरस्थ वायु को दूषित करनेवाला [को०]।

वातक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] शरीरस्थ वायु का दूषित होना [को०]।

वातगंड—संज्ञा पुं० [सं० वातगण्ड] वातज गलगंड रोग जिसमें गले की नसें काली या लाल और बड़ी हो जाती हैं तथा बहुत दिन में पकती हैं।

वातगज—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्र गति से दौड़नेवाला मृग [को०]।

वातगामी—संज्ञा पुं० [सं० वातगामिन्] पक्षी। विहग [को०]।

वातगुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुल्म रोग जो वात के प्रकोप से होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार अधिक भोजन करने, रूखा अन्न खाने, बलवान् से लड़ने, मल मूत्र रोकने या अधिक विरेचनादि लेने से यह रोग होता है। इसमें गोला सा बँध जाता है, जो इधर से उधर रेंगता सा जान पड़ता है। कभी कभी बड़ी पीड़ा होती है। यह पीड़ा प्रायः भोजन पचने के पीछे खाली पेट होने पर होती है और भोजन करने पर घट जाती है।

२ आँधी। अंधड़। तूफान (को०)।

वातघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शालपर्णी। २ अश्वगंधा। असगंध।

वातचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में एक योग।

विशेष—आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय यह योग आता है। उस समय वायु की दिशा द्वारा वर्ष के फलाफल का विचार किया जाता है।

२ अंधवायु। चक्रवात। बवंडर।

वातचटक—संज्ञा पुं० [सं०] तित्तिर। तीतर पक्षी।

वातज[1]—वि० [सं०] वायु द्वारा उत्पन्न। वातकृत्।

वातज[2]—संज्ञा पुं० उदरव्यथा। उदरशूल। पेट में उत्पन्न होनेवाली चुभन या पीड़ा [को०]।

वातजात—संज्ञा पुं० [सं० वात + जात] पवनसुत। हनुमान। उ०—सहमि सुखात वातजात की सुरति करि लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाज के।—तुलसी (शब्द०)।

वातज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर।

विशेष—इसमें गला, होंठ और मुँह सूखते हैं, नींद नहीं आती, हिचकी आती है, शरीर रूखा हो जाता है, सिर और देह में पीड़ा होती है, मुँह फीका लगता है और मल रुद्ध हो जाता है। यह ज्वर कभी घट और कभी बढ़ जाता है।

वाततूल—संज्ञा पुं० [सं०] महीन तागा जो कभी कभी आकाश में इधर उधर उड़ता दिखाई पड़ता है।

विशेष—यह एक प्रकार की बहुत छोटी मकड़ियों का जाला होता है जिसके सहारे वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाया करती हैं। इसी को बुढ़िया का तागा कहते हैं।

पर्या०—वृद्धसूत्रक। इंद्रतूल। ग्रावग्हाम। वशकफ। मरुध्वज।

वातथुडा,—संज्ञा स्त्री० [सं०] [अन्य रूप—वातखुडा, वातथुडा, वातहुडा] १ तेज हवा। २ भयंकर वातरोगी। ३ एक प्रकार की चेचक की बीमारी। ४ सुंदरी स्त्री [को०]।

वातध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। २ धूल (को०)।

वातनाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नासूर जिसमें वायु के प्रकोप से दाँत की जड़ में नासूर हो जाता है। इससे से रक्त सहित पीव निकला करता है और कुछ कुछ पीड़ा होती है।

वातपट—संज्ञा पुं० [सं० वातपट] एक प्रकार का नासूर (को०)।

वातपट—संज्ञा पुं० [सं०] १. पताका। ध्वजा। २. नाव का पाल (को०)।

वातपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा।

वातपर्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक नेत्ररोग, जिसमें कभी भौं में और कभी आँखें धँसने से बड़ी पीड़ा होती है।

वातपात—संज्ञा पुं० [सं०] वायु का प्रबल वेग या झोंका (को०)।

वातपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक तरह का गठिया रोग (को०)।

वातपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान। २. भीम। भीमसेन। ३. वंचक। ठग (को०)।

वातपोथ—संज्ञा पुं० [सं०] पलाश।

वातपोथक—संज्ञा पुं० [सं०] पलाश (को०)।

वातप्रकृति—वि० [सं०] जिसकी प्रकृति वायुप्रधान हो।

वातप्रकोप—संज्ञा पुं० [सं०] वायु का बढ़ जाना। वायु की अधिकता।

विशेष—इससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातप्रमी—संज्ञा पुं०,स्त्री० [सं०] १. मृग। हिरन। २. नकुल। नेवला। ३. घोड़ा।

वातप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह। उ०—उदावर्त,... शोष सूखी खाँसी, श्वास ये वातप्रमेह के उपद्रव हैं।—माधव०, पृ० १८५।

वातप्रवाहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अतिसार रोग (को०)।

वातप्रशमिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायुबुखारा।

वातफुल्लान्त्र—संज्ञा पुं० [सं० वातफुल्लान्त्र] १. वायु के कारण आँतों का फूलना। २. पुष्फुस (को०)।

वातमण्डली—संज्ञा स्त्री० [सं० वातमण्डली] वात्याचक्र। बवंडर (को०)।

वातमज—संज्ञा पुं० [सं०] जिधर की हवा हो, उधर मुख करके दौड़नेवाला मृग। वातमृग।

वातमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपथ। आकाश (को०)।

वातमृग—संज्ञा पुं० [सं०] जिधर की हवा हो, उधर मुख करके दौड़नेवाला मृग। वातमृग।

वातरंग—संज्ञा पुं० [सं० वातरङ्ग] अश्वत्थ वृक्ष। पीपल।

वातर—वि० [सं०] १. तूफानी। झंझावात। २. तेज। चुस्त (को०)।

वातरक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें दुःसह और अनुचित आहार विहार से रक्त वायु से दूषित हो जाता है।

विशेष—इसमें पैर के तलवे या घुटने पर छोटी छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं, जठराग्नि मंद पड़ जाता है और शरीर दुर्बल होता जाता है।

वातरक्तघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] गुडुच नाम का वृक्ष (को०)।

वातरक्तारि—संज्ञा पुं० [सं०] गिलोय, गुरुच (को०)।

वातरथ—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ।

वातरायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. निष्प्रयोजन पुरुष। निकम्मा आदमी। २. बाण। ३. उन्मत्त। पागल। ४. कूट। शिखर। ५. पर्वत। ६. आरा। ७. सरल वृक्ष। ८. एक प्रकार का पेड़। ९. बाण की उड़ान। तीर से निशाने तक पहुँचने की दूरी (को०)।

वातरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्रधनुष। २. उत्कोच। घूस। रिश्वत। ३. तूफान। प्रबल हवा। आँधी (को०)।

वातरोग—संज्ञा पुं० [सं०] वात से उत्पन्न रोग। गठिया आदि (को०)।

वातरोहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी की जीभ पर चारों ओर काँटे के समान लाल दाने उभर आते हैं और उसका गला रुक सा जाता है। इसमें रोगी को बड़ा कष्ट होता है।

वातर्द्धि—संज्ञा पुं० [सं०] काठ और लोहे का बना हुआ पात्र।

वातल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चना। २. वायु। हवा (को०)।

वातल[2]—वि० १. वायुकारक। वायुजनक। २. तूफानी। हवादार (को०)। ३. हवा से फूला हुआ (को०)।

यौ०—वातलमण्डली = बवंडर। वात्याचक्र। वातलयोनि = योनि का दूषित होना।

वातवलासक ज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर। उ०—देह रूखी हो अंग जकड़ जावें कफ विशेष होय वह ज्वर वात और कफ से होता है इसको वातवलासक ज्वर कहते हैं।—माधव०, पृ० ३३।

वातवसन—संज्ञा पुं० [सं०] वातपट। पाल। उ०—तीरा तीरा वातवसन, दुर्गति है तीरा की।—मधुज्वाल, पृ० ९८।

वातवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूत्रनिरोध (को०)।

वात विलोडित—वि० [सं०] हवा से मथा हुआ। वायुक्षुब्ध। उ०—वात विलोडित जलप्रसार में ज्वार और भंगुरता का आभास मिलता है।—रस०, पृ० १७।

वातवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडकोष की सूजन। अंडवृद्धि। [को०]।

वातवैरी—संज्ञा पुं० [सं० वातवैरिन्] १. बादाम। २. एरंड। रेंड वृक्ष (को०)।

वातव्याधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] गठिया।

वातशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेडू। पेड़ू। २. निरहाणी।

वातशूल—संज्ञा पुं० [सं०] वायुविकारजन्य शूल। वायु के विकार से होनेवाली पीड़ा [को०]।

वातशोणित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वातरक्त' [को०]।

वातश्लेष्मज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर। उ०—जिसमें नाक से कफ का गिरना, पसीने का आना, भूख न लगना, संधियों में फूटन, निद्रा, देह भारी, मस्तक भारी, पीनस, खाँसी, पसीने का आना, शरीर में ताप ज्वर का मध्यम वेग ये वातश्लेष्मज्वर के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० १६।

वातसख—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

वातसह—वि० [सं०] वात रोग में हानि। रोहित का रोगी। जिसको वायु का रोग हो। (को०)।

वातसार—संज्ञा पुं० [सं०] विल्व। बेल।

वातसारथि—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

वातस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० वातस्कन्ध] आकाश का वह भाग जहाँ वायु चलती रहती है।

वातस्वन—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

वातहत—वि० [सं०] वायुजन्य उन्माद से ग्रस्त (को०)।

वातहा—वि० [सं०] वायुविकार शामक। वायुनाशक (को०)।

वाताड—संज्ञा पुं० [सं० वात+अड] अंडकोश का एक रोग, जिसमे एक अंड चलता रहता है।

वाता—संज्ञा पुं० [सं० वातृ] पवन। वायु (को०)।

वाताख्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह घर जिसमे दक्षिण और पूर्व की ओर दालान हो (को०)।

वाताट—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का घोडा। २ हिरन।

वातातिसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अतिसार जो वायुविकार से होता है।

विशेष—इसमे ललाई लिए हुए झागदार, रूखा, आम मिला हुआ दस्त होता है, और मल उतरते समय आवाज भी होती है।—माधव०, पृ० ४५।

वातात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान। २ भीमसेन (को०)।

वाताद—संज्ञा पुं० [सं०] बादाम।

वाताध्वा—सं० पुं० [सं०] झरोखा। मोखा। गवाक्ष। खिडकी (को०)।

वातापि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक असुर का नाम।

विशेष—आतापि और वातापि दो भाई थे। दोनो मिलकर ऋषियो को बहुत सताया करते थे। वातापि तो भेंड बन जाता था और उसका भाई आतापि उसे मारकर ब्राह्मणो को भोजन कराया करता था। जब ब्राह्मण लोग खा चुकते, तब वह वातापि का नाम लेकर पुकारता था और वह उनका पेट फाडकर निकल जाता था। इस प्रकार उन दोनो ने बहुत से ब्राह्मणो को मार डाला। एक दिन अगस्त्य ऋषि उन दोनो के घर आए। आतापि ने वातापि को मारकर अगस्त्य को खिलाया और फिर नाम लेकर पुकारने लगा। अगस्त्य जी ने डकार लेकर कहा कि वह तो मेरे पेट मे कभी का पच गया, अब कहाँ आता है।

यौ०—वातापिद्विट्, वातापिसूदन, वातापिहा=वातापि को मारने या पचा जानेवाले, अगस्त्य ऋषि।

वातापी—संज्ञा पुं० [सं० वातापि] दे० 'वातापि'। उ०—मुनियो की कोख के भेदन करनेवाले वातापी नामक असुर को जिन्होने पचा डाला था।—बृहत्संहिता, पृ० ७६।

वाताप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ उदक। जल। २ सोम। ३. शोथ। ४ उफान। खमीर (को०)।

वाताम—संज्ञा पुं० [सं०] बादाम।

वातामोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

वाताय—संज्ञा पुं० [सं०] पर्ण। पत्ता (को०)।

वातायन—संज्ञा [सं०] १ गवाक्ष। झरोखा। छोटी खिडकी। २ घोडा। ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम। ४ रामायण के अनुसार एक जनपद का नाम। ५ अलिंद, द्वारमंडप (को०)। ६ मडप। माँडो (को०)।

वातायमान—वि० [सं०] वायु की तरह गतिशील (को०)।

वातायु—संज्ञा पुं० [सं०] हिरन।

वातारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एरड। रेंड। २ भरनमूली। ३ सिहारू। निर्गुंडी। ४ अजवाइन। ५ थूहर। सेंहुड। ६. वायविडग। ७ सूरन। जिमीकद। ८ भिलावाँ। ९ सतावर। १० तिलक वृक्ष। ११ नील का पौधा।

वातालि, वाताली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वात्या। आँधी। तूफान (को०)।

वातावरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वी के चारो ओर रहनेवाली वायु। २ परिस्थिति। ३ आस पास की स्थिति। उ०—प्रगमित हैं वातावरण, नमितमुख साध्य कमल।—अपरा, पृ० ३८।

वातावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] बवडर। वात्याचक्र (को०)।

वाताश—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प (को०)।

वाताशी—संज्ञा पुं० [सं० वाताशिन्] साँप। सर्प (को०)।

वाताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्रगामी घोडा (को०)।

वाताष्ठीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उदररोग जिसमे नाभि के नीचे वायु की गाँठ सी पड जाती है, जो इधर उधर रेंगती सी जान पडती है। यह कभी कभी मूत्र का अवरोध भी करती है।

वातास—संज्ञा स्त्री० [सं० वात, हिं० बतास] हवा। वायु। बयार। उ०—आज जाने कैसी वातास, छोडती सौरभ श्लथ उच्छ्वास।—गुंजन, पृ० ५३।

वाताहत—वि० [सं०] वायु से आहत, हिलाया हुआ। वायुकपित। उ०—दिक्पिंजर मे बद्ध गजाधिप सा विनतानन, वाताहत हो गगन आर्त करता गुरु गर्जन।—रश्मि०, पृ० ५४। २ गठिया रोग से ग्रस्त (को०)।

वाताहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायु का प्रचंड झोका (को०)।

वाताहार—वि० [सं०] वायु पीकर जीनेवाला (को०)।

वातिगण—संज्ञा पुं० [सं० वातिङ्गण] दे० 'वातिगम' (को०)।

वाति—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। २ सूर्य। ३ चद्रमा।

वातिक¹—वि० [सं०] [स्त्री० वातिकी] १ तूफानी। २ पागल। उन्माद से पीडित। ३ सधिवात या गठिया रोगवाला। ४ वायु के कारण उत्पन्न। वातजन्य। उ०—ऐसे शूलो को वातिक शूल कहते हैं।—माधव०, पृ० १५९।

वातिक²—संज्ञा पुं० १ पपीहा। २ वह व्यक्ति जो वातव्याधि से प्रभावित हो। पागल। उन्मत्त। वातुल। ३ चाटुकार। ४ एक प्रकार का ज्वर। ५ देवयोनि विशेष। ६ ऐंद्रजालिक। बाजीगर। ७ विष वैद्य (को०)।

वातिग—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वातिगम'।

वातिगम—संज्ञा पुं० [सं०] १ भंटा। बैगन। २ वह व्यक्ति जो धातुविज्ञान का ज्ञाता हो। खनिजविज्ञान का वेत्ता (को०)।

वातीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का छोटा पक्षी।

वातीय¹—संज्ञा पु० [सं०] चावल का माँड [को०]।

वातीय²—वि० वायुसबधी [को०]।

वातुल¹—वि० [सं०] १ वायुप्रधान। २ वायु के कोप से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। बातूनी। बकवादी (को०)। ३ सविवात से पीडित (को०)।

वातुल²—संज्ञा पु० १ बावला। उन्मत्त। २ पागल। वायु का आवर्त। बवडर (को०)।

वातुलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडा चमगादड [को०]।

वातूल—वि० [सं०] दे० 'वातुल'। उ०—उठता वह वातूल वेग से है कब से।—साकेत, पृ० ४०१।

वातूलीभ्रम—संज्ञा पु० [सं०] बवडर। वात्याचक्र [को०]।

वातृ—संज्ञा पु० [सं०] वायु [को०]।

वातोदर—संज्ञा पु० [सं०] एक वातरोग।

विशेष—इसमे हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पसली, पेट, कमर और पीठ मे पीडा होती है, सूखी खाँसी आती है, शरीर भारी रहता है, अगो मे ऐंठन होती है, और मल का अवरोध हो जाता है। पेट मे कभी कभी गुडगुडाहट भी होती है और पेट फूला रहता है। पेट ठोकने से ऐसा शब्द निकलता है, जैसे हवा भरी हुई मशक ठोकने से।

वातोना—संज्ञा पु० [सं०] गोजिह्वा नाम का एक पौधा [को०]।

वातोर्मी—संज्ञा पु० [सं०] ग्यारह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे मगण, भगण, तगण और अत मे दो गुरु होते है। जैसे,—मो भाँती गो गहि बीरा धरो जू। नीके कौरो सह युद्धै करो जू। पाओगे अर्जुन या रीति मुक्ति। वातोर्मी सो समुझौ आत्मयुक्ति।—छद०, पृष्ठ १६१।

वातोलवन—संज्ञा पु० [सं० वातोलम्वन] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

विशेष—इसमे रोगी को श्वास, खाँसी, भ्रम और मूर्छा होती है तथा वह प्रलाप करता है। उसकी पसलियो मे पीड़ा होती है, वह जभाई अधिक लेता है और उसके मुँह का स्वाद कसैला रहता है।

वात्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बवडर। २ तूफान। आँधी। उ०—आरंभिक वात्या उद्गम मैं अब प्रकृति बन रहा सस्तृति का।—कामायनी, पृ० ७६।

वात्याचक्र—संज्ञा पु० [सं०] १. बवडर। २ बावेला (लाक्ष०)। उ०—कारण समझ मे नहीं आता—यह वात्याचक्र क्यो ?—चद्र०, पृ० १८१।

वात्स—संज्ञा पु० [सं०] १ एक गोत्रकार ऋषि का नाम। २ एक साम का नाम।

वात्सक—संज्ञा पु० [सं०] बछडो का समूह या झुड [को०]।

वात्सरिक—संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिषी।

वात्सल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम। स्नेह। १. वह स्नेह जो पिता या माता के हृदय मे संतति के प्रति होता है। माता पिता का प्रेम।

विशेष—साहित्य मे जिस प्रकार नायक नायिका के रतिभाव के वर्णन द्वारा शृंगार रस माना जाता है, उसी प्रकार कुछ लोग माता पिता के रतिभाव के विभाव, अनुभाव और सचारी सहित वर्णन को वात्सल्य रस मानते हैं। पर यह सर्वसमत नही है। अधिकाश लोग दापत्य रति के अतिरिक्त और प्रकार के रति भाव को 'भाव' ही मानते हैं।

वात्सि, वात्सी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मण और शूद्रा के ससर्ग से उत्पन्न कन्या [को०]।

वात्सिपुत्र, वात्सीपुत्र—संज्ञा पु० [सं०] नाई। नापित [को०]।

वात्स्य—संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋषि का नाम। ३ एक गोत्र जिसमे ओर्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवान नामक पाँच प्रवर होते हैं।

वात्स्यायन—संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋषि का नाम। २ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। ३ कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाथुरी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पुरानी जाति का नाम। उ०—अन्य जातियाँ भी थी—हाडिक, बागुडि के पूर्वज वाथुरी तथा चूहडे।—प्रा० भा० प०, पृ०, १८१।

वाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह बातचीत जो किसी तत्व के निर्णय के लिये हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील।

विशेष—'वाद' न्याय के सोलह पदार्थों मे दसवाँ पदार्थ माना गया है। जब किसी बात के सबध मे एक कहता है कि यह इस प्रकार है और दूसरा कहता है कि नहीं, इस प्रकार है, और दोनो अपने अपने पक्ष की युक्तियो को सामने रखते हुए कथोपकथन मे प्रवृत्त होते है, तब वह कथोपकथन 'वाद' कहलाता है। यह वाद शास्त्रीय नियमो के अनुसार होता है, और उसम दोनो अपने अपने कथन को प्रमाणो द्वारा पुष्ट करते हुए दूसरे के प्रमाणो का खंडन करते हैं। यदि कोई निग्रहस्थान मे आ जाता है, तो उसका पक्ष गिरा हुआ माना जाता है और वाद समाप्त हो जाता है।

२. किसी पक्ष के तत्वज्ञो द्वारा निश्चित सिद्धात। उसूल। जैसे—अद्वैतवाद, आरंभवाद, परिणामवाद। ३ बहस। झगडा। ४. भाषण (को०)। ५ वक्तव्य। उक्ति। आरोप (को०)। ५ वर्णन। वृत्त (को०)। ६ उत्तर (को०)। ७. विवृति। व्याख्या (को०)। ८ ध्वनन। ध्वनि (को०)। ९. विवरण। अफवाह (को०)। १० अभियोग। नालिश। (को०)। ११ समति। सलाह (को०)। १२ अनुबध। इकरारनामा (को०)।

वादक—संज्ञा पु० [सं०] १. बाजा बजानेवाला। २ वक्ता। ३. वाद करनेवाला। तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादकर—वि० [सं०] दे० 'वादकृत्' [को०]।

वादकर्ता—संज्ञा पु० [सं० वादकर्तृ] वाद्य बजानेवाला। वादक [को०]।

वादकृत्—वि० [सं०], जो झगडे या विवाद का कारण हो। विवाद करनेवाला [को०]।

वादग्रस्त -वि० [सं०] १ किसी वाद का आग्रही। उ०—इसका प्रमाण वादग्रस्त आलोचकों की प्रवृत्ति है।—आचार्य०, पृ० १४१। २ अनिश्चित। विवादास्पद (को०)।

वादचंचु—संज्ञा पुं० [सं० वादचञ्चु] १ शास्त्रार्थ करने में पटु। वाद करने में दक्ष। २ हाजिरजवाब। श्लेषगर्भित उत्तर देने में पटु व्यक्ति (को०)।

वाददंड -संज्ञा, पुं० [सं० वाददण्ड] सारंगी आदि बाजों के बजाने की कमानी।

वादद—वि० [सं०] प्रतिस्पर्धी [को०]।

वादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाजा बजाना। २ बाजा। ३ वह जो संगीतवाद्य को बजाता हो (को०)।

वादनक—संज्ञा पुं० [सं०] बाजा।

वादनीय—संज्ञा पुं० [सं०] नरसल। सर [को०]।

वादप्रतिवाद - संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला कथोपकथन। बहस।

वादयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] विवाद। तर्कवितर्क [को०]।

वादरंग -संज्ञा पुं० [सं० वादरङ्ग] १ अश्वत्थ का वृक्ष। २ गूलर का वृक्ष (को०)।

वादर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपास के सूत का कपड़ा। २ कपास का पेड़। ३ बेर का पेड़।

वादरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपास।

वादरायण—संज्ञा पुं० [सं०] व्यासदेव। वेदव्यास।

वादरायणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यास के पुत्र, शुकदेव। २ व्यासदेव।

वादरि—संज्ञा पुं० [सं०] वादरायण के पिता।

विशेष—इनका मत वेदांत दर्शन में प्राय उद्धृत मिलता है।

वादरिक—संज्ञा पुं० [सं०] बेर बीननेवाला।

वादल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मधुयष्टिका। जेठी मधु। मधु। मुलेठी। २. अंधकारमय दिवस (को०)।

वादवादी—संज्ञा पुं० [सं० वादवादिन्] जैन [को०]।

वादविवाद—संज्ञा पुं० [सं०] शाब्दिक झगड़ा। बहस।

यौ०—वादविवाद प्रतियोगिता = वह वादविवाद जिसमें विभिन्न प्रतियोगी किसी निर्धारित विषय के पक्षविपक्ष में भाषण करते हैं और निर्णायकों की संमति से सर्वोत्तम वक्ता पुरस्कृत होते है।

वादसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपकार करना। २ तर्क करना या तर्क में प्रमाण देना।

वादा—संज्ञा पुं० [अ० वाइदह] (१) नियत समय या घड़ी।

मुहा०—वादा आना = १ घड़ी आ पहुंचना। नियत समय का प्राप्त होना। २ काल आना। मृत्यु का समय आना। वादा पूरा होना = जीवनकाल समाप्त होना।

२ इस बात का विश्वास दिलाना कि मैं अमुक काम करूँगा। वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।

मुहा०—वादा करना = कोई बात या काम करने के लिये वचन देना। प्रतिज्ञा करना। वादा पूरा करना = वचन के अनुसार काम पूरा करना। प्रतिज्ञा पूर्ण करना। वादा टालना = जिस समय कोई काम करने का वचन दिया हो, उस समय न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। वादा खिलाफी करना = बात पूरी न करना। कथन के विरुद्ध कार्य करना। वादा रखाना = वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना। उ०—सौंह करि कहत हौं, एहो प्यारे रघुनाथ आवति रखाए वादो उनही के घर सो।—रघुनाथ (शब्द०)। वादे से निकल जाना = वचन से पलट जाना। कहकर न करना। कहे के खिलाफ करना। कहकर मुकर जाना। उ०—नवाब साहब ने शरई कसम खाई और कहा, अगर अबकी वादे से निकल जाऊँ तो शरीफ नहीं पाजी समझना, चमार समझना—पैर कु०, पृ० २५।

यौ०—वादाखिलाफ = वादा पूरा न करनेवाला। वादाखिलाफी = प्रतिज्ञा भंग। वचन पूरा न करना। वादागाह = सहेट स्थल। वह स्थान जहाँ मिलने की बात तै हुई हो। वादाफरामोश, वादाशिकन = वचन भंग करनेवाला। वादा पूरा न करनेवाला।

वादानुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] तर्क वितर्क। शास्त्रार्थ बहस।

वादान्य—वि० [सं०] उदार। वदान्य [को०]।

वादाम—संज्ञा पुं० [सं०] बादाम [को०]।

वादाल—संज्ञा पुं० [सं०] सहस्रदंष्ट्र नामक मछली।

वादाशिकनी [संज्ञा स्त्री०] [फा०] प्रतिज्ञा भंग। वादखिलाफी [को०]।

वादि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्वान्। बुद्धिमान। चतुर। उ०—लह्यो जीति वह वादिगन जिन वादीश्वर नाम।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० १०२। २ वक्ता। बोलनेवाला (को०)।

वादि²—अव्य०, [हिं० बादि]। दे० 'बादि'।

वादिक¹—वि० [सं०] १ तार्किक। वाद करनेवाला।

वादिक²—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाजीगर। जादूगर। ऐंद्रजालिक। २ बंदी। भाँट [को०]।

वादित¹ वि० [सं०] १ बजाया हुआ। नादित। २ जो बोलने के लिये प्रेरित कराया गया हो। उच्चरित कराया हुआ (को०)।

वादित²—संज्ञा पुं० [सं०] वाद्य संगीत [को०]।

वादितव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो कहे या बजाए जाने योग्य हो। २ वाद्य संगीत [को०]।

वादित्र—संज्ञा पुं० [सं०] बाद्य। बाजा। उ०—पै मिलि बैठन जबै सबै रँगि जात एक रँग। भिन्न भिन्न वादित्र यथा मिलि बजत एक सँग।—प्रेमघन० भा० १ पृ० ४। २ वाद्यसंगीत (को०)।

यौ० - वादित्रगण = वाद्य समूह। वाद्यश्रेणी।

वादित्रलगुड—संज्ञा पुं० [सं०] नगाड़ा, ढोल आदि बजाने की लकड़ी।

वादिर—संज्ञा पुं० [सं०] बेर के समान छोटे फलवाला वृक्ष [को०]।

वादिराज—संज्ञा पुं० [सं० वादिराज] मंजुघोष।

वादिश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्वान् पुरुष। विद्याव्यसनी। २ संत। ऋषि। मुनि [को०]।

वादिश²—वि० सत्यवक्ता। साधुवादी [को०]।

वादींद्र—संज्ञा [सं० वादीन्द्र] मंजुघोष।

वादी —संज्ञा पुं० [सं० वादिन्] १ वक्ता। बोलनेवाला। २ किसी वाद का पहले पहल प्रस्ताव करनेवाला जिसका प्रतिवादी की ओर से खंडन होता है। ३ व्यवहार में किसी के प्रति कोई अभियोग चलानेवाला। मुकदमा लानेवाला। फरियादी। मुद्दई। ४. व्याख्याता। अध्यापक (को०)। ५ राग का मुख्य स्वर (को०)। ६. रासायनिक। कीमियागर (को०)। ७ गायक। ८. बाजा बजानेवाला (को०)। ९. एक बुद्ध (को०)।

वादी[2]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ घाटी । २. नदीतट का मैदान । ३ घना जगल [को०] ।

वादीला(पु)—वि० [स० वादिन्+हिं० ला (प्रत्य०)] वाद करनेवाला । हठीला । हठवाला । उ०—वादीला बनवा रै, जितै कलाया जोर ।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २० ।

वादु(पु)—संज्ञा पु० [सं० वाद] वाद । सवाद । बातचीत । उ०—तेल तवोल का वादु ।—अकबरी०, पृ० १५० ।

वादूलि—संज्ञा पुं० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वाद्गल—संज्ञा पु० [स०] ओष्ठ । ओष्ठ ।

वाद्य—संज्ञा पु० [स०] १ बजाना । २ बाजा । ३ बाजे की ध्वनि या स्वर (को०) ।

यौ० वाद्यकर, वाद्यधर=सगीतज्ञ । वाद्यनिर्घोष=वाद्य की ध्वनि । बाजे की आवाज वाद्यभाड

वाद्यक—संज्ञा पु० [स०] १ बाजा बजानेवाला । २ वाद्य (को०) ।

वाद्यभाड—संज्ञा पु० [स० वाद्यभाण्ड] १ मुरज आदि बाजे । २ बाजो का समूह । वाद्ययंत्रो का ढेर (को०) ।

वाद्यमान—संज्ञा पु० [स०] १ वह जो बजने या बोलने मे प्रवृत्त किया जाय । २. वाद्य सगीत [को०] ।

वाध, वाधन—संज्ञा पु० [स०] बाधा । रोक । प्रतिबध [को०] ।

वाधल—संज्ञा पुं० [स०] तैत्तरीय सहिता से सबधित एक श्रौत सूत्र [को०] ।

वाधा—संज्ञा स्त्री० [स०] १. पीडा । २ निषेध । रोक [को०] ।

वाधुवय, वाधूवय—संज्ञा पु० [स०] पाणिग्रहण । विवाह [को०] ।

वाधुल—संज्ञा पु० [स०] १ एक व्यक्ति का नाम । २ वह व्यक्ति जो सस्कार करे । सस्कार करनेवाला [को०] ।

वाधू—संज्ञा पु० [स०] १ नाव का डाँड । २ नौका । नाव ।

वाधूल—संज्ञा पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम । इस गोत्र के लोग वाधौल कहलाते है ।

वाध्रीएास—संज्ञा पु० [स०] गैडा [को०] ।

वाध्यूश्व—संज्ञा पु० [स०] अग्नि ।

वान[1]—संज्ञा पु० [स०] १ कट । गोनटी । चटाई । २ पानी मे लगनेवाला वायु का झोका । ३ गति । ४ सुरग । ५ सौरभ । सुगध । ६ सूखा फल । ७ बाना । ८ वनो का समूह या घना जगल (को०) । ९ बुनाई । बुनने की क्रिया (को०) । १० घर की दीवार का छेद (को०) । ११ चतुर व्यक्ति (को०) । १२ यमराज (को०) । १३ एक प्रकार का वसलोचन (को०) ।

वान[2]—वि० खिला हुआ । प्रफुल्लित । २ हवा से सूखा हुआ । शुष्क । ३ वन का । वन सबधी । जंगली [को०] ।

वान(पु)[3]—संज्ञा, स्त्री० [स० वाणी] वाणी । वचन । प्रतिज्ञा । उ०—निज्ज वान सुप्रमान । वान नीमान वधै सुर ।—पृ० रा० ।

वान(पु)[4]—संज्ञा पु० [स० बाण] दे० 'बाण' । उ०—करे कुभ चूर । भरे वान भूर ।—पृ० रा०, २ । २८ ।

वानक—संज्ञा पु० [स०] ब्रह्मचर्य की अवस्था [को०] ।

वानदड—संज्ञा पु० [स० वानदण्ड] वह लकडी जिसमे बाना लपेटकर बुना जाता है ।

वानप्रस्थ—संज्ञा पुं० [स०] १. महुए का पेड । मधूक वृक्ष । २ पलाश । ३ प्राचीन भारतीय आर्यो के अनुसार मनुष्य के चार विभागो या आश्रमो मे से तीसरा विभाग या आश्रम ।

विशेष—यह आश्रम गार्हस्थ्य के पीछे और सन्यास के पहले पडता है । शास्त्र के अनुसार पचास वर्ष के ऊपर हो जाने पर और गार्हस्थ्य आश्रम से चित्त हट जाने पर मनुष्य इस आश्रम का अधिकारी होता है । इस आश्रम मे प्रवेश करनेवाले को नगर, गाँव या बस्ती मे अलग वन मे रहना, जगलो फल खाना, और उन्ही से पचमहायज्ञादि करना चाहिए शय्या, वाहन, वस्त्र, पलग आदि सब त्याग देना चाहिए । स्त्री को चाहे पुत्र के पास छोडे, चाहे अपने साथ वन मे ले जाय । जब इस आश्रम मे रहकर मनुष्य पूर्ण वैराग्यसपन्न हो जाय, तब उसे सन्यास लेना चाहिए ।

४ उदासी । वैरागी । साधु (को०) ।

वानप्रस्थी—वि० [स० वानप्रस्थिन्] वानप्रस्थ के योग्य । वानप्रस्थ से सबधित । विरक्त । सर्वत्यागी । उ०—निर्मल वानप्रस्थी मनोवृत्ति मे बरामदे मे टहल रही थी ।—नो दुनिया, पृ० १०० ।

वानप्रस्थ्य—संज्ञा पु० [स०] वानप्रस्थ की स्थिति या अवस्था [को०] ।

वानर[1]—संज्ञा पु० [स०] १ बदर । २ दोहे का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे १० गुरु और २८ लघु होते हैं । यथा—जड चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार । सत हस गुण गहहिं पै परिहरि वारि विकार । ३. एक प्रकार का गधद्रव्य । राल । यक्षधूप (को०) ।

वानर[2]—संज्ञा पु० [देश०] राठौड क्षत्रियो की एक शाखा । उ०—बन्नर नील जिसौ बल वानर ।—रा० रू०, पृ० १४६ ।

वानरकेतन, वानरकेतु, वानरध्वज—संज्ञा पु० [स०] कपिध्वज । अर्जुन [को०] ।

वानरप्रिय—संज्ञा पु० [स०] खिरनी का वृक्ष [को०] ।

वानराक्ष—संज्ञा पु० [स०] जगली बकरा [को०] ।

वानराघात—संज्ञा पु० [स०] लोध्र वृक्ष [को०] ।

वानरापसद—संज्ञा पुं० [स०] उपेक्षणीय । तुच्छ ।

वानरी[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] १ केवाँच । कपिकच्छु । २ बदर की मादा । बँदरिया । मर्कटी ।

वानरी[2]—वि० वानर का । वानर सबधी [को०] ।

वानरेद्र—संज्ञा पु० [स० वानरेंद्र] १ हनुमान । २ सुग्रीव [को०] ।

वानल—संज्ञा पु० [स०] काली वनतुलसी ।

वानवासक—संज्ञा पु० [सं०] वैश्य पुरुष और वैदेही स्त्री से उत्पन्न सतान [को०] ।

वानवासिका—संज्ञा स्त्री० [स०] सोलह मात्राओ के छदो या चौपाई का एक भेद जिसमे नवी और बारहवी मात्राएँ लघु पडती है । जैसे,—'सीय लखन जेहि बिधि सुख लहही ।

वानस्पत्य[1]—संज्ञा पु० [स०] १ वह वृक्ष जिसमे पहले फूल लगकर पीछे फल लगते है । जैसे, आम, जामुन आदि । २ वनस्पति का समूह ।

वानस्पत्य¹—वि० १ वृक्ष संबंधी। वृक्ष से प्राप्त होनेवाला। वनस्पति निर्मित, जैसे सोम। २ वृक्ष के नीचे रहनेवाला (को०)।

वाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटेर पक्षी। २ सूखा फल (को०)।

वानायु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारत के पश्चिमोत्तर स्थित एक देश का प्राचीन नाम। २ हिरन [को०]।

वानायुज—संज्ञा पुं० [सं०] वानायु देश का घोड़ा।

वानिक—वि० [सं०] वनवासी [को०]।

वानिनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वणिज (वणिक) प्रा० बनिश्र, बनो] बनियाइन। वणिक् का पत्नी। उ०—
वानिनि वीथी माँडि सए मदस हि नागरि।—कीर्ति०, पृ० ३२।

वानीर¹—संज्ञा पुं० [सं०] कैवर्त मुस्तक। केवटी मोथा। कुट। गोन।

वानीय²—वि० बिनने योग्य [को०]।

वानीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेंत। उ० जिनके तीर वानीर के भिरे मदकल कूजित विहगमों से शोभित हैं।—श्यामा०, पृ० ४०। २ पाकड़ का पेड़। पक्कड़।

वानीरक—संज्ञा पुं० [सं०] मूँज।

वानीरज—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूँज नाम की घास। २ कुष्ठ नाम का वृक्ष [को०]।

वानेत(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० बान + एत (प्रत्य०)] दे० 'बानैत'। उ०—जियौ वानेत उदल चढंत वैंस मरेत स्वर्ग गयौ।—प० रासो, पृ० १४६।

वानेय¹—संज्ञा पुं० [सं०] गोन नाम का तृण जो पानी में होता है। कैवर्त मुस्तक।

वानेय²—वि० १ जलसंबंधी। जलीय। २. वनसंबंधी। वन का [को०]।

वान्य—वि० [सं०] दे० 'वानेय'।

वान्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनसमूह। २ मृतवत्सा गौ [को०]।

वाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोना। वपन। वयन। २ मुंडन। ३ क्षेत्र। खेत। ४ बुनना। ५ वप्ता। बोनेवाला (को०)। ६ बीया। बीज (को०)।

विशेष—हिंदी के पितावाचक शब्द 'बाप' का भी यह पूर्वकालीन रूप है।

वापक—संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोनेवाला।

वापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीज बोना। २ क्षौर। मुंडन (को०)।

वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ। फिरा हुआ।

मुहा०—वापस आना = किसी स्थान पर जाकर वहाँ से फिर आ जाना। लौट आना। वापस करना = (१) किसी आए हुए मनुष्य को फिर वहीं भेजना, जहाँ से वह आया हो। लौटाना। (२) किसी वस्तु को मोल लेकर फिर दूकानदार को दे देना और उससे दाम ले लेना। जैसे, यह छाता अच्छा नहीं है, वापस कर दो। (३) दे० 'वापस लेना'। (४) किसी से ली हुई वस्तु को फिर दे देना। वापस जाना = फिर वहीं जाना, जहाँ से आया हो। लौट जाना। वापस लेना = दी हुई या बेचा हुई वस्तु को पुन देने या बेचनेवाले द्वारा ले लेना। वापस होना = (१) लौट जाना। (२) किसी मोल ली हुई वस्तु का फिर दूकानदार को उससे दाम लेकर दे दिया जाना। फेरा जाना। जैसे,—अब यह छाता वापस नहीं हो सकता। (३) दी हुई वस्तु का फिर मिल जाना या ली हुई वस्तु का फिर दे दिया जाना।

वापसी—वि० [फा०] अंतिम। आखिरी। जैसे, वापसी साँस [को०]।

वापसी¹—वि० [फा० वापस] लौटा हुआ या फेरा हुआ। जैसे,—वापसी डाक।

वापसी²—संज्ञा स्त्री० १ लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्तन। जैसे,— वापसी के समय लेते जाना। २ किसी दी हुई वस्तु को फिर लेने या ली हुई वस्तु को फिर देने का काम या भाव।

वापारु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यापार] दे० 'व्यापार'। उ०—सुख दुख अरु पुन्न पापु भला बुरा वापारु।—प्राण०, पृ० २११।

वापि—संज्ञा स्त्री० [सं० वापि, वापी] दे० 'वापी'। उ०—किधौं पेट यस किधौं, वापि किधौं सागर है। जेतौ जल परै, तेतो सकल समातु है।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० १२१।

वापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बड़ा चौड़ा कूआँ या जलाशय। वापी। बावली।

वापित¹—वि० [सं०] १ बोया हुआ। २ मुंडित। मूँडा हुआ।

वापित²—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान्य। बोवारी धान [को०]।

वापी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।

वापी —वि० [सं० वापिन्] बोनेवाला [को०]।

वापीह—संज्ञा पुं० [सं०] पपीहा। चातक [को०]।

वाप्य —संज्ञा पुं० [सं०] १ कुट। २ बोवारी धान। ३. बावली का पानी।

वाबस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लगाव। संबंध [को०]।

वाबस्ता—वि० [फा० वाबस्तह्] १ बँधा हुआ। संबद्ध। २. संलग्न। ३ संबंधी। आत्मीय [को०]।

वाभन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ब्राह्मण] दे० 'ब्राह्मण'। उ०—बाभन को जनम जनेऊ मेलि जानि बूझ, जीभ ही बिगारिबे को याच्यो जन जन मे।—पकवरी०, पृ० ११५।

वाम¹—वि० [सं०] १ बायाँ दक्षिण या दाहिने का उलटा। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। अहित मे तत्पर। उ०—विधि वाम की करनी कठिन जेइ मातु कीन्ही बावरी।—तुलसी (शब्द०)। ३ टेढ़ा। कुटिल। ४ खोटा। दुष्ट। नीच। ५ जो अच्छा न हो। बुरा। ६ बाईं ओर स्थित या विद्यमान (को०)। ७ सुंदर। प्रिय। लावण्यमय। जैसे, वामलोचना, वामोरु (को०)। ८ अल्प। लघु (को०)। ९ क्रूर। कठोर (को०)।

वाम²—संज्ञा पुं० १ कामदेव। २ एक रुद्र का नाम। वामदेव। शिव। ३ वरुण। ४ कुच। स्तन। ५ धन। ६ हृदीक के एक पुत्र का नाम। ७ कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ८ चंद्रमा के रथ के एक घोड़े का नाम। ९. २४ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगण और एक यगण होता है। इसे मंजरी, करंद और माधवी भी कहते हैं। यह एक प्रकार का सवैया ही है। जैसे,– जु लोक यथामति वेद पढ़ै सह आगम औ दस आठ सयाने। लहैं भलि वाम अरु धनधाम तु काह भयो बिनु रामहिं जाने।—छंद०, पृ० २४५।

१०. निषिद्ध आचरण या कार्य । कदाचार । वामाचार (को०) । ११ बायाँ पार्श्व या हाथ (को०) । १२ प्राणी । जतु (को०) । १३. साँप (को०)। १४ वमन । मतली (को०) । १५ सुदरतम वा अभीप्सित वस्तु । प्रिय वस्तु या व्यक्ति (को०) । १६. दुर्भाग्य । अभाग्य । सकट (को०) ।

वाम(पु)[३]—सज्ञा स्त्री० [स० वामा] दे० 'वामा' । उ०—नवल त्रिभग कदम तर ठाढो, मोहत सब व्रज वाम ।—गीत (शब्द०) ।

वाम[४]—सज्ञा पुं० [फा०] १ ऋण । कर्ज । २ रग । वर्ण (को०) ।

वामक[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ अंगभगी का एक भेद । २ बौद्ध ग्रथो के अनुसार एक चक्रवर्ती । ३ एक संकर जाति (को०) ।

वामक[२]—१ बायाँ । २ विरुद्ध । विपरीत (को०) ।

वामकक्ष—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम जिनके गोत्र के लोग वामकक्षायन कहे जाते थे ।

वामकी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी जिसकी पूजा प्राय. जादूगर आदि करते हैं ।

वामत क्रि० वि० [स० वामतस्] बाईं ओर । बाईं तरफ (को०) ।

वामता—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रतिकूलता । विपरीतता । उ०—बुद्धि से तो क्षुद्र मानव भी चलाता काम अपने । वामता से हीन विधि की शक्ति क्या होती प्रमाणित ।—इत्यलम्, पृ० ११४ ।

वामदृक्—सज्ञा स्त्री० [स० वामदृश्] सु दर नेत्रोवाली औरत । स्त्री महिला ।

वामदेव[१]—सज्ञा पु० [स०] १. शिव महादेव । २ गौतम गोत्रीय एक वैदिक ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मडल के अधिकाश सूक्तो के द्रष्टा थे । ३ दशरथ के एक मंत्री का नाम ।

वामदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ सावित्री ।

वामदेव्य[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक साम का नाम । २ एक ऋषि का नाम । ३ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक पर्वत का नाम ।

वामदेव्य[२]—वि० वामदेव ऋषि से उत्पन्न (को०) ।

वामन[१]—वि० [सं०] १ बौना । छोटे डील का । २. ह्रस्व । खर्व । ३ विनत । नम्र (को०) । ४ पूज्य । अभिवाद्य (को०) । ५ दुष्ट । नीच । ओछा (को०) ।

वामन[२]—सज्ञा पुं० १ विष्णु । २ शिव । ३ एक दिग्गज का नाम । ४. एक प्रकार का घोडा, जो डीलडौल मे छोटा होता है । ५ दनु के एक पुत्र का नाम । ६ एक नाग का नाम । ७ गरुडवशी एक पक्षी का नाम । ८ क्रौंच द्वीप के एक पर्वत का नाम । ६ विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था । १० अठारह पुराणो मे से एक । ११ नीले रग का बकरा । उ०—नीले रग के छाग को वामन कहते हैं ।—बृहत्०, पृ० ३०८ । १२ सस्कृत साहित्य मे रीति सप्रदाय की प्रतिष्ठा करनेवाले एक आचार्य । ११ बौना या ठिगना व्यक्ति (को०) । १२ अकोट या अकोल का वृक्ष (को०) । १३. एक मास (को०) । १४ पाणिनि के सूत्र पर 'काशिका वृत्ति' नामक भाष्य के प्रणेता (को०) ।

वामनक—सज्ञा पु० [स०] १. क्रौंच द्वीप का एक पर्वत । २ छोटे कद का आदमी । ३ ठिगनापन । बौना (को०) ।

वामनद्वादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पर्व तिथि जो भाद्र शुक्ल १२ को पडती है । इस दिन व्रत करके विष्णु भगवान् के वामनावतार की पूजा की जाती है ।

वामनपुराण—सज्ञा पुं० [स०] अट्ठारह पुराणो मे से एक पुराण ।

वामनयना सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर नेत्रोवाली स्त्री (को०) ।

वामना—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम ।

वामनिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्कद की अनुचरी एक माता या मातृका का नाम । २ बौनी स्त्री ।

वामनी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बौने आकार की स्त्री । २ घोडी । ३ एक प्रकार का नारी रोग जो योनि मे होता है । वामिनी । ४. एक प्रकार की स्त्री (को०) ।

वामनी[२]—वि० वाम अर्थात् धन लानेवाली ।

वामनीकृत—वि० [स०] छोटा किया हुआ । नम्र किया हुआ । झुकाया हुआ (को०) ।

वामनेत्र—सज्ञा पु० [सं०] दीर्घ ईकार (को०) ।

वामपथ—सज्ञा पु० [स० वाम+पथ] दे० 'वाममार्ग' । उ०—जन बलवर्धन के हेतु वामपथ का चालन ।—अपरा पृ० २१२ ।

वामभ्रू—सज्ञा स्त्री [स०] सुभ्रु । सुंदर भौहोवाली स्त्री (को०) ।

वाममार्ग—सज्ञा पुं० [स०] वेदविहित दक्षिण मार्ग से भिन्न तांत्रिक मत ।

विशेष—वाम मार्ग मे मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा, व्यभिचार आदि निषिद्ध बातो का विधान रहता है । तांत्रिक मत की दक्षिण मार्ग शाखा भी है जिसमे दक्षिणाकाली, शिव, विष्णु आदि की उपासना का विशिष्ट विधान है ।

वामरथ—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिसके गोत्र वाले वामरथ्य कहलाते थे ।

वामलूर—सज्ञा पु० [स०] दीमक का भीटा । वल्मीक । बाँबी ।

वामलोचना—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदरी स्त्री ।

वामागिनी, वामागी—सज्ञा स्त्री० [स० वामाङ्गिनी, वामाङ्गी] पत्नी । भार्या (को०) ।

वामा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री । २ दुर्गा । ३ लक्ष्मी (को०) । ४ सरस्वती (को०) । ५ मनोहारिणी स्त्री । भ्रूविलासवती सुदरी रमणी (को०) । ६ दस अक्षरो के एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और भगण तथा अत मे एक गुरु होता है । यथा—तू यो भग वामा तें मरना । टेढ़ धनु ते ज्यो तीर चला । ये हैं दुख नाना की जननो । ऐसी हम गाथा ते अकनी ।—छंद०., पृ० १५४ ।

वामाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सुदर स्त्री । २. दीर्घ ईकार । वामनेत्र ।

वामागम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वामाचार' (को०) ।

वामाचार—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिक मत का एक भेद जिसमें पंचमकार अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की पूजा की जाती है। इस मत को माननेवाले स्वमतावलंबी को वीर, साधक आदि और विरोधी को कटक कहते हैं।

वामाचारी—संज्ञा पुं० [सं० वामाचारिन्] वामागम को माननेवाला वामाचार मत का अनुगामी [को०]।

वामापीडन—संज्ञा पुं० [सं०] पीलू का पेड़।

वामारंभ—वि० [सं० वामारम्भ] जो झुके नहीं। स्वाभिमानी। अदमनीय [को०]।

वामावर्त—वि० [सं०] १ दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु (देवप्रतिमा आदि) की बाईं ओर से आरंभ की जाय। जैसे,—वामावर्त परिक्रमा। २ (वह चक्कर) जो बाईं ओर से चला हो। ३ जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो। जैसे,—वामावर्त शंख।

विशेष—शंख दो प्रकार के होते हैं—एक वामावर्त, दूसरा दक्षिणावर्त। दक्षिणावर्त शंख अत्यंत शुभ और दुष्प्राप्य कहा जाता है।

वामि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी [को०]।

वामिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंडिका।

वामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का योनिरोग जिसमें गर्भाशय से छह सात दिन तक रज का स्राव होता रहता है। इसमें कभी पीड़ा होती है, कभी नहीं होती।

वामिल—वि० [सं०] १ सुंदर। मनोहर। २ अहंकारी। घमंडी। ३ ३ धूर्त। चालाक। कपटी [को०]।

वामी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शृगाली। गीदड़ी। २ मादा हाथी। हथिनी (को०)। ३ घोड़ी। ४ गदही।

वामी[2]—वि० [सं० वामिन्] १. वामाचार को माननेवाला। २ वमन करनेवाला [को०]।

वामेक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोहर नेत्रोंवाली स्त्री [को०]।

वामेतर—वि० [सं०] दाहिना [को०]।

वामोरु, वामोरू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर उरुवाली स्त्री। सुंदरी स्त्री।

वाम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक स्त्री जो गोत्रकार थी। इसके गोत्रवाले वाम्नेय कहलाते थे।

वाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वामदेव ऋषि के घोड़े का नाम। २ वामता। कुटिलता। दुष्टता। विपरीतता (को०)।

वाम्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साम का नाम। २ एक ऋषि का नाम (को०)।

वाय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुनना या सीना। २ बुनने या सीने का साधन। ३ तागा। डोरा (को०)। ४ पक्षी (को०)। ५ नेता नायक (को०)।

वाय(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] दे० 'वायु'।—उ० वाय सो वाय मलि मलि कर जानि। पानि मं घ्रत कस मथि आन।—रामानंद०, पृ० १४।

वाय[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० वापी, हिं० वाय] बावली। वापी।

वायक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बुनता हो। बुननेवाला। उ०—पत्र रध्र तें छनि छनि आवत, चाँदनि रस सिंगार की वायक।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ४००। २ ततुवाय। जुलाहा। ३. राशि। समूह। ढेर (को०)।

वायक[2](पु)—संज्ञा पुं० [सं० वाद, प्रा० वाय+क (प्रत्य०)] उक्ति। कथन। वचन। वाक्य। उ०—बाँका रा वायक सुणै, कायरड़ा किए काज।—बाँकी ग्रं०, भा० १, पृ० ८।

वायदंड—संज्ञा पुं० [सं० वायदण्ड] जुलाहों की ढरकी।

वायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मिठाई या पकवान जो देवपूजा या विवाहादि के लिये बनाया जाय। २ एक गंधद्रव्य (को०)। विशेष—दे० 'बायन'।

वायनक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वायन' [को०]।

वायनरज्जु—संज्ञा पुं० [सं०] जुलाहों के करघे की बै।

वायर(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० बयार] वायु। बयार। उ०—सूराँ नूर दरस्सिया, तोले सेल करग्ग। वायर ज्यौं लागा विमुह कायर आँहु मग्ग।—रा० रू०, पृ० २०३।

वायव—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वायवी] १ वायु संबंधी या वायु से प्राप्त। २ आध्यात्मिक। ३ मन कल्पित। हवाई। ४ अमूर्त। सूक्ष्म। उ०—तुम्हारी अलौकिक शक्ति, वायवी प्रतिभा, एवं मायावी आकर्षण के प्रभाव से यह कार्य अधिक सुगमता से संपन्न हो सकेगा, इसी लिये मैंने तुम्हारा आवाहन किया है।—ज्योत्स्ना, पृ० ५०।

वायवी—संज्ञा स्त्री० [सं० वायवी, वायवीय] वायु की दिशा। उत्तरपश्चिम दिशा [को०]।

वायवीय—वि० [सं०] वायु संबंधी। २ सूक्ष्म। उ०—मूर्तिमती कला का वायवीय आकार उसके हृदय के भीतर स्पर्श करके मधुरता से भर रहा था।

यौ०—वायवीय पुराण = वायुपुराण।

वायव्य[1]—वि० [सं०] १ वायु संबंधी। २ वायुघटित। वायु से बना हुआ। ३ जिसका देवता वायु हो।

वायव्य[2]—संज्ञा पुं० १ वह कोण या दिशा जिसका अधिपति वायु है। उत्तरपश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २ वायु पुराण। ३ एक अस्त्र का नाम। ४ स्वाती नक्षत्र (को०)।

वायव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०]।

वायस—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगुरु। अगर का पेड़। २. कौआ। ३ तारपीन (को०)। ४ वह मकान जिसका दरवाजा उत्तरपूर्व की ओर हो (को०)। ५ कौओं का झुंड (को०)। ६ पक्षी। बड़ा पक्षी (को०)।

वायसजंघा—संज्ञा स्त्री० [सं० वायसजङ्घा] काकजंघा नाम का पौधा विशेष दे० 'काकजंघा'। [को०]।

वायसतंतु—संज्ञा पुं० [सं० वायसतन्तु] १ हनु के दोनों जोड़। २ काकतुंडी। कौआठोठी।

वायसतुंड—संज्ञा पुं० [सं० वायसतुण्ड] कौआठोठी [को०]।

वायसपीलु—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृक्ष। काकपीलु [को०]।

वायसांतक—संज्ञा पुं० [सं० वायसान्तक] उलूक। उल्लू।

वायसादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाज्योतिष्मती लता । २. कौआठोंठी ।

वायसाराति, वायसारि—संज्ञा पुं० [सं०] उल्लू । उलूक [को०] ।

वायसाह्वा—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का भक्ष्य शाक ।

वायसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी मकोय जिसमे गुच्छो मे गोल मिर्च के समान लाल फल लगते हैं । काकमाची । २ महाज्योतिष्मती । ३ काकतुंडी । कौवाठोंठी । ४ सफेद घुँघची । ५ काकजघा । मासी । ६ महाकरज । बडा कजा । ७ कौवे की मादा (को०) ।

वायसेक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] कांस नाम का तृण ।

वायसोलिका, वायसोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली । मालकगनी । २ महा ज्योतिष्मती लता ।

वायार—संज्ञा पुं० [देशी] ठंढ भरी हवा । जाडे की हवा ।—देशी०, पृ० २६५ ।

वायु—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवा । वात ।

विशेष—वैशेषिक दर्शन वायु को द्रव्यो मे मानता है और उसे रूपरहित, स्पर्शवान् तथा नित्य कहता है । न्याय दर्शन मे वायु पचभूतो मे है और इसका गुण स्पर्श कहा गया है । वायु से ही स्पर्शेंद्रिय की उत्पत्ति मानी गई है । वैशेषिक दर्शन स्पर्श के अतिरिक्त सख्या, परिमाण, पृथक्त्व, सयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और वेग भी वायु के गुण मानता है । साख्य मे वायु की उत्पत्ति स्पर्श तन्मात्र से मानी गई है । उपनिषदों के अनुसार वेदाती भी वायु की उत्पत्ति आकाश से मानते हैं ।

२. वायु देवता । पवन देवता (को०) । ३. प्राणवायु । जीवनवायु भो पाँच प्रकार कहा का है—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान । ४ सांस । श्वास (को०) । ५ 'य' अक्षर (को०) । ६. एक वसु (को०) । ८. एक दैत्य का नाम,(को०) । ९ गधर्वों के एक राजा का नाम (को०) ।

वायुकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] धूलि [को०] ।

वायुकोण—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुगड—संज्ञा पुं० [सं० वायुगण्ड] अजीर्ण । अफरा [को०] ।

वायुगति—वि० [सं०] तीव्र गति । अत्यत तीव्र चाल [को०] ।

वायुगीत—वि० [सं०] सर्वविदित । प्रसिद्ध [को०] ।

वायुगुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ वातचक्र । बगोला । बवंडर । २ पेट का एक रोग । वायगोला ।

विशेप—इस रोग मे पेट के अंदर वायु का एक गोला सा बँध जाता है, जो घटता बढता और सारे पेट मे फिरता रहता है । कभी कभी यह पीडा भी उत्पन्न करता है । इसमे प्राय. मल मूत्र का अवरोध भी हो जाता है और गला सूखा रहता है । हृदय, बगल और पसली मे कभी कभी बड़ा दर्द होता है । खाली पेट मे इसका जोर अधिक रहता है और भरे पेट मे कम । कड़ुवे, कसैले पदार्थों के खाने से यह रोग बढता है ।

३. जल का आवर्त । पानी की भँवर (को०) ।

वायुगोचर—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० वायुग्रन्थि] १. वायुगुल्म । २. बवडर [को०] ।

वायुग्रस्त—वि० [सं०] वात रोग से पीडित [को०] ।

वायुजात, वायुतनय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वायुपुत्र' [को०] ।

वायुदार, वायुदारु—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ । बादल ।

वायुदिश्—संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०] ।

वायुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाति नक्षत्र जिसके देवता वायु है [को०] ।

वायुनिघ्न—वि० [सं०] वातप्रकोप से पीडित । उन्मत्त [को०] ।

वायुपचक—संज्ञा पुं० [सं० वायुपञ्चक] शरीरस्थ पंचवायु [को०] ।

वायुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान । २ भीम ।

वायुपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अट्ठारह पुराणो मे से एक पुराण ।

वायुफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ इद्रधनुष । २ ओला (को०) ।

वायुभक्ष, वायुभक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प । साँप । २. वह तपस्वी जो केवल वायु पीकर रहे ।

वायुभुक्—संज्ञा पुं० [सं० वायुभुज्] दे० 'वायुभक्ष' [को०] ।

वायुमडल—संज्ञा पुं० [सं० वायुमण्डल] १ आकाश, जिसमे वायु प्रवाहित होती है । २ बवंडर (को०) ।

वायुमरुल्लिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक लिपि का नाम ।

वायुमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश ।

वायुयान—संज्ञा पुं० [सं०] हवाई जहाज । वायु मे उडनेवाला यान । विमान । उ०—रेडियो, तार, औ फोन वाष्प, जल, वायुयान । मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान यान ।—ग्राम्या, पृ० ८८ ।

वायुयानवेधी तोप—संज्ञा स्त्री०[सं० वायुयानवेधी + तु० तोप] विमान विध्वसक तोप । (अ० एँटी-एअरक्राफ्ट गन) । उ०—जमीन से वायुयानवेधी तोपें आक्रमणकारी वायुयानो पर गोले चला रही थी ।—'आज' ।

वायुर—वि० [सं०] १. वायुयुक्त । हवादार । २ तूफानी । अधड से भरा हुआ [को०] ।

वायुरोषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात ।

वायुलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम । २. आकाश ।

वायुवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० वायुवर्त्मन्] आकाश [को०] ।

वायुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ धूम । धूआँ । २ भाप [को०] ।

वायुवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ धूम्र । धूआँ । ३ शिव (को०) । ४ विष्णु । (को०) ।

वायुवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की नस । शिरा [को०] ।

वायुवेग—वि० [सं०] वायु के समान तीव्र गतिवाला [को०] ।

वायुसख, वायुसखा, वायुसखि—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वायुस्कध—संज्ञा पुं० [सं० वायुस्कन्ध] वायु का क्षेत्र [को०] ।

वायुहन्—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम जो मकण ऋषि के पुत्र थे ।

विशेष—कथा है कि मकरण ऋषि एक बार सरस्वती मे स्नान कर रहे थे। वहाँ उनको एक नग्न स्त्री स्नान करती हुई दिखाई दी। उसे देखकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। इसे उन्होने एक घडे मे रखा, वह सात भागो मे विभक्त हो गया और उनसे वायुवेग, वायुबल, वायुहन् वायुमडल, वायुजाल, वायुरेता और वायुचक्र नामक सात पुत्र उत्पन्न हुए।

वायौ(पु)†—वि० [स० वायुग्रस्त] बावला। उ०—विचित्र हुवौ लडता रस वायौ।— रा० रू०, पृ० ५१।

वाय्यास्पद—सज्ञा पु० [स०] आकाश। वातावरण (को०)।

वारक—सज्ञा पु० [स० वारङ्क] पक्षी।

वारग—सज्ञा पुं० [स० वारङ्ग] १ तलवार की मूठ। २ अँकुडे के आकार का एक अस्त्र जिससे चिकित्सक अस्थिविनष्ट शल्प निकालते थे। (सुश्रुत)।

वारट—सज्ञा पु० [अ०] अदालत का वह आज्ञापत्र जिमके अनुमार किसी कर्मचारी को वह काम करने का अधिकर प्राप्त हो जाय, जिसे वह अन्यथा करने मे असमर्थ हो। यह कई प्रकार का होता है, जैसे,—वारट गिरफ्तारी, वारट तलाशी, वारट रिहाई इत्यादि।

वारट गिरफ्तारी—सज्ञा पु० [अं० वारट+फा० गिरफ्तारी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी पुरुष का पकडकर अदालत मे हाजिर करे।

वारट तलाशी—सज्ञा पु० [अ० वारट+फा० तलाशी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुमार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी स्थान मे जाकर वहाँ की तलाशी ले।

वारट रिहाई—सज्ञा पुं० [अ० वारट+फा० रिहाई] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी सरकारी कर्मचारी को यह आज्ञा और अधिकार मिले कि वह किसी पुरुष को, जो जेल, हवालात या गिरफ्तारी मे हो, छोड दे, या किसी माल या जायदाद को, जो कुर्क हो या किसी की सपुर्दगी मे हो, मालिक को लौटा दे।

वारवार—अव्य० [वारम् वारम्] दे० 'बारबार'। उ०– रिपुओ की पुकार भी मानो निष्फल जाती वारवार।—साकेत, पृ० ३६४।

वार—सज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ रक्षक। त्राता। प्रतिपालक (को०)।

वार¹—सज्ञा पुं० [स०] १ द्वार। दरवाजा। उ०— सदेसे ही घर भरयउ कइ अगणि कई वार।—ढोला०, दू० २००। २. अवरोध। रोक। रुकावट। ३, ढाँकनेवाली वस्तु। आवरण। ४ कोई नियत काल। अवसर। दफा। मरतबा। जैसे—वारवार। ५ क्षण। ६ सप्ताह का दिन। जैसे,—आज कौन वार है। ७ कुज वृक्ष। ८ पानपात्र। मद्य का प्याला। ९ बाण। तीर। १० नदी या समुद्र का किनारा।—उ० जोय प्रवल अणपार जल वार रह्या भड आन। निडर उलघण वारनिव, हुवो त्यार हनुमान।—रघु० रू०, पृ० १६३। ११. शिव का नाम। १२ जलराशि। जलौघ (को०)। १३ पूँछ। दुम (को०)। १४. दाँव। बारी। जैसे—अपना अपना वार है। उ०—देस देस के भूपति आवैं। द्वारे भीर वार नहि पावैं।—हिं० क० ना०, पृ० १८८।

मुहा०—वार मिलना = फुरसत मिलना। वार सरना = अवसर या मौका मिलना। सभव हो सकना। पार पडना। उ०—सूआ एक सदेसडउ, वार मरेसी तुझ्झ। प्रीतम थाँनइ जाय नई, मुई सुणावे मुझ्झ।– ढोला०, दू० ३६८।

वार²—सज्ञापु०[स० वार(= दाँव, बारी।) या फा०] चोट। आघात। आक्रमण। हमला। उ०—वार नाम वैरी के ऊपर प्रहार चाहैं हैं किंवा वार है बाल ताको चाहै हैं, अर्थात् उत्तम बालक वा वारागना। × × × अथवा वार मूढ को न चाहै।—दीन० ग०, पृ० १७८।

क्रि० प्र० – करना।—होना।

मुहा०—वार खाली जाना = (१) प्रहार का ठीक स्थान पर न पडना। चलाया हुआ अस्त्र न लगना। (२) युक्ति सफल न होना। चली हुई चाल या तदबीर का कुछ नतीजा न होना।

वार³—सज्ञा स्त्री० [सं० वार, हिं० बेर] देर। विलब। उ०—चल्या ठकुराल्या न लावीय वार, भोज तणा मिलिया असवार।—वी० रासो पृ० १६।

वार⁴—सज्ञा पु० [हिं० उबार] बचाना। रक्षा करना। उ०—गया है हृदय हिल, लो थके को वार।—आराधना, पृ० ४६।

वार⁵—सज्ञा पु० [स० बाल] [स्त्री० वारा] १ बालक। बच्चा। शिशु। २ अज्ञ या मूर्ख व्यक्ति। उ०—(क) किंवा वार है बाल ताको चाहै हैं अर्थात् उत्तम बालक । —दीन०। ग्र ०, पृ० १७८। (ख) तीनो अड भए तिवारा। ता के रूप भए अधिकारा।—कबीर सा०, पृ० १६।

वार⁶—सज्ञा पुं० [अं०] युद्ध। समर। जग। जैसे,—जर्मन वार।

यौ०—वारफड = युद्ध के लिये आर्थिक मदद या चदा आदि का सग्रह।

वारक—सज्ञा पु० [स०] १. निषेध करनेवाला। वह जो वारण करे। प्रतिबंधक। २ घोडे का कदम। ३ घोडा। ४. एक प्रकार का विशेष घोडा (को०)। ५ वह स्थान जहाँ पीडा हो। कष्टस्थान। ६ बाधा का स्थान। ७ एक सुगधित तृण।

वारकन्यका, वारकन्या— सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वारकी—सज्ञा पुं० [स० वारकिन्] १. प्रतिवादी। शत्रु। २ समुद्र। ३. पत्ते खाकर रहनेवाला तपस्वी। पर्णाशी यति। ४ शुभ लक्षणो से युक्त घोडा (को०)।

वारकीर—सज्ञा पु० [स०] १ साला। २ द्वारपाल। ३ बाडवाग्नि। ४ जूँ। ५ कघी। ६ लडाई का घोडा। चित्राश्व।

वारट—सज्ञा पुं० [स०] खेत या खेतो का सिलसिला (को०)।

वारटा—सज्ञा स्त्री० [स०] हसिनी (को०)।

वारण—सज्ञा पु० [स०] १. किसी बात को न करने का सकेत या आज्ञा। निषेध। मनाही। उ०—हठपूर्वक मुझको भरत करें यदि वारण।—साकेत, पृ० २२०।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. रोक। रुकावट। बाधा। ३ कवच। बकतर। ४. हाथी। ६ हरताल। ७ काला सीसम। ८ पारिभद्र। ९. सफेद कोरैया का फूल। १० छप्पय छंद का एक भेद जिसमे ४१ गुरु, ७० लघु कुल १११ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं, अथवा ४१ गुरु, ६६ लघु, कुल १०७ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं। ११ द्वार। कपाट (को०)। १२ प्रतिरक्षा। सरक्षा। प्ररक्षा (को०)। १३ हाथी की सूँड। १४. मेहराब या तोरण की एक प्रकार की सजावट या नक्काशी [को०]।

वारणकणा—सज्ञा स्त्री० [स०] गजपिप्पली।

वारणकर—सज्ञा पु० [स०] हाथी की सूँड [को०]।

वारणकृच्छ्र—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत जिसमे एक महीने तक पानी मे जौ का सत्तू घोलकर पीना पडता है।

वारणकेसर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'नागकेसर'।

वारणबुषा, वारणबुसा—सज्ञा स्त्री० [स०] कदली। केला।

वारणवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] केला। कदली [को०]।

वारणशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] हस्तिशाला [को०]।

वारणसाह्वय—सज्ञा पु० [स०] हस्तिनापुर का एक नाम [को०]।

वारणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाराणसी' [को०]।

वारणहस्त—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का तंत्रवाद्य [को०]।

वारणानन—सज्ञा पु० [पु०] गजानन। गणेश [को०]।

वारणावत—सज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद या नगर जो गगा के किनारे था।

विशेष—यही पर दुर्योधन ने पाडवो को जलाने के लिये लाक्षागृह बनवाया था। कुछ लोग इसे करनाल के आसपास मानते हैं और कुछ लोग इलाहाबाद जिले के हँडिया नामक स्थान के पास।

वारणीय—वि० [स०] निषेध योग्य। प्रतिषेध्य।

वारता(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वार्ता] बातचीत। कथोपकथन। उ०—सदा ज्ञान वैराग्य योग की होत वारता। ईस भक्ति मैं निरत, सबन के हिय उदारता।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४।

वारतिय(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वारस्त्री] वेश्या। उ०—ताके रही वारतिय दोई। रूपवती रभा छबि छोई।—रघुराज (शब्द०)।

वारत्र—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वारत्रा] चर्म रज्जु। चमडे का बना तसमा [को०]।

वारत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पक्षी। वारटा [को०]।

वारद(पु)—सज्ञा पुं० [स० वारिद] बादल। उ०—सोहति धोती सेत मे कनक बरन तन बाल। सारद वारद बीजुरी भा रद कीजत लाल।—बिहारी (शब्द०)।

वारदात—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोई भीषण या शोचनीय काड। दुर्घटना। २ मारपीट। मारकाट। दगा फसाद।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३. घटना सबधी समाचार। हाल [को०]।

वारध(पु)—सज्ञा पु० [स० वारिधि] दे० 'वारिधि'। उ०—वारध मुनि पीधो, त्रवक विष, जिके प्रकट दरसे जग जाण।—रघु० रू०, पृ० २६८।

वारधान—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक जनपद का नाम। इसे वाटधान भी कहते है।

वारन[1](पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। वलि। उ०—नित हित सो पालत रहै रूप भूप नँदलाल। छबि पनिवारन मैं मनो दृग पर वारन हाल।—रसनिधि (शब्द०)।

वारन[2]—सज्ञा पुं० [स० वदन] वदनवार। वदनमाला। उ०—घर घर धुजा पताका बाँनी। तोरन वारन बाधर ठानी।—सूर (शब्द०)।

वारना[1]—क्रि० स० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना। उ०—(क) चितै रही मुख इदु मनोहर या छबि पर वारति तन को। कछि काछिनी भेष नटवर को बीच मिली मुरलीधर को।—सूर (शब्द०)। (ख) कौसिला की कोषि पर तोप तन वारिए री। राम दसरथ की बलाय लीजै आलि री।—तुलसी (शब्द०) (ग) तो पर वारौ उरबसी सुन राधिका सुजान। तू मोहन के उर बसी ह्वै उरबसी समान।—बिहारी (शब्द०)।

वारना[2]—सज्ञा पु० निछावर। उत्सर्ग। उ०—अति कोमल कर चरन सरोरुह, अधर दसन नासा सोहै री। लटकन सीस कठ मणि भ्राजत कोटि वारने गै री।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वारने जाना = निछावर होना। बलि जाना। उ०—बाल विभूषन, बसन मनोहर अगनि विरचि बनैहौं। सोभा-निरखि निछावरि करि उर लाइ वारने जैहौं।—तुलसी (शब्द०)।

वारनारी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या।

वारनिश—सज्ञा स्त्री० [अं० वार्निश] एक प्रकार का यौगिक तरल पदार्थ जो लकडियो आदि पर उनमे चमक लाने के लिये लगाया जाता है।

वारपार[1]—सज्ञा पु० [स० अवार+पार] १ (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। जैसे,—नदी इतनी बढी है कि वारपार नही सूझता। २ यह छोर और वह छोर। अंत। उ०—वारपार नहि सूझहि लाखन उमरा मीर।—जायसी (शब्द)।

वारपार[2]—अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक। जैसे,—वारपार जाने मे एक घंटा लगेगा। उ०—अति सुमार गार सार वारपार बहत है।—घनानंद, पृ० ३५०।

मुहा०—वारपार करना = पूरा विस्तार तै करना। वारपार होना = पूरा विस्तार तै होना।

२. एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक। एक बगल से दूसरी बगल तक। पूरी चौडाई या मोटाई तक। जैसे,—बरछी वारपार हो गई।

मुहा०—वारपार करना = इस ओर से उस ओर तक धँसाना। पूरी मोटाई छेदकर दूसरी ओर निकालना।

वारफेर—सज्ञा स्त्री० [हिं० वार+फेर] १ निछावर। बलि। २ वह रुपया पैसा जो दूल्हा या दुलहिन के सिर पर से घुमाकर डोमनियो आदि को दिया जाता है। उ०—आली कर जोरि मेरो जोर न चलत कछू चाहो सोई होहु यह वारिफेरे हारिए।—प्रियादास (शब्द०)।

वारबाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'वारवाण'। २ एक प्रकार का कंबल (को०)।

वारबुसा, वारबूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कदली। केला [को०]।

वारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। उ०—कहै तुम कौन वारमुखी नही भोग मग भरत्न सुगहै मौन सुनी परी बेरी है।—प्रियादास (शब्द०)।

वारमुख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्याओ के वर्ग की प्रधान स्त्री। कुट्टनी। कुट्टनी नायका।

वारयिता—संज्ञा पुं० [सं० वारयितृ] पति [को०]।

वारयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०]।

वारयोग—संज्ञा पुं० [सं०] चूर्ण। पाउडर [को०]।

वारयोषित्, वारयोषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारबधू'।

वारला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसी। हसिनी। २ केला। ३ भिड या बेरें (को०)।

वारवारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कवच। २ ढाल [को०]।

वारलीक—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्वजा तृण। बनकस।

वारवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रडी।

वारवाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौटिल्य के अनुसार एँडी तक लबा अगा। २ कचुक। कुचुकी (को०)। ३ कवच। जिरहबख्तर।

वारवाणि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वशी बजानेवाला। २ उत्तम गायक। ३ धर्माध्यक्ष। न्यायाधीश। जज। ४ ज्योतिर्विद। ज्योतिषी। ५ वर्ष (को०)।

वारवाणि[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रडी [को०]।

वारवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

वारवासि—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम जो भारत का पश्चिमी सीमा के आगे था।

वारवास्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वारवासि'।

वारविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रडी।

वारवृषा—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्न। २ केला [को०]।

वारवेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन का एक अशुभ समय जब कोई शुभ कार्य करना वर्जित है [को०]।

वारशिप—संज्ञा पुं० [अ०] जगी जहाज। लडाकू जहाज। युद्धपोत।

वारसुदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारसुन्दरी] दे० 'वारस्त्री'।

वारसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्यावृत्ति। रडी का व्यवसाय। २ वेश्याओ का समुदाय [को०]।

वारस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाजारू स्त्री। गणिका। वेश्या। रडी।

वारागणा—संज्ञा स्त्री० [सं० वाराङ्गणा] वेश्या। रडी।

वारागना—संज्ञा स्त्री० [सं० वाराङ्गना] दे० 'वारागणा'।

वारानिधि—संज्ञा पुं० [सं० वारानिधि] समुद्र। उ०—जयति वैराग्य विज्ञान वारानिधे, नमत नर्मद पाप ताप हर्ता।—तुलसी (शब्द०)।

वारा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वारण(=रक्षा, बचाव)] १ खर्च की बचत। किफायत। २ लाभ। फायदा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—बैठना।

वारा[2]—संज्ञा पुं० [हिं० वार(=यह किनारा)] इधर का किनारा। इस ओर का तट या छोर। वार।

यौ०—वारान्यारा। वारापार।

वारा[3]—वि० किफायत। सस्ता।

वारा[4]—वि० [हिं० वारना] [वि० स्त्री० वारी] जो निछावर हुआ हो। जिसने किसी पर अपने को उत्सर्ग किया हो।

मुहा०—वारा होना=निछावर होना। कुर्बान होना। (प्यार का वाक्य)। उ०—हौं वारी तेरे इदुवदन पर अति छवि अलसानि रोई।—सूर (शब्द०)। वारा जाना=दे० 'वारा होना'। उ०—बनवारी वारी गई बनवारी पै आज।—रसनिधि (शब्द०)।

वारा(पु)[5]—संज्ञा स्त्री० [सं० वाला] दे० 'वाला'। उ०—इक सूक्ष्म अस्थूल दै, वारा भूषण येह।—प० रासो, पृ० १६३।

वाराणसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी नगरी का प्राचीन नाम।

विशेष—कुछ लोग यह नाम वरुणा और असी नदियो के कारण मानते है। पर इस प्रकार यह शब्द सिद्ध नहीं होता। लोग इसका ठीक व्युत्पत्ति 'वर' + अनस् (जल) अर्थात् 'पवित्र जलवाली पुरी' बतलाते हैं। कुछ विद्वान् 'उत्तम रथोवाली पुरी अर्थ भी करते हैं। विशेष दे० 'काशी'।

वाराणसेय—वि० [सं०] वाराणसी का। वाराणसी मे स्थित या उत्पन्न। जैसे, वाराणसेय विद्वत्सभा।

वारान्यारा—संज्ञा पुं० [हिं० वार+न्यारा] १ इस पक्ष या उस पक्ष मे निर्णय। किसी ओर निश्चय। फैसला। उ०—आर्य गौरवसर्वस्व का वारान्यारा होना सहज सुलभ है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२। २ झझट या झगडे का निबटेरा। चले आते हुए मामले का खातमा। जैसे,—उस मामले का अभी तक कुछ वारान्यारा नहीं हुआ।

वारापार—संज्ञा पुं० [हिं० वारपार] ओर छोर। अत। उ०—(क) महिमा अपार काहू बोल को न वारापार बडी साहबी मे नाथ बडे सावधान हो।—तुलसी ग्र०, पृ० २२९। (ख) वह खुद सब कुछ सह सकती थी, उसकी सहन शक्ति का वारापार न था, पर चक्रधर को इस दशा मे देखकर उसे दुख होता था।—काया०, पृ० ३७९।

वारालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

वारावस्कदी—संज्ञा पुं० [सं० वारावस्कन्दिन्] अग्नि।

वाराशि—संज्ञा पुं० [सं०] सागर। समुद्र।

वारासन—संज्ञा पुं० [सं०] तालाब। झील। [को०]।

वाराह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वाराही] १ दे० 'वराह'। २ काली सेंमी का वृक्ष। ३ पानी के किनारे होनेवाला बेंत। अबुवेतस। ४ एक पहाड (को०)। ५ एक साम (को०)।

वाराह[2]—वि० १ शूकर सबधी। २ वराह अवतार सबधी [को०]।

वाराहकद—संज्ञा पुं० [सं० वाराहकन्द] एक प्रकार का कद, जिसपर शूकर के समान बाल होते हैं।

वाराहकर्णी—स्त्री० [सं०] असगध। वराहकर्णा [को०]।

वाराहकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक कल्प (ब्रह्मा का दिन) का नाम जिसमे हम लोग रह रहे हैं [को०]।
वाराहद्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल द्वादशी [को०]।
वाराहपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगधा। असगध।
वाराहांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वाराहाङ्गी] दंती का पेड।
वाराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ब्राह्मणी आदि आठ मातृकाओ मे से एक मातृका का नाम। २ एक योगिनी का नाम। ३ वाराहीकद। ४ कँगनी। ५ श्यामा पक्षी। ६ सफेद भूकुष्माडा। विलाई कद। विदारी कद। ७ शूकरी (को०)। ८ पृथ्वी (को०)। ९ एक प्रकार की माप (को०)।
वाराहीकद—संज्ञा पुं० [सं० वाराहीकन्द] एक प्रकार का महाकद जो गेंठी कहलाता है।
विशेष—कहते हैं, यह अनूप (जलप्राय) देश मे होता है। इसके कद के ऊपर सूअर के वालो के समान रोएँ होते हैं। इसका आकार प्राय गुड की भेली के समान होता है और इसके पत्ते कँटीले, वडे वडे तथा अनीदार होते हैं। वैद्यक मे यह चरपरा, कडुवा, वलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, मधुर, गरम, स्वर को शुद्ध करनेवाला, आयुवर्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र का नाशक माना है।
पर्या०—वाराही। चर्मकारालुक। विष्वक्सेनप्रिया। घृष्टि। वदरा। कच्छा। वनमालिनी। गृष्टि। बिल्वमूला। शूकरी। क्रोडकन्या। कौमारी। त्रिनेत्रा। ब्रह्मपुत्री। क्रोडी। कन्या। माधवेष्टा। शूकरकद। वनवासी। कुष्ठनाशन। वल्य। अमृत। महावीर्य। शवरकद। वराहकद। वीर। ब्राह्मीकद। महौषध। सुकदक। वृच्छिद। व्याविहता। मागधी।
वारि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। पानी। २ तरल पदार्थ। ३ ह्रीवेर। सुगधवाला।
वारि²—संज्ञा स्त्री० १ वाणी। सरस्वती। २ हाथी के बाँधने की जजीर आदि। ३. हाथी के बंधने का स्थान। ४ छोटा कलसा या गगरा। ५ हाथियो के पकडने का गड्ढा आदि (को०)। ६ वदी। कैदी (को०)। ७ वाक्। वोली (को०)।
वारि³—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारा (= छोटा)] दे० 'वारी'। उ०—सुनहु वारि माधौनल कहई। इहि जग नेहु नही थिर रहई।—माधवानल०, पृ० १९७।
वारिकटक—संज्ञा पुं० [सं० वारिकण्टक] सिंघाडा [को०]।
वारिकफ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारिकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुभी। कुभिका (को०)।
वारिकर्पूर—संज्ञा पुं० [सं०] इलीश या हिलसा नाम की एक मछली [को०]।
वारिकुब्ज—संज्ञा पुं० [सं०] सिंघाडा।
वारिकुब्जक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वारिकुब्ज'।
वारिकूट—संज्ञा पुं० [सं०] नगरद्वार की रक्षा के लिये वना हुआ स्तूप या दूहा [को०]।
वारिकोल—संज्ञा पुं० [सं०] कच्छप। कछुआ।
वारिक्रिमि—संज्ञा पुं० [सं०] जलौका। जोक [को०]।
वारिगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वादल [को०]।
वारिगृह—संज्ञा पुं० [सं०] तालाव। पोखरा [को०]।
वारिचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] जलावर्त। भँवर। उ०—तुझमे बहु वारिचक्र है, कितने कच्छप और नक्र हैं।—साकेत, पृ० ३३०।
वारिचत्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुभी। जलकुभी। कुभिका। २ जलाशय [को०]।
वारिचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी मे रहनेवाले जतु। २. मत्स्य। मछली। ३ शख।
वारिचरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मीनकेतन।
वारिचामर—संज्ञा पुं० [सं०] शैवाल। सेवार [को०]।
वारिचारी—वि० [सं० वारिचारिन्] जल मे रहनेवाला (जतु)।
वारिज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. द्रोणी लवण। ३, मछली। ४ शंख। ५ घाघा। ६ कौडी। ७ ? उत्तम सुवर्ण। खरा सोना। ८ एक प्रकार का शाक। विशेष दे० 'गौर सुवर्ण' (को०)। ९ लौंग (को०)।
वारिज²—वि० जल मे उत्पन्न। जल मे होनेवाला [को०]।
वारिजात—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ शख। ३ दे० 'वारिज'।
वारिजीवक—वि० [सं०] जल से जीविका चलानेवाला (मल्लाह)।
वारित—वि० [सं०] १ जो रोका गया हो, जो मना किया गया हो। निवारित। २ छिपाया हुआ। ढका हुआ (को०)।
वारितर—संज्ञा पुं० [सं०] उशीर। खस।
वारितस्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वादल। २ सूर्य [को०]।
वारित्र—संज्ञा पुं० [सं०] निषिद्ध आचरण [को०]।
वारित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] छत्र। छाता [को०]।
वारिद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। वादल। २ भद्र मुस्तक। नागरमोथा। ३ एक गंधद्रव्य। सुगधवाला। वाला। ४ पितरो को जल देनेवाला (को०)।
वारिद्र—संज्ञा पुं० [सं०] चातक। पपीहा [को०]।
वारिधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। वादल। वारिवाह। २ भद्रमुस्तक। नागरमोथा।
वारिधार—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]।
वारिधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृष्टि की बौछार। जल की वर्षा [को०]।
वारिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ जलपात्र [को०]।
वारिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २ समुद्र। ३ वादल। मेघ। ४ नाग लोक जहाँ सर्पो का निवास माना जाता है (को०)।
वारिनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारिपथ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रयात्रा। जलयात्रा [को०]।
वारिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जलकुभी। २ पानी की काई।
वारिपूर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारिपर्णी' [को०]।
वारिपृश्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलकुभी।
वारिप्रवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल का प्रवाह या धारा। २ झरना। जलप्रपात [को०]।
वारिवदर—सं० स्त्री० [सं०] आँवला [को०]
वारिवालक—संज्ञा पुं० [सं०] ह्रीवेर नामक गधद्रव्य [को०]।

वारिभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शख। २. रसाजन। सौवीर [को०]।
वारिमसि—संज्ञा पुं० [सं०] वादल।
वारिमुक्—संज्ञा पुं० [सं० वारिमुच्] वादल। मेघ।
वारिमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वारिपर्णी' [को०]।
वारियंत्र—संज्ञा पुं० [सं० वारियन्त्र] १. फौआरा। जलयंत्र। २ जलघटिका। रहट (को०)।
वारियाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर। वलि।
क्रि० प्र०—जाना।
मुहा०—वारियाँ जाऊँ = तुझपर निछावर हूँ। (स्त्रियो का प्यार का वाक्य जो वे बातचीत मे लाया करती हैं)।
वारिर—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। वादल [को०]।
वारिरथ—संज्ञा पुं० [सं०] नौका। नाव। पोत। [को०]।
वारिराज—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण [को०]।
वारिराशि—संज्ञा पुं० [सं०] १ समुद्र। २ झील।
वारिरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
वारिलोमा—संज्ञा पुं० [सं० वारिलोमन्] वरुण।
वारिवद—संज्ञा पुं० [सं० वारिवन्द] एक प्राचीन जनपद।
विशेष—यह कूचविहार के उत्तर मे बताया जाता है।
वारिवदन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वारिवदर'।
वारिवर—संज्ञा पुं० [सं०] करौदा।
वारिवर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] रेत। वालू। सिकता।
वारिवर्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वारि आवर्त्त] एक मेघ का नाम। उ०— सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए। जलवर्त, वारिवर्त, पवनवर्त, वज्रवर्त, आगिवर्तक जलद सग लाए।—सूर (शब्द०)।
वारिवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विदारी कद [को०]।
वारिवास—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य बनानेवाला। कलवार। कलार।
वारिवाह, वारिवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। वारिधर। २ मुस्तक। माथा।
वारिवाही—संज्ञा पुं० [सं० वारिवाहिन्] मेघ। वादल।
वारिश—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
वारिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ।
विशेष—यह ग्रंथ गर्ग मुनि का रचा हुआ कहा जाता है। इससे यह निकाला जाता है कि किस स्थान मे कैसी वृष्टि होगी, और कब कब होगी।
वारिसभव—संज्ञा पुं० [सं० वारिसम्भव] १ लौंग। २ अजन विशेष। ३ खस की सुगधित जड। उशीर [को०]।
वारिस—संज्ञा पुं० [अ०] १ दायाद। दायभागी पुरुष। २ वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और उसके ऋण आदि का देनदार हो। उत्तराधिकारी। ३ रक्षक।
वारिसाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] दुग्ध। दूध [को०]।
वारिसार—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत पुराण के अनुसार चंद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।
वारींद्र—संज्ञा पुं० [सं० वारीन्द्र] समुद्र।

वारी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी के बाँधने की जजीर या अँदुआ। २ कलसी। छोटा गगरा। दे० 'वारि'।
वारी[2]—वि० दे० 'वारा'।
वारी[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० वालिका > प्रा० वालिआ > हिं० वरी] छोटी उम्र की वालिका उ०—वारी सुकुमारी, दरिद्र, जर्जर लस्त को व्याह दी जाय। प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७।
वारी[4]—संज्ञा स्त्री० [हिं० पारी, वारी] वारी। अवसर। समय। उ०— साँकिया राज राँणा सकल, अकल पाँण छिलियौ असुर। लहर्स जाँण वारो लहै, गरज निवारे सीम गुर।—रा० रू०, पृ० १६।
वारीट—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
वारीफेरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारना + फेरना] किसी प्रिय व्यक्ति के ऊपर कुछ द्रव्य, या और कोई वस्तु घुमाकर इसलिये छोडना या उत्सर्ग करना, जिससे उसकी सब बाधाएँ दूर हो जायँ। निछावर। (स्त्रियो का एक टोटका)। उ०—भुजन पर जननी वारीफेरी डारी। क्यो तोरयो कोमल कर कमलन सभु सरासन भारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) क्योकि आपकी लेखनी बिचारी कलम की कारीगरी पर वारीफेरी हो जाती है। —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७।
क्रि० प्र०—डालना।
वारीश—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारुड—संज्ञा पुं० [सं० वारुण्ड] १ साँपो का राजा। २, नाव मे से पानी निकालने का बरतन। उसला। ३ कान की मैल। खूँट। ४ आँख का कीचड।
वारुडी—संज्ञा स्त्री० [सं० वारुण्डी] द्वार की सीढी [को०]।
वारु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजयहस्ति। विजयकुंजर। जगी हाथी। २ अश्व। घोडा (को०)।
वारुक—वि० [सं०] चयनकर्ता। चुननेवाला [को०]।
वारुठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अतशय्या। मरण खाट। २ वह टिकठी जिसपर मुरदे को लेटकर ले जाते हैं। अरथी।
वारुण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल। २ शतभिषा नक्षत्र। ३ भारतवर्ष के एक खड का नाम। (इसे आजकल 'नरनारक' कहते हैं।) ४ एक अस्त्र का नाम। ५ हरताल। ६ एक उपपुराण का नाम। ७ वरुण या वरुना नाम का पेड। ८ जलजतु (को०)। ९ पश्चिम दिशा (को०)।
वारुण[2]—वि० १ वरुण सबधी। वरुण का। २ जलीय। जलसबधी। ३ पश्चिमी [को०]।
वारुणक—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद का नाम।
वारुणकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वारुणकर्मन्] कूआँ, पोखरा, बावली आदि जलाशय बनवाने का काम।
वारुणकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति के अनुसार एक व्रत, जिसमे महीने भर तक पानी मे घुला सत्तू खाकर रहते थे।
वारुणपाशक—संज्ञा पुं० [सं०] एक विशाल समुद्री जतु [को०]।
वारुणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त्य मुनि। २ वसिष्ठ। ३ भृगु। ४ विनता के एक पुत्र का नाम। ५ एक जनपद का नाम। ६ दँतैला हाथी। ७. वारुण वृक्ष। बरना का पेड़।

वारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब।

विशेष—कई प्रकार की मदिरा का नाम वारुणी है। जैसे,—पुनर्नवा (गदहपूरना) को पीसकर बनाई हुई, ताड या खजूर के रस से बनी हुई, साठी धान के चावल और हड पीसकर बनाई हुई।

२. वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३. उपनिषद् विद्या, जिसका उपदेश वरुण ने किया था। ४ पश्चिम दिशा। ५ शतभिषा नक्षत्र। ६ एक नदी का नाम। ७ भूईंआँवला। ८ गाँडर दूब। ९ घोडे की एक चाल। १०. इद्रवारुणी लता। इँदारुन की बेल। ११. हथिनी। १२ एक पर्व जो उस समय माना जाता है जब चैत महीने की कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र पडता है। इस दिन लोग गंगास्नान दान आदि करते हैं। १३. दूर्वा। दूब (को०)। १४. घोडे की गति का एक भेद (को०)। १५ एक नदी का नाम (को०)। १६ वृंदावन के एक कदंब का रस, जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिये निकला था। १७ कदंब के पके हुए फलों से बनाया हुआ मद्य।

वारुणीवर—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार चौथे द्वीप और उसके समुद्र का नाम।

वारुणीवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण देवता (को०)।

वारुणीश—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वारुण्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रम। भ्रांति [को०]।

वारुण्य²—वि० १ वरुण संबंधी। २. मदिरा संबंधी [को०]।

वारुढ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वारुढा] १ अग्नि। आग। २. पिंजरा (को०)। ३. संबल। पाथेय (को०)। ४ द्वार का पल्ला (को०)। ५. वस्त्र का छोर (को०)। ६ किनारा। तट (को०)।

वारेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वारेन्द्र] [स्त्री० वारेंद्री] गौड देश के एक प्राचीन जनपद का नाम जो आजकल के राजशाही जिले मे था।

वारैं—क्रि० वि० [सं० बहिर्] दे० 'बाहर'। उ०—पाँण जोडे हुकुम पावै अतुर वारैं भरथ आवै ले चले हित लेख।—रघु० रू०, पृ० ११६।

वार्कजंभ—संज्ञा पुं० [सं० वार्कजम्भ] १ एक साम का नाम। २ वृकजंभ ऋषि का गोत्रज।

वार्कार्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक यज्ञ कर्म।

वार्क्ष¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्क्षी] १. वृक्ष संबंधी या वृक्ष का बना हुआ। २ वृक्षों से युक्त या घिरा हुआ (को०)।

वार्क्ष²—संज्ञा पुं० १ वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र। २ वन। अरण्य। जंगल (को०)।

वार्क्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का नाम।

विशेष—इसका जन्म कुंडु मुनि और प्रम्लोचा अप्सरा से हुआ था। कुंडु मुनि गोमती के तट पर तप कर रहे थे। उनको तपोभ्रष्ट करने के लिये इंद्र ने प्रम्लोचा को भेजा था। वह मुनि के आश्रम मे बहुत काल तक रही। जब मुनि को उसके छल का ज्ञान हुआ, तब वे अपने को धिक्कारने लगे। प्रम्लोचा शाप के भय से भागी। उसके शरीर से पसीना निकला, जो एक वृक्ष के ऊपर पडा। उसी से मारिषा उत्पन्न हुई। मारिषा को राजा ने प्रचेतागण को प्रदान किया, [illegible] दक्ष प्रजापति का जन्म हुआ।

वार्क्ष्य—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्क्ष' [को०]।

वार्गर—संज्ञा पुं० [सं०] श्यालक। साला [को०]।

वार्च—संज्ञा पुं० [सं०] हंस।

वार्ड—संज्ञा पुं० [अं०] १ रक्षा। हिफाजत। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिये घेरकर बनाया हुआ स्थान। ३ नगर मे उसके महल्लो आदि का समूह, जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग नियत किया गया हो। ४ अस्पताल या जेल आदि के अंदर के अलग अलग विभाग। ५ अलग अलग कमरा या विभाग आदि (को०)।

वार्डन—संज्ञा पुं० [अं०] १ अभिभावक। २ छात्रावासो मे छात्रों के प्रतिपालक। ३ रक्षक। ४. जेल के भीतर का पहरेदार [को०]।

वार्डर—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह जो रक्षा करता हो। रक्षक २. जेल आदि के अंदर का पहरेदार।

वार्णक—संज्ञा पुं० [सं०] लेखक।

वार्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] लेखक।

वार्तक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्त्तिक' [को०]।

वार्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आरोग्य। निरामय। २ किसी वृत्ति या व्यवसाय मे लगा हुआ व्यक्ति। कामकाजी आदमी। ३ कुशलता। दक्षता (को०)। ४ भूसी। तुष। छिलका (को०)।

वार्त²—वि० १. स्वस्थ। निरोग। २ हलका। कमजोर। सारहीन। ३. वृत्तिशाली। जीविकाप्राप्त।

वार्त्तीक—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर पक्षी।

वार्त्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० वार्त्ता, वार्ता] १ जनश्रुति। अफवाह। २. संवाद। वृत्तांत। हाल। ३. विषय। मामला। प्रसंग। बात। ४ चार विद्यावर्गों (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दंडनीति) मे एक। ५ कथोपकथन। बातचीत।

यौ०—वार्त्तालाप।

५ वैश्य वृत्ति जिसके अंतर्गत कृषिकर्म, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद हैं।

यौ०—वार्ताकर्म = कृषि, व्यापार, गोपालन आदि वैश्यों के कार्य।

६ दुर्गा। ७ अन्य के द्वारा क्रय विक्रय होना। ८ ठहरना। रहना (को०)। ९ बैंगन। भाँटा (को०)। १० वृत्ति। आजीविका (को०)।

वार्त्ताक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैंगन। भटा। २ बटेर पक्षी।

यौ०—वार्ताकिशाकट, वार्ताकिशाकिन = बैंगन का खेत [को०]।

वार्त्ताकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बैंगन। भंटा।

वार्त्ताकु—संज्ञा पुं० [सं०] बैंगन। भंटा।

वार्त्तानुकर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुप्तचर। जासूस। २ दूत। चर। संदेशवाहक [को०]।

वार्त्तानुजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वार्त्तानुजीविन्] कृषि, गोरक्षा, व्यापार आदि द्वारा जीविका चलानेवाला। वैश्य [को०]।

वार्त्तापति—संज्ञा पुं० [सं०] काम करानेवाला मालिक।

वार्त्तायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गूढ पुरुष। प्रणिधि। चर। २ दूत। एलची। सदेशवाहक।

वार्त्तारंभ—संज्ञा पुं० [सं० वार्त्तारम्भ] व्यापार। रोजगार [को०]।

[illegible]—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। कथोपकथन।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वार्त्तावह—संज्ञा पुं० [सं०] १ पनसारी । २ समाचार ले जानेवाला । दूत । ३ नीति शास्त्र का वह भाग, जो आय व्यय से संबंध रखता है । वार्त्ता ।

वार्त्ताविशेष—वि० [सं०] मृत । मरा हुआ ।

वार्त्तावृत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी जीविका वार्त्ता, कृषिकर्म पर आधृत हो । २, गृहपति । ३ वैश्य [को०] ।

वार्ताशस्त्रोपजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वार्त्ताशस्त्रोपजीविन्] केवल वाणिज्य या युद्ध व्यवसाय मे लगे रहनेवाले लोग ।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि कांबोज और सौराष्ट्र देशवाले अधिकतर ऐसे ही है ।

वार्ता साहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] आख्यान । कथा साहित्य । उ०—जिसका उल्लेख संग्रह ग्रंथो, वार्तासाहित्य, समकालीन कवियो की रचनाओ, ऐतिहासिक ग्रंथो तथा हस्तलिखित प्रतियो मे मिलता है ।—अकबरी,० पृ० ३८ ।

वार्त्तिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टायकारी विवेचक वाक्य या ग्रंथ । जैसे,—पाणिनि की अष्टाध्यायी पर कात्यायन का वार्तिक, न्यायसूत्र के वात्स्यायन भाष्य पर उद्योतकर का न्याय वार्तिक ।

विशेष—वृत्ति और भाष्य केवल मूल ग्रंथ के आशय को स्पष्ट करते हैं, उसके बाहर कुछ नही कहते । पर वार्त्तिककार को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है । वह नई बातें भी कह सकता है ।

२ वृत्ति या आचार शास्त्र का अध्ययन करनेवाला । उ०—वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक, वार्त्तिक, वक्ता, व्यसनी, व्यावहारिक विद्यामत ।—वर्ण०, पृ० १० । ३ दूत । चर । ४ वैद्य (को०) । ५ बटेर पक्षी (को०) । ६ किसान (मुख्यत वैश्य) । ७ व्यवसायी । व्यापारी (को०) । ८ विवाह का भोजन (को०) । ९ भंटा । बैंगन (को०) ।

वार्तिक²—वि० १ संदेश लानेवाला । दूत । संदेशवाहक । २ समाचार संबंधी । व्याख्यात्मक [को०] ।

वार्त्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यापार । वाणिज्य । २ खबर । समाचार [को०] ।

वार्त्तीक, वार्त्तीर—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर पक्षी का एक भेद ।

वार्त्रघ्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन । २ जयंत ।

वार्त्रघ्न²—वि० वृत्रघ्न संबंधी । इंद्र संबंधी । [को०] ।

वार्त्रतुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वार्द—संज्ञा पुं० [सं० वार्द्] मेघ । बादल ।

वार्दर—संज्ञा पुं० [सं० वार्द्दर] १ दक्षिणावर्त शंख । २ जल । ३ घोडे के गले पर की दाहिनी ओर की भौरी । ४ आम की गुठली । ५ रेशम । ६ जल । ७ काकचिंचा ।

वार्दल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघाच्छन्न दिवस । दुर्दिन । वर्षा का दिन । २ मसिपात्र । ३ मसि । स्याही [को०] ।

वार्दालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा [को०] ।

वार्द्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुढापा । वृद्धावस्था । २ बुढापे के कारण होनेवाली कमजोरी (को०) । ३ वृद्ध जनो का समूह या मडली (को०) ।

वार्द्धक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुढापा । २ वृद्धि । बढती । ३ बुढापे की कमजोरी (को०) ।

वार्द्धि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

वार्द्धिभव—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्री नमक । द्रोणी लवण [को०] ।

वार्द्धुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्द्धक' [को०] ।

वार्द्धुप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्द्धुषि' ।

वार्द्धुषि—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक व्याज लेनेवाला ।

वार्द्धुषिक—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक सूद लेनेवाला । सूदखोर ।

वार्द्धुषी¹—संज्ञा पुं० [सं० वार्द्धुषिन्] सूदखोर । वार्द्धुषिक [को०] ।

वार्द्धुषी²—संज्ञा स्त्री० सूदखोरी [को०] ।

वार्द्धुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] अन्न को अधिक व्याज पर देने का व्यवसाय । विसार ।

वार्द्धेय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्री लवण [को०] ।

वार्द्धर्च—संज्ञा पुं० [सं०] वृद्धता । बुढापा [को०] ।

वार्द्ध्र—संज्ञा पुं० [सं०] चमडे की बद्धी । तसमा ।

वार्द्ध्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वार्द्ध्र' [को०] ।

वार्द्ध्रीणस—संज्ञा पुं० [सं०] १ गैडा । २ वह बधिया बकरा जिसका रंग सफेद हो और जिसके कान इतने लबे हो कि पानी पीते समय पानी से छू जायँ । ३ एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर लाल, गला नीला और शेष शरीर काला कहा गया है । प्राचीन काल मे इस पक्षी का बलिदान विष्णु के उद्देश्य से होता था ।

वार्धनी—संज्ञा पुं० [सं०] जलपात्र । घडा [को०] ।

वार्धि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र [को०] ।

वार्धुपिक—संज्ञा पुं० [सं०] कम दाम पर वस्तु खरीदकर अधिक दाम पर बेचने का व्यवसाय करनेवाला । खरीद फरोख्त का रोजगारी । बनिया । (स्मृति) ।

वार्निश—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'वारनिश' । लकडी आदि की बनी वस्तुओ मे खूबसूरती और चमक लाने के लिये लगाया जानेवाला रोगन । उ०—(क) रमा ने सुंदर की जोडी देखी । उसपर वार्निश थी, साफ सुथरी, मानो अभी किसी ने फेरकर रख दिया हो ।—गबन, पृ० २३४ । (ख) वे मार्मिक से मार्मिक प्रत्यक्ष दृश्य के सामने वार्निश किए हुए काठ के कुदे या गढी हुई पत्थर की मूर्ति के समान खडे रह जायगे ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० २१२ ।

वार्बट—संज्ञा पुं० [सं०] नाव [को०] ।

वार्भट—संज्ञा पुं० [सं०] घडियाल ।

वार्मण—संज्ञा पुं० [सं०] कवचो का समूह [को०] ।

वार्मिण—संज्ञा पुं० [सं०] कवच धारण करनेवालो का दल [को०] ।

वार्मुच—संज्ञा पुं० [सं० वामुच्] १ बादल । २. मुस्तक । मोथा ।

वार्य¹—वि० [सं०] १ जो रोका जा सके । जिसका निवारण हो सके । वारणीय । २ जिसे वारण करना हो । जिसे रोकना हो । ३ वारि संबंधी । जल संबंधी [को०] ।

वार्य²—संज्ञा पुं० १ आशीर्वाद । वरदान । २ जायदाद । संपत्ति । ३. दीवार [को०] ।

वार्युद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] जलज । कमल [को०] ।

वार्योका—संज्ञा स्त्री० [सं० वार्योकस्] जोक ।

वार्वट—संज्ञा पुं० [सं०] नौका । नाव । बेडा ।

वार्वणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीले रंग की मक्खी ।

वार्ष—वि० [सं०] १ वर्षा सबंधी । २. वार्षिक [को०] ।

वार्षक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागो मे से एक भाग का नाम, जिसे सुद्युम्न ने विभक्त किया था ।

वार्षगण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के वैदिक आचार्य ।

वार्षभ—वि० [सं०] वृषभ सबधी । बैल संबंधी [को०] ।

वार्षभानवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृषभानु की पुत्री । राधा [को०] ।

वार्षल—वि० [सं०] शूद्र सबधी । शूद्र का कार्य, पेशा आदि [को०] ।

वार्षलि—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्रा का पुत्र ।

वार्षाहर—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वार्षिक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्षिकी] १ वर्ष सबंधी । २. जो प्रतिवर्ष होता हो । सालाना । ३ वर्षाकाल मे होनेवाला । ४. एक वर्ष तक रहनेवाला [को०] ।

वार्षिक[2]—संज्ञा पुं० [सं०] त्रायमाणा नाम की एक लता, जिसका प्रयोग औषधि के रूप मे होता है ।

वार्षिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेले का फूल । २ वह नदी जिसमे साल भर पानी रहता है (को०) । ३. प्रति वर्ष नियमित रूप से होनेवाली पूजा आदि (को०) ।

वार्षिक्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु [को०] ।

वार्षिक्य[2]—वि० वर्षा सबधी [को०] ।

वार्षिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ओला । करका । पत्थर ।

वार्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा ऋतु [को०] ।

वार्षुक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्षुकी] बरसालू । वर्षणशील । बरसनेवाला [को०] ।

वार्ष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचद्र ।

वार्ष्णि—संज्ञा [सं०] कृष्ण [को०] ।

वार्ष्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृष्णि की संतान । २. कृष्णचद्र । ३ नल का सारथी (को०) ।

वार्ह—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वार्ही] दे० 'वार्ह' [को०] ।

वार्हत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बगन । वृहती फल [को०] ।

वार्हद्रथ—संज्ञा पुं० [सं०] वृहद्रथ का पुत्र, जरासध ।

वार्हद्रथि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हद्रथ' [को०] ।

वार्हस्पत—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हस्पत' ।

वार्हस्पत्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वार्हस्पत्य' [को०] ।

वार्हिण—वि० [सं०] मयूर सबधी । दे० 'वार्हिण' ।

वालटियर—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह मनुष्य जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के किसी कार्य मे अपनी इच्छा से योग दे । स्वयसेवक । स्वेच्छा सेवक । २. वह सिपाही जो बिना वेतन के अपनी इच्छा से फौज मे सिपाही या अफसर का काम करे । वल्लमटेर ।

वाल(ु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० बाला] युवती स्त्री । बाला । उ०—सुभत केश वालय । सारत्त ज्यौं सेवालय ।—पृ० रा०, ६१ । १८८३ ।

वाल[2]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'बाल' ।

वालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बालछड । २. कंकण । कगन । अगूठी । ३ घोडे या हाथी की पूँछ (को०) । दे० 'बालक' ।

वालखिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'बालखिल्य' । २. ऋग्वेद की ११ ऋचाएँ ।

वालदैन—संज्ञा पुं० [अ०] माता पिता । माँ बाप ।

वालधान—संज्ञा पुं० [सं०] वालधि । पूँछ ।

वालधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूँछ । पुच्छ । २ भैसा । महिष । ३. एक ऋषि [को०] ।

वालनाटक—संज्ञा पुं० [सं०] एक तरह का निम्नकोटि का अन्न या कदन्न [को०] ।

वालपाशक—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की पूँछ का एक भाग [को०] ।

वालपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] मूँछ [को०] ।

वालप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] गाय की जाति का एक पशु । चमरी गाय [को०] ।

वालरा†—संज्ञा पुं० [देश०] विशेष ढग से की जानेवाली खेती । उ०—पहाडो के ढेलो आदि पर, जहाँ हल नही चलाए जा सकते, भील लोग जगह जगह लकडियाँ काटकर उनके ढेर लगाते और उनको जला देते हैं, जिसकी राख खाद का काम देती है फिर, वे लोग वहाँ की जमीन को खोदकर उसमे मक्का वगैरह अन्न बोते है । ऐसी खेती को वालरा (वल्लर) कहते है ।—राज० इति०, पृ० १४३४ ।

वालव—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे एक करण का नाम ।

वालव्यजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चामर । चँवर । २ छोटा पखा । उ०—यह माला, यह मल्लिका का वालव्यजन क्या होगा—मेरा दिनभर का परिश्रम ।—राज्यश्री, पृ० ८ ।

वालहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] वालधि । पूँछ [को०] ।

वाला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तो मे से एक, जिसके पहले तीन चरणो मे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते है, तथा चौथे चरण मे और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है । जैसे,—राखौ सदा शभु हिए अखडा । बाघौ सबै शूर तनै जु दडा । घारो विभूती तन अक्षमंडा । नसै सबैई अघ ओघ चडा । २ नारियल (को०) ३ । दे० 'बाला' ।

वाला[2]—वि० [फा० वालह्] १ प्रतिष्ठित । मान्य । २. उच्च । उत्तुंग । श्रेष्ठ । उत्तम [को०] ।

यौ०—दे० 'बाला' शब्द मे ।

वालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा, जिसके फूलो के दल आँख के आकार के लगते हैं ।

वालाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन मान जो आठ रज का माना जाता था । उ०—आठ रज का वालाग्र होता है ।—वृहत्सहिता पृ० २८६ । दे० 'बालाग्र' ।

वालि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'बालि' ।

वालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'बालिका' । २ वालुका । बालू । ३ कान का एक गहना । बाला । बाली । ४. इलायची । ५. मुहर । मुद्रा (को०) ।

वालिखिल्ल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वालखिल्य] दे० 'वालखिल्य'।

वालिद—संज्ञा पुं० [अ०] पिता। बाप।

वालिदा—संज्ञा स्त्री० [अ० वालिदह्] माता। माँ।

वालिदैन—संज्ञा पुं० [अ०] माँ बाप। उ०—देखता वालिदैन अपने मकमूर ह्ल। परेशान अपन भी फिकर लग दुवाल।—दक्खिनी०, पृ० २६८।

वालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्विनी नक्षत्र [को०]।

वालिभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] दे० 'वल्लभ'। उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु अकयथ्थ। जिए चल्या दल उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढोला०, दू० १६६।

वाली¹—संज्ञा पुं० [सं० वालिन्] वदरो का एक राजा जो सुग्रीव का वडा भाई और अगद का पिता था।

विशेष—पुराणो मे इसकी उत्पत्ति इंद्र के वीर्य से कही गई है। विशेष दे० 'बालि'।

वाली²—संज्ञा पुं० [अ०] १ मित्र। सखा। २ शासक। हाकिम। उ०—वह वाला वाली इस घर का। है खालिक सब वहरो वर का।—दक्खिनी०, पृ० २२३।

वालुक—संज्ञा पुं० [सं० वालुङ्क] एक प्रकार की ककडी [को०]।

वालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक गंध द्रव्य।

वालुक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गंध द्रव्य। २ पनियालू।

वालुक²—वि० १ वालू की तरह का। २ नमक से बना हुआ [को०]।

वालुकाबुधि—संज्ञा पुं० [सं० वालुकाम्बुधि] वालू का समुद्र, मरुस्थल। रेगिस्तान [को०]।

वालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वालू। रेत। २ शाखा। ३ हाथ पैर। ४. ककडी। ५ कपूर। ६ चूर्ण (को०)।

वालुकात्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीनी। शर्करा [को०]।

वालुकाप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नरक का नाम।

वालुकाब्धि—संज्ञा पुं० [सं०] रेगिस्तान। मरुभूमि।

वालुकायत्र—संज्ञा पुं० [सं० वालुकायन्त्र] औषध सिद्ध करने का एक प्रकार का यंत्र। दे० 'वालुका यंत्र'।

वालुकार्णव—संज्ञा पुं० [सं०] मरुभूमि। रेगिस्तान [को०]।

वालुकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककडी।

वालुकेल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लवण [को०]।

वालुकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

यौ०—वालुकेश्वर तीर्थ = वबई के पास का एक तीर्थ स्थान।

वालूक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष।

वालेय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ गधा। २ पुत्र। ३ एक प्रकार का करज। अगारवल्लरी।

वालेय²—वि० [सं०] दे० 'वालेय¹' [को०]

वाल्क—संज्ञा पुं० [सं०] क्षौमादि वस्त्र। वल्क से बना वस्त्र।

वाल्कल¹—वि० [सं०] वल्कल का। छाल का।

वाल्कल²—संज्ञा पुं० दे० 'वाल्क'।

वाल्कली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। गौडी मद्य।

वाल्गुक—वि० [सं०] वहुत सुंदर [को०]।

वाल्गुद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चमगीदड [को०]।

वाल्मिकि, वाल्मीक, वाल्मीकि—संज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते है।

विशेष—इनका जन्म भृगु वश मे हुआ था। ये प्रचेता के वंशज थे और तमसा नदी के किनारे, जिसे अब टौंस कहते हैं, रहते थे। ये एक बार अपने शिष्यो सहित नदी तट पर स्नान करने गए। वहाँ शिष्यो को घाट पर स्नान सध्या करने के लिये छोडकर नदी के किनारे टहल रहे थे कि इसी बीच मे एक निषाद ने एक क्रौंच को मारा। क्रौंच रक्त मे लथपथ भूमि पर गिर पडा और क्रौंची चिल्लाने लगी। यह घटना देखकर मुनि के मुँह से यह वाक्य निकल गया—'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगम शाश्वती समा। यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधी काममोहितम्।' यह वाक्य विशुद्ध वर्णयुक्त सुदर अनुष्टुभ् था। यह छद मुनि को इतना रुचिकर हुआ कि उन्होने समस्त रामायण महाकाव्य इसी छद मे रच डाला।

वाल्मीकीय—वि० स्त्री० [सं०] १ वाल्मीकि सबधी। वाल्मीकि की। २ वाल्मीकि की बनाई हुई।

वाल्लभ्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रियता। प्यार। वल्लभता [को०]।

वाल्हा(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] वालम। प्रिय। स्वामी। उ०—वाल्हा सेज हमारे रे, तूँ आव हूँ वारी रे, हूँ दासी तुम्हारी रे। —दादू०, पृ० ५०४।

वाल्हा²—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्लभा] पत्नी। प्रिया। उ०—वाल्हा हूँ ताहरी, तूँ माहरो नाथ। तुम सू पहली प्रीतडी, पूरिवलो साथ। —दादू० पृ० ३८६।

वावदूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अच्छा बोलनेवाला। वक्ता। वाग्मी। २ वहुत वकनेवाला। वकवादी।

वावदूकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाग्मिता।

वावय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की तुलसी का पौधा [को०]।

वावसू(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] चर। दूत। जासूस। उ०—इतरे अस खड आविया, सब वावसू सताव। अकबर कहियौ आवते, वहियौ साह निवाब।—रा० रू०, पृ० १०८।

वावात—वि० [सं०] प्रिय। चहेता [को०]।

वावाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा की वह प्रिया पत्नी जो शूद्र जाति की होती थी। उ०—उस समय राजा को चार स्त्रियाँ रखने का अधिकार था, महिषी (पटरानी), परिवाक्त्री (उपेक्षिता), वावाता (प्रिया) तथा पालागली (किसी दरबारी अफसर की लडकी)।—प्रा० भा० प०, पृ० १८५।

वावुट—संज्ञा पुं० [सं०] नाव। बेडा। डोंगी [को०]।

वावू(पु)—संज्ञा, पुं० [सं० वायु] दे० 'वायु'। उ०—खोजे वावू हरथडा, धूडि भरेसी मूठि।—ढोला० दू० ३६१।

वावृत्त—वि० [सं०] छाँटा गया। चुना गया। पसंद किया गया [को०]।

वावेला—संज्ञा पुं० [अ०] १. विलाप। रोना पीटना। २ शोरगुल। हल्ला। चिल्लाहट।

क्रि० प्र०—करना।—मचाना।—होना।

वाश¹—संज्ञा पुं० [सं०] अडूसा। वासक।

वाश²—वि० १. वहुत रोनेवाला। रोना। २. निवेदित।

वाश[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम ।

वाशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिल्लानेवाला । निनादकारी । २ रोनेवाला । ३ अडूसा ।

वाशन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षियो का बोलना । २ मक्खियो का भिनभिनाना ।

वाशन[2]—वि० १ चिल्लानेवाला । शब्द करनेवाला । २ चहचहानेवाला ३ भिनभिनानेवाला ।

वाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वासक । अडूसा ।

वाशि—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि । आग ।

वाशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा

वाशित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] पशु पक्षी आदि का शब्द ।

वाशित[2]—वि० १. दे० 'वासित' । २ शब्दित । पुकारा हुआ । (को०) ।

वाशिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री । २ हथिनी । ३ पत्नी [को०] ।

वाशितागृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान हथिनी [को०] ।

वाशिष्ठ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक उपपुराण का नाम । २ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वाशिष्ठ[2]—वि० [सं०] वशिष्ठ सबधी । वशिष्ठ का ।

वाशिष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोमती नदी ।

वाशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुल्हाडी । कुठार । २ ध्वनि । स्वर । ३ युद्ध का निनाद [को०] ।

वाशुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात । रात्रि [को०] ।

वाश्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. मदिर । निवास । २ चौराहा । ३. दिन । दिवस (को०) । ४ वृषभ । बैल (को०) । ५ गोबर (को०) ।

वाश्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता । २ बछडे सहित गाय [को०] ।

वाष्कल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वीर । योद्धा [को०] ।

वाष्कल[2]—वि० महान् । बडा [को०] ।

वाष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहा । २. आँसू । ३. भाप । भाफ । ४. कटकारि । भटकटैया ।

यौ०—वाष्पदुर्दिन = अश्रुभरी (आँखें) । वाष्पमुख = आँसू से जिसका मुँह गीला हो । वाष्पमोक्ष, वाष्पमोक्षण = अश्रुपात । रुदन । (अन्य यौ० शब्दो के लिये देखें 'बाष्प' शब्द) ।

वाष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मरसा नाम का साग । २. दे० 'बाष्पक' ।

वाष्पयान—संज्ञा पुं० [सं०] भाप की शक्ति से चलनेवाला यान । रेलगाडी । उ०—रेडियो, तार औ 'फोन',—वाष्प, जल, वायुयान, मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान मान ।—ग्राम्या, पृ० ८८ ।

वाष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंगुपत्री ।

वाष्पी, वाष्पीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वाष्पिका' [को०] ।

वासत[1]—संज्ञा पुं० [सं० वासन्त] १. ऊँट । २ कोकिल । ३ मलय वायु । ४ मूँग । ५ मैनफल । ६ लपट या दुराचारी व्यक्ति (को०) । ७ जवान हाथी या कोई भी जवान पशु (को०) ।

वासत[2]—वि० १ वसती । वसंत ऋतु का । वसत सबधी । २ युवा । जीवन के वसत मे वर्तमान । युवक । ३. कार्यतत्पर । काम मे संलग्न [को०] ।

वासत[3]—संज्ञा पुं० [सं० वसन्त] दे० 'वसत' । उ०—बासत बिना इन सकल बुधि सब मनोरथ रह्यो मन ।—पृ० रा०, ५८ । ८१ ।

वासतक—वि० [सं० वासन्तक] १. वसत सबधी । २ वसंत ऋतु मे बोया हुआ ।

वासतिक[1]—संज्ञा पुं० [सं० वासन्तिक] १. भाँड । विदूषक । २ नाचनेवाला । नर्तक । अभिनेता ।

वासतिक[2]—वि० वसंत संबधी ।

वासतिकता—संज्ञा स्त्री० [सं० वासन्तिकता] वसत सबधी होने का भाव । आनद । मौज ।

वासती—संज्ञा स्त्री० [सं० वासन्ती] १. माधवी लता । २ जूही । ३ एक पुष्प जो जूही की जाति का होता है । यह वसत ऋतु मे ही फूलता है और सुगधित होता है । नेवारी । ४ गनियारी नामक फूल । ५ मदनोत्सव । ६ दुर्गा । ७. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चौदह वर्ण (म, त, न, म, ग ग) होते हैं, जिनमे ६, ७, ८ और ९ वां वर्ण लघु और शेष गुरु होते है ।

वासदर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर, प्रा० वइसाणर, वइस्साणर, अप० वासदर, वैसदर] अग्नि । वैसदर । उ०—का वासदर सेवियइ, कइ तरुणी, कइ मंद ।—ढोला०, दू० २९४ ।

वास—संज्ञा पुं० [सं० वासस्] दे० 'वासस्' ।

यौ०—वास कुटी = रावटी । खेमा । तबू । २. वास खड = वस्त्र का टुकडा ।

वास—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवस्थान । रहना । निवास । उ०—गोदावरी तीर पर प्रभु ने दडक वन मे वास किया ।—साकेत, पृ० ३७८ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

यौ०—कारावास । तीर्थवास । कल्पवास । कैलाशवास । वैकुंठवास ।

२ गृह । घर । मकान । ३. स्थान । स्थल । जगह । स्थिति (को०) । ४. वासक । अडूसा । ५ एक दिन की यात्रा (को०) । ६. वासना । भावना (को०) । ७ सकाश । औपम्य । सादृश्य (को०) । ८. सुगध । बू ।

यौ०—वासकर्णी । वासगृह = गृह का भीतरी हिस्सा । शयनकक्ष । वासताबूल = सुगधित पान । वासपर्यय । वासप्रासाद = महल । वासभवन, वासमदिर, वाससदन = निवासस्थान । घर । वासयष्टि । वासयोग = सुगधित चूर्ण । पाउडर । वाससज्जा = दे० 'वासकसज्जा' ।

वासक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अडूसा । २ गान का एक अग ।

विशेष—शकर के मत से मनोहर, कदर्प, चारु और नदन नामक इसके चार भेद है । कोई कोई विनोद, वरद, नद और कुमुद को इसका भेद मानते हैं ।

३. वासर । दिन । ४ शालक राग का एक भेद । ५ वस्त्र । ६. गध । सुगधद्रव्य (को०) । ७ शयनागार शयनकक्ष (को०) ।

वासक(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० वासुकि] दे० 'वासुकि' । उ०—एक दत पाताल चलावा । तहाँ जाय वासक को खावा ।—कबीर सा० पृ० ८०२ ।

वासक[२] –वि० [सं०] [वि० स्त्री० वासका, वासिका] १ सुवासित करनेवाला। सुगंधित करनेवाला। २ बसानेवाला बसने के लिये प्रेरित करनेवाला [को०]।

वासकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कक्ष जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन, नृत्य, गीत, कुश्ती आदि किए जायँ। २ यज्ञशाला [को०]।

वासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नायिका भेद के अनुसार वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।

वासकसज्जिका —संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वासकसज्जा' [को०]।

वासका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा।

वासकेट—संज्ञा पु०, स्त्री० [अं० वेस्टकोट] एक प्रकार की छोटी बंडी या कमर तक की कुरती जिससे केवल पीठ, छाती और पेट ढकता है।

विशेष—इसमे आस्तीन नही होती। आगे और पीछे के कपडो मे भेद होता है। इसे कसने के लिये पीछे बकसुएदार दो बंद होते हैं।

२ एक प्रकार की बंडी जिसमे आस्तीन नही होती। यह एक ही कपडे की बनती है। इसे जवाहर बंडी भी कहते है।

वासत—संज्ञा पुं० [सं०] गर्दभ। गदहा।

वासतेय—वि० [सं०] बस्ती के योग्य। रहने लायक।

वासतेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात। रात्रि। २ रहने की जगह। घर। निवास (को०)।

वासन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० वासित] १ सुगंधित करना। वासना। धूपन। २ वस्त्र। ३ वास। निवास। ४ ज्ञान। ५ बसना। निवास करना (को०)। ६ आच्छादन। गिलाफ। लिफाफा (को०)। ७ कोई पात्र, आधार, टोकरी, संदूक, वर्तन आदि (को०)। ८ योग की एक मुद्रा (को०)।

वासना[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रत्याशा। २ ज्ञान। ३ किसी पूर्व स्थिति के जमे प्रभाव से उत्पन्न मानसिक दशा। भावना। संस्कार। स्मृति हेतु। ४ न्याय के अनुसार देहात्म बुद्धिजन्य मिथ्या संस्कार। ५ इच्छा। कामना ६ दुर्गा। ७ अर्क की पत्नी। ७ सुगंधित करने या बासने की क्रिया (को०)। ८ प्रमाण। उत्पत्ति (गणित मे)।

वासना[२]—क्रि० स० दे० 'बासना'।

वासना[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० वास] सुगंध। खुशबू। उ०— बिन वासना को फूल कहो कौन काम को।—कबीर म०, पृ० ३६३।

वासनात्मक—वि० [सं० वासना] वासनामय। वासनायुक्त। उ०—वासनात्मक अवस्था मे इन दोनो के विषय सामान्य रहते हैं। —रस०, पृ० ७५।

वासनामय –संज्ञा पुं० [सं०] संस्कारजन्य। भावना से युक्त [को०]।

वासनीय—वि० [सं०] दुर्बोध। अत्यंत क्लिष्ट [को०]।

वासपर्यय—संज्ञा पु० [सं०] स्थान बदलना। स्थानपरिवर्तन [को०]।

वासयष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिडियो के बैठने का अड्डा। छतरी [को०]।

वासर[१]—संज्ञा पु० [सं०] १ दिन। दिवस। उ०—यह तारक जो खचे रचे, निशि मे वासर बीज से बचे।—साकेत, पृ० ३२२। २. क्रम। बारी (को०)। ३ एक नाग का नाम (को०)। ४ वह घर जिसमें विवाह हो जाने पर स्त्री पुरुष पहली रात को सोते हैं।

वासर[२]—वि० प्रभात संबंधी। प्रातःकालीन (को०)।

वासरकन्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।

वासरकृत्—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य [को०]।

वासरमणि —संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

वासरसंग—संज्ञा पु० [सं० वासरसङ्ग] प्रातःकाल।

वासराधीश —संज्ञा पुं० [सं०] दिन का स्वामी। सूर्य [को०]।

वासरेश —संज्ञा पु० [सं०] सूर्य [को०]।

वासव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ धनिष्ठा नक्षत्र।

यौ० —वासवचाप = इंद्रधनुष। वासवज = इंद्र का पुत्र—१ अर्जुन। (२) बालि। (३) जयंत। वासवदत्ता = (१) सुबंधु का संस्कृत गद्य काव्य (२) वत्सराज उदयन की महिषी। वासवदिक्, वासवदिशा = पूर्वदिशा जिसका अधिपति इंद्र है।

वासव[२]—वि० १ वसु संबंधी। २ इंद्र संबंधी। इंद्र का [को०]।

वासवानुज संज्ञा पुं० [सं०] १ उपेंद्र। विष्णु। २. कृष्णचंद्र।

वासवार —संज्ञा पु० [देशी०] घोडा। तुरग।—देशी०, पृ० २६६।

वासवावरज—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वासवावास—संज्ञा पु० [सं०] आकाश। गगन [को०]।

वासवाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की दिशा। पूर्व दिशा।

वासवि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र के पुत्र—१ अर्जुन। २ बालि। ३ जयंत।

वासवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगंधा।

वासवेय—संज्ञा पु० [सं०] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

वासस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। कपडा। २ आच्छादन। परदा (को०)। ३ प्रेत पट। वाच्छादन (को०)। ४ बाणपुंख। तीर के पिछले भाग मे लगाया जानेवाला पर (को०)। ५ रुई। कपास (को०)। जाल। सूत्रजाल (को०)।

वासा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वासक। अडूसा। उ०—वासा यह तरु पै तुम्हैं वासा वासर येक।—दीन० ग्र०, पृ० १०१। २ बासंती। माधवी लता।

वासा[२]—संज्ञा पुं० दे० 'बासा'।

वासात्य—वि० [सं०] उष कालीन। उषाकाल का [को०]।

वासायनिक—वि० [सं०] दरवाजे दरवाजे घूमनेवाला [को०]।

वासि —संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का कुठार। बसूला। २. निवास। वास करना। रहना (को०)।

वासिक—वि० [अ० वासिक] मजबूत। दृढ़ [को०]।

वासिका —संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वासक' [को०]।

वासित[१]—वि० [सं०] १ सुगंधित किया हुआ। महकाया हुआ। २ वस्त्राच्छादित। कपडे से ढका हुआ। ३ जो ताजा न हो। बासी। ४. ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ५ जो रोका गया हो। ठहराया हुआ (को०)। ६. बसाया हुआ। आबाद (को०)। ७. मसालेदार (को०)। ८. आर्द्र। तर। भिगोया हुआ (को०)।

वासित²—संज्ञा पुं० १. पक्षियों की चहचहाहट। कलरव। २ स्मृतिजन्य ज्ञान। वासना [को०]।

वासित³—वि० [अ०] मध्यवर्ती। बीच का [को०]।

वासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २ हथिनी। ३ दे० 'वाशिता'। ४ चद्रशेखर के मत से आर्याछंद का एक भेद, जिसमे ६ गुरु और २९ लघु वर्ण होते हैं।

वासिल—वि० [अ०] १ पहुँचाया हुआ। प्राप्त। २. मिलनेवाला। मुलाकात करनेवाला (को०)। ३. सटा हुआ। संयुक्त (को०)। ४. मिला हुआ। जो वसूल हुआ हो।

यौ०—वासिल बाकी = वसूल और बाकी कम। उ०—वासिल बाकी स्याहा मुजमिल सब अधरम की बाकी। चित्रगुप्त होते मुस्तौफी शरण गहौं मैं काकी।—सूर (शब्द०)।

वासिलात—संज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो वसूल हुआ हो।—वसूल हुए धन का योग।

विशेष—इसका प्रयोग बहुवचन में होता है।

वासिष्टवा—संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्त। रुधिर। २ दे० 'वसिष्ठ'।

वासिष्ठ¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वाशिष्ठी] वशिष्ठ सबंधी। २ वशिष्ठ द्वारा कृत।

वासिष्ठ²—संज्ञा पुं० वशिष्ठ ऋषि का पुत्र। २. दे० 'वासिष्ठ' [को०]।

वासिष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्तर दिशा। २ गोमती नदी [को०]।

वासी¹—संज्ञा पुं० [सं० वासिन्] रहनेवाला। बसनेवाला। अधिवासी। जैसे, ग्रामवासी। नगरवासी।

वासी²—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसूला जिससे बढई लकडी छीलते हैं। तक्षणी।

वासुधरेय संज्ञा पुं० [सं० वासुन्धरेय] एक नरक का नाम [को०]।

वासुधरेयी—संज्ञा स्त्री० [सं० वासुन्धरेयी] वसुंधरा की पुत्री। भूमिजा। भूमिगत। सीता [को०]।

वासु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ परमात्मा। ३. आत्मा (को०)। ४ पुनर्वसु नक्षत्र।

वासुक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वासुकि] दे० 'वासुकि'। उ०—दंड भरैं सेवा करैं, वासुक इद्र कुबेर। गनु गध्रव किन्नर सबैं, जन्च्छ रहे होइ चेर।—माधवानल०, पृ० १८६।

वासुकि—संज्ञा पुं० [सं०] आठ नागों में से दूसरा नागराज।

यौ०—वासुकिसुता = वासुकि की पुत्री। सुलोचना।

वासुकी—संज्ञा पुं० [सं० वासुक] दे० 'वासुकि'।

वासुकेय—संज्ञा पुं० [सं०] वासुकि [को०]।

यौ०—वासुकेयस्वसा = मनसा देवी।

वासुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वसुदेव के पुत्र, श्री कृष्णचद्र। २ मुनिश्रेष्ठ कपिल का एक नाम (को०)। ३ घोडा। अश्व (को०)। ४. जैनों का एक वर्ग (को०)। ५ हरिवश के अनुसार पुड्र देश के राजा का नाम (को०)। ६ पीपल का पेड़। अश्वत्थ। (बोलचाल)।

वासुदेवक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वासुदेव। २ श्रीकृष्ण का उपासक। ३ वह जिसमे वासुदेव नाम कलंकित हो (को०)।

वासुदेवप्रियकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वासुदेवप्रियङ्करी] शतावरी। वासुदेवी (को०)।

वासुदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतावरी [को०]।

वासुभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] वासुदेव। श्रीकृष्णचद्र।

वासुमद—संज्ञा पुं० [सं० वासुमन्द] एक साम का नाम।

वासुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २. हथिनी। ३ रात्रि। रात। ४ भूमि। जमीन।

वासू—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटकों की परिभाषा में स्त्रियों के लिये संबोधन का शब्द।

वासूला(पु)—संज्ञापुं० [हिं०] दे० 'वसूला'। उ०—ऊछले खले तज तुरग एक। वासूले पूँलासूँ विमेख।—रा० रू०, पृ० २४६।

वासोख्त—संज्ञा पुं० [अ० वासोख्त] उर्दू कविता का एक प्रकार, जो मुसद्दस के ढग का होता है और जिसमें प्रेमिका के व्यवहार से रुष्ट होकर प्रेम छोडने और प्रेमिका के त्याग का उल्लेख होता है [को०]।

वासोख्वा– वि० [अ० वासोख्तह्] १ जला हुआ। २ रुष्ट [को०]।

वासोद—वि० [सं०] जो वस्त्र देता हो। वस्त्रदाता [को०]।

वासोभृत्—वि० [सं०] जो वस्त्र पहने हुए हो। जिसने वस्त्र पहना हो [को०]।

वासौकस्—संज्ञा पुं० [सं०] १ निवासगृह। २ तबू। खेमा।

वास्कट—संज्ञा स्त्री० [अ० वेस्टकोट] फतुही।

वास्त—संज्ञा पुं० [सं०] बकरा।

वास्तव¹—वि० [सं०] प्रकृत। यथार्थ। सत्य।

यौ०—वास्तव में = सचमुच। सत्यत। असल में। दरअसल। वाकई।

वास्तव²—संज्ञा पुं० परमार्थभूत। असल तत्व।

वास्तविक¹—वि० [सं०] १ परमार्थ। सत्य। प्राकृत। २. यथार्थ। ठीक।

वास्तविक²—संज्ञा पुं० १ मालाकार। माली। २. यथार्थवादी [को०]।

वास्तवोषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निशा। रात [को०]।

वास्तव्य¹—वि० [सं०] १ रहने योग्य। बसने योग्य। २ बसनेवाला। अधिवासी। ३ अनुपयोगी होने से त्यक्त वा छोडा हुआ (को०)। ४ आबाद। जो बसा हुआ हो (को०)।

वास्तव्य²— संज्ञा पुं० बस्ती। आबादी।

वास्ता संज्ञा पुं० [अ०] १ सबंध। लगाव।

मुहा०—वास्ता पडना = व्यवहार का अवसर आना। काम पडना। जैसे—तुमको उससे वास्ता नहीं पडा है, नहीं तो जानते। वास्ता पैदा करना = ढंग लगाना। सबंध जोडना। वास्ता रखना = लगाव रखना। सबंध रखना।

२ मित्रता। ३ स्त्री और पुरुष का अनुचित सबंध। ४ वह जो मध्यस्थ हो (को०)।

वास्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] बकरों का समूह [को०]।

वास्तु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुभ निवासयोग्य स्थान। वह स्थान जिसपर घर उठाया जाय। डीह।

विशेष—घर बनाने के पहले वास्तु या डीह के शुभाशुभ का विचार किया जाता है। बृहत्संहिता में वास्तुगृह के उत्तम, मध्यम, आदि क्रम से पाँच भेद कहे गए हैं।

२ घर। गृह। मकान। ३ इमारत। ४ कक्ष। कमरा (को०)। ५ दे० 'वास्तूक'—१, २। ६ आठ वस्तुओं में से एक का नाम (को०)। ७ एक प्रकार का अन्न (को०)।

वास्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बथुआ नाम का साग। २. पुनर्नवा। गदहपूरना।

यौ०—वास्तुकर्म = गृहनिर्माण। वास्तुकाल=भवन बनाने का उपयुक्त एवं शुभ समय। वास्तुकालिंग। वास्तुकीर्ण = एक प्रकार का पट मंडप। वास्तुज = घरेलू। गृह संबंधी। वास्तुज्ञान = दे० 'वास्तुकला'। वास्तुदेव, वास्तुदेवता = गृहदेवता। वास्तुनर = आदर्श भवन। वास्तुपि। वास्तुपति। वास्तुपुरुष। वास्तुपूजा। वास्तुयाग।

वास्तुकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक शाक। चिल्ली शाक [को०]।

वास्तुकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वस्तु या भवननिर्माण की कला। उ०—उसमें न तो मूर्तिकला और न वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों के सौंदर्य की प्रशंसा करने की क्षमता थी।—पा० सा० सि०, पृ० १२१।

वास्तुकालिंग—संज्ञा पुं० [सं० वास्तुकालिङ्ग] तरबूज। कलींदा।

वास्तुप, वास्तुपति संज्ञा पुं० [सं०] वास्तु का अधिष्ठाता देवता। उस स्थान का देवता जिसमें घर बना हो। वास्तुपुरुष।

वास्तुपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वास्तुपति'।

वास्तुपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृहप्रवेश के आरंभ में की जाती है।

वास्तुबंधन—संज्ञा पुं० [सं० वास्तुबन्धन] गृहनिर्माण [को०]।

वास्तुयाग—संज्ञा पुं० [सं०] वह याग जो नवीन गृह में प्रवेश करने के समय किया जाता है।

वास्तुविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे वास्तु या इमारत के संबंध की सारी बातों का परिज्ञान होता है। भवननिर्माण की कला।

वास्तुविधान—संज्ञा पुं० [सं०] गृहनिर्माण [को०]।

वास्तुशांति—संज्ञा स्त्री० [सं० वास्तुशान्ति] वे शांति आदि कर्म जो नवीन गृह में प्रवेश करते समय किए जाते हैं।

पर्या०—वास्तुशमन। वास्तुप्रशमन। वास्तुयाग। वास्तूपशम। वास्तूपशमन, आदि।

वास्तुशाक—संज्ञा पुं० [सं०] बथुआ [को०]।

वास्तुशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वास्तुविषयक शास्त्र। दे० 'वास्तुविद्या'।

वास्तूक—संज्ञा पुं० [सं०] एक शाक। बथुआ।

वास्ते—अव्य० [अ०] १ लिये। निमित्त। जैसे,—तुम्हारे वास्ते आम लाया हूँ। २ हेतु। सबब। जैसे—तुम किस वास्ते वहाँ जाते हो?

वास्तेय—वि० [सं०] १ वस्ति संबंधी। कुक्षि या उदर संबंधी। २ वसन, वस्तु और वास्तु संबंधी। बसाने लायक। आबाद करने लायक [को०]।

वास्तोष्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। सुरपति। २ देवता मात्र। ३ वास्तुपति।

वास्त्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] रथ जिसपर परदा या ओहार पड़ा हो। वस्त्र से ढका रथ [को०]।

वास्त्र²—वि० १ वस्त्रनिर्मित। २ वस्त्र से आच्छादित या ढँका हुआ [को०]।

वास्थ—वि० [सं०] जल में रहनेवाला। जलस्थ।

वास्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरमी। ऊष्मा। २ लोहा। ३ भाप। वाष्प।

वास्पेय—संज्ञा पुं० [सं०] नागकेसर।

वास्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] कुठार। कुल्हाड़ा [को०]।

वास्य²—वि० १ ढँकने या आच्छादन करने लायक। २ आबाद करने या बसाने योग्य [को०]।

वास्र—संज्ञा पुं० [सं०] दिवस। दिन [को०]।

वास्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सवत्सा गौ। गाय। २ माता [को०]।

वाह¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाहन। सवारी। २ लादकर या खींचकर ले चलनेवाला। ३ घोड़ा। ४ बैल। ५ भैंसा। ६ वायु। ७ बाहु। भुजा (को०)। ८ ढोना। ले जाना। वहन करना (को०)। ९. अर्जन। प्रापण (को०)। १० प्रवाह। धारा। बहाव (को०)। ११ प्राचीन काल का एक तौल या मान जो चार गोणी का होता था।

वाह²—वि० १ लादकर या खींचकर ले जानेवाला। जैसे, अंबुवाह। २ प्रवहमान। बहनेवाला [को०]।

वाह³—अव्य० [फा०] १. प्रशंसासूचक शब्द। धन्य। जैसे,—वाह! यह तुम्हारा ही काम था।

विशेष—कभी कभी अत्यंत हर्ष प्रकट करने के लिये यह शब्द दो बार भी आता है। जैसे, वाह वाह, आ गए।

२ आश्चर्यसूचक शब्द। जैसे,—वाह! मियाँ काले, क्या खूब रंग निकाले। ३ घृणाद्योतक शब्द। जैसे,—वाह, तुम्हारा यह मुँह। ४ आनंदसूचक शब्द।

वाहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लादकर या खींचकर वस्तुओं को ले चलनेवाला। बोझ ढोने या खींचनेवाला। जैसे, भारवाहक। २ सारथी। ३ अश्वारोही। घुड़सवार (को०)। ४ जलप्रणाली। नहर (को०)।

वाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सवारी। २ धारण करना या ले जाना (को०)। ३ हाँकना। गति में प्रवृत्त करना। जैसे, घोड़े आदि को (को०)। ४ गज। हाथी (को०)। ५ नौका का दंड। डाँडा। पतवार (को०)।

वाहनप—संज्ञा पुं० [सं०] अश्व आदि का परिचारक। साईस [को०]।

वाहनश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] अश्व। घोड़ा [को०]।

वाहना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना [को०]।

वाहना² क्रि० स० [सं० वहन] दे० 'बाहना'।

वाहरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] महिष। भैंसा।

वाहल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलप्रणाली। प्रवाह। स्रोत। जल की धारा। २ यान। वाह। प्रवहण [को०]।

वाहला†¹—संज्ञा स्त्री० [सं० वाहल] धारा। प्रवाह। जल का प्रवाह या पूर। उ०—जउ साहिब तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर। विचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरे दूर।—ढोला०, दू० १४७।

वाहला†²—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ, प्रा० वल्लह] प्रिय। स्वामी। उ०—मारा वाहला जी, विषया थी वारे।—दादू०, पृ० ५१६।

वाहवाह—अव्य० [फ़ा० वाह] बहुत अच्छा। साधुवाद। प्रशंसासूचक शब्द। उ०—जब अपने प्रान पिंड को जानो। तब प्रगटी वाह-वाह की वानी।—प्राण०, पृ० १६१।

मुहा०—वाह वाह होना = खूब प्रसन्न होना। उ०—जबाने खल्क भी 'हातिम' अजब तमाशा है। जिधर वह निकले उधर वाह वाह निकले है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ७५।

वाहवाही—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लोगों की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद।

मुहा०—वाहवाही लेना या लूटना = लोगों की प्रशंसा का पात्र बनना। जैसे,—दूसरे का माल बाँटकर उसने खूब वाहवाही लूटी।

वाहस्—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. ऋचा। सूक्त [को०]।

वाहस—संज्ञा पुं० [सं०] १. अजगर। २. अग्नि। पावक। ३. एक साग। ४ झरना [को०]।

वाहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाहु। भुजा [को०]।

वाहावाहवि अव्य० [सं०] १. हाथोंहाथ। २. आमने सामने [को०]।

वाहावाहवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से होनेवाला युद्ध [को०]।

वाहिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. गाडी। छकडा। २ ढक्का। ३ बोझ ढोने की गाडी (को०)।

वाहित[1]—वि० [सं०] १ प्रवाहित। २. चलाया हुआ। चालित। ३ वंचित। ४. जो वहन किया गया हो। ढोया हुआ। ५. विताया हुआ। व्यतीत किया हुआ (को०)। ६. नष्ट। विध्वस्त (को०)। ७ जिसके निमित्त चेष्टा की गई हो (को०)।

वाहित[2]—संज्ञा पुं० बड़ा भार। भारी बोझ [को०]।

वाहित्थ—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी के मस्तक के बीच का भाग [ग्रे०]।

वाहिद[1]—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक की संख्या। २ ईश्वर। खुदा। उ०—है वाहिद और युकजा वही। गुन ज्ञान की टकसार है।—कबीर म०, पृ० ३६१।

वाहिद[2]—वि० यकला। अद्वय। एक। इकला [को०]।

वाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। २ सेना का एक भेद, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोडे और ४०५ पैदल होते थे। एक वाहिनी में तीन गण होते थे। ३. नदी (को०)।

यौ०—वाहिनीनिवेश = सेना की छावनी। सैन्यशिविर। वाहिनी-पति।

वाहिनीक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनी' [को०]।

वाहिनीपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. वाहिनी नामक सेना विभाग का अधिपति या प्रधान। २. सेनापति। ३ नदियों का अधिपति। समुद्र (को०)।

वाहिनीश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनीपति'।

वाहिम—वि०[अ०] १ शक्की। वहमी। २ कल्पना करनेवाला [को०]।

वाहिमा—संज्ञा पुं० [अ० वाहिमह्] १. भ्रम। भ्रांति। वहम। २. कल्पना शक्ति [को०]।

वाहियात[1]—वि० [अ० वाही + फा० यात] १. व्यर्थ। फजूल। जैसे,—तुम तो यों ही वाहियात बका करते हो २. बुरा। खराब। जैसे,—वाहियात आदमियों का साथ मत किया करो।

वाहियात[2]—संज्ञा स्त्री० निरर्थक और व्यर्थ की बात।

वाही[1]—वि० [अ०] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। ३. बुद्धिहीन। मूर्ख। उ०—पीठि परो ईठि सो बसीठि बिनु ढीठ मन नीठ न सँभारैं वाही मोहि मढि रहो है।—देव (शब्द०)। ४. आवारा। ५. बेठिकाने का। ६. वेहूदा। उ०—वाही हा खासे।—सैर०, पृ० ४।

वाही(पु)[2]—सर्व० [हिं०] दे० 'वही'। उ०—(क) वाही थी गुण बेलड़ी, वाही थी रस बेलि। पीणई पीवी मारवी, चाल्या सूती मेलि।—ढोला०, दू० ६१०। (ख) उपरना वाही कै जु रह्यो। जाही के उर बसे स्यामघन, निसि को जहँ सुख गह्यो।—नंद० ग्र०, पृ० ३५५।

वाही[3]—वि० [सं० वाहिन्] १ वहन करने या ढोनेवाला। २ रथ आदि खीचनेवाला। ३ उत्पन्न करनेवाला। पैदा करने या लानेवाला। ४. बहनेवाला। ५. गिराने या प्रवाहित करने वाला [को०]।

वाही[4]—संज्ञा पुं० रथ। गाड़ी [को०]।

वाहीतवाही[1]—वि० [अ० वाही + तवाही] १. बेहूदा। आवारा।

क्रि० प्र०—फिरना।

२. अडबंड। बेसिर पैर का।

क्रि० प्र०—बकना।

वाहीतवाही[2]—संज्ञा स्त्री० अडबड बातें। गाली गलौज। उ०—बेगम साहब के सामने लगी वाहीतवाही बकने, वडी एक हो।—सैर०, पृ० २७।

वाहु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथ के ऊपर का भाग जो कुहनी और कंधे के बीच मे होता है। भुजदंड। दे० 'बाहु'। २ गणित शास्त्र में त्रिकोणादि क्षेत्रों के किनारे की (पार्श्व) रेखा। भुजा।

वाहुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'बाहुक' [को०]।

वाहुमूल—संज्ञा पुं० [सं०] कंधे और बाँह का जोड़। काँख।

वाहुल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिक का महीना। २. शाक्य मुनि के पुत्र का नाम। दे० 'बाहुल' [को०]।

वाहुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] आधिक्य। अधिकता। बाहुल्य।

वाहुवार—संज्ञा पुं० [सं०] बहेड़े का वृक्ष।

वाह्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ यान। रथ। सवारी। २. भारवाही पशु। दे० 'बाह्य'

वाह्य[2]—क्रि० वि० १. बाहर। २. अलग। जैसे,—लोकवाह्य।

वाह्य आतिथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] बाहर से आया हुआ विदेशी माल।

वाह्यक—संज्ञा पुं० [सं०] रथ [को०]।

वाह्यकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक विषैला कीट [को०]।

वाह्यान्तर[1]—वि० [सं० वाह्यान्तर] भीतर और बाहर का। जैसे,—वाह्यांतर शुद्धि।

वाह्यान्तर[2]—क्रि० वि० भीतर और बाहर।

वाह्याभरण—संज्ञा पुं० [सं०] वाहरी भूषण। वाहर की भूषा, या सजावट, अलंकार आदि। उ०—अलकार सिद्धात काव्य के केवल वाह्याभरण पर जोर देते हैं।—अरस्तू०, पृ० १५६।

वाह्यायाम—संज्ञा, पुं० [सं०] एक प्रकार का वात रोग।—माधव०, पृ० १३६।

वाह्याली—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोडे के चलने योग्य सडक [को०]।

यौ०—वाह्यालीभू = वाह्याली।

वाह्येंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० वाह्येन्द्रिय] पाँचो ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम वाह्य विषयो का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

वाह्लि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाह्लीक'।

यौ०—वाह्लिज = वलख या वाह्लीक का अश्व।

वाह्लीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक जनपद जो भारत की उत्तरपश्चिम सीमा पर था। गाधार के पास का एक प्रदेश।

विशेष—साधारणत आजकल के 'वलख', जो अफगानिस्तान के उत्तरी भाग मे है, के आसपास का प्रदेश ही, जिसे प्राचीन पारसी 'वकतर' और यूनानी 'वैक्ट्रिया' कहते थे, वाह्लीक माना जाता है, पर पाश्चात्य पुरातत्वविद् इसे आजकल के हिंदुस्तान के वाहर नही मानना चाहते।

२. वाह्लीक देश का घोडा। ३ कुकुम। केसर। ४ हीग। ५. एक प्रमुख गधर्व का नाम।

विंख—संज्ञा पुं० [सं० विङ्ख] घोडे का खुर [को०]।

विंगनं†—वि० [सं० व्यङ्ग्य ?] व्यग्यजन्य। व्यग्य। सकेतित। उ०—दुसरी वानी विंगन कही। पिडज वानि मे वोलै सही।—कवीर सा०, पृ० ८८०।

विंगेश—संज्ञा पुं० [सं० ?] अग्नि। आग।

विंजना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जना] दे० 'व्यजना'। उ०—कवित की जाति वहु भाँति गुनि रीत घुनि, लच्छना कहाँ लो वाच्य विंजना जनाओ मैं।—दीन० ग्र०, पृ० ६।

विंजामर—संज्ञा पुं० [सं० विञ्जामर] आँख का वह भाग जो सफेद होता है।

विंजोलि, विंजोली—संज्ञा स्त्री० [सं० विञ्जोलि, विञ्जोली] श्रेणी। पक्ति। कतार।

विंझ(पु)—वि० [सं० विन्ध्य या विद्ध, प्रा० विञ्झ] घना। गभीर। गझिन। उ०—नयणा आडा विंझ वन, मनह न आडउ कोइ।—ढोला०, दू० २१३।

विंझासनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यवासिनी] दुर्गा, विंध्य पर निवास करनेवाली देवी। उ०—एक सुदिन संध्या समय विंझासनि के थान।—पृ० रा०, २४। ४६१।

विंद¹—संज्ञा पुं० [सं० विन्द] १. अवंती के एक राजा का नाम। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३ दिन का एक विशेष भाग। ४ प्राप्ति। लाभ।

विंद²—वि० १. प्राप्त करनेवाला। लाभ करनेवाला। २. जिसने प्राप्त किया हो।

विंद³—संज्ञा पुं० [सं० वृन्द] दे० 'वृंद'। उ०—कलिंदजा के कुंज कुंज लतान के विंद वितान तने हैं।—राम (शब्द०)।

विंद⁴—संज्ञा पुं० [सं० विन्द] दे० 'विंदु'।

विंदक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विन्दक] १ प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। २ जाननेवाला। ज्ञाता। वेत्ता। उ०—(क) परम साधु परमारथ विंदक। सभु उपासक नहि हरि निंदक।—तुलसी (शब्द०)। (ख) भव कि परहिं परमातम विंदक। सुखी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक।—तुलसी (शब्द०)।

विंदण†—संज्ञा पुं० [सं० वन्दीजन] स्तुतिपाठक। उ०—जै जपा सबद विंदण भणे, वदण राजा वामहा। खामीय सहे अकबर लियौ, दुरगे दाखण सामहा।—रा० रू०, पृ० १७३।

विंदु¹—संज्ञा पुं० [सं० विन्दु] १ जलकण। बूँद। २ बुंदकी। बिंदी। ३ रंग की बिंदी जो हाथी के मस्तक पर शोभा के लिये बनाई जाती है। ४ अनुस्वार। ५ शून्य। ६ दाँत का लगाया हुआ क्षत। दतक्षत। ७ दो भौहों के बीच की बिंदी। ८. एक बूँद परिमाण। ९ रेखागणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। १० छोटा टुकडा। कण। कणी। उ०—कनक विंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे।—तुलसी (शब्द०)। ११. रत्नो का एक दोष या धब्बा जो चार प्रकार का कहा गया है—आवर्त (गोल), वर्ति (लवा), आरक्त (लाल) और यव (जौ के आकार का) १२ मूँज या सरपत का घूआँ।

विंदु²—वि० १. जानी। वेत्ता। जानकार। २ उदार। दाता। ३ जानने योग्य।

विंदुचित्रक—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुचित्रक] वह मृग जिसके शरीर पर गोल गोल सफेद बुँदकियाँ होती हैं। सफेद चित्तियो का हिरन।

विंदुजाल—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुजाल] सफेद बिंदियो का समूह जो हाथी के मस्तक और सूँड पर बनाया जाता है।

विंदुजालक—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुजालक] हाथियो का पद्मक नामक रोग।

विंदुतत्र—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुतन्त्र] १ चौपड आदि की बिसात। अक्ष। सारिफलक। २. तुरगक।

विंदुतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुतीर्थ] काशी के प्रसिद्ध पचनद तीर्थ का नामातर जहाँ विंदुमाधव का मंदिर है। पंचगगा।

विंदुत्रिवेणी—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुत्रिवेणी] गाने मे स्वरसाधन की एक प्रणाली जिसमे तीन वार एक स्वर का उच्चारण करके एक वार उसके वाद के स्वर का उच्चारण करते हैं। फिर तीन वार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक वार तीसरे स्वर का उच्चारण करते है, और अत मे तीन वार सातवें स्वर का उच्चारण करके एक वार उसके अगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते है। यथा—आरोही—सा सा सा रे, रे रे रे ग, ग ग ग म, म म म प, प प प ध, ध ध ध नि, नि नि नि सा। अवरोही—सा सा सा नि, नि नि नि ध, ध ध ध प, प प प म, म म म ग, ग ग ग रे, रे रे रे सा।

विंदुपत्र—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुपत्र] भोजपत्र।

विंदुमति—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुमति] दे० 'विंदुमती'।

विंदुमती—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुमती] राजा शशिविंदु की कन्या का नाम।

विंदुमाधव—संज्ञा पुं० [सं० बिन्दुमाधव] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति का नाम।

विशेष—इनके विषय में काशी खंड में लिखा है कि एक बार भगवान् विष्णु शिव जी की समति पाकर काशी आए और यहाँ के राजा दिवोदास को बाहर निकाल दिया। उस समय अग्निविंदु नामक ऋषि ने विष्णु की स्तुति की और भगवान् ने प्रसन्न होकर उससे वर माँगने के लिये कहा। ऋषि ने कहा कि मोक्षाभिलाषियों के हितार्थ पचनद तीर्थ पर आप अवस्थान करें और हमारे नाम से प्रसिद्ध होकर सबको मुक्ति प्रदान करें। विष्णु भगवान् ने 'एवमस्तु' कहकर कहा कि आज से हम तुम्हारा आधा नाम अपने नाम के आगे जोड़कर विंदुमाधव नाम से प्रख्यात होकर पचनद तीर्थ (पचगगा) पर वास करेंगे। पचनद तीर्थ भी विंदुतीर्थ कहलावेगा।

विंदुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विंदु+र (प्रत्य०)] किसी पदार्थ पर दूसरे रंग के लगे हुए छोटे छोटे चिह्न। बुंदकी। उ०—सिंदुर विंदुर बान के चिह्न चुनो जरि केसर कुंदन कीजै।—सुंदरी सं०। (शब्द०)।

विंदुराजि—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुराजि] एक प्रकार का साँप। राजमन।

विंदुल—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुल] अगिया नामक कीड़ा जिसके छूने से शरीर में फफोले निकल आते हैं।

विंदुसर—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुसर] १ पुराणानुसार एक सरोवर का नाम जिसके उत्तर कैलाश पर्वत है।

विशेष—कहते हैं, भगीरथ ने गगा के लिये इसी सर के किनारे तप किया था। गगा जी इसी स्थान से निकली हैं। देवताओं ने यहाँ अनेक यज्ञ किए थे और भगवती गगा के जितने विंदु पृथ्वी पर उतरते समय गिरे, वे इसी स्थान पर थे। इससे वह सर बन गया और विंदुसर कहलाने लगा।

२ उड़ीसा में भुवनेश्वर क्षेत्र के एक प्राचीन सरोवर का नाम।

विंदुसार—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुसार] चद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।

विशेष—यह चद्रगुप्त के बाद मगध का राजा हुआ था। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।

विंध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्य] विंध्याचल। विंध्य पर्वत। उ०—कुसमउ देखि सनेह सँभारा। बढ़त विंध जिमि घटज निवारा।—तुलसी (शब्द०)।

विंधपत्र—संज्ञा पुं० [सं० विन्धपत्र] बेलसोंठ। विल्व शलाटु।

विंधपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्धपत्री] दे० 'विंधपत्र'।

विंधस—संज्ञा पुं० [सं० विन्धस] चद्रमा [को०]।

विंध्य—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्य] एक प्रसिद्ध पर्वत या पर्वतश्रेणी का नाम।

विशेष—यह पर्वत भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है। आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर यह पर्वत है। विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश दक्षिणापथ या दक्षिण कहलाता है। इससे दो प्रधान नदियाँ नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा में बहकर अरब की खाड़ी में गिरती हैं। इस पर्वत के पत्थर प्रायः बलुए और परतदार होते हैं। इसकी अनेक शाखा प्रशाखाएँ सतपुरा आदि नाम से विख्यात हैं। पुराणानुसार यह सात कुलपर्वतों में है और मनु के अनुसार मध्य देश की दक्षिणी सीमा है। महाभारत में कथा है कि विंध्य ने सूर्य से कहा कि मेरु के समान तुम हमारी प्रदक्षिणा किया करो। जब सूर्य ने न माना, तब विंध्य ऊपर बढ़ने लगा और यह आशंका हुई कि यह सूर्य का मार्ग ही रोक देगा। देवताओं ने अगस्त्य जी से प्रार्थना की। अगस्त्य उसके पास गए और उसने साष्टांग दडवत किया। मुनि ने कहा कि जबतक मैं न लौटूँ, तबतक इसी तरह पड़े रहना। इतना कहकर अगस्त्य जी चले गए और फिर वापस नहीं आए। कहते हैं कि इसी लिये यह पर्वत अब तक ज्यों का त्यों लेटा पड़ा है, और इसी लिये इसका इतना अधिक विस्तार है।

यौ०—विंध्यकूट। विंध्यकूटक। विंध्यकूटन। विंध्यकैलासवासिनी। विंध्यगिरि = विंध्याचल। विंध्यचूलक। विंध्यचूलिक। विंध्यनिलया। विंध्यनिवासी। विंध्यवासी। विंध्यपति। विंध्यवासिनी। विंध्यशैल। विंध्यस्थ।

विंध्यकूट—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यकूट] १. विंध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि का एक नाम।

विंध्यकूटक, विंध्यकूटन—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यकूटक, विन्ध्यकूटन] विंध्य पर्वत। विंध्यकूट। २ अगस्त्य मुनि।

विंध्यकैलासवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यकैलासवासिनी] विन्ध्य-वासिनी देवी [को०]।

विंध्यगिरि—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यगिरि] विंध्य नाम का पर्वत।

विंध्यचूलक—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यचूलक] विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश। महाभारत के अनुसार यहाँ एक प्राचीन जगली जाति बसती थी।

विंध्यचूलिक—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यचूलिक] दे० 'विंध्यचूलक'।

विंध्यनिलया—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यनिलया] दे० 'विंध्यवासिनी'।

विंध्यवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यवासिनी] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति।

विशेष—यह मूर्ति मिर्जापुर जिले में विंध्य के एक टीले पर अवस्थित है। पुराणों में इस मूर्ति के सबध में अनेक आख्यान हैं। वामन पुराण का मत है कि इंद्र ने भगवती दुर्गा को विंध्य पर्वत पर ले जाकर स्थापित किया था। किसी किसी का मत है कि सती के देह परित्याग करने पर जब शिव जी उनके शव को अपनी पीठ पर लादकर फिरने लगे, तब विष्णु धनुष बाण लेकर उनके पीछे पीछे चले, और जहाँ जहाँ अवकाश पाया, शव को काट काटकर गिराते गए। उसी समय एक अग यहाँ भी गिरा था, जिससे यह सिद्धपीठ हो गया। यह मूर्ति बहुत प्राचीन है, क्योंकि प्राकृत के गोड़वहो (गौड़वध)

काव्य मे वाक्पतिराज ने, जो आठवीं शताब्दी मे था, इसका वर्णन किया है। राजतरंगिणी मे विंध्यवासिनी को भ्रमरवासिनी नाम से लिखा है। जिस स्थान पर यह मूर्ति है, वह स्थान विंध्याचल कहलाता है।

विंध्यवासी—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यवासिन्] १. व्याकरण के एक आचार्य व्याडि मुनि का एक नाम। २. वह जो विंध्य का निवासी हो। विंध्य पर्वत का रहनेवाला।

विंध्यशक्ति—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यशक्ति] एक यवन राजा का नाम।

विंध्यशैल—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यशैल] विंध्य नाम का पर्वत।

विंध्यस्थ—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यस्थ] १. व्याडि मुनि का एक नाम। २ विंध्य का निवासी।

विंध्या¹—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्या] १. एक नदी का नाम। २ लवली नाम का वृक्ष जिसे हरफारेवड़ी भी कहते हैं (को०)। ३ इलायची (को०)। ४ समय का एक अत्यंत सूक्ष्म मान या विभाग दे० 'त्रुटि'—८ (को०)।

विंध्या²—संज्ञा पुं० दे० 'विंध्य'।

विंध्याचल—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्याचल] १. विंध्य पर्वत। २ विंध्य पर्वत की एक शाखा पर बसी हुई एक छोटी सी बस्ती जिसमे विंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। यह मिर्जापुर से थोड़ी दूर पर है।

विंध्याटवी—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्याटवी] विंध्य का अरण्य। विंध्य पर्वत पर का जगल [को०]।

विंध्याद्रि—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यादि] विंध्य पर्वत।

विंध्यारि—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यारि] अगस्त्य मुनि [को०]।

विंध्यावली—संज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यावली] राजा बलि की स्त्री का नाम।

यौ०—विंध्यावली पुत्र, विंध्यावली सुत = बाणासुर।

विंब—संज्ञा पुं० [सं० विम्ब] दे० 'बिंब' [को०]।

विंबक—संज्ञा पुं० [सं० विम्बक] दे० 'बिंबक' [को०]।

विंबट—संज्ञा पुं० [सं० विम्बट] सरसो का पौधा।

विंबा, विंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विम्बा, विम्बिका] एक लता। कुंदरू।

विंबु—संज्ञा पुं० [सं० विम्बु] सुपारी का पौधा। दे० 'बिंबु' [को०]।

विंबोष्ठ, विंबौष्ठ—संज्ञा पुं० [सं० बिम्बोष्ठ, बिम्बौष्ठ] दे० 'बिंबोष्ठ'।

विंश¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विंशी] क्रम में बीस के स्थान पर पड़नेवाला। बीसवाँ।

विंश²—संज्ञा पुं० बीसवाँ हिस्सा। बीसवाँ अंश [को०]।

विंशक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विंशकी] १. बीस (रुपए आदि) में खरीदा हुआ। २ बीस अंश या भाग का। ३ बीस [को०]।

विंशत—वि० [सं०] बीस। (कुछ समस्त शब्दो मे)।

विंशति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीस की संख्या। २. इस संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२०। ३. सेना के व्यूह का एक प्रकार (को०)।

विंशति²—वि० जो गिनती में बीस हो।

विंशतिक—वि० [सं०] बीस के योग्य [को०]।

विंशतितम—वि० [सं०] बीसवाँ [को०]।

विंशतिप—संज्ञा पुं० [सं०] बीस गाँवों का अधिपति।

विंशतिबाहु, विंशतिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] रावण का एक नाम। विंशद्बाहु।

विंशतिम—वि० [सं०] बीसवाँ। बीस की संख्या का [को०]।

विंशतीश—संज्ञा पुं० [सं०] बीस गाँवों का अधिपति।

विंशतीशी—संज्ञा पुं० [सं० विंशतीशिन्] बीस गाँवों का अधिपति। विंशतीश।

विंशी—संज्ञा पुं० [सं० विंशिन्] बीस। विंशति [को०]।

विंशोत्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति, जिसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके विभाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है। यथा—

ग्रह	काल	नक्षत्र
सूर्य	६ वर्ष	कृत्तिका, उत्तर फाल्गुनी और उत्तराषाढ़।
चंद्र	१० वर्ष	रोहिणी, हस्त और श्रवण।
मंगल	७ वर्ष	मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा।
राहु	१८ वर्ष	आर्द्रा, स्वाती और शत-भिषा।
बृहस्पति	१६ वर्ष	पुनर्वसु, विशाखा और पूर्व भाद्र।
शनि	१९ वर्ष	पुष्य, अनुराधा और उत्तर भाद्र।
बुध	१७ वर्ष	अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती।
केतु	७ वर्ष	मघा, मूल और अश्विनी।
शुक्र	२० वर्ष	पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और भरणी।
	—	
कुल	१२० वर्ष	

विकुंभिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विकुम्भिका] १. मेढकों की बोली। २. टर्र टर्र की आवाज। कर्कश ध्वनि। टर्राहट।

वि¹—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है—१. पृथक्ता। वियोजन, जैसे,—वियोग। २. निषेध या वैपरीत्य। जैसे,—विक्रय, विकच्छ। ३ अभाग। भाग। जैसे,—विभाग। ४ क्रम। व्यवस्था। जैसे,—विधा। ५. विशेषता; जैसे,—विकराल, विहीन। ६ वैरूप्य; जैसे,—विविध।

वि²—संज्ञा पुं० [सं०] १. अन्न। २. आकाश। ३. चक्षु। आँख। ४ घोड़ा। ५ सोम का एक नाम। ६. पक्षी। ७. बागडोर [को०]।

वि³—संज्ञा स्त्री० पक्षी।

विंश्रारिया—संज्ञा पुं० [देश०] पूर्वाह्न भोजन। वह भोजन जो दोपहर के पहले किया जाता है।—देशी०, पृ० ३०१।

विश्राल—संज्ञा पुं० [देशी, तुल० बंग० बिकाल] सध्या । सायकाल ।—देशी०, पृ० ३१० ।

विए(पु)—वि० [सं० द्वितीय] अन्य । दूसरा । उ०—सोमेसर परिगह प्रबध मित उप्पने खित्रिवर । हुए बीस अजमेर विए उप्पने अपर घर ।—पृ० रा०, १ । ५८३ ।

विककट—संज्ञा पुं० [सं० विकङ्कट] १. गोक्षुर । गोखरू । २ एक वृक्ष । विककत (को०) ।

विककत—संज्ञा पुं० [सं० विकङ्कत] एक जगली वृक्ष का नाम । यज्ञादि मे स्रुवा इसी का बनता था ।

विशेष—इसे कटाई, किंकिणी और वज कहते हैं । इसके पत्ते छोटे छोटे और डालियो मे काटे होते है । इसके फल बेर के आकार के तथा पकने पर मीठे होते हैं, पर अधपकी अवस्था मे खटमीठे होते हैं । वैद्यक मे यह लघु, दीपन और पाचक तथा कमल और प्लीहा का नाशक लिखा है । यज्ञो के लिये स्रुवा इसी की लकडी का बनाने का विधान है ।

पर्या०—ग्रंथिल । स्रुवावृक्ष । स्वादुकटक । कटकी । व्याघ्रपाद । कटकारी । वृतिकंट । स्रुग्दारु । मधुपर्णी । बहुफल । गोपघटी । दंतकाष्ठ । ब्रह्मपादप । हिमक । पिडार । पृथुवीज । रावण । पादरोहण । सुधावृक्ष, इत्यादि ।

विकंकता—संज्ञा स्त्री० [सं० विकङ्कता] अतिबला ।

विकंटक—संज्ञा पुं० [सं० विकण्टक] १. जवासा । २. विकंकट ।

विकप—वि० [सं० विकम्प] १. चपल । चंचल । अस्थिर । कांपता हुआ । २. दीर्घ सांस लेनेवाला [को०] ।

विकपन—संज्ञा पुं० [सं० विकम्पन] १. एक राक्षस का नाम । २. सूर्य की गति या कंपन (को०) । ३. कंपन । कांपना (को०) ।

विकपित[1]—वि० [सं० विकम्पित] कांपता हुआ । हिलता डुलता हुआ [को०] ।

विकपित[2]—संज्ञा पुं० १ स्वरो का गलत उच्चारण करना । २ मंद पड़ते हुए स्वर का एक भेद [को०] ।

विकंपी—संज्ञा स्त्री० [सं० विकम्पी] सगीत में एक श्रुति [को०] ।

विकंपी—वि० [सं० विकम्पिन्] कांपनेवाला । कांपता हुआ या हिलता हुआ [को०] ।

विक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सद्य प्रसूता गाय का दूध । तुरत की व्याई गौ का दूध । पेउस । पीयूष ।

विक[2]—वि० १. जलरहित । जलविहीन । २. जो प्रसन्न न हो । शुष्क । सूखा [को०] ।

विकच—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के धूमकेतु ।

विशेष—इनकी सख्या ६५ है । ये वृहस्पति के पुत्र माने जाते हैं । इनमे शिखा नही होती । इनका वर्ण सफेद होता है और ये प्रायः दक्षिण दिशा मे उदय होते हैं । इनके उदय का फल अशुभ माना जाता है । (वृहत्सहिता) ।

२. ध्वजा । केतु ३. क्षपणक ।

विकच[2]—वि० १ विकसित । खिला हुआ । २. जिसमे बाल न हो । बिना बाल का । केशहीन । ३. विस्तृत । फैला हुआ । विस्तीर्ण (को०) । ४. सुस्पष्ट । व्यक्त । स्फुट (को०) । ५ उज्वल । दीप्तिमत् (को०) ।

यौ०—विकचश्री = विकसित सौदर्य से युक्त । दीप्त । शोभायुक्त ।

विकचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कदंबपुष्पी । महामुडी [को०] ।

विकचित—वि० [सं०] प्रफुल्ल । खिला हुआ [को०] ।

विकच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] (नदी) जिसके दोनो ओर तराई या कछार न हो । जिसके किनारे पर दलदल या गीली जमीन न हो ।

विकट[1]—वि० [सं०] १ विशाल । २. विकराल । भयकर । भीषण । ३. वक्र । टेढा । उ०—(क) भृकुटी विकट निकट नैनन के राजत अति वर नारि । मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि ।—सूर (शब्द०) । (ख) विकट भृकुटि कच घूघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ।—तुलसी (शब्द०) । ४ कठिन । मुश्किल । उ०—(क) नित प्रति सबै उरहने के मिस आवति हैं उठि प्रात । मनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात । —सूर (शब्द०) । (ख) नट कृत कपट विकट खगराया । नट सेवकहि न व्यापहि माया ।—तुलसी (शब्द०) । ५ दुर्गम । जैसे, विकट मार्ग ६ दुस्साध्य । ७ बिना चटाई का । ८. गर्वयुक्त । घमड से भरा हुआ । दर्पयुक्त (को०) । ९. सौंदर्य युक्त । सुंदर (को०) । १० जिसके दांत लबे हो । लंबदत (को०) । ११ विकृत । भद्दा (को०) ।

विकट[2]—संज्ञा पुं० १ विस्फोटक । व्रण । फोडा । २ सोमलता । ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ४ गणेश [को०] । ५. चदन । मलयज (को०) । ६. श्वेत फेनाश्म । मैनसिल । मनःशिला (को०) ।

विकटक—वि० [सं०] भद्दी आकृति या देहवाला [को०] ।

विकटमूर्ति—वि० [सं०] डरावने शक्ल का । जिसका आकार भयंकर हो ।

विकटवदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्गा देवी के एक अनुचर का नाम । २. वह जिसकी आकृति भयावनी हो । डरावने मुहँवाला [को०] ।

विकटविषाण—संज्ञा पुं० [सं०] बारहसिंहा [को०] ।

विकटशृंग—संज्ञा पुं० [सं० विकटशृङ्ग] बारहसिंगा [को०] ।

विकटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध देव की माता माया देवी का एक नाम ।

विकटाकृति—वि० [सं०] दे० 'विकटमूर्ति' ।

विकटाक्ष—वि० [सं०] जिसकी आँखें विकट हो । भयंकर आँखोवाला ।

विकटानन—संज्ञा पुं० [सं०] १. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । २. वह जिसका मुख विकट हो ।

विकतिक ... [पालि] ऊनी चद्दर । पलंगपोश । ऐसा शय्यास्त- ... शेर, बाघ आदि की आकृतियां काढ़ी रहती हैं । ... गान स्थान पर करीने से आसंदी, पलंग, चित्रक, ... क, तूलिका, विकतिक, उद्धलोमी, ... और समूरी मृग के खालो के ... थे ।—वैशाली०, पृ० ६५ ।

... [सं०] १ लबी चौड़ी बातें ... । व्यग्योक्ति । झूठी प्रशसा ... ।

विकत्थन²—वि० १ शेखी बघारनेवाला। डींग हाँकनेवाला। २ व्यंग्योक्तिपूर्वक प्रशंसा करनेवाला [को०]।

विकत्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डींग। श्लाघा। २ झूठी प्रशंसा। व्यंग्योक्ति। ३ स्तवन। स्तुति। प्रशंसा। बड़ाई। ४ उद्घोषणा। कोई बात जोरों से कहना। घोषणा [को०]।

विकत्थी—वि० [सं० विकत्थिन्] विकत्था करनेवाला। शेखी मारनेवाला। आत्मश्लाघी [को०]।

विकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विशिष्ट कथा। २ कुत्सित कथा। (जैन)।

विकद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] यादवों के एक भेद का नाम।

विकनिकाह्निक—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

विकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोग। व्याधि। युद्ध का एक ढंग। २ तलवार के ३२ हाथों में से एक का नाम।

विकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिवर्तन। संशोधन। सुधार। २ व्याकरण में क्रियारूपों की रचना के समय धातु और कालवाचक लकार प्रत्ययों के मध्य में रखे जानेवाले विशिष्ट गणद्योतक प्रत्यय अथवा चिह्न।

विकरार(पु)¹—वि० [सं० विकराल] विकराल। भयंकर। डरावना। उ०—(क) कान नाक बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कियो युद्ध अति ही विकरार। लागी चलन रुधिर की धार।—सूर (शब्द०)।

विकरार²(पु)—वि० [अ० फा० बेकरार] विकल। बेचैन। व्याकुल। उ०—छनहिं चेत खन होइ बिकरारा। भा चंदन बंदन सब छारा।—जायसी (शब्द०)।

विकराल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकराला, विकराली] भीषण। भयानक। डरावना। उ०—कितनो आतुरता से देखे अपने पर्चे आली। निर्दय परीक्षकों की कृतियाँ कैसी हैं विकराली।—कुकुम, पृ० ७६।

विकराला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ एक वेश्या का नाम [को०]।

विकराली¹—वि० [सं० विकरालिन्] ऊष्म। गरम [को०]।

विकराली²—संज्ञा स्त्री० ऊष्मा। ताप। गरमी [को०]।

विकर्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्ण के एक पुत्र का नाम। २. दुर्योधन के भाई का नाम जो कुरुक्षेत्र की लड़ाई में मारा गया था। ३ एक साम का नाम। ४ एक प्रकार का बाण।

विकर्ण²—वि० १ श्रवण शक्ति से हीन। बधिर। २ जिसे कान न हो। ३ जिसके कान बड़े बड़े हों [को०]।

विकर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की गँठिवन। २. शिव का व्याडि नामक गण।

विकर्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ईंट, जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी बनाने में होता था।

विकर्णी²—संज्ञा पुं० एक साम का नाम।

विकर्णी³—संज्ञा पुं० [सं० विकर्णिन्] एक प्रकार का बाण [को०]।

विकर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ मदार। आक। ३ वह पुत्र जो अपने पिता को राज्यच्युत करके राजा बना हो (को०)। ४. वह व्यक्ति जो विकर्तन करे। काटनेवाला (को०)।

विकर्म¹—संज्ञा पुं० [सं० विकर्मन्] १ निषिद्ध कर्म। विरुद्धाचार। २ अनेक प्रकार के काम। विविध कार्य (को०)। ३ कार्य व्यापार से मुक्त होना (को०)।

यौ०—विकर्मकृत् = निषिद्ध कर्म करनेवाला। विकर्मक्रिया = निषिद्ध कार्य। अविहित कर्म। विकर्मस्थ = पापात्मा।

विकर्म²—संज्ञा पुं० [सं० वि० + कर्म] विशिष्ट कार्य। उत्तम कर्म। उ०—अकर्म से दूर भागना और विकर्म में मनुष्य अपने को मुक्त और भाग्यवान बनाता है।—कबीर सा०, पृ० ६६४।

विकर्मा—वि० [सं० विकर्मन्] कर्मभ्रष्ट। दुराचारी।

विकर्मस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार वह पुरुष जो वेदविरुद्ध कर्म करता हो। वेद के विरुद्ध आचार करनेवाला व्यक्ति। पापात्मा।

विकर्मिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] बाजार और मेले का निरीक्षक [को०]।

विकर्मिक²—वि० १ अविहित या निषिद्ध कर्म करनेवाला। दुष्कर्म करनेवाला। २ जो अनेक प्रकार के कार्यों में लगा हो। विभिन्न काम करनेवाला [को०]।

विकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाण। तीर। २ खींचना। आकर्षण (को०)। ३ दूरी। फासला। अंतर (को०)।

विकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकर्षण। खींचना। २ विभाग। हिस्सा। ३ एक शास्त्र का नाम, जिसमें आकर्षण करने की विद्या का वर्णन है। उ०—सत्य अस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी। पुनि पर तेज विकर्षण लीजै सौम्य अस्त्र भयहारी—(शब्द०)। ४ कामदेव के एक बाण का नाम (को०)। ५ निवारण। हटाना। दूरीकरण (को०)। ६ खाद्य से परहेज। अन्न से परहेज करना (को०)। ७ अन्वेषण। जाँच। ८ कुश्ती का एक ढंग। अपनी ओर खींचकर गिराना या फेंकना (को०)। ९. प्रतिकूल कर्षण। विपरीत दिशा की ओर खींचना (को०)।

विकलंक—वि० [सं० विकलङ्क] कलंकरहित। निर्दोष। दीप्तियुक्त।

विकल¹—वि० [सं०] १ विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २ कलाहीन। अंशरहित। ३ खंडित। अपूर्ण। जैसे—विकलांग। ४ घटा हुआ। ह्रासप्राप्त। ५ अस्वाभाविक। अनैसर्गिक। ६ असमर्थ। ७ त्रस्त। भयभीत। डरा हुआ (को०)। ८ प्रभाव रहित। प्रभावहीन (को०)। ९ हतोत्साह। जिसका उत्साह समाप्त हो गया हो (को०)।

विकल²—संज्ञा पुं० दे० 'विकला'—५।

विकलकरण—वि० [सं०] शिथिलांग। स्रस्तांग। श्लथ। क्षीणशक्ति [को०]।

विकलकरुण—वि० [सं०] दयनीय। असहाय। निरवलंब [को०]।

विकलपाणिक—संज्ञा पुं० [सं०] लूला। वह आदमी जिसके हाथ कट गए हों [को०]।

विकलाग—वि०[स० विकलाङ्ग] जिसका कोई अग टूटा या खराब हो। न्यूनाग। अगहीन। जैसे, लूला, लँगड़ा काना, खजा आदि।

विकला—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कला का साठवाँ अग। २ वह स्त्री जिसका रजोदर्शन होना बद हो गया हो। ऋतुहीना। ३. वह स्त्री जो ऋतुमती हो। रजस्वला (को०)। ४ बुध ग्रह की गति का नाम। ५. समय का एक अत्यंत छोटा भाग।

विकलाई—सज्ञा स्त्री० [स० विकल + हिं० आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। विकलता। उ०—सूझो का पहिन कलेवर सा, विकलाई का कल जेवर सा। घुल घुल आँखो के पानी मे, फिर छलक छलक बन छद चलो, पर मद चलो।—हिम त०, पृ० ३।

विकलाना^१—क्रि० अ० [स० विकल + हिं० आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। उ०—(क) निठुर बचन सुनि स्याम के युवती विकलानी। मनो महानिधि पाइकै खोए पछितानी।—सूर (शब्द०)। (ख) एक एक ह्वै ढूढ़ही तरुनी विकलाही। सूर प्रभु कहु नाहिं मिले ढूँढति द्रुम पाही।—सूर (शब्द०)।

विकलाना^२—क्रि० स० व्याकुल करना। विचलाना।

विकलास—सज्ञा पु० [स० विकलास्य] एक प्रकार का प्राचीन बाजा, जिसपर चमडा मढ़ा होता था।

विकलित—वि० [स०] १. व्याकुल। बेचैन। २ दुखी। पीड़ित।

विकली—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋतुहीना स्त्री [को०]।

विकलेंद्रिय—वि० [स० विकलेन्द्रिय] १. जिसकी इंद्रियाँ वश मे न हो। २ जिसकी कोई इद्रिय खराब हो, अथवा बिल्कुल न हो। न्यूनेंद्रिय। जैसे,— लूला, लँगडा, काना, खजा इत्यादि।

विकल्प—सज्ञा पुं० [स०] १ भ्राति। भ्रम। धोखा। २ एक बात मन मे बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार। सकल्प का उलटा। ३ विपरीत कल्पना। विरुद्ध कल्पना। ४ विशेष रूप से कल्पना करना या निर्धारित करना। जैसे,—दंड विकल्प। ५ विविध कल्पना। नाना भाँति से कल्पना करना। ६ कई प्रकार की विधियो का मिलना।

विशेष—मीमासा मे विकल्प दो प्रकार का माना गया है—एक व्यवस्थायुक्त, दूसरा इच्छानुयायी। जिसमे दो प्रकार की विधियाँ मिलती हो, उसे व्यवस्थायुक्त कहते हैं। यथा 'दर्श पौर्णमास याग मे यव द्वारा होम करे, व्रीहि द्वारा होम करे इसमे दो प्रकार की विधियाँ हैं। इनमे यदि कर्ता यव से होम करे या व्रीहि से तो यह इच्छानुयायी विकल्प होगा। इच्छा विकल्प मे आठ दोष होते है—प्रमाणत्व परित्याग, अप्रामाण्य कल्पना, अप्रामाण्योपजीवन और प्रामाण्यहानि। ये चारो उक्त दोनो मे लगने से आठ हो जाते हैं।

७ योग शास्त्रानुसार पचविध चित्तवृत्तियो मे एक।

विशेष—यह चित्तवृत्ति ऐसे शब्दज्ञान की शक्ति है जिसका वाच्य वस्तु नही होती। इसमे मनुष्य इस बात की खोज नही करता कि अमुक शब्द का वाच्य कोई पदार्थ है या नही, अथवा हो सकता है या नही। परपरा से उसके वाच्य के सबध मे जैसा लोग मानते आते हैं वैसा ही वह भी मान बैठता है। जैसे,—पारस पत्थर न मिला और न किसी ने देखा है। पर पारस पत्थर शब्द से लोग यही समझते हैं कि कोई ऐसा पत्थर है, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। इस प्रकार के शब्दो के वाच्य के संबंध में जो वृत्ति चित्त मे उत्पन्न होती है, उसे विकल्प कहते हैं।

८ अवातर कल्प। ९ एक काव्यालंकार जिसमे दो विरुद्ध बातो को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या यही। जैसे,—कै लखिहौं मुख मोहन को कै पलास प्रसून की आगि जरौंगी। १० वैचित्र्य। विलक्षणता। ११. समाधि का एक भेद जिसे सविकल्प कहते हैं। १२ व्याकरण मे एक ही विषय के कई नियमो मे से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण। १३. गणना (को०)। १४ उपाय (को०)। १५ कथन। वक्तव्य (को०)। १६ उत्पत्ति (को०)। १७ देवता। ईश्वर (को०)। १८ कूटयुक्ति। कला (को०)।

विकल्प आपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य द्वारा व्याख्यात वह आपत्ति जो दूसरे मार्ग के अवलंबन से बचाई जा सकती हो।

विकल्पक—वि० [स०] विभेदक। विच्छेदक। विभाग कल्पक [को०]।

विकल्पजाल—सज्ञा पुं० [स०] अनिश्चय का घेरा। अनेक प्रकार की दुविधा।

विकल्पन—सज्ञा पुं० [स०] १. अनिश्चय। सदेह। द्विविधा। २. दो मे से किसी एक का निश्चय करने की छूट। ३ विचारशून्यता [को०]।

विकल्पसप्राप्ति - सज्ञा स्त्री० [स० विकल्पसम्प्राप्ति] वातादि दोषो की मिश्रित अवस्था मे प्रत्येक के अंशाश की कल्पना करना। (वैद्यक)।

विकल्पसम—सज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन मे २४ जातियो मे से एक जिसमे वादी के दिए हुए दृष्टात मे अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य मे भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टात को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का मिथ्या खडन किया जाता है। जैसे—वादी—'शब्द अनित्य है, क्योकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है, घट के समान'। प्रतिवादी—'अनित्य और मूर्त है, क्योकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है घट के समान जो अनित्य और मूर्त है'। यहाँ प्रतिवादी का अभिप्राय यह है कि या तो शब्द को मूर्त मानो अथवा उसका नित्य होना स्वीकार करो।

विकल्पित—वि० [स०] १ जिसके सबध मे निश्चय न हो। सदिग्ध। २. जिसका कोई नियम न हो। अनियमित। ३ क्रमबद्ध रूप मे व्यवस्थित (को०)। ४ विभाजित। विभक्त (को०)।

विकल्मष—वि० [स०] जिसमे पाप न हो। निष्पाप। पापरहित। निर्दोष।

विकवच—वि० [स०] वर्म से रहित। बिना कवच का [को०]।

विकश्वर—वि० सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विकस्वर'।

विकषा—सज्ञा स्त्री० [स०] मजीठ।

विकस—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

विकसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विकसित] प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।

विकसना—क्रि० अ० [सं० विकसन] दे० 'विकसना'।

विकसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ [को०]।

विकसाना (पु)—क्रि० स० [हिं० बिकसना का प्रे० रूप] खिलाना। विकसित करना।

विकसित—वि० [सं०] १ प्रफुल्ल। खिला हुआ। २ प्रसन्न [को०]।

विकस्वर¹—वि० [सं०] १ विकासशील। खिलनेवाला। २. खुला हुआ। फूला हुआ (को०)। ३ जो स्पष्ट सुनाई दे (ध्वनि)। ऊँचे स्वरवाला (को०)। ४. निष्कपट (को०)।

विकस्वर²—संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है। उ०—मधुप मोह मोहन तज्यो यह स्यामन की रीति। करौ आपने काज लौं तुम्हें भांति सौं प्रीति।

विकस्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाल रंग की पुनर्नवा। लाल गदहपुरना।

विकांक्ष—वि० [सं० विकाङ्क्ष] कांक्षा या इच्छा रहित। इच्छा रहित। निष्काम [को०]।

विकांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० विकाङ्क्षा] १ मिथ्या कथन। विसंवाद। २. इच्छा का अभाव। ३ दुविधा। अनिश्चय [को०]।

विकांक्षी—वि० [सं० विकाङ्क्षिन्] दे० 'विकांक्ष'।

विकाम—वि० [सं०] कामना रहित। निष्काम [को०]।

विकार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। विकृति। २ निरुक्त के चार प्रधान नियमों में एक जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण हो जाता है। ३. दोष की प्राप्ति। बिगड़ना। खराबी। ४. दोष। बुराई, अवगुण। ५ मन की वृत्ति या अवस्था। मनोवेग या प्रवृत्ति। वासना। उ०- सकल प्रकार विकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।—तुलसी (शब्द०)। ६ वेदांत और सांख्य दर्शन के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। जैसे,—कंकण सोने का विकार है; क्योंकि वह सोने से ही रूपांतरित होकर बना है। ७ उपद्रव। हानि। ८ बीमारी। रोग। व्याधि (को०)। ९ घाव। जख्म। क्षत (को०)। १० परिवर्तन। रद्दोबदल (को०)। ११. मनोवृत्ति या विचार का बदलना (को०)।

विकारण—वि० [सं०] बिना कारण के। अकारण (को०)।

विकारित—वि० [सं०] विकृत किया हुआ। विकारयुक्त बनाया हुआ। परिवर्तित।

विकारी¹—वि० [सं० विकारिन्] १. जिसमें विकार हो। विकारयुक्त। २ क्रोधादि मनोविकारों से युक्त। दुष्ट वासनावाला। उ०—रे रे अंध बीसहूँ लोचन परतिय हरन विकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी —सूर (शब्द०)। ३ जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो। परिवर्तित। उ०— तो हूँ क्रोध न कियो विकारि। महादेव हू फिरे विहारि। —सूर (शब्द०)। ४. परिवर्तनशील। ५ प्रेमासक्त। आसक्त (को०)।

विकारी²—संज्ञा पुं० [सं०] साठ संवत्सरों में से एक संवत्सर का नाम।

विकार्य—संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार जो विकार से होता है [को०]।

विकाल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अतिकाल। देर। २ ऐसा समय जब देवकार्य या पितृकार्य करने का समय बीत गया हो। ३ सायंकाल का समय।

पर्या०—सायं। दिनांत। सायाह्न। विकालक।

विकाल²—संज्ञा पुं० [सं० द्विकाल, प्रा० वि + काल] दोनों काल—प्रात सायं। उ०—होम जाप अस्नान विकाला। तजहि न एकौ तिनहुँ क हाला।—चित्रा०, पृ० ११।

विकालक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विकाल'¹।

विकालत—संज्ञा स्त्री० [अ० वकालत] दे० 'वकालत।'

विकालतनामा—संज्ञा पुं० [फा० वकालतनामह्] दे० 'वकालतनामा'। उ०—(क) विकालतनामा में लिखूँ कर्मसिंह के नाम। नागरी मेरा नाम है आर्यावर्त है धाम।—नागरी० उर्दू०, पृ० ४। (ख) मिरजा साहब के नाम विकालतनामा इस प्रकार लिखा दिया।—नागरी० उर्दू०, पृ० ५।

विकालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] घड़ियाल का कटोरा। जलघड़ी।

विकाश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। २. प्रसार। फैलाव। विस्तार। वृद्धि। ३ आकाश। ४. विषम गति या सुस्पष्ट पद्धति। ५ प्रस्फुटन। खिलना। ६. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है। ७. किसी वस्तु की वृद्धि के लिये उसके रूप आदि में उत्तरोत्तर परिवर्तन होना। ८ प्रदर्शन। प्रकटीकरण। दिखलावा (को०)। ९ हर्ष। आनंद (को०)। १० उत्सुकता। प्रबल उत्कंठा (को०)। ११ एकांत स्थान। एकाकीपन (को०)।

विकाश²—वि० निर्जन। एकांत।

विकाशक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकाशिका] प्रदर्शित करनेवाला। व्यक्त करनेवाला। खोलनेवाला [को०]।

विकाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकटीकरण। प्रदर्शन। २. खिलना।

विकाशना (पु)—क्रि० स० [सं० विकाश] दे० 'विकासना'। उ० छटपटाहि वे अर्थ विकासैं। ये पुनि आतम अर्थ प्रकाशैं। (शब्द)।

विकाशित—वि० [सं०] दे० 'विकासित'।

विकाशी¹—संज्ञा पुं० [सं० विकाशिन्] धातुओं को शिथिल करनेवाली औषध। उ०—जो औषध धातुओं को शिथिल कर दे तिसको विकाशी कहते है।—शार्ङ्गधर०, पृ० ४०।

विकाशी²—वि० १ दिखाई देनेवाला। चमकनेवाला। २ फूलनेवाला। खिलनेवाला। ३ खिलानेवाला [को०]।

विकास¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसार। फैलाव। २ खिलना। प्रस्फुटित होना। ३ किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर अंत या आरंभ से भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। जैसे,—सृष्टि का विकास, मानव सभ्यता का विकास,

बीज से पेड़ों का विकास, गर्भादि से शरीर का विकास। ४ एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसके आचार्य डार्विन नामक प्राणिविज्ञानवेत्ता हैं।

विशेष—इस सिद्धांत मे यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और उसमे पाए जानेवाले जीवजंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं। यह सिद्धांत इस बात का विरोधी है कि सारी सृष्टि जैसी है, वैसी ही एक बारगी उत्पन्न हो गई थी। इसे विकासवाद भी कहते हैं।

विकास[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० वि+काश] एक प्रकार की घास जो नीची भूमि मे होती है। इसकी पत्तियाँ दूब की भाँति पर कुछ बड़ी होती है। चौपाए इसे बड़े चाव से खाते हैं।

विकासन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विकाशन' [को०]

विकासना(पु)[1]—क्रि० स० [सं० विकास] १ प्रकट करना। निकालना। उ०—जनु अमृत होइ बचन विकासा। कमल जो बास बास धन बासा।—जायसी (शब्द०)। २ विकसित करना। प्रस्फुटित करना। खिलने मे प्रवृत्त करना।

विकासना[2]—क्रि० अ० १ विकसित होना। खिलना। २ प्रकट होना। जाहिर होना।

विकासमान्—वि० [सं० विकासमत्] उत्तरोत्तर विकसित होनेवाला। उ०—उन्होने ईश्वर संबंधी मनुष्य की कल्पना को विकासमान् स्वीकार किया है।—आचार्य०, पृ० ७०।

विकासित—वि० [सं०] १ विकास किया हुआ। खिला हुआ। विस्तारित। उ०—विकासित केसर कुंकुम काम।—पृ० रा०, २५। २३३। २ प्रस्फोटित। ३ प्रकाशित। प्रदर्शित।

विकिर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २ कूआँ। ३ वह चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न आदि दूर करने के लिये चारो ओर फेंका जाता है। अक्षत। ४ पेड़ (को०)। ५ बूँद बूँद करके (तटवर्ती बालू आदि से) चूनेवाला जल (को०)। ६. अपमृत्यु (आग मे जलकर, पानी मे डूबकर आदि) प्राप्त पितरो को दिया जानेवाला पिंड (को०)। ७ छितराई या बिखेरी हुई वस्तु (को०)।

विकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ छितराना। इधर उधर बिखेरना। २. हिंसन। मारना। ३ ज्ञान। ४. किरणो का एकत्र करना। ५ अर्क वृक्ष। ६ एक समाधि [को०]।

विकिष्कु—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का बढ़इयो का एक प्रकार का गज जो प्राय. सवा दो हाथ या ४२ इंच का होता था।

विकीरण—संज्ञा पुं० [सं०] आक। मदार।

विकीरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विकीर्णन] फैलाना। छितराना। उ०—मंद मंद आवै देखो प्रात समीरन करत सुगंध चारो ओर विकीरन।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ६८६।

विकीर्ण[1]—वि० [सं०] १ चारो ओर फैला या छितराया हुआ। अस्तव्यस्त। बिखरा हुआ। २ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ३ प्रसृत (को०)

विकीर्ण[2]—संज्ञा पुं० स्वर के उच्चारण मे होनेवाला एक प्रकार का दोष।

विकीर्णक—वि० [सं०] फैलाने या बिखेरनेवाला [को०]।

विकीर्णकेश, विकीर्णमूर्धज—वि० [सं०] अस्तव्यस्त या खुले बिखरे बालवाला। [को०]।

विकीर्णरोम—संज्ञा पुं० [सं० विकीर्णरोमन्] एक प्रकार का सुगंधित पौधा।

विकीर्णसंज्ञ—दे० संज्ञा पुं० [सं०] 'विकीर्णरोम'।

विकुंचन—संज्ञा पुं० [सं० विकुञ्चन] सिकुड़ने या सिमटने की क्रिया। मुड़ने की क्रिया।

विकुंचित—वि० [सं० विकुञ्चित] सिकुड़ा या सिमटा हुआ। मुड़ा हुआ। मोड़दार [को०]।

विकुंज—संज्ञा पुं० [सं० विकुञ्ज] महाभारत के अनुसार एक जाति का नाम।

विकुंठ[1]—संज्ञा पुं० [सं० विकुण्ठ] १ वैकुंठ। विष्णुलोक। उ०—(क) हरि रस माते मगन रहइ। निरमल भगति प्रेमरस पीवइ आन न पूजा भाव धरइ। सहजइ सदा राम रसराते, मुक्ति विकुंठइ कहा करइ।—दादू (शब्द०)। (ख) नारायण सुंदर भुज चारी। बसहिं विकुंठहि सदा सुरारी।—रघुराज (शब्द०)। २ विष्णु का एक नाम (को०)।

विकुंठ[2]—वि० [सं० विकुण्ठ] १ जो कुंठित न हो। तेज धारवाला। कुंद या भुथरा का उलटा। २. जो धारहीन हो। कुंद या अत्यंत भुथरा (को०)।

विकुंठा—संज्ञा स्त्री० [सं० विकुण्ठा] १ विष्णु की माता। २. मन को केंद्रस्थ करना (को०)।

विकुंठित—वि० [सं० विकुण्ठित] १ शक्तिहीन। अशक्त। २ धारहीन। कुंद। भोथरा (को०)।

विकुंभांड—संज्ञा पुं० [सं० विकुम्भाण्ड] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विकुक्षि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम।

विकुक्षि[2]—वि० जिसका पेट फूला या आगे को निकला हुआ हो। तोंदवाला।

विकुंचित—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध का एक प्रकार। लड़ने की एक प्रकार की पद्धति [को०]।

विकुज—वि० [सं०] १ भौम ग्रह से रहित। २ मंगल के व्यतिरिक्त (दिन)।

यौ०—विकुजरवींदु=मंगल, सूर्य और चंद्रमा रहित।

विकुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विगर्हणा [को०]।

विकुर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. इच्छानुकूल रूप धारण की शक्ति। कामरूपता (बौद्ध०) [को०]।

विकुर्वाण—वि० [सं०] १ प्रसन्न। खुश। २. परिवर्तनशील। ३. आत्मशोधक (को०)।

विकुर्वित—संज्ञा पुं० [सं०] नाना रूप धारण करना [को०]।

विकुस्र—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

विकूजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कलरव करना। पक्षियों का चहचहाना। २ उदर में वायुविकार से होनेवाली गुड़गुड़ाहट [को०]।

विकूजित—संज्ञा पुं० [सं०] कूजन। गुंजार। पक्षियों का कलरव [को०]।

विकूणन—संज्ञा पुं० [सं०] १ टेढी चितवन। कटाक्ष। २ संकोचन [को०]।

विकूणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

विकृत¹—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। उ०—पुरुष के शुक्र और स्त्री के आर्तव में कैसा दोष हो जाने से संतान नहीं होती अथवा विकृत संतान होती है।—जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)। ३ असाधारण। अस्वाभाविक। अप्राकृतिक। ४ असंस्कृत (को०)। ५ अपूर्ण। अधूरा। अंगहीन। छिन्न भिन्न। ६ विद्रोही। अराजक। ७ रोगी। बीमार। ८ आवेशग्रस्त। भावाविष्ट (को०)। ९ बीभत्स। घृणास्पद (को०)। १० पराङ्मुख। विरक्त (को०)। ११ विच्छिन्न (को०)।

यौ०—विकृतदर्शन = जिसका रूप बदल गया हो या विकारयुक्त हो। विकृतदृष्टि। विकृतरक्त = लाल रँगा हुआ या लाल धब्बोंवाला। विकृतवदन = भद्दी आकृतिवाला। बदशकल। विकृतवेषी = वस्त्रादि को असंस्कृत रूप से पहननेवाला। विकृतस्वर।

विकृत स्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरता है।

विशेष—संगीत शास्त्र में १२ विकृत स्वर माने गए हैं- (१) च्युत षड्ज, (२) अच्युत षड्ज, (३) विकृत ऋषभ, (४) साधारण गांधार, (५) अंतर गांधार, (६) च्युत मध्यम, (७) अच्युत मध्यम, (८) त्रिश्रुति मध्यम, (९) कैशिक पंचम, (१०) विकृत धैवत, (११) कैशिक निषाद और (१२) काकली निषाद।

विकृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

विकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। बिगाड़। २ वह रूप जो विकार के उपरांत प्राप्त हो। बिगड़ा हुआ रूप। ३ रोग। बीमारी। ४ सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५ परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ। ७ विद्रोही होने का भाव। शत्रुता। ८ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ९ उन्नति। विकास। १० माया का एक नाम। ११ २३ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा। १२ गर्भपात। गर्भच्युति (को०)।

विकृती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोग। २ विकार। ३. डिंब। ४. मदिरा (को०)।

विकृष्ट—वि० [सं०] १. खींचा हुआ। आकृष्ट। २ अलग किया हुआ (को०)। ३ फैलाया हुआ। विस्तृत किया हुआ (को०)। ४ ध्वनित। शब्दायमान (को०)। ५ लुटा हुआ (को०)।

यौ०—विकृष्टकाल = चिरकाल।

विकेट—संज्ञा पुं० [अं०] क्रिकेट के खेल में दोनों पक्षों की ओर आमने सामने गाड़े गए तीन तीन स्टंप या डंडे और उनके ऊपर लगाई जानेवाली दो दो गुल्लियाँ।

यौ०—विकेट कीपर = बल्लेबाज के पीछे के स्टंप के पास रहनेवाला प्रतिपक्ष का खिलाड़ी।

विकेट डोर—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का छोटा चक्करदार दरवाजा या जाने का रास्ता, जो प्राय कमर तक ऊँचा और ऊपर से बिलकुल खुला हुआ होता है।

विशेष—यह बागों आदि के बड़े दरवाजों के पास ही इसलिये लगाया जाता है कि आदमी तो आ जा सकें, पर पशु आदि न आ सकें। इसके रूप प्राय इस प्रकार के होते हैं — (१) (√), (२) [×], (३) [▢]

विकेतु—वि० [सं०] ध्वजाविहीन। पताका से रहित [को०]।

विकेश¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकेशी] १ जिसके बाल खुले या बीखर हों।

विकेश²—संज्ञा पुं० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ पुच्छल तारा। ३ एक प्रकार के प्रेत।

विकेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षौमवस्त्र [को०]।

विकेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मही (पृथ्वी) रूप शिव की पत्नी का नाम। २ एक प्रकार की गंधर्सी या पूतना। ३ बालों की छोटी छोटी लटों को मिलाकर बनाई गई चोटी। वेणी (को०)। ४ बिखरे बालोंवाली स्त्री (को०)। ५ गंजी स्त्री।

विकोक—संज्ञा पुं० [सं०] वृकासुर के पुत्र और कोक के छोटे भाई का नाम।

विकोदर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वृकोदर] दे० 'वृकोदर'। उ०—गोयंद का सुंदर विकादर सा बाहौं। समर की मरजाद धरम के राहौं।—रा० रू०, पृ० १२३।

विकोश—वि० [सं०] दे० 'विकोष' [को०]।

विकोष—वि० [सं०] १ कोष या म्यान से निकली हुई (तलवार)। २ जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण या आच्छादन न हो। बिना छिलके का।

विकौतुक—संज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता रहित। उदासीन [को०]।

विक्क—संज्ञा पुं० [सं०] करभ। हस्तिशावक। हाथी का बच्चा [को०]।

विक्कण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विक्रयण] दे० 'विक्रय'। उ०—बेवहार मुल्लहिं वणिक्क विक्कण कीनि आनहिं बब्बरा।—कीर्ति०, पृ० २८।

विक्केणुअ—वि० [सं० विक्रेय] दे० 'विक्रेय'।—देशी०, पृ० ३००।

विक्टोरिया¹—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ ब्रिटेन की महारानी जिसके शासनकाल में भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में चला गया था। २ एक प्रकार की घोड़ागाड़ी जो देखने में प्राय. फिटन से मिलती जुलती, पर उससे कुछ छोटी और हलकी होती है और जिसे प्राय एक एक ही घोड़ा खींचता है।

विक्टोरिया²—संज्ञा पुं० एक छोटे ग्रह का नाम जिसका पता हैंड नामक एक यूरोपियन ने सन् १८५० में लगाया था।

विक्त—वि० [सं०] १ पृथक् किया हुआ। २. खाली। रिक्त [को०]।

विक्रम¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। उ०—कटि तट प्रगट प्रताप महान त्रिविक्रम रच्छै। पृष्ठ देस महँ परम रास

वर विक्रम रचै।—गोपाल (शब्द०)। २. बल, शौर्य या शक्ति की अधिकता। ताकत का ज्यादा होना। बहादुरी। पराक्रम। उ०—(क) कासी भूपति चलेउ प्रकासी विक्रम रासी।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वर भोगी भूपन को घरे पंचानन विक्रम अधिक।—गोपाल (शब्द०)। (ग) विपुल बल मूल सट्टल विक्रम जलदनाद मदन महावीर भारी।—तुलसी (शब्द०)। ३. ताकत। बल। ४. गति। ५ प्रकार। ढग। मार्ग। ६. साठ सवत्सरो मे से चौदहवाँ संवत्सर। ७ वेदपाठ की वह प्रणाली जिसमे क्रम का अभाव हो। ८ दे० 'विक्रमादित्य'। ९ पादविक्षेप। कदम। डग (को०)। १० चढता। तीव्रता उत्कर्ष (को०)। ११ स्थिति (को०)। १२ चरण (को०)। १३ विसर्ग का उष्म मे न बदलना (को०)। १४ कुडली के लग्न चक्र का तीसरा स्थान (को०)। १५ सस्कृत भाषा के एक जैन कवि जिन्होने मेघदूत के पदो को लेकर नेमिदूत नामक काव्य की रचना की थी।

विक्रम⁽ᵘ⁾²—वि० श्रेष्ठ। उत्तम। उ०—सुवा सुफल लै आएउ तेहि गुन ते मुख रात। क्या पीत सो तासो सवरी विक्रम बात।—जायसी (शब्द०)।

विक्रमक—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण—सज्ञा पुं० [स०] १. चलना। कदम रखना। २. विष्णु का एक डग (को०)। ३ शूरता। वीरता (को०)। ४ (पाशुपत) अलौकिक शक्ति (को०)।

विक्रमशील—सज्ञा पु० [स०] एक बौद्ध विहर का नाम [को०]।

विक्रमस्थान—सज्ञा पु० [स०] बौद्ध मठ। विहार [को०]।

विक्रमाजीत—सज्ञा पुं० [स० विक्रमादित्य] दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य—सज्ञा पुं० [स०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध-प्रतापी राजा का नाम।

विशेष—इनके सबध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। ये बहुत बडे विद्याप्रेमी, कवि, उदार, गुणग्राहक और दानी कहे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि इनकी सभा मे नौ बहुत बडे बडे और प्रसिद्ध पडित रहा करते थे, जो 'नवरत्न' कहलाते थे और जिनके नाम इस प्रकार हैं—कालिदास, वररुचि, अमरसिंह, धनवतरि, क्षपणक, वेतालभट्ट, घटकर्पर, शकु और वाराहमिहिर। परतु ऐतिहासिक दृष्टि से इन नौ विद्वानो का एक ही समय मे होना सिद्ध नही होता, जिससे 'नवरत्न' को लोग कल्पित ही समझते हैं। आजकल जो विक्रमी सवत् प्रचलित है, उसके सबध मे भी लोगो की यही धारणा है कि इन्ही राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, पर इस बात का भी कोई ऐतिहासिक प्रमाण अभी तक नही मिला है कि विक्रमी सवत् के आरभ होने के समय मालव देश मे या उसके आसपास विक्रमादित्य नाम का कोई राजा रहता था। विक्रमी सवत् किस राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, इसका अभी तक कोई ठीक ठाक पता नही चला है। कुछ विद्वानो का मत है कि विक्रम सवत् का विक्रमादित्य नाम के किसी राजा के साथ कोई सबध नही है और न वह किसी एक व्यक्ति का चलाया हुआ है। उनका मत है कि ईसवी सन् से ५८ वर्ष पूर्व शक नहपाण को गौतमीपुत्र ने युद्ध मे बुरी तरह परास्त करके उसे मार डाला था। इस युद्ध मे उसने अपना जो विक्रम (वीरता) दिखलाया था, उसी की स्मृति के रूप मे मालवो के गण ने उसी तिथि से 'कृत युग का आरभ माना' और इस प्रकार इस विक्रम संवत् का प्रचार हुआ। तात्पर्य यह है कि सवत् वाला 'विक्रम' शब्द किसी विक्रमादित्य नामक सवत् चलानेवाले राजा का सूचक नही है, बल्कि वह पीछे के किसी राजा के विक्रम या वीरता का द्योतक है। स्कंद-पुराण मे लिखा है कि कलियुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर विक्रमादित्य नाम का एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था। मोटे हिसाब से यह समय ईसवी सन् से प्राय सौ वर्ष पूर्व पडता है, पर यह राजा कौन था, इसका निश्चय नही होता। यह भी प्रसिद्ध है कि इस राजा ने शको को एक घोर युद्ध मे पराजित किया था और उसी विजय के उपलक्ष मे अपना सवत् भी चलाया था। शको को पराजित करने के कारण ही इसको एक उपाधि 'शकारि' भी हो गई थी। बौद्धो और जैनियो के धर्मग्रथो तथा चीनी और अरबी आदि यात्रियो के यात्राविवरणो मे भी विक्रमादित्य के सबध मे कुछ फुटकर बातें पाई जाती है पर न तो यही ज्ञात है कि इन्होने कब से कब तक राज्य किया और न इनके जीवन की और बातो का ही कोई क्रमबद्ध इतिहास मिला है। इतिहास से यह भी पता चलता है कि गुप्तवशीय प्रथम चद्रगुप्त ने उत्तर भारत मे शको को परास्त करके 'विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी, परतु ये सवत् चलानेवाले विक्रमादित्य के बहुत बाद के हैं। इसके अतिरिक्त इसी गुप्तवंश के समुद्रगुप्त के पुत्र द्वितीय चद्रगुप्त ने भी 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। ईसवी सातवी शताब्दी के आरभ मे काश्मीर मे भी विक्रमादित्य नाम का एक राजा हुआ था जिसके पिता का नाम रणादित्य था। इसी प्रकार चालुक्य वश मे भी इस नाम के कई राजा हो गए है। पीछे से तो मानो यह प्रथा सी चल पडी थी कि जहाँ कोई राजा कुछ अधिक बढ निकलता था, वहाँ वह अपने नाम के साथ 'विक्रमादित्य' की उपाधि लगा लिया करता था। यहाँ तक कि अकबर की बाल्यावस्था मे जब हेमूँ दूसर ने दिल्ली पर अधिकार किया, तब वह भी विक्रमादित्य बन बैठा था।

उज्जयिनी नरेश विक्रमादित्य का पता अब चल गया है। वह मालव गणतत्र का प्रधान था। ऊपर के अनुच्छेद मे इसे ही गौतमीपुत्र के नाम से पुकारा गया है। वह इतना पराक्रमी निकला था कि बाद के प्रभावशाली नरेशो ने भी अपने नाम के आगे उसका नाम जोडने मे गौरव का अनुभव किया। ई० सन् से ५७ वर्ष पूर्व उसने भयकर युद्ध करके शको को पराजित करके भारत से बाहर निकाल दिया था। इस विषय मे तथ्य के निर्णय मे कतिपय शिलालेख और उज्जयिनी मे खुदाई मे निकले मदिर आदि अत्यत सहायक सिद्ध हुए है।

विक्रमाब्द—स्त्री० पुं० [सं०] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

विक्रमार्क—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमित—संज्ञा पुं० [सं०] शौर्य। वीर्य। पौरुष (को०)।

विक्रमी¹—संज्ञा पुं० [सं० विक्रमिन्] १ वह जिसमें बहुत शक्ति या बल हो। विक्रमवाला। पराक्रमी। उ०—अति विक्रमी सोऽवर्गाज-नंदन। नाम तामध्वज दुष्ट निकंदन।—रघुराज (श० ३०)। २ विष्णु। ३ शेर।

विक्रमी²—वि० विक्रम का। विक्रम संबंधी। जैसे,—विक्रमी संवत्।

विक्रमीय—वि० [सं०] विक्रमादित्य संबंधी।

विक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। बेचना। बिक्री। उ० इस दलील के आधार पर क्रय विक्रय के मामूली व्यापार में दस्तंदाजी करना—अर्थात् किसी चीज के बेचने या मोल लेने की मनाही कर देना—और भी अनुचित बात होगी।—स्वाधीनता (शब्द०)।

यौ०—क्रय विक्रय।

विक्रयक—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

विक्रयपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक पदार्थ अमुक व्यक्ति के हाथ इतने मूल्य पर बेचा गया। बैनामा। २ सामानों की खरीद की रसीद। नगदी खरीद की रसीद। कैशमेमो।

विक्रय प्रतिक्रोष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विक्रय प्रतिक्रोष्टृ] बोली बोलकर बेचनेवाला। नीलाम करनेवाला।

विक्रयिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विक्रय करता या बेचता हो। बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रयी—संज्ञा पुं० [सं० विक्रयिन्] विक्रय करनेवाला। बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रय्य—वि० [सं०] बेचने योग्य। जो बेचा जानेवाला हो (को०)।

विक्रस्त—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा (को०)।

विक्रांत¹—संज्ञा पुं० [सं० विक्रान्त] १ वैक्रांत मणि। २ शूर। वीर। बहादुर। ३ शेर। सिंह। ४ पुराणानुसार हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। ५ व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है। ६ एक प्रजापति का नाम। ७. पुराणानुसार कुवलयाश्व के पुत्र का नाम जिसका जन्म मदालसा के गर्भ से हुआ था। ८ चलने का ढंग। ९ साहस। हिम्मत। १० एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ।

विक्रांत²—वि० १ जिसकी क्रांति नष्ट हो गई हो। २ तेजस्वी। प्रतापी।

यौ०—विक्रांतगति = सिंह के समान गति या चालवाला। सुंदर गतिवाला। विक्रांतयोधी = पराक्रमी या उच्चकोटि का योद्धा।

विक्रांता¹—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रांता] १ अग्निमंथ वृक्ष। अरणी। २ जयंती। ३ मूसाकानी। ४, अड़हुल। गुड़हर। ५ अपराजिता। ६. लाल लजालू। छुई मुई। ७. हंसपदी नाम की लता।

विक्रांता²—संज्ञा पुं० [सं० विक्रान्तृ] १ शूरवीर। वीर। योद्धा। २ शेर। सिंह। ३ [illegible] (डिं०)।

विक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रान्ति] १ गति। २. घोड़े की सरपट चाल। ३ विक्रम। [illegible]। ४ वीरता। शूरता। बहादुरी।

विक्रायक—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रायिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विक्रयिक' (को०)।

विक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। खराबी। २ किसी क्रिया के विरुद्ध होनेवाली क्रिया। ३ परिवर्तन (को०)। ४. उत्तेजना। उद्वेग (को०)। ५ क्रोध। ६ प्रतिकूलता (को०)। ७ भौंहों का [illegible] (को०)। ८ [illegible] (को०)। ९ रोमहर्षण। [illegible] (को०)। १० उपद्रव। कर्तव्य का पालन न होना (को०)। ११ [illegible] (को०)। १२ क्षति। हानि। १३ कुरूपता। [illegible] ([illegible])।

विक्रियोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें किसी विकार [illegible] का वर्णन किया जाता है।

विक्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रय] १ बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। बिक्री। २. वह धन जो माल बेचने से मिले।

विक्रीड—संज्ञा पुं० [सं०] १ खेल या क्रीड़ा। २ खेलने की वस्तु। खिलौना (को०)।

विक्रीत¹—वि० [सं०] जो बेच दिया गया हो। बेचा हुआ।

विक्रीत²—संज्ञा पुं० बिक्री। विक्रय (को०)।

विक्रुष्ट¹—वि० [सं०] १ निष्ठुर। निर्दय। क्रूर। २ [illegible] हुआ। गर्हित। निंदित।—[illegible] (को०)। ३ उद्घोषित। उद्घोषित (को०)।

विक्रुष्ट²—संज्ञा पुं० १ गाली। अपशब्द। २ सहायता प्राप्त करने के लिये चिल्लाना। दुहाई देना। पुकार (को०)।

विक्रेतव्य—वि० [सं०] विक्रय के योग्य। बेचने लायक (को०)।

विक्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कुछ बेचता हो। बेचनेवाला। विक्रय करनेवाला।

विक्रेय, विक्रेय्य—वि० [सं०] जो बेचने को हो। बिकनेवाला। [illegible]।

विक्रोध—वि० [सं०] शांत। क्रोधहीन (को०)।

विक्रोश, विक्रोशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुकार। दुहाई। २ गाली। अपशब्द (को०)।

विक्रोष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विक्रोष्टृ] १ वह जो सहायतार्थ पुकार करता हो। २ अपशब्दों का प्रयोग करनेवाला (को०)।

विक्लव¹—वि० [सं०] १. विह्वल। बेचैन। २ भयभीत। चौंका हुआ। त्रस्त (को०)। ३ डरपोक। कायर (को०)। ४ अभिभूत। ग्रस्त। पराहत (को०)। ५. दुःखी। कष्टग्रस्त। [illegible] (को०)। ६ ऊबा हुआ (को०)। ७ हकलाने या लड़खड़ानेवाला (को०)।

विक्लव²—संज्ञा पुं० [सं०] १ विह्वलता। व्याकुलता। बेचैनी। २. खौफ। डर। भय (को०)।

विक्लवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भीरुता। कायरता (को०)।

विक्लवित—संज्ञा पुं० [सं०] भय से भरी बात। भयभीत वचन।

विक्लात—वि० [स० विक्लात] १ थका हुआ। श्रात। पस्त हिम्मत। २ हतोत्साह [को०]।

विक्लित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] आर्द्रता। क्लिन्नता। गीलापन [को०]।

विक्लिद्य—वि० [स०] पसीने से तर। प्रस्वेद से भीगा हुआ। [को०]।

विक्लिन्न—वि० [स०] १ जो पुराना होने के कारण सड या गल गया हो। जीर्ण शीर्ण। २ अत्यत गीला। पूरी तरह भीगा हुआ (को०)। ३ मुर्झाया हुआ। म्लान। शुष्क (को०)।

विक्लिष्ट¹—वि० [स०] १ अत्यंत कष्टग्रस्त। दुखी। २ क्षतिग्रस्त। नष्ट किया हुआ [को०]।

विक्लिष्ट²—सज्ञा पु० उच्चारण दोष [को०]।

विक्लेद—सज्ञा पु० [स०] १ आर्द्रता। गीलापन। २ भली भाँति तर या गीला होना। ३ विगलन। द्रवीकरण [को०]।

विक्लेदन—सज्ञा पु० [स०] मुलायम या आर्द्र करने की क्रिया [को०]।

विक्लेश—सज्ञा पु० [स०] दैत्य वर्णों का अशुद्ध उच्चारण [को०]।

विक्षत¹—वि० [स०] १. जिसमे क्षत लगा हो। जिसमे खराश पडी हो। घायल। जख्मी। २ पीटा हुआ (को०)। ३ प्रभावित। अभिभूत (को०)।

विक्षत²—सज्ञा पु० घाव। जख्म [को०]।

विक्षय—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जो अधिक मद्यपान करने से होता है।

विक्षर¹—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। २ कृष्ण। ३ एक राक्षस [को०]।

विक्षर²—वि० प्रवहमान। बहता हुआ [को०]।

विक्षरण—सज्ञा पु० [स०] बहना [को०]।

विक्षार—सज्ञा पु० [स०] भाग्यशाली दैवी घटना।

विक्षाव—सज्ञा पु० [स०] १ खाँसी। कास। २ शब्द। ध्वनि [को०]।

विक्षित—वि० [स०] १ नीचे गिरा हुआ। २ हीन। दुखी [को०]।

विक्षिप्त¹—वि० [स०] १. फेका या छितराया हुआ। २ जिसका त्याग किया गया हो। त्यक्त। ३ जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। उ०—(क) उसकी नीद भी उड जाती होगी और जो रात दिन जागता होगा, तो विक्षिप्त या अतिरोगी होगा। —दयानंद (शब्द०)। (ख) तुमहिं कह्यो श्रुति शास्त्रन माही। जहँ विक्षिप्त भूप ह्वै जाही।—रघुराज (शब्द०)। ४ घबराया हुआ। पागलो का सा। विकल। व्याकुल। ५ भेजा हुआ। प्रेषित (को०)। ६ जिसका खडन किया गया हो। निराकृत (को०)। ७ कपित। विक्षुब्ध। जैसे, विक्षिप्त भ्रूविलास (को०)।

विक्षिप्त²—सज्ञा पु० योग मे चित्त की वृत्तियो या अवस्थाओ मे से एक जिसमे चित्त प्राय अस्थिर रहता है, पर बीच बीच मे कुछ स्थिर भी हो जाता है। कहा गया है कि ऐसी अवस्था योग की साधना के लिये अनुकूल या उपयुक्त नही होती।

विशेष—दे० 'चित्तभूमि' और 'योग'।

विक्षिप्तक—सज्ञा पु० [स०] वह मृत शरीर जो जलाया या गाडा गया हो, बल्कि यो ही कही फेक दिया गया हो। (बौद्ध)।

विक्षिप्तता सज्ञा स्त्री० [स०] विक्षिप्त या पागल होने का भाव। पागलपन। उ०—यहाँ तक कि कुछ काल के पश्चात् स्वयं उसे ही अपनी विक्षिप्तता को देखकर विस्मित होना पडता है। —निबंधमालादर्श (शब्द०)।

विक्षीणक—सज्ञा पु० [सं०] १ देवमंडली। २ शिव के अनुचरो का प्रधान। ३ वह स्थान जहाँ से आमिषाहारी हटा दिए गए हो। ४ विध्वस या नष्ट करनेवाला व्यक्ति। विनाशक [को०]।

विक्षीर सज्ञा पु० [स०] आक। मदार।

विक्षीरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दुद्धी। दुग्धिका।

विक्षुण्ण—वि० [स०] १ प्रोत्साहित। प्रेरित। २ चूर्णित। मर्दित। ३ पददलित [को०]।

विक्षुद्र—वि० [स०] जो अपेक्षाकृत छोटा हो [को०]।

विक्षुब्ध—वि० [स०] जिसके मन मे क्षोभ उत्पन्न हुआ हो। जिसका मन चचल हो। क्षुब्ध।

विक्षुभा—सज्ञा स्त्री० [स०] छाया का एक नाम।

विक्षेप सज्ञा पुं० [स०] १ ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फेंकना। डालना। २ इधर उधर हिलाना। झटका देना। ३ (धनुष की डोरी) खीचना। चिल्ला चढाना। ४ मन को इधर उधर भटकाना। इद्रियो को वश मे न रखना। सयम का उलटा। उ०—ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषो से अलग हो के सत्य आदि गुणो को धारण करे।—दयानद (शब्द०)। ५ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो फेककर चलाया जाता था। ६ सेना का पडाव। छावनी। ७ एक प्रकार का रोग। ८ बाधा। विघ्न। खलल। जैसे,—इस काम मे कई विक्षेप पडे हैं। उ०—समाधि की प्राप्ति होने पर भी उसमे चित्त स्थिर न होना ये सब चित्त की समाधि होने मे विक्षेप अर्थात् उपासनायोग के शत्रु है।—दयानंद (शब्द०)। ९ भेजना। प्रेषण (को०)। १०. खटका। भय (को०)। ११ तर्क का निराकरण (को०)। १२. ध्रुवीय अक्षरेखा (को०)। १३. व्यर्थ गवाँना (को०)। १४. अनवधानता (को०)।

विक्षेपण—सज्ञा पु० [स०] १ ऊपर अथवा इधर उधर फेंकने की क्रिया। २. हिलाने या झटका देने की क्रिया। ३ धनुष की डोरी खीचने की क्रिया। ४ विघ्न। बाधा। खलल। ५ प्रेषण। भेजना (को०)। ६. व्यामोह। व्यग्रता। चित्तविक्षेप (को०)।

विक्षेपलिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक प्रकार की प्राचीन लिपि या लेख प्रणाली।

विक्षेपशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वेदातदर्शन के अनुसार माया की शक्ति। अविद्या [को०]।

[illegible] वस्[illegible] [illegible]ा स्त्री० [स० विक्षेप+अवस्था] असयम की दशा। [illegible]ो स्थिति। उ०—ज[illegible] उसकी यह विक्षेपावस्था [illegible] मे बदली कि उसका आवरण [illegible] [illegible]ाहित्य०, पृ० २३६।

विक्षेता—वि० [सं० विक्षेप्तृ] विक्षेप करनेवाला। फेंकनेवाला। तितर बितर करनेवाला (को०)।

विक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ। २ हाथी की छाती का एक भाग या पार्श्व। ३. हलचल। कंपन। जैसे, वीचिविक्षोभ (को०)। ४ द्वंद्व। संघर्ष (को०)। ५ विदीरण। विदारण (को०)। ६ आतंक। भय। खौफ (को०)।

विक्षोभण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक दानव का नाम। २ मन में बहुत अधिक क्षोभ उत्पन्न होना या करना। ३. कंपित करना। हिलाना (को०)।

विक्षोभित—वि० [सं०] क्षुब्ध किया हुआ। हिलाया हुआ (को०)।

विक्षोभी—वि० [सं० विक्षोभिन्] [वि० स्त्री० विक्षोभिणी] जो क्षोभ उत्पन्न करे। क्षोभकारी। विक्षुब्ध करनेवाला।

विखंडित—वि० [सं० विखण्डित] १ तोड़ा हुआ। टुकड़ों में विभक्त। विघटित। २ दो भागों में किया हुआ। दो टुकड़ों में विभक्त। ३ अंगभंग किया हुआ। ४ जिसका खंडन या निराकरण किया गया हो (न्याय)। ५ खुला। फटा। चीर (को०)।

विखंडी—वि० [सं० विखण्डिन्] विखंडित या विभिन्न करनेवाला। नष्ट करनेवाला (को०)।

विख'—वि० [सं०] जिसको नाक न हो। बिना नाकवाला।

विख(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० विष, प्रा० विस] दे० 'विष'।

विखइ, विखउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विषम या विषय] विपत्ति। संकट। दुर्दिन। उ०—(क) आज विखइ सौं दीहड़ो, हाथउ ऊनिति लोइ।—ढोला०, दू० ७। (ख) परदेसे पांथन घणा विखउ न जाणइ मुख्य।—ढोला०, दू० १७।

विखनन—संज्ञा पुं० [सं०] खोदना। खोदने का काम। खुदाई (को०)।

विखना—संज्ञा पुं० [सं० विखनस्] १ प्रजापति। ब्रह्मा। २ एक मुनि का नाम (को०)।

विखम(पु)—वि० [सं० विषम] दे० 'विषम'। उ०—स पहुतावो कौन दम, जह गिरि विखम उजारि। धीरो चार तिनि बीत पुनि, भयो नषत उजियार।—चित्रा०, पृ० २७।

विखहा—संज्ञा पुं० [सं० विषहा] विषैले सर्पों के शत्रु, गरुड़।

विखाद(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० विषाद] दे० 'विषाद'। उ०—भ्रमतार भ्रम अगजीत ग्रह बग विखाद पलट्टिया।—रा० रू०, पृ० ३७७।

विखाद'—संज्ञा पुं० [सं०] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। ध्वंसन। २ खादन। निगलना। भक्षण। खाना (को०)।

विखादितक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मृत शरीर जिसे पशुओं ने खा डाला हो। (बौद्ध)।

विखान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विषाण] सींग।

विखानस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैखानस'।

विखाना(पु)†—क्रि० स० [सं० वीक्षण, प्रा० विक्खण ?] दिखाना। उ०—सोहँसो मूरती नू अखर्या तरदी आनंदघन मुख आणि विखावै।—घनानंद०, पृ० ३६६।

विखायँध—संज्ञा स्त्री० [हिं० विख (= विष) + आयँध (गंध) (प्रत्य०)] [illegible] की सी गंध। [illegible]। उ०—[illegible]। जायसी (शब्द०)।

विखागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible] (को०)।

विखु—वि० [सं०] नासाहीन। बिना नाक का (को०)।

विखुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ राक्षस। २ चोर।

विखेद—वि० [सं०] [illegible]। [illegible]। [illegible] (को०)।

विखै'—संज्ञा स्त्री० [सं० विषय] [illegible]। उ०—(क) [illegible]।—[illegible], पृ० [illegible]। (ख) [illegible]।—[illegible], पृ० [illegible]।

विख्य—वि० [सं०] नासाहीन (को०)।

विख्यात—वि० [सं०] १ जिसका नाम सब जानता हो। प्रसिद्ध। मशहूर। उ०—(क) [illegible]।—[illegible] (शब्द०)। (ख) [illegible]।—[illegible] (शब्द०)। २. नामधारी। कहलानेवाला। [illegible]। ३ [illegible]। माना हुआ।

विख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विख्यात होने का भाव। प्रसिद्धि। शोहरत। उ०—[illegible]।—तुलसी (शब्द०)।

विख्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसिद्ध करना। मशहूर करना। २ व्याख्यान, व्याख्या या विवरण करना (को०)। ३ स्वीकार करना। स्वीकार करना (को०)।

विख, विखु—वि० [सं०] नासाहीन। नासिकारहित (को०)।

विगंदर—संज्ञा पुं० [सं० विगन्दरी] एक प्रकार का वृक्ष। [illegible] (को०)।

विगंध—वि० [सं० विगन्ध] १ जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार। उ०—[illegible]।—[illegible] (शब्द०)।

विगंधक—संज्ञा पुं० [सं० विगन्धक] इंगुदी वृक्ष।

विगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विगन्धिका] १ हपुषा। हाऊबेर। २. अजगंधा। तिलवन।

विगणन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिसाब लगाना। लेखा करना। २. विचारना। विचार विनिमय करना (को०)। ३ ऋण से मुक्त होना। कर्ज चुकाना।

विगणित—वि० [सं०] १ विचारित। २ चुकता किया हुआ। अदा किया हुआ (कर्ज)। ३ जिसका विगणन किया गया हो (को०)।

विगत'—वि० [सं०] १. जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो।

विशेष—जब यह शब्द यौगिक अवस्था में किसी संज्ञा के पहले आता है तब इसका अर्थ होता है—'जिसका नष्ट हो गया हो'।

जैसे,—विगतज्वर = जिसका ज्वर उतर गया हो। विगत-नयन = जिसकी आँखें नष्ट हो गई हो। विगतत्रास = जिसका भय दूर हो गया हो। उ०—विगतत्रास प्रमुदित मन माही। निरखि राम छबि दृग न अघाही।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

२ गत से पहले का। अंतिम या बीते हुए से पहले का। जैसे,—विगत सप्ताह = गत सप्ताह से पहले का सप्ताह। ३. जो कही इधर उधर चला गया हो। ४. जिसकी प्रभा या काति नष्ट हो गई हो। जिसकी चमक आदि जाती रही हो। निष्प्रभ। ५ रहित। विहीन। उ०—(क) विगत मान सम सीतल मन पर गुन नहिं दोस कहौगो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख विगत नयन मन पीर।—सूर (शब्द०)। ६ मृत (को०)। ७ खोया हुआ। लुप्त (को०)। ८ अधकारा च्छन्न। अस्पष्ट। धुँधला (को)।

यौ०—विगतकल्मप = निष्पाप। पवित्र। विगतक्लम = अक्लात क्लातिरहित। विगतज्ञान = नष्टज्ञान। विनष्टबुद्धि। विगत-नयन = नेत्रहीन। अधा। विगतभी = निर्भय। निडर। विगत-राग = विगतस्पृहा। विगतलक्षण = अभागा। विगतश्रीक = कातिहीन। अभागा। विगतस्पृहा = आकाक्षाहीन उदासीन।

विगत२—सज्ञा पुं० पक्षियो का उडना [को०]।

विगत३—सज्ञा पु०० [स० विगत(= व्यतीत)]। १ बीता हुआ। व्यतीत। २ असलीयत। ब्यौरा। हालचल। उ०—यह भाँत विगत विवाह सुणाता अग प्रफुल्लत आण।—रघु० रू०, पृ० ८१।

विगतवार—क्रि० वि० [हिं० विगत + वार] दे० 'ब्योरेवार'। उ०—या समैं आजानवाह जेते सरदार। कवि जेते जानैं सो वखानैं विगतवार।—रा० रू०, पृ० ११८।

विगता—वि० स्त्री० [स०] १ जो विवाह करने के योग्य न रह गई हो। २ जो परपुरुष से प्रेम करती हो।

विगतार्तवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह औरत जिसका ऋतुस्राव बद हो गया हो [को०]।

विगतासु—वि० [स०] मृत। निष्प्राण [को०]।

विगति—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्दशा। दुगति। खराबी।

विगतोद्धव—सज्ञा पुं० [स०] एक वुद्ध का नाम।

विगत्त(पु)—सज्ञा पु० [स० विगति(= व्यतीत)] ब्यौरा। विवरण। उ०—उल्लमैं वेल परसैं अरस, ग्यान न लोक विगत्तरो।—रा० रू०, पृ० १५३।

विगद१—वि० [स०] गद रहित। नीरोग। स्वस्थ [को०]।

विगद२—सज्ञा पुं० एक साथ अनेक प्रकार के शब्द होना [को०]।

विगदित—वि० [स०] १ चतुर्दिक् फैला हुआ (जनरव)। २ कहा हुआ। बातचीत किया हुआ। वर्णित [को०]।

विगम—सज्ञा पु० [स०] १. प्रस्थान। अनुपस्थिति। चला जाना। प्रयाण। २ समाप्ति। अत। खातमा। ३ नाश। हानि। ४ मोक्ष। ५ परित्याग (को०)। ६ मृत्यु (को०)। ७ पार्थक्य। अलगाव (को०)।

विगर—सज्ञा पुं० [स०] १ भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति। २ नग्न यति। नागा। नगा यति। ३ पर्वत। पहाड [को०]।

विगर्जा—सज्ञा स्त्री० [स०] भर्त्सना करना। डाँटना। डपटना। धिक्कार। फटकार।

विगर्हण—सज्ञा पु० [स०] समुद्र की लहरो की गर्जनध्वनि [को०]।

विगर्हणा—सज्ञा स्त्री० [स०] भर्त्सना। डाँट। फटकार।

विगर्हणीय—वि० [स०] बुरा। दुष्ट। निंद्य [को०]।

विगर्हा सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्सा। भर्त्सना। निंदा [को०]।

विगर्हित१—वि० [स०] १. जिसे भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। तिरस्कृत। २ बुरा। खराब। निंदनीय। ३ निषिद्ध। ४ नीच। दुष्ट (को०)।

विगर्हित२—सज्ञा पु० निंदा [को०]।

विगर्ही—वि० [स० विगर्हिन्] निंदक [को०]।

विगर्ह्य—वि० [स०] जो भर्त्सना करने योग्य हो। डाँटने डपटने या निंदा करने के योग्य।

विगलन—सज्ञा पुं० [स०] १ गिरना। श्लथ होना। शैथिल्य। २ नाश। ३ एकरूप होना। घुलना। ४ रिसना। वह जाना। ५ गल जाना [को०]।

विगलित—वि० [स०] १ जो गिर गया हो। अघ पतित। २ जो वह गया हो। जो चूकर या टपककर निकल गया हो। ३. ढीला पडा हुआ। छुटा हुआ। शिथिल। ४ विगडा हुआ। उ०—ऋतुपति तरु विगलित सुदल, तहँ कुरूपता वास। वसी अरुचि यक अवन में, पाप न वस्यो विनास।—रामस्वयवर (शब्द०)। ५ अतर्हित। गया हुआ। लुप्त (को०)। ६ तितर बितर। अस्तव्यस्त (को०)। ७ विदीर्ण।

यौ०—विगलितकेश = बिखरे वालोंवाला। विगलितनीवी = जिसकी नीवी खुल गई हो। विगलितवध = बधनमुक्त। विग-लितलज्ज = धृष्ट। ढीठ। निर्लज्ज। विगलितवसन, विगलित-वस्त्र = विवस्त्र। नग्न। नगा। विगलितशुच्, विगलितशोक = दुखरहित। कष्टरहित। वेदनामुक्त।

विगसना(पु)—क्रि० अ० [स० विकसन] विकसित होना। खिलना। उ०—हीरा मन निज दास है, सब दामन को दास। सतगुरु से परिचय भई, विगसा प्रेम प्रकाश।—स० दरिया, पृ० ४५।

विगाढ—वि० [सं० विगाढ] १ अतिशय। २ आगे बढा हुआ। ३ घसा हुआ (शस्त्र)। ४ स्नात। अवगाहित। ५ प्रगाढ। ६ गहरा घुसा हुआ। डूबा हुआ। निमज्जित [को०]।

विगाथा—सज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छद का एक भेद जिसके विषम (प्रथम और तृतीय) पदो मे १२, दूसरे मे १५ और चौथे में मे १८ मात्राएँ होती हैं और अत का वर्ण गुरु होता है। विषम गणो (पदो) मे जगण नही होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता है। इसे 'विग्गाहा' और 'उद्गीति' भी कहते है।

विगान—सज्ञा पु० [स०] १ निंदा। भर्त्सना। मानहानि। अपमान। २. परस्पर विरोधी युक्ति। असगति [को०]।

विगाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ डुबकी लगाना। २ प्रवेश। ३ स्नान करना [को०]।

विगाहना(पु)—क्रि० अ० [सं० विगाहन] अवगाहन करना। अवगाहना।

विगाहमान—वि० [सं०] विलोडन या अवगाहन करनेवाला [को०]।

विगाहा—संज्ञा स्त्री० [सं० विगाथा] दे० 'विगाथा'।

विगीत—वि०[सं०] १ निंदित। बुरा। कुत्सित। २ परस्पर विरोधी। असंगत। ३ बुरे ढंग से गाया हुआ।

विगीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निंदा। झिडकी। २ परस्पर विरोधी उक्ति। ३ आर्याछंद का एक भेद [को०]।

विगुण¹—वि० [सं०] १ जिसमे कोई गुण न हो। गुणरहित। निर्गुण। विशेष दे० 'निर्गुण'। उ०—दृशि रूप मन तमज विगुण। हृदयस्थ लखौ सब त्यागि भ्रम।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)। २ बुरा। निकम्मा (को०)। ३ बिना रस्सी का (को०)। ४ सूक्ष्म (को०)। ५ अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त (को०)। ६ असफल (को०)। ७ अपर्याप्त। थोडा। अधूरा (को०)। ८ विकृत। उलटा। विपरीत। उ०—मन का अवरोध होने से वायु विगुण (उलटा) होकर अफरा वात शूल और मूत्र इनका नाश करे तब मूत्रकृच्छ्र प्रगट होय।—माधव० पृ० १७१।

विगुल्फ—वि० [सं०] प्रचुर। अधिक [को०]।

विगूढ—वि० [सं० विगूढ] १ गुप्त। छिपा हुआ। २ निंदित [को०]।

विगृहीत—वि० [सं०] १, विभक्त। भग्न किया हुआ। २ पकडा हुआ। अभिभूत। ३ मुकाबला किया हुआ। विरोध किया हुआ। ४ प्रतिबद्ध। निरुद्ध [को०]।

विगृह्यगमन—संज्ञा पुं० [सं०] कामंदक नीति के अनुसार चारो ओर से मित्रो तथा शत्रुओ से घिरकर पानी मे से भागना।

विगृह्ययान—संज्ञा पुं० [सं०] चढाई। हमला [को०]।

विगृह्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] कहासुनी [को०]।

विगृह्यास—संज्ञा पुं० [सं०] कामंदक नीति के अनुसार शत्रु की शक्ति आदि की कुछ भी परवाह न करके की जानेवाली अबाधुंध चढाई।

विगृह्यासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुश्मन को छेडकर या उसकी जमीन आदि छीनकर चुपचाप बैठना। २ शत्रुस्थित दुर्ग को जीतने मे असमर्थ होकर घेरा डालकर बैठना।

विग्गाहा—संज्ञा स्त्री० [सं० विगाथा] विगाथा नामक छंद जो आर्या का एक भेद है।

विग्न—वि० [सं०] १ कंपित। क्षुब्ध। २ त्रस्त। भीत [को०]।

विग्यपति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विज्ञप्ति > विग्यपति] दे० 'विज्ञप्ति'। उ०—विग्यपति ये है देव। भृति भयौ मार्प मेव। सुदर सुधा समुद्र ग्रंथ मोहि भायो है।—सुदर० ग्रं० (जी०) भा० १, पृ० ६२।

विग्र—वि० [सं०] १ नासाहीन। बिना नाक का। २. शक्तिशाली। मेधावी। बली [को०]।

विग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूर या अलग करना। २ विभाग। ३ यौगिक शब्दो अथवा समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना (व्याकरण)। ४ कलह। लडाई। झगडा। ५ युद्ध। समर। ६ नीति के छह गुणो मे से एक। विपक्षियो मे फूट या कलह उत्पन्न करना। ७ आकृति। शकल। ८ शरीर। ९ मूर्ति। १० सजावट। शृंगार। ११ साख्य के अनुसार कोई तत्व। १२ शिव का एक नाम। १३ स्कद के एक अनुचर का नाम। १४ दूसरे के प्रति हानिकारक उपायो का प्रत्यक्ष प्रयोग। १५ विस्तार। फैलाव। प्रसार (को०)।

विग्रहग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] रूपाकार धारण करना [को०]।

विग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] रूप धारण करना। शक्ल मे आना।

विग्रहपर—वि० [सं०] युद्ध या लडाई के लिये तुला हुआ।

विग्रहवान—वि० [सं० विग्रहवत्] शरीरधारी [को०]।

विग्रहावर—संज्ञा पुं० [सं०] देह का पिछला भाग। पीठ [को०]।

विग्रही—संज्ञा पुं० [सं० विग्रहिन्] १ लडाई झगडा करनेवाला। २ युद्ध करनेवाला। ३. युद्ध विभाग का मंत्री या सचिव।

विग्रहेच्छु—वि० [सं०] युद्ध चाहनेवाला। युद्धाभिलाषी [को०]।

विग्राहित—वि० [सं०] बुरी धारणा रखनेवाला [को०]।

विग्राह्य—वि० [सं०] जो इस योग्य हो कि उसके साथ लडाई की जा सके। जिसके साथ युद्ध हो सके।

विग्रीव—वि० [सं०] ग्रीवा रहित। जिसकी गरदन कट गई हो। [को०]।

विघटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सयोजक अगो को अलग अलग करना। २ तोडना फोडना। उ०—प्रगटी धनु विघटन परिपाटी।—तुलसी (शब्द०)। ३ नष्ट या बरबाद करना।

विघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान। लगभग २३-२४ सेकेंड के बराबर का काल। घडी का २३ वाँ या ६० वाँ भाग। पल।

विघटित वि० [सं०] १ जिसके संयोजक अग अलग अलग किए गए हो। २ जो तोड फोड डाला गया हो। ३ नष्ट।

विघट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १ खोलना। २ पटकना। ३ रगडना। ४ दे० 'विघटन'। ५ प्रहार करना। टक्कर मारना (को०)। ६ ठेस पहुँचाना। व्यथित करना (को०)।

विघट्टनीय—वि० [सं०] १ पृथक् करने योग्य। २ जिसका विघटन किया जाय। विघटन करने योग्य [को०]।

विघट्टित—वि० [सं०] १ खुला हुआ। २ तोडा फोडा हुआ। ३ विभक्त या अलग अलग किया हुआ (को०)। ४ रगडा हुआ (को०)। ५ हिलाया हुआ। विलोडित (को०)। ६ आघारित (को०)।

विघट्टी—वि० [सं० विघट्टिन्] विघटित करनेवाला [को०]।

विघन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आघात करना। चोट पहुँचाना। २ एक प्रकार का बहुत बडा हथौडा। घन। ३ इंद्र।

विघन²—वि० १ अत्यत ठोस। कठिन। कठोर। २ घनता से रहित। कोमल। मृदु। ३. मेघविहीन। बादलो से रहित [को०]।

विघन(पु)१—संज्ञा पुं० [सं० विघ्न] दे० 'विघ्न'।

विघर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह रगड़ने या घिसने की क्रिया।

विघस—संज्ञा पुं० [सं०] १. आहार। भोजन। खाना। २ वह अन्न जो देवता, पितर, गुरु या अतिथि आदि के खाने पर बच रहे। उ०—अतिथि के भोजन से बचा हुआ अन्न 'विघस' और पंचयज्ञ से बचा अन्न 'अमृत' कहलाता था।—प्रा० भा० प०, पृ० ३२६। ३ आधा चबाया हुआ ग्रास (को०)। ४ खाद्य पदार्थ (को०)। ५ सिक्थक। मोम (को०)।

विघसाश—संज्ञा पुं० [सं०] विघस नामक अन्न का भक्षक। भुक्तशेष अन्न खानेवाला। जैसे, कौआ, कुत्ता आदि [को०]।

विघसाशी—संज्ञा पुं० [सं० विघसाशिन्] दे० 'विघसाश'।

विघात—संज्ञा पुं० १. आघात। प्रहार। चोट। २. टुकड़े टुकड़े करना। तोड़ना फोड़ना। ३ नाश। ४ बाधा। विघ्न। रोक। ५. सफल न होना। विफलता। ६ हत्या। वध (को०)। ७ परित्याग करना। छोड़ना (को०)। ८ व्याकुलता (को०)।

विघातक—संज्ञा पुं० [सं०] १ विघ्न डालनेवाला। बाधक। २ विघात करनेवाला। घातक (को०)।

विघातन१—संज्ञा पुं० [सं०] १ विघात करने की क्रिया। २ मार डालना। हत्या करना।

विघातन२—वि० विघात करनेवाला। निवारण करने या हटानेवाला।

विघाती—संज्ञा पुं० [सं० विघातिन्] [स्त्री० विघातिनी] १ विघात करनेवाला। २ बाधा डालनेवाला। ३. हत्या करनेवाला। घातक।

विघुष्ट—वि० [सं०] उच्च स्वर से कथित। उद्घोषित [को०]।

विघूणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

विघूर्णन—संज्ञा पुं० [सं०] चारों ओर घुमाना। चक्कर देना।

विघूर्णित—वि० [सं०] १ कँपाया हुआ। कंपित। २ चारों ओर घुमाया या चक्कर दिया हुआ (को०)।

विघृष्ट—वि० [सं०] १ भली भाँति रगड़ा हुआ। घिसा हुआ। २ पीड़ित [को०]।

विघोषण—संज्ञा पुं० [सं०] घोषणा करना। जोरों से चिल्लाना [को०]।

विघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम के बीच में पड़नेवाल अड़चन। रुकावट। बाधा। व्याघात। अंतराय। खलल।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—दूर करना।—पड़ना।—होना।

विशेष—जब इस शब्द के साथ नायक, नाशक अथवा इनके पर्यायवाची शब्दों का योग होता है तब इसका अर्थ 'गणेश' होता है।

२ कृष्ण पाकफला। काली मकोय। ३ कष्ट। कठिनाई (को०)।

विघ्नक, विघ्नकर, विघ्नकर्ता—वि० [सं०] विघ्न करनेवाला। बाधा डालनेवाला।

विघ्नकारी—संज्ञा पुं० [सं० विघ्नकारिन्] वह जो विघ्न डालता हो। बाधा उपस्थित करनेवाला।

विघ्नकृत्—वि० [सं०] दे० 'विघ्नक' [को०]।

विघ्नजित्—संज्ञा पुं० [सं०] विनायक। गणेश।

विघ्ननायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्ननाशक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्ननाशन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश [को०]।

विघ्नपति—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नराज—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नविनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विघ्न का दूर होना [को०]।

विघ्नहंता—संज्ञा पुं० [सं० विघ्नहन्तृ] गणेश [को०]।

विघ्नहरण—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश [को०]।

विघ्नहारी—संज्ञा पुं० [सं० विघ्नहारिन्] गणेश।

विघ्नित—वि० [सं०] १ बाधायुक्त। अंतरराययुक्त। अवरुद्ध। २. मलिन। आकुलित [को०]।

विघ्नेश—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नेशकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० विघ्नेशकान्ता] सफेद दूर्वा।

विघ्नेशवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश जी का वाहन। मूसा। चूहा [को०]।

विघ्नेशान—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश [को०]।

यौ०—विघ्नेशानकांता = श्वेत दूर्वा।

विघ्नेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश। गणपति।

विचंद्र—वि० [सं० विचन्द्र] चंद्रमारहित। जिसमें चंद्रमा न हो [को०]।

विचकित—वि० [सं०] घबराया हुआ।

विचकिल—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की मल्लिका या चमेली। २. मदनक। मदन वृक्ष।

विचक्र१—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विचक्र२—वि० जो चक्ररहित हो। चक्रविहीन [को०]।

विचक्षण—वि० [सं०] १ प्रकाशवान्। चमकता हुआ। २ जो स्पष्ट दिखाई दे। ३ जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। निपुण। पारदर्शी। ४ पंडित। विद्वान्। ५ बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्। उ०—परम साधु सब बात विचक्षण। बसे ताहि महँ सकल सुलक्षण।—रघुराज (शब्द०)।

विचक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती।

विचक्षन(पु)—वि० [सं० विचक्षण] दे० 'विचक्षण'। चतुर। बुद्धिमान्। उ०—अंतरवेद विचक्षन नारि निरंतर अंतर को गति जानै।—देव (शब्द०)।

विचक्षा—संज्ञा पुं० [सं० विचक्षस्] आध्यात्मिक गुरु [को०]।

विचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० विचक्षुस्] १ अंधा। नेत्रहीन। २ आकुल। घबराया हुआ। ३ विमनस्क। उदास [को०]।

विचच्छन(पु)—संज्ञा [सं० विचक्षण, प्रा० विचच्छन] बहुत बड़ा बुद्धिमान् या चतुर। उ०—(क) रन परम विचच्छन गरम तर धरम सुरच्छन करम कर।—गोपाल (शब्द०)। (ख) लच्छ रथी अध्यच्छ प्रबल प्रत्यच्छ विचच्छन। कसे कच्छ निज सैनु रच्छ

करि पर बल मच्छन ।—गोपाल (शब्द०)। (ग) ह्वै कपूर मनिमय रही मिलि तन दुति मुकुतालि। छिन छिन खरी विचच्छनौ लखति छ्वाय तिन आलि ।—बिहारी (शब्द०)।

विचच्छिन — वि० [स० विचक्षण] दे० 'विचक्षण'। उ०— मुग्धा मे धीरादिक लच्छिन । प्रगट नही पै लखैं विचच्छिन ।—नंद० ग्र०, पृ० १४७।

विचय—संज्ञा पु० [स०] १ एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। २ जाँच पडताल करना। परीक्षा करना। अन्वेषण। खोजना। ढूँढना (को०)। ३ विशिष्ट रूप से रखना। क्रम या तरतीब से रखना (को०)।

विचयन—संज्ञा पु० [स०] १ इकट्ठा करना। एकत्र करना। २ जाँचना। परीक्षा करना। दे० 'विचय'।

विचर—वि० [स०] १ घूमा हुआ। भ्रमित। भ्रमण किया हुआ। २ भूला हुआ। भटका हुआ [को०]।

विचरण—संज्ञा पु० [स०] १ चलना। २ घूमना फिरना। पर्यटन करना। उ०—आर्य सतान उस दिन अपने प्राचीन वेष मे विचरण करती थी।—बालमुकुद गुप्त (शब्द०)।

विचरणीय—वि० [स०] विचरण के योग्य। आचरणीय [को०]।

विचरन — संज्ञा पु० [सं० विचरण] दे० 'विचरण'। उ०—(क) पूछ पूरी सोभा विचरन नरचपै दीह सीकर की चरनन रचना ऊपर है।—गोपाल (शब्द०)। (ख) भए कबीर प्रगट मथुरा में। विचरन लगे सकल वसुधा मे।—कबीर (शब्द०)।

विचरना—क्रि० अ० [स० विचरण] चलना फिरना। उ०—(क) जग महँ विचरि विचरि सब ठौरा। हरि विमुखन किय हरि की ओरा।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भोग समग्री जुरी अपार। विचरन लागे सुख ससार।—सूर (शब्द०)। (ग) रामचरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशंक।—सूर (शब्द०)।

विचरनि †—संज्ञा स्त्री० [स० विचरण] चलने फिरने या विचरण करने की क्रिया या भाव।

विचरित[1]—वि० [स०] १ घूमा हुआ। विचरण किया हुआ। २ (लाक्ष०) अनुष्ठित। कृत। आचरित। (को०)।

विचरित[2]—संज्ञा पु० घूमना। विचरण [को०]।

विचर्चिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे दाने निकलते और खुजली होती है। ब्योची। २. छोटी फुसी।

विचर्मा—वि० [स० विचर्मन्] विना ढाल का। जिसके पास चर्म अर्थात् ढाल न हो [को०]।

विचल—वि० [स०] १ जो बराबर हिलता रहता हो। २ जो स्थिर न हो। अस्थिर। ३ डिगा हुआ। स्थान से हटा हुआ। ४ व्यग्र। घबडाया हुआ (को०)। ५ अभिमानी। घमडी (को०) ६ प्रतिज्ञा या सकल्प से हटा हुआ।

मुहा०—चलविचल होना=मन का किसी एक बात पर न ठहरना। चित्त का चचल होना।

विचलता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विचल होने की क्रिया या भाव। चचलता। अस्थिरता। २. घबराहट।

विचलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अस्थिरता। २. इतस्ततः भ्रमण। ३ गर्व। घमड [को०]।

विचलना †—क्रि० अ० [स० विचलन] १ अपने स्थान से हट जाना या चल पडना। (विशेषत घबराहट या गडबडी आदि के समय)। उ०—(क) औ जोबन मैमत विधाँसा। विचला विरह गिरह लै नासा।—जायसी (शब्द०)। (ख) दल विचलत लखिकै भट सगरे। धरि धरि धनुष गदादिक अगरे।—गोपाल (शब्द०)। (ग) जो गीता मत ते विचलै तौ श्रीपति काहि सँभारै। मोसे मुग्ध महापापी को कौन क्रोध करि तारै।—सूर (शब्द०)। २ विचलित होना। अधीर होना। घबराना। उ०—(क) जेंहि भजत वि इक इकरदन चलत समर विचलत प्रवल।—गोपाल (शब्द०)। (ख) चलत जबै रन हेत तबै विचलत लखिकै पर।—गोपाल (शब्द०)। ३ प्रतिज्ञा या सकल्प पर दृढ न रहना। बात पर जमा न रहना।

विचलाना †—क्रि० स० [स० विचलन] १. इधर उधर हटाना या चलाना। विचलित करना। उ०—एहि विधान भरि जोर सकल यदु दल विचलायो।—गोपाल (शब्द०)। २ ऐसा काम करना जिससे कोई घबरा जाय या स्थिर न रह सके।

विचलित —वि० [स०] १ जो विचल हो गया हो। अस्थिर। चचल। जैसे,—किसी चीज को देखकर मन विचलित होना। उ०—(क) उसकी बुद्धि ऐसी तीक्ष्ण थी कि कोई कैसा ही दुर्घट काम हो, परंतु वह, कभी विचलित न होता।—कादबरी (शब्द०)। (ख) तेहि ते अब यह रूप दुरावहु। विचलित सकल लोक सुख पावहु।—शं० दि० (शब्द०)। २ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ। जो दृढ न रहा हो। डिगा हुआ। ३ गया हुआ। गत। चलित (को०)। ४ घबराया हुआ। व्यग्र।

विचष्पन — वि० [स० विचक्षण, प्रा० विचक्खन, विचप्पन] दे० 'विचक्षण'। उ०—आनन इदु उदोत सु मानों। जानन भोज विचष्पन जानौं। रवि ज्यो सत्रुन के तन तापन। कामिनो कौं मकरध्वज मानन।—पृ० रा०, १।७५३।

विचार—संज्ञा पु० [स०] १ वह जो कुछ मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। किसी विषय पर कुछ सोचने या सोचकर निश्चय करने की क्रिया। २ वह बात जो मन मे उत्पन्न हो। मन मे उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। जैसे,—अभी मेरे मन मे विचार आया है कि चलकर उससे बातें करूँ। ३ राजा या न्यायाधीश आदि का वह कार्य जिसमे वादी और प्रतिवादी के अभियोग और उत्तर आदि सुने जाते हैं, यह निश्चित किया जाता है कि किस पक्ष का कथन ठीक है, और तब कुछ निर्णय किया जाता है। मुकदमे की सुनवाई और फैसला। जैसे,—राजकर्मचारी दोनो को पकडकर उनका विचार कराने के लिये उन्हें राजद्वार पर ले गया (शब्द०)।

यौ०—विचारकर्ता। विचारविमर्श। विचारसभा। विचारस्थल।

४ विचरना। घूमना। ५ घुमाना। फिराना। ६ चयन (को०) ७ सकोच। सदेह (को०)। ८. दूरदर्शिता। सतर्कता (को०)। ९ विमर्श। गवेषणा। तत्त्वार्थनिर्णय (को०)। १०. विवेक। तर्कण (को०)। ११ परीक्षण (को०)।

विचारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विचारिका] १ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। उ०—इन बातों पर ध्यान करके विचारक पुरुष जानते हैं कि ऐसा वृत्तान्त केवल कवीश्वर का कल्पित मात्र है।—मतपरीक्षा (शब्द०)। २ फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता। उ०—तब तक विरोधी विचारकों का होना बहुत ही जरूरी है।—स्वाधीनता (शब्द०)। ३ नेता। पथप्रदर्शक। ४ गुप्तचर। जासूस।

विचारकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विचारकर्तृ] १ वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। सोचने विचारनेवाला। २ वह जो अभियोग आदि सुनकर उनका निर्णय करता हो। न्यायाधीश।

विचारज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विचार करना जानता हो। विचार करने में कुशल या प्रवीण। २ वह जो अभियोग आदि का निर्णय या निपटारा करता हो।

विचारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। २. घूमना फिरना। ३. घुमाना फिराना। ४ संदेह। हिचक (को०)। ५ परीक्षण। पर्यालोचन। अन्वेषण (को०)।

विचारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। उ०— क्योंकि केवल अपनी बुद्धि, या अपने ज्ञान या अपनी विचारणा पर आदमी का विश्वास जितना कम होता है, उतना ही संसार की प्रमादहीनता या निभ्रमता पर उसका विश्वास अधिक होता है।—स्वाधीनता (शब्द०)। २ घूमने फिरने या घुमाने फिराने की क्रिया या भाव। ३ संदेह। हिचक (को०)। ४ परीक्षण। गवेषण (को०)। ५ दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति (को०)।

विचारणीय—वि० [सं०] १. जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। उ०—अब यह अवश्यमेव विचारणीय है कि यदि ऐसा ही है तो बिना कारण किसी को दूषित करना और व्यर्थ उसपर दोषारोपण कर लोगों में उसकी योग्यता कम करने के लिये यत्न करना नीचता एवं अधमता है।—निबंधमालादर्श (शब्द०)। २ जो सिद्ध न हो। जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिंत्य। संदिग्ध।

विचारना—क्रि०अ० [सं० विचार + हिं० ना (प्रत्य०)] १ विचार करना। सोचना। समझना। गौर करना। उ०-(क) कृष्णदेव द्वारावति अहै। मन में बहुत विचारत रहै।—सबल (शब्द०)। (ख) फिर मैंने यह बात विचारी की लिखने में तो कुछ अधिक अनर्थ नहीं होता।—श्रद्धाराम। (शब्द०)। (ग) आजु हो अजादवी धरा करौं विचारि कै।—गोपाल (शब्द०) (घ) रचो विरंचि विचार तहँ, नृपमणि मधुकर शाहि।—केशव (शब्द०)। २. पूछना। ३ ढूँढना। पता लगाना। उ०—तुलसी तेहि अवसर लावनता दस चारि नव तीनि एकीस सबै। मति भारति पंगु भई जो निहारि विचारि फिरी उपमा न पवै।—तुलसी (शब्द०)।

विचारपति—संज्ञा पुं० [सं० विचार + पति] वह जो किसी बड़े न्यायालय में बैठकर मुकदमों आदि के फैसले करता हो। विचारक। न्यायाधीश।

विचारपरिणीत—वि० [सं० विचार + परिणीत] जिसका विचार द्वारा ग्रहण किया गया हो। विचारित। भली भाँति विचार किया हुआ। सकल्प द्वारा गृहीत। उ०—वर श्रम प्रसूति से की कृतार्थ तुमने विचारपरिणीत उक्ति।—युगांत, पृ० ५५।

विचारभू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अदालत। न्यायालय। २ यम का न्यायासन। यमराज का न्यायालय (को०)।

विचारमूढ़—वि० [सं० विचारमूढ] १ निर्णय लेने में असमर्थ। जो भला बुरा समझने में असमर्थ हो। २. जड। मूर्ख। अज्ञ (को०)।

विचारवान्—संज्ञा पुं० [सं० विचारवत्] वह जिसमें सोचने समझने या विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारशील।

विचारशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय। सोचने या भला बुरा पहचानने की शक्ति। उ०—मनुष्य जानता तो है कि मैं जीता हूँ और सोच विचार भी करता हूँ, परंतु प्राण और विचारशक्ति किससे बनाई गई। —गोलविनोद (शब्द०)।

विचारशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा शास्त्र।

विचारशील—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें किसी विषय को सोचने विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्। उ०—(क) जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनंत ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)। (ख) विद्वान्, बुद्धिमान और विचारशील पुरुषों के चरण जिस भूमि पर पड़ते हैं वह तीर्थ बन जाती है।—शिवशंभु (शब्द०)।

विचारशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विचारशील होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता। अक्लमंदी। उ०—आत्मकर्तव्य का मामूली अर्थ विचारशीलता या बुद्धिमानी है।—स्वाधीनता (शब्द०)।

विचारशृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० विचार + शृङ्खला] परंपरा द्वारा प्राप्त विचार की सरणि। विचारों की परंपरा या कड़ी। उ०—इस तरह अनेक विचारशृंखलाएँ अर्थात् अनेक व्यवस्थित दर्शन होते हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६१।

विचारसरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विचार करने का ढंग। विचार करने की पद्धति (को०)।

विचारस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो। २ न्यायालय। अदालत। ३ तर्कसंगत चर्चा जिसपर विचार विमर्श किया जा सके।

विचारस्वातंत्र्य—संज्ञा पुं० [सं० विचार + स्वातन्त्र्य] १ किसी विषय पर अपने हृद्गत भावों को व्यक्त करने की छूट या आजादी। २ जो चाहे कहने की छूट। भाषण करने की स्वतंत्रता। शासन की आलोचना करने में प्रतिबंध न होना।

विचाराध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो न्याय विभाग का प्रधान हो। प्रधान विचारक। प्रधान न्यायाधीश।

विचारालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अभियोगों आदि का विचार होता हो। न्यायालय। कचहरी। उ०—बड़े बड़े आचार्य, नीतिज्ञ, धर्मशास्त्री लोग विचारालय में बैठे विचार कर रहे हैं।—कादंबरी (शब्द०)।

विचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन काल की वह दासी जो घर मे लगे हुए फूल पौधो की देखभाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ वह स्त्री जो अभियोगो आदि का विचार करती हो।

विचारित¹—वि० [सं०] १ जिसपर विचार किया जा चुका हो। जो सोचा समझा जा चुका हो। निर्णीत। निश्चित। २ जो अभी विचाराधीन हो। जिसपर अभी विचार होने को हो। सदिग्ध। अनिश्चित।

विचारित²—संज्ञा पुं० १ विचार। मतव्य। २ सदेह। सशय (को०)।

विचारितसुस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य का वह प्रकार जिसमे वैचारिक प्रौढता रहती है। बुद्धिप्रधान साहित्य। उ०—साहित्य विषय के दो प्रभेद है विचारितसुस्थ और अविचारित-रमणीय। पा० सा० सि०, पृ० ७।

विचारी—संज्ञा पुं० [सं० विचारिन्] १ वह जिसपर चलने के लिये बहुत बड़े बडे मार्ग बने हो (जैसे, पृथ्वी)। २ जो इधर उधर चलता हो। विचरण करनेवाला। ३ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। ४ कबंध के एक पुत्र का नाम। ५ जो लपट वा कामुक हो (को०)।

विचारु—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

विचार्य—वि० [सं०] जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर विचार करने की आवश्यकता हो। विचारणीय।

विचाल¹—वि० [सं०] मध्यस्थ। मध्यवर्ती। बीच का (को०)।

विचाल²—संज्ञा पुं० १ विभाग करना। अलग करना। पृथक् करना। २ मध्यवर्ती स्थान या काल। अंतराल। अतर। उ०—अरणव साते उदर, विरछ रोमाच विचालें।—रघु० रू०, पृ० ४४।

विचालन—संज्ञा पुं० [सं०] १. हटाना या चलाना। २ नष्ट करना।

विचिंतन—संज्ञा पुं० [सं० विचिन्तन] [स्त्री० विचिन्तना] चिंता करना। सोचना। २ देखभाल। निरीक्षण (को०)।

विचिंतनीय—वि० [सं० विचिन्तनीय] १ जो चिंता करने या सोचने योग्य हो। २ देख भाल करने लायक (को०)।

विचिंता—संज्ञा स्त्री० [सं० विचिन्ता] १ सोच विचार। २ देखभाल। निरीक्षण।

विचिंतित—वि० [सं० विचिन्तित] विचारा हुआ (को०)।

विचिंत्य—वि० [सं० विचिन्त्य] १. जो चिंतन करने या सोचने के योग्य हो। २ जिसमे किसी प्रकार का सदेह हो। सदिग्ध। ३ निरीक्षण या देखभाल करने योग्य (को०)।

विचि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीची। तरग। लहर।

विचि(पु)²—क्रि० वि० [हिं० बीच] बीच मे। मध्य मे। उ०—सो मुख व्रज अवलोकन करैं। तब जु आइ विचि पलकैं परैं।—नंद० ग्रं०, पृ० १६३।

विचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सदेह। अनिश्चय। शक। २ वह सदेह जो किसी विषय मे कुछ निश्चय करने के पहले उत्पन्न हो और जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जाय। ३ अनवधानता। भूल। प्रमाद (को०)।

विचिकित्सित—वि० [सं०] सदिग्ध। सदेहास्पद (को०)।

विचिकीर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० वि० (उप०)+चिकीर्षा] करने की इच्छा या अभिलाषा।

विचिकीर्षु—वि० [सं० वि (उप०)+चिकीर्षु] करने की इच्छा रखनेवाला।

विचिचीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्वेषण की आकाक्षा (को०)।

विचिचीषु—वि० [सं०] अन्वेषण करने की इच्छावाला (को०)।

विचित—वि० [सं०] जिसका अन्वेषण किया जाय।

विचिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचार। सोचना। २ अनुसधान।

विचित्त¹—वि०[सं०] १ अचेत। बेहोश। २. जिसका चित्त ठिकाने न हो। जो अपना कर्तव्य न समझ सकता हो।

विचित्त(पु)²—वि० [सं० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्र'। उ०—अद्भुत चरित्त चदह चरिचि सुर विचित्त हिय हृष्य किय।—पृ० रा०, ६।४६।

विचित्तर(पु)—वि० [सं० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्र'। उ०—कभी नागा नहीं करता था अवसर। चतुर सब औरतों मे था विचित्तर।—दक्खिनी०, पृ० २४६।

विचित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बेहोशी। २ वह अवस्था जिसमें मनुष्य का चित्त ठिकाने न रहे।

विचित्र¹—वि० [सं०] १ जिसमे कई प्रकार के रंग हों। कई तरह के रगो या वर्णोवाला। रग बिरगा। २ जिसमें किसी प्रकार की विलक्षणता हो। जिसमें किसी प्रकार की असाधारणता हो। विलक्षण। जैसे,—(क) ऐसा विचित्र पक्षी मैंने पहले नहीं देखा था। (ख) तुम भी बडे विचित्र आदमी हो। ३. जिसके द्वारा मन मे किसी प्रकार का आश्चर्य उत्पन्न हो। विस्मित या चकित करनेवाला। ४ सुंदर। खूबसूरत। ५ रगीन। चित्रित। रँगा हुआ (को०)।

यौ०—विचित्रचरित्र=अद्भुत चरित्रवाला। विचित्रदेह=(१) सुदर शरीरवाला। (२) जिसकी देह चितकबरी हो। विचित्ररूप=विविध प्रकार का। अनेक रूपोवाला। विचित्र-वीर्य। विचित्रशाला।

विचित्र²—संज्ञा पुं० १ पुराणानुसार रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। २ साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है। उ०—(क) करिबेको उज्वल सुधा सो अभिराम देखो, मन व्रजवाम रँगती हैं श्याम रग मे (ख) राम कहेउ रिस तजहु मुनीसा। कर कुठार आगे यह सीसा।—तुलसी (शब्द०)। (ग) जीवन हित प्रानहिं तजत नवै ऊचाई हेत। सुख कारण दुख सगहैं बहुधा पुरुष सचेत (शब्द०)। (घ) वर्षा नहिं गगा को सुमिरि दरस परस सुख लेत। जाके तट मे मरत नर अमर होन के हेत (शब्द०)। ३ अनेक रगो का समूह। विभिन्न रगो का एकीभवन। (को०)। ४. आश्चर्य (को०)।

विचित्रक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजपत्र का वृक्ष। २ आश्चर्य। विचित्र।

विचित्रक[2]—वि० दे० 'विचित्र'।

विचित्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रंग बिरंगे होने का भाव। २. विलक्षण या अद्भुत होने का भाव।

विचित्रताई—संज्ञा स्त्री० [सं० विचित्र + सं० तातिᐟहिं० ताई (प्रत्य०)] दे० 'विचित्रता'। उ०—उस विचित्रता से बढ़कर विचित्रताई दिखा सकने की आशा इन्हें होती।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६।

विचित्रदेह—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

विचित्रवर्षी—वि० [सं० विचित्रवर्षिन्] इधर उधर बरसनेवाला। जहाँ तहाँ बरसनेवाला (मेघ)।

विचित्रवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र का नाम. जिनकी कथा महाभारत में है।

विशेष—जब राजा शांतनु ने अपने पुत्र भीष्म के आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करने पर सत्यवती के साथ विवाह कर लिया था, तब उसी सत्यवती के गर्भ से उन्हें चित्रांगद और विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। चित्रांगद तो छोटी अवस्था में ही एक गंधर्व द्वारा मारा गया था, पर विचित्रवीर्य ने बड़े होने पर राज्याधिकार पाया था। इसने काशिराज की अंबिका और अंबालिका नाम की दो कन्याओं के साथ विवाह किया था, जिन्हें भीष्म इसी के लिये हरण कर लाए थे। परंतु थोड़े ही दिनों बाद निःसंतान अवस्था में ही इसकी मृत्यु हो गई। सत्यवती को विवाह से पहले ही पराशर ऋषि से गर्भ रह चुका था और उससे द्वैपायन (व्यास) का जन्म हुआ था। विचित्रवीर्य के निःसंतान मर जाने पर सत्यवती ने अपने उसी पहले पुत्र द्वैपायन को बुलाया और उसे विचित्रवीर्य की विधवा स्त्रियों के साथ नियोग करने को कहा। तदनुसार द्वैपायन ने अंबिका और अंबालिका से धृतराष्ट्र और पांडु तथा एक दासी से विदुर (विशेष दे० 'विदुर') नाम के तीन पुत्र उत्पन्न किए थे।

विचित्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थों का संग्रह हो। अजायबघर।

विचित्रांग[1]—संज्ञा पुं० [सं० विचित्राङ्ग] १. मोर। जिसकी देह चितकबरी हो। २ व्याघ्र। बाघ।

विचित्रांग[2]—वि० चितकबरे शरीरवाला [को०]।

विचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक रागिनी, जिसे कुछ लोग भैरव राग की पाँच स्त्रियों में से एक और कुछ लोग त्रिवण, बरारी, गौरी और जयती के मेल से बनी हुई संकर जाति की मानते हैं। २ श्वेत हिरन (को०)।

विचित्रित—वि० [सं०] १. जो कई तरह के रंगों आदि से बना हो। अनेक प्रकार के रंगों से चित्रित। रंग बिरंगा। २. आभूषित। अलंकृत (को०)। ३. आश्चर्यजनक (को०)।

विचिन्वत्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्वेषण। तलाश। खोज। २. योद्धा। शूरवीर। ३. गवेषणा [को०]।

विचिलक—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

विची—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीची। तरंग। लहर।

विचीर्ण—वि० [सं०] १. अधिकृत। अधिकार में लिया हुआ। २. जिसको विदीर्ण किया गया हो। ३ जिसमें प्रवेश किया गया हो [को०]।

विचुंबन—संज्ञा पुं० [सं० विचुम्बन] चुंबन। चूमना। चुम्मा [को०]।

विचुंबित—वि० [सं० विचुम्बित] १ चूमा हुआ। जिसका चुंबन किया गया हो। २ स्पृष्ट। छूआ हुआ [को०]।

विचेतन—वि० [सं०] १ जिसे चेतना न हो। संज्ञाहीन। अचेतन। बेहोश। २. निर्जीव। प्राणहीन (को०)। ३. जिसे भले बुरे का ज्ञान न हो। विवेकहीन। ४ संभ्रांत। हतबुद्धि। कातर। अधीर (को०)।

विचेतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचेतन होने का भाव। संज्ञाहीन। अचेतनता। अधीरता। व्याकुलता।

विचेता—संज्ञा पुं० [सं० विचेतस्] १. जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। २. बेहोश। ३ जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। चतुर। विशेषज्ञ। ४ दुष्ट। पाजी। ५ मूर्ख। बेवकूफ।

विचेष्ट—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की चेष्टा न हो। जो हिलता डोलता न हो।

विचेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १. (पीड़ा आदि से) बुरी चेष्टा करना। इधर उधर लोटना। तड़पना। २ (घोड़े का) लात फेंकना या लोटना (को०)।

विचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी या खराब चेष्टा करना। मुँह बनाना या हाथ पैर पटकना। २. प्रयत्न। उद्यम। कोशिश। गति (को०)। ३. व्यवहार। आचार (को०)।

विचेष्टित[1]—वि० [सं०] १ जिसके लिये उद्योग या प्रयत्न किया गया हो। २ परीक्षित। ३ अविचारित या मूर्खता के साथ किया हुआ। ४ अन्वेषित (को०)।

विचेष्टित[2]—संज्ञा पुं० १ कार्य। काम। २. प्रयत्न। उद्योग। ३. इंगित। संकेत। भावभंगी। ४ कार्य। आचार। ५. अभिसंधि। षड्यंत्र। ६. बुरा कार्य। दुष्कर्म [को०]।

विच्छंद[1]—वि० [सं० विच्छन्द] विविध प्रकार के छंदों से युक्त। अनेक छंदोंवाला [को०]।

विच्छंद[2]—संज्ञा पुं० दे० 'विच्छंदक'।

विच्छंदक—संज्ञा पुं० [सं० विच्छन्दिक] १. देवमंदिर। देवालय। २. प्रासाद। महल।

विच्छत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सुसनी का साग।

विच्छर्दक—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवमंदिर। देवायतन। देवालय। २. प्रासाद। महल।

[illegible]

विच्छुरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. छितराना। २. लेपन करना। मल [illegible]।

विच्छुरित—वि० [सं०] १. छितराया हुआ [illegible]। २. लिपटा हुआ। ३. [illegible] हुआ। उ०—विच्छुरित [illegible]—[illegible], पृ० ३७।

विच्छुरिता—संज्ञा पुं० एक प्रकार की समाधि। दे० 'विच्छुरित'।

विच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २. [illegible] से टूट भाग। [illegible]। ३. किसी प्रकार अलग या टुकड़े टुकड़े करना। [illegible] से कुछ अलग करना। ४. नाश। उ०—[illegible] नहीं होता, किंतु बंध और मुक्ति सदा नहीं रहती।—दयानंद (शब्द०)। ५. विरह। वियोग। ६. पुस्तक का प्रकरण या अध्याय। परिच्छेद। ७. [illegible] में पड़नेवाला खाली स्थान। अवकाश। ८. [illegible] में यति। ९. [illegible] होना [illegible]। १०. प्रतिरोध। रोक। निषेध [illegible]। ११. हानि। क्षति (को०)। १२. अनबन। [illegible]। भेद (को०)।

विच्छेदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विच्छेद करता हो। २. वह जो काट या छेदकर अलग करता हो। ३. विभाग करनेवाला। विभाजक।

विच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। अलग करना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। दे० 'विच्छेद'।

विच्छेदनीय—वि० [सं०] १. जो काट या छेदकर अलग करने के योग्य हो। २. जो विच्छेद करने के योग्य हो।

विच्छेदी—संज्ञा पुं० [सं० विच्छेदिन्] १. वह जो विच्छेद करता हो। विच्छेद करनेवाला। २. जिसमें विच्छेद हो। वह जिसमें [illegible] हो (को०)।

विच्छेद्य—वि० [सं०] जो विच्छेद करने के योग्य हो। जो काटे या विभाग करने के योग्य हो।

विछोह—संज्ञा पुं० [हिं०] बिछोह। वियोग। विरह। [illegible], पृ० [illegible]।

विच्युत—वि० [सं०] १. जो कटकर अलग और किसी प्रकार दूर [illegible] गिर गया हो। २. [illegible] किया गया हो। (विधि)। ३. जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो [illegible]। ४. [illegible]। ५. जो [illegible] हो गया हो।

विच्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पदार्थ का अपने स्थान से हट या गिर जाना। [illegible]। २. गर्भ का गिर जाना। गर्भपात।

विछलना—[illegible]। उ०—[illegible] विछल [illegible]।—[illegible], पृ० [illegible]।

विछलाना—क्रि० स० [सं० [illegible], हिं० विछलना] १. [illegible]। २. [illegible]। उ०—[illegible] की बगीचे [illegible] गई [illegible]।—[illegible] (शब्द०)।

विछाडना†—क्रि० अ० [हिं० छोडना या स० वि+√छद्] लक्ष्य पर छोडना। चलाना। उ०—कोमड लियो रघुवीर करां सारग विछाडे संधि मरां।—रघु० रू०, पृ० १३३।

विछाल(पु)†—वि० [स० विशाल, या स० विस्तार, प्रा० विच्छार] दे० 'विशाल'। उ०—छाड्यो नयर विछाल छो छाड्या सांभरि का रिणवास।—बी० रासो, पृ० ६०।

विछेद(पु)†—सज्ञा पु० [स० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग। विछोह। उ०—सूर श्याम के परम भावती पलक न होत विछेद।—सूर (शब्द०)।

विछेप(पु)†—सज्ञा पु० [स० विक्षेप, प्रा० विच्छेव] दे० 'विक्षेप'। उ०—देहिक दैविक छुटे भवतिक सोइ अनन्य कहावन। इंद्री रहित विछेप नाही सोई है अातीतन।—पलटू०, पृ० ६२।

विछोई(पु)†—सज्ञा पु० [हिं० विछोह+ई (प्रत्य०)] वह जिसका अपने प्रिय से विच्छेद हो गया हो। वियोगी। उ०—ऋतु पियारा मीत विछोई। साथ न लाग आप गा सोई।—जायसी (शब्द०)।

विछोह(पु)†—सज्ञा पु० [स० विच्छेद, देशी विच्छोह] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग। उ०—जस विछोह जल मीन दुहेला। जल हुति काढ अँगन महँ मेला।—जायसी (शब्द०)।

विजघ—वि० [स० विजङ्घ] १. जिसकी जाँघें कट गई हो या न हो। २ (गाड़ी) जिसमे धुरी और पहिए आदि न हो।

विज(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युत्, प्रा० विज्जु, विज्ज] बिजली। विद्युत्। उ०—आवृत्त घत्त आजान भुअ मनु कजल कोट कि विज लहि।—पृ० रा०, ७। १४२।

विजई(पु)†—सज्ञा पुं० [स० विजयिन्] दे० 'विजयी'।

विजउरा†—सज्ञा पु० [स० बीजपूरक, प्रा० बीयऊरय] दे० 'बिजौरा'। उ०—कन्हा नीदं सोई चर वाट चलतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती सो धण रही सू दूर।—ढोला०, ४२६।

विजट—वि० [स०] मुक्त। खुला हुआ। जैसे, केश [को०]।

विजडित—वि० [स० विजडित] १ स्थिर। अडोल। उ०—चरण हुए थे विजडित मधुभार से।—लहर, पृ० ६६। २ जडा हुआ। जटित।

विजन¹—वि० [स०] जिसमे अथवा जहाँ आदमी न हो। जनरहित। एकात। निराला। उ०—तहाँ सचिव सब लेहि सुधारी। भूपहि विजन भवन मह डारी।—रघुराज (शब्द०)।

विजन²—सज्ञा पु० [स०] १ निर्जन या एकात स्थान। २ गवाह या साक्ष्य का अभाव [को०]।

विजन(पु)³—सज्ञा पु० [सं० व्यजन] हवा करने का पखा। बीजन। उ०—(क) मुरछल चँवर विजन बहु करते। मृदु कहि राह परिसम हरते।—गोपाल (शब्द०)। (ख) कोऊ विजन डोलावन लागे। कोउ सीचे जल प्रात अनुरागे।—रघुराज (शब्द०)।

विजनता—सज्ञा स्त्री० [स०] विजन होने का भाव। एकात का भाव।

विजनन—सज्ञा पुं० [स०] जनन करने की क्रिया। प्रसव।

विजना(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० विजन] पंखा। उ०—इत एक सखी बतराय रही विजना इत एक डुलाय रही।—सगीत शाकुतल (शब्द०)।

विजनित—वि० [स०] उत्पन्न। जनित। जन्म लिया हुआ [को०]।

विजन्मा¹—सज्ञा पुं० [स० विजन्मन्] १ किसी स्त्री का उसके उपपति या यार से उत्पन्न पुत्र। जारज। दोगला। २ मनु के अनुसार एक वर्णसंकर जाति। ३ वह जो जातिच्युत कर दिया गया हो।

विजन्मा²—सज्ञा पुं० उत्पत्ति। पैदाइश। जनन [को०]।

विजन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो प्रसव करने को हो। गर्भवती। गर्भिणी।

विजपिल—सज्ञा पु० [स०] कर्दम। कीचड [को०]।

विजयत—सज्ञा पु० [स० विजयन्त] इंद्र का एक नाम।

विजयतिका—सज्ञा स्त्री० [स० विजयन्तिका] एक योगिनी का नाम।

विजयती—सज्ञा स्त्री० [स० विजयन्ती] १ एक अप्सरा का नाम। २ ब्राह्मी बूटी।

विजय¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १. युद्ध या विवाद आदि मे होनेवाली जीत। विपक्षी या शत्रु को दबाकर अपना प्रभुत्व या पक्ष स्थापित करना। जय। जीत। पराजय का उलटा। उ०—पाण्ड विजयी यह कथा राजा सुन के कान। विजय होय सब जगत मे शत्रु होय क्षय जान।—सबल (शब्द०)। २. एक प्रकार का छद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयद नामक भेद है। ३. हरिवश के अनुसार जयत (इंद्र का पुत्र) के पुत्र का नाम (को०)। ४ जैनो के अनुसार पाँच अनुत्तरो मे से पहला अनुत्तर या सबसे ऊपर का स्वर्ग। ५. विष्णु के एक पार्षद का नाम। ६ अर्जुन का एक नाम। ७. यम का नाम। ८ जैनियो के एक जिन देव का नाम। ९ कल्कि के एक पुत्र का नाम। १०. कालिकापुराण के अनुसार भृगुवंशी कल्पराज के पुत्र का नाम जो काशिराज नाम से प्रसिद्ध थे ११. विमान १२ सजय के एक पुत्र का नाम। १३ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। १४ एक प्रकार का शुभ मुहूर्त। †१५ प्रस्थान। गमन (आदरार्थ), जैसे—विजययात्रा। उ०—श्री गुसाई जी फेरि श्री गोकुल को विजय करे।—दो सौ बावन०, पृ० १६३। १६ एक सवत्सर का नाम (को०)। १७ वर्ष का तीसरा मास (को०)। १८ एक प्रकार का सैन्य व्यूह (को०)। १९. एक प्रकार की मान या तौल (को०)। २० जात का पारितोषिक। लूट का माल (को०)। २१. प्रदेश। जिला (को०)। २२ एक प्रकार की बाँसुरी (को०)। २३ कृष्ण के पुत्र का नाम (को०)। २४ शिव का त्रिशूल (को०)। २५ राजकीय शिविर (को०)।

विजय†²—सज्ञा पुं० [स० व्यञ्जन < पू० हिं० विजन, विजय बीजन] भोजन करना। खाना। (पूरब)।

विजयक—वि० [स०] जो विजय करता हो। सदा जीतनेवाला।

विजयकर—वि० [स०] दे० 'विजयक' [को०]।

विजयकुजर—सज्ञा पुं० [स० विजयकुञ्जर] १ राजा की सवारी का हाथी। २. लडाई के मैदान मे जानेवाला हाथी।

विजयकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह ध्वजा जो शत्रु पर विजय प्राप्त करके फहराई जाती है। विजय पताका। २ एक विद्याधर का नाम (को०)।

विजयछंद—संज्ञा पुं० [सं० विजयच्छन्द] १ पाँच सौ मोतियों का हार। २ एक प्रकार का कल्पित हार, जो दो हाथ लंबा और ५०४ (कुछ के मत) में ५०० लड़ियों का माना जाता है। कहते। हैं कि ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते हैं।

विजयडिंडिम—संज्ञा पुं० [सं० विजयडिण्डिम] प्राचीन काल का एक प्रकार का बड़ा ढोल, जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

वियजतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

विजयदंड—संज्ञा पुं० [सं० विजयदण्ड] १ सैनिकों का वह समूह अथवा सेना का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो। २ सेना का एक विशिष्ट विभाग जिसपर विजय विशेष रूप से निर्भर करती है, ३ विजयसूचक दंड।

विजयदशमी—संज्ञा स्त्री० [सं० विजय (विजया) + दशमी] दे० 'विजया दशमी'।

विजयदुंदुभि—संज्ञा स्त्री० [सं० विजयदुन्दुभि] युद्ध में विजय होने पर बजनेवाला धौंसा या नगाड़ा। विजयडिंडिम [को०]।

विजय द्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि का नाम [को०]।

विजयध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विजयपताका'। उ०—फिर चले छोड़कर गृह त्याग के विजयध्वज से।—अपरा, पृ० २१३।

विजयनंदन—संज्ञा पुं० [सं० विजयनन्दन] इक्ष्वाकुवंश के राजा जय का एक नाम।

विजयनगर—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर का नाम जो कर्नाटक के अंतर्गत है [को०]।

विजयपताका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना में की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २ विजय का सूचक कोई चिह्न।

वियजपर्पटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की औषध।

विशेष—यह पारे, जयंती के पत्तों, रेंड की जड़ और अदरक आदि के योग से बनाई और संग्रहणी रोग में दी जाती है।

विजयपूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजयदशमी के उपरांत पड़नेवाली पूर्णिमा। आश्विन की पूर्णिमा।

विशेष—इस तिथि को बंगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है और उत्सव मनाया जाता है।

विजयभैरव—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—इसमें हड़ का छिलका, चीता, इलायची, तज, संभालू, पीपल, लोहसार आदि के योग से गंधक और पारे की कजली तैयार की जाती है। यह सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करनेवाला माना जाता है।

विजयभैरव तैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार तेल।

विशेष—यह तेल, मालकंगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को कोल्हू में पेरकर निकाला जाता है और सब प्रकार के वायुरोगों का नाशक माना जाता है।

विजयमर्दल—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ढक्का।

विजययात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यात्रा जो किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजयरस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक और सीसे के योग से बनता और प्रायः अजीर्ण रोग में दिया जाता है।

विजयलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी। वह देवी जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयशील—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बराबर विजय करता हो। सदा जीतनेवाला।

विजयश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिसकी लकड़ी औजार बनाने और इमारत के काम में आती है। विशेष दे० 'विजैसार'।

विजयसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजयप्राप्ति। सफलता। कामयाबी [को०]।

विजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम, जो गौतम की कन्या थी। २ दुर्गा। ३ यम की भार्या का नाम। ४ हरीतकी। हर्रे। ५ वच। ६ जयंती। ७ मजीठ। ८. एक प्रकार का शमी। ९ अग्निमंथ। १० भाँग। सिद्धि। भंग। उ०—(क) संसार के सब दुःखों और समस्त चिंताओं को जो शिवशंभु शर्मा दो चुल्लू बूटी पीकर भुला देता था, आज उसका उस प्यारी विजया पर भी मन नहीं है।—शिवशंभु० (शब्द०)। (ख) हम तो यह जानते हैं कि यदि किसी मंत्र, यंत्र से सर्पादि के डंक का कष्ट या कोई ज्वर, शूल आदि विकार दूर हो जाता हो, तो वह मंत्र संखिया, धतूरा, विजयादि के विषों पर पढ़ा हुआ भी अवश्य फल करे।—श्रद्धाराम (शब्द०)। ११ एक योगिनी का नाम। १२ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम। १३ दक्ष की एक कन्या का नाम। १४. श्रीकृष्ण की माला का नाम। १५ इंद्र की पताका पर की एक कुमारी का नाम। १६ प्राचीन काल का एक प्रकार का बड़ा खेमा। १७. काश्मीर के एक पवित्र क्षेत्र का नाम। १८ दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें अक्षरों का कोई नियम नहीं होता और जिसके अंत में रगण रखना कर्णमधुर होता है। १९ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसके अंत में लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। उ०—बरन बसु धारिए। चरण प्रति धारिए। लगन ना बिसारिए। सुविजया सम्हारिए। २० दे० 'विजयादशमी'। २१ एक विद्या का नाम जिसे ऋषि विश्वामित्र ने रामचंद्र को सिखाया था (को०)। २२ षोडश मातृकाओं में से एक का नाम।

विजया एकादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। २. फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

विजया दशमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

विशेष—यह हिंदुओं का और विशेषतः क्षत्रियों का एक बहुत बड़ा त्योहार है। प्राचीन काल में राजा लोग इसी दिन अपने शत्रुओं पर आक्रमण करने अथवा दिग्विजय आदि करने के लिये निकला करते थे। इस दिन देवी, घोड़े, हाथी और खड्ग आदि का पूजन तथा राजा के दर्शन करने का विधान है। इस दिन किसी नए कार्य का आरंभ करना बहुत ही शुभ समझा जाता है।

विजयानंद—संज्ञा पुं० [सं० विजयानन्द] १ संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २. वैद्यक में एक प्रकार की औषध जो पारे और हरताल के योग से बनाई जाती और कुष्ठरोग में में दी जाती है।

विजयाभ्युपाय—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध में विरोधी पर विजय प्राप्त करने का उपाय [को०]।

विजयार्थी—वि० [सं० विजयार्थिन्] विजय का इच्छुक। विजय पाने की कामना रखनेवाला [को०]।

विजयार्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विजयावटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की वटिका या गोली जो पारे और गंधक के योग से बनाई जाती है और जिसका व्यवहार संग्रहणी में होता है।

विजया सप्तमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार किसी मास के शुक्ल पक्ष की वह सप्तमी जो रविवार को पड़े।

विशेष—ऐसी तिथि को पुराणानुसार रामचंद्र जी का पूजन और दान करने का विधान है।

विजयी—संज्ञा पुं० [सं० विजयिन्] [वि० स्त्री० विजयिनी] १ वह जिसने विजय प्राप्त की हो। विजय करनेवाला। जीतनेवाला। उ०—(क) सीजर भी उसी धर्म के प्रभाव से ऐसी विजयी सेना संग होने पर भी काँप उठता है।—तोताराम (शब्द०)। (ख) ऐरावत विजयी द्विरद मत्त उसके सब। मेघा में टक्कर मार खेलते हैं अब।—द्विवेदी (शब्द०)। (ग) शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय, समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाय।—कामायनी, ५९। २. अर्जुन।

विजयेश—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम, जो विजय के देवता माने जाते हैं।

विजयोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह उत्सव जो आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। विजया दशमी को होनेवाला उत्सव। २ वह उत्सव जो किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने पर होता है।

विजर¹—वि० [सं०] १. जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो। जरारहित। २. नवीन। नया।

विजर²—संज्ञा पुं० वृक्ष का तना या डंठल [को०]।

विजरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मलोक की एक नदी का नाम।

विजर्जर—वि० [सं०] १ बहुत जीर्ण। कमजोर। २ सड़ा हुआ। जैसे काष्ठ [को०]।

विजल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ जल या वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। सूखा २. जल का न होना। पानी का अभाव। ३. दे० 'विजिल' (को०)।

विजल²—वि० जलहीन। निर्जल [को०]।

विजला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंचु या चेंच नाम का साग।

विजल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ सच, झूठ और तरह तरह की ऊटपटाँग बातें करना। व्यर्थ की बहुत सी बकवाद। २ किसी सज्जन या भले आदमी के संबंध में द्वेषपूर्ण झूठी बातें कहना। ३ सामान्य कथन या वार्ता (को०)।

विजल्पित—वि० [सं०] १ निरर्थक या ऊटपटाँग कहा हुआ। २. कथित। कहा। अस्पष्ट या तुतलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजवल—वि० [सं०] पिच्छिल। फिसलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजाग(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० वियोग] विमोह। वियोग। उ०—सूरज जरत हिमंचल ताका। विरह विजाग सौंह रथ हाँका।—जायसी (शब्द०)।

विजाग(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राग्नि, हिं० बजागि] बिजली। उ०—छण रुचि, छटा, अकाल की, तडित चचला होइ। विद्युत, संप, विजाग, विज्जु, दामिनि घन बिनु सोइ।—नंद० ग्रं०, पृ० ८८।

विजागी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वियोगिन्] जिसका अपने प्रिय से विछोह हुआ हो। वियोगी। उ०—तेहि के जरत जो उठै विजागी। तीनो लोक जरहि तेहि लागी।—जायसी (शब्द०)।

विजात¹—वि० [सं०] १ वर्णसंकर। दोगला। हरामजादा। २. उत्पन्न या जनमा हुआ (को०)। ३ रूपांतरित। जो दूसरे रूप में परिणत हो (को०)।

विजात²—संज्ञा पुं० सखी छंद का एक भेद

विशेष—इसके प्रत्येक चरण में ५-५-४ के विश्राम से १४ मात्राएँ और अंत में मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवीं मात्राएँ लघु रहती हैं। इसके अंत में जगण, तगण या रगण नहीं होना चाहिए।

विजाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जारज लड़की। दोगली। २. वह स्त्री जिसे हाल में संतान हुई हो। जच्चा। ३ माता (को०)।

विजाति¹—वि० [सं०] १ भिन्न या दूसरी जाति का। भिन्न वर्ग का। उ०—जो विजातियों और सजातियों में भेद नहीं मानते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २२८।

विजाति²—संज्ञा स्त्री० विभिन्न जाति या वर्ग [को०]।

विजातीय—वि० [सं०] १ जो दूसरी जाति का हो। एक अथवा अपनी जाति से भिन्न जाति का। उ०—(क) हम विजातीय कार्य-

कर्त्ताओं की बनाई हुई वस्तुओं को काम मे लाते हैं। (ख) ब्रह्म से पृथक् कोई सजातीय, विजातीय और स्वगत अवयवों के भेद न होने से एक ब्रह्म ही सिद्ध होता है।—दयानद (शब्द०)। २ विभिन्न प्रकार का। असमान। विषम (को०)। ३ मिली-जुली जाति का। मिश्रित जातिवाला (को०)।

विजानक—वि० [स०] ज्ञाता। परिचित। विज्ञ (को०)।

विजानता—सज्ञा स्त्री० [स०] चतुरता। बुद्धिमत्ता [को०]।

विजानना(पु)—क्रि० स० [सं० (उप०) वि०+हिं० जानना] जानना। भली भाँति जानना। विशेष रूप से जानना। उ०—आतम कवन अनातम को हैं। याको तत्व विजानत जो है।—पद्माकर (शब्द०)।

विजानु—सज्ञा पुं० [स०] तलवार चलाने के ३२ हाथों मे से एक हाथ या प्रकार। उ०—तिमि सव्य जानु विजानु सकोचित सुग्राहित चित्त को।— रघुराज (शब्द०)।

विजापयिता—वि०, सज्ञा पु० [स० विजापयितृ] वह जो विजय दिलावे। विजय करानेवाला [को०]।

विजायठ†—सज्ञा पु० [स० विजय ?] दे० 'विजायठ'। उ०—आभूषणों मे सोने के बने विजायठ, शिरोभूषण, हार, मुकुट आदि थे।—आ० भा०, पृ० ४१।

विजार—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मटिया भूमि जिसमे धान और कभी कभी चना भी बोया जाता है।

विजारत—सज्ञा स्त्री० [अ० विजारत] वजीर का पद, धर्म या भाव। मत्रित्व। उ०—वजीर की तनखाह १ लाख रुपए की और विजारत के दस्तूर समेत २ लाख रुपए की सालाना है।—देवी प्रसाद (शब्द०)। २. दे० 'वजारत'।

विजारौ(पु)†—वि० [देश० या स० विजेतृ=विजेतर्] विजय करने-वाला। उ०—छात्र विजारौ सोनगिर, वात सुणै ससार।—रा० रू०, पृ० ३५५।

विजिगीत—वि० [स०] ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर [को०]।

विजिगीष—वि० [स०] विजिगीषु। विजयेच्छु [को०]।

विजिगीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह इच्छा जिसके अनुसार मनुष्य यह चाहता है कि मुझे कोई यह न कह सके कि मैं अपना पेट पालने मे असमर्थ हूँ। २ विजय प्राप्त करने की इच्छा। उ०—परस्पर की विजिगीषा के कारण दोनो दल जीतोड परिश्रम करेंगे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२४। ३. व्यवहार। ४ उत्कर्ष। उन्नति।

विजिगीषु—वि० [स०] १. विजय की इच्छा करनेवाला। २ महत्वा-काक्षी (को०)। ३ योद्धा। शूर वीर (को०)। ४ प्रतिद्वंदी। प्रतिपक्षी (को०)।

विजिगीषुता—सज्ञा स्त्री० [स०] विजिगीषु होने भाव या धर्म।

विजिघत्स—वि० [स०] भूख पर विजय पानेवाला [को०]।

विजिघासु—वि० [स०] मारने की इच्छा रखनेवाला। हनन या विनाश करने को उत्सुक [को०]।

विजिज्ञासा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. जानने की विशिष्ट इच्छा। २. अन्वे-षण। शोध। खोज [को०]।

विजिज्ञासु—वि० [स०] जो पूर्णतया जानना चाहता हो। जानने समझने की इच्छावाला। [को०]।

विजिट—सज्ञा स्त्री० [अं० विज़िट] १ भेंट। मुलाकात। २. डाक्टर आदि का रोगी के देखने के लिये आना। उ०—मालती को भी एक विजिट करनी थी।—गोदान, पृ० १३४। ३ वह धन जो डाक्टर आदि को आने के उपलक्ष्य मे दिया जाय। डाक्टर की फीस।

विजिटर—वि० [अ० वि'जटर] विजिट करनेवाला [को०]।

विजिटर्स बुक—सज्ञा स्त्री० [अ० विज़िटर्स बुक] किसी सार्वजनिक सस्था की वह पुस्तक जिसमे वहाँ के आने जानेवाले अपना नाम और कभी कभी उस सस्था के सबध मे अपनी समति भी लिखते हैं।

विजिटिंग कार्ड—सज्ञा पु० [अ० विज़िटिंग कार्ड] एक प्रकार का बढ़िया छोटा कार्ड जिसपर लोग अपना नाम, पद और पता छपवा लेते हैं, और जब किसी से मिलने जाते है, तब उसे अपने आगमन की सूचना देने के लिये पहले यह कार्ड उसके पास भेज देते हैं।

विजित—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। वह जो जीत लिया गया हो। २ वह प्रदेश जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। जीता हुआ देश। ३ कोई प्रात या प्रदेश। ४ फलित ज्योतिष मे वह ग्रह जो युद्ध मे किसी दूसरे ग्रह से बल मे कम होता है। ५ जीत। विजय (को०)।

विजितवान्—वि० [स० विजितवत्] विजेता। विजयी [को०]।

विजिता¹—सज्ञा पु० [स० विजितृ] १ निर्णायक। २ भागीदार। हिस्सेदार [को०]।

विजिता²—वि० १. पृथक्। २ भीत। डरा हुआ। ३ कंपित [को०]।

विजितात्मा—सज्ञा पुं० [स० विजितात्मन्] १ शिव का एक नाम। २ वह जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर लिया हो।

विजितामित्र—वि० [स०] अमित्रो को जीतनेवाला। शत्रुंजय। विजितारि [को०]।

विजितारि—सज्ञा पु० [स०] १ एक राक्षस का नाम। २. वह जिसने अपने शत्रु को जीत लिया हो।

विजिताश्व—सज्ञा पुं० [स०] राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।

विजितासु—सज्ञा पुं० [स०] एक मुनि का नाम [को०]।

विजिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विजय। जीत। २. प्राप्ति।

विजिती—वि० [स० विजितिन्] विजयी [को०]।

विजितद्रिय—वि० [स० विजितेन्द्रिय] दे० 'जितेंद्रिय' [को०]।

विजितेय—वि० [स०] जिसे जीतना हो। विजय करने योग्य [को०]।

विजित्वर—वि० [स०] जीतनेवाला। विजेता।

विजित्वरा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

विजिन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विजिल'।

विजिल—सज्ञा पु० [स०] १ ऐसा भोजन जिसमे अधिक रस न हो। २. एक प्रकार का दही।

विजिविल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विजिल' [को०]।

विजिहीर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मनोरंजन की लालसा। २. घूमने की कामना [को०]।

विजिहीर्षु—वि० [सं०] मनोरंजन या घूमने के लिये इच्छुक [को०]।

विजिह्म—वि० [सं०] १ कुटिल। झुका हुआ। मुड़ा हुआ। २ बेईमानी। ३. तिरछा। टेढ़ा। ४ शून्य। ५. निष्प्रभ। फीका। विच्छाय [को०]।

विजिह्व—वि० [सं०] १ जिह्वारहित। २ मूक। गूँगा [को०]।

विजीवित—वि० [सं०] प्राणहीन। मृत [को०]।

विजीष—वि० [सं०] जिसे जय प्राप्त करने की इच्छा हो।

विजु¹—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी के शरीर का वह अंग जहाँ से डैने निकलते हैं [को०]।

विजु(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्, प्रा० विज्जु] बिजली। उ०—विद्युत रूप विजाग विजु दामिनि घन बिनु सोइ।—नंद० ग्रं०, पृ० ८८

विजुल—संज्ञा पुं० [सं०] शाल्मलि कंद।

विजुली¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

विजुली²—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत] दे० 'बिजली'।

विजृंभ—संज्ञा पुं० [सं० विजृम्भ] १. सिकोड़ना। संकोचन (भौंह आदि का)। २ जँभाई [को०]।

विजृंभक—संज्ञा पुं० [सं० विजृम्भक] एक विद्याधर [को०]।

विजृंभण—संज्ञा पुं० [सं० विजृम्भण] १ किसी पदार्थ का मुँह खोलना। २ बौर आना। कली आना। खिलना। ३ जँभाई लेना। उवासी लेना। ४ धनुष की डोरी खींचना। ५. (भौं) सिकोड़ना। ६ कामक्रीड़ा। आमोद प्रमाद। रँगरेली (को०)।

विजृंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० विजृम्भा] उबासी। जँभाई।

विजृंभिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विजृम्भिका] १ जृंभा। जँभाई। २ हफनी। हाँफ [को०]।

विजृंभित¹—वि० [सं० विजृम्भित] १ जम्हाई लिया हुआ। २ उद्घाटित। विकसित। फैलाया हुआ। ३ प्रदर्शित। ४. उपस्थित। आविर्भूत। ५ क्रीडित। खेला हुआ [को०]।

विजृंभित²—संज्ञा पुं० १. क्रीडा। मनोरंजन। २ अभिलाषा। इच्छा। ३. प्रदर्शन। प्रदर्शनी। ४ कृत्य। कर्म। आचार। ५ फल। परिणाम। ३ जंभाई [को०]।

विजेतव्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विजेतव्या] जो विजित करने के योग्य हो। जो जीतने के योग्य हो।

विजेता—संज्ञा पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो। जीतनेवाला। विजय करनेवाला।

विजेय—वि० [सं०] जिसपर विजय प्राप्त की जाने को हो। जीता जाने के योग्य।

विजै(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० विजय] दे० 'विजय'। उ०—हारि जात नर करि उपाय। कपट न तिनको यह कँपाय। सोइ अकपन पद कहाय। त्रैलोक्य विजै जौ रहा पाय।—देव स्वामी (शब्द०)।

विजैसार—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो साल का एक भेद माना जाता है।

विशेष—यह पूर्वी भारत तथा बरमा में बहुत अधिकता से पाया जाता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेत के औजार बनाने तथा इमारत आदि के काम में आती है।

विजैसाल—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] दे० 'विजैसार'।

विजोग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वियोग] बिछोह। वियोग। उ०—जूँ राणी मूँ पड़इ विजोग।—बी० रासो, पृ० ६३।

विजोगी—वि० [सं० वियोगी] दे० 'वियोगी'।

विजोर†¹—संज्ञा पुं० [सं० बीजपूरक] दे० 'बिजौरा'।

विजोर²—वि० [हिं० वि+जोर (=बल)] अशक्त। निर्बल। कमजोर। उ०—जीव को सुख दुख तनु संग होई। जोर विजोर तन के संग सोई।—सूर (शब्द०)।

विजोहा—संज्ञा पुं० [सं० विमोहा] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। इसे 'जोहा', 'विमोहा' और 'विज्जोहा' भी कहते हैं।

विज्जन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विज्जल'।

विज्जनु—संज्ञा स्त्री० [प्रा० विज्ज] बिजली। विद्युत्। उ०—प्राची प्रमान समुह अनिय मुष पगुर विज्जनु मनिय।—पृ० रा०, ५५। ७।

विज्जल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की लपसी या चटनी। २ शर। तीर। बाण। ३. शाल्मली कंद [को०]।

विज्जल²—वि० फिसलनेवाला। पिच्छल [को०]।

विज्जलत्ता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युल्लता] बिजली। विद्युत् की लता। दे० 'बिजली'। उ०—ठनक्कत घटा वलं अंग मोरं। मनौ कूलटा छैल चित चालि चोरं। भमंकत दंती सुनैन विराजै। मनौं बिज्जलत्ता नभ मध्य छाजै। व—पृ० रा०, १२। १७८।

विज्जव—संज्ञा पुं० [सं०] एक विशेष प्रकार का वाण या तीर।

विज्जाहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विद्याधर, प्रा०] उ०—इंद चंद सुर सिद्ध चरण विज्जाहार साह भरित्र वीर जुज्झ देख्खह कारण।—कीर्ति०, पृ० १०६।

विज्जिल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विज्जल' [को०]।

विज्जु(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्]। विद्युत। बिजली। उ०—ससि विज्जु मनहुँ दोउ दिसि वसत उडगन को बखतर धरे।—गोपाल (शब्द०)।

विज्जुझला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युज्ज्वाला, प्रा० विज्जुझला] बिजली की चमक। विद्युत् की ज्योति। उ०—तरवारि चमक्कइ विज्जुझला।—कीर्ति०, पृ० ११०।

विज्जुल—संज्ञा पुं० [सं०] १. त्वचा। छिलका। २. दारचीनी।

विज्जुलता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युल्लता] विद्युत्। बिजली। उ०—कर लीने मनि रस्मि रस्मि राह फैलि अथोरी। विज्जुलता बढि मनहुँ रची विसुकरमा डोरी।—गोपालचंद्र (शब्द०)।

विज्जुलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका या पहाड़ी नाम का लता।

विज्जोहा—संज्ञा पुं० [सं० विमोहा] दे० 'विजोहा'।

विज्ञ¹—वि० [सं०] १. जो जानता हो। जानकार। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. विद्वान्। पंडित।

विज्ञ²—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्धिमान् व्यक्ति। पंडित। २ मुनि। ऋषि [को०]।

विज्ञता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विज्ञ होने का भाव। जानकारी। २. बुद्धिमत्ता। ३ पांडित्य। विद्वत्ता।

विज्ञत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विज्ञता'।

विज्ञप्त—वि०[सं०] जो बतलाया या सूचित किया गया हो। जतलाया हुआ।

विज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २ विज्ञापन। इश्तहार। ३ शिक्षा। उपदेश (को०)। ४ निवेदन। प्रार्थना (को०)।

विज्ञप्तिका— संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रार्थना। निवेदन।

विज्ञबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जटामासी।

विज्ञराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऋषिश्रेष्ठ। २ पंडितराज [को०]।

विज्ञात—वि० [सं०] १ जाना या समझा हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

विज्ञातवीर्य—वि० [सं०] जिसकी शक्ति प्रख्यात हो [को०]।

विज्ञातव्य—वि० [सं०] जो जानने या समझने के योग्य हो।

विज्ञातस्थाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सामान्य ढंग से तैयार किया हुआ पात्र [को०]।

विज्ञाता—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञातृ] वह जो जानता या समझता हो।

विज्ञातार्थ—वि० [सं०] जो स्थिति को जानता हो या जो उससे अच्छी तरह परिचित हो।

विज्ञाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्ञान। समझ। २ जानकारी। ३ एक प्रकार की देवयोनि जिसे गय भी कहते हैं। ४ एक कल्प का नाम।

विज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. किसी विशिष्ट विषय के तत्वों या सिद्धांतों आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संगृहीत हो। किसी विषय की जानी हुई बातों का ठीक तरह से किया हुआ संग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप में हो। शास्त्र। जैसे,—पदार्थ विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शरीर विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, समाज-विज्ञान आदि। ३. किसी विषय का अनुभवजन्य, पूरा और अच्छा ज्ञान। कार्यकुशलता। ४ कर्म। ५ माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ६ बौद्धों के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। आत्मा का अनुभव। ७. ब्रह्म। ८ आत्मा। ९ आकाश। १०. निश्चयात्मिका बुद्धि। ११ मोक्ष। १२. संगीत (को०)। १३. चौदह विद्याओं का ज्ञान (को०)। १४ व्यवसाय। नियोजन (को०)।

विज्ञानकृत्स्न—संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र का एक कृत्स्न। (बौद्ध०)।

विज्ञानकेवल—संज्ञा पुं० [सं०] जीवात्मा [को०]।

विज्ञानकोश—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत के अनुसार ज्ञानेंद्रियाँ और बुद्धि। विज्ञानमय कोश। विशेष दे० 'कोष'।

विज्ञानघन—संज्ञा पुं० [सं०] केवल ज्ञान। विशुद्ध ज्ञान [को०]।

विज्ञानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विज्ञान का भाव या धर्म।

विज्ञानपति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो परम ज्ञानी हो।

विज्ञानपाद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास का एक नाम।

विज्ञानमय—वि० [सं०] प्रज्ञायुक्त। विशुद्ध ज्ञान से मंडित [को०]।

विज्ञानमय कोष—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह। विशेष दे० 'कोष'।

विज्ञानमातृक—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धि का एक नाम।

विज्ञानयोग—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध ज्ञान तक पहुँचने का साधन। प्रमाण [को०]।

विज्ञानवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वाद या सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। उ०—विज्ञानवाद को मैं अब तक इतना प्रिय समझता था।—मानव०, पृ० ४१७। २ वह वाद या सिद्धांत जिसमें केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो।

विज्ञानवादी—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञानवादिन्] १ वह जो योग के मार्ग का अनुसरण करता हो। योगी। २ वह जो आधुनिक विज्ञान शास्त्र का पक्षपाती हो। विज्ञान के मत का समर्थन करनेवाला।

विज्ञानहंस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'परमहंस'। उ०—और ब्रह्मज्ञानी से बढ़कर विज्ञानहंस है।—कबीर म०, पृ० ३०६।

विज्ञानिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसे ज्ञान हो। २ विज्ञ। पंडित। ३ दे० 'वैज्ञानिक'।

विज्ञानिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विज्ञानी का भाव या धर्म। किसी विषय का पूर्ण ज्ञान।

विज्ञानी—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञानिन्] १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। २ वह जो किसी विज्ञान का अच्छा वेत्ता हो। वैज्ञानिक। ३ वह जिसे आत्मा तथा ईश्वर आदि के स्वरूप के संबंध में विशेष ज्ञान हो।

विज्ञानीय—वि० [सं०] विज्ञान संबंधी। वैज्ञानिक।

विज्ञानेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक महात्मा का नाम जिन्होंने याज्ञवल्क्य स्मृति की व्याख्या मिताक्षरा नाम से की थी। उ०—हिंदू व्यवहार के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा 'मिताक्षरा' के के उन्नायक तथा विधायक विज्ञानेश्वर उसी के आश्रय में रहते थे।—आ० भा०, पृ० ५५८।

विज्ञापक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विज्ञापन करता हो। समझाने, बतलाने या जतलानेवाला।

विज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विज्ञापनीय] १. किसी बात को बतलाने या जतलाने की क्रिया। जानकारी कराना। सूचना देना। २ वह पत्र या सूचना आदि जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाय। इश्तहार। ३. निवेदन। प्रार्थना (को०)।

विज्ञापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विज्ञप्त करना। जतलाना। बतलाना। २ निवेदन (को०)।

विज्ञापनीय—वि० [सं०] १ जो बतलाने या जतलाने के योग्य हो। सूचित करने के योग्य। २. निवेदनीय। प्रार्थनीय।

विज्ञापित—वि० [सं०] १. जो बतलाया जा चुका हो जिसको सूचना दी जा चुकी हो। २. जिसका इश्तहार दिया जा चुका हो।

विज्ञापी—वि० [स० विज्ञापिन्] जतलाने या बतलानेवाला। सूचना देनेवाला।

विज्ञाप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्य¹—वि० [स०] बतलाने योग्य। सूचित करने योग्य।

विज्ञाप्य²—सज्ञा पु० [स०] प्रार्थना। निवेदन [को०]।

विज्ञिप्सु—वि० [स०] जतलाने, सूचना देने अथवा निवेदन करने का अभिलाषी। [को०]।

विज्ञेय—वि० [स०] १ जो जानने, सीखने, या समझने के योग्य हो। २ सम्मान्य (को०)।

विज्य—वि० [स०] जिस धनुष से कसी डोर उतार दी गई हो। (वह धनुष) जिसमे डोर न हो। २ (धनुष) जो गुण या प्रत्यचा विहीन हो [को०]।

विज्वर—वि० [स०] १ जिसका ज्वर उतर गया हो। जिसका बुखार छूट गया हो। २ जिसे सब प्रकार की चिंताओ से छुटकारा मिल गया हो। निश्चिंत। बेफिक्र। ३ जो सब प्रकार के क्लेशो आदि से मुक्त हो। जिसे किसी प्रकार का शोक या सताप न हो।

विझर्झर—वि० [स०] १ अप्रिय। २ विषम। बेमेल [को०]।

विटक¹—वि० [स० विटङ्क] सु दर। मनोहर।

विटक²—सज्ञा पु० १ सब से ऊँचा सिरा या स्थान। २ पक्षियो का पिंजड़ा। कबूतर का दरबा। कावुक। ३. बडी ककडी।

विटकक¹—वि० सज्ञा पु० [स० विटङ्कक] दे० 'विटक' [को०]।

विटकित—वि० [स० विटङ्कित] १ टकित। मुद्राकित। २ उत्थित। खडा हुआ। अचित [को०]।

विट—सज्ञा पु० [स०] १. वह जिसमे कामवासना बहुत अधिक हो। कामुक। लपट। २ वह जो किसी वेश्या का यार हो या जिसने किसी वेश्या को रख लिया हो। ३. धूर्त। चालाक। ४. साहित्य मे एक प्रकार का नायक। साहित्यदर्पण के अनुसार जो व्यक्ति विषय भोग मे अपनी सारी सपत्ति नष्ट कर चुका हो, भारी धूर्त हो, फल या परिणाम का एक ही अग देखता हो, वेष भूषा और बातें बनाने मे बहुत चतुर हो, वह विट कहलाता है। ५. एक पर्वत का नाम। ६ एक प्रकार का खर जिसे 'दुर्गंध खैर' भी कहते है। ७. नारंगा का वृक्ष। ८. चूहा। ९ साँवर नमक। १० विष्ठा। गुह। मल। उ०—(क) कवि भस्म विट परिनाम तन तेहि लागि जगु बैरी भयो। (ख) पाछे तें शूकर सुत आवा। विट ऊपर मुख मारि गिरावा।—विश्राम (शब्द०)। ११. (नाटक मे) एक पात्र। नायक का सखा (को०)। १२ गाड़ू। इल्लती (को०)। १३. पल्लवयुक्त शाखा। पत्तोवाली डाली (को०)।

विटक—सज्ञा पु० [स०] १. प्राचीन काल की एक जाति का नाम। २. पुराणानुसार एक प्राचीन देश जो नर्मदा नदी के तट पर था। ३. फोडा। व्रण।

विटकाता—सज्ञा स्त्री० [स० विटकान्ता] हरिद्रा। हल्दी [को०]।

विटका—सज्ञा स्त्री० [स०] विटो के मिलने का कक्ष [को०]।

विटकारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

विटक्रमि—सज्ञा पु० [स०] चुन्ना या चुनचुना नाम का कीडा जो बच्चो की गुदा मे उत्पन्न होता है।

विटप—सज्ञा पु० [स०] १ वृक्ष या लता की नई शाखा। कोपल। २ छतनार पेड। झाडी। ३ वृक्ष। पेड। उ०—ठहर गए नृप वहीं विटप की छाँह मे, हुआ विस्फुरण शकुनरूप वर बाँह मे।—शकुं०, पृ० ७७। ४ आदित्य पत्र। ५ विस्तार। फैलाव (को०)। ६ लता (को०)। ७ अडकोश पटल (को०)।

विटपक—सज्ञा पु० [स०] १ दुष्ट। पाजी। २ वृक्ष (को०)।

विटपि—सज्ञा पु० [स० विटपी] दे० 'विटपी'। उ०—नियममयी उलझन लतिका का भाव विटपि से आकर मिलना। जीवन वन की बनी समस्या आशा नभकुसुमो का खिलना।—कामायनी, पृ० २६५।

विटपिमृग—सज्ञा पु० [स०] वानर। बदर [को०]।

विटपी—सज्ञा पु० [सं० विटपिन्] १ जिसमे नई शाखाएँ या कोपलें निकली हो। २. वृक्ष। पेड। उ०—बढते है विटपी जिधर चाहता मन है।—साकेत, पृ० २१२। ३ अजीर का पेड। ४ वट वृक्ष। बड का पेड।

विटपीमृग – सज्ञा पु० [स०] शाखामृग। बदर।

विटपेटक—सज्ञा पु० [स०] धूर्तमडली। धूर्तो का समुदाय [को०]।

विटप्रिय—सज्ञा पु० [स०] मोगरा नामक फूल या उसका पौधा।

विटभूत—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम।

विटमाक्षिक—सज्ञा पु० [स०] सोनामक्खी नाम का खनिज द्रव्य।

विटलवण—सज्ञा पु० [स०] साँचर नमक।

विटवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] पाटली वृक्ष।

विटाटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ धूर्तो का मिलन कक्ष। विट लोगो का आश्रय या गृह। २. एक प्रकार का मुस्तक या मोथा [को०]।

विटि, विटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लाल चदन। २ पीत चंदन [को०]।

विट्—सज्ञा पु० [स०] साँचर नमक।

विट्क—सज्ञा पु० [स०] १ विष। जहर। २ मल (को०)।

विट्घात—सज्ञा पु० [स०] मूत्राघात नामक रोग।

विट्चर—सज्ञा पु० [स०] गाँवो मे रहनेवाला सूअर।

विट्ठल—सज्ञा पु० [स०] पंढरपुर (महाराष्ट्र) की विष्णु की एक मूर्त्ति का नाम।

विट्पति—सज्ञा पुं० [स०] जामाता। दामाद।

विट्प्रिय—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार या सूँस नामक जलजंतु।

विट्शूल—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शूल रोग।

विट्सग—सज्ञा पुं० [स० विट्सङ्ग] मलरोध। कब्जियत।

विट्सारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

विठक—वि० [स० विठङ्क] नीच। दुर्वृत्त। कमीना [को०]।

विठर—सज्ञा पु० [स०] १. बृहस्पति का एक नाम। २. वावदूक। वाग्मी व्यक्ति। पडित ३. मूर्ख आदमी [को०]।

विठल—संज्ञा पुं० [सं० विट्ठल ?] दे० 'विट्ठल'।

विठोवा —संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'विट्ठल'।

विट्ठल—संज्ञा पुं० [सं० या सं० विष्टरश्रवस् = विष्णु (कृष्ण) के एक नाम का संक्षिप्त रूप, सं० विष्टर > प्रा० विट्ठल] १ विष्णु या कृष्ण की एक मूर्ति जो पढरपुर मे है।

विट्ठलनाथ—संज्ञा पुं० [हिं०] वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र का नाम जिन्होने 'वल्लभ मत' के आठ प्रधान भक्त कवियो को लेकर 'अष्ट छाप' की स्थापना की।

विडग¹—संज्ञा पुं० [सं० विडङ्ग] वायविडंग।

विडग²—वि० अभिज्ञ। जानकार। निपुण [को०]।

विडग³—संज्ञा पुं० [देश०] अश्व। घोडा। उ०—तिरिणमइ लेस्या टालिमा वाँकड मुहाँ विडग—ढोला०, दू० २२७।

विडँग(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] घोडा। उ०—तिस प्रथम जाम आनोभनर, दारण सोनागिर दुरग। कर वाचपाद अकवर कुशल, वीदहरे सझिया विडँग।—रा० रू०, पृ० १७०।

विडगी(पु)—वि० [हिं० वेढग] वेढगी। उ०—आया मृग मार मेसनू आखे ववव मृगो सवीता। दारुण कुटी विडगी दीसै सही गमाई सीता।—रघु० रू०, पृ० १३८।

विडव¹—संज्ञा पुं० [सं० विडम्ब] १. नकल। अनुकरण। २ दुखी करना। तग करना। ३ मजाक। परिहास। ठिठोली [को०]।

विडव²—वि० अनुकरण करनेवाला। नकल करनेवाला।

विडवक—संज्ञा पुं० [सं० विडम्बक] १ ठीक ठीक अनुकरण करनेवाला। पूरी पूरी नकल करनेवाला। २ अनुकरण करके चिढाने या अपमान करनेवाला। ३ निंदा या परिहास करनेवाला।

विडवन—संज्ञा पुं० [सं० विडम्बन] १. किसी के रंगढग या चाल-ढाल आदि का ठीक ठीक अनुकरण करना। पूरी पूरी नकल करना। २. चिढाने या अपमानित करने के लिये नकल करना। भाँडपन करना। मजाक करना। मजाक का विषय बनाना। ३ निंदा या उपहास करना। ४ धोखेवाजी। जालसाजी (को०)। ५ क्लेश। संताप (को०)। ६. निराश करना (को०)।

विडवना—संज्ञा स्त्री० [सं० विडम्बना] [वि० विडवनीय, विडवित] १. अनुकरण करना। नकल उतारना। २ किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसकी नकल उतारना। ३. हँसी उडाना। मजाक करना। ४ हँसी का विषय। उ०—संसार के समस्त अभावो को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परतु कैसी विडंबना! लक्ष्मी के लालो के भ्रूभग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या?—स्कंद०, पृ० १६। ५ डाँटना डपटना। फटकारना। दे० 'विडवन'।

विडवनीय—वि० [सं० विडम्बनीय] १ जो अनुकरण करने के योग्य हो। नकल उतारने लायक। २. चिढाने या उपहास करने योग्य। दे० 'विडवित'।

विडवित—वि० [सं० विडम्बित] १ नकल किया हुआ। २ जिसका परिहास किया गया हो। ३ वंचित। छला हुआ। ४ सतप्त किया हुआ। जो हताश किया गया हो। ५ नीच। हेय। कमीना।

विडवी—संज्ञा पुं० [सं० विडम्बिन्] वह जो किसी प्रकार की विडंबना करता हो। विडवना करनेवाला।

विडव्य—संज्ञा पुं० [सं० विडम्ब्य] वह जो विडवना के लायक हो। उपहास का विषय [को०]।

विड—संज्ञा पुं० [सं०] १ विट् लवण। काला नमक। २ खड। अश। टुकडा (को०)।

विडगड—संज्ञा पुं० [सं० विडगण्ड] विट् लवण। साँचर नामक।

विडद†—संज्ञा पुं० [हिं० विरद] दे० 'विरुद'। उ०—भाट विड़द तिहाँ ऊचरै। धनि धनि हो वीसल चहूँवाण—वी० रासो, पृ० ११०।

विडरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० विघारित ? या सं० तलव, हिं० डालना या सं० वितरण] १ इधर उधर होना। तितर वितर होना। उ०—(क) विडरत विझुकि जानि रथ ते मृग जनु ससकि शशि लगर सारे।—सूर (शब्द०)। (ख) जानत नहीं कौन गुण यहि तन जाते सब विडरे।—सूर०। २ भागना। दौडना। उ०—ह्रुकि मुगल ताल की जोरी। भजैं विडरि बालक चहुँ ओरी।—छत्रप्रकाश (शब्द०)। ३. चौंकना। भौचक होना। ४ डरना। भीत होना।

विडराना(पु)†—क्रि० स० दे० 'विडारना'।

विडाँणा, विडाणा(पु)†—वि० [देश०] [वि० स्त्री० विडाँणी] विराना। विगाना। पराया। उ०—(क) थल मथ्थइ ऊजासडइ, थे इण केहइ रग। धण लीजइ प्रै मारिजइ, छाँडि विडाँणउ सग।—ढोला०, दू० ६३२। (ख) रामनाम निशि दिन भजो तजो विडाणी तात। जन हरिया नर देह सो औसर वीतो जात।—राम० धर्म०, पृ० ५८। (ग) आँखडियाँ डवर हुई नयण गमाया रोय। से साजण परदेश मइँ रह्या विडाणा होय।—ढोला०, दू० १६५।

विडारक—संज्ञा पुं० [सं०] विडाल। बिल्ली।

विडारना—क्रि० स० [हिं० विडरना का सक० रूप] १ तितर वितर करना। इधर उधर करना। छितराना। उ०—हारे लै विडारे जोइ। पति पै पुकारे कहो वजमारे मति जोवो हरि गाम।—नाभादास (शब्द०)। २ नष्ट करना। उ०—विष्वकसेन रूप हरि लेगे कोन्हो शिव को हेत। असुर मारि सब तुरत विडारे दीन्हे रुद्र निकेत।—सूर (शब्द०)। ३ भगाना। दौडाना। ४. चौंकाना। आश्चर्यचकित कर देना।

विडाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. आँख का पिंड। २ आँख की एक प्रकार की दवा जो जेठी मधु, गेरू, दारु हल्दी और रसाजन आदि से बनती है और जिसका आँख के चारो ओर लेप किया जाता है। ३ आँख के चारो ओर किया जानेवाला कोई लेप। ४ बिल्ली। ५ गवमार्जार। मुश्क बिलाव। ६. हरताल। दे० 'बिडाल'।

विडालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरताल। २ बिल्ली। ३ आँख की एक औषध। विडाल।

विडालपद—संज्ञा पुं० [सं०] दो तोले का परिमाण।

विडालपदक—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक परिभाषा के अनुसार एक कर्म का परिमाण।

विडालाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम जो महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे गया था।

विडालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी का नाम [को०]।

विडाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदारी कद। २. बिल्ली।

विडीन—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षियों की उडान का एक प्रकार।

विडीनक—संज्ञा सं० [सं०] पक्षियो की उडान का एक भेद। पक्षियो का अलग अलग होकर उडना [को०]।

विडुल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बेत [को०]।

विडूरज—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुमूल्य रत्न। वैदूर्य मणि [को०]।

विडोजा, विडौजा—संज्ञा पुं० [सं० विडोजस् विडौजस्] इंद्र का एक नाम।

विड्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विट' [को०]।

विड्गंध—संज्ञा पुं० [सं० विड्गन्ध] विड लवण।

विड्ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] कोष्ठबद्धता। कब्जियत। मलरोध।

विड्घात—संज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाब और पाखाना रुकना।

विड्ज—संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा आदि से उत्पन्न होनेवाले कीडे मकोडे।

विड्ड—संज्ञा पुं० [सं०] अस्थि। हड्डी [को०]।

विड्ढल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विठ्ठल' [को०]।

विड्बंध—संज्ञा पुं० [सं० विड्बन्ध] मल का अवरोध। कब्जियत।

विड्भंग—संज्ञा पुं० [सं० विड्भङ्ग] बहुत दस्त होना। पेट चलना।

विड्भव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विड्ज' [को०]।

विड्भुक—संज्ञा पुं० [सं० विड्भुज्] १. गुबरैला। २. सूअर [को०]।

विड्भेद—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत दस्त होना। पेट चलना।

विड्भेदी—संज्ञा पुं० [सं० विड्भेदिन्] वह औषधि या द्रव्य जो विरेचक हो। दस्तावर चीज या दवा।

विड्भोजी—संज्ञा पुं० [सं० विड्भोजिन्] वह जो विष्ठा खाता हो। शूकर, गुबरैला आदि।

विड्लवण—संज्ञा पुं० [सं०] विट्लवण। सांचर नमक।

विड्वराह—संज्ञा पुं० [सं०] गाँवों मे रहनेवाला सूअर।

विड्विघात—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मूत्रघात रोग।

विढना(पु)†—क्रि० अ० [सं० वि+दहन तुल० हिं० वेढना] युद्ध करना। भिडना उ०—पाया साह अलावदा, विढ कटकांसू वीर।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ८१।

विणज†—संज्ञा पुं० [सं० वणिज्] व्यापार उ०—दारुण नगर सक जुत देखे। दौलत विणज बजार न देखे।—रघु०रू०, १।११२।

विणठना†—क्रि० अ०[सं० विनष्ट, प्रा० विणट्ठ+हिं० ना (प्रत्य०)] नष्ट होना। उ०—तन विणठा जीउ खेलिया छाडि चलिया घर घाह।—प्राण०, पृ० २५६।

विणसना†—क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना। उ०—कलिजुग पाप जम्रवतरयो रजि के कारण विणसस लक।—बी० रासो, पृ० ८६।

विणास†—संज्ञा पुं० [प्र०] दे०'विनाश'। उ०—अस्ती चरित गति को लहइ? एकइँ आखर रस भवइ विणास।—बी० रासो, पृ० २।

वितंड—संज्ञा पुं० [सं० वितण्ड] १ हाथी। २ एक प्रकार का ताला (को०)।

वितंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० वितण्डा] १ न्यायशास्त्र मे सोलह प्रकार की तर्क प्रणालियो मे से एक। दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २ व्यर्थ का झगडा या कहासुनी। ३ कच्चूर। ४. दर्वी। ५ करवीरी (को०)। ६. शिलारस।

वितंडावाद—संज्ञा पुं० [सं० वितण्डावाद] व्यर्थ के तर्क का आश्रय लेना। उ०—आधुनिक प्रवृत्तियों को प्रवाद और वितंडावाद कहकर उनकी निंदा की थी।—आचार्य०, पृ० १४०।

वितंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वि०+तन्त्र] वह बाजा जिसमे तार न लगे हो। बिना तार का बाजा। उ०—तत वितत सुत्रघन बाजहिं शब्द होय झनकारा।—जायसी (शब्द०)।

वितंतु[1]—संज्ञा पुं० [सं० वितन्तु] ऊँची जाति का घोडा। अच्छा घोडा [को०]।

वितंतु[2]—संज्ञा स्त्री० पतिहीना स्त्री। विधवा [को०]।

वितंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० वितन्त्री] वह वीणा जिसके तारो के स्वरो मे एकरूपता न हो [को०]।

वितंस—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षियो अथवा छोटे छोटे पशुओ आदि को फँसाने का जाल। २ पिंजडा (को०)।

वित(पु)—वि० [सं० विद्] १ जाननेवाला। ज्ञाता। उ०—सब शस्त्र विसारद अस्त्र वित विदित बली मनि जगत जित।—गोपाल (शब्द०)। २ चतुर। निपुण। उ०—रन जु आन रद वित नृप लख्या करद मगध महराज को।—गोपाल (शब्द०)।

वित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] धन दौलत।

वितघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी अरणी।

वितड़ना†—क्रि० स० [सं० वितरण] १. बाँटना। २ अर्पित करना। दान करना। उ०—दादू ज्यौं आवै त्यौं जाइ विचारी। विलसी वितडी न माथैं मारी।—दादू०, पृ० २३७।

वितत[1]—वि० [सं०] १ विस्तृत। फैला हुआ। २ आयत। विशाल। विस्तीर्ण (को०)। ३ किया हुआ। सपन्न। कार्यान्वित (को०)। ४ ढका हुआ। आच्छादित (को०)। ५ खीचा हुआ। कंपित। झुकाया हुआ (धनुष या ज्या)। जैसे, विततधनु, विततज्या (को०)।

वितत[2]—संज्ञा पुं० १. वीणा अथवा उससे मिलता जुलता हुआ और कोई बाजा। २ मृदग या ढोल आदि आनद्ध बाजा से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३. दे०'प्रतान' (को०)।

विततधन्वा—वि० [सं० विततधन्वन्] धनुष की प्रत्यचा या डोरी को खीचनेवाला [को०]।

विततवपु—वि० [सं०] लबे चौडे शरीरवाला [को०]।

वितताना(पु)—क्रि० अ० [सं० व्यथा] व्याकुल होना। बेचैन होना। उ०—देखे आइ तहाँ हरि नाहीं, चितवति जहाँ तहाँ वितताती।—सूर (शब्द०)।

विततायुध—वि० [सं०] जिसने धनुष की प्रत्यचा या डोरी कान तक तान दी हो [को०]।

वितति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। आतिशय्य। आधिक्य। २. समूह। गुल्म। झुंड (को०)। ३ रेखा। कतार। पंक्ति (को०)।

विततोत्सव—वि० [सं०] जिसने उत्सव की व्यवस्था की हो [को०]।

वितथ—वि० [सं०] [संज्ञा वितथता] १ मिथ्या। झूठ। २ व्यर्थ। निरर्थक। बेफायदा।

वितथता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वितथ का भाव। मिथ्यात्व।

वितथप्रयत्न—वि० [सं०] निष्फल यत्न करनेवाला।

वितथमर्याद—वि० [सं०] अनाचारी। आचारहीन [को०]।

वितथवादी—वि० [सं० वितथवादिन्] असत्यभाषी।

वितथाभिनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] असत्य बोलने की प्रवृत्ति या आदत [को०]।

वितथ्य—वि० [सं०] १ मिथ्या। असत्य। झूठ। २ व्यर्थ। निरर्थक।

वितद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] पंजाब की वितस्ता या झेलम नदी का एक नाम।

वितन(पु)—वि०, संज्ञा पुं० [सं० वितनु] दे० 'वितनु'।

वितनिता—वि०, संज्ञा [सं० वितनितृ] विस्तृत करनेवाला। वह जो विस्तृत करता हो। विस्तारक।

वितनु¹—वि० [सं०] १ जो बहुत ही सूक्ष्म हो। २ शरीररहित (को०)। ३ सुंदर (को०)। ४ कोमल। मृदु (को०)। ५ निस्तत्व। सारहीन (को०)।

वितनु²—संज्ञा पुं० कामदेव [को०]।

वितपन्न¹—संज्ञा पुं० [सं० व्युत्पन्न] वह जो किसी काम में कुशल हो। व्युत्पन्न। दक्ष। प्रवीण। उ०—(क) सूरज प्रभु वितपन्न कोक गुन ताने हरि हरि ध्यावत।—सूर (शब्द०) (ख) सगहिं रहति सदा पिय प्यारी क्रीडत करति उपाधा। कोककला वितपन्न भई हौं कान्हरूप तनु आधा।—सूर (शब्द०)।

वितपन्न²—वि० [सं० विपत्+पन्न=विपन्न] घबराया हुआ। व्याकुल। उ०—उनहिं मिले वितपन्न भई अब वै दिन गए भुलाइ।—सूर (शब्द०)।

वितमस्क—वि० [सं०] जिसमें अंधकार न हो। २ जिसमें तमोगुण न हो।

वितमा—वि० [सं० वितमस्] । दे० 'वितमस्क' [को०]।

वितर—वि० [सं०] जो आगे पहुँचावे (मार्ग आदि)। आगे पहुँचानेवाला [को०]।

वितरक—संज्ञा पुं० [सं०] वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला। उ०—नुपुर धुनि पूरत ताते नूपुर वितरक अर्थ सुरायन मे।—देवस्वामी (शब्द०)।

वितरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान करना। अर्पण करना। देना। २ बाँटना। ३ वितरक (को०)। ४ पार करना। पार जाना (को०)। ५ छोड देना। त्याग करना। तिलांजलि देना (को०)।

वितरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वितरण] १ बाँटनेवाला। वितरण करनेवाला। जैसे—तरन तरन द्रुत भवतरन वितरन सुख हित रनकरन।—गोपाल (शब्द०)। २ दे० 'वितरण'। उ०—कछु दिन प्रभु तहँ कियो निवासा। वितरन वैप्यान वृंद हुलासा।—रघुराज (शब्द०)।

वितरना(पु)—क्रि० स० [सं० वितरण] वितरण करना। बाँटना। उ०—(क) ये लहुरे अति रहैं उदारा। वितरहिं सब को द्रव्य अपारा।—रघुराज (शब्द०)। (ख) सुवरण तनु तिनके किए, सुवरण वितरि अपार।—रघुराज (शब्द०)।

वितरिक्त(पु)—अव्य० [सं० व्यतिरिक्त] अतिरिक्त। सिवा। उ०—हरि वितरिक्त जाहि शिर नावै मूरति तुरत फूटि सो जावै।—रघुराज (शब्द०)।

वितरित—वि० [सं०] जो वितरण किया गया हो। बाँटा हुआ।

वितरिता—वि० संज्ञा पुं० [सं० वितरितृ] १ वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला। २ दान देनेवाला [को०]।

वितरेक(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० व्यतिरेक] व्यतिरेक अलंकार। दे० 'व्यतिरेक'।

वितरेक(पु)²—क्रि० वि० [सं० व्यतिरिक्त] छोड़कर। सिवा। उ०—वितरेक तोहि निर्दय महाबल आनु कहु को कहि सकै।—तुलसी (शब्द०)।

वितर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक तर्क के उपरांत होनेवाला दूसरा तर्क। युक्ति। दलील। २ संदेह। शक। ३ अटकल। अनुमान। ४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नहीं होता। ६ विचार विनिमय (को०)। ७ आध्यात्मिक गुरु (को०)। ८ अभिप्राय। प्रयोजन (को०)।

वितर्कण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वादविवाद। २ तर्क करने की क्रिया। ३ संदेह। ४ अटकल करना। अंदाज लगाना [को०]।

वितर्कित—वि० [सं०] विचारित [को०]।

वितर्क्य—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या संदेह का स्थान हो। २ जो विचार करने योग्य हो (को०)। ३ जो देखने में बहुत विलक्षण हो।

वितर्दि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेदी। मंच। वेदिका। २ छज्जा। बरामदा (को०)।

वितर्दिका, वितर्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वितर्दि' [को०]।

वितर्द्धि, वितर्द्धिका, वितर्द्धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वितर्दि' [को०]।

वितल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।

विशेष—देवी भागवत के अनुसार यही दूसरा पाताल है। कहते हैं, इस पाताल में शिव जी 'हाटकेश्वर' नाम से अपने पार्षदों के साथ रहते हैं। इनके वीर्य से हाटकी नाम की नदी बहती है जिसे हुताशन पीते हैं। उन्हीं हुताशन के मुँह से जब फुफकार निकलता है, तब उसमें हाटक नामक सोना निकलता है।

वितली—संज्ञा पुं० [सं० वितलिन्] वितल लोक को धारण करनेवाले, बलदेव। उ०—बलिन मुशलिन देव हलिन वितलिन स्वयं।—गर्गसंहिता (शब्द०)।

वितष्ट—वि० [सं०] १ काटा हुआ । २ खोदा हुआ । ३. समतल या हमवार किया हुआ (को०) ।

वितसारू†—१. अव्य० [देश० या सं० वित्त+सार] यथाशक्ति । उ०—दान सदा वितसारू देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम । —रघु० रू०, पृ० २४ ।

वितस्त—संज्ञा पुं० [सं० वितस्ति] वितस्ति । बालिश्त । एक बित्ता । बारह अंगुल ।

वितस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की झेलम नामक नदी का प्राचीन नाम । उ०—वितस्तातीर स्वच्छ स्थल ।—का० सुषमा, पृ० १ ।

वितस्ताख्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार तक्षक नाग का निवासस्थान ।

वितस्ताद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] राजतरंगिणी के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

वितस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतना परिमाण जितना हाथ अँगूठे और उँगली को पूरा पूरा फैलाने से होता है । बालिश्त । बित्ता । २ बारह अंगुल का परिमाण ।

विता† अव्य० [हिं० उतना—उत्ता] उतने । उ०—बहूँवचन विते वर्जा वहिश्त म्यानि जिते थे विते गुनहगार आदम हव्वाकर कते ।—दक्खिनी०,पृ० ३३२ ।

विताड़न—संज्ञा पुं० [सं० विताडन] मारना । ताड़ना करना (को०) ।

वितान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ । २ विस्तार । फैलाव । ३ बड़ा चँदोआ या खेमा । ४ समूह । संघ । जमाव । ५ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बंधन जो सिर पर के आघात या घाव आदि पर बाँधा जाता है । ६ अवसर । अवकाश । ७ घृणा । नफरत । ८ शून्य । खाली स्थान । ९ अग्निहोत्र आदि कर्म । १०. वेदिका । वेदी (को०) । ११ गद्दी (को०) । १२ प्राचुर्य । आधिक्य (को०) । १३ एक प्रकार का छंद । १४. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, एक भगण और दो गुरु होते हैं । उ०—सुभगगा जल तेरो । सुखादता जन केरो । नशिक भौ दुख नाना । जस को तान विताना ।—जगन्नाथ (शब्द०) ।

वितान²—वि० १ मंद । धीमा । २ शून्य । खाली । ३ उदास । हतोत्साह (को०) । ४ जड बुद्धिहीन । ५ खल । दुष्ट (को०) । ६ सारहीन । तुच्छ (को०) ।

वितानक¹—संज्ञा पुं० [सं०] धनिया ।

वितानक²—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा चँदोआ या खेमा । २ समूह । जमावड़ा । ३ धन । संपत्ति । ४ बिछाने की बड़ी चाँदनी (को०) । ५. माड नामक वृक्ष (को०) ।

विताननाⓟ†—क्रि० स० [सं० वितान] १ शामियाना आदि तानना । २. कोई चीज तानना । उ०—मनी हीन छीन फनी, मीन बारि सों विहीन ह्वै कै मलीन मति दीनता वितानई ।—रसकुसुमाकर (शब्द०) ।

वितानमूल—संज्ञा पुं० [सं०] खस । उशीर ।

वितानमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] उशीर । गाडर । खस ।

वितामस¹—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश । उजाला ।

वितामस²—वि० १ जिसमें तमोगुण न हो । २ अंधकार रहित ।

वितार—संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु या पुच्छल तारा । २ वह रात्रि जिसमे तारे न हों ।

वितारक—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा नामक जड़ी ।

विताल—वि० [सं०] १ अशुद्ध (ताल) । २ (संगीत मे) तालहीन (को०) ।

वितिक्रमⓟ—संज्ञा पुं० [सं० व्यतिक्रम] क्रम का भंग होना । व्यतिक्रम । गड़बड़ी । उ०— प्रीति परीच्छा तिहुन की बैर वितिक्रम जानि ।—तुलसी (शब्द) ।

वितिमिर—वि० [सं०] अंधकाररहित (को०) ।

वितिलक—वि० [सं०] सांप्रदायिक तिलक से हीन ललाटवाला (को०) ।

वितिहोतर—संज्ञा पुं० [सं० वीतिहोतृ] अग्नि । (डिं०) ।

वितीतⓟ†—वि० [सं० व्यतीत] दे० 'व्यतीत' । उ०—आम मंजरी संग सनेह सों कछु दिन करत वितीत ।—स० शा० (शब्द०) ।

वितीपात—संज्ञा पुं० [सं० व्यतीपात] एक योग । दे० 'व्यतीपात' ।

वितीपाती—संज्ञा पुं० [सं० व्यतीपात+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो बहुत अधिक उपद्रव करता हो । पाजी । शरारती (लड़का) ।

वितीर्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वितरण' ।

वितीर्ण²—वि० दे० 'उत्तीर्ण' ।

वितुंड—संज्ञा पुं० [सं० वि०+तुण्ड] हाथी । उ०—(क) जादो पुंड के वितुंड चित्र तुंड झुंड झुंड मुंड धरे कुंड सुंड कुंडल करे करे । —गोपाल (शब्द०) । (ख) तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई । चढे वितुंडन आनँद छाई ।—रघुराज (शब्द०) ।

वितुⓟ‡—संज्ञा पुं० [सं० वित्त] धन । संपत्ति । उ०—दै वितु कै हित लै सब छबि वितु विधि निज हाथ सँवारे ।—तुलसी (शब्द०) ।

वितुड—संज्ञा पुं० [सं०] नीला थोथा । तूतिया ।

वितुद—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक साहित्य के अनुसार एक प्रकार की भूतयोनि ।

वितुन्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिरियारी या सुसना नामक साग । २ सेवार ।

वितुन्न²—वि० छिन्न । चीरा या काटा हुआ (को०) ।

वितुन्नक—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनिया । २ तूतिया । ३ कैवर्तमुस्तक । ४ भुइँ आँवला । ५ कान का छेद जिसमे आभूषण पहनते है (को०) ।

वितुन्नका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँ आँवला ।

वितुन्नभूता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँआँवला ।

वितुन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँआँवला ।

वितुन्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वितुन्ना' ।

वितुष—वि० [सं०] तुषहीन । तुषरहित । जिसका छिलका निकाल लिया गया हो (को०) ।

वितुष्ट—वि० [सं०] जो संतुष्ट न हो । असंतुष्ट ।

वितृट्—वि० [सं० वितृष्] तृषारहित । जिसे प्यास न हो (को०) ।

वितृण—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ तृण या घास आदि न होती हो ।

वितृतीय—वि० [सं०] अंतर देकर होनेवाला। जैसे, ज्वर (को०)।

वितृप्त—वि० [सं०] १ जो तृप्त या संतुष्ट न हुआ हो। २ जो पूर्ण संतुष्ट हो (को०)।

वितृप्तक—वि० [सं०] दे० 'वितृप्त' (को०)।

वितृप्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वितृप्त या असंतुष्ट होने का भाव।

वितृप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न रह गई हो। निस्पृह। उदासीन। २. वह जिसे तृषा न हो (को०)।

वितृष्ण—वि० [सं०] इच्छा या कामनारहित। तृष्णारहित (को०)।

वितृष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तृष्णा का अभाव। तृष्णा का न होना। विरक्ति। २ संतुष्टि (को०)। ४ प्रबल कामना। तीव्र इच्छा (को०)।

वितोय—वि० [सं०] निर्जल। जलविहीन (को०)।

वित्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ धन। संपत्ति। उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की। सोच कर घटना वणिक के वित्त की।—शकु०, पृ० ४०। २ प्राप्त वस्तु (को०)। ३ अधिकार (को०)। शक्ति (को०)। ५ सोना (को०)। ६ कुडली के जन्मलग्न का दूसरा स्थान (को०)।

वित्त²—वि० १ सोचा या विचारा हुआ। २ जाना या समझा हुआ। ३ मिला या पाया हुआ। ४ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ५ परीक्षित (को०)।

वित्तक(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० वृत्त+क (अल्पार्थक प्रत्य०)] चरित्र। वीतक। आचरण। बात। उ०—(क) जिहि निसि सो वर वित्तक वित्ती। ज्यो राजन वंमास सु हत्ती।—पृ० रा०, ५७।११६। (ख) अव्वुअ पति पामार पह, लिय गिर गुज्जर राइ। ता पछ वित्तक वित्त यौ, कह्यौ चद वरदाइ।—पृ० रा०, १२।१०६।

वित्तक²—वि० [सं०] विशेष प्रसिद्ध (को०)।

वित्तकाम—वि० [सं०] धन संपत्ति की कामना रखनेवाला (को०)।

वित्तकोश—संज्ञा पुं० [सं०] रुपए पैसे आदि रखने की थैली।

वित्तगोप्ता—संज्ञा पुं० [सं० वित्तगोप्तृ] कुबेर के भंडारी का नाम।

वित्तजानि, वित्तजाय—वि० [सं०] विवाहित (को०)।

वित्तद—वि० [सं०] दानी। दाता (को०)।

वित्तदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वित्तनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम।

वित्तप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो धन की रक्षा करता हो। भंडारी। २ कुबेर का एक नाम।

वित्तपति—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम। उ०— लज्यो वित्तपति चित्त महँ, कहि धनि अनुज हमार। —रघुराज० (शब्द०)।

वित्तपाल—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम।

वित्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका।

वित्तपेटा, वित्तपेटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रुपया पैसा रखने की थैली। वित्तकोश (को०)।

वित्तमात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन। संपत्ति (को०)।

वित्तरक्षी—संज्ञा पुं० [सं० वित्तरक्षिन्] वह जिसके पास वित्त रक्षित हो। संपन्न व्यक्ति। धनी व्यक्ति (को०)।

वित्तराग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वीतराग] दे० 'वीतराग'। उ०—कप-डिया बीर कहा कहौ विति। मन वित्तराग लै मुक्ति जित्ति।—पृ० रा०, ६।८३।

वित्तवान्—संज्ञा वि० [सं० वित्तवत्] धनी (को०)।

वित्तविवर्धी—संज्ञा पुं० [सं० वित्तविवर्धिन्] १. वह जो धन की अभि-वृद्धि करता हो। २ ब्याज। सूद (को०)।

वित्तशाठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] लेनदेन में धोखाधड़ी (को०)।

वित्तहीन—संज्ञा पुं० [सं०] धनहीन। दरिद्र। गरीब। उ०—सब परिवार मेरो याही लागे राजाजू हौं दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं।—तुलसी (शब्द०)।

वित्तागम—संज्ञा पुं० [सं०] १ धन की प्राप्ति या आगम। २ धन की प्राप्ति का साधन (को०)।

वित्ताढ्य—वि० [सं०] बहुत धनी (को०)।

वित्तान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वितान] दे० 'वितान'। उ०—सिधुजा रच्यो भक्ति वित्तान।—भक्तमाल (श्री०), पृ० ३८१।

वित्ताप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन की प्राप्ति।

वित्तायन—वि० [सं०] धन लानेवाला (को०)।

वित्तार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] चतुर आदमी। निपुण व्यक्ति (को०)।

वित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचार। २ लाभ। प्राप्ति। ३ ज्ञान। ४ संभावना।

वित्तीय—वि० [सं०] वित्त संबंधी। वित्त की व्यवस्था के अनुसार। जैसे, वित्तीय वर्ष।

वित्तेश—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

वित्तेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

वित्तेहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वित्तैषणा' (को०)।

वित्तैषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन का लोभ। संपत्ति पाने की लालसा। उ०—लोकैषणा, वित्तैषणा तथा दारैषणा की यथोचित संतृप्ति, भौतिक तथा आध्यत्मिक सुख एवं साफल्य की प्राप्ति समीक्षा शक्ति के ऊपर ही निर्भर है।—सं० दर्शन, पृ० ६६।

वित्थार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विस्तार, विथ्थार] प्रसार। विस्तार। फैलाव।

वित्रप—वि० [सं०] निर्लज्ज। बेहया। बेशरम।

वित्रस्त—वि० [सं०] विशेष रूप से त्रस्त। बहुत डरा हुआ। उ०—यो तुम अपनी विजय घोषणा कर सकते हो क्योंकि मेरी गजवाहिनी तुम्हारे अश्वारोहियो से वित्रस्त हो चुकी है।—राज्यश्री, पृ० ५।

वित्रास—संज्ञा पुं० [सं०] आतंक। भय। डर। खौफ।

वित्रासन¹—संज्ञा पुं० [सं०] भयभीत करना। डराना (को०)।

वित्रासन[2]—वि० भयानक। डरावना [को०]।

वित्रासित—वि० [सं०] किसी के द्वारा भयभीत कराया हुआ। डराया हुआ [को०]।

वित्रिभलग्नक—संज्ञा पुं० [सं०] क्षितिज के ऊपर रविमार्ग का सबसे ऊँचा बिंदु [को०]।

वित्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेत्ता होने का भाव।

वित्सन—संज्ञा पुं० [सं०] बैल। साँड़।

विथक—संज्ञा पुं० [हिं० विथकना ?] पतन।

विथकना†—क्रि० अ० [हिं० थकना] १ थकना। शिथिल होना। उ०—सुनि किन्नर गंधर्व सराहत विथके हैं बिबुध बिमान।—तुलसी (शब्द०)। २ मोहित या चकित होकर चुप हो जाना। उ०—तुलसी मुनि ग्रामवधू विथकीं पुलकीं तन औ चले लोचन च्वै।—तुलसी (शब्द०)।

विथकित(पु)—वि० [हिं० विथकना] १ थका हुआ। शिथिल। उ०—तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान। राम लखन के रूप न देखेउ आन।—तुलसी (शब्द०)। २ जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकता हो। उ०—गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढ़ी।—सूर (शब्द०)।

विथराना(पु)—क्रि० स० [स० विस्तरण, प्रा० विथ्थरण] १. फैलाना। २. इधर उधर करना।

विथा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यथा] १ व्यथा। पीड़ा। तकलीफ। उ०—(क) तनकहु विथा नहीं मन मान्यो। पर उपकार न तनु प्रिय जान्यो।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भँवर जानि पै कमल पिरीती। जेहि महँ विथा प्रेम कै बीती।—जायसी (शब्द०)। (ग) बूटी जटी म्नो बहुविधि की। लीनो विथा निवारन सिधि की।—गोपाल (शब्द०)। २ रोग। बीमारी। उ०—फेन तजै मुख तें, पटकै कर, जो न कियो जु विथा निरवारन।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

विथारना(पु)—क्रि० स० [सं० विस्तारण, प्रा० वित्थारण] फैलाना। छितराना। उ०—श्री रघुबीर के बाहु विलास तें धर्म रच्यो त्रैलोक्य विथार्‌यो।—हृदयराम (शब्द०)।

विथित(पु)—वि० [सं० व्यथित] जिसे किसी प्रकार की व्यथा हो। व्यथायुक्त। दुखी।

विथुर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। २ राक्षस। ३ क्षय। नाश।

विथुर[2]—वि० १ अल्प। थोड़ा। कम। २ व्यथित। दुःखित। ३. धनरत्नरहित। जो ठोस न हो (को०)। ४. विचलित। स्खलित (को०)।

विथुरना—क्रि० स० [सं० विस्तरण प्रा० वित्थरण] फैलना। छितराना। इधर उधर होना। फटना। उ०—पर धन की धवाल ही के मेघ तो पे क्षण में प्रवात से विथुर गए धाराधर धुन गया।—श्यामा०, पृ० ७।

विथुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका स्वामी से वियोग हो। विरहिणी। २. विधवा (को०)।

विथ्या(पु)—वि० [सं० वृथा या मिथ्या] दे० 'वृथा'। उ०—विथ्या जीवन मनुष्य को, जो मन नाहीं ध्यान।—पृ० रा०, २२।८।

विथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोंजी।

विदठ—संज्ञा पुं० [सं० विदंष्ट्र] अंकुश। अर्गला [को०]।

विदंत[1]—वि० [सं० विदंत] (हाथी) बिना दाँत का। दंतहीन [को०]।

विदंत[2]—संज्ञा पुं० [सं० विद् (=जानना)] विद्वान्। ज्ञाता।

विदंता†—संज्ञा स्त्री० [सं० विदंता] एक प्रकार की गोह।

विदंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा चरपरा खाद्य जिसके खाने से प्यास जगती है। २ दंशन [को०]।

विद—संज्ञा पुं० [सं०] १. तिलपुष्पी। तिलक। २ जानकार। जाननेवाला। ३ पंडित। विद्वान्।

विदत्त—वि० [सं०] जो दिया गया हो। वितरित।

विदकना—क्रि० अ० [सं० विदरण या देश०] भड़कना। चौंकना। बिदकना।

उ०—एक बूँद विष गात बूँद मधु या दंपत मन रंता, अपनी परछाईं न भी तो मानव आग बिदकता।—रवता०, पृ० ८१।

विदग्ध[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रसिक पुरुष। रसज्ञ। नागर। २ पंडित विद्वान्। ३. चतुर। चालाक। होशियार। कलाविज्ञ। ४ रसा नामक घास।

विदग्ध[2]—वि० १ जला हुआ। दग्ध। २. जिसका पाक हुआ हो। पका या पचा हुआ (को०)। ३. नष्ट। सड़ा गला (को०)। ४ जो जला या पचा न हो (को०)। ५ सुंदर (को०)। ६. भड़कदार। जैसे, पोशाक। ७. परिपक्व। जैसे, मुख्य (को०)। ८. तिक्त। पीला (को०)।

यौ०—विदग्ध अजीर्ण = दे० 'विदग्धाजीर्ण'। विदग्ध परिकूलता = पेट में अम्ल का घुमड़ना और पेट का फूलना। विदग्ध परिषद् = रसिकों या विदग्ध व्यक्तियों की सभा। विदग्धवचन = वाक्चतुर।

विदग्धक—संज्ञा पुं० [सं०] जलता हुआ मांस [को०]।

विदग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदग्ध होने का भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २. चातुर्य। चातुरी (को०)। ३. रसिकता (को०)।

विदग्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विदग्धता'।

विदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह परकीया नायिका जो चतुराई के साथ परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।

विशेष—यह दो प्रकार की मानी गई है—वचनविदग्धा और क्रियाविदग्धा। जो स्त्री अपनी बातों की चतुराई से परपुरुष पर अपनी कामवासना प्रकट करती है, वह वचनविदग्धा कहलाती है; और जो किसी प्रकार की क्रिया या चेष्टा से अपना भाव प्रकट करती है, उसे क्रियाविदग्धा कहते हैं।

विदग्धाजीर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अजीर्ण रोग जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होता है और जिसमें रोगी को भ्रम, तृष्णा, मूर्छा, दाह और पेट में दर्द होता है।

विदग्धाम्लदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँखों का एक प्रकार का रोग जो बहुत अधिक खटाई खाने से होता है और जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं।

विदग्धालाप—वि० [सं०] बात करने में कुशल। वाक्पटु (को०)।

विदत्—वि० [सं०] १ जानकार। ज्ञाता। २ बुद्धिमान् (को०)।

विदथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ योगी। २ यज्ञ। ३ वैदिक काल के एक राजा का नाम। ४ विद्वान्। जानकार (को०)। ५. धार्मिक, सामरिक अथवा सामाजिक संघटन। ६ मकान। ७ ज्ञान। प्रज्ञा। बुद्धि। उ०—ऋग्वेद में एक तीसरा शब्द विदथ भी अनेक बार आया है जिसका अर्थ कहीं तो धार्मिक, कहीं मकान, कहीं यज्ञ और कहीं बुद्धि इत्यादि है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७२।

विदथी—संज्ञा पुं० [सं० विदथिन्] एक वैदिक ऋषि का नाम।

विददक्षु—वि० [सं० विदङ्क्षु] डँसने के लिये तैयार या तत्पर (को०)।

विदमान(पु)[1]—वि० [सं० विद्यमान] जो विद्यमान हो। उ०—(क) फारयो नयन काग नहिं छाँड्यो सुरपति के विदमान।—सूर (शब्द०)। (ख) ताको बधन कियो इहि रघुपति को देखत विदमान।—सूर (शब्द०)।

विदमान†[2]—संज्ञा पुं० [सं० विद्वान्] पंडित। ज्ञाता। विद्वान्।

विदर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ ककारी। विश्वसारक। २. विदारण करना। फाड़ना। ३ रंध्र। विवर। दरार। उ०—मुगति मग्ग खुल्ले विदर।—पृ० रा०, ५८। २३५।

विदर[2]—वि० [सं० विदल, प्रा० विदर] दे० 'विदल'।

विदर†[3]—संज्ञा पुं० [देश०] दासीपुत्र। उ०—विदर पिदर जाएँ नहीं, मादर विदरां मूल।—बाकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ८५।

विदरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. विदारण करना। फाड़ना। २ विद्रधि नामक रोग।

विदरना(पु)[1]—क्रि० अ० [सं० विदरण] विदीर्ण होना। फटना। उ०—(क) विदरत नाहि वज्र की छाती हरि वियोग क्यों सहिए।—सूर (शब्द०)।

विदरना[2]—क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना। उ०—महेश यही तुमको विदरयाजू। अरा सम पत्रान ह्वै विदरयाजू।—गुमान (शब्द०)।

विदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम। २ भागवत के अनुसार एक राजा का नाम। कहते हैं, इसी राजा के नाम पर विदर्भ देश का नाम पड़ा था। ३ पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम। ४. दाँतों में चोट लगने के कारण मसूड़ा फूलना या दाँतों का हिलना। ५. सूखी भूमि या मरुभूमि (को०)। ६. विदर्भ देश के निवासी (को०)।

विदर्भजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपामुद्रा का एक नाम। २ दमयंती का एक नाम जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी। ३ रुक्मिणी का एक नाम।

विदर्भतनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दमयंती (को०)।

विदर्भराज—संज्ञा पुं० [सं०] दमयंती के पिता राजा भीष्म या भीष्मक जो विदर्भ के राजा थे।

विदर्भसुभ्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दमयंती (को०)।

विदर्भा—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ की राजधानी। कुंडिनपुर। २ एक नदी। ३ चाक्षुष मनु की पत्नी (को०)।

विदर्भाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ नरेश। राजा भीष्मक (को०)।

विदर्भि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदर्व्य—संज्ञा पुं० [सं०] बिना फनवाला साँप।

विदर्शना—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवेक। ज्ञान (को०)।

विदल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रंग का सोना। २ सोना। स्वर्ण। ३. अनार का दाना या कल्क। ४ बाँस का बना हुआ टोकरा या और कोई पात्र। ५ चना। ६. पीठी। ७. पहाड़ी आबनूस (को०)। ८ विभाग। पार्थक्य (को०)। ९ टुकड़ा (को०)। १०. वेतस (को०)। ११ टहना (को०)। १२ दाल (को०)।

विदल[2]—वि० विकसित। खिला हुआ। ३ जिसमें दल न हो। बिना दल का।

विदलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मलने, दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. टुकड़े टुकड़े या इधर उधर करना। फाड़ना।

विदलना(पु)—क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना। उ०—सैं रन केहरि केहरि के विदलै अरि कुंजर छैल छवा से।—तुलसी (शब्द०)।

विदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिवृत या निसोथ नाम की एक प्रकार की लता। विशेष दे० 'निसोथ' (को०)।

विदलान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. पकाई हुई दाल। २. वह अन्न जिसमें दो दल हों। जैसे—चना, उड़द, मूँग, अरहर, मसूर आदि।

विदलित—वि० [सं०] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो। २ रौंदा हुआ। मला हुआ। ३. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ४ फाड़ा हुआ।

विदलिनी—वि० स्त्री० [सं० विदल+इनि ?] विदीर्ण करनेवाली। फाड़नेवाली। उ०—किंतु तर्जनी तेरी हाँ, उनके मस्तक तैयार, पथ दर्शक अमरत्व और हो नभ विदलिनी पुकार।—हिम०, पृ० ५२।

विदश—वि० [सं०] (वस्त्र) जिसमें किनारी या पाढ़ न हो। जो बिना किनारा के हो (को०)।

विदस्त—वि० [सं०] कृश। दुर्बल। क्षीण (को०)।

विदा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुद्धि। अक्ल। समझ। २. ज्ञान।

विदा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० विदाय, मि० अ० विदाअ्] १. प्रस्थान। रवाना होना। विदाई। जैसे, मैके से बहू। २. कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति।

क्रि० प्र०—करना।—माँगना।—होना।

विदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. विदा होने की क्रिया या भाव। रुखसती। प्रस्थान। २ विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. वह धन आदि जो विदा होने के समय किसी को दिया जाय।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

विदान—संज्ञा पुं० [सं०] खंड खंड करने की क्रिया [को०] ।

विदाम‡—संज्ञा पुं० [सं० बादाम से लक्ष्यार्थ] कौडी । छदाम । उ०—लेता नाम दिदाम न लागै, विगत जिका दह व्यापै ।—रघु० रू०, पृ० २७ ।

विदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विसर्जन । २. प्रस्थान । ३. जाने की आज्ञा या अनुमति । विदा । उ०—ता पाछे श्री गुसाई जी विजय करिवे को विदाय भए सो चले ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ८१ ।

क्रि० प्र०—माँगना ।—लेना ।

४ दान । वितरण । ५ विभाग । विभाजन (को०) ।

विदायी१—संज्ञा पुं० [सं० विदायिन्] १. वह जो ठीक तरह से चलाता या रखता हो । नियामक । २ दान करनेवाला ।

विदायी२—संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+यी (ई) प्रत्य०] दे० 'विदाई' ।

विदार—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध । समर । २ दे० 'विदारण' । ३ प्लावन । पानी का ऊपर से बहना । जलोच्छ्वास (को०) ।

विदारक१—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वृक्ष या पर्वत आदि जो जल के बीच मे हो । २. छोटी नदियो के तल मे बनाया हुआ गड्ढा, जिसमे नदी के सूखने पर भी पानी बचा रहता है । ३. नौसादर ।

विदारक२—वि० विदारण करनेवाला । फाड डालनेवाला ।

विदारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीच मे से अलग करके दो या अधिक टुकडे करना । फाडना । २. मार डालना । हत्या करना । ३ युद्ध । समर । लडाई । ४ कनेर । ५ खपरिया । ६. नौसादर । ७. जैनो के अनुसार दूसरो के पापो या दोपो की घोषणा करना । ८ पेड पौधे आदि काटकर साफ करना (को०) । ९. खोलना । जैसे, मुख विदारण (को०) । १० निवारण । छोड देना । रद्द करना (को०) । ११ रौंदना (को०) । १२. कष्ट देना । तकलीफ पहुँचाना । १३ दे० 'विदारक'—१ ।

विदारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लडाई । सग्राम [को०] ।

विदारना—क्रि० स० [हिं० विदरना] फाडना । उ०—(क) जनु उडगन विधु मिलन को चले तम विदारि करि बाट ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) निज जाँघन पर ताहि पछार्‍यो । नखन साथ तब उदर विदार्‍यो ।—केशव (शब्द०) ।

विदारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालपर्णी । विदारी [को०] ।

विदारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण मे रहती है । २ गंभारी वृक्ष । ३ विदारीकद । ४ शालपर्णी । ५ कडवी तूँबी । ६ विदारीकद के समान गोल और कडी जंघामूल की सूजन या पिटिका ।—माधव०, पृ० १८७ ।

विदारिगधा—संज्ञा स्त्री० [सं० विदारिगन्धा] शालपर्णी ।

विदारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काश्मीरी । गभारी ।

विदारित—वि० [सं०] विदीर्ण किया हुआ । फाडा हुआ ।

विदारी१—वि० [सं० विदारिन्] फाडनेवाला । विदारण करनेवाला ।

विदारी२—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शालपर्णी । २ भुइँ कुम्हडा । ३. भावप्रकाश के अनुसार अठारह प्रकार के कंठरोगो मे से एक प्रकार का कठरोग ।

विशेष—यह रोग पित्त के प्रकुपित होने से होता है । इसमे गले और मुँह पर लाली आ जाती है, जलन होती है और बदबूदार मास के टुकडे कट कटकर गिरने लगते है । कहते है, जिस करवट कोई अधिक सोता है—उसी ओर यह रोग होता है ।

४ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे बगल मे फुसी निकलता है । ५. कान का एक रोग । ६ वाराहीकद । ७ क्षीर काकोली । ८ वाग्भट्ट के अनुसार मेढासीगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार, अनतमूल, बृहती आदि ओषधियो का एक गण ।

विदारीकद—संज्ञा पुं० [सं० विदारीकन्द] भुइँकुम्हडा ।

विदारीगधा—संज्ञा स्त्री० [सं० विदारीगन्धा] १ शालपर्णी । २ सुश्रुत के अनुसार शालपर्णी, भुइँकुम्हडा, गोखरू, शतमूली, अनतमूल, जीवती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि ओषधियो का एक गण ।

विशेष—इस गण की सब ओषधियाँ वायु तथा पित्त की नाशक, और शोथ, गुल्म, ऊर्ध्वश्वास तथा खासी आदि रोगो मे हितकर मानी जाती हैं ।

विदारीगधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विदारीगन्धिका] दे० 'विदारीगधा' [को०] ।

विदारु—संज्ञा पुं० [सं०] कृकलास । क्रकचपाद । गिरगिट । गृहगोधा ।

विदाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाली जलन । २. हाथ पैर मे किसी कारण से होनेवाली जलन । ३ आँतो मे अम्ल बनने की क्रिया (को०) ।

विदाहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विदाह उत्पन्न करता हो । २ दे० 'विदाह' ।

विदाही—संज्ञा पुं० [सं० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो । दाह उत्पन्न करनेवाला । तीक्ष्ण । चरपरा उ०—विदाही, अर्थात् जो चीज खाने से छाती मे जलन होती है, और जितने प्रकार के रूखे अन्न है, जैसे बाजरा आदि, इनको न खाय ।

विदिक्१—संज्ञा स्त्री० [सं० विदिश्] दिक्कोण । विदिश् [को०] ।

विदिक२—वि० भिन्न दिशा मे जानेवाला [को०] ।

विदिक्चग—संज्ञा पुं० [सं० विदिक्चङ्ग] एक प्रकार का पक्षी जो पीला होता है [को०] ।

विदित१—वि० [सं०] १. जाना हुआ । अवगत । ज्ञात । सूचित । २. विश्रुत । विख्यात (को०) । ३. प्रतिज्ञात । जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो । इकरार किया हुआ (को०) ।

विदित२—संज्ञा पुं० १ कवि । विद्वान् । विद्याव्यसनी । २ सूचना । परिज्ञान (को०) । ३. प्रसिद्धि । ख्याति (को०) । ४. अवाप्ति । लाभ (को०) ।

विदिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनो की एक देवी ।

विदितात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विदितात्मन्] १ प्रसिद्ध या ख्यात व्यक्ति । २ आत्मज्ञानी पुरुष [को०] ।

विदिथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित । विद्वान् । २ योगमार्गी । योगी । दे० 'विदथ' ।

विदिश्—संज्ञा स्त्री० [सं० विदिश्] दे० 'विदिक्' । उ०— धायो धर गर शैल विदिश दिशि चक्रहूँ चाहि लयो ।—सूर (शब्द०) ।

विदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम । २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम । ३ दे० 'विदिश्' ।

विदिश—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओ के बीच का कोना । जैसे,— अग्नि या ईशान आदि ।

विदीधिति—वि० [सं०] किरणहीन । निष्प्रभ [को०] ।

विदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] दीपक । दीआ ।

विदीपित—वि० [सं०] १ प्रज्वलित । २ प्रकाशित । दीपित । ३ धूपित । (को०) ।

विदीप्त—वि० [सं०] प्रदीप्त । प्रभावान् । चमकीला [को०] ।

विदीर्ण—वि० [सं०] १ बीच से फाडा या विदारण किया हुआ । उ०—हुआ विदीर्ण जहाँ तहाँ श्वेत आवरण जीर्ण । व्योम शीर्ण कंचुक धरे विषधर सा विस्तीर्ण ।—साकेत, पृ० २७८ । २ टूटा हुआ । भग्न । ३. मार डाला हुआ । निहत । ४ फैला या खोला हुआ (को०) ।

यौ०—विदीर्णमुख = जिसका मुँह खुला हो । विदीर्णहृदय = छिन्नहृदय । भग्नहृदय ।

विदु—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी के मस्तक के बीच का भाग । २. घोडे के कान के नीचे का भाग । ३ दरियाई घोडा । जलहस्ती (को०) ।

विदुत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सब बातें जानता हो । २. विष्णु का एक नाम

विदुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जानता हो । जानकर । वेत्ता । ज्ञाता । २ पंडित । ज्ञानी । ३ कौरवो के सुप्रसिद्ध मंत्री ।

विशेष—यह राजनीति, धर्मनीति और अर्थनीति मे बहुत निपुण थे और धर्म के अवतार माने जाते है । महाभारत मे कथा है कि जब सत्यवती ने अपनी पुत्रवधू अंबिका को दूसरी बार कृष्णद्वैपायन के साथ नियोग करने की आज्ञा दी, तब उसने कृष्णद्वैपायन की आकृति आदि से भयभीत होकर एक सुंदरी दासी को अपने कपडे आदि पहनाकर उनके पास भेज दिया, जिससे विदुर का जन्म हुआ । ये बहुत बडे पंडित, बुद्धिमान्, शात और दूरदर्शी थे, और पांडवो के बहुत बड़े पक्षपाती थे । पहले ये राजा पांडु के मंत्री थे, और इसी लिये पीछे से अनेक अवसरो पर इन्होने पांडवो की भारी भारी विपत्तियो मे रक्षा की थी । जतुगृह के जलने के समय भी इन्ही के परामर्श से पांडवो की जान बची थी । ये धृतराष्ट्र के छोटे भाई और मंत्री भी थे । जिस समय दुर्योधन के बहुत कहने पर धृतराष्ट्र ने इनसे जूए के संबंध मे संमति माँगी थी उस समय इन्होने उन्हे बहुत रोका और समझाया था । पांडवो के वन जाने पर ये दुर्योधन के पास रहते थे । महाभारत का युद्ध आरंभ होने से पहले इन्होने धृतराष्ट्र को रात भर अनेक प्रकार के अच्छे अच्छे उपदेश देकर युद्ध रुकवाना चाहा था, पर इसमे भी इन्हे सफलता नही हुई । युद्ध मे इन्होने पांडवो का पक्ष ग्रहण किया था । महाभारत के युद्ध के उपरात जब पांडवो का राज्य हुआ, तब भी ये बहुत दिनो तक मंत्री के पद पर थे । पर पीछे से वन मे चले गए । वहाँ राजा युधिष्ठिर से एक बार इनकी भेंट हुई थी । वही बहुत दिनो तक घोर तपस्या करने के उपरात इनका परलोकवास हुआ था । नीति की प्रसिद्ध पुस्तक 'विदुरनीति' या 'विदुर प्रजागर' इन्ही की रचित मानी जाती है (जो महाभारत के पाँचवें पर्व मे ३३ वें अध्याय से ४०वें तक है) ।

विदुर²—वि० चतुर । जानकार । कुशल ।

विदुल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेंत । २. जलबेंत । ३. बोल या गंधरस नामक गंधद्रव्य । ४ अमलबेत ।

विदुल(पु)²—वि० [प्रा० विदुर] धीर । उ०—झर करत विदुल भर लोह भार ।—पृ० रा० ५६ । ८७ ।

विदुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का थूहर जिसे सातला कहते हैं । २ विट् खदिर । ३ महाभारत मे वर्णित एक स्त्री जिसके पुत्र का नाम संजय था । युद्ध मे पराजित होकर घर मे युद्धविरत पडे हुए पुत्र का उद्बोधन कर इसने उसे युद्ध मे भेजा था (को०) ।

विदुष—संज्ञा पुं० [सं० विद्वस्] [स्त्री० विदुषी] विद्वान् । पंडित । उ०—(क) निज निज देह का सप्रेम जोग छेम मई मुदित असीस विप्र विदुषनि दई है ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मन मे सुख पायो ।—सूर (शब्द०) ।

विदुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्या पढी हुई स्त्री । विद्वान् स्त्री । उ०—(क) जैसे लडके ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवति, विदुषी, अपने अनुकूल प्रिय, सदृश स्त्रियो के साथ विवाह करते है ।—दयानंद (शब्द०) । (ख) जहा पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करनेवाली हो, वहाँ भेज दें ।—दयानंद (शब्द०) ।

विदुष्कृत—वि० [सं०] निष्पाप [को०] ।

विदू—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विदु' [को०] ।

विदून—वि० [सं०] पीड़ित [को०] ।

विदूर¹—वि० [सं०] जो बहुत दूर हो ।

विदूर²—संज्ञा पुं० १. बहुत दूर का प्रदेश । २ एक देश का नाम । ३ एक पर्वत का नाम । कहते है, वैदूर्यमणि इसी पर्वत मे मिलती है । ४ दे० 'वैदूर्य' । (मणि) । उ०—वेदी लसत विदूर फटिकमय सलिल तीर लस पाँती ।—श्यामा०, पृ० ११८ । ५. कुरु का एक पुत्र (को०) ।

विदूरग—वि॰ [सं॰] दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। जो दूर तक फैला हुआ हो। [को॰]।

विदूरज—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विदूर पर्वत से उत्पन्न, वैदूर्यमणि।

विदूरजात—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वैदूर्यमणि। विदूरज [को॰]।

विदूरत्व—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विदूर होने का भाव। बहुत अधिक दूर होना।

विदूरथ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ कुरुक्षेत्र का एक नाम। २ एक ऋषि का नाम (को॰)। ३ एक वृष्णिवंशीय राजा जिनके पुत्र का नाम शूर था (को॰)। ४. पुराणानुसार एकरा जा का नाम। ५ कुरु का एक पुत्र, इसकी माता का नाम सुभागी था (को॰)।

विदूरभूधर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'विदूराद्रि' [को॰]।

विदूरभूमि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] विदूर नामक देश। कहते हैं, वैदूर्यमणि इसी देश मे होती है।

विदूररत्न—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वैदूर्यमणि जो अनुश्रुति के अनुसार विदूर पर्वत पर प्राप्त होती है [को॰]।

विदूरविगत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अत्यंज।

विदूरित—वि॰ [सं॰] [वि॰ स्त्री॰ विदूरिता] हटाया हुआ या दूर किया हुआ। उ॰—करुण वरुणालया अवंध विदूरिता।—बी॰ श॰ महा॰, पृ॰ २१६।

विदूराद्रि—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विदूर पर्वत [को॰]।

घिदूरोद्भावित—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विदूर पर्वत पर उत्पन्न होनेवाली, वैदूर्यमणि [को॰]।

विदूष(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विदूषक] भाँड। विदूषक। उ॰—नाचहिं कहुँ विदूष करि जाला। कूजहिं काँख बजावहिं ताला।—सबल (शब्द॰)।

विदूषक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वह जो अधिक विषयी हो। कामुक। २ वह जो तरह तरह की नकलें आदि करके, वेश भूषा बनाकर अथवा बातचीत करके दूसरो को हँसाता हो। मसखरा।

विशेष—प्राचीन काल मे राजाओ और बडे आदमियो के मनोविनोद के लिये उनके दरबार मे इस प्रकार के मसखरे रहा करते थे जो अनेक प्रकार के कौतुक करके, बेवकूफ बनकर अथवा बातें बनाकर लोगो को हँसाया करते थे। प्राचीन नाटको आदि मे भी इन्हें यथेष्ट स्थान मिला है, क्योंकि इनसे सामाजिको का मनोरंजन होता है। साहित्यदर्पण के अनुसार विदूषक प्राय अपने कौशल से दो आदमियो मे झगडा भी कराता है, और अपना पेट भरना या स्वार्थ सिद्ध करना खूब जानता है। यह शृंगार रस मे सहायक होता है और मानिनी नायिका को मनाने मे बहुत कुशल होता है।

३ चार प्रकार के नायको मे से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि मे सहायक होता है। ४. वह जो दूसरो की निंदा करता हो। खल। ५. भाँड।

विदूषक[2]—वि॰ १. भ्रष्ट, दूषित या गंदा करनेवाला। २ परनिंदक। बदनाम करनेवाला। ३ हँसी करनेवाला। मसखरा [को॰]।

विदूषण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ किसी पर विशेष रूप से दोष लगाने की क्रिया। ऐब लगाना। परिवाद। २ मलिन या दूषित करना। दुर्वचन। झिडकी (को॰)।

विदूषना[1]—क्रि॰ स॰ [सं॰ विदूषण या हिं॰ वि॰+दुखाना] १ सताना। दुःख देना। उ॰—सुनु सठ काल ग्रसित यह देही। जनि तेहि लागि विदूषहि केही।—तुलसी (शब्द॰)। २ दोष लगाना। दोषी ठहराना।

विदूषना[2]—क्रि॰ अ॰ दुखी होना। पीडा का अनुभव करना। उ॰—तापन सो तपती बिर मे बिन काल वृथा बन माहिं विदूषती।—मन्नालाल (शब्द॰)।

विदूषा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पाप। अनाचार [को॰]।

विदूषित—वि॰ [सं॰] १ अपमानित। तिरस्कृत। लांछित। २. दोषपूर्ण बनाया हुआ (को॰)।

विदृक—वि॰ [सं॰] दे॰ 'विदृश'।

विदृति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ संधि। सीवन। २ खोपडी का जोड। उ॰—यह शरीर ही द्वारकापुरी है। नौ इंद्रिय द्वार और दसवाँ विदृति द्वार ये दस फाटक हैं।—पोद्दार अभि॰ ग्रं॰, पृ॰ ६४०।

विदृश वि॰ [सं॰] जिसे दिखाई न पडे। अंधा।

विदेव—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ दे॰ 'विदेह'।

विदेय—वि॰ [सं॰] जो दिया गया हो। देय। देने लायक [को॰]।

विदेव[1]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ राक्षस। २ यज्ञ। ३. अक्षक्रीडा। पासे का खेल।

विदेव[2]—वि॰ १ देवरहित। देवताविहीन। देवताओ से विरहित। जैसे, विदेव मदिर, विदेव यज्ञ। २. देवद्रोही। देवो का विद्वेषी को॰]।

विदेवन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अक्षक्रीडा। पासा खेलना [को॰]।

विदेश—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अपने देश को छोडकर दूसरा देश। परदेश। परराष्ट्र।

विदेशग—वि॰ [सं॰] परदेश जानेवाला। विदेश जानेवाला [को॰]।

यौ॰—विदेशग। विदेशगमन = परदेश की यात्रा। विदेशगामी = विदेश जानेवाला। विदेशज = जो विदेश मे उत्पन्न हो। विदेशवास = विदेश मे रहना। विदेशवासी = प्रवासी। विदेश मे रहनेवाला। विदेशस्थ = (१) परदेश मे रहनेवाला। (२) परदेश मे होनेवाला।

विदेशप्रवृत्तिज्ञान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार परराष्ट्र प्रवृत्तियो का ज्ञान और अनुमान। विदेशी मुआमलो की जानकारी।

विदेशी—वि॰ [सं॰ विदेशिन्] १ विदेश सबधी। बाहरी। २ परदेशी। दूसरे देश का निवासी।

विदेशीय—वि॰ [सं॰] दे॰ 'विदेशी'।

विदेस†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विदेश] दे॰ 'विदेश'। उ॰—अब तू विदेस का मनमाना मजा लूट।—प्रेमघन॰, भा॰ २, पृ॰ १७।

विदेह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शरीर से रहित हो। २ वह जिसकी उत्पत्ति माता पिता से न हो। जैसे,—देवता आदि। ३ ज्ञानी एवं देहवाद को अधिक महत्व न देनेवाले राजा जनक का एक नाम। विशेष दे० 'जनक'। ४ राजा निमि का एक नाम। विशेष दे० 'निमि'। ५ प्राचीन मिथिला का एक नाम। ६ इस देश के निवासी।

विदेह[2]—वि० [सं०] ज्ञानशून्य। संज्ञारहित बेसुध। अचेत। उ०—(क) मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ विदेह विदेहु विसेखी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देखि भरत कर सोच सनेहू। भा निपाद तेहि समय विदेहू।—तुलसी (शब्द०)। (ग) कौन ले आई कौने चरन चलाई, कौने बहियाँ गही मां घों केही री। सूरदास प्रभु देते सुधि रही नहिं, अति विदेह भई अब मैं बूझनि तोहो री।—सूर (शब्द०)। २ मृत (को०)। ३ विरागी। उदासीन (को०)। ४ शरीररहित। कामशून्य।

विदेहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २ एक वर्ष का नाम (को०)।

विदेहकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] (राजा जनक की पुत्री) जानकी। सीता। उ०—कहौ धौं तात वयो जीति सकल नृप वरी है विदेहकुमारी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहकूट—संज्ञा पुं० [सं०] जैन पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विदेहकैवल्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह निर्वाण या मोक्ष जो जीवन्मुक्त को मरने पर प्राप्त होता है।

विदेहजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता (को०)।

विदेहत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदेह होने का भाव। २ शरीर का नाश। मृत्यु। मौत।

यौ० —विदेहत्वगत, विदेहत्वप्राप्त = (१) मृत। (२) मुक्त।

विदेहपुर—संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक की राजधानी, जनकपुर। उ०—विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौ परी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विदेहकैवल्य'। उ०—जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति का भेद प्रगट है, परंतु तुमको मालूम नहीं हो सकता है।—कबीर मं०, पृ० १७६।

विदेहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथिला नगरी और प्रदेश का एक नाम।

विदेही—संज्ञा पुं० [सं० विदेहिन्] ब्रह्म। उ०—कुल मर्यादा खोइ कै खोजिनि पदनिर्वान। अंकुर बीज नसाइ कै भए विदेही थान।—कबीर (शब्द०)।

विदोष—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो। दोषरहित। बेऐब।

विदोह, विदोहन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी से अत्यधिक लाभ उठाना या अधिक दूहना। शोषण (को०)।

विद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जानता हो। जानकार। २. पंडित। विद्वान्। ३ बुध ग्रह। ४. तिल का पौधा।

विद्[2]—वि० ज्ञाता। जानकार। विद्वान्। समासांत में प्रयुक्त। जैसे,—वेदविद्, तद्विद।

विद्[3]—संज्ञा स्त्री० ज्ञान। समझ। जानकारी (को०)।

विद्ध—वि० [सं०] १ बीच में से छेद किया हुआ। छिद्रित। विदीर्ण। २ फेंका हुआ। क्षिप्त। ३ जिसमें बाधा पड़ी हो। बाधित। ४ समान। तुल्य। बराबर। ५ जिसको चोट लगी हो। ताडित। ६ टेढ़ा। ७ मिला हुआ। आबद्ध।

यौ०—विद्धकर्ण १ जिसके कान छिदे हों। २ विद्धकर्णी। विद्धकर्णा, विद्धकर्णिका = पाठा। विद्धकर्णी।

विद्ध[2]—संज्ञा पुं० (१) घाव। जख्म। (२) पहाड़मूल। पाठा (को०)।

विद्ध(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा। विधि। उ०—सर्पपक जपी सुकथ, माधव माननि मभझ। जो चिन हित्त बिलविधौ। (सो) हरिहर विद्ध न सुभझ।—पृ० रा०, २।४२२।

विद्धक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जिससे मिट्टी खोदी जाती थी।

विद्धकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंबष्ठा। पाठा (को०)।

विद्धव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] वह सूजन जो शरीर के किसी अंग में काँटे की नोक के चुभने या टूटकर रह जाने से होती है।

विद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें शरीर में बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ निकलती हैं।

विद्धायुध—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष का एक प्रकार। विशेष लंबाई का धनुष (को०)।

विद्धि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आघात करना। हनन। मारना। २ बेधना या छेदना।

विद्धि (पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० विधि = काम करने का तरीका] विधि। जुगत। उ०—आहार पान घनसार पूर। बठे सु आइ एकत सूर। सब कहिग विद्धि कनवज दिगार। सुद्धरं वत्त सो काहु पान।—पृ० रा०, ६१।६२८।

विद्य—संज्ञा पुं० [सं०] लाभ। प्राप्ति (को०)।

विद्यमान—वि० [सं०] १ वर्तमान। उपस्थित। मौजूद। उ०—सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु। विद्यमान रन पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापु।—संतवाणी०, पृ० ७३। २ तथ्यपूर्ण। तथ्यपूर्ण (को०)।

विद्यमानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्यमानत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्यांकुर—संज्ञा पुं० [सं० विद्या + अङ्कुर] आरंभिक विद्या। बालकों को पढ़ाई जानेवाली ज्ञान की प्रथम पुस्तक। उ०—वहाँ राजा शिवप्रसाद सदृश विलक्षण विद्वान् के बनाए भूगोल हस्तामलक, इतिहास तिमिर नाशक, गुटका आदि विद्यांकुर ने पढ़ाये जाते थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१७।

विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा उपार्जित या प्राप्त किया जाता है। वह जानकारी जो सीखकर हासिल की जाती है। किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान। इल्म। जैसे,—(क) विद्या पढ़कर मनुष्य पंडित होता है। (ख) आजकल पाठशालाओं में अनेक प्रकार की विद्याएँ पढ़ाई जाती हैं।

विशेष—हमारे यहाँ विद्या दो प्रकार की मानी गई है—परा और अपरा। जिस विद्या के द्वारा ब्रह्मज्ञान होता है, वह परा विद्या और इसके अतिरिक्त जो अन्य लौकिक या पदार्थ विद्याएँ हैं, वे सब अपरा विद्या कहलाती हैं।

२ वह ज्ञान जिसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि होती है। ३ वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

विशेष—हमारे यहाँ इनकी संख्या १८ बतलाई गई है। यथा—चारो वेद, छओ अंग, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र।

४ दुर्गा। ५ देवी का मंत्र। ६ गनियारी। ७ सीता की एक सखी का नाम। ८. तंत्र में 'ई' अक्षर का वाचक शब्द (को०)। ९ छोटी घंटी (को०)। १० ऐंद्रजालिक कौशल (को०)। ११ सिद्ध गुटिका। ऐंद्रजालिक गुटिका (को०)।

विशेष—कहते है, इसे मुँह मे रखने से व्यक्ति उड़ता हुआ कहीं भी गमन कर सकता था।

१२ आर्या छंद का पाँचवाँ भेद, जिसमे चंद्रशेखर के मत से २३ गुरु और ११ लघु मात्राएँ होती है।

विद्याकर—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या का आकर। विद्वान् व्यक्ति। वह जिससे ज्ञान प्राप्त हो। अध्यापक। शिक्षक [को०]।

विद्याकोशगृह—संज्ञा पुं० [सं०] पुस्तकालय। ग्रंथागार [को०]।

विद्याकोशसमाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] पुस्तकालय। लाइब्रेरी [को०]।

विद्यागम—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानप्राप्ति। विद्याप्राप्ति [को०]।

विद्यागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुरु जिससे विद्या पढ़ी हो। पवित्र ज्ञान का देनेवाला। पढ़ानेवाला गुरु। शिक्षक।

विद्यागृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। विद्यालय। पाठशाला।

विद्याचंचु—वि० [सं० विद्याचञ्चु] विद्या द्वारा ख्यात। प्रसिद्ध विद्वान् [को०]।

विद्याचण—वि० [सं०] दे० 'विद्याचंचु'।

विद्याजंभक—वि० [सं० विद्याजम्भक] भाँति भाँति की ऐंद्रजालिक क्रिया अथवा जादू के खेल दिखानेवाला [को०]।

विद्यातीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

विद्यात्व—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या का भाव।

विद्यादल—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र का पेड़।

विद्यादाता—संज्ञा पुं० [सं० विद्यादातृ] विद्या पढ़ानेवाला गुरु, जो शास्त्रो के अनुसार पिता माना जाता है।

विद्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या पढ़ाना। शिक्षा देना। २ पुस्तक का दान (को०)।

विद्यादायाद—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या का दायाद। किसी विद्या का उत्तराधिकारी [को०]।

विद्यादेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती। २ जैनियों की सोलह जिन देवियों में से एक देवी का नाम।

विद्याधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या रूपी धन। २ वह धन जो अपनी विद्या द्वारा उपार्जित किया जाय। ऐसे धन मे किसी का हिस्सा नहीं लग सकता।

विद्याधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की देवयोनि जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. सोलह प्रकार के रतिबंधों मे से एक प्रकार का रतिबंध। ३. वैद्यक मे एक प्रकार का यंत्र जिससे पारे का संस्कार करते हैं।

विशेष—इसमे एक थाली में पारा रखकर उसपर दूसरी थाली रखकर मिट्टी से बीच का जोड़ बंद कर देते हैं, और ऊपर की थाली मे पानी भरकर दोनो मिली हुई थालियों को पाँच पहर तक आग पर रखते हैं। इसके उपरांत ठंढे होने पर पारा निकाल लेते हैं।

४ एक प्रकार का अस्त्र। उ०—(क) वर विद्याधर अस्त्र नाम नंदन जो ऐसो। मोहन स्वापन सयन सौम्य कर्पन पुनि है सो।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) महा अस्त्र विद्याधर लीजै पुनि नंदन जेहि नाऊँ।—रघुराज (शब्द०)। ५ विद्वान् व्यक्ति। पंडित। उ०—कविदल विद्याधर सकल कलाधर राज राज वर वेश बने।—केशव (शब्द०)।

विद्याधर रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक, ताँबे, सोंठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि की सहायता से बनाया जाता है और ज्वर मे बहुत उपयोगी माना जाता है।

विद्याधरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक की स्त्री। उ०—विद्याधरी किन्नरी नामा त्यों वानरी अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

विद्याधरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० विद्याधरेन्द्र] जाबुवान का एक नाम।

विद्याधरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक शिवलिंग का नाम।

विद्याधार—संज्ञा पुं० [सं०] पंडित। विद्वान्।

विद्याधारी—संज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार मगण होते हैं। उ०—मैं चारो बंधू गाऊँ भक्ती को पाऊँ। लाभै सारे यामे अंतै ना जाऊँ। जानै भेदा याको सत्संगा को धारी। वोही साँचो भक्ता साँचा विद्याधारी।—जगन्नाथ (शब्द०)।

विद्याधिदेवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या पढ़ानेवाला। गुरु। शिक्षक। २ विद्वान्। पंडित।

विद्याधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बहुत बड़ा पंडित हो।

विद्याध्र—संज्ञा पुं० [सं०] विद्याधर नाम की देवयोनि।

विद्यानुपालन—संज्ञा पुं० [सं०] अध्ययन [को०]।

विद्यानुपाली—संज्ञा पुं० [सं० विद्यानुपालिन्] अध्येता [को०]।
विद्यानुसेवन—संज्ञा पुं० [सं०] विद्याध्ययन [को०]।
विद्यानुसेवी—संज्ञा पुं० [सं० विद्यानुसेविन्] अध्येता [को०]।
विद्यापति—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रमुख पंडित या विद्वान्। २ मैथिली भाषा के एक महान् गीतकार कवि (को०)।
विद्यापीठ—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा का केंद्र। विद्यालय [को०]।
विद्याबल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जादू की शक्ति। २ विद्या की शक्ति। विद्वत्ता का बल (को०)।
विद्याभाक्—वि० [सं० विद्याभाज्] विद्वान्।
विद्याभ्यसन, विद्याभ्यास संज्ञा पुं० [सं०] विद्याध्ययन।
विद्यामंडलक—संज्ञा पुं० [सं० विद्यामण्डलक] पुस्तकालय [को०]।
विद्यामत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विद्यावत्] दे० 'विद्वान्'। उ०—व्यसनी व्यावहारिक विद्यामत वादी व्युत्पति वंदीजन वाहक।—वर्ण०, पृ० २०।
विद्यामंदिर—संज्ञा पुं० [सं० विद्यामन्दिर] विद्यालय।
विद्यामणि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्याधन'।
विद्यामय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो पूर्ण पंडित हो।
विद्यामहेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।
विद्यामार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाय। श्रेय मार्ग (कठवल्ली उपनिषद्)।
विद्यारंभ—संज्ञा पुं० [सं० विद्यारम्भ] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।
विद्याराज—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक मूर्ति का नाम।
विद्याराशि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।
विद्यार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्या का अर्जन। विद्या की प्राप्ति। २ विद्या द्वारा होनेवाली प्राप्ति [को०]।
विद्यार्थ—वि० [सं०] विद्याप्राप्ति का इच्छुक [को०]।
विद्यार्थी—संज्ञा पुं० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढ़ता हो। पढ़नेवाला छात्र। शिष्य।
विद्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।
विद्यालाभ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यार्जन' [को०]।
विद्यावंश—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विद्या के शिक्षकों की क्रमागत परंपरा सूचनिका [को०]।
विद्यावधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती [को०]।
विद्यावान—संज्ञा पुं० [सं० विद्यावान्] पंडित। विद्वान्। उ०—जीवत जग मे काहि पिछानी। विद्यावान होइ जो प्रानी।—विश्राम (शब्द०)।
विद्यावार्तिक—वि० [सं०] तरह तरह के जादू के खेल करनेवाला [को०]।
विद्याविक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] धन लेकर शिक्षा देना [को०]।
विद्याविद्—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।
विद्याविरुद्ध—वि० [सं०] विद्या के विपरीत या विरुद्ध।
विद्याविशिष्ट—वि० [सं०] विद्याज्ञान या विद्वत्ता के लिये ख्यात [को०]।
विद्याविहीन—वि० [सं०] विद्याहीन। मूर्ख। अपढ़ [को०]।
विद्यावृद्ध—वि० [सं०] विद्या या ज्ञान में अग्रसर [को०]।
विद्यावेश्म—संज्ञा पुं० [सं० विद्यावेश्मन्] पाठशाला [को०]।
विद्याव्यवसाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'विद्याव्यसन'। २ दे० 'विद्याविक्रय'।
विद्याव्यसन—संज्ञा पुं० [सं० विद्या+व्यसन] विद्या या ज्ञानप्राप्ति के लिये उत्कट अभिलाषा। विद्याप्रेम। अध्ययन। उ०—क्षत्रियों के पास सैन्य बल था, राजनैतिक प्रभुता थी, विद्या-व्यसन भी था।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ९७।
विद्याव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्रत जो गुरु के घर रहकर विद्या पढ़ने के उद्देश्य से धारण किया जाता है।
विद्यासागर—वि० [सं०] विद्या का समुद्र। अगाध विद्वान् [को०]।
विद्याव्रतस्नातक—संज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के पास रहकर वेद और विद्याव्रत दोनों समाप्त करके अपने घर लौटे।
विद्यास्नात—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यास्नातक' [को०]।
विद्यास्नातक—संज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के घर रहकर वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौटा हो।
विद्यु—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।
विद्युच्चालक—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्+चालक] वह पदार्थ जिसमें विद्युत् की धारा प्रवाहित हो। जैसे, ताँबा आदि।
विद्युच्छिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है। २ एक राक्षसी [को०]।
विद्युज्ज्वाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक नाग का नाम। २ बिजली की कौंध [को०]।
विद्युज्ज्वाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कलिकारी या कलियारी नामक वृक्ष। २ बिजली की कौंध। उ०—इसपर चमक रही है रक्तिम, विद्युज्ज्वाला बारबार।—अपरा, पृ० ३५४।
विद्युज्जिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार रावण के पक्ष के एक राक्षस का नाम जो शूर्पणखा का पति था। २ एक यक्ष का नाम (को०)। ३ एक राक्षस का नाम।
विद्युज्जिह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
विद्युता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत्। बिजली। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।
विद्युताक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
विद्युत्[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संध्या। २ बिजली। ३ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की उल्का। ४ एक प्रकार की वीणा। ५ वज्र (को०)। ६ उषा (को०)। ७ प्रजापति बाहुपुत्र की चार कन्याएँ (को०)। ८ अतिजगती छंद का एक भेद या प्रकार (को०)।
विद्युत्[2]—संज्ञा पुं० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ समाधि का एक प्रकार (को०)। ३ एक असुर का नाम (को०)।
विद्युत्[3]—वि० १ जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो। बहुत चमकीला। २ जिसमें किसी प्रकार की दीप्ति या प्रभा न हो।

विद्युत्कंप—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्कम्प] बिजली की कौंध या चमक (को०)।

विद्युत्केश—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार हेति नामक राक्षस का पुत्र, जो काल की कन्या भया के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसी विद्युत्केश और पौलोमी से राक्षसों के वंश की वृद्धि हुई थी।

विद्युत्केशी—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्केशिन्] दे० 'विद्युत्केश' (को०)।

विद्युत्ता—संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत् का भाव या धर्म। बिजलीपन।

विद्युत्पताक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय के समय के सात मेघों में से एक मेघ का नाम।

विद्युत्पर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

विद्युत्पात—संज्ञा पुं० [सं०] बिजली का गिरना। वज्रपात।

विद्युत्पुंज—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्पुञ्ज] एक विद्याधर (को०)।

विद्युत्प्रपतन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्युत्पात' (को०)।

विद्युत्प्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम। २ वह जो विद्युत् के समान दीप्तिमान् हो। ३ एक दैत्य का नाम।

विद्युत्प्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दैत्यों के राजा बलि की पोती का नाम। २ अप्सराओं का एक गण। ३. बिजली का प्रकाश या दीप्ति।

विद्युत्प्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] काँसा नामक धातु या उसका कोई बरतन, जिसकी ओर बिजली जल्दी खिंचती है।

विद्युत्य—वि० [सं०] विद्युत् या बिजली से उत्पन्न।

विद्युत्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें विद्युत् हो। जैसे, बादल। (को०)। २ मेघ। बादल।

विद्युत्वान्¹—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्वत्] १. एक पर्वत। २. बादल। मेघ (को०)।

विद्युत्वान्²—वि० १ बिजली के समान चमकीला। २. बिजली के समान द्योतक (को०)।

विद्युद्क्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

विद्युदुन्मेष—संज्ञा पुं० [सं०] बिजली की चमक। विद्युत्कंप (को०)।

विद्युद्गौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति की एक मूर्ति का नाम।

विद्युद्दाम—पुं० [सं०विद्युद्दामन्] वक्रगति युक्त बिजली की कौंध या चमक। विद्युल्लता। विद्युल्लेखा। उ०—दुहरा विद्युद्दाम चढा द्रुत, इंद्रधनुष की कर टंकार।—पल्लव, पृ० ६२।

विद्युद्द्योत—संज्ञा पुं० [सं०] बिजली की चमक या कौंध (को०)।

विद्युद्ध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक असुर का नाम। २. दे० 'विद्युत्पताक'।

विद्युद्वर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा (को०)।

विद्युद्वल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली की कौंधा। विद्युल्लता (को०)।

विद्युन्मापक—संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्+मापक] एक विशेष प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।

विद्युन्माल—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक बंदर का नाम। २ दे० 'विद्युन्माला'।

विद्युन्माला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली का समूह या सिलसिला। २. एक यक्षिणी का नाम। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु वर्ण (म म ग ग) होते हैं और चार वर्णों पर यति होती है। उ०—मैं मागो गोपी सी दाना। भागो वाली नाहीं काना। कारी सारी ताही माला। भासी मोहीं विद्युन्माला।—जगन्नाथ (शब्द०)।

विद्युन्माली—संज्ञा पुं० [सं० विद्युन्मालिन्] १. पुराणानुसार एक राक्षस का नाम। उ०—विद्युन्माली रजनिचर, हन्यो सुषेणहिं बान। मारि सुषेणहुँ शृंग इक, ताको वाकर यान।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—इसने शिव की भक्ति करके सोने का एक विमान प्राप्त किया था और उसी विमान पर चढ़कर यह सूर्य के पीछे पीछे घूमा करता था। इससे रात के समय भी उस विमान में अंधकार नहीं होने पाता था। इससे घबराकर सूर्य ने अपने तेज से वह विमान गलाकर जमीन पर गिरा दिया था। रामायण में कहा है कि यम के पुत्र सुषेण के साथ इसका युद्ध हुआ था।

२. महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम। ३ एक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, एक मगण और अंत में दो गुरु होते हैं। ४. एक प्रकार के देवता (को०)। ५ एक विद्याधर का नाम (को०)।

विद्युन्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के उपग्रह।

विद्युल्लक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] अथर्ववेद का ५६वाँ परिशिष्ट (को०)।

विद्युल्लता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली। उ०—नीरव विद्युल्लता आज लंका पर टूटी।—साकेत, पृ० ४०८।

विद्युल्लेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। इसे शेषराज भी कहते हैं। उ०—मैं माटी खाई। झूठे ग्वाला भाई। मू बायो मा देखो। जानो विद्युल्लेखा।—जगन्नाथ (शब्द०)। २ विद्युत्। बिजली की कौंध। बिजली।

विद्युल्लोचन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि (को०)।

विद्युल्लोचना—संज्ञा पुं० [सं०] एक नागकन्या (को०)।

विद्येश—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

विद्येश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. शैव मतानुसार एक उन्नत योनि। ३. एक ऐंद्रजालिक (को०)।

विद्योत¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत्। बिजली। २ प्रभा। दीप्ति। चमक। ३ एक अप्सरा का नाम।

विद्योत²—वि० चमकीला। प्रकाशमान (को०)।

विद्योतक—वि० [सं०] द्योतित करनेवाला। दीप्त करनेवाला (को०)।

विद्योतन¹—वि० [सं० स्त्री० विद्योतिनी] १. प्रकाश करनेवाला। चमकानेवाला। २ उदाहरण के साथ निरूपण करनेवाला। व्याख्याता (को०)।

विद्योतन[2]—संज्ञा पुं० बिजली [को०]।

विद्योती—वि० [सं० विद्योतिन्] [वि० स्त्री० विद्योतिनी] द्योतित करनेवाला। व्यक्त या प्रकाशित करनेवाला [को०]।

विद्योपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] प्राप्त ज्ञान को प्रयोग मे लाना या विद्यादान करना।

विद्योपार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्यार्जन'।

विद्योपार्जित—वि० [सं०] जिसे विद्या द्वारा अर्जित किया जाय। जैसे, विद्योपार्जित धन।

विद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिद्र। छेद। २ फाड़ना। खड खड करना। छेद करना (को०)।

विद्रव[1]—वि० [सं०] १ मोटा ताजा। २ दृढ़। मजबूत। पक्का। ३ जो किसी काम के लिये अच्छी तरह तैयार हो।

विद्रव[2]—संज्ञा पुं० एक फोडा। दे० 'विद्रधि'।

विद्रधि—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] पेट के अदर का एक प्रकार का फोडा जो बहुत घातक होता है।

यौ०—विद्रधिघ्न। विद्रधिनाशन = सहिजन।

विद्रधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोडा जो प्रमेह रोग के बहुत दिनो तक रहने के कारण होता है।

विद्रधिघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] शोभाजन। सहिजन।

विद्रम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विद्रुम] दे० 'विद्रुम'। उ०—गति गयद जंघ केलिप्रभ केहरि जिमि कटि लक। हरी डसण, विद्रम अधर, मारू भृकुटि मयक —ढोला०, दू० ४५४।

विद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलायन। भागना। २ बुद्धि। अक्ल। ३ नाश। ४ भय। आतंक। घबराहट। डर। ५ युद्ध। लडाई। ६ प्रवाह। बहना। ७ पिघलना। द्रवीभूत होना। ८ निंदा। शिकायत।

विद्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलायन। भागना। २. पिघलना। गलना [को०]।

विद्रवित—वि० [सं० वि+द्रवित] १ भागा हुआ। पलायित। २. छितराया या बिखरा हुआ। ३ जो द्रवित हो चुका हो। उ०—किंतु कौन तुम, मौन ज्योति विद्रवित जलद से।—रजत०, पृ० ६७।

विद्राण—वि० [सं०] सुप्ति से जाग्रत अवस्था मे लाया हुआ। [को०]।

विद्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। क्षरण। २. पिघलना। गलना। ३ पलायन। 'विद्रव'।

विद्रावक—वि० [सं०] १ भगानेवाला। २ द्रवित करनेवाला [को०]।

विद्रावण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. भगाना। पराजित करना। २ पिघलाना। ३ गलाना। ४ उडाना। ५ फाडना। ६ वह जो नष्ट करता हो। ७ एक दानव का नाम।

विद्रावण[2]—वि० आतंकित करनेवाला। भगानेवाला। घबरा देनेवाला। जैसे—महामोह विद्रावण।

विद्राविणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौवाठोंठी।

विद्रावित—वि० [सं०] १ खदेडा या भगाया हुआ। डराया हुआ। २. फैलाया या बिखराया हुआ। तितर बितर किया हुआ। ३ पिघलाया या गलाया हुआ [को०]।

विद्रावी—संज्ञा पुं० [सं० विद्राविन्] १ भागनेवाला। २ भगानेवाला। ३ गलनेवाला। ४ फाडनेवाला।

विद्राव्य—वि० [सं०] १ जिसका विद्राव करणीय हो। भगाने के लायक। २. पिघलाने या गलाने योग्य [को०]।

विद्रुत[1]—वि० [सं०] १ भागा हुआ। २. गला हुआ। ३ पिघला हुआ। ४ आतंकित। भयभीत (को०)। ५ नष्ट (को०)।

विद्रुत[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध का एक विशेष ढग। २. उड़ान [को०]।

विद्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भागना। २ गलना। ३ पिघलना। ४ नष्ट होना।

विद्रुधि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्रधि'।

विद्रुम[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवाल। मूँगा। २ मुक्ताफल नामक वृक्ष। ३ वृक्ष का नया पत्ता। कोपल। ४ एक पहाड का नाम (को०)।

विद्रुम[2]—वि० द्रुमहीन [को०]।

विद्रुमच्छवि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

विद्रुमदंड—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ताफल या रत्नवृक्ष की शाखा [को०]।

विद्रुमफल—संज्ञा पुं० [सं०] कुंदुरु नामक सुगंधित गोंद।

विद्रुमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नलिका या नली नामक गधद्रव्य। २ मूँगा।

विद्रुमलतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विद्रुमलता' [को०]।

विद्रूप—संज्ञा पुं० [सं०] परिहास। व्यंग्य। मजाक। ठट्ठा। उ०—प्रगतिशील साहित्य के मानदंड पुस्तक मे डा० रागेय राघव का यह आक्रोश भरा विद्रूप।—हिंदी आ०, पृ० १२।

विद्रोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी के प्रति होनेवाला वह द्वेष या आचरण जिससे उसको हानि पहुँचे। २. राज्य मे होनेवाला भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। क्रांति। बलवा। बगावत।

विद्रोही—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विद्रोहिन्, [स्त्री० विद्रोहिणी] १ जो किसी के प्रति विद्रोह या द्वेष करता हो। २. राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।

विद्वज्जन—संज्ञा पुं० [सं० विद्वत्+जन] १ विद्वान् या कुशल व्यक्ति। २. सत। तपस्वी ऋषि (को०)।

विद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

यौ०—विद्वत्कल्प = जो विद्वान् न हो। कम पढ़ा लिखा। विद्वज्जन। विद्वत्तम = (१) शिव। (२) विद्वानो मे श्रेष्ठ। महान् विद्वान्। विद्वद्देश्य। विद्वद्देशीय = विद्वत्कल्प।

विद्वत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।

विद्वत्व—संज्ञा पुं० [सं० विद्वत्त्व] बहुत अधिक विद्वान होने का भाव। विद्वत्ता। पांडित्य।

विद्वद्देशीय—वि० [सं०] विद्वत्कल्प। कम शिक्षित [को०]।

विद्वान्[1]—संज्ञा पुं० [सं० विद्वस्] १ वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो। २ वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित। ३. वह जो सब कुछ जानता हो। सर्वज्ञ।

विद्वान्[2]—वि० १. ज्ञाता। जानकार। २ बुद्धिमान्। पंडित। विद्यायुक्त।
विद्विट्[1]—संज्ञा पुं० [सं० विद्विष] शत्रु [को०]।
विद्विट्[2]—वि० द्वेषी। द्वेष रखनेवाला [को०]।
विद्विष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विद्वेष या शत्रुता करता हो। शत्रु। दुश्मन।
विद्विषाण—वि० [सं०] द्वेष या शत्रुता करनेवाला [को०]।
विद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्विष'।
विद्विष्ट—वि० [सं०] १. जिसके साथ विद्वेष या शत्रुता की जाय। द्वेष का पात्र या भाजन। २. घृणित। कुत्सित (को०)।
विद्विष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्विष्ट होने का भाव।
विद्विष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वेष। शत्रुता। दुश्मनी।
विद्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रुता। दुश्मनी। वैर। द्वेष। २ अभिमत वा ईप्सित की प्राप्ति होने पर भी उद्धत गर्व या मान के कारण अनादर या घृणाभाव (को०)।
विद्वेषक—वि० संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विद्वेष करता हो। द्वेषी शत्रु। वैरी।
विद्वेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विद्वेषणी] १. शत्रुता। दुश्मनी। वैर। २. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसके द्वारा दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है। ३. वह जो द्वेष करता हो। शत्रु। वैरी। ४ सज्जनता का उल्टा। दुष्टता।
विद्वेषणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री। कोपना स्त्री। २, द्वेष या वैर रखनेवाली औरत [को०]।
विद्वेषिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार दुःसह नामक यक्ष की आठवीं और अंतिम कन्या जो निर्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

विशेष—कहते हैं, यही लोगों में द्वेष उत्पन्न करती है। इसे शांत करने के लिये दूध, शहद और घी में मिले हुए तिलों से होम आदि करने का विधान है।

२. दे० 'विद्वेषणी'।
विद्वेषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रुता। शात्रव भाव। दुश्मनी [को०]।
विद्वेषी—संज्ञा पुं० [सं० विद्वेषिन्] [स्त्री० विद्वेषिणी] १. वह जो विद्वेष करता हो। द्वेषी। २. शत्रु। वैरी।
विद्वेष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विद्वेष्टृ] १. वह जो विद्वेष करता हो। २. शत्रु। वैरी।
विद्वेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसके साथ विद्वेष किया जाय। द्वेष का पात्र या भाजन। २ ककोल।
विधंस(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० विध्वंस] विध्वंस। नाश। उ०—माया कंस विधंस मुरारी। दारिद वारिद प्रबल बयारी।—रघुराज (शब्द०)।
विधंस[2]—वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।
विधंसना(पु)†—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना। उ०—चाँद सुरज सौं होइ बिवाहू। बारि बिधंसब, बेधब राहू।—जायसी (शब्द०)।
विध(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० विधि] विधि। ब्रह्मा। उ०—नैन की कोर ते नेह किया विध डील की छाँह ते शील सँवारो।—हृदय० (शब्द०)।
विध[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'विधि'।
विध[3]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकार। किस्म। २ ढंग। रीति। रूप। ३ प्रकार। तरह। किस्म। ४. हाथियों का आहार। ५ समृद्धि। वैभव। ६ छेदन [को०]।
विधत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विधात्री] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती।
विधन—वि० [सं०] जिसके पास धन न हो। निर्धन। गरीब।
विधनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विधन होने का भाव। निर्धनता। गरीबी।
विधना[1]—क्रि० स० [सं० विधि] १ प्राप्त करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना। २. वेधन करना। बेधना। उ०—(क) लए फँदाइ बिहग मानो मदन व्याघ बिधए।—सूर (शब्द०)। (ख) थाके सूर पथिक मग माना मदन व्याधि बिधए री।—सूर। (शब्द०)।
विधना[2]—क्रि० अ० १ बिंधा जाना। विद्ध होना। २. उलझना। फँसना। दे० 'बिधना'।
विधना[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] वह जो कुछ होने को हो। भवितव्यता। होनी।
विधना[4]—संज्ञा पुं० विधि। ब्रह्मा। उ०—विधना ऐसी रैन कर भोर कभी ना होय।—(शब्द०)।
विधनुष्क—वि० [सं०] धनुष से रहित। धनुषहीन [को०]।
विधन्वा—वि० [सं० विधन्वन्] दे० 'विधनुष्क'।
विधमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. धौंकनी या नल आदि के द्वारा हवा पहुँचाकर आग सुलगाना। धौंकना। विधूनन। उड़ाना। २. अग्नि आदि। बुझाना। नष्ट करना (को०)।
विधमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी [को०]।
विधर†—क्रि० वि० [पुं० हिं०] दे० 'उधर'। उ०—जैसे रथ के घोड़े बाग के आश्रय जिधर ले जाते हैं, विधर जाता है।—यमुनाशंकर (शब्द०)।
विधरकता†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेधड़क + ता (प्रत्य०)] निर्भयता। उ०—या प्रकार वो होत ही आति सो श्री गुसाईं जी सों हरिदास की बेटी ने प्रार्थना करि कै अपनी सास तैं विधरकता सों बानी।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २५५।
विधरण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पकड़ना। रोकना। २. दे० 'विधृत'।
विधरण[2]—वि० पकड़नेवाला। रोकने या रुद्ध करनेवाला [को०]।
विधर्ता—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विधर्तृ] व्यवस्था करनेवाला। सँभाल करनेवाला। प्रबंधक [को०]।
विधर्म[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपने धर्म को छोड़कर और किसी का धर्म। पराया धर्म। २ अन्याय। अधम (को०)। ३. अपने धर्म को छोड़कर दूसरे का धर्म ग्रहण करना, जो पाँच प्रकार के अधर्मों में से एक कहा गया है।

विधर्म¹—वि० [सं०] १ जिसकी धर्मशास्त्र मे निंदा की गई हो। २ जिसमे गुण न हो। गुणहीन।

विधर्मक—वि० [सं०] दे० 'विधर्मिक'।

विधर्मा—वि० [सं० विधर्मन्] अनुचित या गलत कार्य करनेवाला। अन्यायकारी [को०]।

विधर्मिक—वि० [सं०] १ जो धर्मविरुद्ध आचरण करता हो। २ जो दूसरे धर्म का अनुयायी हो।

विधर्मी—वि० [सं० विधर्मिन्] १. जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्मभ्रष्ट। २ जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो। ३. विभिन्न प्रकार का (को०)।

विधवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंपन। २ हिलाना [को०]।

विधवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। पतिहीन स्त्री। राँड। बेवा। उ०—(क) सुत वधू विधवा सो बोलि कै सुनायो लेहु धनपति गृह श्री गुपाल भरतार है।—नाभा (शब्द०)। (ख) ब्राह्मण विधवा नारि सुर गुरु अंश चुरावही। कहै न वचन विचारि, परै सोई निरश्वास मँह।—विश्राम (शब्द०)।

विशेष—स्मृतियो मे विधवा स्त्रियो के लिये ब्रह्मचर्य तथा कठिन कठिन नियमो का पालन विधेय हैं। जैसे,—तांबूल और मद्य-मांस आदि का त्याग। द्विजातियो मे विधवा के लिये पुनर्विवाह का नियम नही है। केवल पराशर संहिता मे यह कहा गया है कि स्वामी के नष्ट अर्थात् लापता होने, मरने, अथवा सन्यासी, क्लीव या पतित होने पर स्त्री दूसरा पति कर सकती है। पर और स्मृतियो के साथ अविरोध सिद्ध करने के लिये पंडित लोग 'अन्य पति' शब्द का अर्थ 'दूसरा पालनकर्ता' किया करते हैं।

विधवागामी—संज्ञा पुं० [सं० विधवागामिन्] विधवा स्त्री के साथ यौन संबंध रखनेवाला व्यक्ति। विधवा का जार [को०]।

विधवापन—संज्ञा पुं० [सं० विधवा + हिं० पन (प्रत्य०)] विधवा होने की अवस्था। वह अवस्था जिसमे पति के मरने के कारण स्त्री पतिहीन हो जाती है। रँडापा। वैधव्य। उ०—लिख्यो न विधि मिलिबे तिहि मोही। प्राणजई विधवापन तोही।—रघुराज (शब्द०)।

विधवाविवाह—संज्ञा पुं० [सं०] विधवा स्त्री के साथ विवाह करना।

विधवावेदन—संज्ञा पुं० [सं० विधवा + आवेदन] दे० 'विधवाविवाह'।

विधवाश्रम—संज्ञा पुं० [सं० विधवा + आश्रम] विधवाओ के रहने का स्थान। अनाथ विधवाओ का शरणगृह। वह स्थान जहाँ विधवाओ के पालन पोषण तथा शिक्षा आदि का प्रबंध किया जाता है। उ०—इन बालिकाओ के लिये अध्यापक कर्वे ने पूना मे 'अनाथ विधवाश्रम' खोला है।—सरस्वती (शब्द०)।

विधव्य—संज्ञा पुं० [सं०] कंपन। थरथराहट। विक्षोभ [को०]।

विधस—संज्ञा पुं० [सं०] मोम।

विधस्—संज्ञा पुं० [सं०] सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा [को०]।

विधाँसना⁎†—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] १ नष्ट करना। बरबाद करना। उ०—(क) औ जोबन मैमंत विधाँसा। बिचला बिरह बिरह लै नासा।—जायसी (शब्द०)। (ख) भएउ जूझ जस रावन रामा। सेज विधास, बिरह संग्रामा।—जायसी (शब्द०)। २. अस्तव्यस्त करना। इधर उधर करना। गड़बड़ कर देना।

विधा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माध्यम। रीति। रूप। ढंग। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३ हाथी घोड़े आदि का चारा। ४ समृद्धि। संपन्नता। ५ वेधन कर्म। छेदना। ६ उच्चारण। ७ पारिश्रमिक। मजदूरी। ८. व्यवहार। आचरण। क्रिया। चेष्टा [को०]।

विधातव्य—वि० [सं०] १ विधान के योग्य। विधेय। २. करने योग्य। कर्तव्य।

विधाता¹—संज्ञा पुं० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १ विधान करनेवाला। रचनेवाला। बनानेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला। तैयार करनेवाला। उ०—विद्या वारिधि बुद्धि विधाता।—तुलसी (शब्द०)। ३ व्यवस्था करनेवाला। प्रबंध करनेवाला। इंतजाम करनेवाला। ठीक तरह से लगानेवाला। उ०—ए गोसाईं। तू ऐस विधाता। जावत जीव सबन्ह भुक्‌दाता।—जायसी (शब्द०)। ४ सृष्टि बनानेवाला। जगत् की रचना करनेवाला। सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा या ईश्वर। उ०—कुछ संदेह नहीं कि विधाता ने मुझे अत्यंत सुकुमारी बनाया है—तोताराम (शब्द०)। ५ वितरण करने वा देनेवाला। दाता (को०)। ६ दैव। भाग्य। किस्मत (को०)। ७ विश्वकर्मा (को०)। ८ कामदेव (को०)। ९. मदिरा। शराब। (स्त्रीलिंग मे भी प्रयुक्त)। १०. माया (को०)।

विधातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] विधान करनेवाली। विधात्री।

विधातृभू—संज्ञा पुं० [सं०] नारद का एक नाम जो विधाता के पुत्र है [को०]।

विधात्रायु—संज्ञा पुं० [सं० विधात्रायुस्] १ सूर्यमुखी का फूल। २. सूर्य की ज्योति। सूर्यप्रभा [को०]।

विधात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विधान करनेवाली। रचनेवाली। बनानेवाली। २ व्यवस्था करनेवाली। प्रबंध करनेवाली। ३ पिप्पली। पीपल। ४ माता। जननी। ५ सरस्वती। शारदा। उ०—सती विधात्री इंदिरा देखी अमित अनूप। जेहि जेहि वेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप।—मानस, १।५४।

विधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य का आयोजन। काम का होना या चलना। विन्यास। संपादनक्रम। अनुष्ठान। जैसे—जो कुछ करना है, उसी का विधान अब होना चाहिए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. व्यवस्था। प्रबंध। इंतजाम। बंदोबस्त। जैसे,—पहले ही से ऐसा विधान करो कि कार्य आरंभ करने मे देर न हो। ३. कार्य करने की रीति। विधि। प्रणाली। पद्धति। जैसे—शास्त्रो में ऐसा विधान है। उ०—तुम विज्ञ विविध विधान।—केशव (शब्द०)। ४ रचना। निर्माण। ५ ढंग। तरकीब। उपाय। युक्ति। जैसे—कोई ऐसा विधान निकालो कि कार्य निर्विघ्न हो जाय। ६ उतना चारा जितना हाथी एक बार मुह मे डालता है। हाथी का ग्रास। ७. हानि पहुँचाने का दाँवपेंच।

शत्रुता का आचरण। ८ प्रेरण। भेजना। ६ अनुमति देने का कार्य। आज्ञा करना। १० धन सपत्ति। ११. पूजा। अर्चन। १२ नाटक मे वह स्थल जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख प्रकट किया जाता है। जैसे,—'बाल्यकाल ही मे तुम्हारा ऐसा उत्साह देख मुझे हर्ष और विषाद दोनो होते हैं। १३ पीडा। वेदना। सताप (को०)। १४ प्राप्ति। लाभ (को०)। १५ प्रतिकार (को०)। १६ वेद (को०)। १७. भाग्य। दैव (को०)। १८ उपसर्ग या प्रत्यय का योग (को०)। १६ नियम। कानून (को०)।

विधानक—सज्ञा पु० [स०] १ विधान। विधि। २ विधानवेत्ता। विधि या रीति जाननेवाला। ३ कष्ट। पीडा (को०)।

विधानग—सज्ञा पु० [स०] १ विधान का ज्ञाता। पडित। २. आचार्य। अध्यापक [को०]।

विधानज्ञ—सज्ञा पु० [सं०] १ विधान का ज्ञाता। २ अध्यापक। आचार्य [को०]।

विधानपरिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यवस्थापिका सभा। प्रात मे सुचारु रूप से व्यवस्था के लिये विधान या कानून बनानेवाली सभा।

विधानयुक्त—वि० [स०] विधिविहित। विधि के अनुकूल [को०]।

विधानविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] रचना। वाक्यविन्यास। वाक्य रूप या आकार प्रकार। (अ० फार्म) उ०—विधानविधि का भेद ऊपर सूचित किया गया।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १३६।

विधानव्रत—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य का एक व्रत। दे० 'विधानसप्तमी व्रत' [को०]।

विधानशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यवस्था शास्त्र। आईन। २. नीतिशास्त्र [को०]।

विधानसप्तमी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ शुक्ला सप्तमी।

विधानसप्तमी व्रत—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का एक व्रत जो माघ शुक्ला सप्तमी को आरभ करके साल भर तक (पौप तक) किया जाता है। इसमे सूर्य का पूजन होता है।

विधानापहार—सज्ञा पुं० [स०] विधान का अपहरण करना। निषेध को विधि के रूप मे लाना। उ०—विधानापहार—विधान को बदल देना अर्थात् निषेध को विधि रूप मे कहना।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, २६३।

विधानिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वृहती।

विधानी—सज्ञा पुं० [स० विधान+ई (प्रत्य०)] १ विधान का जाननेवाला। विधानज्ञ। २ विधिपूर्वक कार्य करनेवाला।

विधानीक(पु)—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का डिंगल छद। उ०—तुक तुक मे क्रम सो तवै, अवर अवर विध जाण। सभ चौथी तुक नाम सो विधानीक बाखाण।—रघु० रू०, पृ० २४६।

विधायक—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विधायिका] १ विधान करनेवाला। कार्य करनेवाला। २ बनानेवाला। रचनेवाला। सस्थापक। उ०—हे विरचि तै विश्वविधायक।—रघुराज (शब्द०)। ३. व्यवस्था करनेवाला। प्रबध करनेवाला। व्यवस्था देनेवाला। प्रस्तुत करनेवाला। उ०-मगल मूरति सिद्ध विधायक।—शंकर दि० (शब्द०)। ४. विधाननिर्माता। कानून बनानेवाला (आधु०)। ५ रचनात्मक।

विधायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विधायक'।

विधायी—वि० [स० विधायिन्] १ विधानकर्ता। २ व्यवस्थापक। ३ नियामक। दे० 'विधायक' [को०]।

विधायिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सस्थापिका। २ निर्मात्री [को०]।

विधारण—सज्ञा पु० [स०] १ सँभालना। रोकना। २ वहन करना। ढोना। ३ वह जो अलग करे। पृथक्कर्ता [को०]

विधारा—सज्ञा पु० [स० वृद्ध + दारु] एक प्रकार की लता जो दक्षिण भारत मे बहुतायत से होती है।

विशेष—इसका झाड बहुत बडा और इसकी शाखाएँ बहुत घनी होती हैं। इनकी डालियो पर गुलाब के से काँटे होते है। पत्ते तीन अंगुल लबे अडाकार और नोकदार होते हैं। डालियो के सिरे पर चमकदार पीले फूलो का गुच्छा होता है। वैद्यक मे इसे गरम, मधुर, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, धातुवर्धक और पुष्टिदायक माना है। उपदंश, प्रमेह, क्षय, वातरक्त आदि मे इसे औषधि की भाँति व्यवहार मे लाते हैं।

पर्या०—जीर्णदारु। वृद्धदारु। वृद्धदारुक। गर्भवृद्धि।

विधि¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई कार्य करने की रीति। कार्यक्रम। प्रणाली। ढग। नियम। कायदा। जैसे—पूजा की विधि, यज्ञ की विधि। २ व्यवस्था। सगति। योजना। करीना। मेल या सिलसिला।

मुहा०—विधि बैठना=(१) परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। मेल खाना। व्यवहार निभना। जैसे,—हमारी उनकी विधि नही बैठेगी। (२) सब बातो का ठीक होना। इच्छानुकूल व्यवस्था होना। जैसे,-फिर क्या है, तुम्हारी विधि बैठ गई।

३ किसी शास्त्र या ग्रथ मे लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान।

मुहा०—कुडली की विधि मिलना=कुडली मे लिखी बात का पूरा होना। फलित ज्योतिष द्वारा बताई हुई बात का ठीक घटना।

४ किसी शास्त्र या धर्मग्रथ मे किया हुआ कर्तव्यनिर्देश। कर्म के अनुष्ठान की आज्ञा या अनुमति। शास्त्र मे इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे।

विशेष—किसी काम को करने की आज्ञा को 'विधि' और न करने की आज्ञा को 'निषेध' कहते है। पूर्वमीमासा मे नियोग का नाम विधि है। अर्थात् जो वाक्य किसी इष्ट फल की प्राप्ति का उपाय बताकर उसे करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करे, वही विधि है। जैसे,—'स्वर्ग चाहनेवाला यज्ञ करे'। विधि दो प्रकार की कही गई है—प्रधान विधि और अग विधि। फल देनेवाली सपूर्ण क्रिया के आदेश करनेवाले वाक्य को 'प्रधान विधि' कहते हैं। जैसे,—'जैसे

पुत्र की कामना हो, वह पुत्रेष्टि यज्ञ करे'। प्रधान क्रिया के अंतर्गत होनेवाली छोटी छोटी क्रियाओं के निर्देश को 'अंग-विधि' कहते हैं। जैसे,—'चावल से यज्ञ करे, दधि का हवन करे, इत्यादि।

यौ०—विधि निषेध=किसी काम को करने और न करने की शास्त्रीय आज्ञा। उ०—विधिनिषेध मय कलिमल हरनी।—तुलसी (शब्द०)।

५ व्याकरण मे क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। जैसे,—यह काम करो या काम करना चाहिए। यह लिङ् लकार मे होता है और इसके दो भेद है। एक विधिलिङ् दूसरा आशिष् लिङ्। ६ साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे—वर्षा काल के ही मेघ मेघ हैं। ७ आचार व्यवहार। चालढाल।

यौ०—गतिविधि=चेष्टा और कार्रवाई। जैसे,—उसकी गतिविधि पर ध्यान रखना।

८ भाँति। प्रकार। किस्म। तरह। उ०—एहि विधि राम सबहि समुझावा।—तुलसी (शब्द०)। ९ प्रयोग (को०)।

विधि²—सज्ञा पु० [स०] १ सृष्टि का विधान करनेवाला। ब्रह्मा। उ० विधि करतब सब उलटे अहही।—तुलसी (शब्द०)। २ भाग्य। दैव (को०)। ३ विष्णु (को०)। ४ अग्नि (को०)। ५ समय (को०)। ६ हाथियो का खाद्य या चारा (को०)। ७ चिकित्सक। वैद्य (को०)। ८ कर्म (को०)। १० यज्ञ नियमो का उपदेशक ग्रथ (को०)।

विधिकर—वि०, सज्ञा पुं० [स०] नोकर। दास। आज्ञाकारी। सेवक (को०)।

विधिकृत्—वि० सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विधिकर'।

विधिघ्न—वि० [स०] नियमो का उल्लघन करनेवाला। विधि को न माननेवाला (को०)।

विधिज्ञ¹—वि० [स०] १ विधि को जाननेवाला। शास्त्रोक्त विधान को जाननेवाला। २ रीति जाननेवाला।

विधिज्ञ²—सज्ञा पु० वह ब्राह्मण जो शास्त्रोक्त विधियो का पारगत हो। शास्त्रवेत्ता। विद्वान् (को०)।

विधित्समान—वि० [स०] करने या देने की इच्छा रखनेवाला। २ मतलबी।

विधित्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सपन्न करने या विधान करने को इच्छा। २ आयोजन (को०)।

विधित्सित¹—वि० [स०] जिसे करने की इच्छा की गई हो (को०)।

विधित्सित²—सज्ञा पुं० अभिप्राय। नीयत (को०)।

विधित्सु—वि० [स०] करने की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विधिदर्शक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विधिदर्शी' (को०)।

विधिदर्शी—सज्ञा पुं० [स० विधिदर्शिन्] १ यज्ञ मे यह देखने के लिये नियुक्त पुरुष कि होता, आचार्य आदि ठीक ठीक विधि के अनुकूल कर्म कर रहे हैं या नही। २. सदस्य।

विधिदृष्ट—वि० [स०] विधि के अनुकूल (को०)।

विधिदेशक—सज्ञा पुं० [स०] १ सदस्य। दे० 'विधिदर्शी'। २ अध्यापक। आचार्य (को०)।

विधिद्वैध—सज्ञा पुं० [स०] विधि या समादेश की विविधता। नियमों की भिन्नता (को०)।

विधिना—सज्ञा पुं० [स० विधि हिं०+ना (प्रत्य०)] विधि। ब्रह्मा।

विधिनिषेध—सज्ञा पुं० [स०] करणीय और अकरणीय कर्म का निर्देश।

विधिपत्त(पु)—सज्ञा पुं० [सं० विधि+पत्र, प्रा० विधि+पत्त] विधि का पत्र। भाग्यलेख। उ०—दिय दरिद्र मगन वग्ह को मेटै विधिपत्त।—पृ० रा०, ६१।५७८।

विधिपाट—सज्ञा पुं० [स०] मृदग के चार वर्णों मे से एक वर्ण। चारो वर्ण ये हैं—पाट, विधिपाट, कूटपाट और खडपाट।

विधिपुत्र—सज्ञा पुं० [सं० विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विधिपुर—सज्ञा पुं० [स० विधि+पुर] ब्रह्मा का लोक, ब्रह्मलोक। उ०—स्वर्ग लोक महुँ वचन न देनी। विधिपुर गयो आप निज लेखी।—रघुराज (शब्द०)।

विधिपूर्वक—अव्य० [सं०] नियम के अनुसार। 'विधिवत्' (को०)।

विधिप्रयोग—सज्ञा पुं० [स०] विधि या नियम का प्रयोग (को०)।

विधिबोधित—वि० [स०] शास्त्र विधि द्वारा बताया हुआ। शास्त्र समत।

विधियज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] वह यज्ञ जिसके करने की विधि हो। जैसे,—दर्शपौर्णमास।

विधियोग—सज्ञा पुं० [स०] १ नियम का अनुसरण या पालन। २. भाग्य का प्रभाव (को०)।

विधिरानी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विधि+हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती। उ०—वदौ वाणी वीण कर विधिरानी विख्यात।—रघुराज (शब्द०)।

विधिलोक—सज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मलोक। सत्यलोक। २ शास्त्रीय विधानो का अभाव या न होना।

विधिलोप—सज्ञा पुं० [स०] विधि या नियमो का तिरस्कार (को०)।

विधिवत्—क्रि० वि० [सं०] १ विधिपूर्वक। विधि से। पद्धति के अनुसार। कायदे के मुताबिक। २. जैसा चाहिए। उचित रूप से। यथायोग्य।

विधिवधू—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवशात्—अव्य० [स०] भाग्यत। भाग्य से। दैवयोग से।

विधिवाहन—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा की सवारी हस।

विधिविपर्यय—सज्ञा पु० [स०] भाग्य का फेर। दुर्भाग्य (को०)।

विधिविहित—वि० [स०] शास्त्र के अनुकूल। नियमानुकूल। (को०)।

विधिसेध—सज्ञा पुं० [स०] विधि और निषेध।

विधिहीन—वि० [स०] नियमशून्य। अशास्त्रीय। अविहित (को०)।

विधुत(पु)—सज्ञा पुं० [स० विधन्तुद] दे० 'विधुतुद'।

विधुतुद—संज्ञा पुं० [स० विधुन्तुद] चद्रमा को दुःख देनेवाला, राहु। उ०—ज्ञानराकेस ग्रासन विधुतुद चलन काम करि मत्त हरि।—तुलसी (शब्द०)।

विधुसन(पु)—क्रि० स० [स० विध्वंसन] दे० 'विधांसना'। उ०— पंड कोपियौ किना घार परा, वीर भद्र दिख ज्याग विधुंसण —रा० रू०, पृ० ६५।

विधुसना(पु)—क्रि० [स० विध्वमण] विध्वस करना। नाश करना। उ०—ज्याग विधुंसे जावैं।—रघु० रू०, पृ० ६४।

विधु—संज्ञा पुं० [स०] १. चद्रमा। २ वायु। ३ कपूर। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु। ६ एक राक्षस का नाम। ७ आयुध। ८ जलस्नान। ९. पापक्षालन। पाप छुडाना। प्रायश्चित्तपरक आहुति। १० शिव (को०)। ११. युद्ध। लडाई (को०)। १२ काल। समय (को०)। १३ एक राजा का नाम (को०)।

विधुक्रात—संज्ञा पुं० [स० विधुकान्त] सगीत का एक ताल।

विधुक्षय—संज्ञा पु० [स०] चद्रमा की कलाओ का नाश। असित पक्ष। कृष्ण पक्ष (को०)।

विधुत—वि० [स०] १ त्यक्त। २ कपित। दे० 'विधूत' (को०)।

विधुति—संज्ञा स्त्री० [स०] सक्षोभ। कपन। विधूति (को०)।

विधुदार—संज्ञा पु० [स० विधु+दार] चद्रमा की स्त्री। रोहिणी। उ०—तारा किधो विधुदार किधो धृतधार सी पावक है परिरभौ।—मन्नालाल (शब्द०)।

विधुदिन—संज्ञा पु० [स०] चंद्रवार। सोमवार (को०)।

विधुनन—संज्ञा पु० [स०] दे० 'विधूनन' (को०)।

विधुपजर—संज्ञा पुं० [सं० विधुपञ्जर] खड्ग। खांडा।

विधुपरिध्वस—संज्ञा पु० [स०] चद्रग्रहण (को०)।

विधुपिंजर—संज्ञा पु० [स०] विधु+पिञ्जर] खड्ग। खांडा (को०)।

विधुप्रिया—संज्ञा स्त्री० [स०] १. चद्रमा की स्त्री, रोहिणी। २ कुमुदिनी। कोई।

विधुवधु—संज्ञा पु० [स० विधुबन्धु] कुमुद का फूल।

विधुवधुर(पु)—संज्ञा पु० [स० विधु+बन्धुर (=प्रिय)] कुमुद। उ०—विधुवंधुर मुख भा वडो वारिज नैन प्रभाति।—रामसहाय (शब्द०)।

विधुवैनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० विधु+वदन, प्रा० वयन] चद्रमुखी। सुदरी स्त्री। उ०—सग लिए विधुवैनी वधू रति हू जेहि रचक रूप दियो है।—तुलसी (शब्द०)।

विधुमडल—संज्ञा पुं० [स० विधुमण्डल] चद्रमा की परिधि या परिवेश। चंद्रमडल (को०)।

विधुमणि—संज्ञा पुं० [स०] चद्रकात मणि (को०)।

विधुमास—संज्ञा पुं० [स०] चाद्रमास। महीने की वह गणना जो कृष्ण प्रतिपदा से लेकर शुक्ल पूर्णिमा तक (१ मास) मानी जाती है।

विधुमुखी—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विधुवदनी'।

विधुर¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० विधुरा] १ दुखी। २ घबराया हुआ। ३ डरा हुआ। ४ विकल। व्याकुल। जैसे—विरह विधुर। ५ असमर्थ। अशक्त। ६ परित्यक्त। शून्य। वचित। ७ विमूढ। ८ विरोधी (को०)। ९ एकाकी। अकेला। १०. (गाडी) जिसमे धुरा न हो (को०)।

विधुर²—संज्ञा पु० [स०] १ कष्ट। दुःख। २ वियोग। जुदाई। ३ अलग होने की क्रिया या भाव। ४ कैवल्य। मोक्ष। ५ शत्रु। दुश्मन। वैरी। ६ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो (को०)।

विधुरा¹—वि० स्त्री० [स०] १ कातर। व्याकुल। पीडित। २ विधवा। पतिहीना।

विधुरा²—संज्ञा स्त्री० १ कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रथि जिसके पीडित या खराब होने से प्राणी बहरा हो जाता है। २ दही की एक प्रकार की गाढ़ी लस्सी जिसे श्रीखड भी कहते हैं। रसाला।

विधुरित—वि० [स०] १ विवर्ण। मदप्रभ। २ कपित (को०)।

विधुवदनी—संज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा के समान मुखवाली स्त्री। सुदरी स्त्री। उ०—विधुवदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी।—तुलसी (शब्द०)।

विधुवन—संज्ञा पु० [स०] कपन। हिलना (को०)।

विधूत—वि० [स०] १ कपित। काँपता हुआ। २ हिलता हुआ। डोलता हुआ। ३ त्यागा हुआ। छोडा हुआ। त्यक्त। ४. दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ५. निकाला हुआ। बाहर किया हुआ।

विधूतकल्मष—वि० [स०] दे० 'विधूतपाप्मा' (को०)।

विधूतकेश—वि० [स०] जिसके बाल लहरा रहे हो (को०)।

विधूतनिद्र—वि० [स०] सोते से जगाया हुआ (को०)।

विधूतपक्ष—वि० [स०] जिसने अपने पखने हिलाए हो (को०)।

विधूतपाप्मा—वि० [स० विधूतपाप्मन्] पाप से मुक्त। पापो से छुटकारा पाया हुआ (को०)।

विधूतवधन—संज्ञा [स० विधूतबन्धन] जिसने बधन दूर कर दिया हो। बधनमुक्त।

विधूतवेश—वि० [स०] जिसके वस्त्र लहरा या हिल रहे हो (को०)।

विधूति—संज्ञा स्त्री० [स०] थरथरी। कँपकँपी। विक्षोभ (को०)।

विधूनन¹—पु० [स०] कपन। काँपना। विक्षोभ।

विधूनन²—वि० १ प्रतिघाती। विरोधक। विकर्षणशील। उ०—रस वात्सल्य करन अनुभव नित। विरह विधूनन हार मुख नाम।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४८१।

विधूनित—वि० [स०] १ क्षुब्ध। कंपित। उ०—हे विटप विधूनित होते, है छिपता पुलिन दिखाता। पत्तो पर बूँद पतन का, है टप टप नाद सुनाता।—पारिजात, पृ० १२५। २ उत्पीडित।

विधूम—वि० [स०] धूमरहित। बिना धुएँ का। उ०—जारि बारि कै विधूम वारिधि बुताई लूम।—तुलसी (शब्द०)।

विधूम्र—वि० [स०] धूमिल या मटमैले रग का। धूसर वर्ण।

विधूवन—संज्ञा पुं० [स०] कपन। काँपना।

विधृत¹—वि० [सं०] १ धारण या ग्रहण किया हुआ। २ पृथक् या वियुक्त किया हुआ। ३ उठाया हुआ। ४ अधिकृत। स्वायत्तीकृत। अपनाया हुआ। ५. अवरुद्ध। ६ समर्थित। ७ रखा हुआ। रक्षित [को०]।

विधृत²—संज्ञा पुं० १. असंतोष। २ आदेश की अवहेलना। आज्ञा न मानना [को०]।

विधृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथक्ता। अलगाव। विभाजन। २ व्यवस्था। नियमन। उ०—सत्ता और विधृति ये दोनों प्रतिष्ठा के रूप हैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

विधेय—वि० [सं०] १ विधान के योग्य। जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। जिसका करना उचित हो। कर्तव्य। २ जिसका विधान हो या होनेवाला हो। जो क्रिया जाय या किया जानेवाला हो। ३ जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। जिसके करने का नियम या विधि हो। ४ वचन या आज्ञा के वशीभूत। अधीन। ५ वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे,—'गोपाल सज्जन है' इस वाक्य में 'सज्जन है' विधेय है, क्योंकि वह गोपाल के संबंध में कुछ विधान करता है, अर्थात् उसकी कोई विशेषता बताता है।

विशेष——न्याय और व्याकरण में वाक्य के दो मुख्य भाग माने जाते हैं—उद्देश्य और विधेय। जिसके संबंध में कुछ कहा जाता है (अर्थात् कर्ता), वह उद्देश्य कहलाता है, और जो कुछ कहा जाता है, वह 'विधेय' कहलाता है।

६ आश्रित। निर्भर (को०)। ७ प्राप्य (को०)। ८ प्रज्वलित करने योग्य (को०)।

विधेय²—संज्ञा पुं० १ वह जो किया जाना चाहिए। कर्तव्य कर्म। प्रतिज्ञा या प्रस्थापन की उक्ति। ३ सेवक। भृत्य [को०]।

विधेयक—संज्ञा पुं० [सं०] अधिपत्र। विधान लिपि। अधिनियम का प्रस्तावित एवं प्राथमिक रूप। (अं० बिल) उ०—गवर्मेंट आफ इंडिया विधेयक (बिल) पार्लमेंट में प्रेषित किया गया। —भारतीय०, पृ० २।

विधेयज्ञ—वि० [सं०] अपने कर्तव्य का ज्ञान रखनेवाला [को०]।

विधेयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विधि की योग्यता। विधान का औचित्य। २ अधीनता। वश्यता।

विधेयत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विधेयता।

विधेयवर्ती—वि० [सं० विधेयवर्तिन्] दूसरे की आज्ञा में रहनेवाला। अधीन। वश्य [को०]।

विधेयात्मा¹—संज्ञा पुं० [सं० विधेयात्मन्] विष्णु [को०]।

विधेयात्मा²—वि० संयतात्मा। आत्मा को वश में रखनेवाला [को०]।

विधेयाविमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक वाक्यदोष जो विधेय अंश को अप्रधान स्थान प्राप्त होने पर होता है। जो बात प्रधानतः कहनी है, उसका वाक्यरचना के बीच दबा रहना।

विशेष—प्रत्येक वाक्य में विधेय की प्रधानता के साथ निर्देश होना चाहिए। ऐसा न होना दोष है। 'विधेय' शब्द के समास के बीच पड जाने से या विशेषण रूप में आ जाने पर प्रायः यह दोष होता है। जैसे,—किसी वीर ने खिन्न होकर कहा—'मेरी इन व्यर्थ फूली हुई बाहों से क्या'। इस वाक्य में कहनेवाले का अभिप्राय तो यह है मेरी बाहें व्यर्थ फूली हैं, पर 'फूली हैं' के विशेषण रूप में आ जाने से विधेय की प्रधानता नहीं स्पष्ट होती। दूसरा उदाहरण—'मुझ रामानुज के सामने राक्षस क्या ठहरेंगे।' यहाँ कहना चाहिए था कि—'मैं राम का अनुज हूँ' तब राम के संबंध में लक्ष्मण की विशेषता प्रकट होती।

विधौत—वि० [सं०] धुला हुआ। धोकर निर्मल किया हुआ। उ०—कठनगन मुक्तामाला इव मंजुल गुरसरि धारा। होता है विधौत पग पावन पूत पयोनिधि द्वारा।—पारिजात, पृ० १०।

विध्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] विकीर्ण करने या बिखेरनेवाला। तितर बितर करनेवाला [को०]।

विध्य—वि० [सं०] १ बिंधने योग्य। छिदने योग्य। २ जिसे वेधना हो। जो छेदा जानेवाला हो।

विध्यपराध—संज्ञा पुं० [सं०] विधि या नियम की अवहेलना [को०]।

विध्यपाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] विधि के अनुकूल आचरण [को०]।

विध्यलंकार—संज्ञा पुं० [सं० विध्यलङ्कार] एक काव्यालंकार जिसमें किसी सिद्ध बात का पुनर्विधान किया जाता है। दे० 'विधि'—६।

विध्यलंक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विध्यलंकार'।

विध्याभास—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की संभावना दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है। जैसे,—विदेश जाते हुए नायक के प्रति नायिका का यह कथन 'जाते हो तो जाओ। जहाँ जाते हो, मैं भी वहाँ जन्म लेकर पहुँचूँगी'।

विध्र(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० ब्रध्न ?] सूर्य। उ०—विध्र, विरोचन, विभावसु, मार्तंड, नविअग।—नद० ग्र०, पृ० ११२।

विध्र²—वि० सूर्य की तरह निर्मल। निर्दोष [को०]।

विध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश। नाश। बरबादी। २. घृणा। ३ अनादर। ४ वैर। ५ वैमनस्य।

विध्वंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाश करनेवाला। २ छिछोरा। लंपट (को०)। ३ शत्रुओं के समुद्री पोतों को नष्ट करनेवाला पोत या अस्त्रशस्त्र (आधुनिक)।

विध्वंसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विध्वंसित, विध्वस्त] विध्वंस करना। नाश करना। बरबाद करना।

विध्वंसात्मक—वि० [सं०] विध्वंस या विनाश करनेवाला। विनाशक। संहारक। उ०—यह समय भारत में ईसाइयत के प्रचार और (डेरोजीयनिज्म ऐसे) अति विध्वंसात्मक मतों के प्रसार का था।—हिं० का० प्र०, पृ० ३४।

विध्वंसित—वि० [सं०] विध्वंस किया हुआ। नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ।

विध्वसी—संज्ञा पुं० [सं० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] १ नाशकारी। सतीत्वनाश करनेवाला। २ बरबाद करने या होनेवाला। ३ दुश्मन। शत्रु। अरि (को०)।

विध्वस्त—वि० [सं०] १ नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। २. इधर उधर विकीर्ण या छितराया हुआ (को०)। ३. अस्पष्ट। धुँधला (को०)। ४ ग्रहणग्रस्त (को०)।

विनशी—वि० [सं० विनशिन्] नष्ट होनेवाला। लुप्त होनेवाला [को०]।

विन¹—सर्व० [हिं० वा (=उस)] प्रथम पुरुष बहुवचन सर्वनाम का वह रूप जो उसे कारकचिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है। जैसे,—विन ने, विन को, इत्यादि।

विन²— अव्य० [सं० विना] दे० 'विना'।

विनअ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विनय, प्रा० विणअ] दे० 'विनय'। उ०—तासु तनअ नअ विनअ गुन गरुअ राए गएनेस। जे पट्टाइअ दसओ दिस किप्ति कुसुम सदेश।—कीर्ति०, पृ० १०।

विनक्क(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वणिक, (स्वरव्यत्यय से) विणक्] दे० 'वणिक्'। उ०—गुरु पडन गुरु विदुष लच्छि पडन विनक्क घर। —पृ० रा०, ५५। ६३।

विनग्न —वि० [सं०] निर्वस्त्र। नगा [को०]।

विनटन—वि० [सं०] इधर उधर घूमना। चक्रमण [को०]।

विनत¹—वि० [सं०] १ नीचे की ओर प्रवृत्त। झुका हुआ। २ टेढा पडा हुआ। वक्र। ३ सकुचित। सिकुडा हुआ। ४ विनीत। नम्र। ५. शिष्ट। शिक्षित। ६. अवसन्न। ७ हतोत्साह। ८ खिन्न (को०)।

विनत²—संज्ञा पुं० १ सुग्रीव की सेना का एक बंदर। २ शिव। महादेव। ३. एक प्रकार की चीटी (को०)। ४ सुद्युम्न का एक पुत्र (को०)। ५ व्याकरण मे स् का ष् या न का ण होना। दे० विनाम।

विनतक—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

विनतडी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० विनत+हिं० डा (प्रत्य०)] दे० 'विनती'। उ०—स्वामी तमो हौं सग न मेल्हो विनतडी कहेस। —दादू (शब्द०)।

विनता¹—वि० स्त्री० [सं०] कुबडी या खज (स्त्री)।

विनता²—संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की स्त्री और गरुड की माता थी।

यौ०—विनतातनय, विनतात्मज, विनतानदन, विनतासुत = दे० 'विनतासूनु'। २ एक प्रकार का भयानक फोडा जो प्रमेह या बहुमूत्र के रोगियो को होता है।

विशेष—जिस स्थान पर यह फोडा होता है, वह स्थान मुरदा हो जाने के कारण नीला पड जाता है। सुश्रुत आदि प्राचीन ग्रंथो मे प्रमेह के अतर्गत इसकी चिकित्सा लिखी है। यह प्राय. घातक होता है। इसमे अग बहुत तेजी के साथ सडता चला जाता है। यदि बढने के पहले ही वह स्थान काटकर अलग कर दिया जाय, तो रोगी बच सकता है।

३. महाभारत के अनुसार एक राक्षसी जो व्याधि लाती है। ४. एक प्रकार की टोकरी वा डलिया (को०)। ५. रामायण के अनुसार एक राक्षसी का नाम जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था।

विनतातनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनता की कन्या जिसका नाम सुमति था। [को०]

विनतासूनु—संज्ञा पुं० [सं०] १ अरुण। २ गरुड।

विनति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २ नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता। ३. अनुनय। प्रार्थना। विनती। ४ निवारण। रोक। ५ दमन। शासन। दड। ६ विनियोग।

विनतिय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] दे० 'विनति'। उ०—अतुल तेज प्रथिराज करव विनतिय हितकारिय।—पृ० रासो, पृ० ४३।

विनती—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] दे० 'विनति'।

विनतोदर—वि० [सं०] उदर के पास मे झुका हुआ [को०]।

विनद—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पेड। विन्याक वृक्ष। २. कोलाहल। ध्वनि। शोर (को०)।

विनदी—वि० [सं०] कोलाहल करनेवाला।

विनद्ध—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। नँधा हुआ। २ जिसका बधन दूर किया गया हो। मुक्त।

विनमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनत] १ नम्र करना। झुकाना। २. लचाना। लपाना।

विनमित—वि० [सं०] १ लचाया हुआ। नम्र। २ झुका हुआ [को०]।

विनम्र¹—वि० [सं०] १ झुका हुआ। नम्र। २ विनीत। सुशील। ३ अवसन्न (को०)।

विनम्र²—संज्ञा पुं० तगर का फूल।

विनम्रक—संज्ञा पुं० [सं०] तगर वृक्ष का फूल [को०]।

विनय¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवहार मे दीनता या अधीनता का भाव। नम्रता। प्रणति। आजिजी। २ शिक्षा। नैतिक शिक्षण। मार्गदर्शन। ३ प्रार्थना। विनती। अनुनय। ४ शासन। तंबीह। (स्मृति)। ५ नीति। उ०—नमत सर्व करि विनय, विनय मत सर्व बखानत।—गोपाल (शब्द०)।

विनय²—संज्ञा पुं० १ वणिक्। बनिया। २ बला। बरियारा। ३. जितेंद्रिय। सयमी। ४ विनयपिटक (बौद्ध०)। उ०—'विनय जिसमे पाच ग्रथ है।'—हिंदु० सभ्यता, पृ० २४६।

विनय³—वि० १ फेंका हुआ। क्षिप्त। २. गुप्त। छिपाया हुआ। ३ दुर्वृत्त। अशिष्टाचारी। ४ अलग अलग करनेवाला। पृथक्कर्ता [को०]।

विनयकर्म—संज्ञा पुं० [सं० विनयकर्मन्] शिक्षण। मार्गदर्शन [को०]।

विनयग्राही—वि० [सं० विनयग्राहिन्] अनुशासन के नियमो का पालक। आज्ञाकारी [को०]।

विनयधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरोहित। २ अध्यक्ष। उ०—कम से कम निश्चित तथा अनिवार्य सख्या को 'गणपूर्ति' (कोरम) कहा जाता था और इसमे अध्यक्ष (विनयधर) की गणना नही होती थी।—आ० भा०, पृ० १६१।

विनयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिक्षा। अनुशासन। २. दूरीकरण। हटाना। दूर करना। उ०—रुधिर भरी वेदियाँ भयंकर

उनमे ज्वाला, विनयन का उपचार तुम्ही से खीच निकाला। —कामायनी, पृ० १६६।

विनयपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] आदि बौद्ध शास्त्रों मे से एक।

विशेष—आदि बौद्ध शास्त्र, जो पाली भाषा मे है, तीन भागों मे विभक्त हैं—विनयपिटक, सूत्रपिटक और अभिधर्मपिटक। ये तीनों 'त्रिपिटक' नाम से प्रसिद्ध हैं। बुद्ध देव ने अपनी शिष्यमंडली को भिक्षुधर्म के जो उपदेश दिए थे, वे ही विनयपिटक मे संगृहीत हैं। इसके संकलन के संबंध मे यह कथा है कि बुद्ध भगवान् तथा सारिपुत्र मौद्गलायन आदि प्रधान प्रधान शिष्यों के निर्वाणलाभ करने पर बौद्ध शास्त्र के लुप्त होने का भय हुआ। इसपर महाकश्यप ने अजातशत्रु के राजत्वकाल मे राजगृह के पास वैभार पर्वत की सप्तपर्णी नाम की गुफा मे पाँच सौ स्थविरों को आमंत्रित करके एक बड़ी सभा की, जिसमे उपालि ने बुद्ध द्वारा उपदिष्ट 'विनय' का प्रकाश किया। इसके पीछे एक बार फिर गड़बड़ उपस्थित होने पर वैशाली व वलिकाराम मे सभा हुई, जिसमे 'विनय' का फिर संग्रह हुआ। इस प्रकार कई संकलनों के उपरांत अशोक के समय मे 'विनय' पूर्ण रूप से संकलित हुआ।

विनयप्रमाथी—वि० [सं० विनयप्रमाथिन्] शिक्षा या अनुशासन न माननेवाला [को०]।

विनयभाक्—वि० [सं० विनयभाज्] विनयी। विनम्र [को०]।

विनययोगी—वि० [सं० विनययोगिन्] दे० 'विनयभाक्'।

विनयवाक्—वि० [सं० विनयवाच्] मधुरभाषी। नम्रता से बात करनेवाला [को०]।

विनयवान्—वि० [सं० विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमे नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील—वि० [सं०] विनययुक्त। नम्र। सुशील। शिष्ट।

विनयस्थ—वि० [सं०] विनयशील [को०]।

विनयस्थिति स्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल मे विनय या वाणिज्य विभाग की देख रेख करनेवाला अधिकारी। उ०—प्रांतीय शासन के अधिकारियों मे कई पद थे जैसे, 'कुमारामात्य,' 'विनयस्थिति स्थापक' आदि।—आ० भा०, पृ० ४०२।

विनया¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाट्यालक। बरियारा।

विनया(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० विनय] विनय। नम्रता। प्रार्थना। उ०—विना विनया नृप बद्ध कराय।—प० रासो, पृ० ४३।

विनयावनत—वि० [सं०] विनय या शिष्टता से नम्र। नम्रता से झुका हुआ [को०]।

विनयासुर—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल मे राजसभा का एक कर्मचारी जो आगंतुकों के आगमन को सूचित करता, उनकी देखरेख करता एवं उन्हें राजसभा मे ले जाता था।—[आ० भा०, पृ० ४४४।]

विनयी—वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त। नम्र।

विनर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] गरजन। चिग्घाड़। शोरगुल [को०]।

विनयोक्ति—संज्ञा पुं० [सं०] विनयभरी उक्ति या कथन [को०]।

विनर्दी—वि० [सं० विनर्दिन्] गरजनेवाला।

विनवना(पु)—क्रि० अ०, क्रि० स० [सं० विनयन] दे० 'विनवना'।

विनशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनष्ट, विनश्वर] १ नष्ट होना। नाश। बरबादी। हानि। लोप। क्षय। २. एक स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हुई है (को०)।

विनशना(पु)—क्रि० अ० [सं० विनशन] दे० 'विनसना'।

विनशाना(पु)—क्रि० स० [सं० विनाशन] दे० 'विनसाना'।

विनश्वर—वि० [सं०] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। नष्ट होनेवाला। ध्वंसशील। अचिरस्थायी। अनित्य। जैसे,—शरीर विनश्वर है।

विनश्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनित्यता। अचिरस्थायित्व।

विनश्वरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विनश्वरता' [को०]।

विनष्ट—वि० [सं०] १ नाश को प्राप्त। जो बरबाद हो गया हो। जो न रह गया हो। जिसका अस्तित्व मिट गया हो। ध्वस्त। २ मृत। मरा हुआ। ३ जो विकृत या खराब हो गया हो। जो व्यवहार के योग्य न रह गया हो। जो निकम्मा हो गया हो। बिगड़ा हुआ। ४ जिसका आचरण बिगड़ गया हो। भ्रष्ट। पतित। ५. ओझल। लुप्त। अलोप।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—विनष्टचक्षु = जिसके चक्षु देख न सकें। विनष्टदृष्टि = दे० 'विनष्टचक्षु'। विनष्टधर्म = (१) धर्मभ्रष्ट व्यक्ति। (२) देश जिसका विधान भ्रष्ट हो।

विनष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाश। २ लोप। ३ पतन।

विनष्टोपजीवी—वि० [सं० विनष्टोपजीविन्] शव या सड़ी गली वस्तुओं को खाकर जीवन धारण करनेवाला [को०]।

विनस—वि० [सं०] जिसे नासिका न हो। बिना नाक का। नकटा।

विनसना(पु)—क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना। न रहना। लुप्त होना। उ०—उपजं विनसं ज्ञान जिमि पाइ कुसंग सुसंग।—तुलसी (शब्द०)।

विनसाना(पु)¹—क्रि० स० [हिं० विनसना का सक० रूप] १ ध्वस्त या नष्ट करना। २ बिगाड़ना।

विनसाना²—क्रि० अ० [सं० विनशन] दे० 'विनसना'।

विना—अव्य० [सं०] १. अभाव मे। न रहने की अवस्था मे। बगैर। जैसे—तुम्हारे विना यह काम न बनेगा। २. छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे,—तुम्हारे विना और कौन यह काम कर सकता है।

विनाकृत—वि० [सं०] १. अलग किया हुआ। २. परित्यक्त ३ निर्जन। निभृत। एकांत [को०]।

विनाडि, विनाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विनाडी'।

विनाडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक घड़ी का साठवाँ भाग। २४ सेकेंड का समय। पल।

विनाती(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० विनती] विनती। विनय। उ०—ए गोसाइँ, सुनु मोरि विनाती।—जायसी (शब्द०)।

विनाथ—वि० [सं०] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ। उ०—नाथ नाथ विनाथ नाथ अनाथ नाथ सुसिद्ध।—केशव (शब्द०)।

विनादित—वि० [सं०] शब्दित या ध्वनित [को०]।

विनादी—वि० [सं० विनादिन्] नाद करनेवाला। शब्द करनेवाला। शोर करनेवाला [को०]।

विनान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञान, प्रा० विन्नाण] १ विज्ञान। सद्बोध। २ मेधा। मति। बुद्धि। उ०—सुकी वहै सुक सभरी, कही कथा प्रति प्रान। पृथु भोरा भीमंग पहु, किम हुअ बैर विनान।—पृ० रा०, ५।१।

विनाभव—संज्ञा पुं० [सं०] पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव [को०]।

विनाभाव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० विनाभव।

विनाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ झुकाव। टेढ़ापन २ भावप्रकाश के अनुसार किसी पीड़ा द्वारा शरीर का झुक जाना। ३. व्याकरण में स् का ष् अथवा न् का ण् होना (को०)।

विनयित—वि० [सं०] नम्र किया हुआ। झुकाया हुआ [को०]।

विनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गणों के नायक, गणेश। २ गरुड़। ३. विघ्न। बाधा। उ०—लसत विनायक केतु विनायक नसत निरखि रथ।—गोपाल (शब्द०)। ४ गुरु। ५ देवी का एक स्थान। ६ बुद्धदेव। ७ नेता। नायक (को०)। ८ वह जो (विघ्न) दूर करता हो (को०)।

विनायक²—वि० १ ले जानेवाला। २. हटानेवाला। दूर करनेवाला। ३. बिना नायक का। अनाथ [को०]।

विनायककेतु—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़ध्वज। श्रीकृष्ण। उ०—लसत विनायककेतु विनायक नसत निरखि रथ।—गोपाल (शब्द०)।

विनायक चतुर्थी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने की शुक्ला चतुर्थी। माघ सुदी चौथ। गणेश चतुर्थी।

विशेष—इस दिन गणेश का पूजन और व्रत होता है।

विनायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विनायक की पत्नी। २. गरुड़ की पत्नी [को०]।

विनारुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'त्रिपर्णिका' [को०]।

विनाल—वि० [सं०] नालरहित। बिना डंठल का [को०]।

विनाश—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभाव हो जाना। अस्तित्व का न रह जाना। न रहना। नाश। मिटना। ध्वंस। बरबादी। २. लोप।। अदर्शन। ३ बिगड़ जाने का भाव। खराब हो जाना। चौपट हो जाना। खराबी। ४ बुरी दशा। तबाही। ५ हानि। नुकसान।

विनाशक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश करनेवाला। क्षय करनेवाला। २ बिगाड़नेवाला। खराब करनेवाला। घातक।

विनाशधर्मा—वि० [सं० विनाशधर्मन्] नश्वर। नाशवान् [को०]।

विनाशधर्मी—वि० [सं० विनाशधर्मिन्] दे० 'विनाशधर्मा' [को०]।

विनाशन¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। बरबाद करना। २ संहार करना। वध करना। उ०—दससीस विनाशन बीस भुजा।—तुलसी (शब्द०)। ३ खराब करना। बिगाड़ना। ४ एक असुर जो काल का पुत्र था।

विनाशन²—वि० नाशक। विध्वंसक [को०]।

विनाशयिता—वि० संज्ञा पुं० [सं० विनाशयितृ] विनाश करनेवाला। नाश करनेवाला [को०]।

विनाशांत—संज्ञा पुं० [सं० विनाशान्त] मरण। मृत्यु [को०]।

विनाशसंभव—संज्ञा पुं० [सं० विनाशसम्भव] विनाश का निदान या प्रधान कारण [को०]।

विनाशहेतु—संज्ञा वि० [सं०] विनाश का कारण या हेतु।

विनाशित—वि० [सं०] १ नष्ट किया हुआ। ध्वस्त किया हुआ। २ मारा हुआ। ३ बिगाड़ा हुआ। खराब किया हुआ।

विनाशी—वि० [सं० विनाशिन्] [वि० स्त्री० विनाशिनी] १ नष्ट करनेवाला। ध्वस्त करनेवाला। बरबाद करनेवाला। २ वध करनेवाला। मारनेवाला। ३ बिगाड़नेवाला। खराब करनेवाला।

विनाशोन्मुख—वि० [सं०] १. विनाश की ओर उन्मुख या प्रवृत्त। जिसका शीघ्र नाश होनेवाला हो। २ परिपक्व [को०]।

विनाश्य—वि० [सं०] विनाश के योग्य।

विनास¹—वि० [सं०] नासारहित। बिना नाक का [को०]।

विनास(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० विनाश] दे० 'विनाश'।

विनासक¹—वि० [सं०] बिना नाक का। नकटा।

विनासक(पु)²—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विनाशक] दे० 'विनाशक'।

विनासन(पु)—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विनाशन] दे० 'विनाशन'।

विनासना¹(पु)—क्रि० स० [सं० विनाशन] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। बरबाद करना। न रहने देना। २ संहार करना। वध करना। ३. खराब करना। बिगाड़ना।

विनासना²—क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना। खराब होना।

विनासिक—वि० [सं०] बिना नाक का। नकटा [को०]।

विनासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक विषयुक्त कीड़ी [को०]।

विनाह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीनाह' [को०]।

विनिंद—वि० [सं० विनिन्द] १ हँसोड़। २ बढ़ जानेवाला [को०]।

विनिंदक—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विनिन्दक] १. अत्यंत निंदा करनेवाला। २. आगे बढ़ जानेवाला।

विनिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० विनिन्दा] अतिशय निंदा। बहुत बुराई।

विनिंदित—वि० [सं० विनिन्दित] जिसकी बहुत निंदा या बुराई हुई हो। लांछित।

विनिःसरण—संज्ञा पुं० [सं०] निकलना। बहिर्गमन। बाहर जाना [को०]।

विनिःसृत—वि० [सं०] १. पलायित। भागा हुआ। २. निकला हुआ। बहिर्गत। जो बाहर हुआ हो।

विनिःसृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाहर निकलना। विनिःसरण। भागना। पलायन [को०]।

विनिःसृष्ट—वि० [सं०] निक्षिप्त। फेंका हुआ [को०]।

विनिकषण—संज्ञा पुं० [सं०] छीलने की क्रिया। खुरचना [को०]

विनिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्रुटि। क्षति। हानि। २. अपराध [को०]।

विनिकीर्ण—वि० [सं०] १ बिखेरा हुआ। छितराया हुआ। इतस्ततः क्षिप्त। २. भरा हुआ। ढँका हुआ [को०]।

विनिकृत—वि० [स०] क्षति पहुचाया हुआ। जिसका तिरस्कार हुआ हो।

विनिकृतन—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो काटता या निकृतन करता हो। २ काटना। निकृतन। टुकडे टुकडे करना [कौ०]।

विनिकृत्त—वि० [स०] काटा हुआ। निकृतित [कौ०]।

विनिकेत—वि० [स०] निकेतरहित। गृहहीन। बेघर का।

विनिलोचन—सज्ञा पु० [स०] सिकोडना। सकोचन। जैसे,—भ्रूविनिकोचन [कौ०]।

विनिक्षित—वि० [स०] १, नीचे गिराया या फेंका हुआ। २ किसी मे या नीचे की ओर रखा हुआ [कौ०]।

विनिक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] १ उछालना। फेंकना। २ अलगाव। ३ प्रेषण [कौ०]।

विनिगड—वि० [स० विनिगड] जिसके पैरों मे बेडी न हो। निगडरहित [कौ०]।

विनिगमक—वि० [स०] दो पक्षो मे से किसी एक पक्ष को सिद्ध करनेवाला।

विनिगमना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दो परस्पर विरुद्ध पक्षो मे से किसी एक पक्ष का युक्ति और प्रमाण द्वारा निश्चय। दो बातो मे से किसी एक बात के ठीक होने का निर्णय जो विचार और तर्क द्वारा हो। (वैशेषिक)। २ सिद्धात। नतीजा।

विनिगूहित—वि० [स०] छिपाया हुआ। ढका हुआ [कौ०]।

विनिगूहिता—सज्ञा पु० [स० विनिगूहितृ] वह जो गोप्य को छिपावे। गोपन करने या ढकनेवाला [कौ०]।

विनिग्रह—सज्ञा पु० [स०] १. नियम। बधेज। प्रतिबध। २ किसी वृत्ति को दबाकर अधीन करना। सयम। ३ अवरोध। रुकावट। ४ व्याघात। बाधा। ५. पारस्परिक विरोध (कौ०)। ६ पार्थक्य। अलगाव। विभाजन (कौ०)।

विनिग्राह्य—वि० [स०] निग्रह के योग्य। अवरुद्ध करने लायक।

विनिर्घूर्णित—वि० [स०] १ चक्कर करता हुआ। घूमता हुआ। २. अशात। क्षुब्ध [कौ०]।

विनिघ्न—वि० [स०] १. नष्ट। बरबाद। २ गुणित। वृद्धिगत। गुणा किया हुआ।

विनिच्चय—सज्ञा पु० [विनिश्चय, पा० विनिच्चय] न्यायाधीश। उ०—अट्टकथा के अनुसार विनिच्चय ··· यह आठ न्यायाधीश थे, जो एक एक करके मुकद्दमो की जाँच करते थे।—हिंदु० सभ्यता पृ० २६२।

विनिद्र¹—सज्ञा पु० [स०] १. अस्त्र का एक सहार जिससे अस्त्र द्वारा निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की नीद या बेहोशी दूर होती है। २. नीद न आने का एक रोग।

विनिद्र—वि० १ जिसकी नीद खुल गई हो। २ मुकुलित। खुला हुआ। फूला हुआ (कौ०)।

विनिद्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] निद्रा का अभाव। जागरण [कौ०]।

विनिद्रत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विनिद्रता'।

विनिध्वस्त—वि० [स०] नष्टभ्रष्ट। विध्वस्त किया हुआ [कौ०]।

विनिपतित—वि० [स०] अध.पतित। गिरा हुआ [कौ०]।

विनिपात—सज्ञा पु० [स०] १ विनाश। ध्वंस। बरबादी। २ वध। हत्या। ३ अवमान। अनादर। नजर से गिरना। ४ अधःपतन। गिराव (कौ०)। ५ नरकपात। नरक कौ०)। ६ क्षय। मृत्यु (कौ०)। ७ घटित होना। घटना (कौ०)। ८ पीड़ा। कष्ट। दुःख (कौ०)।

यौ०—विनिपातग्रस्त = अध पतित। दुर्भाग्यग्रस्त। विपन्न। विनिपातप्रतीकार = विपत्ति या कष्ट से बचने का उपाय। विनिपातशसी = उत्पात, विपत्ति या दुर्भाग्य का सूचक।

विनिपातक—सज्ञा पु० [स०] १ विनाशकारी। २. सहारकर्ता। ३. अपमान करनेवाला।

विनिपातन—सज्ञा पु० [सं०] गर्भपातन। गर्भ गिराने की क्रिया [कौ०]।

विनिपातित—वि० [स०] १ जिसका विनिपात किया गया हो। गिराया हुआ। ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २ मारा हुआ। हत [कौ०]।

विनिपाती—वि० [स० विनिपातिन] विनिपात करनेवाला। गिरानेवाला [कौ०]।

विनिबध—सज्ञा पु० [स० विनिबन्ध] किसी वस्तु से लगाव या सबध होना [कौ०]।

विनिबधन—सज्ञा पु० [स० विनिबन्धन] दे० 'विनिबध'।

विनिमग्न—वि० [स०] डूबा हुआ। लीन।

विनिमय—सज्ञा पु० [स०] १ एक वस्तु लेकर बदले मे दूसरी वस्तु देने का व्यवहार। अदल बदल। परिवर्तन। परिदान। २ गिरवी। बधक। ३ वर्णव्यत्यय। वर्णों का परिवर्तन (कौ०)। ४ अन्योन्यता। परस्परता (कौ०)। ५ किसी देश की मुद्रा या सिक्के का अन्य देश की मुद्रा मे परिवर्तन। जैसे, पौंड या डालर का भारतीय सिक्के मे। (अ० एक्सचेंज)।

विनिमित्त—वि० [स०] निमित्त या कारणरहित। जिसका कोई मुख्य कारण न हो [कौ०]।

विनिमीलन—सज्ञा पु० [स०] बद होना।

विनिमीलित—वि० [स०] जो बद हो गया हो। मुद्रित। सकुचित। मुँदा हुआ [कौ०]।

विनिमीलितेक्षण—वि० [स०] मुँदी हुई आँखोवाला [कौ०]।

विनिमेष, विनिमेषण—सज्ञा पु० [स०] १ (आँखो का) झपकना। पलको का गिरना। २ सकेत। इगित [कौ०]।

विनियत—वि० [स०] नियमन किया हुआ। नियत्रित। प्रतिबद्ध [कौ०]।

यौ०—विनियतचेता = जिसका चित्त वश मे हो। सयतात्मा। विनियतवाक् = (१) सयत कथन। (२) जिसकी वाणी सयमित हो। विनियताहार = मितभोजी। कम खानेवाला।

विनियम—सज्ञा पु० [स०] १ निग्रह। रोक। सयम। प्रतिबध। २ शासन [कौ०]।

विनियम्य—वि० [स०] नियमन के योग्य। वश मे रखने लायक [कौ०]।

विनियुक्त—वि० [स०] १ किसी काम मे लगाया हुआ। नियोजित। २ अर्पित। ३ प्रेरित। ४ अलग किया हुआ। विच्छिन्न (कौ०)। ५. व्यवहृत (कौ०)। ६. समादिष्ट। विहित (कौ०)।

विनियुक्तात्मा—वि० [सं० विनियुक्तात्मन्] जिसका मन किसी वस्तु मे केंद्रित हो गया हो [को०]।

विनियोक्तव्य—वि० [सं०] १ नियुक्त करने योग्य। २. आदेश को पूर्ण करने मे समर्थ [को०]।

विनियोक्ता— वि० [सं० विनियोक्तृ] नियुक्त करनेवाला [को०]।

विनियोग—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। किसी विषय मे लगाना। प्रयोग। २. किसी वैदिक कृत्य मे मत्र का प्रयोग। ३ प्रेषण। भेजना। ४ प्रवेश। घुसना। ५ अलगाव। विभाग। विभाजन (को०)। ६ छोडना। त्यागना (को०)। ७ रुकावट। अडचन। ८ सबध। ताल्लुक (को०)।

विनियोजित— वि० [सं०] १ प्रयुक्त। नियुक्त। लगाया हुआ। २ अर्पित। ३ प्रेरित।

विनियोज्य वि० [सं०] १ नियुक्त किया जानेवाला। २. उपयोग किया जानेवाला [को०]।

विनिरोध—वि० [सं०] १ जो निरोध न करे। निष्क्रिय। २ अप्रभावित [को०]।

विनिरोधी— वि० [सं० विनिरोधिन्] निरोध करनेवाला। रोकनेवाला। बाधा उपस्थित करनेवाला।

विनिर्गत—वि० [सं०] १ निकला हुआ। जो बाहर हुआ हो। वहिर्गत। २ गया हुआ। जो चला गया हो। निष्क्रात। ३ बीता हुआ। अतीत। व्यतीत।

विनिर्गम—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाहर होना। निकलना। २. प्रस्थान। चला जाना।

विनिर्घोप – सज्ञा पुं० [सं०] उच्च स्वर।

विनिर्जन— वि० [सं०] निर्जन। सुनसान। जनहीन [को०]।

विनिर्जय—सज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी जीत। पूर्ण विजय [को०]।

विनिर्जित—वि० [सं०] पूर्णत पराजित। पूरी तौर से हारा हुआ [को०]।

विनिर्णय—सज्ञा पु० [सं०] १ दृढ निश्चय। २ निर्धारित नियम। ३ पूर्ण रूप रूप से निबटारा या फैसला [को०]।

विनिर्णीत—वि० [सं०] १ निश्चित। २ स्पष्टतया निर्णीत [को०]।

विनिर्दग्ध—वि० [सं०] पूर्ण रूप से जला या नष्ट किया हुआ [को०]।

विनिर्दहन — सज्ञा पु० [सं०] पूरी तौर से जला डालना। सपूर्णतया नष्ट कर देना [को०]।

विनिर्दिष्ट—वि० [सं०] जिसका निर्देश किया गया हो। विशेष रूप से निर्दिष्ट। सुस्पष्ट। उ०—देश (स्थान) और काल (उससे सबद्ध समय) दोनो दिए हो तो वह घटना या तथ्य पूर्णतया विनिर्दिष्ट होता है।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २२३।

विनिर्देश्य—वि० [सं०] उल्लेख योग्य। जिसका निर्देश किया जाय।

विनिर्धुत, विनिर्धूत—वि० [सं०] कपित या क्षुब्ध किया हुआ। २ क्षिप्त या फेंका हुआ [को०]।

विनिर्धौत— वि० [सं०] भली भाँति धुला हुआ। स्वच्छ। निर्मल।

विनिर्बंध—सज्ञा पुं० [सं० विनिर्बन्ध] आग्रह। दृढता।

विनिर्बाहु—सज्ञा पुं० [सं०] तलवार चलाने का एक प्रकार [को०]।

विनिर्भिन्न—वि० [सं०] खडित। टूटा हुआ। छिन्न भिन्न। फटा हुआ।

विनिर्भोग—सज्ञा पुं० [सं०] एक कल्प का नाम।

विनिर्मद—वि० [सं०] निरभिमान। गर्वरहित। निर्विकार। उ०— श्यामश्यामा के युगल पद कोकनद मन के विनिर्मद।—अर्चना, पृ० ९६।

विनिर्मल—वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ। पूत। पवित्र। उ०—प्रथम वंदूँ पद विनिर्मल।—अर्चना, पृ० २७।

विनिर्माण— सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनिर्मित] विशेष रूप से निर्माण होना। अच्छी तरह बनना।

विनिर्माता—सज्ञा पु० [सं० विनिर्मातृ] निर्माता।

विनिर्मित—वि० [सं०] १ विशेष रूप से निर्मित या बना हुआ। जैसे,—प्रस्तरविनिर्मित भवन। २ बनाया हुआ। निर्माण किया हुआ (को०)। ३. (उत्सव आदि) जो सपन्न या मनाया गया हो (को०)। ४ निर्धारित। निश्चित (को०)।

विनिर्मिति— सज्ञा स्त्री० [सं०] कृति। सरचना। निर्माण [को०]।

विनिर्मुक्त—वि० [सं०] १ बाहर निकला हुआ। वहिर्गत। २ जो खुला हो या ढँका न हो। अनाच्छन्न। ३ छूटा हुआ। बंधन से रहित।

विनिर्मुक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी स्वतत्रता होना। बधराहित्य। पूर्ण मुक्ति [को०]।

विनिर्मूढ—वि० [सं० विनिर्मूढ] कर्तव्यबोध रखनेवाला [को०]।

विनिर्मोक—सज्ञा पु० [सं०] १. निर्मोक रहित। २. बिना पहनावे का। वस्त्ररहित। परिधानशून्य।

विनिर्मोक्ष—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'विनिर्मुक्ति'।

विनिर्याण – सज्ञा पु० [सं०] गमन। प्रस्थान [को०]।

विनिर्यात—वि० [सं०] गत। गया हुआ [को०]।

विनिर्वाण—सज्ञा पुं० [सं०] विशेष प्रकार की मुक्ति। उ०—तर्क सिद्ध है, स्वप्न एक है विनिर्वाण यह।—अपरा पृ० १८७।

विनिवर्तक—वि० [सं०] रद्द करने या वदलनेवाला [को०]।

विनिवर्तन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनिवर्तित, विनिवर्ती] लौटना।

विनिवर्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] विराम। निवृत्ति [को०]।

विनिवर्तित—वि० [सं०] वापस किया हुआ। लौटाया हुआ [को०]।

विनिवर्ती—वि० [सं०] वापस करने या परिवर्तन करनेवाला [को०]।

विनिवारण—सज्ञा पु० [सं०] निवारण करना। दूर करना। नियंत्रित करना।

विनिविष्ट—वि० [सं०] १ बसा हुआ। निवास किया हुआ। २ रखा हुआ। रक्षित [को०]।

विनिवेदन—सज्ञा पु० [सं०] विशिष्ट रूप से निवेदन करना। घोषित

वि[illegible] लौटा हुआ। वापस आया हुआ। २ (सेवा) [illegible]पन्न। ४ निकाला हुआ। उत्पन्न। ५

यौ०—विनिवृत्तकाम = आकांक्षारहित। कामनाओं से मुक्त। विनिवृत्तशाप = शापमुक्त।

विनिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विश्रांति। आराम। मुक्ति। २ निवारण। दूरीकरण। ३ अंत। अवसान। समाप्ति [को०]।

विनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवेश। घुसना। २ निवास करना। बसना। ३ छाप। चिह्न। ४ (पुस्तक आदि में) उल्लेख करना (को०)।

विनिवेशन—वि० [सं०] [वि० विनिवेशित, विनिवेशी] १ प्रवेश। घुसना। २ अधिष्ठान। स्थिति। वास। रहायश। ३ निर्माण (को०)। ४ व्यवस्था (को०)। ५ चिह्न या छाप डालना (को०)।

विनिवेशित—वि० [सं०] १ प्रविष्ट। घुसा हुआ। २ ठहरा या टिका हुआ। अधिष्ठित। स्थापित। ३ बसा हुआ। ४ निर्मित। रचा या बना हुआ (को०)।

विनिवेशी—वि० [सं० विनिवेशिन्] [स्त्री० विनिवेशिनी] १ प्रवेश करनेवाला। घुसनेवाला। २ रहनेवाला। बसनेवाला।

विनिश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १ निश्चित करना। तय करना। २ निर्णय। निश्चय।

विनिश्चल—वि० [सं०] अचल। दृढ। कंपरहित। स्थित [को०]।

विनिश्वसित—संज्ञा पुं० [सं०] साँस। प्रश्वास [को०]।

विनिश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] उच्छ्वास। गहरी साँस। उसास [को०]।

विनिपूदित—वि० [सं०] पूर्ण रूप से उच्छिन्न या नष्ट किया हुआ [को०]।

विनिष्कंप—वि० [सं० विनिष्कम्प] स्थिर। अचल [को०]।

विनिष्टप्त—वि० [सं०] भली भाँति पकाया या भूना हुआ [को०]।

विनिष्पतित—वि० [सं०] आगे की ओर उछला या झपटा हुआ [को०]।

विनिष्पात—संज्ञा पुं० [सं०] तेजी से झपटना या टूट पडना [को०]।

विनिष्पाद्य—वि० [सं०] पूरा करने योग्य [को०]।

विनिष्पेष—संज्ञा पुं० [सं०] कुचलना। पीसना। मर्दित करना। रगडना। मलना [को०]।

विनिस्तंद्र—वि० [सं० विनिस्तन्द्र] तंद्राविहीन। निरलस। उ०—कुज्झटिका अट्टहास अंतर्हंग विनिस्तंद्र।—आराधना, पृ० १३।

विनिस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १. पारगमन। मुक्ति। छुटकारा। उद्धार। उ०—कठिन यह संसार, कैसे विनिस्तार, ऊर्मि का पाथार, कैसे करे पार।—अर्चना, पृ० ७५।

विनिस्मृत—वि० [सं०] निर्दिष्ट। स्मृत। कीर्तित। वर्णित। लिखित [को०]।

विनिहत¹—वि० [सं०] १ चोट खाया हुआ। आहत। २ विनष्ट। ध्वस्त। बरबाद। ३ मारा हुआ। मृत। ४ लुप्त। ५ पूरी तरह परास्त किया हुआ (को०)। ६ उपेक्षित। उल्लंघित। तिरस्कृत (को०)।

विनिहत²—संज्ञा पुं० १ कोई बडी या अनिवार्य विपत्ति। भाग्यदोष से या दैववात् आनेवाला संकट। २ धूमकेतु।

विनिहित—वि० १ नीचे रखा हुआ। २ जमाया हुआ। नियुक्त। ३ विकीर्ण। विभक्त। अलग किया हुआ।

विनिहितदृष्टि—वि० [सं०] जिसकी दृष्टि किसी वस्तु पर लगी हो [को०]।

विनिहितमना—वि० [सं० विनिहितमनस्] जिसने किसी बात का दृढ निश्चय कर लिया हो [को०]।

विनिह्नुत—वि० [सं०] १ छिपा हुआ। २ अस्वीकृत [को०]।

विनीत¹—वि० [सं०] १ जिसमें उत्तम शिक्षा का संस्कार और शिष्टता हो। विनययुक्त। सुशील। २. व्यवहार में अधीनता प्रकट करनेवाला। शिष्ट। नम्र। ३ जितेंद्रिय। ४ संयमी। ५ ग्रहण किया हुआ। ६ सिखाया हुआ। ७ दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ले गया हुआ। ८ जिसको तंबीह की गई हो। दंडित। शासित। ९ नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला। धार्मिक। १० प्रिय। मनोहर (को०)। ११ साफ सुथरा (कपडा आदि)।

विनीत²—संज्ञा पुं० १ वणिक्। बनिया। साहु। २ निकाला हुआ घोडा। ३ पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम। दमनक। दौने का पौधा। ५ सधाया हुआ बैल (को०)।

विनीतक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाहन। पालकी। २. वह जो वहन करे। वाहक। [को०]।

विनीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनीत होने का भाव। नम्रता।

विनीतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विनीतता। नम्रता [को०]।

विनीता—वि० स्त्री० [सं०] विनयवाली। नम्र (स्त्री)। उ०—कुछ नहीं कहा क्या सीता ने, वैदेही वधू विनीता ने ?—साकेत, पृ० १८५।

विनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विनय। सुशीलता। २ सद्व्यवहार। ३ सम्मान।

विनीय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। दोष। जुर्म। अपराध। २ तलछट [को०]।

विनील—वि० [सं०] गहरा नीला। नील वर्ण का [को०]।

विनीलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मृत देह जो नीला पड गया हो। नीला शव। (बौद्ध)।

विनु पु†—अव्य० [सं० विना] दे०, विना'।

विनुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। २ आश्वलायन श्रौत सूत्र के अनुसार एकाह कृत्य का नाम। ३ अपवारण। दूर करना (को०)।

विनुन्न—वि० [सं०] १ अपकारित। दूर किया हुआ। २ चोट खाया हुआ। घायल [को०]।

विनूट पु†—वि० [हिं० अनूठा?] दे० 'विनूठा'। उ०—अब सचिय सुद्र विनूट।—पृ० रा०, ६१। २११।

विनूठा†—वि० [हिं० अनूठा?] अनूठा। सुंदर। बढिया।

विने†—सर्व० [हिं० विन + ने] दे० 'वह'। उ०—मेरे घर कूँ मेहमान जो आएगा। के यो शीर खुरमाँ विन खाएगा।—दक्खिनी०, पृ० ३३१।

विनेता¹—संज्ञा पुं० [सं० विनेतृ] १ अगुआ। नेता। पथप्रदर्शक। २ अध्यापक। गुरु। शिक्षक। ३ दंड देनेवाला। ४ राजा। शासक [को०]।

विनेय¹—वि० [सं०] १ दंडनीय। शासन के योग्य। जिसको दंड दिया जाय। २ हटा देने या ले जाने लायक। नेतव्य। ३ शिक्षा देने योग्य। जिसे शिक्षा दी जाय [को०]।

विनेय[2]—स० पुं० शिष्य। वह जो शिक्षा ग्रहण करता हो। अंतेवासी। छात्र [को०]।

विनोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमे (किसी वस्तु के अभाव मे) किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णित की जाती है। जैसे—(क) जिय बिनु देह नदी बिनु वारी। तैसई नाथ पुरुष बिनु नारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कैसे नीके लगत ये बिनु संकोच के बैन।—बिहारी (शब्द०)

विनोद—सज्ञा पु० [सं०] १ कौतूहल। तमाशा। मनोरजक व्यापार। २ क्रीडा। खेल कूद। लीला। ३ प्रमोद। हँसी। दिल्लगी। परिहास। ४ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन। ५ एक प्रकार का प्रासाद। प्रमोदगृह। ६ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

यौ०—विनोदरसिक=क्रीडाशील। कौतुकी। विनोद मे आनद लेनेवाला। विनोदस्थान=आनददायक स्थान। क्रीडा विनोद की जगह।

७ हटाना। दूर करना। अपनयन। जैसे, श्रमविनोद (को०)। ८ औत्सुक्य। उत्सुकता। उत्कठा (को०)।

विनोदन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विनोदित, विनोदी] १ ऐसे व्यापार करना जिनका उद्देश्य केवल मनोरजन हो। आमोद प्रमोद करना। क्रीडा करना। खेल कूद करना। २ हँसी दिल्लगी या हास विलास करना। ३ आनद करना। ४. हटाना। दूर करना। अपवारण (को०)।

विनोदित—वि० [सं०] १. हर्षित। प्रसन्न। २ अपवारित। दूर किया या हटाया हुआ (को०)। ३. कुतूहलयुक्त।

विनोदी—वि० [स० विनोदिन्] [वि० स्त्री० विनोदिनी] १ कुतूहल करनेवाला। आमोद प्रमोद करनेवाला। क्रीडा करनेवाला। २ खेल कूद करनेवाला। चुहलबाज। ३ जिसका स्वभाव आमोद प्रमोद करने का हो। आनदी। ४ हटाने या दूर करनेवाला। अपवारण करनेवाला (को०)। ५ क्रीडाशील। खेलकूद या हँसी ठट्ठे मे रहनेवाला। उ०—श्याम विनोदी रे मधुबनिया। —सूर (शब्द०)।

विन्न वि० [स०] १ जाना हुआ। ज्ञात। २ प्राप्त। लब्ध। हासिल। ३ रखा हुआ। ४. विचारविमर्श किया हुआ। अनुसहित। विचारित। ५ अस्तित्वयुक्त। अस्तित्व या सत्ता रखनेवाला। ६. [स्त्री० विन्ना] परिणीत। विवाहित [को०]।

विन्नक—सज्ञा पु० [स०] अगस्त्य ऋषि [को०]।

विन्नप—सज्ञा पुं० [सं०] १. राजतरंगिणी के अनुसार एक राजा का नाम। २. अगस्त्य ऋषि [को०]।

विन्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] विवाहिता स्त्री [को०]।

विन्यय—सज्ञा पुं० [स०] दशा। स्थिति। [को०]।

विन्यसन—सज्ञा पुं० [स०] विन्यास करना [को०]।

विन्यस्त—वि० [स०] १. रखा हुआ। स्थापित। २ यथास्थान बैठाया हुआ। जडा हुआ। ३. करीने से लगा हुआ। ४. डाला हुआ। क्षिप्त। ५ सौंपा हुआ। समर्पित (को०)। ६. उपस्थित किया हुआ। प्रस्तुत (को०)।

विन्याक—सज्ञा पुं० [स०] वरियारा नाम का पौधा।

विन्यास—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विन्यस्त] १. स्थापन। रखना। धरना। उ०—शैली ने प्रबंधक्षेत्र मे भी अच्छी तरह घुमकर भावो की अनेकरूपता का विन्यास किया था।—रस०, पृ० ६६। २ यथास्थान स्थापन। ठीक जगह पर करीने से रखना या बैठाना। सजाना। रचना। ३ जडना। ४. किसी स्थान पर डालना। ५ सौंपना। समर्पण (को०)। ६ संग्रह। समवाय (को०)। ७ फैलाना। विस्तार करना (को०)। ८ आधार। स्थान (को०)। ९ स्थिति। जैसे, अगविन्यास (को०)।

विपचनक—सज्ञा पुं० [स० विपञ्चनक] ज्योतिषी। भविष्यद्वक्ता [को०]।

विपचिक—सज्ञा पुं० [स० विपञ्चिक] [स्त्री० विपचिका] भविष्यद्वक्ता [को०]।

विपचिका, विपची—सज्ञा स्त्री० [स० विपञ्चिका, विपञ्ची] १ एक प्रकार का बाजा जिसमे तार लगे रहते हैं। एक प्रकार की वीणा। उ०—(क) नवल वसत धुनि सुनिए विपची नाद पंचम सुरनि ठानि ओठनि अमेठिए।—देव (शब्द०)। (ख) तंत्री वीणा वल्लभी बहुरि विपंची आहि।—नंददास (शब्द०)। २ केलि। क्रीडा। खेल।

विप—वि० [सं०] विद्वान् [को०]।

विपक्त्रिम—वि० [स०] विपक्व। पका हुआ। परिपक्व [को०]।

विपक्व—वि० [स०] १ खूब पका हुआ। २ पूर्ण अवस्था को प्राप्त। ३ जो पका न हो। कच्चा।

विपक्ष[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ विरुद्ध पक्ष। किसी बात के विरुद्ध दूसरी स्थिति। २ शत्रु या विरोधी का पार्श्व। ३ विरोध करनेवाला दल। शत्रु पक्ष। विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। दूसरा फरीक। जैसे—विपक्ष मे जाना। ४ प्रतिवादी या शत्रु। विरुद्ध दल का मनुष्य। ५ किसी बात के विरुद्ध की स्थापना। विरोध। खडन। जैसे,—इसके विपक्ष मे तुम्हे क्या कहना है? ६ व्याकरण मे किसी नियम के विरुद्ध व्यवस्था बाधक नियम। अपवाद। ७. न्याय या तर्क शास्त्र मे वह पक्ष जिसमे साध्य का अभाव हो। ८. वह दिन जब पक्ष बदले (को०)। ९ निष्पक्ष होने का भाव। निष्पक्षता। पक्षविहीनता (को०)।

विपक्ष[2]—वि० १. विरुद्ध। खिलाफ। प्रतिकूल। २. उलटा। विपरीत। ३ जिसके पक्ष मे कोई न हो। जिसका कोई तरफदार न हो। बिना पक्ष का। ४ बिना पर या डैने का। पक्षहीन।

यौ०—विपक्षभाव, विपक्षवृत्ति=दे० 'विपक्षता'। विपक्षरमणी।

विपक्षता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरुद्ध पक्ष का अवलंबन। २. विपक्ष होने की क्रिया या भाव। खिलाफ होना।

विपक्षरमणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी किसी अन्य स्त्री से प्रतिद्वंद्विता हो [को०]।

विपक्षी—संज्ञा पुं० [सं० विपक्षिन्] १ विरुद्ध पक्ष का। दूसरी तरफ का। २ शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी। फरीक सानी। ३ बिना पक्ष का। बिना पख या डैने का।

विपच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विपक्ष, प्रा० विपच्छ] १ दे० 'विपक्षी'। २ बिना पख या डैने का। उ०—गिरिहै विपच्छ बनाइ। —गुमान (शब्द)।

विपज्जन्य—वि० [सं० विपद्+जन्य] दुखी। पीडित। उ०—जन विपज्जन्य होकर अगर आपके—आराधना, पृ० १६।

विपण, विपणन—संज्ञा पुं० [सं०]

विपणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूकान। २ विक्रय का सामान। ३ व्यापार। ४ विक्रय। ५ बाजार। उ०—अपने इन विहारो के दौरान मे कर्मशाला, सभा, कूप, विपणि, निर्माणशाला—इन सब आवासस्थानो मे।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२५।

यौ०—विपणिकर्म। विपणिगत=बाजार मे उपलब्ध या प्राप्त। विपणिजीविका=व्यापारजीवी। व्यवसायी। विपणिपथ=बाजार का मार्ग। पण्यवीथी।

विपणिकर्म—संज्ञा पुं० [सं० विपणिकर्मन्] दूकानदारी। व्यापार।

विपणी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विपणि'।

विपणी[२]—संज्ञा पुं० [सं० विपणिन्] व्यापारी [को०]।

विपण्यु—वि० [सं०] १ जिसने अपना रोजगार धधा छोड दिया हो। २ अन्यमनस्क [को०]।

विपताक—वि० [सं०] पताकारहित। ध्वजविहीन [को०]।

विपतित—वि० [सं०] १ गिरा हुआ। २ उडा हुआ [को०]।

विपत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विपद्'।

यौ०—विपत्कर=कष्टकर। विपत्ति पैदा करनेवाला। विपत्काल=बुरा समय। विपज्जन्य। विपत्फल=जिससे सकट उठाना पडे। विपत्संकुल=विपत्तियो, आपत्तियो से भरा हुआ। उ०—छोटे छोटे राज्यो से हो गया विपत्संकुल यह देश।—अपरा, पृ० २१६। विपत्सागर=बहुत बड़ा सकट। विपत्तियो का समुद्र।

विपत्ति[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कष्ट, दुख या शोक की प्राप्ति। भारी रज या तकलीफ का आ पड़ना। आफत। २ क्लेश या शोक की स्थिति। रज या तकलीफ की हालत। सकट की अवस्था। बुरे दिन। जैसे,—विपत्ति मे कोई साथी नही होता।

क्रि० प्र०—आना।—पडना।

मुहा०—विपत्ति उठाना=सकट या कष्ट सहना। रज या तकलीफ बरदाश्त करना। विपत्ति काटना=सकट या कष्ट के दिन बिताना। रज या तकलीफ मे रहना। विपत्ति झेलना=कष्ट या शोक सहना। (किसी पर) विपत्ति डालना=(किसी को) शोक या दुख पहुँचाना। किसी को रज या तकलीफ में डालना। (किसी पर) विपत्ति ढहना=सहसा कोई दुख या शोक उपस्थित होना। एक बारगी आफत आना। विपत्ति मे डालना=सकट या दुख की अवस्था मे करना। विपत्ति मे पडना=शोक, दुख या सकट की दशा को प्राप्त होना। विपत्ति भुगतना या भोगना=शोक, दुख या संकट सहना। ३ कठिनाई। झझट। बखेडा।

मुहा०—विपत्ति मोल लेना=व्यर्थ अपने ऊपर झझट लेना। बखेडे मे पडना। विपत्ति सिर पर लेना=व्यर्थ झझट मे पडना। दिक्कत मे पड़ना।

४ मृत्यु। नाश। विध्वस (को०)। ५ समाप्ति।

विपत्ति[२]—संज्ञा पुं० श्रेष्ठ पदाति। पैदल सिपाही। प्यादा [को०]।

विपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुमार्ग। बुरी राह। खराब रास्ता। २ बगल का रास्ता। ३ बुरी चाल चलन। मद आचरण। ४ एक प्रकार का रथ।

यौ०—विपथगति=कुमार्ग गमन। विपथगमन। विपथगा। विपथगामी।

विपथगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरिता। नदी। २ वह जो कुमार्ग पर चले [को०]।

विपथगामिन्—वि० [सं० विपथगामिन्] [वि० स्त्री० विपथगामिनी] कुमार्गगामी। विरुद्ध मार्ग पर चलनेवाला। उ०—विपथगामी होने पर, वही सकेत करके मनुष्य का अनुशासन करती है।—आँधी, पृ० २०।

विपद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत। सकट।

विपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत। दुख, शोक या संकट।

यौ०—विपद्गत= विपत्ति मे पडा हुआ। विपद्ग्रस्त=विपन्न। आफत का मारा। विपद्दशा=सकट की स्थिति। विपद्युक्त=विपत्तिग्रस्त। अभागा।

विपन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विपिन] जगल। विपिन। उ०—विपन विहर ऊपल अकल सकल जीव जड जाल।—पृ० रा०, ६।१४।

विपन्न[१]—वि० [सं०] १ जिसपर विपत्ति पडी हो। विपत्ति मे पडा हुआ। मुसीबत का मारा। २ दुखी। आर्त। ३ कठिनाई या झझट मे पडा हुआ। ४ भूला हुआ। भ्रम मे पडा हुआ। ५ विध्वस्त। नष्ट (को०)। ६ मृत।

विपन्न[२]—संज्ञा पुं० सर्प [को०]।

विपन्नक—वि० [सं०] १ भाग्यहीन। २ मृत। ३ नष्ट [को०]।

विपन्नाव—संज्ञा स्त्री० [सं० विपद्+हिं० नाव] विपत्ति या भँवर मे पडी हुई नौका। उ०—जीवन बिना अन्न के विपन्नाव। —अर्चना, पृ० ८५।

विपरिक्रांत—वि० [सं० विपरिक्रान्त] वीर। साहसी। हिम्मतवर [को०]।

विपरिच्छिन्न—वि० [सं०] १ कर्तित। कटा हुआ। २ विध्वस्त। नष्ट [को०]।

विपरिणति—संज्ञा स्त्री० [सं०] परिणाम। परिवर्तन। उ०—वह यह सिद्ध करने का जतन करता था कि मानव इतिहास का विकास प्राकृतिक प्रभावो की विपरिणतियो का ठीक अनुसरण करता है।—भारत नि०, पृ० ३।

विपरिणमन—संज्ञा पुं० [सं०] परिवर्तन [को०]।

विपरिणाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिवर्तन। २ रूपपरिवर्तन। रूपांतरण। ३. प्रौढि [को०]।

विपरिणामी—वि० [सं० विपरिणामिन्] परिवर्तनशील [को०]।

विपरिधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशिष्ट परिधान। विशिष्ट प्रकार का पहनावा। २ विनिमय। लेनदेन [को०]।

विपरिवर्तन[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लौटना। घूमना। २ चक्कर खाना [को०]।

विपरिवर्तन[2]—वि० लौटानेवाला [को०]।

विपरिवर्तनी विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या या मंत्र जो किसी व्यक्ति को दूर से खींच लाए [को०]।

विपरिवर्तित—वि० [सं०] लौटा या लौटाया हुआ [को०]।

विपरिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] लौटना [को०]।

विपरीत[1]—वि० [सं०] १. जो मेल में या अनुरूप न हो। जो विपर्यय के रूप में हो। उलटा। विरुद्ध। खिलाफ। २ किसी की इच्छा या हित के विरुद्ध। प्रतिकूल। जैसे,—विपरीत आचरण। ३ अनिष्टसाधन में तत्पर। रुष्ट। जैसे,—दैव या विधि का विपरीत होना। ४ हितसाधन के अनुपयुक्त। दुःखद। जैसे,—विपरीत समय। उ०—आजु विपरीत समय सब ही विपरीत है। (शब्द०)। ५ मिथ्या। असत्य (को०)। ६. व्यत्यस्त अर्थात् उलटा वा प्रतिकूल अभिनय करनेवाला (को०)।

विपरीत[2]—संज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार एक अर्थालंकार, जिसमें कार्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है। जैसे,—'राधा जू सों कहा कहौं दूतिन की मानै सीख साँपनी सहित विषरहित फनिन की। क्यों न पैर बीच, बीच आँगे यौं न सहि सकैं, बीच परी अगना अनेक आँगननि की'। (यहाँ दूती को साधक होना चाहिए था, पर वह बाधक हुई)। २ सोलह प्रकार के रतिबंधों में से दसवाँ रतिबंध।

यौ०—विपरीतकर, विपरीतकारक, विपरीतकृत = उलटा काम करनेवाला। विपरीतचेता। विपरीतमान। विपरीतरत = विपरीतरति। विपरीतलक्षणा। विपरीतवृत्ति।

विपरीतक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] विपरीतरति [को०]।

विपरीतक[2]—वि० प्रतिकूल। विपरीत [को०]।

विपरीतकरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग की एक क्रिया। उ०—विपरीतकरणी पुनि बज्रोली शक्ति चालन कीजिए।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ५०।

विपरीतकारी—वि० [सं० विपरीतकारिन्] विपरीत या उलटा काम करनेवाला। प्रतिकूल कार्य करनेवाला (को०)।

विपरीतचेता—वि० [सं० विपरीतचेतस्] उलटी बुद्धिवाला [को०]।

विपरीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपरीत होने का भाव।

विपरीतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विपरीतता' [को०]।

विपरीतरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार संभोग का एक प्रकार जिसमें पुरुष नीचे की ओर चित लेटा रहता है और स्त्री उसके ऊपर लेटकर संभोग करती है। कामशास्त्र में इसे पुरुषायित संबंध कहा है। इसके कई भेद कहे गए हैं।

विपरीतलक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंग्यात्मक उक्ति जो विरोधी बात द्वारा व्यक्त की जाय [को०]।

विपरीतवृत्ति—वि० [सं०] उलटा काम करनेवाला।

विपरीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री।

विपरीतार्थ—वि० [सं०] जिसका अर्थ उलटा हो।

विपरीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विपरीत'।

विपरीतोपमा—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी भाग्यवान् व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और वह अतिहीन दशा में दिखाया जाय। यथा,—देखिए मंडित दंडन सों, भुजदंड दोऊ असि दंड विहीनो। राजति श्री रघुनाथ के राज कुमंडल छाड़ि कमंडल लीनो।—केशव (शब्द०)।

विपर्जय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विपर्यय] दे० 'विपर्यय—३'। उ०—तब साधै हठ जोग विपर्जय को घर पावै। प्रान करै आयाम पुरुष तब नजरि में आवै।—पलटू०, पृ० ३६।

विपर्णक[1]—वि० [सं०] पर्णरहित। बिना पत्तों का।

विपर्णक[2]—संज्ञा पुं० पलाश का पेड़। टेसू।

विपर्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वस्तु का दूसरी के स्थान पर और दूसरी का पहली के स्थान पर होना। उलट पुलट। इधर का उधर। जैसे,—वर्णविपर्यय। २ ऐसा परिवर्तन जिसमें दो वस्तुओं की स्थिति पूर्वस्थिति से विरुद्ध हो जाय। जैसी चाहिए, उससे विरुद्ध स्थिति। और का और। व्यतिक्रम। ३ मिथ्या ज्ञान। और का और समझना।

विशेष—योग दर्शन के अनुसार 'विपर्यय' चित्त की पाँच प्रकार की वृत्तियों (प्रमाण, विकल्प आदि) में से एक है। जैसे,—रस्सी को साँप या सीप को चाँदी समझना। यथार्थ ज्ञान द्वारा इसका निराकरण होता है। इस 'विपर्यय' या विपरीत ज्ञान के पाँच अवयव कहे गए हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। इन्हीं को सांख्य में क्रमशः तम, मोह, महामोह तामिस्र और अंधतामिस्र कहते हैं।

४ भ्रम। भूल। गलती। समझ का फेर। ५. गड़बड़ी। अव्यवस्था। ६ नाश। विनाश। ७. अदल बदल। विनिमय (को०)। ८. शत्रुता (को०)। ९ वैर। विरोध (को०)। १०. प्रलय (को०)। ११ अभाव। अनस्तित्व (को०)।

विपर्यस्त—वि० [सं०] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। जो उलट पलट गया हो। जो इधर का उधर हो गया हो। २ अस्त व्यस्त। गड़बड़। चौपट। ३ मिथ्याज्ञानजन्य। और का और समझा हुआ। भूल से वास्तविक समझा हुआ (को०)।

विपर्यस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे लड़का न होता हो।

विपर्याण—वि० [सं०] पर्याणहीन। जिसपर पलान न हो। जिसमें चारजामा न हो [को०]।

विपर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विपर्यस्त] १ विपर्यय। उलट पलट। इधर का उधर। व्यतिक्रम। २. पूर्व से विरुद्ध स्थिति। एक वस्तु का दूसरी के स्थान पर होना। ३. जैसा चाहिए,

उसके विरुद्ध स्थिति । और का और । ४ मिथ्या ज्ञान । और का और समझना ।

विशेष—न्याय में अप्रमात्मक बुद्धि का नाम विपर्यास है । जैसे,—रस्सी को साँप समझना ।

विपल—संज्ञा पुं० [सं०] समय का एक अत्यंत छोटा विभाग जो एक पल का साठवाँ भाग होता है ।

विपलायन—संज्ञा पुं० [सं०] इतस्तत भागना । पलायन । इधर उधर भागना [को०] ।

विपलायित वि० [सं०] १ खदेड़ा या भगाया हुआ । २ पलायित । भागा हुआ [को०] ।

विपलायी—वि० [सं० विपलायिन्] इधर उधर पलायन करने या भागनेवाला [को०] ।

विपलाश—वि० [सं०] विपर्ण । पलाशहीन । पत्रविहीन [को०] ।

विपवन¹—वि० [सं०] [वि० विपवनीय, विपव्य] १ विशेष रूप से पवित्र करनेवाला । २. वायुरहित । पवनरहित ।

विपवन²—संज्ञा पुं० विशुद्ध पवन । साफ हवा ।

विपव्य—वि० [सं०] विशेष रूप से शुद्ध या पवित्र करने योग्य [को०] ।

विपशी—संज्ञा पुं० [सं० विपशिन्] एक बुद्ध का नाम ।

विपश्चित्—वि० [सं०] पंडित । बुद्धिमान् । सूक्ष्मदर्शी । उ०—तेहि कारण शिव गग तेहि गहै विपश्चित लोक । याहि मे मज्जन किए ते मिटै महा अघ शोक ।—शं० दि० (शब्द०) ।

विपश्यन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृत ज्ञान । यथार्थ बोध । (बौद्ध) ।

विपश्यी—संज्ञा पुं० [सं० विपश्यिन्] एक बुद्ध का नाम ।

विपश्वी—संज्ञा पुं० [सं० विपश्विन्] बुद्ध का एक नाम [को०] ।

विपस्—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेधा । बुद्धि । २ ज्ञान । समझ ।

विपहुर(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वि+प्रहर, प्रा० वि+पहर] द्वितीय प्रहर । दुपहर ।—पृ० रा०, ६१ । १७०८ ।

विपाडु—वि० [सं० विपाण्डु] स्वर्णाभ । पीला [को०] ।

विपाडुर—वि० [सं० विपाण्डुर] पीत । पीला [को०] ।

विपाडुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा ।

विपांसुल—वि० [सं०] जिसमे धूल न हो [को०] ।

विपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिपक्व होना । पचन । पकना । २ पूर्ण दशा को पहुँचना । तैयारी पर आना । चरम उत्कर्ष । ३ फल । परिणाम । ४ कर्म का फल ।

विशेष—योग दर्शन मे यह विपाक तीन प्रकार का कहा गया है—जाति (जन्म), आयु और भोग ।

५ खाए हुए भोजन का पेट मे पचना । खाद्य द्रव्य की पेट के अंदर रस रूप मे परिणति । ६ दुर्गति । दुर्दशा । ७ स्वाद । जायका । ८ पकाना । परिपक्व करना । ९ मुरझाना । कुम्हलाना (को०) ।

यौ०—विपाककाल = पूर्णता या परिपक्व होने का समय । विपाकदारुण = जिसका परिणाम दु खद हो । विपाकदोष = पाचनक्रिया का दोष या कुप्रभाव । अजीर्ण ।

विपाट्—संज्ञा स्त्री० [सं० विपाश्] एक नदी । विशेष—दे० 'विपाशा' [को०] ।

विपाट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वाण ।

विपाटक वि० [सं०] १ विपाटन करनेवाला । उत्पाटित करनेवाला । उखाड़नेवाला । खोदनेवाला । अपहर्ता । अपहारक (को०) ।

विपाटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ उखाड़ना । खोदना । २ खड खड करना (को०) । ३ अपहरण (को०) ।

विपाटल—वि० [सं०] गहरा लाल । विशेष लाल [को०] ।

विपाटित—वि० [सं०] १ उखाड़ा हुआ । उन्मूलित । खोदा हुआ । २ खड खड किया हुआ । अलग किया हुआ । ३ अपहृत । [को०] ।

विपाठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार लंबा वाण । तीर ।

विपात—संज्ञा पुं० [सं०] पातन । नाश ।

विपातक—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाश करनेवाला । नाशक । २ गला देनेवाला । पिघलानेवाला ।

विपातन—संज्ञा पुं० [सं०] १. गलाना । २ नाश करना ।

विपादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विपादित] वध । हत्या । नाश ।

विपादिका - संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुष्ठ रोग का एक भेद । अपरस ।

विशेष—यह पैर मे होता है । इसम उँगलियो के पास से ऊपर तक चमडे मे दरारें पड जाती हैं और बडी खुजली होती है । पीडा के कारण पैर नही रखा जाता है ।

२. प्रहेलिका । पहेली ।

विपादित—वि० [सं०] विनाशित । नष्ट किया हुआ ।

विपाद्य—वि० [सं०] नाश करने योग्य । मारने योग्य । वध्य [को०] ।

विपाप—वि० [सं०] पापरहित । निष्पाप [को०] ।

विपापा - संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक नदी का नाम ।

विपाप्मा—वि० [सं० विपाप्मन्] निष्पाप [को०] ।

विपाल—वि० [सं०] (पशु) जिसका कोई पालनेवाला या मालिक न हो । (स्मृति) ।

विपाश—वि० [सं०] पाशरहित । बंधनमुक्त । निर्बंध [को०] ।

विपाशन—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्त करानेवाला [को०] ।

विपाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास नदी जो पंजाब मे है । विशेष दे० 'विपासा' ।

विपासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की एक नदी । व्यास ।

विशेष—ऋग्वेद मे इस नदी का उल्लेख शतुद्री (सतलज) के साथ है ।

विपिन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन । जंगल । २. उपवन । वाटिका ।

विपिन²—वि० भयानक । डरावना ।

विपिनचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन मे रहनेवाला । वनचर । २. जंगली आदमी । ३ पशु पक्षी आदि ।

विपिनतिलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, नगण, और दो रगण (न, स, न, र, र अर्थात् ।।।, ।।ऽ, ।।।, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ होते हैं ।

विपिनपति—संज्ञा पुं० [सं०] वन का राजा, सिंह। उ०—जिमि भेरी रव ते विपिनपति रिसि दुचग मन मे धरत। तिमि नरवौ प्रवीन उनाल गति गुरु मिसार करि समर रत।—गोपाल (शब्द०)।

विपिनविहारी—संज्ञा पुं० [सं० विपिन + विहारिन्] १ वन में विहार करनेवाला। वनचारी। २. कृष्ण का एक नाम। उ०—दरसन पाइ अकित भई नारी। कहत भए तब विपिनविहारी।—विश्राम (शब्द०)।

विपिनौका—संज्ञा पुं० [सं० विपिनौकस्] १ बंदर। २ बनमानुस। ३ वन में रहनेवाला मनुष्य [को०]।

विपुंसक—वि० [सं०] पुंसत्वरहित। पुरुषत्व से हीन।

विपुंसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी चेष्टा, स्वभाव या आकृति पुरुषों जैसी हो।

विपुत्र—वि० [सं०] [स्त्री० विपुत्रा] पुत्ररहित। पुत्रहीन।

विपुन(पु)—संज्ञा पुं० [?] पक्ष। पखवारा। उ०—पक्ष हारयौ पौमू विपुन अर्धमास बल जान। पक्ष जु पक्ष हरि राखिए जातें होइ कल्यान।—नंद० ग्रं०, पृ० ६७।

विपुर—वि० [सं०] जो एक स्थान पर न रहे [को०]।

विपुल'—वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २ वृहत्। बड़ा। ३ अगाध। बहुत गहरा। ४. रोमांचित (को०)।

विपुलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २. मगध देश की प्राचीन राजधानी राजगृह के पास की एक पहाड़ी। ३ हिमालय। ४. एक देवीपीठ। देवी का एक प्रधान स्थान जहाँ की देवी का नाम विपुला है। ५. रोहिणी से उत्पन्न वसुदेव के एक पुत्र का नाम। उ०—विपुल विपुल बल संख्या रखत रन में पुलकर को।—गोपाल (शब्द०)। ६. समादृत व्यक्ति। संमानित व्यक्ति (को०)।

विपुलक—वि० [सं०] १. बहुत चौड़ा। २ जिसे रोमांच न हो। पुलकरहित।

विपुलग्रीव—वि० [सं०] जिसकी गर्दन लंबी हो [को०]।

विपुलच्छाय—वि० [सं०] (वृक्ष) जो घना छायावाला हो [को०]।

विपुलजघना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथु या बड़े नितंबोंवाली स्त्री [को०]।

विपुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आधिक्य। बहुतायत। बड़ाई। उ०—खड़ी बोली में उसकी भी विपुलता है।—अर्चना (भू०), पृ० 'त'।

विपुलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विपुलता'।

विपुलपार्श्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

विपुलद्रव्य—वि० [सं०] जिसके पास प्रचुर धन हो [को०]।

विपुलप्रज्ञ, विपुलबुद्धि—वि० [सं०] दे० 'विपुलमति'।

विपुलमति—वि० [सं०] बहुत बुद्धिवाला। बहुत बुद्धिमान्।

विपुलमति'—संज्ञा पुं० १ एक बोधिसत्व का नाम। २. जैनों के अनुसार मनःपर्याय ज्ञान का एक भेद। उ०—मनःपर्याय ज्ञान के दो भेद हैं—ऋजुमति,'''और विपुलमति जो दूसरे के मन में सरलता तथा जटिलता से ठहरे हुए पदार्थों का ज्ञाता है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २४२।

विपुलरस—संज्ञा पुं० [सं०] गन्ना। ईख [को०]।

विपुलश्रोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विपुलजघना' [को०]।

विपुलस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० विपुलस्कन्ध] अर्जुन का एक नाम।

विपुलस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुवार। घृतकुमारी [को०]।

विपुलहृदय—वि० [सं०] विशाल हृदयवाला। उदारचेता।

विपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। वसुधा। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते है। ३ आर्या छंद के तीन भेदों में से एक भेद जिसके प्रथम चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १४ और चौथे में १३ मात्राएँ होती है। ४. विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ५. एक प्रसिद्ध सती जो बहुला के नाम से प्रसिद्ध है। ६ एक ताल का नाम। (संगीत)।

विपुलाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विपुल + हिं० आई (प्रत्य०)] विपुलता। अधिकता। ज्यादती। उ०—को कहि सक कपि दल विपुलाई।—मानस, ६.४।

विपुलास्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घृतकुमारी। घीकुवार। ग्वारपाठा।

विपुलेक्षण—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विपुलेक्षणा] विशाल नेत्रोंवाला। बड़ी आँखोंवाला [को०]।

विपुलोरस्क—वि० [सं०] जिसका उरस्क चौड़ा हो। चौड़ी छाती-वाला। विशाल वक्षवाला [को०]।

विपुष्ट—वि० [सं०] दुर्बल। जिसे पर्याप्त पोषण न मिला हो [को०]।

विपुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नति। समृद्धि। अभ्युदय [को०]।

विपुष्पित—वि० [सं०] हर्षित। प्रफुल्ल।

विपूय—संज्ञा पुं० [सं०] मुंज तृण। मूँज।

विपूयक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सड़ी हुई वस्तु की गंध। सड़ाँध। २. सड़ा हुआ शव (बौद्ध)।

विपृक्—वि० [सं० विपृच्] अलग। जुदा। पृथक् [को०]।

विपृक्त—वि० [सं०] असंयुक्त। अलग किया हुआ। वियुक्त [को०]।

विप्रुवत्—वि० [सं०] शुद्ध। बेमेल। निर्मल [को०]।

विपोहना(पु)—क्रि० स० [सं० वि + प्रोत] १. पोछना। साफना। २. नाश करना। मिटाना। उ०—ज्यों दिन जग अमृत को जो जग लाल विलोचन पाप विपोहै।—केशव (शब्द०)। ३. दे० 'पोहना'।

विप्पन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विपिन, प्रा० विपन, विपन्न] दे० 'विपिन'। उ०—बगुर घेरि विप्पन घन गुंजत में गंठिय। तहँ तुरक इक रहिम हाँक पंदा दिय दिठिय।—पृ० रा०, ६।१६७।

विप्प(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विप्र, प्रा० विप्प] दे० 'विप्र'। उ०—ग्यारह राह मुख दरस कीर। जिन अम्म पुच्छ कर नाथ नीर। कार आवध्यम सति एव कोपि। देखो न विप्प बर बुद्ध धोपि।—पृ० रा०, १।६६६।

विप्र'—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्राह्मण।

विशेष—जो यजन, याजन आदि कर्म पूर्ण रीति से करता है वह विप्र है। विशेष दे॰ 'ब्राह्मण'।

२ पुरोहित। यज्ञ करानेवाला। ३ वेदमंत्रों को जाननेवाला। कर्मनिष्ठ। स्तवन करनेवाला। स्तुतिपाठक। ४. शिरीष वृक्ष। सिरिस का पेड़। ५ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ६ पीपर का पौधा जो औषध के काम में आता है। रेणुक। ७ भाद्रपद मास (को॰)। ८ चंद्रमा (को॰)। ९ बुद्धिमान् व्यक्ति।

विप्र²—वि॰ मेधावी। बुद्धिमान्।

विप्रक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विप्र+क (प्रत्य॰)] निम्न ब्राह्मण। क्षुद्र वा कुत्सित ब्राह्मण (को॰)।

विप्रकर्ता—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विप्रकर्तृ] वह जो विप्रकार करे। अपकार या तिरस्कार करनेवाला व्यक्ति (को॰)।

विप्रकर्ष, विप्रकर्षण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ विप्रकृष्ट] १ दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २ किसी कर्म या कृत्य का अंत। ३ अंतर। दूरी। फासला (को॰)। ४ बिलगाव। अलगाव। भेद। फर्क (को॰)।

विप्रकार¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ विप्रकृत] १. तिरस्कार। अनादर। २ उपकार। ३ विभिन्न या विविध प्रकार। अनेक ढंग (को॰)। ४ प्रतिशोध। बदला (को॰)। ५ क्षति। हानि (को॰)।

विप्रकार²—अव्य॰ विविध प्रकार से।

विप्रकारी—वि॰ [सं॰ विप्रकारिन्] १ तिरस्कार करनेवाला। २. विरोधी। ३ बदला लेनेवाला (को॰)।

विप्रकाष्ठ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] नरमा या कपास का पौधा।

विप्रकीर्ण—वि॰ [सं॰] १ बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पड़ा हुआ। २ अस्त व्यस्त। अव्यवस्थित। गड़बड़। ३ चौड़ा। विस्तृत। फैला हुआ (को॰)।

विप्रकुंड—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विप्रकुण्ड] ब्राह्मण की जारज संतान (को॰)।

विप्रकृत—वि॰ [सं॰] १ तिरस्कृत। २. जिसकी हानि की गई हो (को॰)।

विप्रकृति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ विप्रकार। अपकार। २ परिवर्तन। भिन्नता। रद्दोबदल (को॰)।

विप्रकृष्ट¹—वि॰ [सं॰] १. खींचकर दूर किया हुआ। २ जो दूरी पर हो। दूरस्थ। ३ फैलाया हुआ। विस्तारित (को॰)।

विप्रकृष्ट²—संज्ञा पुं॰ [सं॰] किसी ऋतु में संचित हुए कफ, पित्त आदि का अन्य ऋतु में कुपित होना। उ॰—विप्रकृष्ट उसे कहते हैं जैसे हेमंत ऋतु में संचित हुआ कफ वसंत ऋतु में कुपित होता है।—माधव॰, पृ॰ ३।

विप्रकृष्टक—वि॰ [सं॰] दूरवर्ती। दूरस्थ। जो फासले पर हो (को॰)।

विप्रगीत—वि॰ [सं॰] जिसके विषय में मतैक्य न हो (जैन)।

विप्रग्रह—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ब्रह्मराक्षस (को॰)।

विप्रचरण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रचरन(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विप्रचरण] दे॰ 'विप्रचरण'। उ॰—(क) उर बनमाल पदिक अति शोभित विप्रचरन, चित कहँ करषै।—तुलसी (शब्द॰)। (ख) उर मनि हार पदिक की सोभा। विप्रचरन देखत मन लोभा।—तुलसी (शब्द॰)।

विप्रचित्—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'विप्रचित्ति'।

विप्रचित्ति—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक दानव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु की उत्पत्ति हुई थी।

विप्रच्छन्न—वि॰ [सं॰] छिपा हुआ। अंतर्हित। प्रच्छन्न (को॰)।

विप्रणाश—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विनाश। नाश। प्रणाश (को॰)।

विप्रता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] ब्राह्मणत्व।

विप्रतापस—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ब्राह्मण तपस्वी।

विप्रतारक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बहुत धोखा देनेवाला।

विप्रतारित—वि॰ [सं॰] जिसने धोखा खाया हो। जो छला गया हो (को॰)।

विप्रतिकार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ खंडन। विरोध। २ प्रतिकार। प्रतिशोध (को॰)।

विप्रतिकृत—वि॰ [सं॰] जिसका विप्रतिकार किया गया हो। जिसका प्रतिशोध किया गया हो (को॰)।

विप्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ विरोध। मेल न बैठना। जैसे,—मनुष्यों के स्वार्थ की विप्रतिपत्ति। (मिताक्षरा)। २ ऐसा कथन जिसके अंदर दो ऐसी बातें हों जो एक के साथ न हो सकती हों। परस्पर विरुद्ध वक्तव्य। (न्याय)।

विशेष—जैसे कोई कहे कि वहाँ अग्नि है और नहीं है तो उसका यह कथन विप्रतिपत्ति का उदाहरण होगा।

३ किसी बात का बिलकुल उलटा निरूपण। किसी बात में ऐसा नतीजा निकालना जो ठीक न हो। विपरीत प्रतिपत्ति। असिद्धि। उ॰—उनमें विप्रतिपत्ति न हो, उनमें यथार्थता हो।—पा॰ सा॰ सि॰, पृ॰ १३२। ४. प्रसिद्धि का अभाव। अख्याति। ५ कुख्याति। बदनामी। ६. गलत धारणा। भ्रांत धारणा (को॰)। ७ पारस्परिक संबंध। परिचय। जान पहचान (को॰) ८ हैरानी। घबड़ाहट (को॰)। ९ चातुर्य। विदग्धता (को॰)। १०. किसी कृत्य या पूजन का वह विकृति जो प्रतिनिधि द्रव्य का नाम लेने से होती है।

विशेष—किसी कृत्य या पूजन में जो द्रव्य विहित है, उसके अभाव में यदि कोई दूसरा द्रव्य प्रतिनिधि रूप में रखा जाय, तो समर्पण वाक्य में प्रतिनिधि द्रव्य का नाम न लेकर जिसके अभाव में वह द्रव्य रखा गया हो, उसी का नाम कहना चाहिए। प्रतिनिधि द्रव्य का नाम लेने से पूजा विकृत हो जाती है।

विप्रतिपद्य—वि॰ [सं॰] १ जो अनेक प्रकार से सिद्ध किया जाय। अनेक ढंग से सिद्ध किया जानेवाला। २ जिसका खंडन या विरोध किया जाय (को॰)।

विप्रतिपद्यमान—वि॰ [सं॰] पाप करनेवाला। पापात्मा।

विप्रतिपन्न—वि॰ [सं॰] १. विप्रतिपत्तियुक्त। संदेहयुक्त। २ अस्वीकृत। ३. जो साबित न हुआ हो। असिद्ध। ४. व्याकुल।

घबड़ाया हुआ। हतबुद्धि। किंकर्तव्यविमूढ़ (को०)। ५ परस्पर संयुक्त या संबद्ध (को०)।

यौ०—विप्रतिपन्न बुद्धि = जिसकी धारणा गलत हो।

विप्रतिषिद्ध—वि० [सं०] १ जिसका निषेध किया गया हो। जो मना हो। निषिद्ध। (स्मृति)। २ विरुद्ध। खिलाफ। उलटा। ३ निवारित। वर्जित।

विप्रतिषेध—संज्ञा पुं० [सं०] १ दो बातों का परस्पर विरोध, मेल न बैठना २. नियंत्रण या वश में रखना (को०)। ३ प्रतिषेध। रोक। वर्जन (को०)। ४ व्याकरण में समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की एक स्थान पर उपस्थिति। जहाँ दो प्रसंग अन्वयार्थ एक साथ प्राप्त हों—यत्र द्वौ प्रसंगान्वयार्थौ एकस्मिन् प्राप्नुतः स विप्रतिषेध (काशिका)।

विप्रतिसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुताप। पछतावा। २ रोष। क्रोध। ३ दुष्टता।

विप्रतिसारी—वि० [सं० विप्रतिसारिन्] दुःखी। अनुतप्त (को०)।

विप्रतीप—वि० [सं०] उलटा। प्रतिकूल (को०)।

विप्रतीसार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विप्रतिसार'।

विप्रत्यनीक, विप्रत्यनीयक—वि० [सं०] शत्रुतापूर्ण। वैरभाव से युक्त (को०)।

विप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] अविश्वास (को०)।

विप्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मणत्व।

विप्रथित—वि० [सं०] विख्यात। मशहूर।

विप्रदह—संज्ञा पुं० [सं०] सूखा फल, कंद, मूल आदि (को०)।

विप्रदुष्ट—वि० [सं०] १ पापरत। २. कामी। ३ मद। नष्ट।

विप्रधर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीड़ा। क्लेश। दुःख। २ विरक्ति। व्यग्रता (को०)।

विप्रधुक्—वि० [सं०] लाभकारी। हितकर।

विप्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के वक्षस्थल पर माना जाता है। विप्रचरण।

विप्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशेष रूप से पतन। बिलकुल गिर जाना। २ ऊँचा ढालवाँ टीला। ३ खाईं। ४ उड़ने की एक विशेष स्थिति या ढंग (को०)।

विप्रप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलाश का वृक्ष। २ जमा हुआ और खट्टा दही (को०)।

विप्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं० विप्रबन्धु] १ वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २. गोपायन गोत्रीय एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

विप्रबुद्ध—वि० [सं०] १ जागा हुआ। २ ज्ञानप्राप्त।

विप्रबोधित—वि० [सं०] १ जिसकी चर्चा हो चुकी हो। जो विचारित हो। २ जगाया हुआ। प्रबोध किया हुआ।

विप्रमत्त—वि० [सं०] जो अनवधान न हो। प्रमादरहित (को०)।

विप्रमना—वि० [सं० विप्रमनस्] जिसका जी न लगता हो। अन्यमनस्क। अनमना।

विप्रमाथी—वि० [सं० विप्रमाथिन्] [वि० स्त्री० विप्रमाथिनी] १ खूब मथन करनेवाला। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ३ आकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

विप्रमुक्त—वि० [सं०] १ निर्बंध। स्वतंत्र। खुला हुआ। मुक्त। २. जिसपर लक्ष्य संधान किया गया हो। ३ रहित। मुक्त। (समासांत में प्रयुक्त) जैसे, भयविप्रमुक्त (को०)।

विप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति (को०)।

विप्रमोच्य—वि० [सं०] छोड़ने या मुक्त करने योग्य। जिसे मुक्त किया जाय (को०)।

विप्रमोह—संज्ञा पुं० [सं०] नियमभंग। अपराध। त्रुटि (को०)।

विप्रमोहित—वि० [सं०] मुग्ध। मूढ। हतबुद्धि (को०)।

विप्रयाण—संज्ञा पुं० [सं०] १ भागना। पलायन। २. चलना। गमन। जाना।

विप्रयात—वि० [सं०] १ गत। गया हुआ। प्रस्थित। २ पलायित। भागा हुआ (को०)।

विप्रयुक्त—वि० [सं०] १ जो मिला न हो। विश्लिष्ट। विभिन्न। अलग। २ वियुक्त, बिछुड़ा हुआ। (मित्र या प्रिय से)। ३. वंचित। रहित। उ०—संघ से मैं विप्रयुक्त हूँ, इसलिये दुखी हूँ।—संपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० १६। ४ मुक्त। छोड़ा हुआ। ५ जिसका विभाग हुआ हो।

विप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रयुक्त] १ वियोग। विरह। जुदाई। विप्रलंभ। २ विसंवाद। बुरा समाचार। ३. विच्छेद। अलग होना। ४ असहमति। कलह। मतभेद (को०)। ५ अननुकूलता। अयोग्यता। अपात्रता (को०)। ६ अभाव (को०)।

विप्रयोगी—वि० [सं० विप्रयोगिन्] विरही। वियुक्त (को०)।

विप्रयोजित—वि० [सं०] वियुक्त, रहित या मुक्त किया हुआ।

विप्रराम—संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम। उ०—बैरिन मे विप्रराम, नीति माहिं जदुराम, बूँदीनाथ राजाराम शील माहि राम है।—मतिराम (शब्द०)।

विप्रलंभ—संज्ञा पुं० [सं० विप्रलम्भ] १ अभिलषित वस्तु की अप्राप्ति। चाही हुई वस्तु का न मिलना। २ प्रिय का न मिलना। वियोग। जुदाई। विरह। अमिलन।

विशेष साहित्य मे शृंगार रस दो प्रकार का कहा गया है—संभोग शृंगार विप्रलंभ शृंगार। इन्ही को संयोग और वियोग भी कहते है। विप्रलंभ शृंगार मे नायक नायिका के विरहजन्य संताप आदि का वर्णन होता है।

३ अलग होना। विच्छेद। ४. छल से किसी को किसी लाभ से वंचित करना। धोखा। छल। धूर्तता। वंचना। ५ विरुद्ध कर्म। बुरा काम। ६ असहमति। कलह

वि ल [illegible] [सं० विप्रलम्भक] धूर्त या धोखेबाज आदमी।

वि [illegible] सं० विप्रलम्भन] छल करना।

वि [illegible] सं० विप्रलम्भिन्] धोखेबाज। धूर्त।

विप्रलपित—वि० [सं०] दे० 'विप्रलप्त'।

विप्रलप्त¹—वि० [सं०] १ तर्क या विवाद से युक्त। विचारित। २ विलपित। विलाप किया हुआ।

विप्रलप्त²—संज्ञा पुं० १ तर्क। विवाद। २ विलाप।

विप्रलब्ध—वि० [सं०] १ जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वंचित। निराश। २ जिसे प्रिय का समागम न प्राप्त हुआ हो। वियोगदशाप्राप्त। ३ जो छल द्वारा किसी लाभ से वंचित किया गया हो। प्रतारित। ४ हानि पहुँचाया हुआ। क्षतिग्रस्त (को०)।

विप्रलब्धा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो संकेत स्थान मे प्रिय को न पाकर निराश या दुखी हो।

विप्रलब्धा—वि० [सं० विप्रलब्ध] छलिया। धूर्त [को०]।

विप्रलय—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण विनाश। विलय। प्रलय [को०]।

विप्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ सारहीन वाक्य। व्यर्थ बकवाद। २. पारस्परिक वचन विरोध। विवाद। ३ झगडा। तू तू मैं मैं। ४ बुरा वचन। ५ प्रतिज्ञाभग। वचनभग। कही हुई बात से मुकर जाना (को०)।

विप्रलापी—वि० [सं० विप्रलापिन्] विप्रलाप करनेवाला। व्यर्थ बकवाद करनेवाला। बकवादी [को०]।

विप्रलीन—वि० [सं०] बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पडा हुआ। जैसे—विप्रलीन सैन्य = जिसकी सेना हारकर विच्छिन्न हो गई हो।

विप्रलुपक—संज्ञा पुं० [सं० विप्रलुम्पक] १ बडा लालची। अति लोभी। २. अपने लाभ के लिये लोगो को सतानेवाला। उत्पीडक। ३ छीनकर लेनेवाला। बलात् लूटनेवाला (को०)। ४ अधिक कर लेनेवाला।

विप्रलुप्त—वि० [सं०] १ जो लूटा गया हो। अपहृत। २ जो गायब किया गया हो। जो उडा लिया गया हो। ३ जिसके कार्य मे विघ्न पहुँचाया गया हो।

विप्रलून—वि० [सं०] १ छिन्न किया या तोडा हुआ। २ एकत्रित। इकट्ठा किया हुआ [को०]।

विप्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] चिडिया पकडनेवाला। व्याध। शिकारी।

विप्रलोडित—वि० [सं०] विलोडित या इतस्तत किया हुआ। बरबाद किया हुआ [को०]।

विप्रलोप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रलुप्त] १ पूर्णत अदर्शन या लोप। २ ध्वस। नाश।

विप्रलोपी—वि० [सं० विप्रलोपिन्] तोडनेवाला। नष्ट या लुप्त करनेवाला।

विप्रलोभी—संज्ञा पुं० [सं० विप्रलोभिन्] किंकिरात नामक वृक्ष, जो अशोक की तरह होता है [को०]।

विप्रवसित—वि० [सं०] प्रवास के लिये गया हुआ। प्रवासगत [को०]।

विप्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरे वचन। २ व्यर्थ बकवाद। ३. कलह। विवाद। झगडा।

विप्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रवसित] १ विदेश मे वास। परदेस मे रहना। २ सन्यास आश्रम में एक अपराध जो अपने कपडे दूसरे को देने से होता है।

विप्रवासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ देश से निकाल देना। २ प्रवासी होना। प्रवास मे रहना [को०]।

विप्रवासित—वि० [सं०] दूर किया हुआ। अपवारित या नष्ट किया हुआ। (पाप आदि)।

विप्रविद्ध—वि० [सं०] जो प्रविद्ध किया गया हो। इधर उधर किया या मारा हुआ [को०]।

विप्रव्राजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो दो पुरुषो से सबध रखे।

विप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक—संज्ञा पुं० [सं०] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्रश्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दैवज्ञा। ज्योतिषी स्त्री [को०]।

विप्रष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव का नाम जो बलराम जी का छोटा भाई लगता था।

विप्रसन्न—वि० [सं०] अत्यत सतुष्ट। बहुत अधिक खुश।

विप्रसारण—संज्ञा पुं० [सं०] विस्तार करना। फैलाना।

विप्रस्थित—वि० [सं०] प्रस्थान किया हुआ। गया हुआ।

विप्रहत—वि० [सं०] १ मारा हुआ। २. पराजित किया हुआ। मर्दित। पराभूत।

विप्रहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्याग। २ मुक्ति।

विप्रहाण—संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अत [को०]।

विप्रहीण—वि० [सं०] १ वंचित। निरस्त। २ लुप्त [को०]।

विप्राधिप - संज्ञा पुं० [सं०] शशि। चद्रमा [को०]।

विप्रियकर—वि० [सं० विप्रियङ्कर] अप्रिय काम करनेवाला [को०]।

विप्रिय¹—वि० [सं०] १ अप्रिय। २ कटु। ३ अतिशय प्रिय। ४ वियोग।

विप्रिय²—संज्ञा पुं० अपराध। कसूर।

विप्रुट्—संज्ञा स्त्री० [सं० विप्रुष्] १. पानी की छोटी बूँद या छीटा। २ थूक का वह छीटा जो वेदपाठ करने में उडता है।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार ऐसा छीटा अपवित्र नही है।

३ चिह्न। बिंदु। धब्बा (को०)। ४ इन्द्रियविषय। गोचर वस्तु (को०)।

विप्रुड्होम—संज्ञा पुं० [सं० विप्रुष् + होम] एक प्रकार का पूजन जो यज्ञ के अवसर पर सोमप्राप्ति के लिये किया जाता था।

विप्रुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी की छोटी बूँद या छीटा। २ दे० 'विप्रुट्'। ३ पक्षी।

विप्रेंद—संज्ञा पुं० [सं० विप्रेन्द्र] वह जो ब्राह्मणो में मुख्य या प्रधान हो।

विप्रेक्षण, विप्रेक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] चारो ओर देखना [को०]।

विप्रेक्षिता—वि० [सं० विप्रेक्षितृ] चारो ओर देखनेवाला [को०]।

विप्रेत—वि० [सं०] १ गत। २. फैला या बिखरा हुआ [को०]।

विप्रोषित—वि० [सं०] १ प्रवास में गया हुआ। २ अनुपस्थित। ३. पठाया हुआ वा निष्कासित (को०)।

विप्रोषितभर्तृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी परदेश गया हो। प्रोषितभर्तृका।

विप्लव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपद्रव। हंगामा। अशांति और हलचल। २ राज्य के भीतर जनता की अशांति और उद्धत आचरण। बलवा। ३ दूसरे राष्ट्र द्वारा उपस्थित अशांति। परचक्र भय। ४. उथल पुथल। अव्यवस्था। ५ आफत। विपत्ति। ६ विनाश। ७ शत्रु को डराने के लिये मचाया हुआ शोरगुल। डाँट डपट या भभकी। ८ नाव का डूबना। पोतभंग। ९ जल की बाढ। वढ़िया। १० वेदो के अपूर्ण ज्ञान द्वारा उनका अनादर। ११ घोडे की बहुत तेज चाल। १२ बहना। इधर उधर प्रवाहित होना (को०) १३ विरोध। वैपरीत्य (को०)। १४ आइने पर का धब्बा (को०)। १५ पाप। दुष्टता (को०)।

विप्लव[2]—वि० [सं०] प्लवरहित। पोतविहीन [को०]।

विप्लवक—वि० [सं०] विप्लव करनेवाला [को०]।

विप्लवी—वि० [सं० विप्लविन्] १ अस्थिर। नश्वर। २ विप्लव या विद्रोह करनेवाला। [को०]।

विप्लाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी की बाढ़। बढ़िया। २ घोडे की बहुत तेज चाल। ३ विप्लव। उपद्रव (को०)।

विप्लावक—वि० [सं०] १ विप्लवकारी। उपद्रव मचानेवाला। २ राज्य में उपद्रव खडा करनेवाला। बलवाई। ३. जल की बाढ लानेवाला।

विप्लावन—संज्ञा पुं० [सं०] निंदनीय वचन। अपशब्द [को०]।

विप्लावित—वि० [सं०] १. बहाया हुआ। २. नष्ट किया हुआ। ३. व्यग्रता में फेंका हुआ [को०]।

विप्लावी—संज्ञा पुं० [सं० विप्लाविन्] [स्त्री० विप्लाविनी] १. उपद्रव करनेवाला। २. जल की बाढ लानेवाला।

विप्लुट्—संज्ञा स्त्री० [सं० विप्लुप्] १ जलसीकर। २ स्फुलिंग। चिनगारी। ३ कण। ४ निशान। धब्बा। बिंदी [को०]।

विप्लुत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] विस्फोट। स्फोट [को०]।

विप्लुत[2]—वि० [सं०] १. छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २ घबराया हुआ। आकुल। ३ क्षुब्ध। व्यग्र। दुखी। ४ भ्रष्ट। पतित। ५ नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत। ६ व्यसन के कारण किसी वस्तु के अभाव में व्याकुल। व्यसनार्त। ७ इधर उधर बहा हुआ (को०)। ८ डूबा हुआ। निमग्न। बाढ़ग्रस्त (को०)। ९ विध्वस्त। उजडा हुआ (को०)। १० अपमानित। अनादृत (को०)। ११ नष्ट। बरबाद (को०)। १२ तिरोहित। विलुप्त (को०)। १३ विपरीत। उलटा (को०)। १४ असत्य। मिथ्या। झूठा (को०)।

विप्लुतनेत्र, विप्लुतलोचन—वि० [सं०] हर्ष, शोक आदि के कारण जिसकी आँखें अश्रुपूरित हों। [को०]।

विप्लुतभाषी—वि० [सं० विप्लुतभाषिन्] तुतलाकर या हकलाकर बोलनेवाला। [को०]।

विप्लुतयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक स्त्रीरोग। दे० 'विप्लुता' [को०]।

विप्लुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों की एक व्याधि जिसमें उनकी योनि में नित्य पीडा रहती है।

विप्लुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विप्लव। हलचल। उपद्रव। २ हानि। क्षति। (को०)।

विप्लुष्—संज्ञा पुं० दे० 'विप्रुट्'।

विप्लुष्ट—वि० [सं०] झुलसा या जला हुआ [को०]।

विप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं० वीप्सा] दे० 'वीप्सा'।

विफल—वि० [सं०] १ जिसमें फल न लगता या लगा हो। फलरहित। उ०—मुरली सुनत अचल चले। द्रवित ह्वै जल झरत पाहन विफल वृक्ष फले।—सूर (शब्द०)। २ जिसका कुछ परिणाम न हो। जिसका कुछ नतीजा न हो। जिससे कुछ सिद्धि न प्राप्त हो। निष्फल। व्यर्थ। बेफायदा। जैसे,—कोई प्रयत्न विफल होना, विफलमनोरथ होना। ३. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। अकृतकार्य। नाकामयाब। ४ हताश। निराश। ५ अडकोशरहित। ६ प्रभावरहित। जिसका कुछ असर न हो (को०)।

विफलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्य की सिद्धि न होना। असफलता।

विफला[1]—वि० स्त्री० [सं०] १ बिना फल की। जिसमें फल न लगें। २. जिसका कुछ परिणाम न निकले। ३ जो प्रयत्न में कृतकार्य न हुई हो।

विफला[2]—संज्ञा स्त्री० केतकी।

विफाक—संज्ञा पुं० [अ० विफाक] १ संघ। २ अनुकूलता। ३. दोस्ती। मित्रता [को०]।

विबंध—संज्ञा पुं० [सं० विबन्ध] १ विशेष रूप से बंधन। खूब जकडना। २ आनाह। रोग (अफरा) का एक भेद जिसमें खाए हुए पदार्थ का बिना पचा रस मल रूप में पेट में रुका रहता है और दस्त नहीं होता। ३. एक प्रकार की पट्टी। विबंधन।

विबंधन—संज्ञा पुं० [सं० निबन्धन] पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या फोडे को कपडे से विशेष रूप से बाँधने की युक्ति या क्रिया। (सुश्रुत)।

विबंधवर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० विबन्धवर्ति] घोडों का एक रोग जिसमें उनका पेशाब बंद हो जाता है तथा पेट और नाडियों में जकडने की सी पीडा होती है।

विबंधहृत्—वि० [सं०] विबंध को दूर करनेवाला।

विबंधु—वि० [सं० वि+बन्धु] १ बंधुरहित। जिसके भाई बंधु न हों। २ पितृहीन। अनाथ।

विबद्ध—वि० [सं०] पूर्णतया बँधा हुआ [को०]।

विबल—वि० [सं०] १ बलरहित। २ कमजोर। दुर्बल। अशक्त। ३. विशेष बली। अधिक ताकत रखनेवाला।

विबाध¹—वि० [सं०] बाधारहित । कष्टरहित ।

विबाध²—संज्ञा पुं० [सं०] दूर करना । हटा देना [को०] ।

विबाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कष्ट । व्यथा । पीडा [को०] ।

विबाहु—वि० [सं०] बाहुरहित । भुजाविहीन [को०] ।

विबुक—संज्ञा पुं० [सं०] मल्लि से उत्पन्न वैश्य का पुत्र [को०] ।

विबुद्ध—वि० [सं० वि+बुध] १ जाग्रत । जगा हुआ । २ विकसित । खिला हुआ । ३ ज्ञानप्राप्त । सचेत । ४. कुशल । चतुर (को०) ।

विबुध—संज्ञा पुं० [सं० वि+बुध] १ पंडित । बुद्धिमान् । २ देवता । ३ चंद्रमा । ४ एक राजा का नाम । ५ शिव । महादेव ।

विबुधगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति [को०] ।

विबुधतटिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की नदी, आकाशगंगा । २ गंगा, देवनदी ।

विबुधतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष ।

विबुधद्विट्—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के शत्रु । असुर [को०] ।

विबुधधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु ।

विबुधनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा । देवापगा [को०] ।

विबुधपति—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का राजा, इंद्र ।

विबुधप्रिया—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवी । भगवती । २. अप्सरा । ३ एक वर्णवृत्त ।

विबुधवेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पलता । उ०—कृपा सुधा सींची विबुधवेलि ज्यों फिरि सुख फरनि फरी ।—तुलसी (शब्द०) ।

विबुधरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] असुर [को०] ।

विबुधवन—संज्ञा पुं० [सं० विबुध+वन] इंद्र का उद्यान । नंदन कानन ।

विबुधविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवांगना । देवता की स्त्री । २ स्वर्ग की वेश्या । अप्सरा । उ०—सकल सुआसिनी गुरुजन पुरजन पाहुने लोग । विबुधविलासिनी सुर मुनि जाचक जो जेहि जोग—तुलसी (शब्द०) ।

विबुधबैद(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] विबुधवैद्य, अश्विनीकुमार ।

विबुधवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार ।

विबुधशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य । असुर [को०] ।

विबुधसद्म—संज्ञा पुं० [सं० विबुधसद्मन्] सुरलोक । स्वर्ग [को०] ।
यौ०—विबुधसद्मस्त्री = अप्सरा । देवांगना ।

विबुधाचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवों के आचार्य, बृहस्पति [को०] ।

विबुधाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के राजा, इंद्र ।

विबुधाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] देवराज । इंद्र [को०] ।

विबुधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित । बुद्धिमान । विज्ञ । आचार्य । शिक्षक । २ देवता ।

विबुधानुचर—संज्ञा पुं० [सं०] देवसेवक । देवोपासक [को०] ।

विबुधापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की नदी, आकाशगंगा ।

विबुधावास—संज्ञा पुं० [सं० विबुध+आवास] १ देवताओं का निवासस्थान, स्वर्ग । २ देवमंदिर ।

विबुधेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० विबुधेन्द्र] इंद्र [को०] ।

विबुधेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र । देवराज [को०] ।

विबुभूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्माभिव्यक्ति इच्छा या कामना [को०] ।

विबोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ जागरण । जागना । २ एक संचारी भाव । उ०—चिंता मोह सुपन विबोध स्मृति अमर्ष गर्व उतसुक तासु अवहित्थ ठानिस ।—पद्माकर (शब्द०) ।

विशेष—दे० साहित्यदर्पण के अनुसार 'विबोध कार्य मार्गणम्' अर्थात् कार्य का अन्वेषण विबोध कहा जाता है। साहित्य के रसविधान में विबोध संचारी या व्यभिचारी भावों में से एक है। २ सम्यक् बोध । अच्छा ज्ञान । ३ सचेत होना । जागना । सावधान होना । ४ होश में आना । ५ विकास । प्रफुल्लता । ६ बुद्धि । प्रतिभा (को०) । ७ प्रमाद । अनवधानता (को०) । ८ एक पक्षी का नाम (को०) ।

विबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विबोधित] १ जगाना । प्रबोधन । २ ज्ञान कराना । आँख खोलना । ३ जगना । जागृत होना । ४. समझाना बुझाना । ढाढस देना ।

विबोधित—वि० [सं०] १ जगाया हुआ । २ ज्ञापित । जताया हुआ । बतलाया हुआ । ३ खिलाया या प्रफुल्लित किया हुआ । विकासित ।

विब्बोक—संज्ञा पुं० दे० 'बिब्बोक' [को०] ।

विभंग¹—संज्ञा पुं० [सं० विभङ्ग] १. विन्यास । गठन या रचना । २ टूटना । ३ विभाग । ४ क्रम या परंपरा का टूटना । ५ भ्रूभंग । भौं की चेष्टा । ६ मुख का भाव या चेष्टा । ७ ठहराना । अवरोध । पडाव (को०) । ८ शिकन । झुर्री (को०) । ९ सोपान । सीढ़ी (को०) । १० फूट पडना । प्रकट होना (को०) । ११ तरंग । लहर (को०) ।

विभंग²—वि० चपल । उ०—विमल विपुल बहसि वारि सीतल त्रय ताप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका ।—तुलसी (शब्द०) ।

विभंगि—संज्ञा स्त्री० [सं० विभङ्गि] १ अनुकृति । २ भंगिमा । भंगी । (को०) ।

विभंगी—वि० [सं० विभङ्गिन्] १ कंपनधर्मा । कंपनशील । २ जिसपर झुर्रियाँ पडी हों (को०) ।

विभंगुर—वि० [सं० विभङ्गुर] लोल । अस्थिर (दृष्टि) ।

विभंज—वि० [सं० वि+भंज्¹] १ टूटना । फूटना । २ नाश । ध्वंस ।

विभक्त¹—वि० [सं० वि+√भज्+क्त (प्रत्य०)] १ बँटा हुआ । विभाजित २. अलग किया हुआ । पृथक् किया हुआ । ३ जो अपने पिता की संपत्ति से अपना भाग पा चुका हो और अलग हो । ४ विभिन्न । विविध (को०) । ५ सेवानिवृत्त । एकांतवासी (को०) । ६ नियमित (को०) । ७ विभूषित । अलंकृत (को०) । ८ मापा हुआ (को०) ।

विभक्त²—संज्ञा पुं० १ कार्तिकेय । २ एकांतवास । ३ अलगाव । पार्थक्य । ४. भाग । हिस्सा । ५ संपत्ति जो विभाजित की हुई हो । विभक्त संपत्ति ।

विभक्तज—संज्ञा पुं० [सं०] वह बालक जो भाइयों या हिस्सेदारों में संपत्ति का विभाजन हो जाने पर जन्मा हो [को०]।

विभक्ता—वि० [सं० विभक्तृ] १ हिस्सा बाँटनेवाला। विभक्त करनेवाला। २ प्रवंचक [को०]।

विभक्ति—वि० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २ अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य। ३ उत्तराधिकार में मिली हुई संपत्ति या हिस्सा (को०)। ४. व्याकरण में शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है। उ०—एक ही प्रत्यय अथवा विभक्ति के योग से निष्पन्न धातु, शब्द, प्रत्यय या विभक्ति में निर्दिष्ट क्रमानुसार स्वरध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है।—भोज० भा० सा०, पृ० १०।

विशेष—संस्कृत व्याकरणानुसार नाम या संज्ञाशब्दों के बाद लगनेवाले वे प्रत्यय जो नाम या संज्ञाशब्दों को पद (वाक्य प्रयोगार्ह) बनाते हैं और कारक परिणति के द्वारा क्रिया के साथ संबंध सूचित करते हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियाँ हैं जिनमें एकवचन, द्विवचन, बहुवचन—तीन वचन होते हैं। पाणिनीय व्याकरण में इन्हें 'सुप' आदि २७ विभक्ति के रूप से गिनाया गया है। संस्कृत व्याकरण में जिसे 'विभक्ति' कहते हैं, वह वास्तव में शब्द का रूपांतरित अंग होता है। जैसे,—रामेण, रामाय इत्यादि। आजकल की प्रचलित खड़ी बोली में इस प्रकार की विभक्तियाँ प्रायः नहीं हैं, केवल कर्म और संप्रदान कारक के सर्वनामों में विकल्प से आती हैं। जैसे,—मुझे, तुझे, इन्हें इत्यादि। संस्कृत में विभक्तियों के रूप शब्द के अंत्य अक्षर के अनुसार भिन्न भिन्न होते हैं। पर यह भेद खड़ीबोली के कारकों में नहीं पाया जाता, जिसमें शुद्ध विभक्तियों का व्यवहार नहीं होता, कारकचिह्नों का व्यवहार होता है।

विभग्न—वि० [सं० वि+भग्न] १ टूटा फूटा हुआ। २ जो जुदा हो। अलग हुआ। छिन्न।

विभचार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यभिचार] दे० 'व्यभिचार'। उ०—आचार धर्म नहि सुद्ध मन विधि विचार विभचार घन।—पृ० रा०, २५। १२९।

विभच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वीभत्स, प्रा० वीभच्छ] दे० 'बीभत्स'। उ०—भरयौ सिंगार, विभच्छ, भय सात सुअद्भुत नार। करुण वीर रुद्र, हास रस, नव रस उक्त निहार।—रघु० रू०, पृ० ४६।

विभज—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक बड़ी संख्या [को०]।

विभजन—संज्ञा पुं० [सं०] भेद। अंतर। पार्थक्य [को०]।

विभजनीय—वि० [सं०] विभक्त करने योग्य [को०]।

विभज्य¹—वि० [सं०] १. जिसका विभाग करना हो। २ जिसका भेद दिखाना हो [को०]।

विभज्य²—क्रि० वि० विभाग करके। खंड खंड करके।

विभय¹—संज्ञा पुं० [सं०] भय से छुटकारा। भय से मुक्ति।

विभय²—वि० निर्भय [को०]।

विभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ धन। संपत्ति। २ ऐश्वर्य। शक्ति। उ०—भव भव विभव पराभव कारिनि।—तुलसी (शब्द०)। ३. औदार्य। ४. बहुतायत। आधिक्य। ५. मोक्ष। जन्ममरण से छुटकारा। ६. साठ संवत्सरों में से छत्तीसवाँ संवत्सर। ७. उन्नत अवस्था। पद। प्रतिष्ठा (को०)। ८ महत्ता (को०)। ९. पालन। रक्षण (को०)। १० प्रलय (बौद्ध)। ११ संगीत में एक ताल (को०)।

विभवराशि—संज्ञा स्त्री० [सं० विभव+राशि] धनराशि। संपत्ति का ढेर। उ०— विश्व की विभव राशि, और थे प्रणत वहीं गुर्जर महीप भी।—लहर, पृ० ७७।

विभववान्—संज्ञा स्त्री० [सं० विभववत्] [स्त्री० विभववती] १ विभववाला। धनी। दौलतमंद। २ शक्तिशाली।

विभवशाली—वि० [सं० विभवशालिन्] [वि० स्त्री० विभवशालिनी] १. विभववाला। २. प्रतापवाला। ऐश्वर्यवाला।

विभवी—वि० [सं० विभविन्] ऐश्वर्यवान्। प्रतापी [को०]।

विभांडक—संज्ञा पुं० [सं० विभाण्डक] एक ऋषि जो ऋष्यशृंग के पिता थे।

विभांडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विभाण्डिका] आहुल्य वृक्ष।

विभांडी—संज्ञा स्त्री० [सं० विभाण्डी] नीली अपराजिता। विष्णुक्रांता लता।

विभाँति¹—संज्ञा स्त्री० [सं० वि+हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म।

विभाँति²—वि० अनेक प्रकार का।

विभाँति³—अव्य० अनेक प्रकार से।

विभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रभा। कांति। चमक। २ किरण। रश्मि। ३. शोभा। सुंदरता।

विभाइ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विभाव] दे० 'विभाव'। उ०—रस दारुन मय सचरिग। घोर गंभीर विभाइ।—पृ० रा०, ६१। २८८।

विभाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाशवाला। २ सूर्य। उ०—तिमिर ग्रसित सब लोक ओक लखि दुखित दयाकर। प्रगट कियो अद्भुत प्रभाउ भागवत विभाकर।—नंद० ग्रं०, पृ० ४। ३. आक का पौधा। मदार। ४ चित्रक। चीते का पेड़। ५ अग्नि। ६ राजा। ७. चंद्रमा का वह अंश जो सूर्य के प्रकाश से दीप्त होता है।

विभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। किसी वस्तु के कई भाग या हिस्से करना। बँटवारा। तकसीम। जैसे,—संपत्ति का विभाग।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. कई वर्गों या खंडों में विभक्त वस्तु का एक एक खंड या वर्ग। भाग। अंश। हिस्सा। बखरा। ३. पैतृक संपत्ति का कोई अंश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय। हिस्सा। बखरा। ४ प्रकरण। अध्याय। जैसे,—ग्रंथ का विभाग। ५. कार्यक्षेत्र। मुहकमा। जैसे,—शिक्षा विभाग। ६ व्यवस्था। प्रबंध। इंतजाम (को०)। ७. गणित में भिन्न का अंश (को०)। ८. न्यायशास्त्र के अनुसार २४ गुणों में से एक का नाम।

यौ०—विभागकल्पन = हिस्सा या अंश नियत करना (याज्ञवल्क्य स्मृति)। विभागज्ञ = अंतर को जाननेवाला। विभाग को समझनेवाला। विभागधर्म = दायभाग की विधि। बँटवारा

संबंधी नियम कानून। विभागपत्रिका=विभाजन का दस्तावेज। वह कागज जिसपर विभाग का विवरण दर्ज हो। विभागभाक्, विभागभाज्=पहले से बँटी हुई संपत्ति का हिस्सेदार। विभाग पानेवाला। विभागरेखा=विभाजन की रेखा। दो हिस्सों का अलगाव सूचित करनेवाला चिह्न या निशान।

विभागक—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति। २ हिस्से बाँटनेवाला [को०]।

विभागत—क्रि० वि० [सं० विभागतस्] विभाग के अनुसार। हिस्से के मुताबिक।

विभागश—क्रि० वि० [सं० विभागशस्] विभाग के अनुसार।

विभागात्मक नक्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र।

विभागाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं० विभाग+अध्यक्ष] विभाग (अं० डिपार्टमेंट) का प्रधान अधिकारी या अध्यक्ष जैसे, हिंदी विभागाध्यक्ष।

विभागी—संज्ञा पुं० [सं० विभागिन्] [स्त्री० विभागिनी] १ विभाग करनेवाला। २ विभाग या हिस्सा पानेवाला। हिस्सेदार।

विभाजक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विभाग करनेवाला। बाँटनेवाला। २ गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को भाग दें। भाजक।

विभाजक[2]—वि० विभाग या विच्छेद करनेवाला।

विभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विभाजनीय, विभाजित, विभाज्य] १ विभाग करने की क्रिया या भाव। बाँटने का काम। २ पात्र। बरतन।

विभाजयिता—वि० [सं० विभाजयितृ] विभाजन करनेवाला [को०]।

विभाजित—वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो। जो बाँटा गया हो। जिसके खंड या हिस्से किए गए हों।

विभाज्य—वि० [सं०] १ विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो। जिसे बाँटना हो। ३ (संख्या) जिसे किसी संख्या से बाँटना हो। भाज्य (गणित)।

विभाड(पु)—वि० [प्रा० विब्भाड] नाशक। नाश करनेवाला। उ०—वेमग्ग राइ दारिद विभाड। अचगल्ल राइ जाडा उपाड।—पृ० रा०, ५७।१६२।

विभात—संज्ञा पुं० [सं०] सवेरा। प्रभात।

विभाति—संज्ञा पुं० [सं० विभा] दीप्ति। शोभा। सुंदरता।

विभाती—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौ फटना। प्रभात। सुबह (को०)। (पु) २ दीप्ति। शोभा। विभाति। उ०—और वनिता की ओर भूलेहूँ न देहौ मन तुम जो कहत आए सोह सीरी ताती मे। ताको अब करिबो निबाह सो देखाऊँ तुम्हे रघुनाथ देखौ देह आपनी विभाती मे।—रघुनाथ (शब्द०)।

विभाना(पु)—क्रि० अ० [सं० विभा+ना (प्रत्य०)] १. चमकना। झलकना। २ शोभा पाना। शोभित होना। उ०—मनु फुल्ल कमल के मधि कठी सतगुन लता विभाति है।—गोपाल (शब्द०)।

विभारना(पु)—क्रि० अ० [हिं० विभाना या सं० वि०+√भ्राज्] चमकना। झलकना। उ०—स्याम वरन पट अरुन विभारै। रवि सम तेज सुलच्छन धारै।—पद्माकर (शब्द०)।

विभाव—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य मे वह वस्तु जो रति आदि स्थायी भावो को आलंबन मे उत्पन्न करनेवाली या उद्दीप्त करनेवाली हो। रसविधान मे भाव का आलंबन या विभावक या उद्दीपक। उ०—इसी भाव (प्रेम) के विविध प्रकार के आलंबनों और उद्दीपनों का चित्रण इस भूमि के विभाव पक्ष मे पाया जाता है।—रस०, पृ० ७४।

विशेष—विभाव दो कहे गए हैं—आलंबन और उद्दीपन। आलंबन वह है जिसके प्रति आश्रय या पात्र के हृदय मे कोई भाव स्थित हो। जैसे नायक के लिये नायिका और नायिका के लिये नायक। उद्दीपन वह है जिससे आलंबन के प्रति स्थित भाव उद्दीप्त या उत्तेजित हो। रसभेद से आलंबन और उद्दीपन भिन्न भिन्न होंगे। जैसे, शृंगार मे आलंबन होंगे नायक नायिका, हास में कोई बढ़गी आकृति या वाणी आदि वाला व्यक्ति, करुण में विनष्ट बंधु आदि या कोई पीडित अथवा शोचनीय व्यक्ति इत्यादि,इत्यादि। इस प्रकार उद्दीपन भी रसभेद से भिन्न होंगे। जैसे, शृंगार मे चाँदनी, फूल आदि, रौद्र मे आलंबन की दुष्ट चेष्टा इत्यादि।

२ मित्र। परिचित व्यक्ति (को०)। ३. कोई भी उत्तेजक दशा, अवस्था या स्थिति जिससे भावो का उद्दीपन हो (को०)। ४ शिव का एक नाम (को०)।

विभावक—वि० [सं०] १ वहस करनेवाला। २ प्रकट करनेवाला। व्यक्त करनेवाला ३. संपादक। संघटित करनेवाला (को०)।

विभावन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विभावनीय] १. विशेष रूप से चिंतन। विचार। विमर्श। २. साहित्य के रसविधान मे वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र मे प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण द्वारा भागी होता है, विभावन व्यापार उ०—पर विभावन द्वारा जब वस्तुप्रतिष्ठा पूर्ण रूप से हो ले तब आगे कुछ और होना चाहिए।—रस०, पृ० ११६। ३. स्पष्ट ज्ञान या निश्चय। विवेक। निर्णय (को०)। ४. प्रत्यय। कल्पना (को०)। ५ विकास। प्रसार (को०)। ६ पालन। रक्षण (को०)। ७ देखना। अवलोकन। दर्शन (को०)। ८ दिखाना। अभिव्यक्ति।

विभावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक अर्थालंकार जिसमे (क) कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या (ख) अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या (ग) प्रतिबंध होते हुए भी कार्य की सिद्धि या (घ) जो जिस कार्य का कारण नही हुआ करता, उससे उस कार्य का उत्पत्ति अथवा (ङ) विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति या (च) कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई जाती है। उ०—(क) सुनत लखत श्रुति नैन बिनु, रसना बिनु रस लेत। (ख) राजकुमार सरोज से हाथन सो गहि शंभु शरासन तोड्यो। (ग) तव बेनी नागिनि रहै, बाँधी गुनन बनाय। तऊ बाम व्रजचंद को बदाबदी डसि जाय। (घ) कारे घन उमड़ि अगारे

बरसत हैं। (ड) अग्निधार स्रवत सुधाकर बिलोकिए। (च) और नदी नदन तें कोकनद होत तेरो कर कोकनद नदी नद प्रगटत हैं।

विभावनीय—वि० [सं०] भावना या चिंतन करने योग्य।

विभास्वर—वि० [सं०] उज्वल। प्रदीप्त (को०)।

विभावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। रात। २ वह रात जिसमे तारे चमकते हो। ३ हरिद्रा। हलदी। ४. कुट्टनी। कुटनी। दूती। ५. टेढ़ी स्त्री। चाल की औरत। ६ मुखरा स्त्री। बहुत बड बड करनेवाली स्त्री। ७ मेदा वृक्ष। ८. प्रचेतस् की नगरी का नाम। ९. वेश्या। गणिका (को०)। १० एक प्रकार का वृत्त (को०)।

विभावरीकांत—संज्ञा पुं० [सं० विभावरीकान्त] निशापति। चंद्रमा। रजनीकांत (को०)।

विभावरीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या (को०)।

विभावरीश—संज्ञा पुं० [सं०] निशापति। चंद्रमा।

विभावसु—वि० [सं० विभावसु] दे० 'विभावसु'। उ०—हरि हरन-छिछ सुअछिछ बछिछ वर जछिछ विभावस।—पृ० रा०, २११४४।

विभावसु[1]—वि० [सं०] जिसमे प्रकाश की अधिकता हो। अधिक प्रभावाला।

विभावसु[2]—संज्ञा पुं० १ वसुओं के एक पुत्र। २. सूर्य। ३ आक का पौधा। अर्क। मदार। ४ अग्नि। ५ चित्रक वृक्ष। चीता। ६ चंद्रमा। ७ एक प्रकार का हार। ८. एक दानव जो नरकासुर का पुत्र था। ९ एक ऋषि का नाम। (महाभारत)। १ एक गधर्व जिसने गायत्री से वह सोम छीना था, जो वह देवताओं के लिये ले जा रही थी।

विभावाश्रित—वि० [सं०] विभाव पर आद्धृत वर्ण्य वस्तु पर आश्रित। उ०—जो भावपक्ष को महत्व देते हुए भी उसे विभावाश्रित देखना चाहती है।—आचार्य०, पृ० २२।

विभावित—वि० [सं०] १. चिंतन किया हुआ। सोचा या विचारा हुआ। २ कल्पित। अनुमित। सकेतित। ३ निश्चित। ४ स्वीकृत। मजूर किया हुआ। ५ व्यक्त या स्पष्ट किया हुआ। प्रकटीकृत (को०)। ६. सिद्ध। सर्वसमत (को०)।

विभावी—वि० [सं० विभाविन्] १ भाव जाग्रत् करनेवाला। २. व्यक्त करनेवाला। ३ शक्तिमान् (को०)।

विभाव्य—वि० [सं०] १ अनुभव किया जाने योग्य। २. विवेच्य। ३ ध्यान देने योग्य [को०]।

विभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संस्कृत व्याकरण मे वह स्थल जहाँ ऐसे वचन मिलते हैं कि 'ऐसा न होगा' तथा 'ऐसा हो भी सकता है'। विकल्प। २ किसी व्यापक साहित्यभाषा क्षेत्र के अंतर्गत अन्य साहित्यिक प्रतिष्ठाप्राप्त भाषा—उ०—व्रजभाषा हिंदी की विभाषा है। ३. बोली। किसी प्रधान भाषा के भीतर आनेवाली जनभाषा (को०)। ४. एक रागिनी (को०)। ५ (बौद्ध) बृहद्कारिका (को०)।

विभाषित—वि० [सं०] वैकल्पिक। विकल्प से होनेवाला (को०)।

विभास—संज्ञा पुं० [सं०] १. चमक। तेज। २ एक राग जो सबेरे के समय गाया जाता है। इसे कुछ लोग भैरव राग का ही भेद मानते हैं। उ०—अशब्द हो गई वीणा, विभास बजता था।—बेला, पृ० २६। ३ तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार सप्तर्षियों मे से एक। ४ मार्कडेयपुराण के अनुसार एक देवयोनि। ५ सात सूर्यों मे से एक सूर्य (को०)।

विभासक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विभासिका] १. चमकनेवाला। प्रकाशयुक्त। २ चमकानेवाला। झलकानेवाला। ३ प्रकाशित करनेवाला। प्रकट या व्यक्त करनेवाला। जाहिर करनेवाला।

विभासना(पु)—क्रि० अ० [सं० विभास+हिं० ना (प्रत्य०)] चमकना। झलकना।

विभासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमक। दीप्ति। प्रभा (को०)।

विभासिका—वि० स्त्री० [सं०] चमकानेवाली। दीप्त करनेवाली। उ०—कचनधाम अकास विभासिका।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २८१।

विभासित—वि० [सं०] १ प्रकाशित। दीप्त। चमकता हुआ। २. प्रकट। जाहिर।

विभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० उप० वि+√भिद् (=विदारण)] १. काटकर पृथक् करना। भेदना। २. टुकडे टुकड़े करना (को०)।

विभिदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भेद। अतर (को०)।

विभिन्न[1]—वि० [सं०] १ छिदा हुआ। बँटा हुआ। काटकर अलग किया हुआ। २ बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। ३ अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४ मिश्रित। मिला हुआ (को०)। ५. और का और किया हुआ। उलटा। ६ हताश। निराश। ७ हैरान। परेशान। व्याकुल (को०)। ८ इधर उधर घूमा हुआ (को०)। ९ प्रकटित। प्रदर्शित (को०)। १० जो विश्वास करने योग्य न हो। अविश्वसनीय। अविश्वसित (को०)। ११. विरोधी (को०)।

विभिन्न[2]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम (को०)।

विभिन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विभिन्न होने का भाव। भेद। पार्थक्य। अलगाव। फर्क।

विभी—वि० [सं०] निर्भय। अभीत। विगतभय। बेडर (को०)।

विभीत[1]—[सं०] [वि० स्त्री० विभीता] डरा हुआ। उ०—वे परंपराप्रेमी, परिवर्तन से विभीत, ईश्वर परोक्ष से ग्रस्त, भाग्य के दास क्रीत।—ग्राम्या, पृ० ९१।

विभीत[2]—संज्ञा पुं० विभीतक। बहेड़ा।

विभीतक—संज्ञा पुं० [सं०] बहेड़ा। बहेड़े का वृक्ष।

विभीतकी, विभीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहेड़ा (को०)।

विभीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। २. शका। संदेह। उ०—नहिं तोरिहैं राम शिव को धनु यह विभीति परिहरहु।—रघुराज (शब्द०)।

विभीषक—संज्ञा पुं० [सं०] डरानेवाला। भयानक।

विभीषण[1]—वि० [सं०] बहुत डरावना। बहुत भयानक।

विभीषण² —संज्ञा पुं० १ एक राक्षस जो रावण का भाई था और रावण के मारे जाने पर राम द्वारा लंका का राजा बनाया गया था।

विशेष—यह विश्रवा मुनि द्वारा कैकसी राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और सुमाली नामक राक्षस का दौहित्र (नाती) था। एक दिन सुमाली ने कुबेर को पुष्पक विमान पर चढकर जाते देखा। उसे यह इच्छा हुई कि मेरे भी ऐसा ही दौहित्र होता। उसने अपनी परम रूपवती कन्या कैकसी को विश्रवा मुनि के पास भेजा। जिस समय वह गई, उस समय मुनि ध्यान मे मग्न थे। वे उसका अभिप्राय समझकर बोले—'तू बडे विकट समय मे आई। इससे इस बार तुझे एक विकट आकृति का पुत्र उत्पन्न होगा।' कैकसा के बहुत विनय करने पर ऋषि ने फिर आशीर्वाद दिया—'अच्छा जा। तेरा अंतिम पुत्र मेरे ही वंश का सा और परम धार्मिक होगा।' वही अंतिम पुत्र विभीषण हुआ। अपने बडे भाइयों रावण और कुंभकर्ण के साथ विभीषण ने भी घोर तप किया। जब ब्रह्मा वर देने आए, तब विभीषण ने यही वर माँगा—'मेरा मति धर्म मे सदा स्थिर रहे'। ब्रह्मा ने वर दिया—'तुम बडे धार्मिक और अमर होगे'। वरप्राप्ति के उपरात विभीषण भी रावण के साथ लंका मे ही आकर रहने लगा। रावण ने जब सीता-हरण किया, तब यह राम की ओर हो गया था।

२ नल तृण। नरसल का पौधा।

विभीषणा¹—वि० स्त्री० [सं०] डरावनी। भयानक।

विभीषणा —संज्ञा स्त्री० १ एक मुहूर्त का नाम। २ स्कंद की एक मातृका (को०)।

विभीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भयालुता। भीरुता। भयभीत या शंकित होने की भावना (को०)।

विभीषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भयप्रदर्शन। डर दिखाना। २ भयंकर बात। भयानक कांड या दृश्य। ३ आतंक। भय। खौफ (को०)। ४ भयभीत करनेका साधन (को०)।

विभु¹—वि० [सं०] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। जो सब मूर्त पदार्थों मे रम रहा हो। जिससे कोई स्थान खाली न हो। सर्वगत। सर्वव्यापक। जैसे,—दिक्, काल और आत्मा।

विशेष—जीव की जाग्रत् आदि चारो अवस्थाओं के चार विभु माने गए हैं। जाग्रत् का विभु 'विश्व', स्वप्न का 'तैजस्', सुषुप्ति का 'प्राज्ञ' और तुरीय का 'ब्रह्म' कहा गया है।

२ जो सब जगह जा सकता हो। सर्वत्र गमनशील। जैसे, मन। ३ अत्यंत विस्तृत। बहुत बडा। महान्। ४ सब काल मे रहनेवाला। सर्वकालव्यापी। नित्य। ५ दृढ़। अचल। चिर स्थायी। ६ शक्तिमान्। ऐश्वर्ययुक्त। ७. योग्य। समर्थ। क्षम (को०)। ८. आत्मसंयमी। जितेंद्रिय (को०)।

विभु²—संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ आत्मा। जीवात्मा। ३ प्रभु। स्वामी। ४. ईश्वर। उ०—विभु की बाट जोहते हैं सब ले ले-कर अपने उपहार।—साकेत पृ० ३७५। ५ शंकर। शिव। ६. विष्णु। ७ भृत्य। ८ सूर्य (को०)। ९ चंद्र (को०)। १० कुबेर (को०)। ११ एक देव वर्ग (को०)। १२ बुद्ध का एक नाम (को०)। १३ आकाश (को०)। १४ अवकाश। अवसर (को०)। १५. काल (को०)।

विभुक्षित—वि० [सं० 'बुभुक्षित' का असाधु प्रयोग] भूखा। उ०—वह तीस कोटि विभुक्षित और नग्नतन संतान की माँ है।—हिं० का० प्र०, पृ० २३३।

विभुग्न—वि० [सं०] वक्र। टेढा। कुटिल (को०)।

विभुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विभु होने का भाव। सर्वव्यापकता। उ०—युग युग की नव मानवता को। विस्तृत वसुधा की विभुता को।—लहर, पृ० ३। २. ऐश्वर्य। शक्ति। ३. प्रभुता। ईश्वरता। ४. अधिकार।

विभुत्व -संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विभुता'।

विभू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विभु'।

विभूत—वि० [सं०] १ उत्पन्न। जात। २. प्रकट। व्यक्त। ३. महान्। शक्तिमान्। ४ उत्थित। (को०)।

विभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुतायत। वृद्धि। बढती। २ विभव। ऐश्वर्य। ३ संपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं।

विशेष—योगदर्शन के विभूतिपाद मे इसका वर्णन है कि किन किन साधनाओं से कौन कौन सी विभूतियाँ प्राप्त होती हैं।

५ शिव के अंग मे चढ़ाने की राख या भस्म।

विशेष—देवी भागवत, शिवपुराण आदि में भस्म या विभूति धारण करने का माहात्म्य विस्तार से वर्णित है।

६ भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है। ७ लक्ष्मी। ८ विविध सृष्टि। ९ एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। १० प्रभुत्व। बडाई। ११ सृष्टि। १२. ताकत। शक्ति। महत्ता (को०)। १३ प्रतिष्ठा। उच्च पद (को०)। १४ विस्तार। प्रसार (को०)। १५. प्रवृत्ति। प्रकृति। स्वभाव (को०)।

विभूतिमान्—वि० [सं० विभूतिमत्] [वि० स्त्री० विभूतिमती] १ शक्ति संपन्न। ऐश्वर्यशाली। २ संपत्तिशाली। धनवान्। ३. विभूत। अलौकिक शक्ति से युक्त (को०)। ४ जिसने विभूति या भस्म धारण किया हो (को०)।

विभूमा¹—वि० [सं० वि+भूमन्] ऐश्वर्यवान्। शक्तिशाली।

विभूमा²—संज्ञा पुं० १ श्रीकृष्ण। २ महत्व। शक्ति (को०)।

विभूमा³—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति। महत्ता। ऐश्वर्य (को०)।

विभूरसि—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि की एक मूर्ति।

विभूषण—संज्ञा पुं० [वि० विभूष्य, विभूषित] १ अलंकृत करने की क्रिया। गहने आदि से सजाने का काम। २ भूषण। अलंकार। जेवर। गहना।

विशेष—किसी शब्द के आगे लगकर यह शब्द श्रेष्ठतावाचक हो जाता है। जैसे, रघुवंशविभूषण।

३. मंजुश्री का एक नाम। (बौद्ध)। ४ सौंदर्य। द्युति। (को०)

विभूषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गहनो आदि की सजावट। भूषा। २ शोभा।

विभूषना(पु)—क्रि० स० [सं० विभूषण] १ अलंकृत करना। गहने आदि मे सजाना। २ सुशोभित करना। मंडित करना। ३ अपने आगमन द्वारा सुशोभित करना। उ०—कहा रीति रावरी जो रक को विभूषो गेह, तुम सो प्रवीन गुरु सेवा ततपर को।—दूलह (शब्द०)।

विभूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गहनो आदि की खूब सजावट। २ भूषण। अलंकार। गहना। ३. शोभा। सौंदर्य। कांति।

विभूषित¹—वि० [सं०] १ गहनो आदि से सजाया हुआ। २ अलकृत ३ (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त। सहित। जैसे,—वे सब गुणो से विभूषित हैं। ४ शोभित।

विभूषित²—संज्ञा पुं० [सं०] अलकार। गहना (को०)।

विभूषी—वि० [सं० विभूषिन्] १ अलकृत। सज्जित। २ (गुण से) शोभित। ३ सजानेवाला (को०)।

विभूष्णु¹—वि० [सं०] विभूतियुक्त। सर्वव्यापक।

विभूष्णु²—संज्ञा पुं० शिव।

विभूष्य—वि० [सं०] १. विभूषित करने योग्य। सजाने योग्य। २ जिसे गहनो आदि से सजाना हो।

विभृत—वि० [सं०] १ जो धारण किया गया हो। सँभाला हुआ। २. पोषित। पालित (को०)।

विभेंटन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वि०+भेंट] आलिंगन करना। गले मिलना। भेंटना। उ०—एरे वाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज रौरे फरकन तें जो वालम विहारि हौं। करिहौं गुलाव उपकार ग्रन मानिना कै देखन विभेंटन मैं आगे विस्तारिहौं।—पद्माकर (शब्द०)।

विभेद—संज्ञा पुं० [सं०] विभिन्नता। फरक। अंतर। उ०—दोनो तुल्य स्त्री वा पुरुष बन सके और कभी कोई विभेद न रहे।—प्रेमघन०, भा०२, पृ० २६७। २ अनेक भेद। कई प्रकार। ३. छेदकर घुसना। धँसना। ४ काटना, तोडना या छेदना। ५ कटाव। छेद। दरार। ६ दो या कई खडो मे करना। विभाग। ७ एकरूपता से अनेकरूपता की प्राप्ति। विकास। परिवर्तन। ८ मिश्रण। ९ आहत करना (को०)। १० विरोध। वैर (को०)। ११ हस्तक्षेप। बाधा (को०)।

विभेदक¹—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १ भेदन करनेवाला। काटने या छेदनेवाला। २ घुसनेवाला। धँसनेवाला। ३ दो वस्तुओ में भेद प्रकट करनेवाला। फर्क दिखाने या डालनेवाला। एक से दूसरे मे विशेषता प्रकट करनेवाला।

विभेदक²—संज्ञा पुं० विभीतक। बहेडा।

विभेदकर—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विभेदकरी] विलगाव, फर्क या भेद पैदा करनेवाला। दे० 'विभेदकारी'। उ०—अब दीनदयाल दया करिए मति मोरि विभेदकरी हरिए।—मानस, ६। ११०।

विभेदकारी—वि० [सं० विभेदकारिन्] [वि० स्त्री० विभेदकारिणी] १ छेदने या काटनेवाला। २ भेद या फर्क करनेवाला। ३ दो व्यक्तियो मे विरोध उत्पन्न करनेवाला। फूट डालनेवाला।

विभेदन¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विभेदनीय, विभेद्य] १ छेदना। काटना या तोडना। २ छेदकर घुसना। धँसना। ३ काटकर दो या कई खडो मे करना। ४ पृथक् पृथक् करना। अलग अलग करना। ५. भेद या फर्क डालना या दिखाना।

विभेदन²—वि० दे० 'विभेदक'।¹

विभेदना(पु)—क्रि० स० [सं० विभेदन] १ भेदन करना। छेदना। काटना। २ घुसना। प्रवेश करना। उ०—लोक विभेदति वामना वासु परी मनु दीरघ मे गनिए जू।—केशव (शब्द०)। ३ भेद या फर्क डालना।

विभेदिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विभेदिका] पृथक् पृथक करनेवाला। विभक्त करनेवाला (को०)।

विभेदिनी—वि० स्त्री० [सं० विभेदिन्] १ छेदन या भेदन करनेवाली। २ छेदकर घुसनेवाली। ३ भेद या फर्क करनेवाली।

विभेदी—वि० [सं० विभेदिन्] [वि० स्त्री० विभेदिनी] १ छेदन करनेवाला। काटनेवाला। २ छेदकर घुसनेवाला। धँसनेवाला। ३ भेद या फर्क करनेवाला। ४ दूर, अलग या नष्ट करनेवाला (को०)।

विभेद्य—वि० [सं०] विभेद करने लायक। काटने या अलग करने लायक (को०)।

विभेष—संज्ञा पुं० [सं० वि+वेष√भेष] कुवेश। विकृत वेष। बुरा वेश। उ०—भोजन छोभ मलीन तन बसन विभेष बनाइ। रैनि दिवस छिन पावत कल नही जहँ तहँ जाइ।—कबीर सा०, पृ० ४०३।

विभो¹—संज्ञा पुं० [सं० 'विभु' का सबोधन रूप] हे विभु।

विभो(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० विभव] दे० 'विभव'। उ०—फल आए तरवर झुकै झुकत मेघ जल आय। विभो पाय सज्जन झुकै यह परकाजि सुभाय।—शकुंतला, पृ० ८८।

विभोर—वि० [सं० विह्वल, बग० विभोर] आत्म विस्मृत। किसी भाव मे तल्लीन या खोया हुआ।

विभौ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विभव] दे० 'विभव'। उ०—जोधपुर विभौ जोवडियौ, मेल बहादर खान जूं। हरि रखै अचभा साहरा, दै थाँमा अप्रमान नूं।—रा० रू०, पृ० २४।

विभ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश। ध्वस। २ पतन। अपनति। ३ ऊँचा कगार। ४ पहाड की चोटी पर का चौरस मैदान। ५ ह्रास। क्षय। बरबादी (को०)। ६ प्रवाहिका। संग्रहणी। अविस्तार (को०)। ७ अस्तव्यस्तता। अराजकता। विश्रृंखलता (को०)।

विभ्रंशयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] एक दिन मे पूर्ण होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

विभ्रंशित—वि० [सं०] १ विनष्ट। ध्वस्त। २ पतित। ३ गुमराह किया हुआ। बहकाया हुआ (को०)।

यौ०—विभ्रंशितज्ञान = जिसका ज्ञान नष्ट हो गया हो। मूर्ख। निर्बुद्धि।

विभ्रंशी—वि० [सं० विभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट होनेवाला। २ खड खड होनेवाला [को०]।

विभ्रम—सज्ञा पु० [सं०] १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भ्रम। भ्राति। धोखा। भूल। ३ सदेह। सशय। ४ चकपकाहट। घबराहट। अस्थिरता। ५ स्त्रियो का हाव जिसमे वे भ्रम से उलटे पलटे भूषण वस्त्र पहन लेती है, तथा रह रहकर मतवाले की तरह कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती है। ६ काति। शोभा। ७ घमड। अभिमान (को०)। ८ तरग। सनक। मन की लहर (को०)। ६ विक्षोभ। उद्वेग (को०)।

विभ्रमवती - सज्ञा स्त्री० [सं०] हाव विशेषवाली कन्या। बालिका [को०]।

विभ्रमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] बुढाई। बुढापा। वार्धक्य।

विभ्रमी—वि० [सं० विभ्रमिन्] १ इधर उधर घूमनेवाला। भ्रमणकारी। घुमक्कड। २, चक्कर करने या खानेवाला [को०]।

विभ्रष्ट—वि० [सं०] १ दूर किया हुआ। अलग किया हुआ। २ क्षीण। लुप्त। पतित। नष्ट। ३ ओझल। अतर्हित। ४ वचित। विरहित। ५ व्यर्थ। अनुपयुक्त। ६ सत्त्वहीन। निस्सत्व [को०]।

विभ्रात—वि० [सं० विभ्रान्त] १ घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ। २ भ्रम मे पडा हुआ। विभ्रमयुक्त। ३. विक्षुब्ध। व्याकुल (को०)। ४ चारो ओर फैला हुआ (को०)।

यौ०—विभ्रातनयन = तिरछी चितवनवाला। विभ्रातमना = हतबुद्धि। जड। विभ्रातशील = मत्त। मतवाला।

५ हतबुद्धि। ६ वदर। ७ सूर्य या चद्रमा का मडल [को०]।

विभ्राति—सज्ञा स्त्री० [सं० विभ्रान्ति] १ फेरा। चक्कर। २ भ्रम। सदेह। ३ हडबडी। घबराहट।

विभ्राजित—वि० [सं०] चमकदार या दीप्तियुक्त किया हुआ [को०]।

विभ्राट्¹—सज्ञा पुं० [सं० विभ्राज् ? तुल० बं०] १. आपत्ति। विपत्ति। सकट। २ उपद्रव। बखेडा। उ०—(क) तिलक विभ्राट् के समय गोखले विलायत मे थे।—सरस्वती (शब्द०)। (ख) कुछ न कुछ विघटित हुआ विभ्राट्।—साकेत, १६८।

विभ्राट्²—वि० [सं० विभ्राज्] प्रकाशमान्। दीप्तिमान्। उ०—भर सको अगर तो प्रतिमा मे चेतना भरो, यदि नहीं निमत्रण दो जीवन के दानी को। विभ्राट् महाबल जहाँ थके से दीख रहे, आगे आने दो वहाँ क्षीणबल प्राणी को।—धूप०, ७।

विभ्रातृव्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ बैर। शत्रुता। २ होडा होडी। प्रतिद्वंद्विता [को०]।

विभ्रेष—सज्ञा पुं० [सं०] दुष्कर्म करना। अपराध करना [को०]।

विमडन—सज्ञा पुं० [सं० विमण्डन] [वि० विमडित] १ गहने आदि से सजाना। २ शृगार करना। सँवारना। ३ अलकार। भूषण। गहना।

विमडित—वि० [सं० विमण्डित] १. अलकृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३ सहित। युक्त। (अच्छी वस्तु से)। उ०—देखि विमडित दडिन सो भुजदंड दुओ असि दड विहीनो।—केशव (शब्द०)।

विमथन—सज्ञा पुं० [सं० विमन्थन] खूब मथना।

विमथित—वि० [सं०] मथा हुआ। विलोडित [को०]।

विमज्जित—वि० [सं०] डूबा हुआ। निमज्जित [को०]।

विमत¹—सज्ञा पु० [सं०] १ विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धात। उ०—छमत, विमत, न पुरान मत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम करत।—तुलसी (शब्द०)। २ खिलाफ राय। प्रतिकूल समति। ३ शत्रु। बैरी (को०)।

विमत²—वि० १ विरुद्ध मतवाला। भिन्न मत का। २ विषम। असगत (को०)। ३ अनादृत। उपेक्षित (को०)। ४ सशयास्पद। सदिग्ध (को०)।

विमति¹—सज्ञा स्त्री० [सं०] विरुद्ध मति। खिलाफ राय। प्रतिकूल विचार। २ उचित के विपरीत विचार। कुमति। दुर्बुद्धि। बुरा विचार। ३ असमति। अस्वीकृति। ४ वाद विवाद। वितर्क। वितडा (को०)।

विमति²—वि० मूढ। मूर्ख। अज्ञ [को०]।

विमत्त—वि० [सं०] १ अभिमानी। उ०—जे ज्ञानमान विमत्त तव भय हरनि भगति न आदरी।—मानस, ७।१३। २ मतवाला या मस्त (हाथी)।

विमत्सर¹—सज्ञा पुं० [सं०] अधिक अहकार। उ०—तजि काम क्रोध विमत्सरालस लोभ मोह निवारि कै। छल मल कुसगति त्यागि मद दुरवासना सनमानि कै।—विश्राम (शब्द०)।

विमत्सर²—वि० १ मत्सररहित। २. अहकारशून्य।

विमद—वि० [सं०] १ मदरहित। उन्मादहीन। जो मतवाला न हो। २ (वह हाथी) जिसे मद न बहता हो। ३ आनद, दु ख आदि से रहित। हर्षशून्य (को०)।

विमद्य—वि० [सं०] जिसने शराब पीना छोड दिया हो। जो मदिरा पान करना छ़ोडे हो [को०]।

विमध्यम—वि० [सं०] तटस्थ। मध्यवर्ती। उदासीन [को०]।

विमन¹—वि० [सं० विमनस्] अनमना। उदास। रजीदा। खिन्न। उ०—विमन बटि मुनि सुर सरि तीरा। तह आयो नारद मुनि धीरा। क्यो उदास अस पूछ्यो व्यासै। बरण्यो व्यास सकल निज आसै।—रघुराज (शब्द०)।

विमनस्क—वि० [सं०] १ जिसका मन उचटा हो। जिसका मन न लगता हो। अनमना। २ उदास। खिन्न। अप्रसन्न। रजीदा। ३ परेशान। व्याकुल। हैरान (को०)।

विमना—वि० [सं० विमनस्] दे० 'विमनस्क' [को०]।

विमनिमा—सज्ञा स्त्री० [सं० विमनिमन्] उदासी। विमनस्क होने का भावखिन्नता [को०]।

विमन्यु—वि० [सं०] विगतमन्यु। क्रोधरहित [को०]।

विमय—सज्ञा पु० [सं०] परिवर्तन। अदला बदली। लेन देन। विनिमय [को०]।

विमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] १ चूर्ण करना। पीसना। २ मींजना। मसलना। रगड़ना। ३ संघर्ष। युद्ध। ४ बाधा। ५ संपर्क। स्पर्श। ६ खग्रास। ७ सूर्य और चंद्रमा का मेल। ८ एक वृक्ष। ९ संपीडित करना। कसना (आलिंगन करते समय)। १०. छीनना। अपहरण करना। बिगाड़ देना (को०)। ११. शरीर पर उबटन आदि लगाना या मलना (को०)। १२. विध्वंस। विनाश (को०)। १३ थकान। क्लांति (को०)।

विमर्दक¹—वि० [सं०] १ खूब मर्दन करनेवाला। मसल डालनेवाला। २ चूर चूर करनेवाला। पीस डालनेवाला। ३ नष्ट भ्रष्ट करनेवाला। ध्वस्त करनेवाला।

विमर्दक²—संज्ञा पुं० १. विमर्दन करने की क्रिया। २ उपराग। ग्रहण। ३ एक पौधा। चक्रमर्द। चकवँड (को०)।

विमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १ खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना। दलना। २ कुचलना। पीस डालना। ३ ध्वस्त करना। नष्ट करना। बरबाद करना। ४ मार डालना। ५ पीडित करना। ६ अभिभव। प्रस्फुटन। स्फुरण। जैसे,—बीज फूटकर अंकुर का प्रकट होना (सांख्य)। ७ युद्ध। लड़ाई। संघर्ष (को०)। ८. उपराग। ग्रहण (को०)। ९. एक राक्षस का नाम (को०)।

विमर्दना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विमर्दन' (को०)।

विमर्दनीय—वि० [सं०] मर्दन करने योग्य।

विमर्दित—वि० [सं०] १. मला दला हुआ। २ कुचला हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। ४ पीडित। ५ अपमानित।

विमर्दिनि (पु)—वि० स्त्री० [सं०] नाश करनेवाली। ध्वस्त करनेवाली। उ०—जै मधुकैटभ छलनि देवि जै महिष विमर्दिनि। —भूषण ग्रं० पृ० ३।

विमर्दिनी—वि० स्त्री० [सं०] नाश करनेवाली। वध करनेवाली।

विमर्दी—वि० [सं० विमर्दिन्] [स्त्री० विमर्दिनी] १ खूब मर्दन करनेवाला। २. कुचलनेवाला। पीसनेवाला। ३. नष्ट करनेवाला। ४ वध करनेवाला। मारनेवाला।

विमर्दोत्थ—वि० [सं०] (सुगंध आदि) जो रगड़ने से उत्पन्न हो (को०)।

विमर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी तथ्य का अनुसंधान। किसी बात का विवेचन या विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ परखने की क्रिया। परीक्षा। ४ परामर्श। सलाह। ५ असंतोष। अधीरता। ६. संकोच। संदेह (को०)। ७ ज्ञान (को०)। ८ विपरीत निर्णय (को०)। ९ पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी हुई भावना या वासना (को०)। १०. शिव (को०)। ११ नाटक की पाँच प्रकार की संधियों में से एक। अवमर्श संधि (को०)।

विमर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमृष्ट, विमर्शी] १ विवेचन करना। तर्क वितर्क करना। २. आलोचना करना।

विमर्श संधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विमर्श सन्धि] नाट्यशास्त्र के अनुसार पाँच प्रकार की संधियों में से एक। दे० 'अवमर्श संधि'।

विमर्शित—वि० [सं०] १ विचारित। विवेचित। २ आलोचित। समीक्षित (को०)।

विमर्शी—वि० [सं० विमर्शिन्] १ विचारक। विवेचक। २ आलोचक। समीक्षक (को०)।

विमर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवेचन। विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अपवाद संफेट, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद, प्रतिषेध, प्ररोचना, आदान और छादन का वर्णन होता है।

विशेष—दोष कथन को अपवाद, क्रोध से भरी बातचीत को संफेट, कार्य के हेतु के उद्भव को व्यवसाय, शोक आदि के वेग में गुरुजनों के आदर आदि का ध्यान न रखने को द्रव, भयप्रदर्शन द्वारा उद्वेग उत्पन्न करने को द्युति, विरोध की शांति को शक्ति, अत्यंत गुणकीर्तन या दोषदर्शन को प्रसंग, शरीर या मन की थकावट को खेद, अभिलषित विषय में रुकावट को प्रतिषेध, कार्यध्वंस को विरोध, प्रस्तावना के समय नट, नटी नाटक या नाटककार आदि की प्रशंसा को प्ररोचना, सहार विषय के प्रदर्शित होने को आदान, तथा कार्योद्धार के लिये अपमान आदि सह लेने को छादन कहते हैं।

४ उद्वेग। व्याकुलता। क्षोभ (को०)।

विमर्षित—वि० [सं०] अशांत। क्षुब्ध। व्याकुल। परेशान। उ०—अर्ध जीवित सा, औ' मृत सा, न हर्षित सा, न विमर्षित सा।—पल्लव, पृ० १११।

विमल¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विमला] १ निर्मल। मलरहित। स्वच्छ। साफ। जैसे, जल। २ बिना ऐब का। निर्दोष। जैसे, विमल मति। ३ रमणीय। सुंदर। मनोहर। ४ श्वेत। उज्वल।

यौ०—विमलकीर्ति। विमलगर्भ। विमलदल। विमलनिर्भास = दे० 'विमलभास'। विमलमणि। विमलमति।

विमल²—संज्ञा पुं० १ एक उपधातु जिसके शोधन आदि की विधि रसेंद्रसार में लिखी है। २ चाँदी। ३ गत उत्सर्पिणी के ५वें और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हत् या तीर्थंकर। (जैन)। ४, सुद्युम्न का पुत्र। ५ पद्मकाष्ठ। पद्म काठ। ६. सेंधा नमक। ७ चांद्र वर्ष (को०)। ८ अस्त्र संबंधी एक मंत्र (को०)। ९ एक लोक का नाम (को०)। १० समाधि का एक प्रकार (को०)। ११ सिलखड़ी। खड़िया (को०)।

विमलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नग या बहुमूल्य पत्थर (को०)।

विमलकीर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १ महायान पंथ के एक बौद्ध आचार्य जिन्होंने कई सूत्रों की रचना की है, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। २. वह जिसकी कीर्ति विमल हो।

विमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २ पवित्रता। ३ शुद्धता। निर्दोषता। ४ रमणीयता। मनोहरता।

विमलदान—संज्ञा पुं० [सं०] वह दान जो नित्य नैमित्तिक और काम्य के अतिरिक्त हो और केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाय। (गरुडपुराण)।

विमलध्वनि—संज्ञा पुं० [सं०] छह चरणों का एक छंद जो एक दोहे और समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमलनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलप्रदीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की समाधि। २ एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

विमलमणि—संज्ञा पुं० [सं०] स्फटिक [को०]।

विमलमति—वि० [सं०] पवित्र अंत करणवाला। जिसकी मति शुद्ध हो शुद्ध बुद्धिवाला[को०]।

विमला¹—वि० स्त्री० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

विमला²—संज्ञा स्त्री० १ सप्तला का पेड। कोची। सातला। चर्मकषा। २ सिद्धि की दस भूमियो (अवस्थायो) में से एक प्रकार की भूमि। ३ एक देवी का नाम जो कालिकापुराण मे वासुदेव की नायिका कही गई है। ४ शारदा। सरस्वती। ५ चाँदी का मुलम्मा (को०)।

विमलाक्ष—वि० [सं०] वह घोडा जिसके शरीर पर बालो की दस भौंरी हो। इस प्रकार का घोड़ा बहुत उत्तम माना जाता है [को०]।

विमलात्मक—वि० [सं०] शुद्ध। साफ। विमल [को०]।

विमलात्मा¹—वि० [सं० विमलात्मन्] शुद्ध हृदयवाला। शुद्ध मनवाला।

विमलात्मा²—संज्ञा पुं० चद्रमा।

विमलाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात मे स्थित है [को०]।

विमलापति—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा। उ०—जानत हो जिय सोदर दोऊ। कै कमला विमलापति कोऊ।—केशव (शब्द०)।

विमलार्थक—वि० [सं०] विमल। निर्मल [को०]।

विमलाशोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सन्यासियो का एक भेद। २. एक तीर्थ स्थान।

विमलीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विमल करने की क्रिया। शुद्ध करने की क्रिया। २ सर्वदर्शनसग्रह के अनुसार मन मे विचार कर ज्योति मंत्र से तीनो मलो का नाश करना।

विमलोदका, विमलोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

विमांस—संज्ञा पुं० [सं०] अशुद्ध, अपवित्र या न खाने योग्य मांस। (जैसे, कुत्ते आदि का)।

विमाँन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विमान] दे० 'विमान'। उ०—परमानद निरखि लीला थके सुर विमाँन।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३०।

विमाई†—संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका, हिं० बिवाई] दे० 'बिवाई'। उ०—तुम्हरे पग तो भई विमाई सो मल जानहु।—श्यामा०, पृ० १५६।

विमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] अपनी माता के अतिरिक्त पिता की दूसरी विवाहिता स्त्री। सौतेली माँ।

विमातृज—संज्ञा पुं० [सं०] विमाता का पुत्र। सौतेला भाई।

विमात्र, विमात्रा—वि० [सं०] जिसकी मात्रा समान न हो [को०]।

विमान—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाशमार्ग से गमन करनेवाला रथ जो देवताओं आदि के पास होता है। देवयान। जैसे, पुष्पक विमान। २ हवाई जहाज। वायुयान। उड़न खटोला (अँ० एयरोप्लेन)। ३ मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अर्थी जो सजधज के साथ निकाली जाती है। ४ रथ। गाडी। ५ अश्व। घोडा। ६ सात खंड का मकान। सात मंजिल का घर। ७ अपमान। अनादर। ८ जलपोत। जहाज (को०)। ९ परिमाण। माप। १०. रामलीला आदि मे सजाई हुई एक सवारी। ११. राज-प्रासाद (को०)। १२ एक प्रकार का बुर्ज या मीनार (को०)। १३ उपवन। वृक्षवाटिका (को०)। १४ विस्तार। फैलाव। विततिं (को०)। १५ सभाभवन या कक्ष (को०)। १६. प्राचीन वास्तु विद्या के अनुसार वह देवमंदिर जो ऊपर की ओर गावदुम या पतला होता हुआ चला जाय।

विशेष—'मानसार' नामक प्राचीन ग्रंथ के अनुसार विमान गोल, चौपहला और अठपहला होता है। गोल को 'बेसर', चौपहले को 'नागर' और अठपहले को 'द्राविड' कहते हैं।

विमानगति—संज्ञा पुं० [सं० विमान+गति] देवता।—अनेकार्थ०, पृ० ४१।

विमानच्छद—संज्ञा पुं० [सं० विमानच्छन्द] प्रासाद विशेष। उ०—विमानच्छंद प्रासाद का नाम है।—बृहत्संहिता, पृ० २८२।

विमानचारी—वि० [सं० विमानचारिन्] विमान पर चलनेवाला। वायुयान से यात्रा करनेवाला [को०]।

विमानचालक—संज्ञा पुं० [सं०] विमान या वायुयान चलानेवाला।

विमानधुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] तामजान, पालकी आदि ढोनेवाला व्यक्ति। (कहार आदि)।

विमानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपमान। अवमानना। तिरस्कार।

विमाननिर्व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] एक समाधि [को०]।

विमानयान—वि० [सं०] दे० 'विमानचारी' [को०]।

विमानराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ व्योमयान। २ देवविमान का चालक [को०]।

विमानवाह—संज्ञा पुं० [सं०] पालकी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

विमानित—वि० [सं०] तिरस्कृत। उपेक्षित [को०]।

विमानीकृत—वि० [सं०] १ तिरस्कृत। अनादृत। २ विमान की तरह व्यवहृत। विमान बनाया हुआ [को०]।

विमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा रास्ता। २ कदाचार। बुरी चाल। ३. झाड़ू। कूचा।

विमार्गगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] असती या कुलटा स्त्री [को०]।

विमार्गगामी—वि० [सं० विमार्गगामिन्] कुमार्ग पर जानेवाला [को०]।

विमार्गण—संज्ञा पुं० [सं०] अन्वेषण। खोज। तलाश [को०]।

विमार्गदृष्टि—वि० [सं०] असत् पथ पर दृष्टि डालनेवाला [को०]।

विमार्गप्रस्थित—वि० [सं०] कुमार्ग की ओर प्रस्थित। विमार्गगामी। कदाचारी [को०]।

विमार्गस्थ—वि० [सं०] दे० 'विमार्गगामी' [को०]।

विमार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पवित्र करना। शुद्ध करना। २. मार्जन करना। धोना [को०]।

विमासना(पु)—क्रि० स० [सं० विमर्शन, प्रा० विमरस] विचार विमर्श करना। सोचना। सलाह मशविरा करना। उ०—राणी राय विमासियउ, तेडइ साल्हकुमार।—ढोला०, दू० १००।

विमित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह चौकोर शाला या इमारत जो चार खभों पर टिकी हो। २. बडा कमरा या इमारत।

विमित[2]—वि० १. जिसकी सीमा या हद हो। परिमित। निश्चित। २. निर्मित।

विमिश्र—वि० [सं०] १. मिला हुआ। मिश्रित। २. जिसमें कई प्रकार की वस्तुओं का मेल हो। मिला जुला। ३ (मूल या धन) जो सूद के साथ मिला हो (को०)

विमिश्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, और अश्लेषा नक्षत्र मे बुध की गति का नाम जो ३० दिनो तक रहती है।

विमिश्रित—वि० [सं०] १. मिलाया हुआ। २ मिला जुला। विमिश्र।

विमुक्त—वि० [सं०] १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। जो बधन से अलग हुआ हो। २ जिसे किसी प्रकार का प्रतिबध या रुकावट न रह गई हो। ३ स्वच्छद। आजाद। ४ (हानि, दड आदि से) बचा हुआ। ५ अलग किया हुआ। बरी। ६ पकड से छूटकर चला हुआ। फेंका हुआ। छोडा हुआ। जैसे,—विमुक्त बाण। ७ अभिव्यक्त (को०)। ८ मुक्तकचुक। (सर्प) जिसने केचुली छोडी हो (को०)। ९ युक्त। सहित (को०)। १० जो जल मे उतरा गया हो। जैसे, जलपोत (को०)।

विमुक्तकंठ—वि० [सं० विमुक्तकण्ठ] १. जोर से चिल्लानेवाला। २. उच्च स्वर से रोनेवाला।

विमुक्तप्रग्रह—वि० [सं०] ढीली लगामवाला या जिसकी लगाम को ढील दे दी गई हो [को०]।

विमुक्तमौन—वि० [सं०] जिसने मौन व्रत समाप्त कर दिया हो [को०]।

विमुक्तशाप—वि० [सं०] जिसे शाप से छुटकारा मिल गया हो। शापमुक्त [को०]।

विमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। रिहाई। २ मुक्ति। मोक्ष। ३ पृथक्ता। अलगाव। वियोग (को०)।

यौ०—विमुक्तिपथ = मुक्ति का मार्ग।

विमुख—वि० [सं०] १ मुखरहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। जो किसी कार्य या विषय मे दत्तचित्त न हो। जो किसी काम से हटा या अलग हो। अतत्पर। विरत। निवृत्त। जैसे,—कर्तव्य से विमुख होना। ३. जो अनुरक्त न हो। जिसे परवाह न हो। जिसने मन न लगाया हो। उदासीन। जैसे,—हरिपद विमुख। ४. जो किसी के हित के प्रतिकूल हो। जिसकी स्थिति या आचरण अनुकूल न हो। विरुद्ध। खिलाफ। अप्रसन्न। जैसे—जब ईश्वर ही विमुख है, तब क्या हो सकता है। ५ मुखरहित। छिद्ररहित। ६ जिसकी चाह या माँग पूरी न हुई हो। अप्राप्तमनोरथ। निराश। जैसे—उनके यहाँ से कोई याचक विमुख नही गया। उ०—जो ऐहैं सो भोजन पैहैं। विमुख कोउ इनतें नहिं जैहैं।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

विमुखता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी बात से दूर रहना। अतत्परता विरति। २. विपरीतता। विरोध। अप्रसन्नता।

विमुग्ध—वि० [सं०] १ मोहित। आसक्त। २ भ्रम मे पडा हुआ। भूला हुआ। भ्रात। ३. घबराया हुआ। डरा हुआ। ४ उन्मत्त। मतवाला। ५ पागल। बावला। ६. बेसुध।

विमुग्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोहनेवाला। २ एक प्रकार का छोटा अभिनय या नकल। (नाट्यशास्त्र)।

विमुग्धकर—वि० [सं०] मोहक। आनदप्रद। उ०—रस का विवेचन जितना ही विमुग्धकर है उतना ही पांडित्यपूर्ण।—रस क०, पृ० २४।

विमुग्धकारी—संज्ञा पुं० [सं० विमुग्धकारिन्] [स्त्री० विमुग्धकारिणी] १ मोहित करनेवाला। २ भ्रम मे डालनेवाला।

विमुद[1]—वि० [सं०] आनदरहित। उदास। खिन्न। उ०—करति केलि पिय हिय लगी, कोक कलनि अवरेखि। विमुद कुमुद लौं ह्वै रही चदु मद दुति देखि।—पद्माकर (शब्द०)।

विमुद[2]—संज्ञा पुं० एक बडी संख्या का नाम।

विमुद्र—वि० [सं०] १. जो मुद्राकित न हो। बिना मुहर का। २ विकसित। खिला हुआ। ३. अत्यधिक। प्रचुर। बहुत ज्यादा [को०]।

विमुद्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. खोलना। अनावृत्त करना। विकसित करना। खिलाना [को०]।

विमूढ़[1]—वि० [सं० विमूढ] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यत मोहित। २ मोहप्राप्त। भ्रम मे पडा हुआ। चकराया हुआ। ३. बेसुध। अचेत। ४. ज्ञानरहित। जिसे समझ न पडता हो। जैसे,—किंकर्तव्यविमूढ़। ५ बहुत मूर्ख। जडबुद्धि। नादान। नासमझ। ६. चतुर। बुद्धिमान् (को०)।

विमूढ़[2]—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सगीत कला। २. एक देवयोनि (को०)।

विमूढ़क—संज्ञा पुं० [सं० विमूढक] एक प्रकार का प्रहसन [को०]।

विमूढ़गर्भ—संज्ञा पुं० [सं० विमूढगर्भ] वह गर्भ जिसमे बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव मे बडी कठिनता हो।

विमूढ़चेता—वि० [सं० विमूढचेतस्] १. हतबुद्धि। अज्ञ। मूर्ख [को०]।

विमूढधी—वि० [सं० विमूढधी] दे० 'विमूढचेता' [को०]।

विमूढ़भाव—संज्ञा पुं० [सं० विमूढभाव] विमूढ होने की स्थिति [को०]।

विमूढ़संज्ञ—वि० [सं० विमूढसंज्ञ] विभ्रमित। घबराया हुआ। व्याकुल [को०]।

विमूढ़ात्मा—वि० [सं० विमूढात्मन्] दे० 'विमूढ़संज्ञ' [को०]।

विमूर्च्छित¹—वि० [सं०] बेहोश या अचेत पड़ा हुआ। उ०—दीर्घकाल से सुप्त और विमूर्च्छित राष्ट्र में नवचेतना के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे।—हिं० आ० प्र०, पृ० ३३। २ भग्न हुआ। पूर्ण (को०)। ३ जो जमकर गाढ़ा हो गया हो (को०)।

विमूर्च्छित²—संज्ञा पुं० मूर्छा। बेहोशी। गश (को०)।

विमूर्छन—वि० [सं० विमूर्च्छन] बेहोश करनेवाला। उ०—सामर्थ्य दर्प से उन्मद, मैं जब तुझे पुकारा। किस ओर से वही उच्छल, यह दीप्त विमूर्छन धारा।—विश्वप्रिया, पृ० ९२।

विमूर्त—वि० [सं०] जमा हुआ। ठोस (को०)।

विमूर्ध, विमूर्धज—वि० [सं०] गंजा। खल्वाट (को०)।

विमूल—वि० [सं०] १ मूलरहित। बिना जड़ का। २. मूल से रहित। उच्छिन्न। निर्मूल। ३ बरबाद। नष्ट।

क्रि० प्र०—करना। —होना।

विमूलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. विनाश। ध्वंस।

विमृग—वि० [सं०] मृगरहित। जिसमें हिरन न हो। जैसे, जगल (को०)।

विमृत्यु—वि० [सं०] जिसकी मृत्यु न हो। अमर (को०)।

विमृदित—वि० [सं०] मसला हुआ। (को०)।

विमृश—संज्ञा पुं० [सं०] चिंता। विमर्श। विचार (को०)।

विमृशित—वि० [सं०] विचारित। चिंतित (को०)।

विमृश्य¹—वि० [सं०] १ विवेचन के योग्य। आलोचना या समीक्षा के योग्य। २ जिसपर विवेचना या विचार करना हो। जिसकी समीक्षा करनी हो।

विमृश्य²—क्रि० वि० विचारोपरांत। विचार करके। विचार विमर्श के अनंतर (को०)।

विमृश्यकारी—वि० [सं० विमृश्यकारिन्] [वि० स्त्री० विमृश्यकारिणी] सोच विचारकर कार्य करनेवाला। विचारपूर्वक काम करनेवाला (को०)।

विमृष्ट¹—वि० [सं०] जिसपर तर्क वितर्क या सम्यक् विचार हुआ हो। २ जिसकी पूरी आलोचना या समीक्षा हुई हो। ३ परिच्छिन्न। ४ मर्दित। मला हुआ। रगड़ा हुआ (को०)।

विमृष्ट²—संज्ञा पुं० चिंतन। विचार (को०)।

विमोक¹—वि० [सं०] १ मलरहित। रागरहित। दुर्वासनारहित। (जैन)। २ ऊपरी आवरणरहित। ३. साफ। स्पष्ट।

विमोक²—संज्ञा पुं० १ मुक्ति। छुटकारा। रिहाई। २ मुक्त करने, छोड़ने या खोलने की क्रिया।

विमोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० विमोक्तृ] मुक्त करनेवाला। छुड़ानेवाला।

विमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन, गाँठ आदि का खुलना। २ छुटकारा। मुक्ति। रिहाई। ३ जन्म मरण के बंधन से छूटना। आवागमन से छुट्टी पाना। मुक्ति। निर्वाण। ४ सूर्य या चंद्रमा का ग्रहण से छूटना। ग्रहण का हटना। उग्रह ५. किसी वस्तु का धक्के से इस प्रकार छूटना कि वह दूर जा पड़े। प्रक्षेपण। ६ मेरु पर्वत का एक नाम। ७. दान। उद्धार (को०)।

विमोक्षक—वि० [सं०] मुक्त करने या बंधन से छुड़ानेवाला (को०)।

विमोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोक्षणीय] १ बंधन आदि खोलना। २. मुक्त करना। रिहा करना। ३ हाथ से छोड़ना जिसमें कोई वस्तु दूर जा पड़े। प्रक्षेपण। ४ अंडे देना (को०)।

विमोक्षी—वि० [सं० विमोक्षिन्] मोक्षप्राप्त। मुक्ति पानेवाला (को०)।

विमोघ—वि० [सं०] १ व्यर्थ न होनेवाला। न चूकनेवाला। खाली न जानेवाला। अमोघ। २ व्यर्थ। बेकार। निष्फल (को०)।

विमोचक—वि० [सं०] १ मुक्त करनेवाला। छुड़ानेवाला। २. बंधन खोलनेवाला। ३. गिरानेवाला। छोड़नेवाला। डालनेवाला।

विमोचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना। २ बंधन से छुड़ाना। मुक्त करना। रिहा करना। ३ गाड़ी से बैल आदि को खोलना। ४ निकालना। बाहर करना। जैसे, —अश्रुविमोचन। ५ इस प्रकार अलग करना कि कोई वस्तु दूर जा पड़े। छोड़ना। फेंकना। जैसे,—धनुष से बाण। ६ गिराना। ढालना। ७ शिव का एक नाम (को०)।

विमोचना(पु)—क्रि० स० [सं० विमोचन] १. बंधन आदि खोलना। २. छुटकारा देना। रिहा करना। मुक्त करना। छोड़ना। ३. गिराना। टपकाना। ४. निकालना। बाहर करना। उ०—जब तें परदेश सिधारे पिया अँसुवा अखियानि विमोचति सी।—बेनीप्रवीन (शब्द०)।

विमोचनीय—वि० [सं०] विमोचन के योग्य। छोड़ने के योग्य। मुक्त करने योग्य।

विमोचित¹—वि० [सं०] १. खुला हुआ। जो बँधा न हो। २. जो छोड़ दिया गया हो। मुक्त किया हुआ।

विमोचित²—संज्ञा पुं० शिव का एक नाम (को०)।

विमोचितावास—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार ऐसे स्थान में निवास करना जिसे किसी ने रहने के अयोग्य समझकर छोड़ दिया हो।

विमोच्य—वि० [सं०] १ छोड़ने योग्य। मुक्त करने योग्य। २. जिसे छोड़ना, खोलना या मुक्त करना हो।

विमोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। उ०—मन वसुदेव विमोह कंस से। मोचक माधव दुविद ध्वंस से।—रघुराज (शब्द०)। २ बेसुध होना। अचेत होना। आसक्ति। ४ एक नरक का नाम।

विमोहक¹—वि० संज्ञा पुं० [सं०] १ मोहनेवाला। लुभावना। २. मन में लोभ उत्पन्न करनेवाला। ललचानेवाला। ३ ज्ञान या सुध हरनेवाला।

विमोहक²—संज्ञा पुं० [सं०] एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १ मोहित करना। मन लुभाना। मुग्ध करना। २. दूसरे का मन वश में

करना। ३ सुध बुध भुलाना। ऐसा प्रभाव डालना कि चित्त-ठिकाने न रहे। मतिभ्रंश करना। ४ कामदेव के पाँच बाणों मे से एक। ५ एक नरक का नाम। ६ भ्रम। चक्कर (को०)।

विमोहनशील—वि० [स० विमोहन+शील] [वि० स्त्री० विमोहनशीला] १ भ्रमकारी। धोखा देनेवाला। चक्कर मे डालनेवाला। भ्रान करनेवाला। उ०—गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुर हित दनुज विमोहनशीला।—तुलसी (शब्द०)। २. मोहित करने-वाला। लुभानेवाला।

विमोहना(पु)[१]—क्रि० अ० [स० विमोहन] मोहित होना। लुभा जाना। आसक्त होना। उ०—एक नयन कवि मुहमद गुनी। सोइ विमोहा जो कवि सुनी।—जायसी (शब्द०)। २ बेसुध होना। तन मन की सुध न रखना। भ्रात होना। धोखा खाना।

विमोहना[२]—क्रि० स० १ मोहित करना। लुभाना। २ ऐसा प्रभाव डालना कि तन मन की सुधि न रहे। बेसुध करना। ३. भ्राति मे करना। धोखे मे डालना। ४ वशीभूत करना (को०)।

विमोहा - सज्ञा स्त्री० [देश०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण (ऽ।ऽ) होते हैं। इसे 'जोहा', 'विजोहा' और विज्जोहा' भी कहते हैं। विशेष दे० 'विजोहा'।

विमोहित—वि० [स०] १. लुभाया हुआ। मुग्ध। उ०—तुम अस बहुत विमोहित भए। धुन धुन सीस जीव दै गए।—(शब्द०)। २ तन मन की सुध भूला हुआ। ३ मूर्छित। उ०—यह सुनना न पडे सोई अच्छा है और यही कहते कहते वह विमोहित हो गई।—कादबरी (शब्द०)। ४ वशीकृत (को०)।

विमोही—वि० [स० विमोहिन्] [वि० स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जी लुभानेवाला। मन आकर्षित करनेवाला। २. सुध बुध भुलानेवाला। ऐसा प्रभाव डालनेवाला कि तन मन की सुध न रहे। ३. मूर्छित या बेहोश करनेवाला। ४ भ्रम मे डालनेवाला। भ्रात करनेवाला। ५ जिसे मोह या दया न हो। जिसे ममता या स्नेह न हो। निठुर। कठोरहृदय। उ०—जिउ गँवाइ सो गएउ विमोही। भा बिनु जिव, जिउ दीन्हेसि ओही।—जायसी (शब्द०)।

विमौट— सज्ञा पुं० [स० वल्मीक, प्रा० वम्मी+औट (प्रत्य०)] दीमको का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी। उ०—गोहर ह्वै तुम पूरब जनमा। बसे विमौट एक कहुँ बन माँ—रघुराज (शब्द०)।

विम्लान—वि० [स०] १. मुरझाया हुआ। विवर्ण। शुष्क। २ ताजा। हरा भरा (को०)।

विम्लापन—सज्ञा पु० [स०] १ ताजगी। अम्लानता। २ विशुद्धि। परिष्कृति। ३ म्लान करनेवाला। मुरझा देनेवाला (को०)।

वियग(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० विय+अग] दो अगवाले, महादेव। उ०—करहि वियगा आलिगन। तेहि चंद्रहि कबहूँ सालिगन। —शा० दि० (शब्द०)।

वियता—वि० [सं० वियन्तृ] १ जिसका कोई नियता न हो। नियामकरहित। २. सारथिहीन (को०)।

विय(पु)—वि० [स० द्वि, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो। जोडा। २. दूसरा। उ०—कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन पखान। नातरु कत इनि विय लगत उपजत विरह कृशान।—बिहारी (शब्द०)।

वियच्चारी—सज्ञा पु० [स० वियत्चारिन्] चील पक्षी (को०)।

वियत्[१]—सज्ञा पुं० [स०] १. आकाश। २ वायुमंडल।

वियत्[२]—वि० गमनशील।

वियत्पताका—सज्ञा स्त्री० [स०] विद्युत्। बिजली।

वियत्पथ—सज्ञा पु० [स०] आकाशमार्ग। वायुमडल (को०)।

वियति—सज्ञा पुं० [स०] १. भागवत के अनुसार नहुष राजा के एक पुत्र का नाम। २ चिडिया। पक्षी (को०)।

वियद्गगा—सज्ञा स्त्री० [स० वियद्गङ्गा] आकाशगंगा।

वियद्गति—वि० [सं०] आकाशचारी (को०)।

वियद्ध(पु)—सज्ञा पु० [स० वियत्]। दे० 'वियत्'। उ०—उठति एहि हल्लिता। वियद्ध चद्र चल्लिता।—पृ० रा०, २५।१३१।

वियद्व्यापी—वि० [सं० वियत्+व्यापिन्] आकाशव्यापी। उ०—शब्द वियद्व्यापी सत्ता है।—संपूर्णानंद अभि० ग्रं०, पृ० ११२।

वियद्भूति—सज्ञा स्त्री० [स०] अँधेरा। अंधकार (को०)।

वियन्मणि—सज्ञा पु० [स०] सूर्य।

वियन्मध्यहस—सज्ञा पु० [सं०] सूर्य (को०)।

वियम—सज्ञा पुं० [स०] १ संयम। इद्रियदमन। २ दुख। क्लेश। यातना। ३ प्रतिबध। रोक। नियंत्रण (को०)। ४. विराम। पडाव (को०)।

वियव—सज्ञा पुं० [सं०] आँत मे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का कीडा (को०)।

वियात—वि० [स०] १ रास्ते से भटका हुआ। पथभ्रष्ट। २ गया गुजरा। गया बीता। ३. ढीठ। हिम्मती। धृष्ट (को०)। ४ निर्लज्ज। बेहया। ५. दुश्चरित्र। व्यसनी (को०)।

वियान—सज्ञा पुं० [सं० व्यान] शरीरस्थ एक वायु का नाम। दे० 'व्यान'। उ०—पाँचई बानी सिगन लेखा। वियान व्यान सो कीन्ह विवेखा।—कबीर सा०, पृ० ८८०।

वियाम—सज्ञा पुं० [स०] इंद्रियनिग्रह। सयम। २ दे० 'वियम' (को०)। ३. एक प्रकार की नाप जो विस्तृत दोनो भुजाओं की लंबाई के बराबर कही गई है (को०)।

वियास—क्रि० अ० [स० व्यास] १. विस्तृत होना। बढ़ना। फैलना। २. उगना। हरा भरा होना। उ०—मन वच कर्म लगाय संत की सेवा लावै। उकठा काठ वियास साच जो दिल मे आवै।—पलटू०, पृ० १०४।

वियुक्त—वि० [स०] १. जो संयुक्त न हो। जिसकी जुदाई हो गई हो। बिछुडा हुआ। वियोगप्राप्त। २ जुदा। अलग। पृथक्। ३ रहित। हीन। वंचित। ४ अभावग्रस्त (को०)।

वियुत—वि० [स०] १. वियुक्त। अलग। २ रहित। हीन।

वियुति—सज्ञा स्त्री० [सं०] गणित मे दो राशियो का अतर (को०)।

वियूथ—वि० [सं०] जो अपने दल से अलग हो गया हो। यूथभ्रष्ट [को०]।

वियो ⓟ—वि० [सं० द्वितीय, प्रा० वीय] दूसरा। अन्य। उ०—ज्ञान स्मारत पच्छ को नाहिन कोउ खडन वियो।—नाभादास। (शब्द०)।

वियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ सयोग का अभाव। मिलाप का न होना। विच्छेद। २ पृथक् होने का भाव। अलगाव। ३ दो प्रेमियो का एक दूसरे से अलग होना। विरह। जुदाई।

विशेष—साहित्य मे शृंगार रस दो प्रकार का माना गया है—सयोग शृगार (या सभोग शृगार) और वियोग शृगार (या विप्रलभ शृ गार)। वियोग की दशा तीन प्रकार की होती है—पूर्वराग, मान और प्रवास।

४ गणित म राशि का व्यवकलन। ५ अभाव। हानि (को०)।

वियोगभाक्—वि० [सं० वियोगभाज्] वियोगी। विरही [को०]।

वियोगात—वि० [सं० वियोगान्त] (उपन्यास, नाटक या कथा आदि) जिसकी कथा का अत दु खपूर्ण हो।

विशेष—आधुनिक नाटक दो प्रकार के माने जाते हैं—सुखात और दु खात। इन्ही का कुछ लोग सयोगात और वियोगात भी कहते है। भारतवर्ष मे सयोगात या सुखात नाटक लिखने की ही चाल पाई जाती है, दु खात का निषेध ही मिलता है। पर पूर्वकाल मे दु खात नाटक भी लिखे जाते थे, इसका आभास कालिदास के पूर्ववर्ती महाकवि भास के नाटको से मिलता है।

वियोगावसान—वि० [सं०] जिसका अत वियोग हो [को०]।

वियोगावह—वि० [सं०] वियोगजनक। वियोग करने या देनेवाला [को०]।

वियोगिन ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० वियोगिनी] दे० 'वियोगिनी'।

वियोगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने पति या प्रिय से वियुक्त हो। जो अपने प्यारे से बिछुडी हुई हो। वह स्त्री जिसका पति या नायक पास मे न हो और जो उसके न रहने से दु खी हो। २ एक प्रकार का छद।

विशेष—इसे वैतालीय और सुदरी भी कहते हैं। इसके विषम चरणो में स स ज ग और सम चरणो मे स भ र ल ग होते हैं।

वियोगी¹—वि० [सं० वियोगिन्] [वि० स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से वियुक्त हो। जो प्रियतमा से बिछुडा हो। विरही। २. पृथक् किया हुआ। जुदा किया हुआ (को०)। ३. अनुपस्थित (को०)।

वियोगी²—संज्ञा पुं० १. वियोगी पुरुष। २ चक्रवाक। चकवा।

वियोजक—संज्ञा पु० [सं०] १. अलग करनेवाला। दो मिली हुई वस्तुओ को पृथक् करनेवाला। २ गणित मे वह सख्या जिसे किसी दूसरी बडी सख्या मे से घटाना हो।

वियोजन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० वियोजनीय, वियोजित, वियोज्य] १. मिली हुई वस्तुओ को अलग करना। जुदा करना। पृथक् करना। २ गणित मे एक सख्या मे से उससे कुछ छोटी दूसरी सख्या निकालने या घटाने की क्रिया। बाकी।

वियोजित—वि० [सं०] १ पृथक् किया हुआ। अलग किया हुआ। २ रहित। शून्य।

वियोज्य¹—वि० [सं०] १ वियोजन के योग्य। पृथक् करने योग्य। २ जिसे अलग करना हो। जिसे जुदा करना हो।

वियोज्य²—संज्ञा पुं० गणित मे वह सख्या जिसमे से कोई सख्या घटानी हो।

वियोनि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनेक जन्म। बहु जन्म। नाना जन्म। २ पशुओ का गर्भाशय। ३ हीन जन्म। निकृष्ट या कलकपूर्ण पैदाइश। ४ अन्य जातीय स्त्री। विजातीय महिला [को०]।

वियोनि²—वि० १ हीनजन्मा। जारज। २. हीन या तिर्यक् योनिवाला [को०]।

वियोनिज—वि० [सं०] जो तिर्यक्योनि से उत्पन्न हो (पक्षी, पशु आदि) [को०]।

वियोनी—संज्ञा स्त्री०, वि० [सं० वियोनिनि] दे० 'वियोनि'।

विरंग¹—वि० [सं० विरङ्ग] १. बुरे रंग का। बदरग। विवर्ण। फीका। उ०—नवेला करी काकिल कुरग वार कोर कोर कुढि कुढि केहरि कलक लक हदली। जरि जरि जबूनद विद्रुम विरग होत, अग फारि दाडिम त्वचा भुजग बदली—(शब्द०)। २ अनेक रगो का। कई वर्णो का।

यौ०—रंग बिरग, रग बिरगा।

विरग²—संज्ञा पु० ककुष्ठ। एक प्रकार की पहाड़ी मिट्टी। विशेष दे० 'ककुष्ठ'।

विरंग³—संज्ञा पु० [सं० विराग] वैराग्य। विराग। विरक्ति।

विरग काबुली—संज्ञा पुं० [फा०] बायबिडग। भाभीरग।

विरच—संज्ञा पुं० [सं० विरञ्च] ब्रह्मा।

विरचन—संज्ञा पु० [सं० विरञ्चन] ब्रह्मा। विधाता [को०]।

विरचि—संज्ञा पु० [सं० विरञ्चि] सृष्टि रचनेवाला, ब्रह्मा। विधाता। उ०—सचि विरचि निकाई मनोहर लाजति मूरतिवत बनाई। तापर तो बड भाग बड़े मतिराम लसै पति प्रीति सुहाई।—मतिराम (शब्द०)।

विरचिसुत—संज्ञा पुं० [सं० विरञ्चि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद। उ०—मुनि विरचिसुत अति हरषाए। कहत सुनहु जो चहत सुहाए।—गोपाल (शब्द०)।

विरच्य—संज्ञा पुं० [सं० विरञ्च्य] ब्रह्मा [को०]।

विरज फूल—संज्ञा पुं० [हिं० विरज+फूल] एक प्रकार का धान या जडहन।

विरजित—वि० [सं० विरञ्जित] विगतानुराग। जिसका प्रेम मद पड़ गया हो [को०]।

विरकत ⓟ†—वि० [सं० विरक्त] दे० 'विरक्त'। उ०—जन रामा विरकत सोई चौथे पद विश्राम जो—राम० धर्म०, पृ० ६८।

विरक्त¹—वि० [सं०] १. जो अनुरक्त न हो। जिसका जो हटा हो। जिसे चाह न हो। विमुख। जैसे,—ऐसी बातो से वे सदा

विरक्त रहते हैं। २ जो कुछ प्रयोजन न रखता हो। उदासीन। ३. अप्रसन्न। खिन्न। जैसे,—उनकी बातें सुनकर वे और भी विरक्त हो गए। ४. अत्यत लाल रग का (को०)। ५ बदरंग (को०)। ६ आविष्ट। आसक्त। आवेशयुक्त (को०)।

विरक्त²—सज्ञा पुं० ऐसे बाजे जो केवल ताल देने के काम मे आते है।

विरक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुराग का अभाव। विरक्त होने का भाव। २. उदासीनता।

विरक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भाग्यहीन या खिन्न स्त्री। दुखियारी औरत। २ अननुकूला स्त्री [को०]।

विरक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। जी का हटा रहना। विराग। विमुखता। २ उदासीनता। ३ अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन—सज्ञा पु० [स०] [वि० विरचनीय विरचित] १ प्रणयन। निर्माण। बनाना। २ क्रमपूर्वक रचना या बनाना (को०)। ३ धारण करना (को०)।

विरचना(पु)¹—क्रि० स० [स० विरचन] १ रचना। बनाना। निर्माण करना। २. अलकृत करना। सजाना।

विरचना²—क्रि० अ० [स० वि०+रञ्जन] विरक्त होना। जी का हटना। उचटना। उ०—विरचि मन फेरि राच्यो जाइ।—सूर० (शब्द०)।

विरचयिता—सज्ञा पुं० [सं० विरचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।

विरचित—वि० [स०] १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। जैसे,—कालिदास विरचित शकुंतला नाटक। ३ घटित किया हुआ। सरचित। खचित। जटित (को०)। ४ सँवारा हुआ। अलकृत (को०)। ५ धारण किया हुआ। पहनाया हुआ (को०)।

विरछ(पु)—सज्ञा पुं० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ०—अरणाव साते उदर, विरछ रोमाच विचालें।—रघु० रू०, पृ० ४४।

विरज¹—वि० [स० विरजस्] १ रजोगुणरहित। सुख, वासना आदि से मुक्त। २ जिसपर धूल या गर्द न हो। निर्मल। स्वच्छ। साफ। ३ निर्दोष। वेऐब। ४ (स्त्री) जिसका रजोधर्म बद हो गया हो।

विरज²—सज्ञा पु० १ विष्णु। २ शिव। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम (को०)। ५ एक ऋषि (को०)।

विरजतमा—वि० [स० विरजतमस्] जो रजोगुण और तमोगुण से रहित हो [को०]।

विरजप्रभ—सज्ञा पुं० [स०] एक बुद्ध का नाम।

विरजमडल—सज्ञा पु० [सं० विरजमण्डल] एक तीर्थ जो उडीसा मे जाजपुर के पास माना गया है। यहाँ देवी की महाजया नामक मूर्ति है। (प्रभास खड)।

विरजस्क—वि० [सं०] दे० 'विरज' को०।

विरजस्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म रुक गया हो [को०]।

विरजा¹—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपित्थानी का पौधा जिसकी पत्तियाँ कैथ की पत्तियो के समान होती हैं। २ श्रीकृष्ण की एक प्रेमिका सखी जिसने राधा के भय से नदी का रूप धारण कर लिया था।

विशेष—इसकी कथा ब्रह्मवैवर्तपुराण के श्रीकृष्ण जन्म खड मे दी हुई है। गोलोक में एक बार कृष्ण जी राधा को न देखकर विरजा नाम की एक गोपी के पास चले गए। खबर पाते ही राधा दौडी। श्रीकृष्ण तो अतर्धान हो गए, और विरजा बेचारी डर के मारे नदी हो गई। जब कृष्ण इसके विरह मे बहुत व्याकुल हुए, तब इसने फिर अपना पूर्व रूप धारण कर लिया। ३ दूब। दूर्वा (को०)। ४ राजा नहुष की पत्नी (को०)। ५. जगन्नाथ क्षेत्र (को०)।

विरजा²—वि० [स० विरजस्] दे० 'विरज'।

विरजा³—सज्ञा स्त्री० गतार्तवा स्त्री। वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बद हो गया हो।

विरजाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत जो मेरु के उत्तर ओर है।

विरजाक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] उडीसा मे एक तीर्थ स्थान जो जाजपुर के पास माना जाता है। विरज मंडल।

विरझ(पु)—सज्ञा पु० [देश०] समूह। उ०—नंद० ग्रं०, पृ० ११४।

विरट—सज्ञा पुं० [स०] १ कधा। २ अगरु। अगर वृक्ष।

विरण—सज्ञा पुं० [स०] बरिन नाम की घास।

विरण्य—वि० [स०] विस्तृत। विस्तीर्ण [को०]।

विरतत(पु)—सज्ञा पु० [स० वृत्तान्त] वृत्तान्त। हाल। कथा। उ०—ढोल्यू मनि आरति हुई साभलि ए विरतत। जे दिन माह विण गया, दई न ग्याँन गिणत।—ढोला०, दू० २०८।

विरत—वि० [स०] १ जो अनुरक्त न हो। जिसे चाह न हो। जिसका मन हटा हो। विमुख। जैसे,—स्त्री या भोग विलास से विरत होना। २ जो लगा हुआ न हो। जिसने अपना हाथ हटा लिया हो। निवृत्त। जैसे,- किसी कार्य मे विरत होना। ३ जिसने सासारिक विषयो से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४ विशेष रूप से रत। बहुत लीन। बिलकुल लगा हुआ। उ०—कहुँ गनक गनत, जोगी जपत जत्र मत्र मन विरत नित।—गुमान। (शब्द०)। ५ जिसका अत या समाप्ति हो गई हो। समाप्त। उपरहृत (को०)। ६ विश्रात। थका या ठहरा हुआ (को०)।

विरति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २ जी का उचटना। उदासीनता। ३ सासारिक विषयो से जी का हटना। वैराग्य। उ०—जोग तें विरति, विरति ते ज्ञाना।—तुलसी (शब्द०)। ४ विश्राम। अवसान। यति (को०)।

विरत्त(पु)—वि० [स० विरक्त, प्रा० विरत्त] विरत। अप्रसन्न। उ०—साह विरत्तो मारवाँ ग्राह जही गज वार। जठै सुदरसण चक्र ज्यों रिणमल्ला पणधार।—रा० रू०, पृ० ७०।

विरथ—वि० [स०] १ बिना रथ का। जिसके पास रथ या सवारी न हो। उ०—रावण रथी विरथ रघुबीरा।—तुलसी (शब्द०)। २ रथ से गिरा हुआ। ३ पैदल।

विरथीकरण—संज्ञा पुं० [स०] युद्ध मे रथ नष्ट करके शत्रु को रथहीन करना।

विरथ्य—संज्ञा पुं० [स०] शिव (को०)।

विरथ्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कुमार्ग। खराब राह। २ उपमार्ग। गली। लेन (को०)।

विरद¹—संज्ञा पुं० [स० विरुद] १ बडा नाम। लंबा चौडा या सुंदर नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। उ०—बडे न हूजे गुनन बिनु विरद बडाई पाय। कहत धतूरा को कनक गहनो गढ्यो न जाय।—बिहारी (शब्द०)। ३ यश। कीर्ति। विशेष दे० 'विरुद'।

विरद²—वि० [स०] बिना दाँत का।

विरदावली—संज्ञा स्त्री० [स० विरुदावली] यश की कथा। कीर्ति की कथा। प्रशंसा के गीत।

विरदैत(पु)—वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] बडे विरदवाला। कीर्ति या यशवाला। बडे नामवाला।

विरध(पु)†—वि० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—विरध भया कफ वाय ने घेरा। खाट पडा नहिं जाय खिसका रे।—कबीर श०, पृ० २६।

विरम—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्यास्त। २ समाप्ति। अंत। ३ निवृत्ति। त्याग (को०)।

विरमण—संज्ञा पुं० [स०] १ विराम करना। रुकना। ठहरना। थमना। २ रम जाना। मन लगाना। ३ संभोग। विलास। ४ विरत होना। निवृत्त होना। त्याग। जैसे,—अदत्तदान-विरमण। (जैन)।

विरमना¹—(पु) क्रि० अ० [सं० विरमण] १ रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। २ विराम करना। ठहरना। रुकना। ३ मोहित होकर रुक जाना। उ०—सूरदास कित विरमि रहे प्रभु आवत नाहि चले।—सूर (शब्द०)। ४ वेग आदि का थमना या कम होना। उ०—विरमै नहिं ताप जताए बिन, जगजीवन की अहै रीति यही। करैं जाहिर जीभ सो लाज लगै जो अकाज न आज फिरै उमही।—(शब्द०)।

विरमना²—क्रि० अ० [स० विलम्बन अथवा स० विरम से हिं० नामिक धातु] दे० 'विलंबना'।

विरमाना—(पु)¹ क्रि० स० [हिं० विरमना का सक० रूप] १ दूसरे का मन लगाना। अनुरक्त करना। २ मोहित करके रोक लेना। फँसाना। उ०—उत कुबजा विरमायो श्यामहि, इत यह दशा भई।—सूर (शब्द०)। ३ फँसा रखना। मशगूल रखना। उ०—देति न लेति कछू हँसिकै बडी बेर लौं बातन ही विरमावति।—(शब्द०)। ४ भुलावे मे रखना। भ्रम मे डाले रखना।

विरमाना²—क्रि० स० [स० विलम्बन] दे० 'विलंबाना'।

विरर—वि० [सं० विरल] दे० 'विरल'। उ०—विरर चिकुर मुख चुंब सनेही—कबीर सा०, पृ० १५६७।

विरल¹—वि० [स०] १ जो घना न हो। जिसके बीच बीच मे अवकाश हो। जिसके बीच बीच मे खाली जगह हो। 'सघन' का उलटा। जैसे,—आगे चलकर यह बन विरल होता गया है। २ जो पास पास न हो। जो दूर दूर पर हो। ३ जो अधिकता से न मिले। जो केवल कही कही पाया जाय। दुर्लभ। जैसे,—ऐसे लोग ससार मे बहुत विरल हैं। ४ जो गाढा न हो। पतला। ढीला। ५ शून्य। निर्जन। ६ अल्प। थोडा।

विरल²—संज्ञा पुं० जमाया हुआ दूध। दही।

विरल³—अव्य० कठिनाई से। कभी कभी।

विरलजानुक—वि० [स०] जिसके दोनो घुटनो मे अधिक दूरी हो। जिसके घुटने आपस मे मिल न सकें। धनु पदी (को०)।

विरलद्रवा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लपसी (को०)।

विरलपातक—वि० [स०] जो बहुत कम पाप करे (को०)।

विरलपार्श्वग—वि० [स०] जो कम अनुचर या सेवक रखता हो (को०)।

विरलभक्ति—वि० [स०] जिसमे विविधता न हो। एक समान। नीरस। उबानेवाला (को०)।

विरला—वि० [सं० विरल] कोई एक। इक्का दुक्का। दे० 'विरला'। उ०—चित्र खींचती थी जब चपला। नीलमेघ पट पर वह विरला।—लहर, पृ० २६।

विरलागत—वि० [स०] जो शायद ही कभी घटित होने। विरल रूप में आनेवाला (को०)।

विरलिका—संज्ञा स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का झीना या महीन वस्त्र।

विरलित—वि० [स०] जो सघन न हो (को०)।

विरलीकरण—संज्ञा पुं० [स०] सघन को विरल करना।

विरव¹—संज्ञा पुं० [स०] अनेक प्रकार के शब्द।

विरव²—वि० शब्दरहित। नीरव।

विरश्मि—वि० [सं०] रश्मि या किरणों से रहित (को०)।

विरष(पु)—संज्ञा पुं० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ० भएँ विरष पुनि हाथ न आवैं। जो बल करैं सोई दुख पावैं।—चित्रा०, पृ० ५२।

विरस¹—वि० [स०] १ रसहीन। फीका। नीरस। बिना स्वाद का। उ०—जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति की रीति यह। विरस तुरत ह्वै जाय, कपट खटाई परत ही।—तुलसी (शब्द०)। २ जो अच्छा न लगे। विरक्तिजनक। जी हटानेवाला। अप्रिय। अरुचिकर। उ०—चहुँटो चिबुक चाँपि चूँबि लोल लोयन कौं, रस मे विरस कलो वचन मलीनो है। गहि भरि लीनो कछू उत्तर न बाल दीनो हाल से हवाल राउ अंक भरि लीनो है।—सूदन (शब्द०)। ३ (काव्य) जो रसहीन हो गया हो। जिसमे रस का निर्वाह न हो सका हो। ४. क्रूर। निर्दय (को०)।

विरस[२]—संज्ञा पुं० १ काव्य मे रसभंग।

विशेष—केशव ने इसे 'अनरस' के पांच भेदो मे से एक माना है।

२ पीडा। वेदना (को०)।

विरसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीरसता। फीकापन। २ रसभग। मजा किरकिरा होना।

विरसा—संज्ञा पुं० [अ०] मीरास। मृतक की सपत्ति। मरे हुए आदमी की जायदाद [को०]।

विरह[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु से रहित होने का भाव। किसी वस्तु का अभाव। किसी वस्तु के बिना स्थिति। २ किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३. वियोग का दुःख। जुदाई का रंज। ४. अंतर। व्यवधान। अविद्यमानता। उ०—नव नवय प्रातय विरह प्रावय सप दिव धुनि वज्जिय।—पृ० रा०, २४।११८। ५ परित्याग। छोड देना (को०)।

विरह[२]—वि० रहित। शून्य। बगैर। बिना।

विरहज, विरहजनित, विरहजन्य—वि० [सं०] जो विरह के कारण उत्पन्न हो [को०]।

विरहज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विरह से उत्पन्न ताप या पीडा [को०]।

विरहन‡—वि० स्त्री० [सं० विरहिणी] दे० 'विरहिणी'। उ०—तजे सुगृह धन धाम सहेली। पिय विरहन उठि चलै अकेली। —कबीर सा०, पृ० ६।

विरहविधुर—वि० [सं०] विरह के कारण व्यथित या अकेला। उ०—क्या आंसु सा ढुलक गया वह, विरहविधुर उर का उद्‌गार ? —अपरा, पृ० १०२।

विरहा†—संज्ञा पुं० [सं० विरहक या हिं० विरह] एक प्रकार का गीत जिसे अहीर और गडरिए गाते हैं। विशेष दे० 'बिरहा'। २ विरह। वियोग।

विरहागि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विरहाग्नि] दे० 'विरहाग्नि'।

विरहाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विरह से उत्पन्न ताप [को०]।

विरहानल—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विरहाग्नि' [को०]।

विरहिणी—वि० स्त्री० [सं०] १ जिसे प्रिय या पति का वियोग हो। जो पति या नायक से अलग होने के कारण दुःखी हो। २. पारिश्रमिक। मजूरी [को०]।

विरहित वि० [सं०] १ रहित। शून्य। बिना। उ०—आश्रम बरन धरम विरहित जग लोक वेद मरजाद गई है।—तुलसी (शब्द०)। २ छोड़ा हुआ। परित्यक्त (को०)। ३. वियुक्त (को०)। ४ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही[१]—वि० [सं० विरहिन्] [वि० स्त्री० विरहिणी] १ जिसे प्रिया का वियोग हो। जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो। उ०—विरही कहँ लौं आयु सँभारै ?—सूर। (शब्द०)। २ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही‡[२]—संज्ञा पुं० [देश०] भीगा हुआ अन्न। उ०—नवरात्र मे घटस्थापन के साथ साथ, भूमि पर बांस की आयताकार चौहद्दी बनाकर अनाज भिगोए जाते हैं, जिन्हें विरही कहते हैं। —शुक्ल अभि० ग्र० पृ० १३६।

विरहोत्कंठिता—संज्ञा स्त्री० [सं० विरहोत्कण्ठिता] नायिकाभेद के अनुसार प्रिय के न आने से दुखी वह नायिका जिसके मन मे पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी किसी कारणवश वह न आवे।

विराग[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। लगन न होना। २ किसी वस्तु से न विशेष प्रेम होना न द्वेष। उदासीन भाव। ३ सासारिक सुखों की चाह न करना। विषयभोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य। उ०—राजभोग्य के योग्य, विपिन मे बैठा आज विराग लिए। —पंचवटी, पृ० ६। ४ एक मे मिले हुए दो राग।

विशेष—एक राग मे जब दूसरा राग मिल जाता है, तब उसे विराग कहते हैं।

५. वर्ण या रंग का परिवर्तन (को०)। ६ असंतुष्टि। असंतोष (को०)।

विराग[२]—वि० १ राग से रहित। उदासीन। विरागी। २ वर्ण या रंगहीन [को०]।

विरागी—वि० [सं० विरागिन्] [वि० स्त्री० विरागिनी] १ जिसे राग न हो। जिसे चाह न हो। जिसने मन न लगाया हो। उदासीन। विमुख। २ जिसने सासारिक विषयों से मन हटा लिया हो। संसारत्यागी। विरक्त।

विराज्—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विराट्'।

विराज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंदिर का एक विशेष प्रकार। २ एक पौधा। ३ एक प्रजापति का नाम (को०)।

विराज[२]—वि० १. अत्युत्तम। अत्यंत उत्कृष्ट। २ शासन करनेवाला। ३ चमकने या द्योतित होनेवाला [को०]।

विराजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विराजमान, विराजित] १. शोभित होना। २ शासक का कार्य करना। शासन करना (को०)। ३. वर्तमान होना। रहना।

विराजना—क्रि० अ० [सं० विराजन] १ शोभित होना। प्रकाशित होना। सोहना। फबना। २ वर्तमान होना। मौजूद रहना। उपस्थित रहना। होना। रहना। ३ बैठना। जैसे,—आइए, विराजिए।

विराजमान—वि० [सं०] १ प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक दमकवाला। २ विद्यमान। उपस्थित। मौजूद। जैसे, पंडित जी यहाँ पहले ही से विराजमान है। ३ बैठा हुआ। उपविष्ट।

विराजित—वि० [सं०] १ सुशोभित। २ प्रकाशित। ३ उपस्थित। विद्यमान।

विराज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साम्राज्ञी। रानी [को०]।

विराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शासन। हुकूमत २ राज्य [को०]।

विराट्[१]—संज्ञा पुं० [सं० विराज्] ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप जिसके अंदर अखिल विश्व है अर्थात् संपूर्ण विश्व जिसका शरीर है। विश्वशरीरमय अनंत पुरुष।

विशेष—इस भावना का निरूपण इस प्रकार है—'उस पुरुष के सहस्रों मस्तक, सहस्रों आँखें और सहस्रों चरण हैं। वह पृथ्वी मे सर्वत्र व्याप्त रहने पर भी दस अंगुल ऊपर अवस्थित है। पुरुष ही सब कुछ है—जो हुआ है और जो होगा। उसकी

इतनी बडी महिमा है, पर वह इससे कही बडा है। संपूर्ण विश्व और भूत एक पाद है, आकाश का अमर अंश त्रिपाद हैं। उससे विराट् उत्पन्न हुए और विराट् से अधिपुरुष। उन्होने आविर्भूत होकर सपूर्ण पृथ्वी को आगे पीछे घेर लिया'। भगवद्‌गीता के अनुसार भगवान् ने जो अपना विराट् स्वरूप दिखाया था, उसमे समस्त लोक, पर्वत, समुद्र, नद, नदी, देवता आदि दिखाई पडे थे। बलि को छलने के लिये भगवान् ने जो त्रिविक्रम रूप धारण किया था, उसे भी विराट् कहते हैं। पुराणो मे विराट् को ब्रह्म का प्रथम पुत्र कहा है। ब्रह्मा दो भागो मे विभक्त हुए—स्त्री और पुरुष। स्त्री अश से विराट् की उत्पत्ति हुई जिसने स्वायभुव मनु को उत्पन्न किया। स्वायभुव मनु से प्रजापतियो की उत्पत्ति हुई।

२ लडाकू जाति। क्षत्रिय। ३ काति। दीप्ति। सौंदर्य। ४ शरीर। देह (को०)। ५ प्रज्ञान। प्रतिभा। प्रज्ञा। (वेदात दर्शन)। ६ ब्रह्माड (को०)।

विराट्[२]—वि० १ बहुत बडा। बहुत भारी। जैसे,—विराट् सभा, विराट् आयोजन। २ शासन करनेवाला। प्रधान (को०)।

विराट्[३]—सज्ञा स्त्री० १ एक वैदिक वृत्ति का नाम। २ उत्कृष्टता। दीप्तिमत्ता। सुदरता (को०)।

विराट् स्वराज—सज्ञा पु० [स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ। एक प्रकार का एकाह। (श्रौत सूत्र)।

विराट—सज्ञा पु० [स०] १. मत्स्य देश जहाँ के राजा के यहाँ पाँचो पाडव अज्ञातवास के समय छिपे थे।

विशेष—मनुस्मृति मे मत्स्य देश का उल्लेख कुरुक्षेत्र और पाचाल के साथ है, इससे अनुमान होता था कि वह थानेसर के आस पास होगा। पर अब यह बात एक प्रकार से निश्चित हो गई है कि अलवर और जयपुर के बीच का प्रदेश ही महाभारत के समय मत्स्य देश कहलाता था। उक्त प्रदेश के अंतर्गत 'बैराट' और 'माचडी' दो स्थान अब तक 'विराट' और 'मत्स्य' का स्मरण दिलाते हैं।

२ मत्स्य देश का राजा।

विशेष—इनके यहाँ अज्ञातवास के समय पाडव नौकर के रूप मे रहते थे। इनकी कन्या उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था जिसमे परीक्षित की उत्पत्ति हुई।

३ महाभारत का एक पर्व। ४ सगीत मे एक ताल का नाम।

विराटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का निम्न कोटि का हीरा या नग जो विराट देश मे निकलता था। राजपट्ट। राजावर्त।

विराटज—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विराटक'।

विराटपर्व—सज्ञा पुं० [स० विराटपर्वन्] महाभारत के अठारह पर्वों मे से एक पर्व का नाम (को०)।

विराणी—सज्ञा पु० [स० विराणिन्] हस्ती। हाथी।

विरातक—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन वृक्ष।

विरात्र—सज्ञा पु० [स०] १ रात का अवसान। प्रात काल। २. रात का द्वितीय तृतीय प्रहर। बहुरात्र। अपरात्र (को०)।

विराद्ध—वि० [स०] १. तिरस्कृत। २ जिसका विरोध किया गया हो। ३ अपकृत। जिसका अपकार किया गया हो (को०)।

विराध—सज्ञा पुं० [स०] १ पीडा। क्लेश। तकलीफ। २ पीडित करनेवाला। सतानेवाला। ३ विरोध। खिलाफत (को०)। ४ एक राक्षस जिसे दंडकारण्य मे लक्ष्मण ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार इसके पिता का नाम सुपर्यन्य और माता का नाम शतह्रदा था। यह राक्षस पूर्व जन्म मे तुबुरु नामक गधर्व था, जो वैश्रवण या कुबेर के शाप से राक्षस योनि मे उत्पन्न हुआ था। इसके बहुत प्रार्थना करने पर वैश्रवण ने कहा था—'अच्छा, जाओ। जब दशरथ के यहाँ भगवान् अवतार लेगे, तब तुम्हारा शाप छूटेगा'। रामायण मे लिखा है कि दंडकारण्य मे विराध सीता को लेकर भागने लगा। राम ने बहुत बाण चलाए, पर वह युद्ध में न मारा गया और राम तथा लक्ष्मण दोनो को उठाकर ले चला। रास्ते मे फिर युद्ध होने लगा और दोनो भाइयो ने मिलकर उसकी भुजाएँ काट डाली। पर वह जल्दी मरता नही था। अत मे लक्ष्मण ने एक बडा सा गड्ढा खोदा और उसका शरीर उसमे डाल दिया गया। मरने के पहले इसे अपने पूर्वशरीर और शाप का स्मरण हो आया था।

विराधन—सज्ञा पुं० [स०] १ अपकार करना। हानि करना। २ विरोध (को०)। ३. पीडित करना। सताना। तग करना। ४ वेदना। पीडा (को०)।

विराधा—सज्ञा स्त्री० [स०] अपकार। दूसरे की हानि करना (को०)।

विराधान—सज्ञा पु० [स०] कष्ट। व्यथा। दु ख (को०)।

विराना—वि० [फा० बेगानह्] दे० 'बिराना'। उ०—फिर बिराने देश मे किससे पूछें।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५६।

विराम—सज्ञा पु० [स०] १ किसी क्रिया या व्यापार का कुछ देर के लिये बद होना, रुकना या थमना। ठहराव। ठहरना।

यौ०—विरामसधि = युद्ध में लिप्त दोनो पक्षो की ओर कुछ समय के लिये युद्ध बद करने का समझौता। युद्ध बद करने की सधि। उ०—हगेरी ने विरामसधि कर ली।—आ० अ० रा०, पृ० ५२।

२. चलने की थकावट दूर करने के लिये रास्ते मे ठहरना। चलना रोकना। सुस्ताना। दम मारना। विश्राम।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३ वाक्य के अतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पडता हो। ४ छद के चरण मे वह स्थान जहाँ पढते समय कुछ ठहरना पडे। यति। ५ विष्णु का एक नाम (को०)। ६. अत। समाप्ति। उपसहार।

यौ०—विरामचिह्न = वह निशान या चिह्न जिससे रुकाव, ठहराव या समाप्ति सूचित हो।

विरामण[१]—सज्ञा पु० [स०] ठहराव (को०)।

विरामण[२]—सज्ञा पुं० [स० ब्राह्मण] ब्राह्मण।

विरामताल—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्म ताल का एक प्रकार या भेद (को०)।

विरामदायिनी—वि० स्त्री० [स०] विश्राम देनेवाली। आराम पहुँचानेवाली। उ०—और विरामदायिनी अपनी सध्या को दे जाता है।—पचवटी, पृ० ६।

विरामब्रह्म—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ब्रह्म ताल के चार भेदों में से एक भेद।

विराल—संज्ञा पुं० [सं०] विडाल। बिल्ली। उ०—नेतक माडल गेंडुआ एक सफुर विराल एक।—वर्ण०, पृ० १४।

विराव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। बोली। कलरव। उ०—कान परी कोकिला की काकली कलित जो कलापिन की कूक कल कोमल विराव की।—देव (शब्द०)। २. हल्ला गुल्ला। शोर गुल।

विराव²—वि० शब्दरहित।

विरावण—संज्ञा पुं० [सं०] जिससे बहुत शोर गुल हो। बहुत हल्ला करने या करानेवाला (को०)।

विराविणी¹—वि० स्त्री० [सं०] १. बोलनेवाली। शब्द करनेवाली। २ रोने चिल्लानेवाली।

विराविणी²—संज्ञा स्त्री० १ झाड़ू। २ चिल्लाहट रुदन। ३ ध्वनि (को०)। ४ नदी।

विरावित—वि० [सं०] ध्वनित किया हुआ (को०)।

विरावी—वि० [सं० विराविन्] [वि० स्त्री० विराविणी] १ शब्द करनेवाला। बोलनेवाला। ध्वनि करनेवाला। गूँजनेवाला। २ रोने चिल्लानेवाला। विलाप करनेवाला।

विरावृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] काली मिर्च (को०)।

विरास—संज्ञा पुं० [सं० विलास] दे० 'विलास'।

विरासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] उत्तराधिकार। वरासत। विरसा। उ०—जो मिली विरासत तुम्हे, आँख उसकी आँसू से गीली है।—धूप०, पृ० ६३।

विरासी—वि० [सं० विलासिन्] दे० 'विलासी'। उ०—जौ लगि कालिंदि होसि विरासी। पुनि सुरसरि होइ समुद परासी।—जायसी (शब्द०)।

विरिंच—संज्ञा पुं० [सं० विरिञ्च] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव।

विरिंचन—संज्ञा पुं० [सं० विरिञ्चन] १ ब्रह्मा। २ विष्णु (को०)। ३ शिव (को०)।

विरिंचि—संज्ञा पुं० [सं० विरिञ्चि] दे० 'विरिंच'।

विरिक्त—वि० [सं०] १ जिसे विरेचन दिया गया हो। २. जिसका पेट छूटा हो। जिसे दस्त आ रहे हो। ३ निकालकर साफ या रिक्त किया हुआ (को०)।

विरिक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरेचन। २ रिक्त करने की क्रिया (को०)।

विरिब्ध—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि। स्वर (को०)।

विरुक्मान्—संज्ञा पुं० [सं० विरुक्मत्] १ दीप्तिमय या चमकीला आभूषण। २. दीप्त या ज्योतित शस्त्र (को०)।

विरुखा—वि० [फा० बेरुख] दे० 'बेरुखा' या 'बेरुख'।

विरुग्ण—वि० [सं०] १. विशेष रोगी। २. सुस्त। ३ खंडित। टुकड़ों में विभक्त। कटा फटा। विदीर्ण। ४. झुका हुआ। ५ विध्वस्त। विनष्ट। ६ कुंठित। भोथरा (को०)।

विरुच—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रविशेष जिससे अभिमंत्रित कर अस्त्रक्षेपण किया जाय (को०)।

विरुज्—संज्ञा स्त्री० [सं० १ अत्यधिक पीड़ा। भीषण वेदना। २ विशिष्ट रोग। बड़ी व्याधि (को०)।

विरुज—वि० [सं०] रोगरहित। नीरोग। स्वस्थ।

विरुझना—क्रि० अ० [सं० वि + रुन्धन] दे० 'उलझना'।

विरुझाना—क्रि० स० [हिं० विरुझना] दे० 'उलझाना'।

विरुत¹—वि० [सं०] रवयुक्त। अव्यक्त शब्दयुक्त। कूजित। गूँजता हुआ।

विरुत²—संज्ञा पुं० १ चीखना। चिल्लाना। २ चिल्लाहट। ध्वनि। शोर। कोलाहल। ३ कलरव। गुंजार (को०)।

विरुति—संज्ञा स्त्री० उत्क्रोश। क्रंदन। चीख। चिल्लाहट (को०)।

विरुद—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुण, प्रताप आदि का वर्णन। राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो। यशकीर्तन। प्रशस्ति। २ यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल मे धारण करते थे। जैसे, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य। (इसमें चंद्रगुप्त तो नाम है और विक्रमादित्य विरुद है।) ३. यश। कीर्ति। ४ उच्चारण करना। घोषित करना। प्रख्यापन (को०)। ५ जोर से चिल्लाना। चिल्लाहट (को०)।

विरुदध्वज—संज्ञा सं० [सं०] राज्य या शासन की पताका। शासकीय ध्वज (को०)।

विरुदावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तर कथन। यशवर्णन। प्रशंसा। २ धार्मिक स्तुतियों का संग्रह। स्तुतिसंग्रह (को०)।

विरुदित—संज्ञा पुं० [सं०] रुदन। रोना। शोक, संताप करना (को०)।

विरुद्ध¹—वि० [सं०] १. जो हित के अनुकूल न हो। विरोधयुक्त। प्रतिकूल। खिलाफ। जैसे,—आजकल वह हमारे विरुद्ध है। २ अप्रसन्न। वाम। ३. जो मेल में न हो। जो एकदम भिन्न या उलटा हो। विपरीत। जैसे,—यह बात उस बात से सर्वथा विरुद्ध है। ४. जो उचित से सर्वथा भिन्न हो। जो न्याय या नीति के अनुकूल न हो। विपरीत। अनुचित। जैसे,—विरुद्ध आचरण। ५ बाधित। जिसका विरोध किया गया हो (को०)। ६ घेरा हुआ। नाकेबंदी किया हुआ (को०)। ७ प्रतिषिद्ध। वर्जित (को०)। ८ अनिश्चित। संदेहपूर्ण (को०)। ९ बहिष्कृत। निराकृत। वंचित (को०)।

विरुद्ध²—क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ। जैसे—आजकल वह हमारे विरुद्ध चल रहा है।

विरुद्ध³—संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध। वैपरीत्य। शत्रुता। २. विरोध नामक एक अलंकार (साहित्य)। ३ वैमत्य। असहमति (को०)।

विरुद्धकर्मा—संज्ञा सं० [सं० विरुद्धकर्मन्] १ विरुद्ध कर्म करनेवाला व्यक्ति। विपरीत आचरण का मनुष्य। बुरे चाल चलन का आदमी। २ केशव के अनुसार श्लेष अलंकार का एक भेद, जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं। उ०—वारुणी को राग होत, सूरज करत अस्त, उदो द्विजराज का सु होत यह कैसो है ?—केशव (शब्द०)। इस पद का साधारण अर्थ तो यह है कि पश्चिम दिशा के लाल होते ही सूर्य

तो अस्त होता है और चद्रमा उदय, यह कैसी बात है । पर श्लेष मे इसका अर्थ होता है कि वारुणी (शराब) की चाह होते ही शूरवीर का तो पराभव होता है, पर वारुणी (उपनिषद् की एक विद्या) की चाह होते ही ब्राह्मण की उन्नति होती है ।

विरुद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरुद्ध होने का भाव । २ प्रतिकूलता । विपरीतता । उलटापन ।

विरुद्धधी—वि० [स०] वैर भाव रखनेवाला । दुष्ट । खोटा [को०] ।

विरुद्धप्रसग —सज्ञा पु० [स० विरुद्धप्रसङ्ग] अकरणीय कार्य । न करने योग्य काम [को०] ।

विरुद्धमतिकारिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक काव्यदोष, जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग से होता है जिससे वाच्य के सबध मे विरुद्ध या अनुचित बुद्धि हो सकती है, जैसे, 'भवानीश' शब्द के प्रयोग से । 'भवानी' शब्द का अर्थ ही है 'शिव' की पत्नी । उसमे ईश लगाने से सहसा यह ध्यान हो सकता है कि 'शिव की पत्नी' का कोई और भी पति है ।

विरुद्धमतिकृत्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विरुद्धमतिकारिता' ।

विरुद्धरूपक—सज्ञा पु० [स०] केशव के अनुसार रूपक अलकार का एक भेद, जिसमे कही हुई बात बिलकुल 'अनमिल' अर्थात् असगत या असबद्ध सी जान पडती है, पर विचार करने पर अर्थात् रूपक के दोनो पक्षो (उपमेय, उपमान) का ध्यान करने पर अर्थ सगत ठहरता है ।

विशेष—इसमे उपमेय का कथन नही होता, इससे यह 'रूपकातिशयोक्ति' ही है ।

विरुद्ध हेत्वाभास—सज्ञा पु० [स०] न्याय मे वह हेत्वाभास जहाँ साध्य के साधक होने के स्थान पर साध्य के अभाव का साधक हेतु हो । जैसे,— यह द्रव्य वह्निमान् है, क्योकि यह महा ह्रद है । यहाँ महा ह्रद होना वह्नि के होने का हेतु नहीं है, वरन् वह्नि के अभाव का हेतु है ।

विरुद्धाचरण—सज्ञा पुं० [स०] अनुचित, प्रतिपिद्ध या विरुद्ध आचरण और व्यवहार । [को०] ।

विरुद्धार्थ—वि० [स०] विपरीत अर्थवाला [को०] ।

विरुद्धार्थदीपक—सज्ञा पु० [स०] काव्यादर्श के अनुसार दीपक अलकार का एक भेद जिसमे एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओ का एक साथ होना दिखाया जाता है । जैसे,—जलकण मिली वायु 'ग्रीष्मताप' को घटाती और 'विरहताप' को बढाती है ।

विरुद्धाशन—सज्ञा पु० [स०] वर्जित आहार । अखाद्य भोजन [को०] ।

विरुद्धोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] विरोधपूर्ण कथन । प्रतिकूल कथन ।

विरुध(पु)—वि० [स० विरुद्ध] दे० 'विरुद्ध' । उ०— कहे वले छत्रकाल विरुध भाषा विसतारै ।—रघु० रू०, पृ० १४ ।

विरुल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साँप [को०] ।

विरुला(पु)†—सज्ञा पु० [स० विरुह] दे० 'विरवा' । उ०—कलियाय कुरे को रह्यो विरुला परि लेत नही छवि फूलि भली ।—शकुतला, पृ० १०७ ।

विरुक्ष—वि० [स०] कठोर । कर्कश [को०] ।

विरूक्षण¹—सज्ञा पु० [स०] १. रूखा करना । २. गर्हणा । निंदा । ३ शाप । अभिशाप । ४ रक्तस्राव को रोकनेवाली दवा [को०] ।

विरूक्षण²—वि० १ सुखाने या रूक्ष करनेवाला । २. सकोचक [को०] ।

विरूक्षित—वि० [स०] १ जो रूखा किया हुआ हो । २ लेपन किया हुआ । आवृत्त [को०] ।

विरूज—सज्ञा पु० [स०] एक अग्नि जिसका जल मे होना कहा गया है ।

विरूढ—वि० [स० विरूढ] १ आरूढ । चढा हुआ । २ अकुरित । जमा हुआ । बीज से फूटा हुआ । ३ जात । उत्पन्न । पैदा । ४ खूब जमा हुआ । खूब बैठा हुआ । खूब गडा या धँसा हुआ । ५ मुकुलित । खिला हुआ । (को० । ६ भरा हुआ (घाव) (को०) ।

विरूढक—सज्ञा पु० [स० विरूढक] १ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । २ एक शाक्यवशीय राजा का नाम । ३ एक लोकपाल का नाम । ४ अकुरित अन्न (को०) ।

विरूढि—सज्ञा स्त्री० [स० विरूढि] १ भेद या फोडकर ऊपर उठना । २ अकुरित होना । अँखुआ फूटना (को०) ।

विरूथिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख कृष्ण एकादशी । वरूथिनी एकादशी ।

विरूप¹— वि० [स०] [वि० स्त्री० विरूपा, विरूपी] १ कई रग रूप का । कई शकलो का । तरह तरह का । २ कुरूप . बदसूरत । भद्दा । ३ विकटाकार । ३ बदला हुआ । परिवर्तित । ४ शोभाहीन । शोभारहित । ५ जो अनुरूप न हो । विरुद्ध । अप्राकृतिक । उलटा । ६ दूसरी तरह का । बिलकुल भिन्न । ७ जिसमे एक कम हो (को०) ।

विरूप²—सज्ञा पु० १ पिप्परामूल । २ पाडुरोग (को०) । ३ शिव का एक नाम (को०) । ४. एक असुर (को० । ५ कुरूपता । भद्दी आकृति (को०) । ६ रूप, प्रकृति या चरित्र की भिन्नता (को०) ।

विरूपक¹—वि० १ कुरूप । २ भयकर । कराल । ३. अनुमित [को०] ।

विरूपक²—सज्ञा पुं० १ एक असुर । २. पुकारने का अथवा उपाधिनाम [को०] ।

विरूपकरण—सज्ञा पु० [स०] १ कुरूप बनाने की क्रिया । २ क्षति या हानि पहुँचाना [को०] ।

विरूपचक्षु—सज्ञा पुं० [स० विरूपचक्षुस्] त्रिनेत्र । शिव [को०] ।

विरूपता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरूप होने का भाव । २. कुरूपता । बदसूरती । ३ भद्दापन । बेढगापन ।

विरूप परिणाम—सज्ञा पु० [स०] एकरूपता से अनेकरूपता अर्थात् निर्विशेषता से विशेषता की ओर परिवर्तन । एक मूल प्रकृति से अनेक विकृतियो की ओर गति ।

विशेष—साख्य मे परिणाम दो प्रकार के कहे गए है—स्वरूप परिणाम और विरूप परिणाम । 'विरूप परिणाम' द्वारा प्रकृति से नाना रूप पदार्थो का विकास होता है, और 'स्वरूप परिणाम' द्वारा फिर नाना पदार्थ क्रमश अपने रूप खोते हुए प्रकृति मे लीन होते हैं । एक परिणाम सृष्टि की ओर अग्रसर होता है और दूसरा लय की ओर ।

विरूपरूप—वि० [स०] कुरूप । बदशक्ल [को०] ।

विरूपा¹—वि० स्त्री० [सं०] कुरूप। बदसूरत। उ०—शूर्पणखैं जो विरूपा करी तुम ताते दियो हमहूँ दुख भारी।—केशव (शब्द०)।

विरूपा²—संज्ञा स्त्री० १. दुरालभा। २ अतिविषा। ३ यम की पत्नी का नाम।

विरूपाक्ष¹—वि० [सं०] जिसके नेत्र बेढंगे या डरावने हों।

विरूपाक्ष²—संज्ञा पुं० १ शिव। शंकर। २ शिव के एक गण का नाम। ३ रावण का एक सेनानायक जिसे हनुमान ने प्रमोद वन उजाड़ने के समय मारा था। ४ एक राक्षस का नाम जिसे सुग्रीव ने राम-रावण-युद्ध मे मारा था। ५ रावण का एक मंत्री। ६. एक दिग्गज का नाम। ७. एक नाग का नाम।

विरूपिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुरूप स्त्री। बदसूरत औरत।

विरूपी¹—वि० [सं० विरूपिन्] [वि० स्त्री० विरूपिणी] १ बदसूरत। कुरूप। उ०—हरि रुकमिनि मुख देखि छाँडि तब दीन्हेउ। मोछ गोछ शिर मुंडि विरूपी कीन्हेउ।—अकबरी०, पृ० ३४४। २. डरावनी सूरत का।

विरूपी²—संज्ञा पुं० कृकलास। गिरगिट।

विरूर—[सं० (उप०) वि० + हिं० रूरि या सं० विरूढ, विरूह (= अंकुरित, जमा हुआ)] १ अत्यंत सुंदर। हृदयहारी। २ जमा हुआ। एकत्र। उ०—अगं सुदति पतिय विरूर। पलकत अंबु मद झरत भूर।—पृ० रा०, ११६२४।

विरेक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस्तावर दवा। जुलाब। विरेचन। २. आँत की सफाई। मल के निकालने की क्रिया (को०)।

विरेचक—वि० [सं०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मलभेदक औषध। दस्त लानेवाली दवा। जैसे,—रेंडी का तेल। २. दस्त लाना। मलभेद करने की क्रिया।

विशेष—वैद्यक के ग्रथो मे विरेचन की विधि विशेष विस्तार से लिखी है, क्योंकि कुपित मल ही सब रोगो का कारण कहा गया है। पूरी विधि के साथ विरेचन का विधान स्नेहन, स्वेदन और वमन के उपरात किया गया है। शरद और वसंत मे विरेचन विधेय ठहराया गया है। बालक, वृद्ध, क्षतग्रस्त, रोग से अत्यंत क्षीण, भयार्त, श्रांत, पिपासार्त और मतवाले को विरेचन नही कराना चाहिए।

विरेचित—वि० [सं०] विरेचन कराया हुआ। दस्त लाया हुआ (को०)।

विरेची—वि० [सं० विरेचिन्] दस्त लानेवाला (को०)।

विरेच्य—वि० [सं०] विरेचन के योग्य। जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो।

विशेष—वैद्यक के ग्रथो मे नीचे लिखे रोगियो को विरेचन के योग्य कहा है— गुल्म, बवासीर, विस्फोटक (चेचक), कमल रोग, जीर्णज्वार, उदररोग, विष, पेट की पीड़ा, योनि और शुक्रगत रोग, प्लीहा, कुष्ठ, मेह, श्लीपद (फीलपाँव), उन्माद, काश, श्वास, विसर्प इत्यादि से पीड़ित रोगियो को विरेचन देना चाहिए।

विरेफ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरिता। नदी। २ 'र' वर्ण का अभाव या अनुपस्थिति (को०)।

विरेभित—वि० [सं०] ध्वनित। शब्दित (को०)।

विरोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चमक। दीप्ति। २. रश्मि। किरण। ३ छिद्र। छेद। ४ चंद्रमा। ५ विष्णु। ६ प्रभात। प्रातःकाल (ऋग्वेद)।

विरोग¹—संज्ञा पुं० [सं०] स्वस्थता। निरोगता (को०)।

विरोग²—वि० स्वस्थ। तंदुरुस्त (को०)।

विरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चमकना। प्रकाशित होना। २ दीप्तियुक्त। प्रकाशमान। ३. सूर्य। ४ चंद्र। ५ अग्नि। ६ मदार का पौधा। आक। ७ विष्णु। ८. रोहित वृक्ष। ९ श्योनाक वृक्ष। १०. पूत करंज। ११ प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता। १२ आलोचना। स्थापन (को०)।

विरोचनसुत—संज्ञा पुं० [सं०] राजा बलि।

विरोचिष्णु—वि० [सं०] चमकीला। दीप्तिमान् (को०)।

विरोद्धा—वि० [सं० विरोद्धृ] विरोध करनेवाला (को०)।

विरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल न होना। किसी दूसरी वस्तु के साथ अत्यंत भिन्नता। विपरीत भाव। अनैक्य। जैसे,—इन दोनो भावो का परस्पर विरोध है। २ मेल का न होना। वैर। शत्रुता। बिगाड़। अनबन। जैसे,—उन दोनो का विरोध बहुत पुराना है।

यौ०—वैर विरोध।

३ दो बातो का एक साथ न हो सकना। विप्रतिपत्ति। व्याघात। असहभाव। जैसे,—आपके कथन मे पूर्वापर विरोध है। ४. उलटी स्थिति। सर्वथा दूसरे प्रकार की स्थिति। ५ नाश। ६. नाटक का एक अंग, जिसमे किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७. एक अर्थालंकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी एक के साथ विरोध होना है। जैसे,—तुम्हारे वियोग मे उस कामिनी को मलयानल दावानल हो रहा है। यहाँ जाति के साथ जाति का विरोध है। इसी प्रकार यह कहना गुण का द्रव्य के साथ जातिविरोध होगा —'तुम्हारे बिना चंद्रमा विष की ज्वाला से पूर्ण हो गया'। ८ प्रतिरोध। रुकावट (को०)। ९ नाकेबंदी। घेरा। आवरण (को०)। १० संकट। दुर्भाग्य (को०)। ११. कलह। असहमति (को०)।

विरोधक—संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध करनेवाला। २ नाटक मे वे विषय जिनका वर्णन निषिद्ध हो।

विरोधकारक—वि० [सं०] झगड़ालू। विरोधी।

विरोधकारी—वि० [सं० विरोधकारिन्] विरोध उत्पन्न करनेवाला।

विरोधकृत्—वि० संज्ञा पुं० [सं०] विरोधी। शत्रु (को०)।

विरोधक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रुता। झगड़ा। कलह (को०)।

विरोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १ विरोध करना। वैर करना। २ नाश। बरबादी। ३ नाटक मे विमर्ष का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारण-वश कार्यध्वंस का उपक्रम (सामान) होता है। जैसे—कुरुक्षेत्र के युद्ध के अंत होने के निकट जब दुर्योधन बच रहा था, तब भीम का यह प्रतिज्ञा करना कि 'यदि दुर्योधन को न मारूँगा तो अग्नि म प्रवेश कर जाऊँगा'। सब बात बन जाने पर भी भीम का यह कहना युधिष्ठिर आदि के मन मे यह विचार लाया कि यदि दुर्योधन न मारा गया तो हम सब लोग भी भीम के बिना कैसे रहेंगे। ४ बाधा। रुकावट (को०)। ५ प्रतिरोध। मुकाबिला (को०)। ६ परस्पर विरोध। असगति (को०)। ७ कलह (को०)।

विरोधना पु—क्रि० स० [सं० विरोधन] विरोध करना। अपने विरुद्ध करना। वैर करना। शत्रुता या झगडा करना। उ०—साईं ये न विरोधिए गुरु, पडित, कवि, यार।—गिरिधर (शब्द०)।

विरोधपरिहार—संज्ञा पुं० [सं०] झगडा मिटना। असामजस्य या विराध का दूर होना (को०)।

विरोधवचन—संज्ञा पुं० [सं०] विरुद्ध कथन। किसी के विरोध मे कही गई बात (को०)।

विरोधशमन—संज्ञा पुं० [सं०] झगडा मिटना।

विरोधाचरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. हित के प्रतिकूल आचरण। खिलाफ काररवाई। २. शत्रुता का व्यवहार।

विरोधाभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पडता है। विशेष दे० 'विरोध'।

विरोधित—वि० [सं०] १ जिसका विरोध किया गया हो। २. क्षति-ग्रस्त (को०)। ३ अस्वीकृत। निराकृत (को०)।

विरोधिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरोध। शत्रुता। वैर। २ नक्षत्रो की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)।

विरोधिनी—वि० स्त्री० [सं०] १ विरोध करनेवाली। वैरिन। २ विरोध करानेवाली। दो आदमियो मे झगडा लगानेवाली। ३ एक राक्षसी जो दु सह की पुत्री थी (को०)।

विरोधिश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विरोधीश्लेष'।

विरोधी¹—वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करने-वाला। हित के प्रतिकूल चलनेवाला। कार्यसिद्धि मे बाधा डालनेवाला। २ प्रतिद्वंद्वी। विपक्षी। शत्रु। बैरी। दुश्मन। ३ मुकाबिला करनेवाला। घेरा डालनेवाला (को०)। ४ झगडालू (को०)। ५ अनुकूल न पडनेवाला। (अन्न) (को०)।

विरोधी²—संज्ञा पुं० १ साठ सवत्सरो मे से पचीसवाँ संवत्सर। २ शत्रु। बैरी (को०)।

विरोधी श्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार श्लेष अलकार का एक भेद, जिसमे श्लिष्ट शब्दो द्वारा दो पदार्थो मे भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है। जैसे, उ०—कृष्ण हरे हरये हरै सपति, शभु विपत्ति यहै अधिकाई। जातक काम अकामन के हित, घातक काम सकाम सहाई। इसमे यह दिखाया गया है कि हर (शिव) दासो पर हरि की अपेक्षा अधिक कृपा करते हैं। कृष्ण धीरे धीरे सपत्ति हरते हैं और शिव विपत्ति। हरि काम को उत्पन्न करनेवाले हैं और निष्काम लोगो के हितू हैं, शिव काम के घातक हैं, पर कामना रखनेवालो के सहायक हैं। यहाँ 'काम' शब्द के 'कामदेव' और 'कामना' दो अर्थ हैं।

विरोधोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विरोधी उक्ति। विरोध मे कही गई बात (को०)।

विरोधोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलकार का एक भेद, जिसमे किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थो से दी जाती है। जैसे,—'तुम्हारा मुख चद्रमा और कमल के समान है।' यहाँ कमल और चद्रमा इन दोनो उपमानो मे विरोध है।

विरोध्य—वि० [सं०] १ विरोध के योग्य। २. जिसका विरोध करना हो।

विरोपण¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोपणीय, विरोपित, विरोप्य] १ लेपन। लेप करना। २ लीपना। पोतना। तह चढाना। लेव चढाना। ३. जमीन मे पौधा लगाना। रोपना। ४ घाव का भरना (को०)।

विरोपण²—वि० १ पौधा रोपनेवाला। २ (औषधादि) जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोपित—वि० [सं०] १ रोपा हुआ। २ भरा हुआ।

यौ०—विरोपितव्रण = जिसका घाव भर गया हो।

विरोम—वि० [सं० विरोमन्] रोमरहित। बिना रोएँ का।

विरोमा—वि० [सं० विरोमन्] दे० 'विरोम' (को०)।

विरोलना पु†—क्रि० स० [सं० विलोडन] विलोडना। मथन करना। विवर्चित करना। उ०—मुद्रा सतोष शर्म पति झोली। गुरमुखि जोगी तत्तु विरोली।—प्राण०, पृ० १०६।

विरोलित—वि० [सं०] अस्तव्यस्त। तितर बितर किया हुआ (को०)।

विरोस पु—वि० [सं० विरोष] रोष से पूर्ण। उ०—मुष हास नेन विरोस। नासाग्र उग्र न जोस।—पृ० रा०, ६१।१४६।

विरोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ उद्भव स्थान। उद्गम। बुनियाद। मूल। २ अकुरित होना। उगना (को०)।

विरोहण¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोहणीय विरोहित] १ एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना। २ अंकुरित होना (को०)। ३ एक नाग (को०)।

विरोहण²—वि० १ दे० 'विरोही'। २ जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोही—वि० [सं० विरोहिन्] [वि० स्त्री० विरोहिणी] १ रोपनेवाला। पौधा लगानेवाला। २. अँखुआ फोडनेवाला। अंकुरित होने-वाला (को०)।

विरौनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बाजरा, मडुवा, कोदो वगैरह की एक प्रकार की जोताई जो उनके पौधे कुछ ऊँचे होने पर की जाती है।

विर्त‡—संज्ञा स्त्री० [सं० वृत्ति] दे० 'वृत्ति'। उ०—तस वह मोती आइ निसारैं। तोहि संग परमद विर्त सवारैं।—इद्रा०, पृ० ३६।

विलघन—संज्ञा पुं० [सं० विलङ्घन] १ कूद या लाँघकर पार करने की क्रिया। २ उपवास करना। लघन करना। ३ किसी वस्तु के भोग से अपने आपको रोक रखना। वचित रखना। ४. अपराध। अतिक्रमण। त्रुटि (को०)।

विलघना—संज्ञा स्त्री० [सं० विलङ्घना] १ फाँदना। उल्लंघन करना। २ उपवास या लघन करना। ३ नीचा दिखाना या पराजित करना [को०]।

विलघनीय—वि० [सं० विलङ्घनीय] १ पार करने योग्य। लाँघने योग्य। २ नीचा दिखाने योग्य। परास्त करने योग्य।

विलघित¹—वि० [सं० विलङ्घित] १ जो परास्त हुआ हो। जिसने नीचा देखा हो २ जो विफल हुआ हो। निष्फल। ३ लाँघा हुआ। ४ अतिक्रात। आगे बढा हुआ (को०)।

विलघित²—संज्ञा पुं० उपवास। भोजनादि न करना [को०]।

विलघी—वि० [सं० विलङ्घिन्] १ लाँघनेवाला। डाक जानेवाला। अतिक्रमण करनेवाला। २ चढनेवाला [को०]।

विलघ्य—वि० [सं० विलङ्घ्य] १ पार करने योग्य। (नदी आदि)। २ परास्त होने योग्य। वश मे आने योग्य। ३ करने योग्य। सहज।

विलब¹—वि० [सं० विलम्ब] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात मे लगे)। बहुत काल। अतिकाल। देर।
क्रि० प्र०—करना।—होना।

विलब²—संज्ञा पुं० १ लटकना। टँगना। २ धीमापन। देरी। दीर्घसूत्रता। सुस्ती। ३ एक सवत्सर का नाम।

विलबन—संज्ञा पुं० [सं० विलम्बन] [वि० विलबनीय, विलबी, विलबित] १ देर करना। विलब करना। २ लटकना। टँगना। ३ सहारा पकडना। टेकना।

विलबना पु—क्रि० अ० [सं० विलम्बन] १ देर करना। विलब करना। आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २. रम जाना। मन लगने के कारण बस जाना। उ०—भँवर कँवल रस वेधिया, अनत न भरमै जाइ। तहाँ वास विलबिया, मगन भया रस खाइ।—दादू (शब्द०)। ३ लटकना। ४ सहारा लेना।

विलबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विलम्बिका] एक प्रकार का रोग जो विदग्धाजीर्ण द्वारा उत्पन्न होता है। उ०—जिस (अजीर्ण) की चिकित्सा नहीं हो सके उसे विलंबिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० ६७।

विशेष—इस रोग मे खाया हुआ अन्न कफ और वायु से दूषित होकर पेट मे दुःख देता है। न तो वमन होता है, न मल निकलता है।

विलंबित¹—वि० [सं० विलम्बित] लटकता हुआ। झूलता हुआ। उ०—राजत रोमक की तन राजि वहै रस बीच नदी सुख देनी। आगे भई प्रतिबिंबित पाइ विलम्बित जो मृगनैनी कि बेनी।—द्विज (शब्द०)। २. जिसमे विलब या देर हुई हो। ३ आश्रित। सुसबद्ध (को०)। ४ मद। दीर्घसूत्री (को०)। ५ मथर। संगीत मे द्रुत का उलटा जैसे, विलबित लय या ताल।

यौ०—विलंबितगति = एक छद। एक वर्णवृत्त। विलबितफल = जिसका फल विलब से प्राप्त हो।

विलबित²—संज्ञा पुं० १ सुस्त चलनेवाला जानवर। जैसे,—हाथी, गैंडा, भैंस इत्यादि। २ सुस्ती। देरी (को०)।

विलबित³—क्रि० वि० शनैः शनैः। मद मद [को०]।

विलबी¹—वि० [सं० विलम्बिन्] [वि० स्त्री० विलबिनी] १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ विलब करनेवाला। देरी करनेवाला। दीर्घसूत्री (को०)।

विलबी²—संज्ञा पुं० साठ सवत्सरो मे से बत्तीसवाँ सवत्सर।

विलंभ—संज्ञा पुं० [सं० विलम्भ] १ उदारता। २ दान। ३ उपहार। भेंट।

विल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'बिल'¹।

विलक्खा पु—वि० [सं० वि० + लक्ष्य, प्रा० विलक्ख, हिं० बिलखना] उदास। व्याकुल। बिलखता हुआ। व्यथित। उ०—सालूरा पाँणी विना, रहइ विलक्खा जेम।—ढोला०, दू० १७३।

विलक्ष—वि० [सं०] १ अचभे मे पडा हुआ। आश्चर्यचकित। २ लज्जित। ३. घबराया हुआ। व्याकुल। विह्वल। व्यस्त। ४ जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५ उद्देश्य या लक्ष्यरहित (को०)। ६ निशाना चूक जानेवाला (को०)। ७ असाधारण। अपूर्व। ८ कृत्रिम। बनावटी (को०)।

विलक्षण¹—वि० [सं०] १ साधारण से भिन्न। असाधारण। अपूर्व। अद्भुत। उ०—इस युग मे न केवल राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एव सामाजिक दृष्टि से ही देश की उन्नति हुई वरन् हिंदी काव्य का भी विलक्षण उत्कर्ष हुआ।—अकबरी०, पृ० ६। २. अनोखा। अनूठा। ३ भिन्न। इतर (को०)। ४. जिसमे कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५. अशुभ लक्षणो से युक्त (को०)। ६ निस्तेज। बुझी हुई। निष्प्रभ (को०)।

विलक्षण²—संज्ञा पुं० १ निष्फल या व्यर्थ स्थिति। २ गौर से देखना। अवेक्षण करना [को०]।

विलक्षणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विलक्षण होने का भाव। अपूर्वता। अद्भुतता। अनोखापन।

विलक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की शय्या [को०]।

विलक्षन—वि० [सं० विलक्षण] दे० 'विलक्षण'। उ०—आपके बिना या प्रकार निवेदन को विलक्षन मार्ग दिखायो, सो आप प्रभु हो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २४०।

विलक्षित—वि० [सं०] १ जो विशेष रूप से लक्षित किया गया हो। २ चिह्नरहित। ३ रुष्ट। क्षुब्ध। ४ अभेदित। जिसका भेदन न किया गया हो। ५ हतबुद्धि। आश्चर्यचकित। ६ उद्विग्न। घबराया हुआ। व्याकुल [को०]।

विलक्ष्य—वि० [सं०] १ लक्ष्यहीन। २ लक्ष्य चूक जानेवाला। जैसे, बाण या लक्ष्य पर फेंकी हुई कोई वस्तु [को०]।

विलखना¹—क्रि० अ० [सं० विकल, या विलक्ष्य, प्रा० विलक्ख] दुखी होना। दे० 'बिलखना'।

विलखना(पु)²—क्रि० अ० [सं० लक्ष] ताडना। पता पाना। लक्ष करना।

विलखाना क्रि० स० [हिं० विलखना] विलखना का सकर्मक रूप। विकल करना। दे० 'बिलखाना¹'।

विलग¹—वि० [हिं० वि (उप०)+लगना] अलग। पृथक्।

विलग²—सज्ञा पुं० अतर। भेद। फरक।

विलगाना¹—क्रि० अ० [हिं० विलग+ना (प्रत्य०)] १ अलग होना। पृथक् होना। २ पृथक् पृथक् दिखाई पडना। विभक्त या अलग दिखाई पडना।

विलगाना²—क्रि० स० पृथक् करना। अलग करना। दे० 'बिलगाना'।

विलगित—वि० [सं०] लगा हुआ। लग्न। सबद्ध [को०]।

विलग्न¹—वि० [सं०] १ विशेष रूप से लगा या जुडा हुआ। २. आद्धृत। ३. लटकता हुआ। ४ पिंजरे मे बद। ५ पतला। कोमल। ६ व्यतीत (को०)। ७ सलग्न। स्थिर (को०)।

विलग्न²—सज्ञा पुं० १ जन्मकुडली। जन्मपत्री। २ राशि का उदय। ३ कटि। कमर। ४ नितंब [को०]।

विलग्नता—सज्ञा स्त्री० [सं०] विलगता। अलग होने की क्रिया। अलगाव। उ०—कांग्रेस से अपनी विलग्नता सूचन की।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७१।

विलच्छन—वि० [सं० विलक्षण, प्रा० विलक्खन, विलच्छन] दे० 'विलक्षण'।

विलछाना(पु)—क्रि० अ० [सं० वि+लक्ष (देखना)] दे० 'बिलछाना'। उ०—धर्मनी यह अनुराग की बानी। तुन तत देख कहूँ विलछानी।—कबीर सा०, पृ० ७।

विलज्ज—वि० [सं०] निर्लज्ज। बेशर्म [को०]।

विलज्जित—वि० [सं०] लजाया हुआ। शर्मिदा [को०]।

विलपन—सज्ञा पुं० [सं०] १ बातचीत या गपशप करना। २ विलाप करना। शोक प्रकट करना। ३. चीक्ट। तलछट।

यौ०—विलपनविनोद=रोकर दुख हलका करना।

विलपना(पु)—क्रि० अ० [सं० विलाप] विलाप करना। रोना।

विलपाना(पु)—क्रि० स० [हिं० विलपना का सक० रूप] दूसरे को विलाप करने मे प्रवृत्त करना। रुलाना।

विलपित¹—वि० [सं०] जो विलाप कर रहा हो। जिसने रुदन किया हो।

विलपित²—सज्ञा पुं० विलाप। रुदन [को०]।

विलब्ध—वि० [सं०] १. दिया हुआ। पाया हुआ। २ अलग किया हुआ।

विलब्धि—सज्ञा [स्त्री०] १ दूर करना। हटाना। २ प्राप्ति [को०]।

विलम(पु)—सज्ञा पुं० [सं० विलम्ब] देर। अबेर। विलब।

विलमना(पु)—क्रि० अ० [सं० विलम्बन] दे० 'बिलमना'।

विलमाना—क्रि० स० [सं० विलम्बन > हिं० विलमना का सक० रूप] दे० 'बिलमाना'। उ०—मुझे नाहक श्यामसुंदर इतनी देर विलमाए रहे थे।—श्यामा०, पृ० ९२।

विलय—सज्ञा पुं० [सं०] १ विलीन होने की क्रिया या भाव। लोप। अस्त। २ मृत्यु। मौत। ३ नाश। ४ प्रलय। ५ द्रवित होना। पिघलना। विगलन (को०)।

विलयन—सज्ञा पुं० [सं०] १ लय को प्राप्त होना। विलीन होना। २ घुल जाना। मिलकर एक होना। ३ हटाना। दूर करना (को०)। ४ पतला करना (को०)। ५. पतला करनेवाली ओषधि (को०)।

विललती(पु)—वि० स्त्री० [सं० विलपन] विलाप करती हुई। दुखी। व्यग्र। व्याकुल। उ०—पथी हाथ संदेसडइ, धन विललती देह। पगसूं काढ़इ लीहरी, उर आँसुआँ भरेह।—ढोला०, दू० १३७।

विलवती—वि० [सं० विलप्, प्रा० विलव (=रोना)] विलाप करती हुई।—पृ० रा०, ६१।११६५।

विलसन—सज्ञा पुं० [सं०] १ चमकने की क्रिया। २ क्रीडा। प्रमोद।

विलसना(पु)—क्रि० अ० [सं० विलस] १ शोभा पाना। २ विलास करना। क्रीडा करना। ३ आनद मनाना। दे० 'बिलसना'।

विलसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० विलसना] दे० 'बिलसाना'।

विलसित¹—वि० [सं०] १. चमकीला। चमकता हुआ। २ प्रकट। व्यक्त। ३ शोभित। ४ विनोदी [को०]।

विलसित²—सज्ञा पुं० १ चमक। दीप्ति। २ प्राकट्य। अभिव्यक्ति। ३ क्रीडा। विनोद। ४ फल। परिणाम ५. भगिमा [को०]।

विलस्त—सज्ञा पुं० [फा० बालिश्त] बित्ता। अँगूठे के सिरे से छिगुनी के सिरे तक की लबाई का परिमाण। उ०—सवा विलस्त की जाकी देहीं। नामे प्रस्थित जीव सनेहीं।—अष्टांग०, पृ० ७९।

विलहवदी—सज्ञा स्त्री० [?] जिले के बदोबस्त का वह सक्षिप्त ब्योरा जिसमे प्रत्येक महाल का नाम, काश्तकारों के नाम और उनके लगान आदि का ब्योरा लिखा होता है। इसे वितरबदी भी कहते हैं।

विला—सज्ञा स्त्री० [सं० इरा, इडा (=पृथ्वी)] पृथ्वी। वसुधरा।

विलाता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिडिया।

विलाना—क्रि० अ० [सं० विलयन] दे० 'बिलाना'।

विलाप—सज्ञा पुं० [सं०] १ बिलख बिलखकर या विकल होकर रोने की क्रिया। रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रदन। रुदन। २. शोक व्यक्त करना। रजीदा होना।

विलापन¹—वि० [सं०] १ रुलानेवाला। २ द्रवित करनेवाला। पिघला देनेवाला। ३ नाशक। नष्ट करनेवाला [को०]।

विलापन²—संज्ञा पुं० १ रुलानेवाला कार्य। २ नाश। विध्वंस। ३. नष्ट करने या द्रवित करने का साधन। ४ मृत्यु। ५ शिव का एक गण [को०]।

विलापना(पु)¹—क्रि० अ० [सं० विलापन] शोक करना। विलाप करना। रुदन करना।

विलापना²—क्रि० स० [सं० विरोपण] वृक्ष रोपना या लगाना।

विलापयिता—वि० [सं० विलापयितृ] १ द्रवित करने या पिघलानेवाला। २ विलाप करनेवाला [को०]।

विलापित—वि० [सं०] पिघलाया हुआ [को०]।

विलापी—वि० [सं० विलापिन्] विलाप करनेवाला [को०]।

विलायत—संज्ञा पुं० [अ०] १ पराया देश। दूसरों का देश। दूरस्थ देश। दूर का देश। विशेषत आजकल की बोलचाल में यूरोप या अमेरिका का कोई देश। (पहले इस शब्द का प्रयोग ईरान, तुर्किस्तान आदि के लिये होता था।) जैसे—आप दो बार विलायत हो आए हैं। उ०—एक बड़े बाप के बेटे विलायत जाकर वहाँ की ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७४। ३ वली होने का भाव या पद (को०)।

विलायती—वि० [अ०] १ विलायत का। विदेशी। २ दूसरे देश का बना हुआ। ३ अन्य देश का रहनेवाला। परदेशी। उ०—अब विदेशी राजा के होने से नौकरियाँ विलायतियों को विशेषकर दी जाती हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६८।

विलायती अनन्नास—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + अनन्नास] रामबाँस। रामबान। विशेष दे० 'रामबाँस'।

विलायती कद्दू—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + कद्दू] एक विशेष प्रकार का कद्दू जो तरकारी के काम में आता है।

विलायती कपड़ा—संज्ञा पुं० [हिं०] विदेशी वस्त्र। विशेषतः यूरोप का बना हुआ।

विलायती कासनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + कासनी] एक प्रकार की कासनी जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती है।

विलायती कीकर—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + कीकर] पहाड़ी कीकर जो हिमालय पर पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक होता है।

विशेष—यह बाढ़ लगाने के काम आता है। यह जाड़े के दिनों में खूब फूलता है और इसके फूलों से बहुत अच्छी महक निकलती है। यूरोप में इन फूलों से कई प्रकार के इत्र आदि बनाए जाते हैं। इसे पर्सी बबूल भी कहते हैं।

विलायती छछूँदर—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + छछूँदर] एक प्रकार का छछूँदर जो इंगलैंड के पश्चिमी ओर के प्रदेशों में बहुत पाया जाता है।

विशेष—यह पृथ्वी के नीचे सुरंग में रहता है और प्राय दूब पीता है। इसे अधकार अधिक प्रिय होता है। इसके अगले पैर चौड़े और पट्टेदार तिरछे होते हैं। इसकी आँखें छोटी, थुथना लंबा और नोकदार, बाल सघन और कोमल होते हैं। इसकी श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है।

विलायती नील—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + नील] एक विशेष प्रकार का नीला रंग जो चीन से आता है।

विलायती पटुआ—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + पटुआ] लाल पटुआ। लाल सन।

विलायती पात—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + पटुआ] रामबाँस। कृष्ण केतकी।

विलायती पानी—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + पानी] शराब। मदिरा। उ०—तौ भी भाँति भाँति के विलायती पानी।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३३।

विलायती प्याज—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + प्याज] एक प्रकार का प्याज जिसमें गाँठ नहीं होती, सिर्फ गूदेदार जड़ होती है।

विलायती बैंगन—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + बैंगन] एक प्रकार का बैंगन या भंटा जो इस देश में यूरोप से आया है।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है जो प्रतिवर्ष बोई जाती है। इसका क्षुप दो ढाई हाथ ऊँचा होता है। इसकी डालियाँ भूमि की ओर झुकी अथवा भूमि पर पसरी रहती हैं। पत्ते आलू के पत्तों के से होते हैं। डंडियों के बीच बीच से सींके निकलते हैं जिनपर गुच्छे में फूल आते हैं। ये फूल साधारण बैंगन के फूलों के सदृश, पर उनसे छोटे होते हैं। इनका रंग पीला होता है। फल प्राय दो से चार इंच तक के गोलाकार और कुछ चिपटे (नारंगी के समान) होते हैं। कच्चे रहने पर उनका रंग हरा और पकने पर लाल चमकीला हो जाता है। इसकी तरकारी, चटनी आदि बनती है। स्वाद में यह कुछ खट्टापन लिए होता है। रासायनिक विश्लेषण से पता लगता है कि इसमें २३ सैकड़े लोहे का अंश होता है। इसमें 'ए' और 'सी' विटामिन होता है। अत यह रक्तवर्धक है। अँगरेज लोग इसका अधिक व्यवहार करते हैं। इसे अँगरेजी में टोमैटो और हिंदी में टमाटर कहते हैं।

विलायती भंटा—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'विलायती बैंगन'।

विलायती मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] विदेश में होनेवाली ऐसी मिट्टी जिससे पात्र और खिलौने बनते हैं। उ०—विलायती मिट्टी, पत्थर, ईंट।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १३३।

विलायती मेंहदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + मेंहदी] मेंहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा। सनट्ट।

विशेष—यह पौधा प्राय बाढ़ के रूप में लगाया जाता है यह भारत, बलोचिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, अफ्रिका आदि सभी स्थानों में होता है। यह वर्षा और शीतकाल में फूलता है। इसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है और इसपर खुदाई का काम बहुत अच्छा होता है।

विलायती लहसुन—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + लहसुन] एक प्रकार का लहसुन जो मसाले के काम में आता है।

विलायती सिरिस—संज्ञा पुं० [हिं० विलायती + सिरिस] एक प्रकार का सिरिस वृक्ष ।

विशेष—यह पौधा विदेश से यहाँ आया है, पर अब यहाँ भी होने लगा है। यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है। पंजाब में भी यह पाया जाता है। इसकी छाल प्रायः चमड़ा सिझाने के काम में आती है।

विलायती सेम—संज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + सेम] एक प्रकार की सेम जिसकी फलियाँ साधारण सेम से कुछ बड़ी होती हैं।

विलायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक अस्त्र ।

विशेष—कहते है, जब इस अस्त्र का उपयोग किया जाता था, तब शत्रु की सेना विश्राम करने लगती थी।

विलायित—वि० [सं०] पिघलाया या द्रवित किया हुआ [को०]।

विलाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विडाल'।

विलावल—संज्ञा पुं० [सं०] एक राग। दे० 'बिलावल'।

विलावली—संज्ञा स्त्री० [हिं० विलावल] एक रागिनी जो हिंडोल राग की स्त्री मानी जाती है। (संगीत)।

विलास—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसन्न या प्रफुल्लित करने की क्रिया। २ सुखभोग। आनंदमय क्रीडा। मनोरंजन। मनोविनोद। ३ आनंद। हर्ष। ४ संयोग के समय में अनेक हाव भाव अथवा प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हाव भाव। नाज नखरा। ५ किसी अंग की मनोहर चेष्टा। जैसे, भ्रूविलास, करविलास। उ०—भृकुटि विलास जासु जग होई। राम वाम दिसि सीता सोई।—तुलसी (शब्द०)। ६ किसी चीज का हिलना डोलना। जैसे, चपला का विलास। चमक दमक। ७ चमकना। दीप्त होना। ८ आरामतलबी। अतिशय सुखभोग। ९ प्रफुल्लता। उत्साहशीलता। तेजस्विता। (दशरूपक में पुरुष का एक गुण कहा गया है।)

यौ०—विलासकानन = प्रमदवन। विलासकोदंड, विलासचाप, विलासधन्वा, विलासबाण = कामदेव। विलासमंदिर = केलिभवन। विलासवातायन = बरामदा। छज्जा। विलासविपिन = क्रीडाउपवन। विलासवेश्म = क्रीडागृह।

विलासक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विलासिका] १ इधर उधर फिरनेवाला। भ्रमणशील। २. लास्य करनेवाला। नृत्यकर्ता [को०]।

विलासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रीडा। मनोरंजन। २ रँगरेली। ३ विमोहन [को०]।

विलासमयी—वि० स्त्री० [सं०] विलास से प्रेम करनेवाली। क्रीडाशीला। कामवती। उ०—ज्योतिमयी, हासमयी, विकल विलासमयी।—लहर, पृ० ६७।

विलासवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वेच्छाचारिणी वा कामुक स्त्री [को०]।

विलाससामग्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] विलास का सामान। प्रसाधन की वस्तुएँ। उ०—विलास सामग्री मँगाने में शासक वर्ग को फायदा जरूर हुआ।—भा० इ० रू०, पृ० २७८।

विलासिका[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है। इसका विषय संक्षिप्त और साधारण होता है।

विलासिका[2]—वि० स्त्री० आनंद देनेवाली।

विलासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुखभोग की अनुरक्तता। विलासी का भाव या कार्य। विलास की भावना। उ०—भोले थे, हाँ तिरते केवल, सब विलासिता के नद में।—कामायनी, पृ० ७।

विलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरी युवा स्त्री। २ कामिनी। हाव भाव करनेवाली स्त्री (को०)। ३ वेश्या। गणिका। ४ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग, (ISSISISISS) होते हैं।

विलासी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुखभोग में अनुरक्त पुरुष। कामी। २ जिसे आमोद प्रमोद पसंद हो। क्रीडाशील। हँसोड़। कौतुकशील। ३ ऐश-आरामपसंद। आरामतलब। ४ वरुण वृक्ष। वरुन। ५ सर्प। साँप (को०)। ६ अग्नि (को०)। ७ चंद्रमा (को०)। ८ विष्णु (को०)। ९ कृष्ण (को०)। १० शिव (को०)। ११. वार। कामदेव (को०)।

विलासी[2]—वि० आमोदप्रिय। क्रीडाशील। ऐयाश [को०]।

विलास्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे होते हैं।

विलिंग—संज्ञा पुं० [सं० विलिङ्ग] १ वह जो भिन्न लिंग का हो। २ लिंग का अभाव [को०]।

यौ०—विलिंगस्थ = जो समझा न जा सके। जो समझने लायक न हो।

विलिंपित—वि० [सं० विलिम्पित] लेपा हुआ। लेप किया हुआ [को०]।

विलिखन—संज्ञा पुं० [सं०] १ खरोंचना। रेखांकित करना। २ लिखना। ३. विश्लेषण। विभाजन। ४ नदी का प्रवाह या सरणि [को०]।

विलिखित—वि० [सं०] १ खरोंचा हुआ। २ लिखा हुआ। ३ खुदा हुआ।

विलिगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साँप।

विलिप्त—वि० [सं०] १ पुता हुआ। लिपा हुआ। २ कलुषित। मैला। दागदार (को०)।

विलिष्ट—वि० [सं०] १ टूटा हुआ। उखड़ा हुआ। २ जो ठीक अवस्था में न हो। अस्तव्यस्त।

यौ०—विलिष्टभेषज = हड्डी आदि टूटने की चिकित्सा।

विलीक(पु)—वि० पुं० [सं० व्यलीक] अनुचित। नामुनासिब।

विलीन—वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २ जो घुल गया या मिल गया हो। जैसे—पानी में नमक विलीन हो गया। ३ छिपा हुआ। ४. संबद्ध। सलग्न। अनुरक्त [को०]। ५. अड्डे पर उतरा हुआ या बैठा हुआ (पक्षी आदि)। ६ नष्ट। मृत। लयप्राप्त।

विलीयन—संज्ञा पुं० [सं०] विलीन होना। मिल जाना [को०]।

विलुंचन—संज्ञा पुं० [सं० विलुञ्चन] उखाड़ना। नोचना। फाड़ना। छीलना [को०]।

विलुंठन—संज्ञा पुं० [सं० विलुण्ठन] १ छीनना । लूटना । २ लुठन । लुठन । लोटना [को०] ।

विलुठित—वि० [सं० विलुण्ठित] १ लूटा हुआ । जो लूटा गया हो । २ लुढकता हुआ । लोटता हुआ [को०] ।

विलुपक—संज्ञा पुं० [सं० विलुम्पक] चोर । डाकू । लुटेरा । लूटपाट करनेवाला [को०] ।

विलुठित—वि० [सं०] १ दे० 'विलुठित' । २ क्षुब्ध [को०] ।

विलुप्तायोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का योनिरोग । इस रोग मे योनि मे सदा पीडा होती है ।

विलुभित—वि० [सं०] आकुल । अस्तव्यस्त । अव्यवस्थित । विलोड़ित । क्षुब्ध [को०] ।

यौ०—विलुभितप्लव = आकुल या क्षुब्ध गति ।

विलुलक संज्ञा पुं० [सं०] नाश करनेवाला ।

विलुलित—वि० [सं०] १ अस्तव्यस्त । २ उद्विग्न । ३ लहराता हुआ । हिलता हुआ । उ०—प्रिय । जब मेरे गात्रो मे आकर छिप जाता है मलयानिल, तब किस ध्वनि से मुखरित हो उठता है मेरा विलुलित आँचल ।—इत्यलम्, पृ० २९ ।

यौ०—विलुलितकेश = अस्तव्यस्त केशवाला । बिखरे बालोवाला ।

विलूघन(पु)†—क्रि० अ० [सं० वि० + लुब्ध, प्रा० वि + लुद्ध] विशेष लुब्ध होना । रम जाना । मोहित होना । आसक्त होना । उ०—आपस्वारथ येह विलूधा रे, आगम मरम न जाणें । जम कर माँथें बाण धरीला, ते तौ मनि न आणें ।—दादू० पृ० ५५३ ।

विलून—वि० [सं०] कटा हुआ । अलग किया हुआ ।

विलूला(पु)†—संज्ञा पुं० [देश०] बुद्बुद । बुल्ला । उ०—वारि के विलूलन की सेज रचि कौन सोयो, ओसकन पिए हिए कौन तोस पायो है ।—दीन० ग्र०, पृ० १४० ।

विलेख—संज्ञा पुं० [सं०] छिद्र । विवर । गुफा । २ फाडना । खरोचना । ३ विदारण । विलेखन [को०] ।

विलेखन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लेखन । लिखना । २ खरोचना । रेखांकित करना । चिह्न बनाना । ३ उत्पाटन । उखाड़ना । ४. खोदना । खनना । ५ विभाग करना । विश्लेषण करना । ६ नदी की सरणि या मार्ग [को०] ।

विलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चिह्न । खरोच । निशान । २. लिखित अनुबंध या करार [को०] ।

विलेखी—वि० [सं० विलेखिन्] विलेखन करनेवाला । लकीर, खरोच या चिह्न बनानेवाला [को०] ।

विलेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर आदि पर चुपडकर लगाने की चीज । लेप । अगराग । २ पलस्तर । गारा । २ लेप करना । गारा आदि लगाना [को०] ।

विलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लेप करने या लगाने की क्रिया । अच्छी तरह लीपना । लगाना । २ लगाने या लेप करने का पदार्थ । जैसे,—चदन, केसर आदि ।

विलेपनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] [पुं०] १ वह स्त्री जो परिमल द्रव्यो (इत्र आदि) से सुवासित हो । २ सुवेशा स्त्री । सुंदर वेशभूषा-वाली महिला । ३ माँड । चावल का माँड [को०] ।

विलेपिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अगराग आदि लेपन करनेवाली महिला । प्रसाधिका । २ दे० 'विलेप्य' [को०] ।

विलेपी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] माँड । चावल का माँड [को०] ।

विलेपी²—वि० [सं० विलेपिन्] १. लेप या पलस्तर करनेवाला । २ लसदार । लसीला । चिपकने या संबद्ध होनेवाला [को०] ।

विलेप्य¹—वि० [सं०] १ जिसका लेप किया जाय । जैसे, विलेप्यौषध । २ जिसपर लेप किया जाय । जैसे, विलेप्य स्थान [को०] ।

विलेप्य²—संज्ञा पुं० [स्त्री० विलेप्या] चावल का माँड [को०] ।

विलेवासी—संज्ञा पुं० [सं० विलेवासिन्] विलेशय । सर्प [को०] ।

विलेशय—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिल या दरार मे रहनेवाले जीव । जैसे, साँप, बिच्छू, गोह आदि । २ सर्प । साँप । उ०—आशीविष विषधर फणी मणी विलेशय व्याल ।—नंददास (शब्द०) ।

विलै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विलय] दे० 'विलय' । उ०—दियो है न दान कछू कियो है न पुन्य रव ऐसे हो प्रपंच बीच वै सबै विलै भई ।—दीन ग्र०, पृ० १२८ ।

विलोक¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विलोकन' ।

विलोक²—वि० लोकरहित । जनहीन । निर्जन । एकांत । शून्य [को०] ।

विलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विचार करना । २ खोजना । ३. परिचय पाना । जानकारी पाना । ४ दृष्टि । निगाह । नजर (को०) । ५ अवलोकन । अच्छी प्रकार से देखना । उ०—वह अपलक लोचन अपने पादाग्र विलोकन करती, पथ-प्रदर्शिका सी चलती धीरे धीरे डग भरती ।—कामायनी, पृ० २८० ।

विलोकना(पु)—क्रि० स० [सं० विलोकन] १ देखना । २ अवलोकन करना । दे० 'विलोकना' ।

विलोकनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० विलोकन] दे० 'विलोकनि' ।

विलोकनीय—वि० [सं०] १. आकर्षक । सुदर । २ दर्शनीय । ३. समझने योग्य [को०] ।

विलोकित¹—वि० [सं०] १. देखा हुआ । २. परिचित । ३. परीक्षित । विचारित [को०] ।

विलोकित²—संज्ञा पुं० १. परीक्षण । विवेचन । २ दृष्टि । ३ ताल विशेष [को०] ।

विलोकी—वि० [सं० विलोकिन्] १ देखने या अवलोकन करनेवाला । २ जानकारी हासिल करनेवाला । परिचय पानेवाला [को०] ।

विलोक्य—वि० [सं०] देखने योग्य । दर्शनीय [को०] ।

विलोचन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ नेत्र । नयन । आँख । उ०—धिक् ढोंग कर रहे है अब व्यर्थ ही विलोचन ।—शकु०, पृ० ३५ । २. दृष्टि । अवलोकन ।

यौ०—विलोचन पथ = नेत्रव्यापार का क्षेत्र । दृष्टिपथ । लोचन-मग । विलोचनपात = दृष्टिपात । अवलोकन । निगाह करना ।

३ पुराणानुसार एक नरक का नाम, जिसमे मनुष्य अंधा हो जाता है और न देखने के कारण अनेक यातनाएँ भोगता है। ३ लोचनरहित करने की क्रिया। आँखें फोडने की क्रिया। नेत्ररहित कर देने की क्रिया।

विलोचन²—वि० विपरीतदृष्टि। वक्रदृष्टि। विकृतदृष्टि [को०]।

विलोचनाबु—सज्ञा पु० [स० विलोचनाम्बु] नेत्रजल। आँसू [को०]।

विलोट—सज्ञा पुं० [स०] विलोटन लुढकना [को०]।

विलोटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली। वेला मछली।

विलोटन—सज्ञा पु० [स०] लुढकना [को०]।

विलोड—सज्ञा पुं० [स०] १ हिलना डुलना। लहराना। २ लुढ़कना। लोटना। ३ मथने की क्रिया। मथन [को०]।

विलोडक—सज्ञा पु० [स०] चोर। तस्कर [को०]।

विलोडन—सज्ञा पुं० [स०] १ मथन करना। २ हिलाना डुलाना। आदोलित करना। इतस्तत करना [को०]।

विलोड़ना@—क्रि० स० [स० विलोडन] दे० 'बिलोडना'।

विलोडित¹—वि० [स०] १, कपित। क्षुब्ध। आदोलित। मथित उ०—हुआ विलोडित गृह, तब प्राणी, कौन। कहाँ। कब। सुख पाते ?—कामायनी, पृ० १६। २ लुठित। लुढका हुआ [को०]।

विलोडित²—सज्ञा पुं० [स०] मठा। छाछ [को०]।

विलोना—क्रि० स० [हिं०] दे० 'बिलोना'।

विलोप—सज्ञा पुं० [स०] १. किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २ रुकावट। ३ विघ्न। वाधा। ४ आघात। ५. नाश। लोप। ६. हानि। नुकसान।

विलोपक—सज्ञा पुं० [स०] १ नाश करनेवाला। २ दूर करनेवाला। ३. लेकर भागनेवाला।

विलोपन—सज्ञा पु० [स०] १ विलोप करने की क्रिया। २ काटना या छिन्न करना। तोडकर अलग करना।

विलोपना@—क्रि० स० [स० विलोपन] १ लोप करना। नाश करना। २. लेकर भागना। ३ विघ्न डालना। बाधा उपस्थित करना।

विलोपभृत—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा निर्दिष्ट वह सेना जो केवल लूटमार का लालच देकर इकट्ठी की गई हो।

विलोपित—वि० [स०] दे० 'विलु'। उ०—यदि मैं उसे इसी समय विलोपित कर दूँ।—कबीर म०, पृ० ११।

विलोपी—सज्ञा [स० विलोपिन्] [स्त्री० विलोपिनी] १ विलोप करनेवाला। २ नाश करनेवाला।

विलोप्ता—वि० [स० विलोप्तृ] लुटेरा। चोर। दस्यु। डाकू [को०]।

विलोप्य—वि० [स०] विलोप करने या होने योग्य।

विलोभ¹—सज्ञा पु० [स०] १ आकर्षण। प्रलोभन। २. वहकावा। छलावा (को०)। ३ मोह। माया। भ्रम।

विलोभ²—वि० जिसके मन मे किसी प्रकार का लालच न हो। लोभरहित।

विलोभन—सज्ञा पुं० [स०] १ लोभ दिखाने की क्रिया। २ मोहित या आकर्षित करने का व्यापार। ३ प्रशसा। स्तवन। चाटुकारिता (को०)। ४ कोई बुरा कार्य करने के लिये किसी को लोभ दिलाने का काम। ललचाना।

विलोभनीय—वि० [स०] लुभानेवाला [को०]।

विलोभित—वि० [स०] १ लुब्ध किया हुआ। लुभाया हुआ। २ छला हुआ। वहकाया हुआ। ३ प्रशसा किया हुआ। प्रशंसित [को०]।

विलोम¹ वि० [स०] [वि० स्त्री० विलोमी] १ विपरीत। उलटा। प्रतिकूल। उ०—तुम सन कही वचन कटु वागी। अपन हाथ मीचु वहि माँगी। कहेसि विलोम वचन तजि ज्ञाना। यहिकर काल आय नियराना।—सबल (शब्द०)। २ प्रतिकूल या विपरीत क्रम मे उत्पन्न (को०)। ३ पिछड़ा हुआ (को०)। ४ नियम वा रीति के विरुद्ध। ५ केशविहीन। रोम रहित (को०)।

विलोम²—सज्ञा पु० [स०] १ सर्प। २ वरुण। ३ कुत्ता। ४ रहट। ५ क्रमविपर्यय। उलटा क्रम (को०)। ६ सगीत मे ऊचे स्वर से नीचे स्वर की ओर आना। स्वर का अवरोह। उतार। ७ ऊँचे की ओर से नीचे की ओर आना।

विलोमक—वि० [स०] विपरीत। प्रतिकूल।

विलोम काव्य—सज्ञा पु० [स०] वह काव्य या कविता जिसके अक्षरो को उलटकर भी पढा जा सके और जो पहले से भिन्न एक विशेष अर्थ दे। सस्कृत मे इस प्रकार के कई काव्य प्राप्त होते हैं।

विलोम क्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] वह क्रिया जो अंत से आदि की ओर की जाय। उलटी ओर से होनेवाली क्रिया।

विलोमज—वि० [स०] वह सतान जिसकी माता पिता से उच्च वर्ण की हो [को०]।

विलोमजात—वि० [स०] दे० 'विलोमज' [को०]।

विलोमजिह्व—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हाथी।

विलोमन—सज्ञा पुं० [स०] नाट्यशास्त्र के अनुसार मुखसधि के बारह अगो मे से एक। नायक का मन नायिका की ओर अथवा नायिका का मन नायक की ओर आकृष्ट करने के लिये उसके गुणो का कथन। जैसे,—रत्नावली मे वैतालिक का सागरिका को लुभाने के लिये राजा उदयन के गुणों का कथन।

विलोमपाठ—सज्ञा पुं० [स०] आखीर से पढना। उलटा पढ़ना। विपरीत क्रम से पढना।

विलोमरसन—सज्ञा पु० [स०] हाथी [को०]।

विलोमवर्ण¹—सज्ञा पु० [स०] एक सकर जाति। दोगली जाति।

विलोमवर्ण²—वि० दे० 'विलोमज'।

विलोमविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उलटी ओर से होनेवाली क्रिया या अनुष्ठान। विलोम क्रिया। २. गणित मे प्रतिलोम नियम (को०)।

विलोमा—वि० [सं० विलोमन्] १. रोमरहित। केशहीन। २ विपरीत दिशा की ओर घूमा या मुडा हुआ।

विलोमाक्षर काव्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विलोम काव्य'।

विलोमित—वि० [सं०] विलोम या उलटा किया हुआ (को०)।

विलोमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँवला। आमलकी।

विलोल—वि० [सं०] १. चचल। हिलता डुलता। अस्थिर। २ सुदर। उ०—चपल विलोल डोल वह लागी। थिर न रहे चचल वैरागी।—जायसी (शब्द०)। ३ स्रस्त। ढीला। अस्तव्यस्त। बिखरा हुआ (केश)। जैसे, विलोलकबरी = स्रस्त वेणी या केश (को०)।

विलोलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिलाना। कँपाना। २ मथना। आलोडन (को०)।

विलोलित[1]—वि० [सं०] १ हिलाया हुआ। कँपाया हुआ। २. मथित। क्षुब्ध किया हुआ। क्षुभित (को०)।

विलोलुप—वि० [सं०] निर्लोभ। लोभरहित (को०)।

विलोहित[1]—वि० [सं०] १ नीललोहित या धूम्रवर्ण का। २ लाल रग का (को०)।

विलोहित[2]—संज्ञा पुं० १ शिव। रुद्र। २ लाल रग का प्याज। ३. एक नरक का नाम (को०)।

विलोहितक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मुर्दा जो लाल वर्ण का हो गया हो। लाल रग का शव (को०)।

विलोहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक का नाम (को०)।

विल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ थाला। आलवाल। २. गर्त। गड्ढा। ३ हीग (को०)।

विल्लसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह माता जो दस बच्चो को जन्म दे चुकी हो। दस सतानो की माँ (को०)।

विल्व—संज्ञा पुं० [सं०] बेल वृक्ष। बेल का पेड।

विल्व तैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल।

विशेष—इसे बनाने के लिये बेल की जड का रस, सोठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, अपामार्ग का क्षार और जवाखार को कूटकर गोमूत्र के साथ तेल मे डालकर मद आँच पर पकाते हैं। रस जलने और तेल मात्र रहने पर इसे उतार लेते हैं। कहते है कि इससे कान से बधिरता, कर्णस्राव आदि रोग अच्छे हो जाते हैं।

विल्वपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बेल का पत्ता, जो शिव जी पर चढाने के काम आता है। बेलपत्र।

विल्वमगल—संज्ञा पुं० [सं० विल्वमड्गल] भक्त और महाकवि सूरदास का अधे होने से पूर्व का नाम।

विल्वातर—संज्ञा पुं० [सं० विल्वान्तर] एक वृक्ष (को०)।

विल्वेश—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक भिलसा नगरी का प्राचीन नाम।

विशेष—यह नगरी ग्वालियर के दक्षिण मे बेतवा नदी के दाहिने किनारे पर बसी है। इसका पुराना नाम भद्रावत भी कहा जाता है।

विल्हन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोडा। बिनहान। बोल्लाह। उ०—सामतन कारन विल्हन, समपि समर जस कज्ज।—पृ० रा०, ६१। १४०।

विववचिषु—वि० [सं० विवञ्चिषु] वचक। धूर्त (को०)।

विवदिषु—वि० [सं० विवन्दिषु] प्रशसा करने को उत्सुक। वदना की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विवधक—संज्ञा पुं० [सं० विवन्धक] १ रोकनेवाला। कोष्ठबद्धता। कब्जियत। कब्ज।

विवधन—संज्ञा पुं० [सं० विवन्धन] रोक। बधन। रुकावट।

विव—वि० [सं० द्वि] १ दो। २ द्वितीय। दूसरा। दे० 'विवि'।

विवक्तृ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बोलनेवाला। वाचाल। २. स्पष्ट बोलनेवाला। ३ वक्ता। वाग्मी।

विवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० विवक्तृ] १ कहनेवाला। २. किसी बात को प्रकट करनेवाला। ३. दुरुस्त करने या सुधारनेवाला। सशोधन करनेवाला।

विवक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई बात कहने की इच्छा। बोलने की इच्छा। २ अर्थ। तात्पर्य। आशय। ३ अनिश्चय। शक। सदेह। ४ इच्छा। अभिलाषा (को०)।

विवक्षित[1]—वि० [सं०] १. जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। इच्छित। अपेक्षित। २ कहे जाने या बोले जाने के लिये अभिप्रेत। कथनीय (को०)। ३. उक्त। कथित। ४ अनुकूल। इष्ट। प्रिय (को०)।

विवक्षित[2]—संज्ञा पुं० १. प्रयोजन। अभिप्राय। उद्देश्य। आशय। २. जो कहने की इच्छा हो। मतलब। अर्थ (को०)।

विवक्षु—वि० [सं०] कहने बोलने को इच्छुक या तत्पर (को०)।

विवट्ट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वि+वर्त्मन्, प्रा० वट्ट] कुराह। बुरी राह। वह राह जो प्रचलित न हो। उ०—अति बहुत भाँति विवट्ट वट्टहि भुलेओ बड्डुओ चेतना।—कीर्ति०, पृ० २६।

विवत्स—वि० [सं०] वत्सरहित। पुत्रहीन (को०)।

विवत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गौ जिसे वत्स न हो। बिना बछडेवाली गाय (को०)।

विवत्सु—वि० [सं०] बोलने को इच्छुक या तत्पर (को०)।

विवदन—संज्ञा पुं० [सं०] विवाद। झगडा। मुकदमेबाजी (को०)।

विवदना(पु)—क्रि० अ० [सं० विवाद+हिं० ना] किसी वस्तु या विषय पर जबानी झगडा करना। शास्त्रार्थ करना। विवाद करना। जबानी झगडना। उ०—इमि विवदहि शारद यति राजा। सुनि विस्मित सब विदुष समाजा।—शं० दि० (शब्द०)।

विवदित—वि० [सं०] १ विवाद मे पडा हुआ। विवादग्रस्त। २ विवाद करनेवाला। ३ जिसके लिये वाद किया गया हो (को०)।

विवदिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कहने या बोलने की आकाक्षा (को०)।

विवार—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यादन। फैलाना। २. अक्षर के उच्चारण मे होनेवाला कंठ का फैलाव। ३ एक आभ्यंतर प्रयत्न जो संवार प्रयत्न के विपरीत होता है। उ०—अल्पप्राण, महाप्राण, विवार, संवार, बाह्य, आभ्यंतर प्रयत्नादिक अक्षरोच्चारो की एवं उदात्तानुदात्त स्वरितादिक स्वरोच्चारो की शुद्धता कितनी महत्वपूर्ण मानी जाती थी।—संपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २८०।

विवारी—वि० [सं० विवारिन्] वारण करनेवाला। रोकनेवाला [को०]।

विवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ निर्वासन। निष्कासन। २ वियोग [को०]।

विवासकरण—संज्ञा पुं० [सं०] निष्कासन। निर्वासन [को०]।

विवासकाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रात काल। सूर्योदय वेला [को०]।

विवासन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विवास'।

विवासित—वि० [सं०] निष्कासित। निर्वासित [को०]।

विवास्य—वि० [सं०] निकाल देने योग्य।

विवाह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस मे दांपत्य सूत्र मे बँधते हैं। कही यह प्रथा सामाजिक होती है, कही धार्मिक और कही कानून के अनुसार होती है। यह हिंदुओ के सोलह संस्कारो मे से एक संस्कार है। शादी। व्याह।

विशेष—मनुष्य जाति जब आदिम असभ्यावस्था मे थी, उस समय उसमे विवाह या पतिसंवरण की प्रथा न थी। केवल कामवेग के कारण स्त्री पुरुषो का समागम हुआ करता था। यह प्रथा अब भी कुछ असभ्य जातियो मे प्रचलित है। महाभारत मे लिखा है—'प्राचीन काल मे स्त्रियाँ नंगी रहती थी। वे स्वतंत्र और विहारिणी होती थी और बिना व्याह किए ही अनेक पुरुषो से समागम करती थी।' उनका यह कृत्य अधर्म नही समझा जाता था। सभ्यता बढने पर लोगो को घर बनाने और एक ऐसे व्यक्ति को अपने यहाँ रखने की आवश्यकता हुई जो उसका प्रबंध कर सके। इसके लिये स्त्रियाँ उपयुक्त समझी गई। अत लोगो ने उनको फुसलाकर अथवा बलात् अपने यहाँ रखना आरंभ किया। उन दिनो स्त्री एक पुरुष के अधिकार मे तबतक रहती थी जबतक कोई दूसरा उससे बली पुरुष उसे बलपूर्वक छीन न ले जाता था। अत अब ऐसा नियम बनाने की आवश्यकता हुई कि एक दूसरे की स्त्री को हरण न कर सके। पर स्त्रीस्वतंत्रता मे बाधा नही थी। जब आर्यो की सभ्यता बढी और उनमे वर्णधर्म स्थापित हो चला, तब लोग संभुक्त स्त्री को अपने यहाँ रखने की अपेक्षा असंभुक्त या कन्या को अच्छा समझते थे। कन्या के लिये कभी कभी युद्ध भी हुआ करते थे। धीरे धीरे सभ्यता बढ़ती गई और लोगो मे स्त्री पुरुष की ममता अधिक होती गई। पर स्त्रियो की स्वतंत्रता बनी रही। वे एक पुरुष के अधिकार मे रहते हुए भी अन्य की कामना करती थी। उस समय यह व्यभिचार नही समझा जाता था। महाभारत से पता चलता है कि इस प्रथा को उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु ने उठा दिया। उन्होने यह मर्यादा बाँधी कि पति के रहते हुए कोई स्त्री उसकी आज्ञा के विरुद्ध अन्य पुरुष से संभोग न करे। पर उस समय भी पति की अयोग्यता की अवस्था मे उसके रहते स्त्रियाँ दूसरा पति कर लेती थी। महात्मा दीर्घतमा ने यह प्रथा निकाली कि 'यावत् जीवन स्त्रियाँ पति के अधीन रहे। पति के जीवनकाल में तथा उसके मरने पर भी वे कभी परपुरुष का आश्रय न लें और यदि आश्रय लें, तो पतित समझी जायँ।' धीरे धीरे स्त्रियो की स्वतंत्रता जाती रही और वे उपभोग की सामग्री समझी जाने लगी। यहाँ तक कि लोग उन्हे पति के मरने पर उसके शव के साथ अन्य आमोद प्रमोद की वस्तुओ की भाँति जलाने लगे जिसमे मरे हुए व्यक्ति को वे स्वर्ग मे मिलें इसी प्रथा ने पीछे सती की प्रथा का रूप धारण किया। पीछे से आर्य जाति व्यसनी हो गई। एक पुरुष अनेक स्त्रियाँ रखने लगा, यहाँ तक कि तपस्वी भी इससे नही बचे थे। याज्ञवल्क्य के दो स्त्रियाँ (मैत्रेयी और गार्गी) थी। आर्य लोग अनार्य स्त्रियो को भी नहीं छोडते थे। इस कारण यह नियम बनाना पड़ा कि यज्ञदीक्षा के समय रामा अर्थात् शूद्रा से गमन न करे। पीछे मे राजा वेणु ने अपने वंश की रक्षा के लिये जबर्दस्ती 'नियोग' की प्रथा चलाई। मनु जी ने उसकी निंदा की है। वे लिखते हैं—'राजर्षि वेणु के समय मे विद्वान् द्विजो ने मनुष्यो के लिये इस पशु धर्म (नियोग) का उपदेश किया था। राजर्षिप्रवर वेणु समस्त भूमंडल का राजा था। उसी कामी ने वर्णो का घालमेल किया।'

उस समय तक विवाह दो प्रकार के होते थे। एक तो छीन झपटकर, लड भिडकर या यो ही कन्या को फुसलाकर अपने यहाँ ले आते थे। दूसरे यज्ञो के समय यजमान अपनी कन्याएँ पुरोहितो को चाहे दक्षिणा के रूप मे या धर्म समझकर दे देते थे। धीरे धीरे जब विवाह की यह प्रथा अनुचित मालूम हुई, तब विवाह का अधिकार पिता के हाथ मे दे दिया गया और पिता योग्य वरो का एक समाज मे बुलाकर कन्याओं को उनमे से एक को चुनने का अधिकार देता था। यही आगे चलकर स्वयंवर हुआ। कभी कभी स्वयंवर के मौके पर भी क्षत्रिय लोग लडकियाँ उठा ले जाते थे। विवाह के समय प्राय वर की २५ वर्ष और कन्या की १६ वर्ष की अवस्था होती थी, अत विधवा होने की कम संभावना रहती थी। धीरे धीरे 'नियोग' की प्रथा मिट गई। विधवा का विवाह भी बुरा समझा जाने लगा। सभ्यता के बढने पर पुरुष लोग स्त्रियो पर कडी दृष्टि रखने लगे और उनकी स्वतंत्रता जाती रही। स्त्रियो को अस्वतंत्रता हो जाने पर पुरुषो मे बहुविवाह की प्रथा चल पडी। पीछे बुद्ध के समय मे एक बार स्त्रियो की स्वतंत्रता फिर बढी। पर बौद्ध मत का लोप होने पर वह फिर जाती रही। मुसलमानो के आने पर स्त्रियो की रक्षा करने के लिये हिंदुओ ने उनका जल्दी विवाह करना आरंभ किया, क्योकि उस समय मुसलमान लोग विवाहित स्त्रियो पर बलात्कार करना धर्मविरुद्ध समझते थे। इसी से

बाल विवाह की प्रथा चली। विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। पर आजकल केवल ब्राह्म विवाह प्रचलित है।

पर्या०—दारकर्म। परिणय। पाणिग्रहण।

यौ०—विवाहकाम = विवाह की इच्छा रखनेवाला। विवाहार्थी। विवाहचतुष्टय = चार विवाह करना। विवाहदीक्षा = विवाह-विधि। विवाह नेपथ्य = विवाह के समय वर और वधू द्वारा धारण किया जानेवाला वेश। विवाहबंधन। विवाहविच्छेद = पालक। पतिपत्नी का परस्पर संबंध तोड़ना। विवाहविधि = विवाह का विधान या नियम। विवाहवेष = विवाह के समय वर वधू की वेशभूषा। विवाहनेपथ्य।

विवाहना—क्रि० स० [सं० विवाह + हिं० ना० (प्रत्य०)] दे० 'ब्याहना'।

विवाहबंधन—संज्ञा पुं० [सं० विवाह + बन्धन] विवाह के द्वारा पत्नी के साथ हो जानेवाला दृढ संबंध। पति और पत्नी का धार्मिक संबंध। उ०—मैं पुन: हुआ चेतन। सोचता हुआ विवाहबंधन।—अपरा, पृ० १७५।

विवाहित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।

विवाहिता—वि० स्त्री० [सं०] जिसका पाणिग्रहण हो चुका हो। ब्याही हुई स्त्री।

विवाही—वि० स्त्री० [सं० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। उ०—और सहेली सबै बिवाही। मो कह देव कतहुँ बर नाही।—जायसी (शब्द०)।

विवाह्य¹—वि० [सं०] पाणिग्रहण करने योग्य। व्याह करने योग्य। व्याहने लायक।

विवाह्य²—संज्ञा पुं० १ दामाद। जामाता। २ दूल्हा। वर (को०)।

विवि(पु)—वि० [सं० द्वि] १ दो। २ दूसरा। उ०—श्रीफल कज-कली से विराजत कै विवि मौनी बसे ढिग गंग के। कै गिरि हेम के सपुट साने कै राजत संभु मनो रस रंग के।—द्विज (शब्द०)।

विविक्त¹—वि० [सं०] १ पृथक् किया हुआ। उ०—साध्य और साधनों को विविक्त करके काव्य के नित्य स्वरूप, या मर्मशरीर-को अलग निकालने का प्रयास बढ़ता गया।—रस०, पृ० ५०। २ बिखरा हुआ। ३ पवित्र। ४ विजन। निर्जन। ५ एकाकी। अकेला (को०)। ६ विवेकशील। विवेकयुक्त (को०)। ७ विवेचित। व्याख्यात (को०)। ८. गूढ़। गहन। सूक्ष्म (विचार या निर्णय)। ९ मुक्त। रहित (को०)। १०. ज्ञात। व्यक्त। सुस्पष्ट। उ०—दर्शकों को ऐसा विविक्त रसानुभव होता है जो और रसों के समकक्ष है।—रस०, पृ० १८५।

विविक्त²—संज्ञा पुं० [स्त्री० विविक्ता] १ संन्यासी। त्यागी। २ एकांत स्थान। ३. अकेलापन। एकाकीपन (को०)। ४ स्वच्छता। शुद्धता। पवित्रता (को०)।

विविक्तचरित—वि० [सं०] जिसका आचरण बहुत अच्छा और पवित्र हो। शुद्ध चरित्रवाला।

विविक्तचेता—वि० [सं० विविक्तचेतस्] स्वच्छ हृदयवाला (को०)।

विविक्तदृष्टि—वि० [सं०] १ स्पष्ट दृष्टिवाला। २ सूक्ष्मदर्शी (को०)।

विविक्तनाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार हिरण्यरेता के सात पुत्रों में से एक। २ इसके द्वारा शासित वर्ष का नाम।

विविक्त शय्यासन—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार वह आचार जिसमें त्यागी सदा किसी एकांत स्थान में रहता और सोता है।

विविक्तशरण—वि० [सं०] एकांतवास चाहनेवाला (को०)।

विविक्तसेवी—वि० [सं० विविक्तसेविन्] एकांत में या अकेला रहने-वाला (को०)।

विविक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह भाग्यहीना स्त्री जिसे उसका पति न चाहता हो। दुर्भगा (को०)।

विविक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अलगाव। पार्थक्य। २. विवेक करना। विवेचन (को०)।

विविग्न—वि० [सं०] १ उद्विग्न। क्षुब्ध। २ अत्यंत क्रुद्ध। ३ शंका-युक्त। बहुत डरा हुआ (को०)।

विविचार—वि० [सं०] १ विचाररहित। विवेकरहित। उ०—हौं अपने विविचार विचार अचार विचार अपार बहाऊँ धीरज धूरि मिलै कहि केशव धर्म के धामनि धूरि जमाऊँ।—केशव (शब्द०)। २ आचाररहित। आचारहीन।

विविचारी—संज्ञा पुं० [सं० विविचारिन्] [स्त्री० विविचारिणी] १ अविवेकी। मूर्ख। बेवकूफ। २ दुराचारी। दुश्चरित्र। बदचलन।

विविच्च—वि० [सं० विविक्त √विविच् + क्त], [प्रा० विविक्क] विविक्त। पृथग्भूत। विविध। उ०—विविच्च रोम रंगय। पदील सुत रंगय। पृ० रा० ५७। १२९।

विवित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। उपलब्धि (को०)।

विवित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिज्ञासा। जानने की इच्छा (को०)।

विवित्सु—वि० [सं०] जिज्ञासु। जानने की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विविदिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञानप्राप्ति की इच्छा। जानने की कामना। उ०—इनके अलावा धृति, श्रद्धा, सुखा, विविदिषा, अविविदिषा, इत्यादि की भी विस्तृत व्याख्या की है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १९८।

विविदिषु—वि० [सं०] जानने की इच्छा रखनेवाला। ज्ञानप्राप्ति का अभिलाषी (को०)।

विविध¹—वि० [सं०] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का। भाँति भाँति का। जैसे,—विविध विषयों से विभूषित मासिक पत्रिका। उ०—अति रति गति मति एक करि, विविध विवेक विलास। रसिकन को रसिकप्रिया कीन्ही केशवदास।—केशव (शब्द०)।

विविध²—संज्ञा पुं० कार्य या चेष्टा का वैविध्य।

विविर—संज्ञा पुं० [सं०] १ खोह । गुफा उ०—विविर जाय मुख पाय, पायो महाप्रमाद पुनि । तहँ के तीर्थ निकाय जाय जाय सादर कियो ।—(शब्द०) । २ बिल । ३ दरार ।

विविह—वि० [सं० विविध, प्रा० विविह, विवह] अनेक प्रकार का । भाँति भाँत का । उ०—दीसै विविह चरिय । जानिज्जै सज्जन दुज्जन ।—पृ० रा०,६१ । ५०७ ।

विवीत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जो चारो ओर से घिरा हो । बाडा । २ पशुओं के चराने का स्थान जो चारो ओर से घिरा हो ।

विवीतभर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विवीतभर्तृ] चरागाह का मालिक [को०] ।

विवीताध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार चरागाहों का निरीक्षक कर्मचारी ।

विवुध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुध] १ देवता । २ पंडित । ज्ञानी । उ०—इसलिये पहिले पहल दृश्य काव्य के आधार मे ही इसकी ओर विवुधो का विचार आकर्षित हुआ ।—रस०, पृ० १६ ।

विवुधपुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुधपुर] देवताओं का देश स्वर्ग ।

विवुधप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं० विबुधप्रिया] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे र, स, ज, ज, भ, और र गण होते हैं । इसे 'चचरी', 'चचली' और 'चर्चरी' भी कहते हैं ।

विवुधवैद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुधवैद्य] दे० 'विवुधवैद्य' ।

विवुधवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुधवन] देवताओं का प्रमोदवन, नंदनकानन ।

विवुधवैद्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुधवैद्य] देवताओं के चिकित्सक, अश्विनी कुमार ।

विवुधेश(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विबुध+ईश] देवताओं का राजा । इंद्र ।

विवृक्त—वि० [सं०] परित्यक्त । त्यागा हुआ [को०] ।

विवृक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्भगा स्त्री । पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री । विविक्ता [को०] ।

विवृत[1]—वि० [सं०] १ विस्तृत । फैला या फैलाया हुआ । २ खुला हुआ । अनावृत । ३ नग्न । ४ तृण, तरु से विहीन (को०) । ५ प्रदर्शित । प्रकटीकृत । अभिव्यक्त(को०) । ६ जिसकी व्याख्या या टीका की गई हो । व्याख्यात (को०) । ७. स्पष्ट । प्रत्यक्ष (को०) । ८ उद्घोषित । घोषित (को०) ।

विवृत[2]—संज्ञा पुं० १. व्याकरण और भाषाविज्ञान के अनुसार कतिपय ध्वनियो के उच्चारण करने का एक प्रयत्न । २ प्रदर्शित या व्यक्त करने की क्रिया । प्रकाशन (को०) । ३ खुली जमीन । अनावृत भूमि । परती जमीन (को०) ।

विवृतद्वार—वि० [सं०] १ उन्मुक्त । अनियन्त्रित । २ जिसका द्वार खुला हो । ३ सीमाहीन [को०] ।

विवृतपौरुष—वि० [सं०] शक्ति का प्रदर्शन करनेवाला [को०] ।

विवृतभाव—वि० [सं०] खुले हुए हृदयवाला । साफ दिल का । निष्कपट भाव का [को०] ।

विवृतस्मयन—संज्ञा पुं० [सं०] वह हँसी जिसमे सभी दाँत दिखाई पड़ जायँ । खुली हँसी [को०] ।

विवृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] योनि का एक रोग, जिसमें गूलर के फल के सदृश मंडलाकार फुंसियाँ होती हैं और योनि में बहुत जलन होती है ।

विवृताक्ष[1]—वि० [सं०] विशाल नेत्रवाला । बडी आँखोंवाला [को०] ।

विवृताक्ष[2]—संज्ञा पुं० मुरगा । ताम्रचूड । तमचुर । कुक्कुट [को०] ।

विवृतानन—वि०[सं०] जिसका मुख खुला हो । खुले मुँहवाला [को०] ।

विवृतास्य—वि० [सं०] दे० 'विवृतानन' ।

विवृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चक्र के समान घूमने की क्रिया । परिभ्रमण । २ टीका । भाष्य । ३ विस्तार । ४. प्रदर्शन । प्रकटीकरण । अनावरण । व्यक्तीकरण । उ०—वेदना की अधिक विवृति हम काव्यशिष्टता के विरुद्ध समझते हैं ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १०१ ।

विवृतोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलकार जिसमे श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वय अपने शब्दो द्वारा प्रकट कर देता है ।

विवृत्त—वि० [सं०] १ परावर्तित । लौटा हुआ । २. भ्रमण करता हुआ । ३ चतुर्दिक् चक्कर खाता हुआ । ४ निरावृत । अनावृत । व्यक्त । ५ ऐंठा या मुडा हुआ [को०] ।

विवृत्तदंष्ट्र—वि० [सं०] जिसके दाँत दिखाई पडते हों खुले हुए मुँहवाला [को०] ।

विवृत्तवदन—वि० [सं०] मुँह मोड लेनेवाला [को०] ।

विवृत्तांग—वि० [सं० विवृत्त+अङ्ग] पीडा से जिसके शरीर में ऐंठन हो रही हो [को०] ।

विवृत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चर्मरोग [को०] ।

विवृत्ताक्ष—वि० [सं०] मुर्गा । कुक्कुट । विवृताक्ष [को०] ।

विवृत्तास्य—वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो ।

विवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवृत्त होने का भाव या क्रिया । विस्तार । फैलाव । २ चक्कर खाना । घूमना । ३. लुढ़कना । ४ व्याकरण मे उच्चारणभग [को०] ।

विवृद्ध—वि० [सं०] १ वृद्धिगत । बढा हुआ । तीव्र । २ पूर्ण विकसित । प्रौढ । ३. शक्तिमान् । ४ विपुल । बहुत अधिक । प्रचुर [को०] ।

विवृद्धमत्सर—वि० [सं०] जिसका मत्सर या द्वेष अधिक बढ़ गया हो । विवृद्धमन्यु [को०] ।

विवृद्धमन्यु—वि० [सं०] क्रुद्ध । विवृद्धमत्सर ।

विवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उन्नति । २ समृद्धि । ३ वर्धन । वृद्धि । ४ बढाव । बाढ़ [को०] ।

यौ०—विवृद्धिभाक् = उन्नतिशील । वर्धनशील ।

विवृह—संज्ञा पुं० [सं०] अलग होनेवाला । जो अन्य या दूसरो से स्वय अलग हो जाय [को०] ।

विवेक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली बुरी वस्तु का ज्ञान । सत् असत् का ज्ञान । २ मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान होता हो । अच्छे और बुरे को पहचानने की शक्ति । ३ समझ । विचार । बुद्धि । ४. सत्य ज्ञान । ५. प्रकृति और

पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान। ६ पानी रखने का एक प्रकार का बरतन। जलपात्र। ७ जैनो के अनुसार बहुत ही प्रिय पदार्थों का त्याग। ८ भेद। अतर। प्रभेद (को०)।

यौ० —विवेकख्याति = यथार्थ या वास्तविक ज्ञान। विवेकज्ञान = विवेचन की योग्यता। न्यायबुद्धि। विवेकपदवी = विचारणा। विवेचना। चिंतन। विवेकपरिपंथी = न्याय मे बाधक। विवेकभाक् = विवेकी। बुद्धिमान्। विवेकमथरता = विवेक की दुर्बलता। विवेकविरह = विवेक से रहित होना। अविवेकिता। मूर्खता। विवेकविश्रान = मूर्ख। बुद्धिहीन। विवेकशील। विवेकशून्य।

विवेकज्ञ—वि० [स०] विवेक करनेवाला। विवेकी [को०]।

विवेकता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विवेक का भाव। ज्ञान। २ सत् और असत् का विचार।

विवेकदृश्वा—सज्ञा पु० [स० विवेकदृश्वन्] विचारवान् या दूरदर्शी व्यक्ति। विवेकी पुरुष [को०]।

विवेकवान्—सज्ञा पु० [स० विवेकवत्] १ वह जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो। अच्छे बुरे को पहचाननेवाला। २ बुद्धिमान्। अक्लमद। विवेकी।

विवेकशील—वि० [स०] विवेकवान्। सत् और असत् का ज्ञान रखनेवाला। उ०—उसे ही सत्य का अंतिम बिंदु क्या कोई विवेकशील साहित्यकार स्वीकार कर सकता है।—हिंदी का०, पृ० ४।

विवेकशून्य—वि० [स०] भले और बुरे का ज्ञान न रखनेवाला। उ० उद्धत—विवेकशून्य, चाहिए उन्हे कि शक्ति अपनी वे पहचानें।—अपरा०, पृ० ६४।

विवेकी—सज्ञा पु० [स० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो। भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला। २. विचारवान्। बुद्धिमान्। समझदार। ३. ज्ञानी। ४ न्यायशील। ५ वह जो अभियोगो आदि का न्याय करता हो। न्यायाधीश। ६. दार्शनिक (को०)।

विवेख, विवेखा†—सज्ञा पु० [स० विवेक] दे० 'विवेक'। उ०—और सुनो गुरुमुख का लेखा। भक्त होय सो करै विवेखा।—कबीर सा०, पृ० ८२३।

विवेचक—सज्ञा पुं० [स०] विवेचना करनेवाला। विवेकी।

विवेचन—सज्ञा पुं० [स०] १. किसी वस्तु की भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नही। निर्णय। ३ व्याख्या। तर्क वितर्क। ४ अनुसंधान। ५. परीक्षा। ६. सत् असत् का विचार। ७. मीमासा।

विवेचना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विवेचन'।

विवेचनीय—वि० [स०] विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विवेचित—वि० [सं०] १ जिसकी विवेचना की गई हो। जिसका अनुसधान किया गया हो। निर्णय किया हुआ। २. तै किया हुआ। निश्चित।

विवेष (पु)—सज्ञा पुं० [सं० विवेक] दे० 'विवेक'। उ०—पढै गुणै औ घट पडै जो गुर पथ त्र विवेप पायक चेतन कोटवाल।—रामानद०, पृ० १५।

विव्वोक—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमे स्त्रियाँ सभोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशक—वि० [स० विशङ्क] जिसे किसी प्रकार की शका या भय न हो। नि शक। निर्भय। निडर।

विशकट—वि० [सं० विशङ्कट] [वि० स्त्री० विशकटा, विशकटी] १ बहुत बड़ा या विस्तृत। विशाल। २ प्रचड। शक्तिशाली (को०)। ३. भयानक। डरावना।

विशकनीय—वि० [स० विशङ्कनीय] जिससे किसी प्रकार की शका हो। डरने योग्य। सदेहास्पद। शकनीय।

विशका—सज्ञा स्त्री० [स० विशङ्का] १. आशका। भय। डर। २. आशका का अभाव।

विशकी—वि० [स० विशङ्किन्] जिसे किसी प्रकार की आशका या भय हो।

विशंक्य—वि० [स० विशङ्क्य] आशका या भय करने योग्य।

विशभर (पु)—सज्ञा पुं० [स० विश्वम्भर] दे० 'विश्वमर'। उ०—द्व द हरण गोविद तरण भव सिंधु विशभर।—राम० धर्म०, पृ० ३०२।

विशंवरा—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा गाँव। पुरा। पुरवा [को०]।

विश[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ कमल की डडी। मृणाल। २. चाँदी। ३ मनुष्य। आदमी। ४. मृणालसूत्र या ततु। कमल की डठी का रेशा (को०)।

विश[2]—सज्ञा स्त्री० [स० विश्] कन्या। लडकी।

विशकंठा—सज्ञा स्त्री० [स० विशकण्ठा] १ बक पक्षी। बलाका। २. कमल के नाल के समान कठवाली स्त्री [को०]।

विशकलित—वि० [स०] जो अलग अलग या विभक्त हो। विभिन्न। सुस्पष्ट [को०]।

विशद[1]—वि० [स०] १ स्वच्छ। विमल। २ साफ। स्पष्ट। ३ जो दिखाई पडता हो। व्यक्त। ४ सफेद। ५ प्रसन्न। खुश। ६ सुदर। मनोहर। खूबसूरत। ७. अनुकूल। ८. शात। निश्चित (को०)। ९. कोमल। मुलायम।

विशद[2]—सज्ञा पु० १ सफेद रग। २ भागवत के अनुसार जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ३. कसीस। ४ बृहती। बडी कटाई। बनभटा। ५ एक प्रकार की गध (को०)। ६. एक प्रकार का स्पर्श। कोमल स्पर्श (को०)।

विशदप्रज्ञ—वि० [स०] तीव्र बुद्धिवाला। विचक्षण [को०]।

विशदप्रभ—वि० [स०] स्वच्छ या निर्मल प्रभावाला। श्वेत काति युक्त [को०]।

विशदित—वि० [स०] विशद या स्वच्छ किया हुआ [को०]।

विशब्दित—वि० [स०] कहा हुआ। ध्वनित। कथित [को०]।

विशय—सज्ञा पुं० [सं०] १. सशय। सदेह। शक। २ आश्रय। सहारा। ३. केंद्र (को०)।

विशयी—संज्ञा पुं० [सं० विशयिन्] १ वह जिसे किसी प्रकार का शंका या संदेह हो। संशयात्मा। २ संदिग्ध। संदेहास्पद। अनिश्चित।

विशर—संज्ञा पुं० [सं०, मार डालना। वध। २. टुकड़े टुकड़े करना। विदारण (को०)।

विशरण¹—संज्ञा पुं० [सं०] मार डालना। हत्या करना। वध करना।

विशरण²—वि० अशरण। असहाय [को०]।

विशरद—संज्ञा पुं० [सं० विशारद] दे० 'विशारद'।

विशरारु—वि० [सं०] नाशवान्। क्षणभंगुर [को०]।

विशर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] वायुत्याग। पादना।

विशल्य—वि० [सं०] १ जिसका काँटा निकल गया हो। २ शल्यरहित (बाण)। ३ कष्ट से मुक्त। ४ जिसका शल्यक्रिया का घाव अच्छा हो गया हो [को०]।

विशल्यकरण—वि० [सं०] शस्त्रादि का घाव भरनेवाला [को०]।

विशल्यकरणी, विशल्यकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलोय।

विशल्यकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ पलासी लता। २ मासफोरा या हरपरवाली (?) नामक लता।

विशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुरुच। २ अग्निशिखा नामक वृक्ष। ३ दंती वृक्ष। ४ नागदंती। ५ एक प्रकार की तुलसी जिसे रामदंती भी कहते हैं। ६ एक नदी का नाम। ७. लक्ष्मण की स्त्री का नाम। ८ त्रिवृत्। ९ पाटला। १० सेमारी। ११ अजवायन। अजमोदा (को०)।

विशस—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। वध। २ खड्ग।

विशसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। २ भागवत के अनुसार एक नरक का नाम। ३ खड्ग। ४ विनाश। बर्बादी (को०)। ५ युद्ध (को०)। ६ काटना। चीरना (को०)। ७. कठोर व्यवहार (को०)।

विशसित—वि० [सं०] काटा हुआ। विदारित। चीरा हुआ [को०]।

विशसिता—संज्ञा पुं० [सं० विशसितृ] १. चांडाल। २ काटने, चीरने, या मार डालनेवाला व्यक्ति [को०]।

विशस्त—वि० [सं०] १ जो मार डाला गया हो। २ काटा हुआ। ३ जिसे किसी प्रकार का भय न हो। ४ उजड्ड। अशिष्ट (को०)। ५ प्रख्यात। विख्यात (को०)।

विशस्ता—संज्ञा पुं० [सं० विशस्तृ] १ मार डालनेवाला। हत्या करनेवाला। २ यज्ञादि में बलिप्रदान करनेवाला। ३ चांडाल।

विशस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार डालना। हत्या।

विशस्त्र—वि० [सं०] शस्त्ररहित। अशस्त्र [को०]।

विशस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

विशांपति—संज्ञा पुं० [सं० विशाम्पति] १ राजा। २ जामाता। दामाद (को०)। ३. व्यापारियों का प्रधान या मुखिया (को०)।

विशाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भद्रचूड। लकासीज। २. दंती। ३. हाथी शुंडी। ४. पाढर या पाटला का वृक्ष।

विशाख¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय। २. धनुष चलाने के समय का पैर का आसन और वह पैर जहाँ कुछ फैलाकर रखा। ३ [illegible]। [illegible]। ४ [illegible]। [illegible]। ५ [illegible] [illegible] ६ [illegible] [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible]। ९. [illegible]। [illegible] (को०)।

विशाख²—वि० १ [illegible]। २ [illegible] (को०)। ३ [illegible] (को०)।

विशाखक—वि० [सं०] दे० 'विशाख²' [को०]।

विशाखज—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]।

विशाखल—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]।

विशाखदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध नाटककार का [illegible] [illegible] [illegible]।

विशाखपाल—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] एक प्रकार का [illegible]। (हिंदी)।

विशाखयूप—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] एक प्राचीन [illegible] [illegible] [illegible]।

विशाखल—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] मनु की एक मुद्रा। २० विशाख १-२ [को०]।

विशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible] आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र।

विशेष—यह [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

२ एक प्राचीन जनपद जो कौशांबी के पास था। ३ सफेद गदहपूर्ना। ४ [illegible]। ५ [illegible]। दूर्वा। [illegible]।

विशाखिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुनर्नवा। गदहपूरना। २ नीली अपराजिता। ३ [illegible]। ४ दक्षिण दिशा का वाद्य [illegible] (को०)।

विशातन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ टुकड़े टुकड़े करना। काटना। नष्ट करना। २ निवृत्त करना। मुक्त करना। छोड़ना। ३. विष्णु [को०]।

विशातन²—वि० १. काटने या खंडित करनेवाला। २. बंधनमुक्त करनेवाला (को०)।

विशाप¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विशाप²—वि० शापमुक्त [को०]।

विशाय—संज्ञा पुं० [सं०] पहरेदारों का पारी पारी से सोना।

विशायक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लता जिसे विशाकर भी कहते हैं।

विशारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हत्या। वध। २ काटना। फाड़ना। टुकड़े टुकड़े करना [को०]।

विशारद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २ वह जो किसी काम मे बहुत कुशल हो। दक्ष। ३ वह जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा हो। ४. बकुल वृक्ष। मौलसिरी।

विशारद²—वि० १. विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. प्रगल्भ। साहसी। भरोसे का (को०)। ४. अभिमानी। घमंडी। ५ चतुरतापूर्ण (को०)। ६ वचन या वक्तृत्व शक्ति से हीन (को०)।

विशारदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केवाँच कौंछ। २ घमासा। दुरालभा।

विशाल¹—वि० [सं०] १. जो बहुत बड़ा और विस्तृत हो। लंबा चौड़ा। २ जो देखने मे सुंदर और भव्य हो। ३ प्रसिद्ध। मशहूर। ४. समृद्ध। भरा पूरा (को०)। ५ युक्त। सहित (को०)। ६. स्तनरहित (को०)।

विशाल²—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का मृग। २ चिड़िया। पक्षी। ३ पेड़। वृक्ष। ४ रामायण के अनुसार राजा इक्ष्वाकु के पुत्र का नाम, जिसने विशाला नाम की नगरी स्थापित की थी। ५ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ६ एक नाग जो तक्षक का पिता है (को०)।

विशालक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. गरुड़। ३ एक यक्ष का नाम।

विशालकुल—संज्ञा पुं० [सं०] ख्यात वंश। प्रसिद्ध कुल (को०)।

विशालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विशाल होने का भाव। बड़ापन। २ फैलाव। विस्तार (को०)। ३. उत्कर्ष। ख्याति (को०)।

विशालतैलगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] अक्षोट वृक्ष। अखरोट (को०)।

विशालत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विशालता' (को०)।

विशालत्वक्—संज्ञा पुं० [सं०] विशालत्वच्। छतिवन।

विशालदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

विशालनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशालनेत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयत नेत्रोंवाली स्त्री। विशालाक्षी।

विशालपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीताल नामक वृक्ष। हिंताल। २. मानकंद। मानकच्चू।

विशालपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कंद। मानकंद। (को०)।

विशालफलक—वि० [सं०] बड़े बड़े फलोंवाला (को०)।

विशालफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्पावी। बरसेमा।

विशाललोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विशालनेत्रा'।

विशालविजय—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक विशेष व्यूह (को०)।

विशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रवारुणी नामक लता। इंद्रायण। २ महेंद्रवारुणी। ३. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ४ दक्ष की एक कन्या का नाम। ५. पोई का साग। ६ एकांगी। मुगमासों। ७ फलगा नामक घास। ८. उज्जयिनी का एक नाम (को०)। ९. एक नदी का नाम (को०)। १. संगीत मे एक मूर्छना (को०)।

विशालाक्ष¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ विष्णु। ३. गरुड़। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५ एक प्रकार का उल्लू (को०)। ६ एक नाग का नाम (को०)। ७. कौटिल्य द्वारा उल्लिखित प्राचीन काल की एक प्रकार की राजनीय सत्ता (को०)।

विशालाक्ष²—वि० जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों।

विशालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों। २ पार्वती। ३. देवी का एक रूप या मूर्ति। ४ चौसठ योगिनियों मे से एक योगिनी का नाम। ५ नागदंती। हाथीशुंडी।

विशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अजमोदा। २ पलाशी लता।

विशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू। रेत।

विशिख¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामसर या भद्रमुंज नामक घास। २. बाण। उ०—राक्षस तेरे तुच्छ बाण क्या ? मेरे इस उर मे है शेल। उसे झेलने के पहले तू मेरा एक विशिख ही झेल।—साकेत, पृ० ४६४। ३. वह स्थान जिसमे रोगी रहता हो। ४ एक शास्त्र। तोमर (को०)। ५ लोहे का कौवा (को०)। ६. गणित मे बाण की आकृति का चिह्न (को०)।

विशिख²—वि० १ जिसे शिखा न हो। २ खल्वाट। गंजा। ३. भोथरी नोकवाला शस्त्र आदि। ४ अग्नि जिसमे लपट न हो। लपट से हीन। ५ धूमकेतु जिसमे पूँछ न हो (को०)।

विशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार की रथ्या। राज्य की वह बड़ी सड़क जिसपर बड़े बड़े जौहरियों तथा सुनारों की दुकानें हों। २ कुदाल। फावड़ा। ३ रास्ता। पथ। ४ छोटा बाण। ५ तकुँ। तकुआ। ६ रोगियों के रहने का स्थान। ७ सुई या पिन (को०)। ८ नापित की नारी स्त्री। नाउन। (को०)।

विशिखाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तूणीर। तरकस (को०)।

विशित—वि० [सं०] तीक्ष्ण। निशित (को०)।

विशिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजमहल। २. देवमंदिर। ३. भवन। आवास स्थान (को०)।

विशिरस्क—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पास के एक पर्वत का नाम। २ कबंध। सिरविहीन धड़।

विशिरा—वि० [सं० विशिरस्] जिसे सिर न हो (को०)।

विशिष्ट¹—वि० [सं०] १ मिला हुआ। युक्त। २. जिसमे किसी प्रकार की विशेषता हो। विशेषतायुक्त। जैसे,—कुछ विशिष्ट पर्व ऐसे होते हैं, जिनके लिये मनुष्य को प्रायश्चित्त तक करना होता है। ३. विलक्षण। अद्भुत। ४ जो बहुत अधिक शिष्ट हो। ५. यशस्वी। कीर्तिशाली। ६ प्रसिद्ध। मशहूर।

विशिष्ट—संज्ञा पुं० १. सीसा नामक धातु। २. विष्णु का एक नाम (को०)।

विशिष्टकुल¹—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठित वंश (को०)।

विशिष्टकुल²—वि० विशिष्ट कुल का। कुलीन (को०)।

विशिष्टचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशिष्टचारी—संज्ञा पुं० [सं० विशिष्टचारिन्] एक बोधिसत्व।

विशिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विशिष्ट का भाव या धर्म। २ विशेषता।

विशिष्टपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथिपर्णी। गठिवन।

विशिष्टबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सदसद् विवेकनी प्रज्ञा। विवेक। प्रभेदक ज्ञान (को०)।

विशिष्टलिंग—वि० [सं० विशिष्टलिङ्ग] भिन्न लिंगवाला (को०)।

विशिष्टवर्ण—वि० [सं०] जो उत्कृष्ट या चाखे रंग का हो। उत्तम वर्ण या रंगवाला (को०)।

विशिष्टाद्वैत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वेदांत दर्शन का दार्शनिक जिसके सिद्धांत अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं।

विशेष—इस सिद्धांत में यद्यपि ब्रह्म, जीवात्मा और जगत् तीनों मूलतः एक ही माने जाते हैं, पर फिर भी तीनों कार्यरूप में एक दूसरे से भिन्न और कुछ विशिष्ट गुणों से युक्त माने जाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार जीव और ब्रह्म का वही संबंध है, जो किरण और सूर्य का है, अर्थात् किरण जिस प्रकार सूर्य से निकली हुई है, उसी प्रकार जीव भी ब्रह्म से निकला हुआ है, और जिस प्रकार किरण से सूर्य बहुत बड़ा है, उसी प्रकार जीव से ब्रह्म भी बहुत बड़ा है। इसमें ब्रह्म को एक भी माना जाता है और अनेक भी। वास्तव में द्वैत और अद्वैत दोनों वादों के मध्य का यह मार्ग है, अर्थात् इसमें उन दोनों वादों में सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की गई है। यह वाद रामानुजाचार्य का चलाया हुआ है और 'भेदाभेदवाद' या 'द्वैताद्वैतवाद' भी कहलाता है।

विशिष्टाद्वैतवादी—वि० [सं० विशिष्टाद्वैतवादिन्] विशिष्टाद्वैत मत का माननेवाला। रामानुज संप्रदाय को माननेवाला।

विशिष्टी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शंकराचार्य की माता का नाम।

विशीर्ण—वि० [सं०] १ सूखा हुआ। २ दुबला पतला। ३ बहुत पुराना। जीर्ण। ४ छिन्न भिन्न। टुकड़े टुकड़े किया हुआ (को०)। ५ मुरझाया हुआ। कुम्हिलाया हुआ (को०)। ६ मर्दित हुआ (को०)। ८. सिकुड़ा हुआ। झुर्रियोंवाला (को०)। ६. अपव्यय किया हुआ। उड़ाया हुआ (को०)। ६ गला या रगड़ा हुआ (सुगंधित द्रव्य)। १० जो सफल न हो। विफलीभूत (को०)। ११ नष्ट। ध्वस्त (को०)।

विशीर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] नीम का पेड़।

विशीर्णमूर्ति[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। २. वह जिसका शरीर विशीर्ण या छिन्न भिन्न हो (को०)।

विशील—वि० [सं०] १ जिसका शील या चरित्र अच्छा न हो। २ दुष्ट। पाजी।

विशुंडि—संज्ञा पुं० [सं० विशुण्डि] कश्यप के एक पुत्र का नाम।

विशुद्ध[1]—वि० [सं०] १ जो बिलकुल शुद्ध हो। जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २ सत्य। सच्चा। ३ पवित्र। निष्पाप (को०)। ४. बेदाग। निष्कलंक (को०)। ५. विनीत। नम्र (को०)। ६ चमकता हुआ। उज्वल। जैसे, दाँत (को०)। ७ खर्च किया हुआ। अपव्ययित। जैसे, निधि (को०)।

विशुद्ध[2]—संज्ञा पुं० तंत्र के अनुसार शरीर के अंदर के छह चक्रों में से पाँचवाँ चक्र, जो गले में माना जाता है। कहते हैं, इसमें सोलह दल होते हैं और शिव तथा आकाश इसमें निवास करते हैं।

विशुद्धकरण—वि० [सं०] पवित्र कार्य करनेवाला (को०)।

विशुद्धचरित्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशुद्धचरित्र[2]—वि० जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो।

विशुद्धचारी—संज्ञा पुं० [सं० विशुद्धचारिन्] वह जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो।

विशुद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विशुद्ध होने का भाव या धर्म। पवित्रता।

विशुद्धधी—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि धार्मिक हो (को०)।

विशुद्धप्रकृति—वि० [सं०] जो स्वभावतः धर्मपरायण हो (को०)।

विशुद्धसत्त्व—वि० [सं०] शुद्ध मनवाला। पवित्र आचरणवाला (को०)।

विशुद्धात्मा—वि० [सं०] जिसकी आत्मा या मन निर्मल और विकारहीन हो (को०)।

विशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विशुद्ध होने की क्रिया या भाव। शुद्धता। पवित्रता। २. यथार्थता। सत्यता (को०)। ३ परिष्कार। भूल सुधार (को०)। ४ ऋण, बैर आदि का परिशोध (को०)। ५ सादृश्य। समानता (को०)। बीजगणित। ६ घटाने की संख्या (को०)। ७ प्रायश्चित्त। पश्चात्ताप (को०)। ८ संदेह का निराकरण (को०)। ६ पूर्ण ज्ञान (को०)।

विशुद्धिचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] गले में स्थित एक चक्र। दे० 'विशुद्ध'[2]।

विशूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विसूचिका] दे० 'विसूचिका'।

विशून्य—वि० [सं०] पूर्णतः रिक्त। बिल्कुल खाली। उ०—शून्य विशून्य न तहाँ होई अगाध महिमा सो कहो।—कबीर सा०, पृ० ४।

विशूल—वि० [सं०] १ भाले से रहित। कुंतविहीन। २ पीड़ा या व्यथारहित (को०)।

विश्रृंखल—वि० [सं० विश्रृङ्खल] १ जिसमें श्रृंखला न हो या न रह गई हो। उ०—स्वयं देव थे हम सब तो फिर क्यों न विश्रृंखल होती सृष्टि।—कामायनी, पृ० ६। २ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके। ३ सब प्रकार के नैतिक बंधनों से मुक्त। लंपट (को०)।

विश्रृंग—वि० [सं० विश्रृङ्ग] जिसे श्रृंग न हो। श्रृंगरहित।

विशेष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेद। अंतर। फर्क। २ प्रकार। तरह। ढंग। ३ नियम। कायदा। ४ विचित्रता। ५. व्यक्ति। ६ सार। निचोड़। ७ तारतम्य। मुनासिब। ८ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। ६ अवयव। अंग। १० वस्तु। पदार्थ। चीज। ११. तिल का पौधा। १२. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार। विशेष नामक अलंकार।

विशेष—मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्यप्रकाश मे इसका विवरण दिया है। इसके तीन भेद कहे गए हैं। पहला वह भेद है जिसमे बिना किसी आधार के ही आधेय का वर्णन होता है। जैसे—बिनु बारिद बिजुरी बिना बारि लसत युग मीन। बिधु ऊपर तम तोम यह निरखी रीति नवीन। दूसरा भेद वह है जिसमे थोडा सा ही काम करने पर बहुत बडा काम या लाभ हो। जैसे—पाइ चुके फल चारिहू करत गगजल पान। तीसरा भेद वह है जिसमे एक चीज का अनेक स्थानो मे होना वर्णित होता है। जैसे—घर बाहर अब ऊरधौ सब ठाँ राम लखाय।

१३ वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थों मे से एक प्रकार का पदार्थ।

विशेष—कणाद ने द्रव्य, गुण कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ माने हैं। 'विशेष' वे गुण हैं जिनके कारण कोई एक पदार्थ शेष दूसरे पदार्थो से भिन्न समझा जाता है। दो वस्तुओ मे रूप, रस और गध आदि मे जो अतर होता है वह इसी 'विशेष' गुण के कारण होता है। रूप, रस, गध, स्पर्श, स्नेह, द्रवत्व, बुद्धि, सुख, दु ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, सस्कार और शब्द ये वैशेषिक गुण या विशेष गुण कहलाते है। कणाद के दर्शन मे इन्ही विशेष पदार्थो या गुणो आदि का विवेचन है इसी लिये वह 'वैशेषिक दर्शन' कहलाता है। १४. प्रवर्ग। वर्ग को०)। १५ मस्तक पर लगाया जानेवाला चदन या केसर का तिलक (को०)। १६ वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है (को०)। १७. ज्यामिति मे कर्ण (को०)। १८ परिचायक चिह्न। प्रभेदक चिह्न (को०)। १९ रोग की वह अवस्था जब सुधार आरभ होता है (को०)।

विशेष²—वि० १ असाधारण। असामान्य। २. अधिक। प्रचुर।

विशेषक¹—सज्ञा पुं० [स०] १ माथे पर लगाया जानेवाला तिलक। टीका। २ तिलक वृक्ष। तिलपुष्पी। ३ चित्रक। ४ साहित्य मे एक प्रकार का पद्य जिसमे तीन श्लोको या पदो मे एक ही क्रिया रहती है, इस लिये उन तीनो श्लोको या पद्यो का साथ ही अन्वय होता है। ५ चदन आदि से। सुगधित या रगीन पदार्थो से मुख या शरीर पर रेखाकन करना (को०)। ६ भेद करनेवाला गुण। विशिष्टता (को०)। ७ विशेषोक्ति अलकार (को०)।

विशेषक²—वि० विशेषता उत्पन्न करनेवाला। विशेष रूप देनेवाला।

विशेषकच्छेद्य—सज्ञा पु० [स०] चौसठ कलाओ मे से एक माथे पर तिलक बनाने की कला (को०)।

विशेषकृत्—वि० [स०] अतर करनेवाला। विवेकी [को०]।

विशेषज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। वह जो किसी बात का खास तौर पर जानकर हो। किसी विषय का पारदर्शी।

विशेषण¹—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। विभेदक लक्षण या चिह्न। २ व्याकरण मे वह विकारी शब्द जिससे किसी सज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। जैसे,—'वीर मराठे' या 'चपल बालक' मे वीर और 'चपल' शब्द विशेषण हैं।

विशेष—जब विशेषण किसी सज्ञा के साथ लगता है तब उसे विशेष्य विशेषण कहते हैं, और जब वह क्रिया के साथ लगता है, तब उसे विधेय विशेषण कहते है। जैसे—'हमे तो ससार सूना देख पडता है'। यहाँ 'सूना' विधेय विशेषण है। साधारणत. विशेषण तीन प्रकार के होते है—(१) सार्वनामिक विशेषण, जैसे,—'वह आदमी चला गया। मे 'वह' सार्वनामिक विशेषण है। (२) गुणवाचक विशेषण; जैसे, नया, पुराना, सुडौल, सूखा, खराब आदि, और (३) सख्यावाचक विशेषण, जैसे—आधा, एक, चार, दसवाँ।

३ प्रकार। किस्म। जाति (को०)। ४ भेद। अतर। पार्थक्य (को०)। ५ गुणवर्णन या गुणोत्कर्ष (को०)।

विशेषण²—वि० १. गुण बतानेवाला। विशेषता बतानेवाला। २ प्रभेदक। व्यवच्छेदक [को०]।

विशेषणीय—वि० [स०] दे० 'विशेष्य'।²

विशेषत.—अव्य० [स० विशेषतस्] १. विशेष रूप से। खास तौर से। २ समानुपात मे। ३ एकमात्र [को०]।

विशेषता—सज्ञा स्त्री० [स०] विशेष का भाव या धर्म। खसूसियत। खासपन। जैसे,—आपकी बातो मे यह विशेषता है कि तुरत प्रभाव डालती हैं।

विशेषदृश्य—वि० [स०] विशेष रूप से दर्शनीय। सु दर आकृतिवाला [को०]।

विशेषना पु—क्रि० अ० [स० विशेष + हिं० ना (प्रत्य०)] १ निश्चित करना। निर्णय करना। उ०—अनंत गुण गावै, विशेषहि न पावै।—केशव (शब्द०)। २ विशेष रूप देना। उ०—ताहि पूछत बोलि कै। तदपि भाँति भाँति विशेष कै।—केशव (शब्द०)।

विशेषपतनीय—सज्ञा पु० [स०] विशिष्ट पाप। विशेष प्रकार का पाप [को०]।

विशेषप्रतिपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] समानार्थ दिया गया विशेष चिह्न [को०]।

विशेषभाग—सज्ञा पु० [स०] हाथी के माथे का एक भाग [को०]।

विशेषमति—सज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशेषलक्षण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विशेषलिंग'।

विशेषलिंग—सज्ञा पु० [स० विशेषलिङ्ग] विशिष्टतासूचक लक्षण या चिह्न [को०]।

विशेषवचन—सज्ञा पु० [स०] विशेषता द्योतन करनेवाला कथन [को०]।

विशेषविद्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विशेषज्ञ'।

विशेषविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विशेष शास्त्र'।

विशेषशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] किसी विषय पर विशिष्ट विधान या नियमपरक शास्त्र [को०]।

विशेषित—वि० [स०] १ जो खास तौर पर अलग किया गया हो। जो 'विशेष' किया या बनाया गया हो। २ जिसमें विशेषण लगा हो। ३ विलक्षण। विचित्र (को०)। ४ परिभाषित। लक्षित (को०)। ५ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया (को०)।

विशेषांक—संज्ञा पुं० [स० विशेष+अङ्क] पत्र पत्रिकाओं का वह अंक जो किसी पर्व आदि विशिष्ट अवसर, व्यक्ति, घटना, वस्तु या विषय आदि के पूर्ण विवेचन और जानकारी के साथ तत्संबंधी किसी विशिष्ट अवसर पर प्रकाशित हो।

विशेषी—वि० [स० विशेषिन्] १ जिसमें कोई विशेष बात हो। विशेषतायुक्त। २. पृथक्। अलग। भिन्न (को०)। ३ स्पर्धा करनेवाला। प्रतिद्वंद्विता करनेवाला (को०)।

विशेषोक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] काव्य मे एक प्रकार का अलंकार जिसमे पूर्ण कारण के रहने हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है। जैसे,—(क) अलि इन लोयन की कछू उपजी बडी बलाय। नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। (ख) तमकि ताकि तकि शिव धनु धरहीं। उठत न कोटि भाँति बल करहीं —तुलसी (शब्द०)।

विशेषोन्मुख—वि० [स० विशेष+उन्मुख] विशेष की ओर झुका हुआ। जो सामान्य से भिन्न हो। उ०—यह अंतिम शक्ति उनमे है पर वह विशेषोन्मुख है।—आचार्य०, पृ० १४१।

विशेष्य¹—संज्ञा पुं० [स०] १ व्याकरण मे वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता है। वह संज्ञा जिसकी विशेषता विशेषण लगाकर सूचित की जाय। जैसे,—मोटा आदमी या काला कुत्ता मे आदमी और कुत्ता विशेष्य है। २ नाम। संज्ञा (को०)।

विशेष्य²—वि० १ विशिष्ट या विशेषतायुक्त होने योग्य। २ मुख्य। प्रधान। उत्तम (को०)।

विशेष्यसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [स०] वह हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विशेस(पु)†—संज्ञा पुं० [स० विशेष] दे० 'विशेष'। उ०—मिश्रत माँही माँह मिल, रंधिं उकत विशेस।—रघु० रू०, पृ० ४६।

विशोक¹—संज्ञा पुं० [स०] १ अशोक वृक्ष। २ युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम। ३ पुराणानुसार ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम। ४ शोक का अंत या अपनयन (को०)। ५ एक दानव (को०)। ६ भीम के सारथि का नाम। ८ एक पर्वत-श्रेणी (को०)।

यौ०—विशोककाट=एक पर्वत का प्राचीन नाम।

विशोक²—वि० जिसे शोक न हो। शोकरहित।

विशोकता—संज्ञा स्त्री० [स०] शोकरहित होने का भाव या धर्म

विशोकषष्ठी—संज्ञा स्त्री० [स०] चैत्र शुक्ला षष्ठी।

विशेष—कहते हैं कि इस दिन व्रत करने से मनुष्य को शोक नही होता।

विशोका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ योग दर्शन के अनुसार वह चित्तवृत्ति जो सप्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते हैं। २ दुःख से छुटकारा। शोक से मुक्ति (को०)। ३ स्कंद की मातृकाओं मे एक का नाम (को०)।

विशोणित—वि० [स०] जिसमे रक्त न हो (को०)।

विशोध—वि० [स०] विशुद्ध करने योग्य। साफ करने लायक।

विशोधन—संज्ञा पुं० [स०] १ अच्छी तरह साफ करना। २ विष्णु। ३. पाप या दोष आदि से रहित होना (को०)। ४ प्रायश्चित्त (को०)। ५ निश्चित वा निर्णीत होना (को०)। ६ रेचन (को०)। ७ इधर उधर फैली पेड की शाखाओं को छाँटना या काटना (को०)।

विशोधनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा की पुरी का नाम। २ नागदंती। ३ नीली नामक पौधा। ४ पान। ताबूल।

विशोधनीय—वि० [स०] १ शुद्ध करने योग्य। २ सुधार करने लायक। ३ रेचन के योग्य (को०)।

विशोधित—वि० [स०] १ शुद्ध किया हुआ। साफ किया हुआ। २ निर्मल (को०)।

विशोधिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदंती। २. नीली। ३ जमालगोटा।

विशोधिन बीज—संज्ञा पुं० [स०] जमालगोटा।

विशोधी—वि० [स० विशोधिन्] बिलकुल शुद्ध करनेवाला। विशुद्धि करनेवाला।

विशोध्य¹—वि० [स०] १ शुद्ध या पवित्र करने योग्य। साफ करने योग्य। २. जो घटाया या कम किया जाय। घटाने लायक।

विशोध्य²—संज्ञा पुं० ऋण। कर्ज (को०)।

विशोभित—वि० [स०] सुसज्जित (को०)।

विशोष—संज्ञा पुं० [स०] नीरसता। शुष्कता। रूखापन।

विशोषण—संज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह सोखना।

विशोषित—वि० [स०] १ सुखाया हुआ। शुष्क किया हुआ। २. म्लान। मुर्झाया हुआ (को०)।

विशोषी—संज्ञा पुं० [स० विशोषिन्] अच्छी तरह सोखनेवाला।

विश्¹—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह जिसने जन्म लिया हो। प्रजा। २ कन्या। लडकी। ३ प्रवेश। रसाई (को०)। ४ कुल वंश। खानदान (को०)। ५ निवास। ठिकाना (को०)। ६ संपत्ति। धन दौलत।

विश्²—संज्ञा पुं० [स०] १ तृतीय वर्ण। वैश्य। २ आदमी। मनुष्य। ३ जनता (को०)।

विश्न—संज्ञा पुं० [स०] दीप्ति। कांति (को०)।

विश्पति—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विश्पत्नी] १ राजा। २ वैश्यों का प्रधान, मुखिया या पंच। उ०—अग्नि विश्पति था। ये अपनी बस्ती को विश् कहते थे।—प्र० भा० प०, पृ० ६६।

विश्यापर्ण—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का यज्ञ।

विश्रंभ—संज्ञा पुं० [स० विश्रम्भ] १ विश्वास। एतबार। २ प्रेमी और प्रेमिका मे रति के समय होनेवाला झगडा। रतिकालीन प्रेमकलह। ३ प्रेम। मुहब्बत। ४ हत्या। मार डालना। ५ स्वच्छंदतापूर्वक घूमना फिरना। ६ गुप्त बात। रहस्य (को०)। ७ आराम। विश्राम (को०)। ८ घनिष्ठता। आत्मीयता (को०)। ९ स्नेह से पूछना। प्रेम से पूछना (को०)।

विश्रंभ कथा—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्रम्भकथा] प्रेमी और प्रेमिका के बीच एकांत में होनेवाली प्रेमचर्चा। प्रेमपूर्ण बातचीत। उ०—सुख रजनी की विश्रंभ कथा सुनती।—लहर, पृ० ६७।

विश्रभण—संज्ञा पुं० [सं० विश्रम्भण] विश्वास पाना [को०]।

विश्रंभभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्रम्भभूमि] १ विश्वसनीय व्यक्ति। २ विश्वास के योग्य विषय [को०]।

विश्रंभस्थान—संज्ञा पुं० [सं० विश्रम्भस्थान] दे० 'विश्रंभभूमि'।

विश्रंभी—वि० [सं० विश्रम्भिन्] १ विश्वासी। विश्वस्त। २. विश्वासप्राप्त। ३ प्रेम संबंधी। प्रेमविषयक। ४ गोप्य [को०]।

विश्रणन—संज्ञा पुं० [सं०] दान। दान करना। उपहार देना [को०]।

विश्रब्ध—वि० [सं०] १ जो उद्धत न हो। शांत। २ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। ३ जिसे किसी प्रकार का भय न हो। निर्भय। निडर। ४ दृढ़। स्थिर (को०)। ५ नम्र। विनीत। विनत (को०)। ६ अत्यधिक। बहुतज्यादा। ७ घोर (को०)।

विश्रब्धनवोढा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो। जैसे, जाहि न चाह कहूं रति की सु कछू पति को पतियान लगी है। त्यों पदमाकर आनन में रुचि, कानन भौंह कमान लगी है। देति पिया न छुवै छतियाँ बतियान में तो मुस्क्यान लगी है। प्रीतम पान खवाइबे को परजंक के पास लौं जान लगी है।—पद्माकर। (शब्द०)।

विश्रब्धप्रलापी—वि० [सं० विश्रब्धप्रलापिन्] गोपनीय बातें कहनेवाला [को०]।

विश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्राम'।

विश्रमकर—वि० [सं०] विश्राम करनेवाला। उ०—श्रम कर तू विश्रमकर।—अर्चना, पृ०। ९२।

विश्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आराम। विश्राम। २ विराम। समाप्ति। विरति [को०]।

विश्रमित—वि० [सं०] १ जिसे विश्राम दिया गया हो। २ जिसने विश्राम किया हो [को०]।

विश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरण। आश्रय। सहारा। २ अवलंबन [को०]।

विश्रयी—वि० [सं० विश्रयिन्] जो सहारे पर हो। आश्रय लेनेवाला [को०]।

विश्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० विश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे और उनकी पत्नी हविर्भू के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। कुबेर इन्हीं के पुत्र थे और इन्हीं की पत्नी इलविडा के गर्भ से जनमे थ। इन्हीं की दूसरी पत्नी कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और सूर्पणखा का जन्म हुआ था।

विश्रांत[1]—वि० [सं० विश्रान्त] १ जिसने विश्राम कर लिया हो। जो थकावट उतार चुका हो। २. विरमित, रुका या रोका हुआ (को०)। ३ सौम्य। शांत। स्वस्थ (को०)। ४. समाप्त (को०)। ५ रहित। वंचित (को०)। ६ बलात। अत्यंत थका हुआ (को०)। ७ घटा हुआ (दु:खादि)।

विश्रांत[2]—संज्ञा पुं० [सं० विश्रान्त] यमुना तट का एक घाट। विश्रामघाट। उ०—श्री जमुना जी के तीर विश्रांत पर जाइ बैठे। – दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १८१।

यौ०—विश्रांतकथ = जो चुप हो। मौन। मूक। रुद्धवाक्। विश्रांतकर्णयुगल = जो कानों तक पहुँचता हो। कानों तक पहुँचनेवाला। विश्रांतपुष्पोद्गम = जिसमें फूल आना बंद हो गया हो। विश्रांतविलास = क्रीडा कौतुक का त्याग कर देनेवाला। विश्रांतवैर = शत्रुता त्याग देनेवाला।

विश्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्रान्ति] १. विश्राम। आराम। २. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम

विशेष—कहते हैं, जनार्दन ने यहीं आकर विश्राम किया था।

३. विराम। रोक (को०)। ४ दु:ख शोकादि का न्यून होना। समाप्ति। अंत (को०)।

यौ० = विश्रांतिकृत = आराम पहुँचानेवाला। विश्रांतिभूमि = विश्राम देनेवाली वस्तु या स्थान।

विश्राणन—संज्ञा पुं० [सं०] दान देना। दान [को०]।

विश्राणित—वि० [सं०] १ प्रदत्त। दान स्वरूप दिया हुआ। २ बाँटा हुआ। विभक्त [को०]।

विश्राम—संज्ञा पुं० [सं०] १ अधिक समय तक कोई काम या परिश्रम करने के कारण थक जाने पर रुकना या ठहरना। श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। उ०—किय विश्रामन मगु महिपाला।—तुलसी (शब्द०)। २ ठहरने का स्थान। विश्राम करने का स्थान। ३ शांति। आराम। चैन। सुख। स्वस्थता। उ०—कोउ विश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिन। चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय।—तुलसी (शब्द०)। ४ विराम। रोक (को०)। ५ न्यूनता। कमी (को०)। ६. समाप्ति। अंत (को०)। ७ श्रम दूर करने के लिये गहरी साँस लेना। ८ मकान। गृह (को०)।

विश्रामण—संज्ञा पुं० [सं०] विश्राम देना। आराम कराना [को०]।

यौ०—विश्रामकक्ष, विश्रामवेश्म = आराम करने का स्थान या कमरा। विश्रामस्थान = विश्राम या विराम करने की जगह।

विश्रामालय—संज्ञा पुं० [सं० विश्राम + आलय] यात्रियों के आराम करने का भवन। उ०—जिसमें अनेक कूप, बावी, विश्रामालय, लताकुंज।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७०।

विश्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत अधिक प्रसिद्धि। शोहरत। २ ध्वनि। ३ भरना, बहना या रसना। स्रवण।

विश्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्णन करना। सुनाना। २. प्रवाहित करना। बहाना। ३ खून बहाना [को०]।

विश्री[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।

विश्री[2]—वि० [सं०] १. जिसकी श्री नष्ट हो गई हो। शोभाहीन। उ०—लगती विश्री और विकृत आज मानवकृति। एकत्वशून्य है विश्वमानवी संस्कृति।—युगांत, पृ० ११। २. भद्दा। कुरूप।

विश्रुत¹—वि० [सं०] १ जो जाना या सुना हुआ हो। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। ३ प्रसन्न। आनंदित। खुश (को०)। ४ बहता हुआ (को०)।

विश्रुत²—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसिद्धि। ख्याति। २ विद्या। शिक्षा (को०)। ३. वसुदेव का एक पुत्र। ४ भवभूति का एक नाम [को०]।

विश्रुतात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्रुतात्मन्] विष्णु।

विश्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रसिद्धि। शोहरत। २. झरना, बहना या रसना। ३ संगीत मे एक श्रुति (को०)।

विश्लथ—वि० [सं०] १ विशेष श्लथ। ढीला। २ निर्बंध। बंधनमुक्त। ३ थका हुआ। मंद। स्फूर्तिहीन। उ०—चूर्ण नील कुंतल छहरा दिक् सौरभ विश्लथ।—रजत०, पृ० ६७।

विश्लथित—वि० [सं०] विश्लथ किया हुआ [को०]।

विश्लिष्ट—वि० [सं०] १ जो अलग हो गया हो। जो मिला हुआ न हो। जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ विकसित। खिला हुआ। ३ जो प्रकट हो। प्रकाशित। ४ जो खुला हुआ हो। मुक्त। ५ थका हुआ। शिथिल। ६ अपने समूह से अलग किया हुआ (को०)। ७ (अंग या अवयव) जो स्थानभ्रष्ट हो (को०)।

विश्लिष्टसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्लिष्टसन्धि] १ वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का एक प्रकार। २ शरीर के अंगो की किसी संधि का चोट आदि के कारण टूटना।

विश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अलग होना। पृथक् होना। २ वियोग। (पति पत्नी या प्रेमी प्रेमिका का)। ३. विछोह। बिलगाव। ४ शिथिलता। थकावट। ५ किसी की ओर से मन हट जाना। ६ विकास। ७ अपाय। हानि। अभाव (को०)। ८ दरार। छिद्र (को०)। ९ (गणित मे) योग का विपर्यय (को०)।

विश्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यो का अलग अलग करना। २ आलोचना। विवेचन। व्याख्यान (को०)। ३ वायु के प्रकोप से फोडे या घाव मे होनेवाली एक प्रकार की वेदना।

विश्लेषित—वि० [सं०] १ अलग किया हुआ। २ तोडा हुआ। भग्न। ३. विदीर्ण या फाडा हुआ [को०]।

विश्लेषी—वि० [सं० विश्लेषिन्] १ वियुक्त। पृथक्। २ ढीला किया हुआ। ३ अलग अलग होनेवाला। बिखरनेवाला [को०]।

विश्लोक—वि० [सं०] जो ख्यात न हो। अप्रसिद्ध [को०]।

विश्वकर¹—संज्ञा पुं० [सं० विश्वङ्कर] आँख। चक्षु [को०]।

विश्वकर²—वि० सृष्टिकर्ता [को०]।

विश्वंतर—संज्ञा पुं० [सं० विश्वन्तर] वह जो सबको पराभूत कर दे। भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वंभर—संज्ञा पुं० [सं० विश्वम्भर] १ सारे विश्व का पालन या भरण करनेवाला, परमेश्वर। २ विष्णु। ३ एक उपनिषद् का नाम। ४ अग्नि (को०)। ५ एक प्रकार का विच्छू या उससे मिलता जुलता जानवर (को०)।

विश्वंभरक—संज्ञा पुं० [सं० विश्वम्भरक] एक तरह का बिच्छू या उस आकार का जीव। एक प्रकार का जीव उ०—प्रथम एक पुरुष खोदने पर श्वेत रंग का विश्वंभरक दिखाई देता है।—बृहत्०, पृ० २५९।

विश्वंभरा—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्वम्भरा] पृथ्वी।

यौ०—विश्वंभरा पुत्र—मंगल ग्रह। कुज।

विश्वंभरी—संज्ञा [सं० विश्वम्भरी] पृथ्वी [को०]।

विश्वंभरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० विश्वम्भरेश्वर] १ पुराणानुसार हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। २ राजा। भूपति (को०)।

विश्व¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चौदहों भुवनो का समूह। समस्त ब्रह्मांड। विशेष दे० 'ब्रह्मांड'। २ संसार। जगत्। दुनिया। ३ सोंठ। ४ बोल नामक गंधद्रव्य। ५ देवताओं का एक गण।

विशेष—इसमे दस देवता हैं—वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा। ये धर्म के पुत्र और दक्ष की कन्या विश्वा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं।

६ जीवात्मा। ७ विष्णु। ८ शिव। ९ शरीर। देह। १० नागरिक। शहराती। नागर (को०)। ११ तेरह की संख्या का वाचक शब्द (को०)। १२ संस्कृत का एक अभिधान ग्रंथ जिसका नाम विश्वप्रकाश है। १३ पितृगणों का एक वर्ग (को०)।

विश्व²—वि० १ समस्त। सब। २ बहुत अधिक। ३ हर एक। प्रत्येक (को०)।

विशेष—इन अर्थों में इस शब्द का व्यवहार यौगिक शब्द बनाने के लिये उनके आरंभ मे होता है।

विश्वक—वि० [सं०] १ संपूर्ण। समस्त। पूरा। २ सबमे व्याप्त। सर्वव्यापक (को०)।

विश्वकद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिकारी कुत्ता। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. शब्द। आवाज।

विश्वकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्तृ] संसार को उत्पन्न करनेवाला, परमेश्वर।

विश्वकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सब प्रकार के कार्य करने मे चतुर हो।

विश्वकर्मजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

विश्वकर्मसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी, संज्ञा।

विश्वकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्म्मन्] १. समस्त संसार की रचना करनेवाला, ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ एक प्रसिद्ध आचार्य अथवा देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता और सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता माने जाते हैं।

विशेष—पुराणानुसार ये आठ वसुओं मे से प्रभास नामक वसु के पुत्र थे और देवताओं के लिये विमान तथा प्रासाद आदि बनाया करते थे। आग्नेयास्त्र इन्ही का बनाया हुआ माना जाता है। महाभारत मे ये सर्वश्रेष्ठ शिल्पी और अमर कहे गए हैं रामायण के अनुसार इन्होंने राक्षसो के लिये लंका बनाई थी। वेदो मे ये सर्वदर्शी, सर्वनियंता और विश्वज्ञ कहे

गए हैं। वेदो मे कही कही 'विश्वकर्मा' शब्द इंद्र, सूर्य, प्रजापति, विष्णु आदि के अर्थ मे भी आया है। महाभारत के अनुसार इनकी माता का नाम लावण्यमयी था और सूर्य की पत्नी सज्ञा इन्ही की कन्या थी। कहते हैं, जब सूर्य के प्रखर ताप को सज्ञा न सह सकी, तब इन्होने उसका आठवाँ अग काट लिया और उससे सुदर्शन चक्र, त्रिशूल आदि बनाकर देवताओ मे बाँटे। सृष्टि की रचना करने के कारण ये प्रजापति और त्वष्टा भी कहे जाते हैं। भाद्रपद की सक्राति को इनकी पूजा हुआ करती है।

५. शिव का एक नाम। ६ चरक के अनुसार शरीर मे की चेतना नामक धातु। ७ बढई। ८ मेमार। राज। ९ लोहार। १० सूर्य की सात किरणो मे से एक किरण (को०)। ११ एक मुनि का नाम (को०)। १२ एक परमाणु। एक माप (को०)।

विश्वकर्मेश—सज्ञा पु० [स०] एक शिवलिंग का नाम।

विश्वकवि—सज्ञा पु० [स०] १ विश्वविश्रुत कवि। सर्वश्रेष्ठ कवि। महाकवि। उ०—अस्ताचल रवि, जल छल छल छवि, स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन।—अपरा, पृ० २४। २ बग भाषा के ख्यात कवि रवीद्रनाथ ठाकुर का एक उपाधि।

विश्वका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक जलपक्षी। गगाचिल्ली (को०)।

विश्वकाय—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्माड जिनका शरीर है, विष्णु।

विश्वकाया—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा। उ०—तुम्ही मे है महामाया, जुडी छुटकर विश्वकाया।—अर्चना, पृ० ८।

विश्वकारक—सज्ञा पु० [स०] शिव।

विश्वकारु—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वकर्मा'।

विश्वकार्य—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य को सात प्रधान किरणो मे से एक का नाम। २ सूर्य की सात प्रधान ज्योतियो का समूह।

विश्वकाव्य—सज्ञा पु० [सं० विश्व + काव्य] ब्रह्मा का बनाया हुआ विश्वरूपी काव्य। काव्य के समान रमणीय, विश्व। ससार। उ०—इस विश्वकाव्य की रसधारा मे जो थोडी देर के लिये निमग्न न हुआ, उसके जीवन को मरुस्थल की यात्रा ही समझना चाहिए।—रस०, पृ० ८।

विश्वकूट—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

विश्वकृत—वि० [स०] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित या रचित (को०)।

विश्वकृत्—सज्ञा पु० [स०] १. विश्वकर्मा का एक नाम। २ जगत् का निर्माता, ब्रह्मा (को०)।

विश्वकृष्टि—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो सब लोगो को अपने सगे संबधी के समान समझता हो। २. वह जो सबमे रहता हो या व्याप्त हो (को०)।

विश्वकेतु—सज्ञा पुं० [स०] १. अनिरुद्ध का एक नाम। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विश्वकोश—सज्ञा पुं० [स०] १ वह कोश या भाडार जिसमे ससार भर के सब पदार्थ आदि सगृहीत हो। २. वह ग्रथ जिसमे ससार भर के सब प्रकार के विषयो आदि का विस्तृत विवेचन या वर्णन हो। (अं० इन्साइक्लोपीडिया)।

विश्वकोष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वकोश'।

विश्वक्सेन—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु। २ पुराणानुसार तेरहवें मनु का नाम। ३ कालिकापुराण के अनुसार एक चतुर्भुज देवता जो शख, चक्र गदा और पद्म धारण किए रहते है और जो विष्णु का निर्माल्य धारण करनेवाले माने जाते हैं। दे० 'विष्वक्सेन'।

विश्वक्सेना—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु नामक वृक्ष। कँगनी।

विश्वक्षय—सज्ञा पुं० [स०] विश्व या ब्रह्माड का नाश। प्रलय।

विश्वक्षिति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विश्वकृष्टि' (को०)।

विश्वगगा—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वगङ्गा] बरार प्रदेश का एक छोटी नदी का नाम।

विश्वगध—सज्ञा पु० [स० विश्वगन्ध] १ सर्वत्र गध देनेवाला। बोल नामक गधद्रव्य। २ जिसके समी अग गधमय हो, प्याज।

विश्वगधा—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वगन्धा] पृथ्वी।

विश्वगधि—सज्ञा पु० [स० विश्वगन्धि] भागवत के अनुसार पृथु के पुत्र का नाम।

विश्वग—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा। २ भागवत के अनुसार मरीचि के पुत्र का नाम जिसका जन्म पूर्णिमा के गर्भ से हुआ था।

विश्वगत—वि० [स०] सर्वव्यापक। सर्वगत।

विश्वगर्भ—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सबको धारण करता हो, विष्णु। २ शिव। ३. पुराणानुसार रैवत के एक पुत्र का नाम।

विश्वगाथ—सज्ञा पु० [स०] विश्व जिसकी गाथा है, ईश्वर। परमात्मा। उ०—जीवन के निपुण व्याल, मुक्त करो, विश्वगाथ।—अर्चना, पृ० ६।

विश्वगुरु—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

विश्वगोचर—वि० [स०] सर्वविदित। जो सबके समझने योग्य हो (को०)।

विश्वगोप्ता—सज्ञा पुं० [स० विश्वगोप्तृ] १ विष्णु। २ इद्र। ३. वह जो समस्त विश्व का पालन करता हो।

विश्वग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वग्रन्थि] हसपदी लता। २ लाल लजालू।

विश्वग्वात—सज्ञा पुं० [स्त्री०] दे० 'विश्वग्वायु'।

विश्वग्वायु—सज्ञा पु० [स्त्री०] वह वायु जो सब जगह समान रूप से चलती है।

विशेष—ऐसी वायु अनेक प्रकार के दोष और उत्पात उत्पन्न करनेवाली मानी जाती है।

विश्वचद्र—वि० [स० विश्वचन्द्र] पूर्णत दीप्त या प्रभामय (को०)।

विश्वचक्र—सज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानो मे से एक प्रकार का महादान।

विशेष—इसमे एक हजार पल का साने का एक चक्र या पहिया बनवाया जाता है जिसमे सोलह आरे होते हैं, और तब यह चक्र कुछ विशिष्ट विधानो के अनुसार दान किया जाता है।

विश्वचक्रात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्रात्मन्] वह जिसका स्वरूप या आत्मा विश्वचक्र अर्थात् ब्रह्मांड है। विष्णु।

विश्वचक्ष—वि० [सं०] सब कुछ देखनेवाला [को०]।

विश्वचक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्वचक्षु' [को०]।

विश्वचक्षा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्षुस्] सब देखनेवाला, नेत्र [को०]।

विश्वचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० विश्वचक्षुस्] १. ईश्वर। २ लोकचक्षु। सूर्य। ३ सबको देखनेवाला, नेत्र। आँख (को०)।

विश्वचर—वि० [सं०] विश्वव्याप्त। उ०—आनंद का विश्वचर रूप 'यज्ञ' है। अन्नाद का अन्नग्रहण करना ही यज्ञ कहाता है इसलिये अन्न नाम से भी इस रूप का व्यवहार करते हैं।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ६२२।

विश्वचर्षणि—वि० [सं०] सर्वव्यापक। सर्वत्र व्याप्त [को०]।

विश्वच्यवा—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की सप्त रश्मियों में से एक का नाम [को०]।

विश्वछवि—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्व+छवि] संसार की शोभा। उ०—रश्मि नभ नाल पर, सतत शत रूप धर, विश्वछवि में उतर।—अपरा, पृ० १२।

विश्वजन - संज्ञा पुं० [सं०] मानव। मनुष्य [को०]।

विश्वजनीन—वि० [सं०] विश्व भर के लिये हितकर। सबके लिये सुखदायक। उ०—इतना आकस्मिक उत्थान और पतन। जहाँ एक विश्वजनीन धर्म की उत्पत्ति की सूचना हुई।—इंद्र०, पृ० ३६।

विश्वजनीय—वि० [सं०] विश्वजन का। सर्वहितकारी। सबके उपयोग में आनेवाला [को०]।

विश्वजन्य—वि० [सं०] दे० 'विश्वजनीन'।

विश्वजयी—वि० [सं० विश्वजयिन्] संसार को जीतनेवाला। उ०—जीत न सका एक अबला का मन तू विश्वजयी कैसा?— साकेत, पृ० ३८८।

विश्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ।

विश्वजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का यज्ञ। उ०—किसने मख विश्वजित् किया? रख मृत्पात्र सभी लुटा दिया?—साकेत, पृ० ३२६। २ वरुण का पाश। ३ महाभारत के अनुसार एक प्रकार की अग्नि। ४ विष्णु का एक नाम (को०)। ५ एक दानव का नाम। ६ सत्यजित् के पुत्र का नाम। ७ वह जिसने सारे विश्व पर विजय प्राप्त की हो।

विश्वजीव—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वज्योति[1]—वि० [सं०] पूर्णतः दीप्त वा द्योतित [को०]।

विश्वज्योति[2]—संज्ञा पुं० १ एक साम। २ एक एकाह यज्ञ। सूर्य।

विश्वज्योतिष—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

विश्वत—अव्य० [सं० विश्वतस्] चारो ओर। सभी ओर। सर्वत्र। सब जगह [को०]।

विश्वतनु—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र विश्व जिनका शरीर माना गया है—विष्णु।

विश्वतुलसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बबुई तुलसी। वनतुलसी।

विश्वतृप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ वह जो प्रत्येक में तुष्ट और प्रसन्न हो (को०)।

विश्वतोमुख—वि० [सं०] जिसे चारो ओर मुँह हो [को०]।

विश्वतोया—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

विश्वत्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तीन लोक—आकाश, पाताल और मर्त्यलोक। त्रिलोक [को०]।

विश्वथा—अव्य० [सं०] १ सर्वत्र। सब जगह। २ सदा। सर्वदा [को०]।

विश्वदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम [को०]।

विश्वदानि—वि० [सं०] सबका दाता। सबको देनेवाला [को०]।

विश्वदाव—वि० [सं०] जगत् को जलानेवाला [को०]।

विश्वदासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक नाम।

विश्वदेव—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जिनकी पूजा नांदीमुख श्राद्ध में होती है। विश्वदेवा।

विश्वदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागबला। गँगेरन। २ लाल दंडोत्पल। ३ कंघी। गवेधुक (को०)।

विश्वदैव—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्वदैव'।

विश्वधर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वधरण—संज्ञा पुं० [सं०] सबका भरण पोषण [को०]।

विश्वधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विश्वधरण'।

विश्वधाता—संज्ञा पुं० [सं० विश्वधातृ] विश्व का धारण करनेवाला। ईश्वर [को०]।

विश्वधाम—संज्ञा पुं० [सं० विश्वधामन्] १. ईश्वर। २ स्वदेश। अपना देश।

विश्वधार—संज्ञा पुं० [सं०] शाकद्वीप के राजा मेधातिथि के एक पुत्र का नाम।

विश्वधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

विश्वधारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्वधारी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वधारिन्] देवता। सुर [को०]।

विश्वधेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरित्री।

विश्वधेनु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्वनंद—संज्ञा पुं० [सं० विश्वनन्द] ब्रह्मा के एक मानसपुत्र [को०]।

विश्वनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ काशी का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

यौ०—विश्वनाथधाम, विश्वनाथनगरी, विश्वनाथपुरी=काशी। वाराणसी।

३. संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो 'साहित्यदर्पण' नामक रीतिग्रंथ के प्रणेता हैं।

विशेष—ये उत्कल के भट्ट ब्राह्मण थे। आलंकारिक चक्रवर्ती और कविराज इनकी उपाधि थी। इनके पिता का नाम चंद्रशेखर था। कविराज विश्वनाथ विद्वान् होने के साथ राज्य के उच्च पदाधिकारी थे और सांधिविग्रहिक महापात्र थे। इनका समय विक्रम की चौदहवीं शताब्दी है।

विश्वनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वनाभि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु का चक्र।

विश्वपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. एक अग्नि (को०)। ३ श्रीकृष्ण।

विश्वपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुईं आँवला।

विश्वपा—संज्ञा पुं० [सं०] १ सबकी रक्षा करनेवाला, ईश्वर। २ सूर्य (को०)। ३ चंद्रमा (को०)। ४ अग्नि (को०)।

विश्वपावक—वि० [सं०] जो सबको पकाता हो। (अग्नि) सबको पकानेवाला (को०)।

विश्वपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विश्वपाता—संज्ञा पुं० [सं० विश्वपातृ] एक पितृवर्ग [को०]।

विश्वपाल—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वपावन—वि० [सं०] सबको पवित्र करनेवाला।

विश्वपावनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुलसी।

विश्वपूजित—वि० [सं०] जो सबके द्वारा पूजित हो। विश्व द्वारा पूज्य। सर्वसमान्य।

विश्वपूजिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुलसी।

विश्वप्रकाशक—संज्ञा सं० [सं०] वह जो समग्र विश्व को प्रकाशित करता हो। सूर्य।

विश्वप्रबोध—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वप्स—संज्ञा पुं० [सं० विश्वप्सन्] १. अग्नि। २. चंद्रमा। ३. सूर्य। ४ देवता। ५ विश्वकर्मा।

विश्वप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि।

विश्वबंधु—संज्ञा पुं० [सं० विश्वबन्धु] १ विश्व का बंधु। संसार का मित्र। २ शिव। महादेव।

विश्वबंधुता—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्वबन्धुता] दे० 'विश्वबंधुत्व'।

विश्वबंधुत्व—संज्ञा पुं० [सं० विश्वबन्धुत्व] १ शिवत्व। शिवता। २ सारे विश्व के मानवों में बंधु का भाव। सब को भाई समझने का भाव।

विश्वबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ महादेव।

विश्वबीज—संज्ञा पुं० [सं०] विश्व की मूल प्रकृति या माया।

विश्वबोध—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वभद्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्वतोभद्र'।

विश्वभद्र²—वि० पूर्णतया अनुकूल [को०]।

विश्वभरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारे संसार का पालन करनेवाली जगदंबिका। उमा। दुर्गा। उ०—भज भिखारी, विश्वभरणा सदा अशरण शरण शरणा।—अर्चना, पृ० ३।

विश्वभरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विश्व+भरण] १ संसार का पालन। उ०—विश्वभरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।—मानस० १। २ विश्वपालक। भगवान्। उ०—भजे न विश्वभरन बनवारी। अइया मनुपहुँ बूझ तुम्हारी।—सूदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ३२८।

विश्वभर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विश्वभर्त्तृ] ईश्वर।

विश्वभव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म जिससे सारे विश्व की सृष्टि हुई है।

विश्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ विष्णु का नाम (को०)।

विश्वभावन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विश्वभाव'।

विश्वभुक्¹—संज्ञा पुं० [सं० विश्वभुज्] दे० 'विश्वभुज्'।

विश्वभुज्¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ इंद्र। ३ अग्नि। ४ इंद्र का पुत्र। ५ पितरों का एक गण (को०)।

विश्वभुज्²—वि० सर्वभोक्ता। सब कुछ खानेवाला। सबका भोग करनेवाला [को०]।

विश्वभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

विश्वभू—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध [को०]।

विश्वभेषज—संज्ञा पुं० [सं०] सोंठ।

विश्वभोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह भोग जो सारे संसार के लिये हो। सबका सुख उ०—तुम धन्य। तुम्हारा निःस्व त्याग। है विश्वभोग का वर साधन।—युगांत, पृ० ५४।

विश्वभोजा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वभोजस्] १ वह जो सब कुछ भोग कर सकता हो। २ वह जो सबकी रक्षा करता हो [को०]।

विश्वमंच—संज्ञा पुं० [सं० विश्व+मञ्च] विश्वरूपी मंच। संसार। दुनिया। जगत्। उ०—तुम विश्वमंच पर हुए उदित, बन जगजीवन के सूत्रधार।—युगांत, पृ० ५९।

विश्वमवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

विश्वमय—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। वह जिसका रूप समस्त विश्व में है। उ०—विश्वमय का जो विशद निवास, व्याप्त उसमें मेरे चिर प्राण।—मधुज्वाल, पृ० ६७।

विश्वमहेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

विश्वमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्वमातृ] समस्त विश्व की माता, दुर्गा।

विश्वमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती का एक नाम।

विश्वमूर्ति¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। २ ईश्वर (को०)। ३. शिव (को०)।

विश्वमूर्ति²—वि० सब रूपों में रहनेवाला। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्वयु—संज्ञा पुं० [सं०] वायु [को०]।

विश्वयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं० विश्व+युद्ध] जिसमें दुनिया के अधिकांश राष्ट्र दो गुटों में विभक्त होकर आपस में लड़ें (अं० वर्ल्डवार)।

विश्वयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु (को०)।

विश्वरथ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार राजा गाधि के पुत्र का नाम जो विश्वामित्र नाम से प्रसिद्ध है। विशेष दे० 'विश्वामित्र'।

विश्वरद—संज्ञा पुं० [सं०] मग या भोजक ब्राह्मणों का एक धार्मिक ग्रंथ जिसे वे अपना वेद मानते थे और जो भारतीय आर्यों के वेद का विरोधी था।

विश्वराज, विश्वराट्—संज्ञा पुं० [सं०] सारे संसार का राजा [को०]।

विश्वरुचि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्रकार की देवयोनि। २ एक दानव का नाम।

विश्वरुचि[2]—संज्ञा स्त्री० अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

विश्वरुची—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विश्वरुचि' [को०]।

विश्वरूप[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ पुराणानुसार त्वष्टा के एक पुत्र का नाम। ४ भगवान् श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।

विशेष—श्रीकृष्ण ने उस अवसर पर अर्जुन को यह दिखलाया या समझाया था कि इस समस्त विश्व या ब्रह्मांड में सूर्य, चंद्रमा, तारे, ग्रह आदि जो कुछ हैं, वे सब मेरे ही स्वरूप हैं।

५ पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ६ काला अगर (को०)। ७ एक प्रकार का पुच्छल तारा। ८ देवता। उ०—भूपन को रूप धरि विश्वरूप आए है।—केशव (शब्द०)।

विश्वरूप[2]—वि० सर्वत्र विद्यमान। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला अगर। २ खिरनी।

विश्वरूपिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आद्या शक्ति। महाशक्ति। उ०—विश्वरूपिणी तुम हो, तुम्हें मूर्ति में रचकर। पूजा की बसंत के दिन दीनता विकच कर।—अपरा पृ० १९७।

विश्वरूपी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विश्वरूपिन्][स्त्री० विश्वरूपिणी] विष्णु। जनार्दन।

विश्वरूपी[2]—संज्ञा स्त्री० अग्नि की एक जिह्वा।

विश्वरेता—संज्ञा पुं० [सं० विश्वरेतस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु [को०]।

विश्वरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाडी या नारीच नामक साग। २ कचूर या पेचुक नामक साग।

विश्वलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ चंद्रमा।

विश्वलोप—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

विश्ववयन—संज्ञा पुं० [सं०] संसार की रचना। विश्वसृष्टि। उ०—उद्धृत क्षिति दीन हुई दिखा नवल विश्ववयन।—अर्चना, पृ० १०।

विश्ववर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँआँवला।

विश्ववसु—संज्ञा पुं० [सं०] राजा पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

विश्ववाक्—संज्ञा पुं० [सं० विश्ववाच्] असाधारण पुरुष [को०]।

विश्ववाद—संज्ञा पुं० [सं० विश्व+वाद] वह मत या वाद जिसके अनुसार सारे संसार के मानवों को परस्पर भाई भाई माना जाता है। विश्वबंधुत्व।—उ०—यह विश्ववाद साम्राज्यवादियों के प्रभुत्व का साधन है।—आचार्य०, पृ० २२।

विश्ववार—संज्ञा पुं० [पुं०] यज्ञ में सोम का एक संस्कार।

विश्ववारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्रि गोत्र की एक स्त्री जो ऋग्वेद के पाँचवें मंडल की कुछ ऋचाओं की ऋषि मानी जाती है।

विश्ववास—संज्ञा पुं० [सं०] संसार। जगत्। दुनिया।

विश्ववाह—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विश्ववाही] सबको धारण करनेवाला। सबका भरण पोषण करनेवाला [को०]।

विश्ववाहु—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

विश्वविख्यात—वि० [सं०] संसारप्रसिद्ध। विश्वविश्रुत। जगद्विख्यात।

विश्वविजयी—वि० [सं० विश्वविजयिन्] जिसने समग्र संसार को जीत लिया हो। सारी दुनिया को जीत लेनेवाला।

विश्वविद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। बहुत बड़ा पंडित। २ ईश्वर।

विश्वविद्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो, परीक्षाएँ ली जाती हो और जो लोगों को विद्या संबंधी उपाधियाँ आदि प्रदान करती हो। (अं० यूनिवर्सिटी)।

विश्वविधायी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वविधायिन्] १. देवता। विबुध। २ ब्रह्मा [को०]।

विश्वविभावन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्व का विभावन या निर्माण। संसार की रचना [को०]।

विश्वविश्रुत—वि० [सं०] जो संसार भर में प्रसिद्ध हो। जगद्विख्यात।

विश्वविसृ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

विश्वविस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख मास की पूर्णिमा [को०]।

विश्ववृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

विश्ववेदा—वि० [सं० विश्ववेदस्] १ सर्वज्ञ। सब कुछ जाननेवाला। २ संत। महात्मा। तपस्वी [को०]।

विश्वव्यचा—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्वव्यचस्]

विश्वव्यापक—वि० [सं०] दे० 'विश्वव्यापी'।

विश्वव्यापी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।

विश्वव्यापी[2]—वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।

विश्वश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।

विश्वश्री—वि० [सं०] जो सबके लिये लाभकर हो (अग्नि)। जो सबको समान रूप से उपयोगी हो [को०]।

विश्वसंप्लव—संज्ञा पुं० [सं० विश्वसम्प्लव] विश्व का विनाश। प्रलय [को०]।

विश्वसंभव—संज्ञा पुं० [सं० विश्वसम्भव] जिसमें समग्र संसार उत्पन्न हुआ है, ईश्वर।

विश्वसंवनन—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र विश्व का मोहन करना या हरण करना [को०]।

विश्वसंहार—संज्ञा पुं० [सं०] महाप्रलय। विश्व का विनाश [को०]।

विश्वसख—संज्ञा पुं० [सं०] सबका मित्र। सबका सखा।

विश्वसत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। वासुदेव। श्रीकृष्ण [को०]।

विश्वसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ ऋषि मुनि विश्राम करते हों। २ विश्वास। एतबार।

विश्वसनीय—वि० [सं०] विश्वास करने के योग्य। विश्वास उत्पन्न करने योग्य। जिसका एतबार किया जा सके। जैसे,—(क) हमें यह समाचार विश्वसनीय सूत्र से मिला है। (ख) आपकी सब बातें बहुत विश्वसनीय हैं।

विश्वसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम। २ पृथ्वी (को०)।

विश्वसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वसाक्षिन्] वह जो सब कुछ देखता है। ईश्वर।

विश्वसाम—संज्ञा पुं० [सं० विश्वसामन्] एक वैदिक ऋषि का नाम जो आत्रेय गोत्र के थे और जो अनेक वैदिक मंत्रों के द्रष्टा थे।

विश्वसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक तंत्र का नाम (को०)।

विश्वसारक—संज्ञा पुं० [सं०] कंकारी वृक्ष। विदर वृक्ष।

विश्वसित—वि० [सं०] विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय। जिसपर विश्वास किया गया हो। विश्वस्त।—उ० उनकी संमति सर्वसाधारण को विश्वसित प्रमाण रूप होती है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४४०। २ निर्भय। निडर (को०)।

विश्वसृक्—संज्ञा पुं० [सं० विश्वसृज्] १ स्रष्टा। ब्रह्मा। २ मयासुर। मय नामक असुर (को०)।

विश्वसृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] संसार की रचना या निर्माण।

विश्वस्त—वि० [सं०] १ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। २. विश्वास करनेवाला। भरोसा करनेवाला (को०)। ३. निडर। विश्रुब्ध (को०)। ४ जिसपर विश्वास किया गया हो। निष्ठ (को०)।

विश्वस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विधवा।

विश्वस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतावर।

विश्वस्रष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वस्रष्ट] ब्रह्मा जो सृष्टि का निर्माण करते हैं।

विश्वहर्त्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० विश्वहर्तृ] शिव।

विश्वहृदय—संज्ञा पुं० [सं०] अखिल विश्व से प्रेम करनेवाला हृदय। चराचर जगत् में अनुरक्त हृदय। सर्वभूतमय हृदय। उ०—भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती है, उसका हृदय विश्वहृदय हो जाता है।—रस०, पृ० ७५।

विश्वहेतु—संज्ञा पुं० [सं०] विश्व को उत्पन्न करनेवाले, विष्णु।

विश्वाड—संज्ञा पुं० [सं० विश्वाण्ड] ब्रह्मांड (को०)।

विश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दक्ष की एक कन्या जो धर्म को व्याही थी और जिससे सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २ एक मान जो २० पल का होता है। ३ अतिविषा। अतीस। ४ शतावर। ५ पीपल। ६ सोंठ। उ०—विश्वा, नागर, जगभिषक, महा औषधी नाउँ।—नंद० ग्रं०, पृ० १०४। ७. शखिनी। चोरपुष्पी। ८ पृथ्वी। भूमि (को०)। ९ अग्नि की सात जिह्वा या अर्चियों में से एक जिह्वा (को०)। १०. एक नदी (को०)।

विश्वाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

विश्वाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक अप्सरा का नाम। २. एक प्रकार का रोग जिसमें वायु के कारण कंधे से उँगलियों तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न सिकोड़ा जा सकता है।

विश्वातिथि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका अतिथि हो। संन्यासी (को०)।

विश्वातीत—संज्ञा पुं० [सं०] जो सबसे परे हो, ईश्वर।

विश्वात्मवाद—संज्ञा पुं० [सं०] संपूर्ण संसार को अपनी आत्मा समझने का सिद्धांत। उ०—अहंकारमूलक आत्मवाद का खंडन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया।—शैली, पृ० १८९।

विश्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वात्मन्] १ विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्मा। ४ ईश्वर। परमात्मा (को०)। ५ सूर्य (को०)।

विश्वाद्—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि जो सब कुछ भक्षण करता है।

विश्वादि—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का कषाय।

विशेष—यह कषाय जो सोंठ, वाला, क्षेत्रपर्पटी, मोथा, लालचंदन आदि से बनाया जाता है और जो ज्वर की प्यास, कै तथा दाह आदि को कम करनेवाला माना जाता है।

विश्वाधाया—संज्ञा पुं० [सं० विश्वाधायस्] देवता (को०)।

विश्वाधार—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र संसार का आधार। परमेश्वर। उ०—मन का समाहार करो विश्वाधार।—आराधना, पृ० ४६।

विश्वाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर

विश्वानर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैश्वानर'।

विश्वानुरक्त वि० [सं०] समस्त विश्व से अनुराग रखनेवाला। विश्वहितैषी। उ०—विश्वानुरक्त है अनासक्त।—युगांत, पृ० ५५।

विश्वाप्सु—वि० [सं०] अनेक रूप धारण करनेवाला (को०)।

विश्वाभ्—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ ईश्वर, जो सर्वव्यापक है (को०)।

विश्वामित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं।

विशेष—विश्वामित्र कान्यकुब्ज के पुरुवंशी महाराज गाधि के पुत्र थे, परंतु क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियों में परिगणित हुए। ऋग्वेद के अनेक मंत्र ऐसे हैं जिनके द्रष्टा विश्वामित्र अथवा उनके वंशज माने जाते हैं। इनका विश्वामित्र नाम ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर पड़ा था, नहीं तो इनका पहला क्षत्रिय दशा का नाम 'विश्वरथ' था। ऋग्वेद में अनेक मंत्र ऐसे मिलते हैं जिनमें सिद्ध होता है कि ये यज्ञों में पुरोहित का कार्य करते थे, और वृत्ति के संबंध में

इनमे तथा वशिष्ठ मे बहुत समय तक बराबर झगडे बखेडे होते रहते थे। पुराणो मे लिखा है कि राजा गाधि को सत्यवती नाम की एक सुदरी कन्या उत्पन्न हुई थी। वह कन्या उन्होने ऋचीक ऋषि को दे दी थी। ऋचीक ने एक बार दो अलग अलग चरु तैयार करके अपनी स्त्री सत्यवती को दिए थे और कहा था कि इसमे से यह एक चरु तो तुम खा लेना जिसमे तुम्हे ब्राह्मणो के गुण से सपन्न एक पुत्र होगा, और एक दूसरा चरु अपनी माता को दे देना जिससे उन्हे क्षत्रियो के गुणवाला एक बहुत तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। इसी बीच मे राजा गाधि अपनी स्त्री सहित वहाँ आए। सत्यवती ने वे दोनो चरु अपनी माता के सामने रख दिए और उनका गुण बतला दिया। माता ने समझा कि ऋचीक ने अपनी स्त्री के लिये बढिया चरु तैयार किया होगा, इसलिये उसने उसका चरु तो आप खा लिया और अपना उसे खिला दिया। इससे उसके गर्भ से तो विश्वामित्र का जन्म हुआ, जिसमे क्षत्रिय होने पर भी ब्राह्मणो के से गुण थे, और सत्यवती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ जो ब्राह्मण होने पर भी क्षत्रियो के गुणो से सपन्न थे। विश्वामित्र को शुनःशेफ, देवरात, देवश्रवा, हिरण्याक्ष, गालव, जय, अष्टक, कच्छप, नारायण, नर आदि सौ पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनके कारण इनके कौशिक वश की बहुत अधिक वृद्धि हुई थी। कहते है, एक बार जब विश्वामित्र ने बहुत बडा तप किया था, तब इद्र तथा समस्त देवताओने भयभीत होकर मेनका नामक अप्सरा को उनका तप भग करने के लिये भेजा था। इसी मेनका से विश्वामित्र को शकुतला नामक कन्या उत्पन्न हुई थी जो दुष्यत को ब्याही गई थी। यह भी प्रसिद्ध है कि इक्ष्वाकु वश के राजा त्रिशकु ने एक बार सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से एक यज्ञ करना चाहा था। परतु उनके पुरोहित वशिष्ठ ने कहा कि ऐसा होना असभव है। इसपर त्रिशकु ने विश्वामित्र की शरण ली और विश्वामित्र ने उन्हे सशरीर स्वर्ग पहुँचा दिया। यह भी कहा जाता है कि विश्वामित्र बहुत बडे क्रोधी थे और प्राय. लोगो को शाप दे दिया करते थे। राजा हरिश्चद्र के सत्य की सुप्रसिद्ध परीक्षा लेनेवाले भी यही माने जाते है। पुराणो मे इनके सबध मे इसी प्रकार की और भी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

विश्वामित्रप्रिय—सज्ञा पु० [स०] १. नारियल का पेड। २ भगवान् रामचद्र। ३ कार्तिकेय [को०]।

विश्वामित्रसृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] तालवृक्ष, भैस, गधा आदि जिनकी रचना विश्वामित्र ऋषि ने की थी।

विश्वामित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

विश्वामृत—वि० [स०] अमर। मृत्युजय [को०]।

विश्वायन—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २ ब्रह्मा।

विश्वराज, विश्वाराट्—सज्ञा पुं० [स०] समग्र विश्व का शासन करनेवाला। ईश्वर।

विश्वावसु¹—सज्ञा पु० [स०] १ पुराणानुसार एक गधर्व का नाम। २ विष्णु। ३. एक संवत्सर का नाम।

विश्वावसु²—सज्ञा स्त्री० रात।

विश्वावास—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वाधार' [को०]।

विश्वाश्रय—सज्ञा पु० [स० विश्व+आश्रय] वह जो सबका आश्रय स्वरूप है। ईश्वर।

विश्वाश्रय—वि० विश्व मे परिव्याप्त। विश्व की आश्रयभूत। उ०—जागो विश्वाश्रय महिमा धर, फिर देखा।—अपरा, पृ० २०६।

विश्वास—सज्ञा पुं० [स०] १ वह धारणा जो मन मे किसी व्यक्ति के प्रति उसका सद्भाव, हितैषिता, सत्यता, दृढता आदि अथवा किसी सिद्धात आदि की सत्यता अथवा उत्तमता का ज्ञान होने के कारण होता है। किसी के गुणो आदि का निश्चय होने पर उसके प्रति उत्पन्न होनेवाला मन का भाव। एतबार। यकीन। जैसे,—(क) मैं तो सदा ईश्वर पर विश्वास रखता हूँ। (ख) उन्हे आपका पूरा पूरा विश्वास है। (ग) आप विश्वास रखें, ऐसा कभी न होगा।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

मुहा०—विश्वास जमाना=किसी के मन मे विश्वास उत्पन्न करना या दृढ करना। विश्वास दिलाना=किसी के मन मे विश्वास उत्पन्न करना।

२. मन की वह धारणा जो विषय या सिद्धात आदि की सत्यता का पूरा पूरा प्रमाण न मिलने पर भी उसकी सत्यता के सबध मे होती है। जैसे— (क) बहुत से अशिक्षित भूत प्रेत पर विश्वास रखते हैं। (ख) और धर्मो की अपेक्षा बौद्ध धर्म पर उनका कुछ अधिक विश्वास है। ३ केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ निश्चय। जैसे,—मेरा तो यही विश्वास है कि वह अवश्य आवेगा। ४ गुप्त भेद या समाचार।

विश्वासकारक—वि० [सं०] १ विश्वास करनेवाला। यकीन करनेवाला। २ मन मे विश्वास उत्पन्न करनेवाला। जिससे विश्वास उत्पन्न हो।

विश्वासकार्य—सज्ञा पुं० [स०] गोपनीय कार्य [को०]।

विश्वासकृत्—वि० [स०] दे० 'विश्वासकारक' [को०]।

विश्वासघात—सज्ञा पुं० [स०] किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया। अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना जो उसके विश्वास के बिल्कुल विपरीत हो।

विश्वासघातक—सज्ञा पु० [सं०] वह जो किसी के मन मे अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करके भी उसका अपकार करे। विश्वास करने पर भी धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

विश्वासघाती—सज्ञा पुं० [स० विश्वासघातिन्] [स्त्री० विश्वासघातिनी] दे० 'विश्वासघातक' [को०]।

विश्वासन—सज्ञा पु० [स०] विश्वास। एतबार। यकीन।

विश्वासपरम—वि० [स०] विश्वास से पूर्ण [को०]।

विश्वासपात्र—सज्ञा पु० [सं०] जिसपर भरोसा किया जाय। विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय।

विश्वासप्रद—वि० [सं०] विश्वास देनेवाला। भरोसा पैदा करनेवाला।

विश्वासभग—संज्ञा पुं० [सं० विश्वासभङ्ग] विश्वासघात। विश्वास न रहना।

विश्वासभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वस्त। विश्वासपात्र। विश्वसनीय व्यक्ति [को०]।

विश्वासभूमि—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाय। विश्वास का स्थान या भूमि [को०]।

विश्वासस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका विश्वास किया जाय। विश्वासभाजन।

विश्वासस्थित—वि० [सं०] विश्वासी। विश्वासपूर्ण। दृढ विश्वास-वाला। उ०—बोले आवेगरहित स्वर से विश्वासस्थित।—अपरा, पृ० ४६।

विश्वासिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय।

विश्वासित—वि० [सं०] जिसे विश्वास दिलाया गया हो [को०]।

विश्वासी—संज्ञा पुं० [सं० विश्वासिन्] १ वह जो किसी पर विश्वास करता हो। विश्वास करनेवाला। २ वह जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वास्य—वि० [सं०] १ विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। २ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वासभाजन।

विश्वाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ।

विश्वेक्षिता—वि० [सं० विश्वेक्षितृ] सर्वदर्शी [को०]।

विश्वेदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ देवताओं का एक गण जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

विशेष—वैदिक युग में लोग इन्हें मनुष्यों के रक्षक, शुभ कर्मों के फल देनेवाले और विश्व के अधिपति मानते थे। अग्निपुराण में ये दस कहे गए हैं और इनके नाम इस प्रकार बतलाए गए हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव और पुरूरवा।

३ पुराणानुसार एक असुर का नाम। ४ एक देवता (को०)। ५ महान् व्यक्ति। महत् पुरुष (को०)। ६. तेरह की संख्या (को०)।

विश्वेभोजा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वेभोजस्] इंद्र।

विश्वेवेदा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वेवेदस्] अग्नि।

विश्वेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. विष्णु। ३ ब्रह्मा (को०)। ४ ईश्वर। ५ उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक देवता माने जाते हैं।

विश्वेशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रजापति दक्ष की एक पुत्री का नाम (को०)।

विश्वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. शिव की एक मूर्ति का नाम।

विश्वैकसार—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विश्वौषध—संज्ञा पुं० [सं०] सोंठ।

विषग—वि० [सं० विषङ्ग] १. लगा हुआ। २ जो लटकता हो [को०]।

विषग(प)[२]—वि० [सं० विषाङ्ग] विषयुक्त। विषधर। उ०—काहर कथन कितक कितक स्वानन मुप टुट्टन। विंछी सर्प विषग मंत्रवादी मिल लुट्टत।—पृ० रा०, ६। १०५।

विषगी—वि० [सं० विषङ्गी] साथ लगनेवाला। सलग्न रहनेवाला [को०]।

विषड—संज्ञा पुं० [सं० विषण्ड] कमल की नाल। मृणाल।

विष—संज्ञा पुं० [सं०] वह पदार्थ जो किसी प्राणी के शरीर में किसी प्रकार पहुँचने पर उसके प्राण ले लेता हो अथवा उसका स्वास्थ्य नष्ट करता हो। गरल। जहर।

विशेष—वैद्यक में स्थावर और जगम ये दो प्रकार के विष माने गए हैं। स्थावर विष वृक्षों, पौधों और खानों आदि में से निकला हुआ माना जाता है, और जगम विष वह कहलाता है जो अनेक प्रकार के जीवों के शरीर, नख, दाँत या डंक आदि में होता हैं। कुछ विष कृत्रिम भी होते हैं और रासायनिक क्रियाओं से बनाए जाते हैं। चिकित्सा में अनेक विषों का प्रयोग, बहुत थोडी मात्रा में, अनेक रोगों को दूर करने और दुर्बल रोगी के शरीर में बल लाने के लिये किया जाता है।

मुहा०—के लिये दे० 'जहर'।

२. वह जो किसी की सुख शांति आदि में बाधक हो।

मुहा०—विष की गाँठ=वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो। खराबी पैदा करनेवाला। जैसे—यही तो विष की गाँठ हैं, सब का झगडा इन्हीं का खडा किया हुआ है।

३. जल। ४ पद्मकेशर। ५ कमल की नाल। ६ बोल नामक गंध-द्रव्य। ७ बछनाग। वत्सनाभ (को०)। ८ अतीस। ९ कलिहारी। १० जहरीला तीर। विषाक्त बाण (को०)। ११ तंत्र में 'म' का बोधक शब्द। 'म' की ध्वनि (को०)। १२ अनुचर (को०)।

विषई(प)—वि० [सं० विषयिन्] दे० 'विषयी'। उ०—विषई विषै सब विष की खानी। ए सब कहिये जम सहदानी।—कबीर सा०, पृ० ८०६।

विषकट—संज्ञा पुं० [सं० विषकण्ट] इंगुदी।

विषकटक—संज्ञा पुं० [सं० विषकण्टक] दुरालभा।

विषकटका—संज्ञा स्त्री० [सं० विषकण्टका] वंध्या कर्कोटी। बाँझ ककोटी।

विषकटकी—संज्ञा स्त्री० [सं० विषकण्टकी] बाँझ ककोटी।

विषकठ—संज्ञा पुं० [सं० विषकण्ठ] शिव। महादेव।

विषकठिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विषकण्ठिका] बगला।

विषकद—संज्ञा पुं० [सं० विषकन्द] १. भैंसा कद। नील कंद। २. हिंगोट। इंगुदी।

विषकन्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषकन्या [को०]।

विषकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हो कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

विशेष—प्राचीन काल में राजाओं के यहाँ बाल्यावस्था से ही कुछ कन्याओं के शरीर में अनेक प्रकार से विष प्रविष्ट करा दिए जाते थे। जिनके कारण उनके शरीर में ऐसा प्रभाव आ जाता था कि जो उनके साथ विषय करता था, वह मर जाता था। जब राजा को अपने किसी शत्रु को गुप्त रूप से मारना अभीष्ट होता था, तब वह इस प्रकार की विषकन्या उसके पास भेज देता था, जिसके साथ संभोग करके वह शत्रु मर जाता था।

विषकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० विषकुम्भ] जहर का घड़ा। कुंभ जो विष से भरा हो [को०]।

विषकृत—वि० [सं०] विषैला। विषयुक्त [को०]।

विषकृमि—संज्ञा पुं० [सं०] विष से उत्पन्न कीड़ा [को०]।

विषकृमि न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक न्याय विशेष, जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि दूसरों के लिये प्राणहारक वस्तु अपने में से उत्पन्न जीव के लिये घातक नहीं होती [को०]।

विषक्त—वि० [सं०] १ दृढतापूर्वक जमा हुआ। जड़ा हुआ। २. संलग्न। चिपका या चिपटा हुआ। ३ लटका हुआ। अवलंबित। ४ उत्पादित। ५ अधिकृत। ६. फैला हुआ। विस्तृत। प्रसरित [को०]।

विषगंधक—संज्ञा पुं० [सं० विषगन्धक] एक प्रकार का तृण जिसमें भीनी गंध होती है।

विषगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० विषगन्धा] काली अपराजिता।

विषगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] वह पर्वत जिसपर उत्पन्न होनेवाले वृक्ष और पौधे आदि जहरीले होते हों।

विषग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० विषग्रन्थि] एक जहरीला क्षुप [को०]।

विषघ्न—वि० [सं०] विष का नाश करनेवाला।

विषघटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक सौर मास का नाम [को०]।

विषघा—संज्ञा पुं० [सं०] गुडूच।

विषघात—संज्ञा पुं० [सं०] विष का घातन करनेवाला। जहर का असर दूर करनेवाला। विषवैद्य [को०]।

विषघातक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो।

विषघाती—संज्ञा पुं० [सं० विषघातिन्] १ वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट होता हो। २ सिरिस का पेड़।

विषघ्न¹—वि० [सं०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला। विषनाशक।

विषघ्न²—संज्ञा पुं० १ सिरिस का वृक्ष। २ भिलावाँ। ३ चंपा का वृक्ष। भूकदंब। ५ गंध तुलसी। ६ जवासा। धमासा (को०)।

विषघ्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिविषा। अतीस।

विषघ्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद अपामार्ग या चिचड़ा।

विषघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिलमोचिका या हिलंच नामक साग। २ वनतुलसी। बबुई तुलसी। ३ इंद्रवारुणी। ४. भुइँ आँवला। ५ लाल पुनर्नवा। गदहपूरना। ६ हलदी। ७. महाकरंज। ८ वृश्चिकाली नाम की लता। ९ देवदाली या पीतघोषा नाम की लता। १ कठकेला। ११ सफेद अपामार्ग। १२ रास्ना।

विषचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] चकोर पक्षी।

विषज—वि० [सं०] विष से उत्पन्न। विष से होनेवाला [को०]।

विषजल—संज्ञा पुं० [सं०] विषयुक्त जल [को०]।

विषजित्—संज्ञा पुं० [सं०] एक तरह का शहद [को०]।

विषजिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] देवताड नामक वृक्ष।

विषजुष्ट—वि० [सं०] १ विषाक्त। जहरीला। २ विष से प्रभावित। विषयुक्त [को०]।

विषज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैद्यक के अनुसार वह ज्वर जो विष के कारण उत्पन्न हुआ हो।

विशेष—ऐसे ज्वर मे दाह होती है, दस्त आते हैं, भोजन की ओर रुचि नहीं होती, प्यास बहुत लगती है और रोगी मूर्छित हो जाता है।

२ भैंसा। महिष।

विषझाल (पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० विष+झाल] विष की ज्वाला। विषयरूपी विष की आग। उ०—पंच चोर चितवत रहीं, मया मोह विषझाल। चेतन पहरै आपणो, कर गहि खड़ग सँभाल।—दादू० पृ० ३८०।

विषणि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप।

विषण्ण—वि० [सं०] १ जिसका चित्त दुखी हो। जिसे विषाद, शोक या रंज हो। २ दुखपूर्ण। वेदनायुक्त। खिन्न। उ०—विफलता में भी एक निराला ही विषण्ण सौंदर्य होता है।—रस०, पृ० ६०।

यौ०—विषण्णचेता = खिन्न। उदास। विषण्णमना = उदास। विषण्णमुख, विषण्णवदन = जिसके मुख पर उदासी छाई हो। विषण्णरूप = उदासी की दशा या अवस्था।

विषण्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विषण्ण या दुखी होने का भाव। २. मूर्खता। बेवकूफी। जड़ता।

विषण्णांग—संज्ञा पुं० [सं० विषण्णाङ्ग] शिव।

विषतंत्र—संज्ञा पुं० [सं० विषतन्त्र] वैद्यक के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा साँप आदि का विष दूर किया जाता है।

विषतरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुचला। २ जहरीला वृक्ष। विषवृक्ष।

विषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष का भाव या धर्म। जहरीलापन।

विषतिंदु—संज्ञा पुं० [सं० विषतिन्दु] १. कुचलता। २ कुपीलु।

विषतिंदुक—संज्ञा पुं० [सं० विषतिन्दुक] एक प्रकार का जहरीला पौधा [को०]।

विषतुल्य—वि० [सं०] प्राणहारक [को०]।

विषतैल —संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो कड़ुए तेल मे गोमूत्र, हलदी, दारु हल्दी, बच, लालचंदन, मजीठ आदि डालकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार कुष्ठ आदि रोग दूर करने के लिये होता है।

विषदंड—संज्ञा पुं० [सं० विषदण्ड] १ कमल की नाल। उ०—केशव कोदंड विषदंड ऐसो खडे अब मेरे भुजदंडन की बडी है विडंबना।—केशव (शब्द०)। २. विष दूर करनेवाला ऐंद्र जालिक डंडा।

विषदंत—संज्ञा पुं० [सं० विषदन्त] १ बिल्ली। २ वह जिसके दाँतो मे जहर हो।

विषदंतक—संज्ञा पुं० [सं० विषदन्तक] साँप।

विषदंश—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली।

विषदंष्ट्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँप का वह दाँत जिसमे जहर होता है। २. सर्पककालिका नाम की लता। ३ नागदमनी।

विषद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा कसीस। २ सफेद रग। ३. अतिविषा। अतीस। ४ बादल।

विषद²—वि० निर्मल। स्वच्छ। साफ। उ०—विषद वासो के विभूषण, चरण के तल तू तरेगा।—अर्चना, पृ० ८६।

विषदमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] माकदा नामक पौधा जिसके पत्तो का साग होता है।

विषदर्शनमृत्यु, विषदर्शनमृत्युक—संज्ञा पुं० [सं०] चकोर पक्षी [को०]।

विषदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिविषा। अतीस।

विषदाता—संज्ञा पुं० [सं० विषदातृ] वह जो किसी को मार डालने या बेहोश करने के अभिप्राय से जहर दे।

विषदायक—संज्ञा पुं० [सं०] जहर देनेवाला।

विषदायी—संज्ञा पुं० [सं० विषदायिन्] दे० 'विषदाता'।

विषदिग्ध—वि० [सं०] विष मे बुझाया हुआ। जहरीला। विषाक्त [को०]।

विषदुष्ट—वि० [सं०] जो जहर मिलाकर खराब कर दिया गया हो।

विषदूषण¹—वि० [सं०] विष दूर करनेवाला।

विषदूषण²—संज्ञा पुं० [सं०] भोज्य या पेय वस्तु मे विष मिलाना [को०]।

विषद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] कुचला। कारस्कर।

विषद्विषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गुरुच [को०]।

विषधर¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विषधरी] १. सर्प। साँप। २. जलधर। बादल।

यौ०—विषधरनिलय = पाताल। नागलोक।

विषधर²—वि० विषैला। जहरीला [को०]।

विषधरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सर्पिणी। साँपिन।

विषधर्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच [को०]।

विषधात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] जरत्कारु ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

विषध्वंसी—संज्ञा पुं० [सं० विषध्वंसिन्] नागरमोथा।

विषनाडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक मुहूर्त जिसमे जनन अशुभ कहा गया है [को०]।

विषनाशन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरिस का पेड। २. मानकंद। ३. विष को दूर करना।

विषनाशन²—वि० जो विष को दूर करता हो। विषनाशक।

विषनाशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सर्पककाली नाम की लता। २ बाँझ ककोटी। ३. गंधनाकुली।

विषनुत्—संज्ञा पुं० [सं०] सोनापाठा। श्योनाक [को०]।

विषन्न(पु)—वि० [सं० विषण्ण] दे० 'विषण्ण'। उ०—रोते रोते कंठरोध जब है हो जाता। उस विषन्न नीरव क्षण मे हो कहती गिरा तुम्हारी।—चिता, पृ० १४८।

विषपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी जहरीले बीज का छिलका। २ कोई जहरीला पत्ता।

विषपन्नग—संज्ञा पुं० [सं०] जहरीला साँप।

विषपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यग्रोध। वट वृक्ष [को०]।

विषपादप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषवृक्ष'।

विषपीत—वि० [सं०] जिसने जहर पी लिया हो। विष पीनेवाला [को०]।

विषपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विषपुच्छी] बिच्छू जिसकी पूँछ मे विष होता है।

विषपुट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विषपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीला पद्म। २. अलसी का फूल। ३ मैनफल का पेड। ४ विषयुक्त फूल (को०)।

विषपुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मदन नामक वृक्ष। मैनफल। २. विषैले फूलो के खाने से होनेवाला रोग (को०)।

विषप्रदिग्ध—वि० [सं०] दे० 'विषदिग्ध' [को०]।

विषप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ दवा मे विष का उपयोग करना। २ जहर देना [को०]।

विषप्रशमनी —संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँझ ककोडी।

विषप्रस्थ - संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम।

विषभक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] जहर खाना।

विषभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडी दंती।

विषभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लघु दंती।

विषभिषक्—संज्ञा पुं० [सं० विषभिषज्] साँप आदि के विष को मंत्र द्वारा दूर करनेवाला व्यक्ति। विषवैद्य [को०]।

विषभुजग—संज्ञा पुं० [सं० विषभुजङ्ग] जहरीला साँप।

विषभृत्¹—वि० [सं०] जहरीला। विषयुक्त।

विषभृत्²—संज्ञा पुं० सर्प। साँप [को०]।

विषमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष संबंधी चिकित्सापरक एक आयुर्वेद कृति [को०]।

विषमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० विषमन्त्र] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २ सँपेरा। ३ साँप के विष को उतारने का मंत्र (को०)।

विषम¹—वि० [सं०] १ जो सम या समान न हो। जो बराबर न हो। असमान। २ (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। सम या जूस का उलटा। ताक। ३ जिसकी मीमांसा सहज में न हो सके। बहुत कठिन। जैसे,—विषम समस्या। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५ भीषण। विकट। जैसे,—विषम विपत्ति। उ०—करें न मेरे पीछे स्वामी विषम कष्ट साहस के काम। यही दुःखिनी सीता का सुख सुखी रहें उसके प्रिय राम।—साकेत, पृ० २८६। ६ जो समतल न हो। खुरदरा। ऊबड़ खाबड़ (को०)। ७ अनियमित (को०)। ८. अगम। दुर्गम (को०) ९ मोटा। स्थूल (को०)। १० तिरछा। वक्र (को०)। ११ पीडाप्रद। कष्टदायक (को०)। १२. बहुत मजबूत। उत्कट (को०)। १३ बुरा। प्रतिकूल। विपरीत (को०)। १४ अजीब। विचित्र। अनुपम। (को०)। १५ बेईमान (को०)। १६ विरामशील। विरत (को०)। १७. दुष्ट (को०)। १८. भिन्न (को०)। १९ अनुपयुक्त। अननुकूल (को०)।

विषम²—संज्ञा पुं० [सं०] १ संकट। विपत्ति। आफत। २ वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। ३. एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है। उ०—(क) कहाँ मृदुल तन तीय का सिरस प्रसून महान। कहाँ मदन की लाय यह अँव सम दुसह समान। (ख) खड्गलता अति स्याम तें उपजी कीरति सेत। ४ संगीत में ताल का प्रकार। ५. पहली, तीसरी, पाँचवी आदि विषम संख्याओं पर पड़नेवाली राशियाँ। ६ वैद्यक के अनुसार चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु की अधिकता से उत्पन्न होती है। कहते हैं, जब जठराग्नि विषम होती है, तब कभी तो भोजन बहुत अच्छी तरह पच जाता है और कभी बिलकुल नहीं पचता। ७ विष्णु का एक नाम (को०)। ८ असमता (को०) ९ अनोखापन (को०)। १० दुर्गम स्थान। जैसे,—चट्टान, गड्ढा आदि (को०)। ११ कठिन या भयावह स्थिति। कठिनाई। दुर्भाग्य (को०)।

विषमक—वि० [सं०] १ असम। २ (मोती आदि) जिसकी पालिश सर्वत्र समान रूप से न हुई हो (को०)।

विषमकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चारों समकोणोंवाले चतुर्भुज में किन्हीं दो कोणों को मिलाती हुई त्रिकोण बनानेवाली रेखा। समकोण त्रिकोण का कर्ण। २ असमान कर्णवाला चतुर्भुज।

विषमकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] असाधारण कार्य।

विषमकाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकूल समय। भयकर समय (को०)।

विषमकोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सम न हो। समकोण से भिन्न और कोई कोण।

विषमखात—संज्ञा पुं० [सं०] असमान खात (को०)।

विषमचक्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में दीर्घवृत्त। अंडवृत्त (को०)।

विषमचतुरस्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषम चतुष्कोण'।

विषमचतुर्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषम चतुष्कोण'।

विषमचतुष्कोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह चौकोर क्षेत्र जिसके चारों कोण समान न हों। विषम कोणवाला चतुष्कोण।

विषमच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन का पेड़।

विषमच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] धूपघड़ी के शंकु की दोपहर की छाया (को०)।

विषमज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का ज्वर जो होता तो नित्य है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। उ०—जो ज्वर छोड़ दे और फिर आ जावे उसको विषमज्वर कहते हैं।—माधव०, पृ० ३०।

विशेष—इस ज्वर में तापमान भी समान नहीं रहता और नाड़ी की गति भी सदा एक सी नहीं रहती, बराबर बदलती रहती है। इसीलिये इसे विषमज्वर कहते हैं। ज्वर का यह रूप किसी न कारण ज्वर के बिगड़ने अथवा पूरी तरह अच्छे न होने पर कुपथ्य करने के कारण होता है। वैद्यक में इसके अनेक भेद कहे गए हैं। जैसे—सतत, संतत, तृतीयक, चतुर्थक आदि।

२ जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर। जूड़ी बुखार। ३ हारी रोग में होनेवाला ज्वर।

विषमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विषम होने का भाव। असमानता। २ वैर। विरोध। द्रोह। ३. अंतर। भेद। फर्क (को०)। ४ उलझन। जटिलता (को०)। ५. भीषणता। भयंकरता।

विषमत्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे बड़े हों, समान न हों।

विषमत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विषम होने का भाव। विषमता।

विषमदृष्टि—वि० [सं०] ऐंचाताना (को०)।

विषमधातु—वि० [सं०] जिसकी शरीरस्थ धातुएँ असंतुलित हों। रोगी। अस्वस्थ (को०)।

विषमनयन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

विषमनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

विषमपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सप्तपर्ण वृक्ष (को०)।

विषमपद—वि० [सं०] १ जिसमें असमान पद या चरण हों। जैसे—छंद, कविता। २ असमान या अस्तव्यस्त पैर रखनेवाला।

विषमपलाश—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन का वृक्ष।

विषमबाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव (को०)।

विषमर्दनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंधनाकुली।

विषमलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुसमय। दुर्दिन। दुर्भाग्य (को०)।

विषमवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।

विषमवाण—संज्ञा पुं० [सं० विषमबाण] कामदेव का एक नाम।

विषम विभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] संपत्ति आदि का असमान विभाजन (को०)।

विषमविलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। त्र्यंबक (को०)।

विषमविशिख—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का एक नाम।

विषमवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों। असमान पदोंवाला वृत्त।

विषम व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सैनिक व्यूह। समव्यूह का उलटा व्यूह विशेष दे० 'समव्यूह'।

विषमशर—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव [को०]।

विषमशिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] प्रायश्चित्त आदि के लिये व्यवस्था देने के संबंध का एक दोष।

विशेष—यह दोष उस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हल्का प्रायश्चित्त करने की या हलका पाप करने पर भारी प्रायश्चित करने की व्यवस्था दी जाती है।

विषमशील¹—संज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य का एक नाम [को०]।

विषमशील²—वि० क्रोधी स्वभाववाला। असमान शीलवाला [को०]।

विषमसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विषमसन्धि] वह संधि जिसमें शक्ति के अनुसार तत्काल सहायता न दी जाय। समसंधि का उलटा। 'तुम आगे से हमारे मित्र रहोगे' इस प्रकार की संधि।

विषमसाहस—संज्ञा पुं० [सं०] उद्धतपन। उद्दंडता [को०]।

विषमस्थ—वि० [सं०] संकट में फँसा हुआ (को०)।

विषमस्पृहा—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे का धन हड़पने का लालच [को०]।

विषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झरबेरी। २. एक प्रकार का बछनाग।

विषमाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

विषमाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की जठराग्नि।

विशेष—कहते हैं, यह अग्नि कभी तो खाए हुए पदार्थों को अच्छी तरह पचा देती है और कभी बिल्कुल नहीं पचाती।

विषमाधुर—संज्ञा पुं० [सं०] शृंगी विष। सींगिया।

विषमान्न—संज्ञा पुं० [सं० विषम + अन्न] अनियमित आहार [को०]।

विषमायुध—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

विषमावतार—संज्ञा पुं० [सं० विषम + अवतार] १ असमतल भूमि पर उतरना। २. खतरा मोल लेना [को०]।

विषमावरण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विषमवर्ण] दग्धाक्षर। उ०—धुररूपक ज्योंही धरे, विषमावरण विशेष।—रघु० रू०, पृ० ११।

विषमाशन—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार ठीक समय पर भोजन न करके समय के पहले या पीछे अथवा थोड़ा या अधिक भोजन करना जिसके कारण शरीर में आलस्य या दुर्बलता होती है।

विषमित—वि० [सं०] जो विषम किया गया हो। विषम बनाया हुआ [को०]।

विषमुक्—संज्ञा पुं० [सं० विषमुच्] सर्प। साँप [को०]।

विषमुष्कक—संज्ञा पुं० [सं०] मैनफल।

विषमुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवंती। २. बकायन। ३. मीठी नीम। घोड़ा नीम। ४. कलिहारी। ५ कुचला।

विषमुष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकायन।

विषमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिरामलक। शिर आँवला।

विषमृत्यु—संज्ञा पुं० [सं०] चकोर पक्षी।

विषमेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

विषमेषु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

विषय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह बड़ा प्रदेश जिसपर कोई शासन व्यवस्था हो।

विशेष—ग्राम से बड़ा राष्ट्र और राष्ट्र से बड़ा विषय माना जाता था। कितने बड़े भूभाग को विषय कह सकते थे, इसका कोई निर्दिष्ट मान नहीं था।

२ वह पदार्थ जिसका ग्रहण ज्ञानेंद्रियों द्वारा होता हो। रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द जिनका संबंध क्रमश. आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है। इंद्रियार्थ (को०)। ३ भौतिक वस्तु (को०)। ४ कारोबार। व्यवसाय (को०)। ५. इंद्रियसुख। वासनात्मक आनंद (को०)। ६ विभागक्षेत्र। ७. पहुँच। परिधि। विस्तार (को०)। ८. लक्ष्य। उद्देश्य (को०)। ९. प्रसंग। प्रकरण (को०) १०. वीर्य। शुक्र (को०)। ११. स्वामी (को०)। १२ धार्मिक कृत्य (को०)। १३. पाँच की संख्या (को०)। १४. उपमेय। वर्ण्य पदार्थ (को०)। १५. राज्य (को०)। १६ आश्रयस्थल, शरणस्थल (को०)। १७. ग्रामों का समूह (को०)। १८. प्रेमी पति (को०)। १९. शृंगार विषयक ग्रंथ (को०)।

यौ०—विषयकर्म = भौतिक कृत्य। सांसारिक कार्य। विषयकाम = भौतिक पदार्थों या सुखों की कामना। विषयग्राम = ऐंद्रिक विषयों का समूह। विषयज्ञ। विषयज्ञान = सांसारिक सुखों का ज्ञान। वासनात्मक ज्ञान। विषयनिरत। विषयनिर्धारिणी समिति। विषयनिह्नुति। विषयपति। विषयरस। विषयसमिति। विषयस्पृहा।

विषयक—अव्य० [सं०] विषय का। संबंधी। जैसे,—इस पत्र में राजनीति विषयक बातें अधिक रहती हैं।

विषयज्ञ—वि० [सं०] विषय का ज्ञाता। किसी विशिष्ट विषय का जानकार [को०]।

विषयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषय का भाव या धर्म।

विषयनिरत—वि० [सं०] विषयासक्त। इंद्रियासक्त [को०]।

विषयनिरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भोग विलास के प्रति लगाव। सांसारिक उपभोग्य पदार्थों के प्रति आसक्ति। विषयासक्ति [को०]।

विषयनिर्द्धारिणी समिति—संज्ञा स्त्री० [सं० विषय + निर्द्धारिणी + समिति] दे० 'विषयनिर्वाचिनी समिति'।

विषयनिर्वाचिनी समिति—संज्ञा स्त्री० [सं० विषय + निर्वाचिनी + समिति] कुछ विशिष्ट सदस्यों की वह सभा जो किसी महासभा या सम्मेलन में उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है। (अं० 'सबजेक्ट कमिटी')

विषयनिह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी विषय के प्रति गोपनीयता का भाव [को०]।

विषयपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी जनपद या छोटे प्रांत का राजा या शासक। उ०—श्रेष्ठी नगरशासन तथा जिले के शासन में नगरपति (जिलाधीश) की सहायता किया करता था।—पू० म० भा०, पृ० १२७। २. राज्यपाल (को०)।

विषयपराङ्मुख—वि० [सं०] सांसारिक सुखों से विमुख। जो विषयों से विमुख हो [को०]।

विषयप्रवण—वि० [सं०] भोगलिप्सु। विषयासक्त [को०]।

विषयप्रसंग—संज्ञा पुं० [सं० विषयप्रसङ्ग] विषय में आसक्ति। भोगविलास में रति [को०]।

विषयरत—वि० [सं०] विषयासक्त [को०]।

विषयरस—संज्ञा पुं० [सं० विषय+रस] लौकिक भोग विलास का सुख। विषयानंद। उ०—हुआ इस जग में ऐसा कौन विषयरस किया न जिसने पान ?—मधुज्वाल, पृ० ८४।

विषयलोलुप—वि० [सं०] विषयेच्छु। भोगेच्छु [को०]।

विषयविरत—वि० [सं०] जो लौकिक विषयों से विरक्त हो। विषयों से पराङ्मुख।

विषयसंग—संज्ञा पुं० [सं० विषयसङ्ग] विषयों में रति [को०]।

विषयसमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषयनिर्वाचिनी समिति।'

विषयसुख—संज्ञा पुं० [सं०] विषयानंद। इंद्रिय संबंधी सुख [को०]।

विषयस्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] विषयैषणा। इंद्रिय संबंधी पदार्थों की कामना [को०]।

विषयस्पृहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषयस्नेह'।

विषयांत—संज्ञा पुं० [सं० विषयांत] विषय या प्रदेश की सीमा [को०]।

विषयांतर—संज्ञा पुं० [सं० विषयान्तर] १ प्रस्तुत वर्ण्य विषय का त्याग कर अन्य विषय का ग्रहण या प्रवर्तन। २ प्रस्तुत या वर्ण्य विषय की उपेक्षा [को०]।

विषया (पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० विषय] सांसारिक भोग्य पदार्थ। उ०—तनमन ताको दीजिए, जाके विषया नाहिं। आपा सबही डारि कै, राखै साहेब माहिं।—कबीर सा० सं०, पृ० २।

विषयाज्ञान—संज्ञा पुं० [सं० विषय+अज्ञान] १ विषय को न जानना। तंद्रा [को०]।

विषयात्मक—वि० [सं०] १ विषय, प्रकरण या प्रसंगवाला। २. २ आलस्य। थकावट। इंद्रिय संबंधी।

विषयाधार—संज्ञा पुं० [सं० विषय+आधार] विषयों का आश्रय। उ०—आत्मा को विषयाधार बना, दिशि, पल के दृश्यों को संवार। गा, गा, एकोहं बहु स्याम, हर लिए भेद, भव भीति भार।—युगांत, पृ० ५६।

विषयाधिकृत—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय या प्रांत का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी [को०]।

विषयाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी छोटे प्रांत का राजा या शासक।

विषयाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा। विषयाधिप [को०]।

विषयाभिरति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषयों या सांसारिक सुखों के प्रति अनुराग [को०]।

विषयानुक्रमणिका, विषयानुक्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रंथादि की विषयसूची।

विषयायी—संज्ञा पुं० [सं० विषयायिन्] १ भौतिकवादी। नास्तिक। २ सांसारिक व्यक्ति। इंद्रियसुखों में निरत व्यक्ति। विरागी मनुष्य। ३. प्रेम का देवता। कामदेव। ४ राजा। ५ ज्ञानेंद्रिय।

विषयासक्त—वि० [सं० विषय+आसक्त] भोगरत। विलासी [को०]।

विषयासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० विषय+आसक्ति] सांसारिक विषयों के प्रति आसक्त होना। भोगों के प्रति लगाव या प्रेम [को०]।

विषयी¹—संज्ञा पुं० [सं० विषयिन्] १ वह जो भोग विलास या विषय आदि में बहुत अधिक आसक्त हो। विलासी। कामी। २ राजा। ३. कामदेव। ४ जिसके पास बहुत अधिक विषय या धन संपत्ति हो। धनवान। अमीर। ५ विषय को जाननेवाला। विषयज्ञ। उ०—विषयी या ज्ञाता अपने चारों ओर उपस्थित वस्तुओं को कभी कभी अपने तत्कालीन भावों के रंग में देखता है।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १८।१६। ६. भौतिकवादी। ७ ज्ञानेंद्रिय (को०)। ८ ज्ञान (को०)। ९ उपमेय। (अलंकारशास्त्र)।

विषयी²—वि० कामुक। इंद्रियपरायण।

विषयीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को विचार का विषय बनाना [को०]।

विषयीय¹—संज्ञा पुं० [सं०] विषय। सांसारिक पदार्थ।

विषयीय²—वि० विषय संबंधी [को०]।

विषयैषी—वि० [सं० विषयैषिन्] विषयलोलुप। भोगेच्छु [को०]।

विषयोपरम—संज्ञा पुं० [सं०] विषयों से उपरम या विरक्ति [को०]।

विषयोपसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषयों के प्रति आसक्ति [को०]।

विषरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अतिविषा। अतीस। २ मीठी नीम। घोड़ानीम। ३ रेणुका।

विषल—संज्ञा पुं० [सं०] विष। जहर।

विषलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रवारुणी नाम की लता। २ मृणाल। कमलनाल।

विषलांगल—संज्ञा पुं० [सं० विषलाङ्गल] कलिहारी।

विषवंचिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विषवञ्चिका] बिच्छू नामक पौधा।

विषवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषवल्ली'।

विषवल्लि, विषवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी नाम की लता।

विषविटपी—संज्ञा पुं० [सं० विषविटपिन्] जहरीला पेड़ [को०]।

विषविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] मंत्र आदि की सहायता से झाड़ फूँककर विष उतारने की विद्या।

विषविधान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषविधि'।

विषविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन व्यवहारशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की परीक्षा या दिव्य जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति अपराधी है या नहीं। विशेष दे० 'दिव्य'।

विषवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ गूलर। २ विष का वृक्ष। विषमय फल देनेवाला वृक्ष। उ०—माँ, क्या कठोर और क्रूर हाथों से ही राज्य सुशासित होता है ? ऐसा विषवृक्ष लगाना क्या ठीक होगा।—अजात, पृ० २५।

विषवृक्ष न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय जिसके अनुसार अपनी उत्पन्न की हुई हानिकारक वस्तु भी स्वय नष्ट नही करनी चाहिए [को०]।

विषवेग—संज्ञा पुं० [सं०] विष की व्याप्ति। विष की लहर। विष का प्रभाव [को०]।

विषवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मंत्र तंत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो।

विषवैरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी नामक घास।

विष व्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर मे विष भिदने की अवस्था। २ विष का प्रभाव [को०]।

विषव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] जहरीला फोडा। जहरबाद [को०]।

विषशालूक—संज्ञा पुं० [सं०] कमलकद। भसीड।

विषशूक—संज्ञा पुं० [सं०] भीमरोल नामक कीडा।

विषशृंगी—संज्ञा पुं० [सं० विषशृङ्गिन्] भीमरोल नामक कीडा।

विषसयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर। सेंदुर।

विषसूचक—संज्ञा पुं० [सं०] चकोर नामक पक्षी।

विषसृक्क—संज्ञा पुं० [सं० विषसृक्कन्] विषशूक। भृगरोल [को०]।

विषहंता[१]—संज्ञा पुं० [सं० विषहन्तृ] सिरिस का पेड।

विषहंता[२]—वि० जिससे विष का प्रभाव दूर हो। विषनाशक।

विषहंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विषहन्त्री] १ अपराजिता। २. निर्विषी।

विषह[१]—वि० [सं०] जो विष का नाश करता हो। विषघ्न।

विषह[२]—संज्ञा पुं० १ देवदाली। २ निर्विषी।

विषहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह औषध या मंत्र आदि जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। २ भटेउर। चोरक। घनहर।

विषहरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली। वदाल। २ निर्विषी। ३ मनसादेवी का एक नाम।

विषहरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनसा देवी का एक नाम।

विषहा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली। बंदाल। २ निर्विषी।

विषहा[२]—संज्ञा पुं० [सं० विषहन्] १. वह जो विषघ्न हो या विष दूर करनेवाला हो। २ एक प्रकार का कदंब वृक्ष। भुँइकदंब [को०]।

विषहारक—संज्ञा पुं० [सं०] भुइँकदंब।

विषहारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी नामक घास।

विषहीन—वि० [सं०] जिसमे विष न हो [को०]।

विषहृदय—वि० [सं०] कुटिल मनवाला। कपटी [को०]।

विषहेति—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प [को०]।

विषह्य—वि० [सं० वि + सह्य (सह)] १ सहन करने योग्य। जो बर्दाश्त किया जा सके। २ जिसका निर्धारण या निश्चय किया जा सके। ३ संभव। शक्य। ४ पराभूत करने योग्य [को०]।

विषांकुर—संज्ञा पुं० [सं० विषाङ्कुर] १ तीर जिसकी नोक विष युक्त हो। २. भाला। कुंत [को०]।

विषांगना—संज्ञा स्त्री० [सं० विषाङ्गना] दे० 'विषकन्या'।

विषांतक—संज्ञा पुं० [सं० विषान्तक] १. वह जिससे विष का नाश हो। २ शिव का एक नाम।

विषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अतिविषा। अतीस। २. कलिहारी। ३. कडुवी कँदूरी। ४ कड़वी तरोई। ५. काकोली। ६ बुद्धि। अक्ल।

विषाक्त—वि० [सं०] जिसमे विष मिला हो। विषयुक्त। विषपूर्ण। जहरीला।

विषाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।

विषाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० विष + अग्नि] विष की ज्वाला या दाह विषप्रयोगजन्य शरीरदाह [को०]।

विषाग्रज—संज्ञा पुं० [सं०] कृपाण। तलवार [को०]।

विषाण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुट या कूट नामक ओषधि। २ हाथी दाँत। ३ पशु का सीग। ४ मेढासिंगी। ५ वाराहीकद। गेंठी। ६ ऋषभक नामक ओषधि। ७. सूअर का दाँत। ८ इमली। ९ फूंककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का सीग का बाजा। शृंगी। उ०—नवशिशु मंजु विषाण हुए कई। रणित शृ ग हुए वहु साथ ही।—प्रिय०, पृ० २। १० चोटी। सिरा (को०)। ११ कुचाग्र। चुचुक (को०)। १२ अपने वर्ग का प्रधान। १३ तलवार या चाकू (को०)। १४. ककडे का पजा (को०)। १५ सीग जैसी शिव के सिर पर बँधी हुई जटा (को०)।

विषाणक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २ सींग [को०]।

विषाणकोश—संज्ञा पुं० [सं०] सीग का खोखला भाग [को०]।

विषाणांत—संज्ञा पुं० [सं० विषाणान्त] गणेश जी का दाँत।

विषाणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेढासिंगी। २. सातला नाम का थूहर। ३. काकडासिंगी। ४ आवर्तकी या भगवतवल्ली नाम की लता। ५ सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओषधि। ७ काकोली।

विषाणी[१]—संज्ञा पुं० [सं० विषाणिन्] १ वह जिसे सीग हो। सीगवाला। २ हाथी। ३ सूअर। ४ साँड। सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओषधि।

विषाणी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षीर काकोली। २ ऋषभक नामक ओषधि। ३ मेढासिंगी। ४. वृश्चिकाली। बिछाती। ५ इमली। ६ सिंघाडा। ७ विष। जहर। ८ भगवतवल्ली या आवर्तकी नाम की लता।

विषाद्—संज्ञा पुं० [सं०] हलाहल विष खानेवाले, शिव।

विषाद[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. खेद। दुःख। रंज। २ निराशा। हताशा। नैराश्य (को०)। ३ जड या निश्चेष्ट होने का भाव। ४ काम करने को बिलकुल जी न चाहना। थकना। म्लान अवस्था (को०)। ५. मूर्खता। वेवकूफी। ६. एक प्रकार का संचारी भाव (को०)।

विषाद[२]—संज्ञा पुं० [सं० विष + √अद् (= भक्षण)] विष पीनेवाले शिव। शंकर [को०]।

विषाद³—वि० विषभक्षी। विष खानेवाला [को०]।

विषादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कष्ट। दु ख। खेद। रज। २ निराशा। ३ एक काव्यालकार, जो वहाँ होता है जहाँ इच्छा के विपरीत निराशा हाथ लगती है। जैसे—हौं सोई सखि सुपन मे मन भावन के पास। छोर छरा को छुवत ही आनि जगाओ माम।—मति० ग्र०, पृ० ६०।

विषादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पलाशी नाम की लता। २. इद्रवारुणी।

विषादित—वि० [सं०] विषण्ण। विषादयुक्त। खिन्न [को०]।

विषादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषाद का धर्म या भाव।

विषादित्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषादिता' [को०]।

विषादिनी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पलाशी नाम की लता। २. इद्रवारुणी।

विषादिनी²—वि० स्त्री० [सं०] विष पीनेवाली। उ०—विचर रही निर्मम अबाध तुम, विश्व विषादिनी, लोकप्रसादिनी।—रजत०, पृ० ७६।

विषादी¹—संज्ञा पुं० [सं० विषादिन्] वह जिसे विषाद हो। विषाद युक्त। दु खी व्यक्ति।

विषादी²—वि० विष खानेवाला [को०]।

विषादाश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दु ख या निराशा के कारण उत्पन्न आँसू।

विषानन—संज्ञा पुं० [सं०] साप।

विषान्न—संज्ञा पुं० [सं० विष+अन्न] विषमिश्रित भोजन [को०]।

विषापवादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष का प्रभाव दूर करने की एक मात्रिक क्रिया [को०]।

विषापवादी—वि० [सं० विषापवादिन्] विष को दूर करनेवाला [को०]।

विषापह¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोखा नामक वृक्ष। मुष्कक। २. वह जिससे विष का नाश हो। ३ गरुड [को०]।

विषापह²—वि० विष का प्रभाव नष्ट कर देनेवाला [को०]

विषापहरण—संज्ञा पुं० [सं०] विष का प्रभाव हटाना [को०]।

विषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रवारुणी। इद्रायन। २ निर्विषी। ३ नागदमन। ४ अर्कपत्रा। इसरौन। ५ सर्पककाली। ६ सर्पदष्ट्रा। इस्पद। ७ त्रिपर्णी नामक कद।

विषाभावा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी [को०]।

विषायका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी।

विषायुध—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। २ वह अस्त्र जो जहर मे बुझाया गया हो। ३ विषैला जतु (को०)।

विषार—संज्ञा पुं० [सं०] विषैला साँप।

विषाराति—संज्ञा पुं० [सं०] काला धतूरा।

विषारि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाचचु या चेंच नामक साग। २ घीकरज।

विषारि²—वि० जिससे विष का नाश होता हो।

विषाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की मछली जिसका मास वायु और कफ बढानेवाला माना जाता है।

विषालु—वि० [सं०] विषैला। जहरीला [को०]।

विषासहि—वि० [सं०] विजेता। जयी। विजयी [को०]।

विषास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। २ जहर मे बुझाया हुआ अस्त्र।

विषास्य—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

विषास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिलावाँ।

विषी¹—संज्ञा पुं० [सं० विषिन्] १ विषपूर्ण वस्तु। जहरीली चीज। २ विषधर सर्प। जहरीला साँप।

विषी²—वि० [हिं० विष ?] विषयुक्त। जहरीला।

विषु—वि० [सं०] १. समान रूप से। २ विविध प्रकार से। अनेक प्रकार से। ३. समान। तुल्य [को०]।

विषुण¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुण²—वि० १ अनेक रंग का। बहुरूपा। २ सर्वग। सर्वगत। ३ विप्रकीर्ण। बिखरा हुआ। ४ पराड्मुख [को०]।

विषुद्रुह—संज्ञा पुं० [सं०] वाण। तीर।

विषुप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुप्त—वि० [सं०] गहरी नींद मे पड़ा हुआ। विसुप्त [को०]।

विषुव—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार वह समय जब सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनो बराबर होते हैं।

विशेष—ऐसा समय वर्ष मे दो बार आता है। एक तो और चैत मास की नवी तिथि या अग्रेजी २१ मार्च को, और दूसरा और आश्विन को नवी तिथि या अग्रेजी २२ सितंबर को। विशेष दे० 'विषुव रेखा'।

यौ०—विषुवच्छाया। विषुवदिन। विषुवरेखा। विषुवसमय।

विषुवच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दोपहर के समय पड़नेवाली धूपघड़ी के शंकु की छाया [को०]।

विषुवत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुवत्रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषुवरेखा'।

विषुवद्वलय—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा।

विषुवद्वृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा।

विषुवद्दिन,विषुवद्दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] वह दिन जब दिन और रात बराबर हो [को०]।

विषुवद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा के नीचे आनेवाले देश या भूभाग [को०]।

विषुवरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्यभाग मे बेंडे बल मे या पूर्व पश्चिम पृथ्वी के चारो मानी जाती है।

विशेष—यह रेखा दोनो मेरुओं के ठीक मध्य मे दोनो से समान अंतर पर है। आकाश मे इस रेखा से उत्तर की ओर मेष से कन्या तक की पहली छह राशियाँ और दक्षिण की ओर तुला से मीन तक की छह राशियाँ हैं। इसे 'निरक्ष वृत्त' भी कहते हैं।

विषूचक—संज्ञा पुं० [सं०] विषूचिका नामक रोग।

विपूचिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विसूचिका'। उ०—जिस अजीर्ण मे बादी देह को सूई के सदृश पीडा देय अर्थात् सूई सी चुभे उसको वैद्य विपूचिका कहते हैं।—माधव०, पृ० ६६।

विषै(पु)—सज्ञा पु० [स० विषय] दे० 'विषय' उ०—विषई विषै सब विष की खानी। ए सब कहिए जम सहिदानी।—कबीर सा०, पृ० ८०६।

विषैक(पु)—वि० [स० विषयक] दे० 'विषयक'। उ०—(क) सुत विषैक तव पद रति होऊ।—मानस, १।१५१। (ख) अब सुनि कृष्ण विषैक निरोध। जदपि अनत अखडित बोध।—नद० ग्रं०, पृ० २१७।

विषैला—वि० [स० विष + हिं० एला (प्रत्य०)] विषवाला। जहरीला।

विषौषधी—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदंती।

विष्कंद—सज्ञा पुं० [स० विष्कन्द] १ तितर बितर होना। बिखरना। २. जाना। गमन। दूर गमन [को०]।

विष्कध—सज्ञा पु० [स० विष्कन्ध] १ वह जो गति को रोकता हो। २. बाधा। विघ्न।

विष्कधाजीर्ण—सज्ञा पु० [स० विष्कन्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

विशेष—रोग जिसमे रोगी के शरीर मे शूल के समान पीडा होती है, उसका पेट फूल जाता है और वह मल या अपान वायु का त्याग नही कर सकता।

विष्कभ—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भ] १ फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगो मे से पहला योग।

विशेष—आरंभ के पाँच दंडो को छोडकर शुभ कार्य के लिये यह योग बहुत अच्छा समझा जाता है। कहते हैं, इस योग मे जन्म लेनेवाला मनुष्य सब बातो मे स्वाधीन और भाई बंधु आदि से सदा सुखी रहता है।

२. विस्तार। ३ बाधा। विघ्न। ४ साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक का एक प्रकार का अक जो प्रायः गर्भांक के समीप होता है। उ०—आज अमरता का जीवित हूँ मैं वह भीषण जर्जर दंभ, आह सर्ग के प्रथम अक का अधम पात्र मय सा विष्कभ।—कामायनी, पृ० १८।

विशेष—जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमे मध्यम पात्रो द्वारा सूचना दी जाती है। यह दो प्रकार का होता है—शुद्ध और सकीर्ण। जब एक या अनेक मध्यम पात्र इसका प्रयोग करते हैं, तब यह शुद्ध कहलाता है। और जब मध्यम तथा नीच पात्रो द्वारा इसका प्रयोग होता है, तब इसे सकीर्ण कहते है। शुद्ध विष्कभ मे मध्यम पात्रो का वार्तालाप सस्कृत भाषा मे और सकीर्ण विष्कभ मे मध्यम तथा नीच पात्रो का वार्तालाप प्राकृत भाषा मे होता है। शुद्ध का उदाहरण मालतीमाधव के पाँचवें अक मे कुडलाकृत प्रयोग और सकीर्ण का रामाभिनद मे क्षपणक और कापालिककृत प्रयोग है।

५ योगियो का एक प्रकार का बध। ६ वाराहपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम। ७. वृक्ष। पेड़। ८. अर्गल। ब्योडा। ९ दे० 'बडेरा।' बँडेरी (को०)। १०. स्तंभ। खभा (को०)। ११ मथनदड जिसमे रस्सी लपेटकर दधिमथन करते हैं (को०)। १२ किसी वृत्त या घेरे का व्यास (को०)। १३ क्रियाशीलता। कार्य मे निरत रहना (को०)।

विष्कभक—सज्ञा पु० [स० विष्कम्भक] दे० 'विष्कभ'।

विष्कभन—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भन] १ बाधा उपस्थित करना। २ विस्तृत करना। ३. विदारण करने, खोलने या फाडने का उपकरण [को०]।

विष्कंभित—वि० [स० विष्कम्भित] १ बाधायुक्त। अवरुद्ध २. दूरीकृत। अस्वीकृत। ३. (किसी वस्तु से) पूर्णत. युक्त [को०]।

विष्कभी¹—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भिन्] १. शिव जी का एक नाम। २ अर्गल। ब्योडा। ३. एक तात्रिक देवी (को०)। ४ एक बोधिसत्व (को०)।

विष्कंभी²—वि० बाधा डालनेवाला। बाधक [को०]।

विष्क—सज्ञा पुं० [स०] वह हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो गई हो।

विष्कन्न—वि० [स०] १. इतस्तत.। बिखरा हुआ। २. गत। जो चला गया हो [को०]।

विष्कब्ध—वि० [स०] स्थिर किया हुआ। जिसे टिकाया गया हो। अवलबित [को०]।

विष्कर—सज्ञा पु० [सं०] १. पक्षी। चिडिया। २ अर्गल। ब्योडा। ३. एक दानव का नाम। ४. युद्ध का एक ढंग (को०)।

विष्कल—सज्ञा पु० [स०] सूअर। ग्रामशूकर।

विष्कलन—सज्ञा पु० [स०] भोजन। आहार।

विष्किर—सज्ञा पुं० [स०] १. पक्षी। चिडिया। २. वे पक्षी जो अन्न को इधर उधर छितराकर नखो से कुरेदकर खाते हैं। जैसे,—कबूतर, मुरगा, तीतर, बटेर आदि। ३ दर्वीकर नामक जाति के साँपो के अंतर्गत एक प्रकार का साँप। ४. एक अग्निविशेष (को०)। ५ फाडकर टुकडे टुकडे करना (को०)।

विष्कुभ—सज्ञा पु० [स० विष्कुम्भ] दे० 'विष्कभ' १।

विष्टभ—सज्ञा पु० [स० विष्टम्भ] १ बाधा। रुकावट। २. एक प्रकार का रोग जिसमे मल रुकने के कारण रोगी का पेट फूल जाता है। अनाह। विबध। ३ आक्रमण। चढाई। ४. अच्छी तरह से जमाना। ७ कदम रखना। डग भरना (को०)। ८. अवलब आसरा। सहारा (को०)। ९ सहन। बरदाश्त (को०)।

विष्टभन—सज्ञा पु० [स० विष्टभन] १. रोकने या संकुचित करने की क्रिया। २ वह जो रोकता या सकुचित करता हो।

विष्टभित—वि० [स० विष्टम्भित] १ मजबूती से खडा किया हुआ। अच[illegible]। २ (किसी वस्तु से) भरा या पूर्ण ढका

विष्टभी¹ [illegible] विष्टम्भिन्] वह पदार्थ जिसे पेट का मल [illegible] देनेवाला। २ स्तभित करने [illegible] रोग युक्त। ४. विष्टभ [illegible]

विष्ट—वि० [सं० विश्+क्त (प्रत्य०)] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। २ सहित। युक्त [को०]।

विष्टप—संज्ञा पुं० [सं०] १ भुवन। लोक। २ पात्र। प्याला (को०)।

विष्टपहारी—वि० [सं० विष्टपहारिन्] भुवनमोहन। सबको लुभानेवाला [को०]।

विष्टप्¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग लोक। २. जगत्। दुनिया। भुवन। संसार (को०)।

विष्टप्²—संज्ञा स्त्री० सिरा चोटी। ऊँचाई (को०)।

विष्टब्ध—वि० [सं०] १ अच्छी तरह से जमाया हुआ। २ टेक लगा हुआ। सहारा दिया हुआ। ३ रोका हुआ। अवरुद्ध। स्तमित। गतिहीन। ५ भरा हुआ। ६ जो पचा न हो। ७ कठोर। कर्कश। कड़ा [को०]।

विष्टब्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] टेक लगाना या देना। सहारा देना। मजबूती से स्थिर करना [को०]।

विष्टभ—संज्ञा पुं० [सं०] लोक। संसार [को०]।

विष्टभित—वि० [सं०] जो घर अपनी जगह दृढतापूर्वक स्थापित किया हुआ हो (को०)।

विष्टर¹—वि० [सं०] विस्तृत। लंबा चौड़ा [को०]।

विष्टर²—संज्ञा पुं० [सं०] १ आक। मदार। २ वृक्ष। पेड़। ३ पीठ। ४. कुश का बना हुआ आसन। कुशास्तर। आसन। ५ मुट्ठी भर कुश (को०)। ६ यज्ञ में ब्रह्मा का आसन (को०)। ७ पचीस कुशाओं से बना हुआ एक आसन। ८ एक देवता (को०)।

विष्टरपंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्टरपङ्क्ति] एक वैदिक छंद।

विष्टरबृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद।

विष्टरभाक्—वि० [सं० विष्टरभाज्] जो आसन पर उपविष्ट हो। आसन पर बैठा हुआ [को०]।

विष्टरश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० विष्टरश्रवस्] १. विष्णु। नारायण। २ २ कृष्ण (को०)। ३ शिव (को०)।

विष्टरस्थ—वि० [सं०] आसन पर बैठा हुआ [को०]।

विष्टरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुडासिनी नामक घास।

विष्टराश्र—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथु के एक पुत्र का नाम।

विष्टरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली केतकी।

विष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विष्ठा'।

विष्टार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुश या घास का आस्तरण। २ एक वैदिक छंद [को०]।

विष्टारपंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्टारपङ्क्ति] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसके प्रथम और चतुर्थ चरणों में १२ वर्ण होते है।

विष्टारबृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद का नाम जिसके पहले और चौथे चरणों में ८ और दूसरे तथा तीसरे चरणों मे १० वर्ण होते है।

विष्टारी—वि० [सं० विष्टारिन्] विस्तारयुक्त। विस्तृत। आयामयुक्त। फैला हुआ [को०]।

विष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह काम जो बिना कुछ पुरस्कार दिए कराया जाय। बेगार। २ वेतन। तनख्वाह। ३ काम। ४ वर्षा। ५ फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवाँ करण जिसे विष्टिभद्रा भी कहते हैं। उ०—विष्टि करण नाम से कही जाती है।—बृहत्०, पृ० ४४२। ६. व्याप्ति। फैलाव (को०)। ७ प्रेषण। भेजना (को०)। ८ दे० 'विष्टिकारी' (को०)। ९. नरकवास। नरक में पड़ना (को०)।

विष्टिकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल में राज्य का वह बड़ा सैनिक कर्मचारी जिसे अपनी सेना रखने के लिये राज्य की ओर से जागीर मिला करती थी। २ अत्याचारी। ३ बेगारों या दासों का अधिकारी (को०)।

विष्टिकर्मांतिक—संज्ञा पुं० [सं० विष्टिकर्मान्तिक] विष्टिकारी। वह जिससे बिना भृति दिए काम कराया जाय [को०]।

विष्टिकारी—संज्ञा पुं० [सं० विष्टिकारिन्] दे० 'विष्टिकर्मांतिक' [को०]।

विष्टिकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] बेगार। सेवक। दास [को०]।

विष्टिभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विष्टि'—५।

विष्टिव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत।

विष्ठल—संज्ञा पुं० [सं०] दूर का स्थान। दूरवर्ती स्थान। वह जगह जो निकट न हो [को०]।

विष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मल। मैला। गुह। पाखाना। २ पेट। उदर (को०)। ३ मध्यभाग। अंतर (को०)।

विष्ठाभुक्—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर।

विष्ठाभू—संज्ञा पुं० [सं०] मल में उत्पन्न होनेवाला कृमि [को०]।

विष्ठाभूदारक—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रामशूकर [को०]।

विष्ठारुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली केतकी।

विष्ठाशी—संज्ञा पुं० [सं० विष्ठाशिन्] सूअर।

विष्ठित—वि० [सं०] उपस्थित। पार्श्ववर्ती [को०]।

विष्टेष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हल्दी।

विष्णु—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण, पोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्मा के एक विशेष रूप माने जाते हैं।

विशेष—भारतवर्ष में विष्णु को देवता के रूप में बहुत दिनों से मानते चले आते हैं और इनकी उपासना बहुत अधिकता से होती आई है। ऋग्वेद में यद्यपि विष्णु गौण देवता माने गए हैं, पर ब्राह्मण ग्रंथों में इनका महत्व बहुत अधिक है। ऋग्वेद में विष्णु विशाल शरीरवाले और युवक माने गए हैं और कहा गया है कि ये त्रि+वि+क्रम अर्थात् तीन कदमों या डगों से सारे विश्व का अतिक्रमण करनेवाले हैं। पुराणों के वामन अवतार का यही बीज रूप है। कुछ लोगों ने इन तीनों डगों या कदमों का अर्थ सूर्य का दैनिक उदय और अस्त माना है और कुछ लोग इसका अर्थ भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक लेते हैं। इसके प्रतिरिक्त ये नियमित रूप, बहुत दूर तक और जल्दी जल्दी चलनेवाले माने गए हैं। यह भी कहा गया है कि ये इंद्र के मित्र थे और वृत्र के साथ युद्ध करने में इन्होंने इंद्र को सहायता दी थी। विष्णु और इंद्र दोनों मिलकर वातावरण,

अतरिक्ष, सूर्य, उषा और अग्नि के उत्पादक माने गए हैं और विष्णु इस पृथ्वी, स्वर्ग और सब जीवों के मुख्य आधार कहे गए है। ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण मे कुछ ऐसी कथाएँ भी हैं जो पौराणिक काल के वराह, मत्स्य तथा कूर्म अवतार का भी मूल या आरभिक रूप मानी जा सकती हैं। वैदिक काल मे विष्णु धन, वीर्य और बल देनेवाले तथा भक्त लोगो का अभीष्ट सिद्ध करनेवाले माने जाते थे। पुराणों के अनुसार विष्णु समय पर पृथ्वी का भार हलका करने के लिये, ससार मे शाति और सुख की स्थापना करने के लिये और दुष्टो तथा पापियो का नाश करने के लिये अवतार धारण किया करते हैं। विष्णु के कुल चौबीस अवतार कहे गए है, जिनमे से दस मुख्य माने गए हैं (दे० 'अवतार')।

भिन्न भिन्न पुराणो मे विष्णु के सबध मे अनेक प्रकार की कथाएँ और उनकी उपासना आदि का बहुत अधिक माहात्म्य मिलता है। विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाते हैं। इनकी स्त्री का नाम श्री या लक्ष्मी कहा गया है। ये युवक, श्यामवर्ण और चतुर्भुज माने गए हैं। ये चारो हाथो मे शख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए रहते हैं। इनके शख का नाम पाचजन्य, चक्र का नाम सुदर्शन और गदा का नाम कौमोदकी है। इनकी तलवार का नाम नदक और धनुष का नाम शार्ङ्ग है। इनका वाहन वैनतेय नामक गरुड माना जाता है। पुराणो मे इनके एक हजार नाम माने गए हैं, और उन नामों का जप बहुत शुभ फल देनेवाला माना जाता है। नारायण, कृष्ण, वैकुंठ, दामोदर, केशव, माधव, मुरारि, अच्युत, हृषीकेश, गोविंद, पीतांबर, जनार्दन, चक्रपाणि, श्रीपति, मधुसूदन, हरि आदि इनके प्रसिद्ध नाम है।

२ अग्नि। ३. वसु देवता। ४ बारह आदित्यो मे से पहले आदित्य का नाम। ५ एक प्राचीन ऋषि जिनका बनाया हुआ धर्मशास्त्र प्रचलित है। ६ श्रवण नाम का नक्षत्र (को०)। ७ वह जो पुण्यात्मा हो। सत (को०)।

विष्णुऋक्ष—सज्ञा पुं० [स०] श्रवण नक्षत्र का एक नाम।

विष्णुकद—सज्ञा पुं० [स० विष्णुकन्द] एक प्रकार का बडा कद जो प्राय कोकण प्रदेश मे होता है। वैद्यक मे यह मधुर, शीतल, रुचिकारी, तृप्तिकारक तथा दाह, पित्त और सूजन को दूर करनेवाला माना जाता है।

पर्या०—विष्णुगुप्त। सुपुष्ट ? (सुपुट)। बहुसपुट। जलवासा। बृहत्कद। दीर्घपत्र। हरिप्रिय।

विष्णुकाची—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुकाञ्ची] दक्षिण के एक प्राचीन तीर्थ का नाम। कहते है कि इसकी स्थापना शकराचार्य ने की थी।

विष्णुकाता—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुकान्ता] नीली अपराजिता। नीली कोयल लता।

विष्णुकाती—सज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकान्ती] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विष्णुकाक—सज्ञा पुं० [स०] नीला अपराजिता। नीली कोयल लता।

विष्णुक्रात—सज्ञा पुं० [स० विष्णुक्रान्त] १ इश्कपेंचा नामक लता या उसका फूल। २. सगीत मे एक प्रकार का ताल।

विष्णुक्राता—सज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ता] १. नीली अपराजिता या कोयल नाम की लता। २ वाराहीकद। गेंठी। ३ नीले फूलवाली शखाहुली।

विष्णुक्राति—सज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ति] अपराजिता या कोयल नाम की लता।

विष्णुक्षेत्र—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विष्णुगगा—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुगङ्गा] एक प्राचीन नदी का नाम।

विष्णुगधि—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुगन्धि] लाल फूल की शखाहुली।

विष्णुगुप्त—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो लोक मे कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध थे। कहते हैं, एक बार शिव जी इनपर बहुत कुपित हुए थे। उस समय विष्णु ने इनकी रक्षा की थी। २ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम। विशेष दे० 'चाणक्य'। ३. बडी मूली। ४. विष्णुकद। ५ वात्स्यायन मुनि का नाम (को०)।

विष्णुगुप्तक—सज्ञा पुं० [स०] बडी मूली।

विष्णुगृह—सज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु भगवान का मदिर। २ एक नगर। स्तबपुर। ताम्रलिप्त [को०]।

विष्णुगोल—सज्ञा पुं० [स०] विषुवत् रेखा [को०]

विष्णुग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुग्रन्थि] शरीर की एक संधि [को०]।

विष्णुचक्र—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु के हाथ का चक्र। सुदर्शन चक्र।

विष्णुज—सज्ञा पुं० [स०] अठारहवें कल्प का नाम [को०]।

विष्णुज'—वि० जो विष्णु नक्षत्र मे उत्पन्न हो। श्रवण नक्षत्र मे जन्म लेनेवाला [को०]।

विष्णुजन—सज्ञा पुं० [स०] संत। महात्मा। तपस्वी [को०]।

विष्णुतिथि—सज्ञा स्त्री० [स०] एकादशी और द्वादशी दोनो तिथियाँ जिनके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुतैल—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो वातरोगो के लिये बहुत उपकारी माना जाता है।

विष्णुत्व—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का भाव या धर्म।

विष्णुदत्त—सज्ञा पुं० [स०] राजा परीक्षित का एक नाम [को०]।

विष्णुदेवत—सज्ञा पुं० [स०] श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुदैवत्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हो। २. श्रवण नक्षत्र [को०]।

विष्णुदैवत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ के प्रत्येक पक्ष की एकादशी और द्वादशी तिथि। विष्णु तिथि [को०]।

विष्णुद्वीप—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

विष्णुधर्म—सज्ञा पुं० [स०] १ वह धर्म जिसमे विष्णु की वैदिक उपासना होती है। २ एक प्रकार का श्राद्ध [को०]।

विष्णुधर्मोत्तर—सज्ञा पुं० [स०] एक उपपुराण का नाम जो विष्णु पुराण का एक अग माना जाता है।

विष्णुधारा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ पुराणानुसार हिमालय से निकली हुई एक नदी का नाम।

विष्णुपंजर—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुपञ्जर] पुराणानुसार विष्णु का एक कवच ।

विशेष—कहते हैं, यह कवच धारण करने से सब प्रकार के भय दूर हो जाते हैं ।

विष्णुपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु की स्त्री, लक्ष्मी । २ अदिति का एक नाम ।

विष्णुपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल । २. आकाश । आसमान । वियद् । ३ विष्णु का चरणचिह्न जो गया में है (को०) । ४ क्षीरसागर, दुग्ध समुद्र (को०) । ५ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम (को०) । ६ एक पर्वत (को०) । ७ भौहों का मध्य भाग । भ्रूमध्य (को०) ।

विष्णुपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा नदी जो विष्णु के पैरों से निकली हुई मानी जाती है । २ वृष, वृश्चिक, कुंभ और सिंह इनमें से प्रत्येक की संक्रांति । ३ द्वारिका पुरी (को०) ।

विष्णुपदीचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में शुभाशुभ फल का ज्ञापक एक नराकार चक्र (को०) ।

विष्णुपरायण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का भक्त, वैष्णव ।

विष्णुपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी । पिठवन ।

विष्णुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँआँवला ।

विष्णुपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] तान्त्रिकों के अनुसार एक पीठ या तीर्थ-स्थान का नाम ।

विष्णुपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह प्रमुख पुराणों में से एक ।

विष्णुपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु के रहने का स्थान, वैकुंठ ।

विष्णुप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी का पौधा । २ लक्ष्मी ।

विष्णुप्रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की पूजा के निमित्त ब्राह्मण को दी जानेवाली भूमि (को०) ।

विष्णुभ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु नक्षत्र । श्रवण नक्षत्र (को०) ।

विष्णुभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवत्सेवा (को०) ।

विष्णुमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

विष्णुमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वलौकिक नाम । अमुक । फलाँ (को०) ।

विष्णुयशा—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुयशस्] पुराणानुसार वह व्यक्ति जो ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता होगा ।

विष्णुयान—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड (को०) ।

विष्णुरथ—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड ।

विष्णुरात—संज्ञा पुं० [सं०] राजा परीक्षित का एक नाम ।

विशेष—कहते हैं, अश्वत्थामा ने इन्हें गर्भ में ही मार डाला था, पर विष्णु ने इन्हें फिर से जिला दिया, इसी से इनका यह नाम पड़ा ।

विष्णुलिंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुलिङ्गी] बटेर ।

विष्णुलोक—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का निवासस्थान, वैकुंठ । गोलोक ।

विष्णुवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुलसी का पौधा । २ लक्ष्मी (को०) । ३. अग्निशिखा । कलिहारी ।

विष्णुवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड ।

विष्णुवाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विष्णुवाहन' ।

विष्णुवृद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

विष्णुशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

विष्णुशिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालिग्राम ।

विष्णुश्रृंखल—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुश्रृङ्खल] वह द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में हो । इसकी गणना योग और पुण्यकाल में होती है ।

विष्णुश्रुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम । २ एक प्रकार का आशीर्वाद वचन जिसका अभिप्राय है कि यह सुनकर विष्णु तुम्हारा मंगल करें ।

विष्णुसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्मृति का नाम ।

विष्णुसर्वज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जो सायण के गुरु माने जाते हैं ।

विष्णुस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्मृति जिसका उल्लेख याज्ञवल्क्य आदि ने किया है ।

विष्णुस्वामी—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुस्वामिन्] कृष्णभक्तिपरक विष्णु-स्वामी संप्रदाय के प्रवर्तक का नाम । उ०—इन विष्णु स्वामी संप्रदाय दृढ करि ताको सार जो सेवा प्रकार ताको प्रकास कियो है ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १४४ ।

विष्णुहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुलसी का पौधा । २ मरुआ ।

विष्णूत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] वह भूदान जो विष्णुपूजा के निमित्त किया जाय (को०) ।

विष्पंद—संज्ञा पुं० [सं० विष्पन्द] १. स्पंदन । धड़कन । २ आटे, घी और चीनी से बना हुआ एक व्यंजन (को०) ।

विष्पंदन—संज्ञा पुं० [सं० विष्पन्दन] दे० 'विष्पंद' ।

विष्पत्री—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी । चिड़िया ।

विष्पर्धा¹—संज्ञा पुं० [सं० विष्पर्धस्] स्वर्ग ।

विष्पर्धा²—वि० जिस किसी प्रकार की स्पर्धा या मत्सर आदि न हो ।

विष्पर्धा³—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्पर्धा । होड़ । लाग डाँट (को०) ।

विष्पित—संज्ञा पुं० [सं०] कठिनता । कठिनाई । मुश्किल (को०) ।

विष्पुलिंगक—वि० [सं०] चिनगारी या स्फुलिंग युक्त (को०) ।

विष्फार—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनुष की टंकार । २, विस्तार । फैलाव । विस्फार (को०) ।

विष्फुलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] आग की चिनगारी । अग्निकण (को०) ।

विष्यंद—संज्ञा पुं० [सं० विष्यन्द] १ बूँद । बिंदु । २ बहना । क्षरण । प्रवाह ।

विष्यंदन—संज्ञा पुं० [सं० विष्यन्दन] १. बहना । चूना । २. एक मिठाई । दे० 'विष्यंद' । ३ उफनकर बहना । ४. पिघलना । तरल होना (को०) । ५. विलीन होना । मिल जाना ।

विष्यंदी—वि० [सं० विष्यन्दिन्] प्रवाही । तरल (को०) ।

विष्य—वि० [सं०] जो विष देकर मार डालने के योग्य हो । जहर देकर मार डालने के लायक ।

विष्व—वि० [सं०] १. हानिकर । पीडाकर । उत्पातकारी । २. हिंसक । हिंस्र (को०) ।

विष्वक्[1]—संज्ञा पुं० [सं० विष्वच्] १ वह जो सदा इधर उधर घूमता फिरता रहे। २ दे० 'विषुव'।

विष्वक्[2]—क्रि० वि० सर्वत्र। चारो ओर (को०)।

विष्वक्[3]—वि० सर्वत्र जानेवाला। सर्वव्यापक। २. विभागों मे अलग अलग करनेवाला। ३ भिन्न।

विष्वक्पर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुईंआँवला।

विष्वक्सेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। २ एक मनु का नाम जो मत्स्यपुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णुपुराण के अनुसार चौदहवें हैं। ३. शिव का एक नाम। ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ५ पुराणानुसार शंकर के एक पुत्र का नाम। ६ विष्णु का एक पार्षद (को०)।

यौ०—विष्वक्सेनकांता = प्रियंगु। विष्वक्सेनप्रिया = (१) प्रियंगु। (२) लक्ष्मी।

विष्वक्सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु।

विष्वग्गति—वि० [सं०] सर्वत्र गमन करनेवाला (को०)।

विष्वग्लोप—संज्ञा पुं० [सं०] दुबधा। संभ्रम। सक्षोभ। विघ्न।

विष्वग्वात, विष्वग्वायु—संज्ञा पुं० [सं०] सब ओर से बहनेवाली एक प्रकार की वायु।

विष्वाणन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन। २. वर्णित करना। शब्द उत्पन्न करना (को०)।

विष्वाण—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन। खाना (को०)।

विसकट[1]—संज्ञा पुं० [सं० विसङ्कट] १. इंगुदी या हिंगोट नामक वृक्ष। २. सिंह। शेर।

विसकट[2]—वि० विशाल। खौफनाक। बड़ा। डरावना।

विसकुल[1]—वि० [सं० विसङ्कुल] संकुलतारहित। आकुलतारहित। धैर्यवान्। सुस्थिर।

विसकुल[2]—संज्ञा पुं० अव्यग्रता। व्यग्र न होना। घबराहट न होना (को०)।

विसगत—वि० [सं० विसङ्गत] असगत। बेमेल (को०)।

विसगति—संज्ञा स्त्री० [सं० विसङ्गति] असगति। अनमिलपन।

विसचारी—वि० [सं० विसञ्चारिन्] इतस्तत भ्रमणशील। इधर उधर घूमनेवाला।

विसज्ञ—वि० [सं०] जिसे संज्ञा न हो। बेहोश।

विसंज्ञित—वि० [सं०] संज्ञाहीन (को०)।

विसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विसन्धि] १ बुरी सधि। अभिसंधि। अनभिमत संधि। २. सधि का अभाव जो साहित्य मे एक दोष है (को०)।

विसंधिक—वि० [सं० विसन्धिक] जिनकी सधि न हो सकती हो।

विसभर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विश्वम्भर] दे० 'विश्वंभर'। उ०—तू मेरो बालक हो नंदनंदन, तोहिं विसभर राखैं।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३४।

विसभरा—संज्ञा स्त्री० [सं० विसम्भरा] पल्ली। छिपकली (को०)।

विसभोग—संज्ञा पुं० [सं० विसम्भोग] विरह। पार्थक्य (को०)।

विसंमूढ़—वि० [सं० विसम्मूढ] पूर्णत उन्मत्त (को०)।

विसंयुक्त—वि० [सं०] असंयुक्त। पृथक् (को०)।

विसंवाद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध। २. छल कपट। ३. धोखा। प्रतिज्ञाभंग (को०)। ४ असंगति। असबद्धता। असहमति (को०)। ५ निराश करना (को०)।

विसंवाद[2]—वि० विलक्षण। अद्भुत।

विसंवादक—वि० [सं०] १. वचन भंग करनेवाला। कहकर मुकर जानेवाला। २ छली। धोखेबाज (को०)।

विसंवादन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा भंग करना (को०)।

विसंवादी[1]—वि० [सं० विसंवादिन्] १. वंचक। धूर्त। २ वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला। ३. निराश करनेवाला। ४. खंडन करनेवाला। भिन्न मत रखनेवाला। असहमत (को०)।

विसंवादी[2]—संज्ञा पुं० राग मे अल्पप्रयुक्त स्वर जो संवादी के विरुद्ध होता है (संगीत)।

विसंष्ठुल—वि० [सं०] १ अस्थिर। क्षुब्ध। व्यग्र। २ जो हमवार न हो। असमतल (को०)।

विसंहत—वि० [सं०] १ अलग किया हुआ। ढीला किया हुआ (को०)।

विस[1]—संज्ञा पुं० [सं०] कमल की नाल। मृणाल।

विस†[2]—सर्व० [सं० युष्मद् > वस्] दे० 'उस'।

विसकंठिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विसकण्ठिका] एक प्रकार का छोटा बगला।

विसकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

विसक्ख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विशिख] विशिख। बाण। उ०—उभे दले उचारयं, मचे सु मार मारय। विसक्ख, पारवारए, भर्डा सनाह मारए।—रा० रू०, पृ० ८३।

विसग्रंथि—संज्ञा पुं० [सं० विसग्रन्थि] कमलकंद। भसीड।

विसज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

विसटी†—संज्ञा स्त्री० [देश० तुल० विष्टी] १. ताँबे या पीतल का वह चक्र जिससे नागेसाधु लँगोटी की तरह बाँधते हैं। उ०—कवन मेखला कवन विसटी। कवन सेली कवन किसती।—प्राण०, पृ० ७६। २. कौपीन। चिट। चीरा।

विसतरना(पु)—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] फैलना। विस्तृत होना। उ०—विसतरी बात सारी विसव अणकारी उतपात सी।—रा० रू०, पृ० ६४।

विसदृश—वि० [सं०] १. जो सदृश या समान न हो। विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २ विलक्षण। अद्भुत। अजीब।

विसद्द(पु)—वि० [सं० विशद] निर्मल। स्वच्छ। दे० 'विशद'। उ०—गुलिवक कर्ण राजही। विसद्द हार साजही। पदिक्क सीस शोभयं रिपीस पुंज लोभयं।—प० रासो, पृ० १०।

विसन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विष्णु] दे० 'विष्णु'।

विसनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] कमलिनी। पद्मिनी।

विसन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यसन, प्रा० विसन] १. आदत। दे० 'व्यसन'। उ०—वाघ डरैं नह बैर सुं बाघा बैर विसन्न।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १६। २. विपत्ति। संकट। उ०—वेढ़ा नयौं विसन्न।—रा० रू०, पृ० १३७।

विसप्रसून—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।—नंद० ग्रं०, पृ० ११०।

विसभाग—वि० [सं०] जिसका विभाग या हिस्सा न हो (को०)।

विसम(पु)—वि० [सं० विषम] दे० 'विषम'।

विसमता—संज्ञा स्त्री० [सं० विषमता] दे० 'विषमता'।

विसमाद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विस्मय+ता] १ संशय। शंका। २. दु ख। वेदना। उ०—कडिहारी और ग्रहों को, कोई ना जाने ग्रंत। बिन परचै बिसमाद है, हरषत परचै संत।—कबीर सा०, पृ० ६५।

विसमाव†—संज्ञा पुं० [हिं० विस्माद] दे० 'विस्माद'।

विसमाधना—क्रि० अ० [हिं विसमाध+ना (प्रत्य०)] मसूसना। दु खी होना। शोकातुर होना।

विसमाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] असमाप्ति। पूर्ण न होना (को०)।

विसमै(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० वि०+समय] विकट समय। उ०—सोनागिर चाँपावत हाथ खग तोले। विसमै मैं द्रढ देग कोप बैंग बोले।—रा० रू०, पृ० ११४।

विसमै(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० विस्मय] अचंभा। आश्चर्य। उ०—कहनै मैं विसमै सो देखे बन आवै।—रा० रू०, पृ० ४२।

विसयना†—क्रि० अ० [सं० वि+शयन ?] डूबना। समाप्त होना। अस्त होना।

विसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ आगे जाना। गमन करना। जाना। २ फैलना। बढना। विस्तृत होना। ३ भीड। समूह। झुंड। ४ राशि। ढेर (को०)।

विसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ फैलना। विस्तृत होना। २ सस्त होना। ढीला पडना (को०)।

विसराम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विश्राम] दे० 'विश्राम'। उ०—तन को विसराम अराम घनो करि दीजतु है पै न दीजतु है।—ठाकुर०, पृ० ६।

विसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान। २ त्याग। ३ मल का त्याग करना। शौच। ४ व्याकरण के अनुसार एक वर्ण जिसमे ऊपर नीचे दो विंदु होते है और जिनका उच्चारण प्राय अर्ध ह् के समान होता है। इसका रूप यह (:) होता है। ५. सूर्य का एक अयन। ६ मोक्ष। ७ मृत्यु। ८ प्रलय। ९ वियोग। विछोह। १०. दीप्ति। चमक। ११ सूर्य का दक्षिणायन। वर्षा, शरद और हेमंत ये तीनो ऋतुएँ। १२ भेजना। प्रेषण। विसर्जन। (को०)। १३. गिराना। उडेलना। बूँद बूँद करके गिराना (को०)। १४ क्षेपण। डालना। फेंकना (को०)। १५. निर्माण। रचना (को०)। १६ शिश्न (को०)। १७ सृष्टि का व्यापार (को०)। १८ शिव का नाम (को०)।

विसर्गी—वि० [सं० विसर्गिन्] दान या त्याग करनेवाला (को०)।

विसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ परित्याग। छोडना। उ०—अब मुझे प्राण विसर्जन करने में भी आगा पीछा नही है।—राधाकृष्ण (शब्द०)। २ किसी को यह कहकर भेजना कि तुम जाकर अमुक कार्य करो। ३ विदा होना। चला जाना। प्रस्थान करना। ४. पोडशोपचार पूजन मे अंतिम उपचार अर्थात् आवाहन किए हुए देवता से पुन स्वस्थान गमन की प्रार्थना करना। ५ समाप्ति। अंत। उ०—कथा विसर्जन होति है सुनो वीर हनुमान।—(शब्द०)। ६ दान। ७ मलत्याग (को०)। ८. डालना। गिराना (को०)। ९ चराने के लिये पशुओं का हाँकना (को०)। १० प्रतिमा का जल मे बहाना (को०)। ११. वृषोत्सर्ग। साँड छोड़ना (को०)। १२ निर्माण। रचना (को०)। १३ क्षतिग्रस्त करना (को०)। १४ उत्तर देना (को०)।

विसर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुदा के ऊपरी भाग मे स्थित तीन वलयों मे से एक (को०)।

विसर्जनीय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विसर्ग'।

विसर्जनीय[2]—वि० विसर्जन किया जानेवाला। त्यागने योग्य (को०)।

विसर्जयिता—वि० [सं० विसर्जयितृ] विसर्जन करनेवाला। त्यागनेवाला (को०)।

विसर्जिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रेता युग (को०)।

विसर्जित—वि० [सं०] १ त्यागा हुआ। त्यक्त। २ प्रेषित। भेजा हुआ। ३ हटाया हुआ। च्युत। ४ प्रदत्त।

विसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रोग, जिसमे ज्वर के साथ सारे शरीर में छोटी छोटी फुंसियाँ हो जाती है। २ रेंगना। सरकना (को०)। ३ इधर उधर जाना। हिलना डुलना (को०)। ४. फैलाव। संचार (को०)। ५ किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित दु खद फल (को०)।

विसर्पघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] मोम (को०)।

विसर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] १ फैलना। फैलाव। वृद्धि। बाढ। २ फोडे आदि का फूटना। ३ फेंकना। ४ रेंगना। सरकना। धीरे धीरे चलना (को०)। ५ परित्याग (को०)।

विसर्पि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विसर्पिका'।

विसर्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] विसर्प नामक रोग।

विसर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यवतिक्ता नाम की लता। विशेष दे० 'शंखिनी'।

विसर्पी—वि० [सं० विसर्पिन्] १. प्रसरणशील। फैलनेवाला। उ०—उठ उठ ह्याँ ते भागु तौ लौं अभागे। मम वचन विसर्पी सर्प जौ लौं न लागे।—केशव (शब्द०)। २ रेंगने या सरकनेवाला (को०)। ३ विसर्प रोग से पीडित (को०)।

विसल—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का नया पत्ता। पल्लव। किसलय।

विसल्यकृत—संज्ञा पुं० [सं०] भद्रवल्ली।

विसव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विश्व] जगत्। दुनियाँ। उ०—(क) विसतरी बात सारी विसव अणकारी उतपात सी।—रा० रू०, पृ० ९४। (ख) विसव अवर जवनां वसू करे सको मिल काज।—रा० रू०, पृ० ३६०।

विसवना†—क्रि० अ० [सं० विश्रमण ? या, विसवण] १ अस्त होना। जैसे, दिन विसवना। २. व्यतीत होना। बीतना। जैसे, बेर विसवना।

विसवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० विसवर्त्मन्] वैद्यक के अनुसार आँखों का एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के प्रकोप के कारण पलकों में सूजन हो आती है और उसमें छोटी छोटी फुंसियाँ हो आती हैं जिनमें से पानी बहा करता है।

विसवासह—संज्ञा पुं० [सं०] जावित्री।

विसवासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री।

विसशालूक—संज्ञा पुं० [सं०] कमलकंद। भसींड़।

विसाति(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० बिसात] १ शक्ति। हकीकत। २. गणना। उ०— मुनि सुरपती नाचि बहु भाँति। नर बपुरे की काह बिसाति।—जग० श०, पृ० ६६।

विसामग्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सामग्री या साधन का अभाव। २ कारण का न होना जिससे कार्य की उत्पत्ति हो [को०]।

विसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ मछली। २ निर्गम। निकलना। ३ विस्तार। फैलाव। ४ प्रवाह। बहाव। ५ उत्पत्ति। ६ रेंगना या सरकना (को०)। ७ लकड़ी। काठ (को०)। ८. वल्ली। शहतीर (को०)।

विसारथि—वि० [सं०] जिसके पास सारथी न हो [को०]।

विसारिणी'—वि० [सं० विसारिन्] फैलनेवाली। प्रसरणशील [को०]।

विसारिणी²—संज्ञा स्त्री० [सं०] माषपर्णी। मखवन।

विसारित—वि० [सं०] १ जिसका विसार किया गया हो। २. संपादित [को०]।

विसारी'—वि० [सं० विसारिन्] १. फैलनेवाला। प्रसार करनेवाला। २. विसार करनेवाला। निकलनेवाला। ३. रेंगने या सरकने वाला। ४ विस्तृत [को०]।

विसारी²—संज्ञा पुं० मछली [को०]।

विसारी³—संज्ञा पुं० [सं०] वायुमंडल।

विसाल'—संज्ञा पुं० [अ०] १ संयोग। मिलाप। २ आत्मा का ईश्वर से मिलना। मृत्यु। मौत। ३ प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप।

विसाल(पु)²—वि० [सं० विशाल] दे० विशाल'।

विसावणा(पु)†—क्रि० स० [हिं०] दे० 'बिसाहना'। उ०— वैर हमेस बिसावणा वाड बिना बसणोह।—बाँकी ग्रं०, भा० १, पृ० २३।

विसासी†—वि० [सं० अविश्वासी], [वि० स्त्री० बिसासिनी] दे० 'बिसासी'। उ०— तू उसी बिसासी से पूछ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १४।

विसिंचित—वि० [सं० वि+हिं० सिंचन (सं० सेचन)] सींचा हुआ। उ०—सुमन के जल से विसिंचित कल्प किंचित् विश्व उपवन। —अपरा, पृ० १६५।

विसिख†—संज्ञा पुं० [सं० विशिख] दे० 'विशिख'। उ०—वर्षा अधिक न उगे आज तेरे विरह के विसिख से मारा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७।

विसिनी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। पद्मिनी। मृणाल। २. पद्मसमूह [को०]।

विसिनी†²—संज्ञा पुं० [सं० व्यसनी] दे० 'व्यसनी'।

विसिल—वि० [सं०] मृणाल सदृश [को०]।

विसुकर्मा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्मा] दे० 'विश्वकर्मा'। उ०— विसुकर्मा रचि भवन अमन सोभा मुनि जानिय।—प० रासो, पृ० १६६।

विसुकृत—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य। पाप। गुनाह।

विसुख—वि० [सं०] सुखहीन। आनंदरहित [को०]।

विसुध—वि० [हिं० बे+सुध] दे० 'बेसुध'। उ०—तुमसे ही आश्रय पाते, ये प्रणय विसुध मतवाले। कितनी आहों के शोले तुमने शीतल कर डाले।—हिलोल, पृ० ६३।

विसुहृद्—वि० [सं०] जिसे कोई सुहृद् न हो। मित्रहीन [को०]।

विसूचन—संज्ञा पुं० [सं०] जनाने की क्रिया। सूचित करना [को०]।

विसूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसे हैजा मानते हैं।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसमें पहले पेट में दर्द होता है और फिर रोगी को बहुत से दस्त आते हैं। शरीर में जलन होती है और प्यास बहुत लगती है, छाती और सिर में पीड़ा होती है, भ्रम, मूर्छा और कंप होता है, जँभाई आती है, निर्बलता बहुत होती है, मूत्र बंद हो जाता है; नाड़ी मंद पड़ जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, शरीर का रंग पीला पड़ जाता है और आवाज बदल जाती है। साथ ही वायु आदि के प्रकोप के कारण सारे शरीर में सुइयाँ चुभने की सी पीड़ा होती है, इसी से इसे विसूचिका कहते हैं। कुछ लोग इसे हैजा भी मानते हैं, पर अधिकांश डाक्टर आदि इसे हैजे से भिन्न समझते हैं। उनका मत है कि यह विसूचिका रोग अजीर्ण के कारण होता है, और हैजा एक प्रकार के विषाक्त जीवाणुओं के शरीर में प्रवेश करने से होता है।

विसूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] विसूचिका नामक रोग।

विसून—वि० [सं०] १. अव्यवस्थित। उद्विग्न। व्याकुल। २. उदास। रागहीन। विरक्त [को०]।

विसूरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दु:ख। रंज। शोक। २. चिंता। फिक्र। ३. विरक्ति। वैराग्य।

विसूरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विसूरण'।

विसूरित—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप। व्यथा। शोक [को०]।

विसूरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्वर [को०]।

विसृज्य—वि० [सं०] १ जिसका विसर्जन किया जाय। भेजा जाने-वाला। २ उत्पन्न किया जानेवाला [को०]।

विसृज्य'—संज्ञा पुं० [सं०] सृष्टिनिर्माण। सृष्टि का उत्पादन [को०]।

विसृत—वि० [सं०] १ कहा हुआ। २ विस्तृत। फैला हुआ। ३. विस्तारित। तना हुआ [को०]।

विसृत्वर—वि० [सं०] [स्त्री० विसृत्वरी] १ इधर उधर फैलने या व्याप्त होनेवाला। २ विसर्पण करने, रेंगने या सरकने वाला [को०]।

विसृमर—वि० [सं०] १. फैलनेवाला। प्रसरणशील। २. विसर्पण करनेवाला। रेंगनेवाला [को०]।

विसृष्ट'—वि० [सं०] १. जिसकी सृष्टि या रचना विशेष प्रकार से हुई हो। विशेष रूप से बनाया हुआ। २ फेंका हुआ। ३. त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। बनवाया या दबवाया हुआ। ४.

भेजा हुआ। ५ उत्पन्न। नि.सृत (को०)। ६ जो कार्यभार से मुक्त किया गया हो (को०)। ७ दिया हुआ। प्रदत्त (को०)।

विसृष्ट²—संज्ञा पुं० विसर्ग जो इस प्रकार लिखा जाता है ( )।

विसृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निर्माण। रचना। २ प्रेषण। भेजना। ३ परित्याग। ४ दान। प्रदान। ५ निषेक। स्राव। क्षरण (शुक्र का)। ६ संतान। संतति (को०)।

विसेस†—संज्ञा पुं० [सं० विशेष] दे० 'विशेष'। उ०—तब प्रभुन की विसेस कृपा जाननी।—दो सौ बावन०, पृ० १५५।

विसेसन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विशेषण] दे० 'विशेषण'। उ०—होत विसेसन मे बहुत, समझहु कवि कुल कांत।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५३५।

विसोटा†—संज्ञा पुं० [सं० वासक] अडूसा।

विसोढ—वि० [सं०] जो सह्य हो। सहन किया हुआ (को०)।

विसोम—वि० [सं०] चंद्रहीन (रात्रि)। चद्रमा से रहित (को०)।

विसौख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुख न होना। सौख्य का अभाव। कष्ट। पीडा। दु ख (को०)।

विस्खलित—वि० [सं०] १ भटका हुआ। २ ठीक तरह से न निकला हुआ। लडखडाता हुआ (स्वर)। ३ त्रुटिपूर्ण। गलत। ४ गिरा हुआ। पातत। च्युत (को०)।

विस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। २ एक प्रकार का परिमाण जो एक कर्ष के बराबर होता है। ३ ८० रत्ती।

विस्तज—संज्ञा पुं० [सं०] कुदुरु।

विस्तर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसार। फैलाव। दे० 'विस्तार'। २ प्रेम। ३ समूह। ४ आसन। ५ सख्या। ६ आधार। ७ शिव का एक नाम। ८ विवरण (को०)।

विस्तर²—वि० बहुत। अधिक। विशेष।

विस्तरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत या अधिक होने का भाव।

विस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ लबे या चौडे होने का भाव। फैले होने का भाव। फैलाव। जैसे—(क) इस मकान का विस्तार कम है। (ख) तुम बातो का बहुत अधिक विस्तार करते हो। २ पेड की शाखा। ३ गुच्छा। ४ शिव का एक नाम। ५. विष्णु का एक नाम। ६ विवरण। पूरा ब्यौरा (को०)। ७ वृत्त का व्यास (को०)। ८ झाडी (को०)।

विस्तारण—संज्ञा पुं० [सं०] फैलाने की क्रिया (को०)।

विस्तारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तार का भाव। फैलाव।

विस्तारना(पु)—क्रि० स० [सं० विस्तरण] फैलाना। विस्तृत या व्याप्त करना।

विस्तारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सगीत की एक श्रुति (को०)।

विस्तारित—वि० [सं०] विस्तृत किया हुआ। फैलाया हुआ। बढाया हुआ (को०)।

विस्तारी—संज्ञा पुं० [सं० विस्तारिन्] १ वह जिसका विस्तार अधिक हो। बडा। विशाल। २. वह जिसकी शक्ति अधिक हो। ३. बरगद। बड।

विस्तीर्ण—वि० [सं०] १. जो दूर तक फैला हुआ हो। विस्तृत। २ विशाल। बहुत बडा। ३ विपुल। बहुत अधिक।

विस्तीर्णकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

विस्तीर्णजानु—संज्ञा स्त्री० [सं०] टेढे पैरोवाली लडकी। प्रगतजानु कन्या, जिसे विवाह के अयोग्य कहा गया है (को०)।

विस्तीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तीर्ण होने का भाव। विस्तार। फलाव। उ०—क्षितिज की विस्तीर्णता का पवन अचल हिल गया है।—क्वासि, पृ० १००।

विस्तीर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] मानकद।

विस्तीर्णभेद—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

विस्तुर†—वि० [देश०] दूर। ओझल। बिहतुर। उ०—एको रोवा विस्तुर होइ हैं, धीर धीर मुगरिन्ह पीटो।—संत० दरिया, पृ० १२६।

विस्तृत—वि० [सं०] १ जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो। लबा चौडा। विस्तारवाला। जैसे, यहाँ आप लोगो के लिये बहुत विस्तृत स्थान है। २ यथेष्ट विवरणवाला। जिसके सब अग या सब बातें बतलाई गई हो। जैसे,—इस ग्रंथ मे नाटक के स्वरूप का बहुत विस्तृत वर्णन है। ३ बहुत बडा या लबा चौडा। विशाल। ४ बढा हुआ। विकसित (को०)। ५ प्रचुर। अधिक (को०)। ६ व्याप्त (को०)।

विस्तृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फैलाव। विस्तार। २. व्याप्ति। ३. लबाई, चौडाई और ऊँचाई या गहराई। ४ वृत्त का व्यास।

विस्थान—वि० [सं०] १ दूसरे से सबध रखनेवाला। २ अन्य स्थान से सबद्ध। अन्य लिंग का। जैसे, वर्ण या ध्वनि (को०)।

विस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया (को०)।

विस्थापित—वि० [सं०] दूसरे स्थान से लाकर बसाया गया। उ०—विस्थापित हैं, हम धरती के विस्थापित हैं।—रजत०, पृ० २८। २ जिन्हे उत्पीडित कर घर द्वार से रहित कर दिया गया हो।

विस्नु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विष्णु] दे० 'विष्णु'। उ०—विस्नु, नराइन, नरपती, बनमला हरि स्याम।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५४४।

विस्पद—संज्ञा पुं० [सं० विस्पन्द] १ धडकन। २ एक प्रकार का व्यजन। ३. बूँद। कण (को०)।

विस्पष्ट—वि० [सं०] १ सीधा। साफ। सुबोध। २ प्रकट। स्फुट। प्रत्यक्ष। खुला हुआ (को०)।

विस्फार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विस्फारित] १ धनुष की टकार। कमान का शब्द। २ धनुष की डोरी। ज्या। ३ विस्तार। फैलाव। ४ स्फूर्ति। तेजी। ५ विकास। ६ काँपना। बार बार हिलना।

विस्फारक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जो बहुत ही भयंकर होता है और जिसमे रोगी को खाँसी, मूर्छा, मोह और कप आदि होता है।

विस्फारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. खोलना। २ प्रसारित करना या फैलाना (पख) [को०]।

विस्फारित¹—वि० [सं०] १ खोला हुआ। फैलाया हुआ। २. फैला हुआ या फाड़ा हुआ। जैसे, विस्फारित नेत्र। ३ प्रकट किया हुआ। ४ जिसे कँपाया गया हो। जिसमे थरथराहट पैदा की गई हो। ५ काँपता हुआ। कपमान। थरथराता हुआ। ६ टंकारयुक्त [को०]

विस्फारित²—संज्ञा पुं० धनुष चढाना या बाण चलाना [को०]।

विस्फीत—वि० [सं०] अधिक। प्रचुर। बहुत ज्यादा [को०]।

विस्फुट—वि० [सं०] १ सुस्पष्ट। खुला हुआ। व्यक्त। प्रकट किया हुआ। २ विकसित। खिला हुआ [को०]।

विस्फुटित—वि० [सं०] दे० 'विस्फुट'।

विस्फुर—वि० [सं०] चपल नेत्रवाला। खुली आँखोंवाला [को०]।

विस्फुरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंपन। २ कौंधना। (बिजली का)। ३. फड़कना। उ०—ठहर गए नृप वहीं विटप की छाँह मे। हुआ विस्फुरण शकुन रूप वर बाँह मे।—शकु० पृ० ४७।

विस्फुरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिंदुक नामक वृक्ष।

विस्फुरित—वि० [सं०] १ कंपित। काँपता हुआ। २ फड़कता हुआ। विस्तारित। चंचल। जैसे, विस्फुरित नेत्र। ३ विकसित। फूला हुआ [को०]।

विस्फुलिंग—संज्ञा पुं० [सं० विस्फुलिङ्ग] १ एक प्रकार का विष। २ आग की चिनगारी। अग्निकण। उ० विस्फुलिंग से जग दुख तजि तव विरह अगिन तन तार्यौ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५३६।

विस्फुलिङ्गक—वि० [सं० विस्फुलिङ्गक] दीप्तिमान। चमकीला [को०]।

विस्फूर्ज—संज्ञा पुं० [सं०] गर्जन। कडक [को०]।

विस्फूर्जथु—संज्ञा पुं० [सं०] १ दहाड़ना। गरजना। कडकना। २ बादल की गरज। बिजली की कडक। ३. वज्रपात जैसा आकस्मिक आघात। ४ लहरों का आदोलित होना या उठना गिरना [को०]।

विस्फूर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पदार्थ का फैलना या बढना। विकास। २ गर्जन। कडक।

विस्फूर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिंदुक नामक वृक्ष।

विस्फूर्जित¹—वि० [सं०] १ प्रस्फुटित। २ गरजता हुआ। शब्दाय-मान। ३ प्रसारित। फैलाया हुआ। ४ क्षुब्ध। कपित [को०]।

विस्फूर्जित²—संज्ञा पुं० १ दहाड़। चीत्कार। २ घूर्णन। परिभ्रमण। ३ फल। परिणाम। ४ वायु का वेग। ५ सकोच। भौहों का सिकोड़ना। ६ स्फुटन [को०]।

विस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पडना। जैसे,—ज्वालामुखी पर्वत का विस्फोट। उ०—क्षुब्ध नक्र जैसे पानी मे पर्वत मे जैसे विस्फोट। अरि समूह मे विभु वैसे ही करते थे चोटों पर चोट।—साकेत, पृ० ३६४। २ कोई जहरीला और बहुत खराब फोड़ा। ३ विस्फोटक रोग। चेचक (को०)।

विस्फोटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ फोड़ा, विशेषत: जहरीला फोड़ा। २ वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भभक उठे। भभकनेवाला पदार्थ। ३ शीतला का रोग। चेचक। उ०—डाक्टर और विद्वान् इसी विस्फोटक के नाश का उपाय टीका लगाना आदि कहेंगे।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ५७६। ४. एक प्रकार का कुष्ठ (को०)।

विस्फोटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का उबाल आदि के कारण फूट बहना। २ जोरों का शब्द।

विस्फोटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पादस्फोट। विपादिका [को०]।

विस्फोटित—वि० [सं० विस्फुटित] गर्जन के साथ फूटा हुआ। विस्फोट-युक्त। उ०—सुनता हूँ जब,विस्फोटित है वहुँ ओर भयकर महा नाश।—दैनिकी, पृ० २५।

विस्मयकर—वि० [सं० विस्मयङ्कर] आश्चर्य मे डालनेवाला [को०]।

विस्मयगम—वि० [सं० विस्मयङ्गम] आश्चर्यजनक [को०]।

विस्मय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आश्चर्य। ताज्जुब। २ साहित्य मे अद्भुत रस का एक स्थायी भाव जो अनेक प्रकार के अलौकिक और विलक्षण पदार्थों के वर्णन के कारण मन मे उत्पन्न होता है। ३ अभिमान। गर्व। शेखी। ४ ऊहापोह सदेह। शक।

यौ०—विस्मयकर, विस्मयकारी = आश्चर्यजनक। विस्मयपद = आश्चर्य का भाजन। जिससे विस्मय हो। आश्चर्य का विषय।

विस्मय²—वि० १ जिसका गर्व नष्ट या चूर्ण हो गया हो। २. जो गर्वयुक्त न हो। निरभिमान।

विस्मयन—संज्ञा पुं० [सं०] आश्चर्य। ताज्जुब [को०]।

विस्मयाकुल—वि० [सं०] आश्चर्य से चकित [को०]।

विस्मयाहत—वि० [सं०] आश्चर्यचकित। आश्चर्य से आहत। दुख मिश्रित आश्चर्य की भावना से युक्त। उ०—विस्मयाहत हो पूछा—'इस धूप मे?—भस्म वृत०, पृ० ११।

विस्मयी—वि० [सं०] विस्मययुक्त। आश्चर्य करनेवाला। विस्मय मे पड़ा हुआ।

विस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्मरण न रहना। भूल जाना।

विस्मापक—वि० [सं०] आश्चर्यजनक। हैरत अंगेज [को०]।

विस्मापन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ गधर्वनगर। २ कामदेव का एक नाम। ३. बाजीगर। जादूगर। ४ चाल। छलना। (अं०) ट्रिक (को०)। ५. आश्चर्य पैदा करना (को०)। कोई भी आश्चर्य में डालनेवाली वस्तु (को०)।

विस्मापन²—वि० [वि० स्त्री० विस्मापनी] जिसे देखकर विस्मय हो। आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।

विस्मारक—वि० [सं०] भुला देनेवाला। विस्मरण करानेवाला।

विस्मारण—संज्ञा पुं० [सं०] लीन हो जाना। लय हो जाना। नष्ट हो जाना।

विस्मारित—वि० [सं०] भुलाया हुआ। विस्मृत किया हुआ [को०]।

विस्मित¹—वि० [सं०] १ जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित। उ०—सो मुरारीदास को देखि के नरायनदास और सब कोई विस्मित होइ रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १००।

विस्मित²—संज्ञा पुं० १ एक वृत्त का नाम। २ घमंडी। अभिमानी ३ उलट पुलट। अस्तव्यस्त।

विस्मिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्मय। आश्चर्य। २ दे० 'विस्मरण' [को०]।

विस्मृत—वि० [सं०] जो स्मरण न हो जो याद न हो। भूला हुआ।

विस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूल जाना। विस्मरण।

विस्मेर—वि० [दे०] भौचक्का, आश्चर्यान्वित। चकित [को०]।

विस्रभ—संज्ञा पुं० [सं० विस्रम्भ] १ विश्वास। यकीन। एतबार। २ केलि के समय स्त्री पुरुष मे होनेवाला झगड़ा। ३ वध। हत्या।

विस्रभालाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेमालाप। प्रेमवार्ता। २ विश्वस्त होकर बातें करना।

विस्रभी—वि० [सं० विस्रम्भिन्] १ विश्वासी। विश्वस्त। २. प्रेमी। प्रणयी [को०]।

विस्रस—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विस्रसा] १. नीचे गिरना। पतन। २ क्षय। शिथिलता। दुर्बलता। ३ क्षरण [को०]।

विस्रसन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अध पतन। नीचे गिरना। २ बहना। टपकना। ३ खोलना या ढीला करना। ४ रेचक। दस्त लानेवाला [को०]।

विस्रसन²—वि० १ पतनशील। २ खोलनेवाला। ढीला करनेवाला। जैसे,—नीवीविस्रसन [को०]।

विस्रसिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का उपकरण जिससे यज्ञ में आहुति दी जाती थी।

विस्रसी—वि० [सं० विस्रंसिन्] सरक या फिसलकर गिर जानेवाला। जैसे—हार [को०]।

विस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बडी मूली। २ मास के जलने की गध। चिरायंध। ३ आमगंध। कच्चे मास की गध।

विस्रगध—संज्ञा पुं० [सं० विस्रगन्ध] १ प्याज। २. गोदती हरताल। ३ वह जिसमे कच्चे मास की महक हो (को०)।

विस्रगधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोदती हरताल। २ प्याज। ३. हाऊबेर। हवुपा।

विस्रगंधि—संज्ञा पुं० [सं०] गोदती हरताल।

विस्रब्ध—वि० [सं०] दे० 'विश्रब्ध'।

विस्रव—संज्ञा पुं० [सं०] बहना। बूंद बूंद टपकना [को०]।

विस्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहना। २ झरना। क्षरण। रसना।

विस्रमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २ अशक्तता। जर्जरता (को०)।

विस्रस्त—वि० [सं०] १ ढीला किया हुआ। २ दुर्बल। कमजोर। ३ बिखरा हुआ [को०]।

यौ०—विस्रस्तचेता = उदास। खिन्न। विस्रस्तबंधन = जिसके बंधन खुल गए हो। विस्रस्तवसन = जिसके वस्त्र अस्तव्यस्त हो गए हो।

विस्रस्य—वि० [सं०] ढीला किया जाने या खोला जानेवाला [को०]।

विस्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाऊबेर। हवुपा। २ चरबी।

विस्राम पु† - संज्ञा पुं० [सं० विश्राम] दे० 'विश्राम'।

विस्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १ भात का माँड। पीच। २ बहना। दे० 'विस्रव' (को०)।

विस्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्त का बहना। २ चूना। रिसना। ३ एक प्रकार की गुड की शराब [को०]।

विस्रावित—वि० [सं०] बहाया हुआ [को०]।

विस्रुत—वि० [सं०] बहा हुआ।

विस्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहना। चूना। रसना।

विस्वर—वि० [सं०] १ स्वरहीन। २ बेसुरा। बेमेल (स्वर)। कर्कश। ३ कठोर।

विस्वसा पु‡—संज्ञा पुं० [सं० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ० सुया बात राजा हसा खिलखिला, कहा मेरे दिल का टूट्या। विस्वसा।—दक्खिनी०, पृ० ३७७।

विस्वा पु‡—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—साधु लोग कहुँ धका चुगुन कहुँ आदर किज्जिअ। वहुत प्रीति मसखरहिं दानु विस्वा कहँ दिज्जिअ।—अकबरी०, पृ० ३२२।

विस्वाद—वि० [सं०] स्वादरहित। फीका [को०]।

विस्वास†—संज्ञा पुं० [सं० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ०—तब वा वैष्णवन ने वाही समै दडवत करी। तब वाके मन मे विस्वास आयो।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६।

विस्साल पु—वि० [सं० विशाल] दे० 'विशाल'। उ०—मोतिन्न माल विस्साल अति हीरा पौवीं सुढरिय। जमराज सुवन अरचे अधिक मिलिलि मारु मगल करिय।—प० रा० स०, पृ० १३१।

विहग¹—संज्ञा पुं० [सं० विहङ्ग] १ पक्षी। चिडिया। उ०—सुखी परेवा जगत मे एकै तुही विहंग।—बिहारी (शब्द०) २ सान-मक्खी। ३ वाण। तीर। ४ मेघ। बादल। ५ चद्रमा। ६ सूर्य। ७ एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

विहग²—वि० [सं०] आकाशगामी। आकाशचारी।

विहगक¹—संज्ञा पुं० [सं० विहङगक] छोटी चिडिया [को०]।

विहगक²—वि० आकाशचारी [को०]।

विहगम¹—संज्ञा पुं० [सं० विहङ्गम] १ पक्षी। चिडिया। २ सूर्य।

विहगम²—वि० आकाश मे विचरण करनेवाला। उडनेवाला [को०]।

विहगमा—संज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गमा] १ सूर्य की एक प्रकार की किरण। २ ग्यारहवें मन्वतर के देवताओं का एक गण। ३ बहँगी मे की वह लकडी जिसके दोनो सिरों पर बोझ लटकाया जाता है।

विहगमिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गमिका] दे० 'विहंगिका'।

विहगय ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० विहाग] दे० 'विहागराग'। उ०—मगत श्री विनोदय, कल्याण केक मोदय। खँभायची पटंगय वगेसरी विहगय।—रा० रू०, पृ० ३७९।

विहगराज—संज्ञा पुं० [सं० विहङराज] गरुड।

विहगहा—संज्ञा पुं० [सं० विहङ्गहन्] बहेलिया। चिडीमार।

विहगिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गिका] बहँगी जिसपर कहार बोझ ढोते हैं।

विहडण ⓟ—वि० [सं० विखण्डन] नाश करनेवाला। उच्छेद करनेवाला। उ०—सभा सिंगार सकल कुल मडण। धरम सथापक पाप विहडण।—सुंदर ग्र०, भा० १, पृ० ६२।

विहतव्य—वि० [सं० विहन्तव्य] मार डालने योग्य [को०]।

विहँड़ना ⓟ—क्रि० स० [सं० विखण्डन, प्रा० विहंडण] १ नष्ट करना। २ खडन करना। मार डालना। ३ मथना। अस्तव्यस्त करना। हिंडोरना [को०]।

विहँसना—क्रि० अ० [सं० विहसन] दिल खोलकर हँसना। उच्च स्वर से हँसना।

विह—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश। गगन। (समस्त पद के प्रारंभ में प्रयुक्त। जैसे, विहग) [को०]।

विहग—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। उ०—उ०—पाहन पशु विटप विहग अपने कर लीन्हे। महाराज दशरथ के रंकराव कीन्हे।—तुलसी (शब्द०)। २. बाण। तीर। ३. सूर्य। ४. चंद्रमा। ५ ग्रह। ६ बादल (को०)। ७. ग्रहों की एक विशेष अवस्थिति (को०)।

यौ०—विहगपति = पक्षियों का स्वामी। गरुड। विहगराज = गरुड। विहगवेग = (१) पक्षियों के समान वेग या गतिवाला (२) एक विद्याधर का नाम [को०]।

विहगेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० विहगेन्द्र] गरुड [को०]।

विहगेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड।

विहड ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० विकट] विकट या ऊँची नीची भूमि। बेहड। उ०—जमुन विहड बर विकट हक्क वज्जिय चावद्दिसि।—पृ० रा०, ५५। १२७।

विहत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँझ गाय। बंध्या गौ। २. गर्भघातिनी गौ [को०]।

विहत¹—वि० [सं०] १ बधित। काटा हुआ। मारा हुआ। २ चुटीला। आहत। ३. प्रतिरुद्ध। ४ विदीर्ण [को०]।

विहत²—संज्ञा पुं० जैन मंदिर [को०]।

विहति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वध। २ चोट। आघात। ३. प्रतिरोध। निवारण। ४ पराजय। ५ असफलता। विफलता। ६. असहत करना। भगा देना [को०]।

विहति—संज्ञा पुं० [सं०] सखा। मित्र। दोस्त [को०]।

विहनन—संज्ञा पुं० [सं०] १. हत्या करना। वध। चोट। २ क्षति। ३. रुकावट डालना। अवरोध। अड़चन। ४ धुनिया की धुनकी (को०)।

विहर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वियोग। बिछोह। २ दे० 'विहार'।

विहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विहार करने की क्रिया। चलना। फिरना। घूमना। २ वियोग। बिछोह। ३ खोलना। फैलाना। ४. दूर करना। ले जाना। अपहरण करना (को०) ५. आमोद प्रमोद। मनोरंजन (को०)। ६. बाहर जाना। निकल जाना (को०)।

विहरना ⓟ—क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना।

विहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विहर्तृ] १. दस्यु। लुटेरा। २ इधर उधर घूमने या विहार करनेवाला व्यक्ति। घुमक्कड। मौजी [को०]।

विहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेष हर्ष। उल्लास। २ हर्षरहित व्यक्ति [को०]।

विहव—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ। २ युद्ध। लडाई।

विहसतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मित। मुसकान [को०]।

विहसन—संज्ञा पुं० [सं०] मीठी हँसी। मुस्कान [को०]।

विहसित—संज्ञा पुं० [सं०] वह हास्य, जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।

विहसित—वि० १ हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ। २ जिसपर हँसा जाय [को०]।

विहस्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंडित। विद्वान्। २ क्लीब। नपुंसक (को०)।

विहस्त²—वि० १. घबराया हुआ। व्याकुल। २ जिसका हाथ टूटा हुआ हो। ३ कार्य करने में अशक्त। अक्षम (को०)। ४ निपुण। चतुर। कुशल (को०)। ५ बुद्धिमान। शिक्षित (को०)।

विहस्तित—वि० [सं०] व्याकुल। घबडाया हुआ [को०]।

विहाँगड़ा ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० विहग + डा (प्रत्य०)] दे० 'विहग'।—ढोला०, पृ० ४६५।

विहाँण ⓟ—संज्ञा पुं० [देश० या सं० विभानु अथवा हिं० विहान] दे० 'विहान'। उ०—ढाढी गाया निसह भरि सुणियउ साल्ह सुजाँण। ओछइ पाणी मच्छ ज्यँउ, बेलत थयउ विहाँण।—ढोला०, दू० १६२।

विहाँणी†—संज्ञा स्त्री० [सं० विहाना (छोडना)] वह जो गुजरी या व्यतीत हुई हो। वारदात। घटना। उ०—हाजर बुलाए साह सुण दूत वाँणी। देखत ही फुरमाया कहो सो विहाँणी।—रा० रू०, पृ० ११०।

विहा—अव्य० [सं०] स्वर्ग।

विहाई†—संज्ञा पुं० [सं० विहायस् > विहाय (= आकाश)] आकाश। व्योम। अनंत। उ०—माप का विहाई सा, प्रतप्त का निदान।—रा० रू०, पृ० ९७।

विहाग—संज्ञा पुं० [सं० विभाग] १ एक राग। दे० 'विहाग' (यह वियोग का राग है)। २ वियोग। जुदाई। बिछोह। (लाक्ष०)। उ०—तू अबतक सोई है आली आँखों में भरे विहाग री।—लहर, पृ० १९।

विहान—संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल। सबेरा। भोर (को०)।

विहापित¹—वि० [सं०] त्यक्त करने या देने के लिये प्रेरित किया हुआ (को०)।

विहापित²—संज्ञा पुं० दान। त्याग (को०)।

विहाय¹—संज्ञा पुं० [सं० विहायस्] दे० 'विहायस' (को०)।

विहाय²—अव्य० [सं०] दे० 'बिना'।

विहायगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश में चलने की क्रिया या शक्ति (जैन)।

विहायस्, विहायस—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। व्योम। २. दान। ३ पक्षी। चिड़िया।

विहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनबहलाव के लिए धीरे धीरे चलना। टहलना। घूमना। फिरना। २ रतिक्रीड़ा। संभोग। ३ रतिक्रीड़ा करने का स्थान। ४. बौद्ध या जैन श्रमणों के रहने का मठ। संघाराम। ५ दूर करना। हटाना (को०)। क्रीड़ा। खेल (को०)। ६ गतिशीलता। गतिमयता। जैसे, चरणविहार, पाणिविहार (को०)। ७ उद्यान। उपवन। क्रीड़ोद्यान (को०)। ८ स्कंध। कंधा (को०)। ९ देवालय। मंदिर (को०)। १०. इंद्र का प्रासाद (को०)। ११. इंद्र की ध्वजा। वैजयंत (को०)। १२ महल। प्रासाद (को०)। १३ एक प्रकार का पक्षी। बिदुरेखक पक्षी (को०)। १४ मीमांसकों के अनुसार अग्नित्रय—गार्हपत्य आहवनीय और दक्षिणाग्नि (को०)। १५ यजमान का गृह (को०)। १६ विस्तार। प्रसार (को०)। १७ वागिंद्रिय का प्रसार (को०)। १८. मगध का एक नाम। आधुनिक बिहार प्रदेश (को०)।

यौ०—विहारगृह = क्रीड़ाभवन। विहारदेश = मनोरंजन का स्थान। विहारदासी = संन्यासिनी। भिक्षुणी। विहारभूमि = (१) मनोरंजन का स्थान। (२) चरागाह। विहारवन = क्रीड़ोद्यान। विहारवापी = क्रीड़ा के लिये बना हुआ तालाब। विहारस्थली = क्रीड़ाभूमि।

विहारक—वि० [सं०] १ विहार करनेवाला विहरणशील। २. विहार या बौद्ध मठ संबंधी (को०)।

विहारण—संज्ञा पुं० [सं०] आमोद प्रमोद (को०)।

विहारवान्—वि० [सं० विहारवत्] विहार करनेवाला (को०)।

विहारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] संघाराम। विहार (को०)।

विहारी—संज्ञा पुं० [सं० विहारिन्] १ वह जो विहार करता हो। विहार करनेवाला। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। ३ विस्तारशील। फैलनेवाला (को०)। ४ मनोरम। सुंदर (को०)।

विहारचा(ग)†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० 'ब्योहरिया'। उ०—हाट विहारचा कइ जोवज्यो, कई जोवज्यो राजदुवारि।—बी० रासो, पृ० ७८।

विहावणी†—वि० स्त्री० [सं०√भी, प्रा० विह + हिं० आवनी (प्रत्य०)] भयावना। भयंकर। उ०—सुणि तूँ मनारे मूरख मूढ़ विचार। आवै लहरि विहावणी दमें देह अपार।—दादू०, पृ० ५८६।

विहासा—संज्ञा पुं० [सं०] स्मित। मुसकान (को०)।

विहिंसक—वि० [सं०] हानि पहुँचानेवाला। हिंसक (को०)।

विहिंसन—संज्ञा पुं० [सं०] हानि करना। कष्ट देना (को०)।

विहिंस्र—वि० [सं०] क्षति या हानि करनेवाला। हिंसक (को०)।

विहित¹—वि० [सं०] १ जिसका विधान किया गया हो। जैसे,—यह काम शास्त्रविहित है। २ किया हुआ। ३. दिया हुआ। ४ क्रमबद्ध। ठीक किया हुआ। निर्धारित। निरीक्षित (को०)। ५ निश्चित। स्थापित (को०)। ६ रखा हुआ। जमा किया हुआ। (को०)। ७ सुसज्जित। संपन्न (को०)। ८ कल्पित। [illegible] (को०)। ९. विभक्त। विभाजित (को०)।

विहित²—संज्ञा पुं० [सं०] आदेश। आज्ञा।

विहिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई काम करने की आज्ञा। विधान। २ अनुष्ठान। क्रिया कर्म (को०)। ३ व्यवस्था (को०)।

विहीन—वि० [सं०] १ रहित। वर्जित। बिना। २ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। ३ अधम, नीच (को०)।

यौ०—विहीनजाति, विहीनयोनि, विहीनवर्ण = नीच जातिवाला।

विहीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विहीन होने का भाव या धर्म।

विहीनर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा का नाम।

विहीनित—वि० [सं०] वंचित। रहित।

विहुंडन—संज्ञा पुं० [सं० विहुण्डन] शिव के एक अनुचर का नाम।

विहूण, विहूनउ†—वि० [सं० विहीन] [वि० स्त्री० विहूणी, विहूनी] रहित। वंचित। विहीन। उ०—[illegible]—बी० रासो, पृ० ३६।

विहृत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य में स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक प्रकार का अलंकार। २. क्रीड़ा। खेल (को०)। ३ टहलना। घूमना। सैर (को०)। ४. हिचकिचाहट। झिझक (को०)।

विहृत²—वि० १ खोला हुआ। [illegible]। २ फैलाया हुआ। ३. हटाया हुआ। दूर किया हुआ। ४ विसर्जित। बिखरा (को०)।

विहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जबरदस्ती या बलपूर्वक छल से लेना या कोई काम करना। २ विहार। क्रीड़ा। ३. खोलने की क्रिया। प्रसार। फैलाव (को०)।

विहेठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षति। पीड़ा। दुःख। २ सताना। उत्पीड़न (को०)।

विहेठक—वि० [सं०] १. उत्पीड़क। सतानेवाला। २. बुराई करनेवाला। निंदक (को०)।

विहेठन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हानि करना। क्षति पहुँचाना। पेषण। पीसना। २. रगड़ना। ३. उत्पीड़न। पीड़ा। कष्ट। सताना। उत्पीड़न करना (को०)।

विह्वल—वि० [सं०] १ भय या इसी प्रकार के मनोवेग के कारण जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। अशांत। क्षुब्ध। व्याकुल। २ डरा हुआ। भय से अभिभूत (को०)। ३. उन्मत्त।

जो आपे से बाहर हो (को०)। ४ पीडाग्रस्त। कष्ट मे पडा हुआ (को०)। ५ विषादयुक्त। हतोत्साह। हताश (को०)। ६ द्रवित। तरल। पिघला हुआ (को०)।

यौ०—विह्वलचेतन, विह्वलचेता = व्याकुल। विह्वलतनु = शिथिल शरीरवाला। विह्वलदृष्टि, विह्वलनेत्र, विह्वललोचन = अस्थिर दृष्टिवाला। जिसकी दृष्टि चचल हो।

विह्वलता—सज्ञा स्त्री० [स०] विह्वल होने की क्रिया या भाव। व्याकुलता। घबराहट। चिंता। परीशानी।

विह्वलत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विह्वलता'।

विह्वलित—वि० [स०] विह्वलतायुक्त। विह्वल (को०)।

यौ०—विह्वलितदृष्टि = दे० 'विह्वल दृष्टि'। विह्वलित सर्वांग = व्याकुल शरीरवाला। अत्यत क्षुब्ध। विह्वलितांग = पीडित अगो या अवयवोवाला।

विह्वली—सज्ञा पुं० [सं० विह्वलिन्] वह जो विह्वल हो गया हो। वह जो बहुत घबरा गया हो।

वीखा—सज्ञा स्त्री० [स० वीङ्खा] १. नृत्य। नाच। २ घोडे की एक चाल। ३ शूकशिबी। ४ सगम। सधि। ५ गति। गमन। चाल (को०)।

वींद†—सज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० वींदणी] पति। खाविंद। उ०—मह बाल मारां चित विचारा दरी दारां दे सिला। सभ आय सारां धणी धारा विमल तारा वीद।—रघु०रू०, पृ० १४६।

वीक¹—सज्ञा पुं० [स०] १. वायु। २ पक्षी। चिडिया। ३. मन।

वीक²—सज्ञा पुं० [अ०] सप्ताह। हफ्ता।

वीका¹—सज्ञा स्त्री० [स०] आँख की मैल। कीचड़ (को०)।

वीकाश—सज्ञा पुं० [स०] १. एकात स्थान। २. प्रकाश। रोशनी।

वीक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ दृष्टि। देखना। ताकना। २. दृश्य पदार्थ (को०)। ३ अचभा। आश्चर्य (को०)। ४ अवेक्षण। निरूपण (को०)। ५ वैदग्ध्य। ज्ञान। बोध (को०)। ६. निःप्रज्ञता। अनभिज्ञता (को०)।

वीक्षण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० वीक्षणीय] १ देखने की क्रिया। निरीक्षण। दृष्टि। उ०—वीक्षण अराल, बज रहे जहाँ जीवन का स्वर भर छद, ताल, मौन मे मद्र।—अनामिका, पृ० १८। २ जाँच (को०)। ३. आँख (को०)।

वीक्षणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीक्षण' (को०)।

वीक्षणीय—वि० [स०] १. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। २. विचारणीय (को०)। विवेचनीय।

वीक्षा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देखने की क्रिया। वीक्षण। दर्शन। २ जाँच। परीक्षा (को०)। ३ ज्ञान। प्रतिभा (को०)। ४. बेसुधी। बेहोशी (को०)।

वीक्षित¹—वि० [सं०] दृष्ट। देखा हुआ।

विक्षित²—सज्ञा पुं० दृष्टि (को०)।

वीक्षिता—वि० [सं० वीक्षितृ] दर्शक (को०)।

वीक्ष्य¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ विस्मय। आश्चर्य। २ वह जो कुछ देखा जाय। दृश्य। ३. वह जो नाचता हो। नाचनेवाला। नर्तक। अभिनेता। ४ घोडा।

वीक्ष्य²—वि० देखने योग्य। दर्शनीय। दृश्य। उ०—अब सी हुत न किंतु वीक्ष्य थी।—साकेत, पृ० ३३६। २ प्रत्यक्ष। दृष्टिगोचर। व्यक्त (को०)। ३ विस्मय (को०)।

वीचि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लहर। तरग। २ बीच की खाली जगह। अवकाश। ३ सुख। आनद। विश्राति। ४. दीप्ति। चमक। ५ अविवेक। विचारशून्यता (को०)। ६. प्रकाश की किरण (को०)। ७ अल्पता। लघुता (को०)।

यौ०—वीचिकाक = दे० 'वीचीकाक'। वीचिक्षोभ = लहरो का वेग से उठना गिरना। वीचितरगन्याय। वीचिमाली।

वीचितरंग न्याय—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का न्याय। विशेष दे० 'न्याय'—४ (६३)।

वीचिमाली—सज्ञा पु० [स० वीचिमालिन्] समुद्र।

वीची¹—सज्ञा [स०] तरग। लहर। दे० 'वीचि'।

वीची²—सज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी राह। रथ्या। गली।—देशी०, पृ० ३०२।

वीचीकाक—सज्ञा पु० [स०] जलकौआ।

वीज—सज्ञा पुं० [सं०] १ मूल कारण। २ शुक्र। वीर्य। ३ तेज। उ०—मनु पावक माझ वीज आनि अनरगन जग्गिय।—पृ० रा०, ६१। १६७८। ४. अन्न आदि का वीज। बीआ। ५ अकुर। ६. फल। ७ आधार। ८ निधि। खजाना। ९ तत्व। १० मूल। ११ मज्जा। १२ तात्रिको के अनुसार एक प्रकार के मंत्र जो बडे बडे मत्रो के मूल तत्व के रूप मे माने जाते हैं। प्रत्येक देवी या देवता के लिये ये मंत्र अलग अलग होते हैं। जैसे,—ह्रीं, श्रीं, क्लीं आदि। १३ वीजगणित।

वीजक—सज्ञा पु० [स०] १ विजयसार या पियासाल नामक वृक्ष। २ विजौरा नीबू। ३. सफेद सहिजन ४. वीज। वीआ। ५ दे० 'बीजक'।

वीजकर—सज्ञा पुं० [सं०] उडद की दाल जो बहुत पुष्टिकारक मानी जाती है।

वीजकर्कटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] ककडी।

वीजकसार—सज्ञा पुं० [स०] १. विजयसार के वीज। २ बिजौरा नीबू का सार या सत्त।

वीजका—सज्ञा स्त्री० [सं०] मुनक्का।

वीजकाह्व—सज्ञा पु० [स०] बिजौरा नीबू का पेड।

वीजकृत्—सज्ञा पुं० [स०] वह औषध जिसके खाने से वीर्य बढता हो। वीर्य बढानेवाली दवा। वाजीकरण।

वीजकोश—सज्ञा पु० [सं०] १ कमलगट्टा। २. सिघाडा। ३. फल, जिनमे वीज रहते हैं।

वीजकोशक—सज्ञा पुं० [स०] अडकोश।

वीजगणित—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गणित, जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये उनके स्थान पर अक्षर आदि रखकर कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है। यह साधारण अंकगणित की अपेक्षा जटिल होता है, पर इसके द्वारा अज्ञात राशियों का पता लगाने में बहुत सहायता मिलती है।

वीजगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] परवल । पटोल ।

वीजगुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेम ।

वीजद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार या असन नामक वृक्ष ।

वीजधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] धनियाँ ।

वीजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंखा झलना । हवा करना । २ पंखा । ३ चँवर । ४ चकवा । चकार । चक्रवाक । ५ लोध का पेड़ । ६ पदार्थ । वस्तु (को०) ।

वीजपाद—संज्ञा पुं० [सं०] पियासाल । विजयसार । २. भिलावाँ ।

वीजपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का आदि या मूल पुरुष जिससे वह वंश चला हो ।

वीजपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ मरुवा । २ मैनफल । ३ ज्वार ।

वीजपूर, वीजपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजौरा नीबू । २. चकोतरा । ३ गलगल ।

वीजपूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजौरा नीबू । २. चकोतरा ।

वीजपेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडकोश ।

वीजफलक—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू ।

वीजमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० बीजमन्त्र] दे० 'बीज-१२' ।

वीजमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलगट्टा ।

वीजमार्गी—संज्ञा पुं० [सं० वीजमार्गिन्] एक प्रकार के वैष्णव जो पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। ये लोग निर्गुण उपासक होते हैं और देवी देवताओं का पूजन नहीं करते ।

वीजरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] उड़द की दाल ।

वीजरेचक—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा ।

वीजरेचन—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा ।

वीजलि(ळ)†—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्, प्रा० विज्ज] दे० 'बिजली' । उ०—च्यारइ पासइ घण घणउ वीजलि तिवइ प्रकास ।—ढोला०, दू० २६० ।

वीजवर—संज्ञा पुं० [सं०] उड़द । माष ।

वीजवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव । शिव ।

वीजवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजयसार । पियासाल । २ भिलावाँ ।

वीजसार—संज्ञा पुं० [सं०] वायविडंग ।

वीजसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

वीजस्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] पलाश । ढाक ।

वीजांकुर—संज्ञा पुं० [सं० वीजाङ्कुर] अँखुआ । अंकुर ।

वीजांकुरन्याय—संज्ञा पुं० [सं० वीजाङ्कुर न्याय] एक न्याय । विशेष दे० 'न्याय'—४ (६४) ।

वीजान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा ।

वीजाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्षाम्ल । महादा ।

वीजाविक—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट ।

वीजित—वि० [सं०] १ जिसे पंखा झला गया हो । पंखा झला हुआ । २. सिंचित (को०) ।

वीजी—संज्ञा पुं० [सं० बीजिन्] १. वह जिसका बीज हो । २. पिता । ३. [illegible] का नाम ।

वीजूजल†—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्, प्रा० विज्जु, [illegible] + सं० ज्वल, प्रा० जल] बिजली या चमकदार तलवार । उ०—[illegible] ।—[illegible], दू० ८६ ।

वीजोदक—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] । ओला । करका । बिनौरी ।

वीज्य—वि० [सं०] १. जो बीज से उत्पन्न हो । २. [illegible] कुल में उत्पन्न हुआ हो । कुलीन । ३ [illegible] । जिसे पंखा झला जाय (को०) ।

वीझणा†—संज्ञा पुं० [सं० वीजन, [illegible], प्रा० विज्जण] दे० 'बीजना' । उ०—[illegible] ।—ढोला०, दू० २६० ।

वीझना†—क्रि० स० [सं० वीजन, प्रा० वीज्जण] पंखा झलना । हवा करना । उ०—[illegible] ।—ढोला०, दू० २४० ।

वीटक—संज्ञा पुं० [सं०] (दक्षिण) बीड़ा (को०) ।

वीटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का खेल जो बालक लकड़ी के एक छोटे टुकड़े या डंडे से खेला करते थे ।

विशेष—[illegible] । कुछ लोगों का यह भी मत है कि यह खेल [illegible] गोली या [illegible] का बना हुआ था ।

२ धातु या पत्थर का बना हुआ गोला [illegible] या प्रायश्चित्त के लिए कुएँ में रखते थे (को०) ।

वीटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पान का बीड़ा । २ [illegible] (को०) । ३ धोती की गाँठ (को०) । ४ [illegible] गाँठ जो धोती में रहती है (को०) ।

वीटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाया हुआ पान का बीड़ा । २ दे० 'वीटि' ।

वीटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पान का बीड़ा । २. दे० 'वीटि' ।

वीटुली†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेष्टन] पगड़ी । उ०—मरवणी चोरी वीटुली ढोली मेल्ही सज्ज । मरदा पट न लेटियउ, [illegible] लज्ज ।—ढोला, दू० ५०० ।

वीटो—संज्ञा पुं० [अं०] किसी व्यवस्थापिका सभा के स्वीकृत प्रस्ताव या मतव्य को अस्वीकृत करने का अधिकार । यह अधिकार जिससे व्यवस्थापक मंडल की एक शाखा दूसरी शाखा के स्वीकृत प्रस्ताव या मतव्य को अस्वीकृत कर सकती है । अस्वीकृति या निषेधाधिकार । नामंजूरी । मनाही । रोक ।

यौ०—वीटोपावर = रोकने की शक्ति ।

वीण(प)—संज्ञा स्त्री० [स० वीणा] दे० 'वीणा'।

वीणा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।

विशेष—यह तत जातीय वाद्य है और इसका प्रचार अब तक भारत के पुराने ढग के गवैयो मे है। इसमे बीच मे एक लबा पोला दंड होता है, जिसके दोनो सिरो पर दो बडे बडे तूंबे लगे होते हैं और एक तूबे से दूसरे तूंबे तक, बीच के दड पर से होते हुए, लोहे के तीन और पीतल के चार तार लगे रहते हैं। लोहे के तार पक्के और पीतल के कच्चे कहलाते है। इन सातो तारो को कसने या ढीला करने के लिये सात खूंटियां रहती हैं। इन्ही तारो को झनकारकर स्वर उत्पन्न किए जाते हैं। प्राचीन भारत के तत जाति के बाजो मे वीणा सब से पुरानी और अच्छी मानी जाती है। कहते हैं, अनेक देवताओ के हाथ मे यही वीणा रहती है। भिन्न भिन्न देवताओ आदि के हाथ मे रहनेवाली वीणाओ के नाम अलग अलग हैं। जैसे,— महादेव के हाथ की वीणा लब्री, सरस्वती के हाथ की कच्छपी, नारद के हाथ की महती, विश्वावसु की बृहती और तुंबुरु के हाथ की कलावती कहलाती है। वत्सव उदयन की वीणा का नाम घोषवती या घोषा था। इसके अतिरिक्त वीणा के और भी कई भेद है। जैसे,—त्रितंत्री, किन्नरी, विपची, रजनी, शारदी, रुद्र और नादेश्वर आदि। इन सबकी आकृति आदि मे भी थोडा बहुत अंतर रहता है।

पर्या०—वल्लकी। परिवादिनी। ध्वनिमाला। वगमल्ली। घोषवती। कठकूणिका।

२ विद्युत्। बिजली। ३ ज्योतिष में ग्रहो की एक विशेष अवस्थिति (को०)। ४ एक योगिनी का नाम (को०)।

वीणागणकी—संज्ञा पुं० [स० वीणागणकिन्] वह जो गायक दल का प्रमुख (को०) हो।

वीणागणिगी—संज्ञा पु० [स० वीणागणगिन्] दे० 'वीणागणकी'।

वीणागाथी—संज्ञा पुं० [स० वीणागाथिन्] वीणा बजानेवाला (को०)।

वीणातत्र—संज्ञा पुं० [स० वीणातन्त्र] तत्रविशेष (को०)।

वीणादड—संज्ञा पुं० [स० वीणादंड] वीणा मे का लबा दड या तुबी का बना हुआ वह अश जो मध्य मे होता है। इसे प्रवाल भी कहते हैं।

वीणानुबध—संज्ञा पु० [स० वीणानुबन्ध] वीणा का वह निचला भाग जहाँ तार बँधे रहते हे। उपनाह (को०)।

वीणापाणि¹—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वीणापाणि²—संज्ञा पु० [स०] नारद (को०)।

वीणापाणि³—वि० जिसके हाथ मे वीणा हो। वीणा लिए हुए।

वीणाप्रसेव—संज्ञा पु० [स०] वह गिलाफ जो वीणा पर उसकी रक्षा के लिये चढाया जाता है।

वीणाभिद्—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की वीणा।

वीणारव—संज्ञा पु० [स०] वीणावादन की ध्वनि।

वीणावशशलाका—संज्ञा स्त्री० [स०] उपनाह। वीणानुबंध (को०)।

वीणावती—संज्ञा स्त्री० [स०] १. सरस्वती। २ एक अप्सरा का नाम।

वीणावरा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मक्खी।

वीणावाद, वीणावादक—संज्ञा पुं० [स०] वह जो वीणा बजाता हो। बीनकार।

वीणावादन—संज्ञा पु० [स०] १ वीणा बजाना। २ वीणा बजाने का कोणाकार छल्ला। मिजराब (को०)।

वीणावादिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती (को०)।

वीणावाद्य—संज्ञा पु० [स०] वीणा नामक तत्री वाद्य। वीणा बाजा। उ०—इद्रजाल, आकरज्ञान, रत्नपरीक्षा, तौर्यत्रिक, वीणावाद्य, हयमेपला, अश्ववध, मृगबंध, मीनवध, लीनबंध, चट।—वर्ण०, पृ० ३।

वीणाविनोद—संज्ञा पुं० [स०] एक विद्याधर का नाम (को०)।

वीणाशिल्प—संज्ञा पुं० [स०] वीणावादन की कला (को०)।

वीणास्य—संज्ञा पुं० [स०] नारद।

वीणाहस्त—संज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

वीणी—वि० [स० वीणिन्] १ वीणावादक। वीणा बजानेवाला। २ जो वीणा लिए हो। वीणावाला (को०)।

वीतस—संज्ञा पु० [स०] १ वह जाल, फंदा या इसी प्रकार की और सामग्री जिससे पशु और पक्षी आदि फँसाए जाते है। २. चिड़ियाघर। खगालय (को०)। ३ शिकार के पशुओ को पालने की जगह (को०)।

वीत¹—संज्ञा पुं० [स०] वे हाथी, घोड़े और सैनिक आदि जो युद्ध करने के योग्य न रह गए हो। २. अकुश के द्वारा मारना। अकुश का प्रहार करना। ३ सांख्य के अनुसार अनुमान के दो प्रकारो मे से एक।

विशेष—सांख्य मे अनुमान के तीन भेद कहे गए है—पूर्ववत् या केवलान्वयी, शेषवत् या व्यतिरेकी और सामान्यतं दृष्ट या अन्वय-व्यतिरेकी। इनमे से पूर्ववत् और सामान्यतोदृष्ट अनुमान तो 'वीत' कहलाते हैं और शेषवत् को अवीत कहते है। विशेष दे० 'अनुमान'।

वीत²—वि० जिसका परित्याग कर दिया गया हो। जो छोड दिया हो। २ जो छूट गया हो। मुक्त। ३ जो बीत गया हो। जो समाप्त हो चुका हो। अतर्हित। गत। लुप्त। ४ जो निवृत्त हो चुका हो। जो (किसी बात से) रहित हो। मुक्त। शून्य। जैसे—वीतभय, वीतराग वीतशक। ५ इच्छित अनुमोदित। पसंद किया हुआ। सुन्दर। जिसको अलगाया गया हो (को०)। ७ जो युद्ध के योग्य न हो (को०)। ८ पालतू (को०)। ९ ओढा या धारण किया हुआ। पहना हुआ (को०)।

वीतक—संज्ञा पुं० [स०] १ घिरी हुई भूमि। बाडा। २ चदन और कपूर का चूर्ण रखने का पात्र (को०)।

वीतकल्मष—वि० [स०] निष्पाप। पापमुक्त (को०)।

—काम—वि० [सं०] कामनाहीन (को०)।

वीतघृण—वि० [सं०] निर्दय [को०]।

वीतजन्म—वि० [सं०] अजन्मा [को०]।

वीततृष्णु—वि० [सं०] तृष्णारहित। वासनाहीन [को०]।

वीतत्रसरेणु—वि० [सं०] निर्विकार [को०]।

वीतदंभ—संज्ञा पुं० [सं० वीतदम्भ] वह जिसने दंभ या अहंकार का परित्याग कर दिया हो। जिसका अभिमान नष्ट हो गया हो।

वीतन—संज्ञा पुं० [सं०] कंठ के दोनों पार्श्व [को०]।

वीतभय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका भय छूट गया हो। २ विष्णु। ३ शिव का एक नाम (को०)।

वीतभीन—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

वीतमत्सर—वि० [सं०] मत्सरहीन [को०]।

वीतमल—वि० [सं०] १ जो कोई पाप न करे। पापरहित। २ जिसमें किसी प्रकार का कलंक या मल आदि न हो। विमल।

वीतमोह—वि० [सं०] निर्मोही [को०]

वीतराग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। वह जो निस्पृह हो गया हो। उ०—निरुद्देश्य मेरे प्राण, दूर तक फैले उस विपुल अज्ञान में, खोजते थे प्राणों को जड़ में ज्यों वीतराग चेतन को खोजने।—प्रनामिका, पृ० ७१। २ बुद्ध का एक नाम। ३ जैनों के प्रधान देवता का एक नाम।

वीतराग[2]—वि० १ वासनाहीन। इच्छारहित। शांत। २ रागरहित। बिना रंग का [को०]।

वीतविष—वि० [सं०] विशुद्ध। निर्मल [को०]।

वीतव्रीड—वि० [सं०] निर्लज्ज [को०]।

वीतशोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने शोक आदि का परित्याग कर दिया हो। २ अशोक नामक वृक्ष।

वीतसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

वीतहव्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जो अंगिरा के वंश में थे। २ शुनक के पुत्र का नाम।

वीतहव्य[2]—वि० यज्ञ में आहुति देनेवाला। जो यज्ञकुंड में आहुति या हव्य देता हो।

वीतहिरण्यमय—वि० [सं०] स्वर्णपात्र से हीन [को०]।

वीतहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीतिहोत्र'।

वीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गति। चाल। २ दीप्ति। चमक। आभा। ३ गर्भ धारण करने की क्रिया। ४ खाने या पीने की क्रिया। ५ यज्ञ। ६ घोड़ा। ७ प्रजनन। उत्पादन (को०)। ८. आनंदोपभोग (को०)। ९ सफाई। परिमार्जन (को०)। १० निवृत्ति। पार्थक्य (को०)। ११ प्राप्ति (को०)।

वीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जेठी मधु। मुलेठी। २ नीलिका।

वीतिहोत्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ पुराणानुसार राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम। ४ हैहयवंश के एक राजा का नाम। ५. वह जो यज्ञ करता हो।

वीतिहोत्रदयिता, वीतिहोत्रप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वाहा [को०]।

वीती—संज्ञा पुं० [सं० वीतिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वीथि—संज्ञा स्त्री० [सं०, दे० वीथी' [को०]।

वीथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीथी'।

वीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदों में से एक भेद।

विशेष—यह एक ही अंक का होता है और इसमें एक ही नायक होता है। इसमें आकाशभाषित और शृंगार रस की अधिकता रहती है। प्राचीन काल में ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटकों के साथ भी। इसके नीचे लिखे १३ अंग माने गए हैं—(१) उद्घात्यक। (२) अवलगित, (३) प्रपंच, (४) त्रिगत, (५) छलन, (६) वाक्केली, (७) अधिबल, (८) गंड, (९) अवस्यंदित, (१०) नालिका, (११) असत्प्रलाप, (१२) व्याहार और (१३) मृदव। धनंजय ने अपने दशरूपक में वीथी के उक्त तेरह अंगों का उल्लेख करके कहा है कि सूत्रधार इन वीथ्यंगों के द्वारा अर्थ और पात्र का प्रस्ताव करके प्रस्तावना के अंत में चला जाए और तब वस्तुप्रपंचन आरंभ हो। साहित्यदर्पण के अनुसार वीथी के अंग ही प्रहसन के भी अंग हो सकते हैं। अंतर केवल यही है कि वीथी में तो इनका होना आवश्यक है, पर प्रहसन में ऐच्छिक होता है। अतः कहा जा सकता है, वीथी और प्रहसन दोनों प्रस्तावना के ऐसे अंशों को कहते थे, जिनमें हास्य रस की अधिकता होती थी और जिनके द्वारा सामाजिकों या दर्शकों के मन में अभिनय के प्रति रुचि या उत्कंठा उत्पन्न की जाती थी।

२ मार्ग। रास्ता। सड़क। ३ वह आकाशमार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है। रविमार्ग। ४ आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं। जैसे,—नागवीथी, गजवीथी, ऐरावती वीथी, गोवीथी, मृगवीथी आदि।

विशेष—आकाश में उत्तर, मध्य और दक्षिण में क्रमशः ऐरावत, जरद्गव और वैश्वानर नामक तीन स्थान माने गए हैं, और इनमें से प्रत्येक स्थान में तीन तीन वीथियाँ हैं। इस प्रकार कुल नौ वीथियों में सत्ताईस नक्षत्र समान भागों में विभक्त हैं, अर्थात् प्रत्येक वीथी में तीन तीन नक्षत्रों का अवस्थान माना गया है।

५ पंक्ति। कतार (को०)। ६ हाट। पण्यवीथिका (को०)। ७ मकान में सामने का छज्जा (को०)। ८ घुड़दौड़ का चक्राकार मार्ग (को०)। ९ चित्रों की पंक्ति (को०)।

वीथीकृत—वि० [सं०] पंक्ति या राशि के रूप में रखा हुआ अथवा व्यवस्थित [को०]।

वीथ्यंग—संज्ञा पुं० [सं० वीथ्यङ्ग] रूपक में वीथी के अंग जो १३ माने गए हैं। विशेष दे० 'वीथी—१'।

वीदग†—संज्ञा स्त्री० [देश०] कविता। उ०—सुरभूम पाठ पिंगल मता साहित वीदग सार नै।—रघु० रू०, पृ० १४।

वीदेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विदेश] दे० 'विदेश ।' उ०—सूनी सेज वीदेस पीउ, दुइ दुख नाल्ह कहइयो कूरा ।—वी० रासो, पृ० ४३ ।

वीध्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश । २ अग्नि । ३. वायु ।

वीध्र²—वि० शुद्ध । स्वच्छ [को०] ।

वीनाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह जँगला या ढकना आदि जो कुएँ के ऊपर लगाया जाता है ।

वीनाही—संज्ञा पुं० [सं० वीनाहिन्] वह जिसमे वीनाह लगा हो । कूप । कुआँ [को०] ।

वीप—वि० [सं०] जलहीन । निर्जल [को०] ।

वीपसा (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वीप्सा] दे० 'वीप्सा' ।

वीपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली ।

वीप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक शब्दालंकार जहाँ आश्चर्य, आदर, घृणा, आदि भावो को व्यक्त करने के लिये एक ही शब्द अनेक बार प्रयुक्त होता है ।

विशेष—हिंदी साहित्य मे सर्वप्रथम भिखारीदास ने 'वीप्सालकार' के नाम से इसे ग्रहण किया है ।

२ परिव्याप्ति (को०) । ३. पुन पुन. कथन । पुनरुक्ति (को०) । ४ कार्य की निरतरता सूचित करने के लिये शब्दो की की जानेवाली द्विरुक्ति (को०) ।

वीबुकोश – संज्ञा पुं० [सं०] चामर । चँवर [को०] ।

वीरकरा—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरङ्करा] पुराणानुमार एक नदी का नाम, जिसे वीरकरा भी कहते हैं ।

वीरघर—संज्ञा पुं० [सं० वीरन्धर] १ मयूर । मोर । २ जगली पशुओ के साथ होनेवाला युद्ध । ३ एक प्राचीन नदी का नाम । चमडे का कचुक या सदरी (को०) ।

वीर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो साहसी और बलवान् हो । शूर । बहादुर । २ योद्धा । सैनिक । सिपाही । ३ वह जो किसी विकट परिस्थिति मे भी आगे बढकर उत्तमतापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे । ४ वह जो किसी काम मे और लोगो से बहुत बढकर हो । जैसे,—दानवीर, कर्मवीर । ५ पुत्र । लडका । ६. पति । खसम । ७. भाई (स्त्रियाँ) । ८ महाभारत के अनुसार दनायु नामक दैत्य के पुत्र का नाम । ६ विष्णु । १० जिन ११ साहित्य मे शृगार आदि नौ रसो मे से एक रस ।

विशेष—इसमे उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है । इसका वर्ण गौर और देवता इद्र माने गए हैं । उत्साह इसका स्थायी भाव है और धृति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क और रोमाच आदि इसके सचारी भाव हैं । भयानक, शात और शृंगार रस का यह रस विरोधी है ।

१२ तान्त्रिको के अनुसार साधना के तीन भावो मे से एक भाव ।

विशेष—कहते है, दिन के पहले दस दड मे पशु भाव से, बीच के दस दड मे वीर भाव से और अंतिम दस दड मे दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए । रुद्रयामल के ग्यारहवें पटल मे इसका विवरण है । वामकेश्वर तत्र के अनुसार कुछ लोगो का यह भी मत है कि पहले १६ वर्ष की आयु तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की आयु तक वीर भाव से और इसके उपरात दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए ।

१३ तान्त्रिको के अनुसार वह साधक जो इस प्रकार वीर भाव से साधना करता है ।

विशेष—दिन रात मद्य पीना, पागलो की सी चेष्टा रखना, शरीर मे भस्म लगाए रहना और अपने इष्टदेव को मनुष्य, बकरी, भेडे या भैसे आदि का बलिदान चढाना इनका मुख्य कर्तव्य होता है ।

१४ वह जो किसी काम मे बहुत चतुर हो । होशियार । १५ कर्मठ । कर्मशील । १६ यज्ञ की अग्नि । १६ सीगिया नामक विष । १८ काली मिर्च । १६ पुष्करमूल । २० काँजी । २१ खस । उशीर । २२ आलूबुखारा । २३ पीली कटसरैया । २४ चौलाई का साग । २५ वाराहीकद । गेंठी । २६ लताकरंज । २७ कनेर । २८ अर्जुन नामक वृक्ष । २६ काकोली । ३०. सिंदूर । ३१. शालिपर्णी । सरिवन । ३२ लोहा । ३३ नरसल । नरकट । ३४ भिलावाँ । ३५ कुश । ३६ ऋषभक नामक ओषधि । ३७. तोरई । ३८. अग्नि (को०) । ३६ नट । अभिनेता (को०) । ४०. चावल का माँड (को०) ।

वीर²—वि० १. शूर । बहादुर । २ शक्तिशाली । ताकतवर ३. श्रेष्ठ । सर्वोत्कृष्ट [को०] ।

वीर(पु)³—संज्ञा स्त्री० सखी । सहेली । दे० 'बीर' ।

वीरकठ—संज्ञा पुं० [सं० वीरकण्ठ] एक प्रकार का डिंगल गीत । —रघु० रू०, पृ० १९५ ।

वीरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद कनेर । २ वह जो किसी निंदित देश का निवासी हो । ३ पुराणानुसार चाक्षुष मन्वतर के एक मनु का नाम । ४ योद्धा । शूर । बहादुर । विक्रात (को०) ।

वीरकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम जिसे वीरकरा भी कहते हैं ।

वीरकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० वीरकर्मन्] वह जो वीरो की भाँति काम करता हो । वीरोचित कार्य करनेवाला ।

वीरकाम—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे पुत्र की कामना हो । पुत्र की इच्छा रखनेवाला ।

वीरकीट—संज्ञा पुं० [सं०] नगण्य सैनिक । नाम मात्र का सैनिक [को०] ।

वीरकुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो ।

वीरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार पाचाल के एक राजकुमार का नाम ।

वीरकेशरी—वि० [सं० वीरकेशरिन्] वह जो वीरो मे सिंह के समान अथवा बहुत श्रेष्ठ हो ।

वीरकेसरी—वि० [सं० वीरकेसरिन्] दे० 'वीरकेशरी' ।

वीरक्षुरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कृपाणी । कटार [को०] ।

वीरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वर्ग । २ वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है ।

विशेष—कहते हैं, युद्धक्षेत्र मे वीरतापूर्वक लड़कर मरनेवाले लोग सूर्यमंडल का भेद न कर सीधे स्वर्ग जाते है ।

वीरगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वीरो का खानदान या कुल [को०] ।

वीरगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] योद्धाओं की गोठ । वीरो की आपसी वार्ता [को०] ।

वीरचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ तत्र के अनुसार एक चक्र । २. वीरों का सैन्य दल । ३ विष्णु [को०] । ४ स्वतत्रताप्राप्ति के अनतर भारत सरकार द्वारा सैनिकों की वीरता पर प्रसन्न होकर उन्हे प्रदान किया जानेवाला एक विशेष प्रकार का पदक ।

वीरचक्रेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

वीरचक्षुष्मान्—संज्ञा पुं० [सं० वीरचक्षुष्मत्] विष्णु । [को०] ।

वीरचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीरता का कार्य । शूरकर्म ।

वीरजनन—वि० [सं०] वीर को उत्पन्न करनेवाला ।

वीरजननी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीरप्रसू' ।

वीरजयतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरजयन्तिका] १ युद्ध । सग्राम । २. रण मे योद्धाओं का नृत्य [को०] ।

वीरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुश, दर्भ, काँस और दूब आदि की जाति के तृण । २ उशीर । खस । ३. पुराणानुसार एक प्रजापति का नाम ।

विशेष—इनकी कन्या असिक्नी का विवाह दक्ष से हुआ था । इस कन्या के गर्भ से पाँच हजार वीर पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनसे सृष्टि बढी थी ।

४ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वीरणक—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है ।

वीरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटाक्ष । तिरछी चितवन । २. गहरी भूमि । ३ वीरण की पुत्री और चाक्षुप की माता का नाम [को०] ।

वीरतर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शर । तीर । बाण । २. उशीर । खस ।

वीरतर[2]—वि० शूरों मे प्रधान । वीरश्रेष्ठ । सामर्थ्यवान् [को०] ।

वीरतरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुनवृक्ष । २. तालमखाना । ३ भिलावाँ । ४ शर नामक तृण । ५ पियासार या पियासाल नामक वृक्ष । ६ विल्व वृक्ष (को०) ।

वीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीर होने का भाव । शूरता । बहादुरी ।

वीरताडक—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा नाम की लता [को०] ।

वीरतृण—संज्ञा पुं० [सं०] सरकडा [को०] ।

वीरत्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वीरत्व] वीरत्व । वीर होने का भाव । वीरता । उ०—भाए सुमहल सामत सूर पूरंन तेज वीरत्त पूर । अनभग अग, अनभूल बान जिन दिट्ठ अरिय पावै न जान । —पृ० रा०, ६।१३३ ।

वीरत्तण(पु)—संज्ञा पुं० [अप०] वीरत्व । वीरता । उ०—उअर वपुरा को करेश्रा वीरत्तण नित ठाम ।—कीर्त्ति०, पृ० ६० ।

वीरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरता' ।

वीरदर्प—संज्ञा पुं० [सं०] वीरता का जोश । वीरता का उत्साह या उमग । उ०—जहाँ आल्हा गानेवाले सैकडो सुननेवालो को घंटो वीरदर्प से पूर्ण किए रहते हैं, वहाँ भेदभूमि से परे एक सामान्य हृदयसत्ता की झलक दिखाई पडती है ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ६१ ।

वीरद्युम्न—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम ।

वीरद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन नामक वृक्ष [को०] ।

वीरधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० वीरधन्वन्] कामदेव का एक नाम ।

वीरनाथ—वि० [सं०] १. वीरो मे श्रेष्ठ । २ जिसके सहायक शूर वीर हो [को०] ।

वीरनायक—संज्ञा पुं० [सं०] उशीर । खस ।

वीरपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक विशेष प्रकार का पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था ।

वीरपट्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललाट पर बाँधी जानेवाली सोने की पट्टी [को०] ।

वीरपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैदिक काल की एक नदी का नाम । २ वह जो किसी वीर की पत्नी हो ।

वीरपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भाँग । भग । २ एक प्रकार का महाकद जिसे वाराही भी कहते हैं ।

वीरपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कद [को०] ।

वीरपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सुरपर्णा । मार्चीपत्री ।

वीरपाण, वीरपाणक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरपान' ।

वीरपान,वीरपानक—संज्ञा पुं० [सं०] वह पान जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये करते है ।

वीरपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप [को०] ।

वीरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाबला । सहदेई । २ सिंदुरपुष्पी । लटकन ।

वीरप्रजायिनी, वीरप्रजावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीरप्रसू । वीर पुत्र को जन्म देनेवाली नारी । वीरमाता [को०] ।

वीरप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वीरप्रसवा,वीरप्रसविनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० वीरप्रसू' [को०] ।

वीरप्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो वीर सतान उत्पन्न करती हो ।

वीरबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु । २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ३ एक वानर का नाम (को०) । ४ रावण के एक पुत्र का नाम ।

वीरभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अश्वमेध यज्ञ का घोडा । २ उशीर । खस । ३ प्रख्यात वीर । प्रसिद्ध योद्धा । श्रेष्ठ वीर (को०) । ४. शिव के एक प्रसिद्ध गण का नाम जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं । उ०—शिव जी के शरीर से अग्नि बहिर्गत हुई

कि मानो वह तीनो लोको को भस्म किया चाहती है और इस अग्नि मे से वीरभद्र उत्पन्न हुआ ।—कबीर म०, पृ० २१८ ।

विशेष—कहते हैं, दक्ष का यज्ञ नष्ट करने लिये शिव जी ने अपने मुँह मे इनकी सृष्टि की थी । वीरभद्र ने बहुत मे रुद्रो की सृष्टि करके दक्ष का यज्ञ नष्ट किया था ।

वीरभद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] खस । उशीर ।

वीरभद्र रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सन्निपात के लिये बहुत उपकारी माना जाता है ।

वीरभवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडी बहिन [को०] ।

वीरभार्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीर की पत्नी [को०] ।

वीरभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीरो की प्रकृति या स्वभाव । २ तंत्र मे एक भाव । वीरशैव संप्रदाय का एक भाव । विशेष दे० 'वीर'-१२ ।

वीरभुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आधुनिक वीरभूम का प्राचीन नाम ।

वीरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार देवपुर के एक प्राचीन राजा का नाम ।

विशेष—इस नरेश के पुत्र रुक्मांगद ने रामचंद्र जी के यज्ञ का घोडा पकड लिया था । इसपर शत्रुघ्न और हनुमान आदि ने इससे युद्ध किया था । कहते है, इस युद्ध मे महादेव जी भी वीरमणि की ओर से लडे थे और उन्होने शत्रुघ्न को अपने पाश मे बाँध लिया था । तब रामचंद्र ने आकर उन्हें और अपना घोडा छुडाया था ।

वीरमत्स्य—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम ।

वीरमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम ।

वीरमर्दल, वीरमर्दलक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता था ।

वीरमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो । वीरजननी । वीरप्रसू ।

वीरमानी—वि० [सं० वीरमानिन्] अपने को वीर माननेवाला [को०] ।

वीरमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग ।

वीरमुद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का छल्ला जो प्राचीन काल मे पैर की बीचवाली उँगली मे पहना जाता था ।

वीररज—संज्ञा पुं० [सं० वीररजस्] सिंदूर ।

वीररस—संज्ञा पुं० [सं०] १ काव्य के नौ रसो मे एक का नाम । विशेष दे० 'वीर'—११ । २ वीर भाव [को०] ।

वीरराघव—संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्र का नाम । २. संस्कृत का एक नाटक ।

वीररेणु—संज्ञा पुं० [सं०] भीमसेन का एक नाम ।

वीरललित—संज्ञा पुं० [सं०] वीरो का सा, पर साथ ही कोमल स्वभाव । वीरता के साथ ही कोमल स्वभाव ।

वीरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग । २. वीरो का समुदाय ।

वीरवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मांसरोहिणी नाम की लता । २ वह स्त्री जिसके पति और पुत्र जीवित हो [को०] ।

वीरवत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वीरमाता [को०] ।

वीरवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता ।

वीरवह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो घोडो द्वारा खींचा जाय । २. रथ । स्यंदन ।

वीरवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] ललकार [को०] ।

वीरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वीरता के कारण प्राप्त यश । प्रतिष्ठा । ख्याति [को०] ।

वीरवाह—संज्ञा पुं० [सं०] वीरवह । रथ । स्यंदन [को०] ।

वीरविक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत मे एक ताल का नाम [को०] ।

वीरविप्लावक—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो शूद्रों से धन आदि लेकर हवन करता हो ।

वीरवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. भिलावाँ । २ अर्जुन नामक वृक्ष । ३. महाशालि । देवधान्य । ४. बिल्वांतर या बलतर नामक वृक्ष । ५ सावाँ नामक धान्य । ६. शाल वृक्ष ।

वीरवेतस—संज्ञा पुं० [सं०] अमलबेत ।

वीरव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] वीरो का व्यूह । सैनिको का एक व्यूह [को०] ।

वीरव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो अपने संकल्प पर सदा दृढ़ रहता हो । वीरतापूर्वक अपने संकल्प का पालन करनेवाला । २. वह ब्रह्मचारी जो बहुत ही निष्ठा तथा आचारपूर्वक रहता हो । ३. पुराणानुसार मधु के एक पुत्र का नाम जो सुमना के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । ४ शूरता । वीरता (को०) ।

वीरशंकु—संज्ञा पुं० [सं० वीरशङ्कु] तीर । बाण [को०] ।

वीरशय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वीरो के सोने का स्थान, रणभूमि । युद्धक्षेत्र । लडाई का मैदान । २. बाण की शय्या—जैसी पितामह भीष्म के लिये अर्जुन ने शरो से बनाई थी (को०) ।

वीरशयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीरो का सोने का स्थान, रणभूमि । २ तीर की शय्या ।

वीरशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रणभूमि । २. दे० 'वीरशय' ।

वीरशाक—संज्ञा पुं० [सं०] बथुआ नामक साग ।

वीरशायी—वि० [सं० वीरशायिन्] वीरशय्या पर सोनेवाला [को०] ।

वीरशैव—संज्ञा पुं० [सं०] शैवो का एक भेद ।

वीरश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] अद्वितीय योद्धा [को०] ।

वीरसू—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्त्री जो पुत्र को ही जन्म दे । २. वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो । वीरजननी । उ०—अब, रहे यह रुदन वीर सू तुम, व्रत पालो । ठहरो प्रस्तुत वैर वह्नि पर नीर न डालो ।—साकेत, पृ० ४०४ ।

वीरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा नल के पिता का नाम । २ आरुक या आड़ नाम की जडी जो हिमालय मे होता है । ३. आलूबुखारा । ४. एक दानव का नाम (को०) । ५. हस्तवैद्यक ग्रंथ के लेखक का नाम जिन्हें वीरसोम भी कहते हैं (को०) ।

वीरसेनज, वीरसेनसुत—संज्ञा पुं० [सं०] राजा नल [को०]।

वीरसैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] लहसुन [को०]।

वीरस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० वीरस्कन्ध] महिष [को०]।

वीरस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह पशु जिसका यज्ञ मे बलिदान हो।

वीरस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ साधकों का एक प्रकार का आसन जिसे वीरासन कहते हैं। २ स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं।

वीरस्नाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेतस या नरसल की बनी हुई रेहल जिसपर रखकर पुस्तकें पढी जाती थी [को०]।

वीरहत्या संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मनुष्य की हत्या करना। नरवध। २ पुत्रवध [को०]।

वीरहा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वीरहन्] १ विष्णु। २ वह अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसका अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो।

वीरहा[2]—वि० मनुष्यो या शत्रु के वीरो को मारनेवाला।

वीरहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो विंध्य पर्वत पर था।

वीरांतक—संज्ञा पुं० [सं० वीरान्तक] १ वह जो वीरो का अंत या नाश करता हो। २ अर्जुन नामक वृक्ष।

वीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुरामांसी। मुरा। २ क्षीर काकोली। ३ भुईंआँवला। ४ एलुवा। ५. केला। ६ विदारीकंद। ७ काकोली। ८ शतावर। ९. घीकुंआर। १०. ब्राह्मी। ११. अतीस। अतिविषा। १२ मदिरा। शराब। १३ शीशम का पेड। १४ गभारी नामक वृक्ष। १५ पृश्निपर्णी। पिठवन। १६ खिरेंटी। १७ कुटकी। १८ जटामासी। बालछड। १९ आँवला। २० वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों। २१, वीरपत्नी। वीरभार्या (को०)। २२ पत्नी (को०)। २३ माता (को०)। २४ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

वीराचारी—संज्ञा पुं० [सं० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त उपासक।

विशेष—वीराचारी अपने इष्ट देवताओं की वीर भाव से उपासना करते हैं। ये लोग मद्य को शक्ति और मास को शिव स्वरूप मानते हैं, और इन दोनों के भक्तो को भैरव समझते हैं। ये लोग चक्र मे बैठकर पूजन करते हैं और बीच बीच मे किसी स्त्री को काली मानकर उसपर मद्य, मास आदि चढाते हैं। ये लोग प्राय शव या मृत शरीर लाकर उसकी पूजा करते और उसी के द्वारा अनेक प्रकार के साधन और पूजन करते हैं।

वीराद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन नामक वृक्ष।

वीरान—वि० [फ़ा०] उजडा हुआ। जिसमे आबादी न रह गई हो। निर्जन। जैसे—यह बस्ती बिलकुल वीरान हो गई है। २ जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो। श्रीहीन। ३ (भूमि) जिसमे कुछ पैदा न हो। बंजर।

वीराना—संज्ञा पुं० [फ़ा० वीरानह्] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की आबादी न हो। उजाड। जंगल।

वीरानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वीरान या उजाड होने का भाव।

वीराम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] अमलबेत।

वीरारुक—संज्ञा पुं० [सं०] आरुक या आड नाम की जडी जो हिमालय मे होती है।

वीराशंसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह युद्धभूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पडती है। युद्ध मे जोखिम से भरी जगह। २ युद्ध का मैदान। रणक्षेत्र (को०)। ३ निगराना रखना (को०) ४ अगतिक या निरवलंब आशा [को०]।

वीराष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वीरासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार प्राय. पूजन और तांत्रिकों आदि के साधन मे होता है। इसमे बाएँ पैर और रखने पर दाहिना जाँघ रखकर बैठते हैं। २ कोई एक जानु मोडकर बैठना (को०)। ३ युद्धक्षेत्र। रणभूमि (को०)। ४ निगरानी करने की जगह। संतरी की चौकी (को०)।

वीरिण—संज्ञा पुं० [सं०] ईरिण भूमि। ऊसर भूमि [को०]।

वीरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीरण प्रजापति की कन्या असिक्नी जो दक्ष को ब्याही था। २ वह स्त्री जिसे पुत्र हो। पुत्रवती। ३. एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वैरिन्] वैरी। शत्रु। उ०—वीरी जणह न चालइ वाट।—बी० रासो, पृ० ६७।

वीरुध—संज्ञा पुं० [सं० वारुत्, वीरुध्] १. वृक्ष। २ लता और वनस्पति आदि। ३ ओषधि। ४ विस्तृता या गुल्मनी नाम की लता। ५ शाखा। टहनी (को०)। ६ काटने पर पुन बढ जानेवाला पौधा (को०)।

वीरुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दवा के रूप मे काम मे आनेवाली वनस्पति। ओषधि। २. दे० 'वीरुध'।

वीरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वीरेन्द्र] श्रेष्ठ वीर [को०]।

वीरेंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० वीरेन्द्री] एक योगिनी का नाम [को०]।

वीरेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ श्रेष्ठ वीर। बडा योद्धा (को०)। ३. शिव की एक लिंगमूर्ति (को०)।

वीरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। दे० 'वीरेश'।

यौ०—वीरेश्वर लिंग = शिव की एक लिंगमूर्ति। वीरेश।

वीरोज्झ—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करने मे आलस्य करता हो [को०]।

वीरोपजीवक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरोपजीविक' [को०]।

वीरोपजीविक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अग्निहोत्र के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।

वीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के सात धातुओ मे से एक धातु जिसका निर्माण सबके अंत मे होता है और जिसके कारण शरीर मे बल और कांति आती है।

विशेष—वीर्य को चरम धातु भी कहते हैं। यह स्त्रीप्रसग के समय अथवा रोग आदि के कारण यो ही मूत्रेंद्रिय से निकलता है। कुछ लोगो का मत है कि वीर्य दो प्रकार का है—शीत और उष्ण। और कुछ लोगो का मत है कि यह आठ प्रकार का होता है—उष्ण, शीत, स्निग्ध, रुक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीव्र। विशेष दे० 'शुक्र'।

पर्या०—शुक्र। तेज। रेत। बीज। इद्रिय।

२. दे० 'रज'। ३. वैद्यक के अनुसार किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ मे शक्ति रहती है। किसी वस्तु का मूल तत्व। ४ पराक्रम। बल। शक्ति। सामर्थ्य। ५ अन्न आदि का बीज। बीआ। ६ पुस्त्व (को०)। ७ साहस। दृढता (को०)। ८ (ओषधियो की) अचूकता। प्रभावकारिता (को०)। ९. आभा। दीप्ति। कांति (को०)। १० गौरव। महत्ता। महिमा (को०)। ११ गरल। विष (को०)। १२ सोना। सुवर्ण (को०)।

वीर्यकर—सज्ञा पु० [स०] मज्जा। मेद। वसा। वपा [को०]।

वीर्यकाम—वि० [स०] पुस्त्व का अभिलाषी [को०]।

वीर्यकृत—सज्ञा पुं० [स०] बलवान्। ताकतवर।

वीर्यकृत्—वि० [स०] जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक।

वीर्यज—सज्ञा पु० [स०] लडका। बेटा। पुत्र।

वीर्यतम—सज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत बडा बलवान् हो।

वीर्यधर—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप मे रहनेवाले एक प्रकार के क्षत्रिय।

वीर्यपण—वि० [सं०] वीरता द्वारा क्रीत या खरीदा हुआ [को०]।

वीर्यपारमिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार छह सिद्धियो मे से एक। शक्ति की पराकाष्ठा [को०]।

वीर्यप्रपात—सज्ञा पु० [स०] वीर्य का पतन। वीर्य का स्खलन [को०]।

वीर्यवत्—वि० [स०] १ बलवान्। मजबूत। प्रबल। समर्थ। २. मासल। हृष्ट पुष्ट।

वीर्यवान्—वि० [स० वीर्यवत्] दे० 'वीर्यवत्'।

वीर्यवाही—वि० [स० वीर्यवाहिन्] बीज अथवा वीर्य उत्पन्न करनेवाला [को०]।

वीर्यवृद्धिकर—सज्ञा पु० [स०] वीर्य बढानेवाली ओषधि। वाजीकरण [को०]।

वीर्यशुल्क[1]—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वीर्यशुल्का] वह प्रतिज्ञा या प्रण जो वीर्य सबधी हो। जैसे,—यह प्रतिज्ञा करना कि जो पुरुष (या स्त्री) अमुक कार्य करेगा, उसके साथ इस स्त्री (या पुरुष) का विवाह होगा।

वीर्यशुल्क[2]—वि० जिसका मूल्य वीर्य हो। शक्ति द्वारा क्रीत [को०]।

वीर्यसह—सज्ञा पु० [स०] सूर्यवंशी राजा सौदास के पुत्र कल्माषपाद का एक नाम।

वीर्यहारी—सज्ञा पु० [स० वीर्यहारिन्] एक यक्ष का नाम जो दु:सह नामक यक्ष की कन्या के गर्भ से किसी चोर के वीर्य से उत्पन्न हुआ था।

विशेष—कहते हैं, जो लोग कदाचारी होते हैं, या बिना हाथ पैर धोए रसोईघर मे जाते हैं, उनके घर मे यह यक्ष अपने और दो भाइयो के साथ रहता है।

वीर्यहीन—वि० [स०] १ निर्वीर्य। कातर। कापुरुष। शक्तिहीन। २. पुस्त्वहीन। नपुसक। क्लीब। ३ बीजरहित। जिसमे बीज न हो [को०]।

वीर्यातराय—सज्ञा पुं० [स० वीर्यान्तराय] जैनियो के अनुसार वह पाप कर्म जिसका उदय होने से जीव पुष्टाग होते हुए भी शक्तिविहीन हो जाता है और कुछ पराक्रम नही कर सकता।

वीर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'वीर्य'। २ एक नागकन्या (को०)।

वीर्याधान—सज्ञा पु० [स०] गर्भाधान [को०]।

वीर्यान्वित, वीर्ययुक्त—वि० [स०] वीर्यवान्। शक्तिमान् [को०]।

वीर्यावदान—सज्ञा पु० [स०] किसी कार्य को वीरतापूर्वक सपन्न करना [को०]।

वीर्यावधूत—वि० [स०] वीर्य द्वारा तिरस्कृत वा कपित। शक्ति द्वारा पराजित [को०]।

वीवध—सज्ञा पु० [स०] १. अन्न की राशि। २. भूसे का ढेर। ३ सडक। ४ राजकर। ५ शकट आदि का जुआ। ६. घट। घडा। ७. बोझा [को०]।

वीवधिक—सज्ञा पु० [स०] १ बिसाती। बिसातखाने की दूकान करनेवाला। २. वह जो बहँगी आदि द्वारा बोझ ढोता हो। बहँगी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

वीवाह(पु)—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विवाह'।

वीश—सज्ञा पु० [स०] २० पल या ८० तोले का एक परिमाण [को०]।

वीषित—वि० [स०] बिखरा हुआ। विस्तृत। फैला हुआ [को०]

वीस[1]—सज्ञा पु० [स०] नृत्य का एक प्रकार [को०]।

वीस(पु)†[2]—वि० सज्ञा स्त्री० [स० विशति, विंश] दे० 'बीस'। जैसे, वीस वसा = बीस बिस्वा।

वीसरना†—क्रि० अ०, क्रि० स० [स० विस्मरण] दे० 'बिसरना'। उ०—ढोला मिलिसि न वीसारसि नवि आविसि ना लेसि। —ढोला०, दू० १७५।

वीसवसा(पु)†—क्रि० वि० [हिं वीस + बिस्वा] पूरी तौर से। पूर्णतः। उ०—वेली तरलाँ तराँ विलँबी वण हरियाली वीसवसा। —बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२२।

वीसारना†—क्रि० स० [स० विस्मारण] दे० 'बिसारना'। उ०—(क) सभारियाँ सँताप, वीसारिया न वीसरइ।—ढोला०, दू० १८०। (ख) वीसारियाँ न वीसरइ चितारियाँ नावत।—ढोला०, दू० ६१२।

वीस्न(पु)—सज्ञा पु० [स० विष्णु] दे० 'विष्णु' उ०—ब्रह्मा वीस्न महादेव जानी। तिनते उपपत सकल पसारा उपजावत पालत करत सघारा।—रामानद०, पृ० ३१।

वीहगडा -संज्ञा पु० [सं० विहङ्ग] १ पंछी । २ विहायस । आकाश । उ०—जे साजण वीहगडे वीहगडउ न दूरि । —ढोला०, दू० ४६४ ।

वीह ⓟ—संज्ञा पु० [सं० भी, प्रा० बीह, वीह] दे० 'बीह' । उ०—बोलि न सक्कूँ वाहतउ हेक ज वात हुई । राजि अपूठा वाहुडउ माल वणी मूई ।—ढोला०, दू० ४०४ ।

वीहार—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विहार' ।

वुकूअ—संज्ञा पु० [अ वुकूअ] १ घटित होना । प्रकट होना । २ घटना । वाकिया । ३ पक्षियो का नीचे उतरना [को०] ।

वुकूआ—संज्ञा स्त्री० [उर्दू वुकूअह्] दे० 'वाकिया', 'वाका' ।

वुकूद—संज्ञा पुं० [अ० वुकूद] अग्नि को दीप्त करना । जलाना [को०] ।

वुकूफ—संज्ञा पु० [अ० वुकूफ] ज्ञान । जानकारी को०] ।

वुजू—संज्ञा पुं० [अ० वुजू] दे० 'वजू' । को०] ।

वुजूद—संज्ञा पु० [अ० वुजूद] दे० 'वजूद' [को०] ।

वुडित—वि० [सं०] निमग्न । निमज्जित [को०] ।

वुरुद -संज्ञा पु० [अ०] आगमन । आना । पधारना । २ प्रवेश [को०] ।

वूर्ण -वि० [सं०] वरण किया हुआ । चुना हुआ [को०] ।

वुवूर्षु— वि० [सं०] चुनने या वरण करने को इच्छावाला । जो चयन करना चाहता हो [को०] ।

वुसूल—वि०, संज्ञा पु० [अ०] १ 'वसूल' । २ दे० 'उसूल [को०] ।

वुसूली —संज्ञा स्त्री० [अ०] वसूली । प्राप्ति ।

वृंत—संज्ञा पुं० [सं० वृन्त] १ स्तन का अगला भाग । कुचाग्र । चूचुक । २ बोंडी । ढेंड़ा । ३ शाखा का वह अंश जिससे पुष्प, फल, पत्ते आदि संयुक्त होते हैं । प्रसवबंधन (को०) । ४ घटीधारा । घड़ा रखने की तिपाई (को०) । ५ वृंताक । भंटा । बैंगन (को०) । ६ कोशधारी एक कीट । जैसे, रेशम का कीडा (को०) ।

यौ० —वृंततुंबा = गोल कद्दू या लौकी । वृंतफल = बगन । भंटा । वृंतयमक ।

वृंतक —संज्ञा पु० [सं० वृन्तक] डंठल [को०] ।

वृंतयमक—संज्ञा पुं० [सं० वृन्तयमक] यमक अलंकार का एक प्रकार जहाँ एक ही कविता मे अनेक यमकों का प्रयोग होता है [को०] ।

वृंताक—संज्ञा पुं० [सं० वृन्ताक] १ बैंगन । २ पोई का साग ।

वृंताकी—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्ताकी] १ वनभंटा । २ बैंगन ।

वृंतासन—संज्ञा पुं० [सं० वृन्त+आसन] वृंतरूपी पीठिका या आसन । उ०—वृंतासन हिलता डुलता है । इधर उधर मृदु तनु तुलता है ।—कुणाल०, पृ० ११६ ।

वृंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्तिका] लघु वृंतक । छोटा डंठल [को०] ।

वृंतिता—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्तिता] कटुका [को०] ।

वृंद—संज्ञा पु० [सं० वृन्द] १ समूह । झुंड । राशि । ढेर ।

यौ०—वृंदगान = समवेत गायन । कई गायको का एक साथ गाना । वृंदगायक = अनेक गायकों के साथ साथ गानेवाला । वृंदगीत । वृंदमाधव = चिकित्सापरक एक ग्रंथ । वृंदवाद्य । वृंदसंहिता, वृंदसिंधु = आयुर्वेद के ग्रंथ का नाम ।

२ सौ करोड की संख्या । ३ एक मुहूर्त का नाम । उ०—माघ शुक्ल भूता दिन जानो वृंद मुहूरत में पहिचानो ।—विश्राम (शब्द०) । ४ गुच्छा । स्तबक (को०) । ५ कोरस (को०) । सहगान । वृंदगान (को०) । ६ गले का फोटा, अर्बुद या ग्रंथि (को०) । ७ आयुर्वेद के एक विद्वान् (को०) ।

वृंद—वि० अत्यधिक । बेशुमार [को०] ।

वृंदगीत—संज्ञा पु० [सं० वृन्द+गीत] समवेत गान । कोरस गीत । वह गीत जिसे एक साथ कई गायक गाते हैं । उ०—जो वृंदगीत युत वृंदवाद्य से रखते महलों को मुखरित, ले अमित, पीन वीणा, मृदंग आदिक वाद्यों के उपादान ।—भूमि०, पृ० ६५ ।

वृंदवाद्य—संज्ञा पुं० [सं० वृन्द+वाद्य] कई वाद्यों का एक साथ बजनेवाला समूह । (अं०) आर्केस्ट्रा ।

वृंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्दा] १ तुलसी । २. राधिका के सोलह नामो मे से एक नाम । ३ गोकुल के समीप की एक अरण्यानी (को०) ।

वृंदाक—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दाक] परगाछा नाम का पेड ।

वृंदार—संज्ञा पु० [सं० वृन्दार] १. मनोज्ञ । सुदर । आकर्षक । २ अधिक । बडा । विशाल । ३ प्रमुख । उत्तम । श्रेष्ठ [को०] ।

वृंदारक[1]—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दारक] १. देवता । २ श्रेष्ठ व्यक्ति । समादरणीय व्यक्ति (को०) । ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र (को०) ।

वृंदारक[2]— वि० [स्त्री० वृन्दारका, वृंदारिका] १. दे० 'वृंदार' । २ आदरणीय । सम्मान्य [को०] ।

वृंदारका ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दारक] देवता । वृंदारक । —अनेकार्थ०, पृ० ५१ ।

वृंदारण्य—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दारण्य] वृंदावन ।

वृंदावन—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दावन] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता हैं ।

विशेष—कहते है, श्रीकृष्ण ने अपनी अधिकांश बाललीलाएँ यहीं की थी । पुराणों मे वृंदावन के संबंध मे अनेक प्रकार की विलक्षण कथाएँ आदि पाई जाती है । महमूद गजनवी ने वृंदावन और उसके आस पास के अनेक स्थानों को बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर डाला था, और बहुत दिनो तक यह उसी दशा मे पडा रहा । पर पीछे से चैतन्य महाप्रभु ने यमुना के किनारे वर्तमान वृंदावन नामक नगर की स्थापना की थी । इस नगर मे इस समय हजारो बडे बडे मंदिर हैं और दूर दूर से यात्री लोग यहाँ दर्शनों के लिये आते हैं ।

वृंदावनी—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्दावनी] तुलसी [को०] ।

वृंदावनेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० वृन्दावनेश्वर] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

वृंदावनेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वृन्दावनेश्वरी] राधिका का एक नाम ।

वृंदिष्ठ—वि० [सं० वृन्दिष्ठ] १. अत्यंत बडा । विशालतम । २. सुंदरतम । मनोज्ञतम [को०] ।

वृंदी—वि० [सं० वृन्दिन्] वृंदवाला । समूहवाला [को०] ।

वृंदीयान्—वि० [सं० वृन्दीयस्] १. दे० 'वृंदिष्ठ' । २. सुंदरतर [को०] ।

बृंहण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्धक द्रव्य। २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का धूम्रपान। ३ असगंध। ४ मुनक्का। ५ भुईं कुम्हड़ा। ६ चरक के अनुसार सूअर के मास मे पकाया हुआ जौ का सत्तू। ७ पुष्ट करना (को०)। ८. हाथी की चिग्घाड़ (को०)।

बृहण—वि० [सं०] पुष्ट करनेवाला। पुष्टिकारक [को०]।

बृहणवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की वस्ति जिसे निरुह या निरुढ भी कहते हैं। विशेष दे० निरुढ-वस्ति'।

बृहित[1]—वि० [सं०] परिवर्धित। पुष्ट किया हुआ [को०]।

बृहित[2]—संज्ञा पुं० हाथी की चिग्घाड़। बीड [को०]।

वृ—संज्ञा पुं० [सं०] सेना की एक टुकड़ी। उ०—वेद काल मे 'वृ' सेना के एक गुल्म को कहते थे।—प्रा० भा० प०, पृ० १५०।

वृक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ते की जाति का एक मासाहारी पशु। भेडिया। उ०—महा महिप बर। बरद वृकद्व बहु हनत सहित श्रम।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६४। २ शृगाल। गीदड़। ३ कौवा। ४ क्षत्रिय। ५ चोर। लुटेरा। ६. वज्र। ७ अगस्त का पेड़। ८. गधाबिरोजा। ९ उलूक। उल्लू (को०)। १० सुगंधित द्रव्यो का मिश्रण (को०)। ११ एक राक्षस का नाम। १२ जठराग्नि (को०)। १३ हल (को०)। १४ सूर्य (को०)। १५. चंद्रमा (को०)। १६ कृष्ण का एक पुत्र (को०)।

वृककर्मा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वृककर्म्मन्] एक असुर का नाम।

वृककर्मा[2]—वि० भेडिए के समान या तुल्य। अत्यंत क्रूर [को०]।

वृकखड—संज्ञा पुं० [सं० वृकखण्ड] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकगर्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

वृकग्राह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकजभ—संज्ञा पुं० [सं० वृकजम्भ] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकदत—संज्ञा पुं० [सं० वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम। इसी की कन्या सानदिनी कुंभकर्ण को ब्याही थी।

वृकदश—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकदेव—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

वृकदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी, देवकी का एक नाम।

वृकदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृकदेवा' [को०]।

वृकधूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह धूप जो अनेक प्रकार के सुगंधित द्रव्यों की सहायता से तैयार किया गया हो। २ सरल वृक्ष का निर्यास। तारपीन।

वृकधूमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप [को०]।

वृकधूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] गीदड़।

वृकधूर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गीदड़। २ रीछ [को०]।

वृकवोरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक पशु [को०]।

वृकनिवृत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक ग्राम का नाम।

वृकप्रेक्षी—वि० [सं० वृकप्रेक्षिन्] भेड़िए की तरह देखनेवाला [को०]।

वृकबधु—संज्ञा पुं० [सं० वृकबन्धु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकरथ—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार कर्ण के एक भाई का नाम।

वृकल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार शिलष्टि के एक पुत्र का नाम। २ वल्कल का वस्त्र या परिधान (को०)।

वृकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाडी।

वृकवचिक—संज्ञा पुं० [सं० वृकवञ्चिक] एक वैदिक ऋषि का नाम।

वृकवाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वार के दोनो ओर लगाई जानेवाली लकड़ी। बाजू (को०)।

वृकस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] माहिष्मती नगरी [को०]।

वृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवष्ठा या पाढा नाम की लता। २. प्राचीन काल का एक परिमाण जो दो सूपो के बराबर होता था।

वृकाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ।

वृकाजिन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भेडिए का चमड़ा। २. वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

वृकाम्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का खट्टा नीबू [को०]।

वृकायु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जगली कुत्ता। २ चोर।

वृकायु[2]—वि० भेडिए जैसी प्रकृतिवाला, हिंसक, क्रूर [को०]।

वृकाराति—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकारि—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता।

वृकाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक ऋषि का नाम।

वृकाश्वकि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वृकास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिन्हे वृकाश्व भी कहते थे। २ वह जिसका मुँह भेडिए जैसा हो (को०)।

वृकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा भेडिया। २. सियारिन। ३ अवष्ठा। पाढा [को०]।

वृकोदर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भीमसेन का एक नाम।

विशेष—कहते हैं, भीमसेन के पेट मे वृक नाम की विकट अग्नि थी। इसी से उनका यह नाम पड़ा।

२ ब्राह्मण (को०)। ३ शिव के गणो का एक वर्ग (को०)।

वृक्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुरदा। उ०—वृक्क जो कुक्षि गोल हैं सो उदर मे स्थित मेद की पुष्टि करनेवाले कहे हैं।—शार्ङ्गधर०, पृ० १५३। २ हृदय (को०)।

वृक्कक—संज्ञा पुं० [सं०] मूत्राशय। गुरदा।

वृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हृदय। २ गुरदा (को०)।

वृक्ण—वि० वि० [सं०] १ कटा या काटा हुआ। छिन्न। २ विदारित। फाड़ा हुआ। ३ टूटा या तोड़ा हुआ [को०]।

वृक्त—वि० [सं०] १. निर्मल किया हुआ। २. फैलाया या बिखेरा हुआ। विकीर्ण [को०]।

वृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनस्पति या उद्भिज्ज के अंतर्गत वह बडा क्षुप जिसका एक ही मोटा और भारी तना होता है और जो जमीन से प्राय सीधा ऊपर की ओर जाता है। पेड। दरख्त। द्रुम। विटप।

विशेष—प्राय लोग बोलचाल मे वृक्ष और क्षुप अथवा वृक्ष और दूसरी छोटी वनस्पतियो मे कोई अंतर नही रखते और उनमे से अधिकाश को प्राय वृक्ष ही कहा करते हैं। पर क्षुप और वृक्ष मे यह अंतर है कि क्षुप तीन चार हाथ से अधिक ऊँचा नही होता, और न उसमे कोई एक मुख्य तना होता है। उसकी जड से ही कई डालियाँ निकलकर इधर उधर फैल जाती हैं। परंतु वृक्ष मे एक मुख्य और भारी तना होता है जो पहले कुछ ऊँचाई तक सीधा ऊपर की ओर जाता है, और तब उसमे से चारो ओर डालियाँ निकलती हैं। पर फिर भी कुछ बडे क्षुप ऐसे होते है जो अपने आकार प्रकार के कारण ही वृक्ष कहलाते हैं। वृक्ष मे कुछ ठोस काठ का रहना भी आवश्यक होता है। पर केले मे काठ का कोई अंश न रहने पर भी उसे लोग प्राय वृक्ष ही कहते हैं। कुछ वृक्ष ऐसे होते है जिनके सब पत्ते वसंत ऋतु के आरंभ मे झड जाते है, और तब फिर नए पत्ते निकलते हैं। ऐसे वृक्ष 'पतझड' वाले वृक्ष कहलाते हैं जिनमे पुराने पक्के पत्ता के गिरने से पहले ही नए पत्ते निकल आते हैं। ऐसे वृक्ष सदावहार कहलाते हैं। वृक्षो मे प्राय अनेक प्रकार के फल लगते हैं जिन्हे लोग खाते है, और उसकी लकडी मे तरह तरह की चीजें (जैसे,—मेज, कुरसी, दरवाजा, हल, गाडी आदि) बनाई जाती हैं। इनकी पत्तियाँ आदि ओषधि रूप मे, रंग निकालने और चमडा सिझाने के काम मे आती हैं। वृक्ष प्राय बीजो से और कभी कभी पनीरी के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं।

पर्या०—महीरुह। शाखी। विटपी। पादप। तरु। पलाशी। द्रुम। आगम। स्थिर। नग। अग। कुज। क्षितिरुह। महीज। शाल।

२ किसी प्रकार का क्षुप या पौधा अथवा कोई कुछ बडा और ऊँची वनस्पति। ३ वृक्ष से मिलती जुलती वह आकृति जिसमे किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ आदि दिखलाई गई हो। वंशवृक्ष। ४ वृक्ष का तना (को०)। ५ कुटज। इंद्रजव (को०)। ६ कफन। मृतचीवर (को०)।

वृक्षकंद—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षकन्द] विदारीकंद।

वृक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा पेड। २ पेड। दरख्त। ३ कुटज का पेड।

वृक्षकुक्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली मुर्गा।

वृक्षकोटर—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का खोडरा [को०]।

वृक्षखंड—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षखण्ड] निकुंज। वृक्षो का समूह [को०]।

वृक्षगुल्म—वि० [सं०] जो वृक्षो मे आवृत हो। वृक्षो से ढका हुआ [को०]।

वृक्षगृह—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी, जिनका निवास वृक्ष हैं।

वृक्षचर—संज्ञा पुं० [सं०] बंदर।

वृक्षच्छाय—संज्ञा पुं० [सं०] जो वृक्ष की छाया युक्त हो, कुंज [को०]।

वृक्षच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेड की छाया [को०]।

वृक्षज—वि० [सं०] वृक्ष से उत्पन्न (फल, फूल, काष्ठ आदि)।

वृक्षतक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिलहरी। २ वृक्ष को काटनेवाला लकडहारा। काष्ठक्रेता।

वृक्षदल, वृक्षपत्र, वृक्षपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] पत्ता। पेड का पत्ता [को०]।

वृक्षदोहद—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष को फूल लगना। विशेष दे० 'दोहद ६।'

वृक्षधूप—संज्ञा पुं० [सं०] सरल या चीड का पेड।

वृक्षनाथ, वृक्षनायक—संज्ञा पुं० [सं०] वट का पेड। वट वृक्ष।

वृक्षनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] पेड म से निकलनेवाला किसी प्रकार का रस या तरल द्रव्य।

वृक्षपाक—संज्ञा पुं० [सं०] बड का पेड। वट।

वृक्षपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली साल वृक्ष। २ वनरक्षा। वन का रक्षक (को०)।

वृक्षप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृतियो आदि के अनुसार पुण्यफल की प्राप्ति के लिये अश्वत्थ आदि के वृक्ष लगाने की क्रिया।

वृक्षभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। वि० दे० 'परगाछा'। २. बदाक। बंदा।

वृक्षभवन—संज्ञा पुं० [सं०] कोटर। वृक्ष का खोडरा [को०]।

वृक्षभित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] टाँगा, कुल्हाडी आदि जिससे वृक्ष काटा जाय [को०]।

वृक्षभेदी—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षभेदिन्] १ कुठार। कुल्हाडी। २ बढई की तक्षणी, रुखानी आदि (को०)।

वृक्षमर्कटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलहरी [को०]।

वृक्षमार्जार—संज्ञा पुं० [सं०] काष्ठबडाल। पेड पर रहनेवाला एक जानवर।

वृक्षमूल—संज्ञा पुं० [सं०] पेड की जड।

वृक्षमूलिक—वि० [सं०] वृक्ष की जड या मूल से सबंध रखनेवाला।

वृक्षमृद्भू—संज्ञा पुं० [सं०] पानी मे उगनेवाला बेत [को०]।

वृक्षराज—संज्ञा पुं० [सं०] परजाता। पारिजात।

वृक्षराट्—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षराज्] पीपल का पेड।

वृक्षरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। २ रुद्रवती। बदा। बदाक। ३. अमरबेल। ४ जतुका नाम की लता। ५ विदारीकंद। ६ ककही या कघी नाम का पौधा। ७ पुष्कर-मूल।

वृक्षरोपक—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्षादि को लगानेवाला व्यक्ति।

वृक्षरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष रोपना। पेड लगाना [को०]।

वृक्षरोपयिता—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षरोपयितृ] वह जो वृक्ष आदि लगाने का काम करता हो [को०]।

वृक्षवाटिका, वृक्षवाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा। उपवन।

वृक्षवासी—वि० [सं० वृक्षवासिन्] वृक्ष पर रहनेवाला। जंगली। उ०—यक्ष अंगुलिमाल (बौद्धकाल) पहले एक वृक्षवासी नरभक्षक था, परवर्ती रूप में द्वारपाल हो गया।—प्रा० भा० प०, पृ० ८७।

वृक्षश—संज्ञा पुं० [सं०] गिरगिट। प्रतिसूर्यक (को०)।

वृक्षशायिक—संज्ञा पुं० [सं०] लंगूर।

वृक्षशायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलहरी।

वृक्षसंकट—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षसङ्कट] वह पगडंडी जो घने वृक्षों के बीच से गई हो।

वृक्षसारक—संज्ञा पुं० [सं०] द्रोणपुष्पी। गूमा।

वृक्षसेचन—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ की सिंचाई। पेड़ों में पानी देना (को०)।

वृक्षस्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ में से निकलनेवाला निर्यास या तरल द्रव्य।

वृक्षांघ्रि—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षाङ्घ्रि] पेड़ का निचला भाग या चरण। वृक्षमूल (को०)।

वृक्षादन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुठार। कुल्हाड़ा। २ बढ़ई का वसूला या रुखानी (को०)। ३ अश्वत्थ वृक्ष। ४ पियाल का पेड़। ५ मधुमक्खी का छत्ता।

वृक्षादनी, वृक्षादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विदारी। २ वंदा। वर्षा। वंदाक।

वृक्षाधिरुहक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का आलिंगन (को०)।

वृक्षाधिरूढ—संज्ञा पुं० [सं०] आलिंगन का एक प्रकार, जिसमें नारी पुरुष से उसी प्रकार लिपट जाती है जिस प्रकार लता वृक्ष से (को०)।

वृक्षाधिरूढक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृक्षाधिरूढ' (को०)।

वृक्षाधिरूढि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता का वृक्ष में लिपटना। २ आलिंगन का एक प्रकार (को०)।

वृक्षामय—संज्ञा पुं० [सं०] लाख।

वृक्षाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ इमली। २ चुक नामक खटाई। ३ अमड़ा। ४ अमलबेंत। ५ अम्लकुटा। अवलकुटा।

वृक्षायुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

वृक्षार्हा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा।

वृक्षालय—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

वृक्षावली—संज्ञा स्त्री० [सं० वृक्ष+अवली] पेड़ों की कतार। वृक्षसमूह। उ०—तातें वैष्णवन को व्रज की वृक्षावली सर्वथा तोरनी नाहीं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३०२।

वृक्षावास—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनवासी। तपस्वी। २ पक्षी (को०)।

वृक्षाश्रयी—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षाश्रयिन्] छोटा उल्लू। २ पक्षी (को०)।

वृक्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वृक्ष] वह पुतली जो वृक्ष के आधार पर हो। शालभंजिका। पुतली। उ०—यहाँ बौद्ध तोरणों में प्रयुक्त वृक्षिका यक्षिणी के प्रतीक का प्रभाव स्पष्ट दीखता है, किंतु हिंदू शैली में निर्मित होने के कारण इनके आकार और विषय में परिवर्तन आ गया।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६५।

वृक्षोत्थ—वि० [सं०] पेड़ पर उगा हुआ। वृक्ष पर उगनेवाला (को०)।

वृक्षोत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] कनियारी या कनकचंपा का पेड़।

वृक्षौका—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षौकस्] वनमानुष (को०)।

वृक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ का फल।

वृज—संज्ञा पुं० [सं० व्रज] दे० 'व्रज'।

विशेष—'वृज' शब्द के यौगिक आदि के लिये दे० 'व्रज' शब्द के यौगिक।

वृजन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। आसमान। २ दुष्कर्म पाप। ३ लड़ाई। युद्ध। ४ निपटारा। निराकरण। ५ ताकत। शक्ति। बल। ६. बाल। ७ शत्रु। दुश्मन। ८. रक्षित या घेरी हुई भूमि या चरागाह (को०)। ६ घुँघराले बाल (को०)। १० विपत्ति। आपत्ति। दु ख। संकट (को०)।

वृजन²—वि० १ कुटिल। टेढ़ा। २ शक्तिशाली। मजबूत (को०)। ३ जो अचल न हो। चल। स्थायी (को०)। ४ विनश्वर। क्षयिष्णु (को०)।

वृजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] ग्राम में रहनेवाला बहुत ही सीधा सादा आदमी। वह जो परम साधु हो।

वृजि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्रज भूमि। २ मिथिला प्रदेश। तिरहुत।

वृजिन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। गुनाह। उ०—देव अखिल मंगल भवन निविड संसय समन दमन वृजिनाटवी कष्टहर्ता।—तुलसी (शब्द०)। २. दु ख। कष्ट। तकलीफ। ३ रक्त चर्म। लाल खाल या चमड़ा। ४ खून। लहू। रक्त। ५ बाल। कुंचित केश। ६ दुष्ट व्यक्ति (को०)।

वृजिन²—वि० १ कुटिल। टेढ़ा। २ पापयुक्त।

वृज्य—वि० [सं०] जो मोड़ा जाय। जो ऐंठा या घुमाया जाय (को०)।

वृतंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तान्त] दे० 'वृत्तांत'। उ०—इम आतम उद्धार करि जनम लिया भुप आइ। सो वृतंत कवि चंद कहि बरन्यौ कवित बनाइ।—पृ० रा०, १।५७८।

वृत—वि० [सं०] १ जो किसी काम के लिये नियुक्त किया गया हो। मुकर्रर किया हुआ। २ ढका हुआ। छाया हुआ। ३ जिसके संबंध में प्रार्थना की गई हो। ४ जो मंजूर किया गया हो। स्वीकृत। ५ गोल। ६ वरण किया हुआ। चुना हुआ (को०)। ७ चारों ओर से घेरा हुआ। आवृत (को०)। ८ जो दूषित किया गया हो (को०)। ६ सेवित (को०)।

वृतपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री नाम की लता।

वृताक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मुरगा।

वृतिंकर—संज्ञा पुं० [सं० वृतिङ्कर] विकंकत नाम का वृक्ष।

वृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जिससे कोई चीज घेरी या ढकी जाय। २. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। ३ छिपाने की क्रिया। ४ वरण। चुनाव (को०)। ५. याचना। प्रार्थना (को०)।

वृत्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चरित्र। चरित। २ वेदों और शास्त्रों के अनुकूल आचार रखना। ३ आचार। चाल चलन। ४ स्तन के आगे का भाग। चूचुक। ५ सफेद ज्वार। ६ गुंडा या गुंड नाम की घास। ७ अंजीर। ८ सतिवन। ९ कछुआ। १० समाचार। वृत्तांत। हाल। उ०—अब जो वृत्त नवीन, होय कहहु सो करि कृपा।—प्रेमघन०, भा० १, पृ०८२। ११ बड़ों के आदर, इंद्रियनिग्रह और सत्य आदि की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। १२ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। १३ जीविका का साधन। वृत्ति। १४ वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। जैसे,—इंद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, मालिनी आदि। उ०—नूतन वृत्तों में कविकोविद नए गीत रच लाते हैं। नव रागों में, नव तालों में, गायक उन्हें जगाते हैं।—साकेत, पृ० २७३।

विशेष—पदों के विचार से वृत्त तीन प्रकार के होते हैं। जिस वृत्त के चारों पद समान हों, वह 'सम वृत्त' कहलाता है, जिसमें चारों पद असमान हों, वह 'विषम वृत्त' कहलाता है, और जिसके पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद समान हों, उसे 'अर्ध समवृत्त' कहते हैं।

१५ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। इसे गंडका और दंडिका भी कहते हैं। १६ वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। १७ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्यबिंदु से समान अंतर पर हो। १८ दे० 'वृत्तासुर'।

वृत्त²—वि० १ बीता हुआ। गुजरा हुआ। २ दृढ़। मजबूत। ३ जिसका आकार गोल हो। वर्तुल। ४ मृत। मरा हुआ। ५ जो उत्पन्न हुआ हो। जात। अस्तित्वमय। विद्यमान। ६ निष्पन्न। सिद्ध। ७ ढका हुआ। आच्छादित। ८ अनुष्ठित। कृत (को०)। ९ पठित। अधीत (को०)। १० प्रसिद्ध। ख्यात (को०)। ११ घटित। संभूत (को०)।

वृत्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह गद्य जिसमें कोमल तथा मधुर अक्षरों और छोटे छोटे समासों का व्यवहार किया गया हो। २ छंद। ३ बौद्ध या जैन गृहस्थ (को०)।

वृत्तकर्कटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा।

वृत्तकोशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता।

वृत्तकोष—संज्ञा पुं० [सं०] पीली देवदाली।

वृत्तखंड—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तखण्ड] १ किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २ मेहराब।

वृत्तगंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० वृत्तगन्धि] वह गद्य जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो। वह गद्य जिसमें पद्य का आनंद आता हो।

वृत्तगंधी—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तगन्धिन्] दे० 'वृत्तगंधि'।

वृत्तगुंड—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तगुण्ड] दीर्घनाल या गोंदला नाम की घास।

वृत्तचूड—वि० [सं०] १ मेहराबनुमा (झरोखा)। २ दे० 'वृत्तचौल' (को०)।

वृत्तचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वभाव। प्रकृति। मिजाज। २ आचरण। चालचलन।

वृत्तचौल—वि० [सं०] जिसका चूडाकरण संस्कार हो चुका हो (को०)।

वृत्तज्ञ—वि० [सं०] रीतिरिवाज, घटना, इतिहास, वृत्तांत आदि जाननेवाला (को०)।

वृत्ततंडुल—संज्ञा पुं० [सं० वृत्ततण्डुल] यवनाल। जवनाल।

वृत्तपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्रदात्री नाम की लता।

वृत्तपरिणाह—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्त की परिधि या घेरा (को०)।

वृत्तपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा। पाढ़ा। २ बड़ी शरणपुष्पी।

वृत्तपुच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चमड़ा (को०)।

वृत्तपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरस का पेड़। २ कदम या कदंब का पेड़। ३ जलबेंत। ४ मुई ंदर। ५ मदागुलाब। सेवती। ६ मातिया। मोगरा। मुग्दर। ७. मल्लिका। कुब्जक। मालती।

वृत्तपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागदमनी। २ मदागुलाब। सेवती।

वृत्तपूरण—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्त या छंद को पूरा करना। छंद की पूर्ति (को०)।

वृत्तप्रत्यभिज्ञ—वि० [सं०] धर्मग्रंथों में अवगत दक्ष (को०)।

वृत्तफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कोई गोलाकार फल। २ काली मिर्च। ३ अनार। ४ बेर। ५ कैथ। कपित्थ। ६ लाल अपामार्ग। लाल चिचड़ा। ७ करंज का पेड़। ८ तरबूज। ९ खरबूजा।

वृत्तफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बैंगन। भंटा। २ बड़ी ककड़ी। ३ आँवला।

वृत्तबंध—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तबन्ध] वह जो वृत्त या छंद के रूप में बाँधा गया हो।

वृत्तबीज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्तबीज'।

वृत्तबीजका, वृत्तबीजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तबीजका'।

वृत्तभंग—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तभङ्ग] १ छंदोभंग। २ आचरण या व्यवहार की भ्रष्टता (को०)।

वृत्तभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] गडीर या गिडनी नाम का साग।

वृत्तमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद आक। २ त्रिपुरमल्लिका।

वृत्तमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्तांतों की माला। घटनाओं की शृंखला। उ०—भिन्न भिन्न शाखाओं के हजारों कवियों की केवल वृत्तमालाएँ साहित्य के इतिहास के अध्ययन में कहाँतक सहायता पहुँचा सकती थीं ?—इतिहास, पृ० २।

वृत्तयुक्त—वि० [सं०] आचरणयुक्त। सदाचारी (को०)।

वृत्तवत्—वि० [सं०] १ जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी। २ वृत्त के समान। गोलवर्तुलाकार (को०)।

वृत्तविधान—संज्ञा पुं० [सं० वृत्त+विधान] छंदोविधान। छंदों की योजना। उ०—श्रुतिकटु मानकर कुछ वर्णों का त्याग, वृत्तविधान, लय, अंत्यानुप्रास आदि नाद सौंदर्य-साधन के लिये ही है।—रस०, पृ० ४६।

वृत्तवीज—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ भिंडी। तरोई। २ लोबिया। राजमाष।

वृत्तवीजका—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १. अरहर नामक दाल। २ पाडुफली। पाडुरफली।

वृत्तवीजा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] अरहर नाम का अन्न।

वृत्तशस्त्र -वि० [सं०] जो शस्त्रविद्या मे निष्णात हो। शस्त्र विद्या में निपुण। धनुर्वेदज्ञ [को०]।

वृत्तशाली—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तशालिन्] वह जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी।

वृत्तश्लाघी—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तश्लाघिन्] १ वह जिसे अपने काम का अभिमान या श्लाघा हो। २ क्षत्रिय।

वृत्तसकेत—वि० [सं० वृत्तसङ्केत] जिसने अपनी सहमति या स्वीकृति दे दी हो [को०]।

वृत्तसग्रह—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्त+सङ्ग्रह] १. जीवनवृत्तातो का सग्रह। २. ऐसा ग्रथ जिसमे केवल जीवनी दे दी गई हो। उ०—सारे रचनाकाल को आदि, मध्य, पूर्व, उत्तर इत्यादि खडो मे आँख मूदकर बाँट देना किसी वृत्तसग्रह को इतिहास नही बना सकता।—इतिहास, पृ० २।

वृत्तसपन्न—वि० [सं०] आचारवान्। वृत्तयुक्त।

वृत्तसादी—वि० [सं० वृत्तसादिन्] आचार व्यवहार को नष्ट करनेवाला अनाचारी। कमीना [को०]।

वृत्तस्क, वृत्तस्थ—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। सदाचारी। २ वह जो दूसरो का उपकार करता हो। परोपकारी।

वृत्तहीन—वि० [सं०] आचारहीन। आचाररहित [को०]।

वृत्तागी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं० वृत्ताङ्गी] प्रियगु लता [को०]।

वृत्तात—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तान्त] १ किसी बीती हुई बात या घटी हुई घटना का विवरण। समाचार। हाल। जैसे,—(क) इस घटना का सारा वृत्तात समाचारपत्रो मे छप गया है। (ख) अब आप अपना कुछ वृत्तात सुनाइए। २ प्रक्रिया। ३ सपूर्णता। समस्तता। ४ प्रस्ताव। ग्रथ का अध्याय। ५. अवसान। ६. अवसर। मौका। ७ भाव। ८. चालू विषय या प्रकरण। ९ प्रकार। किस्म (को०)। १० ढग। रीति (को०)। ११. अवस्था। दशा (को०)। १२. अवकाश (को०)। १३ गुण। प्रकृति (को०)। १४ एकात (को०)। १५. बीती या घटी हुई स्थिति। घटना (को०)।

वृत्ता—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ झिंझरीट नाम का क्षुप। २. रेणुका। रेणुबीज। ३. प्रियगु। ४ मासरोहिणी। ५ सफेद सेम। ६ नागदमनी। ७ नतुआ।

वृत्तानुपूर्व -वि० [सं०] गालाई के अनुरूप।

वृत्तानुवर्ती—सञ्ज्ञा पुं० [सं० वृत्तानुवर्तिन्] वह जिसका आ[चरण अच्छा] हो। सदाचारी।

वृत्तानुसारी—वि० [सं० वृत्त+अनुसारिन्] विहित रीति से कार्य करनेवाला [को०]।

वृत्तार्द्ध—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वृत्त का आधा भाग [को०]।

वृत्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कार्य जिसके द्वारा जीविकानिर्वाह होता हो। जीविका। रोजी।

क्रि० प्र०—करना।—लगना। होना।

२ वह धन जो किसी दीन, विधवा या छात्र आदि को बराबर, कुछ निश्चित समय पर उसके सहायतार्थ दिया जाय। उपजीविका।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३ सूत्रों आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये की जाती है।

विशेष—हमारे यहाँ सूत्रों आदि की व्याख्या के वृत्ति, भाष्य, वार्तिक, टीका और टिप्पणी ये पाँच भेद किए गए हैं। इनमे से वृत्ति उस व्याख्या को कहते हैं जो कुछ संक्षिप्त होती है और जिसकी रचना गभीर होती है।

४ विवरण। वृत्तात। हाल। ५ नाटकों मे विषय के विचार से वर्णन करने की शैली।

विशेष—यह चार प्रकार की कही गई है और भिन्न भिन्न रसो के लिये उपयुक्त मानी गई है। जैसे—कौशिकी वृत्ति शृगार रस के लिये, सात्वती वृत्ति वीर रस के लिये, आरभटी वृत्ति रौद्र और वीभत्स रस के लिये और भारती वृत्ति शेष अन्य रसों के लिये। जहाँ अच्छी वेशभूषावाली नायिका, बहुत सी स्त्रियों और नृत्यगीत तथा भोगविलास आदि का वर्णन हो, उसे कौशिकी, जहाँ वीरता, दानशक्ति, दया, सरलता आदि का वर्णन हो उसे सात्वती, जहाँ माया, इद्रजाल, सग्राम, क्रोध आदि का वर्णन हो, उसे आरभटी, और जहाँ संस्कृतबहुल कथोपकथन हो उसे भारती वृत्ति कहते है। इन चारो वृत्तियो के भी कई अवातर भेद माने गए हैं।

६ व्यवहार। ७ वह जो किसी दूसरे पर आश्रित या अवलबित हो। आवेय। ८ योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ९ व्यापार। कार्य। १०. स्वभाव। प्रकृति। ११ कर्तव्य। १२ सहार करने का एक प्रकार का शस्त्र। उ०—पारचि माली वृत्ति नाम पुनि अतिमाली नौ।—पद्माकर (शब्द०)। १३ अस्तित्व। सत्ता। १४ टिकना। किसी विशेष स्थिति मे होना या रहना (को०)। १५. अवस्था। दशा (को०)। १६. क्रम। प्रणाली (को०)। १७ मजदूरी (को०) १८ सम्मानपूर्ण बर्ताव (को०)। १९. चक्कर काटना। मुड़ना (को०)। २० किसी वृत्त या पहिए की परिधि (को०)। २१ शब्द की शक्ति—अभिधा, [लक्ष]णा और व्यजना (को०)। २२. विचार करने की प्रक्रिया [या वि]चारसरणि (को०)। २३ अनुप्रास अलकार का एक भेद [को०]। २४. रुद्र की पत्नी (को०)।

वृत्तिकर¹—वि० [सं०] वृत्ति या जीविका देनेवाला [को०]।

वृत्तिकर²—संज्ञा पुं० पेशे के ऊपर लगाया जानेवाला एक प्रकार का सरकारी कर। (अं० प्रोफेशन टैक्स)।

वृत्तिकर्षित—वि० [सं०] जीविका के अभाव से दुःखी [को०]।

वृत्तिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी सूत्रग्रंथ पर वृत्ति लिखी हो।

वृत्तिकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्तिकार'।

वृत्तिक्षीण—वि० [सं०] दे० 'वृत्तिकर्षित'।

वृत्तिचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] क्रियाओं या व्यापारों का समूह। व्यवहारसमुच्चय। (अं० सिस्टम) उ०—वह एक वृत्तिचक्र है जिसके अंतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीरधर्म सबका योग रहता है। चिंतामणि, भा० २, पृ०८८।

वृत्तिच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृत्ति या जीविका से रहित होना। २ दे० 'वृत्तिच्छेदन'।

वृत्तिच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी की वृत्ति या जीविका का अपघात करना जो एक दोष माना गया है।

वृत्तिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्ति का भाव या धर्म।

वृत्तिदाता—वि० [सं० वृत्तिदातृ] वृत्ति देनेवाला। जीविका चलानेवाला। आश्रयदाता [को०]।

वृत्तिनिबंधन—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तिनिबन्धन] जीविकाप्राप्ति का साधन [को०]।

वृत्तिनिरोध—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति मे उपस्थित होनेवाली बाधा [को०]।

वृत्तिभंग—संज्ञा पुं० [सं० वृत्तिभङ्ग] जीविका की हानि [को०]।

वृत्तिमूल—संज्ञा पुं० [सं०] रोजी का सहारा। जीविका का आधार [को०]।

वृत्तिरुशना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार रुद्र की एक स्त्री का नाम।

वृत्तिवैकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति की हानि। दे० 'वृत्तिभंग' [को०]।

वृत्तिसाम्य—संज्ञा पुं० [सं० वृत्ति+साम्य] भावानुभूति की समान स्थिति। उ०—संभवतः काल के साथ तादात्म्य करके कवि से वृत्तिसाम्य स्थापन के द्वारा आलोचना के क्षेत्र मे हमारा यह प्रयास है।—बी० श० महा०, पृ० 'ग'।

वृत्तिस्थ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अपनी वृत्ति या जीविका पर स्थित हो। २ वह जो आचारवान् या वृत्तियुक्त हो। ३ गिरगिट।

वृत्तिस्थ²—वि० १ आचारवान्। २ किसी भी स्थिति या नियुक्ति मे रहनेवाला (को०)।

वृत्तिहंता—वि० [सं० वृत्तिहन्तृ] किसी की आजीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०]।

वृत्तिहा—वि० [सं० वृत्तिहन्] किसी की जीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०]।

वृत्तिहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तिभंग'।

वृत्तिह्रास—संज्ञा पुं० [सं०] जीविका छूटना। वृत्ति या जीविका न रहना [को०]।

वृत्तेर्वारु—संज्ञा पुं० [सं०] तरबूजे की बेल।

वृत्त्यनुप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच प्रकार के अनुप्रासों में से एक प्रकार का अनुप्रास जो काव्य में एक शब्दालंकार माना जाता है। इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपों में बार बार आते हैं। जैसे, आली भारी कारी घटा, झारी नारी बैस। इसमें र और ब य का व्यंजन कई बार आए हैं, अतः यह वृत्त्यनुप्रास हुआ।

वृत्त्युपरोध—संज्ञा पुं० [सं०] जीविका में पड़नेवाला विघ्न [को०]।

वृत्त्युपाय—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति या जीविका का आधार।

वृत्य¹—वि० [सं० वृत्य] १. जो नियुक्त करने के योग्य हो। मुकर्रर करने के काबिल। २ वरणीय। वरण करने योग्य (को०)। ३ जिसे घेरा जाय। जो आवृत किया जाय (को०)। ४ रक्षणीय। रक्षा करने योग्य (को०)।

वृत्य²—संज्ञा स्त्री० [सं० वृत्ति] दे० 'वृत्ति' (व्यापार)। उ०—तीन गुननि की वृत्य जे तिन में तर्यौ होइ।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० १७३।

वृत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंधेरा। २ मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४ पुराणानुसार त्वष्टा के पुत्र एक दानव या असुर का नाम। वृत्रासुर।

विशेष—इसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिये दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाया गया था। कहते हैं, एक बार इंद्र ने विश्वरूप पुरोहित को मार डाला था। उनके पिता त्वष्टा ऋषि ने इसका बदला चुकाने के लिये यज्ञ करके इसे उत्पन्न किया। जब इसने इंद्र पर आक्रमण किया, तब इंद्र देवताओं सहित इंद्रपुरी से भाग गए। पर अंत में विष्णु की सम्मति से इंद्र ने दधीचि ऋषि से उनकी हड्डियाँ माँगी और उन्हीं हड्डियों का वज्र बनाकर इससे लड़ना आरंभ किया। जब इंद्र ने इसके दोनों हाथ काट डाले, तब यह इंद्र को उनके हाथी ऐरावत सहित निगल गया। तब इंद्र इसका पेट फाड़कर बाहर निकले और इसका सिर काट डाला। देवीभागवत में इसकी कथा विस्तार के साथ दी गई है। वेदों में भी 'वृत्र असुर' का उल्लेख है, पर वहाँ जो कुछ वर्णन मिलता है, उससे आलंकारिक रूप में मेघ और अंधकार आदि के संबंध में ही 'वृत्र' शब्द आया हुआ जान पड़ता है।

५ एक पर्वत का नाम। ६. ध्वनि (को०)। ७ चक्र (को०)। ८ इंद्र (को०)। ९ पर्वत। पहाड़ (को०)। १०. पत्थर (को०)। ११. धन (को०)। १२. चर्म। चमड़ा (को०)।

वृत्रखाद—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का एक नाम, जिन्होंने वृत्र नामक असुर को मारा था।

वृत्रघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृत्र नामक असुर का मारनेवाले, इंद्र। २ वैदिक काल के एक देश का नाम जो गंगा के तट पर था।

वृत्रघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पारियात्र नामक कुलपर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम।

वृत्रतूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

वृत्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृत्र का भाव या धर्म। २. शत्रुता। दुश्मनी।
वृत्रद्रुह्—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रद्रुह्] इंद्र। दे० 'वृत्रघ्न' [को०]।
वृत्रद्विट्—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रद्विष्] इंद्र [को०]।
वृत्रनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाला, इंद्र।
वृत्रभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] गडोर या गुँदरी नामक साग।
वृत्ररिपु—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्र के रिपु। इंद्र।
वृत्रवैरी—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रवैरिन्] वृत्र को मारनेवाले, इंद्र।
वृत्रशंकु—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रशङ्कु] एक प्रकार का पत्थर का खंभा। (वैदिक)।
वृत्रशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
वृत्रहंता—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रहन्तृ] इंद्र [को०]।
वृत्रहा—संज्ञा पुं० [सं० वृत्रहन्] वृत्रासुर को मारनेवाले, इंद्र।
वृत्रारि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
वृत्रासुर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्र'—४।
वृत्वा—संज्ञा पुं० [सं० वृन्वन्] आकाश। आसमान [को०]।
वृथा¹—वि० [सं०] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।
वृथा²—क्रि० वि० १ बिना मतलब के। बेफायदा। २ अनावश्यक रूप से (को०)। ३ मूर्खता से। आलस्यपूर्वक (को०)। ४ गलत या अनुचित रूप से (को०)।
वृथाकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेकार की बात। गप शप [को०]।
वृथाकार—संज्ञा पुं० [सं०] मिथ्या रूप। खाली तमाशा (को०)।
वृथात्व—संज्ञा पुं० [सं०] वृथा होने का भाव या धर्म।
वृथादान (ऋण)—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो चालबाज, धूर्त आदि लोगों को दिया गया हो।
वृथापक्व—वि० [सं०] जैसे तैसे अपने लिये पकाया हुआ [को०]।
वृथापलित—वि० [सं०] वयोवृद्ध होते हुए भी नासमझ [को०]।
वृथाप्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह माता जिसने व्यर्थ ही संतान उत्पन्न की हो [को०]।
वृथाप्रतिज्ञ—वि० [सं०] सहसा प्रतिज्ञा कर लेनेवाला। गंभीरतापूर्वक प्रतिज्ञा न करनेवाला [को०]।
वृथामति—वि० [सं०] न समझ। निर्बुद्धि [को०]।
वृथामांस—संज्ञा पुं० [सं०] वह मांस जो किसी देवी या देवता को अभिप्रेत न हो या चढाया न गया हो। ऐसा मांस खाने का निषेध है।
वृथार्तवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंध्या स्त्री [को०]।
वृथालंभ—संज्ञा पुं० [सं० वृथालम्भ] ओषधियों को अनावश्यक रूप से काटना [को०]।
वृथालिंग—वि० [सं० वृथालिङ्ग] जिसका मूल कारण अविदित हो [को०]।
वृथालिंगी—वि० [सं० वृथालिङ्गिन्] व्यर्थ ही अनधिकारपूर्वक किसी संप्रदाय का चिह्न धारण करनेवाला [को०]।
वृथावादी—वि० [सं० वृथावादिन्] असत्यवक्ता को०]।
वृथावृद्ध—वि० [सं०] बुद्धिहीन [को०]।
वृथोक्त—वि० [सं०] निष्प्रयोजन कहा हुआ। बेकार कहा हुआ [को०]।
वृथोत्पन्न—वि० [सं०] जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो [को०]।
वृथोद्यम—वि० [सं०] निरर्थक उद्यम करनेवाला [को०]।
वृद्ध¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य की तीन अवस्थाओं में से एक अवस्था जो युवावस्था के उपरांत और सबके अंत में आती है। बुढापा। जरा।
विशेष—यह अवस्था प्रायः ६० वर्ष के उपरांत आती है। इसमें मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो जाता है, उसके सब अंग शिथिल हो जाते हैं, शरीर की धातुएँ तथा इंद्रियाँ आदि भी बराबर क्षीण होती जाती हैं, और इसके अंत में मृत्यु आ जाती है।
२. वह जो इस अवस्था में पहुँच गया हो। बुड्ढा। ३. सम्मानित व्यक्ति। पंडित। विद्वान्। ४ शैलज नामक गंधद्रव्य। ५ वृद्धावस्था। ६ ऋषि। संत (को०)। ७ वंशज। संतान (को०)। ८. व्याकरण में वह शब्द जिसके प्रथम स्वर का वृद्धि हुई हो (को०)। ९. गुग्गुल (को०)। १०. अस्सी साल का हाथी (को०)।
वृद्ध²—वि० १ बढ़ा हुआ। पूर्णतः बढा हुआ। ३ अधिक अवस्था का। ४ बडा। विशाल। ५ विकसित। ६ एकत्रित। संचित। ७ पंडित। बुद्धिमान्। अधीत। शिक्षित। ८. याम्य। [विशिष्ट को०]।
वृद्धकंट—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धकण्ट] इंगुदी का पेड।
वृद्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध व्यक्ति। बूढा आदमी। २ आख्यान। उपाख्यान। कथा वार्ता [को०]।
वृद्धकाक—संज्ञा पुं० [सं०] द्रोणकाक। पहाडी कौवा।
वृद्धकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्धावस्था। बुढापा। २ काशी का एक शिवलिंग। वृतकाल। वृद्धिकालेश्वर।
वृद्धकावेरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।
वृद्धकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कृच्छ्र रोग।
वृद्धकेशव—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सूर्य की एक मूर्ति का नाम।
वृद्धकोश—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत धनाढ्य व्यक्ति [को०]।
वृद्धक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] वृद्ध का क्रम या पद [को०]।
वृद्धगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धगङ्गा] हिमालय का एक छोटी नदी का नाम।
वृद्धगर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गर्भिणी नारी जिसका गर्भस्थ शिशु बडा हो गया है [को०]।
वृद्धगोनस—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।
वृद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृद्ध का भाव या धर्म। बूढापन। २. पांडित्य।
वृद्धतिक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाठा। पाढ़ा।
वृद्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध होने का भाव या धर्म। बुढापा। २ पांडित्य।
वृद्धदार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृद्धदारक'।

वृद्धदारक—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा नामक क्षुप।

वृद्धदारु—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा [को०]।

वृद्धद्युम्न—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृद्धधूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरिस का पेड़। २ सरल का वृक्ष।

वृद्धधूमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिसोढ़ा।

वृद्धनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी तोंद आगे को निकली हो। तोंदल। तुंदिल।

वृद्धपराशर—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धप्रपितान—संज्ञा पुं० [सं०] दादा का दादा [को०]।

वृद्धप्रपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] दादा का दादा। परदादा का पिता।

वृद्धप्रमातामह—संज्ञा पुं० [सं०] परनाना का पिता।

वृद्धबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ककही या कघी नामक पेड़। २ महाबला।

वृद्धबृहस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धबौधायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वृद्धावस्था। बुढ़ापा [को०]।

वृद्धमत—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन मत [को०]।

वृद्धमनु—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धयाज्ञवल्क्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुटनी। २ धात्री। दाई।

वृद्धराज—संज्ञा पुं० [सं०] अमलबेत।

वृद्धवय—वि० [सं० वृद्धवयस्] जो अवस्था में अधिक हो [को०]।

वृद्धवशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गीदड़ी।

वृद्धवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।

वृद्धविभीतक—संज्ञा पुं० [सं०] अमड़ा।

वृद्धविष्णु—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धवीवधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुरातन रूढ़ि का वचन [को०]।

वृद्धवृष्णीय—वि० [सं०] अत्यंत शक्तिमान् [को०]।

वृद्धवेग—वि० [सं०] तीव्र गतिवाला। जिसमें प्रचंड वेग हो [को०]।

वृद्धशाकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृद्धशीली—वि० [सं० वृद्धशीलिन्] जो वृद्धों के समान शील और स्वभाववाला हो [को०]।

वृद्धश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धश्रवस्] इंद्र।

वृद्धश्रावक—संज्ञा पुं० [सं०] कापालिक।

वृद्धसंघ—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धसङ्घ] वृद्ध जनों की सभा [को०]।

वृद्धसूत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] कपास।

वृद्धसेवी—वि० [सं० वृद्धसेविन्] वृद्ध जनों की सेवा करनेवाला जो वृद्ध लोगों की सेवा करता हो [को०]।

वृद्धहारीत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धांगुलि—संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धाङ्गुलि] १. अंगुष्ठ। अंगूठा। २ पैर का अँगूठा।

वृद्धांगुष्ठ—संज्ञा पुं० [सं० वृद्ध+अङ्गुष्ठ] अँगूठा। उ०—महाभारत के मनीषियों ने उनके प्रति वृद्धांगुष्ठ प्रदर्शित करके प्रबल फूत्कार से उन्हें उड़ा दिया है।—प्र० सा०, पृ० ३८।

वृद्धांत—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धान्त] वह जो सम्मान या प्रतिष्ठा करने योग्य हो। आदरणीय।

वृद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी औरत। २ अंगुष्ठ। अँगूठा। ३ महाश्रावणिका। ४. बड़ी उम्र की स्त्री (को०)।

वृद्धाचल—संज्ञा पुं० [सं०] मदरास प्रांत के एक तीर्थ का नाम।

वृद्धाचार—संज्ञा पुं० [सं०] परंपरागत प्रथा [को०]।

वृद्धात्रि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृद्धार्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ अस्त होता हुआ सूर्य। २ संध्या। सायंकाल। सांझ [को०]।

वृद्धावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुढ़ापा [को०]।

वृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। जैसे,—धन संपत्ति की वृद्धि, संतान की वृद्धि, यश की वृद्धि। २. ब्याज। सूद। ३. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ४ अभ्युदय। समृद्धि। ५. एक प्रसिद्ध लता।

विशेष—यह लता अष्टवर्ग के अंतर्गत मानी गई है। कहते हैं, यह कोशलामल देश में कामरूप पर्वत पर पाई जाती है। इसके कंद पर सफेद रोएँ और कहीं कहीं छेद होते हैं। इसका फल कपास की गाँठ के समान होता है, आजकल यह औषधि नहीं मिलती। वैद्यक में यह मधुर, शीतल, वीर्यवर्धक, गर्भ धारण करानेवाली और रक्तपित्त, खाँसी तथा क्षय रोग को नष्ट करनेवाली मानी गई है।

पर्या०—योग्या। ऋद्धि। सिद्धि। लक्ष्मी। पुष्टिदा। वृद्धिदात्री। मंगल्या। श्री। संपद्। जनेष्टा। भूति। सुख। जीवभद्रा।

६ राजनीति में कृषि, वाणिज्य, दुर्ग, सेतु, कुंजरबंधन, खन्याकर, बलादान, और सैन्यसंनिवेश इन आठों वर्गों का उपचय। वर्धन। स्फीति। ७ फलित ज्योतिष के विष्कंभ आदि २७ योगों के अंतर्गत ग्यारहवाँ योग।

विशेष—कहते हैं, इस योग में जन्म लेनेवाला व्यक्ति विनयी, धन का अच्छा उपयोग करनेवाला और माल खरीदने तथा बेचने में बहुत चतुर होता है।

८ संस्कृत व्याकरण में संधि का एक प्रकार जिसके अनुसार अ अथवा आ के पश्चात् दूसरे शब्द के आरंभ में ए, ऐ, तथा ओ, औ के आने पर दोनों मिलकर क्रमश ऐ और औ हो जाते हैं। जैसे,—पुत्र+एषणा से 'पुत्रैषणा' तथा शुद्ध+ओदन से 'शुद्धौदन'। उ०—संस्कृत वैयाकरणों ने भी संस्कृत भाषा में धातु के स्वर में इसी प्रकार के परिवर्तन का लक्ष्य करके इन तीन क्रमों का गुण, वृद्धि, एवं संप्रसारण नामकरण किया था।

—भोज० भा० सा०, पृ० १०। ६ सफलता। उन्नति। (को०)। १०. धनदौलत। जायदाद (को०)। ११ ढेर। राशि। परिमाण (को०)। १२ चंद्रमा की कला का बढना (को०)। १३. सूदखोरी (को०)। १४ लाभ। फायदा (को०)। १५ शक्ति या कर की वृद्धि (को०)। १६ अडकोश वृद्धि (को०)। १७ छेदन। कर्तन (को०)। १८ सपत्ति का हरण (को०)। १९ पीडा (को०)। २० ऊँचाई। उच्चता (को०)।

वृद्धिकर—वि० [स०] [वि० स्त्री० वृद्धिकरी] बढानेवाला। वृद्धि। करनेवाला। परिवर्धन करनेवाला। उ०—अल्प मूल्य की वृद्धिकारी हो।—अर्चना, पृ० २४।

वृद्धिकर्म—सज्ञा पुं० [स० वृद्धिकर्मन्] नादीमुख श्राद्ध। वृद्धश्राद्ध।

वृद्धिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ऋद्धि नाम की ओपधि। २ सफेद अपराजिता। ३ अर्कपुष्पी।

वृद्धिजीवक, वृद्धिजीवन—सज्ञा पु० [स०] वह जो वृद्धि (व्याज) से अपना निर्वाह करता हो। सूद से अपना निर्वाह करनेवाला।

वृद्धिजीविका—सज्ञा स्त्री० [स०] सूद से जीवन यापन करना (को०)।

वृद्धिद[1]—सज्ञा पु० [स०] १. जीवक नामक क्षुप। २. शूकरकद।

वृद्धिद[2]—वि० वृद्धि देनेवाला।

वृद्धिदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] वृद्धि नाम की एक प्रकार की ओपधि। लताविशेष। दे० 'वृद्धि'—५।

वृद्धिपत्र—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शस्त्र जो सात अगुल का होता था और जिसका व्यवहार चीरफाड मे छेदने आदि के लिये होता था। इसका आकार प्राय छुरे के समान होता था।

वृद्धिमान्—वि० [स० वृद्धिमत्] १ अभिवर्धनशील। बढनेवाला। उन्नतिशील। २ धनाढ्य (को०)।

वृद्धियोग—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिप के सत्ताइस योगो मे से एक योग। विशेप दे० 'वृद्धि'—७।

वृद्धिश्राद्ध—सज्ञा पु० [स०] नादीमुख नाम का श्राद्ध। विशेप दे० 'नादीमुख'।

वृद्धोक्ष—सज्ञा पु० [स०] बूढा बैल। उ०—बुड्ढे बैल के लिये वृद्धोक्ष शब्द प्रचलित था।—संपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २४८।

वृद्ध्याजीव—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृद्धिजीवक' (को०)।

वृद्ध्याजीवी—सज्ञा पुं० [स० वृद्धि+आजीविन्] कुसीदक। वृद्धिजीवक।

वृद्ध्युदय—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसकी प्राप्ति या उदय से लाभ ही लाभ हो।

वृद्ध्युपजीवी—सज्ञा पु० [स० वृद्धि+उपजीविन्] दे० 'वृद्ध्याजीव' (को०)।

वृध[2]—सज्ञा पु० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—कुटल कुसील हीण जड कोढी, अधन वृध खल पगु अजे।—रघु० रू०, पृ० १०२।

वृधसान—सज्ञा पु० [स०] मनुष्य (को०)।

वृधसानु—सज्ञा पुं० [स०] १ पुरुप। आदमी। २ काम। कार्य। कृति। क्रिया। ३ पत्ता। पर्ण (को०)।

वृधु—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक सूत्रकार जिससे भरद्वाज मुनि को बहुत सी गौएँ मिली थीं।

वृध्य—वि० [सं०] बढाने के लायक। वर्धनयोग्य (को०)।

वृध्र—वि० १ कटा हुआ या नष्ट किया हुआ (को०)।

वृश[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ अडूसा। २ अदरक। आदी (को०)। ३. चूहा। मूषक।

वृश[2]—सज्ञा पु० [स० वृष] दे० 'वृप'।

वृशा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ओपधि।

वृश्चन—सज्ञा पु० [स०] १ वृश्चिक। बिच्छू। २ दे० 'व्रश्चन (को०)।

वृश्चि—सज्ञा पुं० [स०] लाल गदहपूरना।

वृश्चिक—सज्ञा पुं० [स०] १ बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीडा जिसके डंक मे बहुत तेज जहर होता है। विशेप दे० 'बिच्छू'। २ गोबर में उत्पन्न होनेवाला कीडा। शूककीट। ३ पुनर्नवा। गदहपूरना। ४ मदन वृक्ष। मैनफल। ५ वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ६ ज्योतिप मे मेप आदि बारह राशियो मे से आठवी राशि।

विशेष—इसके सब तारो से प्राय. बिच्छू का सा आकार बनता है। विशाखा नक्षत्र के अतिम पाद से आरंभ होकर अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्रो के स्थितिकाल तक यह राशि मानी जाती है। भारतीय फलित ज्योतिप के अनुसार यह राशि शीर्पोदय, श्वेतकर्ण, कफ प्रकृति, जलचर, उत्तर दिशा की अधिपति और अनेक पुत्रो तथा स्त्रियो से युक्त मानी गई है। कहते है, इस राशि मे जन्म लेनेवाला मनुष्य धन जन से युक्त, भाग्यवान्, खल, राजसेवा करनेवाला, सदा दूसरा के धन का अभिलाषा करनेवाला, उत्साही और वीर होता है।

पर्या०—सौम्य। अगना। युग्म। सम। स्थिर। पुष्कर। सरीसृपजाति। ग्राम्य।

७ फलित ज्योतिप के अनुसार मेप आदि बारह लग्नो मे से आठवाँ लग्न।

विशेष—यह वृश्चिक राशि के उदय के समय माना जाता है। कहते हैं, जो बालक इस लग्न मे जन्म लेता है, वह बहुत मोटा ताजा, खर्चीला, कुटिल, मातापिता के लिये अनिष्टकर, गभीर और स्थिर प्रकृतिवाला, उग्र स्वभाव का, विश्वासी हँसमुख, साहसी, गुरु और मित्रा से शत्रुता रखनेवाला, राजसेवा करनेवाला, दुखी, दाता, नीच प्रकृति और पित्तरोगी होता है।

८ अगहन मास जिसमे प्राय सूर्योदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ९ कर्कट। केकडा (को०)। १०. गोजर। कनखजूरा (को०)। ११ एक कीडा जो रोएँदार होता है (को०)।

वृश्चिकपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] पूतिका शाक। पोय या पोई (को०)।

वृश्चिकपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग।

वृश्चिकपर्णी - संज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली। नागदंतिका [को०]।

वृश्चिकप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग।

वृश्चिकराशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृश्चिक'—७।

वृश्चिकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुकर्णी।

वृश्चिकविषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नकुलकंद। २ रास्ना।

वृश्चिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिछुआ या बिच्छू नाम की घास। २ पिठवन। ३ सफेद पुनर्नवा। ४ पैर की अँगुलियों मे पहिनने का गहना। बिछुआ (को०)।

वृश्चिकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू नाम की लता।

विशेष—यह लता प्रायः सारे भारत मे पाई जाती और बारहो मास हरी रहती है। इसके पत्ते ५-६ अंगुल लंबे, नुकीले और अंडाकार होते है और उनपर तथा डंठलो पर एक प्रकार के रोएँ होते हैं, जिनके शरीर मे लगने से बहुत तेज जलन होती है। इसकी जड़ का प्रयोग ओषधि रूप मे होता है। वैद्यक में यह कड़वी, चरपरी, बल तथा रुचि बढ़ानेवाली, तथा खाँसी, श्वास और ज्वर को दूर करनेवाली मानी गई है।

वृश्चिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैर के अँगूठे का एक आभूषण। दे० 'वृश्चिका'–४ [को०]।

वृश्चिकेश —संज्ञा पुं० [सं०] १ वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता—मंगल। २ बुध ग्रह का एक नाम (को०)।

वृश्चिपत्रिका - संज्ञा स्त्री० [सं०] पूतिका। पोई।

वृश्चिपत्री – संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली। २ मेढासिंगी।

वृश्चिपर्णी – संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली। २ मेढासिंगी।

वृश्ची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

वृश्चीक – संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक विशेष प्रकार की ओषधि का नाम। [को०]।

वृश्चीर संज्ञा पुं० [सं०] सफेद गदहपूरना।

वृश्चीव—संज्ञा पुं० [सं०] गदहपूरना। पुनर्नवा।

वृष—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का नर। साँड़। २ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषो में से एक प्रकार का पुरुष।

विशेष—कामशास्त्र के अनुसार वृष जातीय पुरुष शंखिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त समझा जाता है। कहते है, ऐसा पुरुष अनेक गुणो से युक्त, अनेक प्रकार के रतिबंधो का ज्ञाता, सुंदर और सत्यवादी होता है।

३ धर्म, जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड के रूप मे माना जाता है। ४ पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वंतर के इंद्र का नाम। ५ चूहा। ६ अडूसा। ७ श्रीकृष्ण या विष्णु का एक नाम। ८ शत्रु। दुश्मन। वैरी। ९ काम। १०, ऋषभ नामक ओषधि। ११ पति। स्वामी। १२ गेहूँ। १३ धमासा। १४ नदी मे होनेवाला भिलावाँ। १५. ज्योतिष मे मेष आदि बारह राशियो मे से दूसरी राशि।

विशेष—इस राशि मे कृत्तिका नक्षत्र के तीन पाद, पूरा रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो पाद है। यह राशि श्वेतवर्ण, वातप्रकृति, वैश्य, चार पैरोंवाली और दक्षिण दिशा की स्वामिनी मानी जाती है। कहते है, जो व्यक्ति इस राशि मे जन्म लेता है, वह सुंदर, दाता, क्षमाशील, स्वैरी और निर्भय होता है तथा प्रारंभिक अवस्था मे धन, बंधु, संतति आदि से रहित और अंतिम अवस्था में इन सब बातों से सुखी रहता है।

१६ फलित ज्योतिष मे मेष आदि बारह लग्नों में से दूसरा लग्न।

विशेष—कहते हैं, इस लग्न मे जन्म लेनेवाले मनुष्य के ओंठ और नाक मोटी तथा ललाट बहुत चौड़ा होता है, वह वातश्लेष्म प्रकृति का, भाग्यवान्, मनोज्ञ, मातापिता को कष्ट देनेवाला और कुछ कामी भी और प्रकृति रखनेवाला होता है। ऐसे मनुष्य का पुत्र कम और कन्याएँ अधिक होती है। इसकी मृत्यु किसी पशु या बलवान् व्यक्ति के द्वारा अथवा जल, शूल, पर्यटन आदि के कारण अथवा भूखा रहने से होती है।

१७. किसी वर्ग का मुख्य या प्रधान व्यक्ति, मुखिया, सरगुन (को०)। १८ सुदृढ़ या न्यायसंगत तर्क (को०)। १९ शिव का वृष, नंदी (को०)। २० पुण्य। सत्कर्म (को०)। २१ कर्ण का एक नाम (को०)। २२ मुख्य अक्ष या पासा (को०)। २३. जल (को०)। २४ मंदिर की एक विशेष आकृति (को०)। २५ भवन-निर्माण के योग्य भूमि (को०)। २६ नर जाति का पशु (को०)। २७. मयूरपक्ष (को०)। २८ मोरपंख। अंडकोश (को०)। २९. शिव (को०)। ३०. सूर्य (को०)। ३१. अंगूठा। ३२. शुक्र। वीर्य (को०)। ३३ स्कंद का एक अनुचर (को०)। ३४ एक असुर (को०)। ३५ चंद्रमा के १० घोड़ों में से एक घोड़ा (को०)। ३६ कर्ण के पौत्र का नाम जो वृषसेन का पुत्र था (को०)।

वृषक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँड़। २ महाभारत के अनुसार गांधार के एक राजकुमार का नाम। ३. एक प्रकार का साग। ४. अडूसा। ५ ऋषभ नामक ओषधि। ६ धमासा। दुरालभा। ७ भिलावाँ। ८ गेहूँ। ९ चूहा।

वृषकर्णिका, वृषकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर्शन नाम की लता। २ एक प्रकार की बिधारा।

वृषकर्मा—वि० [सं० वृषकर्मन्] परिश्रमी बैल की तरह काम करनेवाला [को०]।

वृषका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

वृषकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बैल का चिह्न माना जाता है। २. कर्ण के एक पुत्र का नाम। ३ लाल गदहपूरना।

यौ०—वृषकेतुसुत = शिव के पुत्र। स्कंद। षडानन।

वृषक्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा करनेवाले, इंद्र।

वृषखादि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सोमपान करता हो। २ कुंडल पहननेवाला (को०)।

वृषगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृषगन्धा] १ ककही या कघी नाम का पौधा। २ एक प्रकार का विधारा।

वृषगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वृषगन्धिका] दे० 'वृषगंधा'।

वृषग—संज्ञा पुं० [सं०] वृषभवाहन, शिव (को०)।

वृषगण—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक ऋषियों का एक गण या समूह। उ०—वृषगण ऋग्वेद में गायक थे।—प्रा० भा० प०, पृ० १४४।

वृषचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का चक्र जिसमें एक बैल बनाकर उसके भिन्न भिन्न अंगों में नक्षत्र आदि रखते हैं और तब उसके द्वारा खेती संबंधी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

वृषण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ कर्ण। ३ विष्णु। ४ साँड। ५. घोड़ा। ६ वृक्ष। ७ पीड़ा का ज्ञान या उससे होनेवाली बेहोशी। ८. अंडकोष। पोता।

वृषण²—वि० १ सींचनेवाला। उपजाऊ बनानेवाला। २ दृढ़। कठोर (को०)।

वृषणकच्छू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडकोश के आस पास होनेवाली वे फुंसियाँ आदि जो मैल और पसीने आदि के कारण हो जाती हैं और जिसमें खुजली होती है।

वृषणश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक राजा का नाम। २ इंद्र के घोड़े का नाम। ३ एक गंधर्व (को०)।

वृषणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोड़ी (को०)।

वृषण्वसु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का खजाना या कोष (को०)।

वृषदंत—संज्ञा पुं० [सं० वृषदन्त] विडाल। बिल्ली (को०)।

वृषदंश—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली (को०)।

वृषदंशक—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्ली।

वृषदर्भ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार कश्मीर के एक राजकुमार का नाम। २ पुराणानुसार शिवि के एक पुत्र का नाम। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषदर्भ²—वि० [सं०] इंद्र के अभिमान को दूर करनेवाला। इंद्र के दर्प को चूर करनेवाला (को०)।

वृषदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायुपुराण के अनुसार वासुदेव की एक स्त्री का नाम।

वृषद्वीप संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक द्वीप का नाम।

वृषधर—संज्ञा पुं० [सं०] वृषभध्वज शिव (को०)।

वृषध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ गणेश। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ४ वह व्यक्ति जो बहुत पुण्यशील हो। पुण्यात्मा।

वृषध्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

वृषध्वांक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृषध्वाङ्क्षा] नागरमोथा।

वृषध्वांक्षी - संज्ञा स्त्री० [सं० वृषध्वाङ्क्षी] दे० 'वृषध्वांक्षा'।

वृषनादी वि० [सं० वृषनादिन्] बैल की भाँति बोलनेवाला। उच्च ध्वनि करनेवाला (को०)।

वृषनामा—संज्ञा पुं० [सं० वृषनामन्] अडूसा।

वृषनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विडंग। वायविडंग। २ पुराणानुसार विष्णु या श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २. नपुंसक। हिजड़ा। पंड। ३. छोड़ा हुआ साँड (को०)।

वृषपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बस्तांत्री या छागलांत्री नाम की ओषधि जो विधारा का एक भेद है।

वृषपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारंगी। ब्राह्मणयष्टिका।

वृषपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी। २. उदुंबरपर्णी। दंती। ३ सुदर्शना नाम की लता।

वृषपर्वा—संज्ञा पुं० [सं० वृषपर्वन्] १ शिव। महादेव। २ महाभारत के अनुसार एक दैत्य का नाम जिसकी कन्या शर्मिष्ठा का विवाह ययाति से हुआ था। ३ विष्णु का एक नाम। ४. कसेरु। ५ एक प्रकार का तृण। ६ भँगरा। ७ एक बंदर (को०)। ८ जलपात्र। लोटा (को०)। ९. मार्कंडेयपुराण में वर्णित एक राजा (को०)।

वृषपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का क्षुप (को०)।

वृषप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल या साँड़। २ साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३ कान का छेद। ४ ऋषभ नाम की ओषधि। कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष जो शंखिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त कहा गया है। ६ सूर्य की वीथियों में से एक वीथी का नाम। उ०—चौथा वीथी का नाम वृषभ है।—बृहत्०, पृ० ५४। ७ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ८ श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम। ९ एक यूथपति बंदर का नाम जो राम रावण युद्ध में लड़ा था। १० नर जातीय या पुंवर्गीय पशु (को०)। ११ वह जो अपने वर्ग में प्रधान हो (को०)। १२ वृष राशि का चिह्न (को०)। १३. हाथी का कान (को०)। १४ कान का छिद्र। कर्णरंध्र (को०)। १५. न्याय। धर्म (को०)।

वृषभकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

वृषभगति—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. वह सवारी जो बैल द्वारा खींची जाती हो।

वृषभता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृषभत्व'।

वृषभतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वृषभत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वृषभ होने का भाव या धर्म। वृषभता।

वृषभधुज(पु)—संज्ञा पुं० [वृषभध्वज] दे० 'वृषभध्वज'।

वृषभध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २. एक प्राचीन पर्वत का नाम।

वृषभध्वजा —संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बडी दती । बँगडेरा ।

वृषभपल्लव—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अडूसा ।

वृषभयान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बैलगाडी [को॰] ।

वृषभवीथि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सूर्य की वीथियो मे से एक वीथी का नाम । दे॰ 'वृषभ'–६ ।

वृषभस्कध—वि॰ [सं॰ वृषभ + स्कन्ध] जिसके कधे चौडे और मजबूत हो । पुष्ट कधोवाला [को॰] ।

वृषभाक—संज्ञा पु॰ [सं॰ वृषभाङ्क] शिव । महादेव ।

वृषभा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम । २ मघा, पूर्वा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र (को॰) ।

वृषभाक्ष संज्ञा पु॰ [सं॰] १ विष्णु । २ वह जिसकी आँखें बैल की तरह हो (को॰) ।

वृषभाक्षी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] इद्रवारुणी लता । इनारु ।

वृषभाद्रि—संज्ञा पु॰ [सं॰] एक पर्वत का नाम [को॰] ।

वृषभान(पु)—संज्ञा पु॰ [सं॰ वृषभानु] दे॰ 'वृषभानु' ।

वृषभानु—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ श्री राधिका जी के पिता का नाम ।

विशेष(१)—पुराणानुसार वृषभानु नारायण के अश से उत्पन्न हुए थे । इनके पिता का नाम सुरभानु और माता का नाम पद्मावती था । ये गोकुल के बडे सरदार थे और पहले रावल ग्राम मे रहते थे, जहाँ राधिका का जन्म हुआ था । पर अत मे कस के उपद्रव के कारण वहाँ से बरसाने मे जा बसे थे ।

(२) 'वृषभानु' शब्द के साथ 'कन्या' या उसका पर्यायवाची शब्द लगाने स उसका 'राधिका' अर्थ होता है । जैसे,—वृषभानुसुता, वृषभानुनदिनी ।

२ वृष राशि का सूर्य (को॰) ।

वृषभानुजा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वृषभानु की पुत्री, राधा ।

वृषभानुनदिनी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वृषभानुनन्दिनी] राधिका ।

वृषभानुसुता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वृषभानु की कन्या, श्रीराधिका ।

वृषभासा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] इद्र की पुरी अमरावती का एक नाम ।

वृषभी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ विधवा स्त्री । रॉड । २ कपिकच्छु । केवाँच [को॰] ।

वृषभेक्षण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विष्णु ।

वृषमन्यु—वि॰ [सं॰] वीर । हिम्मतवाला । साहमी [को॰] ।

वृषमूल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अडूसे की जड ।

वृषय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ आश्रय । शरण । २ आश्रम (को॰) ।

वृषरवि—संज्ञा पु॰ [सं॰] दे॰ 'वृषभानु' ।

वृषराजकेतन - संज्ञा पु॰ [सं॰] वृषभध्वज शिव [को॰] ।

वृषराशि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बारह राशियो मे से दूसरी राशि । उ॰—वृषराशि मे स्थित हो तो पैदा होते ही अन्न का नाश होता है ।—बृहत्॰, पृ॰ १६३ ।

वृषरुक्ष—संज्ञा पु॰ [सं॰ वृषरुक्षन्] शिव । महादेव ।

वृषल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शूद्र ।

यौ॰—वृषलपाचक = शूद्र की रसोई बनानेवाला । वृषलयाजक = वृषल का पुरोहित । शूद्र का यज्ञादि करानेवाला ।

२ वह जिसे धर्म आदि का कुछ भी ध्यान न हो । पाप और दुष्कर्म करनेवाला । ३ घोडा । ४ चाणक्य द्वारा प्रयुक्त सम्राट् चद्रगुप्त का एक नाम । ५ गाजर । ६ शलगम । ७. नट । नर्तक (को॰) । ८ वृषभ । बैल (को॰) । ९ लहसुन (को॰) । १० वह जो जाति से बहिष्कृत हो । ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र वर्ग का वह व्यक्ति जो अपने कर्तव्य से च्युत हो (को॰) । ११ बडी पिप्पली (को॰) ।

वृषलक—संज्ञा पु॰ [सं॰] निम्न कोटि का शूद्र [को॰] ।

वृषलक्षणा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पुरुषलक्षण से सपन्न नारी । वह स्त्री जिसका रग रूप पुरुष की तरह हो । ऋषभी [को॰] ।

वृषलता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वृषल होने का भाव या धर्म । वृषलत्व ।

वृषलत्व —संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'वृषलता' ।

वृषलाछन—संज्ञा पु॰ [सं॰ वृषलाञ्छन] शिव । महादेव ।

वृषली—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ स्मृतियो आदि के अनुसार वह कन्या जो रजस्वला तो हो गई हो, पर जिसका अभी विवाह न हुआ हो ।

विशेष—कहते हैं, ऐसी कन्या का पिता बडा पातकी होता है और उसे उस कन्या की भ्रूणहत्या करने का पाप लगता है ।

२ वह स्त्री जो अपने पति को छोडकर परपुरुष से प्रेम करती हो । ३ शूद्र जाति की स्त्री । वृषल की स्त्री । उ॰—सोतौ वृषलो पति भयौ कुलहि लगाई गारि ।—सुदर ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ १९१ । ४ वह स्त्री जो पाप या दुष्कर्म करती हो । ५ नीच जाति की स्त्री । ६ वह स्त्री जो मासिकधर्म मे हो । रजस्वला स्त्री । ७ वह स्त्री जो मरी हुई सतान उत्पन्न करती हो । ८ वध्या स्त्री (को॰) । ९ सद्य प्रसूता स्त्री (को॰) ।

वृषलीपति—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ शूद्र जाति या वर्ण की औरत का पति । २ वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या के साथ विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो । वृषली का पति ।

विशेष—कहते हैं, ऐसे पुरुष को श्राद्ध आदि करने का अधिकार नही होता ।

वृषलीफेन—संज्ञा पु॰ [सं॰] शूद्रा स्त्री का अधररस [को॰] ।

वृषलीसेवन—संज्ञा पु॰ [सं॰] शूद्रा के साथ सभोग करना ।

वृषलोचन—संज्ञा पु॰ [सं॰] चूहा । मूसा ।

वृषवत्—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

वृषवासी संज्ञा पु॰ [सं॰ वृषवासिन्] केरल देश के वृष पर्वत पर बसनेवाले शिव जी । उ॰—इनके घर लेहौ अवतारा । वृषवासी हर हृदय विचारा । —श॰ दि॰ (शब्द॰) ।

वृषवाह - संज्ञा पु॰ [सं॰] बैल पर सवार होना [को॰] ।

वृषवाहन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिव । महादेव ।

वृषवीभत्स—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार की कौंछ या केवाँच ।

वृषवृष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वृषशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृषशिप्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक असुर का नाम।

वृषशील—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृषल'।

वृषशुष्म—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम जो जतुकर्णी के पोते थे।

वृषषंड—संज्ञा पुं० [सं० वृषषण्ड] एक प्रवरकार ऋषि का नाम।

वृषसव—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने यज्ञ करने के लिये मंगलस्नान किया हो।

वृषसानु—संज्ञा पुं० [सं०] १. मानव। आदमी। २ मृत्यु। मौत। (को०)।

वृषसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद बड। २ देवकुमी। बड़ा गूमा।

वृषसाह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वृषसृक्की—संज्ञा पुं० [सं० वृषसृक्किन्] भीमरोल या भृगरोल नाम का कीडा।

वृषसेन—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार कर्ण के एक पुत्र का नाम।

वृषस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० वृषस्कन्ध] शिव। महादेव।

वृषस्कंध²—वि० बैल की तरह पुष्ट और ऊँचे कंधोंवाला [को०]।

वृषस्यंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वृषस्यन्ती] किसी व्यक्ति से संभोग कराने की इच्छा से आतुर। २ कामुका या लंपट औरत। कामपीडिता स्त्री। ३ उठी हुई गाय। वृष की कामना करनेवाली गौ [को०]।

वृषांक—संज्ञा पुं० [सं० वृषाङ्क] १ शिव। महादेव। २ साधु। धर्मात्मा। ३ जल में होनेवाला भिलावाँ। ४ नपुंसक। हिजड़ा। ५ मार।

वृषांकज—संज्ञा पुं० [सं० वृषाङ्कज] डमरू।

वृषांचन—संज्ञा पुं० [सं० वृषाञ्चन] शिव। महादेव।

वृषांड—संज्ञा पुं० [सं० वृषाण्ड] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम।

वृषांतक—संज्ञा पुं० [सं० वृषान्तक] विष्णु।

वृषा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी। २. केवाच कैरच। ३. उदुंबरपर्णी। दंती। ४ बडी दंती। ५ असगंध। ६. मालकंगनी। ७ गौ।

वृषा²—संज्ञा पुं० [सं० वृषन्] १ वृष राशि। २. साँड। ३ घोड़ा। ४ पीडा। व्यथा। ५ इंद्र। ६ कर्ण। ७ चंद्रमा। ८. अग्नि। ९ दल का मुखिया या प्रधान। १०. पीड़ा का ज्ञान न होना। ११ पुंजातीय पशु [को०]।

वृषाकपायी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवंती। डोडी। २ शतावरी। ३ लक्ष्मी। ४. गौरी। ५ इंद्र की पत्नी, शची। ६ अग्नि की पत्नी, स्वाहा (को०)। ७ सूर्य की पत्नी, उषा (को०)। ८. इंद्र की माता (को०)।

वृषाकपि—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २ विष्णु। ३. अग्नि। ४. इंद्र। ५ सूर्य। ६ एक ऋषि का नाम। ७ ग्यारह रुद्रों में से एक। —प्रा० भा० प०, पृ० १२७।

वृषाकर—संज्ञा पुं० [सं०] उड़द। माष।

वृषाकृति—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृषाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वृषाण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक अनुचर वरण का नाम [को०]।

वृषाणक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव, महादेव। २ शिव के एक अनुचर का नाम।

वृषाणी—संज्ञा पुं० [सं० वृषाणिन्] ऋषभक नाम की ओषधि जो अष्टवर्ग में है।

वृषादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी। इनारुन।

वृषादर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार शिवि के एक पुत्र का नाम।

वृषादित पु—संज्ञा पुं० [सं० वृषा दित्य] वृष राशि के सूर्य। उ०—विषम वृषादित की तृषा जिए मतीरनु सोधि। अमित, अपार, अगाध जल, मारौ मूड पयोधि।—बिहारी र०, दो०, ३१७।

वृषादित्य—संज्ञा पुं० [सं०] वृष राशि के सूर्य। नौर ज्येष्ठ मास की संक्रांति के सूर्य।

वृषाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम जो केरल देश में है।

वृषान्न—संज्ञा पुं० [सं०] पुष्टिकर भोजन [को०]।

वृषायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. चटक या गौरैया नामक पक्षी।

वृषारणी—संज्ञा पुं० [सं०] गंगा का एक नाम।

वृषारव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे जंतु जिनकी बोली बहुत कर्कश हो। जैसे,—झिल्ली, मेढक आदि। २ एक प्रकार का मुगरा या ताशा, नगाडा आदि बजाने की लकड़ी। चोब (को०)।

वृषावाह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का जंगली धान्य [को०]।

वृषाशील—संज्ञा पुं० [सं०] वृषशील। दे० 'वृषल'।

वृषाश्रिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा का एक नाम।

वृषासुर—संज्ञा पुं० [सं०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम जिसने शिव से वर पाकर शिव ही को भस्म करके पार्वती को लेना चाहा था। वृकासुर। विशेष दे० 'भस्मासुर'।

वृषाहार—संज्ञा पुं० [सं०] चूहों को खानेवाला, बिल्ली। मार्जार।

वृषाही—संज्ञा पुं० [सं० वृषाहिन्] विष्णु।

वृषी¹—संज्ञा पुं० [सं० वृषिन्] मोर।

वृषी²—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋषि या ब्रह्मचारी का आसन जो कुश से बना होता है [को०]।

वृषेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वृषेन्द्र] १. साँड़। २. बैल।

[सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। इस धार्मिक कृत्य में लोग प्रायः मृत के निमित्त साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

ऐसे छोडे हुए साँडो से किसी प्रकार का काम नही लिया जाता। कहते हैं, जिन पितरो के नाम पर साँड छोडे जाते हैं, वे स्वर्ग पहुँच जाते हैं। अशौच समाप्त होने के दूसरे दिन यह कृत्य करने का विधान है।

वृषोत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

वृषोदर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृष्ट¹—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार कुकुर के एक पुत्र का नाम।

वृष्ट²—वि० [सं०] १. बरसा हुआ। जो बरस चुका हो। २ जो बरस रहा हो। बरसता हुआ। ३ वर्षा की बूँदो की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ (को०)।

वृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश से जल बरसना। वर्षा। बारिश। मेह। २ ऊपर से बहुत सी चीजो का एक साथ गिरना या गिराया जाना। जैसे,—पुष्पवृष्टि। उ०—कर रही थी जो अलौकिक रूपरस की वृष्टि।—शकु०, पृ० ६। ३ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना। जैसे,—उनके बैठते ही चारो ओर से कटु वचनो की वृष्टि होने लगी।

वृष्टिकर—वि० [सं०] बरसनेवाला। वर्षा करनेवाला (को०)।

वृष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शणपुष्पी। बनसनई।

वृष्टिकाम—वि० [सं०] बरसा की कामना करनेवाला (को०)।

वृष्टिकामना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा की इच्छा (को०)।

वृष्टिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षाकाल। वर्षाऋतु (को०)।

वृष्टिघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी इलायची।

वृष्टिजीवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह देश जहाँ की खेतीबारी केवल वर्षा पर ही निर्भर हो। देवमातृक देश या कृषिभूमि। २ चातक पक्षी।

वृष्टिदाता—संज्ञा पुं० [सं० वृष्टिदातृ] १ इंद्र। २ मेघ। बादल। ३ असुर। उ०—सायण ने असुर का अर्थ बलवान्, शत्रुहंता और वृष्टिदाता किया है।—प्रा० भा० प०, पृ० (ग)।

वृष्टिपात—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा होना। पानी बरसना (को०)।

वृष्टिभू—संज्ञा पुं० [सं०] मेढक।

वृष्टिमान¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।

विशेष—यह एक छोटा सा लंबा नल होता है, जिसमे वर्षा का जल भरता है। उसी जल की ऊँचाई इंचो आदि से नापकर निश्चय किया जाता है कि अमुक समय मे इतने इंच वर्षा हुई।

वृष्टिमान्—संज्ञा पुं० [सं० वृष्टिमत्] बादल।

वृष्टिमान्²—वि० बरसाऊ। बरसनेवाला [सं०]।

वृष्टिवैकृत—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव आदि का सूचक समझा जाता है।

वृष्टिसंपात—संज्ञा पुं० [सं० वृष्टिसम्पात] पानी बरसना। वर्षा का होना (को०)।

वृष्टयंबु—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का जल।

वृष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृष्णि¹—संज्ञा सं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ यादव वंश जिसमें श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे। उ०—वृष्णि कुल कुमुद राकेश राधारमन कंस बंसाटवी धूमकेतू।—तुलसी (शब्द०)। ३ श्रीकृष्ण या विष्णु। ४ इंद्र। ५ अग्नि। ६ वायु। ७ ज्योति। प्रकाशरश्मि। ८ बैल या गौ। ९. मेढा। मेष। १० शिव (को०)। ११ एक साम (को०)।

वृष्णि²—वि० १ प्रचंड। उग्र। तेज। २ पामर। नीच। ३ बली। शक्तिशाली (को०)। ४ पाखंडी (को०)। ५ क्रुद्ध। कोपाविष्ट (को०)। ६. बरसालू। वर्षणशील (को०)।

वृष्णिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृष्णिगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वृष्णिपाल—संज्ञा पुं० [सं०] मेषपाल। गड़रिया (को०)।

वृष्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] वीर्य।

वृष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह चीज जिससे वीर्य और बल बढता हो। २ वह चीज जिसके सेवन से मन में आनंद उत्पन्न होता हो। ३ ईख। ऊख। ४ उडद की दाल। ५ ऋषभ नामक ओषधि। ६ आँवला। ७ कमल की नाल। मृणाल। ८ शिव (को०)।

वृष्यकंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृष्यकन्दा] १ बिदारी कंद। २. मूली।

वृष्यगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० वृष्यगन्धा] १ वृद्धदारक। बिधारा। २ वस्तात्री नाम की लता। ३ ककही। अतिबला।

वृष्यगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वृष्यगन्धिका] ककही। अतिबला।

वृष्यचंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० वृष्यचण्डी] मूसाकानी। आखुकर्णी।

वृष्यपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिदारी कंद। भुइँ कुम्हडा।

वृष्यफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँवला।

वृष्यवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिदारी कंद। भुइँ कुम्हडा।

वृष्यवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिदारी कंद।

वृष्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अष्टवर्ग की ऋद्धि नामक ओषधि। २ शतावर। ३. आँवला। ४ केवाँच। कौंछ। ५ भुइँ आँवला। ६ बिदारी कंद। ७ ककही। अतिबला। ८ बडी दंती। बँगडेरा।

वृह—संज्ञा पुं० [सं० बृह, बृह्] स्तवन। स्तुति। जैसे, बृहस्पति (को०)।

वृहच्चंचु—संज्ञा पुं० [सं० बृहत्चञ्चु] महाचंचु नामक साग।

वृहच्चक्रभेद—संज्ञा पुं० [सं० बृहत्+चक्र+भेद] जयंती। जैंत।

वृहच्चित्त—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू।

वृहच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] अखरोट।

वृहच्छफरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफरी नाम की मछली।

वृहच्छल्क—संज्ञा पुं० [सं०] झिंगवा नाम की मछली।

वृहच्छालपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाशालपर्णी। बडी सरिवन।

वृहच्छिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० बृहच्छिम्बा] सेम।

वृहज्जीरक—संज्ञा पुं० [सं०] मँगरैला।

वृहज्जीवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वृहज्जीवन्ती] बड़ी जीवंती।

वृहज्जीवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी जीवंती।

वृहड्ढक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का नगाड़ा या भेरी। २ पलाश भेद [को०]।

वृहतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'वृहती'। २ उपरना। उत्तरीय वस्त्र (को०)।

वृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटकारी। छोटी कटाई। २ वनभटा। बड़ी कटाई। ३ बैंगन। ४. वैद्यक के अनुसार एक मर्मस्थान।

विशेष—यह छातियों के ठीक पीछे पीठ मे दोनों ओर होता है। इस मर्मस्थान पर आघात लगने से बहुत अधिक रक्त निकलता है और प्राय मनुष्य मर जाता है।

५ विश्वावसु नामक गंधर्व की वीणा का नाम।

विशेष—कुछ लोगों के अनुसार 'वृहती' नारद की वीणा का नाम है।

६ वाक्य। ७ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण और सगण होता है। जैसे,—भाव सुपूजा कारज जू। प्रात गई सीता सरजू। कंठमणी मध्ये सु जला। टूट परी खोजें अबला।—काव्य प्र० (शब्द०)। ८. ३६ की संख्या (को०)। १० दुपट्टा। उत्तरीय (को०)। ११. आशय। कुड जैसे, जलाशय (को०)। दे० 'वृहती'।

वृहतीपति—संज्ञा पुं० [सं०] वृहस्पति।

वृहतीफल—संज्ञा पुं० [सं०] वनभटा।

वृहत्—वि० [सं०] बड़ा भारी। महान्। जैसे,—आपने यह बहुत वृहत् कार्य उठाया है।

वृहत्कंद—संज्ञा पुं० [सं० वृहत्कन्द] १ विष्णुकंद २. गाजर।

वृहत्कालशाक—संज्ञा पुं० [सं०] महा कासमर्द नाम का क्षुप। कसौंदी।

वृहत्काश—संज्ञा पुं० [सं०] उलूक नाम का तृण। खगड़ा।

वृहत्कुक्षि—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका पेट आगे की ओर निकला हो। तोंदल।

वृहत्कोशातकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नेनुआँ। तरोई।

वृहत्खर्जूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छुहारा।

वृहत्ताल—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीताल या हिंताल नाम का वृक्ष।

वृहत्तिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा पाठा।

वृहत्तिक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाठा। पाढ़ा।

वृहत्तृण—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस।

वृहत्त्रयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कृत के किरातार्जुनीय (भारवि), शिशुपालवध (माघ) और नैषध (श्रीहर्ष) महाकाव्य। उ०—महाकाव्यों की वृहत्त्रयी (किरात, माघ, नैषध) मे इसका प्रमुख स्थान है।—वी० श० महा०, पृ० २३।

वृहत्त्वक्—संज्ञा पुं० [सं० वृहत्त्वच्] सप्तपर्णी या सतिवन नामक वृक्ष।

वृहत्त्वच—संज्ञा पुं० [सं०] नीम का पेड़।

वृहत्पंचमूल—संज्ञा पुं० [सं० वृहत्पञ्चमूल] बेल, सोनापाठा, गंभारी, पाँडर, और गनियारी इन पाँचों का समूह।

वृहत्पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथीकंद। २. पठानी लोध। ३. बथुआ नाम का साग।

वृहत्पत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. त्रिपर्णी कंद। २ कासमर्द। कसौंदी।

वृहत्पत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिपर्णी कंद।

वृहत्पर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोध।

वृहत्पर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महा शणपुष्पी। बड़ी वनसनई।

वृहत्पाटलि, वृहत्पाटली—संज्ञा स्त्री० [सं०] धतूरा।

वृहत्पाद—संज्ञा पुं० [सं०] वट का वृक्ष। बरगद।

वृहत्पारेवत—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा पारेवत वृक्ष।

वृहत्पाली—संज्ञा पुं० [सं० वृहत्पालिन्] वनजीरक। कालीजीरी।

वृहत्पीलु—संज्ञा पुं० [सं०] महापीलु नामक वृक्ष। पहाड़ी अखरोट।

वृहत्पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ केला। २ सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

वृहत्पुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शणपुष्पी। वनसनई।

वृहत्पुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सन। सनई।

वृहत्फल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुम्हड़ा। २ कटहल। ३ जामुन। ४ चिचड़ा।

वृहत्फला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कद्दू। लौकी। २. कड़वी लौकी। तितलौकी। ३ महेंद्रवारुणी। इनारुन। ४ बड़ा जामुन। ५. सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

वृहदंग—संज्ञा पुं० [सं० वृहदङ्ग] हाथी।

वृहदम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] कमरख का पेड़।

वृहदश्ववार—संज्ञा पुं० [सं० वृहद्+अश्ववार] अश्वसेना का नायक। घुड़सवार सेना का संचालक। अश्वसेनाधिपति।—आ० भा०, पृ० ४४४।

वृहदेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची।

वृहद्—वि० [सं०] दे० 'वृहत्'।

वृहद्गृह—संज्ञा पुं० [सं०] वृहद्गृह या कारुष नामक प्राचीन देश।

वृहद्गृह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक देश का नाम जो विंध्यपर्वत के पश्चिम मे मालव देश के पास था। कारुष देश।

वृहद्गोल—संज्ञा पुं० [सं०] तरबूज।

वृहद्दंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वृहद्+दन्ती] बड़ी दंती। द्रवंती।

वृहद्दल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। सतिवन। ३. श्रीताल या हिंताल नामक वृक्ष। ४ लाल लहसुन। ५ लजालू। लज्जावती।

वृहद्दला—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाजवंती। लजालू।

वृहद्द्रोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्रोण नामक परिमाण।

वृहद्धल—संज्ञा पुं० [सं०] महालांगल [को०]।

वृहद्धान्य—संज्ञा पुं० [सं०] यवनाल। ज्वार।

वृहद्वदर—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा बेर।

वृहद्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीतपुष्पा। महदेई। २ पठानी लोध। ३ लजालू। लज्जावती।

वृहद्बीज—संज्ञा पुं० [सं०] आम्रातक। अमड़ा।

वृहद्भंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० वृहद्भण्डी] त्रायमाणा नाम की लता।

वृहद्भट्टारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

वृहद्भानु—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ भागवत के अनुसार सत्यभामा के एक पुत्र का नाम। ४ चित्रक। चीता।

वृहद्रथ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ यज्ञपात्र। ३ सामवेद के एक अंश का नाम। ४ भागवत के अनुसार शतधन्वा के एक पुत्र का नाम। ५ देवरात के एक पुत्र का नाम। ६ एक प्रकार का मंत्र।

वृहद्रथ²—वि० [वि० स्त्री० वृहद्रथा] जिसके पास बहुत से रथ हों।

वृहद्रथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

वृहद्राय—संज्ञा पुं० [सं०] उल्लू पक्षी।

वृहद्रावी—संज्ञा पुं० [सं० वृहद् + राविन्] छोटा उल्लू (को०)।

वृहद्वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सोनामक्खी।

वृहद्वल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। सतिवन।

वृहद्वल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृहद्वल्क'।

वृहद्वल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] करेला।

वृहद्वात—संज्ञा पुं० [सं०] देवधान्य। पुनेरा।

वृहद्वारुणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महेंद्रवारुणी। इनरू।

वृहद्वीज—संज्ञा पुं० [को०] अमड़ा। आम्रातक (को०)।

वृहन्नल—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाहु। बाँह। २ अर्जुन। दे० 'वृहन्नला'। ३ वृहन्नाल। बड़ा नरसल (को०)।

वृहन्नला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे वनवास के उपरांत अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहकर उसकी कन्या को नाच गाना सिखलाते थे।

वृहन्नाल—संज्ञा पुं० [सं०] नरसल। नरकट।

वृहन्निंब—संज्ञा पुं० [सं० वृहन्निम्ब] महानिंब। बकायन।

वृहन्मरिच—संज्ञा पुं० [सं०] काल मिर्च।

वृहन्मरीच—संज्ञा पुं० [सं०] काला मिर्च (को०)।

वृहल्लोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलफा नामक साग।

वृहस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के गुरु। विशेष दे० 'वृहस्पति'। (१, और २)।

वृही—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान्य।

वेंक—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्क] दक्षिण भारत का एक देश और वहाँ के निवासी (को०)।

वेंकट—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कट] द्रविड प्रदेश के एक पर्वत का नाम। वेंकटगिरि (को०)।

वेंकटगिरि—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कटगिरि] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम जहाँ वेंकटेश्वर विष्णु का प्रसिद्ध मंदिर है।

वेंकटाचल—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कटाचल] दे० 'वेंकटगिरि'।

वेंकटाद्रि—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कटाद्रि] दे० 'वेंकटगिरि'।

वेंकटेश—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कटेश] विष्णु (को०)।

वेंकटेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्कटेश्वर] विष्णु (को०)।

वेंघर—संज्ञा पुं० [सं० वेङ्घर] रूप यौवन का मद। सुंदरता का अभिमान (को०)।

वे—सर्व० [हिं० वह] १ वह का बहुवचन या सम्मानवाचक रूप। जैसे,—(क) वे लोग चले गए। (ख) वे आज न आवेंगे। २ पत्नी द्वारा पति के लिये प्रयुक्त अन्य पुरुष का सर्वनाम।

वेउ †—संज्ञा पुं० [सं० वेद] दे० 'वेद'। उ०—मुनिवर विप्र मदन वेउ। मानतीं सकल साजन तेउ।—पृ० रा०, १८। ४३।

वेऊ—सर्व० [हिं० वह + सं० अपि, हिं० भी] वह भी।

वेक—वि० [सं० एक] दे० 'एक'। उ०—जीते मरना विव में मिलना जीना जीने का फल वेक।—दक्खिनी०, पृ० ४४१।

वेकट—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली। भाकुर। २ युवक। जवान। ३ विदूषक। मसखरा। ४ जौहरी।

वेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह ढूँढना या देखना।

वेखना†—क्रि० अ० [सं० वेक्षण, प्रा० वेक्खण > ए०] देखना उ०—हुए क्या कौजै लाडिले वेखन नहिं पावै।—घनानंद, पृ० १८०।

वेखलाना†—क्रि० स० [सं० वेक्षण] दे० 'दिखलाना'। उ०—जिद निमाणे, तपदो, सोहणा मुख वेखलानी जानी।—घनानंद, पृ०, ५३६।

वेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवाह। बहाव। २ शरीर में से मल मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति। ३ किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर। तेजी। ४ शीघ्रता। जल्दी। ५ आनंद। प्रसन्नता। खुशी। ६ कोई काम करने की दृढ़ प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७ उद्योग। उद्यम। ८ प्रवृत्ति। झुकाव। ९ वृद्धि। बढ़ती। १० महाज्योतिष्मती। ११ लाल इनारू। १२ शुक्र। वीर्य। १३ न्याय के अनुसार चौबीस गुणों में से एक गुण।

विशेष—यह गुण आकाश, जल, तेज, वायु और मन में पाया जाता है। संसार में जो कुछ गति देखी जाती है, वह इसी गुण के कारण होती है और उक्त पाँचों में से किसी न किसी के द्वारा होती है।

१४ बाण की गति या चाल (को०)। १५ प्रेम। गाढ़ अनुराग (को०)। १६ रोग की तीव्रता (को०)। १७ विष आदि का संचार या फैलना (को०)। १८ आंतरिक भावों की बाह्य अभिव्यक्ति। २० भावातिरेक (को०)।

वेगग—वि० [सं०] तेज चलनेवाला। तीव्रगामी (को०)।

वेगगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेगपूर्वक चलनेवाली, नदी।

वेगघ्न—वि० [सं०] तीव्रता से प्रहार करनेवाला (को०)।

वेगदंड—संज्ञा पुं० [सं० वेगदण्ड] हाथी (को०)।

वेगदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० वेगदर्शिन्] रामायण के अनुसार एक बंदर का नाम।

वेगधारण—संज्ञा पुं० [सं०] मल, मूत्र या शरीर के इसी प्रकार के और किसी वेग को रोकना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है।

वेगनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष्मा। कफ।
विशेष—कहते हैं, शरीर से निकलनेवाला मल आदि इसी के कारण कुछ रुकता है, इसीलिये इसका यह नाम पड़ा है।

वेगनिरोध—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के मल मूत्र आदि वेगों को रोकना। वेगधारण।

वेगपरिक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] रोग के वेग या तेजी का कम होना [को०]।

वेगरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर के मल मूत्र आदि वेगों को रोकना। वेगधारण। २ गति में बाधा। रुकावट। रोक।

वेगवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

वेगवान्¹—वि० [सं० वेगवत्] [वि० स्त्री० वेगवती] वेगपूर्वक चलनेवाला। तेज चलनेवाला।

वेगवान्²—संज्ञा पुं० विष्णु।

वेगवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गंगा। २ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

वेगवाही—वि० [सं० वेगवाहिन्] वेग से युक्त। वेगी [को०]।

वेगविघात—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर से निकलते हुए मल मूत्र आदि वेगों को सहसा रोक लेना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक समझा जाता है।

वेगविधारण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेगरोध' [को०]।

वेगसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ तेज चलनेवाला घोड़ा। २. खच्चर।

वेगहरिण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मृग। वेगिहिरण [को०]।

वेगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी मालकँगनी। महाज्योतिष्मती।

वेगाघात—संज्ञा पुं० [सं०] १ अकस्मात् वेग या गति का रोकना। २ मलावरोध। कोष्ठबद्धता [को०]।

वेगानिल—संज्ञा पुं० [सं०] वेगयुक्त वायु। आँधी। प्रचंड पवन [को०]।

वेगार(पु)†—संज्ञा पुं० [फा० बेगार, दे० 'बेगार'। उ०—बाँट जाइते बेगार घर।—कीर्ति०, पृ० ४४।

वेगावतरण—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्र गति से उतरना [को०]।

वेगित—वि० [सं०] १ जिसमें वेग हो। वेगयुक्त। २ विलोडित। मथित। क्षुब्ध। ३ जिसमें गति लाई गई हो। तेज किया हुआ (को०)।

वेगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिता। नदी। २ एक प्रकार की नौका। युक्तिकल्पतरु के अनुसार १७६ हाथ लंबी, २२ हाथ ऊँची और १७⅗ हाथ चौड़ी नाव।

वेगिहिरण—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकारी मृग।

वेगी—संज्ञा पुं० [सं० वेगिन्] १ वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो। २ धावन। हरकारा (को०)। ३ बाज नाम का पक्षी।

वेगोदग्र—वि० [सं०] तीव्रता से प्रभाव फैलानेवाला (विष आदि)—शीघ्र असर करनेवाला [को०]।

वेचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भृति। मजदूरी। वेतन [को०]।

वेजानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमराजी।

वेजित—वि० [सं०] १ उत्तेजित। कंपित। क्षुब्ध। २. बढ़ाया हुआ। वर्धित [को०]।

वेट्—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाहा।
विशेष—वैदिक काल में यज्ञों आदि में स्वाहा के स्थान में वेट् शब्द का व्यवहार होता था।

वेट—संज्ञा पुं० [सं०] पीलु नामक वृक्ष [को०]।

वेटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्यों की वसति या निवास। वैश्यों या वणिकों की बस्ती [को०]।

वेटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौका। नाव [को०]।

वेटेरिनरी—वि० [अं०] बैल, घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा संबंधी। शालिहोत्र संबंधी। जैसे,—वेटेरिनरी अस्पताल।

वेटेरिनरी अस्पताल—संज्ञा पुं० [अं० वेटेरिनरी हास्पिटल] वह स्थान या चिकित्सालय जहाँ घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा की जाती है। पशु चिकित्सालय।

वेट्टचदन—संज्ञा पुं० [सं० वेट्टचन्दन] मलयागिरि चंदन।

वेड—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन [को०]।

वेडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेड़ा। नाव [को०]।

वेढ¹—संज्ञा पुं० [प्रा०] १. आसन। स्थान। पीढ़ा। २ घेरा। लपेट। उ०—कोई मूँगारो मूँसो गयो, कछु कसण ते लक की वेढ, रात दिवस धनी पहरीयो।—बी० रासो, पृ० ९७।

वेढ†²—संज्ञा पुं० [देश०] युद्ध। उ०—माह उजाली सप्तमी, वेढ ममीसर वार।—रा० रू०, पृ० २७२।

वेढक†—वि० [देश०] लड़ाकू। उ०—बाघ फता वेढकाँ वीर बीराध विजावत।—रा० रू०, पृ० १५७।

वेढमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह रोटी या कचौड़ी जिसमें उड़द की पीठी भरी हो। बेढ़ई।

वेढिअ†—वि० [सं० वेष्टित या देशी] ढका हुआ। आवृत।—देशी०, पृ० ३०४।

वेण—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहक माता और अंबष्ठ पिता से मानी गई है। २ सूर्यवंशी राजा पृथु के पिता का नाम। ३ बाँस की वस्तुओं को बनाने का काम करनेवाली एक जाति। बँसोर। घरिकार (को०)।

वेणयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

वेणवी—संज्ञा पुं० [सं० वेणविन्] १ वह जिसके पास वेणु हो। २. शिव का एक नाम।

वेणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम जिसे पर्णासा भी कहते हैं। २ उशीर। खस।

वेणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवदाली। बंदाल। २ वेणी गूँथना या बाँधना (को०)। ३ प्रोषितपतिका नायिका आदि की लटकती हुई चोटी जो एक हो (को०)। ४ जल का प्रवाह। जलधारा (को०)। ५ सरित्संगम (को०)। ६ एक नदी (को०)। ७ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम (को०)। ८ पहले की विभक्त किंतु बाद में पुनः संयुक्त की गई संपत्ति (को०)। ९ बाँध। पुल (को०)। १० मेघा। भेंड़ (को०)। ११. प्रपात। निर्झर। उत्स (को०)।

वेणिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम। २ इस देश का निवासी।

वेणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। वेणी। २ बाँस, नरसल आदि का बना बेड़ा (को०)। ३ लगातार प्रवाह। अटूट धारा (को०)।

वेणिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके बालों में चोटी की हुई हो (को०)।

वेणिबंध—संज्ञा पुं० [सं० वेणिबन्ध] बालों को बाँधकर बनाई गई चोटी (को०)।

वेणिमाधव—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिवेणी संगम के देवता विष्णु की मूर्ति।

वेणिवेधनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जोंक।

वेणिवेधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कंकतिका। कंघी (को०)।

वेणी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। २ जल का प्रवाह। पानी का बहाव। ३ भीड़ भाड़। ४ देवदाली। ५ एक प्राचीन नदी का नाम। ६ भेड़। ७ पुल। बाँध। सेतु (को०)। ८ देवताड़। दे० 'वेणि'।

वेणी—संज्ञा पुं० [सं० वेणिन्] नागविशेष (को०)।

वेणीग—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

वेणीदान—संज्ञा पुं० [सं०] वेणी या बाल कटवाने का एक संस्कार जो प्रयाग आदि तीर्थों में संपन्न कराते हैं (को०)।

वेणीफल—संज्ञा पुं० [सं०] देवदाली का फल।

वेणीमूल—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

वेणीमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] उशीर। खस।

वेणीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीम का पेड़। २ रीठा। अरिष्टक वृक्ष।

वेणीसंवरण—संज्ञा पुं० [सं०] वेणी को बाँधना। वेणीबंधन (को०)।

वेणीसंहरण—संज्ञा पुं० [सं०] चोटी बाँधना। जूड़ा बाँधना (को०)।

वेणीसंहार—संज्ञा पुं० [सं० वेणी+संहार] १ जूड़ा बाँधना। बिखरे केशों को सुधारकर चोटी बाँधना। २ भट्ट नारायण कृत संस्कृत का एक नाटक (को०)।

वेणीस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० वेणीस्कन्ध] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

वेणु—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २ बाँस की बनी हुई वंशी। ३ एक प्राचीन राजा का नाम। दे० 'वेण'। ४ बेंत। बेंस (को०)। ५ ध्वजा। केतु (को०)।

वेणुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लकड़ी या छड़ी जिससे गौओं, बैलों आदि को हाँकते हैं। २ अंकुश। आँकुस। ३ छोटी वंशी। बाँसुरी। ४ इलायची। ५ एक जनपद (को०)।

वेणुकर्कर—संज्ञा पुं० [सं०] कनेर का पेड़। करवीर का पेड़।

वेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी। वंशी। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल बहुत जहरीला होता है। ३ हाथी को चलाने का प्राचीन काल का एक प्रकार का अंकुश या दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था।

वेणुकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाँस से बाँसुरी बनाता हो। वंशी बनानेवाला।

वेणुकीय—वि० [सं०] वेणुसंबंधी। वेणु का।

वेणुकीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जगह जहाँ बाँस बहुत अधिक उत्पन्न हो (को०)।

वेणुगुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] बाँसों का झुरमुट। बाँस की कोठी (को०)।

वेणुग्रव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

वेणुजंघ—संज्ञा पुं० [सं० वेणुजङ्घ] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन मुनि का नाम।

वेणुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह चीज जो बाँस से उत्पन्न हुई हो। जैसे अग्नि आदि। २ बाँस के फूल में होनेवाले दाने, जो चावल कहलाते हैं और जो पीसकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाए जाते हैं। बाँस का चावल। ३ गोल मिर्च।

वेणुजमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गोल दाना जो प्रायः मोती कहलाता है।

वेणुजाल—संज्ञा पुं० [सं० वेणु+जाल] बँसवारी। बाँस की कोठी। बाँसों का झुरमुट (को०)।

वेणुदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेणुदल—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस को चीरकर बनाया हुआ फट्टा या बड़ी खपाची (को०)।

वेणुदारि—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम।

वेणुदारी'—संज्ञा पुं० [सं० वेणुदारिन्] दानवविशेष (को०)।

वेणुदारी'—वि० बाँस को चीरने या फाड़नेवाला (को०)।

वेणुध्म—संज्ञा पुं० [सं०] वंशीवादक। बाँसुरी बजानेवाला (को०)।

वेणुन—संज्ञा पुं० [सं०] मिर्च।

वेणुनिर्लेखन—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस की छाल।

वेणुनिस्रुति—संज्ञा पुं० [सं०] ईख। ऊख।

वेणुनृत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार एक देवी (को०)।

वेणुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो रेणुप भी कहलाता था। २ इस देश का निवासी।

वेणुपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का पत्ता।

वेणुपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प की एक जाति। सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।

वेणुपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशपत्री। हिंगुपर्णी।

वेणुपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वेणुपत्रिका' (को०)।

वेणुपुर—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक बेलगाँव का प्राचीन नाम।

वेणुबीज—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस के फूल में होनेवाले छोटे दाने जो ज्वार आदि के आटे के साथ पीसकर खाए जाते हैं। बाँस का चावल।

वेणुमंडल—संज्ञा पुं० [सं० वेणुमण्डल] महाभारत के अनुसार कुशद्वीप के एक वर्ष का नाम।

वेणुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पश्चिमोत्तर देश की एक नदी का नाम।

वेणुमय—वि० [सं०] बाँस का बना हुआ।

वेणुमान्—संज्ञा पुं० [सं० वेणुमत्] १ पुराणानुसार एक वंश (वर्ष) का नाम। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ३. ज्योतिष्मान् के एक पुत्र का नाम (को०)। ४. वह जो बाँस का बना हुआ हो (को०)।

वेणुमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा।

वेणुयव—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस के फूलों मे होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पीसकर खाए जाते है। बाँस का चावल।

विशेष—वैद्यक मे यह रुक्ष, शीतल, कषाय और कफ, पित्त, मेद, कृमि तथा विष आदि का नाशक तथा बल और वीर्यवर्धक कहा गया है।

वेणुयष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस की लाठी या छड़ी [को०]।

वेणुवंश—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक राजा का नाम।

वेणुवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजगृह के पास का एक उपवन। राजा बिंबिसार ने गौतम बुद्ध को बुलाकर यहीं ठहराया था। उ०—जब भगवान् बुद्ध राजगृह के वेणुवन मे विहार कर रहे थे।—गो० ज०, पृ० ६१। २ बाँसों का जंगल।

वेणुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वंशी बजाता हो। बाँसुरी बजानेवाला।

वेणुवादक—संज्ञा पुं० [सं०] बाँसुरी बजानेवाला। वंशीवादक [को०]।

वेणुवादन, वेणुवाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वंशी बजाना [को०]।

वेणुवादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वंशी बजानेवाली स्त्री। २ बाँसुरी बजाती हुई यक्षिणी की प्रस्तरप्रतिमा। उ०—त्रिपुरी मे वेणुवादिनी, सुदर्शना, नागी इत्यादि कई प्रकार की यक्षिणियों की प्रतिमाएँ रखी है।—शुक्ल अभि० ग्रं०, पृ० १६४।

वेणुविदल—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का फट्टा [को०]।

वेणुवीणाधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वेणुवैदल—वि० [सं०] वेणुविदल का बना हुआ। बाँस की खपाचियों का बना हुआ।

वेणुशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस की बनी शय्या [को०]।

वेणुहय—संज्ञा पुं० [सं०] एक यदुवंशी का नाम [को०]।

वेणुहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] धृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम।

वेण्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विंध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम।

वेण्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम।

वेण्वातट—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो वेणा या वेण्वा नदी के तट पर था। २. इस देश का निवासी।

वेतंड—संज्ञा पुं० [सं० वेतण्ड] गज। हाथी। दे० 'वितंड' [को०]।

वेतंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेतण्डा] देवी दुर्गा का एक रूप [को०]।

वेतंद—संज्ञा पुं० [सं० वेतन्द] हाथी [को०]।

वेत—संज्ञा पुं० [सं० वेतस्] दे० 'बेंत'।

वेतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले मे दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २. वह धन जो बराबर कुछ निश्चित समय तक, प्राय एक मास तक, काम करने पर मिले। तनख्वाह। दरमाहा। महीना।

क्रि० प्र०—देना। —पाना। —मिलना।

३ चाँदी। रजत। ४ वृत्ति। जीविका (को०)।

वेतनकल्पना—संज्ञा स्त्री० [सं०] तनखाह नियत करना।

वेतनकालातिपातन—संज्ञा पुं० [सं०] तनखाह देने मे देर करना।

विशेष—चाणक्य के मत से यह व्यवस्थापकों का दोष है और एतदर्थ वे दंड्य कहे गए हैं।

वेतननाश—संज्ञा पुं० [सं०] तनखाह या मजदूरी जब्त हो जाना।

विशेष—चाणक्य के समय मे यह राजनियम था कि जो कारीगर ठीक ढंग से काम नहीं करते थे या कहा कुछ जाय और करते कुछ थे, उनका वेतन जब्त हो जाता था।

वेतनभुक्—संज्ञा पुं० [सं० वेतनभुज्] दे० 'वेतनभोगी' [को०]।

वेतनभोगी—संज्ञा पुं० [सं० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। तनखाह पर काम करनेवाला।

वेतनादान—संज्ञा पुं० [सं०] पारिश्रमिक न देना। वेतन न देना [को०]।

वेतनी—वि० [सं० वेतनिन्] वेतनभोगी। वेतन पानेवाला [को०]।

वेतस—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेंत। २ जलबेंत। ३. बड़वानल। ४. बिजौरा नीबू (को०)।

वेतसक—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

वेतसगृह—संज्ञा पुं० [सं०] बेंत की बनी झोपड़ी या मंडप [को०]।

वेतसपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का पत्ता। २ दे० 'वेतसपत्रक'।

वेतसपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जो प्राय एक अंगुल मोटा और चार अंगुल लंबा होता था। इसका व्यवहार चीरफाड़ मे होता था।

वेतसपरीक्षिप्त—वि० [सं०] बेंतों से घिरा हुआ। जैसे, स्थान या भूमि [को०]।

वेतसवृत्ति—वि० [सं०] बेंत के समान झुक जाने का स्वभाव [को०]।

वेतसाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] अम्लबेंत।

वेतसिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वेतसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वेतस'।

यौ०—वेतसीवृत्ति = बेंत के समान झुक जाने का स्वभाव या लचीलापन।

वेतसु—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैदिक काल के एक असुर का नाम।

वेदकौलेयक—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम ।

वेदगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेदगङ्गा] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम जो कोल्हापुर राज्य से निकलकर कृष्णा नदी मे मिलती हैं ।

वेदगत—वि० [सं०] चतुर्थ स्थान का । चौथे स्थानवाला [को०] ।

वेदगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा । २ विष्णु (को०) । ३ ब्राह्मण ।

वेदगर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती नदी । २ रेवा नदी ।

वेदगर्भापुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेदगांभीर्य—संज्ञा पुं० [सं० वेदगाम्भीर्य] वेदों की गभीरता या गूढ अर्थ ।

वेदगाथ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

वेदगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २. भागवत के अनुसार पराशर के एक पुत्र का नाम ।

वेदगुह्य—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

वेदघोप—संज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि [को०] ।

वेदजननी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सावित्री जो वेद की माता मानी जाती है ।

वेदज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेदो का ज्ञाता हो । वेद जाननेवाला । २ वह जो ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो । ब्रह्मज्ञानी ।

वेदतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेद का प्रमुख उद्देश्य । ब्रह्मज्ञान [को०] ।

वेदतात्पर्य—संज्ञा पुं० [सं०] वेदो का वह अर्थ जो समुचित और अभिप्रेत हो [को०] ।

वेदतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेदत्रय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेदत्रयी' [को०] ।

वेदत्रयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋक्, यजु तथा साम ये तीनो वेद । उ०—उ०—वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमयी है ।—केशव (शब्द०) ।

वेदत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेद का भाव या धर्म ।

वेददक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेद विद्या पढाने की दक्षिणा । वेदाध्ययन की दक्षिणा [को०] ।

वेददर्श—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन मुनि का नाम ।

वेददर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो देखने मे वेदो का स्वरूप जान पडे ।

वेददर्शी—संज्ञा पुं० [सं० वेददर्शिन्] वह जो वेदो का ज्ञाता हो ।

वेददल—वि० [सं०] १ चार दलो या पत्तोवाला । २ चार सेनाओं या समूहोंवाला [को०] ।

वेददान—संज्ञा पुं० [सं०] वेद पढाना ।

वेददीप—संज्ञा पुं० [सं०] महीधर का किया हुआ शुक्लयजुर्वेद का भाष्य ।

वेददृष्ट—वि० [सं०] वेद द्वारा प्रमाणित [को०] ।

वेदधारण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों को कंठ ग्र रखना [को०] ।

वेदध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सस्वर वेदपाठ मे होनेवाली ध्वनि । वेदघोष [को०] ।

वेदन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेदना' ।

वेदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुःख या कष्ट आदि का होनेवाला अनुभव । पीडा । व्यथा । तकलीफ । २ बौद्धो के अनुसार पाँच स्कधो मे से एक स्कध । ३ चिकित्सा । इलाज । ४ चमडा । ५ ज्ञान । प्रत्यक्ष ज्ञान (को०) । ६ अनुभूति । भावना (को०) । ७ प्राप्ति (को०) । ८ संपत्ति (को०) । ९ भेंट । उपहार (को०) । १० विवाह (को०) । ११ उच्च वर्ग के पुरुष के साथ शूद्रा का विवाह (को०) ।

वेदनाद—संज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि । वेदघोष [को०] ।

वेदनिंदक—संज्ञा पुं० [सं० वेदनिन्दक] १ वह जो वेदो की निंदा करता हो । वेदों की बुराई करनेवाला । २ नास्तिक । ३ भगवान् बुद्ध का एक नाम । ४ बौद्ध या जैन धर्म का अनुयायी ।

वेदनिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदो मे विश्वास न करना । वेदों की निंदा या बुराई [को०] ।

वेदनिंदी—वि० [सं० वेदनिन्दिन] दे० 'वेदनिंदक' [को०] ।

वेदनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी निधि वेद हो । ब्राह्मण जो वेदज्ञ हो [को०] ।

वेदनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्वचा । चमडा [को०] ।

वेदनीय—वि० [सं०] १. जानने योग्य । २. कष्टदायक । जो वेदना उत्पन्न करे । ३ बताने योग्य । ज्ञान कराने योग्य । जताने योग्य (को०) ।

वेदपठिता—वि० [सं० वेदपठितृ] वेदपाठ करनेवाला [को०] ।

वेदपथ—संज्ञा पुं० [सं०] वेदविहित आचरण । वेदमार्ग [को०] ।

वेदपथी—संज्ञा पुं० [सं० वेदपथिन्] वेदस्थ । वेदमार्ग [को०] ।

वेदपाठ—संज्ञा पुं० [सं०] वेदो का सस्वर पठन [को०] ।

वेदपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] वेदपाठी [को०] ।

वेदपाठी—संज्ञा पुं० [सं० वेदपाठिन्] वेदपाठ करनेवाला ब्राह्मण [को०] ।

वेदपारग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदो का ज्ञाता हो । २ वह जो वैदिक कर्मो का ज्ञाता हो ।

वेदपुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] वेदपाठ का कार्य । वेदाध्ययन का शुभ कर्म [को०] ।

वेदप्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] वेदाध्ययन कराना । वेददान करना [को०] ।

वेदप्लावी—संज्ञा पुं० [सं० वेदप्लाविन्] वह जो सार्वजनिक रूप से वेद की शिक्षा दे । सार्वजनिक वेदशिक्षक [को०] ।

वेदफल—संज्ञा पुं० [सं०] वह फल जो वैदिक कर्म करने से प्राप्त होता है ।

वेदबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । २ मनुरैवत के अधीन सात ऋषियो मे से एक (को०) ।

वेदबाह्य—वि॰ [स॰] १ वेद के प्रतिकूल। वेद के विरुद्ध। २. वेदों के प्रति अविश्वास करनेवाला।

वेदबीज—संज्ञा पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्ण।

वेदब्रह्मचर्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वेद पढने की अवस्था (को॰)।

वेदभू—संज्ञा पुं॰ [सं॰] महाभारत के अनुसार देवताओं के एक गण का नाम।

वेदभृत्—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदमंत्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदमन्त्र] १ वेदों में आए हुए मंत्र। २ पुराणानुसार एक जनपद का नाम। ३. इस जनपद का निवासी।

वेदमाता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वेदमातृ] १ गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।

वेदमातृका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सावित्री।

वेदमित्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक वैदिक आचार्य का नाम।

वेदमुंड—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदमुण्ड] एक असुर का नाम।

वेदमुख्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का क्षुद्र कीट या खटमल (को॰)।

वेदमूर्ति—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वह जो वेदों का बहुत बड़ा ज्ञाता हो। २ आदित्य। सूर्य।

वेदमूल—वि॰ [सं॰] वेद ही जिसका मूल आधार हो। वेद पर आधारित (को॰)।

वेदयज्ञ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वेद पढना। वेदपाठ करना। २. वैदिक यज्ञ यागादि।

वेदयिता—वि॰ संज्ञा [सं॰ वेदयितृ] ज्ञाता। जानने या अनुभव करनेवाला (को॰)।

वेदरक्षण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ब्राह्मणों का प्रमुख कर्तव्य—वेदों की रक्षा करना।

वेदरहस्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] उपनिषद्।

वेदरिचा(पु)—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ वेदऋचा] वेदों की ऋचा। वेदमंत्र। उ॰—जे वे गोप बधू ही ब्रज में तेइ अब वेदरिचा भई येह।—छीत॰, पृ॰ ७।

वेदल(पु)—वि॰ [सं॰ विदल] विकसित। दे॰ 'विदल'। उ॰—मिलै पद पद्‌ सु वेदल चप।—पृ॰ रा॰, ६१।४३७।

वेदवचन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वेदवाक्य। वेदमंत्र (को॰)।

वेदवती—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ राजा कुशध्वज की कन्या का नाम। कहते हैं, यही दूसरे जन्म में सीता हुई थी। २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम। ३ अप्सरा। ४ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

वेदवदन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. ब्रह्मा। २ व्याकरण।

वेदवाक्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वेद का कोई वाक्य। २. ऐसी बात जो पूर्ण रूप से प्रामाणिक हो और जिसका खंडन न हो सकता हो।

वेदवाद—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वेदों पर होनेवाला शास्त्रार्थ। २ वेदज्ञान (को॰)।

वेदवादी—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदवादिन्] वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता हो।

वेदवास—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ब्राह्मण।

वेदवाह—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह जो वेदों का ज्ञाता हो।

वेदवाहन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सूर्य।

वेदविक्रयी¹—वि॰ [सं॰ वेद + विक्रयिन्] वेद को बेचनेवाला। धन लेकर वेद पढानेवाला (को॰)।

वेदविक्रयी²—संज्ञा पुं॰ पतित वेदज्ञ (को॰)।

वेदविद्—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदवित्] १ वह जो वेदों का ज्ञाता हो। वेदज्ञ। २ विष्णु का एक नाम।

वेदविधि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वेद का विधान या विधि। वेद में निर्धारित विधान। उ॰—प्रच्छन्न बौद्ध ज्या कहने लगे, वेदविधि के कर्मकांड के लोप से दुखी जन वे विधि के प्रत्याशी।—अपरा, पृ॰ २१४।

वेदविहित—वि॰ [सं॰] वेद के अनुकूल (को॰)।

वेदवृद्ध—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

वेदवैनाशिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक नदी का नाम।

वेदव्यास—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'व्यास'। उ॰—कर्म फाँस तहवाँ लग राखा। जहँ लग वेदव्यास कछु भाषा।—कबीर सा॰, पृ॰ ६६१।

वेदव्रत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह जो वेदों का अध्ययन करता हो।

वेदशिर¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. भागवत के अनुसार कृशाश्व के पुत्र का नाम। २ पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र।

वेदशिर²—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदशिरस्] पुराणानुसार मार्कंडेय के एक पुत्र का नाम, जो मूर्द्धन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। कहते हैं, भार्गव लोगों का मूल पुरुष यही था।

वेदशिरा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदशिरस्] दे॰ 'वेदशिर' (को॰)।

वेदशीर्ष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वेदश्रवा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेदश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदश्री—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदश्रुत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] भागवत के अनुसार वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

वेदश्रुति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वेदसम्मत—वि॰ [सं॰ वेदसम्मत] वेदानुकूल (को॰)।

वेदसम्मित—वि॰ [सं॰ वेदसम्मित] वेद के समान। महत्वपूर्ण। वेद के द्वारा विहित (को॰)।

वेदसार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विष्णु।

वेदसिनी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वेदस्पर्श—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्राचीन वैदिक आचार्य का नाम।

वेदस्मृता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वेदस्मृति, वेदस्मृती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदस्मृता नदी का नाम ।

वेदहीन—वि० [सं०] वेद के ज्ञान से रहित । वह जिसे वेद का ज्ञान न हो [को०] ।

वेदांग—संज्ञा पुं० [सं० वेदाङ्ग] १ वेदों के अंग या शास्त्र जो छह हैं और जिनके नाम इस प्रकार हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद ।

विशेष—इनमें से व्याकरण को लोग वेदों का मुख, शिक्षा को नाक, निरुक्त को कान, ज्योतिष को आँख, कल्प को हाथ और छंद को पैर मानते हैं ।

२ सूर्य का एक नाम । ३ बारह आदित्यों में से एक आदित्य ।

वेदांत—संज्ञा पुं० [सं० वेदान्त] १ उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है । ब्रह्मविद्या । अध्यात्म विद्या । अध्यात्म शास्त्र । ज्ञानकांड । उ०—यद्यपि उपनिषदों को 'वेदांत' (वेद+अंत) संज्ञा दी गई है ।—संत० दरिया (भू०), पृ० ५६ । २ छह दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है, जड जगत् और जीव कोई अतिरिक्त या अन्य पदार्थ नहीं माने गए । उत्तर मीमांसा । अद्वैतवाद ।

विशेष—यद्यपि इस सिद्धांत का आभास वेद के मंत्रभाग में कहीं कहीं पाया जाता है, पर आगे चलकर ब्राह्मण, आरण्यकों में अधिक से अधिकतर होता गया है । तथापि सर्वाधिक इसका आधार उपनिषद् ही हैं जिनमें जीव, जगत् और ब्रह्म आदि का निरूपण है । उपनिषदों में मुख्य वे दस कठ, केन, प्रश्न आदि उपनिषद् हैं जिनपर आद्य शंकराचार्य का भाष्य मिलता है । उनमें जिस प्रकार 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्वमसि' आदि जीवात्मा और परमात्मा का एकता प्रतिपादित करनेवाले महावाक्य है, उसी प्रकार पंचमहाभूतों में से पृथ्वी, जल और अग्नि ब्रह्म के मूर्त रूप तथा वायु और आकाश अमूर्त रूप कहे गए हैं । इस प्रकार उनमें जीवात्मा और जडजगत् दोनों का समावेश ब्रह्म के भीतर मिलता है जो अद्वैतवाद का आधार है । आगे चलकर उपनिषद् की इस ब्रह्मविद्या का दार्शनिक ढंग से निरूपण महर्षि बादरायण के 'ब्रह्मसूत्रों' में हुआ है, जिनपर कई भाष्य भिन्न भिन्न आचार्यों ने अपने अपने मत के अनुसार रचे । इनमें अनेक भाष्य अत्यंत प्रसिद्ध है,—शंकराचार्य (शारीरक), रामानुज वल्लभ आदि अनेक आचार्यों ने इसपर भाष्य लिखे इनमें से शंकर का भाष्य ही सबसे प्रसिद्ध और चिंतनपद्धति में बहुत आगे बढ़ा हुआ है । अत. 'वेदांत' शब्द से साधारणत. शंकर का अद्वैतवाद ही समझा जाता है । शेष भाष्य अनेक विद्वानों के मत से सांप्रदायिक माने जाते हैं ।

जगत्, जीव और ब्रह्म या परमात्मा इन तीनों वस्तुओं के स्वरूप तथा इनके पारस्परिक संबंध का निर्णय ही वेदांत शास्त्र का विषय है । न्याय और वैशेषिक ने ईश्वर, जीव और जगत् (या जगत् के मूलद्रव्य परमाणु) ये तीन तत्व मानकर ईश्वर को जगत् का कर्ता ठहराया है, जो सर्वसाधारण की स्थूल भावना के अनुकूल है । वैशेषिक के अनुसार जगत् का मूल रूप परमाणु है जो नित्य है और जिनके ईश्वर-प्रेरित संयोग से सृष्टि होती है । इसके आगे बढ़कर सांख्य ने दो ही नित्य तत्व स्थिर किए—पुरुष (आत्मा) और प्रकृति, अर्थात् एक ओर असंख्य चेतन जीवात्माएँ और दूसरी ओर जडजगत् का अव्यक्त मूल । ईश्वर या परमात्मा का समावेश सांख्यपद्धति में नहीं है । सृष्टि के विकास की सूक्ष्म तात्विक विवेचना सांख्य ने ही की है । किस प्रकार एक अव्यक्त प्रकृति से क्रमश. आपसे आप जगत् का विकास हुआ, इसका पूरा ब्योरा उसमें बताया गया है, और जगत् का कोई कर्ता है, नैयायिकों के इस सिद्धांत का खंडन किया गया है । पुरुष या आत्मा केवल द्रष्टा है, कर्ता नहीं । इसी प्रकार प्रकृति जड और क्रियामयी है । एक लँगड़ा है, दूसरी अंधा । असंख्य पुरुषों के संयोग या सान्निध्य से ही प्रकृति सृष्टि-क्रिया में तत्पर हुआ करती हैं ।

वेदांत ने और आगे बढ़कर प्रकृति तथा असंख्य पुरुषों का एक ही परमतत्व ब्रह्म में अविभक्त रूप से समावेश करके जड चेतन के द्वैत के स्थान पर अद्वैत की स्थापना की । वेदांत ने सांख्यों के अनेक पुरुषों का खंडन किया और चेतन तत्व को एक और अविच्छिन्न सिद्ध करते हुए बताया कि प्रकृति या माया की 'अहंकार' गुणरूपी उपाधि में ही एक के स्थान पर अनेक पुरुषों या आत्माओं की प्रतीति होती हैं । यह अनेकता मायाजन्य है । सांख्यों ने पुरुष और प्रकृति के संयोग से जो सृष्टि का उत्पत्ति कही है, वह भी असंगत है, क्योंकि यह संयोग या तो सत्य हो सकता है अथवा मिथ्या । यदि सत्य है, तो नित्य है, अत कभी टूट नहीं सकता । इस दशा में आत्मा कभी मुक्त हो ही नहीं सकती । इसी प्रकार की युक्तियों से पुरुष और प्रकृति के द्वैत को न मानकर वेदांत ने उन्हें एक ही परम तत्व ब्रह्म की विभूतियाँ बताया । वेदांत के अनुसार ब्रह्म जगत् का निमित्त और उपादान दोनों है ।

नामरूपात्मक जगत् के मूल में आधारभूत होकर रहनेवाले इस नित्य और निर्विकार तत्व ब्रह्म का स्वरूप कैसा हो सकता है, इसका भी निरूपण वेदांत ने किया है । जगत् में जो नाना दृश्य दिखाई पड़ते है, वे सब परिणामी और अनित्य है । वे बदलते रहते हैं, पर उनका ज्ञान करनेवाला आत्मा या द्रष्टा सदा वही रहता है । यदि ऐसा न होता तो भूतकाल में अनुभव की हुई बात का वर्तमानकाल में अनुभूत विषय के साथ जो संबंध जोड़ा जाता है, वह असंभव होता है (पंचदशी) । इसी से ब्रह्म का स्वरूप भी ऐसा ही होना चाहिए । अर्थात् ब्रह्म चित्स्वरूप या आत्मस्वरूप है । नाना ज्ञेय पदार्थ भी ज्ञाता के ही सगुण, सोपाधि या मायात्मक रूप हैं, यह निश्चय करके ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत वेदांत ने हटा दिया है, ब्रह्म स्वरूप का विवेचन वेदांत के पिछले ग्रंथों में ब्योरे के साथ हुआ है ।

जगत् और सृष्टि के संबंध मे वेदातियो ने नैयायिको के 'आरंभवाद' (ईश्वर सृष्टि उत्पन्न करता है) और साख्य के 'परिणामवाद' (सृष्टि का विकास उत्तरोत्तर विकार या परिणाम द्वारा अव्यक्त प्रकृति से आपसे आप होता है) के स्थान पर 'विवर्तवाद' की स्थापना की है जिसके अनुसार जगत् ब्रह्म का विवर्त या कल्पित रूप है। रस्सी को यदि हम सर्प समझें तो रस्सी सत्य वस्तु है और सर्प उसका विवर्त या भ्रातिजन्य प्रतीति है। इसी प्रकार ब्रह्म तो नित्य और वास्तविक सत्ता है और नामरूपात्मक जगत् उसका विवर्त है। यह विवर्त अध्यास द्वारा होता है। जो नामरूपात्मक दृश्य हम देखते हैं वह न तो ब्रह्म का वास्तव स्वरूप ही है, न कार्य या परिणाम ही क्योकि ब्रह्म निर्विकार और अपरिणामी है। अध्यास के सबध मे कहा जा सकता है कि सर्प कोई अलग पदार्थ है तब तो उसका आरोप होता है। अत इस विषय को और स्पष्ट करने के लिये 'दृष्टि-सृष्टि-वाद' उपस्थित किया जाता है जिसके अनुसार माया या नामरूप मन की वृत्ति है। इनको सृष्टि मन ही करता है और मन ही देखता है। ये नामरूप उसी प्रकार मन या वृत्तियो के बाहर की कोई वस्तु नही हैं, जिस प्रकार जड चित् के बाहर की कोई वस्तु नही है। इन वृत्तियो का शमन ही मोक्ष है।

इन दोनो वादो मे कुछ त्रुटि देखकर कुछ वेदाती 'अवच्छेदवाद' का आश्रय लेते हैं। वे कहते हैं कि ब्रह्म के अतिरिक्त जगत् की जो प्रतीति होती है, वह एकरस या अनवच्छिन्न सत्ता के भीतर माया द्वारा अवच्छेद या परिमिति के आरोप के कारण होती है। कुछ अन्य वेदाती इन तीनो वादो के स्थान पर 'बिंब-प्रतिबिंब-वाद' उपस्थित करते हैं और कहते है कि ब्रह्म प्रकृति या माया के बीच अनेक प्रकार से प्रतिबिंबित होता है जिससे नामरूपात्मक दृश्यो की प्रतीति होती है। अतिम वाद 'अजात वाद' है जिसे 'प्रौढिवाद' भी कहते हैं। यह सब प्रकार की उत्पत्ति को, चाहे वह विवर्त के रूप मे कही जाय, चाहे दृष्टि सृष्टि या अवच्छेद या प्रतिबिंब के रूप मे—अस्वीकार करता है और कहता है कि जो जैसा है वह वैसा ही है और सब ब्रह्म है। ब्रह्म अनिर्वचनीय है, उसका वर्णन शब्दो द्वारा हो ही नही सकता क्योकि हमारे पास जो भाषा है, वह द्वैत ही की है, अर्थात् जो कुछ हम कहते है वह भेद के आधार पर ही।

यद्यपि ब्रह्म का वास्तविक या पारमार्थिक रूप अव्यक्त, निर्गुण और निर्विशेष है, तथापि व्यक्त और सगुण रूप भी उसके बाहर नही है। पचदशी मे इन सगुण रूपो का विभेद प्रतिबिंबवाद के शब्दो मे इस प्रकार समझाया गया है रजोगुण की प्रवृत्ति से प्रकृति दो रूपो मे विभक्त होती है—सत्वप्रधान और तम प्रधान। सत्वप्रधान के भी दो रूप हो जाते हैं—शुद्ध सत्व (जिसमे सत्व गुण पूर्ण हो) और अशुद्ध सत्व (जिसमे सत्व अशत हो)। प्रकृति के इन्ही भेदो मे प्रतिबिंबित होने के कारण ब्रह्म को 'जीव' कहते हैं।

वेदात या अद्वैतवाद से साधारणत शकराचार्य प्रतिपादित अद्वैतवाद लिया जाता है जिसमे ब्रह्म स्वगत, सजातीय और विजातीय तीनो भेदो से परे कहा गया है। पर जैसा ऊपर कहा जा चुका है, बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर रामानुजाचार्य और शकराचार्य के भाष्य भी है। रामानुज के अद्वैतवाद को 'विशिष्टाद्वैत' कहते हैं, क्योकि उसमे ब्रह्म को चित् और अचित् इन दो पक्षो से युक्त या विशिष्ट कहा है। ब्रह्म के इसी सूक्ष्म चित् और सूक्ष्म अचित् से स्थूल चित् (जीव) और स्थूल अचित् (जड) उत्पन्न हुए। अतः रामानुज के अनुसार ब्रह्म केवल निमित्त कारण है, उपादान है जड (स्थूल अचित्) और जीव (स्थूल चित्)। इस मत के अनुसार जीव को ब्रह्म का अश कह सकते है। पर शकर मत से नहीं, क्योंकि उसमे ब्रह्म सब प्रकार के भेदो मे परे कहा गया है।

वल्लभाचार्य जी का अद्वैत 'शुद्धाद्वैत' कहलाता है, क्योंकि उसमे रामानुजकृत दो पक्षो की विशिष्टता हटाकर अद्वैतवाद शुद्ध किया गया है। इस मत के अनुसार सत्, चित् और आनद-स्वरूप ब्रह्म अपनी इच्छानुसार इन तीनो स्वरूपो का आविर्भाव करता रहता है। जड जगत् भी ब्रह्म ही है, पर अपने चित् और आनद स्वरूपो का पूर्ण तिरोभाव किए हुए तथा सत् स्वरूप का कुछ अशत आविर्भाव किए हुए है। चेतन जगत् भी ब्रह्म ही है जिसमे सत्, चित् और आनद इन तीनो स्वरूपों का कुछ आविर्भाव और कुछ तिरोभाव रहता है। माया ब्रह्म ही की शक्ति है जो उसी की इच्छा से विभक्त होती है, अत मायात्मक जगत् मिथ्या नही है। जीव अपने शुद्ध ब्रह्मस्वरूप को तभी प्राप्त करता है जब आविर्भाव और तिरोभाव दोनो मिट जाते है, और यह बात केवल ईश्वर के अनुग्रह से ही, जिसे 'पुष्टि' कहते है, हो सकती है।

यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए कि रामानुज और वल्लभाचार्य केवल दार्शनिक ही न थे, वे भक्तिमार्गी भी थे।

वेदातग¹—सज्ञा पु० [स० वेदान्तग] वेदात दर्शन का अनुगमन करनेवाला। वेदात मत का अनुयायी [को०]।

वेदातग²—वि० वेदवत्ता [को०]।

वेदातज्ञ—वि० [स० वेदान्तज्ञ] वेदात दर्शन का ज्ञाता। वेदातग [को०]।

वेदातवादी —वि० [स० वेदातवादिन्] अद्वैतवादी [को०]।

वेदातविद्—वि० [स० वेदान्तवित्] वेदात दर्शन का ज्ञाता [को०]।

वेदातवेदी—वि० [स० वेदातवेदिन्] अद्वैत दर्शन या वेदात का ज्ञाता। ब्रह्मवादी। वेदाती [को०]।

वेदातसूत्र—सज्ञा पु० [स० वेदान्तसूत्र] महर्षि बादरायण कृत सूत्र जो वेदात शास्त्र के मूल माने जाते है। विशेष द० 'वेदात'।

वेदाती—सज्ञा पु० [स० वेदान्तिन्] वह जो वेदात का अच्छा ज्ञाता हो। वेदात का पूरा पडित। ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वेदात्मा—सज्ञा पु० [स० वेदात्मन्] १ विष्णु। २ सूर्य।

वेदादि—सज्ञा पु० [स०] प्रणव या ओकार का मत्र।

यौ०—वेदादिबीज = प्रणव । वेदादिवर्ण = ओंकार मंत्र । प्रणव । वेदादिवीज ।

वेदादिबीज—संज्ञा पुं० [सं०] प्रणव या ओंकार का मंत्र ।

वेदाधिगम—संज्ञा पुं० [सं०] वेदाध्ययन [को०] ।

वेदाधिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण ।

वेदाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ चारो वेदो के अधिपति ग्रह जो इस प्रकार हैं—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल और अथर्ववेद के बुध । २ विष्णु का एक नाम (को०) ।

वेदाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेदाधिप' [को०] ।

वेदाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

वेदाध्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] वेदाधिगम । वेदाध्ययन । वेदो का पढना [को०] ।

वेदाध्यापक—संज्ञा पुं० [सं०] वेदो का अध्यापन करनेवाला [को०] ।

वेदाध्यायी वि० [सं० वेदाध्यायिन्] वेदपाठ या वेद का अध्ययन करनेवाला [को०]

वेदानुवचन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद का पाठ करना । २ वेद का वचन । वेदवाक्य [को०] ।

वेदाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदो पर पूर्ण अधिकार होना [को०] ।

वेदार—संज्ञा पुं० [सं०] गिरगिट ।

वेदार्ण—संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थविशेष [को०] ।

वेदार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वेदवचन का अर्थ । वेदवाक्य का अर्थ [को०] ।

वेदाश्र—संज्ञा पुं० [सं०] चतुष्कोण [को०] ।

वेदाश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है ।

वेदि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यज्ञ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ किसी शुभ कार्य के लिये बनाकर तैयार की हुई भूमि । ३ उँगली की एक प्रकार की मुद्रा । ४ अवष्ठा । ५ वह अँगूठी जिसपर किसी का नाम अंकित हो । ६ किसी मंदिर या महल का चौकोर सहन । मंदिर या प्रासाद के प्रांगण मे बना हुआ चौकोन स्थान या मंडप (को०) । ७ सरस्वती (को०) । ८ भूभाग । भूखंड (को०) । ९ कोई वस्तु रखने का आधार (को०) । १० ज्ञान । विज्ञान (को०) । ११ एक तीर्थ का नाम (को०) ।

वेदि²—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्वान् ऋषि । २ आचार्य [को०] ।

वेदिकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदी का निर्माण [को०] ।

वेदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी शुभ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ जैन पुराणो के अनुसार एक नदी का नाम । ३ यज्ञभूमि (को०) । ४ चबूतरा । उच्च समतल भूमि (को०) । ५ आसन (को०) । ६ टीला । ढूहा (को०) । ७ लतामंडप । निकुंज (को०) ।

वेदिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्रौपदी का एक नाम ।

वेदित—वि० [सं०] १ जो कुछ बतलाया या सूचित किया गया हो । निवेदित । २ जो देखा गया हो ।

वेदितव्य—वि० [सं०] जो जानने के योग्य हो । ज्ञातव्य ।

वेदिता—वि० [सं० वेदितृ] चतुर । कुशल । विद्वान् । ज्ञाता । जाननेवाला [को०] ।

वेदित्व—संज्ञा पुं० [सं०] विदित होने का भाव । ज्ञान ।

वेदिपुरीष—संज्ञा पुं० [सं०] वेदी की गीली या ढीली मिट्टी [को०] ।

वेदिमध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी कमर वेदी की भाँति हो [को०] ।

वेदिमान, वेदिविमान—संज्ञा पुं० [सं०] वेदी के लिये भूमि का परिमाण [को०] ।

वेदिश्रोणि, वेदिश्रोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदी का श्रोणि भाग जिसे वेदिमेखला भी कहते हैं [को०] ।

वेदिष्ठ—वि० [सं०] जो सब बातें जानता हो । सर्वज्ञ ।

वेदिसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेदिसम्भवा] द्रौपदी का एक नाम [को०] ।

वेदी¹—संज्ञा पुं० [सं० वेदिन्] [स्त्री० वेदिनी] १ पंडित । विद्वान् । आचार्य । २ ज्ञाता । जानकार । ३ वह जो विवाद करता हो । ४ ब्रह्मा । ५. अवष्ठा । पाढा (को०) ।

वेदी²—संज्ञा स्त्री० १. किसी शुभ कार्य के लिये, विशेषत धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि । जैसे,—विवाह की वेदी, यज्ञ की वेदी । २ सरस्वती । ३. मंदिर या महल के प्रांगन मे बना हुआ चौकोर स्थान या मंडप (को०) । ४ मुहर करने की अँगूठी (को०) । ५ अँगुलियों की एक विशेष मुद्रा (को०) । ६ भूखंड । भूभाग (को०) । ७ ज्ञान विज्ञान (को०) । ८ कोई वस्तु रखने का आधार (को०) । दे० 'वेदि' ।

वेदी³—वि० १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ अनुभव करनेवाला । ३ विवाह करनेवाला । ४ सूचना देनेवाला । सूचक । ५ विद्वान् । आचार्य [को०]

वेदीतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है ।

वेदीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों के स्वामी, ब्रह्मा । २ अग्नि (को०) ।

वेदुक—वि० [सं०] १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ प्राप्त करनेवाला । पानेवाला । ३ जो कुछ मिला हो । प्राप्त ।

वेदेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वेदो के स्वामी, ब्रह्मा ।

वेदोकत(पु)—वि० [सं० वेदोक्त] दे० 'वेदोक्त' । उ०—केसर अगर कपूर, चोक (व), वेदोकत चन्नण ।—रा० रू०, पृ० ३५६ ।

वेदोक्त—वि० [सं०] वेदों मे कहा गया । वेदविहित [को०] ।

वेदोदय—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

वेदोदित—वि० [सं०] वेदविहित । वेद के अनुसार । वेदोक्त [को०] ।

वेदोपकरण—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांग ।

वेदोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम ।

वेद्धव्य—वि० [सं०] जो वेधने या छेदने के योग्य हो। वेधा जाने के योग्य। वेध्य।

वेद्धा—वि० [सं० वेद्धृ] छेदने या भेदनेवाला। वेधन करनेवाला। लक्ष्य साधनेवाला।

वेद्य—वि० [सं०] १. जो जानने या समझने के योग्य हो। २ जो कहने के योग्य हो। ३. जो स्तुति करने योग्य हो। ४ जो प्राप्त करने के योग्य हो। ५ विवाह के योग्य (को०)।

वेद्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञान। जानकारी।

वेध¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी नुकीली चीज से छेदने की क्रिया। वेधना। विद्ध करना। २ मंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों और तारों आदि को देखना अथवा उनका स्थान निश्चित करना।

यौ०—वेधशाला।

३ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो। जैसे,—युतवेध, पताकीवेध। ४ गहरापन। गंभीरता। ५ झगड़ा। रार। उ०—राग भनै समरेस रै, बले प्रगट्यो वेध।—रा० रू०, पृ० ३४५। ६ क्षत। घाव। ७ समय का एक मान (को०)। ८ गर्त। गहराई। गड्ढा (को०)। ९ ज्योतिष में परिधि का नवमांश (को०)। १० अशांति। बाधा (को०)। ११ घोड़ों का एक रोग (को०)। १२. रसों का मिश्रण (को०)। १४ निशाना मारना। लक्ष्य भेद करना (को०)।

वेध²—संज्ञा पुं० [सं० वेधस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। महादेव। ४. सूर्य। ५ पंडित। विद्वान्। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति।

वेधक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेध करनेवाला। २ लक्ष्य साधनेवाला। ३ वह जो मणियों आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। ४ धनियाँ। ५ कपूर। ६ अम्लवेत। ७. नरक का एक विभाग (को०)। ८ बाली में लगा हुआ धान। धान्य (को०)। ९ चंदन (को०)। १० सेंधा नमक (को०)।

वेधगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में एक राग का नाम (को०)।

वेधन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बींधने की क्रिया। छेद कर देना। २ लक्ष्यवेध करना। ३ प्रवेश। ४ प्रभावित करना। ५ गहराई। ६ खोदना। खनना क्रिया (को०)।

वेधनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह औजार जिससे मणियों आदि में छेद करते हों।

वेधनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह औजार जिससे मणियों आदि में छेद करते हों। वेधनिका। २ हाथी का अंकुश। ३ गहराई (को०)।

वेधनीय—वि० [सं०] वेधने के योग्य। जो वेधा जा सके (को०)।

वेधमुख्य—संज्ञा सं० [सं०] कचूर।

वेधमुख्यक—संज्ञा पुं० [सं०] हलदी का पौधा।

वेधमुख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

वेधशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ ग्रहों का वेध करने के यंत्र आदि रखे हों। वह स्थान जहाँ नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यंत्र हों।

वेधस—संज्ञा पुं० [सं०] हथेली के अँगूठे की जड़ के पास का स्थान।

विशेष—इसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं। आचमन के लिये इसी गड्ढे में जल लेने का विधान है।

वेधसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेधा पु—संज्ञा पुं० [सं० वेधस्] १ ब्रह्मा। स्रष्टा। उ०—सहस शब्द बीते तब वेधा। वर ब्रूहि भाखेउ अति मेधा।—गिरधर (शब्द०)। २. विष्णु। ३ शिव। ४ सूर्य। ५. पंडित। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति। ८. एक यादव का नाम जो अंगद या अंगत का पुत्र था। ९ पुरोहित (को०)। १० चंद्रमा (को०)। ११. कवि (को०)।

वेधालय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेधशाला'।

वेधित—वि० [सं०] जो वेधा गया हो। जिसमें छेद किया गया हो। बिँधा हुआ।

वेधिनी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जलौका। जोंक। २ मेथी।

वेधिनी²—वि० वेधनेवाली। छेदनेवाली।

वेधी—संज्ञा पुं० [सं० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनी] १ वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला। २ अम्लवेंत। ३ जो लक्ष्यभेद करता हो। वह जो निशाना मारता हो (को०)।

वेध्य¹—वि० [सं०] १ जिसे वेध किया जाय। २ जो वेध करने के योग्य हो।

वेध्य²—संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्य। निशाना (को०)।

वेध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाद्य विशेष (को०)।

वेन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेण' (को०)।

वेनु पु संज्ञा पुं० [सं० वेणु] बाँस की वंशी। बाँसुरी।

वेनुधारी पु—वि० [सं० वेणुधारिन्] वंशी धारण करने या बजानेवाले। उ०—या प्रकार वृंदावन के वृक्ष वृक्ष वेनुधारी श्री गोवर्धनधर रूप हैं।—दो सौ बावन०, भा० १ पृ० ३०२।

वेनुनाद पु—संज्ञा पुं० [सं० वेणुनाद] दे० 'वेणुनाद'। उ०—हमारे श्री कृष्णचंद्र जी तो वेनुनाद करि कै सब ब्रज सुंदरीन को बुलाई कै रासरमन उन सों करत हैं।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ९१।

वेन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक पवित्र नदी।

वेन्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेन'।

वेन्य²—वि० सुंदर। खूबसूरत।

वेप—संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी (को०)।

वेपथु—संज्ञा पुं० [सं०] काँपने की क्रिया। कँपकँपी। कप।

वेपथुपरीत—वि० [सं०] कपनग्रस्त। कपायमान। काँपता हुआ [को०]।

वेपथुभृत्—वि० [सं०] कपित। काँपता हुआ [को०]।

वेपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँपना। थरथरी। कप। २ वात रोग।

वेपित—वि० [सं०] कपित [को०]।

वेम—संज्ञा पुं० [सं०] करघा [को०]।

वेमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्वर्गीय ऋषि।

वेमा—संज्ञा पुं० [सं० वेमन्] करघा। बामदड [को०]।

वेर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। देह। बदन। २ कुंकुम। केसर। ३ बैंगन। भटा (को०)। ४ मुख (को०)।

वेरक—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

वेरट[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेर नामक फल। २ निम्न वा सकर वर्ण का व्यक्ति (को०)।

वेरट[2]—वि० १. मिलाया हुआ। मिश्रित। २ नीच।

वेरि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार बेंत आदि से बुनकर बना हुआ पहनावा या बकतर।

वेरो पु—संज्ञा पुं० [देश०] कूप। कुआँ। उ०—पाहण गल बाँधै पडो, वेरो बावडियाँह। पिण मगण मत पारथो मुजलां मावडियाह।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १४।

वेल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपवन। बाग। २ बौद्ध मतानुसार एक बडी सख्या। ३ आम का वृक्ष (को०)।

वेल(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० वेला] लहर। तरंग। उ०—ईडरिया आचार री, वीर चढै तो वेल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ७५।

वेलज—वि० [सं०] नमकीन और चरपरा या कडवा [को०]।

वेलडी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्लरी] दे० 'वेल' या 'वल्ली'। उ०—घर अबर विच वेलडी, तहुँ लाल सुगधा बूल। झखर इक नां आयो, नानक नही क्बूल।—सतवाणी०, पृ० ७०।

वेलन—संज्ञा पुं० [सं०] हींग।

वेलना—क्रि० अ० [सं० वेल्ल, प्रा० वेल्ल] काँपना। तडपना। हिलना। उ०—ओछइ पाँणी मच्छ ज्यऊँ, वेलत थयउ विहाँण।—ढोला०, दू० १९२।

वेलव—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र पुरुष और क्षत्रिया स्त्री के सयोग से उत्पन्न पुत्र [को०]।

वेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काल। समय। वक्त। २ समय का एक विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है। कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं। ३ मर्यादा। ४ समुद्र का किनारा। ५ समुद्र की लहर। ६ वाक्। वाणी। ७ मसूडा। ८ भोजन। खाना। ९ रोग। बीमारी। १० वृद्ध की स्त्री (को०)। ११ राग। आसक्ति (को०)। १२ अवसर। मौका (को०)। १३ विश्राम का अवकाश (को०)। १४ आसान या कष्ट-बाधा-विहीन मृत्यु (को०)। १५ मृत्यु का समय (को०)।

वेलाकूल—संज्ञा पुं० [सं०] १ ताम्रलिप्त देश का नाम। २ वेलामूल। समुद्रतट (को०)।

वेलाजल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वार का पानी [को०]।

वेलाज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] मरने के समय आनेवाला ज्वर।

वेलातट—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा [को०]।

वेलातिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] निश्चित समय का अतिक्रमण। विलब। देर [को०]।

वेलाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रतटवर्ती पर्वत [को०]।

वेलाधर—संज्ञा पुं० [सं०] भारड या भारद्वाज नामक पक्षी [को०]।

वेलाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष मे दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

विशेष—रवि, शुक्र, बुध, चद्र, शनि, बृहस्पति, और मगल ये क्रमश वेलाधिप होते हैं। जिस दिन जो वार होता है, उस दिन की पहली वेला का वेलाधिप उसी वार का ग्रह होता है, और फिर पीछे की वेलाओ के अधिपति उक्त क्रम मे शेष ग्रह होते है। जैसे,—रविवार को पहली वेला के वेलाधिप रवि, दूसरी के शुक्र, तीसरी के बुध, चौथी के चद्र आदि होंगे। इसी प्रकार बुधवार की पहली वेला के वेलाधिप बुध, दूसरी के चद्र तीसरी के शनि, चौथी के बृहस्पति आदि होंगे।

वेलान—वि० [सं०] दे० 'वेलज'।

वेलामूल—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा [को०]।

वेलायनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

वेलावन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रतटवर्ती जगल [को०]।

वेलावलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सगीत मे एक राग। दे० 'विलावल'।

वेलावित्त—संज्ञा पुं० [सं०] राजतरगिणी के अनुसार प्राचीन काल के एक प्रकार के राजकर्मचारी।

वेलाविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वारवनिता। वेश्या [को०]।

वेलाहीन—वि० [सं०] असमय मे होनेवाला। समय के पहले होनेवाला।

वेलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ताम्रलिप्त देश का एक नाम। २ नदी-तट के आस पास का प्रदेश।

वेलिभुक्प्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगधित आम जिसे वलिभुक्प्रिय भी कहा गया है [को०]।

वेलियो†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डिंगल गीत जिसके विषम पदों मे १६ मात्रा और सम पदो मे १५ मात्राए तथा आदि पद मे १८ मात्राएँ और तुकात मे लघु का विधान है।—रघु० रू०, पृ० १००।

वेलुव—संज्ञा पुं० [सं०] एक सख्या। दे० 'वेल' [को०]।

वेलोर्मि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्वार का पानी [को०]।

वेल्लतर—संज्ञा पुं० [सं० वेल्लन्तर] वीरतरु नाम का एक वृक्ष [को०]।

वेल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ विडंग। २ गमन। गति (को०)। ३ काँपना। हिलना। लहराना (को०)।

वेल्लगिरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु।

वेल्लज—संज्ञा पुं० [सं०] काली मिर्च।

वेल्लन—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोडो का जमीन पर लोटना। २ कंपन। काँपना। गतिशील होना। हिलना डोलना (को०)। ३ तरंगो का ऊपर नीचे होना या लुढकना (को०)। ४ तेजी से मथना। तीव्र आलोडन (को०)। ५ गुल्म (को०)। ६ बेलन। रोटी बनाने का काष्ठ का बेलन (को०)।

वेल्लना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वेल्लन' (को०)।

वेल्लनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वल्ली दूब। मालादूब। २ काली मिर्च (को०)।

वेल्लभव—संज्ञा पुं० [सं०] काली मिर्च। वेल्लज। मिर्च।

वेल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काला विधारा। २. मालादूब।

वेल्लहल—संज्ञा पुं० [सं०] लपट। दुराचारी। बदचलन।

वेल्लि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लता। बेल।

वेल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई का साग। उपोदिका।

वेल्लिकाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेल का पेड। २. बेल के फल का गूदा।

वेल्लित[1]—वि० [सं०] १. हिलता डुलता हुआ। कंपित। २. कुटिल। वक्र। ३ गत। गया हुआ (को०)।

वेल्लित[2]—संज्ञा पुं० १ कंपन। काँपना। हिलना डुलना। २. गमन। गति। ३. लोटना। लुठन (को०)।

वेल्लितक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप।

वेल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० वेल्ल] बेल। लता।

वेल्हा†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेला] तट। किनारा। दे० 'वेला'। उ०—धण जीती प्रिव हारियउ, वेल्हा मिलण करेह।—ढोला०, दू० ५६०।

वेवहार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—उस्थि अपन वेवहार राँक ले राअहु चप्परि।—कीर्ति०, पृ० ५०।

वेवि(पु)†—वि० [सं० द्वौ+अवि=द्वावपि] दोनों ही। उ०—वेव समत मिलिअ तवे एक्क वेवि सहोअर सग।—कीर्ति०, पृ० २२।

वेशत—संज्ञा पुं० [सं० वेशन्त] १. छोटा तालाव। उ०—बह गया है अश्रु बनकर कालकूट ज्वलत। जा रहा भरता दया के दूध से वेशत।—सामधेनी, पृ० ४८। २. अग्नि। आग।

वेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपडे लत्ते और गहने आदि पहनकर अपने आपको सजाना। २ किसी के कपडे लत्ते आदि पहनने का ढंग।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना=किसी के ढंग के कपडे लत्ते पहनना। किसी के रूप, रंग और पहनावे आदि की नकल करना। जैसे,—(नटो आदि का) राजा का वेश धारण करना।

३. पहनने के वस्त्र। पोशाक। जैसे,—अब आप अपना वेश उतारिए।

यौ०—वेशभूषा=पहनने के कपडे आदि। पोशाक।

४ कपडे का बना हुआ घर। खेमा। तबू। ५. घर। मकान। ६ वेश्या का घर। ७ दे० 'प्रवेश'—१, २, ४। ८. छद्म वेश। कपट रूप (को०)। ९ मजदूरी। भृति (को०)। १०. वेश्या जन (को०)। ११. वेश्या को दिया जानेवाला द्रव्य (को०)। १२. प्राचुर्य। अधिकता। अतिरेक (को०)।

वेशक[2]—संज्ञा पुं० [सं०] गृह। मकान (को०)।

वेशक[1]—वि० घुसने या प्रवेश करनेवाला (को०)।

वेशकुल—संज्ञा पुं० [सं०] कुलटा स्त्री। दुश्चरित्रा स्त्री। २ वेश्या। रंडी। वेश्याओं का समूह (को०)।

वेशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश का भाव या धर्म। वेशत्व।

वेशत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेश का भाव या धर्म। वेशता।

वेशदान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमुखी फूल (को०)।

वेशधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने किसी दूसरे का वेश धारण किया हो। वह जो भेस बदले हुए हो। छद्मवेशी। २ जैनो का एक संप्रदाय।

वेशधारी—संज्ञा पुं० [सं० वेशधारिन्] १ वह जिसने वेश धारण किया हो। वेश धारण करनेवाला। २. वह तपस्वी न हो, पर तपस्वियो का सा वेश धारण करता हो। ३ पुराणानुसार एक संकर जाति। ४ अभिनेता। नट (को०)।

वेशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवेश करना। २ भवन। घर (को०)।

वेशनद—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक नदी का नाम।

वेशनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या (को०)।

वेशनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ड्योढ़ी। पौरी (को०)।

वेशभगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती (को०)।

वेशभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्या की प्रकृति या दशा। वेश्याओ का सा हाव भाव (को०)।

वेशयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वेषयोषित, वेशयोषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या (को०)।

वेशर—संज्ञा पुं० [सं०] खच्चर (को०)।

वेशवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वेशवनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

वेशवान्—संज्ञा पुं० [सं० वेशवत्] १. वेश्या की कमाई पर जीवित रहनेवाला व्यक्ति। २ चकला चलानेवाला (को०)।

वेशवार—संज्ञा पुं० [सं०] नमक, मिर्च, धनिया आदि मसाले।

वे [illegible] [सं०] वेश्या का घर। रंडी का मकान।

[illegible] [सं०] वेश्या। रंडी।

[illegible] [सं०] वेश्या। रंडी (को०)।

[illegible] [सं०] १. अग्नि। आग [illegible] (को०)।

वेशिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्पविद्या । हाथ की कारीगरी ।

वेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रवेशद्वार [को०] ।

वेशी—संज्ञा पुं० [सं० वेशिन्] १ वह जो वेश धारण किए हो। वेश धारण करनेवाला । २ वह जो प्रवेश करता हो। प्रवेश करनेवाला (को०) ।

वेशीजाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री नाम की लता ।

वेश्म—संज्ञा पुं० [सं० वेश्मन्] १ घर । मकान । उ०—राजा किसी नगर मे अवस्थित राजप्रासाद (वेश्म) मे रहता था।—आ० भा० १०६ । २ जन्मकुंडली के लग्नचक्र का चौथा स्थान (को०) ।

वेश्मकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वेश्यकर्मन्] मकान बनाने की विद्या। गृहनिर्माण [को०] ।

वेश्मकलिंग—संज्ञा पुं० [सं० वेश्मकलिङ्ग] चटक पक्षी । गौरया ।

वेश्मकुलिंग—संज्ञा पुं० [सं० वेश्मकुलिङ्ग] गौरैया पक्षी [को०] ।

वेश्मकूल—संज्ञा पुं० [सं०] चिचिडा । चिचडा ।

वेश्मचटक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की गौरैया [को०] ।

वेश्मधूम—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप या पौधा [को०] ।

वेश्मनकुल—संज्ञा पुं० [सं०] छछूंदर ।

वेश्मपुरोधक—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार दूसरे के मकान को तोडकर या उसमे सेंध लगाकर चोरी करनेवाला ।

वेश्मभू—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जो मकान बनाने के लिये उपयुक्त हो अथवा जिसपर मकान बनाया जाय ।

वेश्मवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ रहने का घर। मकान। २ शयनकक्ष । शयनगृह ।

वेश्मस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रंडी ।

वेश्मस्थूणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मकान का मुख्य स्तंभ या खंभा जिस पर छाजन रहता है [को०] ।

वेश्मांत—संज्ञा पुं० [सं० वेश्मान्त] घर के अंदर का वह भाग जिसमे स्त्रियाँ रहती है । अंत पुर । जनानखाना ।

वेश्मादीपिक—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार मकान मे आग लगानेवाला ।

वेश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेश्या के रहने का मकान । रंडी का घर । २ आवास । निवास । मकान (को०) । ३. पडोस (को०) । ३ वेश्यावृत्ति (को०) ।

वेश्यकामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रंडी । पुंश्चली । बदचलन औरत [को०] ।

वेश्यस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०] ।

वेश्यांगना—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्याङ्गना] कुलटा स्त्री । बदचलन औरत ।

वेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो नाचती गाती और धन लेकर लोगो के साथ संभोग करती हो । गाने और कसब कमानेवाली औरत । रंडी ।

पर्या०—वारस्त्री । गणिका । रूपाजीवा । क्षुद्रा । शूला । वारविलासिनी । लज्जिका । कुंभा । कामरेखा । पण्यांगना । वारवधू । भोग्या । स्मरवीथिका ।

यौ०—वेश्यापण —वेश्या के साथ संभोग करने के बदले दी जाने वाला रकम । वेश्यापति = जार । वेश्यावृत्ति = धन लेकर पर पुरुषो से संभोग करना । वेश्यावेश्म = वेश्यालय ।

२ टुटुका । पाढा (को०) ।

वेश्यागमन—संज्ञा पुं० [सं०] रंडीबाजी [को०] ।

वेश्याघटक—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्या का दलाल । भंडुआ । वेश्याचार्य [को०] ।

वेश्याचार्य —संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेश्याओ के साथ रहता और उन्हे परपुरुषो से मिलाता हो । रंडियो का दलाल । भडुआ ।

वेश्याजन —संज्ञा पुं० [सं०] वेश्याओ का समूह [को०] ।

वेश्याजन समाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्याभवन । रंडियो का घर [को०] ।

वेश्यापण—संज्ञा पुं० [सं०] रंडी को भोग के निमित्त दिया जानेवाला धन [को०] ।

वेश्यापति—संज्ञा पुं० [सं०] रंडी का पति । जार [को०] ।

वेश्यापुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] रंडी का बेटा । दोगला [को०] ।

वेश्यायत्त—वि० [सं०] वेश्या की कमाई खानेवाला [को०] ।

वेश्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्याश्रम ।

वेश्यावास—संज्ञा पुं० [सं०] शृंगारहाट । वेश्याओ का निवास [को०] ।

वेश्यावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या की रोजी । रंडी की आजीविका । कसब कमाना [को०] ।

वेश्यावेश्म—संज्ञा पुं० [सं० वेश्यावेश्मन्] रंडी का घर । वेश्यालय [को०] ।

वेश्याश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्यालय [को०] ।

वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] गदहा । खच्चर ।

वेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'वेश'। २ रंगमंच मे पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेशरचना करते हैं। नेपथ्य । ३ वेश्या का घर । रंडी का मकान । ४. कर्म । ५ कार्यपरिचालन । काम चलाना ।

वेषकार—संज्ञा पुं० [सं०] किसी चीज को लपेटने का कपडा । वेष्टन । बेठन ।

वेषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कासमर्द नाम का क्षुप । कसौंदी । २. परिचर्या । सेवा ।

वेषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनियाँ ।

वेषदान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमुखी का फूल [को०] ।

वेषधर—वि० [सं०] दूसरे का रूप या वेश धरनेवाला [को०] ।

वेषधारी—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वेशधारी' ।

वेषवार—संज्ञा पुं० [सं०] नमक, मिर्च, धनियाँ आदि मसाले।

वेषश्री—वि० [सं०] १ (वेदमंत्र) जिसमें सुंदर और ललित वाक्य हों। २ मनोहर रूप में अलंकृत (को०)।

वेषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली।

वेषी—संज्ञा पुं० [सं० वेषिन्] वेशधारी। दे० 'वेशी'।

वेष्क—संज्ञा पुं० [सं०] बलिपशुओं का गला बाँधने की फँसरी या रस्सी [को०]।

वेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। २. गोंद। ३. धूप का पेड़। धूपसरल। ४. श्रीवेष्ट। गंधाबिरोजा। ५ सुश्रुत के अनुसार मुँह में होनेवाला एक प्रकार का रोग। ६ शिरोवेष्टन। दे० 'वेष्टन'। ७ बाड़ा। बाड़ (को०)। ८. बंधन। फँसरी (को०)। ९ दाँत का खोडर या गड्ढा (को०)। १०. आकाश (को०)।

वेष्टक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधाबिरोजा। श्रीवेष्ट। २. गोंद। ३. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। ४. सफेद कुम्हड़ा। पेठा। ५. कुम्हड़ा। ६. छाल। वल्कल। ७. उष्णीष। पगड़ी। ८. प्राचीर। परकोटा। चहारदीवारी। ९ व्याकरण में पूर्वापर में लगनेवाला शब्द। जैसे, अथ, इति (को०)।

वेष्टक²—वि० चारों ओर से ढकने या आवृत करनेवाला। वेष्टन करनेवाला।

वेष्टकापथ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन शिवस्थान का नाम।

वेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। वेठन। २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। ३. मुकुट। ४. उष्णीष। पगड़ी। ५ गुग्गुल। गूगल। ६. कान का छेद। ७. मेखला। कांची। कटिबंध (को०)। ८. घाव आदि बाँधने की पट्टी (को०)। ९. नृत्य की एक विशेष मुद्रा (को०)। १० ग्रहण करना। अधिकार में रखना (को०)। ११ विस्तृति। विस्तार (को०)। १२ एक प्रकार का अस्त्र। १३. एक नृत्यमुद्रा (को०)। १४ यज्ञयूप को वेष्टित करनेवाला बंधन (को०)। १५. चहारदीवारी। घेरा (को०)।

वेष्टनक—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीप्रसंग करने का एक प्रकार। एक तरह का रतिबंध।

वेष्टनवेष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार रतिबंध।

वेष्टनीय—वि० [सं०] घेरने लायक। लपेटने योग्य [को०]।

वेष्टवंश—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाँस जिसे वेंठर बाँस कहते हैं। रध्रवंश।

वेष्टव्य—वि० [सं०] वेष्टन करने योग्य। वेठन आदि से लपेटने लायक।

वेष्टसार—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीवेष्ट। गंधाबिरोजा। २. धूप का पेड़। सरल काष्ठ। धूपसरल।

वेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्रे। हरीतकी।

वेष्टित¹—वि० [सं०] १. नदी या परकोटे आदि से चारो ओर से घिरा हुआ। २. कपड़े आदि से लपेटा हुआ। ३ रुका हुआ। रुद्ध।

वेष्टित²—संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य की एक मुद्रा। २ घेरना। लपेटना। ३ एक रतिबंध। ४ पहाड़ी [को०]।

वेष्ट्य—वि० [सं०] दे० 'वेष्टनीय' [को०]।

वेष्प—संज्ञा पुं० [सं०] पानी। जल (को०)।

वेष्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ परिश्रम। २ पगड़ी। ३. पानी। ४. कर्म। कार्य। ५. पट्टी [को०]।

वेष्य²—वि० नट या अभिनेता जो वेश बदलनेवाला हो [को०]।

वेसन—संज्ञा पुं० [सं०] मटर, चने आदि की दाल पीसकर तैयार किया हुआ आटा। बेसन।

वेसर—संज्ञा पुं० [सं०] १. गदहा। २. खच्चर। अश्वतर (को०)।

वेसवा पु†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—साध संत के उपाध रहत वेसवा के हाथ, बड़े कुटिल हैं कुगाथ चलै पंथ ना निहार के।—संत तुरसी०, पृ० ३३९।

वेसवार—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीसा हुआ जीरा, मिर्च लौंग आदि मसाला। २. एक प्रकार का पकाया हुआ मांस।

विशेष—पहले हड्डियाँ आदि अलग करके खाली मांस पीस लेते हैं और तब गुड़, घी, पीपल, मिर्च आदि मिलाकर उसे पकाते हैं। यही पका हुआ मांस वेसवार कहलाता है।

वेसा पु†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—ज गुणमंता अलहना गौरव लहइ भुअग। वेसा मादर धुअ वसइ धुराह रुअ अनंग।—कीर्ति० पृ० ३४।

वेसास†—संज्ञा पुं० [सं० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ०—मइ धणी थार मिल्हीय आस, मइला राजा थारउ कासउ हो वसास।—बी० रासो, पृ० ३७।

वेस्ट—संज्ञा पुं० [अं०] पश्चिम दिशा।

वेस्टकोट—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की अँगरेजी कुरती या फतुही जिसमें बाँहें नहीं होतीं और कमीज के ऊपर तथा कोट के नीचे पहनी जाती है।

वेस्म पु—संज्ञा पुं० [सं० वेश्म] दे० 'वेश्म'।—नंद० ग्रं०, पृ० १०८।

वेस्या†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—जा वह वेस्या के घर रहत है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३२९।

वेस्वा†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—वेस्वा तजा सिंगार सिद्ध का गइ सिद्धाई। रागी भूला राग जननि सुत दई बिहाई।—पलटू०, पृ० १०४।

वेह†—संज्ञा पुं० [सं० वेधस्, प्रा० वेह] विधाता। ब्रह्मा। उ०—(क) जारा रजपूता.गाया, वारत दाधी वेह।—बाँकी० ग्रं०, भाग १, पृ० ४। (ख) सादूलो साचा गुणा वेह कियौ वनराय।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १५।

वेहत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाँझ गाय। वंध्या गौ। २. वह गाय जिसका गर्भ असमय में गिर गया हो [को०]।

वेहनडी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० वहिन + डी (प्रत्य०)] दे० 'वहन'। उ०—रहि रहि वेहनडी। बच न तू रोई।—बी० रासो, पृ० ६४।

वेहना—संज्ञा पुं० [हिं० वयन(=बुनना)] दे० 'वेहना'।—मैं अति नीच जाति कर वेहना, का कहुँ बूझि न सैना।—पट०, पृ० २०७।

वेहल(पु)†—संज्ञा पुं० [देश०] चारण। उ०—वैगी वेहल वरणारा, दाठा जिण जिण देस।—बाकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ८४।

वेहला†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेला, प्रा०, गुज० और प०राज० वेहला] वखत। समय। उ०—सभार्यो आवे रे वाहला, वेहना एहो जोई ठवँ। साथी जी साथे थई ने, पेली तीरे तरूँ।—दादू०, पृ० ५२२।

वेहानस—संज्ञा पुं० [सं०] आत्महनन। जैन मतानुसार एक प्रकार की आत्महत्या [को०]।

वेहार—संज्ञा पुं० [सं०] बिहार प्रदेश का एक नाम [को०]।

वेंकि—संज्ञा पुं० [सं० वह्कि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेंत†—संज्ञा पुं० [हिं० व्योत, बेवत] दे० 'व्योत'। उ०—वेंत करं नह और विचारूँ। मार सुना मिरजा नू मारूँ।—रा० रू०, पृ० २७८।

वेंद—संज्ञा पुं० [सं० वैन्द] एक जाति का नाम। निषाद [को०]।

वेंदव—संज्ञा पुं० [सं० वैन्दव] विंदु का पुत्र [को०]।

वेंदवि—संज्ञा स्त्री० [सं० वैन्दवि] प्राचीन काल की एक जाति का नाम। इस जाति के लोग बहुत युद्धप्रिय होते थे।

वेंध्य—वि० [सं० वैन्ध्य] १. विंध्य प्रांत का। २ विंध्य पर्वत का।

वेंशतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैंशतिका] जिसका मूल्य बीस हो। जो बीस में क्रय किया जाय। बीस में क्रीत [को०]।

वैं(पु)[1]—अव्य० [सं०] निश्चयसूचक शब्द या चिह्न। उ०—अदडमान दीन, गव्व दडमान भेद वैं।—केशव (शब्द०)।

वैं[2]—सर्व० [हिं० वह] वह हा। उसने। उ०—वैं सब कीन्ह जहाँ लगि काई।—जायसी ग्रं०, पृ० ३।

वै(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० पति, प्रा० वइ] स्वामी। अधिपति। पति

वेंकक—संज्ञा पुं० [सं० वैकटक] एक पहाड़ [को०]।

वेंककत[1]—संज्ञा पुं० [सं० वैकङ्कत] दे० 'विककत'।

वेंककत[2]—वि० जो विककत का लकड़ा आदि से बना हो। विककत का।

वेंकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह हार या माला जो एक ओर कंधे पर और दूसरी ओर हाथ के नीचे रहे। जनेऊ की तरह पहना जानेवाला हार या माला। २ इस प्रकार माला पहनने का ढंग। ३ उत्तरीय। दुपट्टा (को०)।

वेंकक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह हार जो जनेऊ की तरह पहना गया हो। दे० 'वकक्ष' [को०]।

वेंकक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैकक्षक' [को०]।

वेंकाक्षकी—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैकक्षक' [सं०]।

वेंकटिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] रत्नपरीक्षक। जौहरी।

वेंकटिक[2]—वि० विकट संबंधी। विकट का।

वैकट्य—संज्ञा पुं० [सं०] विकट होने का भाव या धर्म। विकटता। भीषणता। विशालता।

वैकतिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो रत्नों की परीक्षा करता हो। रत्नपरीक्षक। जौहरी।

वैकथिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपने संबंध में बहुत बढ़ाकर बातें कहा करता हो। शेखीबाज। मारनेवाला।

वैकरज—संज्ञा पुं० [सं० वैकरञ्ज] संकर जाति का एक प्रकार का साँप। ऐसा साँप जो फनवाले और बिना फनवाले साँपों के योग से उत्पन्न हुआ हो।

वैकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वात्स्य मुनि का एक नाम। २ एक प्राचीन जनपद का नाम जिसका उल्लेख वेदों में है।

वैकर्णायन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वैकर्ण या वात्स्य मुनि के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

वैकर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ बलिपशु के शरीर का भागविशेष। २ बलिपशु का वध करनेवाला। ३. यज्ञ में अध्वर्यु का सहायक। उ०—अध्वर्यु के तीन छोटे सहायक और होते थे—शमिता, वैकर्त और उन्नेता—हिंदु० सभ्यता, पृ० ११८।

वैकर्तन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम। २ कर्ण का एक नाम। ३. सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम। ४ वह जो सूर्यवंशी हो।

वैकर्तन[2]—वि० सूर्य संबंधी। सूर्य का।

वैकर्तनकुल—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का वंश या कुल [को०]।

वैकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकर्म या अपकर्म का भाव। दुष्कृत्य।

वैकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] विकल्प का भाव। संशय। संदिग्धता। अनिश्चय। असमंजस।

वैकल्पिक—वि० [सं०] १ जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। २. जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो। संदिग्ध। अनिश्चित। अनिर्णीत। ३ जो अपनी इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके। जो चुना जा सके। ऐच्छिक। ४. जिसका विकल्प हो।

वैकल्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकल होने का भाव। विकलता। घबराहट। २. कातरता। ३. टेढापन। ४ अंगहीन होने का भाव। ५ न्यूनता। कमी। ६. अभाव। न होना। ७ अक्षमता। शक्तिहीनता (को०)। ८ उत्तेजना (को०)।

वैकल्य[2]—वि० अधूरा। अपूर्ण।

वैकायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैकारिक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैकारिकी] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार हुआ हो। बिगड़ा हुआ। विकृत। २ विकार संबंधी (को०)। ३ परिवर्तनशील (को०)। ४. सात्विक (को०)।

वैकारिक[2]—संज्ञा पुं० विकार। बिगाड़।

वैकारिककाल—संज्ञा पुं० [सं०] गर्भस्थ भ्रूण के बनने में या पूरा होने में लगनेवाला काल [को०]।

वैकारिक बंध—संज्ञा पुं० [सं० वैकारिक बन्ध] सांख्य दर्शन के अनुसार तीन प्रकार के बंधनों में से एक [को०]।

वैकार्य'—संज्ञा पुं० [सं०] १. विकार का भाव या धर्म। विकार। २ परिवर्तनशीलता।

वैकार्य²—वि० जिसमें विकार हो सकता या होता हो। विकार के योग्य।

वैकाल—संज्ञा पुं० [सं०; तुल० बग० विकाल] अपराह्न काल। दोपहर के बाद का काल [को०]।

वैकालिक—वि० [सं०] १. जो अपने उपयुक्त समय पर न होकर असमय में उत्पन्न हो। २ अपराह्न संबंधी या अपराह्न काल में घटित होनेवाला।

वैकालीन—वि० [सं०] दे० 'वैकालिक' [को०]।

वैकिंकट—संज्ञा पुं० [सं० वैकिङ्कट] मौत। काल। मृत्यु। विकिंकर [को०]।

वैकिर—वि० [सं०] क्षरित। चूआ हुआ। छना हुआ [को०]।

वैकिरवारि—संज्ञा पुं० [सं०] चुआकर या टपकाकर छाना हुआ जल आदि [को०]।

वैकुंठ'—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठ] १ विष्णु का एक नाम। २. पुराणानुसार विष्णु का धाम या स्थान। वह स्थान जहाँ भगवान् या विष्णु रहते हैं।

विशेष—पुराणानुसार यह धाम सत्यलोक से भी ऊपर है। यह धाम सबसे श्रेष्ठ माना गया है और कहा गया है कि जिन्हें विष्णु मोक्ष देते हैं, वे इसी धाम में निवास करते हैं। यहाँ रहनेवाले न तो बुड्ढे होते हैं और न मरते हैं।

३. वैकुंठ में रहनेवाले देवता। ४ स्वर्ग (क्व०)। ५ इंद्र। ६ सफेद पत्तोंवाली तुलसी। ७ अभ्रक। सितार्जक (को०)। ८ ब्रह्मा के महीने का चौबीसवाँ दिन (को०)। ९ संगीत में एक प्रकार का ताल (को०)।

वैकुंठगति—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठगति] वैकुंठ लोक की प्राप्ति [को०]।

वैकुंठ चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठ चतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी [को०]।

वैकुंठत्व—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठत्व] वैकुंठ का भाव या धर्म।

वैकुंठपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठपुरी] विष्णु नगरी [को०]।

वैकुंठभुवन—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठभुवन] विष्णुलोक [को०]।

वैकुंठलोक—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठलोक] विष्णुलोक [को०]।

वैकुंठीय—वि० [सं० वैकुण्ठीय] वैकुंठ संबंधी। वैकुंठ का।

वैकृत'—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकार। खराबी। २ बीभत्स रस। ३ बीभत्स रस का आलंबन। जैसे,—खून, गोश्त, हड्डी आदि। ४ विरूपता। विकृति (को०)। ५ अपशकुन या अनिष्टसूचक घटना (को०)। ६ कपट (को०)। ७. उद्वेग (को०)। ८. अहंकार (को०)। ९ द्वेष। शत्रुता (को०)।

वैकृत²—वि० [वि० स्त्री० वैकृती] १ जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २. जो सहज में ठीक न हो सके। दुःसाध्य। ३. विकृत। विकारग्रस्त (को०)। ४ सात्विक (को०)। ५ अप्राकृतिक (को०)।

वैकृतज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो ऋतु के अनुसार स्वाभाविक न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो। उ०—इसके (बीतादि क्रम के) विपरीत जो ज्वर हो उसको वैकृत ज्वर कहते हैं।'—माधव०, पृ० ३६।

विशेष—साधारणतः वर्षा ऋतु में वायु, शरद ऋतु में पित्त और वसंत ऋतु में कफ कुपित होता है। यदि वर्षा ऋतु में वायु के प्रकोप से ज्वर हो, तो वह वैकृत ज्वर कहा जायगा।

वैकृतविवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] कष्ट। पीड़ा। दुर्दशा [को०]।

वैकृतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैकृतिकी] १ नैमित्तिक। २. परिवर्तित (को०)। ३ विकृति संबंधी (को०)।

वैकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीभत्स रस। २ परिवर्तन। विकार। ३ अपकर्षण। अपकर्ष (को०)।

वैक्रम—वि० [सं०] विक्रम संबंधी। पराक्रम संबंधी [को०]।

वैक्रमीय—वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम संबंधी। जैसे,—वैक्रमीय संवत्।

वैक्रांत—संज्ञा पुं० [सं० वैक्रान्त] एक प्रकार की मणि जिसे चुन्नी कहते हैं।

वैक्रिय—वि० [सं०] १ जो बिकने को हो। बेचा जाने योग्य। बिक्री का। २ विकारजन्य। विकारी। परिवर्तनशील।

वैक्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याकुलता। घबराहट। अस्तव्यस्तता। २ शोक। ३ व्यथा [को०]।

वैक्लव्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैक्लव' [को०]।

वैखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कंठ में उत्पन्न होनेवाले स्वर का एक विशिष्ट प्रकार। उच्च तथा गंभीर और बहुत स्पष्ट स्वर। वह वाणी या वाक् जिसमें स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ स्पष्ट सुनाई देती है। व्याकरण दर्शन के अनुसार वाग् के चार भेदों (परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी) में स्थूलतम श्रवणीय भेद। २ वक्तृत्वशक्ति। वाक्शक्ति। ३ वाग्देवी।

वैखान—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वैखानस'—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। २ प्राचीन काल के एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो प्रायः वन में रहा करते थे। ३ प्रजापति के नख एवं लोम से उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने वैखानस नामक धर्मसूत्र की रचना की थी। उ०—वैखानस धर्मसूत्र एवं हिरण्य-केशिन् के धर्मसूत्र लगभग तीसरी ईस्वी सदी के हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४६। ४ वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा (को०)।

वैखानस²—वि० वानप्रस्थ आश्रम संबंधी [को०]।

वैखानसि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैखानसीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

वैखानसीयोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्। दे० वैखानसीय (को०)।

वैखारक¹—संज्ञा पुं० [सं०] चरपरा और नमकीन स्वाद (को०)।

वैखारक²—वि० चरपरा और नमकीन [को०]।

वैगंधिक—संज्ञा पुं० [सं० वैगन्धिक] गंधक।

वैगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वैगन्धिका] एक क्षुप का नाम [को०]।

वैगनेट—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की हल्की बग्गी या घोड़ागाड़ी जिसमें पीछे की ओर दाहिने बाएँ बैठने की लंबी जगह होती है।

वैगलेय—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार भूतों का एक गण।

वैगुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुणहीन होने का भाव। विगुणता। २ अपराध। दोष। उ०—धन्य, भरत बोले गद्गद हो, दूर विकृति वैगुण्य हुआ। उस तपस्विनी मेरी माँ का आज पाप भी पुण्य हुआ।—साकेत पृ० ३८८। ३ नीचता। वाहियातपन। ४ गुणों की भिन्नता (को०)। ५ अकुशलता (को०)।

वैगुन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वैगुण्य] दे० 'वैगुण्य'। उ०—जौ जिय लोभ तौ गुनी न कहिए। गुन सकर वैगुन वै रहिए।—माधवानल०, पृ० २१९।

वैग्रहिक—संज्ञा पुं० [सं०] विग्रह या शरीर संबंधी। शरीर का।

वैघटिक—संज्ञा पुं० [सं०] रत्नपारखी। जौहरी [को०]।

वैघसिक—वि० [सं०] विघस अर्थात् जूठा खानेवाला [को०]।

वैघात्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो घात करने के योग्य हो। मार डालने लायक।

वैचक्षण्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचक्षण या निपुण होने का भाव। निपुणता। होशियारी।

वैचित्य—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त की भ्रांति। भ्रम। अन्यमनस्कता। दुःख। कष्ट।

वैचित्र—संज्ञा पुं० [सं०] विचित्रता। विलक्षणता। दे० 'वैचित्र्य'।

वैचित्रवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचित्रवीर्य की संतान—१ धृतराष्ट्र। २ पांडु। ३ विदुर।

वैचित्रवीर्यक—वि० [सं०] विचित्रवीर्य का। विचित्रवीर्य संबंधी [को०]।

वैचित्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विचित्र होने का भाव। विचित्रता। विलक्षणता। २ विभिन्नता। भेद। फर्क। ३ सुंदरता। खूबसूरती। ४ शोक। दुःख। गम (को०)। ५ नैराश्य (को०)। ६ आश्चर्य (को०)।

वैचित्र्यवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचित्रवीर्य की संतान, धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर आदि।

वैच्युत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैच्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विच्युत होने का कार्य या भाव। विच्युति। पतन। गिरना।

वैजनन—संज्ञा पुं० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को संतान उत्पन्न हो। प्रसवमास।

वैजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] विजन होने का भाव। विजनता। एकांत।

वैजयंत—संज्ञा पुं० [सं० वैजयन्त] १ इंद्र की पुरी का नाम। २ इंद्र। ३ घर। ४ अग्निमथ नामक वृक्ष। अरणी। ५ जैनों के अनुसार एक लोक जो सातों स्वर्गों से भी ऊपर है। ६ स्कंद (को०)। ७ पर्वतविशेष (को०)। ८ इंद्र की पताका (को०)। ९ पताका। झंडा (को०)। १० भारत द्वारा निर्मित युद्ध में आक्रामक प्रकार विशेष के एक टैंक का नाम।

वैजयंतिक—संज्ञा पुं० [सं० वैजयन्तिक] वह जो पताका या झंडा उठाता हो। झंडा उठानेवाला।

वैजयंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयन्तिका] दे० 'वैजयंती'।

वैजयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयन्ती] १ पताका। झंडा। २ जयंती नामक वृक्ष। ३ एक प्रकार की माला जो पाँच रंगों की और घुटनों तक लटकती हुई होती थी। कहते हैं, यह माला श्रीकृष्ण जी पहना करते थे। ४ चिह्न। लक्षण (को०)। ५ विजयमाल (को०)। ६ अग्निमथ वृक्ष (को०)। ७ एक कोश का नाम (को०)। ८ हार। माला (को०)।

वैजयिक—वि० [सं०] विजय संबंधी। विजय का। २ विजय देनेवाला। जिससे जय प्राप्त हो (को०)। ३ विजय का आभास या सूचना देनेवाला (को०)।

वैजयी—संज्ञा पुं० [सं० वैजयिन्] दे० 'विजयी'।

वैजवन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो एक वैदिक शाखा के प्रवर्तक थे। पैजवन। वैजन।

वैजात्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विजातीय होने का भाव। जातिबहिष्कृति। २ विलक्षणता। अद्भुतता। ३ बदचलनी। लपटता। ४ वर्ग या जातिगत भिन्नता। वर्णभेद। प्रकारभेद।

वैजिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आत्मा। २ हेतु। कारण।

वैजिक²—वि० १ बीजसंबंधी। बीज का। २ वीर्यसंबंधी। वीर्य का।

वैज्ञानिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। विज्ञान जाननेवाला। २ निपुण। दक्ष। होशियार।

वैज्ञानिक² वि० विज्ञान संबंधी। विज्ञान का। जैसे,—वैज्ञानिक खोज।

वैडाल—वि० [सं०] विडाल का। विडाल संबंधी [को०]।

वैडालव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पाप और कुकर्मरत होते हुए भी ऊपर से साधु बने रहना।

वैडालव्रती—संज्ञा पुं० [सं० वैडालव्रतिन्] वह तपस्वी या साधु जो वास्तव में पापी और कुकर्मी हो। दुष्ट और नीच धर्मध्वजी।

वैडूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैदूर्य'।

वैडूर्यकांति—वि० [सं० वैडूर्यकान्ति] वैडूर्य की तरह दीप्त। वैडूर्य के समान कांतिवाला [को०]।

वैडूर्यप्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम [को०]।

वैडूर्यमणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैदूर्य नामक रत्नविशेष [को०]।

वैडूर्यशिखर—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]।

वैण¹—वि० [सं०] वेणु संबंधी। बाँस का।

वैण²—संज्ञा पुं० बाँस का कार्य करनेवाला। बंसोर या घरिकार [को०]।

वैण³(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वचन, प्रा० वयण अप० एव राज० वैण] दे० 'वचन'। उ०—ढोला, खीत्यौरी कहइ, सुणे कुढंगा वैण। —ढोला०, दू० ४३८।

वैणव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस का फल। बाँस का चावल। २. बाँस का वह डडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३ वंशी। वेणु। ४. वँसोरा। बाँस का काम करनेवाला (को०)। ५ वेणु नदी से प्राप्त सोना (को०)। ६ माहिष्य से उत्पन्न ब्राह्मणी का पुत्र। ७ पुराणानुसार कुशद्वीप का एक वर्ष (को०)।

वैणव—वि० १ वेणु सबंधी। बाँस का। २. बाँस से बना हुआ (को०)। ३ बाँसुरी सबंधी (को०)।

वैणविक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेणु बजाता हो। वंशी बजानेवाला। वंशीवादक।

वैणवी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशलोचन।

वैणवी²—संज्ञा पुं० [सं० वैणविन्] १ वह जो वेणु बजाता हो। २ शिव का एक नाम।

वैणावत—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष [को०]।

वैणिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वीणा बजाता हो। बीनवादक। बीनकार। २. विष्ठा सी गंध। (को०)।

वैणुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेणु बजाने मे चतुर हो। वंशी बजानेवाला। २ हाथी का अकुस।

वैणुकीय—वि० [सं०] १ वेणु सबधी। वेणु का। २ वैणुक सबधी।

वैणेय—संज्ञा पुं० [सं०] वेद की एक शाखा का नाम।

वैण्य—संज्ञा पुं० [सं०] राजा वेणु के पुत्र पृथु का एक नाम।

वैतंडिक—संज्ञा पुं० [सं० वैतण्डिक] १ वह जो बहुत अधिक वितंडा करता हो। तार्किक। तर्कप्रिय। हरेक बात मे तर्क उपस्थित करनेवाला। २ व्यर्थ का झगडा या बहस करनेवाला।

वैतंडी—संज्ञा पुं० [सं० वैतण्डिन्] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैतसिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो मास बेचता हो। मासिक। बूचड। कसाई। २ पक्षियो को फँसानेवाला। व्याध। बहेलिया (को०)। ३ व्याध का पेशा। पक्षियो को फँसाने का कार्य (को०)।

वैतत्य—संज्ञा पुं० [सं०] विततता। फैलाव। विस्तार [को०]।

वैतथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विफल होने का भाव। विफलता। २ वितथ होने का भाव। असत्यता।

वैतनिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। तनखाह लेकर काम करनेवाला। कर्मचारी। नौकर। भृत्य। मजदूर।

वैतरण¹—वि० [सं०] १. नदी को पार करने का अभिलाषी। २ वैतरणी पार कराने का साधन [को०]।

वैतरण²—संज्ञा पुं० [सं०] वितरण करने का भाव या क्रिया। उ०—सविधि हो वैतरण, सुकृत कारण करण। —अर्चना, पृ० २६।

वैतरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वैतरणी'।

वैतरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है।

विशेष—कहते हैं, यह नदी बहुत तेज बहती है, इसका जल बहुत ही गरम और बदबूदार है और उसमे हड्डियाँ, लहू तथा बाल आदि भरे हुए हैं। यह भी माना जाता है कि प्राणी को मरने पर पहले यह नदी पार करनी पडती है, जिसमे उसे बहुत कष्ट होता है। परतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था मे गोदान किया हो, तो वह उसी गौ की सहायता से सहज मे इस नदी के पार उतर जाता है। पुराणो मे लिखा है कि जब सती के वियोग मे महादेव जी रोने लगे, तब उनके आँसुओ का प्रवाह देखकर देवता लोग बहुत डरे और उन्होने शनि मे प्रार्थना की कि तुम इस प्रवाह को ग्रहण करके सोख लो। शनि ने उस धारा को ग्रहण करना चाहा, पर उसे सफलता नही हुई। अत मे उसी धारा से यह वैतरणी नदी बनी। इसका विस्तार दो योजन माना गया है। पापियो को यह नदी पार करने मे बहुत कष्ट होता है।

२ उडीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है।

वैतस¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष की मूत्रेंद्रिय। लिंग। २ अम्लवेंत। ३. वेंत की बनी वस्तु। ४ वेंत की टोकरी (को०)।

वैतस²—वि० १. वेंत सबधी। वेंत जैसा [को०]।

वैतसीवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेंत की तरह झुक जाने की आदत। नम्रता की प्रवृत्ति [को०]।

वैतसेन—संज्ञा पुं० [सं०] राजा पुरूरवा का एक नाम जो वीतसेन के पुत्र थे।

वैतस्त—वि० [सं०] वितस्ता नदी से सबधित या प्राप्त [को०]।

वैतस्तिक—वि० [सं०] वितस्ति परिमित (शर)। (बाण) जो एक बित्ता लबा हो [को०]।

वैतस्त्य—वि० [सं०] वितस्ता नदी संबधी। वितस्ता से मिला हुआ [को०]।

वैतहव्य—संज्ञा पुं० [सं०] आर्यो का एक प्रधान समूह जो वीतिहव्य के गोत्र का था। उ०—प्रधान आर्य समूहो मे थे—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य, विदर्भ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७६।

वैताढ्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

वैतान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ खेमा। शिविर। समूह। तबू। २. यज्ञ की एक विशेष विधि। ३. यज्ञीय हवि। यज्ञ में प्रयुक्त हवि [को०]।

वैतान[2]—वि० [वि० स्त्री० वैतानी] १ शुद्ध। पवित्र। पुनीत। २ यज्ञसंबंधी। यज्ञ का। यज्ञीय [को०]।

वैतानिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह हवन या यज्ञ आदि जो श्रौत विधानों के अनुसार हो। २ वह अग्नि जिसमे अग्निहोत्र आदि कृत्य किए जायँ।

वैतानिक[2]—वि० दे० 'वैतान[2]' [को०]।

वैतानिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वैतान[1]' [को०]।

वैतान्य—संज्ञा पुं० [सं०] निर्वेद [को०]।

वैताल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुतिपाठक। वैतालिक।

वैताल[2]—वि० वेताल संबंधी। वेताल का।

वैतालकि—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन आचार्य का नाम जो ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक थे।

वैतालरस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विशेष—यह रस गंधक, मिर्च और हरताल आदि के योग से बनता है और सन्निपातिक ज्वर तथा मूर्छा आदि मे उपयोगी माना जाता है।

वैतालिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का वह स्तुतिपाठक जो प्रात काल राजाओं को उनकी स्तुति करके जगाया करता था। स्तुतिपाठक। उ०—वैतालिक विहग भाभी के, सप्रति ध्यानलग्न से हैं।—पंचवटी, पृ० ६। २ चौंसठ कलाओं मे से किसी एक मे प्रवीणता (को०)। ३. बाजीगर (को०)। ४ वह जो गाने मे ताल का ध्यान न रखता हो। विताल गानेवाला। ५ वेताल का उपासक। वेताल को पूजनेवाला व्यक्ति [को०]।

वैतालिकव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुतिपाठक की क्रिया या कार्य। वैतालिक का काम [को०]।

वैताली—संज्ञा पुं० [सं० वैतालिन्] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वैतालीय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके पहले तथा तीसरे चरणों मे चौदह और दूसरे तथा चौथे चरणों मे सोलह मात्राएँ होती हैं।

वैतालीय[2]—वि० वेताल संबंधी। वेताल का।

वैतुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] तुषरहित करना। भूसी निकालना [को०]।

वैतृष्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ तृष्णा से रहित होने का भाव। तृष्णा का शमन। तृष्णाशांति। २ आकांक्षाओं, इच्छाओं से मुक्ति। निर्वेद (को०)।

वैत्तपाल्य—वि० [सं०] १ वित्तपाल संबंधी। २. कुबेरसंबंधी [को०]।

वैत्रक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैत्रकी] वेंत का। वेंत संबंधी [को०]।

वैत्रकीय—वि० [सं०] वेंत का। वेत्रनिर्मित। वेंत संबंधी [को०]।

वैत्रासुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस। दे० 'वेत्रासुर' [को०]।

वैदभ—संज्ञा पुं० [सं० वैदम्भ] शिव का एक नाम।

वैद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैदी] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो विदु नामक ऋषि के पुत्र थे। २ विद्वान् पुरुष (को०)।

वैद[2]—वि० विद्वान् या पंडित संबंधी।

वैद[3]—संज्ञा पुं० [सं० वैद्य, प्रा०, वैद] दे० 'वैद्य'।

वैदक—संज्ञा पुं० [सं० वैद्यक] दे० 'वैद्यक'।

वैदग्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २ कार्यकुशलता। पटुता। ३ चतुरता। धूर्तता। चालाकी। ४ रसिकता। ५. शोभा। सौंदर्य। ६ हावभाव। ७ प्रत्युत्पन्नमतित्व। प्रतिभा (को०)।

वैदग्धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चतुरता। २ प्रवीणता। ३ सुंदरता। ४ प्रत्युत्पन्न मतित्व। ५ रसमता। ६ विद्वत्ता [को०]।

वैदग्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २ दे० 'वैदग्ध'।

वैदत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। जानकार।

वैदनृत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैदर्भ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दमयंती के पिता भीमसेन का एक नाम। ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक का एक नाम। ४ वह जो बातचीत करने मे बहुत चतुर हो। ५ बातचीत करने की चतुराई। वाक्चातुरी। ६ एक रोग जिसमे मसूड़े फूल जाते हैं और उसमे पीड़ा होती है।

वैदर्भ[2]—वि० १ जो विदर्भ देश में उत्पन्न हुआ हो। २ विदर्भ देश का। ३ वाक्पटु। वार्ताकुशल (को०)।

वैदर्भक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विदर्भ देश का निवासी हो।

वैदर्भक[2]—वि० विदर्भ देश का। विदर्भ से संबद्ध [को०]।

वैदर्भी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की एक रीति। वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना होती है। कालिदास वैदर्भी के उत्कृष्ट कवि माने जाते हैं।

विशेष—वामन के मतानुसार जिस काव्य रीति मे श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओजस, कांति और समाधि आदि दस शब्दगुण रहते हैं वह काव्य रीति वैदर्भी कही गई है। यह सबसे अच्छी समझी जाती है।

२ अगस्त्य ऋषि की स्त्री का एक नाम। ३. दमयंती। ४. रुक्मिणी। ५ विदर्भ देश की राजकुमारी (को०)। ६ विदर्भ देश की राजनगरी। कुंडिनपुर (को०)।

वैदल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी का वह पात्र जिसमे भिखमंगे भीख मांगते हैं। खप्पर। २ एक प्रकार की पीठी। ३ वेंत या बाँस की बनी डलिया या आसन (को०)। ४ एक विषैला कीट (को०)। ५ द्विदल अन्न। दाल (को०)।

वैदल[2]—वि० १ वेंत का अथवा बाँस का बना हुआ [को०]।

वैदांतिक—वि० [सं० वैदान्तिक] वेदांत का ज्ञाता। वेदांती [को०]।

वैदारिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

विशेष—इसमे वायु का प्रकोप कम, पित्त का मध्यम और कफ का अधिक होता है। रोगी को हड्डियों और कमर में पीड़ा होती है, उसे भ्रम, क्लांति, श्वास, खाँसी तथा हिचकी होती है, और सारा शरीर सुन्न हो जाता है। ऐसा सन्निपात जल्दी अच्छा नहीं होता।

वैदिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदों में बतलाए हुए कर्मकांड का अनुष्ठान करता हो। वेद में कहे हुए कृत्यों को करनेवाला। २. वह जो वेदों आदि का अच्छा ज्ञाता हो। वेदों का पंडित।

वैदिक[2]—वि० १ जो वेदों में कहा गया हो। वेदविहित। उ०—करनवेध चूड़ाकरन, लौकिक वैदिक काज। गुरु आयसु भूपति करत, मंगल साज समाज।—तुलसी ग्रं०, पृ० ८२। २ वेदसंबंधी। वेद का। जैसे, वैदिक काल, ३ धर्मात्मा (क्वो०)। ४ वेदज्ञ। वेदों का ज्ञाता (को०)। ५ पूत। शुद्ध। पवित्र (को०)।

वैदिककर्म—संज्ञा पुं० [सं० वैदिककर्मन्] वेदानुकूल कर्म। वेदविहित कर्म (को०)।

वैदिकपाश—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वेदविद्या में अल्पज्ञ हो। वेद का थोड़ा सा ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति (को०)।

वैदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनजामुन (को०)।

वैदिश—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विदिशा का निवासी हो।

वैदिश्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर का नाम जो विदिशा के पास था (को०)।

वैदुरिक—संज्ञा पुं० [सं०] विदुर का नीतिसिद्धांत। विदुरनीति (को०)।

वैदुल—संज्ञा पुं० [सं०] बेंत की जड़।

वैदुष—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।

वैदुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विद्वत्ता। २. बुद्धिमत्ता (को०)।

वैदुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वत्ता। पांडित्य।

वैदूर्य—संज्ञा पुं० [सं०] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जिसे 'लहसुनिया' कहते हैं। दे० 'लहसुनिया'। दीर्घ खंभे हैं बने वैदूर्य के, ध्वजपटों में चिह्न कुलगुरु सूर्य के।—साकेत, पृ० १६।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार इस रत्न के अधिष्ठाता देवता केतु माने गए हैं और कहा गया है कि जब केतु ग्रह खराब या बिगड़ा हुआ हो, तो यह रत्न धारण करना चाहिए। हमारे यहाँ इसकी गणना महारत्नों में है। सुतार, घन, अच्छ, कलिक और व्यंग ये पाँच इसके गुण और कर्कर, कर्कश, त्रास, कलक और देह ये पाँच इसके दोष कहे गए हैं। कुछ लोगों का मत है कि यह रत्न विदूर पर्वत पर होता है, इसी से वैदूर्य कहलाता है। वैद्यक के अनुसार यह अम्ल, उष्ण, कफ तथा वायु का नाशक और गुल्म तथा शूल को शांत करनेवाला है।

पर्या०—केतुरत्न। अभ्ररोह। विदूररत्न। विदूरज। खराब्दांकुर।

वैदेशिक[1]—वि० विदेश संबंधी। विदेश का।

वैदेशिक[2]—वह जो अन्य देश का रहनेवाला हो। अन्य देशवासी व्यक्ति। उ०—अग्निपुत्र, पदिकपुत्र, वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक, वार्तिक, वक्ता, व्यसनी, व्यावहारिक, वियामत।—वर्ण०, पृ० १०।

यौ०—वैदेशिक नीति = विदेश संबंधी नीति। किसी राष्ट्र की वह नीति जो अन्य राष्ट्रों अर्थात् विदेशों के साथ बरती जाती है। उ०—उसे ठीक प्रकार से समझने के लिये हमें उसकी वैदेशिक नीति को भली भाँति समझने का प्रयत्न करना चाहिए।—आ० अ० रा० पृ० १०७।

वैदेश्य[1]—वि० [सं०] 'वैदेशिक'।

वैदेश्य[2]—संज्ञा पुं० विदेशी होना। अन्यदेशीय होने का भाव।

वैदेश्यसार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] (कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा प्रयुक्त शब्द) विदेशी माल।

वैदेह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा निमि के पुत्र का नाम।

विशेष—कहते हैं, जब राजा निमि निःसंतान मर गए, तब धर्म का लोप हो जाने के भय से ऋषियों ने अरणी से मथकर इन्हें, राज्य करने के लिये, उत्पन्न किया था।

२ वणिक्। सौदागर। ३ विदेह देश का नरेश (को०)। ४. अंतःपुर का पहरुआ। रनिवास का प्रहरी (को०)। ५. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति।

विशेष—इस जाति के जनों का काम अंतःपुर में पहरा देना था। मनु के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति ब्राह्मणी माता और वैश्य पिता से है।

वैदेह[2]—वि० १ विदेह देश से संबंधित। विदेह देश का। २. स्निग्धवर्ण और सुंदर आकृतिवाला (को०)।

वैदेहक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वणिक्। व्यापारी। २. वैदेह नामक एक वर्णसंकर जाति। ३. विदेह देश का व्यक्ति। (को०)।

वैदेहक व्यंजन—संज्ञा पुं० [सं० वैदेहकव्यञ्जन] कौटिल्य के अनुसार वह जासूस जो व्यापारी के छद्म वेश में हो। व्यापारी के वेश में गुप्तचर।

विशेष—ये गुप्तचर समाहर्ता के अधीन काम करते थे और व्यापारियों में मिलकर उनकी कारस्तवाइयों की सूचना दिया करते थे।

वैदेहिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैदेह'—२ और ३.।

वैदेही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदेहराज जनक की कन्या, सीता। २. वैदेह जाति की स्त्री। ३. रोचना। ४. पीपल। पिप्पली। ५. हरिद्रा। हल्दी (को०)। ६ गाय (को०)। ७. वणिक् जाति की स्त्री (को०)।

वैद्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पंडित। विद्वान्। २ वह जो आयुर्वेद का ज्ञाता हो और उसके अनुसार रोगियों की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक। ३. वासक वृक्ष। अडूसा। ४. एक जाति जो प्रायः बंगाल में पाई जाती है। इस जाति के लोग अपने आपको 'अंबष्ठसंतान' कहते हैं। दे० 'अंबष्ठ—२'। ५. एक जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता और वैश्य माता से कही गई है (को०)। ६. एक क्षुप (को०)।

वैद्य[2]—वि० [वि० स्त्री० वैद्या] १ वेद संबंधी। वेद का। २. आयुर्वेद संबंधी (को०)।

वैद्यक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद। विशेष दे० 'आयुर्वेद'। २ वैद्य। चिकित्सक (को०)।

वैद्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिकित्सा कर्म। वैदगी। डाक्टरी। वैद्य का कर्म [को०]।

वैद्यनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो संथाल परगने के अंतर्गत है। वहाँ इसी नाम का शिव का एक प्रसिद्ध मंदिर है। २ महादेव। शिव (को०)। ३ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ४ एक भैरव (को०)।

वैद्यबंधु—संज्ञा पुं० [सं० वैद्यबन्धु] १ आरग्वध नामक वृक्ष। अमलतास। २ वैद्य का भाई (को०)।

वैद्यमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० वैद्यमातृ] १ वासक वृक्ष। अडूसा। २. वैद्य की माता (को०)।

वैद्यमानी—वि० [सं० वैद्यमानिन्] ज्ञाता न होते हुए भी अपने को वैद्य माननेवाला [को०]।

वैद्यराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो अच्छा वैद्य हो। वैद्यों में श्रेष्ठ। २ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ३. शार्ङ्गधर के पिता का नाम।

वैद्यराट्—संज्ञा पुं० [सं० वैद्यराज्] दे० 'वैद्यराज' [को०]।

वैद्यविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद। चिकित्साशास्त्र [को०]।

वैद्यशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यविद्या। आयुर्वेद [को०]।

वैद्यसिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] वासक वृक्ष। अडूसा।

वैद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली। २ वैद्य की पत्नी (को०)। ३ वैद्य का कर्म करनेवाली स्त्री [को०]।

वैद्याधर—वि० [सं०] विद्याधर नामक देवयोनि संबंधी। विद्याधर का। विद्याधर संबंधी [को०]।

वैद्यानि—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषिपुत्र का नाम।

वैद्यावृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] फुटकर। खुदरा। थोक का उलटा। जैसे—वैद्यावृत्य विक्रय।

वैद्युत[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैद्युती] विद्युत् संबंधी। बिजली का।

वैद्युत[2]—संज्ञा पुं० १. विद्युत् का देवता। २ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ३ वपुष्मान् का पुत्र (को०)। ४. वज्राग्नि। बिजली की अग्नि (को०)।

वैद्युतगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वैद्योत—वि० [सं०] क्रोधाविष्ट। क्रोध से भरा हुआ [को०]।

वैद्रुम—वि० [सं०] विद्रुम संबंधी। मूँगे का।

वैध[1]—वि० [सं०] १ जो विधि के अनुसार हो। कायदे कानून के मुताबिक। कानून या विधिसंमत। जैसे—वैध आंदोलन, वैध अधिकार। २ उचित। जायज। ठीक।

वैधर्मिक—वि० [सं०] धर्मविरुद्ध। विधर्म या विधर्मियों का। विधर्म संबंधी [को०]।

वैधर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विधर्मी होने का भाव। २. वह जो अपने धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मों के सिद्धांतों का भी अच्छा ज्ञाता हो। ३ नास्तिकता। ४ असमानता। भिन्नता (को०)। ५ गुण, धर्म या कर्तव्य की भिन्नता (को०)। ६ वैपरीत्य। विपरीतता (को०)। ७ अवैधता (को०)।

वैधव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] विधु अर्थात् चंद्रमा के पुत्र, बुध।

वैधव[2]—वि० विधु संबंधी। चंद्रमा संबंधी [को०]।

वैधवेय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विधवा के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। विधवा का पुत्र।

वैधव्य—संज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँडापा।

यौ०—वैधव्यलक्षण = विधवा होने का लक्षण या ग्रहयोग। वैधव्यलक्षणोपेता = वह कन्या जिसमें विधवा हो जाने के लक्षण हों। ज्योतिष के अनुसार ऐसी कन्या विवाह के अयोग्य समझी जाती है। वैधव्यवर्णी = विधवा या सौभाग्यहीना स्त्री की वर्णी।

वैधस[1]—संज्ञा पुं० [सं०] राजा हरिश्चंद्र का एक नाम जो इक्ष्वाकुवंशी राजा वेधस के पुत्र थे।

वैधस[2]—वि० १ वेधा या ब्रह्मा द्वारा निर्मित। २ भाग्य या विधि द्वारा परिचालित [को०]।

वैधातकि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैधात्र'।

वैधात्र—संज्ञा पुं० [सं०] सनत्कुमार, जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।

वैधात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी नाम की जड़ी।

वैधानिक—वि० [सं०] १. विधान के अनुकूल। विधि के मुताबिक। २ विधान संबंधी [को०]।

वैधिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैधिकी] विधिविहित। विधि के अनुकूल। विधिसम्मत [को०]।

वैधुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भाग्य की प्रतिकूलता। विपत्ति [को०]।

वैधुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विधुर होने का भाव। हताश या कातर होने का भाव। २. भ्रम। संदेह। ३. कंपित होने का भाव। ४ वियोग (को०)। ५ अनुपस्थिति। अविद्यमानता (को०)। ६ कष्ट। क्लेश। क्षोभ (को०)।

वैधुमाग्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम जो शाल्व देश में थी।

वैधृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विधृति का पुत्र या संतान हो। २. ग्यारहवें मन्वतर के एक इंद्र का नाम। ३ एक अशुभ योग। वैधृति (को०)।

वैधृत वाशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

वैधृति—संज्ञा पुं० [सं०] १ ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से एक योग जो अशुभ माना जाता है। इस योग में यात्रा या कोई शुभ कार्य करना वर्जित है। २ भागवत के अनुसार एक देवता, जो विधृति के पुत्र हैं।

वैधृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ 'वैधृति'।

वैधेय—वि० [सं०] १. विधि संबंधी। विधि का। २. नियमानुकूल। ३. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ।

वैंध्यत—संज्ञा पुं० [सं०] यम के एक प्रतिहार का नाम।

वैन¹—संज्ञा पुं० [सं०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम।

वैन²—वि० वेन राजा संबंधी [को०]।

वैनतक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पात्र जिसमे घी रखा जाता था और जिसका व्यवहार यज्ञो मे होता था।

वैनतेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनता की सतान। २ गरुड। उ०—वैनतेय छठे आकाश के वासी बताए गए है।—प्रा० भा० प०, पृ० ८३। ३ अरुण।

वैनतेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदिक शाखा का नाम।

वैनत्य—वि० [सं०] जिसका स्वभाव विनीत हो।

वैनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

वैनभृत—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २ एक वैदिक शाखा का नाम।

वैनयिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनय। प्रार्थना। २. वह जो शास्त्रो आदि का अध्ययन करता हो। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का रथ जिसका व्यवहार युद्ध मे होता था। ४ शासन मे नियम और अनुशासन की व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति। नैतिकता का पालन करानेवाला। उ०—नियम और अनुशासन का अधिकारी वैनयिक कहलाता था।—हिंदु०, सभ्यता, पृ० १२७।

वैनयिक²—वि० विनय सबधी। विनय का। शिष्टता या अनुशासन सबधी।

वैनयिक रथ—संज्ञा पुं० [सं०] लडाई सिखाने के लिये बने हुए रथ।

वैनयिकवाद—संज्ञा पुं० [सं०] जैनमत का विरोधी मतविशेष। उ०—इन विरुद्ध मतो को जैनो ने क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद और वैनयिकवाद कहा है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२७।

वैना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वीणा] १ दे० 'वैणा'। २ दे० 'बेंदा' या 'वेना'। उ०—सीस पाग वैना धरे, राजमंदिर पगु दीन।—हिं० क० का०, पृ० १६२।

वैनायक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैनायकी] विनायक या गणेश सबधी।

वैनायक²—संज्ञा पुं० भागवत के अनुसार भूतो का एक गण।

वैनायिक¹—वि० [सं०] विनायक सबधी।

वैनायिक²—संज्ञा पुं० १ वह जो बौद्ध धर्म का अनुयायी हो। बौद्ध। २ बौद्ध सप्रदाय का एक दार्शनिक सिद्धात (को०)।

वैनाशिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. फलित ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से तेईसवाँ नक्षत्र। २. जन्मनक्षत्र से सातवा, दसवाँ और अठारहवाँ नक्षत्र। ये तीनो नक्षत्र अशुभ समझे जाते है और निधनतारा कहलाते है। इन नक्षत्रो मे यात्रा करना वर्जित है। ३. बौद्ध। ४. दास। सेवक (को०)। ५ मकडी (को०)। ६ ज्योतिषी (को०)। ७. बौद्ध सप्रदाय का दार्शनिक सिद्धात (को०)।

वैनाशिक²—वि० १. विनाश सबंधी। २. परतत्र। पराधीन।

वैनाशिकतत्र—संज्ञा पुं० [सं० वैनाशिकतन्त्र] बौद्ध दर्शन [को०]।

वैनाशिकसमय—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध धर्म [को०]।

वैनीतक—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी सवारी जिसे कई आदमी मिलकर उठाते हो। जैसे—डोली, पालकी, तामजाम आदि। विनीतक।

वैनेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वैदिक शाखा का नाम। २. विनय या धर्म की शिक्षा प्राप्त करनेवाला छात्र (को०)।

वैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम।

वैपञ्चमिक—संज्ञा पुं० [सं० वैपञ्चमिक] वह व्यक्ति जो भविष्यकथन करता हो [को०]।

वैपथक—संज्ञा पुं० [सं०] विपथ सबधी [को०]।

वैपरीत्य—संज्ञा पुं० [सं०] विपरीत होने का भाव। विपरीतता। असगति।

यौ०—वैपरीत्य लज्जालु = एक प्रकार का लजाधुर। लजालू पौधा।

वैपश्चित—संज्ञा पुं० [सं०] तार्क्ष्य नामक ऋषि का एक नाम जो विपश्चित् ऋषि के वशज थे।

वैपश्यत—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

वैपादिक¹—वि० [सं०] पैर के व्रण मे व्यथित। विपादिका अर्थात् बिवाई से पीड़ित [को०]।

वैपादिक²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कुष्ठ रोग [को०]।

वैपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपादिका नामक रोग।

वैपार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यापार] दे० 'व्यापार'।

वैपारी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० व्यापरिन्] दे० 'व्यापारी'।

वैपित्र—संज्ञा पुं० [सं०] वे भाई बहन आदि जिनकी माता तो एक ही हो, पर पिता अलग अलग हो।

वैपुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विपुल होने का भाव। विपुलता। अधिकता। २. विस्तृति। विशालता (को०)।

वैप्रतिसम—वि० [सं०] जो समान न हो। असम। विषम [को०]।

वैप्रोताख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नृत्य [को०]।

वैप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] सावन का महीना [को०]।

वैफल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विफल होने का भाव। विफलता। नाकामयाबी। २ निरर्थकता। अनुपयोगिता (को०)।

वैबाध—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का तिनकठ। २ वह अश्वत्थ वृक्ष जो खैर के वृक्ष मे से निकला हो।

वैबाधप्रणुत्त—वि० [सं०] (वह वृक्ष) जिसके ऊपर पीपल का पेड उगा हो [को०]।

वैबुव—वि० [सं०] देव सबधी। विबुध सबधी [को०]।

वैबोधिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो रात के समय पहरा देता, घंटा बजाता और सोए हुए लोगो को जगाता हो। २. पहरुआ। पहरदार (को०)। ३. स्तुतिपाठक जो प्रातःकाल स्तुतिपाठ द्वारा राजा को जगाता था (को०)।

वैभंडि—संज्ञा पुं० [सं० वैभण्डि] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम जिन्हे विभांडि भी कहते हैं।

वैभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनसंपत्ति । दौलत । विभव । ऐश्वर्य । २ महिमा । महत्व । बड़प्पन । ३ सामर्थ्य । शक्ति । ताकत ।

वैभवशाली संज्ञा पुं० [सं० वैभवशालिन्] वैभवयुक्त वह जिसके पास बहुत अधिक धन संपत्ति हो । विभववाला । मालदार ।

वैभविक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कोई काम करने का अच्छा सामर्थ्य रखता हो । समर्थ ।

वैभाडकि—संज्ञा पुं० [सं० वैभाण्डकि] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम ।

वैभाजन—वि० [सं०] अनेक मार्गों में विभक्त । जो कई मार्गो में विभक्त हो [को०] ।

वैभाजिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विभक्त करता हो [को०] ।

वैभाजित्र—संज्ञा पुं० [सं०] विभाजन । कई भागों में कर देना । बाँटना [को०] ।

वैभातिक—वि० [सं०] विभात या प्रभात संबंधी । अरुणोदय संबंधी । उष कालीन [को०] ।

वैभार—संज्ञा पुं० [सं०] राजगृह के पास के एक पर्वत का नाम । इसे वैहार भी कहते थे ।

वैभावर—वि० [सं०] विभावरी संबंधी । रात का । रात्रिसंबंधी [को०] ।

वैभाषिक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैभाषिनी] १ विभाषा संबंधी । वैकल्पिक । २ वैभाषिक नामक बौद्ध संप्रदाय के एक वर्ग का अनुगामी या तत्संबंधी (को०) ।

वैभाषिक²—संज्ञा पुं० बौद्धों के एक संप्रदाय का नाम ।

वैभाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत् भाष्य । किसी सूत्र, कारिका वा वचन की विस्तृत व्याख्या [को०] ।

वैभीत—वि० [सं०] वहेड़ा से बना हुआ । जिसमें बहेड़े का योग हो । विभीतक से निर्मित [को०] ।

वैभीतक—वि० [सं०] दे० 'वैभीत' [को०] ।

वैभूतिक—वि० [सं०] १ विभूतिजन्य । विभूतिमत् । २ विभूतिसंबंधी । विभूति का ।

वैभोज—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम ।

विशेष—महाभारत के अनुसार द्रुह्यु के वंशज वैभोज कहलाते थे । ये लोग सवारी आदि का व्यवहार करना नहीं जानते थे और न इन लोगों में कोई राजा हुआ करता था ।

वैभ्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ लोक । विष्णुधाम [को०] ।

वैभ्राज—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का उद्यान या बाग । २ पुराणानुसार मेरु के पश्चिम में सुपार्श्व पर्वत पर के एक जंगल का नाम । ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम । ४ एक लोक का नाम जो स्वर्ग माना जाता है ।

वैभ्राजक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का उद्यान । नंदनवन [को०] ।

वैमत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मत का अभाव । मतभेद । फूट । २ शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम । ३. नापसंदगी । अरुचि (को०) ।

वैमनस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विमन या अन्यमनस्क होने का भाव । २ वैर । द्वेष । दुश्मनी । ३ बीमारी । अस्वस्थता (को०) ।

वैमल्य—संज्ञा पुं० [सं०] विमल होने का भाव । मलराहित्य । स्वच्छता । विमलता । निर्मलता ।

वैमात्र¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैमात्रा] विमाता से उत्पन्न । सौतेला । जैसे—वैमात्र भाई ।

वैमात्र²—संज्ञा पुं० सौतेला भाई [को०] ।

वैमात्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सौतेला भाई [को०] ।

वैमात्रा, वैमात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौतेली बहन [को०] ।

वैमात्रेय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न । विमातृज । सौतेला ।

वैमात्रेयी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौतेली बहन [को०] ।

वैमानिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विमान पर चढ़कर अंतरिक्ष में विहार करता हो । २ वह जो आकाश में विहार करता हो । आकाशचारी । ३ वह जो उड़ सकता हो । उड्डयनशील । ४ जैनों के अनुसार वे जीव जो स्वर्गलोक में रहते हैं । ५ देवता (को०) ।

वैमानिक²—वि० १. विमान द्वारा ले जाया जाता हुआ । विमानारूढ । २ विमानोत्पन्न । विमानजन्य । ३ वायुयान का चालक । विमान चलानेवाला । ४. विमान संबंधी [को०] ।

वैमानिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना [को०] ।

वैमित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

वैमुक्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति । विमुक्ति । मोक्ष [को०] ।

वैमुक्त²—वि० मुक्त [को०] ।

वैमुख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विमुख होने का भाव । विमुखता । २ विपरीतता । प्रतिकूलता । ३ अप्रसन्नता । नाराजगी । ४ विमुख होना । पलायन । भागना ।

वैमूढक—संज्ञा पुं० [सं०] कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक में वर्णित एक प्रकार का नृत्य । वह नृत्य जिसमें पुरुष नारी वेष में नाचते हैं [को०] ।

वैमूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] मूल्यों का अंतर [को०] ।

वैमृध¹—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध करनेवाला, इंद्र ।

वैमृध²—वि० इंद्र का दिया हुआ । इंद्र को अर्पित [को०] ।

वैमृध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्धकर्ता—इंद्र । वैमृध । २. वह जो युद्ध विद्या में बहुत निपुण हो । युद्धकुशल ।

वैमेय—संज्ञा पुं० [सं०] विनिमय । परिवर्तन । बदला ।

वैम्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम ।

वैमुख(पु)—वि० [सं० वैमुख्य] दे० 'विमुख' । उ०—प्रभु वैमुख जितने रिपु प्राणी । ताहु न कदै सतावै । रघु० रू०, पृ० २६ ।

वैयक्तिक—वि० [सं०] व्यक्तिगत । निजी । स्वगत । स्वकीय । उ०—हिंदी कविता छायावाद के रूप में ह्रासयुग के वैयक्तिक अनुभवों, ऊर्ध्वमुखी विकास की प्रवृत्तियों, ऐहिक जीवन की आकांक्षाओं

संबंधी स्वप्नों आदि को अभिव्यक्त करने लगी।—हिं० आ० प्र०, पृ० १३३।

वैयक्तिक संपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० वैयक्तिक सम्पत्ति] निजी जायदाद। वह धन जिसे व्यापार आदि के द्वारा कोई व्यक्ति एकत्र करता है और उसपर उसके अतिरिक्त अन्य किसी का कोई अधिकार नहीं होता। उ०—आखिर वैयक्तिक संपत्ति के स्वामी कामचोर शासकों ने कानून भी तो अपने फायदे के लिये बनाए हैं।—मा० स०, पृ० २३२।

वैयग्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यग्रता। बेकली। तन्मय होना। २ तल्लीनता। अनन्यभक्ति (को०)।

वैयग्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयग्र' (को०)।

वैयधिकरण्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्यधिकरण का भाव। व्यधिकरणता। समानाधिकरणता का वैपरीत्य। अनेक स्थानों में होने का भाव। (को०)।

वैयमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वैयर्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्यर्थ होने का भाव। निरर्थकता। व्यर्थता। अनुत्पादकता। निष्फलता।

वैयवहारिक—वि० [सं०] व्यावहारिक (को०)।

वैयशन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैयश्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि का नाम जो विश्वमनस् के पिता थे।

वैयसन—वि० [सं०] व्यसन से उत्पन्न। व्यसनजन्य। व्यसन का।

वैया†—प्रत्य० [हिं० ?] एक प्रत्यय जो क्रिया के अंत में लगकर 'वाला' अर्थ सूचित करता है, जैसे—करवैया, चलवैया, पढ़वैया आदि।

वैयाकरण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैयाकरण[2]—वि० व्याकरण संबंधी। व्याकरण का।

यौ०—वैयाकरण खसूचि = वह वैयाकरण जो सूई से वायु में छेद करना चाहता है। व्याकरण का अल्प ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण पाश = व्याकरण का साधारण ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण भार्य = वह व्यक्ति जिसकी गृहिणी व्याकरण की पंडिता हो।

वैयाख्य[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्याख्या'।

वैयाख्य[2]—वि० व्याख्यायुक्त। जिसकी व्याख्या की गई हो। व्याख्या संबंधी। व्याख्याजन्य (को०)।

वैयाघ्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का रथ जिसपर शेर या चीते की खाल मढ़ी होती थी। इसे द्वैप भी कहते थे।

वैयाघ्र[2]—वि० १. व्याघ्र संबंधी। व्याघ्र का। २ व्याघ्रचर्मावृत। व्याघ्रचर्ममंडित (को०)।

वैयाघ्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्रपद्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैयाघ्रपाद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्र्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का आसन। २. व्याघ्र की अवस्था (को०)।

वैयाघ्र्य[2]—वि० [सं०] १. जो व्याघ्र के समान हो। व्याघ्रतुल्य। २ व्याघ्र का या व्याघ्रजन्य (को०)।

वैयात्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुर्विनीतता। अविनय। २. ढिठाई। ३ बेहयापन। निर्लज्जता। ४. उजड्डपन (को०)।

वैयावृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] जैनमतानुसार यतियों और साधुओं आदि की सेवा। उ०—दूसरे प्रकार के तप में प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीरत्याग) की गणना होती है—आ० भा०, पृ० १४३।

वैयास—वि० [सं०] व्यास संबंधी। व्यास का।

वैयासकि—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो व्यास के गोत्र या वंश में उत्पन्न हो। २. व्यास के पुत्र। शुकदेव।

वैयासिक—वि० [सं०] व्यास का बनाया हुआ। व्यासरचित। (ग्रंथ आदि)। २ दे० 'वैयासकि'।

वैयास्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का वैदिक छंद। २. एक आचार्य का नाम (को०)।

वैयुष्ट—वि० [सं०] उष:कालीन। प्राभातिक। ऊषाकाल में होनेवाला (को०)।

वैरंकर[1]—संज्ञा पुं० [सं० वैरङ्कर] वह जो किसी के साथ शत्रुता करता हो। दे० 'वैरकर' (को०)।

वैरंकर[2]—वि० शत्रुता करनेवाला (को०)।

वैरंगिक—वि० [सं० वैरङ्गिक] वह जिसने समग्र इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया हो। इंद्रियनिग्रही। विरागी। संत। २ वह जो विराग के योग्य हो (को०)।

वैरंडेय—संज्ञा पुं० [वैरण्डेय] एक प्राचीन गोत्र संवर्तक ऋषि का नाम।

वैरंभ—संज्ञा पुं० [सं० वैरम्भ] एक वायु का नाम। एक प्रकार का पवन (को०)।

वैरंभक—संज्ञा पुं० [सं० वैरम्भक] वायु का एक भेद। एक प्रकार का पवन (को०)।

वैर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध। २. घृणा (को०)। ३ शौर्य। पराक्रम (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—मानना। रखना।—होना।

४ विपत्ती। शत्रु (को०)। ५ वह धन जो हत्या के लिये दंड के रूप में दिया जाय (को०)।

वैरक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैर' (को०)।

वैरकर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी के साथ वैर करता हो। दुश्मनी करनेवाला।

वैरकरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैरकारण'।

वैरकार, वैरकारक—सज्ञा पु० [स०] वैरी । दे० 'वैरकर' ।

वैरकारण—सज्ञा पु० [स०] शत्रुता का कारण [को०] ।

वैरकारी—वि० [स० वैरकारिन्] शत्रुता करनेवाला [को०] ।

वैरकृत्—वि० [स०] दे० 'वैरकारी' [को०] ।

वैरक्त—सज्ञा पु० [स०] १. विरक्त होने का भाव । विरक्तता । वैराग्य । २ नापसदगी । अरुचि (को०) ।

वैरखडी—वि० [स० वैरखण्डिन्] शत्रुता दूर करनेवाला [को०] ।

वैरख(पु)—सज्ञा पुं० [तु० वैरक, हिं० वैरख] दे० 'बैरख' । उ०—उपम तीय उद्धर । कि मित्र कज्जल गिर । जु वैरख विराजही । वसत वृष्प लाजही ।—रा०, ७। ४१ ।

वैरत—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम ।

वैरता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर का भाव । शत्रुता । दुश्मनी ।

वैरथ—सज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष्मन् का पुत्र । २ एक वर्ष का नाम जिसपर वैरथ ने राज्य किया था [को०] ।

वैरदेय—सज्ञा पु० [स०] १ वह वैर या शत्रुता जो किसी के शत्रुता करने पर उत्पन्न हो । २ वैदिक काल के एक असुर का नाम ।

वैरनिर्यातन—सज्ञा पु० [स०] वैर का बदला । वैरशोध [को०] ।

वैरपुरुष—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसके साथ वैर हो । शत्रु । दुश्मन ।

वैरप्रतिक्रिया—सज्ञा पु० [स०] वैर का बदला [को०] ।

वैरप्रतिमोचन—सज्ञा पुं० [स०] दुश्मनी न रहना । शत्रुता छूटना । वैरभाव दूर होना [को०] ।

वैरप्रतियाचन—सज्ञा पु० [स०] वैरनिर्यातन । वैरप्रतीकार [को०] ।

वैरप्रतीकार—सज्ञा पु० [स०] वैरशोधन [को०] ।

वैरभाव—सज्ञा पु० [स०] शत्रुता । शत्रुभाव [को०] ।

वैरमण—सज्ञा पु० [स०] वेद के अध्ययन की पूर्णता । ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति [को०] ।

वैरयातना—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर का शोधन या बदला [को०] ।

वैररक्षी—वि० [स० वैररक्षिन्] वैर को दूर करनेवाला [को०] ।

वैरल्य—सज्ञा पु० [स०] १ विरल होने का भाव । विरलता । २ शून्य । एकात ।

वैरव्रत—सज्ञा पु० [स०] किसी से शत्रुता की प्रतिज्ञा । वैरभाव रूपी व्रत [को०] ।

वैरशुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी के वैर का बदला चुकाना । दुश्मनी का बदला लेना ।

वैरस—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैरस्य'

वैरसाधन—सज्ञा पु० [स०] १ शत्रुता का लक्ष्य या उद्देश्य । २ शत्रुता का साधन [को०] ।

वैरसेनि—सज्ञा पु० [स०] राजा वीरसेन का पुत्र, नल [को०] ।

वैरस्य—सज्ञा पु० [स०] १ विरस होने का भाव । विरसता । २ शत्रुता । वैपरीत्य । १३ इच्छा का न होना । अनिच्छा ।

वैराग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैराग्य' ।

वैरागा(पु)—सज्ञा पुं० [स० वैराग] दे० 'वैराग्य' । उ०—वीना गेडे वजावै रागा ... विन उपजावै वरागा ।—माधवानल०, पृ० १८६ ।

वैरागिक¹—वि० [स०] जिसके कारण विराग उत्पन्न हो ।

वैरागिक²—सज्ञा पुं० विरागी । विरक्त ।

वैरागी¹—सज्ञा पु० [सं० वैरागिन्] १ वह जिसके मन मे विराग उत्पन्न हो । वह जिसका मन ससार की ओर से हट गया हो। विरक्त । २ उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

विशेष—इस सप्रदाय के लोग रामानुज के अनुयायी होते हैं और श्रीकृष्ण अथवा रामचद्र की उपासना करते हैं। ये लोग प्राय भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं और अखाडे बनाकर रहते हैं । वगाल के कुछ वैरागी विवाह करके गृहस्थों की भाति भी रहते हैं ।

वैरागी²—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक रागिनी [को०] ।

वैराग्य—सज्ञा पु० [स०] १. मन की वह वृत्ति जिसके अनुसार ससार की विषयवासना तुच्छ प्रतीत होती है और लोग ससार की झझटें छोडकर एकात मे रहते और ईश्वर का भजन करते हैं । विरक्ति । २ असतृप्ति । असतोष (को०) । ३ अरुचि । नापसदगी (को०) । ४ रज । शोक । अफसोस (को०) । ५ वदरग होना । विवर्णता (को०) ।

वैराग्यशतक—सज्ञा पुं० [स०] भर्तृहरि प्रणीत शतकत्रय (शृंगार, वैराग्य, और नीति) मे से एक का नाम [को०] ।

वैराज¹—सज्ञा पु० [सं०] १ विराट् पुरुष । परमात्मा । २ एक मनु का नाम । ३ एक प्रकार का साम । ४ भागवत के अनुसार अजित के पिता का नाम । ५ सत्ताईसवें कल्प का नाम । ६ तपोलोक मे रहनेवाले एक प्रकार के पितृ । कहते हैं, ये कभी आग से नही जल सकते । ७ दे० 'वैराज्य' ।

वैराज²—वि० विराज सबधी । ब्रह्मा सबधी [को०] ।

वैराजक—सज्ञा पुं० [स०] उन्नीसवें कल्प का नाम ।

वैराज्य—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन काल की एक प्रकार की शासनप्रणाली जिसमे एक ही देश मे दो राजा मिलकर शासन करते थे । एक देश म दो राजाओ का शासन । २ वह देश जहाँ इस प्रकार की शासनप्रणाली प्रचलित हो । ३ विदेशियो का राज्य । विदेशियो का शासन ।

विशेष—वैराज्य और द्वैराज्य के गुणदोष का विचार करते हुए कहा गया है कि द्वैराज्य मे अशाति रहती और वैराज्य मे देश का धनधान्य निचोड लिया जाता है । दूसरी वात यह भी कही गई है कि विदेशी राजा अपनी अधिकृत भूमि कभी कभी वेच भी देता है और आपत्ति के समय असहाय अवस्था मे छोड भी देता है ।

वैराट¹—वि० [स०] १ विराट् सबधी । २ विराट देश सबधी । विराट का । ३. विस्तृत । लवा चौडा ।

वैराट²—संज्ञा पुं० १. इंद्रगोप नाम का कीडा। वीरबहूटी। २. महाभारत का विराट पर्व। ३. एक रत्न। ४ एक रग अथवा उसी रग की चीज। ५. देश विदेश (को०)।

वैराटक—संज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार शरीर मे किसी स्थान पर होनेवाली वह गाँठ जो जहरीली हो।

वैराटराज—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन वैराट देश का राजा। मत्स्य देश का नरेश [को०]।

वैराट्या—संज्ञा स्त्री० [स०] जैनियो के अनुसार सोलह विद्यादेवियो मे से एक विद्यादेवी का नाम।

वैरातक—संज्ञा पुं० [स० वैरातङ्क] अर्जुन या कोह नाम का वृक्ष।

वैराम—संज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैराषित—संज्ञा पु० [स०] दुश्मनी। शत्रुता [को०]।

वैरिंच—वि० [स० वैरिञ्च] विरिंचि या ब्रह्मा संबंधी [को०]।

वैरिंचि—वि० [स० वैरिञ्चि] विरिंचि या ब्रह्मा सबधी। ब्रह्मा का।

वैरिंच्य—संज्ञा पु० [स० वैरिञ्च्य] ब्रह्मा के पुत्र। सनक आदि ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते है।

वैरि—संज्ञा पु० [स०] वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिण—संज्ञा पु० [स०] १. वैर। शत्रुता। दुश्मनी। २ वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिता—संज्ञा स्त्री० [स०] वैर का भाव। शत्रुता। दुश्मनी।

वैरिपण(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० वैर+प्रा० प्पण, त्तण (प्रत्य०), हिं० वैरीपन] वैरत्व। वैरभाव। शत्रुता। उ०—किमि उँप्पन्नउँ वैरिपण किमि उँद्धरिउँ तेन।—कीर्ति० पृ० १६।

वैरिवीर—संज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार दशरथ के एक पुत्र जिनका दूसरा नाम इलविल भी है।

वैरी¹—संज्ञा पुं० [स० वैरिन्] १ शत्रु। दुश्मन। वैरी। २ योद्धा। वीर [को०]।

वैरी²—वि० वैरयुक्त। वैर करनेवाला। शत्रुता करनेवाला [को०]।

वैरूप संज्ञा पुं० [स०] १ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम। २ पितरों का एक वर्ग (को०)। ३ एक प्रकार का साम।

वैरूपाक्ष—संज्ञा पुं० [स०] वह जो विरूपाक्ष के गोत्र या वश मे उत्पन्न हुआ हो।

वैरूप्य—संज्ञा पुं० [स०] १ विरूप का भाव या धर्म। विरूपता। २ विकृत होने का भाव।

वैरेकीय—वि० [स०] विरेचक [को०]।

वैरेचन—वि० [स०] विरेचन संबंधी। विरेचन का।

वैरेचनिक—वि० [स०] विरेचन सबधी (को०)।

वैरोचन¹—संज्ञा पुं० [स०] १. बुद्ध का एक नाम। २ राजा बलि का एक नाम। ३. विष्णु के एक पुत्र का नाम (को०)। ४. एक प्रकार की समाधि (को०)। ५ सूर्य के एक पुत्र का नाम। ५. एक प्रकार के सिद्ध (को०)। ६ बौद्ध मतानुसार एक लोक का नाम (को०)। ७ अग्नि के एक पुत्र का नाम।

वैरोचन²—वि० १. विरोचन सबधी। विरोचन से उत्पन्न [को०]।

यौ० वैरोचन निकेतन=पाताल लोक। वैरोचनमुहूर्त=एक मुहूर्त जो दिन मे पडता है। वैरोचन रश्मिप्रतिमडित=बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

वैरोचनि—संज्ञा पु० [स०] १ बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३ सूर्य के एक पुत्र का नाम। ४ अग्नि के एक पुत्र का नाम। दे० 'वैरोचन'।

वैरोचि—संज्ञा पु० [स०] १ राजा बलि के पुत्र बाण दैत्य का एक नाम। २. दे० वैरोचनि (को०)।

वैरोट्या—संज्ञा स्त्री० [स०] जैनियो की सोलह विद्यादेवियो मे से एक विद्यादेवी का नाम।

वैरोद्धार—संज्ञा पु० [स०] किसी के वैर का बदला चुकाना। वैरशुद्धि।

वैरोधक—वि० [स०] विरोधी या प्रतिकूल (आहार आदि)।

वैरोधिक—वि० [स०] दे० 'वैरोधक' [को०]।

वैल¹—संज्ञा पु० [सं०] १ बेल नामक वृक्ष या उसका फल। २. छिद्र। विवर। बिल [को०]।

वैल²—वि० १. बिल सबधी। २. बेल सबंधी। ३. बिल मे रहनेवाला। बिलवासी [को०]।

वैलक्षण्य—संज्ञा पुं० [स०] १. विलक्षण होने का भाव। विलक्षणता। २ विभिन्न या अलग होने का भाव। विभिन्नता।

वैलक्ष्य—संज्ञा पु० [स०] १ लज्जा। संकोच। शर्म। २. विस्मय। आश्चर्य। ताज्जुब। ३ स्वभाव की विलक्षणता। ४. उलझन। गडबडी (को०)। ५ अस्वाभाविकता। कृत्रिमता (को०)। ६. वैपरीत्य (को०)।

वैलस्थान—संज्ञा पु० [स०] श्मशान। मरघट।

वैलिंग्य—संज्ञा पुं० [स० वैलिङ्ग्य] परिचायक चिह्न, लक्षण या लिंग का अभाव [को०]।

वैलि(पु)¹—सर्व० [देश० या वै० स० अवार (=इधर, निकट), हिं० उरे] उरली। उरे। इधर। उ०—दादू सेख मसाहक औलिया, पैंगबर सब पीर। दर्शन सू परसन नही, अजहूँ वैली तीर। —दादू०, पृ० २७७।

वैलोम्य—संज्ञा पु० [स०] विलोमता। विपरीतता [को०]।

वैल्व¹—संज्ञा पु० [स०] बिल्व या बेल नामक फल। श्रीफल।

वैल्व²—वि० १ बिल्व या बेल सबधी। बेल का। २ बिल्व वृक्ष से आच्छादित। अभिप्रेत। जिसे कहना आवश्यक हो [को०]।

वैवक्षिक—वि० [स०] विवक्षायुक्त। कहने की इच्छावाला।

वैवधिक—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जो अनाज आदि बेचकर अपना निर्वाह करता हो। गल्ले का व्यापारी। २. घूम घूमकर या फेरी लगाकर माल बेचनेवाला। ३. दूत। हरकारा। ४. बहँगी द्वारा बोझा ढोनेवाला। मजदूरा।

वैवर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवर्ण या मलिन होने का भाव। २ सौंदर्य या लावण्य का अभाव। ३ शृंगार के आठ प्रकार के सात्विक भावों में से एक प्रकार का भाव। ४ वह जो बिना किसी रंग के हो या जिसमें नीला, पीला आदि कोई रंग न हो (को०)।

वैवर्णिक वि० [सं०] चित्रकर्बुर। चितकबरा (मुख्यत विद्रुम के लिये प्रयुक्त)। २ वर्णहीन। जातिच्युत। जो जाति बहिष्कृत किया गया हो।

वैवर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विवर्ण होने का भाव। रंग परिवर्तित होना। २ बदरंग होना। मलिनता। मालिन्य। ३ विभिन्नता। भिन्नता। बिलगाव। ४ लावण्य का अभाव। ५ जातिच्युत होना। जातिबहिष्कृत होना। जातिच्युति (को०)।

वैवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ का चक्र या पहिए के समान घूमना।

वैवश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवश होने का भाव। विवशता। लाचारी। २ दुर्बलता। कमजोरी।

वैवस्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम। यम। २ एक रुद्र का नाम। ३ शनैश्चर। ४ पुराणानुसार सातवें मनु का नाम।

विशेष—आजकल का मन्वतंर इन्हीं मनु का माना जाता है। इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यंत, पृषध्र, नाभाग और कवि ये दस इनके पुत्र माने गए हैं।

५ पुराणानुसार वर्तमान मन्वतर का नाम।

विशेष—इस मन्वतर के अवतार वामन, देवता पुरंदर इंद्र, आदित्यगण, वसुगण, रुद्रगण, मरुद्गण आदि और ऋषि कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ विश्वामित्र आदि कहे गए हैं।

६ अग्नि का एक नाम (को०)। ७. एक तीर्थ का नाम।

वैवस्वत—वि० १ सूर्य संबंधी। २ यम संबंधी। अग्निसंबंधी। ४ मनु संबंधी (को०)।

वैवस्वतद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] मोगरा चावल।

वैवस्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दक्षिण दिशा जो वैवस्वत मनु की दिशा मानी गई है। २ सूर्य की एक पुत्री। यमुना। यमी (को०)।

वैवस्वतीय—वि० [सं०] वैवस्वत संबंधी (को०)।

वैवाह—वि० [सं०] विवाह संबंधी। विवाह का।

वैवाहिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कन्या अथवा वर का श्वसुर। समधी। २. विवाह (को०)। ३ विवाह की तैयारी या उत्सव (को०)। ४ वह संबंध जो विवाह के कारण हो (को०)।

वैवाहिक²—वि० विवाह संबंधी। विवाह का।

वैवाह्य¹—वि० [सं०] १. विवाह संबंधी। विवाह का। २ जो विवाह के योग्य हो।

वैवाह्य²—संज्ञा पुं० वह समारोह या उत्सव जो विवाह के अवसर पर हो।

वैविक्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] विविक्तता। विभिन्नता। अलगाव। छुटकारा (को०)।

वैविध्य—संज्ञा पुं० [सं०] विविधता। अनेकरूपता। उ०—देशीय एवं बहुदेशीय अंतर्विरोधों ने इधर कितनी ही प्रकृतियों को जन्म दिया है जिनमें युगीन वैविध्य और असामान्य गुणयोग हैं।—हिं० का० प्रा०, पृ० २।

वैवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] उदात्त आदि स्वरों का क्रम।

वैव्रद्ध पुं†—वि० [सं० वयोवृद्ध] दे० 'वयोवृद्ध'। उ०—आरब्ब सेष लीनौ बुलाइ। वैव्रद्ध ब्रद्ध बुद्धी सुताइ।—पृ० रा०, ६। ३१।

वैशंपायन—संज्ञा पुं० [सं० वैशम्पायन] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य थे। कहते हैं, महर्षि व्यासदेव की आज्ञा से इन्हीं ने जनमेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

वैशफल्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वैशम्फल्या] सरस्वती का एक नाम (को०)।

वैशद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशद होने का भाव। विशदता। २ निर्मल या स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। ३ उज्ज्वलता। शुभ्रता (को०)। ४ स्पष्टता (को०)। ५ मस्तिष्क की स्वस्थता।

वैशली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'वैशाली'। २ वसुदेव की एक पत्नी (को०)।

वैशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशल्य होने का भाव या दशा। कष्टदायक भार से मुक्ति या छुटकारा। जैसे, गर्भभार आदि से (को०)।

वैशस¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश। हत्या। वध। २ युद्ध। ३ विपत्ति। ४. कष्ट। ५. एक नरक का नाम। ६ हिंसा (को०)।

वैशस²- वि० विनाशक। हिंसक। हिंसा या वध करनेवाला (को०)।

वैशसन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैशस'।

वैशस्त्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शस्त्रहीनता। २ अधिकार। शासन। असुरक्षित होने का भाव (को०)।

वैशस्त्र²—वि० शस्त्ररहित। बिना शस्त्रवाला (को०)।

वैशाख—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथनी में का डंडा। मथनदंड। २ लाल गदहपूरना। ३ बारह महीनों में से एक महीना जो चांद्र गणना से दूसरा और सौर गणना के अनुसार पहला महीना होता है। इस मास की पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पड़ती है, इसीलिये इसे वैशाख कहते हैं। चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना। ४ एक प्रकार का ग्रह जिसका प्रभाव घोडों पर पड़ता है और जिसके कारण उनका शरीर भारी हो जाता है और वे कापने लगते हैं। ५ धनुष पर बाण चलाने के समय की एक मुद्रा। दे० 'विशाख' (को०)।

यौ०—वैशाखनंदन = (१) वैशाख में आनंदित होनेवाला। (२) *गधा। खर। वैशाखरज्जु = मथनदंड की रस्सी। नेत्र।*

वैशाखी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त हो। २. मेष की संक्राति (वैशाखपूर्णिमा) के अवसर पर

इस नाम से पंजाबियों में मनाया जानेवाला एक उत्सव। वैशाख मास की पूर्णिमा। उ०—जबलों पृथ्वी है तबलों बोना और लोना सरदी गर्मी, अगहनी और वैशाखी दिन और रात बद न होंगे।—कबीर म०, पृ० १६५। ३ लाल गदहपूर्ना। ४. पुराणानुसार वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

वैशाखी²—संज्ञा पुं० [सं० वैशाखिन्] हाथी के पैर का अगला भाग [को०]।

वैशाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैशारद¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। विशारद। पंडित।

वैशारद²—वि० १ ज्ञाता। अनुभवी। २ पंडित। विद्वान् [को०]।

वैशारद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशारद या पंडित होने का भाव। २ निर्मलता। स्वच्छता। सफाई।

वैशाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैशालक—वि० [सं०] वैशाली नगरी का। वैशाली संबंधी। [को०]।

वैशालाक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी द्वारा निर्मित शास्त्रविशेष [को०]।

वैशालिक—वि० [सं०] दे० 'वैशालक' [को०]।

वैशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी।

विशेष—यह विशालनगरी या विशालपुरी भी कहलाती थी। कहते हैं, राजा तृणबिंदु के पुत्र विशाल ने यह नगरी बसाई थी। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का जन्म यहीं हुआ था और बुद्ध भगवान् कई बार यहाँ गए थे। किसी समय यह नगरी बहुत प्रसिद्ध थी और यहाँ बौद्धों की बहुत प्रधानता थी। यहाँ का लिच्छवी राजवंश इतिहासों में प्रसिद्ध है। यहाँ जैनियों का भी तीर्थ था। विद्वानों का मत है कि आधुनिक मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ नामक गाँव प्राचीन वैशाली का ही अवशेष है।

वैशालीय—संज्ञा पुं० [सं०] जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का एक नाम।

वैशालेय—संज्ञा पुं० [सं०] तक्षक जो विशाल के वंशज माने जाते हैं।

वैशिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य के अनुसार तीन प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक। वह नायक जो वेश्याओं के साथ भोग विलास करता हो। वेश्यागामी नायक। उ०—भूपाल, मंडलीक, सामंत, सेनापति, वैशिक, राजपुत्र, राजशिष्ट, वडालमा।—वर्ण०, पृ० ८। २ वेश्याओं से संबंध रखनेवाला पुरुष। ३. वेश्या की वृत्ति या कला (को०)।

वैशिक²—वि० [वि० स्त्री० वैशिकी] १ वेश संबंधी। वेश का। २. वेश्या द्वारा व्यवहृत। ३. वेश्यागामी (को०)।

वैशिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैशिजाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री नाम की लता।

वैशिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेषता। खासियत। २ पृथक्त्वसूचक गुण। वैशिष्ट्य [को०]।

वैशिष्ट्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशिष्टता। विशेषता। २ श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। ३ विशिष्ट लक्षण या गुण आदि से युक्त होना। ४. अंतर। फर्क [को०]।

वैशीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्या का पुत्र।

वैशेषिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह दर्शनों में से एक जो महर्षि कणाद कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ विद्या।

विशेष—महर्षि कणाद का एक नाम उलूक भी है, इससे इसे औलूक्य दर्शन भी कहते हैं। यह दर्शन न्याय के ही अंतर्गत माना जाता है। सिद्धांत पक्ष में न्याय कहने से दोनों का बोध होता है, क्योंकि गौतम में प्रमाणपक्ष प्रधान है और इसमें प्रमेय पक्ष लिया गया है। ईश्वर, जगत् जीव आदि के संबंध के दोनों के सिद्धांत प्रायः एक ही हैं। यह दर्शन गौतम से पीछे का माना जाता है। गौतम ने मुख्यतः तर्कपद्धति और प्रमाणविषय का ही निरूपण किया है, पर कणाद उनसे आगे बढ़कर द्रव्यों की परीक्षा में प्रवृत्त हुए हैं। नौ द्रव्यों की विशेषताएँ बताने के ही कारण इनके दर्शन का नाम वैशेषिक पड़ा। नौ द्रव्य ये हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। इनमें से पृथ्वी, जल, तेज और वायु नित्य भी हैं और अनित्य भी अर्थात् परमाणु अवस्था में तो वे नित्य हैं और स्थूल अवस्था में अनित्य। आकाश, काल, दिक् और आत्मा नित्य और सर्वव्यापक हैं। मन नित्य तो है, पर व्यापक नहीं, क्योंकि वह अणुरूप है। द्रव्यों की विशेषता इसी प्रकार कणाद ने बताई है।

गौतम ने सोलह पदार्थ माने थे, पर कणाद ने छह ही पदार्थ रखे—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। अधिकार आदि को इन छह के अंतर्गत आता न समझकर पीछे से एक सातवाँ पदार्थ 'अभाव' भी बढ़ाया गया। द्रव्यों के उद्देश (परिगणन), लक्षण और परीक्षा के उपरांत कणाद ने गुण और कर्म को लिया है जो द्रव्यों में रहते हैं। संख्या, पृथक्त्व, बुद्धि, सुख, दुःख इत्यादि २४ गुण गिनाए गए हैं। उत्क्षेपण, अवक्षेपण आदि पाँच प्रकार के गतियाँ कर्म के अंतर्गत ली गई हैं। अब रहा 'सामान्य'। यह द्रव्य, गुण और कर्म इन्हीं तीनों में सत्ता के रूप में पाया जाता है। पाँचवाँ पदार्थ 'विशेष' पृथ्वी, जल, तेज और वायु के परमाणुओं में तथा शेष पाँच द्रव्यों में पाया जाता है। 'विशेष' अनंत होते हैं। 'समवाय' जहाँ कहीं पाया जायगा, वहाँ रहेगा। अतः वह एक ही है।

वैशेषिक का परमाणुवाद प्रसिद्ध है। द्रव्यखंड के टुकड़े करते करते जब ऐसा टुकड़ा रह जाता है जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते, तब वह परमाणु कहलाता है। परमाणु नित्य और अक्षर है। इन्हीं की योजना से सब पदार्थ बनते हैं और नष्ट होते हैं। आकाश को छोड़कर जितने प्रकार के द्रव्य होते हैं उतने ही प्रकार के परमाणु होते हैं जैसे—पृथ्वी परमाणु, जल

परमाणु, तेज परमाणु और वायु परमाणु। वैशेषिक मे दो परमाणुओ के योग को द्वयणुक कहते है। आगे चलकर यही द्वयणुक अधिक सख्या मे मिलते जाते हैं, जिनसे नाना प्रकार के पदार्थ बनते है, जैसे—तीन द्वयणुको से त्रसरेणु, चार द्वयणुको से चतुरणुक आदि। कारणगुण पूर्वक ही कार्य के गुण होते है, अत जिस गुण के परमाणु होगे, उसी गुण के उनसे बने पदार्थ होगे। पदार्थो मे जो नाना भेद दिखाई पडते है वे संनिवेश भेद से होते हैं। तेज के सबध से वस्तुओ के गुण मे बहुत कुछ फेरफार हो जाता है।

परमाणुओ के बीच अतर की धारणा न होने के कारण वैशेषिको को 'पीलुपाक' नामक विलक्षण मत ग्रहण करना पडा। इस मत के अनुसार घडा आग मे पडकर इस प्रकार लाल होता है कि अग्नि के तेज से घडे के परमाणु अलग अलग हो जाते हैं और फिर लाल होकर मिल जाते हैं। घडे का यह बनना और बिगडना इतने सूक्ष्म काल मे होता है कि कोई देख नही सकता।

परमाणुओं का सयोग सृष्टि के आदि मे कैसे होता है, इस संबध मे कहा गया है कि ईश्वर की इच्छा या प्रेरणा से परमाणुओ मे गति या क्षोभ उत्पन्न होता है और वे परस्पर मिलकर सृष्टि की योजना करने लगते हैं। ऊपर जो नौ द्रव्य कहे गए हैं, उनमे 'आत्मा' भी है। आत्मा दो प्रकार का कहा गया है—ईश्वर और जीव। ईश्वर की सत्ता और कर्तृत्व मानने के कारण ही न्याय और वैशेषिक भक्तों एव पौराणिको के आक्षेपों से बचे रहे है।

और दर्शनो के समान इस दर्शन पर भाष्य नही मिलते। प्रशस्तपाद का 'पदार्थ-धर्म संग्रह' नामक ग्रंथ वैशेपिक सूत्रो का भाष्य कहा जाता है, पर वह वास्तव मे भाष्य नही है, सूत्रो के आधार पर बना हुआ अलग ग्रथ है।

२ कणाद का अनुयायी। वैशेपिक दर्शन का माननेवाला।

वैशेष्य—सज्ञा पुं० [स०] १ विशेष का भाव। विशेषता। सर्वोत्तमता। श्रेष्ठता। २ जाति या गुणगत प्राधान्य। प्रमुखता (को०)।

वैश्मिक—वि० [स०] वेश्मवाला। घरवाला। घर मे रहनेवाला (को०)।

वैश्य—सज्ञा पुं० [स०] भारतीय आर्यो के चार वर्णो मे से तीसरा वर्ण जो 'द्विजाति' के अतर्गत और उसमे अतिम है।

विशेष—'वैश्य' शब्द वैदिक विश् से निकला है। वैदिक काल मे प्रजा मात्र को विश् कहते थे। पर बाद मे जब वर्णव्यवस्था हुई, तब वाणिज्य व्यसाय और गोपालन आदि करनेवाले लोग वैश्य कहलाने लगे। इनका धर्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है। आजकल अधिकाश वैश्य प्राय: वाणिज्यव्यवसाय करके ही जीविकानिर्वाह करते है। इन वैश्यो मे देश और वश आदि के भेद से अनेक जातियाँ और उपजातियाँ पाई जाती है जैसे,—अग्रवाल, ओसवाल, रस्तोगी, भाटिए आदि।

वैश्यकर्म—सज्ञा पुं० [सं० वैश्यकर्मन्] वैश्य का कर्तव्य कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य आदि।

वैश्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैश्यता'।

वैश्यध्वसी—वि० [स० वैश्यध्वसिन्] वैश्यो का नाश करनेवाला।

वैश्यभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की वैश्या और भद्रा नाम की दो देवियाँ।

वैश्यभाव—सज्ञा पुं० [स०] वैश्यत्व। वैश्यकर्म (को०)।

वैश्ययज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] वैश्यो द्वारा किया जानेवाला यज्ञ (को०)।

वैश्यवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य की जीविका का साधन। व्यापार आदि वैश्यकर्म (को०)।

वैश्यसव—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सव या यज्ञ।

वैश्यस्तोम—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

वैश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य जाति की। २. हलदी। ३ बौद्धो की एक देवी (को०)।

वैश्रभक¹—सज्ञा पुं० [सं० वैश्रम्भक] पुराणानुसार देवताओ के एक उद्यान या बाग का नाम।

वैश्रभक²—वि० १. विश्वस्त। विश्रभयुक्त। २ जाग्रत या चेतन करनेवाला (को०)।

वैश्रवण—सज्ञा पुं० [स०] १ कुबेर। २ शिव। महादेव। ३ रावण (को०)। ४ चौदहवाँ मुहूर्त (को०)।

वैश्रवणानुज—सज्ञा पुं० [स०] कुबेर का भाई रावण, कुभकर्ण आदि (को०)।

वैश्रवणालय—सज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर के रहने का स्थान। २. वट वृक्ष। बड का का पेड। बरगद।

वैश्रवणावास—सज्ञा पुं० [स०] १. वट वृक्ष। बरगद का पेड। २ दे० 'वैश्रवणालय' (को०)।

वैश्रवणोदय—सज्ञा पुं० [स०] १ वट वृक्ष। बरगद का पेड। २ दे० 'वैश्रवणावास' (को०)।

वैश्रवन(पु)—सज्ञा पुं० [स० वैश्रवण] कुबेर। वैश्रवण। उ०—पुन्य जनेश्वर वैश्रवन धनद ऐलविल होइ।—नंद० ग्र०, पृ० ९०।

वैश्व¹—वि० [स०] विश्वदेव सबधी। विश्वदेव का।

वैश्व²—सज्ञा पुं० उत्तराषाढा नक्षत्र का एक नाम।

वैश्वजनीन¹—वि० [स०] विश्व भर के लोगों से सबध रखनेवाला। समस्त ससार के लोगो का।

वैश्वजनीन²—सज्ञा पुं० वह जो समस्त ससार के लोगो का कल्याण करता हो।

वैश्वज्योतिप—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

वैश्वदेव—सज्ञा पुं० [स०] १ वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय। इसमे केवल पके हुए अन्न से विश्वदेव के उद्देश्य से आहुति दी जाती है और ब्राह्मणों को भोजन कराने की आवश्यकता नही होती है। २ उत्तराषाढ़ा नक्षत्र (को०)।

वैश्वदेवत—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव माने जाते हैं।

वैश्वदेविक—वि० [सं०] विश्वदेव संबंधी। विश्वदेव का।

वैश्वदेव्य—वि० [सं०] विश्वदेव संबंधी [को०]।

वैश्वदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तराषाढा नक्षत्र।

वैश्वमनस—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैश्वयुग—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के पाँच संवत्सरों का युग या समूह।

विशेष—इन पाँच संवत्सरों के नाम क्रमशः शोभकृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव हैं। इनमें से पहले दो संवत्सर शुभ और शेष अशुभ माने जाते हैं।

वैश्वरूप¹—संज्ञा पुं० [सं०] संसार। विश्व [को०]।

वैश्वरूप²—वि० विविध रूपोंवाला। विविध प्रकार का। अनेक ढंग का [को०]।

वैश्वरूप्य—संज्ञा सं० [सं०] विविध रूप या विभिन्न प्रकार का होने का भाव। विविधरूपता। विभिन्नता [को०]।

वैश्वस्त्य संज्ञा पुं० [सं०] वैधव्य। विधवापन [को०]।

वैश्वानर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ चित्रक या चीता नाम का वृक्ष। ३. पित्त। पित्ता। ४ परमात्मा। ५ चेतन। ६ जठराग्नि (को०)।

वैश्वानर²—वि० १ सभी लोगों के लिये उपयुक्त। २ सार्वभौम। सार्वजनीन। सार्वलौकिक। ३ राशिचक्र का। राशिचक्रीय [को०]।

वैश्वानरचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो सेंधा नमक, अजवायन और हर्रे आदि से बनाया जाता है। यह आमवात, शूल और गुल्म आदि के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है।

वैश्वानरपथ, वैश्वानरमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] अग्निकोण या पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना जो वैश्वानर का मार्ग माना जाता है।

वैश्वानरमुख—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

वैश्वानरवटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की गोली जो पारे, गंधक, ताँबे, लोहे, शिलाजीत, सोंठ, पीपल, चित्रक तथा मिर्च आदि के योग से बनाई जाती है और जो पेट के रोग में उपकारी मानी जाती है।

वैश्वानरविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

वैश्वानरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्निकोण। चंद्रवीथी का एक भाग। २ प्रति वर्ष के प्रारंभ में की जानेवाली एक प्रकार की विशेष बलि [को०]।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक—वि० [सं०] विश्वामित्र का। विश्वामित्र संबंधी [को०]।

वैश्वासिक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैश्वासिकी] वह जिसपर विश्वास किया जाय। एतबार करने के काबिल। विश्वस्त।

वैश्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तराषाढा नक्षत्र।

वैष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वधकर्ता। काटनेवाला। हिंसक [को०]।

वैषम—संज्ञा पुं० [सं०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ परिवर्तन। (को०)

वैषमेषव—वि० [सं०] विषमेषु संबंधी। कामदेव संबंधी।

वैषम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ समतल न होना। ३ अनुपातरहित होना (को०)। ४ कठिनाई। संकट। विपत्ति (को०)। ५. अन्याय। अनौचित्य (को०)। ६. भूल (को०)। ७ एकाकीपन (को०)।

वैषयिक¹—वि० [सं०] १. विषय संबंधी। विषय का। २ पदार्थ संबंधी (को०)।

वैषयिक²—संज्ञा पुं० वह जो सदा विषय वासना में रत रहता हो। विषयी। लंपट।

वैषुवत्—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैषुवत' [को०]।

वैषुवत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. विषुवत संक्रांति। २ केंद्र। मध्य।

वैषुवत²—वि० [वि० स्त्री० वैषुवती] १ केंद्रवर्ती। २ विषुव रेखा संबंधी [को०]।

वैषुवतीय—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैषुवत्' [को०]।

वैष्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंस्र पशु द्वारा मारे हुए पशु का मांस। २ जाल में फँसाए गए पशु का मांस [को०]।

वैष्किर¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह पशु या पक्षी जो चारों ओर घूम फिरकर आहार प्राप्त करता हो।

वैष्किर²—वि० १ जिसमें पशु पक्षी हों। २ चूजे के मांस का बना हुआ रसा [को०]।

वैष्टभ—संज्ञा पुं० [सं० वैष्टम्भ] एक प्रकार का साम।

वैष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे जबरदस्ती काम लिया जाय। बेगार में काम करनेवाला व्यक्ति [को०]।

वैष्टुत, वैष्टुभ—संज्ञा पुं० [सं०] होम की भस्म। भस्म [को०]।

वैष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ वायु। ३ विष्णु। ४ लोक। विश्व का एक प्रभाग (को०)। ५, संसार (को०)।

वैष्णव¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १ वह जो विष्णु की आराधना करता हो। विष्णु की उपासना करनेवाला। २ हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग प्रधानतः विष्णु की उपासना करते हैं और अपेक्षाकृत बड़े आचार विचार से रहते हैं।

विशेष—भारतवर्ष में विष्णु की उपासना बहुत प्राचीन काल से चली आती है। महाभारत के समय में यह धर्म पांचरात्र या नारायणीय धर्म कहलाता था। पीछे यही भागवत धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसमें वासुदेव या कृष्ण की उपासना प्रधान हुई। नारायणीय आख्यान में लिखा है कि पहले नारायण ने इस धर्म का उपदेश ब्रह्मा को किया था। ब्रह्मा ने नारद को, नारद ने व्यास को और व्यास ने शुकदेव को यह धर्म बतलाया था, और तब शुकदेव से सर्वसाधारण में यह धर्म प्रचलित

हुआ था। शंकराचार्य ने इस मत को अवैदिक सिद्ध करना चाहा चाहा था, जिसका रामानुजाचार्य ने खंडन किया। बीच मे इस धर्म का कुछ ह्रास हो गया था, पर चैतन्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य आदि आचार्यों ने इस धर्म का फिर से बहुत अधिक प्रचार किया, और इस समय यह भारत के मुख्य संप्रदायों मे से एक है। यह धर्म भक्तिप्रधान है और इसमे विष्णु ही उपास्य हैं। आजकल इस संप्रदाय की अनेक शाखाएँ और प्रशाखाएँ निकल आई है—चैतन्य, वल्लभ इत्यादि। अधिक संप्रदाय विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के उपासक है। कुछ संप्रदायवाले माथे पर के तिलक के अतिरिक्त शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि चिह्न भी शरीर मे अंकित कराते है। ३ यज्ञकुंड की भस्म। ४ विष्णुपुराण। ५. विष्णु का लोक। वैकुंठ (को०)। ६ श्रवण नक्षत्र (को०)।

वैष्णव[२]—वि० १ विष्णु संबंधी। विष्णु का। २ विष्णु को इष्टदेव माननेवाला।

वैष्णवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णव होने का भाव या धर्म। वैष्णवता।

वैष्णवस्थानक —संज्ञा पुं० [सं०] नाटक मे रंगमंच पर लंबे डग भरना [को०]।

वैष्णवाचार —संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों का आचार [को०]।

वैष्णवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु की शक्ति। २ दुर्गा। ३ गंगा। ४ अपराजिता या कोयल नाम की लता। ५ शतावर। ६ तुलसी। ७. पृथ्वी। श्रवण नक्षत्र। ९ एक प्रकार का साम।

वैष्णव्य—वि० [सं०] विष्णु संबंधी। विष्णु का।

वैसंदर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर, प्रा० हिं० वैसन्नर वैसंदर] दे० वैश्वानर। उ०—वैसंदर बिकार।—गोरख० पृ० २५५।

वैस(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० वयस दे० 'वस' (वयस्)। उ०—यो वरप्प दुअ वित्ति गय भइय वैस वर उच।—पृ० रा०, २५।१७६।

वैसणहार(पु)†—वि० [हिं० बैठना-बैसना + हार (प्रत्य०)] १. डूबनेवाला। २ बैठनेवाला। उपवेशन करनेवाला। उ०—औघट दरिया क्यों तिरैं, बोहिथ बैसणहार। दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार।—दादू०, पृ० ४६१।

वैसर्गिक—वि० [सं०] जो विसर्जन करने या त्यागने के योग्य हो। त्याज्य।

वैसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विसर्जन करने या उत्सर्ग करने की क्रिया। २. वह जो विसर्जित या उत्सर्ग किया जाय। ३. यज्ञ की बलि।

वैसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ विसर्प नामक रोग। २ वह जो विसर्प रोग से आक्रांत हो।

वैसा—क्रि० वि० [सं०, एतादृश से व्युत्पन्न ऐसा के समान हिं० 'वह' से व्युत्पन्न रूप] १ उस प्रकार का। उस तरह का। जैसे—जैसा दुपट्टा तुमने पहले भेजा था वैसा ही एक और भेज दो। २ उस प्रकार। ३ उतना।

वैसादृश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. असदृश या असमान होने का भाव। असमानता। विषमता। २. फर्क। भेद। अंतर।

वैसाना†—क्रि० स० [हिं०] दे० 'बिठाना', 'बैठना'। उ०—माघ पडित ईम उचरई, चउरी कुँवर बैसाडी छई आँणि।—वी० रासो, पृ० २१।

वैसारिण—संज्ञा पुं० [सं०] मछली।

यौ०—वैसारिणकेतन = मीनकेतन। कामदेव।

वैसासणउ†—क्रि० स० [सं० विश्वासन, प्रा० विस्सासण, वीसासण, राज० वैसासणउ] विश्वास। उ०—पयी एक संदेसणउ लग ढोलइ पैहच्चाइ। सावज संबल तोडस्यइ, वैसासणइ न जाइ।—ढोला०, दू० १३३।

वैसूचन —संज्ञा पुं० [सं०] नाटक मे पुरुष द्वारा स्त्री का वेश बनाकर अभिनय करना [को०]।

वैसूप —संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

वैसे —क्रि० वि० [हिं०] १ उस तरह। उस प्रकार। २ उस प्रकार के।

वैसेपिक(पु) —संज्ञा पुं० [सं० वैशेपिक] दे० 'वैशेषिक'। उ०—वैसेपिक शास्त्रे पुनि कालवादी है प्रसिद्ध। पातंजलि शास्त्र माहिं योगवाद है लह्यो।—सुंदर० ग्रं०, २।११६।

वैस्तारिक—वि० [सं०] विस्तार संबंधी। विस्तार का।

वैस्नव(पु)—वि० [वैष्णव] दे० 'वैष्णव'। उ०—श्री वल्लभ कुल को रहीं चेरो, वैस्नव जन का दास कहाऊँ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २२६।

वैस्पष्ट्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्टता। स्पष्ट या साफ होने का भाव। सुस्पष्टता। विस्पष्टता [को०]।

वैस्वर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर का विकृत होना। गला बैठना। विस्वर होना। २ उच्चारण का विभिन्नता या उतार चढ़ाव (को०)।

वैहग—वि० [सं० वैहङ्ग] विहग संबंधी। विहग का।

वैहंग —वि० [सं०] दे० 'वैहग'।

वैहस्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] संभ्रम। व्याकुलता। व्यग्रता। मोह [को०]।

वैहायस[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक सरोवर। २ आकाश। व्योम। गगन। ३ व्योमगमन करना। ४ देवता [को०]।

वैहायस[२]—वि० १. आकाशचारी। २ विहायस संबंधी। आकाश संबंधी। ३ वायु या पवन संबंधी। ३ आकाश मे स्थित। व्योम मे स्थित [को०]।

वैहार[१]—संज्ञा पुं० [सं० वैभार] एक पर्वत जो मगध मे राजगृह के पास है। वैभार।

वैहार[२]—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार, हिं० व्योहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—जीवन घडी तै नवि रहई। जाणसू कागली हुआ वैहार।—वी० रासो, पृ० ९३।

वैहारिक—वि० [सं०] विहार के काम मे प्रयुक्त। विहार के योग्य विहार करने लायक [को०]।

वैहार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके साथ हँसी मजाक आदि का संबंध हो। जैसे,—साला, सरहज, साली आदि। २ हास परिहास। दिल्लगी (को०)।

वैहाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिकार। आखेट (को०)।

वैहासिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सबको हँसाता हो। विदूषक। भाँड। २ नट। अभिनेता (को०)।

वैह्वल—संज्ञा पुं० [सं०] १ विह्वलता। व्याकुलता। २ शक्तिहीनता। कमजोरी (को०)।

वोंट—संज्ञा पुं० [सं० वोण्ट] डंठल। वृंत (को०)।

वोतिस†—वि० [सं० ऊनत्रिंश, प्रा० ओणतिस] दे० 'उनतिस' और 'ओनतिस'।—इद्रा०, पृ० १६१।

वो—सर्व० [हिं०] दे० 'वह'। उ०—वो प्रभु अविगत अविनासी। दास कहाय प्रगट भे वासी।—कबीर सा०, पृ० ४०१।

वोइल†—संज्ञा पुं० [देश०] जमानत। जामिन। दे० 'ओल'। उ०—तुम प्रभु दीनदयाल रघुपति वोइल दिवाइय।—कबीर सा०, पृ० १६०।

वोई(पु)†—सर्व० [हिं० वह+ही] दे० 'वही'। उ०—फली वो वदी याँ वो तेरी अथी। हुआ वोई च हासिल जो पेरी अथी।—दक्खिनी०, पृ० ६०।

वोक†¹—संज्ञा पुं० [सं० वर्कर, हिं० बकरा, बोकरा] बकरा। वोक। उ०—वोक निलज्ज चरत नित डोलै। बकरी संग कामरत बोलै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३३४।

वोक(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० ओकस्-ओक] निवास। घर। ओक।

वोक्काण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी। ३ इस देश का अश्व। ४ दे० 'वोक्काण'।

वोछा(पु)†—वि० [देश०] हलका। साधारण। दे० 'ओछा'।

वोज(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'बोज'। अश्वविशेष। उ०—लीले लक्खी लक्ख वोज बादामी चीनी।—सुजान०, पृ० ८।

वोट¹—संज्ञा पुं० [अं०] वह संमति जो किसी सार्वजनिक पद पर किसी को निर्वाचित करने या न करने, अथवा सर्वसाधारण से संबंध रखनेवाले किसी नियम या कानून आदि के निर्धारित होने या न होने आदि के विषय में प्रकट की जाती है। किसी सार्वजनिक कार्य आदि के होने या न होने आदि के संबंध में दी हुई अलग अलग राय। छंद।

विशेष—आजकल सभा समितियों में निर्वाचन के संबंध में या और किसी विषय में सभासदों अथवा उपस्थित लोगों की संमतियाँ ली जाती हैं। यह संमति या तो हाथ उठाकर या खड़े होकर या कागज आदि पर लिखकर प्रकट की जाती है। इसी संमति को वोट कहते हैं। आजकल प्राय म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा काउंसिलों (प्रांतीय विधानसभा, लोकसभा) आदि के चुनाव में कुछ विशिष्ट अधिकारप्राप्त लोगों से वोट लिया जाता है। भारतवर्ष में प्राचीन बौद्धकाल में और उसके पहले भी इससे मिलती जुलती संमति देने की प्रथा थी, जिसे छंदस् या छंद कहते थे।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।

वोट²—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओट] १ ओट। आड। उ०—इक पट वोट वोटि मुख कीजै। आवहु वलि छिन छिन छबि छीजै।—नंद० ग्र०, पृ० १६५। २ ओट करने का पट। दुपट्टा। चादर या चूनरी आदि का वह अंश जिससे ओट या घूँघट किया जाता है। उ०—पहिरै कनक कडा औ बागा। वोट गै पाट उपर मनि लागा।—इद्रा०, पृ० ११४।

वोट आफ सेंसर—संज्ञा पुं० [अं०] निंदा का प्रस्ताव। निंदात्मक प्रस्ताव। जैसे,—परिषद् ने बहुमत से सरकार के विरुद्ध वोट आफ सेंसर पास किया।

वोटना(पु)†—क्रि० स० [हिं० ओट+करना] आड करना। उ०—इक पट वोट वोटि मुख कीजै। आवहु वलि छिन छिन छबि छीजै। नंद० ग्र०, पृ० १६५।

वोटर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जिसे वोट या संमति देने का अधिकार प्राप्त हो। वोट या संमति देनेवाला।

यौ०—वोटर लिस्ट।

वोटर लिस्ट—संज्ञा स्त्री० [अं० वोटर+लिस्ट] वह सूची जिससे किसी विषय में वोट देने के अधिकारियों के नाम और पते आदि लिखे रहते हैं। वोट देनेवालों की सूची।

वोटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी। मजदूरनी। दाई। पोटा।

वोटिंग—संज्ञा स्त्री० [अं०] मतदान की क्रिया। मत देने की क्रिया। चुनाव में अपना वोट देने का कार्य।

वोड—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी।

वोड़ना(पु)—क्रि० स० [हिं० ओढना] १. विस्तार करना। फैलाना। २ रोकना। सहना।

वोड़्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोह नामक जंतु। गोनस सर्प। ३. एक प्रकार की मछली।

वोड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पण का चतुर्थांश (को०)।

वोढ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वोढू ऋषि। २ कदम का पेड। कदंब वृक्ष।

वोढ²—वि० विवाहित। जिसका उद्वाह हो चुका हो (को०)।

वोढना†—क्रि० स० [सं० आवेष्ठन या उपवष्ठन, प्रा० आवड्ढण] दे० 'ओढना'। उ०—लाल कमलों वोढ़े पेनाए, वेसू हरि थे कैसे बनाए।—दक्खिनी०, पृ० १०३।

वोढनी(पु)†—संज्ञा पुं० [देशी ओड्ढण ओड्ढणिगा] ओढने का वस्त्र। ओढना। उ०—वोढनी है नरलज्जता की अपकीरति नूपुर के सुर गावत। लोभ को छोर धरे लटुवा मन रे नटुवा भयो भाव बतावत।—सालसतरू, पृ० ४, छंद १८।

वोढव्य—वि० [सं०] १ वहन करने योग्य। वाह्य। २ परिणेतव्य। परिणय करने योग्य। ३ धारण या सहन करने योग्य। ४ खींचने या ले जाने योग्य। ५ पूर्ण करने योग्य (को०)।

वोढव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह औरत जो रखने या विवाह के योग्य हो अथवा जिसका विवाह होनेवाला हो (को०)।

वोढा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋषभक नाम की ओषधि।

वोढा²—संज्ञा पुं० [सं० वोढृ] १ वहन करने, ढोने या ले जानेवाला। भारिक। भारवाहक। २ नेता। पथदर्शक। नायक। ३. पति। परिणेता। शौहर। ४ साँड। वृषभ। ५. सूत। सारथि। ६. दर्पक अश्व। खींचनेवाला घोड़ा। ७. मूढ़ (को०)।

वोढा[२]—वि॰ वहन करने या धारण करनेवाला [को॰]।

वोढा(पु)[४]—वि॰ स्त्री॰ [सं॰ वोढृ] वहन या धारण करनेवाली। भरी हुई। निमग्न। उ॰—यहि परकार कहै रस वोढा। सा स्वाधीन वल्लभा प्रौढा।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ १५।

वोढु—सज्ञा पु॰ [सं॰] वह बालक जो पिता के न रहने के कारण अपनी माता के साथ ननिहाल मे रहता हो। पति के न रहने से मायके मे रहनेवाली स्त्री का पुत्र [को॰]।

वोढू—सज्ञा पु॰ [सं॰ वोढु ?] एक प्राचीन ऋषि जिनके नाम से तर्पण के समय जल दिया जाता है।

वोतप्रोत(पु)—वि॰ [सं॰ ओत प्रोत] एक मे एक बुना हुआ। गुथा हुआ। इतना मिला हुआ कि अलग करना असभव सा हो। अनुस्यूत। उ॰—जैसे ततुहि पट लै बाना। वोत प्रोत सा ततु समाना।—सु दर॰ ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ १११।

वोद—वि॰ [सं॰] आर्द्र। गीला।

वोदर(पु)†—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ उदर अथवा देश॰] दे॰ 'उदर'। उ॰—लौद लचीली लौं लचति घालत नहिं सकुचात। लगि जैहै वोदर लला वहै कृसोदर गात।—स॰ सप्तक, पृ॰ २६१।

वोदार—सज्ञा पु॰ [सं॰] मुरदासिंगी। ककुष्ठ।

वोदारना†—क्रि॰ स॰ [सं॰ अवदारण] ओदारना। फाडना। उ॰—खभ ते फारि वोदार दीन्हो नख ते डारेव चीर।—सत॰ दरिया, पृ॰ ११६।

वोदाल—सज्ञा पु॰ [सं॰] एक प्रकार की मछली जिसे बोआरी कहते है।

वोद्र(पु)†—सज्ञा पुं॰ [सं॰ उदर] दे॰ 'उदर'।

वोधक—सज्ञा पु॰ [सं॰] कफ का एक भेद। उ॰—कफ भी अवलबक, क्लेदक, वोधक, तर्पक और श्लेषक इन पाँच भेद से रहता है।—माधव॰, पृ॰ ५८।

वोन†—सज्ञा स्त्री॰ [प्रा॰ वोड्डिया] कपर्दिका। कौडी। उ॰—अवतंस इक लख स्रोन। दिसि कंक आमिय वोन।—पृ॰ रा॰, ६१। १४८।

वोनतिस†—वि॰ [सं॰ ऊनत्रिंश, प्रा॰ ओणतिस] दे॰ 'उनतीस'। उ॰—वोनतिस अच्छर तापर भेजा सिर्जनहार। तेहि करता कहँ सुमिरहु मेरवै मित्र तोहार।—इ द्रा॰, पृ॰ १६१।

वोपदेव—सज्ञा पुं॰ [सं॰] सस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो व्याकरण के ज्ञाता एव ग्रथनिर्माता थे।

विशेष—इनका लिखा व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रथ मुग्धबोध है। कविकल्पद्रुम तथा और भी इनके लिखे अनेक ग्रथ प्रसिद्ध है। ये हेमाद्रि' के समकालीन थे और देवगिरि के यादव राजा के दरबार के मान्य विद्वान् रहे। इनका समय तेरहवी शती का पूर्वार्ध मान्य है।

वोपना†—क्रि॰ अ॰ [प्रा॰ ओप्पा (=शाण), हिं॰ ओप] चमकना। दीप्त होना। ओपना। उ॰—उवटन उवटि अँगन अन्हवाई। वोपी दामिनि लोपी माई।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ १२२।

वोवरा†—सज्ञा पुं॰ [सं॰ उपविवर, हिं॰ ओवरी अथवा सं॰ उपसगृह] छोटा घर। छोटा मकान। मकान का एक छोटा भाग। कोठरी। उ॰—[illegible] वोवरा महल अटारी। गइया मनुपहु बूझि तुम्हारी।—सुदर॰ ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ ३२५।

वोम†—सज्ञा पु॰ [सं॰ व्योम] आकाश। अतरिक्ष। उ॰—वोम अरावै गाजिऐ ढोल हुआ सव दौड। आयो रणी रामतण हाम वडी राठौड।—रा॰ रू॰, पृ॰ २८३।

वोर†[१]—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰ अवार(=किनारा)] तरफ। दिशा। ओर। उ॰—गैयाँ मिलवन मिस उठि भोर। गहगोरी गमनी उहि वोर।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ १७२।

वोर†[२]—सज्ञा पुं॰ ओर। अत। पार। छोर। उ॰—परकाला अरु गजी गनत कहुँ वोर न लहिए।—सु दर॰, ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ ७५।

वोरक—सज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वह जो लिखता हो। लेखक। २ कलाकार। चित्रकार (को॰)।

वोरट—सज्ञा पु॰ [सं॰] कुद का फूल या पौधा।

वोरता†—सज्ञा पु॰ [देश॰] अश्वविशेष। दे॰ 'वोज'। उ॰—नुकुरा और दुवाज वोरता है छवि दूनी।—सुजान॰, पृ॰ ८।

वोरपट्टी—सज्ञा स्त्री॰ [सं॰] गद्दा। तोसक। आस्तरण [को॰]।

वोरव—सज्ञा पु॰ [सं॰] बोरो धान।

वोरुखान—सज्ञा पु॰ [सं॰] एक प्रकार का घोडा। सभवत वोरता या वोज [को॰]।

विशेष—हेमचद्र के अनुसार यह लाल रग का या हलके भूरे रग का होता था। इसे वोरता, वोज, वोर और वेरुहान भी कहते थे।

वोल—सज्ञा पु॰ [सं॰] रसगध। एक गध द्रव्य। दे॰ 'वोल' [को॰]।

वोलक—सज्ञा पु॰ [सं॰] जलावर्त। जलगुल्म। भवर [को॰]।

वोल्लाह—सज्ञा पु॰ [सं॰] वह घोडा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रग के हों। बुलाह।

वोष्ठ†—सज्ञा पु॰ [सं॰ ओष्ठ] दे॰ 'ओष्ठ'।

यौ॰—वोष्ठपुट=ओष्ठपुट। उ॰—सत सहस्र सहिता भारत व्यास जी के वोष्ठपुठन तें निकसो है।—पोद्दार अभि॰ ग्रथ, पृ॰, ४८४।

वोसूल†—सज्ञा पु॰ [अ॰ वसूल] दे॰ 'वसूल'। उ॰—पाप तहसील वोसूल होने लगी।—पलटू॰, भा॰ २, पृ॰ ३३।

वोहि(पु)—सर्व॰ [हिं॰ वह] दे॰ 'वह'। उ॰—सावरो पीतम जहाँ वसै सो ति है वोहि गाँव री।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ ३५१।

वोहित्थ—सज्ञा पु॰ [सं॰] बडी नाव। जहाज।

वौकाना†—क्रि॰ स॰ [देश॰] १ देना। प्रदान करना। हवाले करना। २ झुकाना। लचकाना। उ॰—कोई न दिखा तब अपने कलेजे से पलाश की डार मय गुच्छे के मुझे हाथ से वौका दिया।—श्यामा॰ पृ॰ ८६।

वौद्ध—सज्ञा पु॰ [सं॰] बौद्ध [को॰]।

वौषट्—संज्ञा पुं० [स०] अगन्यास तथा पितरो या देवो को आहुति देने के समय प्रयुक्त होनेवाला एक उद्गार वा साकेतिक मत्र-विशेष [को०]।

वौसाउ(ु)—संज्ञा पुं० [स० व्यवसाय] व्यवसाय। व्यापार। उ०—कै काहू को इछा पूरी। बल वौसाउ कीन्ह दुख दूरी।—चित्रा०, पृ० ३४।

व्यकुश—वि० [स० व्यङ्कुश] दे० 'निरंकुश'।

व्यग[1]—संज्ञा पुं० [स० व्यङ्ग] १ मंडूक। मेढक। २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे क्रोध या परिश्रम आदि के कारण वायु कुपित होने से मुँह पर छोटी छोटी काली फुसियाँ या दाने निकल आते हैं। ३ वह जिसका कोई अग टूटा हुआ या विकृत हो। लुजा। विकलाग। ४. दे० 'व्यग'।

मुहा०—व्यग की बौछार=बहुत से व्यगभरे वाक्य। व्यग की बहुत सी बातें। उ०—किसी ओर मे कही सभ्य व्यग की बौछार आती।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६२।

५ एक रत्न लहसुनिया (को०) ६ लौह। इस्पात (को०)।

व्यग[2]—वि० १. शरीररहित। २ जो व्यवस्थित न हो। अव्यवस्थित। ३ चक्रहीन। ४ लँगडा [को०]।

व्यगक—संज्ञा पु० [स० व्यङ्गक] पर्वत।

व्यगता—संज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्गता] व्यंग का भाव।

व्यगत्व—संज्ञा पु० [स० व्यङ्गत्व] १ किसी अग का न होना या खडित होना। खजता। २. दे० 'व्यगता'।

व्यगार—वि० [स० व्यङ्गार] अगारहीन। ज्वालारहित [को०]।

व्यगार्थ—संज्ञा पु० [स०] दे० व्यग्य'।

व्यगिता—संज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्गिता] अगहीनता। विकलागता [को०]।

व्यगी—वि० [स० व्यङ्गिन्] अगविशेष से रहित। अगहीन [को०]।

व्यगुल—संज्ञा पु० [स० व्यङ्गुल] एक अगुल का साठवाँ भाग [को०]।

व्यगुष्ठ—संज्ञा पु० [स० व्यङ्गुष्ठ] एक प्रकार का गुल्म।

व्यग्य[1]—संज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्य] १ शब्द का वह अर्थ जो उसकी व्यजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। व्यजना शक्ति के कारण प्रकट होनेवाला साधारण से कुछ विशिष्ट अर्थ। गूढ और छिपा हुआ अर्थ। विशेष दे० 'व्यजना'। २ वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ अर्थ हो। ताना। बोली। चुटकी।

क्रि० प्र०—कहना।—छोडना।—बोलना।—सुनना।

व्यग्य[2]—संज्ञा १. व्यजना वृत्ति द्वारा बोधित। परोक्ष सकेत द्वारा सूचित वा उपलक्षित [को०]।

व्यग्यचित्र—संज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्य+चित्र] वह चित्र जो किसी व्यक्ति का परिहास करने के लिये विगाडकर इस प्रकार बनाया जाता है जिसे देखकर दर्शक को स्वभावत हँसी आ जाय। (अँ० कार्टून)।

व्यग्यदाम—संज्ञा पुं० [स० व्यङ्ग्यदामन्] व्यग्य का बधन। उ०—शवरी, गज गणिकादिक, हुए कृष्ट प्रासारिक। पारिक मैं सासारिक अविधा हो व्यग्यदाम।—प्रारावना, पृ० १४।

व्यग्यरूपक—संज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्यरूपक] वह रूपक जिसमे अप्रस्तुत योजना व्यक्त न होकर प्रच्छन्न हो। प्रच्छन्न रूपक। उ०—काव्य के वर्तमान समीक्षकों की दृष्टि मे दबी हुई या प्रच्छन्न अप्रस्तुत योजना, जिसे हमारे यहाँ व्यग्यरूपक कहेगे, बहुत उत्कृष्ट मानी जाती है।—चिंतामणि, भा० २, पृ० २२३।

व्यंग्योक्ति—संज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्ग्य+उक्ति] परिहास वचन। चुभनी हुई बात। व्यग्यपूर्वक कही गई बात [को०]।

व्यज—संज्ञा पुं० [स० व्यञ्जन] १. परिचायक चिह्न। २ प्रकाशन। उ०—चदवधू सिर व्यंज धरे बसुमत्ति सु रज्जिय।—पृ० रा०, २५।३५।

व्यजक[1]—वि० [स० व्यञ्जक] १. व्यजित करनेवाला। २ प्रकाशक [को०]।

व्यजक[2]—संज्ञा पु० १ भावप्रकाशन की चेष्टा। २ वह शब्द जो गूढार्थ को प्रकट करे। ३ सकेत। ४ अभिनय [को०]।

व्यंजन—संज्ञा पु० [स० व्यञ्जन] १ व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २. शब्द की तीन शक्तियो मे एक का नाम। विशेष दे० 'व्यजना'। ३. चिह्न। निशान। रूप। ४. अवयव। अग। ५. मूँछ। ६. दिन। ७ पेडू के नीचे का स्थान। उपस्थ। ८ तरकारी और साग आदि जो दाल, चावल, रोटी आदि के साथ खाए जाते है। ९ (साधारण बोलचाल मे) पका हुआ भोजन। १०. वर्णमाला मे का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता स न बोला जा सकता हो। हिंदी वर्णमाला मे 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यजन हैं। ११ गुप्तचर या गुप्तचरो का मडल। वयस्कता। १२. उ०—जब पूर्वोक्त प्रागूप प्रकट हो जाय तब उसको रूप ऐसे कहते हैं और सस्थान, व्यजन, लिंग, लक्षण, चिह्न और आकृति यह छह शब्द रूप के पर्याय है।—माधव०, पृ० ५। १३ निदान। लक्षण (को०)। १४ लिंगद्योतक या स्मारक चिह्न। जैसे, मूँछ, दाढी, स्तन आदि (को०)। १५ स्मारक (को०)। १६ कपट वेश। छद्म वेश (को०)। १७ बलि पशु का सस्कार या पूजन (को०)। १८ पखा। व्यजन (को०)।

व्यजनकार—संज्ञा पु० [स० व्यञ्जनकार] रसोइया। व्यजन बनानेवाला व्यक्ति। सूपकार।

व्यजनतालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जन+तालिका (=सूची)] विक्रेतव्य भोज्य वस्तुओ की सूची। (अ०) मेनू। व्यजनिका।

व्यजनसधि—संज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनसन्धि] व्याकरण के अनुसार व्यंजन वर्ण का व्यजन वर्ण के साथ होनेवाला सबंध।

व्यजनहारिका—संज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनहारिका] १ पुराणानुसार एक प्रकार को अमगलकारिणी शक्ति जो विवाहिता लडकियो के बनाए हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है। २ वह चुडैल जो स्त्रियो के भगस्थ बाल उडा ले जाती है।

व्यजना—संज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जना] १ प्रकट करने की क्रिया। २ शब्द की तीन प्रकार की शक्तियो या वृत्तियो मे से एक प्रकार की शक्ति या वृत्ति।

विशेष—व्यजना शक्ति द्वारा शब्द या शब्दसमूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ का बोध होता

है। जैसे यदि कोई कहे कि 'तुम्हारे चेहरे पर पाजीपन झलक रहा है'। दूसरा व्यक्ति कहे कि 'मुझे आज ही जान पड़ा है कि मेरे चेहरे मे दर्पण का गुण है' तो इससे यह अर्थ निकलेगा कि तुमने मेरे दर्पण रूपी चेहरे मे अपना प्रतिबिंब देखकर उसमे पाजीपन की झलक पाई है। शब्दो की जिस शक्ति से यह अभिप्राय निकला, वही व्यंजना शक्ति है। इसके शाब्दी और आर्थी ये दो भेद माने गए हैं और इन दोनो भेदो के भी कई उपभेद किए गए है।

व्यंजनावृत्ति संज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनावृत्ति] १ व्यंजनाशक्ति। २. साहित्य शास्त्र तथा अन्य शास्त्रो में स्वीकृत शब्द शक्ति का एक प्रकार जिसका बोधक शब्द व्यंजक कहा जाता है तथा जिससे बोध्य अर्थ व्यंग्य कहा गया है। इसी शक्ति का एक रूप ध्वनि या ध्वनित अर्थ होता है। शृंगारादि रस ध्वन्यर्थ हैं। ३ व्यंग्यपूर्ण लेखन वा कथन की शैली [को०]।

व्यंजनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जनिका] जिसमे व्यंजन हो। व्यंजनतालिका।

व्यंजित—वि० [सं० व्यञ्जित] १ संकेतित। संकेत द्वारा कथित। २. चिह्नित। ३ व्यंजनावृत्ति द्वारा व्यक्त। व्यक्त [को०]।

व्यंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यञ्जिनी] १ व्यंजनसमूह। २. वह जो व्यंजन करे।

व्यंझ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० विन्ध्य, प्रा० विंझ] दे० 'विंध्य'। उ०—किस्न सकल चल अचल, अदिठ अलसत चलतइ। चंदन नभ वन भवन, अंब गिरि व्यंझ वसतइ।—पृ० रा०, २१। १५।

व्यंत—वि० [सं० व्यन्त] दूर रहनेवाला। दूरस्थ [को०]।

व्यंतर—१ संज्ञा पुं० [सं० व्यन्तर] जैनो के अनुसार एक प्रकार के पिशाच और यक्ष। २ अंतर। अवकाश (को०)। ३ अंतर न होना (को०)।

व्यंदना(पु)—क्रि० स० [सं० विद्] जानना। जान पड़ना। ज्ञात होना। उ०—मृदु मृदंग धुनि संचरिय, अलि अलाप मुध व्यंद। —पृ० रा०, ६१। १७००।

व्यंश देश० पुं० [सं०] पुराणानुसार विप्रचित्ति के पुत्र का नाम जो सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

व्यंशक—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।

व्यंशुक—वि० [सं०] अंशुक या वस्त्रहीन। नग्न। निर्वस्त्र [को०]।

व्यंस¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

व्यंस²—वि० विस्तृत अंसवाला। चौड़े कंधोवाला [को०]।

व्यंसक—संज्ञा पुं० [सं०] १ धूर्त। चालबाज। चालाक। २ ऐंद्रजालिक। बाजीगर (को०)।

व्यंसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठगने या धोखा देने की क्रिया। २ बाँटने की क्रिया। वितरण (को०)।

व्यंसित—वि० [सं०] १. जो छला गया हो। वंचित। प्रतारित। २. पराजित। पराभूत। ३ प्रभावित [को०]।

व्य—संज्ञा पुं० [सं०] ढकने या आवरण करनेवाला। आच्छादक। परदा करनेवाला [को०]।

व्यक्त¹—वि० [सं०] १. दिखाई देता या झलकता हुआ। प्रकट। जाहिर। २ साफ। स्पष्ट। ३ स्थूल। बड़ा। ४ दुष्ट। पाजी। ५ विकसित (को०)। ६ विशिष्ट। प्रसिद्ध। विख्यात (को०)। ७ एकाकी। अकेला (को०)। ८. बुद्धिमान। विद्वान् (को०)। ९ विभूषित। सुसज्जित (को०)। १० उष्ण (को०)।

व्यक्त²—संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ मनुष्य। आदमी। ३ कृत्य। कार्य। काम। ४ सांख्य के अनुसार प्रधान, अहंकार, इंद्रियाँ, तन्मात्र, महाभूत आदि चौबीस तत्व जो पुरुष से उद्भूत माने गए हैं।

विशेष—सांख्य के मत से प्रकृति अव्यक्त और पुरुष व्यक्त है।

५ उष्णता (को०)। ६ सुशिक्षित वा विद्वान् व्यक्ति (को०)। ७ जैन मतानुसार ग्यारह गणाधिपों मे से एक (को०)।

व्यक्तकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] लोककार्य (को०)।

व्यक्तगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यक्तगन्धा] १ नीली अपराजिता। २ सोनजुही। ३ पिप्पली। पीपल।

व्यक्तगणित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'अंकगणित'।

व्यक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यक्त होने का भाव।

व्यक्ततारक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्यक्ततारका] १. जिसमे तारे चमकते हो। जैसे, आकाश। २. चमकते तारो या पुतलियोवाला।

व्यक्तदृष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो देखी हुई बात कहे। चश्मदीद गवाह।

व्यक्तभुक्—संज्ञा पुं० [सं० व्यक्तभुज्] वह जो व्यक्त एवं दृश्यमान् संसार को खाता हो। काल। समय [को०]।

व्यक्तभुज्—संज्ञा पुं० [सं०] समय। वक्त।

व्यक्तराशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंकगणित मे वह राशि या अंक जो व्यक्त किया या बतला दिया गया हो। ज्ञात राशि।

व्यक्तरूप—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

व्यक्तलक्ष्मा—वि० [सं० व्यक्तलक्ष्मन्] जिसके लक्षण प्रकट हो। व्यक्त या प्रकट चिह्नोवाला [को०]।

व्यक्तलवण—वि० [सं०] जिसमे लवण व्यक्त हो अर्थात् मात्रा से अधिक हो [को०]।

व्यक्तवाक्, व्यक्तवाच्—संज्ञा पुं० [सं०] सुस्पष्ट कथन। स्पष्ट वाक्यावली।

व्यक्तविक्रम—वि० [सं०] जिसका पराक्रम सबको विदित हो [को०]।

व्यक्ताव्यक्त वि० [सं० व्यक्त+अव्यक्त] प्रकट और अप्रकट। जो इंद्रियातीत हो। उ०—उपनिषदो मे ब्रह्म के लिये व्यक्ताव्यक्त शब्द का प्रयोग किया गया है।—आचार्य०, पृ० ७६।

व्यक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकाशित या दृश्य होना। प्रकट होना। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का सारा शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है और जो किसी समूह या समाज का अंग समझा जाता है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। ३. मनुष्य। आदमी। जैसे,—कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो सदा दूसरो का अपकार ही किया करते हैं।

विशेष—यद्यपि यह शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग है तथापि हिंदी में मनुष्य या आदमी के अर्थ में यह प्रायः बोला और लिखा जाता है।

४. भूतमात्र। ५. वस्तु। पदार्थ। चीज। ६. प्रकाश। ७. भेद। विभेद (को०)। ८. वास्तविक रूप या प्रकृति (को०)। ९. व्याकरण में लिंग तथा विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय (को०)।

व्यक्तिगत—वि० [सं०] १. स्वगत। २. निजी। एक व्यक्ति तक सीमित। उ०—इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता कम होती है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ५५।

व्यक्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यक्ति होने का भाव। २. व्यक्ति का असामान्य गुण या असाधारण विशिष्टता। किसी में असामान्य या असाधारण रूप से पाई जानेवाली विशेषता।

व्यक्तिमुखी—वि० स्त्री० [सं०] व्यक्तिविशेष की रुचि या भावना से संबद्ध। एक व्यक्ति तक ही केंद्रित रहनेवाली। उ०—यह प्रणाली समीक्षक की व्यक्तिगत भावना या प्रतिक्रिया को व्यक्त करने का लक्ष्य रखता है, अतएव इसे व्यक्तिमुखी, भावात्मक या प्रभावाभिव्यंजक शैली कहते हैं।—नया०, पृ० ३८।

व्यक्तीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाशन। प्रकटन। अभिव्यक्ति। उ०—साहित्य मनुष्य के विचारों, उसकी भावनाओं और कल्पनाओं का व्यक्तीकरण है।—पा० सा० सि०, पृ० १।

व्यक्तीकृत—वि० [सं०] जो व्यक्त किया गया हो। प्रकट किया हुआ।

व्यक्तीभूत—वि० [सं०] जो व्यक्त हुआ हो। प्रकट किया हुआ।

व्यग्र—वि० [सं०] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. काम में फँसा हुआ। ४. उद्यमी। उद्योगी। ५. आसक्त। उ०—मार्ग में मिस से ठिठकती ठहरती सौ बार। गई व्यग्र शकुंतला नृप को निहार निहार।—शकुं०, पृ० ६। ६. आग्रही। ७. गतिशील। जैसे चक्र (को०)।

व्यग्र¹—संज्ञा पुं० विष्णु।

व्यग्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यग्र होने का भाव। २. व्याकुलता।

व्यग्रमना—वि० [सं० व्यग्रमनस्] व्याकुल मनवाला (को०)।

व्यग्रहस्त—वि० [सं०] जिसके हाथ किसी काम में लगे हों। काम में फँसा हुआ (को०)।

व्यज—संज्ञा पुं० [सं०] व्यजन। पंखा (को०)।

व्यजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. हवा करने का पंखा। उ०—कभी विपिन में हमें व्यजन का पड़ता नहीं प्रयोजन है।—पंचवटी, पृ० १०। २. पंखे के काम में आनेवाली कोई वस्तु जिससे हवा की जा सके। ३. पंखा झलना (को०)।

व्यजनक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्यजन' (को०)।

व्यजनक्रिया—संज्ञा पुं० [सं०] पंखा झलने का कार्य।

व्यजनचामर—संज्ञा पुं० [सं०] चमरी गाय की वह पूँछ जो पंखे की तरह झली जाती है। चंवर (को०)।

व्यजनी—संज्ञा पुं० [सं० व्यजनिन्] वह पशु जिसकी पूँछ के बालों से व्यजन (चामर) बनता हो (को०)।

व्यज्य¹—वि० [सं०] जिसका बोध शब्द की व्यंजना शक्ति के द्वारा हो।

व्यज्य²—संज्ञा पुं० दे० 'व्यंग्य'।

व्यडंबक—संज्ञा पुं० [सं० व्यडम्बक] रेंड का पेड़। एरंड।

व्यडंबन—संज्ञा पुं० [सं० व्यडम्बन] रेंड का पेड़।

व्यड़—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्याडि'।

व्यति—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा।

व्यतिकर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यसन। २. विनाश। बरबादी। ३. मिश्रण। मिलावट। ४. व्याप्ति। संबंध। लगाव। तअल्लुका। ६. समूह। झुंड। ७. रगड़। घर्षण (को०)। ८. अंतराय। विघ्न। रुकावट (को०)। ९. घटना। वृत्तांत (को०)। १०. सुअवसर। सुयोग (को०)। ११ विनिमय। परिवर्तन। अदल बदल (को०)। १२. लाभ (को०)। १३. ध्यानाकर्षण (को०)।

व्यतिकर²—वि० १. पारस्परिक। २. व्यापक विस्तारवाला। ३. निकट। समीप। आसन्न (को०)।

व्यतिकरित—वि० [सं०] १. व्यतिकर युक्त। २. मिश्रित। ३. आपूर्ण। अभिव्याप्त (को०)।

व्यतिकीर्ण—वि० [सं०] १. घुला मिला। मिश्रित। २. संयुक्त। एकीभूत (को०)। ३. प्रकंपित। संक्षुब्ध (को०)।

व्यतिकृत—वि० [सं०] परिव्याप्त (को०)।

व्यतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रम में होनेवाला विपर्यय। सिलसिले में होनेवाला उलटफेर। २. बाधा। विघ्न। ३. उल्लंघन। अतिक्रमण (को०)। ४. उदासीनता। उपेक्षा। अवहेलना (को०)। ५. असंगति (को०)। ६. पाप। अपराध (को०)। ७. विपत्ति। दुर्भाग्य (को०)। ८. रतिभंग (को०)।

व्यतिक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रम में विपर्यय करना। सिलसिले में उलट फेर करना। २. पाप या अपराध करना (को०)।

व्यतिक्रमी—वि० [सं० व्यतिक्रमिन्] व्यतिक्रम या रति भंग करनेवाला। अपराधी (को०)।

व्यतिक्रांत¹—वि० [सं० व्यतिक्रान्त] १. जिसमें किसी प्रकार का विपर्यय हुआ हो। २. बिताया हुआ (को०)।

व्यतिक्रांत—संज्ञा पुं० १. उल्लंघन। २. पाप (को०)।

व्यतिक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यतिक्रान्ति] १. क्रम में होनेवाला विपर्यय। व्यतिक्रम। २. बुराई (को०)।

व्यतिक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. कहासुनी। वाद विवाद। २. अदल बदल विनिमय (को०)।

व्यतिगत—वि० [सं०] बीता हुआ। व्यतीत (को०)।

व्यतिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप कर्म करना। पाप का आचरण करना। २. दोष। ऐब।

व्यतिपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा उत्पात। भारी उपद्रव या खराबी। २. ज्योतिष के अनुसार योगविशेष। दे० 'व्यतीपात'।

व्यतिभिन्न—वि० [सं०] जो अलग न हो सके। परस्पर मिला हुआ। पूर्णतः घुला मिला (को०)।

व्यतिभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रवेश। व्याप्ति। २. एक साथ होनेवाला। स्फोट (को०)।

व्यतिमूढ़—वि० [सं०] कर्तव्यमूढ़। अचकचाया हुआ (को०)।

व्यतियात—वि० [स०] गत। गुजरा हुआ।

व्यतिरिक्त¹—वि० [स०] १ भिन्न। अलग। २ अधिक। अतिशय। बढा हुआ। ३ रुद्ध। रोका हुआ (को०)। ४ मुक्त (को०)। ५ अपवादित। जिसका अपवाद किया गया हो (को०)।

व्यतिरिक्त²—क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरिक्तक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की उडान (को०)।

व्यतिरिक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यतिरिक्त होने का भाव या धर्म। विभिन्नता।

व्यतिरेक—सज्ञा पु० [स०] १ अभाव। २ भेद। अतर। भिन्नता। वैषम्य। असमानता। ३ वृद्धि। बढता। ४ अतिक्रम। ५ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे उपमान की अपेक्षा उपमेय मे कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है। उ०—(क) कहत सबै बेंदी दिए अक दस गुनो होत। तिय लिलार बेंदा दिए अगनित बढत उदोत। (ख) निज परताप द्रवहिं नवनीता। पर दुख द्रवहि सो सत पुनीता। ६ वियोग। राहित्य (को०)। ७ निष्कासन। अपवर्जन (को०)। ८ न्याय मे असवधरूप पदार्थ। अन्वय का उलटा (को०)। ९ तुलना मे वैपरीत्य दिखाना (को०)। १० एक प्रकार की व्याप्ति (को०)।

व्यतिरेकी—सज्ञा पु० [स० व्यतिरेकिन्] १ वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो। २ वह जो पदार्थो मे विभिन्नता या विशेषता उत्पन्न करता हो। ३. अभावात्मक (को०)। ४ भिन्न। विपरीत (को०)।

व्यतिरेचन—सज्ञा पु० [स०] दो वस्तुओ या व्यक्तियो मे अतर दिखाने की क्रिया (को०)।

व्यतिरोपित—वि० [स०] १ अधिकार रहित किया हुआ। २ निकाला हुआ (को०)।

व्यतिलघी—वि० [स० व्यतिलङ्घिन्] फिसलनेवाला (को०)।

व्यतिविद्ध—वि० [स०] १ आलिंगित। गुफित। २. विद्ध। छिद्रित (को०)।

व्यतिव्यस्त—वि० [स०] उलझा हुआ। अत्यत व्यस्त (को०)।

व्यतिषग—सज्ञा पु० [स० व्यतिषङ्ग] [वि० व्यतिषक्त] १ मिलाना। २. विनिमय। वदला। ३ सयोग (को०)। ४ परस्पर बाँधना। एक साथ गूँथना (को०)। ५ परस्पर भिडना (को०)। ६ अभिशोषण। शोषण (को०)।

व्यतिषक्त—वि० [स०] १. मिला हुआ। मिश्रित। २ आसक्त। ३ एकमेक। ओतप्रोत। अनुस्यूत (को०)। ४ जिनमे अतर्विवाह हुआ हो (को०)।

व्यतिहार—सज्ञा पु० [स०] १. विनिमय। परिवर्तन। वदला। २. गाली गलौज। ३ मारपीट।

व्यतीकार—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यसन। २ विनाश। बरबादी। ३ मिश्रण। ४ लडना भिडना (को०)।

व्यतीत—वि० [स०] १. बीता हुआ। गत। जैसे,—बहुत दिन व्यतीत हो गए, वहाँ से कोई उत्तर नही आया। उ०—इसी प्रकार कभी व्यतीत वर्ष मे लेकर।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१। २ मृत। मरा हुआ (को०)। ३ विसर्जित। परित्यक्त (को०)। ४ उपेक्षित। अवज्ञात (को०)। ५ लापरवाह। दीर्घसूत्री (को०)।

व्यतीतकाल—वि० [स०] जिसका समय या अवसर बीत चुका हो। असामयिक (को०)।

व्यतीतना(पु)—क्रि० अ० [स० व्यतीत + हिं० ना (प्रत्य०)] बीतना। गत होना। व्यतीत होना।

व्यतीपात—सज्ञा पुं० [स०] १. बहुत बडा उत्पात। भारी उपद्रव। जैसे—भूकप, उल्कापात आदि। २ अपमान। बेइज्जती। ३ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से १७वाँ योग जिसमे यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है। ४ एक प्रकार का योग जो अमावास्या के दिन रविवार या श्रवण, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अथवा मृगशिरा नक्षत्र होने पर होता है। इस योग मे गगास्नान का बहुत माहात्म्य है। ५ पूर्णत. विचलन या प्रयाण (को०)।

व्यतीहार—सज्ञा पु० [स०] १ विनिमय। परिवर्तन। बदला। २ आपस मे गाली गलौज, मारपीट या इसी प्रकार का और काम करना।

व्यत्यय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यतिक्रम'।

व्यत्ययग—वि० [स०] विपरीतगामी। उलटा चलनेवाला (को०)।

व्यत्यस्त—वि० [स०] १ व्यतिक्रात। २ असगत। ३ विपरीत। विरोधी। ४ इस प्रकार रखी हुई दो वस्तुएँ जो एक दूसरो को काटती हो।

व्यत्यास—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यतिक्रम'।

व्यथक—सज्ञा पु० [स०] वह जो व्यथा उत्पन्न करता हो। पीडा देनेवाला।

व्यथन—सज्ञा पु० [स०] १. व्यथा। पीडा। तकलीफ। २ वह जो व्यथा उत्पन्न करता हो। पीडा देनेवाला। ३. कपन (को०)। ४ स्वर का परिवर्तन (को०)। ५ छेदना (को०)।

व्यथयिता—वि० [स० व्यथयितृ] १. पीडा देनेवाला। २ दडित करनेवाला (को०)।

व्यथा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पीडा। वेदना। तकलीफ। २ दुख। क्लेश। ३ भय। डर। ४ विक्षोभ। अशाति (को०)। ५ रोग (को०)। ६ हानि। क्षति (को०)।

व्यथातुर—वि० [स०] पीडित।

व्यथान्वित—वि० [स०] १ व्यथायुक्त। पीडायुक्त। २. भयग्रस्त। भीत। ३ क्षुब्ध। ४. दुखित (को०)।

व्यथित—वि० [स०] १ जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो। २ दुखित। रजीदा। ३. जिसे किसो प्रकार का शोक प्राप्त हुआ हो। ४. भीत। डरा हुआ।

व्यथी—वि० [स० व्यथिन्] व्यथित (को०)।

व्यथ्य—वि॰ [सं॰] १. व्यथा देने योग्य। २. भय उत्पन्न करनेवाला। भयानक।

व्यध—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ चोट पहुँचाना। आहत करना। २. भेदन। छिद्र करना। ३. आघात (को॰)।

व्यधन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वेधने की क्रिया। विद्ध करना। बींधना। २ आर्लेट (को॰)। ३ वह जो विद्ध करता हो। वेधक (को॰)।

व्यधा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] रक्त का गिरना या बहना। रक्तस्राव (को॰)।

व्यधिकरण¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] भिन्न आधार पर होना।

व्यधिकरण²—वि॰ १ व्याकरण में अन्य कारक से संबद्ध। २ भिन्न आधारवाला (को॰)।

व्यधिक्षेप—संज्ञा पुं॰ [सं॰] निंदा। शिकायत।

व्यध्य¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. प्रत्यंचा। २ लक्ष्य (को॰)।

व्यध्य²—वि॰ वेधने योग्य। भेदन करने योग्य (को॰)।

व्यध्व—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ गलत रास्ता। बुरी राह। कुपथ। २ मार्ग का मध्य (को॰)।

व्यनुनाद—संज्ञा पुं॰ [सं॰] तीव्र प्रतिध्वनि। ऊँची गूँज (को॰)।

व्यपकर्ष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] निंदा। अपवाद (को॰)।

व्यपकृष्ट—वि॰ [सं॰] १. दूर हटाया हुआ। पृथक् किया हुआ। २. अपवादित जिसकी निंदा की गई हो (को॰)।

व्यपगत—वि॰ [सं॰] १ बीता हुआ। गया हुआ। २ रहित। वंचित। ३ गिराया हुआ। मुक्त। ४. हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

व्यपगम—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ बीतना। व्यतीत होना। ३. गमन। जाना। प्रस्थान (को॰)।

व्यपत्रप—वि॰ [सं॰] लज्जाहीन। बेहया (को॰)।

व्यपदिष्ट—वि॰ [सं॰] १. निदित। तिरस्कृत। २ दिखाया हुआ। निर्दिष्ट। ३. बहाने या व्याज के रूप में प्रतिपादित (को॰)।

व्यपदेश—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. निंदा। शिकायत। २ व्याख्या। विवरण। (जैन)। ३ सूचना। संदेश (को॰)। ४ नामकरण। नाम रखना (को॰)। ५. नाम। अल्ल। उपाधि (को॰)। ६ परिवार। वंश (को॰)। ७ ख्याति। यश। प्रसिद्धि (को॰)। ८. छल। कपट। चाल (को॰)। ९. चालबाजी। चालाकी (को॰)। १०. सयुक्ति। मनोरथ। [illegible] (को॰)।

व्यपदेशक—वि॰ [सं॰] व्यपदेश करनेवाला। नाम का निर्देश करनेवाला (को॰)।

व्यपदेशी—वि॰ [सं॰ व्यपदेशिन्] १. सूचक। २ नाम या उपाधिवाला। ३. सलाह या निर्देशानुसार चलनेवाला (को॰)।

व्यपदेश्य—वि॰ [सं॰] १. व्यपदेश या निंदा के लायक। निंद्य। २ जिसका निर्देश किया जाय (को॰)।

व्यपदेष्टा—वि॰ [सं॰ व्यपदेष्टृ] १ निर्देशक। निर्देश करनेवाला। २. छली। कपटी। वंचक (को॰)।

व्यपनय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. [illegible]। बरबादी। २. छोड़ देना। त्याग। ३. दुर्व्यवहार। [illegible] (को॰)। ४. हटाना। दूर करना (को॰)।

व्यपनयन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [illegible]। त्याग।

व्यपनीत—वि॰ [सं॰] दूर हटाया हुआ। दूर [illegible]।

व्यपनुत्ति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] त्याग। दूर करना या हटाना (को॰)।

व्यपमूर्धा—वि॰ [सं॰ व्यपमूर्धन्] मूर्धहीन, [illegible] (को॰)।

व्यपयान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पलायन होना। भाग जाना। [illegible] हवा होना (को॰)।

व्यपरोपण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ व्यपरोपित] १. [illegible]। २. काटना। ३. जड़ से काटना। ४. दूर करना। हटाना। ५. आघात पहुँचाना। पीड़ा पहुँचाना। (को॰)।

व्यपवर्ग—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ अलग होना। [illegible]। विभाग। २. छोड़ना। त्याग। ३ पूर्णता। अंत।

व्यपवर्जन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ व्यपवर्जित] १ [illegible]। त्याग। २. निराकरण। ३. [illegible]। दान।

व्यपवर्तन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] व्यावर्तन, लौटना (को॰)।

व्यपवृक्त—वि॰ [सं॰] १ अलग या पृथक् किया हुआ। २. विभाजित। बाँटा हुआ (को॰)।

व्यपसारण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दूर करना। [illegible] (को॰)।

व्यपाकृत—वि॰ [सं॰] [illegible]। रहित (को॰)।

व्यपाकृति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. दूर करना। [illegible]। २. अपह्नव। गोपन। छिपाव। ३. [illegible]। [illegible] इनकार करना (को॰)।

व्यपाय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ अंत। नाश। समाप्ति। २ अनुपस्थिति। गमन (को॰)।

व्यपाश्रय¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. आश्रयस्थान। २. आधार। ३. विराम। ४ प्रस्थान। ५. [illegible]। [illegible]। ६. शरण लेना। सहारा लेना। निर्भर होना। ७ [illegible]।

व्यपाश्रय²—वि॰ १ आश्रयहीन। २. [illegible] (को॰)।

व्यपाश्रयणा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] निवसन। [illegible] (को॰)।

व्यपाश्रित—वि॰ [सं॰] जिसने आश्रय प्राप्त किया हो। जिसने सहारा पा लिया हो (को॰)।

व्यपास्त—वि॰ [सं॰] [illegible]। [illegible] (को॰)।

व्यपेक्ष—वि॰ [सं॰] १ आदा या आशा [illegible]। [illegible]। आकांक्षा। २. उत्सुक। आतुर। [illegible]। आशा। [illegible]। ४. निरपेक्ष। निर्लिप्त (को॰)।

व्यपेक्षक—वि॰ [सं॰] [illegible]। [illegible]। [illegible] (को॰)।

व्यपेक्षण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [illegible]। [illegible]। [illegible] (को॰)।

व्यपेक्षा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. आकांक्षा। [illegible]। [illegible]। २ [illegible]। [illegible]। ३. [illegible] (को॰)। ४ [illegible]। [illegible]। [illegible] (को॰)। ५. [illegible] (को॰)। ६. [illegible] प्रयोग (को॰)।

व्यपेक्षित—वि॰ [सं॰] १. [illegible]। २. [illegible]। ३. [illegible]। ४. [illegible]। [illegible]। [illegible] (को॰)।

व्यपेत—वि० [सं०] १. मुक्त। अलग किया हुआ। २. गत। ३. नष्ट। ४. प्रतीप। विपरीत। असाधु। दुष्ट (को०)।

यौ०—व्यपेतकल्मष = जो दोष या पापमुक्त हो। व्यपेतघृण = दयारहित। व्यपेतधैर्य = धैर्यहीन। धीरतारहित। जिसे ढाढस न हो। व्यपेतभय = निर्भय। व्यपेतभी = निडर। निर्भय। व्यपेतमद = जिसका गर्व नष्ट हो गया हो। निरभिमान। व्यपेतहर्ष = हर्षरहित। विगतहर्ष।

व्यपोढ—वि० [सं०] १. दूरीकृत। दूर किया हुआ। २. प्रकटित। व्यक्त। दिखाया हुआ। ३. विपरीत। अननुकूल (को०)।

व्यपोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनाश। बरबादी। २. दूर करना। निवारण (को०)। ३. प्रत्याख्यान। अस्वीकार (को०)। ४. समूह। निश्चय। चय (को०)।

व्यपोह्य—वि० [सं०] स्वीकार न करने योग्य (को०)।

व्यभिचरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'व्यभिचार'। २. निश्चयहीनता। अनिश्चय। संदेह (को०)।

व्यभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा या दूषित आचार। दुष्कर्म। कदाचार। बदचलनी। २. स्त्री का परपुरुष से अथवा पुरुष का परस्त्री से अनुचित संबंध। छिनाला। ३. न्याय के अनुसार साध्य के न होने पर भी हेतु की उपस्थिति। साध्यरहित हेतु (को०)। ४. अतिक्रमण। उल्लंघन (को०)। ५. अलग होने की शक्ति। विच्छेद्यता (को०)। ६. असंगति। अपवाद। ७. पाप। दोष (को०)।

व्यभिचारकृत्—वि० [सं०] परस्त्रीगामी। व्यभिचारी (को०)।

व्यभिचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुराचार करनेवाली स्त्री। असती। कुलटा। पुंश्चली। २. अस्थिर बुद्धि। बुद्धि जो स्थिर न रहे (को०)।

व्यभिचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्यभिचार'।

व्यभिचारित्व—संज्ञा पुं० [सं०] व्यभिचारी होने का भाव। दे० 'व्यभिचार'।

व्यभिचारिभाव—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में मुख्य भाव की पुष्टि करनेवाले वे भाव जो इसके उपयोगी होकर जल के तरंगों की भाँति उनमें संचरण करते हैं। इनकी संख्या ३३ है। दे० 'संचारी'।

व्यभिचारी—संज्ञा पुं० [सं० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. वह जो अपने मार्ग से गिर गया हो। मार्गभ्रष्ट। उ०—हे प्रभु अविगति कला तुम्हारी। हम हैं कीट जीव व्यभिचारी।—कबीर सा०, पृ० ४३९। २. वह जिसकी चालचलन अच्छी न हो। बदचलन। ३. वह जो परस्त्रियों से संबंध रखता हो। परस्त्रीगामी। ४. दे० 'संचारी' या 'व्यभिचारिभाव'। ५. वह जो नियमविरुद्ध हो। असंगत (को०)। ६. असत्य। मिथ्या (को०)। ७. वह जो स्थिर न रहे। अस्थायी (को०)। ८. वह जो किसी व्यवस्था, नियम आदि का भंग या उल्लंघन करता हो (को०)। ९. वह शब्द जिसके कई गौण अर्थ हों।

व्यभिहास—संज्ञा पुं० [सं०] उपहास। ठट्ठा। मजाक।

व्यभीचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अतिक्रमण। उल्लंघन। २. कुकर्म। अनैतिक आचरण। ३. परिवर्तन। दे० 'व्यभिचार' (को०)।

व्यभीमान—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रांत या गलत धारणा (को०)।

व्यभ्र—वि० [सं०] निर्मेघ। निरभ्र। बिना बादल का (को०)।

व्यम्ल—वि० [सं०] अम्लरहित। जिसमें अम्लता न हो (को०)।

व्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ का, विशेषतः धन आदि का, इस प्रकार काम में आना कि वह समाप्त हो जाय। किसी चीज का किसी काम में लगना। खर्च। सरफा। सफत। जैसे,—(क) उनका व्यय १००) मासिक है। (ख) व्यर्थ अपनी शक्ति व्यय मत करो। २. नाश। बरबादी। ३. दान। ४. छोड़ देना। परित्याग। ५. बृहस्पति के चार के एक वर्ष या संवत्सर का नाम। ६. महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ७. रुकावट। अड़चन (को०)। ८. अपव्यय। फजूलखर्ची (को०)। ९. धन। संपत्ति। १०. जन्मकुंडली में लग्न से १२वाँ स्थान (को०)। ११. व्याकरण में विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय। शब्दरूपांतर (को०)।

व्ययक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्यय करता हो। व्यय करनेवाला।

व्ययकरण, व्ययकरणक—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्मचारी जो वेतन बाँटने का काम करे (को०)।

व्ययगत—वि० [सं०] सब कुछ व्यय कर डालनेवाला (को०)।

व्ययगामी—वि० [सं० व्ययगामिन्] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लग्न से १२ वें स्थान में गमन करनेवाला। उ०—उनका सौम्य ग्रह बुध व्ययगामी होकर निर्बल हो गया है।—शुक्ल अभि० ग्रं०, पृ० ६८।

व्ययगुण—वि० [सं०] सब कुछ खर्च करनेवाला।

व्ययगृह—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार लग्न से बारहवाँ स्थान (को०)।

व्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] खर्च करना। २. बर्बाद करना। नष्ट करना (को०)।

व्ययपराङ्मुख—वि० [सं०] कृपण (को०)।

व्ययमान—वि० [सं०] अपव्यय करनेवाला (को०)।

व्ययशाली—वि० [सं० व्ययशालिन्] खर्च करनेवाला। शाहखर्च। अमितव्ययी (को०)।

व्ययशील—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बहुत अधिक खर्च करता हो। खर्चीले स्वभाव का। शाहखर्च।

व्ययसह—वि० [सं०] (वह कोश या खजाना) जो रिक्त न हो (को०)।

व्ययसहिष्णु—वि० [सं०] धन की हानि या अधिक व्यय को बर्दाश्त करनेवाला (को०)।

व्ययित—वि० [सं०] १. खर्च किया हुआ। व्यय किया हुआ। २. बर्बाद। नष्ट (को०)।

व्ययी—संज्ञा पुं० [सं० व्ययिन्] वह जो बहुत व्यय करता हो। खूब खर्च करनेवाला। शाहखर्च।

व्यर्ण—वि० [सं०] १. जलरहित। जलहीन। २. सताया हुआ। उत्पीड़ित (को०)।

व्यर्थ¹—वि० [सं०] १. जिसका कोई अर्थ या प्रयोजन न हो। बिना मतलब का। निरर्थक। २ जिसका कोई अर्थ या मतलब न हो। बिना माने का। अर्थरहित। ३. जिसमे किसी प्रकार लाभ न हो। ४. सपत्तिहीन। धनहीन (को०)। ५ असगत (को०)।

व्यर्थ²—क्रि० वि० बिना किसी मतलब के। फजूल। यो ही। जैसे,—वह दिन भर व्यर्थ घूमा करता है।

व्यर्थक—वि० [सं०] व्यर्थ। निष्फल (को०)।

व्यर्थता—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्यर्थ होने का भाव।

व्यर्थनामक—वि० [सं०] दे० 'व्यर्थनामा' (को०)।

व्यर्थनामा—वि० [सं० व्यर्थनामन्] जिसमे नाम के अनुरूप गुण न हो। जिसका नाम व्यर्थ हो (को०)।

व्यर्थयत्न—वि० [सं०] जिसके लिये प्रयत्न बेकार हो (को०)।

व्यलीक¹—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय। अपराध। कसूर। ३ डाँट डपट। फटकार। ४. दु ख। कष्ट। तकलीफ। ५ पीठमर्द। विट। ६ विलक्षणता। अद्भुतता। ७. कपट। छल। उ०—भोर भयो जागहु रघुनदन। गत व्यलीक भगतनि उर चदन। —तुलसी (शब्द०)। ८. मिथ्यापन (को०)। ९. व्युत्क्रम। वैपरीत्य (को०)। १० कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु (को०)। ११. कामुक। रसिक नागर (को०)। १२. वह जो अप्राकृतिक मैथुन कराए। लौंडा (को०)। १३ दोष। पाप (को०)।

व्यलीक²—वि० १ जो अच्छा न हो। अप्रिय। २ दु ख देनेवाला। कष्टदायक। ३. बिना जान पहिचान का। अपरिचित। ४ विलक्षण। अद्भुत। अजीब। ५ मिथ्या। झूठा। असत्य (को०)। ६. जो असत्य या अलीक न हो (को०)। ७ अकरणीय (को०)।

व्यलीक निःश्वास—सज्ञा पुं० [सं०] शोक का उच्छ्वास। लबी साँस (को०)।

व्यवकलन—सज्ञा पु० [सं०] १ एक अक या रकम मे से दूसरा अंक या रकम घटाना। बाकी निकालना। २ अलग करना। पृथक्ता। अलगाव (को०)।

व्यवकलित¹—वि० [सं०] १. घटाया हुआ। बाकी निकाला हुआ। २ पृथक् किया हुआ। वियोजित (को०)।

व्यवकलित²—सज्ञा पु० दे० 'व्यवकलन' (को०)।

व्यवकिरण—सज्ञा स्त्री० [सं०] घालमेल। मिश्रण (को०)।

व्यवकीर्ण—वि० [सं०] १. अलग किया हुआ। निकाला हुआ। जुदा किया हुआ। फैलाया हुआ। २. मिश्रित। पूरित। भरा हुआ (को०)।

व्यवक्रोशन—सज्ञा पुं० [सं०] १ निंदा। २ कहासुनी। गालीगलौज। तू तू मैं मैं (को०)।

व्यवगाढ—वि० [सं० व्यवगाढ] डूबा हुआ। निमज्जित। निमग्न (को०)।

व्यवगृहीत—वि० [सं०] नम्रीकृत। विनत किया हुआ। झुकाया या नीचा किया हुआ (को०)।

व्यवच्छिन्न—वि० [सं०] १ अलग अलग। जुदा। २ विभाग करके अलग किया हुआ। विभक्त। ३ निर्धारण किया हुआ। निर्धारित। निश्चित। ४ अवरुद्ध। बाधित (को०)। ५. विशेषित। विशिष्ट। अंकित (को)।

व्यवच्छेद—सज्ञा पु० [सं०] १ पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २ विभाग। खड। हिस्सा। ३. विराम। ठहरना। ४. निवृत्ति। छुटकारा। उ०—अपने को समझना चाहती हूँ, इससे अपना ही व्यवच्छेद करती चलूँगी।—सुखदा, पृ० १३। ५ (बाण आदि) छोड़ना। चलाना। नखना (को०)। ६ नाश (को०)। ७. निर्धारण। निश्चयन (को०)। ८. ग्रथादि का अध्याय, खड या विभाग (को०)। ९ विशेष निर्देश। विशिष्टता निर्देशन (को०)। १०. (शव आदि का) काटना। चीरफाड। अग छेदन (को०)। ११. विशिष्टता। वैशिष्ट्य (को०)।

व्यवच्छेदक—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्यवच्छेद या अलग करता हो।

व्यवच्छेदविद्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर विज्ञान। शरीर रचना-विज्ञान (को०)।

व्यवदात—वि० [सं०] स्वच्छ। अवदात। निर्मल (को०)।

व्यवदान—सज्ञा पु० [सं०] किसी पदार्थ को शुद्ध और साफ करने की क्रिया। सस्कार। सफाई।

व्यवदीर्ण—वि० [सं०] १. विदीर्ण। टुकडे टुकडे किया हुआ। छिन्न भिन्न। २ व्यग्र। विह्वल। विक्षिप्त। भ्रात (को०)।

व्यवधा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवधान। परदा। २ वह जो बीच मे आ पडे (को०)। ३ छिपाव। गोपन। दुराव (को०)।

व्यवधाता—वि० [सं० व्यवधातृ] १ व्यवधान उपस्थित करनेवाला। २ अलग करनेवाला (को०)।

व्यवधान—सज्ञा पु० [सं०] १. वह चीज जो बीच मे पडकर आड करती हो। परदा। उ०—समाधि शरीर के व्यवधान को पार कर आत्मा से परमात्मा का सयोग कराने का साधन है।—ज्ञानदान, पृ० १७। २. भेद। विभाग। खड। ३ विच्छेद। अलग होना। ४ खतम होना। समाप्ति। ५ बाधा (को०)। ६ अतराल। अवकाश (को०)। ७ छिपाव। दुराव (को०)। ८. ढकना। आवरण (को०)। ९ व्याकरण मे किसी मात्रा या अक्षर का बीच मे आ पडना (को०)।

व्यवधायक—सज्ञा पु० [सं०] १ वह जो आड मे जाता हो। छिपनेवाला। गायब होनेवाला। २ वह जो किसी को ढकता या छिपाता हो। आड करने या छिपानेवाला। ३ वह जो मध्य मे स्थित हो। मध्यवर्ती।

व्यवधारण—सज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह अवधारण या निश्चय करना।

व्यवधि—सज्ञा पु० [सं०] व्यवधान। परदा। आड। ओट।

व्यवधूत—वि० [सं०] वीतराग (को०)।

व्यवभासित—वि० [सं०] प्रकाशित किया हुआ (को०)।

व्यवलोकित—वि० [सं०] देखा हुआ। दृश्य (को०)।

व्यवशाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोड देना । २ त्याग । ३ पीछे की ओर गिरना या हटना ।

व्यवसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का विभाग करने की क्रिया । बांट । २ मुक्ति । छुटकारा । ३ देना (को०) । ४. त्याग । परित्याग (को०) ।

व्यवसाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कार्य जिसके द्वारा किसी की जीविका का निर्वाह होता हो । जीविका । जैसे,—दूसरो की सेवा करना ही उसका व्यवसाय है । २ रोजगार । व्यापार । जैसे०—आजकल कपडे का व्यवसाय कुछ मदा है । ३ कोई कार्य आरंभ करना । ४ निश्चय । ५. प्रयत्न । उद्योग । कोशिश । ६ उद्यम । काम धधा । ७ इच्छा । विचार । कल्पना । ८ अभिप्राय । मतलब । ९ विष्णु का एक नाम । १० शिव का एक नाम । ११ अवस्था । परिस्थिति (को०) । १२. आचरण । १३ कौशल । कूटयुक्ति (को०) । १४ डीग । शेखी (को०) । १५. प्रथम अनुभूति (को०) । १६ धर्म के एक पुत्र का नाम जो दक्ष की एक कन्या वपुस् से उत्पन्न हुआ था (को०) ।

व्यवसायबुद्धि—वि० [सं०] पक्के इरादावाला । दृढनिश्चयी [को०] ।

व्यवसायवर्ती—वि० [सं० व्यवसायवर्तिन्] पक्के इरादे से काम करनेवाला [को०] ।

व्यवसायात्मक—वि० [सं०] १ सकल्पयुक्त । निश्चयात्मक । दृढ । २ उत्साहयुक्त [को०] ।

व्यवसायात्मिका—वि० स्त्री० [सं०] सकल्पमय । दृढ [को०] ।

व्यवसायात्मिकाबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बुद्धि जो निश्चयात्मक या दृढ हो । निश्चयात्मिका बुद्धि [को०] ।

व्यवसायी[1]—संज्ञा पुं० [सं० व्यवसायिन्] १ वह जो किसी प्रकार का व्यवसाय करता हो । व्यवसाय करनेवाला । २ रोजगार करनेवाला । रोजगारी । ३ वह जो किसी कार्य का अनुष्ठान करता हो ।

व्यवसायी[2]—वि० १ उत्साही । उद्यमी । परिश्रमी । २ दृढ सकल्पवाला । धैर्यशाली । ३ किसी कार्य मे सलग्न [को०] ।

व्यवसित[1]—वि० [सं०] १ जिसका अनुष्ठान किया गया हो । व्यवसाय किया हुआ । २ जो कोई काम करने के लिये तैयार हो । उद्यत । तत्पर । ३ जो निश्चय किया जा चुका हो । निश्चित । ५ धैर्यवान् । ६. ठगा हुआ । वचित (को०) । ७ उत्तरदायित्व लेनेवाला (को०) ।

व्यवसित[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ निश्चय । निर्धारण । २ छल । वचना [को०] ।

व्यवसिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवसाय । रोजगार । २ सकल्प । निश्चय (को०) । ३ प्रयास । प्रयत्न । उद्यम (को०) ।

व्यवस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] किसी उक्ति या रचना के क्रम को बदल देना । उ०—किसी अन्य कवि की उक्ति के पहले और पीछे आनेवाले क्रम को बदलकर ग्रहण करना व्यवस्तक है ।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २६३ ।

व्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रो आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो ।

मुहा०—व्यवस्था देना = पडितो आदि का यह बतलाना कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत अथवा आज्ञा है । किसी विषय मे शास्त्रो का विधान बतलाना ।

२ चीजो को अलग अलग सजाकर या ठिकाने से रखना । ३ प्रबध । इतजाम । जैसे,—विवाह की सब व्यवस्था अपने ही हाथ मे है । ४ स्थिर होने का भाव । स्थिरता । स्थिति । ५ कानून । जैसे—भारत सरकार के व्यवस्था सदस्य । ६ दृढता । दृढ आधार (को०) । ७ सहमति (को०) । ८ अवस्था । दशा (को०) । ९ सबध । स्थिति (को०) । १० पृथक्ता । अलगाव (को०) । ११ निश्चित सीमा (को०) । १२ अध्यवसाय (को०) । १३ शर्त (को०) ।

व्यवस्थाता—संज्ञा पुं० [सं० व्यवस्थातृ] १ वह जो व्यवस्था करता हो । व्यवस्था या इतजाम करनेवाला । २ निश्चय करनेवाला । वह जो किसी व्यवस्था का निश्चय करे । ३ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय मे शास्त्रो की क्या आज्ञा है । शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला ।

व्यवस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपस्थित या अस्थिर होना । व्यवस्थिति । २ व्यवस्था । इतजाम । प्रबंध । ३ विष्णु का एक नाम । ४ विधान (को०) । ५ दृढता (को०) । ६ अध्यवसाय (को०) । ७ पार्थक्य (को०) । ८ अवस्था (को०) ।

व्यवस्थानप्रज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धो के अनुसार एक बहुत बडी सख्या का नाम ।

व्यवस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत है । व्यवस्था देनवाला । २ वह जो किसी कार्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो । ३ वह जो व्यवस्था या इतजाम करता हो । प्रबधकर्ता । इतजामकार । मैनेजर (आधुनिक प्रयोग) । ४ व्यवस्थापिका सभा का सदस्य (को०) । ५ निश्चय करनेवाला (को०) ।

व्यवस्थापक मडल—संज्ञा पुं० [सं०] वह समाज या समूह जिसे कानून कायदे बनाने और रद्द करने का अधिकार प्राप्त हो ।

व्यवस्थापक सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विधान सभा । व्यवस्थापिका सभा । उ०—स्वय, राज्य करने को अचानक प्रस्तुत हो गई थी, या व्यवस्थापक सभाओ को तोड स्वय, व्यवस्था करने को उठ खडी हुई थी ।—प्रेमधन०, भा० २, पृ० २७० ।

व्यवस्थापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमे किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या यह विधान लिखा हो कि अमुक विषय मे शास्त्र की क्या आज्ञा या मत है ।

व्यवस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी विषय मे शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना । यह बतलाना कि अमुक विषय में शास्त्रो का क्या आज्ञा अथवा मत है । २ किसी विषय मे कुछ निश्चय, निर्धारण या निरूपण करना ।

व्यवस्थापनीय—वि० [स०] व्यवस्थापन करने के योग्य।

व्यवस्थापिका परिषद्—संज्ञा स्त्री० [स०] अंग्रेजी शासनकाल की वह सभा या परिषद् जिसमे देश के लिये कानून कायदे आदि बनते थे। देश के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा। बडी व्यवस्थापिका सभा। (अं०) 'लेजिस्लेटिव एसेंबली', 'लोअर चेंबर', 'लोअर हाउस'।

विशेष—ब्रिटिश भारत भर के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा व्यवस्थापिका परिषद् या लेजिस्लेटिव कहलाती थी। इसके सदस्यो की सख्या १४३ होती थी, जिनमे से १०३ लोक निर्वाचित और ४० सरकार द्वारा मनोनीत (२५ सरकारी और १५ गैर सरकारी) सदस्य होते थे।

व्यवस्थापिका सभा—संज्ञा स्त्री० [स०] वह सभा जिसमे किसी प्रदेश-विशेष के लिये कानून कायदे आदि बनते थे। कानून कायदे बनानेवाली सभा। लेजिस्लेटिव कौंसिल।

व्यवस्थापित—वि० [स०] १ जिसके सबध मे कुछ निश्चय या निरूपण किया गया हो। व्यवस्था किया हुआ। जो नियमपूर्वक लगाया, रखा या किया गया हो। ३. जो नियम के अनुसार हो। नियमित।

व्यवस्थाप्य—वि० [स०] जो व्यवस्थापन करने के योग्य हो।

व्यवस्थावादी—वि० [स० व्यवस्थावादिन्] व्यवस्था को माननेवाला। मर्यादावादी। उ०—तुलसी यदि घोर व्यवस्थावादी थे तो वह प्रेम को सारे नियमो के, समूची व्यवस्था के, ऊपर क्यो मानते हैं।—आचार्य०, पृ० १०६।

व्यवस्थित—वि० [स०] १ जिसमे किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। जो ठीक नियम के अनुसार हो। कायदे का। जैसे,—वे सभी काम व्यवस्थित रूप से किया करते हैं। २ व्यूहबद्ध (को०)। ३ स्थिर (को०)। ४ अलग या एक ओर रखा हुआ। (को०)। ५ (रस आदि) निकाला हुआ (को०)। ६. आधारित। अवलंबित (को०)।

व्यवस्थित विभाषा—संज्ञा स्त्री० [स०] व्याकरण शास्त्र के अनुसार निश्चित विकल्प (को०)।

व्यवस्थित विषय—वि० [स०] सीमित क्षेत्रवाला (को०)।

व्यवस्थिति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ उपस्थित या स्थिर होना। व्यवस्था। इंतजाम। ३. दे० व्यवस्थान (को०)।

व्यवहरण—संज्ञा पु० [स०] अभियोगो आदि का नियमानुसार विचार। मुकदमे की सुनाई या पेशी। व्यवहार।

व्यवहर्ता—संज्ञा पुं० [स० व्यवहर्तृ] वह जो व्यवहार शास्त्र के अनुसार किसी अभियोग आदि का विचार करता हो। न्यायकर्ता।

व्यवहार—संज्ञा पुं० [स०] १. क्रिया। कार्य। काम। २. आपस मे एक दूसर के साथ बरतना। बरताव। जैसे,—हमारा उनका इस तरह का व्यवहार नही है। ३. व्यापार। रोजगार। ४. लेनदेन का काम। महाजनी। ५ झगडा। विवाद ६. न्याय। ७. शर्त। पण। ८ स्थिति ९. दो पक्षो मे होनेवाला वह झगडा जिसका फैसला अदालत मे हो। मुकदमा। १० प्रयोग (को०)। ११. आचरण (को०)। १२. रीति। प्रथा। रिवाज (को०)। १३. पेशा। धंधा (को०)। १४ रब्त। मेलजोल (को०)। १५ कामधाम सम्हालने की योग्यता (को०)। १६ पद (को०)। १७ तलवार। खड्ग (को०)। १८. अभियोग या मामले की छानबीन (को०)। १९ दड (को०)। २०. एक वृक्ष (को०)।

व्यवहारक—संज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका जीविका व्यवहार से चलती हो। वह जो न्याय या वकालत आदि करता हो। २. वह जो वयस्क हो गया हो। बालिग।

व्यवहारजीवी—संज्ञा पुं० [स० व्यवहारजीविन्] वह जो व्यवहार या वकालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाता हो।

व्यवहारज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता हो। २ व्यवहार या तौर तरीका जाननेवाला। ३. वह जो पूर्ण वयस्क हो गया हो। बालिग।

व्यवहार तंत्र—संज्ञा पु० [स० व्यवहार तन्त्र] आचार शास्त्र (को०)।

व्यवहारत्व—संज्ञा पुं० [स०] व्यवहार का भाव या धर्म।

व्यवहारदर्शन—संज्ञा पुं० [स०] किसी अभियोग मे न्याय और अन्याय अथवा सत्य और मिथ्या का निर्णय करना।

व्यवहारद्रष्टा—संज्ञा पुं० [स० व्यवहारद्रष्टृ] न्यायाधीश (को०)।

व्यवहारपद—संज्ञा पुं० [स०] विवाद का विषय। मुकदमे का मामला।

व्यवहारपाद—संज्ञा पु० [स०] १ व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तर, क्रियापाद और निर्णय इन चारो का समूह। २. इन चारो मे से कोई एक जो व्यवहार का एक पाद या अंश माना जाता है।

व्यवहारप्राप्त—वि० [स०] बालिग। वयस्क (को०)।

व्यवहारमातृका—संज्ञा स्त्री० [स०] वे क्रियाएँ जिनका व्यवहार मे उपयोग होता है। व्यवहार शास्त्र के अनुसार होनेवाली कारर-वाइयाँ। जैसे,—मुकदमा दायर होना, पेश होना, गवाहो का बुलाया जाना, उनको गवाही होना, जिरह और बहस होना, फैसला होना, आदि। मिताक्षरा के अनुसार ऐसी क्रियाएँ संख्या मे तीस हैं।

व्यवहारमार्ग—संज्ञा पु० [स०] मुकदमे का विषय।

व्यवहारमूल—संज्ञा पु० [सं०] अकरकरा। अकरकरहा।

व्यवहार लक्षण—संज्ञा पुं० [स०] व्यवहार या मुकदमे की जाँच विषयक विशेषता (को०)।

व्यवहार विधि—संज्ञा स्त्री० [स०] वह शास्त्र जिसमे व्यवहार संबंधी बातो का उल्लेख हो। वह शास्त्र जिसमे व्यवहार या मुकदमो आदि का विधान हो। धर्मशास्त्र।

व्यवहार विषय—संज्ञा पु० [स०] मुकदमे की कार्रवाई का क्रम (को०)।

व्यस्थक—वि० [स०] अस्थिहीन (को०)।

व्यह्न—सज्ञा पुं० [स०] कल का वीता हुआ दिन।

व्याकरण—सज्ञा पु० [स०] वह विद्या या शास्त्र जिसमे किसी भाषा के शब्दो के शुद्ध रूपो और वाक्यो के प्रयोग के नियमो आदि क निरूपण होता है। भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र।

विशेष—व्याकरण मे वर्णो, शब्दो और वाक्यो का विचार होता है, इसीलिये इसके वर्णविचार, शब्दसाधन और वाक्यविन्यास, ये तीन मुख्य विभाग होते हैं। व्याकरण के नियम प्राय लिखी हुई और प्रचलित भाषा के आधार पर निश्चित किए जाते है, क्योकि वोलने मे लोग प्राय प्रयोगो की शुद्धता पर उतना अधिक ध्यान नही रखते। व्याकरण मे शब्दो के अलग भेद कर लिए जाते हैं, जैसे, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम आदि, और तब इस वात का विचार किया जाता है कि इन शब्दभेदो का ठीक ठीक और शुद्ध प्रयोग क्या है। हमारे यहाँ व्याकरण की गणना वेदाग मे की गई है।

२ विग्रह। विश्लेषण (को०)। ३ व्याख्या। स्पष्ट करना। प्रकाशन (को०)। ४ अतर। विभेद। भेद (को०)। ५ धनुष की टकार (को०)। ६ भविष्यकथन। अनागत कथन (को०)। ७ विस्तार (को०)।

व्याकरणक—सज्ञा पु० [स०] हीन कोटि का व्याकरण (को०)।

व्याकरणप्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० [म०] शब्द की व्युत्पत्ति (को०)।

व्याकरणसिद्ध—वि० [स०] व्याकरण के नियमानुसार व्युत्पन्न (को०)।

व्याकरणोत्तर—सज्ञा पु० [स०] शिव (को०)।

व्याकर्त्ता—सज्ञा पुं० [स० व्याकर्तृ] १ सृष्टि की रचना करनेवाला, परमेश्वर। २ व्याख्या या विश्लेषण करनेवाला।

व्याकर्षण—सज्ञा पु० [स०] विशेष रूप से अपनी ओर खीचना। आकृष्ट करना (को०)।

व्याकार—सज्ञा पुं० [स०] १ विकृत वा परिवर्तित आकार। किसी पदार्थ का विगडा या वदला हुआ आकार। २. व्याख्या।

[illegible] ०] १. जो चारो ओर अच्छी तरह फैलाया गया

(को०)। यवहारिकजीव—स[illegible] र्ण। अस्तव्यस्त (को०)। ३. क्षुब्ध। घवडाया जो ज्ञानेंद्रिय के (को०)।

[illegible] हारिका—सज्ञा [illegible] ० व्याकुञ्चित] १ मुडा हुआ। सिमटा हुआ। व्यवहार या टेढ़ामेढा। वक्र (को०)।

हुआ (वस्त्रा[illegible] [illegible] री—सज्ञा पु [स०] १ वह जो भय या दु ख के कारण इतना [illegible] ाला। [illegible] ा हो कि कुछ समझ न सके। बहुत घवराया हुआ। तालश [illegible] (को०)। २ जिसे किसी बात की बहुत अधिक उत्कठा या [illegible] ना हो। ३ कातर। ४ वह जो इधर उधर चलता, दमकता या हिलता डुलता हो। (को०)। ५ वह जो किसी से आवृत वा पूरित हो (को०)।

यौ०—व्याकुलचित्त = व्याकुलचेता। व्याकुलमना। व्याकुललोचन।

व्याकुलचेता—वि० [म० व्याकुलचेतस्] व्याकुल चित्तवाला। घबराया हुआ (को०)।

व्याकुलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्याकुल होने का भाव। विकलता। घवराहट। २ कातरता।

व्याकुलमना—वि० [स० व्याकुलमनस्] व्यग्रचित्त। उद्विग्नहृदय (को०)।

व्याकुलमूर्धज वि० [स०] विखरे हुए केशोंवाला (को०)।

व्याकुललोचन—वि० [सं०] मद दृष्टिवाला (को०)।

व्याकुलात्मा—वि० [स० व्याकुलात्मन्] उद्विग्न। चित कुल (को०)।

व्याकुलित—वि० [म०] १ व्याकुल चित्तवाला। २. डरा हुआ (को०)।

यौ०—व्याकुलितचित्त, व्याकुलितमना, व्याकुलितहृदय = (१) आक्रात। अभिभूत। (२) भयभीत। (३) घबराया हुआ।

व्याकुलितेद्रिय—वि० [स० व्याकुलितेन्द्रिय] व्यग्रचित्त (को०)।

व्याकुलेद्रिय—वि० [स० व्याकुलेन्द्रिय] दे० 'व्याकुलितेंद्रिय'।

व्याकूत—सज्ञा पुं० [स०] चिता। खेद (को०)।

व्याकूति—सज्ञा स्त्री० [स०] छल। धोखा। फरेव।

व्याकृत—वि० [सं०] १ विश्लिष्ट। विग्रह किया हुआ। २ व्याख्या किया हुआ। व्याख्यात। ३ अभिव्यक्त। प्रकाशित। ४ परिवर्तित। वदला हुआ। विकृत। उ०—प्राज्ञ अभिमानी जु व्याकृत तम गुण रूप। ईश्वर तहँ देवता भोग आनद स्वरूप। —सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६८।

व्याकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रकाश मे लाने का काम। २ व्याख्या करने का काम। व्याख्यान। ३. व्याकरण (को०)। ४ रूप मे परिवर्तन करने का काम।

व्याकोच—वि० [स०] प्रफुल्लित। पूर्ण विकसित (को०)।

व्याकोप—सज्ञा पुं० [स०] विरोध। प्रत्याख्यान (को०)।

व्याकोश, व्याकोष—सज्ञा पुं० [स०] १ विकास। २ स्फुटित होना। खिलना।

व्याक्रन पु—सज्ञा पुं० [स० व्याकरण, प्रा० वागरण अप० वागरण] दे० 'व्याकरण'। उ०—त कवि आय कव्व पढ़ि सत्ते। गुरु व्याक्रन कहै मन मत्ते।—पृ० रा०, ६१।४६७।

व्याक्रन्न पु—सज्ञा पु० [स० व्याकरण] व्याकरण विद्या या शास्त्र। उ०—व्याक्रन्न कथा नाटक्क छद।—पृ० रा०, १।७३६।

व्याक्रोश—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी का तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २ चिल्लाना। चिल्लाहट।

व्याक्रोशी—सज्ञा स्त्री० [म०] दे० 'व्याक्रोश' (को०)।

व्याक्षिप्त—वि० [म०] १. व्याकुल। हतवुद्धि। घवडाया हुआ। २ फैलाया हुआ। विकार्ण। ३. भरा हुआ। आवृत (को०)।

व्याक्षेप—सज्ञा पुं० [म०] १ विलव। देर। २. आकुल होने का भाव। घवराहट। ३ अवरोध। वाधा। रुकावट। विघ्न (को०)। ४ इतस्तत. क्षरण। जैसे, कटाक्षव्याक्षेप (को०)। ५. तिरस्कार। भर्त्सना (को०)।

व्याक्षेपी—वि० [स० व्याक्षेपिन्] हटानेवाला। दूर करनेवाला (को०)।

व्याक्षोभ—सज्ञा पु० [सं०] क्षोभ। अशाति। मानसिक विक्षोभ (को०)।

व्याख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल पद या वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। किसी बात को समझाने के लिये किया हुआ उसका विस्तृत और स्पष्ट अर्थ। टीका। व्याख्यान।

विशेष—शास्त्रों या सूत्रों आदि की जो व्याख्या होती है, उसके वृत्ति, भाष्य, वार्तिक, टीका, टिप्पणी आदि अनेक भेद माने गए हैं।

२ वह ग्रंथ जिसमे इस प्रकार अर्थविस्तार किया गया हो। ३ कहना। वर्णन।

व्याख्यागम्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार वादी के अभियोग का ठीक ठीक उत्तर न देकर इधर उधर की बातें कहना।

व्याख्यागम्य²—वि० जो व्याख्या अथवा टीका आदि की सहायता से समझा जा सके।

व्याख्यात—वि० [सं०] १ जिसकी व्याख्या की गई हो। २. कथित। वर्णित (को०)। ३. आक्रांत। अभिभूत। आकुल (को०)। ४ पराजित। वशीकृत (को०)।

व्याख्यातव्य—वि० [सं०] जो व्याख्या करने के योग्य हो या जिसकी व्याख्या की गई हो।

व्याख्याता—संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यातृ] १ वह जो किसी विषय की व्याख्या करता हो। व्याख्या करनेवाला। २ वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यात्मक—वि० [सं०] व्याख्या विषयक। जिसमे मूल विषय की व्याख्या की गई हो। उ०—रचनात्मक और व्याख्यात्मक आलोचनाओं के प्रतिपादन में भी जो दूसरे और तीसरे प्रकरणों के विषय हैं, मैं बराबर उनकी तुलना निर्णयात्मक आलोचना से करता रहा हूँ।—पा० सा० सि०, पृ० ४।

व्याख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. बोलकर कोई विषय समझाने का काम। भाषण। ३ वह जो कुछ व्याख्या रूप में या समझाने के लिये कहा जाय। भाषण। वक्तृता।

व्याख्यानशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता है। २ स्कूल या विद्यालय जहाँ विषय को व्याख्या करके समझाया जाता है (को०)।

व्याख्यास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्याख्यानशाला'।

व्याख्यास्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जो न बहुत ऊँचा हो और न बहुत नीचा। मध्यम स्वर।

व्याख्येय—वि० [सं०] जो व्याख्या करने के योग्य हो। वर्णन करने या समझाने लायक।

व्याघट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह रगड़ने का काम। संघर्षण। रगड़। २ मथना। बिलोना।

व्याघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। खलबल। बाधा।

क्रि० प्र०—पड़ना। —होना।

२ आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष के विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से तेरहवाँ योग जिसमें किसी प्रकार का शुभ कार्य करना वर्जित है।

विशेष—कुछ लोगों का मत है कि इसके पहले छह दंडों को छोड़कर शेष समय में शुभ काम किए जा सकते हैं। कहते हैं, इस योग में जो बालक जन्म ग्रहण करता है, वह साधुओं के काम में विघ्न करनेवाला, कठोर, झूठा और निर्दय होता है।

४ काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय के द्वारा अथवा एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है। उ०—(क) जामा काटत जगत के बंधन दीन दयाल। ता चितवनि सों तियन के मन बाँधे गोपाल। (ख) नाम प्रभाव जान शिव नीके। कालकूट फल दीन अमी के। (ग) रण से हूबे को अमर भागत कादर कूर। यह चाहि चित कार नहीं बिचलत साँचे सूर। (घ) मिलत एक दारुन दुख देहीं। बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। ५. विप्रतिषेध। वचनविरोध। ६. विरोधी आचरण (को०)। ७ पराजय। हार (को०)। ८. क्षोभ (को०)।

व्याघातक—वि० [सं०] १ बाधक। विरोधी। २ आघात या प्रहार करनेवाला (को०)।

व्याघातिम—संज्ञा पुं० [सं०] आघात से होनेवाली तात्कालिक मृत्यु (को०)।

व्याघाती—वि० [सं० व्याघातिन्] दे० 'व्याघातक'।

व्याघारण—संज्ञा पुं० [सं०] छौंकना। छींटा देना। बघारना (को०)।

व्याघारित—वि० [सं०] बघारा हुआ। तेल या घी को गरम करके उससे छौंका हुआ (को०)।

व्याघुटन—संज्ञा पुं० [सं०] परावर्तन। लौटना। वापस होना (को०)।

व्याघुष्ट—वि० [सं०] ध्वनित। गूँजता हुआ। गुंजित (को०)।

व्याघूर्णित—वि० [सं०] १ चक्कर खाया हुआ। २ गिरा हुआ (को०)।

व्याघ्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जंतु। विशेष दे० 'शेर'। २. लाल रेंड। ३. करंज। ४ एक राक्षस का नाम (को०)।

व्याघ्र²—वि० सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। प्रधान।

विशेष—इसका प्रयोग समासांत में ही मिलता है; जैसे, नरव्याघ्र, पुरुषव्याघ्र।

व्याघ्रकंड—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रेंड।

व्याघ्रखड्डा—संज्ञा पुं० [सं०] बाघ या शेर का नाखून जो प्रायः बालकों के गले में उन्हें नजर लगने से बचाने के लिये पहनाया जाता है।

व्याघ्रगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणवर्णित एक पर्वत का नाम (को०)।

व्याघ्रग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. इस देश का निवासी।

व्याघ्रघटा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याघ्रघण्टा] किंकिणी या गोविंदी नाम की लता जो कोकण प्रदेश में अधिकता से होती है। वैद्यक के अनुसार यह पित्तवर्धक, उष्ण, रुचिकर और विष तथा कफ की नाशक मानी गई है।

व्याघ्रघटी—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याघ्रघण्टी] दे० 'व्याघ्रघटा'।

व्याघ्रचर्म—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रचर्मन्] बाघ या शेर की खाल जिसपर प्रायः लोग बैठते है, या जो शोभा के लिये कमरों आदि में लटकाई जाती है।

व्याघ्रतरु—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रेंड।

व्याघ्रतल—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रेंड। २ नखी या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] नख या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। बगनहा।

व्याघ्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याघ्र का भाव या धर्म।

व्याघ्रदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुल्म।

व्याघ्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] १ नख या व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। बगनहा। २ लाल रेंड।

व्याघ्रदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्याघ्रदल'।

व्याघ्रनख—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाघ या शेर का नाखून जो प्रायः बच्चो के गले में उन्हें नजर से बचाने के लिये पहनाया जाता है। २ नख या बगनहा नामक प्रसिद्ध गंधद्रव्य। विशेष दे० 'नख'। ३ थूहर। ४ बाघ के नख का आघात (को०)। ५ एक प्रकार का कंद। ६ † एक प्रकार का शस्त्र। बघनख।

व्याघ्रनखक—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याघ्रनख। २ नाखून के द्वारा लगी हुई चोट। एक प्रकार का नखक्षत।

व्याघ्रनखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नख या बगनहा नामक गंधद्रव्य। विशेष दे० 'नख'।

व्याघ्रनायक—संज्ञा पुं० [सं०] गीदड़।

व्याघ्रपद—संज्ञा पुं० [सं०] वृहत्संहिता में वर्णित एक प्रकार का पेड़।

व्याघ्रपद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का गुल्म। २ वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। ३. वह जिसके पैर व्याघ्रवत् हों। व्याघ्रपाद।

व्याघ्रपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकंकत या कटाई नामक वृक्ष। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्रपादपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विकटक। गर्जाहुल।

व्याघ्रपाद्—संज्ञा पुं० [सं०] १. विकंकत या कटाई नामक वृक्ष। २. विकटक। गर्जाहुल। ३. एक प्राचीन ऋषि का नाम। ४. वह जिसके पैर व्याघ्र से हों (को०)।

व्याघ्रपुच्छ, व्याघ्रपुच्छक—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंड। २. बाघ की पूँछ (को०)।

व्याघ्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] नख या बगनहा नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रपुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

व्याघ्रभट—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

व्याघ्रमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिल्ली। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ३. वृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५. वास्तुशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का मकान जो अशुभ होता है ?

व्याघ्ररूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन्ध्या कर्कटी। वन ककोडा।

व्याघ्रलोम—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रलोमन्] १. ऊपरी ओठ पर के बाल। मूँछ। २ बाघ के शरीर के रोएँ (को०)।

व्याघ्रवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिल्ली। २ शिव का एक नाम। ३ शिव के एक गण। दे० 'व्याघ्रमुख'।

व्याघ्रवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रवक्तृ] दे० 'व्याघ्रास्य'।

व्याघ्रश्वा—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रश्वन्] बाघ जैसा कुत्ता [को०]।

व्याघ्रसेवक—संज्ञा पुं० [सं०] शृगाल। गीदड़।

व्याघ्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रेंड।

व्याघ्राक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २. पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।

व्याघ्राक्ष[2]—वि० बाघ जैसी आँखोंवाला [को०]।

व्याघ्राजिन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्राट—संज्ञा पुं० [सं०] लवा नामक पक्षी। अगिन चिड़िया। विशेष दे० 'लवा'।

व्याघ्राण—संज्ञा पुं० [सं०] सूँघने की क्रिया [को०]।

व्याघ्रादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ।

व्याघ्रादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ। त्रिवृता [को०]।

व्याघ्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाघ का मुख (को०)। २ वह जिसका मुँह बाघ सदृश हो। ३. बिल्ली।

व्याघ्रास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक देवी [को०]।

व्याघ्रिस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक देवी का नाम।

व्याघ्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटकारी। छोटी कँटाई। २ एक प्रकार की कौड़ी। ३ नखी नामक गंधद्रव्य। ४. बाघिन (को०)। ५ एक बौद्ध देवी। व्याघ्रिस्त्री (को०)।

व्याघ्रीयुग—संज्ञा पुं० [सं०] वृहती या वनभटा और कटकारी, इन दोनो का समूह।

व्याज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन में कोई और बात रखकर ऊपर से कुछ और करना या कहना। कपट। छल। धोखा।

यौ०—व्याजनिंदा। व्याजस्तुति। व्याजोक्ति।

२. बाधा। विघ्न। खलल। ३ विलंब। देर। ४. बहाना। व्यपदेश। उ०—जब तक वह अपने कुटीर में बैठता किसी न किसी व्याज से मैं उसे देख लेती।—श्यामा०, पृ० ५६। ५ कला। कौशल (को०)। ६. युक्ति। चाल। कूटयुक्ति (को०)।

व्याज[२]—संज्ञा पुं० दे० 'ब्याज'।

व्याजउकुति (पु)—संज्ञा स्त्री० [स० व्याजोक्ति] एक अलकार। दे० 'व्याजोक्ति'। उ०—व्याज उकुति तासो कहत, भूषन सुकवि अनूप।—भूषण ग्र०, पृ० ७०।

व्याजखेद—संज्ञा पुं० [सं०] बनावटी खिन्नता [को०]।

व्याजगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बनावटी गुरु [को०]।

व्याजतपोवन—संज्ञा पु० [स०] नकली तपस्वी [को०]।

व्याजनिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याजनिन्दा] १ वह निंदा जो व्याज अर्थात् छल या कपट से की जाय। निंदा जो ऊपर से देखने मे स्पष्ट निंदा न जान पडे। २ एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे इस प्रकार निंदा की जाती है।

व्याजव्यवहार—संज्ञा पुं० [स०] कपटपूर्ण वर्ताव [को०]।

व्याजसुप्त—वि० [स०] सोने का बहाना बनानेवाला [को०]।

व्याजस्तुति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने मे स्तुति न जान पडे। २ एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे इस प्रकार स्तुति की जाती है, वह ऊपर से देखने मे निंदा सी जान पडती है।

व्याजहत—वि० [स०] छल द्वारा मारा हुआ [को०]।

व्याजोह्वय—संज्ञा पु० [स०] बनावटी नाम [को०]।

व्याजिह्म—वि० [सं०] कुटिल। टेढा [को०]।

व्याजी—संज्ञा स्त्री० [स०] बिक्री मे माप या तौल के ऊपर कुछ थोडा सा और देना। घाल। घलुवा।

व्याजीकरण—संज्ञा पुं० [स०] धूर्तता। चालबाजी। प्रवचना [को०]।

व्याजोक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कथन जिसमे किसी प्रकार का छल हो। कपटभरी बात। २ एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी स्पष्ट या प्रकट को छिपाने लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है। छेकापह्नुति से इसमे यह अतर है कि छेकापह्नुति मे निषेधपूर्वक बात छिपाई जाती है और इसमें बिना निषेध किए ही छिपाई जाती है। उ०—(क) भूप प्रतापभानु अवनीसा। तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा। (ख) बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिशोर देखि किन लेहू।

व्याडव—संज्ञा पु० [स० व्याडम्ब] लाल रेंड।

व्याड[१]—संज्ञा पु० [स०] १ साँप। २ बाघ। शेर। ३. इंद्र का एक नाम। ४ शिकार करनेवाला और उसका मास खानेवाला कोई पशु। जैसे, चीता, सिंह आदि (को०)।

व्याड[२]—वि० धूर्त। वचक। २ दुष्ट। खल। निंदा या बुराई करनेवाला।

व्याडायुध—संज्ञा पुं० [स०] नख नामक गध द्रव्य।

व्याडि—संज्ञा पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होने एक व्याकरण बनाया था।

विशेष—ये महाभाष्यकार पतजलि के पूर्ववर्ती महावैयाकरण थे। परपरागत मान्यतानुसार इन्होने 'सग्रह' नामक महाग्रंथ लिखा था जो सभवत लक्षश्लोकात्मक था और उसमे व्याकरण के दार्शनिक पक्ष का भी विस्तृत विवेचन था।

२. एक कोशकार का नाम [को०]।

व्यात्त[१]—वि० [स०] खुला हुआ या फैलाया हुआ [को०]।

व्यात्त[२]—संज्ञा पुं० फैलाया हुआ मुख [को०]।

व्यात्तानन—संज्ञा पुं० [स०] वह जिसका मुख खुला हो [को०]।

व्यात्तास्य—वि० [स०] दे० 'व्यात्तानन' [को०]।

व्यात्युक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलक्रीडा।

व्यादन—संज्ञा पु० [सं० व्यादान] खोलना। उ०—वदन व्यादन पूर्वक प्रेतिनी। भय प्रदर्शन थी करती महा। निकलती जिससे अविराम थी। अनल की अति त्रासकरी शिखा।—प्रिय०, पृ० २३।

व्यादान—संज्ञा पुं० [स०] १ फैलाव। विस्तार। २. उद्‍घाटन। खोलना।

व्यादिश—संज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

व्यादिष्ट—वि० [स०] १ जिसे आदेश दिया गया हो। २ पूर्वकथित। ३ निश्चित। ४ व्याख्यात [को०]।

व्यादीर्ण—वि० [स०] खुला या फैलाया हुआ [को०]।

व्यादीर्णास्य—संज्ञा पुं० [स०] सिंह [को०]।

व्यादेश—संज्ञा पुं० [स०] विशेष आज्ञा [को०]।

व्याध[१]—संज्ञा पु० [स०] १ वह जो जगली पशुओ आदि को मारकर अपना निर्वाह करता हो। शिकारी। २ प्राचीन काल की एक जाति जो जगली पशुओ को मारकर अपना निर्वाह करती थी। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसर इसकी उत्पत्ति सर्वस्वी माता और क्षत्रिय पिता से है। ३ प्राचीन काल की शबर नामक नीच जाति। ४ नीच या कमीना आदमी (को०)।

व्याध[२]—वि० दुष्ट। पाजी। लुच्चा।

व्याधक—संज्ञा पु० [स०] शिकारी। बहेलिया [को०]।

व्याधभीत—संज्ञा पु० [स०] मृग। हिरन।

व्याधाम—संज्ञा पु० [स०] वज्र।

व्याधाव—संज्ञा पु० [स०] वज्र (को०)।

व्याधि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ रोग। बीमारी। २. आफत। झझट। ३. कुड या कटु नाम की ओषधि। ४ साहित्य मे एक सचारी भाव। विरह या काम आदि के कारण शरीर मे किसी प्रकार रोग होना। ५ कोढ। कुष्ठ (को०)। ६ कष्ट पहुँचानेवाली वस्तु (को०)। ७ वह जो आधि वा मानसिक रोग से मुक्त हो (को०)।

व्याधिकर—वि० [स०] रोग उपजानेवाला। बीमारी पैदा करनेवाला [को०]।

व्याधिखड्ग—संज्ञा पु० [स०] नख नामक गधद्रव्य।

व्याधिग्रस्त—वि० [स०] रोगी [को०]।

व्याधिघात—संज्ञा पु० [स०] १ अमलतास। २ वाराही कद। गेंठी (को०)।

व्याधिघातक—संज्ञा पु० [स०] १. अमलतास वृक्ष। आरग्वध। २ वाराही कद [को०]।

व्याधिघ्न—संज्ञा पु० [स०] १. वह जिससे किसी प्रकार की व्याधि का नाश होता हो। २ वाराही कद। गेंठी (को०)। ३. अमलतास।

व्याधिजित्—सज्ञा पुं० [सं०] अमलतास।

व्याधित—सज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे किसी प्रकार की व्याधि हुई हो। रोगी। बीमार।

व्याधिनाशन—सज्ञा पुं० [सं०] चोबचीनी।

व्याधिनिग्रह—सज्ञा पुं० [सं०] रोग को दबाना। रोग की रोकथाम [को०]।

व्याधिनिर्जय—सज्ञा स्त्री० [सं०] रोग को वश मे करना [को०]।

व्याधिबहुल—वि० [सं०] (स्थान, ग्राम आदि) जहाँ रोगो की अधिकता हो। [को०]।

व्याधिमंदिर—सज्ञा पुं० [सं०] तन। शरीर। जिस्म। देह, जो रोग का स्थान है [को०]।

व्याधिरिपु—सज्ञा पुं० [सं०] १ अमलतास। २ एक प्रकार क अमलतास जिसे करियारी कहते हैं।

व्याधिविपरीत –सज्ञा पुं० [सं०] ऐसी औषधि जो व्याधि के विपरीत गुण करनेवाली हो। जैसे,—दस्त लाने के समय कब्जियात करनवाली दवा।

व्याधिसमुद्देशीय—वि० [सं०] रोग का स्वरूप और लक्षण बतानेवाला [को०]।

व्याधिस्थान—सज्ञा पुं० [सं०] शरीर। बदन। जिस्म।

व्याधिहंता¹—सज्ञा पुं० [सं० व्याधिहन्तृ] वाराही कद। शूकर कद। गेंठी।

व्याधिहंता²—वि० जिससे रोग का नाश हो। रोगनाशक।

व्याधिहर - वि० [सं०] व्याधि को दूर करनेवाला। जिससे रोग नष्ट होता हो।

व्याधी¹—सज्ञा स्त्री० [सं० व्याधि] दे० 'व्याधि'।

व्याधी²—वि० [सं० व्याधिन्] १ आखेटको से सबद्ध (स्थान)। २ रोगी। ३ भेदक। भेदन करनेवाला [को०]।

व्याधूत—वि० [सं०] काँपता हुआ। कपित [को०]।

व्याध्मातक—सज्ञा पुं० [सं०] फूला हुआ शव [को०]।

व्याध्य¹—सज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

व्याध्य²—वि० १ व्याधि सबधी। व्याधि का। २ (नस आदि) जिसका भेदन किया जाय (को०)।

व्याध्यार्त—वि० [सं०] रोगी। रोगग्रस्त। व्याधि पीडित।

व्याध्युपशम—सज्ञा पुं० [सं०] रोग का शात होना।

व्याध्युपशमन—सज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करना। व्याधि को शात करना।

व्यान—सज्ञा पुं० [सं०] शरीर में रहनेवाली पाँच वायुओ मे से एक वायु जो सारे शरीर मे सचार करनेवाली मानी जाती है।

विशेष—कहते हैं, इसी के द्वारा शरीर की सब क्रियाएँ होती हैं, सारे शरीर मे रस पहुँचता है, पसीना बहता है और खून चलता है आदमी उठना, बैठता और चलता फिरता है और आँखें खोलता तथा बद करता है। भावप्रकाश के मत से जब यह वायु कुपित होती है, तब प्राय सारे शरीर मे एक न एक रोग हो जाता है।

व्यानत¹—सज्ञा पुं० [सं०] रतिबध का एक प्रकार [को०]।

व्यानत²—वि० झुका हुआ। नत [को०]।

व्यानतकरण—सज्ञा पुं० [सं०] रतिबध का एक भेद [को०]।

व्यानदा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जो व्यान वायु प्रदान करती है।

व्यानभृत्—वि० [सं०] व्यान वायु को भरनेवाला। जिससे उक्त वायु बनी रहे [को०]।

व्यापक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्यापिका] १ जो बहुत दूर तक व्याप्त हो। चारो ओर फैला हुआ। जैसे,—यह एक सर्वव्यापक सिद्धात है। २ जो ऊपर या चारो ओर से घेरे हुए हो। घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक। ३ किसी मे हमेशा एक भाव से स्थित रहनेवाला (को०)। ४. वाद के समग्र विचारणीय विषयो से युक्त। जिसमे विवाद सबधी सभी विचारणीय विषय आ गए हो (को०)। ५ तर्क शास्त्र के अनुसार व्याप्य मे अधिक (को०)।

व्यापक²—सज्ञा पुं० १ पदार्थ मे सर्वदा विद्यमान रहनेवाला गुण या धर्म। २ नित्य सहवर्ती [को०]।

व्यापकन्यास—सज्ञा पुं० [सं०] तात्रिको के अनुसार एक प्रकार का अगन्यास। इसमे किसी देवता का मूल मत्र पढते हुए सिर से पैर तक न्यास करते हैं।

व्यापत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु। मौत। २ विपत्ति मे पडना। सकट मे पडना (को०)। ३ क्षति। हानि। ४ विनाश। बरबादी (को०)। ५. असफलता (को०)। ६ व्याकरण के अनुसार स्थानापन्नता। किसी वर्ण का लोप या उसके स्थान मे दूसरे का आगम (को०)।

व्यापद्—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु। मौत। विनाश। २ सकट। दुर्दिन। विपत्ति (को०)। ३ रोग। व्याधि (को०)। ४ चित्तविक्षेप (को०)।

व्यापन—सज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव। विस्तार। २ दूर तक फैलना। विस्तृत होना। ३ चारो ओर से या ऊपर से घेरना या ढकना। आच्छादन करना।

व्यापना—क्रि० अ० [सं० व्यापन] किसी चीज के अदर फैलना। व्याप्त होना। जैसे,—(क) तुम्हे भी इस समय मोह व्यापता है। (ख) ईश्वर घट घट मे व्यापता है। (ग) उसके सारे शरीर मे विष व्याप गया है।

सयो० क्रि०—जाना।—रहना।

व्यापनीय—वि० [सं०] व्यापन करने या व्याप्त होने के योग्य।

व्यापन्न—वि० [सं०] १ जो किसी प्रकार की विपत्ति मे पडा हुआ हो। आफत मे फँसा हुआ। २ मरा हुआ। मृत। ३ विनष्ट। लुप्त (को०)। ४. स्वरादि के आगम के कारण परिवर्तित (को०)। ६ विफल (को०)। ७ घायल (को०)। ८. विक्षिप्त। विकृत (को०)।

व्यापाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन में दूसरे के अपकार की भावना करना। किसी की बुराई सोचना। २ मार डालना। ३. नष्ट करना। बरबाद करना। ४. बौद्धमतानुसार दस पापों में से एक पाप (को०)।

व्यापादक—वि० पुं० [सं०] १. वह जो दूसरों की बुराई करने की इच्छा रखता हो। २ वह जो हत्या या विनाश करता हो। ३. वह (व्याधि) जो घातक हो।

व्यापादन—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय सोचना। २ मार डालना। वध। हत्या। ३ नष्ट करना। बरबाद करना।

व्यापादनीय—वि० [सं०] मार डालने या नष्ट करने योग्य।

व्यापादित—वि० [सं०] १ हत। २ अपकार बुद्धि से चिंतित। ३. विनष्ट। ध्वस्त (को०)।

व्यापाद्य—वि० [सं०] दे० 'व्यापादनीय'।

व्यापार—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्म। कार्य। काम। जैसे,—(क) संसार में दिन रात अनेक प्रकार के व्यापार होते रहते हैं। (ख) सोचना मस्तिष्क का व्यापार है। २ न्याय के अनुसार विषय के साथ होनेवाला इंद्रियों का संयोग। पदार्थों अथवा धन के बदले में पदार्थ लेना और देना। क्रय विक्रय का कार्य। रोजगार। व्यवसाय जैसे—(क) आजकल कपड़े का व्यापार बहुत चमक रहा है। (ख) वे रुई, सोने, चाँदी आदि कई चीजों का व्यापार करते हैं। ४ सहायता। मदद। ५ कार्यपद्धति। प्रक्रिया (को०)। ६ उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा (को०)। ७. प्रभाव। दखल (को०)। ८ अभ्यास। कौशल (को०)। कारबार। पेशा (को०)। ९ प्रयोग (को०)।

यौ०—व्यापारचिह्न = निर्माताओं द्वारा अपने माल की पहिचान के लिये अंकित विशेष चिह्न जिसका प्रयोग अन्य निर्माता द्वारा करना अपराध है [अं० ट्रेड मार्क]। व्यापारमंडल = व्यापारियों का मंडल। व्यापारियों की संस्था। व्यवसायियों का प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था या समाज (अं० चेंबर आव कामर्स)।

व्यापारक—वि० [सं०] व्यवसाय करनेवाला (को०)।

व्यापारगर्त—संज्ञा पुं० [सं०] सांसारिक क्रियाकलापों या व्यापारों का झंझट या गड्ढा। दुनियाँ की झंझट। काम धंधा। उ०—इससे स्पष्ट है कि मनुष्य को उसके व्यापारगर्त से बाहर प्रकृति के विशाल और विस्तृत क्षेत्र में ले जाने की शक्ति फारस की परिमित काव्यपद्धति में नहीं है—भारत और योरप की पद्धति में है। —चिंतामणि, भा० २, पृ० ८।

व्यापारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आज्ञा देना। २ किसी काम में नियुक्त करना।

व्यापारिक—वि० [सं०] व्यापार संबंधी। व्यावसायिक।

व्यापारित—वि० [सं०] १ किसी कार्य में नियोजित। २ किसी स्थान पर स्थापित (को०)।

व्यापारी¹—संज्ञा पुं० [सं० व्यापारिन्] १. वह जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो। २. व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी। ३ अभ्यास करनेवाला (को०)।

व्यापारी²—वि० [सं० व्यापार + ई (प्रत्य०)] १ जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो। २ व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी।

व्यापारी³—वि० [सं० व्यापार + हिं० ई (प्रत्य०)] व्यापार संबंधी। व्यापार का। जैसे,—व्यापारी बोलचाल, व्यापारी भाव।

व्यापित—वि० [सं०] जो व्याप्त कराया गया हो (को०)।

व्यापी¹—वि० [सं० व्यापिन्] [वि० स्त्री० व्यापिनी] १. चारों ओर फैलनेवाला। छा जानेवाला। २. व्याप्त करने या होनेवाला। ३ आच्छादन करनेवाला। आवृत करनेवाला (को०)।

व्यापी²—संज्ञा पुं० १ आवृत करने या व्याप्त होनेवाला पदार्थ। २. विष्णु का एक नाम (को०)।

व्यापीत—वि० [सं०] जो एकदम पीला हो। गहरे पीत वर्ण का (को०)।

व्यापृत¹—वि० [सं०] १ किसी कार्य में लगा हुआ। संलग्न। २. स्थिर किया हुआ। स्थापित, जमाया हुआ (को०)।

व्यापृत²—संज्ञा पुं० वह जो कार्य करता हो। कर्मचारी। सचिव। मंत्री (को०)।

व्यापृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवसाय। व्यापार। २. जीविका। पेशा। ३ अभ्यास। ४ उद्योग। क्रिया।

व्याप्त—वि० [सं०] १. पूरित। भरा हुआ। २. ढका हुआ। आच्छादित। ३. सर्वत्र फैला हुआ या प्रसृत ४. परिवेष्टित। ५ स्थापित। ६ प्राप्त। अधिकृत। ७. संमिलित। ८. प्रसिद्ध। विख्यात। ९ अंतर्भूत। नितांत संसक्त। १०. फैलाया हुआ (को०)।

व्याप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। चारों ओर या सब जगह फैला हुआ होना। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अथवा उसके साथ सदा पाया जाना। जैसे—आग में धूएँ की या तिल में तेल की व्याप्ति है।

यौ०—व्याप्तिज्ञान।

३ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक प्रकार का ऐश्वर्य।

विशेष—शेष सात ऐश्वर्यों के नाम ये हैं—अणिमा, लघिमा, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व और कामावसायिता।

४. सार्वजनिक नियम। सर्वव्यापक नियम (को०)। ५. पूर्णता (को०)। ६. प्राप्ति (को०)।

व्याप्तिकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० व्याप्तिकर्मन्] वह जिसका कर्म व्याप्ति विशिष्ट हो। वह जो व्यापन क्रिया से युक्त हो (को०)।

व्याप्तिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] विशेष बातों के आधार पर लोकसामान्य नियमों का निर्धारण (को०)।

व्याप्तिज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय के अनुसार वह ज्ञान जो साध्य को देखकर साधन के अस्तित्व के संबंध में अथवा

साध्यवान् को देखकर साध्य के अस्तित्व के संबंध में होता है। जैसे, धूएँ को देखकर यह समझना कि यहाँ आग भी होगी।

व्याप्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] व्याप्ति का धर्म या भाव।

व्याप्तिनिश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] सर्वत्र व्याप्त पदार्थ का निश्चयन [को०]।

व्याप्तिलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] नित्य सहचर भाव या प्रमाण [को०]।

व्याप्य[1]—वि० [सं०] व्याप्त करने योग्य। व्यापनीय।

व्याप्य[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसके द्वारा कोई काम हो। साधन। हेतु। २ कुट या कुड़ नामक ओषधि। ३ दे० 'व्याप्ति'।

व्याबाध—संज्ञा पुं० [सं०] बीमारी। रोग [को०]।

व्याभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] बोलने या भाषण की शैली [को०]।

व्याभुग्न—वि० [सं०] झुका हुआ। टेढ़ा [को०]।

व्याम्युक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलक्रीड़ा। जलकेलि [को०]।

व्याम[1]—संज्ञा पुं० [सं०] लंबाई की एक नाप।

विशेष—दोनों हाथों को जहाँ तक हो सके, दोनों बगल में फैलाने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक जितनी दूरी होती है, वह व्याम कहलाती है।

व्याम (पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० व्यायाम] दे० 'व्यायाम'।

उ०—व्याम करत पुहमी जो हली। पीठि न लाइ सकै कोउ बली। —चित्रा०, पृ० १२३।

व्यामन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्याम'।

व्यामर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १ धैर्यहीनता। औत्सुक्य। व्यग्रता। २. उच्छेद या मार्जन करना। रगड़कर साफ करना [को०]।

व्यामर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्यामर्श'।

व्यामिश्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दो प्रकार के पदार्थों या कार्यों को एक में मिलाने की क्रिया।

व्यामिश्र[2]—वि० १ मिला हुआ। मिश्रित। २ विभिन्न प्रकार का। ३ संदेहास्पद (को०)। ४ अस्थिर। पीडित। क्षुब्ध (को०)।

व्यामिश्रक—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रंथ, पुस्तक आदि, मुख्यतः रूपक जिसमें विभिन्न भाषाओं का मिश्रण हो [को०]।

व्यामिश्रवान—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा वस्त्र जिसमें सूत्र, ऊर्णा, तंतु आदि मिश्रित हो [को०]।

व्यामिश्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] मिला जुला व्यूह। वह व्यूह जिसमें पैदल के अतिरिक्त हाथी घोड़े और रथ भी सम्मिलित हों।

विशेष—कौटिल्य ने इसके दो भेद कहे हैं—मध्यभेदी और अंतभेदी। मध्यभेदी वह है जिसके अंत में हाथी, इधर उधर घोड़े, मुख्य भाग या केंद्र में रथ तथा उरस्य में हाथी और रथ हों। इससे भिन्न अंतभेदी है।

व्यामिश्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार शत्रु और मित्र दोनों की स्थिति का अपने अनुकूल होना।

व्यामूढ—वि० [सं०] बहुत घबड़ाया हुआ [को०]।

व्यामृष्ट—वि० [सं०] रगड़कर मिटाया हुआ [को०]।

व्यामोक—संज्ञा पुं० [सं०] छुटकारा। मुक्ति [को०]।

व्यामोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। २ अज्ञान। ३. व्याकुलता। घबड़ाहट (को०)।

व्याय—संज्ञा पुं० [सं०] बाण चलाने के समय धनुष की प्रत्यंचा को तानने की पद्धति या क्रिया [को०]।

व्यायत—वि० [सं०] १ लंबा। फैला या फैलाया हुआ। २ खुला हुआ। ३ कार्य में लगा हुआ। व्यस्त। ४ कठोर। दृढ़। ५ कृताभ्यास। जिसने अभ्यास किया हो। अभ्यस्त। ६ प्रखर। प्रचंड। तीव्र। ७ शक्तिशाली। ८ गहरा। गंभीर [को०]।

व्यायतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] व्यायत होने का भाव। शरीर की पेशियों का विकसन या फैलाव [को०]।

व्यायतपाती—वि० [सं० व्यायतपातिन्] दूर तक दौड़नेवाला। विस्तृत मार्ग को तय करनेवाला। जैसे, अश्व आदि [को०]।

व्यायाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शारीरिक श्रम जो केवल शरीर का बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। जोर। जैसे,—दंड, बैठक करना या मुगदर, डंबल आदि हिलाना। २ पौरुष। ३ परिश्रम। मेहनत। ४ व्यापार। काम। ५. युद्ध की तैयारी। ६ सेना की कवायद आदि। ७ विस्तार करना। फैलाना (को०)। ८. आयाम। प्रयत्न चेष्टा (को०)। ९ युद्ध। कलह। विवाद। संघर्ष (को०)। १०. कठिनाई। ११ लंबाई की एक माप। व्याम (को०)। १२ क्लांति। थकान (को०)। १३ अभ्यास। कौशल (को०)। १४ दुर्गम मार्ग

यौ०—व्यायामकर्शित = व्यायाम के कारण दुर्बल। व्यायामभूमि = व्यायाम करने की जगह। व्यायामयुद्ध। व्यायामयोग। व्यायामशाला = व्यायाम करने की जगह। व्यायामशील = कसरती। (२) परिश्रमी। [को०]। व्यायामशोषी।

व्यायामयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] आमने सामने की लड़ाई।

विशेष—अर्थशास्त्र में चाणक्य का मत है कि व्यायामयुद्ध अर्थात् आमने सामने की लड़ाई में दोनों ही पक्षों को बहुत हानि पहुँचती है। जो राजा जीत भी जाता है, वह भी इतना कमजोर हो जाता है कि उसे भी एक प्रकार से पराजित ही समझना चाहिए। (को०)।

व्यायामयोग—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास।

व्यायामशोषी—वि० [सं० व्यायामशोषिन्] जो अत्यंत कसरत या श्रम करने से क्षीणकाय हो गया हो। उ०—व्यायामशोषी (अत्यंत दंड कसरत आदि से क्षीण) मनुष्य क्षतागतादियुक्त होय है।—माधव०, पृ० ८६।

व्यायामिक—वि० [सं०] व्यायाम का। व्यायाम संबंधी।

व्यायामी—संज्ञा पुं० [सं० व्यायामिन्] १ वह जो व्यायाम करता हो। कसरत करनेवाला। कसरती। २ वह जो बहुत परिश्रम करता हो। परिश्रमी। मेहनती।

व्यायुक—वि० [सं०] भाग निकलनेवाला [को०]।

व्यायुक्त—वि० [सं०] १ अलग अलग किया हुआ। २ मिला जुला। उ०—लोहित, श्वेत (ओदात्त) या मिश्रित (व्यायुक्त) वर्णों की

वेशभूषा और साजसज्जा धारण करते थे।—हिंदु॰ सभ्यता, पृ० २०१।

व्यायुध—वि॰ [स॰] शस्त्ररहित। नि शस्त्र [को॰]।

व्यायोग—सज्ञा पु॰ [स॰] साहित्य मे दस प्रकार के रूपकों मे से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

विशेष—इसको कथावस्तु किसी ऐसे ग्रथ से ली जानी चाहिए, जिससे सब लोग भली भाँति परिचित हो। इसके पात्रो मे स्त्रियाँ कम और पुरुष अधिक होते है। व्यायोग मे स्त्री के कारण युद्ध नही होता और इसमे गर्भ और विमर्ष सधि नही होती। इसमे एक ही अक रहता है और कशिकी वृत्ति का व्यवहार नही होता है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध राजर्षि, दिव्य और धीरोदात्त होना चाहिए। इसमे शृगार, हास्य और शात के सिवा और सब रसो का वर्णन होता है। जैसे, भास कवि का मध्यम व्यायोग।

व्यायोजिम—वि॰ [स॰] (बधन या पट्टी) जो खुली हुई या ढीली हो गई हो [को॰]।

व्यारब्ध—वि॰ [स॰] समुचित ढग से रचित [को॰]।

व्यारोप—सज्ञा पु॰ [स॰] क्रोध। गुस्सा।

व्यार्त वि [स॰] विशेष रूप से आर्त या दु खी। क्लेशग्रस्त [को॰]।

व्यालब—सज्ञा पु॰ [स॰ व्यालम्ब] लाल रेंड।

व्यालबी वि॰ [स॰ व्यालम्बिन्] जो लटक रहा हो। लटकता हुआ। अवलंबी [को॰]।

व्याल¹—सज्ञा पु॰ [स॰] १ साँप। २ दुष्ट या पाजी हाथी। ३ बाघ। शेर। ४ वह बाघ जो शिकार करने के लिये सधाया गया हो। ५ राजा। ६ विष्णु का एक नाम। ७ दडक छद का एक भेद। ८. कोई हिंसक जतु। ९. चीता (को॰)। १० ठग। धूर्त (को॰)। ११ आठ की सख्या (को॰)।

व्याल²—वि॰ १ दूसरो का अपकार करनेवाला। २ दुष्ट। पाजी। ३ बुरा। पापिष्ठ (को॰)। ४ क्रूर। भीषण (को॰)।

व्यालक—सज्ञा पु॰ [स॰] १ दुष्ट या पाजी हाथी। २ हिंसक जतु। ३. सर्प। व्याल (को॰)।

व्यालकरज—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालखड्ग—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालगधा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ व्यालगन्धा] नाकुली नामक कद।

व्यालग्राह—सज्ञा पु॰ [स॰] वह जो साँपो का पकडता हो। सँपेरा।

व्यालग्राही—सज्ञा पु॰ [स॰] वह जो साँप पकडने का काम करता हो। मदारी। सँपेरा।

व्यालग्रीव—सज्ञा पु॰ [स॰] १ बृहस्पति के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यालजिह्वा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] कँगही या कघी नामक पौधा। महा-समगा।

व्यालता—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] व्याल का भाव या धर्म। व्यालत्व। व्यालपन।

व्यालत्व—सज्ञा पु॰ [स॰] व्याल का भाव या धर्म। व्यालपन।

व्यालदष्ट्र—सज्ञा पु॰ [स॰] गोखरू का पौधा।

व्यालदष्ट्रक—सज्ञा पु॰ [स॰] दे॰ 'व्यालदष्ट्र' [को॰]।

व्यालनख—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालपत्र—सज्ञा पु॰ [स॰] खेतपापडा।

व्यालपत्रा—सज्ञा स्त्री॰ [स॰] खेतपापडा।

व्यालपाणिज—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालप्रहरण—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालबल—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालमृग—सज्ञा पु॰ [स॰] १ बाघ। शेर। २ शिकारी चीता (को॰)। ३ जगली जानवर (को॰)।

व्यालरूप—सज्ञा पु॰ [स॰] शिव [को॰]।

व्यालवल—सज्ञा पु॰ [स॰] दे॰ 'व्यालबल'।

व्यालसूदन—सज्ञा पु॰ [स॰] गरुड। उ०—जयति भीमार्जुन व्यालसूदन गवहर धनजय रथत्रान केतू।—तुलसी (शब्द॰)।

व्यालाद—सज्ञा पु॰ [स॰] १. वह जो सर्पो का खाता हो। गरुड। २. मोर। मयूर [को॰]।

व्यालायुध—सज्ञा पु॰ [स॰] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्यालारि—सज्ञा पु॰ [स॰] गरुड। उ०—मुनु व्यालारि, कराल कलि, बिनु प्रयास निस्तार।—भक्तमाल (प्रि॰), पृ० ५७६।

व्यालि—सज्ञा पु॰ [स॰] व्याडि नामक एक प्राचीन ऋषि जिन्होने एक व्याकरण बनाया था।

व्यालिक—सज्ञा पु॰ [स॰] वह जो साँपो को पकडकर अपनी जीविका चलाता हो। सँपेरा।

व्यालिनि‍पु—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ व्यालो] सर्पिणी। साँपिनी। उ०—सरित की लहरें असु लेहिनो, लहरने खलु व्यालिनी सी लगी।—प्रि॰ प्र॰ महा॰, पृ० २०१।

व्याली¹—सज्ञा पु॰ [स॰ व्यालिन्] शिव [को॰]।

व्याली²—सज्ञा स्त्री॰ [स॰ व्याल + ई] सर्पिणी। उ०—ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली।—कामायनी, पृ० ५।

व्यालीढ—सज्ञा पु॰ [स॰] साप के काटने का एक प्रकार। साप का वह काटना जिसम केवल एक या दो दात लगे हों और घाव मे से खून न बहा हो।

व्यालीन—वि॰ [स॰] सश्लिष्ट। चिपका हुआ। घना [को॰]।

व्यालुप्त—सज्ञा पु॰ [स॰] साँप के काटने का एक प्रकार। साँप का वह काटना जिसमे दो दांत भरपूर बैठे हो और घाव मे से खून भी निकला हो।

व्यालू—सज्ञा पु॰ स्त्री॰ [स॰ वेला] रात के समय का भोजन। रात का खाना। उ०—जो कुछ बन पडा व्यालू करके लंबा तान अपने बिछौना मे जा पडा।—श्यामा॰, पृ० ६।

व्यालून—वि॰ [स॰] छिन्न। कटा हुआ [को॰]।

व्यालोक—सज्ञा पु॰ [स॰] प्रकाश। उ०—अकस्मात् उस खिडकी मे से एक सुदर मुख निकला। व्यालोक डालकर देखा कि राक्षसी एक पात्र हाथ मे लिए है और कुछ कह रही है।—छाया॰, पृ० ३८।

व्यालोल—वि० [सं०] १ चंचल। २ परिक्रांत। चक्कर खाता हुआ। ३ अस्तव्यस्त। बिखरा हुआ। जैसे, व्यालोलकेश। ४ काँपता हुआ (को०)।

व्यालोलन—संज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर हिलना। काँपना (को०)।

व्यावकलन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्यवकलन' (को०)।

व्यावक्रोशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कहा सुनी। वादविवाद। झगड़ा (को०)।

व्यावचर्ची—संज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में कही हुई अथवा सामान्य बात, पुनरुक्ति (को०)।

व्यावचोरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में होनेवाली चोरी (को०)।

व्यावभाषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में अपशब्दों का व्यवहार। कहासुनी (को०)।

व्यावर—वि० [हिं० बिआना, बिआउर] ब्यानेवाली। उत्पन्न करनेवाली। उ०—दादू कापा व्यावर गुणमयी, मनमुख उपजै ज्ञान। चौरासी लख जीवकों, इस माया का ध्यान।—दादू०, पृ० ४१८।

व्यावर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ विभाग करना। हिस्सा लगाना। विभक्त करना। बाँटना। २ हिस्सा। विभाग (को०)।

व्यावर्जित—वि० [सं०] आवर्जित। भुग्न। नत। झुका या लटका हुआ (को०)।

व्यावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. चकवड़। चक्रमर्द। २ घेरना। लपेटना। परिवेष्टित करना (को०)। ३ चारों ओर भ्रमण करना। चक्कर खाना (को०)। ४ अलग करना। चुनना (को०)। ५ आगे की ओर निकली हुई नाभि। नाभिकटक।

व्यावर्त्तक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० व्यावर्त्तिका] १. वह जो व्यावर्तन करता हो। चक्कर खानेवाला। पीछे की ओर लौटनेवाला। २ दूर हटानेवाला। अलग करनेवाला (को०)। ३. भेदक। अंतर करनेवाला (को०)।

व्यावर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो पराङ्मुख किया गया हो। २ पीछे की ओर लौटाया या मोड़ा हुआ। ३. सर्प का कुंडली (को०)। ४. घुमाव। मोड़। जैसे, पथ का व्यावर्तन (को०)। ५ परिवेष्टन (को०)।

व्यावर्तनीय—वि० [सं०] जिसका व्यावर्तन किया जा सके। व्यावर्तन के योग्य (को०)।

व्यावर्तित—वि० [सं०] १ पराङ्मुख किया हुआ। लौटाया हुआ। जिसे चक्कर दिया गया हो। २ परिवर्तित (को०)।

व्यावल्गित—वि० [सं०] तेजी या झटके से चलता हुआ (को०)।

व्यावहारिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार। २ वह जो व्यवहार शास्त्र के अनुसार अभियोगों का विचार करता हो। ३ राजा या वह अमात्य या मंत्री जिसके अधिकार में भीतरी और बाहरी सब तरह के काम हों। ४ व्यापार। कारबार (को०)।

व्यावहारिक[2]—वि० १ व्यवहार संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २. व्यवहार शास्त्र संबंधी। व्यवहार शास्त्र का। ३. प्रचलित। ४ व्यवहारपटु। मिलनसार। ५ व्यापारिक। प्रातिभासिक। भ्रमात्मक (को०)।

व्यावहारिक ऋण—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो किसी व्यापार के संबंध में लिया गया हो।

व्यावहारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवहार संबंधी बंधन। आपसी व्यवहार-जन्य लेनदेन (को०)।

व्यावहार्य—वि० [सं०] १ व्यवहार में लाने योग्य। २ शक्त। क्षम। समर्थ (को०)।

व्यावहासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आपस में होनेवाली हँसी (को०)।

व्यावाध—संज्ञा पुं० [सं०] रोग। व्याधि (को०)।

व्याविद्ध—वि० [सं०] १ परस्पर विरुद्ध। २ प्रविष्ट या घुसा हुआ। बेधा हुआ। ३ फेंका हुआ। क्षिप्त। ४ घूर्णित। ५ बिगाड़ा हुआ (को०)।

व्याविध—वि० [सं०] तरह तरह का। अनेक प्रकार का (को०)।

व्यावृत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रधानता। २. विरमण। विराम। ३ अंतर। फर्क। भेद (को०)।

यौ०—व्यावृत्काम = जो प्रधानता पाने की इच्छा रखता हो।

व्यावृत—वि० [सं०] १ जो आवृत न हो। खुला हुआ। दे० 'व्यावृत्त'। २ आच्छादित। आवृत। ३ हटाया या अलग किया हुआ। ४ अनवारित। अपवाद किया हुआ (को०)।

व्यावृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चयन करना। छाँटना। चुनना। २. आवृत या आच्छादित करना। ३. अनावृत करना। अनाच्छादित करना (को०)।

व्यावृत्त—वि० [सं०] छूटा हुआ। मुक्त। निवृत्त। २ मना किया हुआ। निषिद्ध। ३ टूटा हुआ। खंडित। ४ अलग किया हुआ। विभक्त। ५ जो मन से पसंद किया गया हो। मनोनीत। ६ चारों ओर से घेरा हुआ। ७ ऊपर से ढका हुआ। आच्छादित। ८ असंगत (को०)। ९ जो विद्यमान न हो (को०)। १० लौटा हुआ (को०)। ११ चक्कर खाता हुआ (को०)। १२ जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो।

यौ०—व्यावृत्तगति = मंद गति। धीमी चाल। व्यावृत्तचेता = जिसका मन किसी ओर से पराङ्मुख हो। व्यावृत्त देह = पर्वत आदि जो फट गए हों।

व्यावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खंडन। २ परावृत्ति। ३ मन से चुनने या पसंद करने का काम। ४. चारों ओर से घेरना। ५ स्तुति। प्रशंसा। तारीफ। ६ मनाही। निषेध। ७. बाधा। खलल। ८ निराकरण। निर्णय। मीमांसा। ९ वियोग। १०. एक प्रकार का यज्ञ (को०)। ११ पृथक्ता। भिन्नता (को०)। १२ स्पष्टता (को०)। १३ (गर्दन आदि) घुमाना (को०)। १४. अविद्यमान होना (को०)। १५ घेरना (को०)। १६ ढकना (को०)।

व्याशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विदिशा। दिशाओं का कोण या मध्यवर्ती भाग (को०)।

व्याश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सहारा। आश्रय। साहाय्य। २. वह जो दूसरे का सहारा लेता हो (को०)।

व्यासंग—संज्ञा पुं० [सं० व्यासङ्ग] १ भक्ति (को०)। २ बहुत अधिक आसक्ति। ३ आसक्तिपूर्ण अध्ययन (को०)। ४ पार्थक्य। अलग होना (को०)। ५ योग (को०)। ६. घबडाने की स्थिति या भाव (को०)। ७. घनिष्ठ संबंध या संपर्क (को०)। ८ मनोयोग।

व्यासंगी—वि० [सं० व्यासङ्गिन्] १. विशेष रूप से आसक्त। २ जो मनोयोगपूर्वक सलग्न हो (को०)।

व्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १ पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है, अठारहो पुराणो महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्होने की थी।

विशेष—इनके जन्म आदि की कथा महाभारत में बहुत विस्तार के साथ दी है। उसमे कहा गया है कि एक बार मत्स्यगंधा सत्यवती नाव खे रही थी। उसी समय पराशर मुनि वहाँ जा पहुँचे और उसे देखकर आसक्त हो गए। वे उससे बोले कि तुम मेरी कामना पूरी करो। सत्यवती ने कहा—महाराज नदी के दोनो ओर ऋषि, मुनि आदि बैठे हुए है और हम लोग को देख रहे हैं। मैं कैसे आपकी कामना पूरी करूँ। इसपर पराशर मुनि ने अपने तप के बल से कुहरा खडा कर दिया जिससे चारो ओर अँधेरा छा गया। उस समय सत्यवती ने फिर कहा महाराज, मैं अभी कुमारी हूँ, और आपकी कामना पूरी करने से मेरा कौमार नष्ट हो जायगा। उस दशा में मैं किस प्रकार अपने घर मे रह सकूँगी। पराशर ने उत्तर दिया नहीं, इससे तुम्हारा कौमार्य नष्ट नहीं होगा। तुम मुझसे वर मांगो। सत्यवती ने कहा कि मेरे शरीर से मछली की जो गंध आती है, वह न आवे। पराशर ने कहा कि ऐसा ही होगा। उसी समय से उसके शरीर से सुगंध निकलने लगी और तबसे उसका नाम गंधवती या योजनगंधा पड़ा। इसके उपरांत पराशर मुनि ने उसके साथ संभोग किया जिससे उसे गर्भ रह गया और उस गर्भ से इन्ही व्यासदेव की उत्पत्ति हुई। इनका जन्म नदी के बीच के एक टापू में हुआ था और इनका रंग बिलकुल काला था, इसलिये इनका नाम कृष्ण द्वैपायन पडा। इन्होंने बचपन से ही तपस्या आरंभ की और बड़े होने पर वेदों का संग्रह तथा विभाग किया, इसलिये ये वेदव्यास कहलाए। पीछे से जब शांतनु से सत्यवती का विवाह हुआ, तब अपने पुत्र विचित्रवीर्य के मरने पर सत्यवती ने इन्हे बुलाकर विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों (अंबिका और अबालिका) के साथ नियोग करने की आज्ञा दी जिससे धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ। विदुर भी इन्ही के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। ये पाराशर्य, कानीन, बादरायण, सत्यभारत, सत्यव्रत और सत्यरत भी कहलाते हैं।

२ पुराणानुसार वे अट्ठाईस महर्षि, जिन्होने भिन्न भिन्न कल्पो मे जन्म ग्रहण करके वेदो का संग्रह और विभाग किया था।

विशेष—ये सब ब्रह्मा और विष्णु के अवतार माने जाते है, और इनके नाम इस प्रकार हैं— स्वयंभुव, प्रजापति या मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु या यम, इंद्र, वसिष्ठ, सारस्वत, त्रिधाम, ऋषभ या त्रिवृष, सुतेजा या भारद्वाज, अंतरिक्ष या धर्म, वप्रवन् या सुचक्षु, त्रय्यारुणि, धनंजय, कृतंजय, ऋतंजय, भरद्वाज, गौतम, उत्तम या हर्यात्म, वाचश्रवा या नारायण (इन्हें वेण भी कहते हैं), सोमशुष्मायन या तृणबिंदु, ऋक्ष या वाल्मीकि, शक्ति, पराशर, जातुकर्ण और कृष्ण द्वैपायन।

३ वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणो आदि की कथाएँ लोगो को सुनाता हो। कथावाचक। उ०—तो कभी व्यास बन पुरानी प्रयोजनीय वृत्तांतो की कथा कह सुनाती है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१। ४ वह रेखा जो किसी बिल्कुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक बिंदु से बिलकुल सीधी चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ५. विस्तार। प्रसार। फैलाव। ६ वितरण। विभाजन (को०)। ७ समासयुक्त पदो का विश्लेषण या विग्रह (को०)। ८ पृथक्ता। अलगाव (को०)। ९ चौड़ाई। १० उच्चारण का एक दोष (को०)। ११ व्यवस्थापक। संकलन करनेवाला। वह जो संकलन करता हो (को०)। १२. व्यवस्था। संकलन करने का काम (को०)। १३. विस्तारयुक्त विवरण। विस्तृत विवरण (को०)। १४ एक प्रकार का धनुष जिसकी तौल या वजन १०० पल की होती थी (को०)।

व्यासकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत से आए हुए वेदव्यास के कूट श्लोक। २ वे कूट श्लोक जो सीताहरण होने पर रामचंद्र जी ने माल्यवान् पर्वत पर कहे थे और जिनसे उन्हें कुछ शांति मिली थी।

व्यासक्त—वि० [सं०] १ जो आसक्त हुआ हो। जिसका मन बेतरह आ गया हो। २ संबद्ध। लगा हुआ। जुड़ा हुआ (को०)। ३. पृथक्कृत। अलग किया हुआ। ४ व्याकुल। परेशान (को०)। ५. आलिंगित। आलिंगनबद्ध (को०)। ६. अनासक्त (को०)।

व्यासगीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

व्यासता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास का भाव या धर्म। व्यासत्व।

व्यासतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

व्यासत्व—संज्ञा पुं० [सं०] व्यास का भाव या धर्म।

व्यासदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण द्वैपायन। वेदव्यास (को०)।

व्यासपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणो के व्याख्याता का आसन। व्यासासन (को०)।

व्यासपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आषाढ मास की पूर्णिमा को होनेवाली गुरु की पूजा जिसे व्यासपूजा भी कहते है।

व्यासमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यासमातृ] व्यास की माता, सत्यवती (को०)।

व्यासमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

व्यासयति—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम जिसे व्यासतीर्थ भी कहते हैं [को०]।

व्यासराज—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ [को०]।

व्यासवन—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन वन का नाम।

व्यास समास—संज्ञा पुं० [सं०] विस्तार और संक्षेप [को०]।

व्यास सरोवर—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार वह सरोवर जिसमें युद्ध के अंत में दुर्योधन छिपा था [को०]।

व्यासमू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यवती [को०]।

व्याससूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांतसूत्र।

व्यासस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन पवित्र तीर्थ का नाम।

व्यासस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक स्मृति का नाम [को०]।

व्यासारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्यासवन नामक प्राचीन वन।

व्यासार्द्ध—संज्ञा पुं० [सं०] व्यास का आधा भाग। किसी वृत्त के केंद्र से उसके किसी छोर तक की रेखा।

व्यासासन—संज्ञा पुं० [सं०] वह आसन जिसपर कथा कहनेवाले व्यास बैठकर कथा कहते हैं। व्यासपीठ।

व्यासिद्ध—वि० [सं०] १ मना किया हुआ। वर्जित। निषिद्ध (माल आदि)। २ रुका हुआ। अवरुद्ध।

व्यासीय—वि० [सं०] व्यास संबंधी। व्यास का।

व्यासेध—संज्ञा पुं० [सं०] निषेध। वर्जन। प्रतिबंध [को०]।

व्याहंतव्य—वि० [सं० व्याहन्तव्य] उल्लंघन करने योग्य [को०]।

व्याहत—वि० [सं०] १ मना किया हुआ। निवारित। निषिद्ध। २. व्यर्थ। ३ हताश। निराश (को०)। ४ भ्रमित। व्याकुल। चकराया हुआ (को०)। ५ जिसपर चोट की गई हो (को०)। ६. परस्पर विरुद्ध। परस्पर विरोधी (को०)। ७ रोका हुआ। बाधित। विफल या निष्फल किया हुआ। ८ भयभीत। भयालु। भययुक्त (को०)।

व्याहतार्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार एक रचनागत दोष जिसमें उत्तरवर्ती कथन से पूर्ववर्ती कथन की हीनता या व्यर्थता व्यक्त हो। पहले कही हुई बात का आगे कही हुई बात से उत्कर्ष न रहना।

व्याहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] खलल पहुँचाना। बाधा डालना। २ न्याय में परस्पर असंगति या वचन विरोध (को०)।

व्याहनस्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्याहनस्या] अत्यंत अश्लील [को०]।

व्याहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। उक्ति। २ उच्चारण (को०)।

व्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाक्य। जुमला। वचन। कथन। २. ध्वनि। स्वर। आवाज (को०)। ३ हास परिहास। मजाक। परिहास भरी उक्ति (को०)। ४ पक्षियों का चहचहाना। कलरव (को०)।

व्याहाव—संज्ञा पुं० [सं०] व्यक्त वा परिस्फुट ध्वनि। स्पष्ट पुकार [को०]।

व्याहित—वि० [सं०] व्याधिग्रस्त। रोगयुक्त [को०]।

व्याहृत¹—वि० [सं०] १. कहा हुआ। कथित। उक्त। २ खादित। भक्षित (को०)। ३. जिसने कुछ कहा हो। जिसने ध्वनि की हो (को०)।

व्याहृत²—संज्ञा पुं० १ बोलना। कहना। वार्ता करना। २. अस्पष्ट कथन। कल कूजन। अस्फुट ध्वनि (विशेषत पशुपक्षियों की)। ३ निर्देश। नियोग। बाधन। स्थापन [को०]।

व्याहृत संदेश—संज्ञा पुं० [सं० व्याहृत सन्देश] वह जो सूचना या समाचार कहे। संदेशहारक। दूत [को०]।

व्याहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कथन। उक्ति। २. उच्चारण। वचन (को०)। ३ भू, भुव, स्वः इन तीनों का मंत्र।

विशेष—कहते हैं, जहाँ और कोई मंत्र न हो, वहाँ इसी व्याहृति मंत्र से काम लेना चाहिए। कुछ विद्वानों के मतानुसार व्याहृतियाँ सात हैं—भू., भुव., स्व, मह., जन, तप और सत्यम्। इनमें प्रारंभिक तीन महाव्याहृति कही गई हैं और ये सवितृ और पृश्नि की कन्या मानी जाती हैं।

व्युंदन—संज्ञा पुं० [सं० व्युन्दन] अच्छी तरह तर करना। आर्द्र करना। गीला करना [को०]।

व्युच्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यय। उल्लंघन। अतिक्रमण [को०]।

व्युच्छित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनाश। बरबादी। उन्मूलन।

व्युच्छेत्ता—वि०, संज्ञा पुं० [सं० व्युच्छेत्तृ] १. विनाश करनेवाला। बरबाद करनेवाला। २. (वह) जो काटा गया हो। (वह) जिसे उन्मूलित किया गया हो (को०)।

व्युच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] विनाश। पूर्णत उन्मूलन। व्युच्छित्ति [को०]।

व्युत—वि० [सं०] १ बुना हुआ। व्यूत। गूँथा हुआ। २ जो समतल किया गया हो। जैसे, मार्ग (को०)।

व्युति—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'व्यूति'। २ बुनाई की मजदूरी। बुनाई। सिलाई [को०]।

व्युत्क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रम में उलटफेर होना। व्यतिक्रम। गड़बड़ी। २. निश्चित वा उचित का परित्याग करना (को०)। ३. अतिक्रमण। उल्लंघन (को०)। ४ अस्तव्यस्त होना (को०)। ५ मृत्यु। मरण (को०)।

व्युत्क्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अलग होना। अलगाव। २ अतिक्रमण। उल्लंघन। [को०]।

व्युत्क्रांत—वि० [सं० व्युत्क्रान्त] १ लाँघा हुआ। लंघित। उल्लंघित। २ गत। गया हुआ। प्रस्थित। ३. तिरस्कृत। निरादृत। उपेक्षित। ४ विपरीत दिशा में जानेवाला। प्रतिकूल पथगामी [को०]।

यौ०—व्युत्क्रांत जीवित = मृत। निर्जीव। गतप्राण। व्युत्क्रांतधर्म = कर्तव्य कर्म की उपेक्षा करनेवाला। धर्म का उल्लंघन करनेवाला। व्युत्क्रांतरजा। व्युत्क्रांतवर्त्मा।

व्युत्क्रातरजा—वि० [स० व्युत्क्रान्तरजस्] १ रजोगुण से रहित । वासनाहीन । २ निष्पाप । अकलुष [को०] ।

व्युत्क्रातवर्त्मा—वि० [स० व्युत्क्रान्तवर्त्मन्] सत्पथ से च्युत । विहित एव उचित मार्ग का परित्याग करनेवाला [को०] ।

व्युत्क्रातसमापत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्त समापत्ति] १ बौद्ध मतानुसार अनन्यमनस्कता की स्थिति । समाधि या एकाग्रता की अवस्था । २ एकीकरण वा एकत्र समाहरण की स्थिति [को०] ।

व्युत्क्राता—सज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्ता] एक प्रकार की प्रहेलिका । पहेली का एक भेद । पहेली ।

व्युत्त—वि० [स०] आर्द्र या तर किया हुआ । जिसका व्युदन किया गया हो [को०] ।

व्युत्थान—सज्ञा पु० [स०] १ स्वतत्र या स्वाधीन होकर काम करना । २ किसी के विरुद्ध आचरण करना । खिलाफ चलना । ३ रुकावट डालना । रोकना । ४ समाधि । ५ एक प्रकार का नृत्य । ६ योग के अनुसार चित्त की क्षिप्त, मूढ और विक्षिप्त ये तीन अवस्थाएँ या चित्तभूमियाँ जिनमे योग का साधन नही हो सकता । इन भूमियो मे चित्त बहुत चचल रहता है । ७ महत् सक्रियता । सचेष्टता (को०) । ८ हाथी को उठने के लिये प्रेरित करना (को०) । ९. किसी से दबना या नीचा देखना (को०) । १० खडन । विरोध (को०) ।

व्युत्थापित—वि० [स०] उठाया हुआ । जगाया हुआ । जिसे उठने या जगने के लिये प्रेरित किया गया हो [को०] ।

व्युत्थित—वि० [स०] १ कर्तव्य मार्ग से विचलित । उच्छास्त्रवर्ती । २ जिसकी बुद्धि स्थिर न हो । ३. जो बहुत क्षुब्ध हो [को०] ।

व्युत्पत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी पदार्थ आदि की विशिष्ट उत्पत्ति । किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान । २ शब्द का मूल रूप । वह शब्द जिससे कोई दूसरा शब्द निकला हो । ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान वा प्रगाढ पाडित्य । जैसे,— दर्शन शास्त्र मे उनकी अच्छी व्युत्पत्ति है । ४ विद्वत्ता । ज्ञान (को०) । ५ ध्वनि या उच्चारण की भिन्नता (को०) । ६ बाढ । विकास (को०) ।

व्युत्पन्न—वि० [स०] १ जिसका संस्कार हो चुका हो । सस्कृत । २. जिसका किसी विज्ञान या शास्त्र मे अच्छा प्रवेश हो । जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो । ३ उत्पादित । पैदा किया हुआ (को०) । ४ अव्युत्पन्न का विपरीतार्थबोधक । जिसकी व्युत्पत्ति की गई हो (को०) । ५ जो निरुक्ति या निर्वचन द्वारा निर्मित हो (को०) । ६ पूर्ण किया हुआ । संपन्न (को०) ।

व्युत्पादक—वि० [स०] १ व्युत्पत्ति या निर्वचन । करनेवाला । २ उत्पन्न करनेवाला ।

व्युत्पादन—सज्ञा पुं० [स०] १ व्युत्पत्ति । मूल रूप या शब्द का निर्वचन । २ निर्देशन । शिक्षण (को०) ।

व्युत्पाद्य—वि० [स०] जिसकी निरुक्ति की जा सके । व्युत्पत्ति के योग्य [को०] ।

व्युत्सर्ग—सज्ञा पु० [सं०] जैनो के अनुसार शरीर का मोह या चिंता का परित्याग । उ०—दूसरे प्रकार के तप मे प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीरत्याग) की गणना होती है ।—आ०, भा०, पृ० १४३ । २ विरक्ति । त्याग (को०) ।

व्युत्सेक—सज्ञा पु० [स०] चारो ओर छिडकना या उडेलना [को०] ।

व्युद, व्युदक—वि० [स०] उदकविहीन । जलरहित [को०] ।

व्युदस्त—वि० [स०] १ फेंका हुआ । दूर किया हुआ । क्षिप्त । २ अस्वीकृत किया हुआ । ३ विकीर्ण [को०] ।

व्युदास—सज्ञा पु० [स०] १ हटाना । निकाल देना । निरसन । परित्याग । (व्याकरण) । २. हत्या । विनाश । वध । ३ प्रतिषेध । निषेध । ४. उदासीनता । उपेक्षा । ५ फेंकना । दूर करना । अस्वीकृत करना । ६ अत । समाप्ति । विराम [को०] ।

व्युदित —वि० [स०] जिसपर वाद विवाद किया गया हो [को०] ।

व्युन्मिश्र—वि० [स०] मिलाया हुआ । मिश्रित किया हुआ । सकीर्ण [को०] ।

व्युप—सज्ञा पुं० [स०] वह जो अपने हाथो को स्वय चबाता या खाता हो [को०] ।

व्युपदेश—सज्ञा पुं० [स०] ठगने या धोखा देने का काम । ठगी । व्यपदेश ।

व्युपद्रव—वि० [स०] जो भाग्य के फेर से या दुर्दिन से अशात एव क्षुब्ध न हो ।

व्युपपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] फिर से जन्म होना । पुनर्जन्म [को०] ।

व्युपरत —वि० [स०] शात । निश्चल । रुद्ध [को०] ।

व्युपरम—सज्ञा पुं० [स०] १ शाति । विराम । समाप्ति । २ छुटकारा । निवृत्ति । ३ स्थिति ।

व्युपवीत—वि० [स०] उपवीतरहित । यज्ञोपवीत विहीन [को०] ।

व्युपशम—सज्ञा पुं० [स०] १ अशाति । २ विराम का अभाव (को०) । ३. पूर्ण विराम, शाति या समाप्ति (को०) ।

व्युप्त —वि० [स०] १ विकीर्ण किया हुआ । बिखेरा हुआ । २ कटाया हुआ । क्षौर किया हुआ । मुडित [को०] ।

व्युप्तकेश—सज्ञा पु० [स०] १ शिव का एक नाम । २ अग्नि । ३ वह जिसने क्षौर कराया हो । ४ वह जिसके बाल बिखरे हो । अस्तव्यस्त केशोवाला [को०] ।

व्युष सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य के उदय होने का समय । भोरहरी प्रातःकाल । सबेरा ।

व्युषित – वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्युष्ट' [को०] ।

व्युषिताश्व सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

व्युष्ट'—सज्ञा पु० [सं०] १ प्रभात । तडका । सबेरा । २ दिन । दिवस । ३ फल । परिणाम । ४ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार श्रावण मे नए वर्ष का प्रथम दिवस (को०) ।

व्युष्ट[2]—वि० १ जला या झुलसा हुआ। २ द्योतित, प्रकाशयुक्त या जो स्पष्ट हो गया हो (को०)। ३ व्यतीत। बीता अथवा गुजरा हुआ (को०)। ४ उषःकालीन प्रकाश से युक्त। प्राभातिक सूर्य किरणों से युक्त। प्रभातीभूत। ५ बिताया हुआ। गुजारा हुआ। रहा हुआ। निवास द्वारा गुजारा हुआ (को०)।

व्युष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फल। नतीजा। परिणाम। २ समृद्धि। ३ स्तुति। प्रशंसा। ४ प्रकाश। उजाला। ५ प्रभात। तडका। ६ दाह। जलन। ७ इच्छा। कामना। खाहिश। ८ सौंदर्य। सुंदरता (को०)। ९ आठवें दिन भोजन करना (को०)।

व्यूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यूढ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यूह बनाकर खडा हो। २ वह जिसका विवाह हो चुका हो।

व्यूढ[2]—वि० १ स्थूल। मोटा। २ उत्तम। बढिया। ३ तुल्य। समान। ४ दृढ। मजबूत। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। जैसे, सेना (को०)। ६ विवाहित। ७ अव्यवस्थित। क्रमहीन। ८ विकसित (को०)। ९ फैला हुआ। विशाल (को०)।

यौ०—व्यूढकंकट=वर्म आदि को धारण किए हुए। जिसने कवच आदि पहना हो।

व्यूढि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विन्यास। सजावट। २ स्थूलता। मोटाई। ३ सैन्यविन्यास। दे० 'व्यूह' (को०)।

व्यूढोरस्क—वि० [सं०] विशाल या चौडी छातीवाला (को०)।

व्यूत—वि० [सं०] १ बुना हुआ। २ समतल या बराबर किया हुआ (को०)।

व्यूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपडे आदि बुनने की क्रिया। बुनाई। २ बुनने की मजदूरी (को०)।

व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३ तर्क। ४ शरीर। बदन। ५ सेना। फौज। ६ परिणाम। नतीजा। ७ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। लडाई के समय की अलग अलग उपयुक्त स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की नियुक्ति। सेना का विन्यास। बलविन्यास।

विशेष—प्राचीन काल में युद्धक्षेत्र में लडने के लिये पैदल, अश्वारोही, रथ और हाथी आदि कुछ खास ढंग से और खास खास मौकों पर रखे जाते थे, और सेना का यही स्थापन व्यूह कहलाता था। आकार आदि के विचार से ये व्यूह कई प्रकार के होते थे। जैसे,—दंड व्यूह, शकटव्यूह, वराहव्यूह, मकरव्यूह, सूचीव्यूह, पद्मव्यूह, चक्रव्यूह, वज्रव्यूह, गरुडव्यूह, श्येनव्यूह, मंडलव्यूह, धनुर्व्यूह, सर्वतोभद्रव्यूह आदि। राजा या सेना का प्रधान सेनापति प्राय व्यूह के मध्य में रहता था, और उसपर सहसा आक्रमण नहीं हो सकता था। जब इस प्रकार सेना के सब अंग स्थापित कर दिए जाते थे, तब शत्रु सहसा उन्हें छिन्न भिन्न नहीं कर सकते थे।

८ किसी प्रकार के आक्रमण या विपत्ति आदि से रक्षित रहने के लिये की हुई रचना। योजनाएँ। ९ उपर्णाप। अध्याय। भाग। अंश (को०)। १०. अलग अलग करना। विभाग करना (को०)। ११. अस्तव्यस्त करना (को०)। १२ स्थान बदलना (को०)। १३. विस्तृत व्याख्या (को०)। १४ प्राण प्रश्वास (को०)।

यौ०—व्यूहपार्ष्णि, व्यूहपृष्ठ—सेना का पिछला भाग। चंदावल। व्यूहभंग, व्यूहभेद=सैनिकों की स्थिति या क्रम टूटना। सैनिकों की व्यूहस्थिति का छिन्नभिन्न होना। व्यूहरचना, व्यूहराज, व्यूहविभाग=सेना की एक विशिष्ट एवं पृथक् पंक्ति।

व्यूहक—संज्ञा पुं० [सं०] आकार। रूप (को०)।

व्यूहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध के लिये भिन्न भिन्न स्थानों पर सैनिकों की नियुक्ति करना। सेना को स्थापित करना। व्यूहरचना। २ मिलाना। ३ शरीर के अंगों की बनावट (को०)। ४ स्थानपरिवर्तन (को०)। ५ (भ्रूण का) विकास (को०)।

व्यूहमति—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

व्यूहरचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैनिकों को योजनानुसार उपयुक्त स्थान पर खडा करना। मोरचेबंदी (को०)।

व्यूहराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बोधिसत्व का नाम। २. सर्वोत्कृष्ट व्यूह। श्रेष्ठ व्यूह (को०)। ३ एक प्रकार की समाधि (को०)।

व्यूहित—वि० [सं०] १ समूहबद्ध। २ व्यूह के आकार में स्थित। व्यूहबद्ध (को०)।

व्यृद्ध—वि० [सं०] १ ऋद्धिहीन। समृद्धिरहित या वंचित। दुर्भाग्यग्रस्त। बदकिस्मत। २ किसी वस्तु से पृथक् किया हुआ। पृथक्कृत या वंचित। ३ दोषयुक्त। सदोष। अपूर्ण। ४ निष्फल किया हुआ। विमर्दीकृत। ५ सापराध (को०)।

व्यृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभाग्य। बदकिस्मती। २ न्यूनता। दुर्लभता। अभाव (को०)।

व्येक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्येका] जिसमें एक की कमी हो। एक से कम। ऐकोन (को०)।

व्येनस्—वि० [सं०] दोषरहित। अनपराध (को०)।

व्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जिसमें अनेक रंग हों। उषा, जिसमें विविध वर्ण होते हैं (को०)।

व्योकस्—वि० [सं०] अलग रहनेवाला। जो संपृक्त न हो (को०)।

व्योकार—संज्ञा पुं० [सं०] लोहकार। लोहार (को०)।

व्योम—संज्ञा पुं० [सं० व्योमन्] १ आकाश। अंतरिक्ष। आसमान। २ मेघ। बादल। ३ जल। पानी। ४ अवकाश। अंतर (को०)। ५ सूर्य का मंदिर। सूर्यमंदिर (को०)। ६ अभ्रक (को०)। ७ शरीरस्थ वायु (को०)। ८ एक बडी संख्या का सूचक शब्द (को०)। ९ कल्याण। सुरक्षा (को०)। १०. हार।

विष्णु (को०)। ११. एक एकाह कृत्य (को०)। १२. वर्यदेवता अथवा प्रजापति का नाम (को०)। १३ हरिवंश पुराण मे वर्णित दशार्ह के एक पुत्र का नाम (को०)।

व्योमक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध मतानुसार एक आभूषण [को०]।

व्योमकेश—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

व्योमकेशी—संज्ञा पुं० [सं० व्योमकेशिन्] शिव का एक नाम।

व्योमगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्योमगङ्गा] आकाशगंगा।

व्योमग—वि० [सं०] आकाशचारी [को०]।

व्योमगमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य आकाश में उड सकता हो। आसमान मे उडने की विद्या।

व्योमगमनीविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'व्योमगमनी'।

व्योमगामी—वि० [सं० व्योमगामिन्] आकाशचारी [को०]।

व्योमगुण—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द [को०]।

व्योमचर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आकाश मे विचरण करता हो। आकाशचारी।

व्योमचारी—संज्ञा पुं० [सं० व्योमचारिन्] १ देवता। २ पक्षी। चिड़िया। ३ वह जो आकाश मे विचरण करता हो। ४ संत (को०)। ५ आकाशीय पिंड (को०)। ६ ब्राह्मण (को०)।

व्योमदेव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

व्योमधारण—संज्ञा पुं० [सं०] पारा [को०]।

व्योमधूम—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

व्योमध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशवाणी [को०]।

व्योमनाशिका, व्योमनासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारती नामक पक्षी।

व्योमपंचक—संज्ञा पुं० [सं० व्योमपञ्चक] शरीर मे रहनेवाले पाँच छिद्र [को०]।

व्योमपाद—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

व्योमपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] असंभव पदार्थ। आकाशकुसुम [को०]।

व्योममंजर—संज्ञा पुं० [सं० व्योममञ्जर] दे० 'व्योममंडल' [को०]।

व्योममंडल—संज्ञा पुं० [सं० व्योममण्डल] १ आकाश। आसमान। उ०—व्योममंडल मे—जगतीतल मे सोती शांत सरोवर पर उस अमल कमलिनी दल मे।—अपरा, पृ० १४। २ पताका। ध्वजा। झंडा।

व्योममाय—वि० [सं०] आकाशचुंबी [को०]।

व्योममुद्गर—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो हवा के बहुत जोर से चलने से होता है। हूका।

व्योममृग—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के दसवें घोडे का नाम।

व्योमयान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह यान या सवारी जिसपर चढकर मनुष्य आकाश मे उड सकता। हो। विमान। २ हवाई जहाज।

व्योमरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

व्योमवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशवल्ली या अमरबेल नाम की लता।

व्योमवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतरिक्ष, आकाश से होनेवाली वर्षा। उ०—मंजरित प्रकृति, मुकुलित दिगंत, कूजन गुंजन की व्योमवृष्टि।—युगांत, पृ० ६।

व्योमसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्योमसम्भवा] विचित्रवर्ण की गौ। चितकबरी गाय [को०]।

व्योमसद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। सुर। २. एक देवयोनि। गंधर्व। ३ भूत, प्रेत [को०]।

व्योमसरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा [को०]।

व्योमसरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० व्योमसरित्] आकाशगंगा। मंदाकिनी।

व्योमस्थल—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश। उ०—विद्युन्मयी घटा है घन की। छिपा रत्नदीपक अञ्चल मे, शोभित है वह व्योमस्थल मे, ज्योति झनकती है पल पल मे, वर्षा ऋतु ने दिखलाई है ज्योतिर्मणी विभूति गगन की।—प्रेमांजलि, पृ० ११६।

व्योमस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। जमीन।

व्योमाख्या—संज्ञा पुं० [सं०] १ अबरक अभ्रक। २ मूल या आदि कारण [को०]।

व्योमाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

व्योमाभ—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध का एक नाम।

व्योमारि—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवता।

व्योमी—संज्ञा पुं० [सं० व्योमिन्] चंद्रमा के दस घोडो मे से एक का नाम [को०]।

व्योमोदक—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का जल। बरसात का पानी।

व्योम्निक—वि० [सं०] व्योम संबंधी। व्योम या आकाश का।

व्योरना†—क्रि० स० [हिं० व्योरा] दे० 'व्योरना'

व्योरा‡—संज्ञा पुं० [सं० विवरण] दे० 'ब्योरा'। उ०—मैं हूँ जीव मती का भंरा। कहँ जानूँ चौका के व्योरा।—कबीर सा०, पृ० ५४८।

व्योरेवार—अव्य० [हिं० ब्योरा] तफसील के साथ। ब्योरेवार। सविस्तर। उ०—इन तमाम ग्रंथो की रचना काल का ठीक ठीक पता लग सकता तो हिंदुस्तान का धार्मिक, सामाजिक, और आर्थिक इतिहास क्रमपूर्वक व्योरेवार लिखा जाता। - हिंदु० सभ्यता, पृ० १४३।

व्योष—संज्ञा पुं० [सं०] सोंठ, पीपल और मिर्च इन तीनो का समूह। त्रिकटु।

व्योहरनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यवहारणीय] व्यवहार। बर्ताव। उ०—कहै मित्र की बात करै दुसमन को करनी। ना कीजै विस्वास करै कैसो व्योहरनी।—पलटू०, पृ० ६७।

व्योहार†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—देख्या चाह जग व्यवहार।—रामानंद०, पृ० ४६।

व्यौपारी†—संज्ञा पुं० [सं० व्यापारिन्] दे० 'व्यापारी'। उ०—तब वह वैष्णवन वा व्यौपारी के साथ घर रह्यो।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०४।

व्यौरना†—क्रि० स० [स० विवरण] दे० 'व्यौरना'। उ०—आदित वार व्यौरि ले आप। आपा व्यौरत पुनि न पाप। गोरख०, पृ० २४४।

व्यौहार†—संज्ञा पुं० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—और मानिक चद सों प्रभु कहे, जो तुम व्यौहार करो।—दा सौ बावन०, भा० १, पृ० १६५।

व्रद ५—संज्ञा पुं० [स० वृन्द] दे० 'वृद'। उ०—भिक्षुक व्रद दान तिहि दिन्नव।—प० रासो, पृ० १५६।

व्रच्छ संज्ञा पु० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ०—सावण आयउ साहिबा पगइ विलंबी गार। व्रच्छ विलंबी वेलड्याँ, नरा विलंबी नार।—ढोला०, दू० २६६।

व्रज—संज्ञा पु० [स०] १ जाना या चलना। व्रजन। गमन। २. समूह। झुंड ३ मथुरा और वृदावन के आसपास का प्रात जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र है और जो इसी कारण बहुत पवित्र माना जाता है। पुराणों आदि के अनुसार मथुरा से चारो ओर ८४-८४ कोस तक की भूमि व्रजभूमि कही गई है, और इसकी प्रदक्षिणा का बहुत अधिक माहात्म्य कहा गया है। ४ अहीरो का टोला या बाडा। उ०—नयननि को फल लेति निरखि खग मृग सुरभी व्रजवधू अहीर —तुलसी (शब्द०)। ५ गोष्ठ। गोकुल। गोशाला (को०)। ६ आवास। विश्राम करने की जगह (को०)। ७ पथ। सडक। मार्ग (को०)। ८ बादल (को०)।

व्रजक—संज्ञा पुं० [स०] भिक्षा के निमित्त भ्रमणशील सन्यासी [को०]।

व्रजकिशोर—संज्ञा पु० [स०] कृष्ण [को०]।

व्रजन—संज्ञा पुं० [स०] १ चलना। जाना। गमन। २ निर्वासन। देशनिकाला (को०)। ३ मार्ग। सडक (को०)। ४ आकाश (को०)। ५ अजामीढ के एक पुत्र का नाम (को०)।

व्रजनाथ—संज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजपर्यग्र—संज्ञा पु० [स०] पशुओ की गणना।

विशेष—चद्रगुप्त के समय मे अध्यक्ष को राजकीय पशुओ की पूरे निशान आदि के साथ बही मे गिनती रखनी पडती थी।

व्रजभाषा—संज्ञा स्त्री० [स०] मथुरा, आगरा, इटावा और इनके आसपास के प्रदेशो म बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा, जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। उक्त जिलो के पश्चिम या दक्षिण मे यही राजस्थानी का रूप धारण कर लेती है।

विशेष—इस भाषा का प्राचीन साहित्य बहुत उच्च और बडा है और इधर चार पाँच सौ वर्षों में उत्तर भारत के अधिकाश कवियो ने प्राय. इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमे से सूर, तुलसी, विहारी आदि अनेक कवियो ने तो बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। यह भाषा बहुत ही कर्णमधुर मानी जाती है। खडी बोली मे जो सज्ञाए, विशेषण और भूतकृदंत आदि आकारात होते हैं, वे इस भाषा मे प्राय ओकारात हो जाते हैं। और कारकचिह्न भी प्राय ओकारात ही होते हैं जैसे,—घोडो, चल्यो, को सों, मो आदि। इसके कारकचिह्न निज के हैं, जो न खडी बोली मे मिलते हैं और न अवधी में। भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह भाषा अतरग समुदाय की सब भाषाओ मे मुख्य मानी जाती है।

व्रजभू¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रजमडल की भूमि [को०]।

व्रजभू²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कदब [को०]।

व्रजभू³—वि० व्रज मे होनेवाला [को०]।

व्रजभूमिक—संज्ञा पुं० [स०] प्राचीन भारत में धर्म महामात्र का एक पद। उ०—ये धर्म महामात्र कई प्रकार के थे, स्त्री अध्यक्ष-महामात्र, व्रजभूमिक, अतमहामात्र आदि।—भा० भा०, पृ० २५२।

व्रजमडल—संज्ञा पुं० [स० व्रजमण्डल] व्रज और उसके आस पास का प्रदेश।

व्रजमोहन—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजयुवती—संज्ञा स्त्री० [स०] गोपिका [को०]।

व्रजराज—संज्ञा पुं० [स०] १ श्रीकृष्ण। नंद महर। २ नदजी। उ०—कुँवर कन्हाई दृगनि सुखदाई नवमिश्र मनि गननि अलकृत राजत श्री व्रजराज के निकट।—घनानद, पृ ५५६।

व्रजरामा—संज्ञा स्त्री० [स०] व्रज की गोपी [को०]।

व्रजलाल—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजलीला—संज्ञा स्त्री० [स०] कृष्णलीला। व्रज में की गई कृष्ण भगवान् की लीला। उ०—सो इनकी जा प्रकार व्रजलीला मे प्राप्ति भई सो ऊपर कहि आए हैं।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ८६।

व्रजवधू, व्रजवनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी [को०]।

व्रजवर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण [को०]।

व्रजवल्लभ संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजवीर ५—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजसान—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य [को०]।

व्रजसुदरी—संज्ञा स्त्री० [स० व्रजसुन्दरी] गोपी [को०]।

व्रजस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी [को०]।

व्रजस्पति—संज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजागन संज्ञा पु० [स० व्रजाङ्गन] गोशाला। गोष्ठ (को०)।

व्रजागना—संज्ञा स्त्री० [सं० व्रजाङ्गना] गोपिका। व्रजवनिता।

व्रजाजिर—संज्ञा पुं० [स०] गोष्ठ। गोशाला [को०]।

व्रजावास—संज्ञा पुं० [स०] गोपो की बस्ती। ग्वालो का गाँव [को०]।

व्रजित¹—संज्ञा पु० [स०] गमन। जाना। घूमना [को०]।

व्रजित²—वि० गत। प्रस्थित। गया हुआ [को०]।

व्रजी—वि० [सं० व्रजिन] समूह के रूप मे एकत्र [को०]।

व्रजेंद्र—संज्ञा पुं० [स० व्रजेन्द्र] १ नदराय। २. श्रीकृष्ण।

व्रजेश—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण। व्रजेंद्र [को०]।

व्रजेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रज्य—वि० [सं०] गोशाला या गोष्ठ से संबंधित [को०]।

व्रज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घूमना। फिरना। पर्यटन। परिव्रजन। उ०—सुरलोक जहाँ नगण्य है वह व्रज्या व्रज धन्य धन्य है।—साकेत, पृ० ३५८। २ गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई। ४ एक ही तरह की बहुत सी चीजें एक जगह एकत्र करना। ५ दल। ६. रंगभूमि। नाट्यशाला। ७ जाति। वर्ग श्रेणी (को०)।

व्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर में होनेवाला फोड़ा। २ घाव। जख्म। चोट (को०)। ३ अरुचिकर (को०)। ४ दाग। छिद्र। रंध्र (को०)।

यौ०—व्रणाढ्य। व्रणकेतुघ्नी = दुग्धफेनी नाम का पौधा। व्रणग्रंथि। व्रणचिंतक। व्रणजित्। व्रणद्विट् = (१) ब्राह्मणयष्टिका नाम का क्षुप। (२) व्रण का शत्रु। जिससे घाव ठीक हो जाय। व्रणधूपन =चिकित्सार्थ व्रण को भाप से उपचार। व्रण को वाष्प द्वारा उपचार करना। व्रणपट्ट, व्रणपट्टक, व्रणपट्टिका = घाव बाँधने का चीर या पट्टा। व्रणभृत् = घायल। आहत। व्रणयुक्त = जिसे घाव लगा हो। फोड़े आदि से युक्त। व्रणरोपण। व्रणवास्तु। व्रणविरोपण = दे० 'व्रणरोपण'। व्रणशोधन। व्रणशोथ। व्रणशोषी = घाव, फोड़ा आदि के कारण दुर्बल या क्षीण होनेवाला। व्रणसंरोहण = दे० 'व्रणरोहण'। व्रणह। व्रणहा। व्रणहृद्।

व्रणकृत्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ।

व्रणकृत्[2]—वि० १ घाव करनेवाला। २. सुरंगवाला। घाव या छेद करनेवाला [को०]।

व्रणग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० व्रणग्रन्थि] वह गाँठ जो फोड़े के ऊपर हो जाती है। वैद्यक में इसकी गणना रोगों में होती है।

व्रणचिंतक—संज्ञा पुं० [सं० व्रणचिन्तक] शल्यक्रिया या चीरफाड़ करनेवाला जर्राह [को०]।

व्रणजिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

व्रणन—संज्ञा पुं० [सं०] वेधन। भेदना। व्रण करना [को०]।

व्रणरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार फोड़े में से दूषित मांस आदि निकल जाने पर ऐसी क्रिया करना जिससे घाव भर जाय। फोड़े का घाव भरने की क्रिया। २. वह औषध जिससे घाव या फोड़ा ठीक हो जाय।

व्रणवास्तु—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ फोड़ा हो [को०]।

व्रणशोषन—संज्ञा पुं० [सं०] ममासा।

व्रणस्राव—संज्ञा पुं० [सं०] फोड़े या घाव से होनेवाला वह स्राव जिसमें मवाद न पैदा भी हो।

व्रणह—संज्ञा पुं० [सं०] रेंड का वृक्ष।

व्रणहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुडूच।

व्रणहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] [illegible]।

व्रणायाम—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] मर्मस्थान के पास [illegible] हो जाती है। [illegible]।

व्रणारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोल नामक गंधद्रव्य। २. अगस्त्य नामक वृक्ष।

व्रणित—वि० [सं०] व्रणयुक्त। आहत। घायल [को०]।

व्रणिन्—वि० [सं०] (वृक्ष) जो [illegible] [illegible]। छिन्न [को०]।

व्रणी—संज्ञा पुं० [सं० व्रणिन्] वह जिसे व्रण हुआ हो। [illegible]।

व्रणीय—वि० [सं०] व्रण संबंधी। व्रण या फोड़े का।

व्रण्य—वि० [सं०] फोड़े को अच्छा करनेवाला [को०]।

व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन करना। भक्षण। खाना। २. किसी पुण्य तिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति [illegible] उपवास करना।

विशेष—प्रायः हिंदू लोग व्रत के दिन कुछ नहीं खाते, या केवल फल खाते हैं और या केवल एक विशिष्ट प्रकार का भोजन खाकर रहते हैं। साधारणतः प्रत्येक [illegible] व्रत किया जाता है, उसमें लोग [illegible] हैं, पर अनाज आदि के स्थान में फल भी खाया करते हैं। कुछ विशिष्ट तिथियों के व्रत भी [illegible] हुआ करते हैं। जैसे—निर्जला एकादशी के व्रत में जल [illegible] का विधान है। कुछ विशिष्ट तिथियों [illegible] उद्देश्य से भी व्रत किया जाता है। कुछ व्रत [illegible] कई कई दिनों तक [illegible] है। जैसे,—चांद्रायण, चातुर्मास्य व्रत आदि। कुछ व्रत [illegible] जिनके अर्थ अथवा दूसरे दिन [illegible] जाता [illegible]। कुछ व्रत [illegible] है। जैसे,—[illegible] व्रत। व्रत के एक दिन पहले [illegible] पूर्वक रहते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

२ [illegible] करने अथवा न करने का [illegible]। [illegible]। जैसे,—[illegible], [illegible]। उ०—[illegible] [illegible]।—[illegible]। ४. [illegible] नियम [illegible] (को०)। ५ [illegible]। आचरण। [illegible] (को०)। ६ [illegible] (को०)। ७ [illegible] (को०)। ८. [illegible] (को०)। ९. [illegible] (को०)। १०. [illegible] (को०)। ११. [illegible] (को०)। १२ [illegible] (को०)। १३. [illegible] (को०)।

व्रतग्रहण—[illegible] [सं०] १ [illegible] अनुष्ठान [illegible] [illegible]। २. [illegible] [को०]।

व्रतचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी प्रकार का व्रत करने या रहने का काम।

व्रतचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रतचारी होने का भाव या धर्म।

व्रतचारी—संज्ञा पुं० [सं० व्रतचारिन्] वह जो किसी प्रकार के व्रत का आचरण या अनुष्ठान करता हो। व्रत करनेवाला।

व्रतति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्तार। २ लता। उ०—डोलने लगी मधुर मधुवात, हिला तृण, व्रतति कुंज, तरु पात।—गुंजन, पृ० ४७।

यौ०—व्रततिवलय = (१)लताओं का कंकण। (२) लताओं का घेरा या आवेष्टन।

व्रतती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। २ लता।

व्रतदंडी—संज्ञा पुं० [सं० व्रतदण्डिन्] वह जो दंडधारण या व्रत पालन करता हो।

व्रतदान—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत के निमित्त किया हुआ दान। वह दान जो व्रत संबंधी हो (को०)।

व्रतधर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत करनेवाला।

व्रतधारण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी धार्मिक अनुष्ठान को विधिवत् करना या विधिवत् व्रत रखना (को०)।

व्रतपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाद्रपद मास का शुक्लपक्ष। २ एक प्रकार का साम।

व्रतपारण—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० व्रतपारणा] व्रत या उपवास की विधिवत् समाप्ति (को०)।

व्रतप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी व्रत की प्रतिष्ठा करना। व्रत का पालन करना (को०)।

व्रतबंध—संज्ञा पुं० [सं० व्रत + बन्ध] यज्ञोपवीत। जनेऊ। उ०—सुदिन सोधि मंगल किए, दिए भूप व्रतबंध।—तुलसी ग्रं० पृ० ८२।

व्रतभंग—संज्ञा पुं० [सं० व्रतभङ्ग] व्रत, नियम वा प्रतिज्ञा का टूट जाना (को०)।

व्रतभिक्षा—संज्ञा पुं० [सं०] वह भिक्षा जो बालक को यज्ञोपवीत के समय माँगनी पड़ती है।

व्रतरुचि—वि० [सं०] व्रत मे आनंद लेनेवाला (को०)।

व्रतलुप्त—वि० [सं०] अपना व्रत तोड़नेवाला (को०)।

व्रतलोपन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रतभंग (को०)।

व्रतविसर्ग, व्रतविसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत की समाप्ति।

व्रतवैकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत पूरा न होना।

व्रतसंग्रह—संज्ञा पुं० [सं० व्रतसङ्ग्रह] वह दीक्षा जो यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाती है।

व्रतसंपादन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत पूरा करना (को०)।

व्रतसंरक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रतपालन (को०)।

व्रतसमापन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत पूरा होना। व्रतसंपादन (को०)।

व्रतस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने किसी प्रकार व्रत धारण किया हो। २ ब्रह्मचारी।

व्रतस्नात—वि० [सं०] व्रत पूरा करने के बाद स्नान करनेवाला (को०)।

व्रतस्नातक—संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में से एक प्रकार का ब्रह्मचारी। वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के यहाँ रहकर व्रत का समाप्त कर लिया हो पर बिना वेद समाप्त किए ही घर लौट आया हो।

व्रतस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्नान जो व्रतसमाप्ति के बाद किया जाता है (को०)।

व्रतहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रत का त्याग करना। व्रत छोड़ देना (को०)।

व्रताचरण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत का पालन (को०)।

व्रताचारी—वि० [सं० व्रताचारिन्] व्रत का पालन करनेवाला (को०)।

व्रतादान—संज्ञा पुं० [सं०] कोई व्रत ग्रहण करना। व्रत लेना (को०)।

व्रतादेश—संज्ञा पुं० [सं०] उपनयन नामक संस्कार। यज्ञोपवीत।

व्रतादेशन—संज्ञा पुं० [सं०] वेदों का वह उपदेश जो उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी को दिया जाता है।

व्रतापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रत छोड़ना। व्रत का त्यागना (को०)।

व्रतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत का आचरण करनेवाला। २ ब्रह्मचारी (को०)। ३. संन्यासी (को०)। ४ यजमान (को०)।

व्रतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तपस्विनी (को०)।

व्रती—संज्ञा पुं० [सं० व्रतिन्] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत का आचरण करनेवाला। २ वह जो यज्ञ आदि करता हो। यजमान। ३ ब्रह्मचारी। ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ५ संन्यासी (को०)।

व्रतेयु—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

व्रतेश—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

व्रतोपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार (को०)।

व्रतोपवास—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत के निमित्त किया जानेवाला उपवास। व्रत संबंधी उपवास (को०)।

व्रतोपायन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत का प्रारंभ (को०)।

व्रतोपोह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

व्रत्तमान पु†—संज्ञा पुं० [सं० वर्तमान] दे० 'वर्त्तमान'। उ०—भूतह भविष्य अरु व्रत्तमान इह अपुब मे कथ सुनिय।—पृ० रा०, २४।४।

व्रत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २ ब्रह्मचारी। ३ व्रत के उपयुक्त आहार (को०)।

व्रध्न—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ब्रध्न' (को०)।

व्रम्म पु†—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मा, प्रा० ब्रम्म] दे० 'ब्रह्मा'। उ०—गंगा व्रम्म कमंडली, पावनता विस्तार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ११५।

व्रश्चन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना, चाँदी आदि काटने की छेनी। २ वह बुरादा जो लकड़ी आदि चीरने पर गिरता है। ३ कुल्हाड़ी। ४ छेदने या काटने की क्रिया। ५ छोटी आरी (को०)। ६ पेड मे छेद करने से उसमे से निकलनेवाला निर्यास (को०)।

व्रश्चन²—वि० काटनेवाला। जिससे काटा जाय या जो काट सके।

व्रहासन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्म, अप० व्रह (ब्रह्म = अर्थात् देवता) + अशन(= भोजन) या सं० वर्ह(= श्रेष्ठ, अग्र) + अशन(= भोजन)] दे० 'अग्राशन'। उ०—किय भोजन सब सथ्थ व्रहासन ग्रास दिय।—पृ० रा०,।६१।१६३।

व्रह्म—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] दे० 'ब्रह्म'।

व्रह्मपुर—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम।—बृहत्०, पृ० ८६।

व्रह्ममणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक रत्न का नाम।—बृहत्०, पृ० ३७७।

व्रह्मानद—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मानन्द] दे० 'ब्रह्मास्वाद'। उ०—इसका आस्वाद व्रह्मानद के समान होता है।—रस० क०, पृ० ३३।

व्रह्मास्वाद—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मास्वाद] ब्रह्मसाक्षात्कार करने का आनद।

व्राचट, व्राचड—संज्ञा स्त्री० [अप०] १ अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रात में था। २. पैशाचिका भाषा का एक भेद।

व्राज—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ता। २ दल। समूह। ३. जाना। गमन। ४. कुक्कुट। मुर्गा (को०)।

व्राजपति—संज्ञा पुं० [सं०] दल या समूह का नायक।

व्राजि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बवंडर। तूफान। आँधी [को०]।

व्राजिक—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों का एक व्रतोपवास जिसमे वे केवल दूध पीते हैं [को०]।

व्रात—संज्ञा पुं० [सं०] १. दल। समूह। २. मनुष्य। आदमी। ३. वह परिश्रम जो जीविका के लिये किया जाय। ४ वह जिसकी कोई निश्चित वृत्ति न हो या जो चोरी, डाके से निर्वाह करता हो। जरायम पेशा। दुर्जीवी। ५ बराती (को०)। ६ दैनिक मजदूरी। ७. यदाकदा कार्य मे नियुक्ति (को०)। ७ जातिच्युत ब्राह्मण को संतति (को०)।

व्रातजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दल के रूप मे इधर उधर रहनेवाली जाति [को०]।

व्रातजीवन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शारीरिक परिश्रम करके अपना निर्वाह करता हो।

व्रातपति—संज्ञा पुं० [सं०] किसी समूह या संघ का अध्यक्ष [को०]।

व्रातिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य [को०]।

व्रातीन—वि० [सं०] १ श्रमजीवी मजदूर। २. लूट मार करनेवाला। जो लूटमार द्वारा जीविकार्जन करता हो। ३ संघबद्ध होकर रोजी कमानेवाला [को०]।

व्रात्य¹—वि० [सं०] व्रत संबंधी। व्रत का।

व्रात्य²—संज्ञा पुं० १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हो। संस्कारहीन। उ०—अथर्ववेद मे मगध के निवासियो को व्रात्य कहा गया है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ६६। २ वह जिसका उपनयन या यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।

विशेष—ऐसा मनुष्य पतित और अनार्य समझा जाता है और उसे वैदिक कृत्य आदि करने का अधिकार नहीं होता। शास्त्रों मे ऐसे व्यक्ति के लिये प्रायश्चित्त का विधान किया गया है। प्राचीन वैदिक काल मे 'व्रात्य' शब्द प्राय परब्रह्म का वाचक माना जाता था, और अथर्ववेद मे 'व्रात्य' की बहुत अधिक महिमा कही गई है। उसमे वह वैदिक कार्यो का अधिकारी, देवप्रिय, ब्राह्मणो और क्षत्रियों का पूज्य, यहाँ तक की स्वय देवाधिदेव कहा गया है। परतु परवर्ती काल मे यह शब्द सस्कारभ्रष्ट, पतित और निकृष्ट व्यक्ति का वाचक हो गया है।

३ नीच या बदमाश व्यक्ति। ४ वह मनुष्य जो अन्यवर्ण माता पिता से उत्पन्न हो। दोगला। वर्णसंकर।

यौ०—व्रात्यगण = इधर उधर घूमनेवाली जाति या वर्ग। व्रात्यचर्या = नीचतापूर्ण आचार व्यवहार। व्रात्यों का सा रहन सहन। खानाबदोश व्यक्ति का आचार विचार। व्रात्यब्रुव = वह व्यक्ति जो अपने को व्रात्य कहता हो। व्रात्ययज्ञ = एक प्रकार का यज्ञ। व्रात्ययाजक। व्रात्यस्तोम।

व्रात्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रात्य का भाव या धर्म। व्रात्यत्व।

व्रात्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] व्रात्य का भाव या धर्म। व्रात्यता।

व्रात्ययाजक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्रात्यों का यज्ञ कराता हो।

व्रात्यस्तोम—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ जो व्रात्य या संस्कारहीन लोग किया करते थे।

व्रात्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रात्य की कन्या। जातिच्युत व्यक्ति की कन्या [को०]।

व्रिद†—संज्ञा पुं० [सं० विरद] विरद। सुजस। उ०—मछ कवि कहै पुन मरन सधार व्रिद याही ते सरन लयो रावरे चरन को।—रघु० रू०, पृ० २८५।

व्रीख†—संज्ञा पुं० [देश०] कदम। डग। उ०—भागा लार भरतनह, व्रीखाँ बाँकडियाँह।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० २८।

व्रीड—संज्ञा पुं० [सं०] लज्जा। शरम।

व्रीडन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लज्जा। शर्म। हया। २ शिष्टता। विनम्रता। ३. निम्नता। अवनति। अपकर्ष [को०]।

व्रीडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जा। शरम। २ नम्रता। शिष्टता। संकोच (को०)।

यौ०—व्रीडानत, व्रीडान्वित = (१) विनम्र। लज्जित। संकुचित। व्रीडादान = नम्रता के कारण मिलनेवाला पुरस्कार।

व्रीध(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धि] दे० 'वृद्धि'। उ०—बाँका हरष न व्रीध सूँ हाण हुवाँ नँह सोक। हरि सतोष दियो हिए तिणनूँ दीध त्रिलोक।—बाँकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० ६३।

व्रीडित¹—वि० [सं०] लज्जित। शर्मिंदा। २. विनीत। नम्र [को०]।

व्रीडित[2]—संज्ञा पुं० १ लज्जा। शर्म। २ विनय। नम्रता [को०]।

व्रील—संज्ञा पुं० [सं०] लज्जा। शरम [को०]।

व्रीलस—वि० [सं०] लज्जित [को०]।

व्रीहि—संज्ञा पुं० [सं०] १ धान। २ चावल। ३ अन्न (को०)। ४ धान का खेत (को०)। ५ चावल का बीज या दाना (को०)।

व्रीहिक—वि० [सं०] १ जिसके पास धान हो। २ धान रोपनेवाला [को०]।

व्रीहिकांचन—संज्ञा पुं० [सं० व्रीहिकाञ्चन] मसूर।

व्रीहितुंदिका—संज्ञा स्त्री० [सं० व्रीहितुन्दिका] देवधान्य।

व्रीहिद्रोण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुल्म।

व्रीहिपर्णिका—संज्ञा संज्ञा [सं०] शालिपर्णी।

व्रीहिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालिपर्णी [को०]।

व्रीहिभेद—संज्ञा पुं० [सं०] चेना धान।

व्रीहिमय—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में आहुति के लिये निर्मित चावल का खीर। पुरोडाश [को०]।

व्रीहिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जिसका व्यवहार शस्त्रचिकित्सा में होता था।

व्रीहिराजिक—संज्ञा पुं० [सं०] चेना धान।

व्रीहिल—वि० [सं०] दे० 'व्रीहिक' [को०]।

व्रीहिवाप—संज्ञा पुं० [सं०] धान की बुवाई। धान रोपना [को०]।

व्रीहिवापी—वि० [सं० व्रीहिवापिन्] धान रोपनेवाला। धान बोनेवाला [को०]।

व्रीहिश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] शालि धान्य।

व्रीही[1]—संज्ञा पुं० [सं० व्रीहिन्] वह खेत जिसमें धान बोया गया हो।

व्रीही[2]—संज्ञा पुं० दे० 'व्रीहि'।

व्रीह्यगार—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ पर बहुत सा धान रखा जाता हो। धान का गोदाम।

व्रीह्यपूप—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ जो चावल को पीसकर बनाया जाता था।

व्रीह्यागार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्रीह्यगार'।

व्रीह्याग्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रीहि का अग्रभाग वा अँगौगा [को०]।

व्रीह्युर्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह खेत या भूमि जो धान से उर्वर हो। धान का खेत [को०]।

व्रुडित—वि० [सं०] १ डूबा हुआ। निमग्न। २ भूला वा भटका हुआ [को०]।

व्रैह—वि० [सं०] चावल का बना हुआ [को०]।

व्रैहिक—वि० [सं०] धान के साथ उत्पन्न किया हुआ [को०]।

व्रैहेय[1]—वि० [सं०] १ जो धान के साथ बोया गया हो। २ धान बोने योग्य [को०]।

व्रैहेय[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ धान का खेत। शालि का खेत। धान बोने योग्य भूमि [को०]।

व्लीन—वि० [सं०] १ सँभाला हुआ। सहारा वा भरोसा दिया हुआ। २ कुचला हुआ। पददलित। ३ गया हुआ। निगत। गत [को०]।

व्लेष्क—संज्ञा पुं० [सं०] जाल। फंदा [को०]।

यौ०—व्लेष्कहत = जो फंदे द्वारा हत हो।

व्हाँ—क्रि० वि० [हिं० वहाँ] दे० 'वहाँ'। उ०—चले मजल दर मजल आया वेदर के मिसल। व्हाँ हुई वो नक्कल सो सकल तुम सुनो।—दक्खिनी०, पृ० ४५।

व्हाला†—संज्ञा पुं० [देश०] १. प्यारा। प्रिय। २ ज्वाला। ३ बरसाती नाला। उ०—झामक पइठा झाल, सुदर दीठा सासविण। जिमि व्हाला बिच वाल, प्रिव जाई मारू नहीं।—ढोला०, दू० ६०४।

व्हिस्की—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक अंग्रेजी शराब। उ०—इसके बाद उसने मुझसे पूछा—'कहो, क्या पिओगे ? शेरी, शपेन, व्हिस्की, ब्रांडी या और कोई दूसरी'।—संन्यासी, पृ० २३६।

व्हे—सर्व० [हिं० वह] दे० 'वह'। उ०—पय असेदे पूगणी, अलगो घणो अकथ्थ। व्ह विण जोयो हालणो, सबल (जो) विण सथ्थ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ४५।

श

श—हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण प्रधानतया तालु की सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते हैं। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है, इसलिये इसे ऊष्म भी कहते हैं। आभ्यंतर प्रयत्न के विचार से यह ईषत्स्पृष्ट है, और इसमें बाह्य प्रयत्न श्वास और घोष होता है।

श[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. शांति। ४. राग का अभाव। बाह्य वस्तुओं से वैराग्य। ५. शास्त्र।

श[2]—वि० शुभ।

शंक[1]—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १. बैल, जो छकड़ा खींचता है। २. भय। डर। आशंका।

शंक[2]†—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] संदेह। खटका। आशंका।

शंकन—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कन] १ वह जो भयकारक हो। वह जिससे संभ्रांत या विस्मयाकुल हो। २. भय, शंका या संदेह उत्पन्न करने की क्रिया।

शंकना†—क्रि० अ० [सं० शङ्का या शङ्कन] १. शंका करना। २ भय करना। डरना। उ०—(क) साँसति शंकि चली, डरपैहु ते किंकर से करना मुख मोर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) शंक्यो शंभु शैलजा समेत देत मेरो शैल शंकर दे देत हो सुशंक्यो सुरपाल है।—भक्तमाल (शब्द०)।

शंकनीय—[सं० शङ्कनीय] १ शंका करने योग्य। संदेहास्पद। २. भय के योग्य। ३. अनुमान के योग्य। जिसका अनुमान किया जा सके।

शंकर[1]—वि० [सं० शङ्कर] १. मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।

शंकर¹—संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम जो कल्याण करनेवाले माने जाते हैं। महादेव। शंभु।

यौ०- शंकर की लकड़ी = कहारों की परिभाषा में ऊख।

विशेष—जब कहार पालकी लेकर चलते हैं और रास्ते में उन्हें ऊख पड़ी हुई मिलती है, तब आगेवाला कहार पीछेवाले कहार को सचेत करने के लिये इस पद का प्रयोग करता है।

२. दे० 'शंकराचार्य'। ३. भीमसेनी कपूर। ४. कबूतर। ५. एक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में १६ और १० के विश्राम से २६ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु होता है। ६. एक राग जो मेघ राग का आठवाँ पुत्र कहा गया है।

विशेष—कहते हैं कि इसका रंग गोरा है, श्वेत वस्त्र धारण किए हुए है, तीक्ष्ण त्रिशूल इसके हाथ में है, पान खाए और अरगजा लगाए स्त्री के साथ विहार करता है। शास्त्रों में यह संपूर्ण जाति का कहा गया है। रात्रि का प्रथम पहर इसके गाने का समय है, और यों रात्रि में किसी समय गाया जा सकता है।

शंकर²—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर] दे० 'संकर'। उ०—शंकर वरण पशु पच्छी मैं ही पाइयत अलकही पारत अरु भंग निरधारही।—गुमान (शब्द०)।

शंकर का फूल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर + हिं० फूल] सम्मोदनी। गुलपरी।

शंकरकिंकर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करकिङ्कर] शंकर का दास। शिवभक्त।

शंकरचूर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करचूर (<सं० चूड = चूडा)] एक प्रकार का सर्प।

विशेष—कहते हैं, इसकी उत्पत्ति पातराज और दूधराज सर्प के जोड़े से होती है। यह कभी कभी ९, १० हाथ लंबा होता है। इसके जहर के दाँत बड़े होते हैं, इसी से इसका काटना साधातिक होता है, यह बहुत कम देखने में आता है और बंग देश में केवल सुंदरवन में होता है। यह बहुत ही भयंकर होता और इसका पकड़ना बड़ा कठिन है।

शंकरजटा—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करजटा] १. रुद्रजटा। जटाधारी नाम का पौधा। २. साबूदाना। साबूदाना। ३. एक प्रकार की पिठवन।

शंकरताल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करताल] संगीत में एक प्रकार का ताल। इसमें ११ मात्राएँ होती हैं। इसमें ६ आघात और २ खाली होते हैं। इसके मृदंग की बोल इस प्रकार है—
\+ १ ० २ ३ ४ ० ५
धा धिन ता देत खूना केटे ताग धाधिन ता, देत खूना तेदे केटे
६ ७ ८ +
नाग् देत तटे कता गदि घेने। धा।

शंकरतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करतीर्थ] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शंकरप्रिय—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करप्रिय] १. तीतर पक्षी। २. धतूरा। ३. गूमा। द्रोणपुष्पी। गोम।

शंकरमत्त—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करमत्त] एक प्रकार का लोहा जिसे शंकरलोह भी कहते हैं।

शंकरवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करवाणी] शंकर का वाक्य अर्थात् ब्रह्मवाक्य जिसका सत्य होना परम निश्चित माना जाता है। सदा ठीक घटनेवाली बात।

शंकरशुक्र—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करशुक्र] पारा। पारद।

शंकरशैल—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करशैल] महादेव जी का पर्वत, कैलास। उ०—शंकरशैल शिला तल मध्य किधौं शुक की अवली फिरि आई।—केशव (शब्द०)। (ख) शंकरशैल चढ़ी मन मोहति। सिद्धन की तनया जनु सोहति।—केशव (शब्द०)।

शंकरश्वशुर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्करश्वशुर] हिमवान् पर्वत।

शंकरस्वामी—संज्ञा पुं० [शङ्करस्वामिन्] दे० 'शंकराचार्य'।

शंकरा¹—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर] १. एक प्रकार का राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। विशेष दे० 'शंकर'-७ और 'शंकराभरण'। २. शमी। सफेद कीकर। ३. मजीठ। ४. शिवा। भवानी। पार्वती।

शंकरा²—वि० स्त्री० [सं० शङ्करा] कल्याण करनेवाली। मंगल करनेवाली।

शंकराचारी—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शङ्कराचारिन्] श्रीशंकराचार्य द्वारा संस्थापित शैव धर्म का अनुयायी।

शंकराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

विशेष—इनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में कालपी अथवा कापल नामक ग्राम में नंबूदरीपाद ब्राह्मण के घर हुआ था, और ये ३२ वर्ष की अल्प आयु में सन् ८२० ई० में केदारनाथ के समीप स्वर्गवासी हुए थे। इनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम सुभद्रा था। बहुत दिनों तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के अनंतर शिवगुरु ने पुत्ररत्न पाया था, अतः उसका नाम शंकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे, तब इनके पिता का देहांत हो गया था। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था में ही ये प्रकांड पंडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने सन्यास ग्रहण किया था। इनके सन्यास ग्रहण करने के समय की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं, माता अपने एकमात्र पुत्र को सन्यासी बनने की आज्ञा नहीं देती थी। एक दिन जब शंकर अपनी माता के साथ किसी आत्मीय के यहाँ से लौट रहे थे, तब नदी पार करने के लिये वे उसमें घुसे। गले भर पानी में पहुँचकर इन्होंने माता को सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा न देने पर डूब मरने की धमकी दी। इससे भयभीत होकर माता ने तुरंत इन्हें सन्यासी होने की आज्ञा प्रदान की और इन्होंने गोविंद स्वामी से सन्यास ग्रहण किया।

शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्रों की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है। पहले ये कुछ दिनों तक काशी में रहे थे और तब इन्होंने विजिलबिंदु के तालवन में मंडन मिश्र को सपत्नीक

शास्त्रार्थ मे परास्त किया। इन्होने समस्त भारतवर्ष मे भ्रमण करके बौद्ध धर्म को मिथ्या प्रमाणित करके वैदिक धम को पुनरुज्जीवित किया था। उपनिषदो और वेदातसूत्र पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध है। इन्होने भारतवष मे चार मठो की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रबधक तथा गद्दी के अधिकारी शकराचार्य कहे जाते हैं। वे चारो स्थान निम्नलिखित है—(१) बद्रिकाश्रम, (२) करवीरपीठ, (३) द्वारिका पीठ और (४) शारदापीठ। इन्होने अनेक विधर्मियो को भी अपने धर्म मे दीक्षित किया था। ये शकर के अवतार माने जाते है।

शकरादि—सज्ञा पु० [सं० शङ्करादि] सफेद आक। सफेद मदार।

शकराभरण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कराभरण] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का राग जो नटनारायण राग का पुत्र माना जाता है। इसके गाने का समय प्रभात है, और किसी किसी के मत से सायकाल मे १६ दड से २० दड तक भी गाया जा सकता है। उ०—गाऊँ कैसे शकराभरण, दरसाऊँ कैसे स्वर लक्षण। —क्वासि, पृ० ७३।

शकरालय—सज्ञा पुं० [सं० शङ्करालय] कैलास।

शकरावास—सज्ञा पुं० [स० शङ्करावास] १ कैलास। २ कपूर (को०)।

शकरावास कर्पूर—सज्ञा पुं० [स० शङ्करावास कर्पूर] भीमसेनी कपूर। बरास।

शकराह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कराह्वा] शमी का वृक्ष।

शकरी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करी] १. शिव की पत्नी पार्वती। २ मजिष्ठा। मजीठ। ३ शमी का वृक्ष। ४ एक रागिनी जो मालकोश राग को सहचरी मानी जाती है।

शकरी[2]—वि० कल्याण करनेवाली। मंगल करनेवाली।

शकर्षण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कर्षण] १. विष्णु का एक नाम। २ रोहिणी के पुत्र का नाम। दे० 'सकर्षण'।

शकव—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कव] सकुची मछली। विशेष दे० 'सकुची'।

शकव्य—सज्ञा पु० [स० शङ्कव्य] १ वह वस्तु जो शकु या कील के योग्य हो। जैसे, काष्ठ आदि। २ वह जिसके सबध मे शका या सदेह किया जा सके [को०]।

शका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्का] १ मन मे होनेवाला अनिष्ट का भय। डर। खौफ। खटक। उ०—(क) टेढ जान शका सब काहू। वक्र चद्रमहि ग्रसै न राहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) शका है दशानन को हुमा दै सुवका वीर, डका दै विजय को कपि कूद परयो लका मे।—पद्माकर (शब्द०)। २ किसी विषय की सत्यता या असत्यता के सबध मे होनेवाला सदेह। आशका। सशय। शक। उ०—(क) नृप विलोकि शका उपजावा। सजल नयन मुख बचन न आवा।—सबल (शब्द०)। (ख) तुमहि वरण चाहत हौं आपहि। पै हिडब शका मन आवहि।—सबल (शब्द०)। ३. साहित्य के अनुसार एक सचारी भाव। अपने किसी अनुचित व्यवहार अथवा किसी और कारण से होनेवाली इष्टहानि की चिंता। ४ अविश्वास। [illegible] धारणा (को०)। ५. तर्कवितर्क या वादविवाद मे आपत्ति [illegible] करना (को०)। ६ परिकल्पना। सभावना (को०)।

यौ०—शकाजनक = सदेह उत्पन्न करनेवाला। शकानिवारण = सदेह, भय आदि का दूर होना। शकानिवृत्ति = सदेह दूर होना। खटका मिटना। शकाशकु = सदेह का काँटा। शकाशील = प्रत्येक बात म सदेह करनेवाला। शकालु।

शका अतिचार—सज्ञा पु० [सं० शङ्काअतिचार] जैनियो के अनुसार एक प्रकार का पाप या अतिचार जो जिनवचन म शका करने से होता है।

शकाकुल—वि० [स० शङ्काकुल] शकित। सदेहयुक्त। उ०—लग्न शकाकुल हो गए अतुल बल शत्रुशयन। खिच गए दृग, म सीता के राममय नयन।—अनामिका, पृ० १२२।

शकान्वित—वि० [सं० शङ्कान्वित] दे० 'शकायुक्त'।

शकाभियोग—सज्ञा पुं० [सं० शङ्काभियोग] सदेह या शका का दोषारोपण [को०]।

शकालु—वि० [स० शङ्कालु] जो प्राय शका या सदेह करता हो। शकाशील।

शकासमाधान—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कासमाधान] शका या सदेह का निवारण या निराकरण। २ शंका और समाधान। सदेह और उसका निवारण [को०]।

शकास्पद—वि० [सं० शङ्कास्पद] सदेह, खटका या भय का विषय [को०]।

शकित[1]—वि०—[स० शङ्कित] [वि० स्त्री० शकिता] १ डरा हुआ। भयभीत। त्रस्त। जिसे सदेह हुआ हो। ३ अनिश्चित। सदेहयुक्त। सदिग्ध। उ०—इतनि धरि धरनि चिक्करत दिग्गज कमठ, शेष सकुचित, शकित पिनाकी।—तुलसी (शब्द०)। ४ विचलित। अदृढ। अस्थिर (को०)।

यौ०—शकितचित्त, शकितमना = (१) शकाकुल। सशयालु। (२) भीरु। कातरहृदय। डरपोक। (३) सदिग्ध। शकितवर्ण। शकितवर्णक।

शकित[2]—सज्ञा पुं० भटेउर या चोरक नाम का गधद्रव्य।

शकितवर्ण—सज्ञा पुं० [स० शङ्कितवर्ण] दे० 'शकितवर्णक'।

शकितवर्णक—सज्ञा पुं० [स० शङ्कितवर्णक] तस्कर। चोर।

शकिनी—वि० स्त्री० [स० शङ्किनी] शकायुक्त। सदेहास्पद। उ०—प्रिये, ठीक कहती हो तुम यह, सदा शकिनी आशा है।—साकेत, पृ० ३६६। २ सदेह करनेवाली। शका करनेवाली।

शकी—वि० [सं० शङ्किन्] [वि० स्त्री० शकिनी] १ शका या सदेह करनेवाली। शका से पूर्ण (को०)। २ खतरनाक।

शकु—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १ कोई नुकीली वस्तु। २ मेख। कील। ३ खूँटी। ४ भाला। बरछा। ५. गाँसी। फल।

६ लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक संख्या। शख। ७ एक प्रकार की मछली। सकुची मछली। ८ कामदेव। ९ शिव। १०. राक्षस। ११ विष। १२ हस। १३ वल्मीक। बाँबी। १४ कलुष। पाप। १५ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा। १६ बारह अंगुल की एक नाप। १७ बारह अगुल की एक खूँटी, जिसका व्यवहार प्राचीन काल मे सूर्य या दीए की छाया आदि नापने मे होता था। १८ वृक्षो मे की रस खीचने की शक्ति। १९ गावदुम खभा जिसके ऊपर का हिस्सा नुकीला और नीचे का मोटा हो। २० पुराणानुसार उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्न पडितो मे से एक। २१. उग्रसेन का एक पुत्र। २२ दाँव। २३ पत्तो की नसें। २४ नखी नामक गधद्रव्य। २५ लिंग। २६ शिव के अनुचर एक गधर्व का नाम। २७ कटे हुए वृक्ष का तना। ठूंठ (को०)। २८ बाण का अग्रभाग। तीर की गाँसी (को०)। २९ साल का वृक्ष (को०)। ३० (ज्योतिष मे) लब रेखा या ऊँचाई (को०)।

शकुक—सज्ञा पु० [स० शङ्कुक] १ सस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जिनका मत रसविवेचन के सबध मे समादृत साहित्यशास्त्रो मे है। २ छोटी खूँटी।

शकुकर्ण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कुकर्ण] १ वह जिसके कान शकु के समान लबे और नुकीले हो। २. गदहा। ३ एक नाग का नाम।

शकुकर्णी—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुकर्णिन्] शिव। महादेव।

शकुचि—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुचि] सकुची मछली।

शकुच्छाया—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुच्छाया] १ शकु की छाया। २. प्राचीन काल की बारह अंगुल की एक नुकीली खूँटी जिसका ऊपरी भाग नुकीला होता था। इसकी छाया से समय का परिमाण मालूम किया जाता था।

शकुजीवा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुजीवा] ज्योतिष के अनुसार शकु की ज्या या ज्यापिड।

शकुतरु—सज्ञा पु० [स० शङ्कुतरु] शाल का वृक्ष। साखू का पेड।

शकुद्वार—सज्ञा पु० [स० शङ्कुद्वार] गुजरात के समीप के एक छोटे टापू का नाम। यहाँ शकु नारायण की मूर्ति है।

शंकुधान—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुधान] वह सूराख जिसमे शकु बैठाई या जड़ी जाय (को०)।

शकुनारायण—सज्ञा पु० [स० शङ्कुनारायण] नारायण की वह मूर्ति जो शकुद्वार टापू मे है।

शकुपुच्छ—सज्ञा पु० [स० शङ्कुपुच्छ] भौंरे आदि का डंक (को०)।

शकुफणी—सज्ञा पु० [स० शङ्कुफणिन्] जल मे रहनेवाले जतु। जलचर।

शकुफलिका, शकुफली—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुफलिका, शङ्कुफली] सफेद कीकर। शमी।

शंकुमती—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुमती] एक वैदिक छंद जिसके पहले पाद मे पाँच और शेष तीनो मे छह छह या इससे कुछ न्यूनाधिक वर्ण होते है।

शकुमुख—सज्ञा पु० [स० शङ्कुमुख] १ मगर। २. चूहा।

शकुमुखी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुमुखी] जोक।

शकुमूली—सज्ञा पु० [स० शङ्कुमूली] अगहन मास के शुक्ल पक्ष का १५वाँ दिन (को०)।

शकुयत्र—सज्ञा पु० [सं० शङ्कुयन्त्र] एक यंत्र जिसके द्वारा सूर्य चद्र के दिगश और उन्नतांश का ज्ञान होता है (ज्योतिष)।

शकुर¹—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुर] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

शकुर²—वि० भयकर। भीषण।

शकुला—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुला] १ सुपारी काटने का सरौता। २. एक प्रकार का चाकू या शलाका। उत्पलपत्र। उत्पलपत्रिका (को०)।

शकुवृक्ष—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुवृक्ष] शाल का वृक्ष।

शकुशिर—सज्ञा पुं० [स० सङ्कुशिरस्] भागवत के अनुसार एक असुर का नाम।

शकुश्रवण—सज्ञा पुं० [शङ्कुश्रवण] दे० 'शकुकर्ण'।

शकोच, शकोचि—सज्ञा पु० [स० शङ्कोच, शङ्कोचि] सकुची मछली।

शकोशिक—वि० [स० शङ्कोशिक] नैमित्तिक। (साख्य)।

शक्य—वि० [स० शङ्क्य] दे० 'शकनीय'।

शख—सज्ञा पु० [स० शङ्ख] १ एक प्रकार का बडा घोघा जो समुद्र मे पाया जाता है।

विशेष—इसे एक प्रकार का जलजतु, जिसे शख कहते है, अपने रहने के लिये तैयार करता है। लोग इस जतु को मारकर उसका यह कलेवर बजाने के उपयोग मे लाते है। यह बहुत पवित्र समझा जाता है और देवता आदि के सामने तथा लडाई के समय मुँह से फूँककर बजाया जाता है। पुराणो के अनुसार विष्णु भगवान् के चारो हाथो मे से एक हाथ मे शख भी रहता है। इसके दो भेद होते हैं। एक दक्षिणावर्त्त और दूसरा वामावर्त्त। इनमे से दक्षिणावर्त्त बहुत कम मिलता है। वैद्यक के अनुसार यह नेत्रो को हितकारी, पित्त, कफ, रुधिरविकार विषविकार, वायुगोला, शूल, श्वास, अजीर्ण, सग्रहणी और मुँहासे को नष्ट करनेवाला माना गया है। दक्षिणावर्त्त मे इससे भी अधिक गुण होते हैं। कहते है, जिसके घर मे यह रहता है, उसके धन की अधिक वृद्धि होती है। वामावर्त्त ही अधिक मिलता है और यही औषध के काम आता है। जो शख उज्वल और चमकदार होता है, वह उत्तम समझा जाता है। इसको विधिपूर्वक शुद्ध कर भस्म बनाकर देने से सब प्रकार के ज्वर, सब प्रकार की खाँसी, श्वास, अतिसार आदि रोगो मे उचित अनुपान से अत्यत लाभकारी है। यह स्तभक और वाजीकरण भी है। इसकी मात्रा चार रत्ती से डेढ़ माशे तक है।

मुहा०—शख वजना = विजय प्राप्त होना । सफलता मिलना शख बजाना = (१) सफल होने पर अथवा कृतकार्य होने पर आनद मनाना । (२) किसी की बुराई या हानि देखकर आनद मनाना । (३) असफल एवं अकृतकार्य होने पर दु खी होना । झखना (व्यग्य) ।

यौ०—शख का मोती = एक प्रकार का कल्पित मोती । कहते है, यह समुद्र के अतर्गत दुगम स्थानो मे श ख के अदर उत्पन्न होता है ।

पर्या०—कंबु कंबोज पावनध्वनि अत कुटिल । सुनाद । महानाद । मुखर । वहुनाद । दीर्घनाद । हरिप्रिय ।

२ दस खर्व की एक सख्या । एक लाख करोड । ३ कनपटी । ४ हाथी का गडस्थल, अथवा दाँतो के बीच का भाग । ५ चरणचिह्न । ६ एक दैत्य का नाम जो देवताओ को जीतकर वेदो को चुरा ले गया था और जिसके हाथो से वेदो का उद्धार करने के लिये भगवान् को मत्स्यावतार धारण करना पडा था । शखासुर ७ नखी नाम का सुगधित द्रव्य । ८ एक निधि । उ०—शख खर्व नीलाठए नवई निद्धि जु कुद । विश्राम (शब्द०) । ९ राजा विराट् का पुत्र जिसे द्रोणाचार्य ने मारा था । इसके भाई का नाम उत्तर था उ०—उत्तर शख नृपति सुख वीरा । औरा सजे अमित रणधीरा ।—सबल (शब्द०) । १० एक राजमत्री का नाम । उ०—सुरति सुधन्वा जू सो दोष के करत मरे शख औ लिखित विप्र भयो मैलो मन है ।—नाभादास (शब्द०) । ११ कुबेर की निधि के देवता १२ चंपकपुरी के राजा हसध्वज का उपरोहित और लिखित का भाई जो स्मृतिकार थे । उ०—शख लिखित उपरोहित दोई । रहे तहाँ जानत सब कोई ।—सबल (शब्द०) । १३ धारा नगर के राजा गवर्वसेन का बडा लडका और राजा विक्रमादित्य का वडा भाई जिसे मारकर विक्रम ने गद्दी प्राप्त की थी । १४ छप्पय के ७१ भेदो मे से एक भेद । इसमे १५२ मात्राएँ या १४६ वर्ण होते हैं, जिनमे से ३ गुरु और शेष १४६ लघु होते हैं । १५ दंडक वृत्त के अतर्गत प्रचित का एक भेद । इसमे दो नगण और चौदह रगण होते हैं । १६ कपाल । लिलार । १७ पवन के चलने मे होनेवाला शब्द । १८ मस्तक की हड्ड (को०) । १९ सैनिक ढोल या मारू बाजा (को०) । २० नागो के आठ नायको मे से एक का नाम (को०) । २१ शख का वना हुआ वलय (को०) ।

शखकद —सज्ञा पुं० [सं० शङ्खकन्द] शखालु । साँक ।

शखक—सज्ञा पु० [स० शङ्खक] १ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का असाध्य रोग । शखवात ।

विशेष—इस रोग मे वहुत गरमी होती है और त्रिदोष विगडने से कनपटी मे दाह सहित लाल रग की गिल्टी निकल आती है, जिससे सिर और गला जकड जाता है । कहते हैं, यह असाध्य रोग है और तीन दिन के अदर इसका इलाज सभव है, इसके बाद नही ।

२ हवा के चलने का शब्द । ३ हीरा कसीस । ४ मस्तक । माथा । ५ नौ निधियों मे से एक निधि । ६ शख का वना कगण या वलय ।

शखकर्ण—सज्ञा पु० [स० शङ्खकर्ण] शिव के एक अनुचर का नाम । शिव का एक गण ।

शखकार शखकारक—सज्ञा स० [स० शङ्खकार, शङ्खकारक] पुराणानुसार एक वर्णसकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से मानी गई है । इस जाति के लोग शख की चीजें वनाने का काम करते है ।

शखकुसुमा सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खकुसुमा] १ शखपुष्पी । २ सफेद अपराजिता । सफेद कोयल लता ।

शखकूट सज्ञा पुं० [स० शङ्खकूट] १ एक नाग का नाम । २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शखक्षीर—सज्ञा पु० [स० शङ्खक्षीर] शख का दूध अर्थात् कोई असभव और अनहोनी वात ।

शखचरी, शखचर्ची—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खचरी, शङ्खचर्ची] १ चदन का तिलक (ललाट पर का) । २ भाल । मस्तक । ललाट ।

शखचूड सज्ञा पु० [सं० शङ्खचूड] १ एक राक्षस का नाम जिसे कस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था ।

विशेष—कहते हैं, यह सुदामा नामक गोप था जो राधा के शाप से असुर हो गया था इसका विवाह तुलसी से हुआ था । ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि इसका संहार महादेव जी ने अपने शूल से किया था ।

२ कुवेर के दूत और सखा का नाम । ३ एक यक्ष का नाम । ४ पुराणानुसार द्वारिका निवासी एक गृहस्थ का नाम जिसके पुत्र उत्पन्न होकर अदृश्य हो जाते थे । ५ एक नाग का नाम । ६ एक तीर्थस्थान ।

शखचूर्ण—सज्ञा पुं० [स० शङ्खचूर्ण] शख की बुकनी । शख का चूरा (को०) ।

शखज—सज्ञा पुं० [स० शङ्खज] बडा मोती जो शख से निकलता है ।

शखजीरा—सज्ञा पुं० [स० शङ्खजीरा] सग जराहत ।

विशेष—जान पडता है, यह शब्द फारसी सग जराहत का बनाया हुआ सस्कृत रूप है ।

शखण सज्ञा पु० [स० शङ्खण] रामायण के अनुसार प्रवृद्ध के लडके का नाम ।

शखतीर्थ —सज्ञा पुं० [स० शङ्खतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

शखदारक —सज्ञा पुं० [स० शङ्खदारक] एक वर्णसकर जाति । दे० 'शखकार' ।

शखद्राव—सज्ञा पुं० [स० शङ्खद्राव] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का अर्क जिसमे शख भी गल जाता है ।

विशेष—आध सेर हीरा कसीस, सेर भर सैंधा नमक और सेर भर शोरा चूर्ण करके ढेकली यत्र से रस निकाल लिया जाता है, जो शखद्राव कहलाता है । कहते हैं, इसके सेवन से शूल, गुल्म

अर्श, प्लीहा, उदररोग, अजीर्ण और वातरोग सब दूर होते हैं। इसे काँच या चीनी की शीशी मे रखना चाहिए, अन्यथा पात्र गल जायगा। इसके सेवन के समय मुँह मे घी लगा देना चाहिए, नही तो जिह्वा और दाँतो को हानि पहुँचेगी।

शखद्राव²—वि० कोई ऐसा तीक्ष्ण रस या क्षार जिसमे डालने से शख गल जाय।

शखद्रावक—सज्ञा पुं० वि० [स० शङ्खद्रावक] दे० 'शखद्राव'।

शखद्रावी—सज्ञा पुं० [स० शङ्खद्राविन्] अमलबेत। चुक्र।

शखद्वीप—सज्ञा पुं० [स० शङ्खद्वीप] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। (सभवत यह आधुनिक अफ्रीका है)

शखधर सज्ञा पुं० [सं० शङ्खधर] १ शख को धारण करनेवाले, अर्थात् विष्णु। २ श्रीकृष्ण। उ०—गिरिधर व्रजधर धरनीधर पीतांबरधर मुकुटधर गोपधर शखधर सारगधर चक्रधर रस धरै अधर सुधाधर।—सुर (शब्द०)।

शखधरा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खधरा] हुरहुर का साग। हिलमोचिका।

शखधवना—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खधवना] जुही। यूथिका।

शखध्म, शखध्मा—सज्ञा पुं० [स० शङ्खध्म, शङ्खध्मा] शखवादक। वह जो शख बजावे (को०)।

शखध्वनि—सज्ञा स्त्री० [शङ्खध्वनि] शख की आवाज जो विजय, सफलता या कभी कभी आतक और निराशा व्यक्त करती है।

शखन—सज्ञा पुं० [स० शङ्खन] १. अयोध्या के राजा कल्माषपाद के एक पुत्र का नाम। २. वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

शखनक—सज्ञा पुं० [स० शङ्खनक] छोटा शख। घोघा (को०)।

शखनख—सज्ञा पुं० [स० शङ्खनख] १. घोघा। छोटा शख। २. व्याघ्रनख। नखी नाम का गधद्रव्य।

शखनखा, शखनखी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खनखा, शङ्खनखी] १. घोघा। छोटा शख। २ नखी नामक गधद्रव्य।

शखनाभि—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खनाभि] १. एक प्रकार का शख। २ एक प्रकार का गधद्रव्य।

शखनाम्नी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खनाम्नी] शखाहुली। शखपुष्पी।

शखनारी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खनारी] एक वृत्त का नाम जिसमे छह वर्ण होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इसे सोमराजी वृत्त भी कहते है।

शखनी (ख)—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनी] दे० 'शखिनी'।

शखपलीता—सज्ञा पुं० [स० शङ्ख+हिं० पलीता] एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ जो ज्वालामुखी पर्वतो से निकलता है।

विशेष—इसका रग सफेद या हरा होता है और इसमे रेशम की सी चमक होती है। इसका विशेष गुण यह है कि यह जल्दी जल्दी जलता नही, इसी लिये गैस के भट्ठे बनाने मे इसका बहुत उपयोग होता है। आग से न जलनेवाले कपडे तैयार करने मे भी यह काम मे लाया जाता है। गरमी और बिजली का प्रवेश इसमे बहुत कम होता है, इसी से यह बिजली के तार आदि लपेटने मे भी काम आता है। इजिनो के जोड इसी से भरे या बंद किए जाते हैं। यह फारसिका, स्काटलैंड कनाडा, इटली आदि देशो मे अधिक मिलता है।

शखपाणि सज्ञा पुं० [सं० शङ्खपाणि] हाथ मे शख धारण करनेवाले विष्णु।

शखपाल—सज्ञा पुं० [स० शङ्खपाल] १ शकरपारा नाम की मिठाई। विशेष दे० 'शकरपारा'। २. एक प्रकार का साँप। ३. एक नाग का नाम। ४. कर्दम के पुत्र का नाम। ५ सूर्य का एक नाम (को०)।

शखपाषाण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्खपाषाण] संखिया।

शखपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [शङ्खपुष्पिका] दे० 'शखपुष्पी'।

शखपुष्पी सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खपुष्पी] १ सफेद अपराजिता श्वेत-अपराजिता। सफेद कायल लता। २ जूही यूथिका। ३. सँखाहुली। शखाह्वा।

शखप्रस्थ सज्ञा पुं० [सं० शङ्खप्रस्थ] चद्रमा का कलंक।

शखभस्म—सज्ञा पुं० [शङ्खभस्म] १ चूना। २ शख का वैद्यक विधि से निर्मित भस्म।

शखभृत्—सज्ञा पुं० [स० शङ्खभृत्] शंख धारण करनेवाले विष्णु

शखमालिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खमालिनी] शखाहुली। शखपुष्पी।

शखमुक्ता—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खमुक्ता] शखज नाम का बडा मोती।

शखमुख—सज्ञा पुं० [स० शङ्खमुख] कुभीर। घडियाल। ग्राह।

शखमूलक—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खमूलक] मूली।

शखयूथिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खयूथिका] जूही। यूथिका।

शखरी—सज्ञा पुं० [स० शङ्खरी] वह जो शख की चूडी बनाने का व्यवसाय करता हो।

शंखलिखित¹—वि० [स० शङ्खलिखित] निर्दोष। दोषरहित। बेऐब।

शखलिखित²—सज्ञा पुं० १ न्यायशील राजा। २ शंख और लिखित नाम के दो ऋषि जिन्होने एक स्मृति बनाई थी।

शंखलिखित³—सज्ञा स्त्री० शख और लिखित ऋषियो द्वारा लिखी हुई स्मृति। उ०—सचिव सुधन्वै बह्यो जरावा। शखलिखित फल आपुइ पावा —रघुनाथ (शब्द०)।

शखवटी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खवटी] वैद्यक मे एक प्रकार की बटी या गोली।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की प्रणाली यह है—नीबू के रस मे बुझाई हुई शख की भस्म टके भर और जवाखार, सेंका हींग, पाँचो नमक, सोठ, काली मिर्च, पिप्पली, शुद्ध सिंगीमुहरा शुद्ध पारा, शुद्ध गधक की कजली ये सब दस दस टक एक मे मिलाकर सबका चूर्ण करके नीबू के रस मे खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाते हैं। कहते है, लौंग के जल के साथ इसको एक गोली सेवन करने से सग्रहणी, शूल और वायुगोला आदि रोग दूर होते है।

शखवटी रस—सज्ञा पुं० [स० शङ्खवटी रस] वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली जो शूल रोग को तत्काल दूर करनेवाली मानी जाती है।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की विधि यह है,—बडे शख को तपा तपाकर ग्यारह बार नीबू के रस मे बुझाते हैं, और इस शख के चूर्ण मे टके भर इमली का खार, ५ टक साचर नमक, टके भर सेंधा नमक, टके भर विड नोन, ६ माशे सोंठ, ६ माशे काली मिर्च, ६ माशे पिप्पली, टके भर सेकी हीग, टके भर शुद्ध गधक, टके भर शुद्ध पारा, १ टक शुद्ध सिंगी मुहरा, इन सबको मिलाकर जल के साथ घोटकर छोटे बैर के बराबर गोलियाँ बना लेते है।

शखवात—सज्ञा पु० [स० शङ्खवात] सिर की पीडा। विशेष दे० 'शखक'—१।

शखविष—सज्ञा पु० [स० शङ्खविष] सखिया।

शखवेलान्याय—सज्ञा पु० [स० शङ्खवेलान्याय] एक प्रकार का न्याय जिसमे किसी एक कार्य के होने से किसी दूसरी वात का वैसे हो ज्ञान होता है, जैसे शख बजने स समय का ज्ञान होता है।

शखशुक्तिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खशुक्तिका] सीप।

शखसकाश—सज्ञा पुं० [स० शङ्खसङ्काश] सखालु। सफेद शकरकद।

शखस—सज्ञा पु० [स० शङ्खस] शख की चूडी या कडा।

शंखस्वन—सज्ञा पु० [स० शङ्खस्वन] शख का शब्द या ध्वनि [को०]।

शखातर—सज्ञा पु० [स० शङ्खान्तर] ललाट। मस्तक [को०]।

शखाख्य—सज्ञा पु० [स० शङ्खाख्य] वृहन्नखी या वघनखा नामक गधद्रव्य।

शखारु, शखालु—सज्ञा पु० [स० शङ्खारु, शङ्खालु] शखालुक। शखकद। सफेद शकरकद।

शखालुक—सज्ञा पुं० [सं० शङ्खालुक] शखालु। सफेद शकरकद।

शखावर्त—सज्ञा पुं० [स० शङ्खावर्त] एक प्रकार का भगदर रोग जिसे शबुकावर्त भी कहते हैं। विशेष दे० 'शबुकावर्त्त'।

शखासुर—सज्ञा पु० [स० शङ्खासुर] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र के गर्भ म जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। उ०—वहुरो किलाल वैठ मारचो जिन शखासुर ताते वेद अनेक विधाता को दिख है।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २ दैत्य का पिता। उ०—शखासुर सुत पितु वध जान्यो। तव वन जाइ तहाँ तप ठान्यो।—रघुनाथ (शब्द०)।

शखास्थि—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खास्थि] १ सिर की हड्डी। २ पीठ की हड्डी।

शखाहुली—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खपुष्पी या शङ्खफुल्ल] १ शखाहुली। शखपुष्पी। विशेष दे० 'कौडियाला'—४। २. सफेद अपराजिता या कोयल लता।

शखाहोली—सज्ञा स्त्री० [स० शखपुष्पी, शङ्खफुल्ली, हि० शखाहुली] शखपुष्पी। कौडियाला। कौडेना।

शखाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खाह्वा] शखपुष्पी [को०]।

शखिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिका] शंखाहुली। चोरपुष्पी।

शखिन—सज्ञा पु० [सं० शङ्खिन] सिरस। शिरिष का वृक्ष।

शखिनिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनिका] श्वेतपर्णी। गखिन।

शखिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनी] १ एक प्रकार की वनौषधि।

विशेष—इसकी लता और फल शिवलिंगी के समान होते हैं। अतर केवल यही है कि शिवलिंगी के फल पर सफेद छींट होते हैं जो शखिनी के फल पर नही होते। इसके बीज शख के समान होते हैं जिनका तेल निकलता है। वैद्यक में यह चरपरी, स्निग्ध और कडवी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निदीपक, वलकारक, रुचिकारी और विषविकार, आमदोष, क्षय रुधिरविकार तथा उदरदोष आदि को शात करनेवाली मानी जाती है।

पर्या०—यवतिक्ता। महातिक्ता। भद्रतिक्ता। सूक्ष्मपुष्पी। दृढपादा। विसर्पिणी। नाकुली। नेत्रमीला। अक्षपीडा। माहेश्वरी। तिक्ता। यावी।

२ पद्मिनी आदि स्त्रियो के चार भेदो मे से एक भेद। उ०—होइ शखिनि युत रोष दया बिन वेगि प्रचार।—विश्राम (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, ऐसी स्त्री कोपशील, कोविद, सलाम शरीरवाली, बडी बडी और सजल आँखोवाली, देखने मे सुदर, लज्जा और शकारहित, अधीर, रतिप्रिय, क्षार गधयुक्त और अरुण नखवाली होती है, यह वृषभ जाति क पुरुष के लिये उपयुक्त होती है।

३ गुदाद्वार की नस। ४ मुँह की नाडी। उ०—मुख अस्थान शंखिनी केरा। ये नाडिन क नाम निवेरा।—विश्राम (शब्द०)। ५ एक देवी का नाम। ६ सीप। ७ एक शक्ति जिसकी पूजा बौद्ध लोग करते हे। ८ एक तीर्थस्थान का नाम। ९. एक प्रकार की अप्सरा। १० शखाहुली।

शखिनी डकिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनी] एक प्रकार का उन्माद।

विशेष—इस उन्माद रोग के लक्षण इस प्रकार कहे गए हैं—सर्वांग मे पीडा होना, नेत्र बहुत दुखना, मूर्छा होना, शरीर काँपना, रोना, हँसना, बकना, भोजन मे अरुचि, गला बैठना, शरीर के बल तथा भूख का नाश, ज्वर चढ़ना और सिर मे चक्कर आना, आदि।

शखिनी फल—सज्ञा पु० [स० शङ्खिनीफल] सिरस का वृक्ष।

शखिनीवास—सज्ञा पुं० [स० शङ्खिनीवास] शाखोट वृक्ष। सहोरा।

शखिया—सज्ञा पु० [हि०] दे० 'सखिया'।

शखी—सज्ञा पु० [स० शङ्खिन्] १. विष्णु। २ समुद्र। ३ एक प्रकार का साँप। ४ शख वजानेवाला।

शखोदक—सज्ञा पु० [स० शङ्खोदक] शख मे भरा हुआ जल जो पवित्र माना जाता है।

शखोदधिमल—सज्ञा पुं० [स०] समुद्रफेन।

शखोदरी—सज्ञा स्त्री० [स०] मध्यम आकार का एक प्रकार का बीज जो बागो मे शोभा के लिये लगाते हैं। गुलपरी। गुलतुरो। सिद्धेकर।

विशेष—इसके पत्ते चकवेंड के पत्तो के समान होते हैं। पीले और लाल फूलो के भेद से यह वृक्ष दो प्रकार का होता है।

इसकी कलियाँ उँगली के समान मोटी, चिपटी तथा चार पाँच अंगुल लंबी होती हैं और इनमे ७-८ दाने होते हैं। इनके फूल गुच्छों मे लगते हैं जो बारहो महीने रहते हैं, परतु और महीनो की अपेक्षा आषाढ मे अधिक फूल लगते हैं। फूलों मे गंध नहीं होती। इसकी लकडी मजबूत होती है। इसके वृक्ष बीज और कलम दोनो से ही लगते है। कई प्रकार के रोगों मे इसका क्वाथ भी दिया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह गरम, कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग को दूर करनेवाला है।

शगजराहत—संज्ञा पुं० [सं० शङ्ख, फा० संग+जदाहत] दे० 'संग जराहत'।

शगर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जो मदरास और सुंदरवन मे अधिकता से होता है।

विशेष—इसकी लकडी लाल और मजबूत होती है और मकान तथा गाडी आदि बनाने के काम मे आती है। इसके पत्तो से रंग भी निकाला जाता है।

शगरफ¹—संज्ञा पुं० [फा० शगर्फ, शगरफ] ईंगुर। शिंगरफ [को०]।

शगरफ²—वि० ईंगुर के रंग का लाल [को०]।

शजरफ—संज्ञा पुं० [फा० शजर्फ शजरफ] दे० 'शिंगरफ'।

शठ—संज्ञा पुं० [सं० शण्ठ] १. अविवाहित। २. नपुंसक। हीजड़ा। ३. मूर्ख। बेवकूफ। उ०—मुग्ध मूढ जड मूक नर अज्ञ अबुध बद शठ।—नंददास (शब्द०)।

शंड—संज्ञा [सं० शण्ड] १ नपुंसक। हीजडा। २. वह पुरुष जिसे संतान न होती हो। वंध्या पुरुष। ३. साँड। ४. उन्मत्त। पागल। ५. कमलिनी। पद्मिनी। ६ दही (को०)। ७ प्राचीन काल मे अंतःपुर का परिचारक जो हीजडा होता था (को०)। ८. एक दैत्य का नाम। ९. पद्म आदि का समूह या राशि (को०)।

शंडता—संज्ञा स्त्री० [सं० शण्डता] शंड का भाव या धर्म। नपुंसकत्व। हिजड़ापन।

शंडा—संज्ञा पुं० [सं० शण्डा] १ फटा हुआ खट्टा दूध अथवा दही। २ शुक्राचार्य का पुत्र जो असुरों का पुरोहित था। ३. एक यक्ष का नाम।

शंडाकी मद्य—संज्ञा स्त्री० [सं० शण्डाकी मद्य] अर्कप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की शराब जो राई, मूली और सरसो के पत्तो का रस चावलो की पीठी मे मिलाकर अर्क निकालने से तैयार होती है।

शंडामर्क—संज्ञा पुं० [सं० शण्डामर्क] शंड और मर्क नाम के दो दैत्य जिनका नाम साथ ही साथ लिया जाता है। उ०—शंडामर्क से कहियो जाय।—शब्दावली (शब्द०)।

शंडिल—संज्ञा पुं० [सं० शण्डिल] एक ऋषि। दे० 'शांडील' [को०]।

शंडील—संज्ञा पुं० [सं० शाण्डील] एक प्राचीन गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग शांडिल्य कहलाते हैं।

शंढ—संज्ञा पुं० [सं० षण्ढ] १ नपुंसक। वंध्या पुरुष। २ वृष। साँड। ३ उन्मत्त साँड। ४ राजाओं के अंतःपुर का वह सेवक जो पुंस्त्वविहीन हिजडा होता था। ५. उन्मत्त पुरुष। पागल व्यक्ति [को०]।

शंतनु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शन्तनु] दे० 'शांतनु'।—(क) वरणी शंतनु की कथा, पुनि ययाति कर भोग।—रघुनाथ (शब्द०)। (ख) विष्णुसुता सत्य सुत माहीं। तासु पुत्र शंतनु नृप आहीं।—सबल (शब्द०)।

शंतनुसुत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शन्तनुसुत] गंगा के गर्भ से उत्पन्न शांतनु के पुत्र, भीष्म पितामह। विशेष दे० 'भीष्म'।

शंपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] १ बिजली। उ०—उन्नत सिर पर जब तक हो शंपा का प्रहार। सोओ तब तक जाज्वल्यमान मेरे विचार।—सामधेनी, पृ० ५२। २ कमरबंद। मेखला। करधनी।

शंपाक, शंपात—संज्ञा पुं० [सं० शम्पाक, शम्पात] आरग्वध वृक्ष। अमलतास।

शंब¹—संज्ञा पुं० [सं० शम्ब] १. इंद्र का वज्र। २. लोहे की जंजीर जो कमर के चारो तरफ पहनी जाय। ३ प्राचीन काल की एक माप। ४. निर्यामित रूप मे हल जोतने की क्रिया। ५. दुहरी जुताई। दुबारा हल चलाने की क्रिया। ६ मुसल के सिरे पर लगी हुई लोहे की गोल पट्टी। नाम (को०)।

शंब—वि० १. सुखी। भाग्यवान्। २. दरिद्र। अभागा [को०]।

शंबपाणि—संज्ञा पुं० [सं० शम्बपाणि] इंद्र जिनका आयुध वज्र है [को०]।

शंबर¹—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर] १ एक दैत्य जो वेद के अनुसार दिवोदास का बडा शत्रु था। दिवोदास की रक्षा के लिये इंद्र ने इसे पहाड पर से नीचे गिराकर मार डाला था। २ एक दैत्य जो रामायण और महाभारत मे कामदेव का शत्रु कहा गया है। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ४ युद्ध। समर। लडाई। ५ एक प्रकार का मृग। ६ मछली। ७. एक पर्वत का नाम। ८. जल। पानी। ९ चीना नामक पेड़। चितउर। १०. लोध वृक्ष। ११ अर्जुन वृक्ष। १२. ताल वृक्ष। १३. साबर हिरन। १४ मुश्क जमी। १५ एक जिन देव (को०)। १६. बौद्धो का एक व्रत (को०)। १७. एक प्रकार का व्रत (को०)। १८ मेघ। बादल (को०)। १९ चित्र। तस्वीर (को०)। २० धन। संपत्ति (को०)। २१. एक प्रकार के शैव (को०)।

यौ०—शंबरघ्न, शंबरदारण, शंबररिपु=कामदेव या प्रद्युम्न।

शंबर²—वि० १. अति उत्तम। बहुत बढ़िया। २. भाग्यवान्। ३. सुखी।

शंबरकंद—संज्ञा पुं० [सं० शम्बरकन्द] वाराही कंद। शूकर कंद।

शंबरघ्न—संज्ञा पुं० [सं० शम्बरघ्न] दे० 'शंबरारि' [को०]।

शंबरचंदन—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर चन्दन] एक प्रकार का चंदन जिसे कैरात, बहलगंध और गंधकाष्ठ भी कहते हैं।

शबरमाया—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बरमाया] १ इद्रजाल। जादू। २ शक्ति।

शबरसूदन—सज्ञा पु० [सं० शम्बरसूदन] १ कामदेव। २ प्रद्युम्न।

शबरहा—सज्ञा पुं० [सं० शम्बरहन्] दे० 'शबरारि'।

शबरारि—सज्ञा पु० [स० शम्बरारि] १ शबर का शत्रु अर्थात् कामदेव। मदन। उ०—शबर ज्यो शबरारि दुख देह को दहै।—केशव (शब्द०)। २ प्रद्युम्न जो कामदेव के अवतार कहे जाते है। उ०—मुरछि मुरछि गिरावो भूमि पर शबरारि ललकारि।—गर्गसंहिता (शब्द०)।

शबरासुर—सज्ञा पुं० [स० शम्बरासुर] शबर नाम का दैत्य [को०]।

शबराहार—सज्ञा पु० [स० शम्बराहार] झरबेरी। भूबदरी।

शबरी—सज्ञा [स० शम्बरी] मूषाकानी। आखुपर्णी लता। २ बडी दती। बगरेंडा। ३ माया। ४ मायाविनी। जादूगरनी (को०)।

शबरीगधा सज्ञा स्त्री० [स० शम्बरीगन्धा] बनतुलसी। बर्वरी।

शबरोद्भव—सज्ञा पुं० [स० शम्बरोद्भव] सफद लोध।

शबल—सज्ञा पुं० [स० शम्बल] १ यात्रा के समय रास्ते के लिये भोजनसामग्री। सबल। पाथेय। २ तट। किनारा। ३ कूल। ४ ईर्ष्या। द्वेप। ५ दे० 'शबर'।

शबली—सज्ञा स्त्री० [सं० शम्बली] शभली। कुटनी [को०]।

शबसादन—सज्ञा पुं० [स० शम्बसादन] वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक दैत्य जिसे केशरी वानर ने मारा था।

शबा—सज्ञा पु० [अ० शबह्] १ शनिवार। शनैश्चरवार। २ वार। दिन (को०)।

शबाकृत सज्ञा पुं० [स० शम्बाकृत] वह खेत जो दो बार जोता गया हो। वह खेत जिसकी दुहरी जुताई हुई हो [को०]।

शबु—सज्ञा पु० [स० शम्बु] सीपा। घोघा।

शबुक, शबुक्क—सज्ञा पुं० [स० शम्बुक, शम्बुक्क] १ घोघा। २. छोटा शख।

शबुकपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बुकपुष्पी] दे० 'शखपुष्पी'।

शबुकावर्त¹—वि० [स० शम्बुकावर्त] घोघे या छोटे शख की भँवरी के सदृश घूमा हुआ।

शबुकावर्त²—सज्ञा पु० पाँच प्रकार के भगदरो मे से एक प्रकार का भगदर।

विशेष—इसका कई प्रकार का वर्ण होता है और इसमे सदैव पीव बहा करता है। इसके फोडने से अनेक प्रकार की पीडा होती हैं। इसका फोडा गौ के थन के आकार का हो जाता है और उसका छिद्र घोघे के घेरे के समान घूमता हुआ होता है। इसे शखावर्त भी कहते हैं।

शबूक—सज्ञा पु० [स० शम्बूक] १ एक तपस्वी शूद्र।

विशेष—शूद्र होने के कारण इसकी कठोर तपस्या के प्रभाव से त्रेतायुग म रामराज्य म एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था, अत. इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मणपुत्र को पुनरुज्जीवित किया था।

२ घोघा। ३ शख। ४ एक दैत्य का नाम। ५. हाथी के सूँड का अगला भाग।

शबूकपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शखपुष्पी'।

शबूका—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बूका] सीपी।

शभ—सज्ञा पुं०, वि० [स० शम्भ] दे० 'शव' [को०]।

शभली—सज्ञा स्त्री० [सं० शम्भली] कुटनी। शबली [को०]।

शभु¹—सज्ञा पु० [स० शम्भु] १. शिव। महादेव। २ ग्यारह रुद्रो में से एक जो प्रधान रुद्र है। विशेष दे० 'महादेव' और 'रुद्र'। ३ रामायण के अनुसार एक दैत्य का नाम। ४. एक वृत्त का नाम। जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण होते हैं, और उनका क्रम इस प्रकार होता है—स, त, य, भ, म, म और ग (।।S, SS।, ।SS, S।।, SSS, SSS, S)। ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ सफेद आक। ८ पारा। ९ ऋषि। सत। तपस्वी (को०)। १०. एक प्रकार के सिद्ध (को०)। ११ बुद्ध (को० । १२ अग्नि (को०)।

शभु²—सज्ञा पुं० [स० स्वायम्भुव] दे० 'स्वायभुव'। उ०—कह शौनक शभू मनु पाछे। कीन्ह राज्य केहि कहिए आछे।—रघुनाथ (शब्द०)।

शभुकाता—सज्ञा स्त्री० [स० शम्भुकान्ता] १ शभु की स्त्री, पार्वती। २. दुर्गा।

शभुगिरि—सज्ञा पु० [स० शम्भुगिरि] शम्भु का पर्वत, कैलास।

शभुतनय—सज्ञा पुं० [स० शम्भुतनय] १ कार्तिकेय। २ गणेश [को०]।

शभुतेज—सज्ञा पु० [स० शम्भुतेजस्] पारा। पारद।

शभुनदन—सज्ञा पु० [स० शम्भुनन्दन] दे० 'शभुतनय'।

शभुबीज—सज्ञा पुं० [स० शम्भुबीज] पारा। पारद।

शभुप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स० शम्भुप्रिया] १ दुर्गा। शभुकाता। २. आमलकी [को०]।

शभुभूषण—सज्ञा पुं० [स० शम्भुभूषण] महादेव जी का भूषण, चद्रमा।

शभुमनु (पु)—सज्ञा पु० [स० स्वायम्भुव मनु] स्वायभुव मन्वतर जो सबसे पहला मन्वतर है। विशेष दे० 'स्वायभुव' और मनु।

शभुलोक—सज्ञा पु० [स० शम्भुलोक] महादेव जी का लोक, कैलास।

शभुवल्लभ—सज्ञा पु० [स० शम्भुवल्लभ] श्वेत कमल जो शिव को विशेष प्रिय है [को०]।

शयु¹—वि० [स०] प्रसन्न। शुभान्वित। सुखी [को०]।

शयु²—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार यज्ञ के अधिष्ठातृ देव अग्नि जो बृहस्पति के पुत्र रूप कहे गए हैं [को०]।

शव—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'शव' [को०]।

शस—सज्ञा पु० [स०] १ प्रतिज्ञा। इकरार। २ शपथ। कसम। ३. जादू। ४. प्रशसा। तारीफ। ५. इच्छा। ख्वाहिश। ६.

चापलूसी। चाटुता। ७ घोषणा। ८ वक्तृता। ९ किसी के प्रति शुभ वा मंगल की कामना (को०)।

शंसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। कहना। वर्णन करना। २ प्रशंसा करना। प्रशंसन। ३. पाठ करना [को०]।

शंसनीय—वि० [सं०] कथन या प्रशंसा के योग्य [को०]।

शंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। २ अभिलाषा। आशा। इच्छा। ३. वर्णन। कथन। ४ दुहराना। ५ पाठ करना। ६ अनुमान। कल्पना [को०]।

शंसित—वि० [सं०] १ कथित। घोषित। २. प्रशंसित। ३ इच्छित। काम्य। ४ निश्चित किया हुआ। निर्धारित। ५ जिसपर झूठा दोष मढ़ा गया हो। कलंकित। ६ अनुष्ठित [को०]।

यौ०—शंसितव्रत = व्रत करनेवाला। व्रत अनुष्ठित करनेवाला।

शंसी—वि० [सं० शंसिन्] १ कहनेवाला। २ प्रशंसक। ३ संकेत करनेवाला। सूचक। व्यंजक। ४ भविष्यसूचक। भविष्यवक्ता [को०]।

शंस्ता—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शंस्तृ] १ स्तुति करनेवाला। प्रशंसक। स्तुतिपाठक। २. ऋचाओं का पाठ करनेवाला। मंत्र-पाठक [को०]।

शंस्य[1]—वि० [सं०] १. प्रशंसा के योग्य। २. इच्छित। चाहा हुआ। ३ उच्च स्वर से पठित (को०)। ४. कहने योग्य (को०)।

शंस्य[2]—संज्ञा स्त्री० अग्नि।

शं—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. कल्याण। मंगल। ३. शस्त्र। हथियार। ४ विनाशक। काटनेवाला (को०)। ५ शास्त्र (को०)। ६ आनंद। सौख्य (को०)।

शअबान—संज्ञा पुं० [अ० शअ़बान] अरबी आठवाँ महीना जिसकी चौदहवीं तारीख को मुसलमानों का शबबरात नामक त्योहार होता है। यह रजब के बाद आता है।

शऊर—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर] १ किसी चीज की पहचान या जानकारी। २ काम करने की योग्यता। ढंग। ३. बुद्धि। अक्ल। ४. सभ्यता। तमीज (को०)।

क्रि० प्र०—आना। –सीखना।

मुहा०—शऊर पकड़ना = ढंग सीखना। अक्ल सीखना। बुद्धिमान् होना।

शऊरदार—संज्ञा वि० [अ० शुऊर + फा० दार (प्रत्य०)] [संज्ञा स्त्री० शऊरदारी] जिसमे शऊर हो। काम करने की योग्यता रखनेवाला। हुनरमंद। समझदार।

शक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जाति।

विशेष—पुराणों मे इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यंत से कही गई है। राजा सगर ने राजा नरिष्यंत को राज्यच्युत तथा देश से निर्वासित किया था। वर्णाश्रम आदि के नियमों का पालन न करने के कारण तथा ब्राह्मणों से अलग रहने के कारण वे म्लेच्छ हो गए थे। उन्हीं के वंशज शक कहलाए। आधुनिक विद्वानों का मत है कि मध्य एशिया पहले शकद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था। यूनानी इस देश को सीरिया कहते थे। उसी मध्य एशिया के रहनेवाला शक कहे जाते हैं। एक समय यह जाति बडी प्रतापशालिनी हो गई थी। ईसा से दो सौ वर्ष पहले इसने मथुरा और महाराष्ट्र पर अपना अधिकार कर लिया था। ये लोग अपने को देवपुत्र कहते थे। इन्होंने १९० वर्ष तक भारत पर राज्य किया था। इनमें कनिष्क और हुविष्क आदि बड़े बड़े प्रतापशाली राजा हुए हैं।

२. वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत् चले। ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था। ४. शालिवाहन के अनुयायी अथवा उसके वंशज। ५ संवत्।

यौ० शककर्ता, शककृत् = दे० 'शककारक'। शककाल = दे० 'शक संवत्'। शक संवत् = राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्। दे० 'शक'–३।

६. तातार देश। ७. जल। ८ मल। गोमय। ९ एक प्रकार का पशु। १० संदेह। आशंका। भय। त्रास। डर।

शक[2]—संज्ञा पुं० [अ०] शंका। संदेह। द्विविधा।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—निकालना।—पड़ना।—मिटना।—मिटाना।

शककारक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने कोई नया संवत् (शक) चलाया हो। संवत् का प्रवर्तक।

शकट—संज्ञा पुं० [सं०] १ छकड़ा। बैलगाडी। २ भार। बोझ। ३ शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। ४ तिनिश वृक्ष। ५ धव का वृक्ष। धौ। ६ शरीर। देह। ७ दो हजार पल की तौल। ८. रोहिणी नक्षत्र, जिसकी आकृति शकट या छकड़े के समान है। ९ शकट के आकार का सैनिक व्यूह। दे० 'शकट व्यूह' (को०)। १० एक गाड़ी भार। बोझ जो दो हजार पल के बराबर होता है (को०)। ११ अन्न सिद्ध करने का एक उपकरण (को०)।

शकटकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] गाड़ी या और कोई सवारी हाँकने का काम। २ गाड़ी आदि सवारियों की सामग्री बनाने और बेचने का काम।

शकटधूम—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोबर या उपले आदि का धूआँ। २ एक नक्षत्र का नाम।

शकटभिद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ शकटासुर को मारनेवाले, श्रीकृष्ण। २ विष्णु [को०]।

शकटभेद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रह द्वारा शकट अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का विभाजन। यदि यह भेदन शनि ग्रह द्वारा हो तो १२ वर्ष अनावृष्टि होती है [को०]।

शकटविल—संज्ञा पुं० [सं०] जलकुक्कुट [को०]।

शकटव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] १. शकट के आकार का सेना का निवेश। ... रचना कि आगे का भाग पतला और पीछे

का मोटा हो, और वह देखने मे शकट के आकार का जान पडे। २ कौटिल्य के अनुसार वह भोग व्यूह जिसके अदर उरस्थ मे दोहरी पक्तियाँ हों और पक्ष स्थिर हों।

शकटव्रत—सज्ञा पुं० [स०] एक विशेष प्रकार का व्रत [को०]।

शकटसार्थ—सज्ञा पुं० [स०] गाडियो का कारवाँ [को०]।

शकटहा—सज्ञा पुं० [स० शकटहन्] शकटासुर नामक दैत्य के मारनेवाले, श्रीकृष्ण।

शकटाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] गाडी का धुरा।

शकटाख्य, शकटाख्यक—सज्ञा पुं० [स०] धौ या धव का वृक्ष।

शकटार—सज्ञा पुं० [स०] १ राजा महानद का प्रधान मत्री।

विशेष—इसने अपने अपमान का बदला चुकाने के लिये चाणक्य से मिलकर षड्यत्र रचा था और इस प्रकार नदवश का नाश किया था।

२ एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

शकटारि—सज्ञा पुं० [स०] शकट दैत्य के शत्रु, श्रीकृष्ण।

शकटाल—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शकटार'।

शकटासुर—सज्ञा पुं० [स०] एक दैत्य जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था और जो स्वय ही कृष्ण द्वारा मारा गया था।

शकटाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] रोहिणी नक्षत्र [को०]।

शकटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटी बैलगाड़ी। २ बच्चो के खेलने की गाडी।

शकटोर्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] कोई चौरस भूभाग [को०]।

शकटी—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी गाडी।

शकठ—सज्ञा पुं० [स० शकट] मचान। उ०—कृष्णाचद्र के समय में भी वृदावन वन गिना जाता था, और गोप लोग उसमें शकठो पर रहते थे।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

शकर[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०, मि० स० शर्करा] कच्ची चीनी। शर्करा। शक्कर।

यौ०—शकरकद। शकरखोरा। शकरख्वाब=मीठी नीद। शकरगुड। शकरपा। शकरपारा। शकरपूरा। शकरबादाम। शकररगी, शकररजी=नाराजी। मनमुटाव। शकररेज=(१) न्योछावर। (२) खुशी का रोना। शकरलब=(१) मीठे अधरवाला। (२) मिष्टभाषी। (३) माशूक (लाक्ष०)।

शकर[2]—सज्ञा पुं० [स०] टुकडा। खड। शकल [को०]।

शकरकद—सज्ञा पुं० [हिं० शकर+स० कन्द] एक प्रकार का प्रसिद्ध कद।

विशेष—इसकी खेती प्राय सारे भारत मे होती है। यह साधारणत सूखी जमीन मे बोया जाता है। इसका कद दो प्रकार का होता है—एक लाल दूसरा सफेद। लाल शकरकद रतालू या पिंडालू कहलाते हे और सफेद को शकरकद या कदा कहते है। यह भूनकर वा उबालकर खाया जाता है। प्राय हिंदू लोग व्रत के दिन फलाहार रूप मे इसका व्यवहार करते हैं। यह कद बहुत मीठा होता है और इसमे से एक प्रकार की चीनी निकलती है। अनेक पाश्चात्य देशों मे इसमे चीनी भी निकाली जाती है, और इसी लिये इसकी बहुत अधिक खेती होती है। वनस्पति शास्त्र के आधुनिक विद्वानो का अनुमान है कि यह मूलत अमेरिका का कंद है, और वहीं से सारे ससार में फैला है।

शकरखोरा—सज्ञा पुं० [फा० शकर+खोर(=खानेवाला)] एक प्रकार का छोटा सुदर पक्षी।

विशेष—इसकी लबाई प्राय. एक बालिश्त से भी कम होती है और यह भारत, फारस तथा चीन मे पाया जाता है। इसका रग नीला और चोंच काली होती है और यह पेडो मे लटकता हुआ घोसला बनाता है। यह प्राय. खेतों मे रहता और खेती को हानि पहुँचानेवाले कीडे मकोडे आदि खाता है। यह सफेद रंग के दो या तीन अडे एक साथ देता है पर इसके अडा देने का कोई निश्चित समय नहीं है।

शकरख्वारा—वि० [फा० शकरख्वारह्] १ मीठी चीजें खानेवाला। तर माल खानेवाला। २ रस लेनेवाला। आनद लेनेवाला। रसग्राही [को०]।

शकरपा—वि० [फा०] जिसका एक पाँव टेढा हो। लँगडा [को०]।

शकरपारा—सज्ञा पुं० [फा० शकरपारह्] १ एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बडा होता है।

विशेष—इसका वृक्ष नीबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नीबू से कुछ बडे होते हैं। फूल कुछ लाल रग के होते हैं, फल सुगधित और खट्टा मीठा होता है।

२. एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान जो बरफी की तरह चौकोर कटा हुआ होता है।

विशेष—यह मीठा भी बनता है और नमकीन भी। इसके बनाने के लिये पहले मैदे मे मोयन डालकर उसे दूध या पानी से गूँधते हैं और तब उसे मोटी रोटी की तरह बेलकर छूरी आदि से छोटे छोटे चौकोर टुकडो मे काटकर घी मे तल लेते हैं। यदि नमकीन बनाना होता है तो मैदा गूँधते समय ही उसमे नमक, अजवायन आदि डाल देते हैं और यदि मीठा बनाना होता है, तो कटी हुई टुकडियों को तलने के बाद चीनी के शीरे मे पाग लेते हैं।

३ रूईदार कपडे पर की एक प्रकार की सिलाई जो शकरपारे के आकार की चौकोर होती है। ४ माशूक, जिसकी अदाएँ मीठी लगती है (को०)।

शकरपाला—सज्ञा पुं० [फा० शकर पारा] दे० 'शकरपारा'।

शकरपीटन—सज्ञा पुं० [देशी] एक प्रकार की कँटीली झाडी।

विशेष—यह हिमालय पर्वत की पथरीली और सूखी जमीन मे कुमायूँ और उसके पश्चिम ओर पाई जाती है। यह थूहर का ही एक भेद है, पर साधारण सेंहुड या थूहड के वृक्ष से कुछ भिन्न होता है।

शकरपूरा—सज्ञा पुं० [फा० शकरपूरह्] मीठा समोसा। पिराक। गुझिया [को०]।

शकरबादाम—संज्ञा पुं० [फा० शकर+बादाम] खूबानी या जर्दआलू नामक फल जो पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत में होता है।

शकरबार—वि० [फा०] १ शकर बरसानेवाला, बहुत मीठा। २ मिष्टभाषी [को०]।

शकरबूजा—संज्ञा पुं० [फा० शकरबूजट्] दे० 'शकरपूरा' [को०]।

शकरी¹—संज्ञा पुं० [फा० शकर] फालसा नामक फल।

शकरी²—वि० शकर संबंधी। शकर की [को०]।

शकल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्वचा। चमडा। २ छाल। छिलका। दालचीनी। ४. आँवला। ५ कमल की नाल। कमलदंड। ६. खाँड। शक्कर। ७. खंड। टुकडा। ८ मनु के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ९ घड़े या पात्र का एक अंश (को०)। १० स्फुलिंग। चिनगारी (को०)। ११. मछली की चोइयाँ। मछली के शरीर के ऊपर का छिलका (को०)। १३. अर्धांश। आधा भाग। जैसे, चंद्रशकल (को०)।

शकल²—संज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] १ मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। जैसे,—शकल न सूरत, गधे की मूरत।

मुहा०—शकल बिगाडना=मारते मारते चेहरे का रूप बिगाडना। बहुत मारना।

यौ०—सूरत शकल=चेहरे की बनावट। आकृति।

२ मुख का भाव। चेष्टा। ३ किसी चीज की बनावट। गढन। ढाँचा।

मुहा०—शकल बनाना=कोई चीज बनाकर उसका स्वरूप तैयार करना। रूपरेखा या ढाँचा तैयार करना।

४ किसी चीज का बनाया हुआ आकार। आकृति। स्वरूप। ५ उपाय। तरकीब। ढब। जैसे—अब इस मुकदमे से पीछा छुडाने की कोई शकल निकालनी चाहिए।

क्रि० प्र०—निकलना। निकालना।

६ मूर्ति।

शकलित—वि० [सं०] खंड खंड किया हुआ। जो टुकडों में विभक्त किया गया हो [को०]।

शकली—संज्ञा स्त्री० [सं० शकलिन्] १. सकुची मछली। २ मछली।

शकलीकृत—वि० [सं०] विभक्त। टुकडे टुकड़े किया हुआ [को०]।

शकव—संज्ञा पुं० [सं०] राजहंस।

शकांतक—संज्ञा पुं० [सं० शकान्तक] शक जाति का अंत करनेवाला, विक्रमादित्य।

शकाकुल—संज्ञा पुं० [अ० शकाकुल] शतावर की जाति की एक प्रकार की वनस्पति। शकाकुल मिस्री। धुवली। दुधली। गर्संदस्ती।

विशेष—यह प्रायः मिस्र देश में अधिकता से होती है और भारत के भी कुछ स्थानों, विशेषतः काश्मीर और अफगानिस्तान में पाई जाती है। यह प्रायः नम जमीन में वृक्षों के नीचे उगती है। यह बारहों मास रहती है। इसके डंठल डेढ़ दो हाथ ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते प्रायः तीन अंगुल चौडे और एक बालिश्त लंबे होते हैं। इसके पौधे की प्रत्येक गाँठ पर पत्ते होते हैं। इसमें नीले या लाल रंग के छोटे छोटे फूल गुच्छों में होते और काले रंग के फल लगते हैं। इसकी जड कंद के रूप में होती और बाजार में प्रायः 'शकाकुल मिस्री' के नाम से मिलती है। यह जड कामोद्दीपक तथा स्नायुओं के लिये बलकारक मानी जाती है और विविध प्रकार का पौष्टिक औषधों में डाली जाती है। कवार में इसके बीज औषधि के काम में आते हैं। इसकी राख का क्षार (नमक) अर्श रोग में लाभदायक समझा जाता है। यह जड प्रायः काबुल से आती है और वही सबसे अच्छी भी होती है।

शकाब्द—संज्ञा पुं० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत्।

विशेष—ईसवी सन् संवत् में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।

शकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ शकवंशीय व्यक्ति। वह जो शक वंश का हो। २ संस्कृत नाटकों की परिभाषा में राजा का वह साला जो नीच जाति का हो।

विशेष—नाटक में इस पात्र को बेवकूफ, चंचल, घमंडी, नीच तथा कठोर हृदयवाला दिखलाया जाता है। जैसे,—मृच्छकटिक में संस्थानक।

शकारि—संज्ञा पुं० [सं०] शक जाति का शत्रु विक्रमादित्य।

शकील—वि० [अ०] [वि० स्त्री० शकीला] अच्छी शक्लवाला। खूबसूरत। सुंदर।

शकुंत—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्त] १ पक्षी। चिडिया। उ०—जिस पर निज पक्षों की छाया रक्खी शकुंत द्विजवर ने। मृदु कोपल सी वह मुनिकन्या देखा कण्व मुनीश्वर ने।—शकुं०, पृ० २। २ एक प्रकार का कीडा। ३ विश्वामित्र के लडके का नाम। ४ नीला चाष पक्षी। नीलकंठ (को०)। ५. भास नाम का पक्षीविशेष (को०)।

शकुंतक—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्तक] १ एक प्रकार की छोटी चिडिया। २ पक्षी। चिडिया।

शकुंतला—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन्तला] १ राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की कन्या थी।

विशेष—महाभारत में लिखा है कि शकुंतला का जन्म विश्वामित्र के वीर्य से मेनका अप्सरा के गर्भ से हुआ था जो इसे वन में छोडकर चली गई थी। वन में शकुंतों (पक्षियों) आदि ने हिंसक पशुओं से इसकी रक्षा की थी इसी से इसका नाम शकुंतला पडा। वन में से इसे कण्व ऋषि उठा लाए थे और अपने आश्रम में रखकर कन्या के समान पालते थे। एक बार राजा दुष्यंत अपने साथ कुछ सैनिकों को लेकर शिकार खेलने

निकले और घूमते फिरते कण्व ऋषि के आश्रम मे पहुँचे। ऋषि उस समय वहाँ उपस्थित नहीं थे, इससे युवती शकुतला ने ही राजा दुष्यत का आतिथ्य सत्कार किया था। उसी अवसर पर दोनो मे पहले प्रेम और फिर गधर्व विवाह हो गया। कुछ दिनो के बाद राजा दुष्यत वहाँ से अपने राज्य को चले गए। कण्व मुनि जब लौटकर अपने आश्रम मे आए, तब वे यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि शकुतला का विवाह दुष्यत से हो गया। शकुतला उस समय गर्भवती हो चुकी थी अत समय पाकर उसके गर्भ से बहुत ही बलवान् और तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम भरत रखा गया। कहते है, इस देश का भारतवर्ष नाम इसी के कारण पड़ा कुछ दिनो बाद शकुतला अपने पुत्र को लेकर राजा दुष्यत के दरबार में पहुँची। परत शकुतला को बीच मे दुर्वासा ऋषि का शाप मिल चुका था, इससे राजा ने बिलकुल न पहचाना और स्पष्ट कह दिया कि न तो मैं तुम्हे जानता हूँ और न तुम्हे अपने यहाँ आश्रय दे सकता हूँ। परतु इसी अवसर पर एक आकाश वाणी हुई जिससे राजा को विदित हुआ कि यह मेरी ही पत्नी है और यह पुत्र भी मेरा ही है। उसी समय उन्हे कण्व मुनि के आश्रम की भी सब बातें स्मरण हो आई और उन्होने शकुतला को अपनी प्रधान रानी बनाकर अपने यहाँ रख लिया।

२ महाकवि कालिदास का लिखा हुआ एक प्रसिद्ध नाटक जिसमे राजा दुष्यत और शकुतला के प्रेम, विवाह, प्रत्याख्यान और ग्रहण आदि का वर्णन है।

शकुंति—सज्ञा पु० [सं० शकुन्ति] १ भास नाम की चिडिया। २ चिडिया। पक्षी (को०)।

शकुतिका—सज्ञा स्त्री० [सं० शकुन्तिका] १ छोटी चिडिया। २ रिआया। प्रजा। ३ एक प्रकार का पक्षी (को०)। ४ टिड्डी। झींगुर (को०)।

शकुद—सज्ञा पु० [सं० शकुन्द] सफेद कनेर।

शकुची—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुचि] दे० 'सकुची'।

शकुन—सज्ञा पु० [सं०] १ किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के सबंध मे शुभ या अशुभ माने जाते हैं। वे चिह्न आदि जो किसी काम के सबध मे शुभ या अशुभ माने जाते हैं।

विशेष—प्राय लोग कुछ घटनाओ को देखकर उनका शुभ या अशुभ फल होना मानते हैं, और उन घटनाओ को शकुन कहते है। जैसे,—कही जाते समय रास्ते मे बिल्ली का रास्ता काट जाना अशुभ शकुन समझा जाता है और जलपूर्ण कलश या मृतक आदि का मिलना शुभ शकुन माना जाता है। इसी प्रकार अगो का फडकना, विशिष्ट पशुओ या पक्षियो आदि का बोलना या कुछ विशिष्ट वस्तुओ का दिखाई पडना भी शकुन समझा जाता है। हमारे यहाँ इस विषय का एक अलग शास्त्र ही बन गया है, और उसके अनुसार दही, घी, दूब, चदन, शीशा, शख, मछली, देवमूर्ति, फल, फूल, पान, सोना, चाँदी, रत्न, वेश्या आदि का दिखाई पडना शुभ और साँप, चमडा, नमक, खाली बरतन आदि दिखाई पडना अशुभ समझा जाता है। प्राय लोग अशुभ शकुन देखकर काम रोक या टल देते हैं। साधारणत बोलचाल में लोग शकुन से प्राय शुभ शकुन का ही अभिप्राय लेते हैं, अशुभ शकुन को अपशकुन, असगुन कहते है।

मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य करने मे पहले किसी उपाय मे लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नही, अथवा काम अभी करना चाहिए या नही।

२. शुभ मुहूर्त या उसमे होनेवाला कार्य। ३ पक्षी। चिडिया। ४ गिद्ध नामक शिकारी पक्षी। ५ मगल अवसरों पर गाए जानेवाले गीत (को०)।

शकुनक—सज्ञा पु० [स०] पक्षी। खग (को०)।

शकुनज्ञ सज्ञा पु० [सं०] वह जो शकुनो का शुभाशुभ फल जानता हो।

शकुनज्ञा—सज्ञा स्त्री० [सं०] गिरगिट। गृहगोधा (को०)।

शकुनज्ञान—सज्ञा पु० [सं०] शकुन की जानकारी (को०)।

शकुनद्वार—सज्ञा पु० [सं०] शकुन शास्त्र के अनुसार एक साथ ही शुभ और अशुभ दोनो प्रकार के शकुन होना जो यात्रा आदि के लिये बहुत शुभ माना जाता है।

शकुनशास्त्र—सज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमे शकुनो के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो। शकुन बतानेवाला शास्त्र।

शकुनाहृत—सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का चावल जिसे दाऊद-खानी कहते हैं। २ एक प्रकार की मछली। ३ एक प्रकार का बालरोग। शकुनी ग्रह। विशेष दे० 'शकुनी—१'। ४. वह पदार्थ जो चिडियों द्वारा लाया गया हो।

शकुनाहृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिडियों द्वारा लाई हुई वस्तु। २ एक प्रकार का चावल।

शकुनि—सज्ञा पु० [स०] १ पक्षी। चिडिया। २ गिद्ध पक्षी। ३. एक नाग का नाम। ४ एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र और वृक का पिता था। ५ पुराणानुसार दु सह के आठ पुत्रो मे से एक जो निर्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ६. पुराणानुसार विकुक्षि के पाँच पुत्रो मे से एक। ७ गाधारी का भाई और कौरवो का मामा जो सुबलराज का पुत्र था और इसी लिये सौबल कहलाता था।

विशेष—यह बहुत ही दुष्ट और पापाचारी था। दुर्योधन ने इसे अपना मत्री बना रखा था और इसके परामर्श से उसने पाडवो के साथ अनेक कपटपूर्ण व्यवहार किए थे। कौरव कुल के नाश का मुख्य कारण यही शकुनि था। यह अपने पुत्र सहित सहदेव के हाथ से मारा गया था।

८. बडा भारी दुष्ट और पाजी आदमी। ९ फलित ज्योतिष के अनुसार बव आदि ग्यारह करणों मे से आठवाँ करण।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस करण मे जन्म लेता है, वह बड़ा भारी धूर्त, ठग, क्रूर, कृतघ्न, क्रोधी और लाट होता है। १०. चल पक्षी (को०)। ११. मुर्गा (को०)।

शकुनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

शकुनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार स्कंद के एक अनुचर का नाम। २. एक बालग्रह। शकुना।

शकुनिप्रपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिड़ियों के पानी पीने का बर्तन या स्थान (को०)।

शकुनिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] उषा काल के समय चिड़िया का चहचहाना।

शकुनी१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्यामा पक्षी। २. गौरैया पक्षी की मादा। ३. पुराणानुसार एक पूतना का नाम जो बहुत क्रूर और भयंकर कही गई है। ४. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह।

विशेष—कहते हैं, जिस बालक पर इसका आक्रमण होता है, उसके अंग शिथिल पड जाते हैं, शरीर मे जलन होती है, फोड़े फुंसियाँ आदि निकल आती हैं, शरीर से पक्षियों की सी गंध आने लगती है और वह रह रहकर चौंक उठता है।

शकुनी२—संज्ञा पुं० [सं० शकुन+ई (प्रत्य०)] वह जो शकुनों का शुभ और अशुभ फल जानता हो। शकुनज्ञ।

शकुनी३—संज्ञा पुं० [सं० शकुनि] दुर्योधन का मामा सौबल। विशेष दे० 'शकुनि'। उ०—वे दुःशासन और शकुनी बन गए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३०७।

शकुनीमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालकों की एक प्रकार की व्याधि।

विशेष—यह बालकों के जन्म से छठे दिन, छठे मास या छठे वर्ष होती है और इसमे उन्हें ज्वर तथा कंप होता है, दृष्टि ऊर्ध्व हो जाती है और हरदम बहुत कष्ट बना रहता है।

शकुनीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षियों का स्वामी, अर्थात् गरुड।

शकुर—वि० [सं०] पालतू (पशु आदि) (को०)।

शकुल, शकुलगंड—संज्ञा पुं० [सं० शकुल, शकुलगण्ड] सौरी मछली।

शकुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुटकी। कटुकी।

शकुलाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद दूब। श्वेत दूर्वा। २. गाँडर दूब। गंडदूर्वा।

शकुलाक्षका, शकुलाक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शकुलाक्ष'।

शकुलाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाँडर दूब।

शकुलादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुटकी। कटुकी। २. जलपिप्पली। जल चौलाई। कचट शाक। ४. कायफल। कटफल। ५. गजपीपल। गजपिप्पली। ६. गाँडर दूब। गंडदूर्वा। ७. जटामासी। बालछड़। ८. केंचुआ। गडूपद।

शकुलार्भक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली। गड़ुई मछली।

शकुलाहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल।

शकुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सकुची मछली। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्ठा। गुह। २. गोबर। गोमय।

शकृत्करि—संज्ञा पुं० [सं०] गाय का बच्चा। बछड़ा।

शकृत्करी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बछिया। वत्सतरी (को०)।

शकृत्कीट—संज्ञा पुं० [सं०] १. मल का कीड़ा। विट्कीट। २. गुबरैला।

शकृत्पिंड, शकृत्पिंडक—संज्ञा पुं० [सं० शकृत्पिण्ड, शकृत्पिण्डक] मल का पिंड। लेंड। लेंडी (को०)।

शकृद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] मलद्वार। गुदा।

शकृद्द्वार—संज्ञा पुं० [सं०] मलद्वार। गुदा।

शकृद्ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] अतिसार। ग्रहणी रोग (को०)।

शक्क—संज्ञा पुं० [अ०] संदेह। शंका। दे० 'शक' (को०)।

शक्कर१—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा, प्रा० सक्कर सक्करा, मि० फा० शकर (=चीनी)] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड।

शक्कर२—संज्ञा पुं० [सं०] बैल। वृष।

शक्करि—संज्ञा पुं० [सं०] बैल। वृष।

शक्करी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरों वाले छंदों की संज्ञा जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसंततिलका, असंबाधा, अपराजिता, प्रहरणकलिका, वासंती, मंजरी, कुटल, इंदुवदना, चक्र नांदीमुख, लाली और अनंद। इनमे से वसंततिलका सबसे अधिक प्रसिद्ध है। २. मेखला। ३. एक प्राचीन नदी का नाम। ४. अँगुली। उँगली (को०)। ५. निम्न वर्ण की महिला। नीच जाति की स्त्री (को०)।

शक्की—वि० [अ० शक्क+ई (प्रत्य०)] जिसे हर बात मे संदेह होता हो। सदा शक करनेवाला। उ०—इनका मिजाज निहायत शक्की है, ये सबको बेवफा समझते हैं।—श्रीनिवास ग्र० पृ० ११५।

शक्त१—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमे शक्ति हो। शक्तिसंपन्न। समर्थ। ताकतवर। २. वह जो प्रिय बातें कहता हो। मिष्टभाषी।

शक्त२—वि० १. योग्य। काबिल। समर्थ। २. शक्तिसंपन्न। ताकतवर। ३. धनाढ्य। समृद्धियुक्त। ४. अर्थ का अभिव्यंजक या अर्थद्योतक, जैसे कोई शब्द। ५. प्रियभाषी। मिष्टभाषी। ६. चतुर। चालाक। पटु (को०)।

शक्तव—संज्ञा पुं० [सं०] भुने हुए अनाज का आटा। सत्तू।

शक्ति१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह शारीरिक गुण या धर्म जिसके द्वारा अंगों का संचालन तथा दूसरे काम होते हैं। बल। पराक्रम। ताकत। जोर। जैसे—(क) उसमे दो मन बोझ उठाने की शक्ति है। (ख) अब तो उनमे उठने बैठने का भी शक्ति नहीं रह गई। (ग) दुर्बलों पर शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

क्रि० प्र०—देखना।—रखना। लगना।—लगाना।

२. किसी प्रकार का बल या ताकत जिससे कोई काम हो। जैसे,—मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति, सैनिक शक्ति, शब्द शक्ति। ३. किसी पदार्थ के संयोजक अंगों या द्रव्यों आदि का प्रकट

होनेवाला बल। दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। जैसे,—(क) इस औषध मे ऐसी शक्ति है कि मृत्यु को भी कुछ देर के लिये रोक देती है। (ख) इस इजन मे बीस घोडो की शक्ति है। (ग) पानी के बहाव मे बडी बडी चट्टानो तक को तोडने की शक्ति होती है। ४ वश। अधिकार। जैसे,—इसकी रक्षा करना मेरी शक्ति के बाहर है। ५ राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओ पर विजय प्राप्त की जाती है।

विशेष—हमारे यहाँ राजाओ की तीन प्रकार की शक्ति कही गई है—प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, और उत्साहशक्ति। कोश और दड आदि के सबध की शक्ति प्रभुशक्ति, सधि, विग्रह आदि के सबध की शक्ति मत्रशक्ति और पराक्रम प्रकट करने तथा विजय प्राप्त करने की शक्ति उत्साहशक्ति कहलाती है।

६ बडा और पराक्रमी राज्य जिसमे यथेष्ट धन और सेना आदि हो। जैसे,—इस समय युरोप मे इगलैड, फ्रास, जर्मनी, और रूस आदि कई बडी बडी शक्तियाँ है। ७ न्याय के अनुसार वह सबध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करानेवाले शब्द मे होता है। इस शब्द का यह अर्थ बोद्धव्य है—इस प्रकार का अनादि सकेत। जैसे घट शब्द के कहने मात्र से श्रोता को घट शब्द के रूपाकार आदि का ज्ञान हो जाता है। ८ ईश्वर की वह कल्पित माया जो उसकी आज्ञा से सब काम करनेवाली मानी जाती है। प्रकृति। माया। ९ किसी देवता का पराक्रम या बल जो कुछ विशिष्ट कार्यो का साधक माना जाता है। जैसे,—रौद्री शक्ति, वैष्णवी शक्ति।

विशेष—हमारे यहाँ पुराणो मे भिन्न भिन्न देवताओ की अनेक शक्तियो की कल्पना की गई है और ये शक्तियाँ बहुधा देवी के रूप मे और मूर्तिमती मानी गई हैं। जैसे, विष्णु की कीर्ति, काति, तुष्टि, पुष्टि, शाति, प्रीति आदि शक्तियाँ, रुद्र की गुणोदरी, गोमुखी, दीर्घजिह्वा, ज्वालामुखी, लबोदरी खेचरी, मजरी आदि शक्तियाँ, देवी की इद्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और सर्वमगला आदि शक्तियाँ।

१० तत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी।

विशेष—इनकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते है। ऐसी शक्ति समस्त सृष्टि की रचना करनेवाली और सब तरह की सामर्थ्य रखनेवाली मानी जाती है।

११. दुर्गा। भगवती। १२. गौरी। १३ लक्ष्मी। १४ तात्रिको की परिभाषा मे वह नटी, कापालिका, वेश्या, धोबिन, नाउन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन जो युवती, रूपवती और सौभाग्यवती हो। ऐसी स्त्रियो का विधिपूर्वक पूजन सिद्धिप्रद और मोक्षदायक माना जाता है। १५ स्त्री की मूत्रेंद्रिय। भग। (तात्रिक)। १६ एक प्रकार का शस्त्र। साग। १७. तलवार। १८ क्षमता। योग्यता (को०)। १९ साहित्य मे शब्द के अर्थ को बोधक शक्ति। अभिधा, लक्षणा और व्यजना नाम की शब्दशक्ति (को०)। २०. काव्यादि निर्माण की क्षमता। रचनाशक्ति। कवित्वशक्ति (को०)। २१ द्यूतक्रीडा का उपकरण वा यंत्र (को०)।

शक्ति[2]—सज्ञा पु० प्राचीन ऋषि का नाम जो पराशर के पिता थे।

शक्तिक—सज्ञा पु० [स०] १ धक।

शक्तिकुठन—सज्ञा पु० [स० शक्तिकुण्ठन] शक्ति का दब जाना। नरम पड जाना [को०]।

शक्तिग्रह[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। महादेव। २ कार्तिकेय। ३. शब्द का अर्थ बतलानेवाली शक्ति या वृत्ति का ज्ञान। ४ वह जो भाला या बरछी चलाता हो। भालाबरदार।

शक्तिग्रह[2]—वि० १ शक्ति या अर्थ को ग्रहण करनेवाला। २ बर्छाधारी (को०)।

शक्तिग्राहक[1]— वि० [स०] शब्दार्थ का निश्चय अथवा निर्धारण करनेवाला [को०]।

शक्तिग्राहक[2]—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय।

शक्तिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति का भाव या धर्म। शक्तित्व।

शक्तित —अव्य० [स० शक्तितस्] यथाशक्ति। शक्ति के अनुसार [को०]।

शक्तित्रय—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शक्ति'—५।

शक्तिधर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ स्कद। कार्तिकेय। उ०—शक्ति शक्तिधर पार्सहि पासी।—गर्गसहिता (शब्द०)। २ भालाबरदार। बर्छीधारी (को०)।

शक्तिधर[2]—वि० शक्तिशाली। ताकतवर। मजबूत [को०]।

शक्तिध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ कार्तिकेय। स्कद। २. वह जो शक्ति नामक अस्त्र धारण करता हो (को०)।

शक्तिनाथ—सज्ञा पु० [स०] शिव [को०]।

शक्तिपर्ण—सज्ञा पु० [सं०] छतिवन। सतिवन। सप्तपर्ण वृक्ष।

शक्तिपाणि—सज्ञा पु० [स०] १. कार्तिकेय। स्कद। २ शक्ति नामक अस्त्र या बर्छा धारण करनेवाला व्यक्ति (को०)।

शक्तिपात—सज्ञा पु० [स०] शक्ति का क्षय। पराजय। २ योग दर्शन मे एक आध्यात्मिक प्रक्रिया जिसके द्वारा गुरु अपनी आध्यात्मिक शक्ति शिष्य मे स्थापित करता है [को०]।

शक्तिपूजक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शाक्त। २ तात्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शक्ति का शाक्तो द्वारा होनेवाला पूजन।

शक्तिपूर्व—सज्ञा पु० [स०] पराशर का एक नाम।

शक्तिबोध—सज्ञा पुं० [स०] शब्दशक्ति का ज्ञान। शब्द के अर्थ का बोध।

शक्तिभृत्—सज्ञा पुं० [स०] १. कार्तिकेय। स्कंद। २. साँग या भाला धारण करनेवाला पुरुष (को०)।

शक्तिमत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] शक्तिमान् होने का भाव या धर्म।

शक्तिमत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शक्तिमत्ता'।

शक्तिमान्—वि० [स० शक्तिमत्] [वि० स्त्री० शक्तिमती] १ बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर। २ सामर्थ्य वा योग्यता का अतिक्रमण करनेवाला (को०)। ३. बाणधारी (को०)।

शक्तिवन—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक वन का नाम जो तीर्थ कहा गया है।

शक्तिवादी—संज्ञा पुं० [शक्तिवादिन्] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शाक्त।

शक्तिवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। वाममार्गी।

शक्तिवैकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शक्ति का नाश। दौर्बल्य कमजोरी। २ असमर्थता।

शक्तिशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्तों का एक संस्कार जिसमे वे किसी स्त्री को शक्ति की प्रतिनिधि बनाने से पहले कुल विशिष्ट क्रियाएँ करके उसे शुद्ध करते है।

शक्तिष्ठ—वि० [सं०] जिसमे शक्ति हो। शक्तिशाली। मजबूत। ताकतवर। बलवान्।

शक्तिसंपन्न—वि० [सं० शक्तिसम्पन्न] शक्ति से युक्त। बलवान्। ताकतवर। मजबूत।

शक्तिहीन—वि० [सं०] १ जिसमे शक्ति का अभाव हो। निर्बल। बलहीन। असमर्थ। नाताकत। २. हींजडा। नपुंसक। नामर्द।

शक्ती¹—संज्ञा पुं० [सं० शक्ति] एक प्रकार के मात्रिक छंद का नाम।

विशेष—इसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएँ होती हैं और इसकी रचना ३+३+४+३+५ होती है। अत मे सगण, रगण, या नगण म से कोई एक और आदि मे एक लघु होना चाहिए। इसकी १, ६, ११ और १७वी मात्रा लघु रहती है। यह भुजंगी और चंद्रिका वृत्त की चाल पर होता है। अंतर यह है कि वे गणबद्ध होते है और यह स्वतंत्र है। यह छंद फारसो के 'करीमा बबख्शाय बर हाल मा। कि हस्तम् असीरे कमंदे हवा' की बहर से मिलता है। जैसे, उ०—शिवा शंभु के पांव पंकज गहौं। विनायक सहायक सदा दिन चहौं।—काव्य प्र० (शब्द०)।

शक्ती²—संज्ञा पुं० [सं० शक्तिन्] शक्तिवाला। शक्तिशाली। बलवान्।

शक्ती³—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'शक्ति'।

शक्तु—संज्ञा पुं० [सं०] भुने हुए जो चने आदि का आटा। सत्तू।

शक्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बहुत तीव्र और उग्र विष जो भसोड के समान होता है। पीसने से यह सहज ही मे पिसकर सत्तू के समान हो जाता है।

शक्तुफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर का पेड।

शक्तुफलिका, शक्तुफली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी का वृक्ष।

शक्त्यपेक्ष दायन—संज्ञा पुं० [सं०] ऋणी की सामर्थ्य के अनुसार ऋण थोडा थोडा करके चुकता कराना।

शक्तृ—संज्ञा पुं० [सं०] वशिष्ठ मुनि के सबसे बडे लडके का नाम।

विशेष—महाभारत मे लिखा है कि एक बार रास्ते मे राजा कल्माषपाद से इनकी कहा सुनी हो गई, जिसपर राजा ने इन्हे एक कोडा जमा दिया। इसपर इन्होने राजा को शाप दिया कि तुम राक्षस हो जाओ। तदनुसार राजा राक्षस हो गया और पहले उसने इन्ही को भक्षण कर लिया।

शक्न, शक्नु—वि० [सं०] प्रिय बोलनेवाला, प्रियंवद (को०)।

शक्मा—संज्ञा पुं० [सं० शक्मन्] १. पराक्रम। शक्ति। सामर्थ्य। २ इंद्र। सक्रंदन। ३ कर्म।

शक्य¹—वि० [सं०] १ किए जाने योग्य। जो किया जा सके। संभव। क्रियात्मक। २. जिसमे शक्ति हो।

शक्य²—संज्ञा पुं० शब्दशक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ। जैसे—'अग्नि' पद मे अगार रूप की शक्ति है अत अग्निपद का अगार शक्य अथवा वाच्य है। (व्याकरण)।

शक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शक्य होने का भाव या धर्म। क्रियात्मकता। २ क्षमता। समर्थता (को०)।

शक्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शक्यता' (को०)।

शक्यप्रतीकार—वि० [सं०] जिसका प्रतीकार किया जा सके (को०)।

शक्यप्राप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाता के वे प्रमाण जिनसे प्रमेय सिद्ध होता है।

शक्यसामतता—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्यसामन्तता] पडोसी राजाओ को जीतने योग्य क्षमता (को०)।

शक्यार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो शब्द को अभिधाशक्ति द्वारा व्यक्त हो। अभिधेयार्थ (को०)।

शक्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ दैत्यो का नाश करनेवाले, इंद्र। उ०—भरत शोक बरन्यो नहिं जाई। मनहु शक्र द्विज हत्या पाई।—लवकुश-चरित्र (शब्द०)। २ कुटज वृक्ष। कोरैया। ३ अर्जुन वृक्ष। कोह वृक्ष। ४. इंद्रजौ। कुटज बीज। ५. रगण के चौथे भेद अर्थात् (ऽ।।ऽ) की संज्ञा, जिसमे छह मात्राएँ होती है। जैसे—लोकवर्ती। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र, जिसके अधिष्ठाता देवता इंद्र है। ७. उलूक पक्षी (को०)। ८. चौदह की संख्या (को०)। ९. शिव का एक नाम (को०)। १०. स्वामी। राजा (को०)।

शक्र²—वि० समर्थ। योग्य।

शक्रकार्मुक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रकाष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राची दिशा। पूर्व दिशा जिसका अधिपति इंद्र है (को०)।

शक्रकुमारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शक्रमातृका'।

शक्रकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रध्वज।

शक्रक्रीड़ाचल—संज्ञा पुं० [सं० शक्रक्रीडाचल] इंद्र के क्रीडा करने का पर्वत अर्थात् सुमेरु पर्वत।

शक्रगोप, शक्रगोपक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रगोप नामक कीडा। बीरबहूटी।

शक्रचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रज, शक्रजात—संज्ञा पुं० [सं०] कौआ। काक पक्षी।

शक्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी लता। इंद्रायण। इनारुन।

शक्रजानु—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक वानर का नाम।

शक्रजाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'इंद्रजाल'।

शक्रजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने इंद्र पर विजय प्राप्त की हो। २ इंद्र को जीतनेवाले मेघनाद का एक नाम।

शक्रतरु—संज्ञा पुं० [सं०] भाँग का पेड़।

शक्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शक्र का भाव या धर्म।

शक्रदारु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवदारु। २ साखू का पेड़। शाल।

शक्रदिक्—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्रदिश्] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इंद्र माने जाते हैं।

शक्रदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ हरिवंश के अनुसार शृगाल के एक पुत्र का नाम।

शक्रदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] ज्येष्ठा नामक नक्षत्र जिसके स्वामी इंद्र माने जाते हैं।

शक्रद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २ मौलसिरी। बकुल वृक्ष। ३ साखू का पेड़। शाल वृक्ष।

शक्रधनु, शक्रधनुष—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'इंद्रध्वज'।

शक्रनंदन—संज्ञा पुं० [सं० शक्रनन्दन] इंद्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन।

शक्रनेमी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रनेमिन्] १ देवदार का वृक्ष। २ मेढ़ासिंगी। मेषशृंगी। ३ कुड़ा। कोरैया। कुटज वृक्ष।

शक्रपर्याय, शक्रपादप—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुड़ा। कुटज वृक्ष। २ देवदार का पेड़।

शक्रपुर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र के रहने की पुरी, अमरावती।

शक्रपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्रपुर। अमरावती।

शक्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शक्रपुष्पिका'।

शक्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्निशिखा नाम का वृक्ष। २ कलिहारी। लांगली। ३ नागदमनी। नागदौन।

शक्रप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था। इंद्रप्रस्थ। उ०—उठे सुनत हरि उद्धव बानी। भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी।—सबल (शब्द०)।

शक्रबीज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रजौ।

शक्रभवन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

शक्रभिद्—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र को दबानेवाला, मेघनाद। इंद्रजित्।

शक्रभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

शक्रभूभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी नाम की लता। इनारुन। इंद्रायण।

शक्रभूरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कुटज वृक्ष। कुड़ा। कोरैया।

शक्रमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्रमातृ] इंद्र की माता अर्थात् भार्गी।

शक्रमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रध्वज। २ भार्गी।

शक्रमूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० शक्रमूर्द्धन्] वल्मीक। बाँबी।

शक्रयव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रलोक। स्वर्ग।

शक्रवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी नाम की लता। इनारुन। इंद्रायण।

शक्रवापी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रवापिन्] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शक्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग। शक्रभवन [को०]।

शक्रवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का वाहन अर्थात् मेघ। बादल।

शक्रवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कुटज। कोरैया।

शक्रशरासन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रशाखी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रशाखिन्] कुड़ा। कुटज वृक्ष।

शक्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञभूमि में वह स्थान जहाँ इंद्र के उद्देश्य से बलि दी जाती हो।

शक्रशिर—संज्ञा पुं० [सं० शक्रशिरस्] बाँबी। वल्मीक।

शक्रसारथी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रसारथि] इंद्र का सारथी अर्थात् मातलि।

शक्रसुत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का पुत्र बालि, जिसे राम ने मारा था। २ जयंत (को०)। ३ अर्जुन (को०)।

शक्रसुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंदरू। गुदवरोसा।

शक्रसृष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे।

शक्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] उल्लू। पेचक पक्षी।

शक्राग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] विशाखा नक्षत्र जिसके स्वामी इंद्र और अग्नि माने जाते हैं।

शक्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी शची। इंद्राणी। २ निर्गुंडी। शेफालिका। सेनुआर।

शक्रात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन। २ जयंत (को०)।

शक्रादन—संज्ञा पुं० [सं०] भाँग। भंग।

शक्रानिल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में प्रभव आदि साठ संवत्सरों के बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति। इनके युग में ये पाँच संवत्सर होते हैं,—परिधावी, प्रमादी, आनंद, राक्षस और अनल।

शक्रावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शक्राशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाँग। विजया। भंग। २. कुड़ा। कुटज। कोरैया। ३ इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का आसन। २ सिंहासन।

शक्राह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्रजौ। कुटज बीज। २. कुटज वृक्ष।

शक्राह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शक्राह्व'।

शक्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ वज्र। ३. हाथी। ४ पर्वत। पहाड़।

शक्रुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष [को०]।

शक्रेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शक्रेन्द्र] बीरबहूटी या इंद्रगोप नाम का कीड़ा।

शक्रोत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रध्वज नाम का उत्सव जो भाद्र शुक्ल द्वादशी को होता था। दे० 'इंद्रध्वज'—२, ३।

शक्रोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शक्रोत्थान'।

शक्ल—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शकल२'।

मुहा०—शक्ल चिड़ियों की नाज परियों का = हैसियत के बाहर गुमान रखना। उ०—ऐसी तो सूरत भी नहीं पाई है बीबी, शक्ल चिड़ियों की नाज परियों का।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १६। शक्ल दिखाना = (१) मिलना। (२) सामने आना। शक्ल देखते रह जाना = (१) चकित होना। (२) मुग्ध होना। शक्ल देखा करना = दे० 'शक्ल देखते रह जाना'। शक्ल न दिखाना = (१) न मिलना। (२) मुँह छिपाना। शक्ल पकड़ना = मूर्त होना। आकार ग्रहण करना। शक्ल पहचानना = (१) रूपरेखा से परिचित होना। (२) देखकर चरित्र की बारीकियाँ जानना। शक्ल बनाना = असुंदर या विचित्र हो जाना। शक्ल बिगाड़ना = (१) चेहरे को कुरूप या विचित्र कर लेना। (२) पीटते पीटते मुँह सुजा देना।

शक्व—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी (को०)।

शक्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ बैल। २. आकाश।

शक्वरी संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उँगली। २ एक प्राचीन नदी का नाम। ३ मेखला। ४ गौ। गाय। ५ अँगूठी। मुद्रिका (को०)। ६ एक साम (को०)। ७ शक्करी नामक छंद। विशेष दे० 'शक्करी'।

शक्वा१—संज्ञा पुं० [सं० शक्वन्] १. हाथी। गज। २. शिल्पी। निर्माता (को०)।

शक्वा२—वि० शक्तिमान्। ताकतवर। मजबूत (को०)।

शखस—संज्ञा पुं० [अ० शख्स] दे० 'शख्स'।

शख्स—संज्ञा पुं० [अ० शख्स्] व्यक्ति। जन। मनुष्य। आदमी।

शख्सियत—संज्ञा स्त्री० [अ० शख्सियत] शख्स का भाव या धर्म। व्यक्तिता। व्यक्तित्व।

शख्सी—वि० [अ० शख्सी] शख्स का। मनुष्य का। व्यक्तिगत।

शगल—संज्ञा पुं० [अ० शगल, शग्ल, शुग्ल] १ व्यापार। कामधंधा। जैसे,—कहिए आजकल क्या शगल है। उ०—शगल बेहतर है इश्कबाजी का। क्या हकीकी व क्या मजाजी का।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४। २ वह काम जो यों ही समय बिताने या मन बहलाने के लिये किया जाय। मनोविनोद। उ०—मनियर को एक नये शगल में तल्लीन देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।—जिप्सी, पृ० ११६।

शगुन—संज्ञा पुं० [सं० शकुन (मि० फा० शगून, शुगुन, शुगून)] १ किसी काम के समय होनेवाले लक्षणों का शुभाशुभ विचार। शकुन। विशेष दे० 'शकुन'।

मुहा०—शगुन लेना या विचारना = कोई काम करने से पहले कुछ विशिष्ट क्रियाओं द्वारा यह जानना कि यह काम होगा कि नहीं।

२ किसी काम के आरंभ में होनेवाले शुभ लक्षण। ३ एक प्रकार की रसम जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है। इसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों के यहाँ कुछ मिठाई और नगद आदि भेजते हैं। तिलक। टीका।

क्रि० प्र०—देना।—भेजना।—लेना।

४ नजराना। भेंट। (क्व०)। ५ बहली में वह स्थान जहाँ बैल हाँकनेवाला बैठता है।

शगुनियाँ—संज्ञा पुं० [हिं० शगुन + इयाँ (प्रत्य०)] वह जो ज्योतिष या रमल आदि के द्वारा शुभाशुभ शगुनों आदि का विचार करता हो। साधारण कोटि का ज्योतिषी। रम्माल।

शगून संज्ञा पुं० [फा० शुगून] दे० 'शगुन'।

शगूनियाँ—संज्ञा पुं० [फा० शुगून + हिं० इया] दे० 'शगुनियाँ'।

शगूफा—संज्ञा पुं० [फा० शिगूफह्] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३. कोई नई और विलक्षण घटना। ४. कसीदा। बेलबूटा (को०)।

मुहा०—शगूफा खिलना = कोई नई और विलक्षण घटना होना। शगूफा खिलाना = कोई ऐसी नई और विलक्षण बात कर बैठना जिससे सब लोग चकित हो जायँ। शगूफा छोड़ना = झगड़े फसादवाली बात करना।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्रायः ऐसी बातों के संबंध में ही होता है जिनमें कोई लड़ाई झगड़ा या झंझट आदि पैदा हो।

शचि, शची—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो दानवराज पुलोमा की कन्या थी।

पर्या०—सची। ऐंद्री। पुलोमजा। माहेंद्री। जयवाहिनी।

२. सतावर। शतावरी। शतमूली। ३ स्पृक्का। असबरग। ४ वक्तृत्व शक्ति। वाग्मिता। ५ प्रज्ञा। बुद्धि। अक्ल। ६. बल। शक्ति (को०)। ७ क्षिप्रकारिता। क्रियात्मकता (को०)। ८. भक्ति। प्रीति (को०)। ९ पवित्र क्रिया (को०)।

शचीतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शचीपति—संज्ञा पुं० [सं०] शची के पति, इंद्र।

शचीपती—संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनीकुमार।

शचीबल—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में वह पात्र जो इंद्र के समान वेशभूषा धारण करता हो।

शचीभर्ता—संज्ञा पुं० [सं० शचीभर्तृ] शची के पति, इंद्र (को०)।

शचीश—संज्ञा पुं० [सं०] शची के पति, इंद्र।

शजर—संज्ञा पुं० [अ०] दरख्त। वृक्ष। पेड़।

शजरा—संज्ञा पुं० [अ० शजरह्, शज्रह्] १ वह कागज जिसमें किसी की वंशपरंपरा लिखी हो। वंशवृक्ष। पुश्तनामा। कुर्सीनामा। वंशावली। २ वृक्ष। पौधा। ३ पटवारी का तैयार हुआ खेतों का नक्शा।

शट१—संज्ञा पुं० [सं०] १ खटाई। अम्ल रस। २. एक प्राचीन देश का नाम।

शट२—वि० [सं०] अम्ल। खट्टा (को०)।

शटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जटा। २ शेर की गर्दन का बाल। सटा। केसर (को०)।

शटि, शटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कचूर। कर्चूर। २ गंधपलाशी। कपूरकचरी। ३ अमिया हल्दी। आम्रहरिद्रा। आमा हलदी। ४ सुगंधवाला। नेत्रबाला।

शट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] घी और पानी में सना हुआ चावल का आटा जिसका व्यवहार वैद्यक में होता है।

शठ'—वि० [सं०] १ धूर्त। चालाक। धोखेबाज। २ पाजी। लुच्चा। बदमाश।

शठ²—संज्ञा पुं० १ तगर का फूल। २ केसर। कुंकुम। जाफरान। ३ लोहा। ४ इस्पात। फौलाद। ५ धतूरे का वृक्ष। ६ चीता चित्रक। चितउर। ७ ताम्रवृक्ष। ८ अमला का वृक्ष। ९ साहित्य में पाँच प्रकार के पतियों या नायकों में से एक प्रकार का पति या नायक। वह नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर और किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का बहाना करता हो। उ०—सहित काज मधुरै मधुर, बैननि कहै बनाय। उर अंतर घट कपटमय, सो शठ नायक आय।—(शब्द०)। १० छलिया वा धूर्त जन (को०)। ११ बेवकूफ। जडबुद्धि। १२ आलसी। १३ वह जो दो आदमियों के बीच में पडकर उनके झगडे का निपटारा करता हो। मध्यस्थ।

यौ०—शठधी, शठबुद्धि, शठमति = जिसकी बुद्धि शठतापूर्ण हो। शठ या दुष्ट व्यक्ति। धूर्त आदमी।

शठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शठ का भाव या धर्म। धूर्तता। २. बदमाशी। पाजीपन।

शठत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शठ का भाव या धर्म। शठता।

शठांगा, शठाम्वा—संज्ञा स्त्री० [सं० शठाङ्गा, शठाम्वा] ब्राह्मणी लता। अंबष्ठा। पाढा।

शठावा—संज्ञा स्त्री० [सं० शठाम्वा] अंबष्ठा। पाढा (को०)।

शठिका, शठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कचूर। २ गंधपलाशी। कपूरकचरी। ३ वन अदरक। पेऊ।

शठीरूपा - संज्ञा स्त्री० [सं०] कद गिलोय। कद गुडूची।

शठोदरक—वि० [सं० शठोदर्क] अंत में धोखा देनेवाला। धोखेबाज। धूर्त।

शडाप—संज्ञा पुं० [अनुध्व०] कोडे, चाबुक आदि के मारने से होनेवाली ध्वनि।

मुहा०—शडाप शडाप कोडे जमाना = तेजी से कोडा मारना। उ०—और आदमी इधर उधर से शडाप शडाप से कोडे जमाते जाते हैं।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४।

शण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सन नामक पौधा। विशेष दे० 'सन'। २ भंग। विजया। ३ शणपुष्पी। वनसनई।

शणई—संज्ञा स्त्री० [सं० शण + हिं० ई] दे० 'सन'।

शणकंद—संज्ञा पुं० [सं० शणकन्द] चर्मकषा नाम का सुगंधि द्रव्य।

शणकंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० शणकन्दा] एक प्रकार का क्षुद्र जिसे सावला कहते है।

शणक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम। सनक।

शणघंटा, शणघंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शणघण्टा, शणघण्टिका] शणपुष्पी नाम की लता। विशेष दे० 'शणपुष्पी'।

शणचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सनई का वह बचा हुआ भाग जो उसे कूट कर सन निकाल लेने के बाद रह जाता।

शणतांतव—वि० [सं० शणतान्तव] [वि० स्त्री० शणतांतवी] सन के रेशे का बना हुआ (को०)।

शणपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] सन का बना हुआ वस्त्र या पट्ट (को०)।

शणपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पटसन। अशनपर्णी (को०)।

शणपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शणपुष्पी'।

शणपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वनस्पति जो साधारणत. वनसनई कहलाती है।

विशेष—यह छोटी और बडी दो प्रकार की होती है। छोटी शणपुष्पी प्राय सब प्रांतों में पाई जाती है। इसका क्षुप, पत्ते, फूल इत्यादि सन के ही समान होते हैं, किंतु क्षुप सन से छोटा होता है। इसके फूल पीले, फलियाँ मटर के समान गोल और लंबी होती हैं। यह कडवी, वमनकारक और पारे को बाँधनेवाली कही गई है। इसके फल सूख जाने पर अंदर के बीजों के कारण झन झन शब्द करते हैं, इसी से इसे झुनझुनियाँ कहते हैं। बडी शणपुष्पी प्राय. वाटिकाओं में लगाते हैं। इसका क्षुप, पत्ते आदि छोटी शणपुष्पी से बडे होते हैं और फूल सफेद रंग के होते हैं। यह कसैली, गरम और पारे को बाँधनेवाली कही गई है और मोहन, स्तंभन आदि में व्यवहार की जाती है।

१ अरहर। आढकी। रहर।

शणशिफा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सनई या सन की जड। शणमूल।

शणसमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनसनई। शणपुष्पी।

शणसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कुश आदि की बनी हुई पवित्री जो श्राद्ध, तर्पण आदि कृत्यों के समय कनिष्ठिका की बगलवाली उँगली में पहनी जाती है। पवित्रक। पवित्री। पैंती।

शणाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शणालुक'।

शणालुक—संज्ञा पुं० [सं०] अमलतास का वृक्ष।

शणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शणपुष्पी। वनसनई।

शणीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोन नदी के मध्य का उपजाऊ स्थल। २ सरयू नदी की शाखाओं से घिरा हुआ छपरे के समीप का एक द्वीप। दर्दरी तट।

शत'—वि० [सं०] दस का दस गुना। सौ।

शत²—संज्ञा पुं० १ सौ की संख्या। दस की दस गुनी संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००। २ कोई बडी संख्या। जैसे, शतपत्र।

शतक'—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह। २. एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। जैसे,—नीतिशतक, रहिमन

शतक। ३ वह जिसमे सौ भाग या अवयव हो। ४ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। ५ विष्णु का एक नाम।

शतक²—वि० १ सौ। दस का दस गुना। २ जिसमे सौ का समावेश हो। सौ की सख्या से सबद्ध [को०]।

शतकपालेश—सज्ञा पु० [स०] शिव की एक मूर्ति का नाम।

शतकर्मा—सज्ञा पु० [स० शतकर्मन्] शनि ग्रह।

शतकिरण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि।

शतकीर्ति—संज्ञा पु० [स०] जैन पुराणानुसार एक भावी अर्हत् का नाम।

शतकुंत, शतकुंद—सज्ञा पुं० [स० शतकुन्त, शतकुन्द] सफेद कनेर। करवीर।

शतकुंभ—सज्ञा पु० [स० शतकुम्भ] १ एक प्राचीन पर्वत का नाम। २ सफेद कनेर। शतकुत। ३ सुवर्ण। सोना।

शतकुंभा—सज्ञा स्त्री० [स० शतकुम्भा] महाभारत मे वर्णित एक नदी का नाम।

शतकुलीरक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

शतकुसुमा—सज्ञा स्त्री० [स०] शतपुष्पा। सौंफ।

शतकेसर—सज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार एक वर्षपर्वत का नाम।

शतकोटि—सज्ञा पु० [स०] १. सौ करोड की सख्या। अर्बुद। २. इद्र का वज्र। ३ हीरा। हीरक।

शतकौंभ, शतकौंभक—सज्ञा पुं० [शतकौम्भ, शतकौम्भक] स्वर्ण। सोना।

शतक्रतु—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ वह जिसने सौ यज्ञ किए हो।

शतक्रतुद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] काली कुडा। कृष्ण कुटज।

शतक्रातुयव—सज्ञा पु० [स०] कुटज। बीज इद्रजौ।

शतखड—सज्ञा पु० [स० शतखण्ड] १ सोना। स्वर्ण। २ सोने की बनी हुई कोई चीज। ३. सौ भाग। सौ टुकड़ा।

शतगु—वि० [स०] मनु के अनुसार सौ गौओ का स्वामी। सौ गायो का रखनेवाला।

शतगुण, शतगुणित – वि० [स०] सौगुना।

शतग्रंथि—सज्ञा स्त्री० [स० शतग्रन्थि] १ सफेद दूब। दूर्वा। २ नीली दूब।

शतग्रीव—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि।

शतघ्न—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

शतघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

विशेष—किसी बडे पत्थर या लकडी के कुंदे मे बहुत से कीलकांटे ठोककर यह शस्त्र बनाया जाता था और इसका व्यवहार युद्ध के समय शत्रुओ पर फेंकने मे होता था। लोग इसे तोप या राकेट जैसा शस्त्र कहते हैं जिससे सैकडो व्यक्ति मारे जा सकते थे।

२ वृश्चिकाली। बिछाती। ३. एक प्रकार की घास। ४. करंज या कजे का पेड। ५ भावप्रकाश के अनुसार गले में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें त्रिदोष के कारण गले में बत्ती के समान लबी और मोटी तथा कठ को रोकनेवाली, माप के अंकुरो से भरी हुई और बहुत पीडा देनेवाली सूजन हो जाती है। यह रोग प्राणनाशक कहा गया है।

शतचद्र—सज्ञा पु० [स० शतचन्द्र] महाभारत के अनुसार वह तलवार या चर्म (ढाल) जिसपर चद्रमा के समान चमकते हुए आकार बने हो [को०]।

यौ०—शतचद्रवर्म = (१) तलवार चलाने की एक विधि या पद्धति। (२) तलवार की वार।

शतचरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] कनखजूरा। गोजर। शतपदी [को०]।

शतच्छद—सज्ञा पुं० [स०] १ कठफोडवा या काठ ठोका नामक पक्षी। २ सौ पत्तो या पखडियोवाला कमल। शतदल पद्म।

शतजटा—सज्ञा स्त्री० [स०] सतावर। शतमूली।

शतजित्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु का एक नाम। २ भागवत के अनुसार विराज के एक पुत्र का नाम। ३ एक यज्ञ का नाम।

शतजिह्व सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

शततम—वि० [स०] [वि० स्त्री० शततम] सौवाँ। सौ की सख्या पर पडनेवाला [को०]।

शततारका, शततारा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शतभिषा नाम का नक्षत्र जिसमे सौ तारे हैं। विशेष दे० 'शतभिषा'।

शतदंतिका—सज्ञा स्त्री० [स० शतदन्तिका] नखी नामक गधद्रव्य। हाथी-शुडी। नागदती।

शतदल—सज्ञा पु० [स०] पद्म। शतपत्र।

शतदला—सज्ञा स्त्री० [स०] सेवती। शतपत्री।

शतद्रु—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पजाब की सतलज नाम की नदी।

विशेष—यह नदी हिमालय पर्वत के दक्षिण पश्चिमी भाग मे बहती हुई व्यास या विपासा से मिलकर मुल्तान के दक्षिण ओर सिंधु मे मिलती है।

२. गगा नदी का एक नाम (को०)।

शतधन्वा—सज्ञा पु० [स० शतधन्वन्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ एक योद्धा जिसे कृष्ण ने सत्राजित के मारने के अपराध मे मारा था।

शतधा¹—सज्ञा स्त्री० [स०] दूब। दूर्वा।

शतधा²—क्रि० वि० [स०] सौ टुकडो मे। सौ पर्तों मे। सौ प्रकार से। सैकडो बार। उ०—मूर्त प्रेरणा सी लहराती नभ मे शतधा विद्युत्।—प्रतिमा, पृ० १३६।

शतधामा—सज्ञा पु० [स० शतधामन्] विष्णु का एक नाम।

शतधार¹—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र।

शतधार²—वि० सैकड़ो धाराओं मे प्रवहमान। २ जिसमे सौ कोण वा धाराएँ हो [को०]।

शतधार वन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शतधृति—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २. ब्रह्मा। ३. स्वर्ग।

शतधौत—वि० [सं०] सैकड़ो बार धोया हुआ। पूर्णत स्वच्छ [को०]।

शतनेत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतावर।

शतपति—संज्ञा पुं० [सं०] सौ मनुष्यो का मालिक या सरदार।

शतपत्र¹—वि० [सं०] १ सौ दलो या पत्तोवाला। २ सौ पखोवाला।

शतपत्र²—संज्ञा पुं० १ कमल। २ सेवती। शतपत्री। ३ मोर नामक पक्षी। ४ कठफोड़वा नामक पक्षी। ५ सारस पक्षी। ६ मैना। शारिका। ७ बृहस्पति। ८ तोता या तोते की जाति का एक पक्षी (को०)।

शतपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कठफोड़वा नाम का पक्षी। २ एक प्रकार का विषैला कीड़ा। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शतपत्रनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

शतपत्रभेदन्याय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'न्याय'—४ (६७)।

शतपत्रयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

शतपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूब। दूर्वा। २. नारी। स्त्री (को०)।

शतपत्रिक, शतपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का गुलाब। श्वेत गुलाब।

शतपत्री केसर—संज्ञा पुं० [सं०] गुलाब का जीरा। गुलाबकेसर।

शतपथ—वि० [सं०] १. असख्य मार्गोवाला। २ बहुत सी शाखाओं-वाला।

शतपथ ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण।

विशेष—इसके कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। इसकी माध्यंदिन और काण्व शाखाएँ मिलती हैं। इनमे से पहली की विशेष प्रतिष्ठा है। एक प्रणाली के अनुसार इसमे ६८ प्रपाठक हैं, और दूसरी के अनुसार यह १४ काडो और १०० अध्यायो मे विभक्त है। सारे ब्राह्मणो मे से यह अधिक क्रमपूर्ण और रोचक है। इसमे अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यंत कर्मकाड का बडा ही विशद और सुदर वर्णन है।

शतपथिक—वि० [सं०] १ बहुत मे मतो का अनुगामी। २ शतपथ ब्राह्मण का जानने या पढनेवाला।

शतपद—वि० [सं०] सैकड़ो पैरोवाला [को०]।

शतपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कनखजूरा। गोजर। २ च्यूँटी।

शतपद चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे सौ कोष्ठोवाला एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से नक्षत्रो का ज्ञान सुगमतापूर्वक हो जाता है।

शतपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कनखजूरा। गोजर। २ सतावर। शतमूली। ३. सरसे की जाति का एक पौधा जिसके ऊपर कलगी के आकार के लाल फूल लगते हैं। जटाधर। ४. नीली कोयल नाम की लता।

शतपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ सफेद कमल। श्वेतकमल। २ सौ पखुड़ियो वाला कमल (को०)।

शतपरिवार—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक भेद।

शतपर्वा¹—संज्ञा पुं० [सं० शतपर्वन्] १ बाँस। वश। २ पौंडा। गन्ना। केतारा।

शतपर्वा²—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूर्वा घास। दूब। २ वच। ३ कुटकी। ४ सुगधिद्रव्य। ५ भार्गव की पत्नी का नाम। ६ कलवा। करमू का साग। ७ क्वार या आश्विन की पूर्णिमा। कोजागर पूर्णिमा (को०)।

शतपर्विका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूब। २ वच। ३ यव। जौ।

शतपर्वेश—संज्ञा पुं० [सं०] भार्गव या शुक्र ग्रह [को०]।

शतपाद्—वि० [सं०] सैकड़ो पैरवाला। जिसे सैकड़ा पैर हो [को०]।

शतपाद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शतपद'।

शतपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ कनखजूरा। गोजर।

शतपादी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतपादिका' [को०]।

शतपाल—संज्ञा पुं० [सं०] सौ गाँवो का अध्यक्ष या अधिकारी [को०]।

शतपुत्रिका, शतपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सतपुतिया। तरोई। २ सतावर। शतावरी।

शतपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. साठी धान्य। २ किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता सस्कृत कवि 'भारवि' का एक नाम। इनका शतलुपक और शतलुर नाम भी प्राप्त होता है (को०)।

शतपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोआ नाम का साग। २ सौफ। ३ गवेधुक।

शतपुष्पादल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौंफ का साग। शताह्वा।

शतपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतपुष्पा'।

शतपोद, शतपोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का वातजन्य भगदर।

विशेष—इसमे गुदा के समीप फोड़ा उत्पन्न होता है जिसके पकने पर बहुत से छेद हो जाते हैं और उनमे से मल, मूत्र, वीर्य निकलता है।

२. एक प्रकार का रोग जिसमे वात और रक्त के कुपित होने से लिंग पर अनेक छेद हो जाते हैं।

शतपोन—संज्ञा पुं० [सं०] चलनी। छलनी [को०]।

शतपोरक, शतपौर—संज्ञा पुं० [सं०] पौंढा। गन्ना।

शतप्रसूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतपुष्पा'।

शतप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] कनेर का वृक्ष। करवीर वृक्ष।

शतफल—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस।

शतफली—संज्ञा पुं० [सं० शतफलिन्] बाँस। शतफल [को०]।

शतबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

शतबलाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

शतबलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली। २. रामायण के अनुसार एक बंदर का नाम।

शतबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा। २ भागवत के अनुसार एक असुर का नाम। ३ बौद्धों के अनुसार मार के पुत्र का नाम।

शतभिष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शतभिषा'।

शतभिषा संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र।

विशेष—यह सौ तारों का समूह है और इसकी आकृति मंडलाकार है। इसके अधिष्ठाता देवता वरुण कहे गए हैं, और यह ऊर्ध्वमुख माना गया है। कहते हैं, जो बालक इस नक्षत्र में जन्म लेता है, वह साहसी, निष्ठुर, चतुर और अपने वैरी का नाश करनेवाला होता है।

शतभीरु—संज्ञा पुं० [सं०] मल्लिका। चमेली।

शतमख—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। शतक्रतु। २ उल्लू। कौशिक।

शतमन्यु'—वि० [सं०] १. क्रोधी। गुस्सावर। २ उत्साही।

शतमन्यु'—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २ उल्लू।

शतमयूख—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शतमल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] संखिया नामक विष।

शतमान—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण की कोई वस्तु जो तौल में सौ मान की हो। २ सोना या चाँदी तौलने के लिये सौ मान की तौल या बाट। ३. चाँदी का एक पल। ४ आढक नाम की प्राचीन काल की तौल जो प्रायः पौने चार सेर की होती थी। ५ रूपामाखी या तारमाक्षिक नाम की उपधातु।

शतमार्ज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अस्त्र आदि बनाता या उन्हें ठीक करता हो।

शतमुख'—वि० [सं०] जिसमें सैकड़ों मार्ग हों। सैकड़ों मुख या निकास रखनेवाला [को०]।

शतमुख'—क्रि० वि० [सं०] सौ खंडों या धाराओं में। अनेक ओर से। चारों ओर से। उ०—ताम्रपर्णी पीपल से, शतमुख झरते चचल स्वर्णिम निर्झर —ग्राम्या, पृ० ६३।

शतमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कूर्चिका। मार्जनी। झाड़ू [को०]।

शतमूर्धा—संज्ञा पुं० [सं० शतमूर्धन्] विमौट। बाँबी [को०]।

शतमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ी सतावर। २. बच। ३. नीली दूर्वा। नीली दूब।

शतमूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आखुपर्णी नाम की लता। २. बड़ी दंती। बँगरेंडा।

शतमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शतावरी नाम की ओषधि। २. तालमूली। मूसला। ३ बच।

शतयज्वा—संज्ञा पुं० [सं० शतयज्वन्] शतक्रतु। इंद्र [को०]।

शतयष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह हार जिसमें सौ लड़ हों।

शतयातु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

शतरंज—संज्ञा पुं० [फ़ा०, मि० सं० चतुरङ्ग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

विशेष—यह खेल दो आदमी खेलते हैं जिनमें से प्रत्येक के पास १६-१६ मुहरे होते हैं। इन सोलह मुहरों में एक बादशाह, एक वजीर, दो ऊँट, दो घोड़े, दो हाथी या किश्तियाँ तथा आठ प्यादे होते हैं। इनमें से प्रत्येक मुहरे का कुछ विशिष्ट चाल होती है, अर्थात् उसके चलने के कुछ विशिष्ट नियम होते हैं। उन्हीं नियमों के अनुसार विपक्षी के मुहरे मारे जाते हैं। जब बादशाह किसी ऐसे घर में पहुँच जाता है जहाँ से उसके चलने की जगह नहीं रहती, तब बाजी मात समझी जाती है। इसकी बिसात में आठ आठ खानों की आठ पंक्तियाँ होती हैं। विशेष दे० 'चतुरंग' शब्द।

शतरंजबाज—संज्ञा पुं० [फ़ा० शतरंज+बाज] शतरंज का खिलाड़ी। शातिर।

शतरंजबाजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शतरंज+बाजी] १ शतरंज खेलने का व्यसन। २. शतरंज खेलने का काम या भाव।

शतरंजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह दरी जो शतरंज की बिसात की तरह कई प्रकार के रंग बिरंगे सूतों से बनी हो। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. वह रोटी जो कई प्रकार के अनाजों को मिलाकर बनाई गई हो। मिस्सा रोटी। ४ वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शतरथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

शतरात्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो सौ रातों में समाप्त होता था।

शतरुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुँह माने जाते हैं। २ शैव दर्शन के अनुसार एक शक्ति जो आत्मा की उत्पादक कही गई है।

शतरुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिमालय की एक नदी का नाम।

शतरुद्रिय, शतरुद्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यज्ञ की हवि। २. यजुर्वेद का एक अंश जिसमें रुद्र के स्तोत्र हैं। ३. महाभारत में वर्णित शिव की एक स्तुति (को०)।

शतरूप—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शतरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी का नाम।

विशेष—इसी के गर्भ से स्वायंभुव मनु का उत्पत्ति हुई थी। पर विष्णुपुराण में लिखा है कि शतरूपा स्वायंभुव मनु की स्त्री थी, न कि माता।

शतर्च्ची—संज्ञा पुं० [सं० शतर्चिन्] ऋग्वेद के प्रथम मंडल के मंत्रद्रष्टा ऋषियों की उपाधि।

शतलुंपक—संज्ञा पुं० [सं० शतलुम्पक] भारवि का एक नाम

शतलुंप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शतलुंपक'।

शतलोचन¹—वि० [सं०] सौ नेत्रोंवाला।

शतलोचन²—संज्ञा पुं० १ स्कंद के एक गण या अनुचर का नाम। २ पुराणानुसार एक असुर का नाम। ३ महाभारत के अनुसार इंद्र का एक नाम (को०)।

शतवनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शतवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौ वर्ष। एक शताब्दी। २ वह जो सौ वर्ष पुराना हो। ३ वह जो सौ वर्ष तक टिक सके। सौ वर्ष तक रहनेवाला (को०)।

शतवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीली दूब। २ काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

शतवादन—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत से बाजों का एक साथ बजना।

शतवार—संज्ञा पुं० [सं०] एक कवच का नाम जो अथर्ववेद में है।

शतवार्षिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शतवार्षिकी] १ प्रति सौ वर्ष पर होनेवाला। २ सौ वर्ष तक रहने या होनेवाला।

शतवार्षिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २ वह उत्सव जो सौ वर्ष बीतने पर मनाया जाय (को०)।

शतवाही—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो मैके से बहुत सा धन साथ लेकर ससुराल आई हो।

शतविध—वि० [सं०] सौ या अनंत प्रकार का। उ०—शंकर, जय कृष्ण, राम, शतविध नामानुबंध, वाक्य है निराकार।—आराधना, पृ० ६७।

शतवीर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

शतवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेद दूब। सतावर। शतमूली। ३ मुनक्का। कपिलद्राक्षा। ४ सफेद मूसली। ५ किसमिश।

शतवृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे एक मुहूर्त का नाम।

शतवेधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शतवेधी—संज्ञा पुं० [सं० शतवेधिन्] १. अमलबेंत। २ चूका या चुक्रिका नामक साग।

शतश.—क्रि० वि० [सं० शतशस्] १ सैकड़ों। २ सौ बार। ३. वैविध्यपूर्ण। अनेकानेक। उ०—अविकंत बाँधता वह ध्यान था। व्रजविभूषण हूं शतश बने।—प्रिय प्र०, पृ० १६३।

शतशत—वि० [सं० शत का द्वित्व प्रयोग] सैकड़ों। अनंत। उ०—जग के सर से सरस्वती शतशत रूपों की निकली क्षिप्र, मद, गति रकों की, भूपों की।—अपरा, पृ० १६४।

शतशलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छत्र।

शतशाख—वि० [सं०] १ सैकड़ा। २ शताधिक। जिसमें सैकड़ों शाखाएँ हों। ३. अनेक प्रकार का। वैविध्यपूर्ण (को०)।

शतशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। २ रामायण के अनुसार एक प्रकार का अभिमंत्रित अस्त्र।

शतशीर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वासुकी देवी का एक नाम।

शतशृंग—संज्ञा पुं० [सं० शतशृङ्ग] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विशेष—यह पर्वत महाभद्र के उत्तर में अवस्थित बतलाया गया है। अनुमान है कि यह वर्तमान मैसूर राज्य के एक पर्वत का प्राचीन नाम है।

शतसंख्य—संज्ञा पुं० [सं० शतसङ्ख्य] विष्णुपुराण के अनुसार दसवें मन्वंतर के एक देवता का नाम।

शतसहस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौ हजार की संख्या। एक लाख की संख्या। २ कई सौ की संख्या अर्थात् एक बड़ी संख्या (को०)।

शतसहस्रक—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शतसाहस्र—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शतसाहस्री] १ सौ हजार से युक्त या सौ हजार संख्यों। २ सौ हजार अर्थात् एक लाख मूल्य द्वारा क्रीत या प्राप्त (को०)।

शतसुख—संज्ञा पुं० [सं०] अंतहीन आनंद। अनंत सुख (को०)।

शतसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर। शतमूली।

शतह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक असुर का नाम।

शतह्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत्। बिजली। २ वज्र। ३. दक्ष की एक कन्या का नाम जो बहुपुत्र की स्त्री थी। ४ विराध राक्षस की माता का नाम।

शतांग¹—संज्ञा पुं० [सं० शताङ्ग] १ रथ। युद्ध का रथ। २ तिनिश। तिरिछ वृक्ष। ३. हरिवंश के अनुसार एक दानव का नाम (को०)।

शतांग²—वि० सौ अंगों या अवयवोंवाला।

शतांगुल—संज्ञा पुं० [सं० शताङ्गुल] १. ताल या ताड़ का वृक्ष। २ वह जो माप में सौ अंगुल हो।

शतांश—संज्ञा पुं० [सं०] सौ भागों में से एक भाग। १००वाँ हिस्सा।

शता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर।

शताकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक किन्नरी का नाम।

शताकारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्व की स्त्री का नाम।

शताक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक दानव का नाम।

शताक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। रात। २ शतपुष्पा नामक वनस्पति। सौंफ। ३. पार्वती। ४ दुर्गा।

शतानंद—संज्ञा पुं० [सं० शतानन्द] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ विष्णु का रथ। ४ कृष्ण। ५. गौतम मुनि। ६ राजा जनक के एक पुरोहित का नाम। उ०—शतानंद तब बाद प्रभु बैठ गुरु पहं जाय।—तुलसी (शब्द०)।

शतानंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० शतानन्दा] १. कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शतानक—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मसान। श्मशान। मरघट।

शतानन—संज्ञा पुं० [सं०] बेल। श्रीफल।

शतानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

शतानीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध पुरुष। बुड्ढा आदमी। २. एक मुनि का नाम जो व्यास के शिष्य थे। ३. श्वसुर। ससुर। ४.

पुराणानुसार चौथे युग में चंद्रवंश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ५ भागवत के अनुसार सुदास राजा का पुत्र। ६. महाभारत के अनुसार नकुल के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। एक असुर का नाम। ८ सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्द¹—वि० [सं०] सौ वर्षवाला।

शताब्द²—संज्ञा पुं० सौ वर्ष। शताब्दी। सदी।

शताब्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौ वर्षों का समय। २ किसी संवत् में सैंकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय। जैसे,—ईसवी पाँचवी शताब्दी अर्थात् ई० सन् ४०१ से ५०० तक का समय।

शतामघ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का एक नाम।

शतायु—संज्ञा पुं० [सं० शतायुस्] १ वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो। सौ वर्षों तक जीवित रहनेवाला। २ महाभारत के अनुसार पुरुरवा के एक पुत्र का नाम। ३ विष्णुपुराण के अनुसार उशना के एक पुत्र का नाम।

शतायुध—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोंवाला।

शतायुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक किन्नरी का नाम।

शतार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वज्र। २ सुदर्शन चक्र।

शतारु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कोढ।

विशेष—इस रोग में खाल पर लाल, काली और दाहयुक्त फुंसियाँ हो जाती हैं।

शतारुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतारु'।

शतावधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

विशेष—कुछ मेधावी लोग ऐसे होते हैं जो एक साथ बहुत से काम करने का अभ्यास करते हैं। जैसे,—एक आदमी रह रहकर कुछ संख्या या अंकों का नाम लेता है। दूसरा आदमी रह रहकर घड़ियाल बजाता है। तीसरा आदमी किसी ऐसी भाषा के वाक्य के शब्द बोलता है जिससे शतावधान करनेवाला मनुष्य अपरिचित होता है। एक आदमी पूर्ति के लिये कोई समस्या देता है। एक ओर शतरंज का खेल होता रहता है। शतावधान का यह कर्तव्य होता है कि वह संख्याओं और अपरिचित भाषा के वाक्य के शब्द याद रखे, समस्या की पूर्ति करे और शतरंज खेलता चले, और इसी प्रकार और जितने काम होते हों, उन सबमें संमिलित, और अंत में सबका ठीक ठीक उत्तर दे और सब काम ठीक ठीक पूरे उतारे।

२. शतावधान का काम।

शतावधानी¹—संज्ञा पुं० [सं० शतावधानिन्] दे० 'शतावधान'।

शतावधानी²—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावधान] शतावधान का काम।

शतावर—संज्ञा पुं० [सं० शतावरी] शतावर नाम की ओषधि। सफेद मूसली।

शतावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतमूली। सतावर। सफेद मूसली। २. कचूर। शटी। ३. इंद्र की भार्या, इंद्राणी।

शतावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. महादेव। ३. हरिवंश के अनुसार एक पवित्र वन का नाम।

शतावर्त्ती—संज्ञा पुं० [सं० शतावर्त्तिन्] विष्णु।

शताशिन—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र।

शताह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २. सोआ। मधुरिका। ३. सतावर।

शताह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ। २. सतावर। ३. अजमोदा। ४ एक प्राचीन नदी का नाम। ५. एक तीर्थ का नाम।

शतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शतिकी] १. सौ संबंधी। सौ का। २. सौ में क्रीत (को०)। ३ जिसमें या जिसके पास सौ हों। सौ वाला (को०)। ४ सौ के बदले में परिवर्तित हुआ या प्राप्त (को०)। ५ (राशि) जिसपर प्रतिशत ब्याज या कर निर्धारित हो (को०)। ६. सौ या सौ की प्राप्ति का द्योतक (को०)।

शती¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शतिन्] सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे,—दुर्गासप्तशती। २. दे० 'शताब्दी'।

शती²—वि० १. सौ गुना। शतगुणित। २. संख्यातीत। असंख्य (को०)।

शती³—संज्ञा पुं० वह जो सौ का स्वामी हो। सौ का स्वामी (को०)।

शतेर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। २ घाव। जख्म। ३. हिंसा।

शतोदर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रामायण के अनुसार एक अस्त्र का नाम।

शतोदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शतौदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ में होनेवाला एक प्रकार का कृत्य।

शत्य—वि० [सं०] दे० 'शतिक' (को०)।

शत्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ गज। हाथी। २. बल। ताकत। ३ एक राजर्षि का नाम।

शत्रुंजय—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुञ्जय] १. काठियावाड़ प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत जो विमलाद्रि भी कहलाता है। यह जैनियों का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। गिरनार। २. रामायण के अनुसार एक नाग (हाथी) का नाम। ३. परमेश्वर।

शत्रुंजय—वि० शत्रुओं को जीतनेवाला।

शत्रुंतप—वि० [सं० शत्रुन्तप] शत्रुओं को परास्त करने नष्ट करनेवाला (को०)।

शत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके साथ भारी विरोध या वैमनस्य हो। रिपु। अरि। दुश्मन। २. एक असुर का नाम। ३ नागदवन या मारछोबा नाम का वनस्पति।

शत्रुकंटक—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुकण्टक] पुंगीफल। सुपारी।

शत्रुकंटका—संज्ञा स्त्री० [सं० शत्रुकण्टका] सुपारी।

शत्रुक—संज्ञा पुं० [सं०] अरि। रिपु। शत्रु (को०)।

शत्रुकर्षण—वि० [सं०] दे० 'शत्रुदमन' (को०)।

शत्रुकुल—संज्ञा पुं० [सं०] वैरी का घर। शत्रु का निवासस्थान (को०)।

शत्रुगृह—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में लग्न से छठा स्थान (को०)।

शत्रुघात—वि० [सं०] शत्रुघाती। शत्रुहंता (को०)।

शत्रुघाती[१]—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुघातिन्] राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक पुत्र।

शत्रुघाती[२]—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुघ्न[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनका भरत के साथ वैसा ही प्रेम था जैसा लक्ष्मण का राम के साथ। २ श्वफल्क का एक पुत्र। ३ देवश्रवा के एक पुत्र का नाम।

शत्रुघ्न[२]—वि० शत्रु को मारनेवाला। अरि को नष्ट करनेवाला।

शत्रुघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथियार।

शत्रुजित्[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ ऋतुध्वज या कुवलयाश्व के पिता का नाम।

शत्रुजित्[२]—वि० शत्रु को जीतनेवाला।

शत्रुतपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ एक दैत्य का नाम। कहते हैं, यह रोग फैलाता है।

शत्रुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रु का भाव या धर्म। दुश्मनी। वैर भाव। क्रि० प्र०—करना।—दिखलाना।—रखना।—होना।

शत्रुताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शत्रुता+हिं० ई (प्रत्य०) या सं० शत्रु+ताति (प्रत्य०) ?] दे० 'शत्रुता'।

शत्रुतापन—वि० [सं०] शत्रुओं को जलानेवाला। शत्रुहंता।

शत्रुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु का भाव या धर्म। शत्रुता। दुश्मनी।

शत्रुदमन[१]—वि० [सं०] दुश्मनों को वश में करनेवाला।

शत्रुदमन[२]—संज्ञा पुं० दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] अमलबेंत।

शत्रुनिवर्हण—वि० [सं०] शत्रुओं का नाश करनेवाला (को०)।

शत्रुपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रु का दल या दिशा। २ दुश्मन। वैरी। विरोधी (को०)।

शत्रुभंग—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुभङ्ग] मूँज नामक तृण।

शत्रुभूमिज—संज्ञा पुं० [सं०] आँखों में लगाने का सुरमा।

शत्रुमर्दन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रुघ्न का एक नाम। २ कुवलयाश्व के पुत्र का नाम।

शत्रुमर्दन[२]—वि० शत्रुओं का मर्दन या नाश करनेवाला।

शत्रुलाव—वि० [सं०] शत्रुओं को मारनेवाला (को०)।

शत्रुविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु की चढाई या आक्रमण (को०)।

शत्रुविनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

शत्रुशाल(पु)—वि० [सं० शत्रु+शल्य] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला। उ०—नृप शत्रुशाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मान।—मतिराम (शब्द०)।

शत्रुसह, शत्रुसाह—वि० [सं०] शत्रु से लड़ने या भिड़नेवाला। शत्रु का सामना करनेवाला (को०)।

शत्रुसूदन—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुसेवी—वि० [सं० शत्रुसेविन्] शत्रु राजा की सेवा करनेवाला (को०)।

शत्रुहंता—वि० [सं० शत्रुहन्तृ] शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुहत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रु का वध या हनन। दुश्मन को मार डालना (को०)।

शत्रुहा[१]—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुहन्] दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुहा[२]—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि। रात।

शद—संज्ञा पुं० [सं०] १. फल मूलादि। २ कर। महसूल। लगान। ३ तरकारी।

शदक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अनाज जिसकी भूसी न निकाली गई हो।

शदीद—वि० [अ०] बहुत ज्यादह। जोर का। भारी। सख्त। जैसे,—उसको चोट शदीद है।

शदेवी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सहदेवी'।

शद्(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० शब्द, प्रा० सद्द, तुल० अ० शद, शद्] आवाज ध्वनि। शब्द। उ०—सम्मुख सारस शद्। आह जीवनों फलमद्।—पृ० रासो०, पृ० ५८।

शद्[२]—संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी अक्षर को दुहराकर या दो बार पढना। दृढ करना। मजबूत करना। २ स्वर का ऊँचा करना। आवाज पर जोर देना। ३ स्वर का आरोहावरोह या उतार चढाव (को०)।

यौ०—शद् व मद, शद्दोमद=(१) धूमधाम। (२) जोर शोर। तेजी।

शद्दाद—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह व्यक्ति जो बहुत अत्याचारी हो। २ एक प्राचीन शक्तिशाली सम्राट् जिसने ईश्वरत्व का दावा किया और खुद को ईश्वर कहलवाता था। इसने एक कृत्रिम स्वर्ग भी बनवाया था परंतु उसमें प्रवेश करते समय घोडे से गिरकर इसकी मृत्यु हो गई (को०)।

शद्रि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ हाथी। ३. अर्जुन का का एक नाम (को०)।

शद्रि[२]—संज्ञा स्त्री० १ खंड। टुकडा। २ बिजली। दामिनी। तडित। सौदामिनी। ३. घनीभूत शकरा। जमाई हुई चीनी। मिस्री। खंडमोदक (को०)।

शद्रु[१]—वि० [सं०] १ गिरानेवाला। नष्ट करनेवाला। पतन करनेवाला। २ जानेवाला। चलनेवाला। गतिशील (को०)।

शद्रु[२]—संज्ञा पुं० विष्णु।

शद्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शांति। २ चुप्पी। खामोशी। मौनता।

शन[२]—संज्ञा पुं० [सं० शण] दे० 'सन' (पौधा)।

शनई(पु)—अव्य० [सं० शनैः] दे० 'शनैः'।

शनई शनई—क्रि० वि० [स० शनैः शनैः] शनैः शनैः । धीरे धीरे । उ०—शनई शनई ताहि चढावै । चक्कर चक्कर मे पहुँचावै । —अष्टाग योग, पृ० ७६ ।

शनक—सज्ञा पु० [स०] हरिवश के अनुसार शबर के एक पुत्र का नाम ।

शनकावलि—सज्ञा स्त्री० [स०] गजपीपल ।

शनपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] कटुकी नाम की ओषधि ।

शनपुष्पी सज्ञा स्त्री० [स०] वन सनई ।

शनवा—वि० [फा०] श्रोता । सुननेवाला [को०] ।

शनवाई—सज्ञा स्त्री० [फा० शनवा + ई] सुनवाई [को०] ।

शनहुली सज्ञा स्त्री० [स० शणपुष्पी] १. दे० 'शनपुष्पी' २ अरहर ।

शनाख्त—सज्ञा स्त्री० [फा० शनाख्त] पहचान । परख । दे० 'शिनाख्त' । उ०—जो इनको आदमी की ही शनाख्त होती तो नुक्स क्या था ।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ११८ ।

क्रि० प्र०—करना— पहचानना । परखना ।

शनावर—वि० [फा० शनावर, शिनावर] तैराक । तैरनेवाला [को०] ।

शनावर—सज्ञा स्त्री० [फा० शनावरी, शिनावरी] तैराकी । तैरने का काम ।

शनास—वि० [फा० (प्रत्य०)] पहचाननेवाला । भले बुरे का विवेक करनेवाला । पारखी ।

विशेष—यह समास वा शब्द के अत में आता है जैसे—मर्दुमशनास, हकशनास । उ०—शिकायत किसी ने कहा शाह पास, है यहाँ एक मेहराँ इसम हकशनास ।—दक्खिनी०, पृ० ३०० ।

शनासा—वि० [फा०] १ पहचाननेवाला । जानकार । २ परिचित । वाकिफ [को०] ।

शनासाई—सज्ञा स्त्री० [फा०] जान पहचान । परिचय [को०] ।

शनि—सज्ञा पुं० [स०] १ सौर जगत् के नौ ग्रहो मे से सातवाँ ग्रह । शनैश्चर ।

विशेष—सूर्य से इस ग्रह का अतर ८८३,०००,००० मील अथवा पृथ्वी के अंतर से ९½ गुना है । इसका व्यास ७५८०० मील का है । प्रति सेकेंड ६ मील की चाल से सूर्य की परिक्रमा मे इसको २९ वर्ष और १६७ दिन अर्थात् कुल १०७५९ दिन लगते हैं । इसका ताप १५° सें० है । बृहस्पति को छोडकर यह सबसे बडा ग्रह है पृथ्वी से इसका व्यास ९ गुना, विस्तार ६९७ गुना और मान ९३ गुना है । इसके साथ नौ उपग्रह या चद्रमा है । जिनमे एक उपग्रह 'टाइटेन' बुध ग्रह से भी बडा है । बृहस्पति से छोटा होने पर भी यह सब ग्रहो से अधिक चमकदार है, जिससे इसका आकार सबसे बडा प्रतीत होता है । यह ३७८ दिन में एक बार अपनी धुरी पर घूमता है । यह ग्रह विचित्र आकार का है । इसके बाहर चारो ओर कम से कम ३ एककेंद्रीय बहुत बडे वलय हैं, और उस बाह्य वलय से इसके पिंड की दूरी ५,६०० मील है । इसके बाह्य वलय की चौडाई ११,२०० मील है । उस वलय का व्यास १,७२,८०० मील और मोटाई सौ मील से कुछ कम है । इस ग्रह पर पृथ्वी जैसा जीवन सभव नही है ।

फलित ज्योतिष के अनुसार यह ग्रह काले रग का, शूद्र वर्ण और सूर्यमुख है तथा इसका वाहन गृध्र है । यह सौराष्ट्र देश का स्वामी, नपुसक (मदगामी) और तमोगुण से युक्त तथा कषाय रस का अधिपति है । यह मकर और कुभराशि तथा नीलकात मणि (नीलम) का भी अधिपति है । यह चतुर्भुज है और इसके हाथो मे बाण, शूल, धनुष और भल्ल है । इसके अधिपति देवता यम और प्रत्यधिदेवता प्रजापति है । इसका परिमाण चार अगुल है । पुराणो के अनुसार सूर्य की स्त्री छाया के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी । अपनी स्त्री के शाप मे इसकी दृष्टि क्रूर हो गई और पार्वती के शाप के कारण यह खंज हो गया । इसे कश्यप मुनि की सतान भी मानते है । फलित के अनुसार शनि का फल इस प्रकार है यह पापग्रह और अशुभ फल का देनेवाला है, परतु राशि और स्थानविशेष मे शुभ फल भी प्रदान करता है । शनि और मगल दोनो ग्रह स्थानविशेष पर एक साथ होने से राजयोग कारक होते है । यह भी माना जाता है कि लोगो पर जो भारी विपत्तियाँ आती है, वे प्राय इसी की कुदृष्टि के कारण होती हैं । इसका फल साढे सात दिन, साढे सात मास या साढे सात वर्ष तक रहता है ।

पर्या०—सौरि । शनिश्चर । नीलवासा । मद । छायात्मज । पातगि । ग्रहनायक । छायासुत । भास्करी । नीलाबर । आर । क्रोड । वक्र । कोल । सप्ताशु । पगु । काल । सूर्यपुत्र । असित ।

२ शिव का एक नाम (को०) । ३. दुर्भाग्य । अभाग्य । बदकिस्मती । ४ दे० 'शनिवार' ।

शनिचक्र—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष मे मनुष्य के शरीर के आकार का एक प्रकार का चक्र ।

विशेष—इसमे शनिभोग्य नक्षत्र से आरंभ करके चक्ररूपी मनुष्य के भिन्न भिन्न अगो मे २७ नक्षत्रो की स्थापना करके शुभाशुभ फल जाने जाते है ।

शनिज—सज्ञा पु० [स०] काली मिर्च ।

शनिप्रदोष—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रदोष (पर्व) जो शनिवार के दिन किसी मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी पडने पर होता है । इस दिन व्रत रहते हैं और शिव का पूजन किया जाता है ।

शनिप्रसू—सज्ञा स्त्री० [स०] शनि की माता छाया जो सूर्य की पत्नी कही गई है ।

शनिप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] नीलमणि । नीलकात मणि । नीलम ।

शनिरुह—सज्ञा पु० [स०] १ शनिग्रह का वाहन । २ भैसा । महिष ।

शनिरुहा—सज्ञा स्त्री० [स०] भैंस । महिषी ।

शनिर्भाव—सज्ञा पुं० [स०] १ मदता । शिथिलता । २ क्रमबद्धता । क्रमिकता [को०] ।

शनिवार—सज्ञा पुं० [स०] वह वार जो रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद पडता है ।

शनिश्चर—सज्ञा पु० [स० शनिश्चर] दे० 'शनि' ।

शनैः—अव्य० [स०] १ धीरे । आहिस्ता । होले । २. उत्तरोत्तर । ३. क्रमश । क्रमानुसार (को०) । ४. धीमे धीमे । मृदुता या मुला-

यमियत से (को०)। ५ शिथिलता से (को०)। ६ स्वतत्र या स्वच्छद रूप से (को०)।

यौ०—शनैः शनैः = धीरे धीरे। आहिस्ते आहिस्ते।

शनै[२]—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'शनिवार'।

शनैःप्रमेह—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

विशेष—इस प्रमेह मे रोगी को धीरे धीरे, थमकर और बहुत पतली धार में थोडा थोडा पेशाब आता है।

शनैर्मेह—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शनैःप्रमेह'।

शनैर्मेही—सज्ञा पु० [स० शनैर्मेहिन्] वह रोगी जिसे शनैःप्रमेह का रोग हो।

शनैश्चर[१]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शनि'।

शनैश्चर[२]—वि० धीरे धीरे गमन करनेवाला (को०)।

शन्न—वि० [सं०] १ पतित। गिरा हुआ। २ परिक्षीण। क्षीण। ३ मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ (को०)।

शनाह—सज्ञा पुं० [फा०] एक डोगी मे बँधी हुई दो तुवियाँ अथवा मशक जिसके सहारे तैरना सीखते हैं (को०)।

शप्[१]—[सं०] पाणिनि द्वारा प्रयुक्त एक विकरण जो भ्वादि गण मे प्रयुक्त होता है। धातुओ के बाद और तिङन्त प्रत्ययो के पूर्व इसका प्रयोग होता है जिसका रूप 'अ' शेष रहता है। जैसे, $\sqrt{}$भू + शप् + ति = $\sqrt{}$भू + अ + ति = भवति।

शप्[२]—अव्य० [स०] स्वीकरणसूचक शब्द। स्वीकार (को०)।

शप[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ शाप। निर्भर्त्सना। २ शपथ। कसम (को०)।

शप[२]—सज्ञा स्त्री० [स० अनुध्व०] १ बेंत, छडी, चाबुक आदि के मारने की आवाज। २ कोई गाढा और तरल पदार्थ तेजी से सुडकते हुए निगलने की ध्वनि। ३ कुत्ते, बिल्ली आदि के द्वारा किसी वस्तु के चाटने की आवाज।

शप[३]—क्रि० वि० जल्दी से। झटपट। तुरत।

यौ०—शपशप, शप से, शपाशप = शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

शपथ—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कथन जिसके अनुसार कहनेवाला इस बात की प्रतिज्ञा करता है कि यदि मेरा कथन असत्य हो, मैंने अमुक काम किया हो, मैं अमुक काम करूँ या न करूँ इत्यादि, तो मुझपर अमुक देवता का शाप पडे अथवा मैं अमुक पाप का भागी होऊँ आदि। कसम। दिव्य। सौगध। उ०—दुर्वलता का ही चिह्नविशेष शपथ है।—साकेत, पृ० २२६।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लेना।

मुहा०—दे० 'कसम' शब्द के मुहा०।

२ दिव्य। विशेष दे० 'दिव्य'—२१। ३ अभिशाप। शाप (को०)। ४ प्रतिज्ञा या दृढ़तापूर्वक कोई काम करने या न करने आदि के सबध मे कथन। कौल। वचन।

यौ०—शपथपत्र = हलफनामा।

शपन—सज्ञा पुं० [स०] १ शपथ। कसम। २ गाली। कुवाच्य।

शपशप शपाशप—सज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] दे० 'शप[२]' का यौगिक।

शपित—वि० [स०] दे० 'शप्त[२]'।

शप्त[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ उलूक अथवा उलप नामक तृण। २ वह व्यक्ति जिसे शाप दिया गया हो।

शप्त[२]—वि० १ शापग्रस्त। अभिशप्त। २ भर्त्सित। जिसकी भर्त्सना की गई हो (को०)।

शफ—सज्ञा पुं० [स०] १ वृक्ष की जड। २ पशुओं का खुर। ३. नखी नामक गधद्रव्य।

शफक—सज्ञा स्त्री० [अ० शफ़क़] प्रातःकाल या सायकाल आकाश मे दिखाई पडनेवाली ललाई, विशेषत सन्ध्या के समय दिखाई पडनेवाली लालिमा जो बहुत ही मनोहर होती है। उ०—चढा शाम का बाम पर गर जो माह। शफक का नया रग लाई घटा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४६०।

मुहा०—शफक फूलना = प्रातःकाल या सध्या के समय आकाश मे लालिमा फैलना।

शफकत—सज्ञा स्त्री० [अ० शफ़क़त] १. कृपा। दया। मेहरबानी। २ प्यार। मुहब्बत। प्रेम। उ०—जो बात माने तो ऐन शफकत न माने तो ऐन हुस्ने खूबी।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५७।

क्रि० प्र०—दिखलाना।—रखना।

शफगोल—सज्ञा स्त्री० [हिं०] हिं० 'इसबगोल'।

शफतालू—सज्ञा पुं० [फा० शफ़तालू] एक प्रकार का बडा आडू जिसे सतालुक या सतालू भी कहते हैं। विशेष दे० 'सतालू'।

शफर—सज्ञा पुं० [सं०] पोठी या पोठिया नाम की मछली। उ०—भरत मिहरे शफरवारि समान।—पारेल, पृ० १७१।

शफराधिप—सज्ञा पुं० [स०] हिलसा मछली।

शफरी—सज्ञा सज्ञा [सं०] एक प्रकार की छोटी मछली। पोठी या पोठिया। उ०—शफरी, अरी, बता तू तडप रही क्यो निमग्न भी इस सर मे? जो रस निज गागर मे सो न रस गोरस नहीं स्वय सागर मे।—साकेत पृ० २७८।

शफरुक—सज्ञा पुं० [स०] १ सदूक। बक्स। २ पात्र। बरतन।

शफह—सज्ञा पुं० [अ० शफह्] ओष्ठ। ओठ। अधर (को०)।

शफा—सज्ञा स्त्री० [अ० शफ़ा] शरीर का स्वस्थ होना। नीरोगता। आरोग्यता। तदुरुस्ती। उ०—जो पीएगा दो दिन की बीमारी मे शफा पाएगा।—फिजरे०, पृ० ७६।

क्रि० प्र०—(किसी को) शफा देना = किसी का रोग दूर करना। अच्छा करना। आराम देना। नीरोग करना।

शफाखाना—सज्ञा पुं० [अ० शफ़ा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ रोगियो की चिकित्सा होती है। चिकित्सालय। अस्पताल।

शफाअत—सज्ञा स्त्री० [अ० शफ़ाअत] सिफारिश (को०)।

शफीक—वि० [अ० शफीक़] १ कृपालु। दयालु। मित्र। दोस्त (को०)।

शफोरु[१]—वि० [सं०] जिसकी जाँघ गाय के खुर के समान हो।

शफोरु[२]—सज्ञा स्त्री० १ गाय के खुर के समान जाघवाली स्त्री। २ वह स्त्री जिसकी जाघ पर खुर का चिह्न हो (को०)।

शफ्फ़ाफ—वि० [अ० शफ्फाफ] १. निर्मल। शुद्ध। २ उज्वल। चमकदार। ३ पारदर्शी [को०]।

शब—संज्ञा स्त्री० [फा०] रात। रात्रि। रजनी। निशा। उ०—मौका पाकर एक शब उसको सोते हुए गिरफ्तार कर लाना।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५२१।

शबकोर—वि० [फा०] जिसे रात मे दिखाई न दे। रतौंधी का रोगी [को०]।

शबकोरी—संज्ञा पु० [फा०] रतौंधी [को०]।

शबखून—संज्ञा पु० [फा० शबखून] सेना का रात के अँधेरे मे अचानक हमला। वह आक्रमण जो रात को असावधान शत्रु पर किया जाय [को०]।

शबख्वाँ—संज्ञा पु० [फा० शबख्वाँ] बुलबुल नाम का पक्षी [को०]।

शबगर्द¹—वि० [फा०] रात को घूमने या पहरा देनेवाला [को०]।

शबगिर्द—संज्ञा पुं० [फा०] १ चद्रमा। २ पहरेदार। चौकीदार। ३ कोतवाल। ४ चोर [को०]।

शबगीर¹—१. वि० [फा०] रात को जागनेवाला। उ०—सो आशक के नालए शबगीर मे देखो।—कबीर म०, पृ० ४६७।

शबगीर²—संज्ञा पु० १ पिछली रात की यात्रा। २. झींगुर।

शबचिराग—संज्ञा पु० [फा० शबचिराग] १ एक बहुमूल्य रत्न जो रात मे दीप सा चमकता है। २. रात मे चमकनेवाला या प्रकाशित होनेवाला, चाँद [को०]।

शबताब—संज्ञा पुं० [फा०] १. रात का प्रकाश। २ खद्योत। जुगुनू। ३. दीपक। ४ चद्रमा। ५ वह जो रात मे चमकता हो। ६. काली बिल्ली।

शबनम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ओस। तुषार। २. एक प्रकार का सफेद रग का बहुत ही बारीक कपडा।

मुहा०—शबनम का रोना = ओस गिरना।

शबनमी¹—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चारपाई के ऊपर का वह ढाँचा जिसपर रात के समय ओस से बचने के लिये मसहरी टाँगी जाती है। मसहरी। छपरखट। २. दे० 'शबनम'।

शबनमी²—वि० [फा०] शबनम या ओस जैसी। उ०—पुलकित पलकों की प्रिय पाँखुरियो पर, लो सहसा ढलक गई शबनमी नजर, अँगडाई ली वह चले पवन, गूँजे भँवरो के गान।—ठडा०, पृ० ३२।

शबबरात—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानो के आठवें मास की चौदहवी अथवा पद्रहवी रात।

विशेष—इस रात को मुसलमानो के विश्वास के अनुसार फरिश्ते परमात्मा की आज्ञा से भोजन बाँटते और आयु का हिसाब लगाते हैं। इस दिन मुसलमान अपने मृत पूर्वजो के उद्देश्य से प्रार्थना करते, हलुआ पूरी बाँटते, रोशनी करते और आतिशबाजी छोडते है।

शबबाश—वि० [फा०] १ रात मे टिकने या निवास करनेवाला। २. सहवास करनेवाला [को०]।

शबबेदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० शबबेदार] रतजगा [को०]।

शबमेराज—संज्ञा स्त्री० [फा० शब + अ० मेराज] वह रात जब हजरत पैगबर साहब ने अर्श पर जाकर अल्लाह का साक्षात्कार किया था। यह समय अरबी रजब महीने की २६ और २७ तारीखो के बीच पडता है [को०]।

शबरंग—संज्ञा पु० [फा०] वह जो रात के रंगवाला अर्थात् काला हो। सियाह। काला। २ काला घोडा [को०]।

शबर¹—संज्ञा पुं० [स०] १ दक्षिण मे रहनेवाली एक जंगली या पहाडी जाति। २ जगली। वहशी। ३ शूद्र तथा भील से उत्पन्न सतान। ४. लोध नामक वृक्ष। ५ शिव। ६ हस्त। हाथ (को०)। ७ मीमांसा के एक प्रसिद्ध आचार्य (को०)। ८ जल (को०)।

शबर²—वि० १ चितकबरा। २ रग बिरगा।

शबरकंद—संज्ञा पुं० [स० शबरकन्द] एक प्रकार का मीठा कंद।

शबरक—संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शबरिका] जगली। वहशी।

शबरचंदन—संज्ञा पु० [स० शबर + चदन] एक प्रकार का चदन जो लाल और सफेद दोनो मिले हुए रगो का होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह शीतल तथा कडवा, और वात, पित्त कफ, विस्फोटक, खुजली, कुष्ठ, मोहादि को नष्ट करनेवाला माना जाता है।

शबरजंबु—संज्ञा पु० [स० शबरजम्बु] एक प्राचीन नगर का नाम।

शबरबल—संज्ञा पु० [स०] पर्वतीय जातियो की सेना [को०]।

शबरलोध्र—संज्ञा पु० [स०] सफेद लोध।

शबरालय, शबरावास—संज्ञा पु० [स०] शबर लोगो का निवास। पक्कण [को०]।

शबरी—संज्ञा स्त्री० [स०] १. शबर जाति की स्त्री। २ रामायण मे वर्णित शबर या किरात जाति की एक रामभक्त स्त्री [को०]।

शबल¹—वि० [स०] १. चितकबरा। २ रग बिरंगा। चित्र विचित्र। २ अनेक हिस्सा मे विभक्त (को०)। ३ किसी की अनुकृति पर बना हुआ। अनुकृत (को०)। ३. घालमेल किया हुआ। मिश्रित (को०)। ४ विकृताकार। विकृत। विवर्ण (को०)। ५. श्रांत। दु खित। पीडित (को०)।

शबल²—संज्ञा पु० १ एक नाग का नाम। २. बौद्धो का एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। ३ अगिया घास। गवतृण। ४ चित्रक। चितउर वृक्ष। ५ अनेक प्रकार का रग। विविध वर्ण (को०)। ६ जल (को०)।

शबलक—वि० [स०] १ चितकबरा। २ रग बिरगा। चित्र विचित्र।

शबलचेतन—संज्ञा पुं० [स०] वह जो किसी प्रकार की पीडा या कष्ट आदि के कारण बहुत घबराया हुआ हो। जो संतप्त या व्यथित होने के कारण अन्यमनस्क हो।

शवलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ शवल का भाव या धर्म। २. रग-बिरगापन। ३ मिलावट।

शवलहृदय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शवलचेतन' [को०]।

शवला संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चितकबरी गौ। २. कामधेनु।

शवलाक्ष संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम।

शवलाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. दक्ष के एक पुत्र का नाम।

शवलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

शवलित—वि० [सं०] चितकबरा। रग बिरगा।

शवलिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शवलिमन्] रग बिरगा या शवल होने की क्रिया या भाव [को०]।

शवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामधेनु। २ चितकबरी गाय।

शबान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो ढोर चराता हो। चरवाहा [को०]।

शबाना—वि० [फ़ा० शब नह्] १ रात का। रातवाला। २ रात्रि संबंधी। ३ बासी। पर्युषित [को०]।

यौ०—शबाना रोज = अहर्निश। रात दिन।

शबाब संज्ञा पुं० [अ०] १ यौवन काल। जवानी। २. किसी वस्तु की वह मध्य की अवस्था जिसमे वह बहुत अच्छा या सुंदर जान पड़े। ३ बहुत अधिक सौंदर्य।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—जाना।

मुहा०—शबाब फट पड़ना = जवानी का पूरी तरह खिल उठना या जोर पर होना।

शबाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समानता। अनुरूपता। २ सूरत। शक्ल। आकृति।

शबीना—वि० [फ़ा० शबीनह्] १ रात संबंधी। रात का। २ जो ताजा न हो। बासी। दे० 'शबाना' [को०]।

शबीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत शक्ल के ठीक अनुरूप बना हो।

क्रि० प्र०—खीचना।—बनाना।

२ समानता। अनुरूपता।

शबेइंतजार—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शबे इंतज़ार] प्रतीक्षा की रात [को०]।

शबेअौवल—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुहागरात [को०]।

शबेकद्र—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रमजान की २७ वी रात जो अति पवित्र मानी जाती है [को०]।

शबेजवानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] युवावस्था का उन्माद [को०]।

शबेतार, शबेतारीक, शबेदैजूर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तमिस्रा। कुहू-निशा। अँधेरी रात [को०]।

शबेबरात संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'शब बरात'।

शबेमहताब, शबेमाह—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ज्योत्स्ना या राकायुक्त रात्रि। चाँदनी रात [को०]।

शबेवस्ल—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नायिका और नायक के मिलने की रात।

शबेहिज्र—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वियोगरात्रि। जुदाई की रात [को०]।

शबेशहादत—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मुहर्रम की दसवीं रात जिसके बीत जाने पर इमाम हुसैन मारे गए [को०]।

शबोरोज—अव्य० [फ़ा० शब = (रात) + रोज़ (= दिन)] १ अहर्निश। रातदिन। २ हर समय। हरदम। ३ निरंतर। लगातार।

शब्द संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु में होनेवाला वह कंप जो किसी पदार्थ पर आघात करने से अथवा स्वयं वायु पर आघात पड़ने से उत्पन्न होकर कान या श्रवणेंद्रिय तक पहुँचता और उसमें एक विशेष प्रकार का ज्ञान उत्पन्न करता है। ध्वनि। आवाज।

विशेष—प्राय सभी पदार्थों में, उनपर आघात आदि करके या उनमें जल्दी जल्दी गति उत्पन्न करके, शब्द उत्पन्न किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, मृदंग, ढोल, घंटा, घुंघरू, सितार, कलम, चाबी, जूता, [illegible] आदि। जब किसी पदार्थ पर दूसरा कोई पदार्थ आकर गिरता है अथवा किसी पदार्थ में बार-बार गति उत्पन्न की जाती है, तब वायु में एक प्रकार की लहर लगती है जो सब ओर कुछ दूर तक जाती है, और जहाँ कान या श्रवणेंद्रिय होती है, वहाँ वह उसे पार करके मस्तिष्क को उसकी सूचना देती है। वायु तो शब्द का वहन करता ही है, पर इसके अतिरिक्त और अनेक प्रकार की गैसें, जल तथा अनेक तरह के ठोस पदार्थ भी शब्द वहन करते हैं। पर इनमें से मुख्य वाहक वायु ही है। तो भी वायु की अपेक्षा जल में शब्द बहुत अधिक दूर तक जाता है। जिस स्थान में वायु बिलकुल नहीं होती, वहाँ शब्द का वहन भी किसी प्रकार नहीं हो सकता। वायु की अपेक्षा जल में शब्द की गति और भी अधिक होती है। शब्द धीमा या हलका भी होता है, और भारी या तेज भी। यदि वायु में कंप बहुत अधिक होता है तो शब्द भी तेज या ऊँचा होता है। यदि वायु या शब्द के वाहक दूसरे साधन का घनत्व कम हो, तो भी शब्द हलका या धीमा हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूरी भी शब्द को हलका या धीमा कर देती है। प्रकाश की भाँति शब्द का भी परावर्तन होता है। अर्थात् शब्द एक स्थान से उत्पन्न होकर किसी ओर जाता है, और मार्ग में अवरोध पाकर फिर पीछे की ओर लौट आता है। पहाड़ के नीचे या गुंबदों आदि में बोलने के समय शब्द की जो गूँज या प्रतिध्वनि होती है, वह इसी परावर्तन के कारण होती है। यदि वातावरण का तापमान ६२° हो तो शब्द की गति प्रति सेकंड ११२५ फुट या प्रति मिनट प्राय १२ मील होती है। यदि प्राय एक ही तरह के कंपन से शब्द लगातार रह रहकर हो, तो उससे 'शोर' पैदा होता है।

शब्द के दो मुख्य भेद होते हैं,—वर्णात्मक और ध्वन्यात्मक। ध्वन्यात्मक शब्द वह है जो कंठ और तालु आदि की सहायता से उत्पन्न होता है। इसके भी दो भेद हैं—व्यक्त और अव्यक्त। जो शब्द सुनने में स्पष्ट हो और जिसका कोई अर्थ हो वह व्यक्त कहलाता है, (दे० 'शब्द'—२) और जो स्पष्ट सुनाई न दे और जिसका कोई अर्थ न हो, वह अव्यक्त कहलाता है। जैसे, हाँ,

के, खो। वर्णात्मक शब्द के अतिरिक्त और जितने प्रकार के शब्द होते हैं, वे ध्वन्यात्मक कहलाते हैं। जैसे, मृदग या घटे आदि से अथवा जोर से हवा चलने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। 'मीमासाकार' ने शब्द को नित्य और साख्यकार ने उसे आकाश का गुण माना है। न्याय आदि ने शब्द को आकाश का गुण माना है। भारतीय वैयाकरणो ने उसे द्रव्य माना है। व्याकरण दर्शन मे शब्द को नित्य, कूटस्थ—यहाँ तक कि शब्दब्रह्म भी कहा है जो स्फोटात्मक है। विशेष दे० 'ध्वनि'।

पर्या०—निनाद। रव। राव। निर्घोष। नाद। घोष। निनद। ध्वनि। ध्वान। स्वन। स्वान। निर्ह्राद। आरव। आराव। निस्वन। निस्वान। सरव। सराव। विराव।

२ वह स्वतंत्र, व्यक्त और सार्थक ध्वनि जो एक या अधिक वर्णों के सयोग से, कठ और तालु आदि के द्वारा, उत्पन्न हो और जिससे सुननेवाले को किसी पदार्थ, कार्य या भाव आदि का बोध हो। लफ्ज। जैसे, मैं, क्या, सोना, घोडा, मोटाई, काला आदि। ३ अमृतोपनिषद् के अनुसार 'ओऽम्' जो परमात्मा का मुख्य नाम है। ४ किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद या गीत आदि। जैसे, गुरु नानक के शब्द, कबीर के शब्द। ५ नाम। सज्ञा (को०)। ६. व्याकरण (को०)। ७. ख्यात। मशहूर (को०)। ८ केवल नाम। शुद्ध नाम। जैसे, शब्दपति मे (को०)।

शब्द अतीत—सज्ञा पु० [स० शब्दातीत] जिसका वर्णन शब्दो के द्वारा न हो सके। शब्दातीत। उ०—शब्द अतीत शब्द सो अपना बूझै बिरला कोई।—कबीर श०, भा० १, पृ० ५४।

शब्दकार—वि० [स०] १ वह जो सार्थक शब्दो को किसी छद के लय ताल पर क्रमबद्ध करता हो। गीतकार या कवि। उ०—ह्रस्व दीर्घ को घट बढ के कारण पूववर्ती गर्वए शब्दकारो पर जो लाछन लगता है, उससे भी बचने का प्रयत्न किया है।—गीतिका (भू०), पृ० ६। २. वह जो शब्द या ध्वनि उत्पन्न करे। शब्द करनेवाला।

शब्दकारी—वि० [स० शब्दकारिन्] शब्द करनेवाला (को०)।

शब्दकोश, शब्दकोष—सज्ञा पु० [स०] ऐसा ग्रथ जिसमे शब्दो की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पर्याय आदि का सनिवेश हो। अभिधान। लुगत। (अ०) डिक्शनरी।

शब्दगत—वि० [स०] शब्द मे निहित या स्थित (को०)।

शब्दग्रह'—सज्ञा पु० [स०] १ कान, जिससे शब्द का ग्रहण होता है। २ एक प्रकार का काल्पनिक बाण।

शब्दग्रह'—वि० शब्द को ग्रहण करनेवाला।

शब्दग्राम—सज्ञा पु० [स०] शब्दसमूह (को०)।

शब्दचातुर्य—सज्ञा पु० [स०] शब्दो के प्रयोग करने की चतुरता। बोल चाल की प्रवीणता। वाग्मिता।

शब्दचालि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दचित्र—सज्ञा पु० [स०] १. अनुप्रास नामक अलकार। २ एक शब्दालंकार जिसमे प्रयुक्त वर्णों का इस प्रकार से रखते हैं कि किसी न किसी वस्तु का रूप बन जाता है। ३. काव्य के तीन भेदो मे अतिम श्रेणी के दो उपभेदो मे से एक जिसे मम्मट ने अवर या अधम माना है। इस प्रकार के काव्य मे सौंदर्य उन शब्दो या अक्षरो के बारबार प्रयोग करने मे होता है और वे श्रुतिमधुर होते है। ४ शब्दो के माध्यम से किसी स्थान, व्यक्ति, घटना आदि का ऐसा वर्णन प्रस्तुत करना जिससे उसका रूप-चित्र भासित हो उठे। (अ० स्केच)।

शब्दचोर—सज्ञा पु० [स०] दूसरो की कविता मे प्रयुक्त विशिष्टता-मूलक शब्दो या पदो को अपनी कविता मे रख लनेवाला कवि या रचनाकार। राजशेखर, क्षेमेंद्र आदि ने अपने ग्रथ मे इस प्रकार के कवियो की कई श्रेणियाँ निर्धारित की हैं (को०)।

शब्दता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शब्दत्व'।

शब्दत्व—सज्ञा पुं० [स०] शब्द का भाव या धर्म। शब्दता।

शब्दन'—वि० [स०] शब्द या ध्वनि करनेवाला। ध्वननशील।

शब्दन'—सज्ञा पु० शब्द या ध्वनि करना। २ ध्वनि। ३ शब्द। ४. नाम लेना। ५ पुकारना। बुलाना। आह्वान (को०)।

शब्दनृत्य—सज्ञा पु० [ ] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दनेता—सज्ञा पु० [स० शब्दनेतृ] पाणिनि का एक नाम (को०)।

शब्दपति—सज्ञा पुं० [स०] नाम मात्र का नेता। वह नेता जिसके अनुयायी न हो। जिसमे शब्द के अलावा पति या राजा का कोई भाव न हो।

शब्दपाती—वि० [स० शब्दपातिन्] किसी प्रकार के शब्द या ध्वनि को सुनकर उसी के आधार पर दिशा और दूरी का अदाज करते हुए शब्द करनेवाले पर निशाना मारनेवाला। विशेष दे० 'शब्दवेधी' (को०)।

शब्दप्रमाण—सज्ञा पुं० [स०] वह प्रमाण जो किसी के केवल शब्दो या कथन के ही आधार पर हो। आप्त या विश्वासपात्र पुरुष की बात जो प्रमाणस्वरूप मानी जाती हो। विशेष दे० 'प्रमाण'। मौखिक प्रमाण।

शब्दप्राण—सज्ञा पुं० [सं०] शब्द के अर्थों का अनुसधान। शब्दार्थ की जिज्ञासा।

शब्दविरोध—सज्ञा पुं० [स०] वह विरोध जो वास्तविक या भाव मे न हो बल्कि केवल शब्दो मे जान पड़ता हो।

शब्दबोध—सज्ञा पु० [स०] शाब्दिक साक्ष्य द्वारा प्राप्त ज्ञान। वह ज्ञान जो जबानी गवाही से प्राप्त हो।

शब्दब्रह्म—सज्ञा पुं० [स०] १. वेद जो अपौरुषेय और ईश्वर का कहा हुआ माना जाता है। २. ब्रह्मज्ञान जो शब्दरूप हो (को०)। ३. शब्द का एक गुण जिसकी सज्ञा स्फोट है (को०)।

शब्दभेद—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण के अनुसार शब्द का वह विवेचन जो उनके कार्य, स्थिति और सबध आदि के आधार पर किया गया हो। इससे शब्द के सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, सबधसूचक, अव्यय, सयोजक, विस्मयादिबोधक आदि रूपो का ज्ञान होता है।

शब्दभेदी'—वि० [स० शब्दभेदिन्] दे० 'शब्दवेधी'।

शब्दभेदी[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम (को०)। २ एक प्रकार का बाण (को०)। ३ गुदा। मलद्वार।

शब्दमहेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

विशेष—कहते हैं, पाणिनि को व्याकरण का आदेश शिव ने ही किया था। आरंभिक चौदह सूत्रों को महेश्वर सूत्र (इति माहेश्वराणि अर्थात् महेश्वरप्रणीत सूत्र) कहा गया है। इसी से शिव का यह नाम पड़ा।

शब्दमाधुर्य—संज्ञा पुं० [सं० शब्द + माधुर्य] शब्द की मधुरता। शब्दों की विशेष योजना से निष्पन्न सौंदर्य या माधुर्य। उ०—रूप-सौंदर्य से मध्यम कोटि की वस्तु नादसौंदर्य या शब्दमाधुर्य है।—रस०, पृ० ७२।

शब्दमाल—संज्ञा पुं० [सं०] पोला बाँस।

शब्दयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जड़। मूल। २ धातु। ३ शब्द की उत्पत्ति। ४ वह शब्द जो अपने मूल अथवा प्रारंभिक रूप में हो।

शब्दरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की घास।

शब्दवारिधि—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का सागर। शब्दकोश (को०)।

शब्दविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण। शब्दशास्त्र।

शब्दविधान—संज्ञा पुं० [सं० शब्द + विधान] शब्दों की क्रमबद्ध योजना। पदयोजना। उ०—हृदय की इसी मुक्ति का साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।—रस०, पृ० ६।

शब्दवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साहित्य में शब्द का कार्य या प्रयोग। २ शब्द की शक्ति। द्योतक शक्ति। अभिधा, लक्षणा, व्यंजना आदि (को०)।

शब्दवेध—संज्ञा पुं० [सं० शब्द + वेधस] शब्द सुनकर ही निशाना लगाना। उ०—देखा चाहो शब्दवेध तुम, तो कहो।—साकेत, पृ० १३८।

शब्दवेधी[१]—संज्ञा पुं० [सं० शब्दवेधिन्] १ वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु को बाण से मारता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्राचीन काल में ऐसे धनुधर हुआ करते थे जो आँखों पर पट्टी बाँधकर किसी व्यक्ति का शब्द सुनकर या लक्ष्य पर की हुई टंकार सुनकर ही यह समझ लेते थे कि वह व्यक्ति अथवा वस्तु अमुक ओर है, और तब ठीक उसी पर बाण चलाते थे।

२ अर्जुन। ३ दशरथ। ४ एक प्रकार का बाण (को०)। ५ धनुष्क। धनुर्धर व्यक्ति (को०)

शब्दवेधी[२]—वि० दे० 'शब्दपाती'।

शब्दशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।

विशेष—जब शब्द किसी वाक्य या वाक्यांश का अंग होता है, तब उसका अर्थ या तो साधारण और या वाक्य के तात्पर्य के अनुसार और अपने साधारण अर्थ से कुछ भिन्न होता। उसकी जिस शक्ति के अनुसार वह साधारण या उसमें कुछ भिन्न अर्थ प्रकट होता है, वह शब्दशक्ति कहलाती है। यह शब्दशक्ति तीन प्रकार की मानी गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। विशेष दे० ये तीनों शब्द इन तीनों से प्रकट होनेवाले अर्थ क्रमश वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य कहे गए हैं तथा इन्हें प्रकट करनेवाले शब्द वाचक, लक्षक और व्यंजक कहलाते हैं।

शब्दशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें भाषा के भिन्न भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाय। व्याकरण।

शब्दश—अव्य० [सं०] अक्षर अक्षर। किसी के कहे या लिखे हुए प्रत्येक शब्द के अनुसार। किसी के शब्दों का ठीक ठीक अनुकरण करते हुए। जैसा किसी ने कहा या लिखा हो ठीक वैसा ही। अक्षरश।

शब्दश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद। वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में प्रयुक्त किया जाय।

विशेष—साहित्यशास्त्रियों ने श्लेषालंकार के दो भेद कहे हैं। एक शब्दश्लेष और दूसरा अर्थश्लेष। शब्दश्लेष में श्लिष्ट शब्द को समानार्थक शब्द रखकर हटाया नहीं जा सकता। वह परिवृत्तिसह नहीं होता क्योंकि इससे उसकी श्लिष्टता नष्ट हो जाती है। अर्थश्लेष शब्द की परिवृत्ति सह सकता है अर्थात् समानार्थ शब्द द्वारा हटाया भी जा सकता है।

शब्दसंग्रह—संज्ञा पुं० [सं० शब्दसङ्ग्रह] शब्दों का संचयन। शब्दकोश (को०)।

शब्दसंभव—संज्ञा पुं० [सं० शब्दसम्भव] वायु जो शब्द की उत्पत्ति का कारण है, अथवा जिससे शब्द का अस्तित्व संभव होता है।

शब्दसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है। शब्दों के संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, सर्वनाम आदि जो भेद होते हैं, वे भी इसी के अंतर्गत हैं।

शब्दसौंदर्य—संज्ञा पुं० [सं० शब्दसौन्दर्य] शब्दों के उच्चारण की सुगमता। दे० 'शब्दसौष्ठव'।

शब्दसौकर्य—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों के उच्चारण की सुगमता।

शब्दसौष्ठव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी लेख या शैली आदि में प्रयुक्त किए हुए शब्दों की कोमलता या सुंदरता।

शब्दहीन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का वह रूप या प्रयोग जिसे आचार्यों ने नप्रयुक्त किया हो।

शब्दहीन[२]—वि० [सं०] शब्दरहित। निःशब्द। (को०)।

शब्दांतर—संज्ञा पुं० [सं० शब्दान्तर] शब्द का ही अंतर या परिवर्तन। ऐसी उक्ति या रचना जो किसी उक्ति या रचना को समानार्थक शब्द संबंधी परिवर्तन करके रखती हो।

शब्दांतरकरण—संज्ञा पुं० [सं० शब्दान्तर + करण] शाब्दिक परिवर्तन करना। उ०—डान्टे की 'डिवाइना कामेडिया' तो सेंट टामस की कैथोलिक नीति पर कहीं कहीं तो केवल शब्दांतरकरण है।—पा० सा० सि०, पृ० ८।

शब्दाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनिपूर्वक उच्चरित 'ओम्' शब्द।

शब्दाख्येय—वि० [सं०] १ जोर से या चिल्लाकर कहा जानेवाला। २ शब्द द्वारा कहा जाने योग्य। जिसे शब्दो द्वारा व्यक्त किया जा सके। ३. (संदेश या समाचार आदि) जो मौखिक वा शाब्दिक हो (को०)।

शब्दाडंबर—संज्ञा पुं० [सं० शब्दाडम्बर] बडे बडे शब्दो का ऐसा प्रयोग जिसमे भाव की बहुत ही न्यूनता हो। केवल शब्दो की सहायता से खडा किया जानेवाला आडंबर। शब्दजाल।

शब्दाढ्य—संज्ञा पुं० [सं०] काँसा नाम की धातु।

शब्दातिग—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

शब्दातीत[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शब्द से परे हो, अर्थात् ईश्वर।

शब्दातीत[२]—वि० शब्दो द्वारा जिसका वर्णन न हो सके। जो शब्दो द्वारा व्यक्त न हो सके। वर्णनातीत [को०]।

शब्दात्मक—वि० [सं०] शब्द संबंधी। शाब्दिक। उ०—केवल शब्दात्मक साम्य को लेकर यदि हम किसी पहाड को कहे कि वह बैल है क्योकि इसे भी 'शृंग' है, तो वह काव्यकला नही होगी।—आचार्य०, पृ० १२४।

शब्दाधिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] कर्ण। कान।

शब्दाध्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] वाक्य को पूरा करने के लिये उसमे अपनी ओर से शब्द जोडना।

शब्दानुकरण—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द या पदयोजना का अनुकरण करना [को०]।

शब्दानुकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शब्दानुकरण'।

शब्दानुशासन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण। जैसे, हिंदी शब्दानुशासन।

शब्दायमान—वि० [सं०] शब्द करता हुआ। शब्दित। शब्द या ध्वनियुक्त [को०]।

शब्दार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द का अर्थ या अभिप्राय। वाच्य। मानी [को०]।

शब्दालंकार—संज्ञा पुं० [सं० शब्दालङ्कार] साहित्य मे वह अलंकार जिसमे केवल शब्दो या वर्णो के विन्यास से भाषा मे लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे,—अनुप्रास, यमक आदि।

शब्दाल—वि० [सं०] ध्वनिकारक। शब्द करनेवाला [को०]।

शब्दावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कथन या रचना मे प्रयुक्त होनेवाला शब्दसमूह [को०]।

शब्दित[१]—वि० [सं०] १ ध्वनियुक्त। शब्दायमान। ध्वनित। उ०—(क) सतत शब्दित गेह समूह मे, विजनता परिवर्धित थी हुई।—प्रिय०, पृ० २२। (ख) मुझे प्रेम का नीरव मानस सुदर शब्दित करने दो।—वीणा, पृ० २७। २. बजाया हुआ या बजता हुआ। ३. पुकारा हुआ। आहूत। ४. व्याख्या किया हुआ। व्याख्यात। ५. घोषित। प्रचारित [को०]।

शब्दित[२]—संज्ञा पुं० कोलाहल। शोर। हल्ला [को०]।

शब्दी(५)—संज्ञा स्त्री० [सं० शब्द] १ सबद। आध्यात्मिक भजन या पद। २. उपदेश। शिक्षा। उ०—सतगुरु शब्दी मेल है सही घमूका साध।—चरण० बानी, पृ० ३।

शब्देंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० शब्देन्द्रिय] कर्ण। कान।

शब्दोद्भावक—वि० [सं०] शब्दो की उद्भावना करनेवाला। शब्द का निर्माता। शब्दस्रष्टा। उ०—इस दिशा मे समालोचक ही न रहकर वे शब्दोद्भावक भी हुए।—आचार्य०, पृ० २०६।

शम—संज्ञा पुं० [सं०] १ शांति। उ०—सतिगुरु शरन महाँ शम पाई अैसो आकुल रिदै पियारा।—प्राण०, पृ० २३२। २. मोक्ष। ३ कर। हस्त। हाथ। ४ उपचार। रोगमुक्ति। सुस्थता। ५ अंत:करण तथा अंतर इद्रिय को वश मे करना। ६ बाह्य इंद्रियो का निग्रह। ७ निवृत्ति। नि.सगता। निरपेक्षता। ८ साहित्य मे शात रस का स्थायी भाव। ९ क्षमा। १० तिरस्कार। ११. मन स्थैर्य। मन की स्थिरता। मानसिक स्थिरता (को०)।

शमई[१]—वि० [अ० शम्अ] १ शमा संबधी। शमा का। मोमबत्ती या दीपक संबधी। २. शमा के रग का [को०]।

शमई[२]—संज्ञा स्त्री० दीपाधार। शमादान। उ०—सप्तशती के पाठ के लिये १४ ब्राह्मण, दुर्गा के मंदिर मे चाँदी की शमईयो मे घी के दिए जलाए।—झाँसी०, पृ० ३२२।

शमक—वि० [सं०] १ शात या शांति करानेवाला। २ संधि या समझौता करनेवाला [को०]।

शमठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का तूत या शहतूत। २. गडार नामक शाक।

शमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शम का भाव या धर्म। शमत्व।

शमत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शमता'।

शमथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ शांति। मन शांति। २ वह जो मंत्रणा वा सलाह देता हो। मंत्री।

शमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ के लिये होनेवाला पशुओ का बलिदान। २ यम। ३ एक प्रकार का मृग। ४. हनन। हिंसा। ५ शम। शांति। जैसे,—रोग का शमन। ७. अन्न। ८. मटर। ९. वह ओषधि जो वातादि दोषों का वमन, विरेचनादि द्वारा दूर करे। जैसे—गिलोय। १० तिरस्कार। ११. आघात। चोट। १२ वैद्यक में एक प्रकार का धूम्रपान।

विशेष—इस धूम्रपान मे इलायची, तगर, कुडा, जटामासी, गधतृण, दालचीनी, तेजपत्ता, नागकेशर, नखी, सरल, बाला, शिलारस आदि कई ओषधियो का मिश्रण किया जाता है, इसका धूआँ नली या सटक आदि के द्वारा पीते हैं। इससे वात आदि दोषो का नाश होना माना जाता है।

१३. एक प्रकार का बस्ति कर्म जो मोया और रसांजन आदि मिले हुए दूध से किया जाता है। १४. रात्रि। रात। १५. शात करना। बुझाना (को०)। १६. प्रसन्न करना (को०)। १७. अंत।

ठहराव। समाप्ति। विनाश (को०)। १८. निगल जाना। चबाना (को०)।

शमनवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वस्ति कर्म जिसमें फूल प्रियगु मुं ठ', नागरमोथा और रसौत को दूध में पीसकर मलद्वार से पिचकारी देते हैं।

शमनस्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं० शमनस्वसृ] यम की भगिनी अर्थात् यमुना।

शमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

शमनीय—वि० [सं०] शमन करने योग्य। दबाने या शांत करने योग्य।

शमनीषद्, शमनीसद—संज्ञा पुं० [सं०] निशाचर। राक्षस।

शमपर—वि० [सं०] शांतिपरायण। शांत (को०)।

शमप्रधान—वि० [सं०] जिसमें शम की प्रधानता हो। जो शम को ही मुख्य मानता हो। शांत। विषयराग से रहित (को०)।

शमर (पु)—संज्ञा पुं० [अ० समर] फल। उ०—सरसब्ज हुआ फज्ले सनम से शमर आया।—कबीर म०, पृ० ३८६।

शमल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्ठा। मल। गुह। २ पाप। गुनाह। ३ अशुचिता। अपवित्रता (को०)। ४ अभाग्य। बदकिस्मती। दुर्भाग्य (को०)।

शमल²—वि० पापात्मा। पापी (को०)।

शमला—संज्ञा पुं० [अ०] १ एक छोटी शाल जिसे कंधों पर डालते या सिर पर लपेटकर पगड़ी की तरह बाँधते हैं। उ०—मुंशी जी की सज धज निराली। सिर पर एक हरा शमला था, देह पर एक अबा।—काया०, पृ० १३२। २ पुराने वकीलों के पहनने की पगड़ी जिसे वे गाऊन के ऊपर पहन लेते थे। ३ तुर्रा। पगड़ी का सिरा या छोर। ४ एक प्रकार की बनी हुई गोल पगड़ी जिसे सिर पर टोपी की तरह पहना जाता है।

शमशम—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

शमशाद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सव या सरो का वृक्ष जो सीधा होता है और अपनी लंबाई और सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है, इसकी उपमा माशूक के कद से दी जाती है। उ०—चमन पर देख कर उस दुख का पहाड़, दिया है खोल बालों सब शमशाद।—दक्खिनी०, पृ० १६१।

शमशीर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'शमशेर'। (क) उधर शमशीर खींची हो इधर गर्दन झुकाई हो।—श्यामा०, पृ० ७३। (ख) जानता हूँ पयुरी, शमशीर का भी, जानता हूँ प्यार, उसको पीर का भी।—मिलन०, पृ० ४८।

शमशेर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ वह हथियार जो शेर की पूँछ अथवा नख के समान हो अर्थात् तलवार, खड्ग आदि। २. तलवार।

मुहा०—शमशेर का खेत = युद्धक्षेत्र।

यौ०—शमशेरजन = तलवार चलानेवाला। असिवाही। शमशेरजनी = (१) सिपाही का पेशा। (२) तलवार की लड़ाई। असियुद्ध। शमशेरदम = तलवार की तरह बाढ़ रखनेवाला। तलवार जैसी काट करनेवाला। शमशेरजंग = वीरतासूचक उपाधि। शमशेर बक्फ = शस्त्रपाणि। जिसके हाथ में तलवार हो। शमशेर बहादुर = तलवार चलाने में कुशल।

शमश्रु (पु)†—संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रु] दाढ़ी। श्मश्रु। उ०—अरु शमश्रु जो दाढ़ी है सो चाँदीवत चमत्कार करती है।—प्राण०, पृ० २६२।

शमांतक—संज्ञा पुं० [सं० शमान्तक] वह जो शम को, मन शांति को नष्ट कर दे, अर्थात् कामदेव।

शमा—संज्ञा स्त्री० [अ० शमअ] १ मोम। २. मोम या चर्बी की बनी हुई बत्ती जो जलाने के काम में आती है। मोमबत्ती। उ०—झिलमिलाकर और जलाकर तन शमा ने दी, अब शलभ की गोद में आराम से सोई हुई।—ठंडा० पृ० १२। ३. दीपक। दीया। उ०—सुबह तक शमा सर को धुनती रही। क्या पतंग ने इल्तमास किया।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १७२।

यौ०—शमादान।

शमादान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं। यह प्रायः धातु का बना हुआ अनेक आकार प्रकार का होता है।

शमामचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शमामचह्] सूँघने का कोई सुगंधित पदार्थ (को०)।

शमामा—संज्ञा पुं० [अ० शमामह्] सुगंध। खुशबू। महक (को०)।

शमारुख, शमारुखसार—वि० [फ़ा० शमारुख, शमारुखसार] १. शमा की तरह प्रकाशमान चेहरा। २. सुंदर। उ०—शमारुख का तेरे ये गुन कोई परवाना नहीं, और अगर हूँ तो मही।—श्यामा०, पृ० १०२।

शमारू—वि० [फ़ा०] दे० 'शमारुख'।

शमि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिंबी धान्य।

विशेष—इस धान्य में मूँग, मसूर, माठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया इत्यादि वे अन्न आते हैं, जिनमें छीमियाँ लगती हैं।

२. सफेद कीकर। विशेष दे० 'शमी'।

शमि²—संज्ञा पुं० १. भागवत के अनुसार उशीनर के पुत्र का नाम। २. यज्ञ।

शमिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष।

शमिज—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कुलथी।

शमिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लाल कुलथी। २. शिंबी धान्य।

शमित—वि० [सं०] १ जिसका शमन किया गया हो। २. शांत। ठहरा हुआ। ३ विश्रमित। आराम किया हुआ (को०)। ४. मारा हुआ। नष्ट या विध्वस्त किया हुआ (को०)।

शमिता¹—संज्ञा पुं० [सं० शमितृ] वह जो यज्ञ में पशु का बलिदान करता हो।

शमिता[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौरेठा। चावल का चूर्ण [को०]।

शमिपन—संज्ञा पुं० [सं०] पानी में होनेवाली लजालू नाम की लता।

शमिपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शमिपत्र'।

शमिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शमी वृक्ष। २ बकुची। सोमराजी।

शमिरोह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शमिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली की जाति का एक प्रकार का पौधा।

शमी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कर्म। क्रिया (को०)। २ एक प्रकार का बडा वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर। छोंकर।

विशेष—शमी का वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, और दक्षिण के प्रांतों में पाया जाता है। इसे बागों में भी लगाते हैं। इसका वृक्ष ३०–४० फुट तक ऊँचा होता है, परंतु सिंध में यह ६० फुट का भी होता है। इसकी शाखें पतली खाकी रंग की, चित्तीदार और भूमि की ओर लटकती हुई होती हैं। इसकी जड कहीं कहीं ६० फुट तक भूमि के भीतर नीचे चली जाती है, और चारों ओर बहुत दूर तक बढती है, जिससे नए अंकुर निकलकर और पौधे उत्पन्न होते हैं। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती है। इसके वृक्ष पर काँटे होते हैं। डालियों पर विषमवर्ती सींकें रहते हैं। इन सींकों पर ७ से १२ जोडे तक छोटे छोटे पत्ते रहते हैं। शाखों के अंत में ३–४ इंच लंबे सींकों पर नन्हे नन्हे पीले तथा गुलाबी रंग के फूल आते हैं। इसकी फलियाँ ५ से १० इंच तक लंबी और चिपटी होती हैं। प्रत्येक फली में १०–१५ बीज रहते हैं जो अंडाकार और भूरे रंग के होते हैं। इसकी छाल और फलियाँ ओषधि के काम में आती हैं। लोग इसकी फलियों का अचार और साग बनाकर खाते हैं। दुर्भिक्ष के समय इसकी छाल के आटे की रोटी बनाकर भी खाई जाती है। इसका भस्म बुद्धि, केश तथा नखों का नाश करनेवाला होता है। अतिसार में इसका काढ़ा लाभदायक होता है। गठिया पर इसकी छाल पीसकर गरम करके लगाने से लाभ होता है। लोग विजयादशमी आदि कुछ विशिष्ट अवसरों पर इसका पूजन भी करते हैं।

पर्या०—शक्तुफला। शिवा। केशहन्त्री। शाता। हविर्गंधा। मेध्या। ईशानी। लक्ष्मी। तपनतनया। शुभदा। पवित्रा। बागुजि। पापनाशिनी। शंकरी। पापशमनी। इष्टा। तुंगा। शिवाफला। सुपत्रा। सुखदा।

शमी[२]—वि० [सं० शमिन्] शांत।

शमीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि का नाम।

विशेष—कहते हैं, परीक्षित ने उनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया, परंतु ये कुछ न बोले। इनके लडके शृंगी ऋषि ने अपने पिता की दुर्दशा देखकर क्रुद्ध हो शाप दिया कि आज के सातवें दिन मेरे पिता के गले में सर्प डालनेवाले को तक्षक नाग डसेगा। कहा जाता है, इसी शाप के द्वारा तक्षक के काटने से राजा परीक्षित की मृत्यु हुई थी।

शमीगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण। २ अग्नि।

शमीजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमीधान्य।

शमीधान, शमीधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] शिंबी धान्य। मूँग, मसूर, उडद आदि।

शमीपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लजालू नाम की लता।

शमीम[१]—संज्ञा स्त्री० [अ० शमीमह्] सूँघने की वस्तु। सुगंध। उ०—मगजे जाँ को जँनतो राहत का शमीम। याद उसका दिल के गुचे को नसीम।—दक्खिनी०, पृ० २०१।

शमीम[२]—संज्ञा पुं० [अ०] सुगंध। खुशबू।

शमीर—संज्ञा पुं० [सं०] शमी वृक्ष।

शमीरकंद—संज्ञा पुं० [सं० शमीरकन्द] बाराही कंद। चमार आलू। शूकर कंद।

शमीरमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शमी + रमा] लक्ष्मीदेवी जो शमी वृक्ष में निवास करती है। उ०—शमी वृक्ष में शमीरमा रानी की पूजा वीरपूजा ही का ज्वाज्वल्य प्रमाण है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २०६।

शमीरोह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

शम्मा—सं० पुं० [अ०] किंचिन्मात्र वस्तु। बहुत थोडा सामान।

शम्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगुड। यष्टि। लाठी। २. काठ का स्तंभ। ३. ३६ अंगुल लंबा एक परिमाण या मानदंड। ४. जुए का सैला। ५ झाँझ। ६. एक यज्ञपात्र। ७ वैद्यों का एक यंत्र या औजार। ८ संगीत में तालविशेष [को०]।

यौ०—शम्याक्षेप। शम्याग्राह = झाँझ बजानेवाला। झालर बजानेवाला। शम्यापात = दे० 'शम्याक्षेप'।

शम्याक—संज्ञा पुं० [सं०] आरग्वध वृक्ष। अमलतास।

शम्याक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दूरी जहाँ तक घुमाकर तेजी से फेंकी हुई छडी गिरे। २. एक यज्ञ जिसका मंडप बलिष्ठ पुरुष द्वारा क्षिप्त छडी गिरने की दूरी तक हो [को०]।

शम्श(पु)—संज्ञा पुं० [अ० शम्स] १ सूरज। रवि। सूर्य। उ०—तकरीम को शम्शो महे अनवार झुका।—कबीर मं०, पृ० ४६८।

शम्शी(पु)—वि० [अ० शम्सी] १. सूर्य का। सौर। २ सूर्य संबंधी। उ०—आखिर कुछ धन माह न दीना, शम्शी कमरी घटा महीना।—दक्खिनी०, पृ० ३११।

शम्स—संज्ञा पुं० [अ०] १ सूर्य। जैसे, शम्स-उल उलेमा अर्थात् विद्वानों में सूर्यवत्। २ सुमिरनी का फुँदना जो तसबीह (माला) में लगाया गया हो। [को०]।

शम्सा—संज्ञा पुं० [अ० शम्सह्] गवाक्ष। झरोखा। रोशनदान [को०]।

शम्सी[१]—वि० [अ०] दे० 'शम्शी'।

शम्सी[२]—संज्ञा स्त्री० छमाही वेतन।

शयंड[१]—संज्ञा पुं० [सं० शयण्ड] १. एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस देश का निवासी।

शयंड[२]—वि० सोनेवाला। निद्रालु [को०]।

शयडक—संज्ञा पुं० [सं० शयण्डक] गिरगिट।

शय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शय्या। २. सर्प। साँप। ३ निद्रा। नींद। उ०—दृगों में ज्योति है, शय है, हृदय में स्पद है, भय है।—अर्चना, पृ० १०७। ४ पण। ५ हाथ। ६ लबाई की एक माप (को०)। ७ बद्‌दुआ। शाप (को०)। ८ भर्त्सना (को०)।

शय²—वि० लेटनेवाला। सोनेवाला (विशेषतः समास मे, जैसे दिवाशय, उत्तानशय)।

शय³—संज्ञा स्त्री० [अ०, फा० शै] १ वस्तु। पदार्थ। चीज। २ भूत। प्रेत। आसेब। जैसे,—इस मकान मे कोई शय है।

शय⁴—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शह] दे० 'शह'।

शयत—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रालु व्यक्ति। वह जिसे नींद आई हो। २ चद्रमा (को०)।

शयतान—संज्ञा पुं० [अ० शैतान] दे० 'शैतान'।

शयतानी—संज्ञा स्त्री० [अ० शैतानी] दे० 'शैतानी'।

शयथ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। सर्प। अजगर। २ सूअर। सूकर। वाराह। ३ मछली। मीन। ४ गाढी नींद। ५ मृत्यु। मौत। ६ यम। ७ शयनीय स्थल (को०)।

शयथ²—वि० सोया हुआ। सुपुप्त (को०)।

शयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ निद्रा लेने या सोने की क्रिया। सोना। २ शय्या। बिछौना। ३ मैथुन। स्त्रीप्रसग। सभोग।

शयनआरती—संज्ञा स्त्री० [सं० शयन+आरती]। देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।

शयनकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमरा या घर। शयनागार।

शयनगृह—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान। शयनमंदिर। शयनागार।

शयनतलगत—वि० [सं०] शय्या पर लेटा हुआ (को०)।

शयनपाल—संज्ञा पुं० [सं०] निद्राकाल में पहरा देनेवाला व्यक्ति या अलरग अगरक्षक।—वर्ण०, पृ० ६।

शयनपालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो शय्या की रक्षिका हो शयनकक्ष की रक्षा करनेवाली। (को०)।

शयनबोधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अगहन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी। उ०—अगहन असित एकादसि केरा। शयनबोधिनी नाम निबेरा।—रघुनाथ (शब्द०)।

शयनभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शयनमंदिर। शयन का स्थान (को०)।

शयनमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० शयनमन्दिर] सोने का स्थान। सोने का कमरा। शयनगृह। शयनागार।

शयनरचन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शयनरचना] ६४ कलाओं में से एक कला। सेज तैयार करना या सजाना (को०)।

शयनवास—संज्ञा पुं० [सं० शयनवासस्] वे कपडे जो सोने के समय पहने जायँ।

शयनशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शयनगृह। शयनागार। उ०—इन क्षत्रियों को आलस्य की शयनशाला से उठाओ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६६।

शयनसखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शय्या पर साथ सोनेवाली सहेली (को०)।

शयनस्थ—वि० [सं०] बिछौने पर बैठा या सोया हुआ (को०)।

शयनस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की जगह (को०)।

शयनागार—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान। शयनमंदिर। शयनगृह।

शयनीय¹—वि० [सं०] सोने के योग्य।

शयनीय² संज्ञा पुं० १ सेज। शय्या। २ शयनगृह। शयनागार (को०)।

शयनीयक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शयनीय'।

शयनैकादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

विशेष—विष्णु भगवान् के शयन का प्रारभ इसी दिन से माना जाता है।

शयाड—संज्ञा पुं० [सं० शयाण्ड] १ एक प्राचीन देश या जनपद का नाम। २. इस देश का निवासी।

शयाडक—संज्ञा पुं० [सं० शयाण्डक] गिरगिट। कृकलास।

शयातीन—संज्ञा पुं० [अ० शैतान का बहु व०] शैतान। उ०—बस है यह उसको अज उफूरे अयाल, के शयातीन हों उसके मालामाल।—दक्खिनी०, पृ० २१६।

शयान¹—वि० [सं०] सोया हुआ। स्थित। पडा हुआ। उ०—कुद के शेष पुष्पार्घदान, मल्लिका प्रथमयौवन शयान।—अनामिका, पृ० २२।

शयान²—संज्ञा पुं० दे० 'शयानक'।

शयानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प। साँप। अजगर। २. गिरगिट। कृकलास।

शयालु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे नींद आई हो। निद्रालु। २ अजगर। ३ कुत्ता। ४ शृगाल। गीदड। सियार।

शयालु²—वि० निद्रालु। निद्राशील। शयित (को०)।

शयित¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अजगर। २ लिसोडा। श्लेष्मातक। ३ निद्रा। नींद (को०)। ४ सोने का स्थान (को०)।

शयित²—वि० १ सोया हुआ। निद्रित। २ लेटा हुआ (को०)।

शयिता—संज्ञा पुं० [सं० शयितृ] वह जो सोया हुआ हो। सोनेवाला।

शयु—संज्ञा पुं० [सं०] १ अजगर। २. एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

शयुन—संज्ञा पुं० [सं०] अजगर। साँप।

शय्यांत—संज्ञा पुं० [सं० शय्यान्त] शयनकक्ष (को०)।

शय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह बिछी हुई वस्तु जो सोने के काम मे लाई जाय। बिस्तर। बिछौना। बिछावन। २ पलग। खाट। खटिया। ३ बाँधना। नत्थी करना (को०)।

शय्याकाल—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का समय। शय्या पर जाने का काल (को०)।

शय्यागत—वि० [सं०] १ जो बीमार होने के कारण खाट पर पडा हो। रोगी। २. सोया या लेटा हुआ (को०)।

शय्यागृह—संज्ञा पुं० [सं०] शयनगृह। शयन का कक्ष या स्थान [को०]।

शय्याच्छादन—संज्ञा पुं० [सं०] पलंग पर बिछाने की चादर।

शय्याद—वि० [अ०] छली। धूर्त। मक्कार। वंचक [को०]।

शय्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु के अनंतर मृतक के संबंधियों का महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जादान।

शय्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शय्यापाल'।

शय्यापाल, शय्यापालक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजाओं के शयनागार की व्यवस्था करता हो।

शय्यामूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जो प्रायः बालकों को होता है। इसमें उन्हें निद्रावस्था में ही शय्या पर पड़े पड़े पेशाब हो जाता है।

शरंड—संज्ञा पुं० [सं० शरण्ड] १ पक्षी। विहग। चिड़िया। २ कामुक। ३. धूर्त। चालाक। ४ एक प्रकार का गहना। ५. छिपकली। ६ गिरगिट। ७ चतुष्पद। चतुष्पाद। चौपाया (को०)।

शर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। नाराच। २ सरकंडा। सरई। ३. सरपत। रामशर। ४. दूध की मलाई। ५ दही की मलाई। ६. सामुद्रिक के अनुसार शरीर में का एक चिह्न। ७. उशीर। खस। ८ भाले का फल। उ०—मूआ है मरि जाहुगे, बिन शर थोथे भाल।—कबीर (शब्द०)। ९ चिता। उ०—पूहो पैन्हि पी सँग सुहागिन बधू ह्वै लीजो सुख के समूहै बैठि सेज पै कि शर पै।—देव (शब्द०)। १. हिंसा। ११ पाँच की संख्या। १२ पुराणानुसार एक असुर का नाम। १३ जल (को०)। १४ कुश नाम की घास (को०)।

शर[2]—संज्ञा पुं० [अ०] १ उपद्रव। शरारत। झगड़ा। बखेड़ा। २ बदी। बुराई। उ०—रहो कायम अपस इकरार ऊपर, खयाले कत्ल में लिए दीन का शर।—दक्खिनी०, पृ० ३४०।

शरअ—संज्ञा स्त्री० [अ० शरअ] १ वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने भक्तों के लिये बतलाया हो। २. सीधा राह। राजमार्ग (को०)। ३ कुरान में दी हुई आज्ञा। ४ दीन। मजहब। धर्म। ५ दस्तूर। तौर। तरीका। ६ मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरई[1]—वि० [अ०] शरअ के अनुसार। मुसलमानी धर्म के अनुसार।

यौ०—शरई पैजामा = ऊँचा पैजामा। शरई दाढ़ी = बहुत लंबी दाढ़ी। शरई शादी = बिना बाजे गाजे का विवाह (मुसल०)।

शरई[2]—संज्ञा पुं० शरअ पर चलनेवाला मनुष्य।

शरकांड—संज्ञा पुं० [सं० शरकाण्ड] १ सरपत। सरकंडा। २ बाण की लकड़ी।

शरकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो तीर बनाता हो।

शरक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाण का लक्ष्य स्थान। बाणप्रहार। तीर का चलाना। उ०—देखता रहा मैं खड़ा अपल वह शरक्षेप, वह रणकौशल।—अनामिका, पृ० १२०।

शरखंगक—संज्ञा पुं० [सं० शरखङ्गक] उलूक तृण। उलप।

शरगा—संज्ञा पुं० [अ० शरगा] बादामी रंग का घोड़ा [को०]।

शरगुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरकंडा। २ रामायण के अनुसार एक यूथपति बंदर का नाम।

शरघात—संज्ञा पुं० [सं०] बाण चलाने का कार्य। तीरदाजी [को०]।

शरच्चंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शरत् + चन्द्र] शरद ऋतु का चंद्रमा।

शरच्चंद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शरत् + चन्द्रिका] शरद् की चाँदनी।

शरज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मक्खन। नवनीत। २ कार्तिकेय। शरजन्मा (को०)।

शरज[2]—वि० सरकंडे में उत्पन्न या बना हुआ।

शरजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० शरजन्मन्] कार्तिकेय।

शरजाल, शरजालक—संज्ञा पुं० [सं०] बाणों का जाल। बाणसमूह [को०]।

शरज्ज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [सं० शरत् + ज्योत्स्ना] शरद् ऋतु की चाँदनी। शरद का जुन्हाई [को०]।

शरट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुसुंभ नाम का साग। २. कृकलास। गिरगिट। ३ करज। ४ प्रागैतिहासिक काल का एक भयावना जानवर।

शरटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जालुक। लाजवंती। लजाधुर।

शरड्ड—वि० [सं०] भयानक। भीषण। रौद्र [को०]।

शरण[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्षा। आड़। आश्रय। पनाह। जैसे,—अब तो मैं आपकी ही शरण में आया हूँ। उ०—(क) वपु कृष्ण कृष्ण करुना करण जग व्यापक हम तव शरण। —गिरधर (शब्द०)। (ख) जिनकी शरण विश्व बुध जिनको निरभिलाष बतलाते हैं।—द्विवेदी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—में आना।—जाना।—पाना।—लेना।

२ आश्रय का स्थान। बचाव की जगह। ३ घर। मकान। ४ जो शरण में आवे, उसके वैरी को मारना। ५ अधीन। मातहत। ६ शाहाबाद के उत्तर सारन नाम का जिला।

शरण[2]—वि० [सं०] दे० 'शरण्य' [को०]।

शरणद—वि० [सं०] शरण देनेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

शरणदाता—वि० [सं० शरणदातृ] दे० 'शरणद' [को०]।

शरणप्रद—वि० [सं०] दे० 'शरणद'।

शरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंधप्रसारिणी नाम की लता।

शरणागत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरण में आया हुआ व्यक्ति। किसी के भय से अपने पास रक्षा के लिये आया हुआ मनुष्य। २. शिष्य। चेला।

शरणागत[2]—वि० शरण में आया हुआ।

शरणागति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरण में जाने का कार्य या स्थिति [को०]।

शरणापन्न—वि० [सं०] शरण में आया हुआ। शरणागत।

शरणार्थी—वि० [सं० शरणार्थिन्] १ शरण माँगनेवाला। अपनी

रक्षा की प्रार्थना करनेवाला। २ विस्थापित। एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जा बसनेवाला। उ०—शरणार्थी, नवभू जीवन के शरणार्थी हैं।—रजत०, पृ० ८।

शरणार्पक—वि० [सं०] शरणापन्न। शरणागत [को०]।

शरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रास्ता। मार्ग। पथ। २ पृथ्वी। जमीन ३ हिंसा। ४ पंक्ति [को०]।

शरणि'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गवप्रसारिणी नाम की लता। २ पथ। मार्ग। रास्ता। ३ जयंती लता। ४ पृथ्वी (को०)। ५ पंक्ति। अवली (को०)। ६ इंद्र की पुत्री, जयंती (को०)।

शरणी ⓤ—वि० शरण देनेवाली।

शरण्य'—वि० [सं०] १. शरण मे आए हुए की रक्षा करनेवाला। उ०—रक्षण करिहैं अवशि हमारा। प्रभु ब्रह्मण्य शरण्य उदारा।—भक्तमाल (शब्द०)। २ रक्षणीय। शरण देने योग्य (को०)। ३ दुःखी। अवलंबहीन (को०)।

शरण्य'—संज्ञा पुं० १ आश्रयस्थान। २ रक्षा। त्राण। ३ हिंसा। ४ वह जो रक्षा कार्य करे। ५. शिव [को०]।

शरण्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरण्य का भाव।

शरण्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शरण्यु'—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ वायु। हवा। ३ वह जो पालन वा रक्षण करे अथवा शरण दे। रक्षक। ४ दे० 'भरण्यु'।

शरण्यु'—संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी।

शरण्यु'—वि० [सं०] रक्षक। पालक। त्राता।

शरत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्ष। साल। २. एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास मे मानी जाती है। पहले वैदिक काल मे यह ऋतु भाद्रपद और आश्विन मास मे मानी जाती थी। उ०—वर्षा बिगत शरत् ऋतु आई।—तुलसी (शब्द०)।

पर्या०—शारदा। कालप्रभात। मेघात। वर्षावसान।

शरत'—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शर्त'।

शरत'—संज्ञा स्त्री० [सं० शरत्] दे० 'शरद्'।

शरतल्प—संज्ञा पुं० [सं०] बाणों की शय्या। शर पंजर।

शरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाण फेकने की क्रिया तीरदाजी।

शरत्कामी—संज्ञा पुं० [सं० शरत्कामिन्] कुत्ता। कुक्कुर। श्वान।

शरत्काल—संज्ञा पुं० [सं०] कन्या सक्राति मे तुला सक्राति तक का अथवा आश्विन और कार्तिक का समय। शरद् ऋतु।

शरत्त्रियामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत् ऋतु की रात [को०]।

शरत्पद्म—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत पद्म।

शरत्पर्व—संज्ञा पुं० [सं० शरत्पर्वन्] आश्विन मास की पूर्णिमा। कोजागर। शरद्पूर्णिमा।

शरत्पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप। आहुल्य।

शरदंड—संज्ञा पुं० [सं० शरदण्ड] १ चाबुक। २. सरकंडा।

शरदंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० शरदण्डा] १. एक प्राचीन नदी का नाम। २. एक प्राचीन देश का नाम।

शरदंत—संज्ञा पुं० [सं० शरदन्त] शरद ऋतु का अंत अर्थात् हेमंत ऋतु।

शरद—संज्ञा स्त्री० [सं० शरद्] दे० 'शरत्'।

शरदई—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सरदई'।

शरदपूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शरत्पूर्णिमा] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद् पूनो।

शरदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरद ऋतु। २. वर्ष। साल।

शरदिंदु—संज्ञा पुं० [सं० शरदिन्दु] शरद् ऋतु का चद्र। उ०—प्रतनु शरदिंदु वर।—गीतिका, पृ० १२।

शरदिज—वि० [सं०] जो शरत् ऋतु मे उत्पन्न हो।

शरदुद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] वृत्तपत्र नाम का साग।

शरदुर्दिन—संज्ञा पुं० [सं०] बाणों की वर्षा या झड़ी [को०]।

शरदेंदु—संज्ञा पुं० [सं० शरदिन्दु, हिं० शरद+इंदु] शरद ऋतु का चद्रमा। शरच्चद्र।

शरद्घन—संज्ञा पुं० [सं०] शरद् ऋतु के मेघ। शरत्काल के बादल [को०]।

शरद्चद्र—संज्ञा पुं० [सं० शरच्चन्द्र] शरद् ऋतु का चंद्रमा। उ०—शरद्चद्र की चाँदनी मंद परत सी जान।—पद्माकर (शब्द०)।

शरद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] शरद् ऋतु। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरद्वसु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम जो जलद्वीप भी कहलाता है।

शरधा ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'। उ०—यदि शरधा हो तो।—मैला०, पृ० ८८।

शरधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

शरधि—संज्ञा पुं० [सं०] तीर रखने का चोगा। तूणीर। तरकश।

शरनाई ⓤ—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] दे० 'शरण'। उ०—यहि मुर्दा का लेहु हँकराई। हम सब तव रहैं तुव शरनाई।—कबीर सा०, पृ० १५१५।

शरनी ⓤ'—वि० स्त्री० [सं० शरण] शरण देनेवाली। उ०—अशरण शरनी भवभय हरनी वेद पुरान बखानी।—सूर (शब्द०)।

शरनी ⓤ†'—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] दे० 'शरण'। उ० —तीरथ व्रत कीन्ह बहु करनी। रूपदास गुरु की गहि शरनी।—कबीर सा०, पृ० ४२०।

शरन्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] शरद् ऋतु का आरंभ।

शरन्मेघ—संज्ञा पुं० [सं०] शरत्काल के बादल।

शरपंख—संज्ञा पुं० [सं० शरपङ्ख] जवासा। हिंगुआ। धमासा।

शरपट्टा ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र। उ०—असि शर भिंडिपाल शरपट्टा।—गिरधर (शब्द०)।

शरपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

शरपुंख—संज्ञा पुं० [सं० शरपुङ्ख] १ नील की तरह का एक प्रकार

का पौधा। सरफोंका। २. बाण या तीर मे लगा हुआ पंख। ३ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यंत्र।

शरपुंखा—संज्ञा स्त्री० [सं० शरपुङ्खा] दे० 'शरपुंख' [को०]।

शरप्रवेग—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्रगामी या तीक्ष्ण बाण [को०]।

शरफल—संज्ञा पुं० [सं०] बाण का फल या नोक [को०]।

शरबत—संज्ञा पुं० [अ०] १ पीने की मीठी वस्तु। रस। २. चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क जो दवा के काम आता है। जैसे,—शरबत बनफशा, शरबत अनार। ३ पानी मे घोली हुई शक्कर या खाँड। ४. मुसलमानों की एक रस्म जो विवाह के पश्चात् शरबत पिलाकर पूरी की जाती है और उसके बदले मे वधू के पक्षवालों का कुछ धन दिया जाता है। ५ सगाई की रस्म। (मुसल०)।

मुहा०—शरबत पिलाना=ब्याह के पहले या बाद मे शरबत पिलाने की रीति। शरबत के प्याले पर निकाह पढाना या करना=बिना कुछ भी खर्च किए ब्याह करना।

शरबत पिलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० शरबत+पिलाना] वह धन जो वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरबत पिलाकर देते हैं। (मुसल०)।

शरबती¹—संज्ञा पुं० [हिं० शरबत+ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का हलका पीला रंग जिसमे साधारण लाली भी होती है। यह प्रायः हरसिंगार के फूल और शहाब मिलाकर बनाया जाता है। २. एक प्रकार का नगीना जो पीलापन लिए लाल रंग का होता है। ३ एक प्रकार का नीबू जिसे मीठा नीबू भी कहते है। ज्वर मे लोग प्रायः इसका रस चूसते है। चकोतरा। मधुकर्कटी। ४ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा जो तनजेब से कुछ मोटा और अद्धी से कुछ पतला होता है। ५ एक प्रकार का फालसा जो बड़ा और मीठा होता है।

शरबती²—वि० १ रसीला। रसदार। रस भरा हुआ। २. हलका गुलाबी।

शरबती डाँक—संज्ञा पुं० [हिं० शरबती+डाँक] नगीने के नीचे रखने का शरबती रंग का बहुत पतला चाँदी या ताँबे का पत्तर विशेष दे० 'डाँक'।

शरबती नीबू—संज्ञा पुं० [हिं० शरबत+नीबू] १. चकोतरा। २. गलगल। ३. जंबीरी नीबू। मीठा नीबू।

शरबती फालसा—संज्ञा पुं० [हिं० शरबती+फालसा] एक प्रकार का फालसा जो बड़ा और मीठा होता है।

शरबान—संज्ञा पुं० [सं० शर+बान] भूतृण। अगिया घास।

शरबीज—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरपत्ते के बीज। चारुक। २. भद्रमुंज।

शरभंग—संज्ञा पुं० [सं० शरभङ्ग] एक प्राचीन महर्षि जो दक्षिण मे रहते थे। वनवास के समय रामचंद्र इनके दर्शन करने गए थे।

शरभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. राम की सेना का एक यूथपति बंदर। उ०—ऋषभ शरभ अरु नील गवाच्छु गंधमादन हू पाँचो।—रघुराज (शब्द०)। २. टिड्डा। ३ हाथी का बच्चा। ४ विष्णु। ५ ऊँट। ६ एक प्रकार का पक्षी। ७ आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। कहते हैं, यह सिंह से भी अधिक बलवान् होता है। ८. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है। इसे 'शशिकला' और 'मणिगुण' भी कहते है। ९ दोहे का एक भेद जिसमें बीस गुरु और आठ लघु मात्राएँ होती हैं १०. शेर। सिंह। ११ दनुज के एक पुत्र का नाम। १२. महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शरभता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरभ का भाव या धर्म। शरभत्व।

शरभलील—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ताल का एक भेद [को०]।

शरभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुष्क अवयवोंवाली और विवाह के अयोग्य कन्या। २ लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र।

शरभू—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

शरभृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाण की नोक [को०]।

शरभेद—संज्ञा पुं० [सं०] बाण का घाव [को०]।

शरभेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक शिवलिंग का नाम।

शरम—संज्ञा स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया। गैरत।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—रखना।—होना।

मुहा०—शरम से गड़ना=मारे लज्जा के दबे या झुके जाना। बहुत लज्जित होना। शरम से पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना।

२ लिहाज। संकोच। ३ प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—शरम रखना=इज्जत रखना। लाज रखना। शरम रहना=प्रतिष्ठा रहना। आबरू रहना।

शरमनाक—वि० [फा० शर्मनाक] लज्जाजनक। शर्मनाक।

शरमल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ शारिका पक्षी। मैना। २. वह जो तीर चलाने मे निपुण हो। धनुर्धारी।

शरमसार—वि० [फा० शर्मसार] १. जिसे शर्म हो। लज्जावाला। हयादार। २. लज्जित। शर्मिंदा। ३ पछतानेवाला (को०)।

शरमसारी¹—संज्ञा स्त्री० [फा० शर्मसारी] १. शर्मिंदा होने का भाव या क्रिया। २. लज्जा। शर्मिंदगी। ३. पछतावा। पश्चात्ताप (को०)।

शरमसारी²—संज्ञा पुं० वह जो वास्तव में लज्जा या मुरव्वत न करता हो, केवल किसी के सामने आ जाने पर लज्जा या मुरव्वत करता हो। मुँह देखे की लज्जा करनेवाला।

शरमहुजूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० शर्म०+फा० हुजूर] ऐसी लज्जा या मुरव्वत जो वास्तविक न हो, केवल किसी के सामने आ जाने से उत्पन्न हो। मुँह देखे का लाज।

शरमाऊ—वि० [हिं० शरम+आऊ (प्रत्य०)] जिसे बहुत लज्जा मालूम होती हो। शरमीला।

शरमाना¹—क्रि० अ० [अ० शर्म+हिं० आना (प्रत्य०)] शर्मिंदा होना। लज्जित होना। लाज करना। हया करना। जैसे,—वे तुम्हारे

सामने शरमाते हैं। उ०—वह न शरमावे कब तलक आखिर । दोस्ती यारी आशनाई है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ०, १६६।

शरमाना[२]—क्रि० स० शर्मिदा करना। लज्जित करना। जैसे—अब उन्हे ज्यादा मत शरमाओ।

शरमालू†—वि० [फा० शर्मआलूद अथवा हिं० शरम + आलु (प्रत्य०)] दे० 'शरमाऊ'।

शरमा शरमी—क्रि० वि० [फा० शर्म] लज्जा के कारण। शर्मिदा होकर। जैसे,—आप शरमा शरमी साथ हो लिए हैं।

शर्मिदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] शर्मिदा या लज्जित होने का भाव या धर्म। नदामत। लाज। झेंप।

मुहा०—शर्मिदगी उठाना = ऐसा काम करना जिसमे लज्जित होना पड़े।

शर्मिदा—वि० [फा० शर्मिदह्] जिसे शरम या लज्जा आई हो। लज्जित।

शरमीला—वि० [फा० शर्म + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। शरम करनेवाला। लज्जालु।

शरयन्त्रक—संज्ञा पुं० [सं० शरयन्त्रक] वह डोरी जिसमे प्राचीन काल मे लिखे हुए ताड़पत्रो को ग्रथित किया जाता था। लिखे हुए ताड़पत्रो को नत्थी करने की डोरी [को०]।

शरयु, शरयू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरयू'।

शरर—संज्ञा स्त्री० [अ०] अग्निकण। चिनगारी। स्फुलिंग। उ०—क्या आग की चिनगारियाँ सीने मे भरी है। जो आँसू मेरा आँख से गिरता है शरर है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६४।

शररबार—संज्ञा पुं० [अ० शरर + फा० बार] चिनगारी बरसानेवाला। उ०—दरबार मे वह तेगे शररबार न चमके।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ५२२।

शरल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरल[२]'।

शरल[२]—वि० १ वक्र। टेढ़ा। कुटिल। २ दे० 'सरल[१]'।

शरलक—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

शरलोमा—संज्ञा पुं० [सं० शरलोमन्] एक प्राचीन ऋषि जिन्होने कई ऋषियो के साथ भारद्वाज जी से आयुर्वेद सहिता लाने के लिये प्रार्थना की थी।

शरवण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शरवन' [को०]।

शरवणी†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रवण + ई] कान मे पहनी जानेवाली छोटे छोटे दानो की माला। उ०—माला ताहि गले महँ दीन्हा। श्रवण शरवणी बाँधन लीन्हा।—कबीर सा०, पृ० २७०।

शरवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नरसल या नरकुलो का झुरमुट। २ कुश की चटाई [को०]।

शरवनोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

शरवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] बाणवृष्टि। बाणों की बौछार [को०]।

शरवाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शर का अगला भाग। तीर का फल। २ वह जो शर चलाकर जीविका निर्वाह करता हो। तीर चलानेवाला सिपाही। ३ पैदल सिपाही। ४ बाण बनानेवाला (को०)।

शरवारण—संज्ञा पुं० [सं०] चर्म या ढाल जिसमे तीरो की बौछार रोकी जाती है।

शरवृष्टि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाणो की वर्षा [को०]।

शरवृष्टि[२]—संज्ञा पुं० [सं०] एक मरुत्वान् [को०]।

शरव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसपर शर का संधान किया जाय। वह जो तीर का निशाना बनाया जाय। लक्ष्य।

शरव्यीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] निशाना ठीक करना [को०]।

शरव्रात—संज्ञा पुं० [सं०] बाणों का समूह [को०]।

शरशोर—संज्ञा पुं० [अ० शर, शर + फा० शोर] झगड़ा। फसाद। शोर गुल। उ०—फिर न बाकी रहे कोई शरशोर। मेह कर जब कबीर बदिछोर।—कबीर म०, पृ० ३७४।

शरसंधान—संज्ञा पुं० [सं० शरसन्धान] निशाना लगाना [को०]।

शरसंवाव—वि० [सं० शरसम्बाव] बाणो से ढँका हुआ [को०]।

शरस्तंब—संज्ञा पुं० [सं० शरस्तम्ब] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन स्थान का नाम। २ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम। ३ नरकुलो का सचय या समूह (को०)।

शरह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिये किया जाय। २ टीका। भाष्य। व्याख्या।

यौ०—शरहनवीस, शरहनिगार = व्याख्याकार। टीकाकार।

३ दर। भाव। ४ दे० 'शरह लगान'।

यौ०—शरहनामा = दर या भाव की सूची। निर्खनामा। शरहबंदी = दर या भाव निश्चित करना। मूल्य पर कंट्रोल करना। शरह मुअय्यन। शरह लगान।

शरहमुअय्यन, शरहमुऐयन—संज्ञा पुं० [अ०] वह काश्तकार जो दवामी बंदोबस्त के समय से मुकर्रर एक ही लगान देता हो। विशेष दे० 'काश्तकार'।

शरह लगान—संज्ञा स्त्री० [अ० शरह + हिं० लगान] भूकर की दर। जमीन की पड़ती। बिघौती।

शरा†—संज्ञा स्त्री० [अ० शरअ, या शरीअत का बहु व० 'शराए'] दे० 'शरअ'। उ० शरा का पेल मुहम्मद से कर कहँ, यही विध तुरक तकरीर लावा।—तुरसी० श०, पृ० १५।

शराकत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीक या सम्मिलित होने का भाव। २ साझा। हिस्सेदारी।

यौ०—शराकतनामा = हिस्सेदारी की शर्तोवाला दस्तावेज।

शराटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] टिटिहरी।

शराटिका, शराति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टिटिहरी। २ लज्जालुक। लजालू। लाजवती।

शराडि, शराति—संज्ञा स्त्री० [सं०] टिटिहरी। टिट्टिभ।

शराध—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'।

शरापां—संज्ञा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप'।

शरापना(पु)†—क्रि० स० [स० शाप+ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना। सरापना।

शराफ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ, गुज० श्राफ] दे० 'सराफ'।

शराफत—संज्ञा स्त्री० [अ० शराफत] १ शरीफ या सज्जन होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता। २ कुलीनता। कुल की शुद्धता (को०)।

यौ०—शराफत पनाह=शराफत की रक्षा करनेवाला। शरीफ जनो को शरण देनेवाला। शराफत पेशा=उच्च वंश का। कुलीन। शरीफ।

शराफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफह्] दे० 'सराफा'।

शराफी—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्राफी] दे० 'सराफी'।

शराब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मदिरा। सुरा। वारुणी। मद्य। दारू। विशेष दे० 'मदिरा'।

क्रि० प्र०—खीचना।–ढालना।–पिलाना।–पीना।

मुहा०—शराब का दौर चलना=मदिरा पीने का क्रम चालू रहना। शराब पीते जाना।

२ हकीमो की परिभाषा मे, शरबत। जैसे—शराब बनफशा।

शराबखाना—संज्ञा पुं० [अ० शराब+फा० खानह्] शराब बनने तथा बिकने की जगह। वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोर—वि० [अ० शराब+फा० खोर] शराब पीनेवाला। मद्यप (को०)।

शराबखोरी—संज्ञा स्त्री० [अ० शराब+फा० खोर+ई (प्रत्य०)] १ शराब पीने का कृत्य। मदिरापान। २ शराब पीने की लत।

शराबख्वार—संज्ञा पुं० [अ० शराब+फा० ख्वार] वह जो शराब-पीता हो। मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

शराबख्वारी—संज्ञा स्त्री० [अ० शराब+फा० ख्वारी] शराब पीने की लत (को०)।

शराबजदा—वि० [अ० शराब+जदह्] मत्त। मतवाला।

शराबी—संज्ञा पुं० [हिं० शराब+ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो। शराब पीनेवाला। मद्यप।

शराबेतहूर—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वर्ग की पवित्र शराब (को०)।

शराबोर—वि० [फा०] जल आदि से बिल्कुल भीगा हुआ। लथपथ। तरबतर। जैसे—रंग से शराबोर, पानी से शराबोर।

शरायुध—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष (को०)।

शरारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर या पाजी होने का भाव। पाजी-पन। दुष्टता। बदमाशी। नटखटी।

शरारती—वि० [अ० शरारत+ई (प्रत्य०)] पाजी। दुष्ट। नटखट।

शरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. राम की सेना का एक यूथपति बंदर। २ 'शरारिमुख'।

शरारिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया जो जलाशयों के पास रहती है।

शरारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया।

शरारीमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कैंची जैसा एक प्राचीन औजार।

शरारु¹—वि० [सं०] १ हानिकारक। २. आघात या चोट पहुँचाने-वाला (को०)।

शरारु²—संज्ञा पुं० [सं०] चोट या हानि पहुँचानेवाला जानवर (को०)।

शरारोप—संज्ञा पुं० [सं०] जिसपर शर चढाया जाता है, धनुष। जिसपर रखकर तीर चलाते है, कमान।

शरालि, शराली—संज्ञा स्त्री० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया।

शराव—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड। २ वैद्यक मे एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौंसठ तोले या एक सेर की होती थी। (वैद्यक मे सेर चौंसठ तोले का ही माना जाता है)। ३ ढकना। ढक्कन (को०)।

शरावक—संज्ञा पुं० [सं०] ढकना। ढक्कन (को०)।

शरावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी जो आजकल बाण-गंगा कहलाती हैं। २ एक प्राचीन नगरी जो लव की राजधानी थी।

शरावर—संज्ञा पुं० [सं०] १ ढाल। २. कवच। वर्म। ३ तरकश। भाथा। तूणीर (को०)।

शरावरण—संज्ञा पुं० [सं०] ढाल जिससे तीर का वार रोकते हैं।

शरावाप—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष। कमान। ३. तूणीर। भाथा (को०)।

शराविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह फुंसी जो ऊपर से ऊँचा और बीच मे गहरी हो। २. एक प्रकार का कोढ।

शराश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तरकस। भाथा। तूणीर (को०)।

शरास—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष। उ०—दीखते उनसे विचित्र तरंग है, कोटि शक्रशरास होते भंग हैं।—साकेत, पृ० ६।

यौ०—शक्रशरास=इंद्रधनुष।

शरासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। चाप। २. महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

शरास्य—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष। कमान।

शरियत—संज्ञा स्त्री० [अ० शरीअत] दे० 'शरीअत'। उ०—उसको छोड राह विचार शरियत जिसई कहना। इन्साफ उपर सभी काम फरमूद के सूँ रहना।—दक्खिनी०, पृ० ५५।

शरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्रासाद।

शरिष्ठ(पु)—वि० [सं० श्रेष्ठ > शरिष्ठ (वरिष्ठ के वजन पर)] दे० 'श्रेष्ठ'। उ०—कन्या कहउ सुनो मतिमंता। जो शरिष्ठ सोई मम कंता।—सबल (शब्द०)।

शरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एरका या मोथा नाम का तृण।

शरी²—वि० [सं० शरिन्] बाणधारी। बाणयुक्त (को०)।

शरीअत—संज्ञा स्त्री० [अ० शरीअत] १ मुसलमानो के अनुसार वह पथ जो परमात्मा ने अपने भक्तो के लिये निश्चित किया हो। २. धर्मशास्त्र। (मुसल०)। ३. खुला हुआ और चौड़ा रास्ता। राजमार्ग (को०)।

यौ०—शरीअते मुहम्मदी = मुहम्मद साहब के चलाए हुए नियम या कानून।

शरीक¹—वि० [अ०] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ।

शरीक²—संज्ञा पुं० १ वह जो किसी बात में साथ रहता हो। साथी। २ साझी। हिस्सेदार। पट्टीदार। ३ सहायक। मददगार। ४ रिश्तेदार। संबंधी। (पश्चिम)।

यौ०—शरीके जलसा = सभा में उपस्थित लोग। शरीके राय = सहमत। शरीके हाल सुख दुःख का साथी।

शरीफ¹—संज्ञा पुं० [अ० शरीफ़] १ ऊँचे घराने का व्यक्ति। कुलीन मनुष्य। २ सभ्य पुरुष। भला मानुस भला आदमी। ३ मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि।

शरीफ²—वि० १ पाक। पवित्र जैसे,—मिजाज शरीफ। कुरान शरीफ। २ भला। नेक (को०)। ३ शिष्ट। सभ्य (को०)। ४. प्रतिष्ठित। सम्मानित (को०)।

यौ०—शरीफजादा = कुलीन व्यक्ति। शिष्ट एवं कुलीन परिवार का। शरीफजादी = कुलीन महिला। ऊँचे खानदान की स्त्री।

शरीफ³—संज्ञा पुं० [अ० शेरिफ] ब्रिटिश शासनकाल में कलकत्ते, बंबई और मद्रास में सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी।

विशेष—प्राय नगर के बड़े बड़े रईस और प्रतिष्ठित व्यक्ति कुछ निश्चित समय के लिये 'शरीफ' बनाए जाते हैं। इनके सुपुर्द शांतिरक्षा तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते हैं। यूरोप और अमेरिका आदि में भी इस प्रकार के अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं जिन्हें कुछ शासन संबंधी कार्य भी सौंपे जाते हैं। इनके अधिकार प्राय मजिस्ट्रेटों से कुछ मिलते जुलते होते हैं।

शरीफा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल या सीताफल] १. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध फलवाला वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष प्राय. सारे भारतवर्ष में फल के लिये लगाया जाता है और मध्य तथा पश्चिमी भारत के जंगली प्रदेशों में बहुत अधिकता से पाया जाता है। कहते हैं, यह वृक्ष वेस्ट-इंडीज से यहाँ आया है। इस वृक्ष की छाल पतली और खाकी रंग का, और लकड़ी कुछ मटमैलापन लिए सफेद रंग की होती है। इसके फल अमरूद के फल के सदृश, अंडाकार तथा अनीदार होते हैं। इसमें एक प्रकार के त्रिदल फूल लगते हैं जो नीचे की ओर झुके हुए होते हैं। ये फूल तरकारी बनाने के काम में आते हैं। यह वृक्ष गरमी के दिनों में फूलता है और कातिक अगहन में इसमें अमरूद के आकार के खाकी रंग के गोल फल लगते हैं। यह वृक्ष बीजों से उगता है और बहुत जल्दी बढ़कर फूलने लगता है। इसके पौधे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तब उखाड़कर दूसरे स्थान पर रोपे जाते हैं। इसकी छाल, जड़ और पत्तियों का व्यवहार औषधों में होता है। इसकी छाल बहुत दस्तावर होती है। इसके बीज में से एक प्रकार का तेल भी निकलता है और इसमें तीन तरह के गोंद भी लगते हैं।

२ इस वृक्ष का फल जो अमरूद के सदृश गोल और खाकी रंग का होता है। श्रीफल। सीताफल। रामसीता।

विशेष—इनके तल पर आँख के आकार के बड़े बड़े दाने होते हैं जिनके अंदर सफेद गूदे में लिपटे हुए काले लंबोतरे बीज होते हैं। इसका गूदा बहुत मीठा होता है, और इसी के लिये यह फल खाया जाता है। अकाल के दिनों में गरीब लोग प्राय जंगली शरीफे के फल खाकर निर्वाह करते हैं। वैद्यक में इसे मधुर, हृदय के लिये हितकारी, बलवर्धक, वातकारक, शक्तिवर्धक, तृप्तकारक, मांसवर्धक और दाह, पित्त, रक्तपित्त, प्यास, वमन, रुधिरविकार आदि के लिये लाभदायक माना है।

शरीर¹—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य या पशु आदि के समस्त अंगों की समष्टि। सिर से पैर तक के सब अंगों का समूह। देह। तन। बदन। जिस्म।

विशेष—'शरीर' शब्द से प्राय आत्मा से भिन्न और सब अंगों या अवयवों का ही भाव ग्रहण किया जाता है। पर हमारे यहाँ शास्त्रों में शरीर के दो भेद किए गए हैं—सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर। बुद्धि, अहंकार, मन, पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ, पाँचों कर्मेंद्रियाँ और पंच तन्मात्र के समूह को सूक्ष्म या लिंगशरीर कहते हैं। और, हाथ, पैर, मुँह, सिर, पेट, पीठ आदि अंगों का समूह स्थूल शरीर कहलाता है। इसी स्थूल शरीर में सूक्ष्म या लिंगशरीर का वास होता है। कहते हैं, जब जीव मर जाता है, तब उसका सूक्ष्म शरीर या लिंग शरीर उसके स्थूल शरीर में से निकलकर परलोक को जाता है।

पर्या०—कलेवर। गात्र। विग्रह। काय। मूर्ति। तनु। क्षेत्र। पिंड। स्कंध। पंजर। करण। वध। पुद्गल।

२ शारीरिक शक्ति (को०)। ३. जीवात्मा (को०)। ४ शव (को०)।

शरीर²—वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] पाजी। दुष्ट। नटखट।

शरीरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। तन। गात्र। २ लघु या छोटा शरीर। ३. आत्मा (को०)।

शरीरकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० शरीरकर्तृ] १. शरीर को बनानेवाला, परमेश्वर। सृष्टिकर्ता। २ पिता। जनक (को०)।

शरीरकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ परमेश्वर। २ पिता (को०)।

शरीरग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] शरीरयुक्त होना या जन्म लेना (को०)।

शरीरज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोग। बीमारी। २. कामदेव। ३. कामवासना। कामेच्छा (को०)। ४ पुत्र। लड़का। बेटा।

शरीरज²—वि० शरीर से उत्पन्न।

शरीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर का भाव या धर्म।

शरीरत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का भाव या धर्म। शरीरता।

शरीरदंड—संज्ञा पुं० [सं० शरीरदण्ड] १ शारीरिक दंड। काय-क्लेश (को०)।

शरीरदेश—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का कोई अवयव या अंग [को०]।

शरीरधर्म—संज्ञा पुं० [अ० शरीर+धर्म] चेष्टा। शरीरगत लक्षण। अनुभाव। (अं० सिम्टम्प)। उ०—वह एक वृत्तिचक्र है, जिसके अंतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीरधर्म सबका योग रहता है।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ८८।

शरीरधातु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर का घटक एक मुख्य तत्व। २. बुद्ध के शरीर का अवशेष (जैसे दात, हड्डी, बाल आदि)

शरीरनिपात—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु [को०]।

शरीरपतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना। २ मृत्यु। मौत।

शरीरपाक—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना।

शरीरपात—संज्ञा पुं० [सं०] देह का अंत या नाश। शरीरात। देहावसान। मृत्यु। मौत।

शरीरप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] पिता। जनक [को०]।

शरीरबंध—संज्ञा पुं० [सं० शरीरबन्ध] शरीर की बनावट शरीर का गठन या ढाँचा [को०]।

शरीरबंधक—संज्ञा पुं० [सं० शरीरबन्धक] ओल या प्रतिभू [को०]।

शरीरबद्ध—वि० [सं०] शरीरधारी [को०]।

शरीरभाज्—वि० [सं०] शरीरी। शरीरधारी। जीवधारी।

शरीरभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शरीर धारण किए हो। शरीरी। २. विष्णु। ३. जीवात्मा।

शरीरभेद—संज्ञा पुं० [सं०] (आत्मा या जीव का) शरीर से भिन्न या अलग होना। मृत्यु [को०]।

शरीरयष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर का आकार। २ पतला या क्षीण शरीर [को०]।

शरीरयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवननिर्वाह के साधन। वे साधन जिससे जीवन का पोषण हो। उ०—वहाँ वे शरीरयात्रा के स्थूल स्वार्थ से संश्लिष्ट होकर कलुषित नहीं होते।—रस०, पृ० १४८। २ जीवन। जिंदगी।

शरीररक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजा आदि के साथ उसके शरीर की रक्षा करने के लिये रहता हो। अंगरक्षक।

शरीररत्न—संज्ञा पुं० [सं०] भव्य एवं आकर्षक शरीर [को०]।

शरीरवान्—संज्ञा पुं० [सं० शरीरवत्] शरीरवाला। देहधारी।

शरीरविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं० शरीर+विज्ञान] शरीररचना के सभी अंगों और उपांगों के विवेचन से संबंध रखनेवाला विज्ञान। शरीरशास्त्र। (अं० एनाटमी)। उ०—पशुओं के शरीर विज्ञान को भी वे भली भाँति जानते थे।—पू० म० भा०, पृ० २७१।

शरीरविमोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा का शरीर से अलग होना। शरीरत्याग [को०]

शरीरवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वे पदार्थ जो शरीर का सौंदर्य बढ़ाने के लिये आवश्यक हों।

शरीरवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवन निर्वाह करने की वृत्ति। जीविका। २. दे० 'शरीरस्थिति'।

शरीरवेग—संज्ञा पुं० [सं० शरीर+वेग] शरीर की प्राकृतिक आवश्यकता या माँग। उ०—'भाव' मन की वेगयुक्त अवस्थाविशेष है वह क्षुत्पिपासा कामवेग आदि शरीरवेगों से भिन्न है।—रस०, पृ० १६४।

शरीरवैकल्य संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की विकलता। अस्वस्थता [को०]।

शरीरशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों नसों, नाड़ियों आदि का विवेचन होता है और जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है। शरीरविज्ञान।

शरीरशुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की सेवा करना। अपनी देह की सेवा करना। व्यक्तिगत सेवा [को०]।

शरीरशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] वह औषध जो कुपित मल, पित्त, तथा कफ को हटाकर उर्द्ध्व अथवा अधोमार्ग से निकाल दे।

शरीरसंपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० शरीरसम्पत्ति] शरीर की समृद्धि। अच्छा स्वास्थ्य।

विशेष—शरीरसंपत्ति के भीतर शरीर का सौंदर्य, गठन, उसकी महाप्राणता, स्वास्थ्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व आदि शरीररचना के सभी उत्तमोत्तम गुण आते हैं।

शरीरसंबंध—संज्ञा पुं० [सं० शरीरसम्बन्ध] १ विवाह का संबंध। २ नरनारी का परस्पर लैंगिक संबंध [को०]।

शरीरसंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक के मनुष्य के वेदविहित सोलह संस्कार। २ शरीर की शोभा तथा मार्जन। नाना प्रकार के अनुष्ठानों द्वारा शरीर को निर्मल करना [को०]।

शरीरसाद—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की क्लांति या थकान। शारीरिक थकावट [को०]।

शरीरस्थ—वि० [सं०] १ शरीर में रहनेवाला। २. जीवित। जीता हुआ।

शरीरस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर संबंधी सिद्धांत या तत्व [को०]।

शरीरस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शरीर का पालन पोषण या वृत्ति। २ भोजन करना। खाना [को०]।

शरीरांत—संज्ञा पुं० [सं० शरीरान्त] १ देह का अंत अथवा नाश। मृत्यु। देहांत। मौत। २ रोम। बाल। केश (को०)।

शरीरांतर—संज्ञा पुं० [सं० शरीरान्तर] १ दूसरा शरीर। दूसरा जन्म लेना। २ शरीर का भीतरी भाग [को०]।

शरीराधीन—वि० [सं०] देह के वश में रहनेवाला। शरीर का वशवर्ती उ०—रघु वह किस दिगंत में लीन। वेणु ध्वनि सी न शरीराधीन।—अपरा, पृ० १२१।

शरीरार्पण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य के निमित्त अपना शरीर को इस प्रकार लगा देना मानो उस पर अपना कोई स्वत्व ही न हो। उ०—कियो शरीरार्पण परकाजा। मदन सेचन कियो दराजा।—रघुराज (शब्द०)।

शरीरावरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ खाल । चमड़ा । २ वर्म । ढाल । ३ शरीर को ढकने की कोई चीज ।

शरीरास्थि—संज्ञा पुं० [सं० शरीर+अस्थि] कंकाल । पिंजर ।

शरीरी¹—संज्ञा पुं० [सं० शरीरिन्] [वि० स्त्री० शरीरिणी] १ वह जो शरीर धारण किए हो । शरीरवाला । शरीरवान् । २ आत्मा । जीव । ३ प्राणी । जीवधारी । ४ मनुष्य (को०) ।

शरीरी²—वि० १ शरीरधारी । शरीरयुक्त । २ जीवित । जीता हुआ (को०) ।

शरीष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ ।

विशेष—संस्कृत व्याकरण के अनुसार यह शब्द साधु नहीं है। इसका साधु रूप शरेष्ट है ।

शरु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रोध । गुस्सा । २ वज्र । ३ बाण । तीर । ४ आयुध । शस्त्र । हथियार । ५ हिंसा । हत्या । मार डालना । ६ वह जो हिंसा करता हो । हिंसक । ७ महाभारत के अनुसार एक गंधर्व का नाम । ८ विष्णु (को०) । ९ बाण चलाने का अभ्यास (को०) ।

शरु²—वि० १ बहुत पतला । २ जिसका अगला भाग बहुत ही छोटा या नुकीला हो ।

शरेज—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय ।

शरेष्ट¹—संज्ञा पुं० [सं०] आम । आम्र ।

शरेष्ट(पु)²—वि० [सं० श्रेष्ठ] दे० 'श्रेष्ठ' ।

शरै(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० शरअ] दे० 'शरअ' । उ०—परदे पैगंबर की सुर्गी, कायम करी साबित शरै ।—तुरसी० श०, पृ०, २६ ।

शर्क—संज्ञा पुं० [अ० शर्क] पूर्व । पूरब दिशा ।

शर्कर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंकड़ । २ बालू का कण । ३ जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का प्राणी । ४ पुराणानुसार एक देश का नाम । ५ इस देश का निवासी । ६ दे० 'शर्करा' । ७ एक तरह का ढोल (को०) ।

शर्करक—संज्ञा पुं० [सं०] मीठा नीबू । शरबती नीबू ।

शर्करकंद—संज्ञा पुं० [सं० शर्करकन्द] दे० 'शकरकंद' ।

शर्करजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीनी ।

शर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शक्कर । चीनी । खाँड । २ बालू का कण । ३ पथरी नामक रोग । ४ कंकड़ । ५ ठीकरा । ६ कंकरीली मिट्टी । कंकड़ से युक्त मिट्टी (को०) । ७ खंड । टुकड़ा (को०) । ८. पुराणानुसार एक देश का नाम जो कूर्म चक्र के पुच्छ भाग में है । ९. एक प्रकार का रोग ।

विशेष—इसमें त्रिदोष के कारण मांस, शिरा और स्नायु में गाँठ उत्पन्न होती है । गाँठ के फूटने से शहद, घी और चर्बी के समान पीब निकलता है और वायु के बढ़ने से अनेक गाँठें उत्पन्न होती हैं ।

शर्कराकर्षी—वि० [सं० शर्कराकर्षिन्] बालुकायुक्त । बालू, कंकड़ आदि को उड़ाने या खींचनेवाला (को०) ।

शर्कराक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] चरक के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शर्कराचल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार चीनी का वह पहाड़ जो दान करने के लिये लगाया जाता है ।

शर्कराधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार चीनी की वह गौ जो दान करने के लिये बनाई जाती है ।

शर्कराप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों के अनुसार एक नरक का नाम ।

शर्करा प्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र का रंग मिस्री का सा हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा निकलती है ।

शर्करार्बुद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग । विशेष दे० 'शर्करा'—९ ।

शर्कराल—वि० [सं०] जो कंकड़ से भरी हुई हो (हवा) । कंकड़ीली (आँधी) (को०) ।

शर्करावत्¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग । विशेष दे० 'शर्करा'—९ ।

शर्करावत्²—वि० कँकरीला । कर्कर से युक्त । बालुकामय (को०) ।

शर्करा सप्तमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला सप्तमी ।

विशेष—पुराणानुसार उस दिन सुवर्ण का पूजन किया जाता है और उसके आगे घड़े में चीनी भरकर रखी जाती है ।

शर्करासव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मद्य या शराब ।

विशेष—यह चीनी से तैयार की जाती है । चरक के अनुसार यह स्वादिष्ट, सुगंधित, पाचक और वायुरोगनाशक है ।

शर्करासुरभि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शर्करासव' ।

शर्करिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शर्करिकी] १ शर्करायुक्त । शर्कर सहित । २ कँकड़ीला (को०) ।

शर्करिल—वि० [सं०] दे० 'शर्करावत्' ।

शर्करी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरों का एक वृत्त । इसके कुल १६, ३८४ भेद होते हैं जिनमें १३ मुख्य हैं । २ नदी । दरिया । ३ मेखला । ४ लिखने की कलम । लेखनी ।

शर्करी²—वि० [सं० शर्करिन्] पथरी नामक रोग से आक्रांत । शर्करा रोग से ग्रस्त (को०) ।

शर्करीय—वि० [सं०] शर्करा संबंधी । चीनी का ।

शर्करोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चीनी घोला हुआ पानी । शरबत । २ वह शरबत जिसमें इलायची, लौंग, कपूर और गोल मिर्च मिली हो ।

विशेष—वैद्यक में इसे बलवर्धक, रुचिकारक, वायु, पित्त तथा रक्तदोष का नाशक और वमन, मूर्छा, दाह और तृष्णा आदि को शमन करनेवाला माना गया है ।

शर्की—वि० [अ० शर्की] पूरब का । पूर्वीय (को०) ।

शर्कुर—वि० [सं०] तरुण। युवक। जवान [को०]।

शर्कोटि—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

शर्जा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शर्ज़ह्] चीता। शेर। उ०—कमर के क्यो कहूँ इसके यो शर्जा। कमर को किए सामने शर्जा भी हुर्जा।—दक्खिनी०, पृ० २८०।

शर्ट—संज्ञा स्त्री० [अ०] पहनने का सिला हुआ एक कपड़ा। कमीज।

शर्णचापिलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शर्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दो व्यक्तियों या दलों में होनेवाली ऐसी प्रतिज्ञा कि अमुक बात होने या न होने पर हम तुमको इतना धन देंगे, अथवा तुमसे इतना धन लेंगे। बाजी जिसमे हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो। बाजी। दाँव। बदान।

क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—बाँधना।—रहना।—लगना।—हारना।

२. किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित होनेवाली बात या कार्य जिसके न होने से उस काम में बाधा उपस्थित हो। जैसे,—मैं चलने के लिये तैयार हूँ, पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ चलें। (ख) हम इस शर्त पर रुपया देंगे कि आप उसके जिम्मेदार हों। (ग) उन्होंने कई ऐसी शर्तें लगाई हैं कि जिनके कारण काम होना बहुत कठिन है। ३. संधि या समझौता आदि के अंगभूत नियम। जैसे,—भारत और रूस की संधि की शर्तें इस प्रकार हैं।

क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

मुहा०—शर्त बदकर सोना = देर तक या लंबी नींद सोना। शर्त बदना या बाँधना = बाजी रखना या लगाना। शर्त होना = शर्त या बाजी करना।

शर्तबंद—वि० [अ० शर्त + फ़ा० बंद] १. शर्त से युक्त या बँधा हुआ। २. प्रतिज्ञापत्र के अनुसार निश्चित समय तक अनिवार्य मजदूरी करनेवाला। दे० 'गिरमिटिया'।

शर्तिया¹—क्रि० वि० [अ० शर्तियह्] शर्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढतापूर्वक। जैसे,—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आपका काम जरूर हो जायगा।

शर्तिया²—वि० १ बिलकुल ठीक। निश्चित। जैसे,—यह तो इस बीमारी की शर्तिया दवा है। २. अनिवार्य। लाजिम।

शर्ती¹—वि० [अ०] १ शर्तवाला। २ शर्तसंबंधी [को०]।

शर्ती²—क्रि० वि० दे० 'शर्तिया'।

शर्दि—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन नगर का नाम।

शर्द्धंजह, शर्धंजह—संज्ञा पुं० [सं० शर्द्धञ्जह] १. वह जो वायुकारक हो। २ माष। उरद [को०]।

शर्द्ध, शर्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ तेज। शक्ति। २. सेना। फौज। ३ अपान वायु का त्याग करना। पादना।

शर्द्धन, शर्धन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अधोवायु। पाद। २ पादने की क्रिया। पादना (को०)।

शर्बत—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'शरबत'।

शर्बती—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'शरबती'।

शर्म¹—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'शरम'। उ०—मुद्रा संतोष शर्म पति झोली। गुरमुखि जोगी तत्तु विरोली।—प्राण०, पृ० १०६।

मुहा०—शर्म आना, शर्म करना = लाज या लिहाज करना। शर्म की बात = लज्जाकारक कार्य। शर्म से गठरी हो जाना = (१) नई बहू का लाज से सिकुड़कर बैठना। (२) लज्जा से गड़ जाना। शर्म और दया भून खाना = शर्म को जान बूझकर छोड़ देना। उ०—उस छोकरी ने तीखी चितवन करके कहा—ओ मरदूये शर्म और हया भून खाई। आँखें बंद कर ले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १४६।

यौ०—शर्मगाह = (१) गोपनीय या आवृत किए जानेवाले अंग। भग। योनि। शर्मनाक = लज्जाजनक। शर्रामिंदा करनेवाला। उ०—प्रत्येक शर्मनाक और जलील स्थिति में वह मनुष्य की निकृष्ट से निकृष्ट भावनाओं का एक कलाकार की पैनी दृष्टि से विश्लेषण करता था।—प्रेम० और गोर्की, पृ० १०। शर्मसार = लज्जित। शर्रामिंदा। उ०—हव्वा और होर आदम कहे यूँ पुकार। हमे तो मेरे मुक सूँ है शर्मसार।—दक्खिनी०, पृ० ३३४। शर्मेहुजूर, शर्मेहुजूरी = दे० 'शरम हुजूरी'।

शर्म²—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख। आनंद। २. वह जो सुखी हो। ३ गृह। घर। ४ आशीर्वाद। दुआ। (को०)। ५ रक्षण। रक्षा। आश्रय (को०)।

शर्मण्य—वि० [सं०] भाला। रक्षक। शरण देनेवाला [को०]।

शर्मद, शर्मप्रद¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक। उ०—कृष्णचंद को प्रिय अधिकारी। शर्मद धरा धर्म धुरधारी।—कबीर (शब्द०)। (ख) तीर शर्मदा नर्मदा करत भयो नृप वास।—(शब्द०)।

शर्मद, शर्मप्रद²—संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

शर्मन्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शर्मा'।

शर्मर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र या पहनावा।

शर्मरा, शर्मरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दारु हल्दी।

शर्मा¹—संज्ञा पुं० [सं० शर्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि। जैसे,—ब्रह्मदेव शर्मा।

शर्मा²—वि० आनंदित। प्रसन्न। सुखी।

शर्माऊ†—वि० [फ़ा० शर्म + हिं० आऊ (प्रत्य०)] शर्मानेवाला। शर्मीले स्वभाव का।

शर्माख्य—संज्ञा पुं० [सं०] मसूर।

शर्माना—क्रि० अ०, क्रि० स० [फ़ा० शर्म + हिं० आना] दे० 'शरमाना'।

शर्मालू—वि० [फ़ा० शर्म + हिं० आलू (प्रत्य०)। शर्मानेवाला। शरमीला।

शर्माशर्मी—क्रि० वि० [फ़ा० शर्म] लज्जावश। लज्जापूर्वक।

शर्मिंदा—वि० [फ़ा० शर्मिंदह्] दे० 'शरमिंदा'।

शर्मिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या का नाम

जो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी। विशेष दे० 'देवयानी'।

शर्मीला—वि० [फा० शर्म+हिं० ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शर्मीली] दे० 'शरमीला'।

शर्य¹—वि० [सं०] हिंस्र। हिंसक। घातक [को०]।

शर्य²—संज्ञा पुं० १ शत्रु। योद्धा। २ वाण।

शर्यण—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक जनपद का नाम जो कुरुक्षेत्र के अंतर्गत था।

शर्यणावत्—संज्ञा पुं० [सं०] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।

शर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। रात। २ उँगली। अँगुली। ३ तीर इषु। वाण।

शर्यात—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

शर्याति—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक राजा का नाम जिसकी कन्या 'सुकन्या' महर्षि च्यवन को व्याही गई थी। २ भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

शर्र—संज्ञा पुं० [अ०] १ झगडा। कलह। २ दुष्टता। बुराई [को०]।

यौ०—शर्रोफसाद=कलह। झगडा।

शर्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। शंकर। महादेव। उ०—यो थल के बिनु कष्ट सो नाचत शर्व हरौ दुख सर्व तुम्हारे।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० १३५। २ विष्णु।

शर्वक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्वपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. लक्ष्मी।

शर्वपर्वत—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शर्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। अँधेरा। २ कामदेव। ३ सध्या।

शर्वरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात। रात्रि। निशा। २ साँझ। सध्या। शाम। ३ हल्दी। दरिद्रा। ४ स्त्री। औरत।

शर्वरी²—संज्ञा पुं० [सं० शार्वरिन्] वृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौंतीसवाँ सवत्सर। कहते हैं, इस सवत्सर में दुर्भिक्ष का भय होता है।

शर्वरीक—वि० [सं०] नुकसान करनेवाला। हानिकारक।

शर्वरीकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ चद्रमा (को०)।

शर्वरीदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

शर्वरीनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा [को०]।

शर्वरीपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। २ शिव। महादेव।

शर्वरीश, शर्वरीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

शर्वला, शर्वली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तोमर नामक अस्त्र। लौहदंड [को०]।

शर्वाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वाचल—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शर्वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शर्शरीक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसक। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. घोडा। ४. अग्नि।

शर्शरीक²—वि० दुष्ट [को०]।

शलकट—संज्ञा पुं० [सं० शलङ्कट] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलकु—संज्ञा पुं० [सं० शलङ्कु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलग—संज्ञा पुं० [सं० शलङ्ग] १ लोकपाल। राजा। प्रभु। २ एक प्रकार का नमक।

शलदा—संज्ञा पुं० [सं०] पाताल गारुडी। वन जमुनी। छिरेंटा। छिरइटा।

शल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कस के एक मल्ल का नाम। उ०—और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गए सब भाज।—सूर (शब्द०)। २ ब्रह्मा। ३ ऊँट। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ शल्यराज का एक नाम। विशेष दे० 'शल्यराज'। ६ भाला। ७. साही का काँटा। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोडकर शल गया। नाम रहे पर काम बराबर चल गया।—साकेत, पृ० १३७। ८ भृंगी या भृंगी जो शिव के पारिषद् है। ९ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ११ वासुकी के वश के एक नाग का नाम।

शल²—वि० [अ० शल्ल] निश्चेष्ट। सुन्न। जो हिलाया न जा सके। उ०—हाथ नट जाय, शल हथेली हो। उँगलियाँ पोर पोर कट जावें।—चुभते०, पृ० ३६।

शलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकडी। २ ताल। ताड वृक्ष। ३. साही का काँटा। ४ पक्षी (को०)।

शलकर—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शलगम—संज्ञा पुं० [फा० शलगम] दे० 'शलजम'।

शलजम—संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक प्रकार का कद शलगम।

विशेष—यह कद प्राय सारे भारत मे जाडे के दिनो मे होता है यह गाजर से कुछ बडा और प्राय गोल होता है और तरकारी, अचार और मुरब्बे आदि बनाने के काम आता है यूरोप मे इससे चीनी भी निकाली जाती है।

शलजमी—वि० [फा० शलजम] १ शलजम जैसा या शलजम से मिलता जुलता। २ शलजम के समान (रंग)।

यौ०—शलजमी आँखें=बडी आँखें।

शलभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ टीडी। टिड्डी। शरभ। २ एक असुर का नाम। ३. पतगा। फतिंगा। उ०—किंतु शलभवर! उसे न छेडो, सोने दो उसको उस पार। वहीं स्वप्न मे पा लेगी वह अपने प्रियतम का उपहार।—वीणा, पृ० ३३।

विशेष—कविता मे यह प्रेमी का प्रतीक माना जाता है।

४ छप्पय के ३१ वें भेद का नाम। इसमे ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

शलभता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शलभ का भाव या धर्म।

शलभत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शलभ का भाव या धर्म। शलभता।

शलल—संज्ञा पुं० [सं०] १ साही। २ साही का काँटा।

शललचचु—संज्ञा पुं० [सं० शललचञ्चु] शल्लकीलोम या साही के काँटे की लेखनी [को०]।

शलाकधूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शलाकाओं आदि की सहायता से पक्षियों को पकड़ता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २ देईमान जुआड़ी (को०)।

शलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे या लकड़ी आदि की लंबी सलाई। सलाख। सीख। २ वह सलाई जिसमें घाव की गहराई आदि नापी जाती है। ३. बाण। शर। तीर। ४ अस्थि। हड्डी। ५. मदनवृक्ष। मैनफल। ६ तिनका। तृण। ७ सारिका पक्षी। मैना। ८ सलई। शल्लकी वृक्ष। ९ सुरमा लगाने की सलाई। १० खेलने का पासा। ११ वच। वचा। १२ रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगरी का नाम। १३ नली की हड्डी। १४ मतदान के लिये पर्चियों की भाँति काम में आनेवाली लकड़ी की सलाइयाँ।—उ०—एक पुरुष सदस्यों को रंग रंग की लकड़ी की सलाकाएँ बाँट देता था और समझा देता था कि प्रत्येक रंग का अर्थ क्या है।—हिंदु० स०, पृ० २५६। १५ साँग। नेजा। भाला (को०)। १६. तीली। जैसे, छत्रशलाका (को०)। १७ तूलिका। कूँचो (को०)। १८. साही नामक जानवर (को०)। १९ अंकुर। अँखुआ (को०)। २० उँगली। जैसे, शलाकानख (को०)। २१. दात साफ करने की कूँची (को०)। २२ शासक। शास्ता (को०)। २३ कील। खूँटी (को०)। २४ पिंजड़े या खिड़की आदि का छड़ (को०)। २५ रेखा खींचने की नोकदार सिलाई (को०)।

शलाका ग्राहापक—संज्ञा पुं० [सं०] मतदान के लिये बँटी हुई शलाकाओं को एकत्रित करनेवाला अधिकारी। उ०—जो अधिकारी शलाकाओं को फिर एकत्रित करते थे उनका नाम शलाका ग्राहापक होता था।—हिंदु० स०, पृ० २१०।

शलाकाधूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शलाकधूर्त'।

शलाका परीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यार्थी की वह परीक्षा जिसमें ग्रंथ में शलाका डालने से जो पृष्ठ सामने आ जाय उसी की परीक्षा ली जाती थी।

शलाकापुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्धों जैनों के तिरसठ अवतारी पुरुष। देवपुरुष। जैसे, त्रिषष्ठि शलाकापुरुष चरित्र। उ०—कभी किसी शलाकापुरुष ने ब्राह्मण कुल में जन्म नहीं लिया।—हिंदु० स०, पृ० २७३।

विशेष—इन शलाकापुरुषों में १२ चक्रवर्ती, २४ जिन, ९ वासुदेव, ९ बलदेव और ९ प्रतिवासुदेव माने जाते हैं। इस प्रकार ६३ शलाकापुरुष माने गए हैं।

शलाकायंत्र—संज्ञा पुं० [सं० शलाकायन्त्र] एक नोकदार शल्योपकरण (को०)।

शलाख—संज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] दे० 'सलाख'।

शलाट—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार दो हजार पल का परिमाण। शकट।

शलाटु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्चा फल। २. बेल। बिल्व। ३ एक प्रकार का कंद (को०)।

शलाटु[2]—वि० जो पका न हो। कच्चा। अपक्व (को०)।

शलातुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम जो पाणिनि का निवासस्थान था।

शलायल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलाभोलि—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट।

शलालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगंधिद्रव्य।

शली—संज्ञा स्त्री० [सं०] साही नामक जंतु जिसके सारे शरीर पर काँटे होते हैं।

शलीता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र। दे० 'सलीता'।

शलूका—संज्ञा पुं० [फा०] आधी या पूरी बाँह की एक प्रकार की कुरती जो प्रायः स्त्रियाँ पहना करती है।

शल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ टुकड़ा। खंड। २ छिलका। ३ वृक्ष की छाल। वल्कल। ४ मछली के ऊपर का छिलका।

शल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मछली का छिलका। २ वृक्ष की छाल। ३ छिलका ४. खंड। टुकड़ा।

शल्कली—संज्ञा पुं० [सं० शल्कलिन्] मछली। मत्स्य। मीन।

शल्की—संज्ञा पुं० [सं० शल्किन्] मत्स्य। मीन (को०)।

शल्प—संज्ञा पुं० [देश०] १ बाढ़। २. बौछार। भरमार। ३. धड़ाका। कड़ाका।

शल्पदा, शल्पपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषध।

शल्मलि—संज्ञा पुं० [सं०] शाल्मली वृक्ष। सेमल।

शल्मली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शाल्मली वृक्ष।

शल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्र देश के एक राजा का नाम।

विशेष—राजा पांडु की दूसरी स्त्री माद्री (जिसके पुत्र नकुल और सहदेव थे) के ये भाई थे और इस संबंध से ये पांडवों के मातुल होते थे। द्रौपदी के स्वयंवर के समय ये भीमसेन के साथ मल्लयुद्ध में हार गए थे। कुरुक्षेत्र के युद्ध में ये पांडवों की ओर से लड़ने के लिये जा रहे थे पर दुर्योधन ने अपनी चातुरी से इन्हें अपनी ओर कर लिया था। फलस्वरूप इन्होंने दुर्योधन का ही पक्ष ग्रहण किया था। युद्ध के १६ वें और १७ वें दिन महावीर कर्ण के ये सारथी हुए थे। कर्ण की मृत्यु के अनंतर १८ वें दिन ये सेनापति बनाए गए थे और युधिष्ठिर द्वारा मारे गए थे।

२ एक प्रकार का बाण। ३. अस्त्रचिकित्सा। चीरफाड़ का इलाज। (अं०) सर्जरी। उ०—सुश्रुत में शल्यचिकित्सा का चरम उत्कर्ष देखने को मिलता है।—पू० म० भा०, पृ० २६७। ४ छप्पय के ५६ वें भेद का नाम। इसमें १५ गुरु और १२२ लघु, कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५. हड्डी। अस्थि। ६ अंजन लगाने की सलाई। शलाका। ७. मैनफल। मदन वृक्ष। ८. सफेद खैर। ९. शिलिंद मछली। १०. लोध। लोध्र वृक्ष। ११ बेल। बिल्व वृक्ष। १२ साही नामक जंतु। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोड़कर शल

गया। नाम रहे पर काम बराबर चल गया।—साकेत, पृ० १३७। १३ साँग नामक अस्त्र। १४ दुर्वाक्य। १५ पाप। १६ जमीन मे गडी हुई जानवरो आदि की हड्डियाँ जो मकान बनाने के समय निकालकर फेंकी जाती हे। १७ जैन सिद्धात के अनुसार वे भ्रमात्मक धारणाएँ जिनमे बचना धर्माचरण के लिये अनिवार्य माना गया है। उ०—व्रत या धर्म के पालन के लिये तीन तीन शल्यो का अभाव आवश्यक है।—हिंदु० स०, पृ० २३२। १८ वे पदार्थ जिनसे शरीर मे किसी प्रकार की पीडा या रोग आदि उत्पन्न होता है।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार ये शल्य दो प्रकार के होते है—शरीर और आगतु। यदि वात, पित्त आदि के दोष से रोएँ, नाखून, शरीर के धातु, अन्न, मल आदि कुपित होकर पीडा या रोग उत्पन्न करें तो उसे शारीर शल्य कहते है। और इनके अतिरिक्त जो और बाहरी पदार्थ (लोहा, लकडी, सीग आदि) शरीर मे पीडा या रोग उत्पन्न करें, तो उन्हे आगतु शल्य कहते हैं।

१९ काँटा। खपची। २० कील। मेख। खूँटी (को०)। २१ घेरा। बाड (को०)।

शल्यकठ—सज्ञा पु० [स० शल्यकण्ठ] साही नामक जतु।

शल्यक—सज्ञा पु० [स०] १ साही नामक जतु। २ मैनफल। मदन वृक्ष। ३ सफेद खैर। ४ लाल खैर। ५ एक प्रकार की मछली। ६. लोध वृक्ष। ७ बेल। बिल्व। ८ भाला (को०)। ९ काँटा (को०)। १० व्याध। बहेलिया (को०)।

शल्यकर्तन—सज्ञा पु० [स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

शल्यकर्त्ता—सज्ञा पु० [स० शल्यकर्तृ] वह जो शस्त्रचिकित्सा करता हो। चीरफाड़ का इलाज करनेवाला।

शल्यकी—सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी ? या स० शल्यक(=साही)+ई (स्त्री० प्रत्य०)] साही नामक जतु। उ०—रोम राम वेध्या तनु बाणन। भया शल्यकी सारस दशानन।—रघुराज (शब्द०)।

शल्यक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड का इलाज। शस्त्रचिकित्सा।

शल्यचिकित्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यज—वि० [स०] व्रण या घाव आदि से उत्पन्न।

शल्यज नाडीव्रण—सज्ञा पु० [स०] नाडी मे होनवाला एक प्रकार का व्रण या घाव।

विशेष—जब किसी घाव मे काँटा या ककड आदि पडकर किसी नाडी मे पहुँच जाता और वही रह जाता है, तब जो व्रण होता है, वह शल्यज नाडीव्रण कहलाता है। इसमे घाव मे से गरम खून के साथ मवाद निकलता है।

शल्यज मूत्रकृच्छ्र—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का मूत्रकृच्छ्र। विशेष दे० 'मूत्रकृच्छ्र'।

शल्यतत्र—सज्ञा पु० [स० शल्यतन्त्र] सुश्रुत के अनुसार आठ प्रकार के तत्रो मे से एक तत्र जिसमे चीरफाड के यत्रो, शस्त्रो, क्षारो और अग्निकर्म आदि के प्रयोगो का वर्णन होता है।

शल्यदा—सज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्णिका, शल्यपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्व—सज्ञा पु० [स० शल्यपर्वन्] महाभारत का नवाँ पर्व (को०)।

शल्यप्रोत—वि० [स०] जिसके शरीर मे वाण घुसा हो।

शल्यलोम—सज्ञा पु० [स० शल्यलोमन्] साही नामक जतु का काँटा।

शल्यविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड की चिकित्सा। सर्जरी।

शल्यशालक—सज्ञा स्त्री० [स०] फोडो आदि की चीरफाड का काम।

शल्यशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] १ चिकित्सा शास्त्र का वह अग जिसमे शरीर मे गडे हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। २ दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यहृत्—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो कुश कटक आदि को काटकर साफ कर दे। २ शल्यचिकित्सक। चीरफाड करनेवाला चिकित्सक। (अं०) सर्जन।

शल्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेदा नाम की ओषधि। २. नागवल्ली नाम की लता। ३ विककत वृक्ष। ४ एक प्रकार का नृत्य (को०)।

शल्यारि—सज्ञा पु० [स०] शल्य को मारनेवाले युधिष्ठिर।

शल्याहरण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्यित—वि० [स०] शल्ययुक्त। विद्ध (को०)।

शल्योद्धरण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्योद्धार—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर मे लगे हुए वाण या काँटे आदि निकालने की क्रिया। २ वास्तुविद्या के अनुसार नया मकान बनवाने के समय जमीन को साफ करना और उसमें की हड्डियाँ आदि निकलवाकर फेंकवाना।

शल्ल¹—सज्ञा पु० [स०] १. चमडा। २ वृक्ष की छाल। ३ मेढक।

शल्ल²—वि० [अ०] १ (अग) जो दुर्बलता या थकावट आदि के कारण बिल्कुल शिथिल, सुस्त या सुन्न हो गया हो। २. काहिल। आलसी (को०)।

शल्लक—सज्ञा पु० [स०] १ शोण वृक्ष। सलई। २ साही नामक जतु। ३. चमडा।

शल्लकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. साही नामक जतु। २ सलई का वृक्ष।

शल्लकीद्रव—सज्ञा पु० [स०] शिलारस। सल्हक।

शल्लकीरस—सज्ञा पु० [स०] शिलारस। सिल्हक।

शल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] नाव। नौका।

शल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साही नामक जतु। २. शल्लकी का वृक्ष। सलई।

शल्व(पु)—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शाल्व'। उ०—निराकरन जब भीष्म किय, तब अबिका उदास। लौट गई अपने भवन, शल्व भूप के पास।—रघुराज (शब्द०)।

शव—सज्ञा पु० [स०] १ मृत शरीर। प्राणरहित देह। लाश। मुर्दा।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के मृत शरीर के लिये होता है।

२ जल। पानी।

शवकर्म—संज्ञा पुं० [सं० शवकर्मन्] मृतक कर्म। दाह आदि मृतक संस्कार।

शवकाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] कुक्कुर। कुत्ता।

शवकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

शवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्प्राणता। निर्जीवता। उ०—जिसमे सब कुछ ले लेना हो हत। बची क्या शवता।—बी० श० महा०, पृ० १७३।

शवदहन, शवदाह—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव।

यौ०—शवदहन स्थान, शवदाह स्थान = मरघट। मसान।

शवधान—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुमार एक प्रदेश का नाम जिसे शरधान भी कहते है।

शवभस्म—संज्ञा पुं० [सं०] चिता का भस्म। मरघट की राख। उ०—शवभस्म विभूषित भूरि गण।—रघुनाथ (शब्द०)।

शवमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान। मरघट।

शवयान—संज्ञा पुं० [सं०] अरथी जिसपर शव ले जाते हैं। टिकठी।

शवर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शवरी] १ एक पहाड़ी जगली जाति।

विशेष—इस जाति के लोग मोरपख से अपने को सजाते हैं। ये लोग अब तक मध्यप्रदेश और हजारीबाग आदि जिलों मे रहते और 'सौर' कहलाते हैं।

२. शव। ३ जल।

शवरथ—संज्ञा पुं० [सं०] शवयान। अरथी। टिकठी।

शवरलोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद लोध।

शवरालय—संज्ञा पुं० [सं०] शवरों का गृह। पक्कण (को०)।

शवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी।

विशेष—सीता जी को ढूँढते हुए रामचद्र जी इस तपसी के आश्रम मे पहुँचे थे। इसने राम की अभ्यर्थना की थी और उन्ही की अनुमति से उनके सामने ही चिता मे प्रविष्ट होकर यह स्वर्ग को सिधारी थी।

२ शवर जाति की स्त्री।

शवल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. चीता। चित्रक। २ जल। पानी।

शवल²—वि० [वि० स्त्री० शवली] चितकबरा। चित्तल। चीतल।

शवला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चितकबरी गाय।

शवलित—वि० [सं०] १. मिश्रित। मिला हुआ। २ चित्रविचित्र। चित्रकर्बुर। चितकबरा।

शवली¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] चितकबरी गाय।

शवली²—वि० चितकबरी। उ०—अथवा मधुकरों की शवली अवली नवली नलिनी के चारों ओर गूँजती जान पडती थी।—श्यामा०, पृ० २५।

शवशय—संज्ञा पुं० [सं०] कमल (को०)।

शवशयनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

शवशयन—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान। मरघट।

शवशिविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अरथी (को०)।

शवस्—संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति। बल। ताकत (को०)।

शवसमाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शव को मिट्टी मे गाडना या पानी मे डुबो देना।

शवसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शवसाधना] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का साधन।

विशेष—यह तांत्रिक साधन है जो श्मशान मे किसी व्यक्ति के शव या मृत शरीर पर बैठकर अथवा उसे सामने रखकर किया जाता है। कहते हैं, इस प्रकार के साधन से साधक को सिद्धि और अनत पद प्राप्त होता है।

शवसान—संज्ञा पुं० [सं०] १ पथिक। यात्री। २ मार्ग। पथ (को०)। ३ श्मशान। कब्रिस्तान (को०)। ४ अग्नि (को०)।

शवाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिता की आग (को०)।

शवाच्छादन—संज्ञा पुं० [सं०] कफन (को०)।

शवान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अन्न जो बिलकुल खराब हो गया हो और किसी काम का न रह गया हो। २ मनुष्य के शव या मृत शरीर का मास।

शवाश—वि० [सं०] शव का मास खानेवाला। शवभक्षी (को०)।

शव्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह कृत्य या उत्सव जो शव को अंत्येष्टि क्रिया के लिये ले जाने के समय होता है।

शव्य²—वि० शव संबंधी (को०)।

शव्वाल—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का दसवाँ महीना। हिजरी का दसवाँ महीना।

शश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ खरहा। खरगोश। २ चद्रमा का लाछन या कलक। ३ लोध्रवृक्ष। लोध। ४ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक भेद।

विशेष—रतिमंजरी के अनुसार जो मनुष्य मृदु वचन बोलता हो, सुशील, कोमलांग, सुदर केशोंवाला, सत्यवादी और सकल-गुण-संपन्न हो, वह शश जाति का माना जाता है।

५ बोल नामक गध द्रव्य। गध रस। ६. मृग। हरिण (को०)।

शश²—वि० [फ़ा०] छह्। षट्।

यौ०—शशखाना = मकान जिसमे छह कोठरियाँ हों। शशदर = (१) चौसर के खेल मे एक घर जहा गोटी बद हो जाती है। (२) चकित। शशपंज = सकोच। उधेडबुन। शशपहलू = षट्कोण। शशपाया = जिसमे छह पाए हों। शशमाहा = छह मास का। शशमाही = पाण्मासिक। छमाही।

शशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. खरगोश। खरहा। २. कामशास्त्रानुसार पुरुष का एक भेद। विशेष दे० 'शश' (को०)।

शशगानी—संज्ञा पुं० [फ़ा० शश (= छह् + गानी)] चाँदी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य मे प्रचलित था। यह लगभग दुअन्नी के बराबर होता था।

शशघातक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शशघाती'।

शशघाती—संज्ञा पुं० [सं० शशघातिन्] बाज या श्येन नामक पक्षी। हरगोला।

शशदर—वि० [फा०] हक्का बक्का। चकित। आश्चर्यपूर्ण। उ०—देख लेगा अगर वह रुख की तजल्ली तेरे, आइना खानए मायूसी मे शशदर होगा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८५७।

शशधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। २ कपूर। कर्पूर।

यौ०—शशधरमुखी = चद्रमा की तरह सुंदर मुखवाली। चद्रमुखी। शशधरमौलि = शिव। शकर (को०)।

शशपद—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश के पैरो का चिह्न (को०)।

शशप्लुतक—संज्ञा पुं० [सं०] नखक्षत (को०)।

शशबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० शशबिन्दु] १ विष्णु। २ चित्ररथ के एक पुत्र का नाम। ३ चद्रमा (को०)।

शशभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। २ कपूर।

यौ०—शशभृत्भृत = शिव। चद्रमौलि।

शशमाही—वि० [फा०] हर छह महीने पर होनेवाला। छमाही। अर्धवार्षिक।

शशमुंड—संज्ञा पुं० [सं० शशमुण्ड] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

शशमौलि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव, जिनके मौलि पर चद्रलाछन है।

शशयान—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

शशरज—संज्ञा पुं० [सं० शशरजस्] एक प्रकार की विशेष माप।

शशलक्षण, शशलक्ष्मण—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

शशलाछन—संज्ञा पुं० [सं० शशलाञ्छन] १ चद्रमा। २. कपूर (को०)।

शशविंदु—संज्ञा पुं० [सं० शशबिन्दु] दे० 'शशबिंदु'।

शशविषाण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शशशृङ्ग'।

शशशिंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शशशिम्बिका] जीवती। डोडी।

शशशृंग—संज्ञा पुं० [सं० शशशृङ्ग] कोई असभव और अनहोनी बात। वैसा ही असभव कार्य जैसा खरगोश को सीग होना होता है। आकाशकुसुम की सी असभव बात।

शशस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] गगा और यमुना के मध्य का प्रदेश। दोआब।

शशाक—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्क] १ चद्रमा। २ कपूर। ३. हर्षवर्धन का समकालीन गुप्तवंशीय एक प्रतापी राजा जो गौड देश का अधिपति था।

शशाकज—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कज] बुध जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशाकमुकुट—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कमुकुट] शिव। महादेव।

शशाकमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कमूर्ति] चद्रमा का एक नाम (को०)।

शशाकलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं० शशाङ्कलेखा] चद्रमा की रेखा या कला (को०)।

शशाकशत्रु—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कशत्रु] राहु (को०)।

शशाकशेखर—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कशेखर] महादेव। शिव।

शशाकसुत—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कसुत] बुध ग्रह जो शशाक या चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशाकार्ध—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कार्ध] १ शिव। २. अर्ध चद्र।

शशाकार्धमुख—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कार्धमुख] अर्धचद्र के आकार का वाण (को०)।

शशाकित—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कित] १ वह जिसमे शश का चिह्न हो। चद्रमा। २. वह जो शशाक से युक्त हो।

शशाकोपल—संज्ञा पुं० [सं० शशाङ्कोपल] चद्रकात मणि।

शशाडुलि, शशाडुली—संज्ञा स्त्री० [सं० शशाण्डुल, शशाण्डुली] कड़वी ककडी।

शशाणु—संज्ञा पुं० [सं० शशक] दे० 'शश'।

शशाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाज। श्येन पक्षी। २. भागवत के अनुसार इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम।

शशादन—संज्ञा पुं० [सं०] बाज नाम का पक्षी।

शशि—संज्ञा पुं० [सं० शशिन्] १ चद्रमा। इदु। २ छप्पय के ५४वें भेद का नाम। इसमे १७ गुरु और ११८ लघु, कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। ३ रगण के दूसरे भेद (।।ऽ) की सज्ञा। ४. मोती। ५ एक की संख्या। उ०—इहि भाति कीन्हचो युद्ध शिव शशि मास लव हहरयो हियो।—रघुनाथ (शब्द०)।

शशिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २. इस जनपद मे रहनेवाली जाति।

शशिकर—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा की रश्मि या किरण।

शशिकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चद्रमा की कला। २. एक प्रकार का वृत्त। इसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है। इसको 'मणिगुण' और 'शरभ' भी कहते है।

शशिकात—संज्ञा पुं० [सं० शशिकान्त] १ चद्रकात मणि। २. कुमुद। कोई। बघोला।

शशिकुल—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रवश। उ०—शशिकुल छत्र शिरोमणि ग्राही।—गर्गसंहिता (शब्द०)।

शशिकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

शशिकोटि—संज्ञा पुं० [सं०] द्वितीया के चद्रमा के दोनो नुकीले कोण या कोटि। चद्रशृग (को०)।

शशिक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] द्वितीया का नया चाँद (को०)।

शशिखड—संज्ञा पुं० [सं० शशिखण्ड] १ शिव। महादेव। २. चद्रमा की कला। ३ एक विद्याधर का नाम।

शशिखडिक—संज्ञा पुं० [सं० शशिखण्डिक] पुराणानुसार एक देश का नाम।

शशिगुह्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुलेठी।

शशिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रग्रहण (को०)।

शशिज—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह। उ०—प्रथम शुक्र दूजे रवि शशिजहु राहु चतुर्थ गवाई।—रघुराज (शब्द०)।

शशितनय—संज्ञा पुं० [सं०] बुध ग्रह (को०)।

शशितिथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

शशिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] राजा रतिदेव का एक नाम (को०)।

शशिदेव—संज्ञा पुं० [सं०] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता चंद्रमा माने जाते हैं।

शशिधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २ एक प्राचीन नगर का नाम। उ०—शशिधर नगर जाहु प्रियकारी।—श० दि० (शब्द०)।

शशिध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक असुर का नाम।

शशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की सोलह कलाओं मे से एक का नाम (को०)।

शशिपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] परवल। पटोल।

शशिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बुध ग्रह जो चंद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशिपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। पद्म।

शशिपोषक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का पोषण करनेवाला, शुक्ल पक्ष।

शशिप्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसकी प्रभा चंद्रमा के समान हो। २. कुमुद। कोईं। ३ मुक्ता। मोती।

शशिप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्सना। चाँदनी।

शशिप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुमुद। कोईं। २ मुक्ता। मोती।

शशिप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताइसो नक्षत्र जो चंद्रमा की पत्नियाँ माने जाते हैं।

शशिभागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा मुचकुंद की कन्या का नाम। उ०—सुनत कहेउ पति ते शशिभागा।—रघुनाथ (शब्द०)।

शशिमाल—संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले, शिव। महादेव। उ०—जय सज्जन रिपु काल, जयति पाल शशिमाल अज। रघुराज (शब्द०)।

शशिभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शशिभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शशिमंडल—संज्ञा पुं० [सं० शशिमण्डल] चंद्रमा का घेरा या मंडल। उ०—सब नक्षत्र को राजा दीन्हो शशिमंडल मे छाप।—सूर (शब्द०)।

शशिमणि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रकांत मणि।

शशिमुख—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शशिमुखी] (वह व्यक्ति) जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो। अति सुंदर। उ०—(क) राग सुनि भक्तन को भयो, अनुराग वश शशिमुख लाल जू को जाइके सुनाइये।—नाभादास (शब्द०)। (ख) शशिमुख पर घूँघट डाले।

शशिमौलि—संज्ञा स० [सं०] शिव। महादेव।

शशिरस—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।

शशिरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की एक कला।

शशिलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की कला। २ बकुची। सोमराजी। ३ गिलोय। गुरुच।

शशिवदना[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण (।।।) और एक यगण (।SS) होता है। इसे चौवसा, चंडरसा और पादाकुलक भी कहते है। उ०—पिक द्विज देखे। कुपित विशेषे। नयन निराते। वचन निवाते।—गुमान (शब्द०)।

शशिवदना[2]—वि० स्त्री० चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाली। शशिमुखी।

शशिवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शशिशाला(पु)—संज्ञा स्त्री० [फा० शीशा + सं० शाला (= आलय)] वह घर जो बहुत से शीशो का बना हुआ हो या जिसमे बहुत से शीशे लगे हुए हो। शीशमहल। उ०—(क) अति उतंग मुंदर शशिशाला सात मरातिब वोर।—रघुराज (शब्द०)। (ख) पूरित सस्य प्रमोद मही सब शशि भूपति शशिशाला।—रघुराज (शब्द०)। (ग) शशिशाला अंत पुरशाला शाला सभा सदन के।—रघुराज (शब्द०)।

शशिशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। उ०—(क) शिला एक बिच लसत चिह्न तहँ पद शशिशेखर।—लक्ष्मण (शब्द०)। (ख) अंबर मे हुए दिगंबर अर्चित शशिशेखर।—अपरा, पृ० ८०। २ एक बुद्ध का नाम।

शशिशोषक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा को क्षीण करनेवाला, कृष्ण पक्ष।

शशिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह।

शशिहासिनी—वि० स्त्री० [सं० शशि + हासिनी] चंद्रमा की तरह हँसनेवाली या हासयुक्त (स्त्री)। उ०—मेरा मानस तो शशि-हासिनि तेरी क्रीडा का स्थल है।—वीणा, पृ० ८।

शशिहीरा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि + हिं० हीरा] चंद्रकांत मणि। उ०—शशिहीरा की एक बात। कलीन कील तब लजानौं गात।—रत्नपरीक्षा (शब्द०)।

शशी—संज्ञा पुं० [सं० शशिन्] चंद्रमा। उ०—सहजी दसवें दार की कथा सुनीजै संत। तहँ प्रणाम अति घना तहँ शशी अरु सुर अनंत।—प्राण०, पृ० १८।

शशीअर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।

शशीकर—संज्ञा पुं० [सं० शशिकर] चंद्रमा की किरण।

शशीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। महादेव। २ कार्तिकेय।

शश्वत्[1]—अव्य० [सं०] १ सर्वदा। हमेशा। अनादि काल से। २. पुन. पुन.। बार बार (को०)।

शश्वत्[2]—वि० [सं० शश्वत्] दे० 'शाश्वत'।

शष्कुल—संज्ञा पुं० [सं०] करंज।

शष्कुलि, शष्कुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पूरी, पक्वान्न आदि। २. कान का छेद। ३. सौरी मछली। ४ माँड (को०)। ५. करंज (को०)। ६ कर्णरोग। कान का रोग (को०)।

शष्प—संज्ञा स्त्री० [सं०] १, नई घास। नीली दूब। ३ बौद्धिक चेतना न रहना। प्रतिभाक्षय (को०)। ४. पशम। रोयाँ (बोलचाल)।

यौ०—शष्पबृसी = कुश की चटाई। शष्पभुक्, शष्पभोजन = घास खानेवाला। पशु।

शसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ के लिये पशुओं की हत्या करना। २ वह स्थान जहाँ पशुओं का बलिदान होता हो। ३ वध। हिंसा। हत्या (को०)।

शसा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरगोश। खरहा।

शसि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] दे० 'शशि'।

शसी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] दे० 'शशि'।

शस्कुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शष्कुली' (को०)।

शस्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर। बदन। जिस्म। २ कल्याण। मंगल। भलाई। ३ अंगुलित्राण (को०)। ४ उत्कृष्टता। प्रशस्तता। उत्तमता (को०)। ५ वधिक। हत्यारा (को०)।

शस्त²—वि० १ जिसकी प्रशंसा की गई हो। २ अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। ३ प्रशस्त। ४ जो मार डाला गया हो। निहत। ५. घायल। जख्मी। चुटैल (को०)। ६ कल्याणयुक्त। मंगलयुक्त। ७ बार बार कहा गया (को०)।

शस्त³—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह हड्डी या धातु का छल्ला जो तीर चलाने के समय अँगूठे मे पहना जाता है। अँगुलित्राण। २ वह जिसपर तीर या गोली आदि चलाई जाती है। लक्ष्य। निशाना।

मुहा०—शस्त बाँधना या लगाना = निशाना वेधने के लिये सीध या ताक लगाना।

३ जमीन की पैमाइश करनेवालों की दूरबीन के आकार का वह यंत्र जिसकी सहायता से जमीन की सीध देखी जाती है। ४ मछली पकड़ने का काँटा।

शस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ मे पहनने का चमड़े का दस्ताना। अंगुलित्राण।

शस्तर(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्र] शस्त्र। हथियार। उ०—दरिया शस्तर बाँधकर बहुत कहावै सूर।—दरिया० बानी, पृ० ११।

शस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्तुति। स्तोत्र। २ प्रशंसा। तारीफ। ३ अंगुलित्राण (को०)।

शस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हथियार। आयुध। लोहा। २ उपकरण। औजार। ३ इस्पात। ४ स्तोत्र। ५ बार बार कथन। पाठ (को०)।

शस्त्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहा। लौह। २ इस्पात। चित्रायस। पिंडायस। सारलोह (को०)। ३ औजार। शस्त्र (को०)।

शस्त्रकर्म—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्रकर्मन्] घाव या फोड़े मे नश्तर लगाना। फोड़ो आदि की चीर फाड़ का काम।

शस्त्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] हथियार बनानेवाला। शस्त्रों का निर्माण करनेवाला कारीगर (को०)।

शस्त्रकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का केतु जो पूर्व मे उदय होता है। कहते हैं, इसके उदय होने पर महामारी फैलती है।

शस्त्रकोप—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

शस्त्रकोश—संज्ञा पुं० [सं०] म्यान (को०)।

शस्त्रकोशतरु—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा मैनफल।

शस्त्रकोष—संज्ञा पुं० [सं०] हथियार रखने का खाना। म्यान (को०)।

शस्त्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] फोड़ों आदि की चीरफाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।

शस्त्रक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सोहागा (को०)।

शस्त्रगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के शस्त्र आदि रहते हो। शस्त्रशाला। हथियार घर। सिलहखाना।

शस्त्रग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई (को०)।

शस्त्रग्राही—वि० [सं० शस्त्रग्राहिन्] हथियार धारण करनेवाला। शस्त्रपाणि (को०)।

शस्त्रचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शस्त्र द्वारा उपचार करना।

शस्त्रचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] मडूर।

शस्त्रजीवी—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] आयुधों का परित्याग। हथियार डालना (को०)।

शस्त्रधर—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शस्त्रधारी' (को०)।

शस्त्रधारी¹—वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

शस्त्रधारी²—संज्ञा पुं० १ योद्धा। सिपाही। सैनिक। २ एक प्रकार का जंतु जिसे सिलहपोश भी कहते हैं। ३ एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रनिपातन—संज्ञा पुं० [सं०] शल्यक्रिया। चीरफाड़ (को०)।

शस्त्रन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रत्याग। हथियार डाल देना (को०)।

शस्त्रपाणि¹—वि० [सं०] हथियारबंद (को०)।

शस्त्रपाणि²—संज्ञा पुं० योद्धा। सिपाही।

शस्त्रपूत—वि० [सं०] शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत। युद्ध क्षेत्र मे मारे जाने से मुक्त (को०)।

शस्त्रप्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] हथियार की चोट (को०)।

शस्त्रबल—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्र, सेना आदि की शक्ति। सैन्यबल। उ०—अगर हम आपको स्वेच्छा से यह करोड़ो रुपया न दें तो आप हमसे शस्त्रबल के जरिये छीन सकते हैं।—अखबार।

शस्त्रभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शस्त्र धारण करता हो। शस्त्रधारी।

शस्त्रमार्ज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो हथियार की सफाई करता हो। सिकलीगर (को०)।

शस्त्रवार्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रवार्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रजीवी। दे० 'शस्त्रवृत्ति' (को०)।

शस्त्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हथियार चलाने की विद्या। २ यजुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमे सब प्रकार के अस्त्र चलाने की विधियों और लड़ाई के संपूर्ण भेदों का वर्णन दिया गया है।

शस्त्रविधान—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्र+विधान] सुरक्षा के लिये शरीर के किसी अंग का शस्त्र जैसा होना। प्रकृतिदत्त आंगिक शस्त्रयुक्तता या शस्त्र जैसी स्थिति। उ०—जिन क्षुद्र से क्षुद्र जीवों के शरीर में बचाव के लिये शस्त्रविधान होता है वे बाधा पहुँचने पर आपसे आप संस्कारवश जिधर से बाधा आती हुई जान पड़ती है उस ओर झपट पड़ते हैं।—रस०, पृ० १६२।

शस्त्रवृत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शस्त्र आदि चलाकर अपना निर्वाह करता हो। योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से शस्त्र आदि रखे हों। शस्त्रगृह। शस्त्रागार। सिलहखाना।

शस्त्रशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें हथियार चलाने आदि का निरूपण हो। २ धनुर्वेद।

शस्त्रहत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी हत्या शस्त्र द्वारा हुई हो।

शस्त्रहत चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी।

विशेष—इन दोनों चतुर्दशियों को उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रों द्वारा हुई रहती है।

शस्त्रहस्त—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शस्त्रधारी'।

शस्त्रांगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शस्त्राङ्गा] खट्टी लोनी या अमलोनी जिसका साग होता है। चांगेरी।

शस्त्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु। २. लौह। लोहा (को०)।

शस्त्रागार—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला। शस्त्रालय। सिलहखाना।

शस्त्राजीव—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रजीवी। योद्धा [को०]।

शस्त्राभ्यास—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास। सैनिक शिक्षा में निपुणता [को०]।

शस्त्रायस—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लोहा जिससे शस्त्र बनाए जाते हैं। इस्पात। फौलाद। २ लोहा (को०)।

शस्त्रास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ में रहनेवाले (शस्त्र) और फेंककर मारे जानेवाले (अस्त्र) हथियार।

शस्त्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छुरिका। कृपाणी। असिपुत्रिका [को०]।

शस्त्री¹—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्रिन्] १. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो। २ वह जिसके पास शस्त्र हो। शस्त्रसज्ज व्यक्ति।

शस्त्री²—संज्ञा स्त्री० [सं०] छुरी। चाकू।

शस्त्रीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] सैनिकों को विविध शस्त्रास्त्रों से सज्जित करना। युद्ध या शांति के नाम पर सेना और युद्ध सामग्री की प्रवृद्धि। उ०—आज के शस्त्रीकरण में वे भी धीमे धीमे लोप हो रही हैं।—अखबार।

शस्त्रोपजीवी—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्रोपजीविन्] दे० 'शस्त्रजीवी' [को०]।

शस्प—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शष्प' [को०]।

शस्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. नई घास। कोमल तृण। २ वृक्षों का फल। ३ खेती। फसल। ४. प्रतिभा की हानि या नाश। ५. धान्य। अन्न। ६ सद्गुण।

शस्य²—वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा। २ प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। ३ काटकर गिराने योग्य (को०)।

शस्यक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रत्न। २. असि। तलवार (को०)।

शस्यक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] अनाज का खेत [को०]।

शस्यघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चोरहुली। चोर पुष्पी।

शस्यध्वंसी¹—संज्ञा पुं० [सं० शस्यध्वंसिन्] तून का पेड़। तूर्णवृक्ष।

शस्यध्वंसी²—वि० जिससे शस्य का नाश हो।

शस्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] खेत का रखवाला [को०]।

शस्यभक्षक—वि० [सं०] अनाज या खेत खानेवाला [को०]।

शस्यमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शस्यमञ्जरी] १ गेहूँ, जौ आदि अनाज की बाली। २. फल का वह अंश जिससे वे डाल से लगे रहते हैं। वृंत। फल। कांड [को०]।

शस्यमारी—संज्ञा पुं० [शस्यमारिन्] एक प्रकार का बड़ा मूषक या चूहा [को०]।

शस्यमाली—वि० [सं० शस्यमालिन्] फसल से हरा भरा। लहलहाता हुआ [को०]।

शस्यरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] खेती का रखवाला। शस्यपाल [को०]।

शस्यवेद—संज्ञा पुं० [सं०] कृषि संबंधी ज्ञान। कृषि शास्त्र [को०]।

शस्यशाली—वि० [सं० शस्यशलिन्] अन्न से युक्त। धान्य से परिपूर्ण [को०]।

शस्यशूक—संज्ञा पुं० [सं०] धान, यव की बाली का नुकीला अगला भाग [को०]।

शस्यसंपन्न—वि० [सं० शस्यसम्पन्न] दे० 'शस्यशाली' [को०]।

शस्यसंपद्—संज्ञा स्त्री० [सं० शस्यसम्पद्] शस्य या अन्न रूपी संपत्ति। धान्य की अधिकता [को०]।

शस्यसंवर—संज्ञा पुं० [सं० शस्यसम्वर] १ शालवृक्ष। २ अश्वकर्ण वृक्ष।

शस्यहंता¹—वि० [सं० शस्यहन्तृ] फसल या खेती को नष्ट करनेवाला [को०]।

शस्यहंता²—संज्ञा पुं० एक दैत्य का नाम [को०]।

शस्यहा—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शस्यहन्] दे० 'शस्यहंता'।

शस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेद की ऋचा [को०]।

शस्यागार—संज्ञा पुं० [सं०] खलिहान [को०]।

शस्यारु—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी शमी।

शहंशा—संज्ञा पुं० [सं०] राजाधिराज। शाहंशाह।

शहंशाह—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह। सम्राट्। महाराजाधिराज। शाहंशाह।

शहंशाही¹—वि० [फा०] शाहों का सा। शाही। राजसी।

शहंशाही²—संज्ञा स्त्री० १ शाहंशाह का भाव या धर्म। २ शाहंशाह का पद। ३ लेने देने में खरापन। (बाजारू)।

क्रि० प्र०—दिखलाना।—रखना।

शह¹—संज्ञा पुं० [फा० शाह का संक्षिप्त रूप] १ बहुत बड़ा राजा। बादशाह। २. वर। दूल्हा।

यौ०—शहबाला।

शह²—वि० बढ़ा चढ़ा। श्रेष्ठतर।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने के समय उसके आरंभ में होता है। जैसे,—शहजोर, शहबाज, शहसवार।

शह³—संज्ञा स्त्री० १ शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से विपक्षी बादशाह उसकी मार में हो। किश्त। उ०—राजा पील देइ शह माँगा। शह दै चाहि मरै रथ खागा।—जायसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—बचाना।—लगाना।

२ गुप्त रूप से किसी के भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। बढ़ावा। हुशकारी। जैसे,—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते हैं।

क्रि प्र०—देना = बढ़ावा देना। उभारना। उ०—मिर्जा साहब ने मुहम्मद अस्करी को अब मैदान खाली पाकर और भी शह दी और चंग पर चढ़ाया।—सैर०, भा० १, पृ० २३।—पाना।—मिलना।

३ गुड्डी, पतंग या कनकौवे आदि को धीरे धीरे, डोर ढीली करते हुए, आगे बढ़ाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

शहकार—संज्ञा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्कृष्ट कृति [को०]।

शहकारा—संज्ञा स्त्री० [फा०] बदचलन औरत।

शहखर्च—वि० [फा०] बहुत अधिक व्यय करनेवाला। शाह की तरह खर्च करनेवाला [को०]।

शहचाल—संज्ञा स्त्री० [फा० शह + हिं० चाल] शतरंज में बादशाह की वह चाल जो और मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है।

शहजादगी—संज्ञा स्त्री० [फा० शहजादगी] शहजादा होने का भाव। राजकुमारपन [को०]।

शहजादा—संज्ञा पुं० [फा० शहजादह्] [स्त्री० शहजादी] १. राजपुत्र। राजकुमार। २ राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज।

शहजादी—संज्ञा स्त्री० [फा० शहजादी] दे० 'शाहजादी'। उ०—आज न बस में, विह्वल रस में, कुछ ऐसा बेकाबू मन, क्या जादू कर गया नया किस शहजादी का भोलापन।—ठंडा०, पृ० २५।

शहजोर—वि० [फा० शहज़ोर] बली। बलवान। ताकतवर।

शहजोरी—संज्ञा स्त्री० [फा० शहजोरी] बल। ताकत। जबरदस्ती।

शहत—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शहद'।

शहतरा—संज्ञा पुं० [फा०] पितपापड़ा। शाहतरा [को०]।

शहतीर—संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्राय इमारत के काम में आता है।

शहतूत—संज्ञा पुं० [फा०] तूत नाम का पेड़ और उसका फल। विशेष दे० 'तूत'।

शहद—संज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढ़ा, तरल पदार्थ जो कई प्रकार के कीड़े और विशेषत. मधुमक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलों के मकरंद से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं। मधु।

विशेष—शहद अनेक रंग के होते हैं। यह जब अपने शुद्ध रूप में रहता है, तब इसका रंग सफेदी लिए कुछ लाल या पीला होता है। यह पानी में सहज में घुल जाता है। यह बहुत बलवर्धक माना जाता है और प्राय औषधों के साथ, दूध में मिलाकर अथवा यों ही खाया जाता है। इसमें फल आदि भी रक्षित रखे जाते हैं, अथवा उनका मुरब्बा डाला जाता है। योरप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि अनेक देशों में इसका जलपान के साथ पर्याप्त प्रयोग होता है। कभी कभी ऐसा शहद भी मिलता है जो मादक या विष होता है। वैद्यक में यह शीतवीर्य, लघु, रूक्ष, धारक, आँखों के लिये हितकारी, अग्निदीपक, स्वास्थ्यवर्धक, व्रणप्रसादक, चित्त को प्रसन्न करनेवाला, मेधा और वीर्य बढ़ानेवाला, रुचिकारक और कोढ़, बवासीर, खाँसी, कफ, प्रमेह, प्यास, कै, हिचकी, अतीसार, मलरोध और दाह को दूर करनेवाला माना गया है।

मुहा०—शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को यों ही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। (व्यंग्य)। जैसे—उसका दिवाला हो गया, अब आप अपना तमस्सुक शहद लगाकर चाटिए। शहद लगाकर अलग होना = उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना। आग लगाकर दूर होना।

यौ०—शहद की छुरी = जो जबान का मीठा पर दिल का बुरा हो। शहद की मक्खी = (१) मधुमक्षिका। (२) वह जो लोभ के कारण पीछे लगा रहे।

शहनगी—संज्ञा पुं० [अ० शहनह् + गी] १. शस्यरक्षक का कार्य। २ वह धन जो चौकीदार को देने के लिये असामियों से वसूल किया जाता है। चौकीदारी।

शहना—संज्ञा पुं० [अ० शहनह्] १ खेत की चौकसी करनेवाला। शस्यरक्षक। २ वह व्यक्ति जो जमींदार की ओर से असामियों को बिना पोत दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिये नियुक्त किया जाता है। ३ कोतवाल। नगररक्षक।

शहनाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो प्राय. रोशनचौकी के साथ बजाया जाता है। नफीरी। २ दे० 'रोशनचौकी'।

शहनाज—वि० [फा० शहनाज] दुलहन। नवविवाहिता।

शहनामा(पु)—संज्ञा पुं० [फा० शाहनामह्] दे० 'शाहनामा'।

शहपर—संज्ञा पुं० [फा०] पक्षी का डैना जिसमें पंख या पर होते हैं [को०]।

मुहा०—शहपर झाड़ना=कमजोर और खराब पर गिराने के लिये पक्षियों का अपने डैनों को हिलाना।

शहबाज—संज्ञा पुं० [फा० शहबाज] एक प्रकार का शिकारी बाज। बड़ा बाज। उ०—किस पर छोड़े निगाह का शहबाज, क्या करे है शिकार की बातें।—कविता को०, भा० ४, पृ० २४। २ वीर। बहादुर। योद्धा।

शहबाजी—संज्ञा स्त्री० [फा० शाहबाजी] वीरता। बहादुरी।

शहबाला—संज्ञा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर जाता है। यह प्रायः वर का छोटा भाई या उसका कोई निकट संबंधी हुआ करता है।

शहबुलबुल—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—इसका सारा शरीर लाल होता है, केवल कंठ काला होता है, और सिर पर सुनहले रंग की चोटी होती है।

शहमात—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

विशेष—इसमें बादशाह को केवल शह या किश्त देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलने के लिये और कोई घर ही नहीं रह जाता। उ०—राजा चहे बुर्द भा, शाह चहे शहमात।—जायसी। २. निरुत्तर या चुप कर देनेवाली बात।

शहर—संज्ञा पुं० [फा० शहर, शह्र] मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, जहाँ हर पेशे के लोग रहते हों और जिसमें अधिकतर पक्के मकान हों। उ०—रघुराज गरीब नवाज दोऊ अवलोकन काज चले शहरै।—रघुराज (शब्द०)।

मुहा०—शहर की दाई=सबके घर का हाल चाल जानने या रखनेवाली स्त्री।

शहरग—सं० पुं० [फा० शाहरग का संक्षिप्त रूप] शरीर का सबसे बड़ी रग या नाड़ी जो हृदय में मिलती है। सुषुम्ना। सुखमना। उ०—क्या भटकता फिर रहा तू है तलाश यार में। रास्ता शहरग में है दिलबर पै जाने के लिये।—तुरसी० श०, पृ० ५।

यौ०—शहरखबरा=घर घर की या पूरे नगर का हाल चाल रखनेवाला। शहरगश्त, शहरगिर्द=(१) कोतवाल। (२) शहर में घूमनेवाला। शहरदार=नगर का निवासी। शहरपनाह। शहरबंद। शहरबदर=दे० 'शहर बदल'। शहर ब शहर=(१) एक से दूसरे नगर तक। (२) स्थान स्थान में। जगह जगह। शहरवाला=शहरी। नागरिक। शहरयार। शहरयारी। शहरशमला=जहाँ न्याय की जगह अन्याय होता हो। अंधेर नगरी।

शहरपनाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] नगर के चारों ओर बनी हुई पक्की दीवार। वह दीवार जो किसी नगर के चारों ओर रक्षा के लिये बनाई जाय। शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगर-कोटा। उ०—गमनत बरात सुहात ऐहि विधि निकट शहरपनाह के।—रघुराज (शब्द०)।

शहरबंद—संज्ञा पुं० [फा०] १. जेल। कारा। २. दुर्ग। कोट। किला। ३. वह व्यक्ति जिसे राज्य की ओर से शहर से बाहर जाने की आज्ञा न हो। ४ किसी शुभ अवसर पर होनेवाली शहर की सजावट [को०]।

शहरबदल वि० [फा०] जिसे शहर से निकाले जाने का दंड मिला हो। निर्वासित।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

शहरयार संज्ञा पुं० [फा०] नृपति। बादशाह। शासक। उ०—तो फिर उसका क्या पूछना है ऐ यार। जो दोनों जहाँ का हुआ शहरयार।—दक्खिनी०, पृ० २३२।

शहरयारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बादशाहत। शहंशाही। शाही दबदबा [को०]।

शहराती—वि० [फा० शहर+हिं० आती (प्रत्य०)] नागरिक। शहर का निवासी। शहरी। उ०—आज हम शहरातियों को, पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से।—हरी घास०, पृ० ५८।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर से संबंध रखनेवाला। शहर का। २ शहर का रहनेवाला। नगर का निवासी। नागरिक। ३. सभ्य शिष्ट [को०]।

शहवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कामातुरता। काम का उद्रेक। स्त्री-प्रसंग की प्रबल आकांक्षा। उ०—ना जोरू ना मर्द है ना शहवत ना साख। ना माय ना बाप है ना बेटा ना आख।—दक्खिनी०, पृ० ३८४।

क्रि० प्र०—उठना।—होना।

२. भोग विलास। विषय। मैथुन।

यौ०—शहवतपरस्त=कामुक। भोगी। विषयी। शहवतपरस्ती=कामुकता। ऐयाशी।

शहवात—संज्ञा स्त्री० [अ० शहवत का बहुवचन] इच्छाएँ। कामवासनाएँ। उ०—यह कहने को हो है मर्द आदमी जाद। किया शहवात ने अबल उनका बरबाद।—कबीर मं०, पृ० २०८।

शहसवार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो घोड़े पर अच्छी तरह सवारी कर सकता हो। अच्छा सवार। सवारी में चतुर। उ०—यह अच्छे अच्छे शहसवारों को मात करता है।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २।

शहादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। साक्ष्य।

क्रि० प्र०—गुजरना।—देना।—मिलना।—लेना।

२. सबूत। प्रमाण। ३. धर्म या देश के लिये लड़ाई आदि में मारा जाना। शहीद होना (मुसल०)।

यौ०—शहादतगाह, शहादतगाह=शहीद होने का स्थान। शहादतनामा=(१) वह ग्रंथ जिसमें धर्म के लिये शहीद होने का वर्णन हो। (२) शहादत का कलमा जो वक्ष पर लिखा रहता और कफन के साथ रखा जाता है। (३) प्रमाणपत्र। सनद।

शहाना¹ - संज्ञा पुं० [देश० या फा० शाह] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

विशेष - यह राग फरोदस्त और कान्हड़ा को मिलाकर बनाया गया है और इसका व्यवहार प्रायः उत्सवों तथा धर्म संबंधी कार्यों में होता है। शास्त्र के अनुसार यह मालकोश राग की रागिनी है। इसके गाने का समय ११ दंड से १५ दंड तक है।

शहाना²—वि० [फा० शहानह्] शाहों या बादशाहों का सा। राजाओं के योग्य। शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहाना³—संज्ञा पुं० वह जोड़ा जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है।

यौ०—शहाना जोड़ा = (१) लाल रंग का पहनावा या पोशाक। (२) दूल्हे का जोड़ा जामा जो लाल रंग का होता है। शहाना वक्त = सायंकाल। सुहावना समय। शहानी चूड़ी = विवाह के समय दुलहन के हाथ की लाल रंग की चूड़ियाँ। शहानी मेहँदी = गहरे लाल रंग की मेहँदी। विवाह के अवसर पर दुलहन के हाथों में लगाई मेहँदी।

शहाना कान्हड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० शहाना + कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक प्रकार का कान्हड़ा राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शहाब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। उ०—त्योरी में बल वालों के ताव के बदले। खून में रँगना कपड़ा शहाब के बदले।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० २०३।

विशेष—यह रंग कुसुम के खूब अच्छे और गहरे लाल रंग में आम या इमली की छाल मिलाकर बनाया जाता है।

शहाबा—संज्ञा पुं० [फा० शहाब = (गहरा लाल)] दे० 'अगिया बैताल'—२।

शहाबी—वि० [फा० शहाब + ई (प्रत्य०)] शहाब के रंग का। गहरा लाल।

शहाबुद्दीन (गोरी)—संज्ञा पुं० [फा०] गजनी का एक शाह जिसने चौहान नरेश पृथ्वीराज (११९७ ई० में) को पराजित कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य कायम किया।

शहिजदा(पु)—संज्ञा पुं० [फा० शाहज़ादह्] [स्त्री० शहेजादी] दे० 'शहजादा'। उ०—(क) पठयो कवरू नाम जे है, शाहजादा को शाह।—रघुराज (शब्द०)। (ख) रहा शाह का एक शाहजादी। लखि सो मूरत छवि मरयादा।—रघुराज (शब्द०)।

शही—वि० [फ़ा०] शाही। राजा का। राजा संबंधी [को०]।

शहीद—संज्ञा पुं० [अ०] वह व्यक्ति जो धर्म या इसी प्रकार के और किसी शुभ कार्य के लिये युद्ध आदि में मारा गया हो। न्योछावर या बलिदान होनेवाला व्यक्ति।

शहीद मर्द—संज्ञा पुं० [अ० शहीद + फा० मर्द] धर्म या ईश्वर के नाम पर जान देनेवाला [को०]।

शहीदाना—वि० [फा० शहीदानह्] शहीद के ढंग का। शहीदों जैसा। उ०—शहीदाना ततुओं से भरा हुआ, विधायकता से रहित व्यक्ति, अपनी शहीद प्रवृत्ति के लिये, काल और पात्र की उपयुक्तता अनुपयुक्तता के लिये नहीं ठहरता।—शुक्ल अभि० ग्रं० (जी०), पृ० ५५।

शहीदी—वि० [फा०] १ जो शहीद होने को तैयार हो। रक्त (वर्ण)। लाल।

यौ०—शहीदी जत्था = शहीद होने को तैयार लोगों का समूह। शहीदी तरबूज = एक प्रकार का गहरा लाल तरबूज। उ०—तुम आप जाओ और एक अच्छा सा शहीदी तरबूज देख कर लाओ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६१।

शहीदेकर्बला—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कर्बला के युद्ध में शहीद होनेवाले, हजरत इमाम हुसेन।

शहना—संज्ञा पुं० [अ०] १ चौकीदार। २ कोतवाल। ३ शस्यपाल [को०]।

शहनाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शहनाई'।

शांकर¹—वि० [सं० शाङ्कर] १ शंकर संबंधी। २ शंकराचार्य का। जैसे,—शांकर भाष्य, शांकर व्रत।

शांकर²—संज्ञा पुं० १ वृष। साँड। २ शंकराचार्य का अनुयायी। ३ आर्द्रा नक्षत्र, जिसके देवता शिव जी माने गए हैं। ४ एक छंद का नाम। ५ सोमलता का भेद।

शांकरि—संज्ञा पुं० [सं० शाङ्करि] १ शिव के पुत्र, गणेश। २. कार्तिकेय। ३ अग्नि। ४ एक मुनि का नाम। ५ शमी का पेड़।

शांकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाङ्करी] शिव द्वारा निर्धारित अक्षरों का क्रम। शिवसूत्र। माहेश्वर सूत्र।

शांकित—संज्ञा पुं० [सं० शाङ्कित] चोरक नामक गंधद्रव्य।

शांकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० शाङ्कुची] शकुची मछली।

शांख¹—संज्ञा पुं० [सं० शाङ्ख] शंख की ध्वनि।

शांख²—वि० शंख संबंधी। शंख का बना हुआ।

शांखायन—संज्ञा पुं० [सं० शाङ्खायन] एक गृह्य और श्रौत सूत्रकार ऋषि जिनका कौशीतकी ब्राह्मण भी है।

शांखारि—संज्ञा पुं० [सं० शाङ्खारि] शंख बेचनेवाली जाति।

शांखिक¹—वि० [सं० शाङ्खिक] [वि० स्त्री० शांखिकी] १ शंख संबंधी। २ शंख का बना हुआ।

शांखिक²—संज्ञा पुं० १ शंख बनाने और बेचनेवाला। शांखारि। २ शंख बजानेवाला व्यक्ति। ३ एक संकर जाति (को०)।

शांख्य—वि० [सं० शाङ्ख्य] १ शंख का। शंख संबंधी। २ शंख का बना हुआ।

शांगुष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं० शाङ्गुष्ठा] गुंजा। दे० 'सागुष्ठा'।

शांची—संज्ञा स्त्री० [सं० शाञ्ची] एक प्रकार का शाक।

शांडदूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं० शाण्डदूर्वा] एक प्रकार की दूब। पाक दूर्वा।

शांडाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाण्डाकी] एक प्रकार का पशु।

शांडिक—संज्ञा पुं० [सं० शाण्डिक] माँद में रहनेवाला साँड नामक जंतु।

शांडिली—संज्ञा स्त्री० [सं० शाण्डिली] एक ब्राह्मणी जो अग्नि की माता मानकर पूजी जाती थी। (महाभारत)।

शांडिल्य—संज्ञा पुं० [सं० शाण्डिल्य] १ बेल। श्रीफल। २ अग्नि। ३ एक मुनि जिनकी रची एक स्मृति है और जो भक्तिसूत्र के कर्ता माने जाते हैं। ४ शांडिल्य के कुल में उत्पन्न पुरुष। ५ सरयूपारीण ब्राह्मणों के तीन प्रधान गोत्रों में से एक गोत्र।

यौ०—शांडिल्य गोत्र = शांडिल्य के कुल में उत्पन्न।

शांत¹—वि० [सं० शान्त] १ जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। ठहरा हुआ। रुका हुआ। बंद। जैसे,—अंधड शांत होना, उपद्रव शांत होना, झगडा शांत होना। २ (कोई पीडा, रोग, मानसिक वेग आदि) जो जारी न हो। बंद। मिटा हुआ। जैसे,—क्रोध शांत होना, पीडा शांत होना, ताप शांत होना। ३ जिसमें क्रोध आदि का वेग न रह गया हो। जिसमें जोश न रह गया हो। स्थिर। जैसे,—जब हमने समझाया, तब वे शांत हुए। ४ जिसमें जीवन की चेष्टा न रह गई हो। मृत। मरा हुआ। ५ जो चंचल न हो। धीर। उग्रता या चंचलता से रहित। सौम्य। गंभीर। जैसे,—शांत प्रकृति, शांत आदमी। ६ मौन। चुप। खामोश। ७ जिसने मन और इंद्रियों के वेग को रोका हो। मनोविकारों से रहित। रागादिशून्य। जितेंद्रिय। ८. उत्साह या तत्परतारहित। जिसमें कुछ करने की उमंग न रह गई हो। शिथिल। ढीला। ९ हारा हुआ। थका हुआ। श्रांत। १० जो दहकता न हो। बुझा हुआ। जैसे,—अग्नि शांत होना। ११ विघ्न-बाधा-रहित। स्थिर। १२. जिसकी घबराहट दूर हो गई हो। जिसका जी ठिकाने हो गया हो। स्वस्थचित्त। १३ जिसपर असर न पडा हो। अप्रभावित। १४ नि:शब्द। सुनसान। जैसे, शांत तपोवन (को०)। १५. पूत। पवित्रीकृत (को०)। १६. शुभ (को०)। १७. (अस्त्र, शस्त्र आदि) जिसका प्रभाव नष्ट कर दिया गया हो। प्रभावविहीन किया हुआ (को०)।

शांत²—संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसका स्थायी भाव 'निर्वेद' (काम, क्रोधादि वेगों का शमन) है।

विशेष—इस रस में संसार की अनित्यता, दुःखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलंबन होता है, तपोवन, ऋषि, आश्रम, रमणीय तीर्थादि, साधुओं का सत्संग आदि उद्दीपन, रोमांच आदि अनुभाव तथा निर्वेद, हर्ष, स्मरण, मति, दया आदि संचारी भाव होते हैं। शांत को रस कहने में यह बाधा उपस्थित की जाती है कि यदि सब मनोविकारों का शमन ही शांत रस है, तो विभाव, अनुभाव और संचारी द्वारा उसकी निष्पत्ति कैसे हो सकती है। इसका उत्तर यह दिया जाता है कि शांत दशा में जो सुखादि का अभाव कहा गया है, वह विषयजन्य सुख का है। योगियों को एक अलौकिक प्रकार का आनंद होता है जिसमें संचारी आदि भावों की स्थिति हो सकती है। नाटक में आठ ही रस माने जाते हैं; शांत रस नहीं माना जाता। कारण यह कि नाटक में अभिनय क्रिया ही मुख्य है, अतः उसमें 'शांत' का समावेश (जिसमें क्रिया, मनोविकार आदि की शांति कही जाती है) नहीं हो सकता। पर बाद के विवेचकों ने नाट्य में भी शांत रस की स्थिति मान्य ठहराई है।

२ इंद्रियनिग्रही। योगी। विरक्त पुरुष। ३ मनु का एक पुत्र। ४ संतोषण। सांत्वन। तुष्टि करना। तोषना। ५ शांति। निस्तब्धता (को०)।

शांत³—अव्य० बस बस। ऐसा नहीं। छि: छि। अधिक नहीं आदि अर्थों का सूचक अव्यय (को०)।

शांतक—वि० [सं० शांतक] तोष करनेवाला। शांत करनेवाला। प्रसादक (को०)।

शांत गुण—वि० [सं० शान्तगुण] मरा हुआ। मृत (को०)।

शांत चेता—वि० [सं० शांतचेतस्] शांतात्मा। स्थिर मनवाला (को०)।

शांतता—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्त+ता] १ शांति। शमन। २ खामोशी। नीरवता। ३ रागादि का अभाव। विराग। ४ हलचल का न होना। उपद्रव आदि का अभाव।

शांतनव—संज्ञा पुं० [सं० शान्तनव] [स्त्री० शांतनवी] १. राजा शांतनु के पुत्र, भीष्म २. मेधातिथि का पुत्र।

शांतनु—संज्ञा पुं० [सं० शांतनु] १ द्वापर युग के इक्कीसवें चंद्रवंशी राजा।

विशेष—ये राजा प्रतीप के पुत्र और महाभारत युद्ध के प्रसिद्ध योद्धा भीष्म पितामह के पिता थे। शांतनु की स्त्री गंगादेवी के गर्भ से भीष्म (गांगेय) की उत्पत्ति हुई थी। वसुराज नामक धीवर की कन्या सत्यवती के रूप पर मोहित होकर शांतनु ने उसे ब्याहने की इच्छा प्रकट की। वसुराज ने सत्यवती के पुत्र को राज्य देने की प्रतिज्ञा लेकर कन्या ब्याह दी। कन्या के गर्भ से विचित्रवीर्य और चित्रांगद उत्पन्न हुए थे।

२. ककडी। ३. एक कदन्न (को०)।

शांता—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ता] १. अयोध्या के राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यश्रृंग की पत्नी।

विशेष—दशरथ ने अपने मित्र अंग देश के राजा लोमपाद (रोमपाद) को अपनी कन्या शांता पोष्यपुत्री के रूप में दी थी।

२. रेणुका। ३ दूर्वा। दूब। ४ शमी। छिकुर। ५ आंवला। ६. संगीत में एक श्रुति।

शांति—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति] १. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। किसी प्रकार की गति, हलचल या उपद्रव का न होना। स्थिरता। २. नीरवता। स्तब्धता। सन्नाटा। ३ चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। चैन। इतमीनान। आराम। ४. रोग आदि का दूर होना। मनोवेग, पीड़ा, शारीरिक उपद्रव या विकार आदि का न रह जाना। जैसे—रोगशांति, तापशांति, क्रोधशांति। ५. जीवन की चेष्टा का रुक जाना। मृत्यु। मरण। ६. चंचलता का अभाव। धीरता। गंभीरता। सौम्यता। ७. रागादि की निवृत्ति। वासनाओं से छुटकारा। तृष्णा का क्षय। विराग। ८. एक गौरी का नाम। ९ दुर्गा। १०. अशुभ या अनिष्ट का निवारण। अमंगल दूर करने का उपचार। जैसे—ग्रहशांति, पापशांति, मूलशांति। ११. क्षुधातृप्ति। क्षुधानिवृत्ति (को०)। १२. सौभाग्य (को०)। १३. युद्धादि का रुक जाना या न होना (को०)। १४. सांत्वना। ढाढस (को०)।

शातिक¹—वि० [स० शान्तिक] शाति संबंधी। शाति का। शातिकर।

शातिक²—सज्ञा पुं० विपत्ति एव दुष्ट ग्रहो की शाति के लिये किया जानेवाला यज्ञ, पूजन आदि। शाति कर्म।

शातिकर—वि० [स० शान्तिकर] शाति करनेवाला।

शातिकरणिक—सज्ञा पु० [स० शान्तिकरणिक] राजाओ मे शाति या सधि करानेवाला व्यक्ति।—वर्ण०, पृ० ८।

शातिकर्म—सज्ञा पु० [स० शान्तिकर्म] बुरे ग्रह, प्रेतबाधा, पाप आदि द्वारा होनेवाले अमगल के निवारण का उपचार।

शातिकलश—सज्ञा पुं० [स० शान्तिकलश] किसी मागलिक उत्सव या पूजा आदि के समय स्थापित जलपूर्ण घट (को०)।

शातिकाम—वि० [स० शान्तिकाम] शाति का इच्छुक (को०)।

शातिकारी—वि० [स० शान्तिकारिन्] [वि० स्त्री० शातिकारिणी] दे० 'शातिकर'।

शातिकार्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शातिकर्म'।

शातिगृह—सज्ञा पुं० [शान्तिगृह] यज्ञ के अत मे पाप तथा अशुभ आदि की शाति के लिये, स्नान करने का स्नानागार।

शातिघट—सज्ञा पुं० [स० शान्तिघट] दे० 'शातिकलश'।

शातिजल—सज्ञा पु० [स० शान्तिजल] यज्ञ, पूजा आदि मे शातिदायक मत्रपूत जल, जिससे अभिषेक किया जाता है (को०)।

शातिद¹—वि० [स० शान्तिद] [वि० स्त्री० शातिदा] शाति देनेवाला।

शातिद²—सज्ञा पु० विष्णु।

शातिदाता—वि०, सज्ञा पु० [स० शान्तिदातृ] [स्त्री० शातिदात्री] शाति देनेवाला।

शातिदायक—वि०, सज्ञा पुं० [स० शान्तिदायक] [स्त्री० शातिदायिका] शाति देनेवाला।

शातिदायी—वि० [स० शान्तिदायिन्] [वि० स्त्री० शातिदायिनी] शाति देनेवाला।

शातिनाथ—सज्ञा पु० [स० शान्तिनाथ] जैनो के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम।

शातिनिकेतन—सज्ञा पु० [स० शान्ति + निकेतन] १ शातिदायक स्थान। २. पश्चिम बगाल का बोलपुर स्थान जहाँ विश्वकवि ने अतरराष्ट्रीय शिक्षा सस्थान की स्थापना की थी।

शातिपर्व—सज्ञा पु० [स० शान्तिपर्वन्] महाभारत का बारहवाँ और सबसे बडा पर्व जिसमे युद्ध के उपरात युधिष्ठिर की चित्तशाति के लिये कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञानचर्चा है।

शातिपात्र—सज्ञा पु० [स० शान्तिपात्र] वह पात्र जिसमे ग्रह, पाप आदि की शाति के लिये जल रखा जाय।

शातिप्रद—वि० [स० शान्तिप्रद] शाति देनेवाला।

शातिप्रिय—वि० [स० शान्तिप्रिय] शाति का अभिलाषी (को०)।

शातिभग—सज्ञा पु० [स० शान्तिभङ्ग] १ शाति का नाश। शोरगुल २. उपद्रव (को०)।

शातिमय—वि० [स० शान्तिमय] [वि० स्त्री० शातिमयी] शाति से पूर्ण। शाति से भरा हुआ।

शातिमार्ग—सज्ञा पु० [स० शान्तिमार्ग] मोक्ष की ओर ले जानेवाला पथ (को०)।

शातिवाचन—सज्ञा पु० [स० शान्तिवाचन] ग्रह, प्रेतबाधा, पाप आदि से होनेवाले अमगल को दूर करने के लिये मत्रपाठ।

शातिवादी—वि० [स० शान्ति + वादिन्] विश्व के राष्ट्रो मे परस्पर व्यवहार मे शाति को मानकर चलनेवाला। उ०—युद्ध के सबध मे हमारा दृष्टिकोण सैद्धातिक दृष्टि से पूजीवादी, शातिवादी, अथवा अराजकतावादियो से भिन्न है।—आ० अ० रा, पृ०, २२।

शातिसधि—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ति + सन्धि] परस्पर शात रहने या सघर्ष न करने की सधि। उ०—शातिसधियो और समझौतो मे, जिनमे महासमर का अत होगा।—आ० अ० रा०, पृ० ८।

शातिसद्म—सज्ञा पु० [स० शान्तिसद्मन्] दे० 'शातिगृह'।

शातिहोम—सज्ञा पुं० [स० शान्तिहोम] अमगल, पाप, दोषादि के निवारणार्थ किया जानेवाला हवन (को०)।

शात्वति—सज्ञा स्त्री० [स० शान्त्वति] भारगी। बभनेटी। ब्राह्मणयष्टिका।

शाब—सज्ञा पु० [स० शाम्ब] १ एक राजा का नाम। २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। विशेष दे० 'साब'।

शाबर¹—वि० [स० शाम्बर] १ शबर दैत्य सबधी। २. साँभर मृग का।

शाबर²—सज्ञा पु० १ लोध्र वृक्ष। लोध। २. एक प्रकार का चदन (को०)।

शाबरशिल्प—सज्ञा पु० [स० शाम्बर शिल्प] इद्रजाल। जादू।

शाबरिक—सज्ञा पु० [स० शाम्बरिक] जादूगर। मायावी।

शाबरी¹—सज्ञा स्त्री० [स० शाम्बरी] १ माया। इद्रजाल।

विशेष—कहते है, शबर दैत्य ने पहले पहल इसका प्रयोग किया था, इसी कारण इसका नाम शाबरी पड़ा।

२ जादूगरनी। मायाविनी।

शाबरी²—सज्ञा पु० [स० शाबरिन्] १ एक प्रकार का चदन। २ लोध्र। लोध। ३ मूसाकानी नाम की लता।

शाबविक—सज्ञा पु० [स० शाम्बविक] शख का व्यवसाय करनेवाला।

शाबव्य—सज्ञा पु० [स० शाम्बव्य] गृह्यसूत्रो मे से एक सूत्र। उ०—शाबव्य सूत्र और आश्वलायन गृह्यसूत्र मे भारत एव महाभारत का उल्लेख है।—हिंदु० स०, पृ० १५३।

शाबुक—सज्ञा पु० [स० शाम्बुक] घोंघा।

शाबूक—सज्ञा पु० [स० शाम्बूक] घोंघा।

शाभर¹—सज्ञा स्त्री० [स० शाम्भर] राजपूताने की एक झील जिसमे साँभर नमक होता है। साँभर झील।

शाभर²—सज्ञा पु० साभर नमक।

शाभव¹—वि० [स० शाम्भव] शभु सबधी। शिव का।

शाभव²—सज्ञा पु० १ देवदार वृक्ष। २ कपूर। ३. शिवमल्लिका का पौधा। वसु। ४ गुग्गल। गुग्गुल।

शाभवी—सज्ञा स्त्री० [स० शाम्भवी] १ नीली दूब। २. दुर्गा। ३. ब्रह्मरध्र (को०)। ४. तत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा।

जिसमे नेत्र अपलक खुले रहते हैं किंतु बाह्य विषयो के ज्ञान से वे शून्य होते हैं (को०)।

शाभवीय—वि० [सं० शाम्भवीय] शिव से संबंधित (को०)।

शाइर—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शाइरा] दे० 'शायर'। उ०—कई तो शाइर जो शेर और गजल बनाते हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७।

शाइरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शायरी'।

शाइस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शिष्टता। सभ्यता। तहजीब। २ भलमनसी। आदमीयत। मनुष्यत्व। ३. योग्यता। पात्रता (को०)। ४ सस्कृति। सस्कार (को०)।

शाइस्ता—वि० [फ़ा० शाइस्तह्] १ शिष्ट। सभ्य। तहजीबवाला। २ विनीत। नम्र। ३. जो अच्छी चाल सीखा हो। अदब कायदा जाननेवाला। शिक्षित। जैसे,—शाइस्ता घोडा। ४. उत्तम। श्रेष्ठ (को०)। ५ योग्य। काबिल। पात्र।

शाकट—संज्ञा पुं० [सं० शाकशट] बथुआ नाम का साग।

शाकंभरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकम्भरी] १. दुर्गा। २ साँभर नामक प्रदेश या नगर।

शाकंभरीय[1]—वि० [सं० शाकम्भरीय] साँभर झील से उत्पन्न।

शाकंभरीय[2]—संज्ञा पुं० साँभर नमक।

शाक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्ती, फूल, फल आदि जो पकाकर खाए जायँ। भाजी। तरकारी। साग।

विशेष—शाक छह् प्रकार का कहा गया है—(१) पत्रशाक—चौलाई, बथुआ, मेथी आदि, (२) पुष्पशाक—केले का फूल, अगस्त का फूल आदि, (३) फलशाक—बैंगन, करेला आदि, (४) नालशाक—करेमू आदि, (५) कंदशाक—जमींकंद, कच्चू आदि, (६) सस्वेदज शाक—ढिंगरी, भुइँफोड, गोबरछत्ता आदि। ये शाक अनुक्रम से एक दूसरे से भारी होते हैं। सब प्रकार के पत्रशाक विष्टंभकारक, भारी, रूखे, मलकारक, मधोगत, वातकारी तथा शरीर, हड्डी, नेत्र, रुधिर, वीर्य, बुद्धि, स्मरणशक्ति और गति शक्ति का नाश करनेवाले तथा समय से पहले बालो को सफेद करनेवाले कहे गए हैं। परतु जीवती, बथुआ और चौलाई हानिकारक नही हैं।

२. सागौन का पेड। ३. भोजपत्र। भूर्ज वृक्ष। ४ सिरिस का पेड। ५ पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक द्वीप। विशेष दे० 'शाकद्वीप'। ६ एक प्राचीन जाति। विशेष दे० 'शक' (को०)। ७ शक राजा शालिवाहन का सवत्। ८ शक्ति। बल। ताकत।

शाक[2]—वि० [सं०] १. शक जाति संबंधी। २ शक राजा का। जैसे,—शाक संवत्।

शाक[3]—वि० [अ० शाक़] १. भारी। दूभर। कठिन।

मुहा०—शाक गुजरना = कष्टकर होना। खलना।

२ दु:ख देनेवाला। कडा। (क्व०)।

शाककलंबक—संज्ञा पुं० [सं० शाककलम्बक] १ प्याज। २.

शाकचुक्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमलोनी का साग। नोनिया। २ इमली।

शाकट[1]—वि० [सं०] १. शकट या गाडी संबंधी। गाडी का। २ गाडी मे लदा हुआ या जाता हुआ (को०)।

शाकट[2]—संज्ञा पुं० १. गाडी का बैल या जानवर। २ गाडी का बोझ। ३ लिसोडा। लभेरा। ४ धव वृक्ष। ५ खेत। क्षेत्र। जैसे,—शाकशाकट।

शाकटपोतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई या पोय का पौधा।

शाकटायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शकट का पुत्र। २ एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि एवं निरुक्तकार यास्क ने किया है। ३. एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैनो मे है।

शाकटिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाडीवाला। २ गाडीवान।

शाकटिक[2]—वि० [वि० स्त्री० शाकटिकी] दे० 'शाकट[1]' (को०)।

शाकटीन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गाडी का बोझ। २ प्राचीन काल की एक तौल जो बीस तुला या दो सहस्र पल की होती थी।

शाकतरु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शाकद्रुम' (को०)।

शाकदीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवल शाक के आधार पर रहना।

शाकद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वरण वृक्ष। २. सागौन का पेड।

शाकद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार सात द्वीपों मे से एक द्वीप।

विशेष—इसमे एक बहुत बडा शाक या सागौन का पेड माना गया है और यह चारो ओर क्षीरसमुद्र से घिरा हुआ कहा गया है। कहते हैं, इसमे ऋतुव्रत, सत्यव्रत, दानव्रत और अनुव्रत बसते हैं।

२ ईरान और तुर्किस्तान के बीच मे पडनेवाले उस प्रदेश का नाम जिसमे होकर वक्षु नद या आक्सस नदी बहती है। इस प्रदेश मे आर्य और शक जातियाँ बसती थी।

शाकद्वीपीय[1]—वि० [सं०] शाकद्वीप का रहनेवाला।

शाकद्वीपीय[2]—संज्ञा पुं० ब्राह्मणो का एक भेद। मग ब्राह्मण।

विशेष—शाकद्वीपीय ब्राह्मणो के जबूद्वीप में आने की कथा हरिवश मे इस प्रकार मिलती है—एक बार कृष्ण के पुत्र साब ने सूर्य का मदिर बनवाया और सौर यज्ञ करना चाहा। जब उन्हे यह मालूम हुआ कि सूर्य की उपासनाविधि के अच्छे जाननेवाले शाकद्वीप मे मिलेंगे, तब उन्होने वहाँ से कुछ ब्राह्मण बुलवाए। यह उस समय की बात है जब भारत और ईरान मे एक ही आर्य सभ्यता प्रचलित थी और एक देश के ऋत्विज दूसरे देश मे जाकर बराबर यज्ञ कराया करते थे। फारस में यज्ञ करनेवाले पुरोहित 'मग' कहलाते थे, इसी से इन शाकद्वीपीय ब्राह्मणो को 'मग ब्राह्मण' भी कहते थे।

[illegible]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक मुट्ठी का परिमाण। २ एक मुट्ठी या सब्जी (को०)।

[illegible]—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन। शोभांजन वृक्ष।

शाकपार्थिव—संज्ञा पुं० [सं०] संवत् चलाने का इच्छुक एक राजा।

शाकपूणि, शाकपूर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] वेद का भाष्य करनेवाले एक प्राचीन ऋषि।

शाकबालेय—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मयष्टि। भारंगी [को०]।

शाकबिल्व, शाकबिल्वक—संज्ञा पुं० [सं०] बैंगन। भटा। भाँटा।

शाकभक्ष—वि० [सं०] मांस न खानेवाला। शाकाहारी।

शाकयोग्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनिया। धान्याक।

शाकराज—संज्ञा पुं० [सं०] बथुआ। वास्तूक साग।

विशेष—निर्दोष होने के कारण बथुआ शाकों का राजा कहा गया है।

शाकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शाकारी'।

शाकल[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाकली] १ शाकल नामक द्रव्य से रँगा हुआ। २ खंड या अंश संबंधी।

शाकल[2]—संज्ञा पुं० १ खंड। टुकड़ा। चिप्पड़। २ एक प्रकार का साँप। ३ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ४ लकड़ी का बना हुआ तावीज। ५ मद्र देश का एक नगर। ६ पातंजलि महाभाष्य के अनुसार वाहीक (पंजाब) देश का एक ग्राम। ७ उक्त ग्राम या नगर का निवासी। ८ एक प्रकार का पीताभ चंदन (को०)। ९ हवन की सामग्री जिसमें जौ, तिल, घी, मधु आदि का मेल रहता है।

शाकल प्रातिशाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद का एक प्रातिशाख्य।

शाकल शाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋग्वेद का वह शाखा या संहिता जो शाकल्य ऋषि के गोत्रजों में चली।

विशेष—आजकल ऋग्वेद की यही शाखा मिलती और प्रचलित है।

शाकलहोम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हवन [को०]।

शाकलि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शाकली'।

शाकलिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाकलिकी] १ टुकड़ा या खंड संबंधी। अंश संबंधी। २ शाकल से संबंध रखनेवाला [को०]।

शाकली—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

शाकल्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक थे और जिन्होंने पहले पहल उसका पदपाठ ठीक किया था।

शाकवर—संज्ञा पुं० [सं०] जीवशाक।

शाकवरा—संज्ञा पुं० [सं०] जीवंती या डोडी नामक लता।

शाकवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] लताकरंज। सागर। गोटा।

शाकवालेय—संज्ञा पुं० [सं०] बभनेटी। भारंगी। ब्राह्मणयष्टिका।

शाकवाट, शाकवाटक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शाकवाटी, शाकवाटिका] साग सब्जी आदि के लगाने का घेरा हुआ क्षेत्र [को०]।

शाकविंदक—संज्ञा पुं० [सं० शाकविन्दक] बेल का पेड़।

शाकवीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बथुआ। वास्तूक शाक। २ पुनर्नवा। गदहपूरना। ३ जीवशाक।

शाकवृक्ष—संज्ञा पुं० सागौन। शाकद्रुम [को०]।

शाकशाकट, शाकशाकिन—संज्ञा पुं० [सं०] शाकसब्जी का खेत। शाकवाट [को०]।

शाकशाल—संज्ञा पुं० [सं०] बकायन। महानिंब वृक्ष।

शाकश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] बथुआ। वास्तूक शाक।

शाकश्रेष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवंती। डोडी शाक। २ डोडी। ३ भटा। बैंगन। ४ पेठा। भतुआ। ५ तरबूज।

शाकांग—संज्ञा पुं० [सं० शाकाङ्ग] गोल मिर्च। काली मिर्च।

शाका[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी। हड़। हर्रे।

शाका[2]—संज्ञा पुं० [सं० शाक (= शक संबंधी)] शक संवत्। उ०—जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका शाका और संवत् है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २२६।

शाकाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सागौन का पेड़।

शाकाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादा। वृक्षाम्ल। २ इमली।

शाकाम्लभेद, शाकाम्लभेदक—संज्ञा पुं० [सं०] चूक। चुक।

शाकारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शकों अथवा शकारों की भाषा, जो प्राकृत का एक भेद है। इसका प्रयोग मृच्छकटिक में द्रष्टव्य है।

शाकाष्टका—संज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

विशेष—इस दिन पितरों के उद्देश्य से शाक दान किया जाता है।

शाकाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शाकाष्टका'।

शाकाशन—संज्ञा पुं० [सं०] 'शाकाहार'।

शाकाहार—संज्ञा पुं० [सं०] अनाज अथवा, फल, फूल, पत्ते आदि का भोजन। मांसाहार का उलटा।

शाकाहारी—वि० [सं० शाकाहारिन्] [वि० स्त्री० शाकाहारिणी] केवल अनाज या साग भाजी खानेवाला। मांस न खानेवाला।

शाकिन—संज्ञा पुं० [सं०] खेत। बाड़ी। जैसे, शाकशाकिन = साग का खेत।

शाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह भूमि जिसमें शाक बोया हुआ हो। साग की क्यारी। २ एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणों में समझी जाती है। डाइन। चुड़ैल।

शाकिर—वि० [अ०] १ कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला। शुक्रगुजार। २ संतोष रखनेवाला।

शाकी—वि० [अ०] १ शिकायत करनेवाला। २ नालिश करनेवाला। ३ चुगली खानेवाला।

शाकुंतल—वि० संज्ञा पुं० [सं० शाकुन्तल] दे० 'शाकुंतलेय'। जैसे अभिज्ञान शाकुंतल।

शाकुंतलेय[1]—संज्ञा पुं० [सं० शाकुन्तलेय] १ शकुंतला का पुत्र, भरत। २ कालिदासविरचित एक नाटक का नाम।

शाकुंतलेय[2]—वि० शकुंतला संबंधी। शकुंतला का।

शाकुंतिक—संज्ञा पुं० [सं० शाकुन्तिक] चिड़ीमार। बहेलिया।

शाकुण—वि० [सं०] [स्त्री० शाकुणी] १. अनुतापयुक्त। अनुतप्त। २ दूसरे को पीडित करने या ताप देनेवाला। परोपतापी। परतापक (कौ०)।

शाकुन[1]—वि० [सं०] १ पक्षी सबंधी। चिडियो का। २ शुभाशुभ लक्षण सबंधी। सगुनवाला।

शाकुन[2]—सज्ञा पु० १ चिडिया पकडनेवाला। बहेलिया। २ यात्रा आदि मे कुछ विशेष पक्षियों जतुग्रो या और पदार्थो के मिलने से शुभाशुभ का निर्णय। शकुन। सगुन। ३. शुभाशुभ निर्णय या सगुन विचार करनेवाला शकुनज्ञ (कौ०)।

शाकुनि—सज्ञा पु० [सं०] बहेलिया।

शाकुनी—सज्ञा पु० [सं० शाकुनिन्] १. मछवाहा। मछली पकडनेवाला। २ एक प्रकार का प्रेत। ३. सगुन विचारनेवाला।

शाकुनेय[1]—वि० [सं०] पक्षी सबधी।

शाकुनेय[2]—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का छोटा उल्लू। २ बकासुर नामक दैत्य। ३ एक मुनि का नाम।

शाकुल—वि० सज्ञा पु० [सं०] दे० 'शाकुलिक' (कौ०)।

शाकुलिक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ मछवाहा। ५ मछलियो का समूह।

शाकुलिक[2]—वि० मछली सबधी। मछली का (कौ०)।

शाकद्र—सज्ञा पु० [सं० शाकेन्द्र] शाकाप्रवर्तक। दे० 'शाकेश्वर' (कौ०)।

शाकेक्षु—सज्ञा पु० [सं०] ईख का एक भेद।

शाकेश्वर—सज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जिसके नाम से संवत् चले। जैसे,—युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन।

शाकोल—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की लता।

शाक्कर—सज्ञा पु० [सं०] बैल। वृष। दे० 'शाक्वर'।

शाक्की—सज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच विभाषाएँ।

शाक्त[1]—वि० [सं०] १ प्रभाव, प्रताप या शक्ति सबधी। २. दैविक शक्ति (देवी) सबधी।

शाक्त[2]—सज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तत्रपद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

विशेष—शाक्तो के पूजन का विधान वैदिक पूजनविधि से भिन्न होता है। ये ईश्वर का शक्ति का शिव की पत्नी दुर्गा के रूप मे उपासना करते हैं। यह उपासनापद्धति दो प्रकार की है—दक्षिणाचार। और वामाचार। वामाचारियो या वाममार्गियो की पूजा मे मद्य, मास, स्त्री आदि पचमकार का व्यवहार होता है। स्त्रियो की जननेंद्रिय को शक्ति का प्रतीक मानकर ये लोग उसकी विशेष रीति से पूजा करते है।

शाक्तमत—सज्ञा पुं० [सं०] शक्ति के उपासको का मत या सिद्धात। विशेष दे० 'शाक्त'।

शाक्तागम—सज्ञा पु० [सं०] तत्रशास्त्र।

शाक्तिक—सज्ञा पुं० [सं०] १ शक्ति का उपासक। शाक्त। २. शक्ति नाम का अस्त्र या भाला बाँधनेवाला।

शाक्तीक[1]—वि० [सं०] शक्ति या भाला सबधी।

शाक्तीक[2]—सज्ञा पु० भाला चलानेवाला।

शाक्तेय, शाक्त्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. शक्ति का उपासक। २ पराशर ऋषि का एक नाम (कौ०)।

शाक्य—सज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नेपाल की तराई मे बसती थी और जिसमे गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

विशेष—बौद्ध ग्रथो मे शाक्य इक्ष्वाकुवंशी कहे गए हैं। जिस स्थान मे वे रहते थे, उसमे 'शाक' या सागौन के पेड अधिक थे, इसी से उनका 'शाक्य' नाम पडा। विद्वानो का अनुमान है कि लिच्छवियो के समान शाक्य भी व्रात्य क्षत्रिय थे।

२. बुद्ध का एक नाम (कौ०)। ३. शाक्यनरेश शुद्धोदन जो बुद्ध के पिता थे (कौ०)। ४. बौद्ध भिक्षु (कौ०)।

यौ०—शाक्यकेतु = बुद्ध। शाक्यपुगव = दे० 'शाक्यमुनि'। शाक्यपुत्रीय = बौद्ध यति। शाक्यभिक्षु, शाक्यभिक्षुक = बौद्ध मतानुयायी सन्यासी। शाक्यमुनि। शाक्यसिंह। शाक्यशासन = बुद्ध का उपदेश।

शाक्य मुनि, शाक्य सिंह—सज्ञा पु० [सं०] गौतम बुद्ध।

शाक्र[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके अधिपति इंद्र हैं। २. इंद्र के निमित्त अर्पित हवि आदि (कौ०)।

शाक्र[2]—वि० शक्र सबधी। इंद्र सबधी। शक्र का (कौ०)।

शाक्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २. इंद्राणी। शक्रपत्नी। शची।

शाक्वर[1]—वि० [सं०] शक्तिशाली। पराक्रमी। बलवान्।

शाक्वर[2]—सज्ञा पुं० १ इंद्र। २. इंद्र का वज्र। ३. साँड। बैल। ४ प्राचीन काल की एक रीति या सस्कार।

शाख[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ कृत्तिका का पुत्र कार्तिकेय। २. भाग। ३ करज।

शाख[2]—सज्ञा स्त्री० [फा० शाख] १ टहनी। डाल। डाली।

मुहा०—शाख लगाना = (१) कलम लगाना। टहनी लगाना। (२) सिंगो लगाना। (३) पद बढाना। समान करना। शाख लगना = घमंड होना। इतराना। शाख निकालना = दोष देना। कलक लगाना। नुक्ताचीनी करना। झगडा खडा करना। शाख निकालना = ऐब निकालना झगडा निकालना। बखेडा निकालना।

२. सींग। ३ लगा हुआ टुकडा। खड। फाँक। ४ कमान की लकडी (कौ०)। ५ एक पकवान (कौ०)। ६. वश। कुलपरपरा। ७. नदी आदि की बडी धारा मे से निकली हुई छोटी धारा।

शाखचा—सज्ञा पुं० [फा० शाखचह्] छोटी शाखा। टहनी। डाली। कौंचा (कौ०)।

यौ०—शाखचाबंदी = (१) लाछन लगाना। दोषारोपण। २. पेड की कलम लगाना।

शाखदार[1]—वि० [फा० शाखदार] १. जिसमे बहुत सी शाखाएँ हों। टहनीदार। २. सींगवाला। सींगदार।

शाखदार२—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो स्त्री की कमाई खाय (को०)।

शाखशाना—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाखशानह्] १ बाधा। अड़चन। पख। २ बात मे बात। बात का ढग। ३. बहस मुबाहिमा। ४. एक प्रकार के फकीर जो अपने को घायल कर देने की धमकी देकर भीख माँगते हैं [को०]।

शाखा१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पेड के धड से चारो ओर निकली हुई लकडी या छड। टहनी। डाल। २ शरीर का अवयव। हाथ और पैर। ३ उँगली। ४ चौखट। वृहद्०, पृ० २८१। ५ घर का पाख। ६. किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद। प्रकार। ७ विभाग। हिस्सा। ८. अंग। अवयव। ९. किसी शास्त्र या विद्या के अतर्गत उसका कोई भेद। १०. वेद की सहिताओ के पाठ और क्रमभेद जो कई ऋषियो ने अपने गोत्र या शिष्यपरपरा मे चलाए।

विशेष—शौनक ने अपने 'चरणव्यूह' मे वेदो की जो शाखाएँ गिनाई है, उसके अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं—शाकल्य, वाष्कल, आश्वलायन, शाखायन और माडूक्य। वायु पुराण मे यजुर्वेद की ८६ शाखाएँ कही गई हैं जिनमे ४३ के नाम चरणव्यूह मे आए हैं। इन ४३ मे माध्यदिन और कराव को लेकर ३७ शाखाएँ वाजसनेयी के अतर्गत हैं। सामवेद की सहस्र शाखाएँ कही जाती हैं जिनमे १५ गिनाई गई हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद की भी बहुत सी शाखाओ मे से पिप्पलादा-शौनकीया आदि केवल नौ गिनाई गई हैं।

११ सप्रदाय। पंथ (को०)। १२ ग्रथ का परिच्छेद। अध्याय (को०)। १३ पक्षातर। प्रतिपक्ष (को०)। १४ भुजा। बाहु। हस्त (को०)।

शाखा२—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाखह्] अपराधी को दंड देने का काष्ठ का एक यत्र [को०]।

शाखाकंट—संज्ञा पुं० [सं० शाखाकरट] थूहर। स्नुही वृक्ष।

शाखाचक्रमण—संज्ञा पुं० [सं० शाखाचड्क्रमण] १ एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद जाना। २ एक विषय अधूरा छोडकर दूसरा विषय हाथ मे लेना। एक विषय पर स्थिर न रहना। ३ कोई विषय पूरा अध्ययन न करके थोडा यह, थोडा वह पढना।

शाखाचद्र न्याय—संज्ञा पुं० [सं० शाखाचन्द्रन्याय] एक न्याय या कहावत जो ऐसी बात के सबध मे कही जाती है जो केवल देखने मे जान पड़ती है, वास्तव मे नही होती।

विशेष—चद्रमा कभी कभी देखने मे ऐसा जान पडता है मानो पेड की डाल पर है। इसी से इस कहावत या न्याय की रचना हुई है।

शाखादड—संज्ञा पुं० [सं० शाखादराड] दे० 'शाखारंड'।

शाखाद—संज्ञा पुं० [सं०] पेडो की डाल या टहनी खानेवाले पशु। जैसे—गौ, बकरी, हाथी।

शाखानगर, शाखानगरक—संज्ञा पुं० [सं०] बडे नगर का बसातिस्थान या मुहल्ला। उपनगर। उ०—शाखानगर शृगाटक आक्रीडते।—कीर्ति०, पृ० २८।

शाखापित्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमे हाथ और पैर में जलन और सूजन होती है।

शाखापुर—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शाखापुरी] किसी नगर के आसपास फैली हुई बस्ती।

शाखाप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनु के अनुसार अपने राज्य के कुछ दूर पर के आठ प्रकार के राजा जिनका विचार किसी राजा को युद्ध के समय रखना चाहिए।

शाखाबा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाखाबह्] खाडी [को०]।

शाखाबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शाखा के समान बाहु या भुजा। २ वह जिसकी भुजा शाखा के समान हो।

शाखाभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष। शाखी [को०]।

शाखामृग—संज्ञा पुं० [सं०] १ वानर। बदर। २ गिलहरी।

शाखाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] जलवेंत।

शाखाम्ला—संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।

शाखायन—संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद के एक ब्राह्मण ग्रथ का नाम। उ०—ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण के पहले पाँच भाग और कौषीतकि या शाखायन ब्राह्मण बने —हिंदु० स०, पृ० ७६।

शाखारड—संज्ञा पुं० [सं० शाखारगड] वह ब्राह्मण जो अपनी शाखा को छोडकर दूसरा शाखा का अध्ययन करे। शाखादड।

शाखारथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी गली या सडक जो बडी सडक से मिलती हो (को०)।

शाखाल—संज्ञा पुं० [सं०] जलवेंत।

शाखावात—संज्ञा [सं०] हाथ पैर में होनेवाला वातरोग।

शाखाशिफा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह डाल जो नीचे की ओर बढकर जड पकड ले और एक अलग पेड के धड़ के रूप में हो जाय। जैसे—वट की जटा या बरोह।

शाखिमूल—संज्ञा पुं० [सं०] रधि वृक्ष।

शाखी१—वि० [सं० शाखिन्] शाखाओ से युक्त। शाखावाला।

शाखी२—संज्ञा पुं० १ पेड। वृक्ष। २. वेद। ३ वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४. पीलू का पेड। ५ तुर्किस्तान का निवासी।

शाखुल—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाखुल] अरहर नाम से प्रसिद्ध द्विदल अन्न [को०]।

शाखोच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वशावली का कथन।

शाखोट, शाखोटक—संज्ञा पुं० [सं०] सिहोर का पेड। पीत वृक्ष।

विशेष—वैद्यक मे यह कडुआ, गरम पित्तकारक और वातहारी माना गया है।

शाख्य—वि० [सं०] १. शाखा के समान। शाखा तुल्य। २ शाखा सबधी [को०]।

शागर(पु)१—संज्ञा पुं० [सं० सागर] सागर। उ०—रुकुमिनिहरन सुनै जो हृदै विचारइ। आप तरै भव शागर कुल निस्तारइ।—अकबरी०, पृ० १५०।

शागिर्द—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ किसी से विद्या प्राप्त करने का संबंध रखनेवाला। विद्यार्थी। २. शिष्य। चेला।

मुहा०—शागिर्द करना = किसी को कुछ सिखाने का काम अपने ऊपर लेना। चेला बनाना।

शागिर्दपेशा—संज्ञा पुं० [फा० शागिर्दपेशह्] १ मातहत। उ०—विशेषत अंगरेजों के शागिर्दपेशे लोग।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३८३। २ अहलकार। कर्मचारी। ३. खिदमतगार। सेवक। ४ शागिर्द। विद्यार्थी ५. बडी कोठी के पास नौकरों के लिये अलग बने हुए घर।

शागिर्दाना—वि० [फा० शागिर्दानह्] १ शिष्योचित। २ शागिर्द होने के एवज मे गुरु को दिया जानेवाला (द्रव्य)।

शागिर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त किसी गुरु के अधीन रहने का भाव। शिष्यता। २. सेवा। टहल।

शाचि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दलकर भूमी निकाला हुआ जौ।

शाचि[2]—वि० १ प्रसिद्ध। विख्यात। विश्रुत। २ प्रतापी। शक्तिशाली [को०]।

शाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपडे का टुकडा। २. वह कपडा जो कमर मे लपेटकर पहना जा सके। धोती। परदनी। ३ एक प्रकार की कुरती। ४. ढीलाढाला पहनावा।

शाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। पट। २. दे० 'शाट'।

शाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साडी। धोती। २. कचूर।

शाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साडी। धोती।

शट्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. एक प्रकार का कृत्य जिस यज्ञकार्य मे हुए दोषो की निवृत्ति के निमित्त करने का विधान है (को०)।

शाट्यायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

शाठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शठता। दुष्टता। बदमाशी। २ कपट। दंभ। छल।

शाड्वल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शाद्वल'।

शाण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. हथियारों की धार तेज करने का पत्थर। सान। उ०—कृश होकर भी अग वीर के सुगठित शाण चढ़े से थे।—साकेत, पृ० ३७२। २. कसौटी। कषपट्टिका। ३ चार माशे का एक तोल। ४. आरा। करपत्र (को०)।

शाण[2]—वि० [सं०] १. सन के पौधे से संबंध रखनेवाला। २. सन का बना हुआ।

शाण[3]—संज्ञा पुं० १. सन के रेशे का बना हुआ कपडा। भँगरा। २. मोटा कपडा (को०)।

शाणक—संज्ञा पुं० [सं०] पटसन का बना कपडा। भँगरा [को०]।

शाणवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सन का बना हुआ वस्त्र पहने। २. एक मुहूर्त का नाम।

शाणाजीव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शस्त्रों पर सान देने का काम करके जीविकार्जन करता हो। हथियार की सफाई का काम करनेवाला व्यक्ति [को०]।

शाणाश्मा—संज्ञा पुं० [सं० शाणाश्मन्] सान चढ़ाने का पत्थर [को०]।

शाणि—संज्ञा पुं० [सं०] पटुआ।

शाणित—वि० [सं०] १. सान रखा हुआ। तीखा या तेज किया हुआ। २ कसौटी पर कसा हुआ।

शाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सन के रेशों से बुना हुआ कपडा। भँगरा। २ फटा हुआ वस्त्र। चीथडा। ३. वह छोटा कपडा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को पहनने के लिये दिया जाता है। ४. सान। ५. कसौटी। ६. छोटा खेमा या पर्दा। ७. चार माशे की तौल (को०)। ८ आरा (को०)। ९ हाथ या आँख आदि से संकेत करना (को०)।

शाणीर—संज्ञा पुं० [सं०] शोण (सोन) नदी का किनारा या उसका भूभाग [को०]।

शाणोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सान चढाने का प्रस्तर। २. कसौटी [को०]।

शात[1]—वि० [सं०] १. सान रखा हुआ। तेज किया हुआ। २. दुबला पतला। क्षीण। कृश। जैसे,—शातोदरी = कृशोदरी। ३. दुर्बल। कमजोर (को०)। ४ सुंदर। मनोहर (को०)। ५ प्रसन्न। प्रफुल्ल (को०)। ६ गिरा हुआ। पतित (को०)। ७ दीप्तिशाली। चमकदार (को०)।

शात[2]—संज्ञा पुं० १ धतूरा। २ खुशी। आनंद। प्रसन्नता (को०)।

शातकर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि। २. सातवाहन राजाओं का एक नाम। उ०—सातवाहनों ने अपने अभिलेखों मे अपने को 'सातवाहन' अथवा 'शातकर्णि' कहा है।—मादि०, पृ० २८६।

शातकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० शातकुम्भ] १ कचनार का वृक्ष। २. कनक। धतूरा। ३ कनेर का वृक्ष। ४. सोना। स्वर्ण।

शातकौंभ[1]—संज्ञा पुं० [सं० शातकौम्भ] सोना। सुवर्ण।

शातकौंभ[2]—वि० स्वर्णनिर्मित। सोने का बना हुआ [को०]।

शातक्रतव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्रधनुष। २. इंद्र। वह जिसने शतक्रतु पद प्राप्त किया हो। उ०—मधुरतर से मधुरतम होती हुई, रूप से गुण, पुष्प से मधु की तरह, साथ, शातक्रतव के पाथेय का।—आराधना, पृ० ६१।

शातक्रतव[2]—वि० देवराज इंद्र का या इंद्र संबंधी। इंद्र से संबंध रखनेवाला [को०]।

शातन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शातनीय, शातित] १ सान पर धार तेज करना। चोखा करना। २. कटवाना। (पेड आदि)। ३. नष्ट करना। काट गिराना। जैसे,—पक्षशातन। ४. काटना। तराशना। छीलना। ५ क्षीण या लघु होना (को०)। ६. विच्छेद। विलगाव। झडना (को०)। ७. सतह बराबर करना। रदना।

शातपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शातपत्रकी] चंद्रिका। चाँदनी।

शातभिष—वि० [सं०] शतभिषा नक्षत्र संबंधी या उसमें उत्पन्न [को०]।

शातभीरु—संज्ञा पुं० [सं०] भद्रवल्ली। मदनमाला।

शातमन्यव—वि० [सं०] शतमन्यु अर्थात् इंद्र से संबंध रखनेवाला [को०]।

शातमान—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शातमानी] जो सौ के मूल्य से क्रीत हो। एक शत मे खरीदा हुआ [को०]।

शातला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का थूहर का वृक्ष। विशेष दे० 'सातला'।

शातवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

शातह्रद—वि० [सं०] विद्युत् संबंधी। वैद्युतिक। विद्युत्जन्य [को०]।

शातातप—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्मृतिकार ऋषि का नाम।

शातित—वि० [सं०] जो नष्ट या ध्वस्त किया गया हो। जो काटकर गिराया हुआ हो [को०]।

शातिर¹—वि० [अ०] १ चालाक। चतुर। उस्ताद। काइयाँ। २ चपल। चंचल (को०)। ३. धृष्ट (को०)। ४ निपुण। दक्ष।

शातिर²—संज्ञा पुं० १ दूत। २ शतरंज का खिलाड़ी।

शातिराना—वि० [फा०] धूर्ततापूर्ण। शातिरो जैसा [को०]।

शात्—संज्ञा पुं० [सं०] सीढ़ी। सोपान। निःश्रेणी [को०]।

शातोदर—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० शातोदरी] १ पतली कमरवाला। २ क्षीण। पतला।

शात्रव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रुत्व। शत्रुता। २ शत्रु। ३ शत्रुओ का समूह।

शात्रव²—वि० १ शत्रु संबंधी। २ शत्रुतापूर्ण। विरोधी [को०]।

शात्रवीय—वि० [सं०] दे० 'शात्रव²'।

शाद¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पतन। गिरना। पड़ना। २ कर्दम। कीचड़। ३ घास। दूब।

यौ०—शादहरित = जमी हुई दूब के कारण हरा भरा भूखंड या भूमि। हरे घास से भरी हुई भूमि। हरी भरी जमीन।

शाद²—वि० [फा०] खुश। प्रसन्न। २ परिपूर्ण। भरा पूरा।

यौ०—शादकाम = (१) प्रसन्न। खुश। (२) कामयाब। सफलमनोरथ। शादकामी = (१) खुशी। प्रसन्नता। (२) कामयाबी। सफलता। शादयाना = (१) गायिका। डोमनी। (२) तोशक। शादमाँ = हर्षित। शादमान। शादमानी।

शादमान—वि० [फा०] प्रसन्न। खुश। हर्षित। उ०—जवाँ पर उसे याद है सब कुरान। फसाहत पर उसके हुआ शादमान।—दक्खिनी०, पृ० ७८।

शादमानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्नता। खुशी।

शादा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईंट।

शादाब—वि० [फा०] १ हरा भरा। सरसब्ज। तरोताजा। २. सींचा हुआ। सिक्त (को०)। ३ प्रफुल्ल (को०)।

शादाबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ तरोताजगी। हरियाली। २. प्रफुल्लता [को०]।

शादियाना—संज्ञा पुं० [फा० शादियानह्] १. खुशी का बाजा। आनंद-मंगल सूचक वाद्य।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

२. वह धन जो किसान जमींदार को ब्याह के अवसर पर देते हैं।

३. बधावा। बधाई।

क्रि० प्र०—देना।

४ खुशी या शादी के मौके पर गाया जानेवाला मांगलिक गीत।

शादी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खुशी। प्रसन्नता। हर्ष। आनंद। २ आनंदोत्सव।

यौ०—शादीगमी।

३. विवाह। ब्याह।

शाद्वल¹—वि० [सं०] १ हरित तृण या दूर्वा से युक्त। २ हरी हरी घास से ढँका हुआ। हरा भरा। ३. हरा (को०)।

शाद्वल—संज्ञा पुं० १ हरी घास। दूब। २ साँड। बैल। ३ रेगिस्तान के बीच की वह थोड़ी सी हरियाली जहाँ कुछ इनका बस्ती भी हो। नखलिस्तान। ओसिस।

यौ०—शाद्वलस्थली = हरीभरी भूमि। दूर्वाच्छादित भूमि।

शाद्वलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हरा कीड़ा।

शाद्वलित—संज्ञा पुं० [सं०] दूब से भरा हुआ होना। खूब हरा भरा होना [को०]।

शान¹—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तड़क भड़क। ठाट बाट। सजावट। जैसे,—कल बड़ी शान से सवारी निकली थी।

यौ०—शान व शौकत = दे० शानशौकत। उ०—वह उनकी शान व शौकत का कायल होगा।—प्रेमघन०, भा०, २, पृ० १७६। शान शौकत।

२ गर्वीली चेष्टा। ठसक। जैसे,—यह घोड़ा बड़ी शान से चलता है। ३ भव्यता। विशालता। चमत्कार। ४ शक्ति। करामात। विभूति। ऐश्वर्य। जैसे—खुदा की शान। ५. श्रेष्ठता। बुजुर्गी। गौरव (को०)। ६ प्रतिष्ठा। इज्जत। मानमर्यादा।

मुहा०—शान जाना = अप्रतिष्ठा होना। मान भंग होना। शान घटना = इज्जत में कमी होना। बड़प्पन मे कमी होना। शान बरसना = गौरव व्यक्त होना। शान मारी जाना = दे० 'शान जाना'। शान मे बट्टा लगना = दे० 'शान घटना'। किसी की शान मे = किसी बड़े के संबंध में। किसी के प्रति या किसी के विषय मे। जैसे,—उनकी शान मे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

शान²—संज्ञा पुं० [सं०] शरण। सान। २ कसौटी। निकषोपल (को०)।

शानच्—प्रत्य० [सं०] एक कृदंत प्रत्यय जो पाणिनि व्याकरण में प्रयुक्त है।

शानदार—वि० [अ० शान + फा० दार] १ भड़कीला। तड़क भड़कवाला। ठाट बाट का। जो बड़ी सजावट और तैयारी के साथ हो। २. भव्य। विशाल। चमत्कारपूर्ण। ३ ऐश्वर्ययुक्त। वैभव से पूर्ण। ४. गर्वीली चेष्टा से युक्त। ठसकवाला।

शानपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंदन घिसने का पत्थर। २. पारियात्र पर्वत।

शानशौकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] तड़क भड़क। ठाट बाट। तैयारी। सजावट।

शाना—संज्ञा पुं० [फा० शानह्] १. कंघा। कघी। उ०—हो परेशानी सरेमू भी न जुल्फेयार को। इसलिये मेरा दिले सद चाक शाना हो गया।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८५१। २ मोढा। कधा। खवा। ३ जुलाहो का राछ। कघी (को०)। ४ एक हाथियार (को०)।

शानी[१]—संज्ञा स्त्री० [स०] इनारुन। इद्रवारुणी।

शानी[२]—वि० [अ०] शत्रुता करनेवाला। वैर करनेवाला। वैरी (को०)।

शानी[३]—वि० [अ० शान] शानवाला। शानदार।

शानीला[†]—वि० [अ० शान] दे० 'शानी'।

शानैश्चर—वि० [स०] [वि० स्त्री० शानैश्चरी] १ शनिग्रह सबधी। शनि का। २ शनिवार को पडने या होनेवाला (को०)।

शाप—संज्ञा पुं० [स०] १. अहित-कामना सूचक शब्द। तुम्हारा कुछ अनिष्ट हो, इस प्रकार का वचन। कोसना। बद दुआ। जैसे,—ऋषि के शाप से वह राक्षस हो गया। २. धिक्कार। फटकारना। भर्त्सना।

क्रि० प्र०—देना।

३. ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय। बुरी कसम। ४. प्रतिषेध। प्रत्याख्यान। वर्जन (को०)। ५ कठिनाई। बाधा। उपद्रव (को०)।

शापग्रस्त—वि० [स०] जिसे शाप दिया गया हो। शापित।

शापज्वर—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता, पिता, गुरु आदि बडो के शाप के कारण कहा गया है।

शापटिक, शापठिक—संज्ञा पुं० [स०] मयूर। मोर।

शापना(पु)—क्रि० स० [स० शाप से नाम धा०] श्राप देना। शाप देना।

शापनिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा या मुक्ति (को०)।

शापप्रद—वि० [स०] श्राप देनेवाला (को०)।

शापमुक्त—वि० [स०] जिसका शाप छूट गया हो। जिसके ऊपर से शाप का बुरा प्रभाव हट गया हो।

शापमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा। शापनिवृत्ति (को०)।

शापमोक्ष—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'शापनिवृत्ति' (को०)।

शापयंत्रित—वि० [स० शापयन्त्रित] शाप के कारण नियत्रित या बँधा हुआ (को०)।

शापात—वि० [स० शापान्त] शाप का अत या परिसमाप्ति (को०)।

शापांबु—संज्ञा पुं० [सं० शापाम्बु] वह जल जिसे हाथ मे लेकर शाप दिया जाय।

शापावसान—संज्ञा पुं० [स०] शाप की निवृत्ति या अत (को०)।

शापास्त्र—संज्ञा पुं० [स०] १. वह व्यक्ति जिसके पास अस्त्रो के स्थान पर शाप ही हो। २. एक मुनि का नाम। दुर्वासा

शापित—वि० [स०] १. जिसे शाप दिया गया हो। शापग्रस्त। २. शपथयुक्त। सौगंध से बँधा हुआ। जिसने शपथ ले ली हो (को०)।

शापोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [स०] शाप का उच्चारण। शाप छोडना। शाप देना।

शापोद्धार—संज्ञा पुं० [स०] शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा। शापमुक्ति।

शाफरिक—संज्ञा पुं० [स०] मछुआ। धीवर।

शाफी—वि० [अ० शाफी] १ रोगमुक्त करनेवाला। २ भरोसा या सत्वना देनेवाला (को०)।

शाफेय—संज्ञा पुं० [स०] यजुर्वेद की एक शाखा।

शाबर[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाबरी] १ दुष्ट। कपटी। २ असभ्य। जगली (को०)। ३ नीच कर्मवाला। अधम (को०)।

शाबर[२]—संज्ञा पुं० १. बुराई। हानि। दुःख। २ लोध्र वृक्ष। लोध का पेड। ३ तांबा। ४. अधकार। ५ एक प्रकार का चदन। ६ अपराध। दोष। पाप (को०)। ७ दुष्टता (को०)। ८ जैमिनिमीमासा सूत्रो के एक भाष्यकार का नाम (को०)।

शाबर भाष्य—संज्ञा पुं० [स०] मीमांसासूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या जिसके कर्ता शबर स्वामी थे।

शाबरभेदाक्ष, शाबरभेदाख्य—संज्ञा पुं० [स०] तांबा।

शाबरिका—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की जोक।

शाबरी—संज्ञा पुं० [स०] शबरो की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबल्य—संज्ञा पुं० [स०] १ कई रगो का मेल। शबलता। कबरापन। चितकबरापन। २. एक साथ भिन्न भिन्न कई वस्तुओ का मेल।

शाबस्त—संज्ञा पुं० [स०] भागवत के अनुसार राजा युवनाश्व का एक पुत्र जिसने शावस्ती या श्रावस्ती नगरी बसाई था।

शाबस्ती—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती'।

शाबान—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानो का आठवाँ महीना (को०)।

शाबाश—अव्य० [फा०] 'शादबाश' का सक्षिप्त रूप। एक प्रशसासूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो। क्या कहना।

शाबाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] कोई कार्य करने पर प्रशसा। वाहवाही। साधुवाद।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

शाब्द[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाब्दी] १ शब्द सबधी। शब्द का। २ शब्द विशेष पर निर्भर। ३. शब्दमय (को०)। मौखिक। वाचाकथित या उक्त (को०)। ५ मुखर। ध्वनियुक्त (को०)।

शाब्द[२]—संज्ञा पुं० शब्दशास्त्री। वैयाकरण।

शाब्दबोध—संज्ञा पुं० [स०] शब्दो के प्रयोग द्वारा अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान।

शाब्द व्यजना—संज्ञा स्त्री० [स० शाब्दव्यञ्जना] दे० 'शाब्दी व्यजना'।

शाब्दिक[१]—वि० [सं०] १. शब्द सबधी। शब्द का। २. मौखिक। जबानी (को०)। ३. निनादी (को०)।

शाब्दिक[२]—संज्ञा पुं० १. शब्दशास्त्र का जाननेवाला। वैयाकरण। २. अभिधान बनानेवाला। शब्दकोश का निर्माता।

शाब्दी—वि० स्त्री० [सं०] १ शब्द संबंधिनी। २ केवल शब्दविशेष पर निर्भर रहनेवाली। जैसे,—शाब्दी व्यजना।

शाब्दी व्यंजना—संज्ञा स्त्री० [सं० शाब्दी व्यञ्जना] साहित्य मे व्यजना के दो भेदो मे से एक। वह व्यंजना जो शब्दविशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो। अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यजना का उलटा।

शाम¹—संज्ञा स्त्री० [फा०] सूर्य अस्त होने का समय। रात्रि और दिवस के मिलने का समय। साँझ। सायम्। सध्या।

मुहा०—शाम फूलना = सध्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना।

यौ०—शामगाह = सध्याकाल।

शाम(पु)²—वि०, संज्ञा पु० [सं० श्याम] दे० 'श्याम'।

यौ० —शामकरण।

शाम³—वि० [सं०] शम सबंधी। शम का।

शाम⁴—संज्ञा पुं० [सं० शामन्] साम गान।

शाम⁵—संज्ञा स्त्री० [देश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ मे ली जानेवाली लकडियो या छडियो के निचले भाग मे अथवा औजारो के दस्ते मे लकडी को घिसने या छीजने से बचाने के लिये लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जडना।—लगाना।

शाम⁶—संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर मे है। कहते है, यह देश हजरत नूह के पुत्र शाम ने बसाया था। इसकी राजधानी का नाम दमिश्क है। आजकल यह प्रदेश सीरिया कहलाता है।

शामकरण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] वह घोडा जिसका कान श्याम रग का हो।

शामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बदकिस्मती। दुर्भाग्य। २. विपत्ति। आफत। ३ दुर्दशा। दुरवस्था।

क्रि० प्र०—आना।—मे पडना या फँसना।

मुहा०—शामत का घेरा या मारा = जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो। शामत की मार = अभाग्य। बदकिस्मती। कमबख्ती। शामत सवार होना या सिर पर खेलना = शामत आना। दुर्दशा का समय आना।

शामतजदा—वि० [अ० शामत + फा० ज़दह्] कमबख्त। बदनसीब। अभागा।

शामती—वि० [अ० शामत + फा० ई (प्रत्य०)] जिसकी शामत आई हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो। शामत का मारा।

शामन—संज्ञा पु० [सं०] १ शमन। २. शांति। ३. मारण। हत्या करना। ४. यमराज (को०)। ५ समाप्त। अंत (को०)।

शामनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए हैं। २ शांति। स्तब्धता। ३. अंत। समाप्ति। ४. वध। हत्या।

शामा¹—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ रोग के लिये लाभदायक मानी जाती हैं।

शामा²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामा] दे० 'श्यामा'।

शामित्र¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यज्ञ मे मास पकाने के निमित्त प्रज्वलित की हुई अग्नि। २ वह स्थान जहाँ ऐसी अग्नि प्रज्वलित की जाय। ३ यज्ञ। ४ यज्ञपात्र। ५ यज्ञ के लिये पशुओ को हत्या। ६ वधस्थान। बलि करने की जगह (को०)। ७ बलि के निमित्त यूपकाष्ठ मे पशुबंधन (को०)। ८ घातक प्रहार या चोट (को०)।

शामित्र²—वि० यज्ञबलि करनेवाले से संबद्ध (को०)।

शामियाना—संज्ञा पुं० [फा० शामियानह्] एक प्रकार का बड़ा तबू। उ०—खाकसारी ने दिखाया बाद मुर्दन भी उरूज। आसमाँ तुरबत पे मेरे शामियाना हो गया।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५०।

विशेष—इसमे प्राय ऊपर की ओर लबा चौडा कपडा होता है जो बासो पर तना रहता है। इसके नीचे चारो ओर प्रायः खुला ही रहता है। पर कभी कभी इसके चारो ओर कनात भी खडी की जाती है।

क्रि प्र०—खडा करना।—गाडना।—लगाना।

शामिल—वि० [फा०] १ जो साथ मे हो। मिला हुआ। सम्मिलित। जैसे,—(क) ये कागज मिसिल मे शामिल कर दो। (ख) अब तो तुम भी उन्ही लोगो मे शामिल हो गए। २ भागीदार। साझी (को०)। ३. मददगार। सहकारी (को०)। ४ एकत्र। इकट्ठा (को०)।

यौ०—शामिल हाल।

शामिल हाल—वि० [अ० शामिल + हाल] जो दु.ख सुख आदि सब अवस्थाओ मे साथ रहे। साथी। शरीक।

शामिलात—संज्ञा स्त्री० [अ० शामिल] १ हिस्सेदारी। साझा। शराकत। दे० 'शामिल'। २ धन संपत्ति, जायदाद आदि जो साझे की हो।

शामिली—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रुवा (को०)।

शामी¹—संज्ञा स्त्री० [देश०] लोहे या पीतल का वह छल्ला जो लकडियो आदि के नीचे के भाग मे अथवा औजारो के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है, शाम।

क्रि० प्र०—जडना। लगाना।

शामी²—वि० [अ० शाम (देश)] शाम देश का। शाम देश संबंधी। जैसे,—शामी कबाब।

शामी कबाब—संज्ञा पुं० [हिं० शामी + कबाब] एक प्रकार का कबाब जो मास को मसाले के साथ भूनने के उपरात पीसकर गोलियो या टिकियो के रूप मे बनाया जाता है।

शामीन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भस्म। २. यज्ञ करने का एक उपकरण। स्रुवा (को०)।

शामील—संज्ञा पुं० [सं०] भस्म। खाक। राख।

शामीली—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रक्। माला।

शामुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] गले मे पहनने का कोई ऊनी कपड़ा।

शामूल—संज्ञा पुं० [सं०] ऊनी कपड़ा।

शामेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शाम्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शम का भाव। २ बंधुत्व। भाई चारा। ३ शांति।

शाम्य[2]—वि० शमसंबंधी [को०]।

शाम्यप्रास—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ की वलि।

शाय—संज्ञा पुं० [सं०] शयन करना। लेटना। सोना [को०]।

शायक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाण। तीर। शर। २ खड्ग। तलवार।

शायक[2]—वि० [अ० शायक] [बहु० शायकीन] १. शौक करने या रखनेवाला। शौकीन। २. ख्वाहिशमंद। इच्छुक। आकांक्षी।

शायद—अव्य० [फा०] कदाचन। कदाचित्। संभव है। स्यात्। जैसे—शायद वह आज आएगा।

शायर—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा स्त्री० शायरा] वह जो शेर आदि बनाता हो। काव्य करनेवाला। कवि।

शायराना—वि० [अ० शायर+फा० आनह्] १. कवियों जैसा। कवियों के लहजेवाला। २. कवित्वमय अतिरंजित।

शायरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कविता करने का कार्य या भाव। २. काव्य। कविता। ३. अतिरंजना।

शायाँ—वि० [अ०] योग्य। तुल्य। मुनासिब [को०]।

शाया—वि० [अ०] १. प्रकट। जाहिर। २ प्रकाशित। छपा हुआ।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

शायिक—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शायिका] वह जो शय्यारचना का जानकार हो। वह जो शय्या द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।

शायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नींद। निद्रा। २. लेटने की क्रिया। शयन [को०]।

शायित—वि० [सं०] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ। उ०—अशनिपात से शायित उन्नत शत शत वीर, क्षत विक्षत हत अचल शरीर।—अपरा, पृ० २१। २ गिरा हुआ। पतित। ३. सोया हुआ। लेटा हुआ। उ०—शायित जन जगे सकल। कला के खुले उत्पल।—वेला, पृ० ७२।

शायिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शयन। सोना।

शायिनी—वि० स्त्री० [सं० शायिन्=शायी का स्त्री०] शयन करनेवाली। उ०—वह नहीं, पर्यंक, पिय की अंक की जो शायिनी थी।—मिट्टी०, पृ० १३४।

शायी—वि० [सं० शायिन्] [वि० स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला। सोनेवाला।

शारंग—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्ग] दे० 'सारंग'।

शारंगक—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गक] एक प्रकार का पक्षी।

शारंगधनुष—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्ग धनुष] शारंग नामक धनुष से सुशोभित, अर्थात् विष्णु। उ०—विष्णु के हाथ में गदा कौमदी और चक्र सुदर्शन और शारंगधनुष और शंख आदि रहता है। कबीर म०, पृ० ४१। २. कृष्ण।

शारंगपाणि—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गपाणि] १ हाथ में शारंग नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु। २ कृष्ण। ३ राम।

शारंगपानी पु—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गपाणि] दे० 'शारंगपाणि'।

शारंगभृत—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गभृत्] १ शारंग नामक धनुष धारण करनेवाले, विष्णु। २ कृष्ण।

शारंगवत—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गवत] कुरुवर्ष नामक देश।

शारंगष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गष्ठा] १ काकजंघा। २ मकोय। ३ गुंजा। चोटली। करजनी।

शारंगाष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गाष्ठा] १. मकोय। २ कठकरंज। लताकरंज।

शारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गी] सारंगी नामक बाजा। विशेष दे० 'सारंगी'।

शारंगेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गेष्टा] दे० 'शारंगाष्ठा'।

शारंवर—संज्ञा पुं० [सं० शारम्बर] राजतरंगिणी के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

शार[1]—वि० [सं०] १. चितकबरा। कई रंगों का। २ पीला। ३. नीले, पीले और हरे रंग का।

शार[2]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पासा। अक्ष। २ वायु। हवा। ३ हिंसा। ४. चितकबरा रंग (को०)। ५ हरा रंग (को०)।

शारणिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शरण में आए हुए की रक्षा करता हो। रक्षक।

शारणिक[2]—वि० शरण चाहनेवाला। रक्षा चाहनेवाला। शरणार्थी [को०]।

शारतल्पिक—संज्ञा पुं० [सं०] वाणों की शय्या पर सोनेवाले भीष्म पितामह [को०]।

शारद[1]—वि० [सं०] १ शरद्काल संबंधी। शरद्काल का। २. नवीन। नया। ३. लज्जावान। कुलीन। ४ वार्षिक। वर्ष से संबंध रखनेवाला (को०)। ५. अभिनव। ६. योग्य। चतुर (को०)।

शारद[2]—संज्ञा पुं० १ वर्ष। साल। २. मेघ। बादल। ३. सफेद कमल। ४. मौलसिरी का वृक्ष। काम तृण। ६. हरा मूँग। ७. एक प्रकार का रोग। ८ शरद् का समय (को०)। ९. शरद् की धूप (को०)। १०. शरत्कालीन अन्न (को०)।

यौ०—शारदचंद्र=शरद् ऋतु का निर्मल चाँद। शारदज्योत्सना=शरत्काल की शुभ्र चाँदनी। शारदनिशा=शरद् ऋतु की रात। शारदपूर्णिमा=शरत्पूर्णिमा। आश्विन महीने की पूनो। शारदमेघ=जलरहित होने से निर्मल और श्वेत बादल। शारदयामिनी। शारदरात्रि, शारदशर्वरी=शरद् ऋतु की आह्लादक रात्रि।

शारदक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तृण [को०]।

शारदांबा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदाम्बा] सरस्वती।

शारदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की वीणा। २ ब्राह्मी। ३ अनंतमूल। शारिवा। ४ सरस्वती। ५ दुर्गा। ६ प्राचीन काल की एक प्रकार की लिपि।

विशेष—कश्मीर देश की अधिष्ठात्री देवी शारदा मानी जाती हैं जिससे वह देश 'शारदादेश' या 'शारदमंडल' कहलाता है और इसी से वहाँ की लिपि को 'शारदालिपि' कहते हैं। पीछे से उसको (कश्मीर को) 'देवदेश' भी कहते थे। मूल शारदा लिपि ईस्वी सन् की दसवीं शताब्दी के आस पास कुटिल लिपि से निकली है और उसका प्रचार कश्मीर तथा पंजाब में रहा। उस में परिवर्तन होकर वर्तमान शारदा लिपि बनी जिसका प्रचार अब कश्मीर में बहुत कम रह गया है। उसका स्थान बहुधा नागरी, गुरुमुखी या टाकरी ने ले लिया है।

शारदिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरद ऋतु में होनेवाला ज्वर। २ रोग। बीमारी। ३ शरद् ऋतु में होनेवाला अथवा वार्षिक श्राद्ध। ४. शरद् ऋतु की धूप (को०)।

शारदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल। २ छतिवन। सप्तपर्ण। ३ आश्विन मास की पूर्णिमा। कोजागर पूर्णिमा। ४ कार्तिक मास की पूर्णिमा (को०)।

शारदी[2]—वि० शरद्काल का। शरद् काल संबंधी।

शारदी[3]—संज्ञा पुं० [सं० शारदिन्] १ अपराजिता। कोयल। २ सफेद कमल। ३ अन्न या फल आदि।

शारदीय—वि० [सं०] शरद्काल का। शरद् ऋतु संबंधी।

शारदीयपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शारदीय महापूजा। शरद् ऋतु में नवरात्र की दुर्गापूजा। उ०—नहीं तो वे स्वदेशाचारानुसार प्राय शारदीय पूजा ही में हँस लिया करते थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५७।

शारदीय पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन पूर्णिमा। कोजागर पूर्णिमा।

शारदीय महापूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत्काल में होनेवाली दुर्गा की पूजा। नवरात्र की दुर्गापूजा।

शारद्य[1]—वि० [सं०] शरद्काल का। शरद् ऋतु संबंधी।

शारद्य[2]—संज्ञा पुं० शरद् ऋतु में होनेवाला अन्न (को०)।

शारद्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ कृपाचार्य का एक नाम। २ गौतम (को०)।

शारद्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कृपाचार्य की पत्नी। कृपी (को०)।

शारि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पासा आदि खेलने की गोट। २ शतरंज का मुहरा (को०)। ३ छोटी गोल गेंद (को०)।

शारि[2]—संज्ञा स्त्री० १ मैना। २. कपट। छल। धोखा। ३. एक प्रकार का गीत। ४ हाथी की झूल (को०)।

शारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मैना नाम की चिड़िया। २ शतरंज या चौपड़ खेलने की क्रिया। ३. सारंगी आदि बजाने की कमानी। ४ वीणा या सारंगी आदि बजाने की क्रिया। ५ दुर्गा देवी का एक नाम। शतरंज की गोटी (को०)। ६ कोण। मिजराब (को०)।

शारिकाकवच—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रयामल तंत्र में है।

शारित—वि० [सं०] रंगीन। चित्रविचित्र।

शारिपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] शतरंज या चौसर आदि खेलने की बिसात।

शारिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के एक प्रधान शिष्य (को०)।

शारिफल, शारिफलक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शारिपट्ट'।

शारिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनंतमूल। सालसा। दुरालभा। २ जवासा। यवासा।

शारिशृंग—संज्ञा पुं० [सं० शारिशृङ्ग] जुआ खेलने का एक प्रकार का पासा या गोट।

शारी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुशा नाम की घास। २ एक प्रकार का पक्षी। ३. मूँज। काँडा।

शारी[2]—संज्ञा पुं० १ शतरंज की गोट। २ गेंद।

शारीर[1]—वि० [सं०] १ शरीर संबंधी। शरीर का। २. शरीर से उत्पन्न।

शारीर[2]—संज्ञा पुं० १. शरीर को होनेवाले दु ख जो आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, तीन प्रकार के होते हैं। २. वृष। साँड। ३. जीवात्मा। आत्मा (को०)। ४ मल (को०)। ५ शरीररचना (को०)। ६ एक प्रकार की ओषधि (को०)।

शारीरक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शारीरकी] १ शरीर से उत्पन्न। २ शरीर संबंधित (को०)। ३ मूर्तिमान्। शरीरधारी (को०)।

शारीरक[2]—संज्ञा पुं० १ मूर्तिमान् जीव। २ दे० 'शारीरक भाष्य'।

शारीरक भाष्य—संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरक सूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास का बनाया हुआ वेदांतसूत्र।

शारीरकीय—वि० [सं०] मूर्तिमान। शरीरधारी (को०)

शारीरतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शरीर के तत्वों और रचना आदि का विवेचन होता है।

शारीर विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शारीर विधान'।

शारीर विधान—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २ वह शास्त्र जिसमें जीवों के शरीर के भिन्न भिन्न अंगों और उनके कार्यों का विवेचन होता है।

शारीर व्रण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग।

विशेष—यह वात, पित्त कफ और रक्त से उत्पन्न होता है। परंतु रक्त के संबंध से द्विदोषज और त्रिदोषज होने के कारण आठ प्रकार का हो जाता है—(१) वातव्रण, (२) पित्तव्रण, (३) कफव्रण, (४) रक्तव्रण, (५) वातपित्तज व्रण, (६) वातकफज व्रण, (७) कफपित्तज व्रण, और (८) संनिपातज व्रण।

शारीर शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शारीर विधान'।

शारीरिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शारीरिकी] १ शरीर संबंधी। कालेवरिक। कायिक। दैहिक। जिस्मानी। जैसे, शारीरिक कष्ट। २. आध्यात्मिक (को०)।

शारुक—वि० [सं०] १ हत्या या नाश करनेवाला। २ कष्ट देनेवाला। दुष्ट।

शारू(ॱ)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शारि] मैना। उ०—वो शारूँ के मूँ ते सुने यो बैन। नसीहत पर उसकी गजब मे ही ऐन। —दक्खिनी०, पृ० ८४।

शार्क¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चीनी। शर्करा। २ एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।

शार्क²—संज्ञा पुं० [अ०] एक विशालकाय मछली।
विशेष—यह शिकारी मछली है जो समुद्र मे रहती है। इसका शिकार करना बहुत खतरनाक होता है। यह समुद्री जीवो को खाती है। कभी कभी छोटी मोटी नावो को उलट देती है। इसके शरीर का तेल दवा के काम आता है।

शार्कक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध का फेन। दुग्धफेन। मलाई। २ चीनी का ढेला। शर्करापिंड। ३ गोश्त का टुकडा।

शार्कर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूध का फेन। २ दूध की पपड़ी या मलाई। ३ लोध्रवृक्ष। ४ कँकरीली और पथरीली जगह।

शार्कर²—वि० [वि० स्त्री० शार्करी] १ कँकरीला। २ शक्कर या चीनी का बना हुआ।

शार्करक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जो ककरो और पत्थरो से भरा हो। कँकरीली या पथरीली जगह। २ वह स्थान जहाँ चीनी बहुत होती हो।

शार्करक²—वि० कँकरीला। पथरीला।

शार्कर मद्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का मद्य जो चीनी और धी से बनाया जाता था।

शार्करिक—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'शार्करक'।

शार्करी—वि० [सं० शार्करिन्] मधुमेह या पथरी रोग से ग्रस्त [को०]।

शार्करीवान—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक देश जो उत्तर दिशा मे था।

शार्करीय—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'शार्करक'।

शार्गाल—वि० [सं०] शृगाल सबधी। शृगाल का [को०]।

शार्ङ्ग¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ धनुष। कमान। २ विष्णु का धनुष। ३ अदरक। आदी। ४ विष्णु के हाथ मे रहनेवाला धनुष। एक प्रकार का साम। ५. शार्ङ्गक। पक्षी। चिडिया (को०)।

शार्ङ्ग²—वि० १ शृग सबधी। २ शृग का। शृगनिर्मित। २ धनुर्धर। धनुप धारण करनेवाला (को०)।

शार्ङ्गक—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी। चिडिया।

शार्ङ्गधन्वा—संज्ञा पुं० [शार्ङ्गधन्वन्] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुप धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. कमनैत।

शार्ङ्गपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण ३ वह जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शार्ङ्गपाणि'।

शार्ङ्गवेदिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का स्थावर विप जो देखने मे सोठ के समान होता है।

शार्ङ्गेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकजंघा। २. घुँघची।

शार्ङ्गेष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाकरज। २ लताकरज।

शार्ङ्गायुध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शार्ङ्गक'।

शार्ङ्गी—संज्ञा स्त्री० [सं० शार्ङ्गिन्] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण ३. धनुर्धारी। कमनैत।

शार्टकट—वि० [अ०] संक्षिप्त या छोटा रास्ता। उ०—रास्ते तो कई हो सकते हैं, और शार्टकट होते नही।—नदी०, पृ० ३८।

शार्दूल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चीता। २ व्याघ्र। बाघ। ३ राक्षस। ४ शरभ नामक जतु। ५ एक प्रकार का पक्षी। ६ यजुर्वेद की एक शाखा। ७. दोहे का एक भेद जिसमे ६ गुरु और ३६ लघु मात्राएँ होती हैं। ८. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ९. सिंह।

शार्दूल²—वि०। सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने मे उनके अंत मे होता है। जैसे,—नरशार्दूल।

शार्दूलकंद—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूलकन्द] जगली प्याज।

शार्दूलकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिशंकु के एक पुत्र का नाम।

शार्दूलचर्म—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूलचर्मन्] बाघ का चमडा। व्याघ्रचर्म [को०]।
यौ०—शार्दूलचर्मांबर=व्याघ्रचर्म धारण करनेवाले, शिव।

शार्दूलज—संज्ञा पुं० [सं०] व्याघ्रनख नामक गधद्रव्य।

शार्दूलललित—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका पद अठारह अक्षरो का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार है—म+स+ज+स+त+स। इसका दूसरा नाम शार्दूललसित भी है।

शार्दूलललसित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शार्दूलललित'।

शार्दूलवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियो के अनुसार पचीस पूर्व जिनो मे से एक जिन का नाम।

शार्दूलविक्रीडित—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका चरण उन्नीस अक्षरो का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार है—म [illegible] ज+स+त+त+एक गुरु। २ बाघ की क्री[illegible]

शार्मण्य [illegible]] जर्मनी देश का नाम [को०]।
[illegible] जर्मनी।

शार्यात—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि का नाम। २ एक प्रकार का साम।

शार्व—वि० [सं०] शर्व अर्थात् शिवसबंधी [को०]।

शार्वदिक्—संज्ञा स्त्री० [सं० शार्वदिश्] पूर्व दिशा [को०]।

शार्वर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक अधकार। अधतमस।

शार्वर[2]—वि० १ रात का। रात्रि से सबंध रखनेवाला। रात्रिकालीन। २ घातक। हिंसक। दुर्मति [को०]।

शार्वरिक—वि० [सं०] रात्रि सबधी। रात का।

शार्वरी[1] संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात। रात्रि। २. लोध।

शार्वरी[2]—संज्ञा पुं० [सं० शार्वरिन्] बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौंतीसवाँ सवत्सर।

शार्वरीक—वि० [सं०] रात्रि सबधित [को०]

शालकटकट—संज्ञा पुं० [सं० शालङ्कटङ्कट] सुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामनपुराण के अनुसार विद्युत्केशी और शालकटकटा का पुत्र था।

शालकायन—संज्ञा पुं० [सं० शालङ्कायन] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ नदी।

यौ०—शालकायन जीवसू = व्यास की माता। सत्यवती।

शालकायनजा—संज्ञा स्त्री० [सं० शालङ्कायनजा] शालंकायन की पुत्री सत्यवती जो व्यास की माता थी।

शालकायनि—संज्ञा पुं० [सं० शालङ्कायनि] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शालंकि—संज्ञा पुं० [सं० शालङ्कि] पाणिनि ऋषि का नाम।

शालकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शालङ्की] १ गुड़िया। २ कठपुतली।

शाल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष। सखुआ। साखू। सालू।

विशेष—यह हिमालय पर्वत पर सतलज से आसाम तक, मध्य भारत के पूरब प्रात मे पश्चिम बगाल की पहाडियो पर और छोटा नागपुर के जंगलो में उत्पन्न होता है। इसका वृक्ष बहुत बडा और विशाल होता है। छोटे वृक्षों की छाल प्राय. दो इच मोटी खुरदरी, काले रग की और रेशेदार होती है। कच्ची लकडी सफेद रग की और जल्दी बिगडनेवाली होती है। सार भाग जब ताजा होता है तब कुछ पीलापन लिए हुए भूरे रग का होता है परतु सूखने पर काला हो जाता है। पत्ते चिकने चमकीले, अंडाकार, ६ से १० इंच तक लबे और ४ से ६ इच तक चौडे होते हैं। डालियो के अत मे फूलो के गुच्छे लगते हैं। पुष्पदल लबे और हलके पीले रग के आते है, और किंचित् अडाकार तथा अनीदार होते हैं। फल गोल और आध इच लबा होता है। वसत मे यह फूलता है और वर्षा के प्रारभ मे इसके फल पक जाते हैं। इसकी लकडी मकान आदि बनाने मे अधिकता से काम मे आती है। इससे एक प्रकार का लाल रग निकलता है। इसके बीजो का तेल निकालकर जलाने के काम मे लाया जाता है। दुर्भिक्ष मे फलो का आटा खाने के काम मे आता है। यह दो प्रकार का होता है—एक बडा शाल और दूसरा पीतशाल या विजयसार। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडवा, रूखा, स्निग्ध, गरम, कसैला, कातिजनक तथा कफ, पित्त, घाव, पसीना, कृमिरोग, योनिरोग, प्रमेह, कुष्ठ, विस्फोटक आदि रोगो को दूर करनेवाला है। इसके पत्त और गोद प्राय ओषधि के काम मे आते है।

पर्या०—साल। अश्वकर्ण शकुवृक्ष। सत तरु। सर्जधूप। आदि।

२ एक प्रकार की मछली। ३ वृक्ष। पेड। ४. एक नदी का नाम। ५ वृक के एक पुत्र का नाम। ६. राजा शालिवाहन का एक नाम। ७ राल। धूना। ८ घेरा। हाता। बाड (को०)।

शाल[2]—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर जिसके किनारे पर प्राय बेल बूटे आदि बने होते हैं। दुशाला।

यौ०—शालदुशाला। शालदोज। शालबाफ।

शाल(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाला] घर। कक्ष। कमरा। उ०—ऊँचे मदिर शाल रसोई। एक घरी पुनि रहन न होई।—सब रवि०, पृ० १३४।

शाल[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] एक प्रकार की बर्छी।

शालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पदुआ। नाडी शाक। २. ससखरा। दिल्लगीबाज। भाँड। ३ एक प्रकार का राग [को०]।

शालकटकट—संज्ञा पुं० [सं० शालकटङ्कट] महाभारत के अनुसार एक राक्षस का नाम जिसे घटोत्कच ने मार डाला था।

शालकल्याणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रूखा मधुर, शीतवीर्य और पुरीषभेदक होता है।

शालग्राम—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति जो पत्थर की होती है और नारायणी नदी मे पाई जाती है।

विशेष—यह मूर्ति प्राय पत्थर की गोलियो या वटियो आदि के रूप मे होती है और उसपर चक्र का चिह्न बना होता है जिसे लोग साधारण बोलचाल की भाषा मे जनऊ कहते हैं। जिस शिला पर यह चिह्न नही होता वह पूजन के लिये उपयुक्त नही मानी जाती। लोग अन्य देवमूर्तियो की भाँति इसको भी पहले प्रतिष्ठा करते है। और तब इसका पूजन करते है। अनेक पुराणो मे इसकी पूजा का माहात्म्य मिलता है।

२. बडी गंडकी या नारायणी नदी के किनारे का एक गाँव।

विशेष—इस गाँव के समीप शाल के वृक्ष बहुत अधिकता से हैं। इस गाँव के पास ही नदी मे शालग्राम शिलाएँ भी पाई जाती हैं। वैष्णव लोग इस गाँव को बहुत पवित्र मानते हैं।

शालग्रामगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जहाँ शालग्राम की मूर्तियाँ मिलती हैं।

शालज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली जिसे शाल भी कहते हैं। २. सर्ज रस। शाल वृक्ष का निर्यास।

शालदोज—संज्ञा पुं० [फा० शालदोज़] वह जो शाल के किनारे पर बेल बूटे आदि बनाता है।

[illegible]

शाखाकी—[illegible] [सं० शाखा[illegible]] पुतली। पुतला।

[illegible]—[illegible] [सं० शालाग्नि] शाला मे रखी जानेवाली अग्नि।

[illegible]—[illegible] [सं०] १. घर। [illegible]। २. जगह। स्थान। [illegible] ३. [illegible] ४. [illegible] [illegible] (डि०)। [illegible]

[illegible] [सं०] १. [illegible] २. [illegible] ३. [illegible] का एक [illegible]

[illegible] [सं० [illegible]] १. [illegible]। [illegible]

[illegible] [सं० [illegible]] १. [illegible] की चिकित्सा [illegible] २. [illegible]

[illegible] [सं०] १. [illegible]

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible]

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible]

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible]

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible] का एक नाम।

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible]

[illegible]—[illegible] [सं०] [illegible]। [illegible]।

[illegible]—[illegible] [सं०] १. [illegible]। २. [illegible]।

[illegible]—[illegible] [सं०] १. [illegible] २. घर का [illegible]। घर का [illegible] नाम।

[illegible]—[illegible] [सं०] १. कुत्ता। [illegible]। २. [illegible]। [illegible]

शालार—[illegible] [सं०] १. [illegible] २. [illegible]। ३. [illegible]। ४. [illegible]

शालालु—[illegible] एक प्रकार का [illegible]

शालावता [illegible] के अनुसार [illegible] का [illegible]

शालावत् [illegible] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शालावृक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। बानर। कपि। २ कुत्ता। कुक्कुर। ३ लोमड़ी। शृगाल। ४ बिल्ली। बिडाल। ५ हरिन। मृग। ६ भेड़िया (को०)।

शालासद्—वि० [सं०] घर पर रहनेवाला [को०]।

शालिंच—संज्ञा पुं० [सं० शालिञ्च] एक प्रकार का साग जिसे शालच या शाचि साग भी कहते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा दीपन, तथा प्लीहा, बवासीर और कफ पित्त का नाश करनेवाला माना गया है।

शालिंची—संज्ञा स्त्री० [सं० शालिञ्ची] दे० 'शालिंच'।

शालि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैद्यक के अनुसार पाँच प्रकार के धानो मे से एक प्रकार का धान जो हेमंत ऋतु मे होता है। जड़हन।

विशेष—वैद्यक मे इसके रक्तशालि, कलम, पाडुक, शकुनाहृत, सुगंधक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाडक, पुंडरीक, महिष मस्तक, दीर्घशूक, कांचनक, हायन, लोध्रपुष्पक आदि अनेक भेद कहे गए हैं। यद्यपि वैद्यक के अनुसार भिन्न भिन्न देशो मे उत्पन्न होनेवाले के भिन्न भिन्न गुण कहे गए हैं, तथापि साधारणत. सभी शालि धान्यो के गुण इस प्रकार माने गए हैं—मधुर, कषायरस, स्निग्ध, बलकारक, स्वरप्रसादक, शुक्रवर्धक, कुछ कुछ वायु और कफवर्धक, शीतवीर्य पित्तनाशक और मूत्रवर्धक।

पर्या०—मधुर। रुच्य। व्रीहिश्रेष्ठ। नृपप्रिय। धान्योत्तम। कैदार। सुकुमारक।

२ बासमती चावल। ३. काला जीरा। ४. गन्ना। पौंढा। ५ गंधविलाव। गंधमार्जार। ६. पक्षी (को०)। ७. एक यक्ष का नाम।

शालिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शाला या भवन संबंधी हो। २. वह जो शाल वृक्ष संबंधी हो। ३. तंतुवाय। जुलाहा। ४ एक प्रकार का कर या महसूल। राजस्व। ५ कारीगरो का गाँव [को०]।

शालिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विदारी कंद। २. मैना। शारिका। ३ शालपर्णी। ४ घर। मकान। ५. आधार। स्थान (को०)।

शालिगोप—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शालिगोपी] वह जो खेतो की, विशेषत. धान के खेतो की, रखवाली करता हो।

शालिचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] चावल का आँटा [को०]।

शालिधान—संज्ञा पुं० [सं० शालिधान्य] बासमती चावल।

विशेष—यह धान जेठ मास मे बोया जाता है और अगहन के अंत या पूस के आरंभ मे पककर तैयार हो जाता है। इसे अगहनी या हैमंतिक शालिधान्य भी कहते हैं। इसका पौधा मिट्टी तथा देश के अनुसार दो हाथ से लेकर तीन हाथ तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते साधारण धान के समान होते हैं पर उनकी अपेक्षा कुछ कड़े और चिकने होते है। यह छोटा और बड़ा दो प्रकार का होता है। भेद इतना ही है कि छोटा पहले पकता है और बड़ा कुछ देर मे। यह धान बिना कुटे हुए सफेद होता है और बहुत बारीक तथा सुंदर होता है। चावलो मे यह सबमे उत्तम माना जाता है।

शालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ग्यारह अक्षरो का एक वृत्त। इसमें क्रम से एक मगण दो तगण और अंत मे दो गुरु होते हैं। २ मसीड। पद्मकंद। ३ मेथी। ४. गृहिणी। गृहस्वामिनी (को०)।

शालिपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ओषधि। दे० 'एकागी'—३।

शालिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ पिठवन। पृश्निपर्णी। ३ वनउरदी। ४ शालपर्णी। सरिवन।

शालिपिंड—संज्ञा पुं० [सं० शालिपिण्ड] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शालिपिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्फटिक। बिल्लौर पत्थर। २ चावल का आटा (को०)।

शालिभवन—संज्ञा पुं० [सं०] धान से भरा हुआ खेत।

शालिराट्—संज्ञा पुं० [सं०] हंसराज चावल।

शालिवाह—संज्ञा पुं० [सं०] चावल ढोनेवाला बैल [को०]।

शालिवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा।

विशेष—इसने शाक नामक संवत् चलाया था। टाड के राजस्थान के इतिहास मे लिखा है कि यह गजनी के राजा गज का पुत्र था। पिता के मारे जाने पर यह पजाब चला आया और उसपर अपना अधिकार जमा लिया। इसने शालिवाहन पुर नामक नगर भी बसाया था। इसकी राजधानी गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठानपुर मे थी। कहीं कहीं इसका नाम सातवाहन भी मिलता है। कथा सरित्सागर मे लिखा है कि इसे सात नामक गुह्यक उठाकर ले चला करता था, इसी से इसका नाम सातवाहन पड़ा।

शालिहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. घोड़ो और पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। अश्ववैद्यक। ३. पुराणानुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। ४. अश्वचिकित्सा शास्त्र का लेखक। अश्ववैद्यक का प्रणेता (को०)।

शालिहोत्री—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्रिन्] १ वह जो पशुओ और विशेषत. घोड़ा आदि की चिकित्सा करता हो। अश्ववैद्य। २ अश्व। घोड़ा (को०)।

शाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काला जीरा। २. मेथी। ३. शालपर्णी। ४ दुरालभा।

शाली—वि० [सं० शालिन्] १ (प्राय समास मे प्रयुक्त) युक्त। सहित। २. घरेलू। गृह संबंधी। ३. अच्छे आचार व्यवहारवाला। शालीन। श्लाघ्य [को०]।

शालीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शालीन¹—वि० [सं०] १. जो धृष्ट या उद्दंड न हो। विनीत। नम्र। २ जिसे लज्जा आती हो। सलज्ज। ३ सदृश। समान। तुल्य। ४. अच्छे आचार विचारवाला। ५. शाला संबंधी।

[illegible] । ६ [illegible] । ७ जो व्यवहार में कुशल हो । दक्ष चतुर ।

शालीन—संज्ञा पुं० १. [illegible] । २ [illegible] शालीनता । नम्रता । ३ वह जो धन विन्यास न हो [illegible] ।

शालीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शालीन होने का भाव या धर्म । २. लज्जा । लाज । शर्म । ३. नम्रता । उ०—[illegible] प्रवहति लज्जा हूँ, मैं शालीनता सिखाती हूँ । [illegible] सुरम्या पग में नूपुर सी विरद मनाती हूँ ।—[illegible], पृ० १०३ । ४ धर्मनता ।

शालीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] । शतपुष्पा । २ सोवा नामक साग । ३. लज्जाशीलता । विनम्रता (को०) ।

शालीना संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'मिश्रया' (को०) ।

शालीनीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नम्र या शिष्ट बनाना २ दुर्वचन । निंदा । धिक्कार (को०) ।

शालीय'—वि० [सं०] शाला या घर संबंधी । २ शाल वृक्ष का ।

शालीय'—संज्ञा पुं० एक वैदिक आचार्य का नाम ।

शालु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भसीड । कमलकंद । २ भटेउर या चोरक नामक ओषधि । ३ कषाय द्रव्य । ४ मेढक । भेक । ५ एक प्रकार का फल ।

शालुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भसीड । पद्मकंद । २. जायफल ।

शालुर—संज्ञा पुं० [सं०] मंडूक । भेक । मेढक (को०) ।

शालूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंडूक । मेढक । २ जायफल । जातीफल । ३ दे० 'शालुक' । ४ भसीड । ५ एक प्रकार का रोग ।

शालूकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम ।

शालूर—संज्ञा पुं० [सं०] भेक । मेढक ।

शालूरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कीटाणु जो अंतड़ियों में पीड़ा उत्पन्न करता है ।

शालेय'—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौंफ । मधुरिका । २. शालि धान का खेत । ३ मूली ।

शालेय—वि० १. शाला संबंधी । शाल वृक्ष का । २. शाला संबंधी (को०) ।

शालेया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ । मिश्रेया ।

शालोत्तरीय—संज्ञा पुं० [illegible], पाणिनि (को०) ।

शाल्मल—संज्ञा पुं० [सं०] १. [illegible] । सेमर का पेड़ । २. [illegible] । ३ एक [illegible] का नाम । [illegible] दे० [illegible]—३ । ४. एक नरक । विशेष दे० 'शाल्मलि'—४ ।

शाल्मलि—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] । सेमर का पेड़ । विशेष दे० 'सेमर' । २. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम ।

विशेष—यह [illegible] है । [illegible] है [illegible] के [illegible] में गुड़ बहुत प्रसिद्ध है [illegible] और यह [illegible] से [illegible] है । [illegible] रोहित, [illegible] और [illegible] [illegible] । [illegible] है [illegible] नाम प्रसिद्ध है ।

३ पुराणानुसार एक नरक का नाम ।

विशेष—[illegible] । इसमें [illegible] पर [illegible] नरक पहुँचाये जाते हैं ।

शाल्मलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोहितक वृक्ष । रोहिड़ा । २. [illegible] का पेड़ (को०) ।

शाल्मलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेमल का वृक्ष । [illegible] ।

शाल्मलिफलक—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] ।

शाल्मलिस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़ का एक नाम । २. [illegible] (को०) ।

शाल्मली'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. [illegible] । सेमल । २. एक नरक का नाम । उ०—[illegible] हार । [illegible] सहसार तरार ।—[illegible], पृ० ५६७ । ३. पाताल की एक नदी का नाम (को०) ।

शाल्मली'—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलिन्] [illegible] ।

शाल्मलीकंद—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलीकन्द] सेमल की जड़, जो वैद्यक के अनुसार मधुर, शीतल, [illegible], और [illegible], दाह तथा [illegible] नाशक मानी जाती है ।

शाल्मलीफल—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] नाम का वृक्ष ।

शाल्मलीफलक—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार सेमर के काठ की वह पट्टी जिसपर [illegible] की धार तेज की जाती है ।

शाल्मलीद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप । विशेष दे० 'शाल्मलि'-२ ।

शाल्मलीवेष्ट, शाल्मलीवेष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] सेमर का गोंद । मोचरस ।

शाल्मलीरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप । विशेष दे० 'शाल्मलि',—२ ।

शाल्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] एक राजा का नाम ।

विशेष—[illegible] ।

[illegible]

[सं०] [illegible] के अनुसार

शाल्वगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत का नाम।

शाल्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लेप जो फोड़े पकाने के लिये उसपर चढ़ाया जाता है। पुलटिस। २ भरता। चोखा।

शाल्वसेनी—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

शाल्विक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी जिसे क्षुद्रचूड भी कहते हैं।

शाव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बच्चा, विशेषत पशुओं आदि का बच्चा। २. मृतक। मुरदा। ३ भूरा रंग। ४. सूतक जो किसी के मर जाने पर उसके संबंधियों को लगता है। ५. मरघट। श्मशान।

शाव²—वि० १ शवसंबंधी। शव का। २. भूरे रंग का (को०)। ३ मरा हुआ। मुरदा (को०)।

शावर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बच्चा। विशेषत पशु या पक्षी का बच्चा। २ झाऊ।

शावक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। गुनाह। २ अपराध। कसूर। ३ लोध वृक्ष। ४ शबर स्वामीकृत भाष्य। ५ एक तंत्र ग्रंथ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है।

शावर²—वि० शबर संबंधी। शबर का।

शावरक—संज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोध।

शावर चंदन—संज्ञा पुं० [सं० शावर चन्दन] एक प्रकार का चंदन।

शावरभेदाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा।

शावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौंछ। केवाँच।

शावरोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार शावर या म्लेच्छों का एक उत्सव जो होली के सदृश कथित है (को०)।

शाश्वत¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाश्वती] १ जो सदा स्थायी रहे। कभी नष्ट न होनेवाला। नित्य। २ संपूर्ण। समस्त। सब (को०)।

शाश्वत²—संज्ञा पुं० १ वेदव्यास। २ शिव। ३ स्वर्ग। ४ अंतरिक्ष। ५ सूर्य (को०)। ६ एक कोशकार का नाम (को०)। ७. नित्यता। निरंतरता (को०)।

शाश्वतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाश्वतिकी] स्थायी। नित्य। शाश्वत।

शाश्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

शाष्कुल—वि० [सं०] मांस या मछली खानेवाला। मांसाहारी। गोश्तखोर।

शाष्कुलिक—संज्ञा पुं० [सं०] सेंकी या पकी हुई रोटियाँ, पूड़ी, कचौड़ी आदि। शष्कुली का समूह या ढेर (को०)।

शास—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति। स्तव। २. अनुशासन।

यौ०—शासानुशास।

शासक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शासिका] १ वह जो शासन करता हो। २. वह जिसके हाथ में किसी नगर, प्रांत या देश आदि की राजकीय व्यवस्था हो। दंडाधिकारी। हाकिम। ३ कौटिल्य के अनुसार जहाज का कप्तान।

शासन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. आज्ञा। आदेश। हुक्म। २ किसी को अपने अधिकार या वश में रखना। ३ लिखित प्रतिज्ञा। पट्टा। ठोका। ४ राजा की दान की हुई भूमि। मुआफी। ५ वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय। ६ शास्त्र। ७ इंद्रियनिग्रह। ८. किसी के कार्यों आदि का नियंत्रण। ९. किसी नगर, प्रांत या देश आदि की राजकीय व्यवस्था करने का काम। हुकूमत। १० दंड। सजा। ११ शिक्षण। अध्यापन (को०)।

यौ०—शासनकर्ता। शासनतंत्र। शासनदूषक = राजाज्ञा का उल्लंघन करनेवाला। शासनप्रणाली। शासनव्यवस्था।

शासन²—वि० १ शिक्षा देनेवाला। शिक्षक। बोधक। २. दंड देनेवाला। मारक (को०)।

विशेष—यौगिक शब्दों के अंत में प्रयुक्त होने से इस शब्द के उक्त अर्थ होते हैं। जैसे, पाकशासन, स्मरशासन, शिष्यशासन आदि।

शासनकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० शासनकर्तृ] शासक। शास्ता।

शासनतंत्र—संज्ञा पुं० [सं० शासन तन्त्र] हुकूमत का तौर तरीका। राज्यशासन की रीति या पद्धति।

शासनदूषक—वि० [सं०] शासन को न माननेवाला। राज्यादेश को न माननेवाला (को०)।

शासनदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों की एक देवी का नाम।

शासनधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शासक। २ राजदूत। एलची।

शासनपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह ताम्रपत्र या शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखा या खोदा हुई हो। २. शुक्रनीति के अनुसार राजाज्ञा का वह पत्र जिसपर राजा का हस्ताक्षर हो। फरमान।

शासनप्रणाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शासन की रीति या पद्धति। हुकूमत का तौर तरीका।

शासनवाहक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो राजा की आज्ञा लोगों के पास पहुँचाता हो। २ राजदूत। एलची।

शासनव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शासनप्रणाली'।

शासनशिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखी हो।

शासनसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० शासन + सत्ता] शासन या नियमन की स्थिति या अधिकार। उ०—यहाँ उन्हीं राजनीतिक दलों के हाथ में शासनसत्ता रहेगी जो रूस के प्रति मित्रता रखेंगे।—आ० अ० रा०, पृ० १२५।

शासनहर—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजदूत। २ वह जो राजा की आज्ञा लोगों तक पहुँचाता हो।

शासनहारक—संज्ञा पुं० [सं० शासनहारक] दे० 'शासनहर'।

शासनहारी—संज्ञा पुं० [सं० शासनहारिन्] राजदूत। एलची। शासनहर।

शासनातर्गत—वि० [स० शासन + अन्तर्गत] १ शासन के भीतर या अधीन। २. अधीन। वशीकृत।

शासना¹—सज्ञा स्त्री० [स० शासन] आज्ञा।—उ० दास होइ पुत्र होइ शिष्य होइ कोइ भाइ, शासना न मानई तौ कोटि जन्म नर्क जाइ।—राम चं०, पृ० ४८।

शासना²—क्रि० स० [स० शासन] हुकूमत करना। शासन करना। उ०—या विधि शासन जीवन देई। हरिहर नाम न कबहूँ लेई।—कबीर सा०, पृ० २५५।

शासनाधीन वि० [स०] दे० 'शासनातर्गत'।

शासनानिवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] राजकीय आज्ञा का उल्लंघन [को०]।

शासनी सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो लोगो को धर्म का उपदेश करती हो।

शासनीय—वि० [स०] १ शासन करने के योग्य। २ सुधारने के योग्य। ३ दड देने के योग्य। सजा देने के लायक।

शासानुशास—सज्ञा पुं० [स० शास + अनुशास] राजा। नरेश। शाहशाह। उ०—जब उन्होने एथेस के वीरो के साथ मिलकर पर्शुपुरी के शासानुशास से युद्ध करके असाधारण शौर्य प्रकट किया था।—वैशाली०, पृ० १२४।

शासित¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० शासिता] १ जिसका शासन किया जाय। शासन किया हुआ। २ सयमित। निग्रहित (को०)। ३. जिसे दड दिया जाय। दडित।

शासित²—सज्ञा पुं० १. प्रजा। २. निग्रह। सयम।

शासिता—सज्ञा पु० [स० शासितृ] १ शासक। शास्ता। २ दडविधान करनेवाला। दड देनवाला। ३. शिक्षक। उपदेशक [को०]।

शासी—सज्ञा पु० [स० शासिन्] शासन करनेवाला। शासक।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय. यौगिक शब्द बनाने मे, उसके अत में किया जाता है।

शास्—सज्ञा पुं० [स०] वक्ता। उद्‌घोषक। जैसे,—उक्थश स् = सूक्तो को उद्‌घोषित करनेवाला [को०]।

शास्तरपु—सज्ञा पु० [स० शास्त्र] दे० 'शास्त्र'। उ०—ब्रह्मा विध वेद कीन शास्तर मुन मथन काठ, कर कर अठरा पुरान गाई ज्ञान गैली।—सत तुरसी०, पृ० १५६।

शास्ता—सज्ञा पुं० [स० शास्तृ] १ शासक। २ राजा। ३. पिता। ४ उपाध्याय। गुरु। उ०—देवताओ और मनुष्यो के शास्ता है।—वैशाली०, पृ० ३३। ५ वह मनुष्य जिसे कोई काम करने का पूरा अधिकार हो। प्रधान नता या पथप्रदर्शक। ६. वह मनुष्य जिसे शासन की अबाधित सत्ता प्राप्त हो। निरकुश शासक। दे० 'डिक्टेटर'। ७ बुद्ध (को०)। ८. जिन (को०)। ९ बौद्धो या जैनो का पूज्य उपदेष्टा (को०)।

शास्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शासन। २ दड। सजा। उ०—शिक्षा समेत बहुधा वह शास्ति देते।—प्रिय०, पृ० १६७। ३ आदेश। आज्ञा (को०)। ४ राजदंड। उ०—अटल शास्ति नित करने पालन।—पल्लव, पृ० १३०। ५ शासन का चिह्न (को०)।

शास्त्र—सज्ञा पु० [स०] १ हिंदुओ के अनुसार ऋषियो और मुनियो आदि के बनाए हुए वे प्राचीन ग्रथ जिनमे लोगो के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाए गए हैं और अनुचित कृत्यों का निषेध किया गया है। वे धार्मिक ग्रथ जो लोगो के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं।

विशेष—हमारे यहाँ वे ही ग्रथ शास्त्र माने गए हैं जो वेदमूलक हैं। इनकी सख्या १८ कही गई है और नाम इस प्रकार दिए गए हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद और अर्थशास्त्र। इन अठारहो शास्त्रो को अठारह विद्याएँ भी कहते हैं। इस प्रकार हिंदुओ की प्राय सभी धार्मिक पुस्तकें शास्त्र की कोटि मे आ जाती हैं। साधारणत शास्त्र मे बतलाए हुए काम विधेय माने जाते है, और जो बातें शास्त्रो मे वर्जित हैं, वे निषिद्ध और त्याज्य समझी जाती हैं।

२. किसी विशिष्ट विषय या पदार्थसमूह के सबध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से सग्रह करके रखा गया हो। विज्ञान। जैसे,—प्राणिशास्त्र, अर्थशास्त्र, विद्युत्‌शास्त्र, वनस्पतिशास्त्र। ३ आज्ञा। आदेश (को०)। ४ धर्मशास्त्र की आज्ञा (को०)। ५ पुस्तक। ग्रथ (को०)। ६. सिद्धात (को०)। ७. ज्ञान (को०)।

शास्त्रकार—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने शास्त्रो का प्रणयन या रचना की हो। शास्त्र बनानेवाला। २. ग्रथलेखक (को०)। ३. ऋषि। मुनि (को०)।

शास्त्रकृत्—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र बनानेवाले, अर्थात् ऋषि, मुनि। २ आचार्य।

शास्त्रकोविद—वि० [स०] जो शास्त्रो मे निष्णात हो [को०]।

शास्त्रगंड—सज्ञा पु० [स० शास्त्रगण्ड] साधारण पाठक। बहुत हलका अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी [को०]।

शास्त्रचक्षु—सज्ञा पुं० [स० शास्त्र चक्षुष्] १ शास्त्र की आँख, अर्थात् व्याकरण। २. वह जिसे शास्त्ररूपी नेत्र प्राप्त हो। ज्ञानी। पंडित।

शास्त्रचर्चा—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र सबधी विचारविमर्श, अध्ययन, मनन आदि [को०]।

शास्त्रचारण—सज्ञा पु० [स०] वह जो शास्त्रो का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रदर्शी।

शास्त्रज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो शास्त्रो का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रो का जानकार। शास्त्रवेत्ता।

शास्त्रतत्व—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्रो मे वर्णित सत्य। परम सत्य [को०]।

शास्त्रतत्वज्ञ—सज्ञा पुं० [स० शास्त्रतत्त्वज्ञ] गणक। ज्योतिषी।

शास्त्रत्व—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र का भाव या धर्म।

शास्त्रद [illegible] [स० शास्त्रदर्शिन्] वह जिसे शास्त्रो का अच्छा [illegible]स्त्रज्ञ।

शा[illegible]] शास्त्रो या धर्मग्रथो मे [illegible]। [को०]।

शास्त्रदृष्टि'—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शास्त्रों का ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २ ज्योतिषी (को०)।

शास्त्रदृष्टि²—संज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की दृष्टि। शास्त्रीय दृष्टिकोण। शास्त्रानुसार विचारपद्धति (को०)।

शास्त्रप्रवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रप्रवक्तृ] दे० 'शास्त्रवक्ता'।

शास्त्रप्रसंग—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रप्रसङ्ग] १ शास्त्र का विषय। २ किसी भी प्रकार का धार्मिक विवाद (को०)।

शास्त्रमति—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रवेत्ता। शास्त्रविद् (को०)।

शास्त्रमीमांसक—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्र + मीमांसक] शास्त्र की मीमांसा या व्याख्या करनेवाला व्यक्ति।—शास्त्र मीमांसक या तत्व निरूपक को किसी सामान्य तथ्य या तत्व तक पहुँचने की जल्दी रहती है।—रस०, पृ० ४३।

शास्त्रमीमांसा—संज्ञा स्त्री० [सं० शास्त्र + मीमांसा] तत्वविचार। उ०—आधुनिक पश्चिमी शास्त्रमीमांसा को विदेशी कहकर त्य गा भी नहीं।—रस०, पृ० ५।

शास्त्रयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्रों का उद्गम स्थान (को०)।

शास्त्रवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रवक्तृ] वह जो लोगों को शास्त्रों का उपदेश देता हो।

शास्त्रवर्जित—वि० [सं०] शास्त्रों द्वारा निषिद्ध (को०)।

शास्त्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय का शास्त्रीय विवेचन (को०)।

शास्त्रविद्—वि० पुं० [सं०] शास्त्रों का जाननेवाला। शास्त्रदर्शी। शास्त्रज्ञ।

शास्त्रविधान—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय आज्ञा। वेदाज्ञा (को०)।

शास्त्रविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शास्त्रविधान' (को०)।

शास्त्रविमुख—वि० [सं०] शास्त्रों का अध्ययन न करनेवाला (को०)।

शास्त्रविरुद्ध—वि० [सं०] शास्त्रों के कथन के प्रतिकूल। अशास्त्रीय। अवैधानिक (को०)।

शास्त्रविप्रतिषेध, शास्त्रविरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ शास्त्रीय विषयों का परस्पर अनैक्य। विधि विधान की असंगति। २ शास्त्रीय विधि के विरुद्ध आचरण (को०)।

शास्त्रविहित—वि० [सं०] जो शास्त्र द्वारा कथित, अनुमोदित हो। शास्त्रसंमत।

शास्त्रव्युत्पत्ति - संज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्रों का अंतरंग ज्ञान। शास्त्रों में प्रवीणता (को०)।

शास्त्रशिल्पी—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रशिल्पिन्] १ काश्मीर देश का एक नाम। २ भूमि। जमीन।

शास्त्रसंगत, शास्त्रसंमत—वि० [सं० शास्त्रसङ्गत, शास्त्रसम्मत] शास्त्र के अनुकूल। शास्त्रसिद्ध।

शास्त्रसिद्ध—वि० [सं०] शास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित (को०)।

शास्त्रस्थिति संपादन—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्र + स्थिति + सम्पादन] शास्त्र में निर्दिष्ट विधियों का पालन। उ०—पर रावण यदि राम के प्रति क्रोध या घृणा की व्यंजना करेगा तो रस के तीनों अवयवों के कारण 'शास्त्रस्थिति संपादन' चाहे जो हो जाय पर उस व्यंजित भाव के साथ पाठक के भाव का तादात्म्य कभी न होगा।—रस०, पृ० ६६।

शास्त्राचरण—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्र विधियों का पालन। २. शास्त्र का अध्ययन। ३ वह जो शास्त्रादेशों का पालन करता हो। ४ वेदाध्यायी बटु (को०)।

शास्त्राज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की आज्ञा। शास्त्र का आदेश। उ०—धर्माधर्म तथा शास्त्राज्ञा का कुछ भी विचार करते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७।

शास्त्रातिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय विधियों का उल्लंघन (को०)।

शास्त्रातिग—वि० [सं०] शास्त्रों को न माननेवाला (को०)।

शास्त्रानुशीलन – संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों का मनन (को०)।

शास्त्रानुष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय नियमों का पालन (को०)।

शास्त्रान्वित—वि० [सं०] शास्त्रीय नियमों के अनुसार (को०)।

शास्त्राभिज्ञ—वि० [सं०] शास्त्रों में निष्णात। शास्त्रज्ञ (को०)।

शास्त्राभ्यासी—वि० [सं०] शास्त्र का अभ्यास या अध्ययन करनेवाला। उ०—भारतीय शास्त्राभ्यासी रसमीमांसा में आत्मा को भी ग्रहण करते हैं।—रस० (भू०), पृ० ३।

शास्त्रार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी शास्त्रीय विषय पर वादविवाद करना। उ०—उसने अनेक पंडितों को शास्त्रार्थ में जीता है।—भारतेंदु ग्रं०, भा०, १, पृ० १०। २ शास्त्रविधियों या वचनों का अर्थ (को०)।

शास्त्रालोचन—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के तत्व का विचार या आलोचना। शास्त्रार्थ। उ०—मंडनसंग उभय भारती हुई, शास्त्रालोचन, शंकर से हुआ प्रखर जिसमें, हारे मंडन।—अपरा, पृ० २१३।

शास्त्रावर्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार की लिपि।

शास्त्रिक—वि० [सं०] शास्त्रों का ज्ञाता। शास्त्री।

शास्त्री'—वि० [सं० शास्त्रिन्] [वि० स्त्री० शास्त्रिणी] १. शास्त्र का जाननेवाला शास्त्रज्ञ। शास्त्रविद्।

शास्त्री²—संज्ञा पुं० १ वह जो शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २ वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो। ३ एक उपाधि जो कुछ विद्यालयों आदि में, इसी नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्राप्त होती है। ४ वह जो धार्मिक शिक्षा देता हो (को०)।

शास्त्रीय—वि० [सं०] १ शास्त्र संबंधी। शास्त्र का। २. शास्त्रसंमत। (को०)। ३ वैज्ञानिक (को०)।

शास्त्रोक्त—वि० [सं०] जो शास्त्र में लिखे या कहे के अनुसार हो। शास्त्रों में कहा हुआ। वैधानिक।

शास्य—वि० [सं०] १ शासन करने योग्य। २ दंड देने के योग्य। दंडनीय। ३. सुधारने योग्य।

शाहंशाह—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहो का बादशाह। बहुत बड़ा बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शाहंशाह का कार्य या भाव। २. व्यवहार का खरापन। (बोलचाल)।

क्रि० प्र०—जताना।—दिखलाना।—बघारना।

शाह¹—संज्ञा पुं० [फा०] १ बहुत बड़ा राजा या महाराज। बादशाह। (अन्य अर्थ के लिये दे० 'बादशाह')। २ मुसलमान फकीरों की उपाधि।

शाह²—वि० बड़ा। भारी। महान्। जैसे,—शाहराह।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने में उनके आदि में होता है।

शाहकार—संज्ञा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्तम कृति (को०)।

शाहखर्च—वि० [फा० शाहखर्च] बादशाहों की तरह बहुत अधिक खर्च करनेवाला (को०)।

शाहगाम—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े की एक चाल (को०)।

शाहजहाँ—संज्ञा पुं० [फा०] १. दुनिया या विश्व का राजा। संसार का स्वामी। २ सम्राट् अकबर का पौत्र जिसने ताजमहल बनवाया था।

शाहजादा—संज्ञा पुं० [फा० शाहजादह्] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लड़का। महाराजकुमार।

शाहजादी—संज्ञा स्त्री० [फा० शाहजादी] १ बादशाह की कन्या। राजकुमारी। २ कमल के फूल के अंदर का पीला जीरा।

शाहतरा—संज्ञा पुं० [फा० शाहतरह्] पित्त पापड़ा।

शाहतीर—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'शहतीर' (को०)।

शाहतूत संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'शहतूत' (को०)।

शाहदरा—संज्ञा पुं० [फा० शाहदरह्] १ वह आबादी जो किसी महल या किले के नीचे बसी हो। २ राजमार्ग। आम रास्ता (को०)। ३. दिल्ली के पास यमुना के उस पार बसा हुआ एक कस्बा।

शाहदाना—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का भाँग का बीज जो दवा के काम आता है (को०)।

शाहदापरस्ती—संज्ञा स्त्री० [अ० शोहदा + फा० परस्ती] विषय वासना। उ०—चालीस बरस भए ये मस्ती। यो शेर को शाहदापरस्ती। —दक्खिनी०, पृ० १६२।

शाहनशीं—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बादशाहों के बैठने का बहुमूल्य आसन। २ राजमहल के झरोखे के आगे का वह स्थान जहाँ बैठकर मुगल बादशाह प्रजा को दर्शन देते थे। ३ बैठने की ऊँची जगह (को०)।

शाहनामा संज्ञा पुं० [फा० शाहनामह्] १ वह काव्यग्रंथ जिसमें किसी राज्य विशेष के बादशाहों का वर्णन हो। २. फिरदौसी द्वारा रचित एक काव्य ग्रंथ, जिसमें ईरान के बादशाहों का वर्णन है (को०)।

शाहबलूत—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'बलूत'।

शाहबाज—संज्ञा पुं० [फा० शाहबाज] १ सफेद रंग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी। २ शूर। योद्धा (को०)।

शाहबाला—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शहबाला'।

शाहमियाना—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शामियाना'। उ०—बड़ा भारी देश और शाहमियाना खड़ा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १२०।

शाहराह—संज्ञा स्त्री० [फा०] बड़ी सड़क। बड़ा रास्ता। राजमार्ग।

शाहरुखी—संज्ञा पुं० [फा० शाहरुखी] एक सिक्का। उ०—उन्होंने लूटपाट नहीं किया और चार अरब शाहरुखी लेकर संधि कर ली।—हुमायूँ०, पृ० १६।

शाहाना¹—वि० [फा०] बादशाहों के योग्य। राजाओं का सा। राजसी।

शाहाना²—संज्ञा पुं० १ विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। यह प्राय लाल रंग का होता है। जामा। २ दे० 'शहाना'। (राग)।

शाहिद¹—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह मनुष्य जो आँखों देखी घटना का न्यायाधीश के समक्ष वर्णन करे। साक्षी। गवाह। २ नायिका। प्रेमिका (को०)।

शाहिद²—वि० १ सुंदर। मनोहर। खूबसूरत। २. श्रेष्ठ। उत्तम। उम्दा।

शाही—संज्ञा पुं० [फा०] १. बाज पक्षी। श्येन। २ तुलादंड। तराजू की डाँड़ी (को०)।

शाही—वि० [फा०] शाहों या बादशाहों का। राजसी। जैसे—शाही दरबार। शाही महल। शाही। सवारी।

शाहिन—संज्ञा पुं० [फा०] १ दे० 'शाहबाज'। २ वह सुई जो तराजू की डंडी के मध्य भाग में लगी होती है और जिसके बिल्कुल सीधे रहने से तौल बराबर और ठीक मानी जाती है।

शिंगरफ—संज्ञा पुं० [फा० शंगर्फ] ईंगुर। हिंगुल। विशेष दे० 'ईंगुर'।

शिंगरफी—वि० [फा० शिंगरफ़ी] शिंगरफ के रंग का लाल। सुर्ख।

शिंघण—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घण] १ नासिकामल। रेंट। २ दाढ़ी (को०)।

शिंघाण—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घाण] १ लौहमल। मंडूर। २ नाक के अंदर का चेप जिसमें झिल्ली तर रहती है। ३ काँच का बरतन। ४ दाढ़ी। ५ फूला हुआ अंडकोश। ६ फेन। झाग (को०)। ७ बलगम। कफ या श्लेष्मा (को०)।

शिंघाणक—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घाणक] [स्त्री० शिंघाणिका] १ नाक के अंदर का चेप। २. कफ। बलगम।

शिंघाणी—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घाणिन्] नाक।

शिंघान—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घाण] दे० 'शिंघाण'।

शिंघित—वि० [सं० शिङ्घित] सूँघा हुआ। आघ्रात।

शिंघिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिङ्घिनी] नाक।

शिंजजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जञ्जिका] करधनी।

शिंज—संज्ञा पुं० [सं० शिञ्ज] झंकार। झनझनाहट। ध्वनि (विशेषकर गहनों की)।

शिंजन—संज्ञा पुं० [सं० शिञ्जन] [वि० शिंजित] १ धातुखंड का परस्पर बजना। झंकार करना। झनकारना। किंकिनी, नूपुर आदि गहनों को पहनकर चलने फिरने या उनके हिलने आदि से होनेवाली मधुर ध्वनि। २ झंकार (को०)।

शिंजा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जा] १ करधनी, नूपुर आदि आभूषणों की झनकार। २ धातुखंड के बजने का शब्द। झनझनाहट ३. धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। ज्या।

यौ०—शिंजालता = प्रत्यंचा। ज्या।

शिंजित'—वि० [सं० शिञ्जित] १ झनकार करता हुआ। मधुर। २ बजता हुआ।

शिंजित'—संज्ञा पुं० ध्वनि। झनकार। आवाज।

शिंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जिनी] १ धनुष की डोरी। चिल्ला। पतचिका। २. करधनी या नूपुर के घुँघरू।

शिंजी—वि० [सं० शिञ्जिन्] १ मधुर झनकार करता हुआ। २ आभूषणों की झनकार से युक्त (को०)।

शिंडाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिण्डाकी] एक प्रकार की काँजी।

विशेष—यह मूली के पत्तों के रस मे राई और नमक डालकर अथवा सरसो के रस मे चावल का चूर्ण डालकर बनाई जाती है। वैद्यक के अनुसार यह रुचिकारी, कफकारक, पित्त करनेवाली और भारी होती है।

शिंब—संज्ञा पुं० [सं० शिम्ब] १. फली। छीमी। २. चकवड़ँ। चक्रमर्द।

शिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बा] १. छीमी। फली। २ सेम। ३. शिंबी धान्य।

शिंबि—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बि] दे० 'शिंबी'।

शिंबिक—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बिक] १ मूँगफली। २ कृष्ण मुद्ग। काली मूँग (को०)।

शिंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिका] १ फली। छीमी। २ सेम।

शिंबिजा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिजा] द्विदल अन्न। दाल।

शिंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिनी] १ श्यामा चिड़िया। कृष्ण चटक। २ बड़ी सेम।

शिंबिपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णिका] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

शिंबिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णी] वनमूँग।

शिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बी] १ छीमी। फली। बौंडी। २ सेम। ३ कौंछ। केवाँच। कपिकच्छु। वनमूँग।

शिंबीधान्य—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बीधान्य] वह अन्न जिसके दानों मे दो दल हों। द्विदल अन्न दाल। जैसे,—मूँग, मसूर, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया आदि।

शिंबीफल—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बीफल] तरवट या आहुल्य नामक क्षुप।

शिंश—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का फलदार वृक्ष।

शिंशपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शीशम का पेड़। २ अशोक वृक्ष।

शिंशुपा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

शिंशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] सूँस नामक जलजंतु।

शि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ शुभ। सौभाग्य। ३. शांति। ४ धीरता। धैर्य।

शिकंजबी, शिकंजबीन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिकंजबीन'।

शिकंजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकंजीन] १ दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २ पेंच कसने का यंत्र या औजार जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उनके पन्ने काटते हैं। ३ वह ढाँचा जिसमें जुलाहे घुमावदार छड़ बनाने और पंक्ति बाँधते हैं। (जुलाहे)। ४ प्राचीन काल का अपराधियों की कठोर दंड देने के लिये एक यंत्र जिसके द्वारा टाँगें कस दी जाती थीं। ५ पेरने का यंत्र। कोल्हू। ६ छड़ दबाने की कल। पेंच। ७. यंत्रणा (को०)। ८ पकड़। दबाव (को०)।

मुहा०—शिकंजे मे खिंचवाना = घोर यंत्रणा दिलाना। सांसत कराना। शिकंजे म खींचना = बहुत कष्ट देना। घोर यंत्रणा पहुँचाना।

शिक—संज्ञा स्त्री० [अ० शिक़] १ पक्ष। ओर। तरफ। २ एक ओर का बोझ। ३. खंड। टुकड़ा विभाग। ४ क्षेत्रविभाग। तहसील। ५ पेंच। बाधा। अड़चन (को०)।

यौ०—शिकदार = किसी विशेष अधिभाग का क्षेत्राधिकारी। तहसीलदार।

शिकन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी। मुड़कर दबने से पड़ी हुई लकीर। सिलवट। बली। बलि। बल।

क्रि० प्र०—आना।—डालना।—निकालना।

शिकन'—वि० तोड़नेवाला। भंजक। (समासांत में प्रयुक्त) जैसे, बुतशिकन।

शिकम—संज्ञा पुं० [फा०] १. पेट। उदर।

मुहा०—शिकम पालना = पेट पालना।

यौ०—शिकमखाली = क्षुधार्त। भूखा। शिकमपरस्त, शिकमपरवर, शिकमबंदा = पेटार्थी। पेट पालनेवाला। पेटू। शिकमबंदी = पेटपूजा। शिकमसेर = तृप्त। भरे पेटवाला। अघाया हुआ।

२ आमाशय। पाकस्थली। मेदा (को०)।

शिकमी—वि० [फा०] १. पेट संबंधी। निज का। अपना। २ भीतरी (को०)। ३. बड़े पेटवाला (को०)। ४ दे० 'शिकमी काश्तकार (को०)।

शिकमी काश्तकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

विशेष—इसका हक खास काश्तकार के हक से बहुत कम होता है।

शिकरा—संज्ञा पुं० [फा० शिकरह्] एक प्रकार का बाज पक्षी। उ०—कोई शिकरा बाज उड़ाता है कोई हाथ मे रखे तुरती है। —नजीर (शब्द०)।

शिकरम—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

शिकवा—संज्ञा पुं० [अ०] शिकायत। उलाहना। उ०—मुझको तुमसे नहीं कुछ बाकी है करना शिकवा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५६०।

शिकस्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ हार। पराजय। मात। २. भंग। टूटना। शिकस्तगी। ३ विफलता। असिद्धि।

मुहा०—शिकस्त देना=पराजित करना। हराना। शिकस्त खाना=पराजित होना। हारना।

शिकस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शिकस्तह्‌] टूटा हुआ। भग्न। खंडित।

शिकस्ता[1]—संज्ञा स्त्री० उर्दू या फारसी की घसीट लिखावट।

यौ०—शिकस्ता नवीस=घसीट लिखनेवाला। शिकस्ता दिल=भग्न हृदय। शिकस्ता हाल=जिसकी आर्थिक दशा खराब हो। शिकस्ता हिम्मत=पस्त हिम्मत। हतोत्साह।

शिकायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुराई करना। गिला। शिकवा। चुगली। २. किसी भूल, त्रुटि, दोष आदि की बात जो मन में हो। जैसे,—उनसे अब मुझे कोई शिकायत नहीं है। ३. उपालंभ। उलाहना। ४ किसी के गलत काम की उसके अधिकारी को सूचना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५ शारीरिक अस्वस्थता। रोग। बीमारी। जैसे,—उसे दस्त की शिकायत है।

मुहा०—शिकायत रफा करना=रोग दूर करना। मांदगी हराना।

शिकायती—वि० [अ० शिकायत] शिकायत करनेवाला। २ जिसमें शिकायत हो।

शिकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ जंगली पशुओं को मारने का कार्य या क्रीडा। आखेट। मृगया। अहेर। जैसे,—शेर का शिकार।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२ वह जानवर जो मारा गया हो। ३ गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। जैसे,—बिल्ली का शिकार चूहा। ५ कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने या वश में होने से बहुत लाभ हो। असामी। जैसे,—बहुत दिनों पर आज एक शिकार फँसा है, कुछ मिल ही जायगा।

मुहा०—शिकार आना=(१) मारने के लिये कोई जानवर मिलना। (२) किसी ऐसे आदमी का मिलना जिससे कुछ लाभ हो। शिकार करना=(१) कोई जानवर मारना। (२) किसी से कोई लाभ उठाना। (३) लूटना। शिकार खेलना=शिकार करना। किसी का शिकार होना=(१) किसी के द्वारा या कारण मारा जाना। जैसे,—न जाने कितने आदमी प्लेग के शिकार हुए। (२) वश में आना। फँसना। (३) किसी पर मोहित होना।

शिकारगड्ढा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकार+हिं० गड्ढा] वह बड़ा गड्ढा जो शिकारी जानवरों को फँसाने के लिये खोदते हैं।

शिकारगाह—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारबंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह तसमा जो घोड़े की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिये लगाया जाता है।

शिकारा—संज्ञा पुं० [?] काश्मीर में सवारी के लिये उपयोग में आनेवाली एक प्रकार की नाव। उ०—मेरा शिकारा वह खड़ा है।—पिंजरे०, पृ० २१।

शिकारी[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] आखेट करनेवाला। शिकार करनेवाला। अहेरी।

शिकारी[2]—वि० १ शिकार करनेवाला। जंगली पशुओं को पकड़ने या मारनेवाला। जैसे,—शिकारी कुत्ता। २. शिकार में काम आनेवाला। जैसे,—शिकारी कोट। शिकारी खेमा।

मुहा०—शिकारी ब्याह=गंधर्व विवाह जो क्षत्रियों में अबतक कहीं कहीं होता है।

शिकोह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. भय। त्रास। डर। २. दबदबा। रोबदाब (को०)।

शिकाल—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह घोड़ा जिसका अगला दाहिना और पिछला बाँया पैर सफेद हो। (यह दोष माना जाता है)। २. छल। धोखा। फरेब (को०)।

शिक्कु—वि० [सं०] निकम्मा। सुस्त। आलसी (को०)।

शिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] मोम। मैन। मधुमक्खी के छत्ते का मोम या सीठी। मधुशेष।

शिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिक्या'।

शिक्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहँगी के दोनों छोरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल जिसपर बोझ रखते हैं। २. छत में लटकता हुआ रस्सी का जालीदार सपुट जिसपर दूध, दही आदि का मटका रखते हैं। छींका। झोंका। सिकहर। ३. तराजू की रस्सी। ४ बहँगी पर लटकाकर ले जाया जानेवाला बोझ (को०)।

शिक्यित—वि० [सं०] सिकहर पर रखा हुआ या स्थापित।

शिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] गंधर्वों का एक नायक। रोहित।

शिक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षका, शिक्षिका] १ शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद। २. सीखनेवाला (को०)।

शिक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पढ़ाने का काम। तालीम। शिक्षा। २. शिक्षा प्राप्त करना सीखने का काम। सीखना (को०)।

यौ०—शिक्षणकला=शिक्षा देने, पढ़ाने की कला या हुनर।

शिक्षणीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षणीया] जो शिक्षा देने के योग्य हो। जिसे शिक्षा दी जा सके।

शिक्षमाण—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षमाणा] सीखने की स्थिति में रहनेवाला छात्र। उ०—वह अभी शिक्षमाणा ही थी। भिक्षुणी नहीं हुई थी।—इरा०, पृ० १७।

शिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। पढ़ने पढ़ाने की क्रिया। सीख। तालीम।

क्रि॰ प्र॰ —देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

२ गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। विद्या का ग्रहण। ३ दक्षता। निपुणता। ४ उपदेश। मंत्र। सलाह। ५ छह् वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण रहता है। मंत्रों के ठीक उच्चारण का विषय।

विशेष—यह विषय कुछ तो ब्राह्मण भाग में आया है और कुछ प्रातिशाख्य सूत्रों में। ऋग्वेद का शिक्षा का ग्रंथ शौनक का प्रतिशाख्य सूत्र है। यजुर्वेद के प्रातिशाख्य के दो ग्रंथ मिलते हैं —एक तो आत्रेय महर्षि और वररुचि संकलित त्रिभाष्यरत्न, जो तैत्तरीय शाखा का है और दूसरा कात्यायन जी का आठ अध्यायों का वाजसनेयी प्रातिशाख्य। पाणिनि आदि के व्याकरण से संबद्ध भी शिक्षा विषयक ग्रंथ हैं जिनकी संख्या पचासों से ऊपर है।

६ शासन। दबाव। ७ किसी अनुचित कार्य का बुरा परिणाम। सबक। दंड। जैसे,—अच्छी शिक्षा मिली, अब कभी ऐसा काम न करेंगे। ८ विनय। विनम्रता। शिष्टता। सुजनता (को॰)। ९ विज्ञान। कला। प्रायोगिक शिक्षा। जैसे, रणशिक्षा, सैनिक शिक्षा (को॰)।

शिक्षाकर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ व्यास। उपदेशक। २ शिक्षक। शिक्षा देनेवाला। अध्यापक (को॰)।

शिक्षाक्षर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिक्षा के अनुसार उच्चरित ध्वनि (को॰)।

शिक्षाक्षेप—संज्ञा पुं॰ [सं॰] केशव के अनुसार काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है।

शिक्षागुरु—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विद्या पढानेवाला गुरु। ज्ञानदाता गुरु। दीक्षागुरु का विलोम।

शिक्षाग्राहक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिक्षा प्राप्त करनेवाला व्यक्ति। पढनेवाला। विद्यार्थी। छात्र।

शिक्षाचार—वि॰ [सं॰] शिक्षा के अनुकूल आचरण करनेवाला (को॰)।

शिक्षात्मक—वि॰ [सं॰] उपदेशात्मक। उपदेशप्रद (अ॰ प्रइडेक्टिव)। उ॰—इसे स्वीकार कर लेने पर भारतीय काव्य की प्रकृति के निरूपण के लिये आदर्शात्मक, शिक्षात्मक आदि रस और भाव के क्षेत्र के बाहर के शब्दों के व्यवहार की आवश्यकता नहीं रह जाती।—रस॰, पृ॰ ६२।

शिक्षादंड—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षादण्ड] वह दंड जो किसी चाल को छुडाने के लिये दिया जाय।

शिक्षानर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] इंद्र का एक नाम (को॰)।

शिक्षापद—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ उपदेश। २ बौद्धों के 'विनयपिटक' का एक प्रकरण।

शिक्षापद्धति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] शिक्षा देने का ढंग। शिक्षण की प्रणाली (को॰)।

शिक्षापरिषद्—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. वैदिक काल की शिक्षा संस्था या विद्यालय जो एक ऋषि या आचार्य के अधीन रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था। २ शिक्षा या पढाई का प्रबंध करनेवाली सभा या समिति।

शिक्षाप्रद—वि॰ [सं॰] जिससे शिक्षा प्राप्त हो। शिक्षा या सीख देनेवाला। जैसे, शिक्षाप्रद ग्रंथ।

शिक्षामंत्री—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षा+मन्त्रिन्] [स्त्री॰ शिक्षामंत्रिणी] राज्य का शिक्षा संबंधी सर्वोच्च अधिकारी (अ॰ एजुकेशन मिनिस्टर)।

शिक्षारस—संज्ञा पुं॰ [सं॰] किसी विषय में शक्ति या प्रवीणता प्राप्त करने की कामना (को॰)।

शिक्षार्थी—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। विद्यार्थी। तालिब इल्म।

शिक्षालय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाय। विद्यालय। पाठशाला।

शिक्षावल्ली—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] तैत्तरीय उपनिषद् का पहला अध्याय।

शिक्षावाद—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षा+वाद] उपदेशात्मकता। उपदेश वृत्ति। उ॰—मंगल और अमंगल के द्वंद्व में कवि लोग अंत में मंगल शक्ति की जो सफलता दिखा दिया करते हैं उसमें सदा शिक्षावाद या अस्वाभाविकता की गंध समझकर नाक भौं सिकोडना ठीक नहीं।—रस॰, पृ॰ ६१।

शिक्षाविभाग—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षा+विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है। सरिश्ता तालीम।

शिक्षाव्रत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] जैन धर्म के अनुसार गार्हस्थ धर्म का एक प्रधान अंग जो चार प्रकार का होता है, (१) सामयिक, (२) देशावकाशिक, (३) पोष और (४) अतिथि संविभाग।

शिक्षाशक्ति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति। मेधा।

शिक्षाशास्त्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षा+शास्त्र] वह शास्त्र, ग्रंथ आदि जिसमें शिक्षा की विधि, प्रणाली, अध्यापनपद्धति आदि तत्संबंधी विधानों का विवेचन मिलता है। (अ॰ एडुकेशन)।

शिक्षाहीन—वि॰ [सं॰] जिसे शिक्षा न मिली हो। अशिक्षित। वेपढा। गँवार।

शिक्षित—वि॰ पुं॰ [सं॰] [वि॰ स्त्री॰ शिक्षिता] १ जिसने शिक्षा पाई हो। पढा लिखा। २ विद्वान्। पंडित। ३ पालतू (को॰)। ४. निपुण। कुशल (को॰)। ५ विनीत। लज्जाशील (को॰)। ६ प्रशिक्षित। अनुशासित (को॰)। उ॰—जीवन रण में सक्षम, संघर्षों से शिक्षित।—ग्राम्या, पृ॰ २०।

शिक्षिताक्षर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ वह जिसने विद्या पढी हो। शिक्षित। २ शिक्षा देनेवाला। शिक्षक (को॰)। ३ लेखक। मुहर्रिर (को॰)।

शिक्षितायुध—वि॰ [सं॰] जो आयुधों के प्रयोग में पटु हो। हथियार चलाने में निपुण (को॰)।

शिखंड—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिखण्ड] १ मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ।—उ॰—(क) कुटिल कच भुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड।—सूर (शब्द॰)। (ख) सिरनि शिखंड सुमन दल मंडल लाल सुभाय बनाए।—तुलसी (शब्द॰)। २ चोटी। शिखा। चुटिया। उ॰—सोभित केश विचित्र भांति दुति शिखि शिखंड हरनी।—सूर (शब्द॰)। ३. काकपक्ष। काकुल।

यौ०—शिखडखडिका = चूडाकरण का उत्सव। चूडाकरण।

शिखडक—सज्ञा पु० [स० शिखण्डक] १ काकपक्ष। काकुल। २ मयूरपुच्छ। ३. चोटी। शिखा। चुटिया (को०)। ४ नितब के नीचे का मासल भाग (को०)। ५ वह जिसने शैव मतानुसार मुक्ति की एक विशेष अवस्था प्राप्त कर ली हो (को०)।

शिखडिक—सज्ञा पु० [स० शिखण्डिक] १. कुक्कुट। मुर्गा। २ एक प्रकार का मानिक (रत्न)।

शिखडिका—सज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिका] शिखा। चोटी। दे० 'शिखड'।

शिखडिनी[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिनी] १ मोरनी। मयूरी। २ जूही। यूथिका। ३ गुजा। करजनी। चोटली। ४ मुर्गी। ५ द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप मे होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध मे लडी थी।

विशेष—कहते है, पूर्व जन्म मे यह काशिराज को वडी कन्या अबा थी जिसे भीष्म हर लाए थे। भीष्म से बदला लेने के लिये यह पुरुष रूप मे हो गई और महाभारत के युद्ध मे लडी थी। विशेष दे० 'शिखडी'।

६ कश्यप की पुत्री दो अप्सराएँ जो ऋग्वेद के मत्र की द्रष्टा मानी जाती हैं।

शिखडिनी[2]—वि० स्त्री० शिखड से युक्त। शिखडवाली।

शिखडी[1]—सज्ञा पु० [स० शिखण्डिन्] १ पीली जूही। स्वर्णयूथिका। २ गुजा। चिरमिटी। घुँवची। ३ मोर। मयूर पक्षी। ४ मुर्गा। ५ मोर की पूँछ। ६ वाण। ७. विष्णु। ८ कृष्ण। ९ शिव। १०. शिखा। वालो की चोटी। उ०—शिखंडी शीश मुख मुरली बजावत वन्यो तिलक उर चदन।—सूर (शब्द०)। ११ द्रुपद का एक पुत्र।

विशेष—यह पहले कन्या के रूप मे उत्पन्न हुआ था, पर इसे पुत्र के रूप मे प्रसिद्ध किया गया और शिक्षादीक्षा भी पुत्र के समान दी गई। कालातर मे हिरण्य वर्मा की कन्या से इसका विवाह भी हुआ। यह जानकर कि मेरी कन्या का विवाह एक स्त्री से हुआ है और द्रुपद ने मुझे धोखा दिया है, हिरण्य वर्मा ने द्रुपद पर आक्रमण करने की तैयारी की। इस बीच शिखडी ने वन मे घोर तप किया और एक यक्ष को प्रसन्न कर अपना स्त्रीत्व उसे दे देने के पीछे पुरुष के रूप मे हो गया। इसी को आगे करके महाभारत के युद्ध मे अर्जुन ने युद्ध के दसवें दिन पितामह भीष्म का वध किया था। भीष्म की प्रतिज्ञा थी कि हम किसी स्त्री पर बाण न चलावेंगे। अश्वत्थामा के हाथ इसका वध हुआ था। विशेष दे० 'शिखडिनी'।

१२ राम के दल का एक बदर। उ०—धुवमाल गिरि पुनि गए मिले शिखडी नाम।—विश्राम (शब्द०)। १३. बृहस्पति। देवगुरु।—अनेक (शब्द०)।

शिखडी—वि० शिखडयुक्त। शिखावाला [को०]।

शिख(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखा] दे० 'शिखा'। उ०—फूलो फिरत रोहिणी मैया नख शिख कर सिंगार।—सूर (शब्द०)।

शिख[2]—वि०[स०] जिसे शिखा हो। शिखावाला। (समासात मे प्रयुक्त) जैसे विशिख, पचशिख।

शिखक—सज्ञा पुं० [स०] लेखक। मुहर्रिर।

शिखर—सज्ञा पु० [स०] १ सबसे ऊपर का भाग। सिरा। चोटी। २ पहाड की चोटी। पर्वतशृग। ३ अग्रभाग। ४ मदिर या मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा। कगूरा। कलश। ५ मडप। गुबद। ६ जैनियो का एक तीर्थ। ७ एक अस्त्र का नाम। ८ एक रत्न जो अनार के दाने के समान सफेद और लाल होता है। उ०—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन शिखर हियो विहगान।—सूर (शब्द०)। ९ कुद की कली। १० लौग। ११ काँख। बगल। १२ पुलक। रोमाच। १३. उँगलियों की एक मुद्रा जो तात्रिक पूजन मे बनाई जाती है। १४ तलवार की नोक (को०)। १५. सूखा तिनका (को०)।

शिखरणी—सज्ञा स्त्री० [स० शिखरिणी] दे० 'शिखरिणी'।

शिखरदशना—वि० स्त्री० [स०] जिसके दाँत कुद की कली के समान हो।

शिखरन—सज्ञा पुं० [स० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा पेय पदार्थ या शरबत जिसमे केसर, कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते हैं। श्रीखंड।

शिखरवासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] शिखर पर बसनेवाली, दुर्गा।

शिखरा—सज्ञा स्त्री० [ ] १ मूर्वा। मरोडफली। मुर्रा। २ एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचद्र को दी थी।

शिखराद्रि—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

शिखरिचरण—सज्ञा पुं० [स०] चिचडे की जड। अपामार्ग का मूल।

शिखरिणी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रसाल। २ नारीरत्न। स्त्रियो मे श्रेष्ठ। ३ रोमावली। ४ मल्लिका। वेला। मोतिया। ५. नेवारी का पौधा। ६ किशमिश। लघु द्राक्षा। ७. मूर्वा। मरोड-फली। मुरहरी। ८ दही और चीनी का रस या शर्वत। ९ सत्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे क्रमश यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु होते हैं तथा छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है। जैसे,—शिला पै गेरू तें कुपित ललना तोहि लिखि कै।

शिखरिणी—वि० स्त्री० १ शिखर या चूडावाली। २. नोकदार। अनीदार [को०]।

शिखरी[1]—सज्ञा पु० [स० शिखरिन्] १ पर्वत। पहाड। २. पहाडी दुर्ग। ३. वृक्ष। पेड। ४. अपामार्ग। चिचडा। ५ वदाक। बाँदा। ६. कुदरु नामक गधद्रव्य। ७ लोबान। ८ काकडा-सिंगी। ९ ज्वार। मक्का। १०. एक प्रकार का मृग।

शिखरी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखर] चोटी। चूडा। उ०—जिस दिन शैल शिखरियाँ उनको रजत मुकुट पहनाने आएँ।—हिम कि०, पृ० २।

शिखरी(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचद्र को दी थी। शिखरा। उ०—शिखरी कौमोदकी गदा युग दीपति भरी सदाई।—रघुराज (शब्द०)।

शिखरी४—वि० [स०] १ शिखरवाला। शिखरयुक्त। २ नोकदार। नुकीला (को०)।

शिखलोहित—सज्ञा स्त्री० [स०] कुकुरमुत्ता।

शिखाडक—सज्ञा पु० [स० शिखाण्डक] काकपक्ष।

शिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मुडन के समय सिर के बीचोबीच छोडा हुआ बालो का गुच्छा जो फिर कटाया नही जाता और हिंदुओ का एक चिह्न है। चोटी। चुटैया।

यौ० —शिखा सूत्र = चोटी और जनेऊ जो द्विजो के चिह्न हैं और जिनका त्याग केवल सन्यासियो के लिये विधेय है।

२ मोर, मुर्गा आदि पक्षियो के सिर पर उठी हुई चोटी या पखो का गुच्छा। चोटी। कलगी। ३ आग की लपट। ज्वाला। ४ दीपक की लो। टेम। उ०—(क) केशोदास तामें दुरो दीप की शिखा सो दौरि दुगवति नीलवास दुति अग अग की।—केशव (शब्द०)। (ख) दीप शिखा सम जुवति जन मन जनि होसि पतग।—तुलसी (शब्द०)। ५ प्रकाश का किरण। ६ नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७ ऊपर को उठा हुआ भाग। चोटी। शिखर। ८ पैर के पंजे का सिरा। ९ स्तन का अग्रभाग। चूचक। १० पेड की जड। ११ शाखा। डाली। १२ अधिपति नायक। १३ श्रेष्ठ पुरुष। १४ कलियारी विष। लागला। १५. मूर्वा। मरोडफली। १६ जटामासी। बालछड। १७. वच। १८ शिफा। १९ तुलसी। २० कामज्वर। २१ एक वर्णवृत्त जिसके विषम पादो मे २८ लघु मात्राएं और अत मे एक गुरु होता है और सम पादो मे ३० लघु मात्राएँ और अत मे एक गुरु होता है।

शिखाकद—सज्ञा पुं० [स० शिखाकन्द] शलजम। शलगम।

शिखातरु—सज्ञा पुं० [स०] दीपवृक्ष। दीवट। दीयट।

शिखाधर१—सज्ञा पु० [स०] १. मयूर। मोर। २ मजुघोष नाम के एक पूर्व जिन (को०)।

शिखाधर२—वि० १ शिखाधारी। २ नोकदार। नुकीला [को०]।

शिखाधार—सज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर। २. वह जिसे शिखा हो। चूडा या चोटीवाला।

शिखापाश—सज्ञा पुं० [स०] चोटी। चुंदी।

शिखापित्त—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ पैर की उँगलियो मे सूजन और जलन होती है।

शिखाबधन—सज्ञा पु० [स० शिखाबन्धन] सिर के बालो को मिलाकर बाँधने की क्रिया। चोटी बाँधना।

शिखाभरण—सज्ञा पु० [स०] सिर का आभूषण। मुकुट।

शिखामणि१—सज्ञा पु० [स०] १ वह रत्न जो सिर पर पहना जाय। २ श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिखामणि२—वि० सर्वश्रेष्ठ। प्रधान। शिरोमणि। जैसे,—चौरजार शिखामणि।=श्रीकृष्ण।

शिखामूल—सज्ञा पु० [स०] १ वह कद जिसके ऊपर पत्तियो का गुच्छा हो। २ गाजर। गृजन (को०)। ३ शिखाकद। शलगम। शलजम (को०)।

शिखालु—सज्ञा पुं० [सं०] मयूरशिखा। मोर के सिर पर की कलगी [को०]।

शिखावती—सज्ञा स्त्री० [स०] मूर्वा। मरोडफली।

शिखावर—सज्ञा पु० [स०] कटहल का वृक्ष। पनस।

शिखावर्त—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का यज्ञ। (महाभारत)।

शिखावल१—सज्ञा पु० [स०] १ मोर। मयूर। २. कटहल।

शिखावल२—वि० १. नुकीला। नोकदार। २. चोटीवाला [को०]।

शिखावला—सज्ञा स्त्री० [स०] मयूरशिखा नामक वृक्ष [को०]।

शिखावली—सज्ञा स्त्री० [स०] मोरनी। मयूरी [को०]।

शिखावान्१—वि० [स० शिखावत्] [वि० स्त्री० शिखावती] १ शिखावाला। २ लपटवाला। ज्वालायुक्त (को०)। ३. नुकीला। नोकदार (को०)।

शिखावान्२—सज्ञा पु० १ अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ केतु ग्रह। पुच्छल तारा। ४ मोर। मयूर। ५. दीपक (को०)।

शिखावृक्ष—सज्ञा पु० [स०] दीवट। दीयट।

शिखावृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह ब्याज जो प्रति दिन बढता जाय। सूद-दर-सूद। २ पराशर स्मृति के अनुसार वह ब्याज जो रोजाने के हिसाब से नित्य वसूल किया जाता है। रोजही।

शिखासूत्र—सज्ञा पु० [स०] चोटी और जनेऊ जो द्विजो का चिह्न है।

शिखि—सज्ञा पु० [स०] १ मोर। मयूर। उ०—चीर फारि करिहौं भगौहौं शिखनि शिखि लवलेस।—पूर (शब्द०)। २. तामस मन्वतर के इद्र का नाम। ३ कामदेव। ४ अग्नि। ५ तीन की सख्या।

शिखिकठ१—वि० [स० शिखिकण्ठ] मोर के कठ के समान। मोर के कठ सा।

शिखिकठ२—सज्ञा पु० तूतिया। नीला थोथा।

शिखिकण—सज्ञा पुं० [स०] चिनगारी। स्फुलिंग [को०]।

शिखिकुंद—सज्ञा पु० [सं० शिखिकुन्द] कुदरु। बिरोजा।

शिखिग्रीव—सज्ञा पु० [सं०] १ नीला थोथा। २. एक प्रकार का नीला पत्थर। कांत पाषाण।

शिखिध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ धूआँ। २ कार्तिकेय। ३ वह जिस पर अग्नि या मोर का चिह्न बना हो। ४. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ५ मयूरध्वज नामक राजा। उ०—नृपति शिखिध्वज षोडशौं जीतिगो ससार।—केशव (शब्द०)।

शिखिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मयूरी। २ मुर्गी। ३. मुर्गकेश। जटाधारी का पौधा।

शिखिपिच्छ, शिखिपुच्छ—सज्ञा पुं० [स०] मयूरपख। मोरपख। मोर की पूँछ [को०]।

शिखिप्रिय—सज्ञा पु० [स०] जगली बेर।

शिखिभू—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय का एक नाम। स्कद [को०]।

शिखिमडल—सज्ञा पुं० [स० शिखिमण्डल] वरुण वृक्ष। तपिया।

शिखिमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा। अजवायन।

शिखिमृत्यु—संज्ञा पुं० [सं०] मदन। कामदेव [को०]।

शिखियूप—संज्ञा पुं० [सं०] शीकारी नाम का मृग।

शिखिवर्द्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गोल कद्दू। गोल घीया। २. कूष्माड। कोहँडा (को०)।

शिखिवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

शिखीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] गरुडपुराण मे वर्णित एक प्रकार का व्रत [को०]।

शिखिशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग की लपट। लौ। २. मोर की कलँगी [को०]।

शिखिश्रृंग—संज्ञा पुं० [सं०शिखिश्रृङ्ग] चित्रमृग। चित्तीवाला हिरन।

शिखिशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] मयूरशिखा। मोर की कलँगी।

शिखिहिंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखिहिण्टी] सहदेई। महाबला।

शिखीद्र—संज्ञा पुं० [सं० शिखीन्द्र] १. तेंदू का पेड। तिंदुक। २. आबनूस का पेड।

शिखी[1]—वि० [सं० शिखिन्] [वि० स्त्री० शिखिनी] १ शिखावाला। चोटीवाला। २ नुकीला। नोकदार (को०)। ३. ज्ञान की चोटी पर पहुँचनेवाला (को०)। ४ अभिमानी। घमंडी (को०)।

शिखी[2]—संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। उ०—कुटिल कच तिलक रेखा सीस शिखी शिखड।—सूर (शब्द०)। २ मुर्गा। ३ एक प्रकार का सारस। ४ बैल। सांड। ५ घोडा। ६. चित्रक। चीते का पेड। ७. अग्नि। उ०—आखडल और दडधर, शिखी वरुण दिगपाल।— गुमान (शब्द०)। ८ तीन की संख्या (अग्नि तीन प्रकार की होने के कारण)। ९ दीपक। १० पित्त। ११. पुच्छल तारा। केतु। १२ मेथी। १३ पर्वत। १४ वृक्ष। १५. ब्राह्मण। १६. सतावर। १७. वाण। १८. जटाधारी साधु या भिक्षु। १९. एक नाग का नाम। २०. इद्र। २१. बगला। बक। २२. अपामार्ग। ओगा। चिचडा। २३. एक प्रकार का विष। २४ अजमोदा (को०)।

शिखीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय [को०]

यौ०—शिखीश्वर मास = कार्तिक मास।

शिगाफ—संज्ञा पुं० [फा० शिगाफ] १ चीरा। नश्तर। २ दरार। दर्ज। ३. कलम के बीच का चिराव। ४. छेद। सूराख।

मुहा०—शिगाफ देना या लगाना = (१) कलम को चीरना। (२) चीरा लगाना। नश्तर लगाना।

शिगाल—संज्ञा पुं० [फा०। तुल० सं० श्रृगाल] जबुक। श्रृगाल [को०]।

शिगिफ्त—संज्ञा पुं० [फा० शिगिफ्त] अचभा। आश्चर्य। हैरत।

शिगुफ्त, शिगुफ्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा० शिगुफ्त, शिगुफ्तगी] विकास। खिलना। २. प्रसन्नता। आह्लाद [को०]।

शिगुफ्ता—वि० [फ़ा० शिगुफ्तह्] १. मुकुलित। विकसित। खिला हुआ। २ प्रसन्न। आह्लादित [को०]।

शिगूडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक जगली क्षुप या पौधा जो दवा के काम मे आता है।

विशेष—यह वनस्पति चरपरी, गरम तथा वात और पृष्ठशूल का नाश करनेवाली तथा दूसरी ओषधियो के योग से रसायन और शरीर को दृढ करनेवाली कही गई है।

शिगूफा—संज्ञा पुं० [फा० शिगूफह्] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ फूल। पुष्प। ३ किसी अनोखी बात का होना। अचभे की बात। चुटकुला।

मुहा०—शिगूफा खिलना = कोई ऐसी बात या झगडा खडा होना जिससे मनोरंजन हो। शिगूफा खिलाना = बात खडी करना। तमाशे के लिये कोई मामला पैदा कर देना। शिगूफा छोडना = (१) कोई नई या अनोखी बात कहना। (२) तमाशा देखने के लिये कोई मामला खडा कर देना। शिगूफा फूलना = (१) अनोखी बात निकलना। (२) मामला खडा होना।

शिग्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहिजन का वृक्ष। शोभाजन। २ शाक। साग।

यौ०—शिग्रुबीज = शिग्रुज।

शिग्रुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिग्रु'। सहिजन।

विशेष—मनु ने वानप्रस्थ आश्रमी लोगो के लिये इसके भक्षण का निषेध किया है। मेधातिथि और कुल्लूक ने इसे वाह्लिक देशोद्भव कहा है।

शिग्रुज—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन का बीज।

शिच् —संज्ञा स्त्री० [सं०] [कर्त्ता का० शिक्] १. जुए की रस्सी। २. बहँगी का छोका या जाल जिसपर बोझ रखा जाता है।

शिचि—वि० [सं०] काला या सफेद [को०]।

शित[1]—वि० [सं०] १ कृश। दुर्बल। २. कमजोर। निर्बल (को०)। नुकीला। पतला। ४ चोखा। धारदार।

यौ०—शितधार = तीक्ष्ण धारवाला। शितशूक = (१) यव। जौ। (२) गेहूँ। गोधूम।

शित[2]—संज्ञा पुं० विश्वामित्र के गोत्र के एक ऋषि का नाम।

शित(पु)[3]—वि० [सं० श्वेत या सित] दे० 'सित'।

शितद्रु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शतद्रु। सतलज नदी। २. क्षीर मोरट। मोरट।

शितनिर्गुडी—संज्ञा स्त्री० [सं० शितनिर्गुण्डी] शेफालिका।

शितपर्णी—संज्ञा पुं० [सं०] मोथा।

शितवर, शितवार—संज्ञा पुं० [सं०] शिरियारी नामक साग।

शिताशाक—संज्ञा पुं० [सं०] शालिंच शाक। शालि शाक।

शिताग्र—संज्ञा पुं० [सं०] कटक। कांटा [को०]।

शिताद्रिकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णुक्राता लता। अपराजिता। कोयल।

शिताफल—संज्ञा पुं० [सं०] शरीफा। सीताफल।

शिताब'—वि० [फ़ा०] १ जल्द । शीघ्र । उ०—दिए बोस्क उसे इप बजा बेहिस ब । उड्या बाँते दरहाल तोना शिताब ।—दक्खिनी०, पृ० ६१ । २ तेज । फुर्तीला । तीव्र (को०) ।

शिताब²—संज्ञा स्त्री० शीघ्रता । जल्दी [को०] ।

शिताबी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ शीघ्रता । जल्दी । २ तेजी । हड़बड़ी ।

शितावर—संज्ञा पुं० [स० शतावर] १ बकुची । सोमराजी । २ शिरियारी । सतावर ।

शितावरी—संज्ञा स्त्री० [स० शतावरी] दे० 'शतावर' ।

शिति¹—वि० [स०] १ सफेद । शुक्ल । श्वेत । २ काला । कृष्ण । ३. नील । नीला । ४ कर्बुर । चितकबरा (को०) ।

यौ०—शितिकंठ । शितिकुंभ ।

शिति²—संज्ञा पु० भोजपत्र । भूर्ज तरु ।

शितिकंठ—संज्ञा पुं० [स० शितिकण्ठ] १ दात्यूह पक्षी । मुर्गाबी । जलकाक । २ पपीहा । चातक । ३ मोर । मयूर । ४ नाग देवता । ५ शिव । महादेव ।

शितिकुंभ—संज्ञा पुं० [स० शितिकुम्भ] कनेर का पेड । करवीर वृक्ष ।

शितिकेश—संज्ञा पु० [स०] स्कंद के एक अनुचर का नाम ।

शितिचंदन—संज्ञा पुं० [स० शितिचन्दन] कस्तूरी ।

शितिचार—संज्ञा पु० [स०] शिरियारी नामक साग ।

शितिच्छद—संज्ञा पु० [स०] हस ।

शितिपक्ष—संज्ञा पु० [स०] हस ।

शितिपृष्ठ—संज्ञा पुं० [स०] एक नाग जो एक यज्ञ मे मैत्रावरुण बना था ।

शितिमांस—संज्ञा पु० [स०] मज्जा । मेद । चर्बी [को०] ।

शितिमूलक—संज्ञा पु० [स०] खस । उशीर ।

शितिरत्न—संज्ञा पु० [स०] नील मणि । नीलम ।

शितिवासा—संज्ञा पुं० [स० शितिवासस्] बलदेव । बलराम [को०] ।

शितिसार, शितिसारक—संज्ञा पु० [स०] तिंदुक वृक्ष । तेंदू ।

शितीक्षु—संज्ञा पु० [स०] वैदिक देवता उशना के एक पुत्र का नाम ।

शित्पुट—संज्ञा पु० [स०] १ बिल्ली की जाति का एक जानवर । २ एक प्रकार का काला भौंरा ।

शिथिल¹—वि० [स०] १ जो कसा या जकडा न हो । जो खूब बँधा न हो । ढीला । २ सुस्त । मद । धीमा । ३ जिसमे और शक्ति न रह गई हो । थका हुआ । हारा हुआ । श्रात । उ०—देह शिथिल भई उठ्यो न जाई ।—सूर (शब्द०) । ४ जो कार्य मे पूर्ण तत्पर न हो । जो पूरा मुस्तैद न हो । आलस्ययुक्त । जैसे,—कार्य मे शिथिल पडना । ५ जो अपनी बात पर खूब जमा न हो । अदृढ । ६ जिसका पालन कडाई के साथ न हो । जिसकी पूरी पाबदी न हो । जैसे,—नियम शिथिल होना । ७. जो साफ सुनाई न दे । अस्पष्ट (शब्द) । ८ जो पूरे दबाव में न रखा गया हो । छोडा हुआ । ९. निष्क्रिय । निरर्थक (को०) । १० असावधान (को०) । ११. डाल से गिरा या टूटा हुआ (को०) । १२ दुर्बल । कमजोर (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—पडना ।—होना ।

शिथिल²—संज्ञा पुं० १ ढीलापन । शिथिलता । सुस्ती । २ बधन जो कसा न हो । ३ छोडना । डालना । ४ त्याग देना । त्यजन [को०] ।

शिथिलता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कसे या जकडे न रहने का भाव । ढीलापन । ढिलाइ । २ थकावट । थकान । श्राति । ३ मुस्तैदी का न होना । अतत्परता । आलस्य । ४ नियम पालन की कडाई का न होना । ५ शक्ति की कमी । सामर्थ्य की त्रुटि । ६ वाक्य मे शब्दो का परस्पर गठा हुआ अर्थसबध न होना । ७. तर्क मे किसी अवयव का अभाव ।

शिथिलाई(पु)†—संज्ञा स्त्री० [स० शिथिल+हिं० आई (प्रत्य०)] दे० 'शिथिलता' ।

शिथिलाना(पु)—क्रि० अ० [स० शिथिलायने ? या स० शिथिल+हिं० आना (प्रत्य०)] १ शिथिल होना । ढीला पडना । २ थकना । श्रात होना । उ०—करत सिंगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने ।—सूर (शब्द०) ।

शिथिलित—वि० [सं०] १ जो शिथिल हो गया हो । ढीला पडा हुआ । २ विश्रात । थका हुआ । उ०—मृग डाल दिया, फिर धनु को भी, मनु बैठ गए शिथिलित शरीर । बिखरे थे सब उपकरण वही आयुध, प्रत्यचा, शृंग, तीर ।—कामायनी, पृ० १४१ । ३ घुला हुआ । प्रविलीन (को०) ।

शिथिलीकरण—संज्ञा पु० [स०] [वि० शिथिलीकृत] शिथिल करना । ढीला करना ।

शिथिलीकृत—संज्ञा पुं० [स०] जो शिथिल किया गया हो ।

शिथिलीभूत—वि० [स०] जो शिथिल हो गया हो । शिथिलित पडा हुआ । श्लथ ।

शिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी । जोर । उग्रता । प्रचडता । २ अधिकता । ज्यादती । जैसे,—शिद्दत की गरमी या बुखार । ३ कठिनाइ (को०) । ४ कष्ट । तकलीफ (को०) ।

शिना—संज्ञा पुं० [स०] भुई आवला ।

शिनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शिनाख्त] १ यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है । पहचान । जैसे,—तुम अपने माल की शिनाख्त कर लो । २ स्वरूप या गुण का बोध । असल नकल, अच्छा बुरा, जान लेने की बुद्धि । परख । तमीज । जैसे,—तुम्हे आदमी की शिनाख्त नहीं है ।

शिनि—संज्ञा पु० [सं०] १ गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम । २ क्षत्रियों का एक भेद । ३ एक यादव वीर का नाम ।

विशेष—इन्होने वसुदेव के लिये देवकी का बलपूर्वक हरण किया था । इस कारण इनका सोमदत्त के साथ भयकर युद्ध हुआ था । इनके पुत्र का नाम सत्यक और पौत्र का सात्यकि था जो पाडवो की ओर से महाभारत मे लड़ा था ।

शिनिवाहु—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण मे वर्णित एक नदी का नाम ।

शिनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड का नाम [को०] ।

शिनूसा—संज्ञा पुं० [फा०] छिक्का । छीक [को०] ।

शिपविष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिपिविष्ट' [को०] ।

शिपि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रश्मि । किरण । २. जल (को०) ।

शिपि²—संज्ञा स्त्री० चमडा । खाल ।

शिपिविष्ट¹—वि० [सं०] १ किरणो से व्याप्त । किरणाच्छादित । २ गजे सिरवाला । ३ कुष्ठ रोगवाला [को०] ।

शिपिविष्ट²—संज्ञा पुं० १. कुष्टी । कोढी । २ खल्वाट व्यक्ति । वह जिसकी खोपडी गंजी हो (को०) । ३ शिव (को०) । ४ विष्णु (को०) । ५ वह व्यक्ति जिसके शिश्नाग पर चमडा न हो (को०) ।

शिपुरगड्डी—संज्ञा स्त्री० [त०] एक प्रकार का पौधा जिसकी डाल के रेशे ब्रुश बनाने के काम मे आते है ।

शिप्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहे या ताँबे का टोप । शिरस्त्राण । उ०—झिलम टोप (शिप्र) यह लोहे या तांबे का बनता था ।—हिंदु० स०, पृ० ८५ । २ हिमालय पर्वत का एक सरोवर (को०) । ३ कपोल । गाल (को०) । ४ चिबुक । ठुड्डी (को०) । ५ नाक । नासिका (को०) ।

शिप्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मध्यप्रदेश की एक नदी का नाम जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन नाम उज्जयिनी) स्थित है । यह हिमालय के 'शिप्र' सरोवर से निकली है । उ०—आर्य, आपकी वीरता की लेखमाला शिप्रा और सिंधु की लोल लहरियो से लिखी जाती है ।—स्कद०, पृ० ३ । २ टोप । शिरस्त्राण (को०) ।

शिप्रावात—संज्ञा पुं० [सं०] शिप्रा से आनेवाला पवन । उ०—वह शिप्रावात, प्रिया से प्रिय ज्यो चाटुकार ।—अपरा, पृ० २१० ।

शिप्री—संज्ञा पुं० [सं० शिप्रिन्] शिरस्त्राणधारी योद्धा । उ०—शिरस्त्राण पहने हुए योद्धा शिप्री कहलाता था ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ८५ ।

शिफ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिफा' [को०] ।

शिफर(पु)‡—संज्ञा पुं० [फा० सिपर] ढाल । उ०—सतएँ शिफर सुमरस बनाई । नाग वृष्टि तिन सबै बचाई ।—हनुमन्नाटक (शब्द०) ।

शिफा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृक्ष की रेशेदार जड जिससे प्राचीन काल मे कोडे बनते थे । २. कोडे की फटकार । चाबुक की मार । ३ माता । ४ हरिद्रा । हल्दी । ५ कमल की जड । पद्मकद । भसींड । ६ लता । ७ नदी । ८ एक प्राचीन नदी का नाम । ९ मासिका । जटामासी । १० शिखा । चोटी । ११ जड । मूल (को०) । १२ दे० 'शतपुष्पा' (को०) । १३. कोडा । बेत ।

यौ०—शिफादड = कोडे मारने का दड ।

शिफा²—संज्ञा स्त्री० [अ०] आरोग्य । तंदुरुस्ती । दे० 'शफा' । उ०—उस मसीहा को दिखा दो तो कुछ आजार नही, अभी हो जाय शिफा ।—श्यामा०, पृ० १०१ ।

यौ०—शिफाखाना = अस्पताल । दवाखाना ।

शिफाकंद—संज्ञा पुं० [सं० शिफाकन्द] कमल की जड । भसीड ।

शिफाक—संज्ञा पुं० [सं०] पद्ममूल । भसीड ।

शिफाधर – संज्ञा पुं० [सं०] डाल । शाखा ।

शिफारुह—संज्ञा पुं० [सं०] बरगद का पेड ।

शिवि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिवि' [को०] ।

शिविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिविका' ।

शिविर—संज्ञा पुं० [सं०] 'शिविर' [को०] ।

शिमाल—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा ।

शिमृडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चगोनी या चिंगोनी नाम का पौधा ।

शिया—संज्ञा पुं० [अ० शीया] १ मददगार । सहायक । २ अनुयायी । ३ मुसलमानो के दो प्रधान और परस्पर विरोधी सप्रदायो मे से एक । हजरत अली को पैगबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला संप्रदाय ।

विशेष—उमर, अबूबक्र आदि जो चार खलीफा मुहम्मद साहब के पीछे हुए हैं उन्हे इस सप्रदाय के लोग अनधिकारी मानते हैं तथा पैगबर के बाद अली और उनके बेटों हसन और हुसेन को ही आदर का स्थान देते है । मुहर्रम के महीने मे ये अब तक हसन और हुसेन के वीरगति को प्राप्त होने के दिनो मे शोक मनाते हैं ।

शिर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] शिरस् शब्द का समासगत रूप । शिरस् शब्द के कर्ताकारक का एकवचन ।

शिर कपाली—संज्ञा पुं० [सं०] कापालिक सन्यासी ।

शिर कृतन—संज्ञा पुं० [सं० शिर कृन्तन] शिर काटना । शिरच्छेद ।

शिर खड—संज्ञा पुं० [सं० शिर खण्ड] माथे की हड्डी । कपालास्थि ।

शिर पीडा संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर का दर्द । माथे की पीडा ।

विशेष—आयुर्वेद मे ११ प्रकार के और यूनानी मे १९ प्रकार के शिरोरोग कहे गए हैं । परतु कोई कोई २१ प्रकार के सिरदर्द बताते है । आयुर्वेद के अनुसार वातज, पित्तज, कफज, सनिपातज, रक्तज, क्षयज, कृमिज, सूर्यावर्त, अनतवात, अर्द्धावभेदक और शखक ये ११ प्रकार के शिरोरोग होते है ।

शिर फल—संज्ञा पुं० [सं०] नारिकेल वृक्ष । नारियल ।

शिर शूल—संज्ञा पुं० [सं०] सिर की पीडा ।

शिर स्थ—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिरस्थ' ।

शिर—संज्ञा पुं० [सं० शिर, शिरस्] १. सिर । कपाल । मुंड । खोपडा । २. मस्तक । माथा । ३ किसी वस्तु का सबसे ऊँचा भाग या सिरा । चोटी । ४ शिखर । ५. सेना का अग्र भाग । ६ पद्य के चरण का आरभ । टोका । ७. मुखिया । प्रधान ।

अगुआ। ८ पिप्पली मूल। पिपरा मूल। ९ शय्या। १० विस्तर। विस्तार। ११ अजगर।

शिरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के अधिकार मे भाग। सम्मिलित अधिकार। साझा। हिस्सा। २ किसी कार्य मे योग। किसी काम या व्यवसाय मे शामिल होना। जैसे,—उनकी शिरकत से यह काम होगा।

यौ०—शिरकतनामा = दे० 'शिराकतनामा'।

शिरकती—वि० [अ० शिरकत] शिरकत करनेवाला।

शिरखिस्त—संज्ञा पु० [फा० शीरखिश्त] एक वृक्ष का गोंद जो औषध के काम मे आता है और जिसे साधारणत लोग ज्वार से बनी चीनी मानते हैं।

शिरगोला—संज्ञा पु० [देश०] दुग्धपाषाण नामक वृक्ष।

शिरज—संज्ञा पुं० [सं०] केश। बाल। शिरसिज।

शिरत्रान(पु)—संज्ञा पुं० [स० शिरस्त्राण] खोद। दे० 'शिरस्त्राण'। उ०—टूटत धुजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिरत्रान।—सूर (शब्द०)।

शिरनी—संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई। उ०—इतनी सुनी हर्ष धर्मदासा। शिरनी पान लाइ धरे पासा।—कबीर सा०,पृ०८२।

शिरनेत—संज्ञा पुं० [देश०] १ गढवाल या श्रीनगर के आस पास का प्रदेश। उ०—सुनि सिधाय शिरनेतन देशू। तहँ विवाह किय ब्रह्मनरेशू।—कबीर (शब्द०)। २ क्षत्रियो की एक शाखा।

शिरपेंच—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरपेंच'।

शिरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+फूल] सिर मे पहनने का स्त्रियो का आभूषण। सीसफूल। उ०—माँग फूल शिरफूल सब बेणी फूल बनाव।—केशव (शब्द०)।

शिरमौर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्+स० मुकुट, प्रा० मउड] १ शिरोभूषण। मुकुट। २ श्रेष्ठ व्यक्ति। मुख्य व्यक्ति। प्रधान। उ०—हम खेलब तव साथ, होइ नीच सब भाँति जो। कह्यो बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमौर मम।—सबल (शब्द०)। २. अधिपति। नायक।

शिरश्चंद्र—संज्ञा पुं० [स० शिरश्चन्द्र] महादेव, शिव।

शिरश्छेद, शिरश्छेदन—संज्ञा पुं० [स०] सिर काटना। शिर कृतन [को०]।

शिरसिज—संज्ञा पु० [स०] केश। बाल।

यौ०—शिरसिज पाश = केशबंध।

शिरसिरुह—संज्ञा पुं० [स०] केश। बाल।

शिरस्क—संज्ञा पु०[सं०] १. शिरस्त्राण। २ पगडी। शिरोवेष्टन [को०]।

शिरस्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] नरयान। पालकी। शिविका [को०]।

शिरस्तापी—संज्ञा पु० [स० शिरस्तापिन्] हाथी। हस्ती [को०]।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण—संज्ञा पु० [स०] १ युद्ध आदि के समय सिर के बचाव के लिये पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूड। खोद। उ०—उसके पटदाँव (पीछे की ओर) एक लबी पुरुष मूर्ति है जो उरस्त्राण, कचुक और शिरस्त्राण पहने हुए है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २६०। २, पगडी। मुरेठा। शिरोवेष्टन (को०)।

शिरस्थ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुखिया। अग्रणी। नायक। २. वह जो वाद या अभियोग लगावे। वादी। अभियोक्ता [को०]।

शिरस्थ[2]—वि० उपस्थित। आसन्न। उपनत [को०]।

शिरस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] मुख्य स्थान। प्रधान कक्ष [को०]।

शिरस्य[1]—वि० [सं०] शिर सबधी। शिर का। शिर पर स्थित।

शिरस्य[2]—संज्ञा पुं० साफ एव स्वच्छ बाल [को०]।

शिरहन(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+आधान] १ उसीसा। तकिया। २ सिरहाना। मुडवारी। उ०—(क) शिरहन ओर चरण की सोवन लगी अवधि नहि जानी।—रघुराज (शब्द०)। (ख) ताके हृदय गर्व नहि थोरा। बैठेउ जाइ शिरहने ओरा।—सबल (शब्द०)

शिरा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्त की छोटी नाडी। खून की छोटी नली। विशेष दे० 'नाडी'। २ पानी का सोता या धारा। ३ जाल के समान गुथी हुई रेखाएँ। ४ पानी खीचने का डोल। ५ पृथ्वी के भीतर भीतर बहनेवाला पानी का सोता।

विशेष—आठो दिशाओ के स्वामियो के नाम से आठ शिराएँ प्रसिद्ध हैं जैसे,—आग्नेयी, ऐंद्री, याम्या, आदि। बीच मे सबसे बडी शिरा या महाशिरा है। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी शिराएँ हैं।

शिरा[2]—संज्ञा पु० [देश०] भूरे रग का एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—इस पक्षी का सिर किरमिजी रग का तथा पूँछ सफेद होती है। इसकी लबाई १२ अगुल के लगभग होती है। यह कुमाऊँ, काश्मीर और अफगानिस्तान में होता है तथा भटकटैया के बीज खाता है।

शिराकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ साझा। हिस्सेदारी। २. कार्य मे योग।

शिराकतनामा—संज्ञा पुं० [अ० शिराकत+फ़ा० नामह्] वह कागज जिसपर साझे की शर्तें लिखी हो।

शिराकती—वि० [अ० शिराकत] १. साझेदार। हिस्सेदार। २ सहायक। सहयोगी।

शिराग्रह—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वातरोग जिसमे वायु रुधिर के साथ मिलकर गले की नसो को काला कर देती है।

शिराज—संज्ञा स्त्री० [देश०] हिंदुओ की एक जाति जो चमडे का काम बहुत अच्छा करती है।

शिराजाल—संज्ञा पुं० [स०] १ छोटी रक्तनाडियो का समूह। २. आँख का एक रोग जिसमे लाल डोरे मोटे और कड़े पड जाते हैं।

शिरापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीपल का पेड। २ एक प्रकार का खजूर। हिंताल। ३ कैथ का पेड। कपित्थ।

शिरापिडिका—संज्ञा स्त्री० [स० शिरापिडिका] आँख का एक रोग जिसमे पुतली के पास एक फुंसी निकल आती है। २ प्रमेहपिडिका। शिराविका पिडिका।

शिराप्रहर्ष—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का नेत्ररोग।

शिराफल—संज्ञा पु० [स०] १. नारियल। २. अजीर।

शिरामूल—संज्ञा पुं० [सं०] नाभि ।

शिरामोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] रक्तस्राव । रक्त का निकलना [को०] ।

शिरायु—संज्ञा पुं० [सं०] रीछ । भालू ।

शिराल[1] वि० [सं०] १ शिरायुक्त । जिसमे शिराएँ हो । २ शिरासंबंधी [को०] ।

शिराल[2]—संज्ञा पुं० कर्मरंग । कमरख [को०] ।

शिरालक[1]—वि० [सं०] बहुत नसो या नाडियोवाला ।

शिरालक[2]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा जिसे हाडा भाँग कहते हैं । अस्थिभग वृक्ष ।

शिरालक[3]—संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन जाति का नाम ।

शिराला -संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा । २ कमरख ।

शिराविकापिड़िका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिराविका पिडिका] वह घातक फुसी जो बहुमूत्र के रोगियो को निकलती है । प्रमेह पीडिका ।

शिरावृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा नामक धातु ।

शिराहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नसो का झनझनाना । २ आँख का एक रोग जिसमे आँख ताँबे के समान लाल हो जाती हे और दिखाई नही पडता ।

शिरि —संज्ञा पुं० [सं०] १ खड्ग । तलवार । २ शर । ३ वध करनेवाला व्यक्ति । घातक (को०) । ४. शलभ । पतिंगा । ५. टिड्डी ।

शिरि[2]—वि० उग्र । क्रूर । रौद्र [को०] ।

शिरियारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक जंगली बूटी या शाक जो औषध के काम मे आता है । सुसना । सुनिषण्णक ।

विशेष—यह जगली शाक हर जगह होता है । इसमे चँगेरी के समान एक साथ चार चार पत्ते होते हैं जो एक अगुल चौडे और नोकदार होते हैं । पत्तो के बीच मे कली लगती है । फलो मे दो चिपटे बीज होते हैं जो कुछ रोएदार होते हैं । ये बीज सूजाक मे दिए जाते है । शिरियारी पजाव और सिंध मे अधिक होती है । वैद्यक मे यह कसैली, रूखी, शीतल, हलकी, स्वादिष्ट, शुक्रजनक, रुचिकारी, मेधाजनक और त्रिदोषनाशक कही गई है । इसका साग भी लोग खाते है ।

शिरीष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरस का पेड । २ शिरीष का पुष्प (को०) ।

शिरीषक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिरिस का पेड । २. एक नाग का नाम ।

शिरीषपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद कटभी का पौधा ।

शिरीषी—संज्ञा पुं० [सं० शिरीषिन्] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

शिरुआरी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शिरियारी' ।

शिरोगद—संज्ञा पुं० [सं०] शिर का रोग [को०] ।

शिरोगुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के तीन घटो या कोठो मे से एक जिसमे मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी का सिरा रहता है । सिर के भीतर का भाग ।

शिरोगृह—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रशाला । अट्टालिका । कोठा ।

शिरोगेह—संज्ञा पुं० [सं०] अट्टालिका । कोठा ।

शिरोग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] सिर का एक वातरोग । समलवाई ।

शिरोज—संज्ञा पुं० [सं०] बाल । केश ।

शिरोदाम—संज्ञा पुं० [सं० शिरोदामन्] पगडी । साफा ।

शिरोधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधाम —संज्ञा पुं० [सं०] चारपाई का सिरहाना ।

शिरोधार्य—वि० [सं०] १. सिर पर धरने योग्य । आदरपूर्वक मानने योग्य । सादर अगीकार करने योग्य ।

मुहा०—शिरोधार्य करना = (१) सिर पर धारण करना । सिर माथे चढाना । (२) आदरपूर्वक स्वीकार करना । आदर के साथ मानना, जैसे—आज्ञा शिरोधार्य करना ।

शिरोधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिरा । नस । नाड़ी ।

शिरोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] गरदन [को०] ।

शिरोनाप—संज्ञा पुं० [सं० शिरस् + हिं० नाप] सिर का परिमाण । सिर का नाप । उ०—और भी कई भेद हैं जिनका नरदेहशास्त्र मे विस्तार से अध्ययन होता है । एक प्रमुख भेद का नाम है शिरोनाप, यदि किसी के के सिर की लंबाई 'क' और चौडाई 'ख' है तो उसका शिरोनाप क/ख × १०० हुआ । आर्यो०, पृ० ७ ।

शिरोपाव—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव' । उ०—अच्छे खिलअत और शिरोपाव देने की कृपा की । —हुमायूँ, पृ० १८३ ।

शिरोभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना । जैसे,—सीस फूल । २. मुकुट । ३. शिरोमणि । श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोभूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिर का अलकरण, शीशफूल, कलँगा आदि । उ०—कुछ उदाहरणो मे शिरोभूषा पर कमलपुष्प भी जडे है ।—सपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० ४५० ।

शिरोभ्यग—संज्ञा पुं० [सं० शिरोभ्यङ्ग] सिर मे तेल लगाने की क्रिया ।

शिरोमणि[1]—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] सिर पर का रत्न । चूडामणि । २. श्रेष्ठ व्यक्ति । सबसे उत्तम मनुष्य । सिरताज । मुखिया । प्रधान । ३. माला मे सुमेरु ।

शिरोमणि[2]—वि० सर्वप्रधान । सर्वश्रेष्ठ [को०] ।

शिरोमर्मा—संज्ञा पुं० [सं० शिरोमर्मन्] जगली सूअर । शूकर ।

शिरोमाली—संज्ञा पुं० [सं० शिरोमालिन्] मुड की माला धारण करनेवाले, शिव । महादेव ।

शिरोमौलि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर का रत्न । २. श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोरक्षी—संज्ञा पुं० [सं० शिरोरक्षिन्] सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक । बाडीगार्ड ।

शिरोरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] शिरोमणि ।

शिरोरुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सप्तपर्ण वृक्ष । सातवन । २. मस्तक की पीडा (को०) ।

शिरोरुह—संज्ञा पुं० [सं०] सिर के ऊपर के बाल । केश ।

शिरोरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरी अक्षरों पर लगाई जानेवाली शीर्ष रेखा। उ०—शिरोरेखा ने नागरी की वैज्ञानिकता और कलापूर्णता दोनों को बढाया है।—भाषा शि०, पृ० ५८।

शिरोवर्ती—वि० [सं० शिरोवर्तिन्] अग्रवर्ती। मुखिया। प्रधान। नायक। शीर्षस्थ [को०]।

शिरोवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोर या मुर्गे की चोटी। कलंगी।

शिरोवस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] वातज सिर के दर्द का एक उपचार।

विशेष—उर्द के सने हुए आटे से सिर पर आठ या सोलह अंगुल की बाढ बाँधकर बीच मे गरम तेल भर दे और चार घडी रखकर निकाल डाले। इससे वातज शिरोरोग, कर्णरोग, ग्रीवा रोग, और दाढ़ के रोग ४, ५ दिन के सेवन से अच्छे हो जाते हैं।

शिरोवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] गोल मिर्च। काली मिर्च।

शिरोवृत्तफल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल ओगा। रक्त अपामार्ग। लाल चिचडा।

शिरोवेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] उष्णीष। पगडी। साफा।

शिरोवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] पगडी [को०]।

शिरोर्हत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर की पीडा। सिर का दर्द।

शिरोहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नेत्ररोग जो शिरोत्पात की चिकित्सा न करने से हो जाता है।

शिरोहारी—संज्ञा पुं० [सं० शिरोहारिन्] १ सिरों की माला पहननेवाले, शिव। महादेव।

शिरोऽर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर का दर्द। सिर की पीढ़ा [को०]।

शिरोऽस्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपडी की हड्डी। करोटि [को०]।

शिर्क—संज्ञा पुं० [अ०] अनेकेश्वरवादी होना। ईश्वर मे द्वैत भाव रखना [को०]।

शिर्कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शिरकत', 'शिराकत' [को०]।

यौ०—शिर्कतनामा।

शिलडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। वीड।

विशेष—यह सिंध, बलोचिस्तान, दक्षिण, मलाबार और लका आदि के रेतीले स्थानों मे बहुतायत से पाई जाती है। भारत से बाहर यह अरब और उत्तरी तथा मध्य अमरीका मे भी होती है। यह घास जिस स्थान पर होती है उस स्थान पर जमीन मे चावल की तरह के एक प्रकार के दाने भी होते हैं। गरीब लोग इन दानों को उबालकर अथवा इनका आटा बनाकर खाते हैं।

शिलंधिर—संज्ञा पुं० [सं० शिलन्धिर] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शिलंब—संज्ञा पुं० [सं० शिलम्ब] १ जुलाहा। ततुवाय। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३ तपस्वी। साधु। संत (को०)।

शिल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ खेत कट जाने और कृषक द्वारा उसे छोड देने के बाद भूमि मे पडा हुआ एक एक दाना बीनना। दे० 'उंछ'। २. पारियात्र के एक पुत्र का नाम।

शिल²—संज्ञा स्त्री० १. दे० 'शिला'। २. दे० 'सिल'।

शिलक—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शिलगर्भज—संज्ञा पुं० [सं०] पाषाणभेद। पखानभेद।

शिलज—संज्ञा पुं० [सं०] अश्मज। भूमि छरीला।

शिलरति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो उंछ वृत्ति के द्वारा जीविका निर्वाह करता हो। उंछशील।

शिलवट—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिलवट'।

शिलवाहा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलावहा] एक प्राचीन नदी का नाम। दे० 'शिलावहा'।

शिलाजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलाञ्जनी] कालाजनी वृक्ष। काली कपास।

शिलात—संज्ञा पुं० [सं० शिलान्त] अश्मंतक वृक्ष।

शिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाषाण। पत्थर। २ पत्थर का बड़ा चौडा टुकडा। चट्टान। सिल। ३. मन सिला। मैनसिल। ४ कपूर। ५. शिलाजीत। ६ गेरु। ७ नाल का पौधा। ८ हरीतकी। हर्रे। ९. गोरोचन। १० दूब। ११ पत्थर की ककडी अथवा बटिया। १२ भूमि म पडा हुआ एक एक दाना बीनने का काम। उछवृत्ति। उ०—बीन्यो शिला क्षुधावश छीना। —रघुराज (शब्द०)। १३ दे० 'शिरा'। १४ चक्की के नीचे का पाट (को०)। १५ चौखट के नीचे की लकडी (को०)। १६ स्तभ का ऊपरी सिरा (को०)।

शिलाकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सलई वृक्ष। सलई।

शिलाकुट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर तोडने की छेनी।

शिलाकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तरखड पर अक्षर उत्कीर्ण करना। शिलालेखन। शिलालेख। २ लीथोग्राफी (अंग०)। पत्थर की छपाई (को०)।

शिलाक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] चूना।

शिलागृह—संज्ञा पुं० [सं०] गह्वर। गुहा। कंदरा (को०)।

शिलाघन—वि० [सं०] शिला की तरह कठोर।

शिलाचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ शालग्राम की मूर्ति। २. प्रस्तर पर उत्कीर्ण कोई चक्र।

शिलाचय—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड।

शिलाज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। पत्थर का फूल। २. लोहा। ३. शिलाजीत। ४ पेट्रोल (को०)। ५ कोई भी शिलाभूत पदार्थ (को०)।

शिलाज²—वि० खनिज [को०]।

शिलाजतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिलाजीत। २. गैरिक धातु। गेरू (को०)।

शिलाजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद रग का पत्थर। सगमरमर।

शिलाजित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलाजीत—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रग की एक प्रसिद्ध ओषधि जिसे कुछ लोग मोमियाई भी कहते हैं।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार यह ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणों से तपी हुई शिलाओं का रस है। 'भावप्रकाश' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है—एक पर्वतों से निकलता है और दूसरा खारी जमीन में मिट्टी और पानी के योग से बनता है। 'रसरत्नाकर' इसकी उत्पत्ति सोने, चाँदी, लोहे और ताँबे से मानता है। परंतु यह प्रायः पहाड़ों पर या लोहे की खानवाले गड्ढे में ही मिलता है। शास्त्रों के अनुसार यह छह प्रकार का होता है। 'रसरत्न' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है। एक वह जिसमें से गोमूत्र के समान गंध आती है। यह साधारणतः बहुत मिलता है। और दूसरा कपूर के समान सफेद होता है। इसमें से किसी प्रकार की गंध नहीं आती। इसका रंग कई प्रकार का होता है। विंध्याचल का शिलाजीत सबसे उत्तम कहा जाता है। इसको रासायनिक रीति से शुद्ध करके ओषधि के काम में लाते हैं। यह बड़ा ही गुणकारी और शक्तिवर्धक होता है। अनुपानभेद के अनुसार नाना प्रकार के रोगों के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह कड़वा, चरपरा, गरम, रसायन, छेदन, योगवाही, कफ, मेद, पथरी, शर्करा, सूजाक, क्षय, श्वास, वातरक्त, बवासीर, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, खाँसी, इत्यादि रोगों का नाश करनेवाला माना गया है।

पुराणों के अनुसार देवासुर संग्राम के समय जब अमृत निकालने के लिये देवताओं और राक्षसों ने समुद्र का मंदराचल पर्वत को मथानी बनाकर मथा, तब शेषनाग के भाग और मंथन की गरमी से पर्वत के भीतर की धातुएँ पिघल गईं और पसीने के रूप में बहने लगीं। उसी स्राव का नाम शिलाजीत, गिरिस्वेद या शिलामल हुआ। पीछे से देवताओं ने ब्रह्मा और इंद्र का पूजनकर मनुष्यों के कल्याणार्थ मंदराचल का वही पसीना अन्य पर्वतों को दे दिया।

पर्या०—अगज। अद्रिज। शिलाज। शीतपुष्पक। शैल। शैलेय। अश्मलाक्षा। जत्वश्मक। गैरेय। अर्घ्य। गिरिज। अश्मज। अश्मोत्थ। शिलाव्याधि। अश्मजतुक।

शिलाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा मकान। अट्टालिका। २. मकान के सबसे ऊपरी भाग में बना हुआ छोटा कमरा। चौबारा। ३. किसी इमारत के चारों ओर बना हुआ बड़ा घेरा। चहारदीवारी। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त। बिल। सूराख।

शिलाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

शिलातल—संज्ञा पुं० [सं०] शिला। पाषाणपृष्ठ।

शिलात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] लोहा।

शिलात्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोना या चाँदी गलाने की घरिया।

शिलात्व—संज्ञा पुं० [सं०] शिला का भाव या धर्म।

शिलात्वच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला या वल्का नाम की ओषधि।

शिलाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शिलादद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १. शैलेय नामक गंधद्रव्य। छरीला। २. शिलाजीत।

शिलादान—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणों के अनुसार वह दान जिसमें किसी ब्राह्मण को शालग्राम की मूर्ति दी जाती है। २. शिल का ग्रहण करना। खेत में से दाने चुनना।

शिलादित्य—संज्ञा पुं० [सं० शीलादित्य] कान्यकुब्ज का एक नरेश। विशेष दे० 'हर्षवर्धन'।

शिलाद्रद्रु—संज्ञा पुं० [सं० शिलाद्रद्रु] शैलेय नामक गंधद्रव्य। छरीला।

शिलाधातु—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोनागेरू। २. खड़िया। मिट्टी। ३. चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलानीड़—संज्ञा पुं० [सं० शिलानीड] गरुड़।

शिलान्यास—संज्ञा पुं० [सं०] नींव की शिला रखना। नवीन भवन-निर्माण के समय नींव में पूजनादि करके शिला का स्थापन करना।

शिलापट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर की चट्टान। उ०—धरी तरे ही काज यह शिलापट्ट विधि लाय।—सीताराम (शब्द०)। २. मसाला आदि पीसने की सिल।

शिलापट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिलापट्ट (को०)।

शिलापुत्र, शिलापुत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] बट्टा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाती है।

शिलापुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। शैलेय। पत्थर का फूल। पथरफूल। २ दे० 'शिलाजीत'।

शिलापेष—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर का चक्की या सिल आदि (को०)।

शिलाप्रतिकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला पर उकेरी मूर्ति या शिलात्मक प्रतीक (को०)।

शिलाप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार लड़ाई में पत्थर फेंकना या लुढ़काना।

शिलाप्रवालक—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार एक प्रकार का साधारण रत्न (को०)।

शिलाप्रसून—संज्ञा पुं० [सं०] शैलज या छरीला नामक गंधद्रव्य। शिलाकुसुम।

शिलाफलक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर की पटिया। पत्थर का पाटा।

शिलाबंध—संज्ञा पुं० [सं० शिलाबन्ध] वह प्राकार या परकोटा जो पत्थरों के टुकड़ों से बना हो।

शिलाभव—संज्ञा पुं० [सं०] छरीला। शैलज।

शिलाभिष्यंद—संज्ञा पुं० [सं० शिलाभिष्यन्द] शिलाजीत।

शिलाभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाषाणभेदी वृक्ष। पखानभेद। २. पत्थर तोड़ने की छेनी।

शिलामल—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलायु—संज्ञा पुं० [सं०] गले में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें कफ और रक्त के कुपित होने से गले में आँवले की गुठली के समान गाँठ उत्पन्न होती है जिसमें बहुत पीड़ा होती

है। इसके कारण खाया हुआ अन्न गले मे अटकता है। इसको गिलायु भी कहते है।

शिलायूप—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शिलारंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलारम्भा] कठकेला। काष्ठ कदली।

शिलारस—संज्ञा पुं० [सं०] लोहवान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।

विशेष—कुछ लोग इसे खनिज भी मानते हैं, पर वास्तव मे यह एक वृक्ष का गोंद अथवा जमा हुआ दूध है। इसका वृक्ष पूरबी बंगाल, आसाम, भूटान, पेगू, चीन, मन्गाया, मेरगुई, जावा और यूनान मे पाया जाता है। इसका वृक्ष ६० से १०० फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते ४½ इंच तक लंबे, जड की ओर गोलाकार, अनीदार और किंचित् बारीक कँगूरेदार होते है। शाखाओं के अंत मे घुंडीदार फूल होते हैं। फल गोलाकार होते हैं जिनमे बीजों की अधिकता होती है। वैद्यक के अनुसार यह कडवा, चरपरा, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, सुगंधित, वर्ण को सुंदर करनेवाला और त्रिदोष आदि को शांत करनेवाला होता है।

शिलारोपण—संज्ञा पुं० [सं०] शिलान्यास।

शिलारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह का एक विधि। अश्मारोहण। उ०—अब तक विवाह की तीन विधियाँ थी। एक अग्निप्रदक्षिणा, दूसरी, सप्तपदी लाजाहोम, तीसरी शिलारोहण।—वैशाली, पृ० ३४५।

शिलालिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिलालेख

शिलाली—संज्ञा पुं० [सं० शिलालिन्] एक अति प्राचीन नाट्यशास्त्र के आचार्य।

शिलालेख—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख। पुराने लेख जो पत्थरों पर लिखे हुए पाए जाते हैं और जिनमे किसी प्रकार का अनुशासन या दान आदि उल्लिखित होता है।

शिलावर्षी¹—संज्ञा पुं० [सं० शिलावर्षिन्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शिलावर्षी²—वि० पत्थर बरसानेवाला।

शिलावल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शिलावल्कला] एक प्रकार का ओषधि। शिलावल्का।

शिलावल्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की विधि जिसे शिलजा और श्वेता भी कहते है। राजनिघंटु के अनुसार यह ठंढी, स्वादु, कृच्छ्रमेह, मूत्रावरोध, अश्मरी, शूलज्वर और पित्त का नाश करनेवाली है।

शिलावह—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस जनपद का निवासी।

शिलावहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

शिलावृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २. उपलवृष्टि। पथराव।

शिलावेश्म—संज्ञा पुं० [सं० शिलावेश्मन्] १. कंदरा। गुफा। २. पत्थर का बना हुआ मकान।

शिलाव्याधि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शैलेय नामक गंधद्रव्य। २ पत्थर का बना हुआ आसन। ३ शिलाजीत।

शिलासार—संज्ञा पुं० [सं०] लोहा।

शिलास्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलाहरि—संज्ञा पुं० [सं०] शालिग्राम की मूर्ति। उ०—भृगु मुनि कहा शिलाहरि धोई। करहु पान कछु दोष न होई।—विश्राम (शब्द०)।

शिलाहारी—संज्ञा पुं० [सं० शिलाहारिन्] वह जो शिला या उंछ वृत्ति से अपना निर्वाह करता हो। उंछशील।

शिलाह्व, शिलाह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलिंग—संज्ञा पुं० [अं०] इंगलैंड मे चलनेवाला चाँदी का एक सिक्का जो प्राय पुराने बारह आने मूल्य का होता है।

शिलिंद—संज्ञा पुं० [सं० शिलिन्द] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है और श्लेष्मावर्धक, हृद्य और वात-पित्त नाशक माना जाता है।

शिलि¹—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।

शिलि²—संज्ञा स्त्री० चौखट के नीचे का लकडी। डेहरी। देहली।

शिलिन—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शिलींध्र—संज्ञा पुं० [सं० शिलीन्ध्र] १ केले का फूल। २ ओला। बनौरी। ३. शिलिंद नामक मछली। ४. भुइँछता। कुकुरमुत्ता। ५ कदली।

शिलींध्रक—संज्ञा पुं० [सं० शिलीन्ध्रक] कुकुरमुत्ता। खुमी।

शिलींध्री—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलीन्ध्री] १. केंचुआ। गडूपदी। २ मिट्टी। ३. एक प्रकार का चिडिया।

शिली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देहलीज। २ केंचुआ। गडूपदी। ३. भोजपत्र। ४ बाण। ५ भाला। ६ खंभे का ऊपरी भाग। स्तंभशीर्ष (को०)। ७ मंडूक। मेढक।

शिलीपद—संज्ञा पुं० [सं०] फीलपाँव नामक रोग। श्लीपद।

शिलीभूत—वि० [सं०] शिला बना हुआ। उ०—शिलीभूत सौंदर्य, ज्ञान, आनंद अनश्वर। शब्द शब्द मे तेरे उज्ज्वल जडित हिम शिखर।—युग०, पृ० ९२।

शिलीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रमर। भौंरा। उ०—(क) कुँवरि ग्रसत श्रीखंड अहि भ्रम चरण शिलीमुख लाम।—सूर (शब्द०)। २. बाण। तीर। उ०—न डगै न भगै जिय जानि शिलीमुख पंच धरे रतिनायक है।—तुलसी (शब्द०)। ३. युद्ध। समर। लडाई। ४ मूर्ख। बेवकूफ।

शिलु—संज्ञा पुं० [सं०] लिसोडा। बहुवार वृक्ष।

शिलूष—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि जो नाट्यशास्त्र के आचार्य माने जाते है। २ बेल का वृक्ष।

शिलेय¹—वि० [सं०] शिला संबंधी। शिला का।

शिलेय²—संज्ञा पुं० शिलाजीत ।

शिलोंछ—संज्ञा पुं० [सं० शिलोञ्छ] फसल कट जाने पर खेत मे गिरे पडे दाने चुनकर जीवन निर्वाह करने की वृत्ति । शिल और उंछवृत्ति ।

यौ०—शिलोंछवृत्ति = दे० 'शिलोंछ' । शिलोंछ वृत्ती(पु) = दे० 'शिलोंछ' । उ०—करि शिलोंछ वृत्ती मन लावै । स्वामी को परसाद करावै ।—राम० धर्म०, पृ० ३४४ ।

शिलोंछन—संज्ञा पुं० [सं० शिलोञ्छन] शिल और उंछवृत्ति ।

शिलोंछी—वि० [सं० शिलोञ्छिन्] शिलोंछ वृत्तिवाला । अल्पसंग्रही ।

शिलोच्चय—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत । पहाड ।

शिलोत्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला या शैलेय नामक गंधद्रव्य । २ शिलाजीत ।

शिलोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] १ शैलेय। छरीला । २. पीला चंदन । ३ सोना । स्वर्ण (को०) ।

शिलोद्भिदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाषाणभेद । पत्थरफोड ।

शिलौका—संज्ञा पुं० [सं० शिलौकस्] १. वह जो पर्वत पर होता हो । २. गरुड ।

शिल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम । दस्तकारी । कारीगरी । हुनर । जैसे, बरतन बनाना । कपडे सीना । गहने गढना आदि । २. कला संबंधी व्यवसाय, जैसे—अब इस नगर मे के कई शिल्प नष्ट हो गए हैं । ३ दक्षता । पाटव । कौशल । चातुर्य (को०) । ४. निर्माण । सर्जन । सृष्टि । रचना (को०) । ५ आकार । आकृति । रूप (को०) । ६ अनुष्ठान । क्रिया । धार्मिक कृत्य (को०) । ७ यज्ञादि मे प्रयुक्त स्रुवा (को०) ।

शिल्पक—संज्ञा पुं० [सं०] अष्टादश उपरूपकों मे एक उपरूपक जिसमे चारो वृत्तियाँ, चार अंक, शांत और हास्य के अलावा कोई भी रस, ब्राह्मण नायक, उपनायक हीन पुरुष और इंद्रजाल, श्मसानादि का वर्णन होता है । इसके २७ अंग कहे गए हैं ।

शिल्पकर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिल्पकार' ।

शिल्पकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] दस्तकारी । शिल्पकला । हस्तकला (को०) ।

शिल्पकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से चीज बनाने की कला । कारीगरी । दस्तकारी । उ०—तो सो लहि आदर्श बढत कर शिल्पकला सब ।—श्रीधर (शब्द०) ।

शिल्पकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाकर तैयार करता हो । शिल्पी । कारीगर । दस्तकार । उ०—नए नए साजो बाजो की शिल्पकार करते हैं सृष्टि ।—साकेत, पृ० ३७४ । २ राज । मेमार ।

शिल्पकारक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिल्पकारिका] हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनानेवाला कारीगर । शिल्पकार ।

शिल्पकारी—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पकारिन्] वह जो शिल्प का कार्य करता हो । कारीगर ।

शिल्पकौशल—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्पकार्य मे पटुता या दक्षता ।

शिल्पगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर चीजें बनाते हो । कारखाना ।

शिल्पगेह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिल्पगृह' ।

शिल्पजीवी—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पजीविन्] वह जो शिल्प के द्वारा जीविका निर्वाह करता हो । कारीगर । दस्तकार ।

शिल्पज्ञ—वि० पुं० [सं०] शिल्प जाननेवाला । कारीगरी को जाननेवाला ।

शिल्पता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पत्व ।

शिल्पत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पता ।

शिल्पप्रजापति—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वकर्मा का एक नाम ।

विशेष—विश्वकर्मा ही समस्त शिल्पो के आविष्कर्ता और शिल्पियो के मूलपुरुष माने जाते हैं ।

शिल्पलिपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्थर या ताँबे आदि पर अक्षर खोदने की विद्या ।

शिल्पविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाने की विद्या । २. गृहनिर्माण कला । मकान आदि बनाने की विद्या । ३. यांत्रिक विज्ञान (को०) ।

शिल्पविधान—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प + विधान] साहित्य मे रचना या निर्माण का ढंग । रीति या पद्धति । उ०—अतएव कामायनी अपना स्वतंत्र आदर्श और स्वतंत्र शिल्पविधान रखती है । —बी० श० महा०,—पृ० ३४८ ।

शिल्पशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से [illegible] मिलकर तरह तरह की चीजें बनाते हों । कारखाना ।
शिल्पगृह ।

शिल्पशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमे हाथ [illegible] बनाने का निरूपण हो । शिल्पविद्या । २ [illegible] शास्त्र । वास्तु शास्त्र ।

शिल्पसमाह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] कारीगरी का मुकाबला [illegible]

शिल्पस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिल्पकला [illegible] शिल्पज्ञ व्यक्ति (को०) ।

शिल्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाई की दुकान (को०) ।

शिल्पाजीवी—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पाजीविन्] दे० [illegible]

शिल्पालय—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्पगृह । [illegible]

शिल्पिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो [illegible] कारीगर । दस्तकार । २ [illegible] एक भेद । दे० 'शिल्पक' । ४. [illegible]

शिल्पिक²—वि० हाथ संबंधी अथवा [illegible]

शिल्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible] काम [illegible]

[illegible] मे [illegible]
[illegible]

शिल्पिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पी होने का भाव। उ०—स्वल्प, अकृत्रिम कला शिल्पिता के धनिगूढ़ निदर्शन, रंगों की रुचि के स्वर करते दृष्टि मरणि को विस्मित।—अतिमा, पृ० १०३।

शिल्पिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पी का स्त्रीलिंग रूप। २ एक प्रकार की घास।

शिल्पिशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पगृह। कारखाना।

शिल्पी¹—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पिन्] १ शिल्पकार। कारीगर। २ राज। थवई। ३ चितेरा। चित्रकार। ४ नखी नामक गंधद्रव्य। ५ वह जो किसी भी कला में प्रवीण हो (को०)।

शिल्पी²—वि० १ ललितकला या यांत्रिक कला संबंधी (को०)।

शिल्ह—संज्ञा पुं० [सं० शिह्ल] दे० 'शिलारस'।

शिल्हक—संज्ञा पुं० [सं० शिह्लक] दे० 'शिलारस'।

शिवकर—संज्ञा पुं० [सं० शिवङ्कर] १ मंगल करनेवाले, शिव। २ तलवार। ३ शिव का एक गण। ४. रोग फैलानेवाले एक असुर का नाम। ५ एक प्रकार का बालग्रह।

शिवंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवन्तिका] गुलदाउदी।

शिवंसा†—संज्ञा पुं० [सं० शिव+अंश] शस्य का वह अंश जो शैव साधुओं के लिये अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है।

शिव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल। कल्याण। क्षेम। २ जल। पानी। ३ सेंधा नमक। ४ शृगाल। सियार। गीदड़। ५ खूँटा। ६ पारा। ७. गुग्गुल। ८ पुंडरीक वृक्ष। ९ मोक्ष। १०. काला धतूरा। ११ वेद। १२ देव। १३ कीलक ग्रह। शुभग्रह। १४ रुद्र। काल। १५ वसु। १६ एक प्रकार का मृग। १७. एक प्रकार की गुड़ की शराब। १८ प्लक्ष द्वीप तथा जंबू द्वीप के एक वर्ष का नाम। १९ लिंग। २०. एक प्रकार का नृत्य। २१ एक छंद का नाम। इसके प्रत्येक चरण में ५,६ के विश्राम से ११ मात्राएँ और अंत में सगण, रगण, नगण, में से कोई एक होता है। इसकी तीसरी, छठी और नवीं मात्राएँ लघु रहती हैं। २२ परमेश्वर। भगवान्। २३ विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों के अंतर्गत एक योग। २४ समुद्री लवण। २५ सुहागा। २६ आँवला। २७ कदंब। कदम। २८ फिटकरी। २९ सिंदूर। ३० मिर्च। ३१ तिल का फूल। ३२ चंदन। ३३ लोहा। ३४ बालू। ३५ नीलकंठ पक्षी। ३६ कौवा। ३७ मौलसरी का पेड़। ३८ हिंदुओं के प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले और पौराणिक त्रिमूर्ति के अंतिम देवता कहे गए हैं।

विशेष—वैदिक काल में यही रुद्र के रूप में पूजे जाते थे। पर पौराणिक काल में ये शंकर, महादेव और शिव आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। पुराणानुसार इनका रूप इस प्रकार है,—इनके सिर पर गंगा, माथे पर चंद्रमा तथा एक और तीसरा नेत्र, गले में साँप तथा नरमुंड की माला, सारे शरीर में भस्म, व्याघ्रचर्म ओढ़े हुए और बाएँ अंग में अपनी स्त्री पार्वती को लिए हुए। इनके पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय, गण भूत और प्रेत, प्रधान अस्त्र त्रिशूल और वाहन बैल है जो नंदी कहलाता है। इनके धनुष का नाम पिनाक है जिसे धारण करने के कारण ये पिनाकी कहे जाते हैं। इनके पास पाशुपत नामक एक प्रसिद्ध अस्त्र था जो इन्होंने अर्जुन को उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर दे दिया था। पुराणों में इनके संबंध में बहुत सी कथाएँ हैं। ये कामदेव का दहन करनेवाले और दक्ष का यज्ञ नष्ट करनेवाले माने जाते हैं। कहते हैं, समुद्रमंथन के समय जो विष निकला था, वह इन्होंने पान किया था। वह विष इन्होंने अपने गले में ही रखा और नीचे पेट में नहीं उतारा, इसलिये इनका गला नीला हो गया और ये नीलकंठ कहलाने लगे। परशुराम ने अस्त्रविद्या की शिक्षा इन्हीं से पाई थी। संगीत और नृत्य के भी ये प्रधान आचार्य और परम तपस्वी तथा योगी माने जाते हैं। इनके नाम से एक पुराण भी है जो शिवपुराण कहलाता है। इनके उपासक 'शैव' कहलाते हैं। इनका निवासस्थान कैलास माना जाता है और लोक में इनके लिंग का पूजन होता है।

पर्या०—शंभु। महादेव। ईश्वर। ईश। खंडपरशु। ऊर्ध्वरेता। ईशान। पंचानन। शिपिविष्ट। अर्धनारीश। भर्ग। विश्वनाथ। गिरीश। मृत्युंजय। त्रिलोचन। हर। भैरव। उमापति। भूतनाथ। काशीनाथ। नंदीश्वर। रुद्र। महाकाल। वामदेव। जटाधर। पशुपति। पुष्प। कृत्तिवासा। पिनाकी। धूर्जटि। नीललोहित। उग्र। कपर्दी। श्रीकंठ। सितकंठ। शूली।

शिव²—वि० १ कल्याण करनेवाला। मंगल करनेवाला। २ सुखी। प्रसन्न (को०)।

शिवक—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँटा। कील। २ खूँटा। बड़ी मेख। ३ वह खंभा जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है। ४. शिवमूर्ति (को०)।

शिवकर¹—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के चौबीस जिनों में से एक जिन का नाम।

शिवकर²—वि० मंगलकारी। कल्याणकारी (को०)।

शिवकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिवकांची—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवकाञ्ची] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध नगर।

विशेष—कृष्णा और पोलर नदी के बीच में स्थित कारोमंडल के एक भाग की राजधानी कांची थी। इसके दो हिस्से हैं। एक विष्णुकांची और दूसरा शिवकांची। शिवकांची उत्तर की ओर है। दक्षिण भारत के शैवों का यह एक प्रधान तीर्थ और सप्तपुरियों में से एक है।

शिवकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवकान्ता] शिव की पत्नी, दुर्गा।

शिवकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

शिवकारी—वि० [सं० शिवकारिन्] मंगल करनेवाला। कल्याण करनेवाला।

शिवकिंकर—संज्ञा पुं० [सं० शिवकिङ्कर] शिव का गण या दूत।

शिवकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शिव का कीर्तन करता हो।

शैव। २ विष्णु। ३ शिव के द्वारपाल। भृगरीट। भृंगी। ४ शिव की स्तुति (को०)।

शिवकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुल्म। बकुल।

शिवक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शिवगग—संज्ञा पुं० [सं० शिव+गङ्गा] मैसूर राज्य के एक पर्वत का नाम।

शिवगगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवगङ्गा] वह नदी या जलाशय जो शिव जी के मदिर के समीप हो।

शिवगति¹—संज्ञा पुं० [सं०] जैनो के अनुसार एक अर्हत् का नाम।

शिवगति²—वि० सुखी। प्रसन्न। समृद्ध [को०]।

शिवगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास पर्वत।

शिवगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] शकराचार्य के पिता का नाम जो विद्याधिराज के पुत्र थे।

शिवघर्मज—संज्ञा पुं० [सं०] मगल ग्रह।

विशेष—मत्स्यपुराण के अनुसार दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिये क्रुद्ध शिव के ललाट से गिरे हुए पसीने की बूँद से मंगल ग्रह की उत्पत्ति हुई है।

शिवचतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिवरात्रि'।

शिवजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिवलिंगी लता। पचगुरिया।

शिवज्ञ—वि० [सं०] १. जो शिव का भक्त हो। शैव। २. शुभ को जाननेवाला [को०]।

शिवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिवभक्त महिला।

शिवज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] शुभाशुभ-काल-बोधक शास्त्र [को०]।

शिवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिव का भाव या धर्म। उ०—शिव शिवता इनही सो लही।—सूर (शब्द०)। २ मनुष्य के शिव मे लीन होने की अवस्था। मोक्ष।

शिवताति¹—संज्ञा स्त्री० शुभता। शुभत्व [को०]।

शिवताति²—संज्ञा पुं० [सं०] सगीत मे एक ताल का नाम जिसे रुद्रताल भी कहते है [को०]।

शिवतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] काशी नामक स्थान जो शिव का प्रधान तीर्थ माना जाता है।

शिवतेज—संज्ञा पुं० [सं० शिवतेजस्] पारा। पारद।

शिवदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का चक्र। सुदर्शन चक्र।

शिवदारु—संज्ञा पुं० [सं०] देवदार वृक्ष।

शिवदिक्, शिवदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव माने गए हैं।

शिवदूतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिवदूती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ आठ योगिनियो मे से अतिम योगिनी का नाम।

शिवदैव—संज्ञा पुं० [सं०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव माने जाते हैं।

शिवद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्व वृक्ष। बेल का पेड।

शिवद्विष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केतकी। केवडा।

विशेष—केतकी का फूल शिवजी पर चढाने का निषेध है, इसी से इसका यह नाम पडा है।

शिवधातु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारद। पारा। २ गोदती नामक मणि।

शिवनदन—संज्ञा पुं० [सं० शिवनन्दन] शिव जी के पुत्र गणेश जी। उ०—विघ्नहरण गणनाथ शिवनदन कदन कुमति। तुव पद नाऊँ माथ, करहु पूर सतन सुयश।—रघुराज (शब्द०)।

शिवनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शिवनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शिवलिंग जो और सब शिवलिंगो मे श्रेष्ठ माना जाता है।

शिवनारायणी—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं का एक सप्रदाय।

शिवनिर्माल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पदार्थ जो शिव जी को अर्पित किया गया हो। शिव पर चढा हुआ नैवेद्य आदि।

विशेष—पुराणो मे ऐसी चीजो के ग्रहण करने का निषेध है।

२. वह चीज जो किसी प्रकार ग्रहण न की जा सकती हो। परम त्याज्य वस्तु। जैसे,—हमारे लिये तुम्हारी यह सपत्ति शिवनिर्माल्य है।

शिवनृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] गतिभेद के अनुसार एक प्रकार का नृत्य।

शिवपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

शिवपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारा। पारद। २. शिव के पुत्र, कार्तिकेय और गणेश।

शिवपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ जैनियो का स्वर्ग जहाँ वे जैनसिद्धातानुसार मुक्ति का सुख भोगते हैं। मोक्षशिला। २ शिवपुरी। काशी (को०)।

शिवपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो शैवपुराण भी कहा जाता है।

विशेष—यह पुराण शिवप्रोक्त माना जाता है और इसमे शिव का माहात्म्य वर्णित है। अन्य पुराणो के अनुसार इसमे बारह संहिताएँ और २४,००० श्लोक है। पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमे केवल चार सहिताएँ और ७,००० श्लोक पाए जाते हैं। इसीलिये कुछ लोगो का मत है कि शिवपुराण और वायुपुराण दोनो एक ही है। विष्णु, पद्म, मार्कंडेय, कूर्म, वराह, लिंग, ब्रह्मवैवर्त, भागवत और स्कदपुराण मे तो शिवपुराण का नाम हैं पर मत्स्य, नारद और देवीभागवत मे शिवपुराण के स्थान पर वायुपुराण का नाम मिलता है। कहते हैं, शैवधर्म का प्रकाश करने के लिये शिव जी ने यह पुराण रचा था। इसमे निम्नलिखित बारह सहिताएँ हैं—विद्येश्वर, रौद्र,

विनायक, भौम, मातृका, रुद्रैकादश, कैलास, शतरुद्र, कोटिरुद्र, सहस्रकोटिरुद्र, वायवीय और धर्मसंहिता। इसके रचयिता भगवान् वेदव्यास जी कहे जाते हैं। पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमे केवल ज्ञान, विद्येश्वर, कैलास, वायवीय, और धर्म आदि संहिता ही पाई जाती हैं। किसी किसी शिवपुराण मे सनत्कुमारसंहिता और गया माहात्म्य भी मिलता है।

शिवपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिव जी की पुरी, वाराणसी। काशी।

शिवपुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] आक का वृक्ष। मदार।

शिवप्रिय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ रुद्राक्ष। २. अगस्त। वकवृक्ष। ३ धतूरा। ४ भाँग। ५ स्फटिक। बिल्लौर।

शिवप्रिय²—वि० जो शिव को प्रिय हो।

शिवप्रिया संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शिवप्रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेल का वृक्ष। बिल्व।

शिववीज—संज्ञा पुं० [सं०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है।

शिवब्राह्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सखाहुली। शखपुष्पी।

शिवभक्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिव का उपासक हो। शैव।

शिवभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिवोपासना। शिवार्चन या पूजन आदि के प्रति भक्तिभावना।

शिवभारत—संज्ञा पुं० [सं०] शिवा जी छत्रपति (१६३०–१६८०) पर कवि परमानंद लिखित एक ऐतिहासिक काव्य।

शिवमल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन वृक्ष।

शिवमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसु या वसुक नामक पुष्पवृक्ष। २ मदार। आक। ३ अगस्त वृक्ष। ४. शिवलिंगी। ५ श्रीवल्ली नामक कँटीला पेड।

शिवमल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाशुपति। मौलसिरी। २. मदार। आक। ३ वक नामक वृक्ष। ४ लिंगिनी नाम की लता।

शिवमात्र—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बडी संख्या का नाम।

शिवमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] कल्याण मार्ग। मोक्ष। मुक्ति [को०]।

शिवमौलिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा का एक नाम। उ०—वह विष्णुपदी शिवमौलिसुता वह भीष्मप्रसू और जह्नुसुता।—ग्राम्या, पृ० ४२।

शिवरस—संज्ञा पुं० [सं०] उबले हुए चावल का पानी जो तीन दिन का हो [को०]

शिवराई(प)—संज्ञा पुं० [सं० शिव + हिं० राई] महादेव। शिव। उ०—राजयोग कीना शिवराई। गौरा सग अनग न जाई। सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० १०३।

शिवराजी—संज्ञा पुं० [हिं० शिव + राज] एक प्रकार का बहुत बड़ा कबूतर।

शिवरात्र—संज्ञा स्त्री० [सं० शिव + रात्रि] दे० 'शिवरात्रि'।

शिवरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन बदी चतुर्दशी। शिवचतुर्दशी।

विशेष—इस दिन लोग शिव जी का पूजन करते और उनके उद्देश्य से व्रत रखते हैं।

शिवरानी(प)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिव + हिं० रानी] शिव जी की पत्नी, पार्वती। उ०—शिवरानी यो रति समुझाई। तब तनु धरि शवर घर आई।—लल्लू (शब्द०)।

शिवलिंग—संज्ञा पुं० [सं० शिवलिङ्ग] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।

शिवलिंगी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० लिङ्गिनी] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता जो चौमासे मे जगलो और झाडियो मे बहुत अधिकता से मिलती है। पचगुरिया। विजगुरिया।

विशेष—इसकी डडियाँ बहुत पतली और पत्ते करेले के पत्तो के समान ३ से ५ इंच के घेरे मे गोलाकार, गहरे, कटे किनारे-वाले और ५ ७ भागो मे विभक्त रहते हैं। पत्रदड की जड़ मे ५-६ फूलो के छोटे छोटे गुच्छे लगते हैं। ये फूल पीले होते हैं। इसका व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है। वैद्यक के अनुसार यह चरपरी, गरम, दुर्गंधयुक्त, पौष्टिक, शोधक, गर्भ-धारण करनेवाली और कुष्ट आदि का नाश करनेवाली होती है। इसके फलने पर इसका सर्वांग ओषधि के निमित्त सग्रह किया जाता है।

पर्या०—लिंगिनी। ईश्वरलिंगी। चित्रफला। बहुपत्रा। शिव वल्लिका।

शिवलिंगी²—वि० [सं०] शैव। शिवलिंग की पूजार्चा करनेवाला।

शिवलोक—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी का लोक, कैलास। उ०—सोने मदिर सँवराई और चदन सब लीप। दिया जो मन शिवलोक महँ उपना सिंहलद्वीप।—जायसी (शब्द०)।

शिववल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] आम्र वृक्ष [को०]।

शिववल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २ सेवती। शतपत्री। ३ श्वेत गुलाब (को०)।

शिववल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिवलिंगी'।

शिववल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिवलिंगी'।

शिववाहन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का वाहन, बैल। नदी।

शिववीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है।

शिववृषभ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी की सवारी का बैल। उ०—विराजैगो जो तू श्रमहरन ताकी शिखर पै। दिपैगो ज्यो गोरे शिववृषभ खोदी कलित है।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

शिवशंकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवशङ्करा] देवी की एक मूर्ति का नाम।

शिवशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वक वृक्ष। अगस्त वृक्ष। २. चद्रमा (को०)। ३. धतूरा। ४. शिव का मस्तक। ५ सफेद मदार।

शिवशैल—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास पर्वत।

शिवसंप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं० शिव + सम्प्रदाय] दे० 'शैव'। उ०—केवल दो सप्रदाय इस ससार मे हैं। एक विष्णुसप्रदाय तथा दूसरा शिवसप्रदाय।—कबीर म०, पृ० ५९।

शिवसायुज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ शैवों के अनुसार वह मोक्ष जिसमे मनुष्य शिव मे लीन हो जाता है। २. मृत्यु। मौत।

शिवसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवसुन्दरी] दुर्गा।

शिवाक—संज्ञा पुं० [सं० शिवाङ्क] अगस्त का वृक्ष। वकवृक्ष।

शिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ पार्वती। गिरिजा। उ०—जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शभु रहत दिन साधा। सो रस दिए सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा।—सूर (शब्द०)। ३ मुक्ति। मोक्ष। ४ शृगाली। सियारिन। उ०—शिवा यज्ञशाला मे बोली। ढहे भवन धरणी जब डोली।—सबल (शब्द०)। ५. हड। हर्रे। हरीतकी। ६ सोआ नामक साग। ७ शमी। सफेद कीकर। ८ आँवला। ९. हलदी। १० दूब। ११. गोरोचन। १२. श्यामा नाम की लता। १३ एक बुद्धशक्ति का नाम। १४ घी। यव। १५. अनतमूल। १६. सौभाग्यवती स्त्री। भाग्यशालिनी स्त्री (को०)। १६. पीत वर्ण का एक भेद। एक प्रकार का पीला रग (को०)।

शिवाकु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शिवाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] रुद्राक्ष।

शिवाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बल्ली दूब।

शिवाघृत—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तैयार किया हुआ घृत।

विशेष—इसको प्रस्तुत करने के लिये गीदड का मास, बकरी का दूध, मुलेठी, मजीठ, कुडा, लाल चंदन, पदम काठ, हर्रे, बहेडा, आँवला, विडग, देवदार, दतीमूल, श्यामा लता, काकोली, हलदी, दारु हलदी, अनतमूल, इलायची, आदि पदार्थों को घी मे डालकर घृतपाक विधि से पकाते हैं। यह घृत पागलपन के लिये बहुत उपकारी माना जाता है। इसके अतरिक्त वात, अपस्मार, मेह आदि मे भी इसका व्यवहार होता है।

शिवाची—संज्ञा स्त्री० [सं०] वशपत्री।

शिवाजी—संज्ञा पुं० [हिं०] महाराष्ट्र राज्य के सस्थापक तथा भारत को विदेशी दासता से मुक्त करने के लिये आजीवन मुगल साम्राज्य से लडनेवाले एक महान् योद्धा। 'छत्रपति' इनकी उपाधि थी। इनके पिता का नाम शाहजी भोसला और माता का नाम जीजा बाई था। इनका जन्म सन् १६२७ मे और मृत्यु सन् १६८० ई० मे हुई थी।

शिवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वशपत्री नामक तृण। २ सफेद पुनर्नवा। ३. लालपुनर्नवा। गदहपूरना। ४ हिंगुपत्री। ५. कठूमर।

शिवात्मक—संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।

शिवादेशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शुभ समाचार लाए। २. भविष्यवक्ता (को०)।

शिवाधूत—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतद्रु'।

शिवानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. जयती वृक्ष।

शिवापर—वि० [सं०] निर्दय। निष्ठुर (को०)।

शिवापीड़—संज्ञा पुं० [सं० शिवापीड] अगस्त या वक नामक वृक्ष।

शिवाप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिवा के पति, शिव। २ बकरा जिसके बलिदान से दुर्गा का प्रसन्न होना माना जाता है।

शिवाफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

शिवाबलि—संज्ञा पुं० [सं०] तात्रिकों के अनुसार वह नैवेद्य जो रात के समय देवी के सामने रखा जाता है और जिसमे मास की प्रधानता होती है।

शिवायतन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिवालय'।

शिवाराति—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ता जो गीदड (शिवा) का शत्रु होता है। २ शिव का विरोधी या शत्रु, कामदेव (को०)। ३. शिवद्रोही।

शिवारुत—संज्ञा पुं० [सं०] गीदड के बोलने का शब्द, जिसे यात्रा आदि के समय शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है।

शिवालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मदिर जिसमे शिव जी की मूर्ति या लिंग स्थापित हो। शिव जी का मदिर। २ कोई देवमदिर। (क्व०)। ३. लाल तुलसी। ४. श्मशान। मसान। मरघट।

शिवाला—संज्ञा पुं० [सं० शिवालय] १. शिव जी का मदिर। शिवालय। २. देवमदिर (क्व०)। ३. कोयला जलाने की भट्ठी। (बाजारू)।

शिवालु—संज्ञा पुं० [सं०] शृगाल। सियार। गीदड।

शिवा विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शृगाल की बोली से शकुन विचारने की विद्या (को०)।

शिवास्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] जयती वृक्ष।

शिवाह्लाद—पुं० [सं०] अगस्त या वक नामक वृक्ष।

शिवाह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ पारद। पारा। २. बरगद। वट वृक्ष। ३ मदार। आक।

शिवाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रुद्रजटा। शकरजटा।

शिवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंसक पशु। शिकारी जानवर। २ भोजपत्र। ३. राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा का नाम जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं। उ०—अब बरनौं शिवि भूप की कथा परम रमणीय। शरणागत पालन कियो दै निज तनु कमनीय।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, एक बार देवताओं ने इनकी परीक्षा लेने का विचार किया। अग्नि ने कबूतर का रूप धारण किया और इंद्र ने बाज पक्षी का। कबूतर उडता उड़ता राजा शिवि की गोद मे जा छिपा और कहने लगा कि यह बाज मेरे प्राण लेना चाहता है। आप इससे मेरी रक्षा करें। इतने मे बाज भी वहाँ आ पहुँचा और कहने लगा कि यह कबूतर मेरा भक्ष्य है। आप यह मुझे दे दीजिए। शिवि ने और कुछ भोजन देकर

बाज को सतुष्ट करना चाहा, पर बाज किसी प्रकार नही मानता था। अत मे राजा ने अपनी जाघ से मास काटकर और कबूतर के बराबर तौलकर बाज को देना चाहा। पर ज्यो ज्यो राजा अपने शरीर से माँस काटकर तराजू पर रखते जाते थे, त्यो त्यो, कबूतर भारी होता जाता था। अत मे राजा विवश होकर स्वय तराजू के पलडे पर बैठ गए। इसपर बाज ने सतुष्ट होकर कबूतर को भी छोड दिया और राजा का मास भी नहीं लिया। तब से ये बहुत दानी और धर्मात्मा प्रसिद्ध हैं।

४ पुराकाल मे आर्यो का एक प्रधान वर्ग या समूह। उ०—प्रधान आर्य समूहो मे थे—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य और विदर्भ आदि।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७।

शिविका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पालकी या डोली नाम की सवारी। उ०—देखि पुष्ट पकरयो तिनकाही। ल्याय लगायो शिविका माही।—रघुराज (शब्द०)। २. शव को श्मसान ले जाने की अरथी (को०)। ३ कुबेर का अस्त्र (को०)। ४. चबूतरा (को०)।

शिविकागर्भ—सज्ञा पु० [स०] गृह का वह भाग जहा पालकियाँ आदि वाहन ठहरें। ड्योढी का छायादार बरामदा।—हिंदु०, सभ्यता, पृ० २८८।

शिविपिष्ट—सज्ञा पु० [स०] महादेव।

शिविर—सज्ञा पु० [स०], १. डेरा। खेमा। निवेश। २ फौज के ठहरने की जगह। पडाव। छावनी। ३ किला। कोट। उ०—राम शिविर अँगरेज नृप तहँ आए जिहि वार। तब हौंहू हाजिर रह्यो आदर सहित उदार।—मतिराम (शब्द०)। ४ चरक के अनुसार एक प्रकार का तृण धान्य।

शिविरगिरि—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

शिवीरथ—सज्ञा पु० [स०] पालकी। शिविका।

शिवेतर—वि० [स०] अमगल। अशुभ। दुर्भाग्य (को०)।

शिवेश—सज्ञा पु० [स०] शृगाल। गीदड़। सियार।

शिवेष्ट—सज्ञा पु० [स०] १. अगस्त का वृक्ष। वक वृक्ष। २. बेल। श्रीफल।

शिवेष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] दूब। दूर्वा।

शिवोद्भव—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शिवोपनिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

शिशन[१]—सज्ञा पु० [अं० सेशन] दे० 'सेशन'।

शिशन[२]—सज्ञा पुं० [स० शिश्न] दे० 'शिश्न'।

शिशिर[१]—सज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास मे होती है। उ०—गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वै मलिन वदन कृस गात। परम दीन जनु शिशिर हिमी हत अबुज गत बिन पात।—सूर (शब्द०)। २. जाड़ा। शीतकाल। ३. हिम। ४ विष्णु। ५ एक प्रकार का अस्त्र। ६. सूर्य का एक नाम। ७ लाल चदन। ८. प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष (को०)।

शिशिर[२]—वि० शीतल। ठडा।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दो के बनाने मे उनके आरभ मे होता है। जैसे—शिशिरकर।

२ शिशिर सबधी। शिशिर का (को०)। ३ जो ठंढक पहुँचावे। गर्मी हटाने या दूर करनेवाला (को०)।

शिशिरकर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा, जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शिशिरकिरण—सज्ञा पु० [स०] चंद्रमा (को०)।

शिशिरकाल—सज्ञा पु० [स०] जाडा या शिशिर ऋतु (को०)।

शिशिरगु—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

शिशिरघ्न—सज्ञा पु० [स०] अग्नि। आग (को०)।

शिशिरता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिशिर का भाव या धर्म।

शिशिरदीधिति—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा (को०)।

शिशिरधौत—वि० [स० शिशिर+धौत] शिशिर से धुला हुआ। ओस से आर्द्र। उ०—सजल शिशिरधौत पुष्प ज्यो प्रात मे देखता है एकटक किरण कुमारी को।—अपरा०, पृ० १४४।

शिशिरपीड़ित—वि० [स० शिशिर+पीडित] ठढ मे त्रस्त। जाड़े स आक्रात। उ०—चिर शून्य शिशिर पीडित जग मे निज अमर स्वरो से भरो प्राण।—युगात, पृ० १०।

शिशिरमथित—वि० [स०] दे० 'शिशिरपीडित'।

शिशिरमयूख—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शिशिरयामिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शिशिर+यामिनी] जाडे की रात। उ०—विरह परी सी खडी कामिनी, व्यर्थ वह गई शिशिरयामिनी।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरर्तु, शिशिरसमय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिशिरकाल'।

शिशिरसमीर—सज्ञा पु० [स० शशिर+समीर] शिशिर या जाडे की हवा। उ०—वह चली अब अलि शिशिरसमीर।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरात—सज्ञा पु० [स० शिशिरान्त] शिशिर ऋतु के अंत मे होनेवाली ऋतु, वसत। उ०—शिशिरात की लक्ष्मी का दिया हुआ कलियो का गुच्छा पलास मे शोभायमान हुआ।—लक्ष्मण सिह (शब्द०)।

शिशिराशु—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शिशिराक्ष—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो सुमेरु के पश्चिम ओर बतलाया गया है।

शिशिरात्यय—सज्ञा पुं० [स०] शिशिरात। वसंत (को०)।

शिशिरित—वि० [स०] शीतल किया हुआ।

शिशु—सज्ञा पु० [स०] १ छोटा बच्चा, विशेषत: आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा। छोटा लड़का। उ०—माथे मुकुट सुभग पीतावर उर साभित भृगु रेखा हो। शख चक्र भुज चारि विराजत अति प्रताप शिशु भेषा हो।—सूर (शब्द०)। २. पशुओ

आदि का बच्चा । जैसे, हरिणशिशु । ३ कार्तिकेय का एक नाम । ४. बालक जो ८ से १६ वर्ष तक का हो (को०) । ५. शिष्य । छात्र (को०) । ६. करभ जो ६ साल का हो (को०) ।

शिशुक—सज्ञा पु० [स०] १ शिशुमार या सूँस नामक जलजतु । २ शिशु । बच्चा । बालक । ३ एक प्रकार का वृक्ष । ४ सूँस के आकार का एक मत्स्य (को०) । ५. पशुशावक (को०) । ६ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप ।

शिशुकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे 'शिशु चाद्रायण' या 'स्वल्प चाद्रायण' भी कहते है ।

शिशुक्रंद, शिशुक्रंदन—सज्ञा पुं० [स० शिशुक्रन्द, शिशुक्रन्दन] बच्चे का रोना । शिशु का रुदन ।

शिशुक्रदीय—सज्ञा पुं० [स०] बालकों के रोग और उनकी चिकित्सा सबंधी एक प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रथ ।

शिशुगधा—सज्ञा स्त्री० [स० शिशुगन्धा] मल्लिका । मोतिया ।

शिशुचाद्रायण—सज्ञा पु० [स० शिशुचान्द्रायण] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे स्वल्प चाद्रायण या कृच्छ्र चाद्रायण भी कहते हैं । इस व्रत मे प्रात काल चार ग्रास और सायकाल चार ग्रास भोजन करके निर्वाह किया जाता है ।

शिशुता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिशु का भाव या धर्म । बचपन । शिशुत्व ।

शिशुताई(पु)—सज्ञा पुं० [स० शिशुता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'शिशुता' । उ०—यशुपति भाग सुहागिनी हरि को सुत जानै । मुख मुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै ।—सूर (शब्द०) ।

शिशुत्व—सज्ञा पु० [स०] शिशु का भाव या धर्म । शिशुता । शैशव ।

शिशुनाग—सज्ञा पुं० [स०] १. एक राक्षस का नाम । २ भागवत के अनुसार एक राजा का नाम । ३. दे० 'शैशुनाग' । ४ करभ । हाथी का बच्चा (को०) । ५ सँपोला । साँप का बच्चा (को०) ।

शिशुनामा—सज्ञा पु० [स० शिशुनामन्] ऊँट ।

शिशुपन—सज्ञा पुं० [स० शिशु+हिं० पन] दे० 'शिशुता' ।

शिशुपाल—सज्ञा पु० [स०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था । उ०—देश देश के नृपति जुरे सब भीष्म नृपति के धाम । रुक्म कह्यो शिशुपालहिं देहौं नहीं कृष्ण सो काम ।—सूर (शब्द०)

विशेष—महाभारत मे लिखा है कि दमघोष के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके तीन आँखें और चार हाथ थे और जो जनमते ही गधे की तरह रेंकने लगा था । इससे डरकर माता-पिता ने इसका त्याग करना चाहा था, पर इतने मे आकाशवाणी हुई कि यह शिशु बहुत ही बलवान् और वीर होगा, तुम लोग इस शिशु का पालन करो । (इसीलिये इसका नाम शिशुपाल रखा गया था) । इसका नाश करनेवाला भी पृथ्वी पर उत्पन्न हो चुका है । आकाशवाणी सुनकर शिशुपाल की माता ने आकाश की ओर देखकर पूछा कि इसका नाश कौन करेगा ? फिर आकाशवाणी हुई कि जिस आदमी की गोद मे जाते ही इसकी तीसरी आँख और अतिरिक्त दोनो बाँहें जाती रहेंगी, वही इसका प्राण लेगा । दमघोष ने बहुत से राजाओं आदि को बुलाकर उनकी गोद मे अपना पुत्र दिया, पर उसकी तीसरी आँख और दोनो अतिरिक्त भुजाएँ ज्यो की त्यों बनी रही । अत मे जब श्रीकृष्ण ने उसे गोद मे लिया, तब उसके दो हाथ भी गिर गए और तीसरा नेत्र भी अदृश्य हो गया । इसपर शिशुपाल की माता ने श्रीकृष्ण से कहा कि तुम इसके सब अपराध क्षमा करना । श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसके सौ अपराध तक क्षमा करूँगा ।

बडा होने पर शिशुपाल बहुत पराक्रमी हुआ और अकारण ही श्रीकृष्ण से बहुत अधिक द्वेष रखने लगा । जब युधिष्ठिर ने अपने राजसूय यज्ञ के समय लोगो से पूछा कि यज्ञ का अर्घ्य किसे दिया जाय, और भीष्म ने उत्तर दिया—'श्रीकृष्ण को', तब शिशुपाल बहुत बिगडा और सब राजाओं को सबोधन करके श्रीकृष्ण की निंदा करने और उन्हें कुवाच्य कहने लगा । श्रीकृष्ण उसके कुवाच्य गिनते जाते थे । जबतक उसने सौ गालियाँ दी, तबतक तो श्रीकृष्ण बिलकुल चुप थे, क्योंकि वे उसकी माता के सामने उसके सौ अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा कर चुके थे । पर जब वह इतने पर भी शात न हुआ और उसने एक और कुवाच्य कहा, तब श्रीकृष्ण ने तुरत उसका सिर काट डाला । विष्णुपुराण के अनुसार यह पूर्व जन्म मे हिरण्यकशिपु था, दूसरे जन्म मे यह रावण हुआ और तीसरे जन्म मे यह शिशुपाल था । सस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्य माघ कवि कृत शिशुपालवध मे भी उसके तीन जन्म की घटना सक्षेप मे उल्लिखित है ।

शिशुपालक—सज्ञा पु० [स०] १. दमघोष का पुत्र शिशुपाल । २. केलि कदब । नीम ।

शिशुपालनिषूदन—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

शिशुपालवध—सज्ञा पु० [स०] महाकवि माघ कृत एक प्राचीन सस्कृत महाकाव्य जिसमे श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के मारे जाने की कथा वर्णित है । उ०—आनद की साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलनेवाले काव्यों के उदाहरण हैं—रामायण, महाभारत, रघुवश और शिशुपालवध (महाकाव्य) ।—रस०, पृ० ५८ ।

शिशुपालहा—सज्ञा पु० [स० शिशुपालहन्] शिशुपाल को मारनेवाले, श्रीकृष्ण ।

शिशुप्रिय—सज्ञा पु० [स०] १. राब । शीरा । २ कुमुदिनी । कोईं [को०] ।

शिशुमार—सज्ञा पु० [स०] १. सूँस नामक जलजतु । २. मगर की आकृतिवाला, नक्षत्रमडल । ३. दे० 'शिशुमार चक्र' । उ०—(क) मेरो रूप चक्र शिशुमारा । जामे सकल बँध्यो ससारा ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) बहुत काल मे सुरति करि, जब डोल्यो शिशुमार । तब सध्या भै भानु किय, अस्ताचल सचार । रघुराज (शब्द०) । ४. कृष्ण । ५. विष्णु ।

शिशुमार चक्र—सज्ञा पु० [स०] सब ग्रहो सहित सूर्य । सौर जगत् । उ०—अवध अनद निहारि मगन ह्वै भानु गति भूलो । रुक्यो

चक्र शिशुमार वार तेहि राम जन्म सुख फूली'—रघुराज (शब्द०)।

शिशुमारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिशुमारशिर—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमारशिरस्] ईशान कोण। पूर्वोत्तर दिक् [को०]।

शिशुल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिशूल' [को०]।

शिशुवाहक—संज्ञा पुं० [सं०] जगली बकरा।

शिशुवाह्यक—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुवाहक। जगली बकरा।

शिशुशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गृह जहाँ धाई बच्चे की देखरेख करती हो।

शिशुहत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिशु की हत्या या वध।

शिशूल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिशु'।

शिश्नभर—वि० [सं० शिश्नम्भर] कामी। लपट। छिनरा [को०]।

शिश्न—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष की उपस्थेंद्रिय। लिंग।

शिश्नदेव—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिश्न को ही देवता माने। लंपट या कामी व्यक्ति [को०]।

शिश्नोदरपरायण—वि० [सं०] जो पेट और शिश्न की बुभुक्षा-शाति का ही सब कुछ मानता हो। कामी और पेटू [को०]।

शिश्नोदरवाद—संज्ञा पुं० [सं० शिश्नोदर + वाद] पेट की भूख और कामोत्तेजनापरक विचारधारा। फ्रायड और मार्क्स की विचारधारा।

शिष(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—(क) रामानुज के शिप हरि भयऊ। यह यश त्रिभुवन महँ भरि गयऊ। —रघुराज (शब्द०)। (ख) तुम गुरु सतगुरु ब्रह्म समाना। मैं शिप आँहु महा अज्ञाना।—कबीर मा०, पृ० १०१४।

शिष(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा। सिखावन। उ०—कहेउ सुभग शिप धर्म कुमारा। कीन्ह सवन मिलि अगीकारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

शिष[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखण्ड या शिखा] बाल जो मुडन के समय सिर पर छोड़े जाते है। उ०—कटि पट पीत पिछौरी बाँधे कागपच्छ शिष शीश। शर क्रीडा दिन देखत आवत नारद सुर तैंतीस।—सूर (शब्द०)।

शिषर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिखर] दे० 'शिखर'। उ०—काल गिरिक शिपर अश्मन, द्रोणपर्व्व उक्त घटोत्कच अट्टहसन।—वर्ण०, पृ० १८।

शिपरी(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं०] ओगा। अपामार्ग। चिचडा।

शिपरी(पु)[2]—वि० [सं० शिखर + ई (प्रत्य०)] शिखर से युक्त। शिखर-वाला। उ०—कोपि शिपरी गदा तब लव हन्यो ताके गात मैं। मोहि कपिपति गिरयो श्रीहत यथा कुमुदिन प्रात मैं।—श्याम-बिहारी (शब्द०)।

शिपा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] दे० 'शिखा'। उ०—स्तुति वेद शिपा प्रभु केरी। एकादश मन लेहु निबेरी।—रघुराज (शब्द०)।

शिषि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—(क) जहँ शिपि तहँ ते गुरु पर्यंता। प्रगटे पच्छिनि पत्र अनता।—रघुराज (शब्द०)। (ख) अरु विचारि शिपि करौ न तोही। बाट न रोकु जान दे मोही।—विश्राम (शब्द०)।

शिषी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिखिन्] दे० 'शिखी'। उ०—यह कौन आवत है सखी मलयक अकित अग। शिर केश लुंचित नग्न हाथ शिपी शिखड सुरंग'—केशव (शब्द०)।

शिष्ट[1]—वि० पुं० [सं०] १ जो अच्छी तरह धर्म का आचरण करता हो। धर्मशील। २ शात। धीर। ३ अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सुशील। ४ बुद्धिमान्। शिक्षित। ५ सभ्य। सज्जन। भला आदमी। ६ भला। उत्तम। श्रेष्ठ। ७ आचार व्यवहार मे निपुण। शालीन। ८ आज्ञाकारी। विनीत। विनम्र। ९ प्रसिद्ध। मशहूर। १०. छोड़ा हुआ। बचा हुआ। बाकी (को०)। ११ आदिष्ट। आज्ञप्त। समादिष्ट (को०)। १२ सधाया हुआ। पालतू। वश्य (को०)।

शिष्ट[2]—संज्ञा पुं० १. मन्त्री। वजीर। २ सभ्य। सभासद। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति। चतुर मनुष्य (को०)।

शिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिष्ट होने का भाव या धर्म। २ सभ्यता। सज्जनता। भद्रता। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता। ४ अधीनता।

शिष्टत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिष्टता'।

शिष्टप्रयुक्त—वि० [सं०] सभ्य एव शिष्ट जनो द्वारा व्यवहृत।

शिष्टयोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिष्टजनो द्वारा व्यवहार मे लाया गया हो [को०]।

शिष्टमंडल—संज्ञा पुं० [सं० शिष्ट + मण्डल] राज्य या किसी सघटन द्वारा चुना हुआ अधिकारयुक्त प्रतिनिधिवर्ग जो किसी कार्य से कही भेजा जाय।

शिष्टविगर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिष्ट जनो द्वारा निंदित हो [को०]।

शिष्टविगर्हणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शिष्टविगर्हण [को०]।

शिष्टसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजसभा। राज्यपरिषद्। २ शिष्ट एव सभ्य जनो की गोष्ठी।

शिष्टसमत—वि० [सं० शिष्टसम्मत] शिष्ट जनो द्वारा अनुमोदित या स्वीकृत [को०]।

शिष्टसमाज—संज्ञा पुं० [सं०] वह समाज जिसमे पढे लिखे तथा सदाचारी व्यक्ति हो। भले आदमियो का समाज। सभ्य समाज।

शिष्टाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सभ्य पुरुषो के योग्य आचरण। भले आदमियो का सा बरताव। साधु व्यवहार। २. आदर। संमान। खातिरदारी। ३ विनय। नम्रता। ४ वह अच्छा बरताव जो केवल दिखलाने के लिये किया जाय। दिखावटी सभ्य व्यवहार। जैसे—शिष्टाचार की बात छोड़कर अपने मन का अभिप्राय कहो। ५ आवभगत। जैसे—शिष्टाचार के अनतर उन्होने वार्तालाप प्रारंभ किया।

शिष्टाचारी—वि० [सं० शिष्टाचारिन्] शिष्टाचारयुक्त। सदाचारयुक्त। विनम्र। शालीन।

शिष्टादिष्ट—वि० [सं०] शिष्ट जनो द्वारा कथित, समर्थित या मान्य।

शिष्टानुमोदित- वि० [सं०] सभ्य एव शिष्ट जनो द्वारा समर्थित। शिष्टसमत।

शिष्टि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ आज्ञा। अनुशासन। हुकूमत। ३. दड। सजा। ४. सुधार। ५. सहायता। मदद।

शिष्ट्यर्थ—क्रि० वि० [सं०] अनुशासन या सुधार के लिये [को०]।

शिष्ण—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिश्न'।

शिष्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ समय। काल। २. दे० 'शिल्प' [को०]।

शिष्य¹—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिष्या] १. वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २. वह जो विद्या पढने के उद्देश्य से किसी गुरु या आचार्य आदि के पास रहता हो। विद्यार्थी। अतेवासी। चेला। उ०—तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। कवहुंक सवे अश्व चढि आपुन नाना भांति नचावत।—सूर (शब्द०)। ३. (शिक्षक या गुरु के सबध से) वह जिसने किसी से शिक्षा प्राप्त की हो। शागिर्द। ४ (गुरु के सबध से) वह जिसने किसी धार्मिक आचार्य से दीक्षा या मत्र आदि ग्रहण किया हो। मुरीद। चेला। ५ वह जो हाल मे श्रावक बना हो (जैन)। ६ क्रोध। दोप। आवेश (को०)। ७ हिंसा। बलात्कार (को०)।

शिष्य²—वि० शासनीय। शिक्षणीय।

शिष्यक—सज्ञा पुं० [सं०] छात्र। विद्यार्थी [को०]।

शिष्यता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शिष्य होने का भाव या धर्म। शिष्यत्व।

शिष्यत्व—सज्ञा पुं० [सं०] शिष्य होने का भाव या धर्म। शिष्यता।

शिष्यपरपरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शिष्यो की क्रमागत परंपरा या सरणि।

शिष्यशिष्टि—सज्ञा स्त्री० [सं०] शिष्य का शासन करना। शिष्य या छात्र का सुधार [को०]।

शिष्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे सात गुरु अक्षर होते हैं। इसका दूसरा नाम 'शीर्परूपक' भी है। २. छात्रा। विद्यार्थिनी।

शिस्त—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. मछली पकडने का कांटा। २ निशाना। लक्ष्य।

मुहा०—शिस्त बाँधना = ताक लगाना। निशाना बाँधना।

३. दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४ अँगूठा। ५. दे० 'अगुलित्राण' (को०)। दे० 'अगुश्ताना' (को०)।

शिस्तबाज—सज्ञा पुं० [फा० शिस्तबाज] १ निशाना लगानेवाला। निशानेबाज। २. शिस्त लगाकर मछली पकडनेवाला।

शिह्न, शिह्लक—सज्ञा पुं० [सं०] शिलारस नाम का गधद्रव्य।

शी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. शाति। २ शयन। सोना। नीद। ३ भक्ति।

शीआ—सज्ञा पुं० [अ० शीअह्] दे० 'शिया' [को०]।

शीकर—सज्ञा पुं० [सं०] १ गधा बिरोजा। २ तुषार। ओस। शबनम। ३. हवा। वायु। ४ जलकण। पानी की बूँद। ५ शीत। जाडा। ६ वर्षा की छोटी छोटी बूँदें। फुहार। ७ सरल नाम का वृक्ष (को०)। ८ धूप। (जलाने का)।

यौ०—शीकरकण = वर्षा या जल की फुहार। शीकरवर्षो = फुहारें बरसानेवाला।

शीकरी—वि० [सं० शीकरिन्] बूँदें या फुहार बरसानेवाला [को०]।

शीघ्र¹—क्रि० वि० [सं०] बिना बिलब। बिना देर के। चटपट। तुरंत। जल्द।

शीघ्र²—सज्ञा पुं० १. लामज्जक या लामज नामक तृण। २ भागवत के अनुसार कुरुवशीय अग्निवर्ण के पुत्र का नाम। ३. वायु। हवा। ४ वह अतर जो पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानो से ग्रहो के देखने मे होता है। ५ चक्राग।

शीघ्र कर्म—सज्ञा पुं० [सं०] ग्रह सयोग की गणना [को०]।

शीघ्रकारी¹—वि० [सं० शीघ्रकारिन्] १ जल्दी से काम करनेवाला। शीघ्र कार्य करनेवाला। ३. तीव्र। कडा। (पीडा आदि के लिये)।

शीघ्रकारी²—सज्ञा पुं० एक प्रकार का सनिपात ज्वर जिसमे मूर्छा, तंद्रा, प्यास, श्वास और पार्श्व मे पीडा होती है। यह असाध्य और मृत्यु का पूर्वरूप माना जाता है।

शीघ्रकृत्—वि० [सं०] शीघ्र काम करनेवाला [को०]।

शीघ्रकेंद्र—सज्ञा पुं० [सं० शीघ्रकेन्द्र] ग्रहसंयोग से दूरी [को०]।

शीघ्रकोपी—वि० [सं० शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी गुस्सा होनेवाला व्यक्ति। २ चिडचिडा।

शीघ्रग¹—वि० [सं०] शीघ्र चलनेवाला। द्रुतगामी।

शीघ्रग²—सज्ञा पुं० १ सूर्य। २. वायु। ३ खरगोश। ४ अग्निवर्ण के पुत्र का नाम।

शीघ्रगामी—वि० [सं० शीघ्रगामिन्] शीघ्र चलनेवाला। जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रचेतन—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी बात को बहुत शीघ्र समझे। जल्दी बात समझनेवाला। चतुर। २ कुत्ता। कुक्कुर।

शीघ्रचेतना—सज्ञा स्त्री० [सं०] अतिबला नाम की ओषधि [को०]।

शीघ्रजन्मा—सज्ञा पुं० [सं० शीघ्रजन्मन्] कट करज।

शीघ्रजीर्ण—सज्ञा पुं० [सं०] चौलाई का साग।

शीघ्रता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शीघ्र का भाव या धर्म। जल्दी। तेजी फुरती।

शीघ्रत्व—सज्ञा पुं० [सं०] शीघ्र का भाव या धर्म। जल्दी। तेजी। फुरती।

शीघ्रपतन—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीसहवास के समय वीर्य का शीघ्र स्खलित हो जाना। स्तंभनशक्ति का अभाव।

विशेष—वैद्यक में इसकी गणना एक प्रकार के नपुंसकत्व में की जाती है।

शीघ्रपरिधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रह संयोग का अधिचक्र (को०)।

शीघ्रपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] वायु।

शीघ्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य वृक्ष।

शीघ्रफल—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहसंयोग का समीकरण (को०)।

शीघ्रबुद्धि—वि० [सं०] कुशाग्रबुद्धि। तीक्ष्ण बुद्धिवाला (को०)।

शीघ्रबोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जल्दी समझ में आ जाय। २ ज्योतिष विषयक संस्कृत का एक ग्रंथ।

शीघ्रवेधी—संज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता से बाण चलानेवाला। लघुहस्त।

शीघ्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ दंती वृक्ष। उदुंबरपर्णी।

शीघ्रिय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ बिल्लियों का लड़ना।

शीघ्रिय²—वि० शीघ्र। तेज। क्षिप्र (को०)।

शीघ्री—वि० [सं० शीघ्रिन्] १ गतिशील। शीघ्रगामी। २ कोई काम शीघ्र या तुरंत करनेवाला। ३ उच्चारण में जल्दी करनेवाला (को०)।

शीघ्रीय—वि० [सं०] जल्दी। तीव्र। तेज (को०)।

शीघ्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता (को०)।

शीत¹—वि० [सं०] १ ठंढा। सर्द। शीतल। २. शिथिल। सुस्त। निद्रालु। झपकी लेता हुआ। ३ क्वथित (को०)।

शीत²—संज्ञा पुं० १ जाड़ा। सर्दी। ठंढ। २ दालचीनी। ३ बेंत। ४ लिसोड़ा। ५ नीम। ६ कपूर। ७ एक प्रकार का चंदन। ८ ओस। तुषार। ९ पित्तपापड़ा। १० शीतकाल। जाड़े का मौसिम। अगहन, पूस और माघ के महीने। ११ जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय। १२ पटसन। अशनपर्णी (को०)। १३. जल। पानी।

शीतक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शीत काल। जाड़े का मौसिम। २ बिच्छू। ३ बनमनई। ४ वह जो हर काम में बहुत देर लगाता हो। दीर्घसूत्री। ५ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। ६ एक प्रकार का चंदन। ७ आलसी। सुस्त। काहिल। ८ कोई शीतल वस्तु। ठंढी चीज (को०)। ९. संतोषी पुरुष।

शीतक²—वि० ठंढा। शीतल। सर्द (को०)।

शीत कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं० शीतकटिबन्ध] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं। इन विभागों में जाड़ा बहुत अधिक पड़ता है। ये दोनों विभाग उष्ण कटिबंध के उत्तर और दक्षिण में कर्क और मकर रेखा के बाद पड़ते हैं।

शीतकण—संज्ञा पुं० [सं०] जीरा।

शीतकर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठंढी किरणोंवाला, चंद्रमा। २ कपूर।

शीतकर²—वि० शीतल करनेवाला। ठंढा करनेवाला।

शीतकषाय—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में किसी काष्ठौषध आदि का वह कषाय या रस जो उसे छहगुने ठंढे पानी में रात भर भिगो रखने से तैयार होता है।

शीतकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ हेमंत ऋतु। अगहन और पूस के महीने। २ जाड़े का मौसिम। हेमंत और शिशिर।

शीतकालीन वि० [सं०] शीत ऋतु में होनेवाला। शीतकाल का (को०)।

शीतकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] शीत किरणोंवाला, चंद्रमा।

शीतकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० शीतकुम्भ] कनेर। करवीर।

शीतकुंभिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतकुम्भिका] कुंभीरिका नाम की लता। जलकुंभी। कुंभी।

शीतकुंभी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतकुम्भी] जल में उत्पन्न होनेवाली एक प्रकार की लता जिसे शीतली जटा भी कहते हैं।

शीतकूर्चिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बरियारा। बला। खिरेंटी।

शीतकृच्छ्र संज्ञा पुं० [सं०] मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन दिन तक ठंढा जल, तीन दिन तक ठंढा दूध और तीन दिन तक ठंढा घी पीकर और तीन दिन तक बिना कुछ खाए पीए रहना पड़ता है।

शीतक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध सोहागा।

शीतगंध—संज्ञा पुं० [सं० शीतगन्ध] चंदन। संदल।

शीतगात्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का संनिपात ज्वर।

विशेष—इस ज्वर में रोगी का शरीर बहुत ठंढा रहता है, इसे श्वास, खाँसी, हिचकी, मोह, कंप, अंतर्दाह और कै होती है, उसके शरीर में बहुत पीड़ा रहती है, उसका स्वर बिलकुल बदल जाता है और वह बकता झकता है।

शीतगु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

शीतचंपक—संज्ञा पुं० [सं० शीतचम्पक] १. दर्पण। शीशा। आइना। २ प्रदीप। दीया।

शीतच्छाय, शीतच्छाया¹—संज्ञा पुं० [सं०] वट वृक्ष या बरगद, जिसकी छाया बहुत शीतल होती है।

शीतच्छाय, शीतच्छाया²—वि० शीतल छायावाला।

शीतज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी। जड़ैया।

शीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शीत का भाव या धर्म। शीतत्व। ठंडक।

शीतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शीत का भाव या धर्म। शीतता। ठंढापन।

शीतदंत—संज्ञा पुं० [सं० शीतदन्त] ठंढी वायु या ठंढ जल का दाँतों से लगना या एक प्रकार की वेदना उत्पन्न करना जो वैद्यक के अनुसार दाँतों का एक रोग माना गया है।

शीतदंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतदन्तिका] नागदंती। हाथीशुंडी।

शीतदीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शीतदोप्य—संज्ञा पु० [सं०] सफेद जीरा।

शीतदूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

शीतद्युति—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।

शीतद्रु—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'मोरट'।

शीतपक—संज्ञा पु० [सं० शीतपङ्क] आसव। मैरेय (को०)।

शीतपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद लजालू। सफेद लाजवती।

शीतपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्कपुष्पी। अधाहुली।

शीतपल्लवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जामुन। भूमि जबु।

शीतपाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. गुजा। चोटली। घुँघची। ३ ककही। अतिबला।

शीतपाकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकोली। २ गुजा। ३ वाट्यालक। अतिबला (को०)।

शीतपित्त—संज्ञा पु० [सं०] जुर्दपित्ती नामक रोग।

विशेष—इसमे वात की अधिकता से सारे शरीर की त्वचा मे चकत्ते पड जाते हैं और उनमे सूई चुभने की सी पीडा होती है। इसमे वमन, ज्वर और दाह भी होता है।

शीतपाणि—संज्ञा पु० [सं०] वह जिसके पाणि या कर शीतल हो।

शीतपुष्प—संज्ञा पु० [सं०] १. छरीला। शैलेय। २ केवटी मोथा। ३ सिरिस। शिरीष वृक्ष।

शीतपुष्पक—संज्ञा पु० [सं०] १ आक। अर्क। मदार। २ केवटी मोथा। ३. छरीला। शैलेय।

शीतपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिबला। ककही। महासमगा।

शीतपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिबला। ककही। कघी।

शीतपूतना—संज्ञा स्त्री० [सं०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

विशेष—इस रोग मे बालक कांपता और खाँसता है, उसकी आँखें दुखती हैं और शरीर दुबला पड जाता है, शरीर से दुर्गंध आती है और उसे वमन तथा अतिसार होता है।

शीतप्रधान—वि० [सं०] १. जहाँ शीत अधिक हो। जैसे,—शीतप्रधान क्षेत्र। २. जिसमे शीतत्व की प्रधानता हो। जैसे, शीतप्रधान वस्तु।

शीतप्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

शीतप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक।

शीतफल—संज्ञा पु० [सं०] १ गूलर। २. पीलू। ३. अखरोट। ४. आँवला। ५ लिसोड़ा।

शीतबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। महासमगा।

शीतभानु—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।

शीतभीरु—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। मोतिया। २. दे० 'निर्गुंडी'। ३. वह जो शीत से डरे।

शीतभीरुक—संज्ञा पु० [सं०] १. मल्लिका। २ एक प्रकार का शालिधान्य। ३. काली निर्गुंडी।

शीतमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतमञ्जरी] शेफालिका। निर्गुंडी।

शीतमयूख—संज्ञा पु० [सं०] १. चद्रमा। २. कपूर।

शीतमरीचि—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २. कपूर।

शीतमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

शीतमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शीतमेही—संज्ञा पुं० [सं० शीतमेहिन्] वह जिसे शीतप्रमेह रोग हो।

शीतयुद्ध—संज्ञा पु० [सं० शीत+युद्ध] संदेह और तनातनी की वह स्थिति जिसमे शस्त्रीकरण और अपने पोषक राष्ट्रों से परस्पर सहायता की सधियाँ हो। (अ० 'कोल्ड वार')।

शीतरम्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रदीप। दीपक।

शीतरश्मि—संज्ञा पु० [सं०] १. चद्रमा। २. कपूर।

शीतरस—संज्ञा पुं० [सं०] ईख के कच्चे रस की बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

शीतरुच्—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा।

शीतरुचि—संज्ञा पु० [सं०] चाँद। चद्रमा (को०)।

शीतरुह—संज्ञा पु० [सं०] सफेद कमल।

शीतल[1]—वि० [सं०] १ ठंढा। सर्द। गरम का उल्टा। २. क्षोभ या उद्वेगरहित। जिसमे आवेश का अभाव हो। शात। ३ प्रसन्न। सतुष्ट। तृप्त।

शीतल[2]—संज्ञा पु० १ कसीस। २ छरीला। शैलेय। पत्थरफूल। ३ चदन। ४ मोती। मुक्ता। ५ उशीर। खस। ६. बनसनई। ७. लिसोडा। ८ चंपा। ९ राल। १० पद्मकाठ। ११ पीतचदन। १२ भीमसेनी कपूर। १३. शाल वृक्ष। १४ बर्फ। हिम। १५. केराव। मटर। १६ चद्रमा। १७ जैनो का एक प्रकार का व्रत।

शीतलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मरुआ। मरुवक। २. कुमुद।

शीतलचीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल+चीन (देश)] कबाब चीनी।

शीतलच्छद—संज्ञा पु० [सं०] चपा। चपक।

शीतल जल—संज्ञा पु० [सं०] पद्म। कमल (को०)।

शीतलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ठढापन। सर्दी। २. अमृतवल्ली। ३. जडता।

शीतलताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता+हिं० ई] दे० 'शीतलता'।

शीतलत्व—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शीतलता'।

शीतलपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल+हिं० पाटी] दे० 'सीतलपाटी'।

शीतलप्रद—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलता प्रदान करनेवाला, चदन।

शीतलवात—संज्ञा पु० [सं०] ठढी हवा। शीतलता भरी वायु।

शीतलवातक—संज्ञा पु० [सं०] अपराजिता। कोयल लता। विष्णुक्राता।

शीतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विस्फोटक रोग। चेचक। २. एक देवी

जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। ३ आराम शीतला। ४ नीली दूब। ५ अर्कपुष्पी। ६ बालू। रेत (कौ०)। ७ कुटु बिनी वृक्ष (कौ०)। ८ दे० 'शीतली' (कौ०)।

शीतलापूजा—संज्ञा स्त्री० [स०] शीतला देवी की पूजा जो फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को होती है [कौ०]।

शीतलावाहन—संज्ञा पुं० [स०] गधा [कौ०]।

शीतलाषष्ठी—संज्ञा स्त्री० [स०] माघ शुक्ल पक्ष की छठी तिथि।

शीतलाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [स०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी। इसी दिन शीतला देवी की पूजा होती है।

शीतलासप्तमी—संज्ञा स्त्री० [स०] माघ शुक्ल सप्तमी को होनेवाला देवोत्सव [कौ०]।

शीतली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल मे होनेवाला एक पौधा। शीतली जटा। पातडी। २ श्रीवल्ली। ३ चेचक। विस्फोटक।

शीतवर—संज्ञा पुं० [स०] शिरियारी। गुठवा।

शीतवरा, शीतवला संज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। कघी नाम का पौधा।

शीतवल्क—संज्ञा पुं० [स०] गूलर। उदुबर।

शीतवल्लभ—संज्ञा पुं० [स०] पित्तपापडा। शाहतरा।

शीतवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली दूब।

शीतवासा—संज्ञा स्त्री० [स०] जूही। यूथिका।

शीतवीर्य[1]—संज्ञा पुं० [स०] १. पदुम काठ। २ पाषाणभेद। पखानभेद। ३ पित्तपापडा। ४. पाकड। पकडी। ५. नीली दूब। ६. वच। वचा।

शीतवीर्य[2]—वि० खाने में जिसका प्रभाव ठढा हो। जिसकी तासीर सर्द हो।

शीतवीर्यक—संज्ञा पुं० [स०] पाकर। प्लक्ष वृक्ष।

शीतवृक्षा—संज्ञा स्त्री० [स०] हुरहुर का पेड।

शीतवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का रत्न [कौ०]।

शीतशिव—संज्ञा पुं० [स०] १ सेंधा नमक। २ छरीला। पथरफूल। ३ सोआ। ४ शक्तुफला वृक्ष। सौंफ। मधुरिका (कौ०)। ५ शमी का पेड। सफेद कीकर। ६. कपूर।

शीतशिवा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सफेद कीकर। शमी। २ सौफ।

शीतशूक—संज्ञा पुं० [स०] जौ। यव।

शीतसवासा— संज्ञा स्त्री० [स०] जूही। शीतवासा।

शीत सन्निपात—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे शरीर सुन्न और ठढा हो जाता है। पक्षाघात। अर्द्धांग।

शीतसह—संज्ञा पुं० [स०] पीलू। झल्ल वृक्ष।

शीतसहा—संज्ञा स्त्री० [स०] १. निर्गुंडी। शेफालिका। २. नेवारी। वासती का पौधा। ३ मोतिया बेला। मल्लिका का एक भेद। ४. चमेली। ५. झल्ल वृक्ष। पीलू

शीतस्पर्श—वि० [स०] जो स्पर्श करने मे ठढा हो। शीतल [कौ०]।

शीताग—संज्ञा पुं० [स० शीताङ्ग] शीत सन्निपात।

शीतागी—संज्ञा स्त्री० [स० शीताङ्गी] हसपदी लता।

शीताबु—संज्ञा स्त्री० [स० शीताम्बु] दुद्धी नाम की घास।

शीताशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्पूर। कपूर। २ चद्रमा।
यौ०—शीताशु तैल = कर्पूर का तैल।

शीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरदी। ठढ। २ एक प्रकार की दूब। ३ शिल्पिका घास। ४ तसर की छाल। ५ अमलतास। ६ दे० 'सीता' (कौ०)।

शीताकुल—वि० [स०] शीत से व्याकुल। जाडे मे ठिठुरा हुआ।

शीतातपत्र—संज्ञा पुं० [स०] छाता। छत्र। छतरी।

शीताद—संज्ञा पुं० [सं०] दात के मसूढो का एक रोग जिसमे मसूडे जगह जगह पक जाते है और उनमे से दुर्गंध निकलने लगती है।

शीताद्रि—संज्ञा पुं० [स०] हिमालय पर्वत।

शीताद्य—संज्ञा पुं० [स०] शीतज्वर। जूडी।

शीतावला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। महासमगा।

शीतारु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर। २ चद्रमा।

शीतास—वि० [स०] जो जाडे के कारण ठिठुरा हुआ हो [कौ०]।

शीतार्त—वि० [सं०] शीत से पीडित। शीतालु।

शीताल—संज्ञा पुं० [सं०] हिताल वृक्ष।

शीतालु—वि० [स०] दे० 'शीतार्त' [कौ०]

शीताश्म—संज्ञा पुं० [सं० शीताश्मन्] चद्रकात मणि।

शीतिका, शीतिमा—संज्ञा स्त्री० [स० शीतिमन्] ठढक। शैत्य।

शीतीभाव—संज्ञा पुं० [स०] १. शीतलता। २ मनोविकारो के वेग का न रह जाना। शाति। शम। ३. मोक्ष। मुक्ति।

शीतेतर—वि० [स०] शीत से भिन्न। गरम। उष्ण [कौ०]

शीतोत्तम—संज्ञा पुं० [स०] जल। पानी [कौ०]।

शीतोदक—संज्ञा पुं० [स०] १ एक नरक का नाम। २ ठढा जल।

शीतोष्ण—वि० [स०] ठढा और गरम। मातदिल [कौ०]।

शीत्कार—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'सीत्कार'।

शीत्य—वि० [स०] १. शीतल करने योग्य। २. धान्य। ३. जोता हुआ या जोतने योग्य।

शीधु—संज्ञा पुं० [स०] १. पकी हुई ईख के रस से बनी हुई मदिरा। सीधु। २. मद्य। शराब (कौ०)।

शीधुगंध संज्ञा पुं० [सं०] १. मद्य गध। २. बकुल वृक्ष। मौलसिरी।

शीधुप—संज्ञा पुं० [स०] मद्यप। शराबी [कौ०]।

शीन[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ मूर्ख। २. हिम। बर्फ। ३ अजगर।

शीन[2]—वि० जमा हुआ।

शीन[3]—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी का १२वाँ, फारसी का १५वाँ, उर्दू का अठारहवाँ और देवनागरी का तीसवाँ वर्ण। तालव्य श।

मुहा०—शीन काफ दुरुस्त होना = (१) उच्चारण ठीक होना। (२) सजकर तैयार होना (व्यग्य)।

शीकर—वि० [सं०] आनंददायक । सुंदर । मनोहर (को०] ।

शीफालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्गुडी । शेफालिका ।

शीभर¹—संज्ञा पुं० [सं०] मेह की झडी ।

शीभर²—वि० आनंदप्रद । मनोहर (को०] ।

शीभव—संज्ञा पुं० [सं०] सीकर । फुहारा (को०] ।

शीभ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव । २ वृष । बैल ।

शीर¹—वि० [सं०] नुकीला । तेज ।

शीर²—संज्ञा पुं० १. अजगर । २. दे० 'सीर' ।

शीर³—संज्ञा पुं० [फा०; मि० सं० क्षीर] क्षीर । दूध ।

मुहा०—शीर शकर या शीरोशकर हो जाना = (१) घुलमिल जाना । (२) गाढ स्नेह या प्रेम होना ।

शीरखाना—संज्ञा पुं० [फा० शीरखानह्] १. दुग्धकेंद्र । दुग्धालय । २ मदिरालय (को०) ।

शीरखार—वि० [फा० शीरख्वार] शीरखोरा । दूध पीता (बच्चा) । उ०—उनो की अक्ल होर लायक के माफिक फरमाते हैं क्या वास्ते तिफ्ले शीरखार ''।—दक्खिनी०, पृ० ४२५ ।

शीरखिश्त—संज्ञा पुं० [फा० शीरखिश्त] हकीमी मे एक रेचक ओषधि ।

विशेष—कहते हैं, यह ओषधि खुरासान में पेडो और पत्थरो पर ओस की बूँदो की तरह जमा हुई मिलती है ।

शीरखोरा—संज्ञा पुं० [फा० शीरख्वार] १ दूध पीता बच्चा । २. अनजान बालक ।

शीरवा, शीरबिरंज—संज्ञा स्त्री० [फा०] पायस । खीर [को०]

शीरमाल—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चीनी मिला हुआ पानी । शर्बत । २. चीनी या गुड को पकाकर शहद के समान गाढा किया हुआ रस । चाशनी । ३. आँटे को दूध मे गूँधकर बनाई जानेवाली रोटी (को०) ।

शीरा—संज्ञा पुं० [फा० शीरह्] १. शकर की चाशनी । २. फलो का निचोडा हुआ रस । ३. पीसी हुई ओषधियों का रस । दे० 'सीरा' ।

शीराज—संज्ञा पुं० [फा०] ईरान का एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध नगर ।

शीराजा—संज्ञा पुं० [फा० शीराजह्] १. वह बुना हुआ रंगीन या सफेद फीता जो किताबों की सिलाई की छोर पर शोभा और मजबूती के लिये लगाया जाता है । २. पुस्तक और पुट्ठों पर की गई सिलाई । ३. प्रबंध । इंतजाम । ४. क्रम । सिलसिला । ५. टुकडा । जर्रा । कण । उ०—उन्नीसवीं सदी में बिखरे शीराजे के एकत्रित करने का जो प्रयत्न हुआ था, वह नगण्य सा था ।—भा० ई० रू०, पृ० ३३६ ।

यौ०—शीराजाबंद = (किताब) जिसकी सिलाई हो चुकी हो या जिल्द बँध गई हो ।

मुहा०—शीराजा खुलना या टूटना = (१) टाँका टूटना । सिलाई खुल जाना । (२) प्रबंध का बिगड़ जाना । इंतजाम खराब होना । शीराजा बँधना = (१) किताब के जुजों की सिलाई होना । (२) बिखरी चीजों का क्रम लगाना या सिलसिला बैठाना । शीराजा बिखरना = बेतरतीब होना । क्रमहीन होना ।

शीराजी—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का कबूतर । २ घोड़े का एक भेद । शीराज का घोडा । दे० 'सिराजी' ।

शीरि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तनाडी । शिरा ।

शीरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशपत्री नामक तृण ।

शीरीं¹—वि० [फा०] १. मीठा । मधुर । २. प्रिय । प्यारा ।

शीरीं²—संज्ञा स्त्री० फरहाद की प्रेयसी एक रमणी । (शीरीं फरहाद की प्रेमकथा बहुत ही प्रसिद्ध है ।)

शीरीं जबाँ—वि० [फा० शीरीजबाँ] मधुरभाषी । उ०—टलू लागती आई मँन किधन । कहाँ यूँ जा ए तू है शीरीं जबाँ ।—दक्खिनी०, पृ० ८४ ।

शीरी—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुश । कुशा । हरिदर्भ । २ मूँज । ३. कलिहारी । लागली ।

शीरीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिठास । मीठापन । २. खाने की वस्तु जिसमें खूब चीनी या मीठा पडा हो । मिठाई । मिष्ठान्न । ३. बताशा । सिरनी ।

क्रि० प्र०—चढाना ।—बाँटना ।—मानना ।

शीर्ण¹—वि० [सं०] १. छितराया हुआ । टूटा फूटा हुआ । खंड खंड । २. गिरा हुआ । च्युत । ३. जीर्ण । फटा पुराना । ४. मुरझाया हुआ । सूखकर सिकुडा हुआ । ५. चुचका हुआ । ६. कृश । दुबला पतला ।

शीर्ण²—संज्ञा पुं० एक गंधद्रव्य । स्थौणेयक । थुनेर ।

शीर्णक—वि० [सं०] शीर्ण या च्युत पत्तों को खानेवाला (को०] ।

शीर्णकाय—वि० [सं०] दुर्बल शरीरवाला । कृशकाय (को०] ।

शीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शीर्ण होने का भाव । शीर्णत्व ।

शीर्णत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शीर्णता' (को०] ।

शीर्णदंत—वि० [सं० शीर्णदन्त] जिसके दाँत गिर गए हों (को०] ।

शीर्णदल—संज्ञा पुं० [सं०] नीम ।

शीर्णनाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी । पिठवन (को०] ।

शीर्णपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्णिकार । कनियारी । २. पठानी लोध । ३. नीम । ४. वृक्ष से गिरा हुआ पत्ता (को०) ।

शीर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. निंब । नीम । २. वृक्ष से गिरा हुआ या कुम्हलाया हुआ पत्ता (को०) ।

यौ०—शीर्णपर्ण फल = जिसके पत्ते और फल मुरझाए, सूखे या झर गए हों ।

शीर्णपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृक्ष का नाम (को०] ।

शीर्णपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज ।

विशेष—पुराणों में कथा है कि माता के शाप से यमराज के पैर शीर्ण हो गए थे ।

२. शनिग्रह । ३. अत्यंत कृश पैर (को०) ।

शीर्णपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ । मधुरिका । २ सोआ ।

शीर्णपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ ।

शीर्णमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन । पृश्निपर्णी ।

शीर्णरोमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गठिवन ।

शीर्णवृत—संज्ञा पु० [सं० शीर्णवृन्त] तरबूज ।

शीर्णाघ्रि—संज्ञा पुं० [सं० शीर्णाङ्घ्रि] यम । विशेष दे० 'शीर्णपाद' ।

शीर्णि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शीर्ति' [को०] ।

शीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] तोडने फोडने की क्रिया । खडन ।

शीर्य¹—वि० [सं०] १ टूटने फूटने योग्य । भगुर । २ नाशवान् ।

शीर्य²—संज्ञा पु० एक प्रकार की दूब या घास जिसका प्रयोजन यज्ञो मे पडता था ।

शीर्वि—वि० [सं०] १ अपकारक । २ हिंसक । ३ वर्बर । जगली ।

शीर्ष—संज्ञा पु० [सं०] १ सिर । मुड । कपाल । २ माथा । ३ सबसे ऊपर का भाग । सिरा । चोटी । ४. सामना । अग्र भाग । ५ कालागुरु । काला अगर । ६ एक पर्वत का नाम । ७ एक प्रकार की घास ।

शीर्षक—संज्ञा पु० [सं०] १. सिर । मुड । २. माथा । ३ चोटी । सिरा । ४ राहु ग्रह । ५. सिर मे लपेटने की माला । ६ अगर । ७ नारिकेल वृक्ष । ८ टोप । शिरस्त्राण । कूँड । ९ व्यवहार या अभियोग का निर्णय । फैसला । १०. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख या प्रबध के ऊपर लिखा जाय । ११. सिर की हड्डी । शिरोस्थि (को०) । १२. पगडी । शिरोवेष्टन । मुरेठा (को०) ।

शीर्षघाती—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शीर्षघातिन्] सिर काटनेवाला । जल्लाद [को०] ।

शीर्षच्छेद, शीर्षच्छेदन—संज्ञा पु० [सं०] सिर काटना [को०] ।

शीर्षच्छेदिक, शीर्षच्छेद्य—वि० [सं०] शिरच्छेद करने योग्य । वध करने योग्य । वध्य [को०] ।

शीर्षणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शय्या का सिरहाना [को०] ।

शीर्षण्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ टोप । कूँड । २. सुलझे हुए साफ बाल । ३ सिर पर बाँधी जानेवाली कोई वस्तु (को०) । ४ सिर पर लपेटने की रज्जु (को०) । ५ चारपाई का सिरहाना ।

शीर्षण्य²—वि० शीर्षांकित । श्रेष्ठ [को०] ।

शीर्षत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] शिरस्त्राण । टोप । कूँड [को०] ।

शीर्षपट्ट, शीर्षपट्टक—संज्ञा पु० [सं०] १ सिर मे लपेटने का कपडा । २ पगडी । मुरेठा । साफा ।

शीर्षबिंदु—संज्ञा पु० [सं० शीर्षबिन्दु] १ सिर के ऊपर और ऊँचाई मे सब से ऊपर का स्थान । २. मोतियाबिंद ।

शीर्षरक्ष, शीर्षरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शीर्षत्राण' [को०] ।

शीर्षवर्तन—संज्ञा पु० [सं०] अभियोग चलानेवाले का उस दशा मे दंड सहने के लिये तैयार होना जब कि अभियुक्त ने 'दिव्य परीक्षा देकर अपने को निर्दोष प्रमाणित कर दिया हो । शिरोपस्थायी ।

शीर्षवेदना, शीर्षव्यथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिरोवेदना । सिर का दर्द । शीर्ष शोक [को०] ।

शीर्षशोक—संज्ञा पुं० [सं०] शिरोवेदना । सिरदर्द [को०] ।

शीर्षस्थ—वि० [सं०] दे० 'शीर्षांकित' [को०] ।

शीर्षस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तमांग । सिर । शीर्ष । २ ललाट । मस्तक । ३ सर्वोच्च स्थान या पद [को०] ।

शीर्षस्थानीय—वि० [सं०] दे० 'शीर्षांकित' [को०] ।

शीर्षांकित—वि० [सं० शीर्षाङ्कित] शीर्षस्थानीय । श्रेष्ठ । सर्वोच्च ।

शीर्षोदय—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशि [को०] ।

शील¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाल व्यवहार । आचरण । वृत्ति । चरित्र । २ स्वभाव । प्रवृत्ति । आदत । मिजाज । ३. अच्छा चाल-चलन । उत्तम आचरण । सद्वृत्ति । उ०—'भाव' ही कर्म के मूल प्रवर्तक और शील के संस्थापक हैं ।—रस०, पृ० १६१ ।

विशेष—बौद्ध शास्त्रों मे दस शील कहे गए हैं—हिंसा, स्तेय, व्यभिचार, मिथ्याभाषण, प्रमाद, अपराह्न भोजन, नृत्य गीतादि, मालागंधादि, उच्चासन शय्या और द्रव्यसंग्रह इन सब का त्याग । कहीं कहीं पंचशील ही कहे गए हैं । यह शील छह या दस पारमिताओं मे से एक है और तीन प्रकार का कहा गया है—संभार, कुशलसंग्राह और सत्वार्थ क्रिया । ४ उत्तम स्वभाव । अच्छी प्रकृति । अच्छा मिजाज । ५ दूसरे का जी न दुखे, यह भाव । कोमल हृदय । ६ सौंदर्य । सुंदरता । सौम्यता (को०) । ७ संकोच का स्वभाव । मुरौवत ।

मुहा०—शील तोडना = दूसरे के जी दुखने न दुखने का ध्यान न रखना । मुरौवत न रखना । आँखों मे शील न होना = दे० 'आँख' के मुहा० ।

८ अजगर ।

शील²—वि० प्रवृत्त । तत्पर । प्रवृत्तिवाला । स्वभावयुक्त । जैसे—दानशील, पुण्यशील ।

शीलक—संज्ञा पु० [सं०] १ एक कवि का नाम । २ कान की जड । कर्णमूल [को०] ।

शीलकीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुणों की ख्याति, शुचिता और सदाचार की प्रशस्ति [को०] ।

शीलखडन—संज्ञा पु० [सं०] शुचिता, सदाचार या नैतिकता का उल्लंघन [को०] ।

शीलगुप्त—वि० [सं०] चतुर । मक्कार । प्रवचक [को०] ।

शीलज्ञ—वि० [सं०] सदाचार एव नैतिकता का ज्ञाता ।

शीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शीलत्व' ।

शीलत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] सदाचार का त्याग [को०] ।

शीलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शीलयुक्त होने का भाव या क्रिया । शीलता । शालीनता [को०] ।

शीलदशा—संज्ञा स्त्री० [सं० शील + दशा] किसी विशेष भाव का किसी की प्रकृति या स्वभाव का लक्षण बनने की अवस्था । जैसे,

तुनकमिजाजी, हँसोड़पन, भीरुता आदि। उ०—भाव के इस प्रकार प्रकृतिस्थ हो जाने की अवस्था को हम शील दशा कहेंगे। —रस०, पृ० १८२।

शीलधारी'—वि० [स० शीलधारिन्] सद्वृत्तिवाला। शीलवान् [को०]।

शीलधारी'—सज्ञा पुं० शिव [को०]।

शीलन—सज्ञा पुं० [स०] १. बारबार अभ्यास करना। जैसे, शास्त्र आदि का। २ निरतर प्रयोग मे लाना। आधिक्य। ३. समान या सेवा करना। ४ वस्त्र पहिनना [को०]।

शीलभंग—सज्ञा पु० [स० शीलभङ्ग] १ दे० 'शीलखडन'। २ (आधुनिक प्रयोग) किसी भी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रसग करना। बलात्कार।

शीलभ्रंश—सज्ञा पुं० [स०] सदाचार का विनाश [को०]।

शीलवंचना—सज्ञा स्त्री० [स० शीलवञ्चना] १. सतीत्व या इद्रियनिग्रह का अतिक्रमण। २ शुचिता या शील का उल्लघन [को०]।

शीलवर्जित—वि० [स०] दुराचारी। शील से रहित [को०]।

शीलवान्—वि० [स० शीलवत्] [वि० स्त्री० शीलवती] १ अच्छे आचरण का। सात्विक वृत्ति का। २. अच्छे या कोमल स्वभाव का। मुरौवतवाला। सुशील।

शीलवृत्त'—वि० [स०] अच्छे आचरणवाला। सदाचारी [को०]।

शीलवृत्त'—सज्ञा पु० अच्छा आचरण। सदाचार [को०]।

शीलवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुशीलता। सदाचार। भलमनसी [को०]।

शीलवृद्ध—वि० [स०] संमान्य। सदाचारी [को०]।

शीलसौंदर्य—सज्ञा पु० [स० शीलसौन्दर्य] उत्कृष्ट एव सत् आचरण की सुदरता। शील की सुंदरता। उ०—किसी को रूपसौंदर्य और शीलसौंदर्य का पहले पहल साक्षात्कार या परिचय होते ही सबसे पहली अनुभूति आनद की होती है। सबसे पहले हृदय विकसित और लुब्ध होता है।—रस०, पृ० ७५।

शीला—सज्ञा स्त्री० [स०] कौंडिन्य मुनि की पत्नी का नाम।

शीलित'—वि० [स०] १. बारबार किया हुआ। अभ्यस्त। प्रयुक्त। २. धारण किया हुआ। पहना हुआ। ३. कृत। सपादित। ४ कुशल। निपुण। ५. युक्त। सहित। सपन्न।

शीलित'—सज्ञा पु० अनवरत क्रिया। अभ्यास [को०]।

शीली—वि० [सं० शीलिन्] १ सदाचारी। सुशील। २. बार-बार किया हुआ। अभ्यस्त। प्रयुक्त [को०]।

शीव(पु)—सज्ञा पु० [स० शिव] दे० 'शिव'। उ०—ब्रह्मा विष्णु शीव अधिकारी। तीन की आशा जगत महँ भारी।—कबीर सा०, पृ० ४६८।

शीवल—सज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। शैलेय। पथरफूल। २. सेवार।

शीवा'—सज्ञा पुं० [स० शीवन्] अजगर।

शीवा'(पु)—सज्ञा पुं० [सं० शिव] शिव। ब्रह्म। उ०—सब को प्रेरक कहिए जीवा। सो चेतन निरतर शीवा।—सुंदर० ग्र०, भा० १, पृ० ११०।

शीश(पु)'—सज्ञा पु० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'।

यौ०—शीशफूल।

शीश'—सज्ञा पुं० [फ़ा० शीशह्] शीशा। काँच। (प्राय समास मे प्रयुक्त)। जैसे,—शीश ए-दिल, शीश महल [को०]।

यौ०—शीश-ए-दिल = कोमल हृदय। नाजुक दिल। शीशगर = काँच के सामान बनानेवाला। शीशबाज = धूर्त। मक्कार। शीशमहल। शीश-ए साअत, शीश-ए-साअत = बालू की घड़ी।

शीशफूल—सज्ञा पुं० [स० शीर्ष + फुल्ल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का गहना विशेष। उ०—सिर पर है चँदवा शीशफूल, कानों मे झुमके रहे झूल।—ग्राम्या, पृ० ४०।

शीशम—सज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का पेड जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है।

विशेष—यह पेड बहुत ऊंचा और सीधा होता है। इसकी पत्तियाँ छोटी और गोल होती हैं। लकडी लाल रग की होती है और मजबूती तथा सुदरता के लिये प्रसिद्ध है। इससे पलग, कुरसी, मेज आदि सजावट के सामान बढिया बनते हैं।

शीशमहल—सज्ञा पु० [फ़ा० शीश + अ० महल] १ वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारों मे सर्वत्र शीशे जडे हों। काँच का मकान।

मुहा०—शीश महल का कुत्ता = पागल कुत्ते की तरह बकने या उछलने कूदनेवाला। (शीशे मे अपना ही प्रतिबिंब देखकर कुत्ता घबराता और भूँकता है।)

शीशा—सज्ञा पुं० [फ़ा० शीशह्] १. एक मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग मे गलाने से बनती है।

विशेष—यह पारदर्शक होती है और खरी होने के कारण थोडे आघात से टूट जाती है। काँच।

२. काँच का वह खड जिसमें सामने की वस्तुओं का ठीक प्रतिबिंब दिखाई पडता है और जिसका व्यवहार चेहरा देखने के लिये किया जाता है। दर्पण। आइना। ३. झाड फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान।

मुहा०—शीशे को पत्थर के हवाले करना = जान बूझकर किसी को सकट मे डालना। उ०—वे सुबहा सना की जो दिल उस बुत से लगाया। खुद हमने किया शीशे को पत्थर के हवाले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २६। शीशा बाशा = बहुत नाजुक चीज। शीशे मे उतारना = (१) भूत छुडाना। प्रतबाधा शात करना। वश मे करना। मोहित करना। उ०—इसकी भड़क कोई नहीं मिटा सकता मगर हमने इस शीशे मे उतारा है।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४।

शीशी—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीशह्, शीशा] शीशे का छोटा पात्र जो तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम मे आता है। काँच की लबी कुप्पी।

मुहा०—शीशी सुँघाना = क्लोरोफार्म सुँघाना। दवा सुँघाकर बेहोश करना।

विशेष—अस्त्रचिकित्सा आदि के समय रोगी इस प्रकार क्लोरोफार्म सुँघाकर बेहोश किए जाते हैं।

शीस¹—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'। उ०—शीस झुकाकर चली गई वह मंदिर में निज हृदय हिलोर।—साकेत, पृ० ३६८।

शीस²—संज्ञा पुं० [अ०] एक पैगंबर। आदम का तीसरा पुत्र [को०]।

शुंग—संज्ञा पुं० [सं० शुङ्ग] १ वट वृक्ष। २ आँवला। ३. पाकड। पकडी। ४. नव पल्लव। ५ फूल के नीचे का आधार या कटोरी। ६ एक राजवंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।

विशेष—इस वंश का स्थापक मौर्यों का सेनापति पुष्यमित्र था जिसने मौर्यवंश के अंतिम राजा बृहद्रथ को मारकर ईसा से १८५ वर्ष पूर्व उसके साम्राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया था। विशेष दे० 'पुष्यमित्र' शब्द।

७. जौ या अन्न का टूँड। किशारु। शूक (को०)।

शुंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुङ्गा] १ पर्कटी का पेड। २ कली का रक्षक आवरण। ३ गेहूँ जौ आदि का टूँड। शूल [को०]।

यौ०—शुंगाकर्म = पुंसवन नाम का एक संस्कार विशेष।

शुंगी—संज्ञा पुं० [सं० शुङ्गिन्] १ पक्कड का पेड। पाकर। २. वट वृक्ष।

शुंठि, शुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि, शुण्ठी] सोंठ।

शुंठ्य—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ठ्य] सूखी अदरी। सोंठ [को०]।

शुंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड] १. हाथी की सूँड। २ हाथी का मद जो उसकी कनपटी से बहता है।

शुंडक—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डक] १ एक प्रकार का रणवाद्य। भेरी। २ युद्धगान। युद्धगीत (को०)। ३ मद्य उतारने या बेचनेवाला।

शुंडमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डमूषिका] छछुंदर [को०]।

शुंडरोह—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डरोह] अगिया घास। भूतृण।

शुंडा—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डा] १. सूँड़। २. मद्यपान करने का स्थान। हौली। ३ शराब। ४. वेश्या। ५ कुटनी। ६ कमलनाल। नलिनी। कमल की डंडी (को०)। ७. चिबुक। हनु (को०)।

यौ०—शुंडादंड। शुंडापान।

शुंडादंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डादण्ड] हाथी की सूँड।

शुंडापान—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डापान] मधुशाला। मद्यपानगृह [को०]।

शुंडार—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डार] १ हाथी को सूँड। २. साठ वर्ष का हाथी। ३. मद्य उतारने या बेचनेवाला।

शुंडाल—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] हाथी।

शुंडिक—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डिक] १ मद्य बिकने का स्थान। कलवरिया। २ एक प्राचीन जाति का नाम जिसका व्यवसाय मद्य उतारना और बेचना था।

शुंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डिका] १. अलिजिह्वा। गले का कौवा। घाटी। २. ग्रंथि में आनेवाली सूजन। ३. दे० 'शुंडा' [को०]।

शुंडिमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डिमूषिका] छछूँदर।

शुंडी¹—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डिन्] १ (सूँडवाला) हाथी। २ मद्य बनानेवाला। कलवार।

यौ०—शुंडिमूषिका।

शुंडी²—संज्ञा स्त्री० १ हाथीसूँडी का पौधा। २. गले का कौवा। घाँटी।

शुंध्यु¹—संज्ञा पुं० [सं० शुन्ध्यु] १. वायु। २ अग्नि। ३. एक पक्षी। ४. आदित्य [को०]।

शुंध्यु²—संज्ञा स्त्री० वडवा। घोडी [को०]।

शुंध्यु³—वि० पवित्र। विमल। शुचि [को०]।

शुंभ—संज्ञा पुं० [सं० शुम्भ] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार यह प्रह्लाद का पौत्र और गवेष्ठी का पुत्र था। इसके भाई का नाम निशुंभ था। वामनपुराण में इसे कश्यप की दनु नामक भार्या से उत्पन्न कहा गया है।

यौ०—शुंभघातिनी। शुंभपुर। शुंभपुरी। शुंभमथनी। शुंभमर्दिनी। शुंभहननी = दुर्गा।

शुंभघातिनी, शुंभमर्दिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुम्भघातिनी, शुम्भमर्दिनी] दुर्गा।

शुंभपुर—संज्ञा पुं० [सं० शुम्भपुर] दे० 'शुंभपुरी'।

शुंभपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुम्भपुरी] शुंभ राक्षस की पुरी। एकचक्रा पुरी। हरिगृह।

विशेष—विद्वानों का अनुमान है कि मध्य प्रदेश में गोंडवाना के अंतर्गत संभलपुर ही प्राचीन शुंभपुरी है।

शुंशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुमार का अशुद्ध रूप। सूँस [को०]।

शु—क्रि० वि० [सं०] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित। जल्दी [को०]।

शुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. तोता। सुग्गा। २ एक प्रकार की गठिवन। ३. सिरिस का पेड। ४. सोना पाठा। ५. लोध का वृक्ष। ६ तालीशपत्र। ७. भरभंडा। भरभांड। ८. रावण के एक दूत का नाम। ९ व्यासदेव के पुत्र। विशेष दे० 'शुकदेव'। १०. वस्त्र। कपडा। ११. कपडे का आँचल। १२ शिरस्त्राण। खोद (को०)। १३ पगडी। साफा। १४. महाभारत के अनुसार एक पौराणिक अस्त्र (को०)। १५. एक वीर योद्धा (को०)। १६ गंधर्वो का एक राजा

शुककर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

शुककीट—संज्ञा पुं० [सं०] हरे रंग का एक फतिंगा जो खेतों में दिखाई पडता है।

शुककूट—संज्ञा पुं० [सं०] दो खंभों के बीच में शोभा के लिये लटकाई हुई माला।

शुकच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] १ तोते का पर। २. ग्रंथिपर्ण। गठिवन। ३. तेजपत्ता।

शुकजिह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुकतुंडी। सुआठोंठी नामक पौधा।

शुकतरु—संज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष।

शुकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुकत्व' [को०]।

शुकतुंड—संज्ञा पुं० [सं० शुकतुण्ड] १. तोते की चोंच। २ हाथ की एक मुद्रा जो तांत्रिक पूजन मे बनाई जाती है।

शुकतुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुकतुण्डी] शुकजिह्वा या सूअाठोंठी नामक पौधा।

शुकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शुक होने का भाव। सुग्गापन। शुकता [को०]।

शुकदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र जो पुराणो के भारी वक्ता और ज्ञानी थे।

विशेष—इन्होने राजा परीक्षित को उनके मरने के पहले मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था। कहा जाता है, वही उपदेश भागवत पुराण है।

शुकद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष।

शुकनलिका न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] तोता जिस प्रकार फँसाने की नली (नलनी) मे लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की रीति।

विशेष—सूर, तुलसी आदि हिंदी के कवियो ने भी 'नलनी के सुअटा' पद का व्यवहार किया है।

शुकनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुकजिह्वा या सूअाठोंठी नामक पौधा।

शुकनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] चकवँड। चक्रमर्द।

शुकनास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ। २. शुकजिह्वा। सुआठोंठी। ३. गभारी। ४. नलिका। ५. श्योनाक वृक्ष। छोकर। ६ सोनापाठा। ७ अगस्त का पेड। ८. वास्तुशास्त्र के अनुसार गृह की सजावट (को०)। ९. कादंबरी मे वर्णित तारापीड का एक अमात्य (को०)।

शुकनास[2]—वि० जिसकी नाक सुग्गे के समान झुकी हुई हो [को०]।

शुकनासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शुकनास[1]।

शुकनासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक की तरह झुकी हुई नासिका [को०]।

शुकपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] गंधक।

शुकपुच्छक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की गठिवन। थुनेर।

शुकपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ थुनेर। २ सिरिस का पेड। ३. गंधक। ४ अगस्त का पेड।

शुकपोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विषरहित या अहानिकर सर्प [को०]।

शुकप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिरिस का पेड। २. कमरख।

शुकप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीम। २ जामुन।

शुकफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आक। मदार। २ सेमर।

शुकबर्ह—संज्ञा पुं० [सं०] गठिवन।

शुकरान—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल कडुए होते हैं।

शुकराना—संज्ञा पुं० [अ० शुक्र] १ शुक्रिया। कृतज्ञता। २ वह धन जो कार्य हो जाने के पश्चात् धन्यवाद के रूप मे किसी को दिया जाय। जैसे,—वकीलो का शुकराना, जमींदारो का शुकराना इत्यादि।

शुकलोचन—वि० [सं० शुक (=तोता) + लोचन (=चश्म)] तोताचश्म। तोते के समान आँख फेर लेनेवाला। बेमुरौवत। (व्यंग्य मे)। उ०—ए निर्दयी क्या तुझे दया का नाम भी भूल गया जो ऐसे शुकलोचन से पाला डाला।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५।

शुकवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] अनार। दाडिम।

शुकवाक्—वि० [सं० शुकवाच्] जिसकी बोली सुग्गे की तरह मीठी हो [को०]।

शुकवाह, शुकवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव, जिसका वाहन शुक या तोता माना गया है।

शुकशालक—संज्ञा पुं० [सं०] बकायन।

शुकशिंबा, शुकशिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुकशिम्बा, शुकशिम्बि] कपिकच्छु। किवाँच।

शुकशीर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. थुनेर। स्थौणेयक। २ तालीस। तेजपत्ता।

शुकसप्तति—संज्ञा स्त्री० [सं०] इस नाम की एक पुस्तिका जिसमे शुक ने ७० कहानियाँ कही हैं।

शुकाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुकजिह्वा नामक पौधा।

शुकादान—संज्ञा पुं० [सं०] अनार।

शुकानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुकाख्या नामक पौधा।

शुकायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्ध। २ अर्हत।

शुकाह्व, शुकाह्वय—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सोया।

शुकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा तोता। सुग्गी। २. कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष। सिरिस।

शुकोदर—संज्ञा पुं० [सं०] तालीश वृक्ष।

शुकोह—संज्ञा स्त्री० [फा०] रोबदाब। शान शौकत।

यौ०—शुकोहे अलफाज = शब्दाडंबर। उत्कलिका।

शुक्त[1]—वि० [सं०] १. सडाकर खट्टा किया हुआ। खमीर उठाया हुआ। २ खट्टा। अम्ल। ३ कडा। कठोर। ४ अप्रिय। नापसंद। ५ निर्जन। सुनसान। उजाड। ६ श्लिष्ट। मिला हुआ। ७. पूत। शुद्ध। स्वच्छ। साफ (को०)।

शुक्त[2]—संज्ञा पुं० १. अम्लता। खटाई। २ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ३ सडाकर खट्टी की हुई कोई वस्तु। ४ कांजी। ५ सिरका। ६ चुक्र। ७. मांस। ८ कठोर वचन।

शुक्तक—संज्ञा पुं० [सं०] खट्टी डकार [को०]।

शुक्तपाक—संज्ञा पुं० [सं०] आमाशय या पक्वाशय का खट्टापन [को०]।

शुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चुक्रिका का पौधा। चूका। २ काँजी।

शुक्ताम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] चुक्रिका शाक। चुक का साग।

शुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीप। सीपी। २ नख की सीपी। सुतुही। ३. शंख। ४. दो कर्ष या चार तोले की एक तौल। ५. बेर। ६. नखी नामक गंधद्रव्य। ७ अर्श। बवासीर। ८ आँख का एक रोग जिसमे सफेद ढेले के ऊपर मांस की एक बिंदी सी

निकल आती है। ६ कपाल जो कानों या कापालिकों के हाथ में रहता है। १०. हड्डी। ११ घोड़े के गरदन अथवा छाती की एक भौंरी। १२ छोटा शंख। शंखनख (को०)।

यौ०—शुक्तिकर्णा=जिनके कान सीपी के समान हों। शुक्ति स्वाति=पूर्णत उत्वाट। पूरी तरह गंजा। शुक्तिचूर्णक। शुक्तिपत्री=दे० शुक्तिपुट'। शुक्तिबीज। शुक्तिवधू।

शुक्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का नेत्ररोग। २ गवक।

शुक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीप। सीपी। २. चुक्रिका शाक। चुक नाम का साग। ३ आँख का शुक्ति नामक रोग।

शुक्तिचूर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का घटिया किस्म का रत्न जो देखने में सीपी की खोल जैसा होता है।

शुक्तिज—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ता। मोती।

शुक्तिपत्र, शुक्तिपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन। सप्तपर्ण वृक्ष।

शुक्तिपुट—संज्ञा पुं० [सं०] सीपी का खोल (को०)।

शुक्तिबीज, शुक्तिमणि—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

शुक्तिमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ चेदि की राजधानी।

शुक्तिमान्—संज्ञा पुं० [सं० शुक्तिमत्] एक पर्वत जो आठ कुलपर्वतों में से है।

शुक्तिवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप। सीपी।

शुक्तिस्पर्श—संज्ञा पुं० [सं०] मोती पर पड़ा हुआ मटमैला धब्बा (को०)।

शुक्त्यगी—संज्ञा पुं० [सं० शुक्त्यङ्गिन्] सभालू। सिंदुवार। मेउडी।

शुक्त्युद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] मोती (को०)।

शुक्र¹—वि० [सं०] १ देदीप्यमान। चमकीला। २ स्वच्छ। उज्वल।

शुक्र²—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २ एक बहुत चमकीला ग्रह या तारा जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है।

विशेष—आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार इसका व्यास ७०० मील है। यह पृथ्वी से सबसे अधिक निकट है, एक करोड़ कोस से कुछ ही अधिक दूर है। सूर्य से इसकी दूरी तीन करोड पैंतीस लाख कोस है। इसका अक्ष भ्रमण-काल २२५ दिनों का है अर्थात् इसका एक दिन रात हमारे २२५ दिनों के बराबर होता है। बुध के समान यह ग्रह भी प्रधान युति के पीछे पश्चिम में निकलता है और पूर्व की ओर बढ़ता हुआ लघु युति के समय लुप्त हो जाता है। इसमें वायु और जल दोनों का होना अनुमान किया गया है। इसका पृष्ठ बादलों से ढका रहता है। फलित ज्योतिष में इसका वर्ण जल के समान श्यामल कहा गया है और यह धान्य का स्वामी, जलभूमिचारी और रिनग्ध रचित्वाला माना गया है।

पुराणों में शुक्र दैत्यों के गुरु और भृगु के पुत्र कहे गए हैं। ऐसी कथा है कि दैत्यराज बलि जब वामन को पृथ्वी दान करने लगे, तब वे उन्हें रोकने के विचार से उस जलपात्र की टोंटी में जा बैठे जिसमें संकल्प करने का जल था। उस समय सीक से गोदने पर इनकी एक आँख फूट गई। इसी कारण काने आदमी को लोग हँसी में शुक्राचार्य कह दिया करते हैं। विशेष दे० 'शुक्राचार्य'।

पर्या०—दैत्यगुरु। काव्य। उशना। भार्गव। कवि। सित। भृगु। षोडशार्चि। श्वेतरथ।

३. ज्येष्ठ मास। जेठ (यह कुबेर का भंडारी कहा गया है)। ४. स्वच्छ और शुद्ध साम। ५. चित्रक वृक्ष। चीता। ६. सार। रस। सत। ७. नर जीवों के शरीर का वह धातु जिसमें माता के अंड को गर्भित करनेवाले घटक या अणु रहते हैं। वीर्य। मनी। ८ बल। सामर्थ्य। पौरुष। शक्ति। ९. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है। १० आँख की पुतली का एक रोग। फूला। फूली। ११ एरंड वृक्ष। अंडी का पेड़। रेंड़। १२ स्वर्ण। सोना। १३ धन। दौलत। संपत्ति। १४. जल (को०)। १५. चमकीलापन (को०)। १६ गायत्री मंत्र में आनेवाली प्रथम तीन (भूः भुवः स्वः) व्याहृतियाँ (को०)। १७. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम (को०)। १८. तीसरे मनु के एक पुत्र का नाम (को०)। १९. सत्कार्य। सत्कर्म (को०)।

शुक्र³—संज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश। जैसे,—खुदा का शुक्र है।

शुक्रकर¹—संज्ञा पुं० [सं०] मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है।

शुक्रकर²—वि० वीर्य को बढ़ानेवाला (को०)।

शुक्रकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] मूत्रकृच्छ्र रोग। सूजाक।

शुक्रगुजार—वि० [अ० शुक्र+फा० गुजार] एहसान माननेवाला। धन्यवाद देनेवाला। आभारी। कृतज्ञ।

शुक्रगुजारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] एहसानमंदी। किए हुए उपकार का मानना। कृतज्ञता।

शुक्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुत्र। बेटा। २ देवताओं का एक भेद (जैन)।

शुक्रद—संज्ञा पुं० [सं०] गेहूँ। गोधूम।

शुक्रदोष—संज्ञा पुं० [सं०] क्लीवत्व। नपुंसकता।

शुक्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. कटसरैया। २. सफेद अपराजिता।

शुक्रप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] धातुक्षीणता। धातु का गिरना जो एक रोग है।

शुक्रभुज्—संज्ञा पुं० [सं०] मयूर। मोर।

शुक्रभू—संज्ञा पुं० [सं०] मज्जा।

शुक्रमाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बभनेटी। भारंगी।

शुक्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुक्रप्रमेह'।

शुक्रल—वि० [सं०] १. जिसमें शुक्र या वीर्य हो। २ वीर्य उत्पन्न करनेवाला।

शुक्रला—सज्ञा स्त्री० [स०] उटगन के बीज । उचटा । श्रोकडा ।

शुक्रवर्ण—वि० [स०] उज्वल । चमकीला । दीप्तियुक्त (को०) ।

शुक्रवार, शुक्रवासर—सज्ञा पु० [स०] सप्ताह का छठा दिन जो जो वृहस्पतिवार के बाद और शनिवार के पहले पडता है ।

शुक्रशिष्य—सज्ञा पु० [स०] दैत्य । असुर ।

शुक्रस्तभ—सज्ञा पु० [स० शुक्रस्तम्भ] ध्वजभग या नपुसकता का एक भेद जो बहुत दिनो तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है ।

शुक्राग—सज्ञा पु० [स०] शुक्राङ्ग] मयूर । मोर ।

शुक्रा—सज्ञा स्त्री० [स० वसलोचन ।

शुक्राचार्य—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि जो दैत्यो के गुरु और महर्षि भृगु के पुत्र थे ।

विशेष—इनकी कन्या का नाम देवयानी था और पुत्रो का नाम पड तथा अमर्क था । देवगुरु वृहस्पति के पुत्र कच ने इनसे सजीवनी विद्या सीखी थी । दे० । 'शुक्र[1]' ।

शुक्राना—सज्ञा पु० [फा० शुक्रानह्] दे० 'शुक्राना' ।

शुक्राश्मरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अश्मरी रोग का एक भेद । वह पथरी जो वीर्य को स्खलित होते समय रोकने से उत्पन्न होती है ।

शुक्रिय—वि० [स०] १. शुक्र सबधी । शुक्र का । २ शुक्र को बढानेवाला । शुक्रल । ३. जिसमे शुद्ध रस हो ।

शुक्रिया—सज्ञा पुं० [फा० शुक्रियह्] धन्यवाद । कृतज्ञता प्रकाश ।

क्रि० प्र०—अदा करना ।

शुक्ल[1]—वि० [स०] १ सफेद । उजला । धवल । श्वेत । स्वच्छ । २ निष्कलक । वेदाग (को०) । ३ सात्विक (को०) । ४ यशस्कर (को०) । ५. तेजोमय । प्रकाशदीप्त (को०) ।

शुक्ल[2]—सज्ञा पु० १ ब्राह्मणो की एक पदवी । २ शुक्ल पक्ष । ३ सफेद रेड का वृक्ष । ४ आँखो का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद तल या डेले पर होता है । ५ कुद नामक पुष्पवृक्ष । ६ सफेद लोध । ७ नवनीत । मक्खन । ८ चाँदी । रजत । ९ धव वृक्ष । घौ । १०. एक योग । ११ विष्णु का एक नाम । १२ श्वेत रग (को०) । १३. शिव (को०) । १४ कपिल मुनि का नाम (को०) । १५ खट्टी काजी । १६ उज्वलता (को०) । १७ सफेद वस्त्र (को०) । १८ वैशाख माम (को०) । १९ एक सवत्सर (को०) । २० बलभद्र । बलराम (को०) ।

शुक्लकठ, शुक्लकंठक—सज्ञा पुं० [स० शुक्लकण्ठ, शुक्लकण्ठक] मुर्गा । जलकाक ।

शुक्लकंद—सज्ञा पु० [स० शुक्लकन्द] १. भैसाकद । २ शंखालू । ३ अतीस ।

शुक्लकदा—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्लकन्दा] १. सफेद अतीस । २ विदारी कंद ।

शुक्लक—सज्ञा पुं० [स०] १ शुक्ल पक्ष । २ श्वेत वर्ण (को०) । ३ खिरनी का वृक्ष ।

शुक्लकर्कट—सज्ञा पु० [स०] सफेद रग का केकडा ।

शुक्लकर्मा—वि० [स० शुक्लकर्मन्] सात्विक कर्मोवाला । सुकर्मा (को०) ।

शुक्लकुष्ठ—सज्ञा पु० [स०] वह कोढ जिसमे शरीर पर सफेद चकत्ते पड जाते है ।

शुक्लक्षीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] काकोली ।

शुक्लक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] पवित्र स्थान । तीर्थस्थान ।

शुक्लक्षीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकोली । २. वह जो श्वेत दुग्ध-युक्त हो (को०) ।

शुक्लजीव—सज्ञा पु० [स०] वज्री नामक पौधा (को०) ।

शुक्लता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुक्ल का भाव या धर्म । २. सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसे विष्णु-तीर्थ भी कहते हैं ।

शुक्लत्व—सज्ञा पु० [स०] १ शुक्ल का भाव या धर्म । शुक्लता । २ सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लदुग्ध—सज्ञा पु० [स०] सिंघाडा ।

शुक्लदेह—वि० [स०] १ शुद्ध शरीरवाला । २ शरीर की तरह जिसका मन भी शुद्ध हो (को०) ।

शुक्लधातु—सज्ञा पु० [स०] खरिया नाम की मिट्टी ।

शुक्लध्यान—सज्ञा पुं० [स०] योग । उ०—जैन शास्त्रो मे शुक्ल ध्यान या योग के भी चार भेद है ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २३४ ।

शुक्ल पक्ष—सज्ञा पुं० [स०] अमावस्या के उपरात प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष, जिसमे चद्रमा की कला प्रतिदिन बढती जाती है जिससे रात उजेली होती है । चाद्रमास मे कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष ।

शुक्लपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ क्षत्रक वृक्ष । २. कुद नामक फूल का पौधा । ३ मरुआ । सफेद तालमखाना । ५. पिंडार । ६ मैनफल ।

शुक्लपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाथीशुडी नामक क्षुप । २ शीत-कुभी । शीतली लता । ३ कुद ।

शुक्लपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदती । २. कुद नामक फूल का पौधा ।

शुक्लपृष्ठक—सज्ञा पु० [स०] मेउडी । संभालू । सिंधुआर ।

शुक्लफल—सज्ञा पुं० [स०] मदार । आक ।

शुक्लफला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शमी । छोकुर । २ अर्क । मदार ।

शुक्लफेन—सज्ञा पु० [स०] समुद्रफेन ।

शुक्लबल—सज्ञा पुं० [स०] जैनियो के अनुसार एक जिन देव का [illegible]

शुक्लम[illegible] [स० शुक्लमञ्जरी] सफेद निर्गुंडी ।

शुक्ल[illegible] [स० शुक्लमण्डल] आँखो का सफेद भाग जो [illegible]ता है ।

शुक्लमेह—संज्ञा पुं० [सं०] चरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शुक्ल रोहित—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत रोहितक का वृक्ष। २ श्वेत रोहित या रोहू नाम की मछली [को०]।

शुक्लल—वि० [सं०] श्वेत। शुभ्र [को०]।

शुक्लला—संज्ञा स्त्री० [सं०] उच्चटा। शुक्ला [को०]।

शुक्लवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] उज्वल वस्तुओं का समूह। वैद्यक में श्वेत वस्तुओं का वर्ग। जैसे, शख, शुक्ति, कौडी आदि [को०]।

शुक्लवस्त्र—वि० [सं०] स्वच्छ वस्त्रधारी। श्वेत वस्त्रवाला [को०]।

शुक्लवायस—संज्ञा पुं० [सं०] बक। बगुला।

शुक्लवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] धौ या धव का वृक्ष।

शुक्लवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जीवनयापन की शुद्ध पद्धति या विधा। २ वह वृत्ति या आजीविका जो ब्राह्मण को ब्राह्मण द्वारा प्राप्त हो [को०]।

शुक्लशाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरिनिंब। २ सफेद शाल का वृक्ष।

शुक्लांग—संज्ञा पुं० [सं० शुक्लाङ्ग] चोबचीनी।

शुक्लांगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्लाङ्गा] निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्लांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्लाङ्गी] निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्ला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती। २ शर्करा। शक्कर। चीनी। ३ काकोली। ४ विदारी। ५ शूकरकंद। ६ श्वेत वर्ण की या श्वेत मुखरागवाली स्त्री (को०)। ७ निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्लाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

शुक्लाचार—वि० [सं०] जिसका आचार व्यवहार शुद्ध हो [को०]।

शुक्लापांग—संज्ञा पुं० [सं० शुक्लापाङ्ग] मयूर पक्षी। मोर।

शुक्लाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शुक्लायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुक्लार्क—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद मदार।

शुक्लार्म—संज्ञा पुं० [सं० शुक्लार्मन्] आँखों का एक प्रकार का रोग।
विशेष—इसमें आँखों के सफेद भाग में एक प्रकार का सफेद मस्सा हो जाता है जो धीरे धीरे बढ़ता रहता है।

शुक्लाहिफेन—संज्ञा पुं० [सं०] पोस्ते का पेड़।

शुक्लोदन—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम।

शुक्लोपला—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीनी। शर्करा।

शुक्लौदन—संज्ञा पुं० [सं०] अरवा चावल। भुजिया का उलटा।

शुक्षि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ तेज। ३ अग्नि (को०)। ४ चित्र। तसवीर।

शुगुन—संज्ञा पुं० [फ़ा०] शकुन। सगुन [को०]।

शुचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोक। दुःख। रंज। २ दे० 'शुचि'।

शुचि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। आग। २ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ३ ग्रीष्म ऋतु। गरमी। ४ ज्येष्ठ मास। ५ आषाढ मास। ६ चंद्रमा। ७ शुक्र। ८ ब्राह्मण। ९ श्वेत वर्ण। सुफेद रंग (को०)। १०. शुद्ध बुद्धिवाला मंत्री या सलाहकार (को०)। ११ सूर्य की ऊष्मा। सौराग्नि (को०)। १२. भागवत के अनुसार अंधक के एक पुत्र का नाम। १३ कार्तिकेय। १४ शृंगार रस जिसका वर्ण श्वेत कहा गया है (को०)। १५ अर्क का वृक्ष। मदार (को०)। १६ निष्कपट मित्र या सखा (को०)। १७. अन्नप्राशन के समय होनेवाला हवन (को०)। १८ वह जो सद्वृत्तिवाला हो। सदाचारी व्यक्ति (को०)। १९ आकाश। व्योम। नभ (को०)।

शुचि[2]—संज्ञा स्त्री० १ पवित्रता। सफाई। स्वच्छता। शुद्धता। २ पुराणानुसार कश्यप की पत्नी ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या का नाम।

शुचि[3]—वि० १ शुद्ध। पवित्र। २ स्वच्छ। साफ। ३ निरपराध। निर्दोष। ४ दीप्तिमान्। चमकीला (को०)। ५ उज्वल। धवल (को०)। ६. जिसका अंतःकरण शुद्ध हो। स्वच्छ हृदयवाला।

शुचिकर्मा—वि० [सं० शुचिकर्मन्] पवित्र कार्य करनेवाला। सदाचारी। कर्मनिष्ठ।

शुचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

शुचिकापुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] केवड़ा। केतकी।

शुचित—वि० [सं०] विषण्ण। संतप्त। दुःखित। अवसन्न [को०]।

शुचितम—वि० [सं०] अतिशय पवित्र। उ०—बिखर चुकी थी अंबर तल में, सौरभ की शुचितम सुख धूल।—झरना, पृ० १४।

शुचिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुचि का भाव या धर्म। उ०—मैं शुचिता सरल समृद्धि।—अपरा, पृ० ७०।

शुचिद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल। अश्वत्थ वृक्ष।

शुचिप्रणी—संज्ञा पुं० [सं०] आचमन।

शुचिमणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्फटिक मणि। २. शिरोमणि। वह मणि जो सिर पर धारण की जाय [को०]।

शुचिमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नेवारी। नवमल्लिका।

शुचिरोचि—संज्ञा पुं० [सं० शुचिरोचिस्] चंद्रमा।

शुचिवाच्—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शुचिवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम।

शुचिव्रत—वि० [सं०] जिसका संकल्प या कार्य शुद्ध हो। पुण्यात्मा [को०]।

शुचिश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० शुचिश्रवस्] विष्णु का एक नाम।

शुचिष्मान्[1]—वि० [सं० शुचिष्मत्] चमकीला। द्युतिमान्।

शुचिष्मान्[2]—संज्ञा पुं० अग्नि [को०]।

शुचिस्—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश। ज्योति। दीप्ति [को०]।

शुचिस्मित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुचिस्मिता] जिसकी हँसी प्रसन्न और निश्छल हो [को०]।

शुची—वि० [स० शुचिन्] १. शुद्ध । पवित्र । २ स्वच्छ । साफ।

शुचीरता—सज्ञा स्त्री०, पु० [स०] वीर्य ।

शुचीर्य—सज्ञा पु० [स०] वीर्य । शुक्र ।

शुजा—वि० [अ० शुजाअ] बहादुर । शूरवीर । दिलेर ।

शुजाअत—सज्ञा स्त्री० [अ०] वीरता । बहादुरी । शूरता । दिलेरी ।

शुजात(पु)—सज्ञा स्त्री० [अ० शुजाअत] दे० 'शुजाअत'। उ०—देखे माँ जिनो की है मरियम शुजात । श्रो बीबियाँ मे बीबी अहै पाकजात ।—दक्खिनी०, पृ० ३५० ।

शुटीर—सज्ञा पु० [स०] वीर व्यक्ति । योद्धा [को०] ।

शुटीर्य—सज्ञा पु० [स०] शुक्र । वीर्य ।

शुठि(पु)—अव्य० [हि०] दे० 'सुठि'। उ०—पहप वाटिका प्रेम सोहावन । वह शोभा सुंदर शुठि पावन ।—कबीर सा०, पृ० ३६८ ।

शुतर—सज्ञा पु० [फा० शुतुर] दे० 'शुतुर'। उ०—था उसके ऊपर लिवास मोटा, वालाँ से शुतर के ऐ ।—दक्खिनी, पृ० २२८ ।

शुतरी—वि० [फा०] ऊँट का सा या भूरा । उ०—आज शाल के वदले वह शुतरी रग का श्रोवरकोट पहने थी ।—पिंजरे०, पृ० १४ ।

शुतुद्रि, शुतुद्रु—सज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु नदी । सतलज ।

शुतुर—सज्ञा पुं० [फा०] ऊँट [को०] ।

यौ०—शुतुरगाव । शुतुरदिल = डरपोक । वुजदिल । शुतुरनाल = एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर लादी जाती थी । शुतुरमुर्ग । शुतुर सवार = साडनी सवार । ऊँटनी का सवार ।

शुतुरगाव—सज्ञा पु० [फा] जिराफा नामक जतु । विशेष दे० 'जिराफा'।

शुतुरमुर्ग—सज्ञा पु० [फा०] अमेरिका, अफ्रिका श्रौर अरव के रेगिस्तान मे होनेवाला एक प्रकार का बहुत बडा पक्षी ।

विशेष—यह प्रायः तीन गज तक ऊँचा होता है । इसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लबी होती है । यह उड तो नही सकता, पर रेगिस्तान मे घोडे से भी अधिक तेज दौड़ सकता है । यह घास श्रौर अनाज खाता है । कभी कभी कंकड पत्थर भी खा जाता है । इसके पर बहुत दाम पर बिकते है । यह एक बार मे तीस से कम अडे नही देता ।

शुतुमुर्ग—सज्ञा पु० [फा शुतुरमुर्ग] दे० 'शुतुरमुर्ग'।

शुद[1]—सज्ञा स्त्री० [हि०] दे० 'सुदी'।

शुद[2](पु)—सज्ञा स्त्री० [हि० सुध या सुधि] दे० 'सुध'। उ०—अबस जग के धधे मे तू शुद गँवाया । नही काम आएगा अपना पराया ।—दक्खिनी०, पृ० २५४ ।

शुदनी—सज्ञा स्त्री० [फा०] वह वात जिसका होना पहले से ही किसी दैवी शक्ति से निश्चित हो । भावी । होनहार । नियति ।

शुदा—वि० [फ़ा०] जो हो चुका हो । जैसे, शादीशुदा । (शब्दात मे प्रयुक्त) ।

शुद्ध[1]—वि० [स०] १. जिसमे किसी प्रकार की मैल या खोट आदि न हो । पवित्र । साफ । स्वच्छ ।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक बनाने मे शब्दो के आरंभ मे होता है । जैसे,—शुद्धबुद्धि, शुद्धमति ।

२ सफेद । उज्वल । ३ जिसमे किसी प्रकार की अशुद्धि न हो । जो गलत न हो । ठीक । सही । ४. दोषरहित । निर्दोष । बेऐब । ५ जिसमे किसी तरह की मिलावट न हो । खालिस । ६ निष्कलक । वेदाग (को०) । ७. ईमानदार (को०) । ८ चुकाया हुआ ऋण (को०) । ९ केवल । मात्र । १० अद्वितीय (को०) । ११ अधिकृत (को०) । १२. अननुनासिक (को०) । १३ सपूर्ण । निरा । पूरा (को०) । १४ भोलाभाला । सीधा सादा (को०) । १५ जाँचा हुआ । परीक्षित (को०) । तीक्ष्ण । तेज किया हुआ (को०) ।

शुद्ध[2]—सज्ञा पुं० १ सेंधा नमक । २ काली मिर्च । ३ चाँदी । रूपा । ४ गुडा नाम की घास । ५ सगीत मे राग के तीन भेदो मे से एक भेद । वह राग जिसमे श्रौर किसी राग का मेल न हो । जैसे,—भैरव, मेघ । ६ शिव का एक नाम । ७ चौदहवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक । ८. शुद्ध वस्तु (को०) । ९ शुक्ल पक्ष । सुदी (को०) । १०. वह मकान जो किसी एक ही वस्तु से निर्मित हो श्रौर जिसमे नाममात्र के लिये लकडी, ईंट, प्रस्तर का उपयोग किया हो (को०) ।

शुद्धकर्मा—वि० [स० शुद्धकर्मन्] जिसके कर्म शुद्ध हो । पवित्र आचार, विचार, व्यवहारवाला [को०] ।

शुद्धकोटि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह त्रिभुज जिसके कोण सम हो । समकोण त्रिभुज [को०] ।

शुद्धचैतन्य—सज्ञा पुं० [स०] शुद्ध आत्मा या चेतना [को०] ।

शुद्धजघ—सज्ञा पु० [स० शुद्धजङ्घ] गर्दभ । गदहा ।

शुद्धजड़—सज्ञा पु० [स० शुद्धजड] चौपाया । चतुष्पद [को०] ।

शुद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शुद्ध होने का भाव या धर्म । पवित्रता । २. निर्दोषिता ।

शुद्धत्व—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध होने का भाव या धर्म । शुद्धता । पवित्रता ।

शुद्धदंत[1]—वि० [स० शुद्धदन्त] श्वेत हाथीदाँत का बना हुआ । शुद्ध हाथीदाँत का । २. दे० 'शुद्धरद्' [को०] ।

शुद्धदत[2]—वि० [स०] जिसके दाँत श्वेत हो [को०] ।

शुद्धधी—वि० [स०] पवित्र विचारोवाला । सच्चा । ईमानदार [को०] ।

शुद्ध निसाणी—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्ध + हि० निसाणी] एक प्रकार का डिंगल छद जिसमे पहले तेरह मात्राएँ श्रौर फिर दस मात्राएँ इस प्रकार २३ मात्राएँ प्रत्येक पद मे होती है श्रौर तुकात मे दो गुरु होते हैं । उ०—कल तेरह फिर दशकला, दे माहरे गुरु दोय । कली एक ते वीस कल, शुद्ध निसाणी सोय ।—रघु० रू०, पृ० २६६ ।

शुद्धनेरि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य [को०] ।

शुद्धपक्ष—सज्ञा पु० [स०] अमावस्या के उपरात की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष । शुक्ल पक्ष ।

शुद्धपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत के एक पवित्र तीर्थ का नाम।

शुद्धप्रतिभास—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि [को०]।

शुद्धवटुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दुदुभीनादक [को०]।

शुद्धबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुद्धधी'।

शुद्धबोध—वि० [सं०] (वेदान्त) विशुद्ध ज्ञान से युक्त [को०]।

शुद्धभाव—वि० [सं०] पवित्र विचारोंवाला [को०]।

शुद्धमति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शुद्धधी [को०]।

शुद्धमास—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार वह पकाया हुआ मास जिसके साथ में हड्डी आदि न लगी हो।

शुद्धमुख—संज्ञा पुं० [सं०] भली भाति सिखाया हुआ घोडा [को०]।

शुद्धवश्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुद्धवश्या] शुद्धवंश मे उत्पन्न होनेवाला। पवित्र कुल का [को०]।

शुद्धवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलोय। गुडूच।

शुद्धवासा—वि० [सं० शुद्धवासस] स्वच्छ वस्त्राभूषणादि धारण करनेवाला [को०]।

शुद्धविष्कभक—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धविष्कम्भक] विष्कभक का एक भेद जिसमे केवल संस्कृत बोलनेवाले पात्र ही हो [को०]।

शुद्धव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सेना का वह व्यूह जिसमे उरस्य मे हाथी, मध्य मे तेज घोड और पक्ष मे व्याल (मतवाले हाथी) हो।

शुद्धशुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पुतली मे होनेवाला एक दोष [को०]।

शुद्धहार—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह हार जिसमे एक शीर्षक मोती का हो।

शुद्धात—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धान्त] १ अंतःपुर। रनिवास। जनानखाना। २ राजमहिषी। रानी (को०)।

यौ०—शुद्धातचर, शुद्धातचारी, शुद्धातरक्षक = दे० शुद्धातपालक'।

शुद्धातपालक—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धान्तपालक] वह जो अंतःपुर के द्वार पर पहरा देता हो। गृहदौवारिक।

शुद्धाता संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्धान्ता] रानी। राज्ञी।

शुद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रजव। कुटज बीज।

शुद्धाचार—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम व्यवहार। उ०—रखती थी प्रेमार्द्र सभी को वह अपने व्यवहारों से। पशु पक्षी भी सुख पाते थे उसके शुद्धाचारो से।—शकु० (आमुख)।

शुद्धात्मा—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धात्मन्] १ शिव का एक नाम। २ वह जिसका हृदय पवित्र हो (को०)। ३ निखालिस या बिना मिली हुई शराब (को०)।

शुद्धानुमान—संज्ञा पुं० [सं०] अनुमान का एक भेद। केवलान्वयी। विशेष दे० 'अनुमान'।

शुद्धापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलकार जिसमे प्रकृत अर्थात् उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है। अपह्नुति। उ०—शुद्धापह्नुति झूँठ लहि, साँचो बात दुराहि। नैन नही ये मीन युग, छवि सागर के माहि।—भानु (शब्द०)।

शुद्धाभ—वि० [सं०] पवित्र आभा से युक्त [को०]।

शुद्धाशय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुद्धाशया] जिसके विचार शुद्ध हों। जिसका हृदय पवित्र हो [को०]।

शुद्धाशुद्धीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

शुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध होने का कार्य। २ सफाई। स्वच्छता। ३ वैदिक धर्म के अनुसार वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुच व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है। जैसे—अशौच की समाप्ति पर शुद्ध होने के समय का कृत्य या किसी धर्मभ्रष्ट व्यक्ति के शुद्ध होकर पुन अपने धर्म मे आने के समय होनेवाला कृत्य या संस्कार। ४ दुर्गा का एक नाम। ५ दीप्ति। चमक। कांति (को०)। ६ पवित्रता। पुण्यशीलता (को०)। ७ ऋण आदि का परिशोधन (को०)। ८ प्रतिहिंसा। प्रतिशोध (को०)। ९ छुटकारा (को०)। १० सचाई। यथार्थता (को०)। ११ समाधान। संशोधन (को०)। १२ व्यवकलन (को०)।

शुद्धिकद—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धिकन्द] लहसुन।

शुद्धिकर—वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला। पवित्र करनेवाला [को०]।

शुद्धिकरण—वि० [सं० शुद्धि + करण] शुद्ध या पवित्र करनेवाला। उ०—पापो के शुद्धिकरण चारु, चरण धोए।—वेला, पृ० ४५।

शुद्धिकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] रजक। धोबी [को०]।

शुद्धिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यवस्थापत्र जो प्रायश्चित्त के पीछे शुद्धि के प्रमाण मे पंडितो की ओर से दिया जाता था। (शुक्रनीति) २ वह पत्र जिसमे छपने के समय पुस्तक मे रही हुई अशुद्धियाँ बतलाई गई हो। वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुद्धिबोध—संज्ञा पुं० [सं० शुद्धि (= शुद्ध) + बोध] शुद्धि या पवित्रता का ज्ञान। उ०—शतशुद्धिबोध सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक।—अपरा, पृ० ४७।

शुद्धोद—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

शुद्धोदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो भगवान् बुद्धदेव के पिता थे और जिनकी राजधानी कपिलवस्तु मे थी।

विशेष—इस शब्द के साथ पुत्र या उसका वाचक कोई शब्द लगने से 'बुद्धदेव' अर्थ होता है।

शुद्धोदनि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

शुन—संज्ञा पुं० [सं०] शुनम् (= श्वान) शब्द का समासप्रयुक्त रूप।

शुन पुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] १. अजीगर्त का एक पुत्र जो शुन शेप का भाई था। २ कुत्ते की पूँछ [को०]।

शुन शेप, शुन.शेफ—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

विशेष—रामायण के अनुसार ये महाराज अंबरीष के यज्ञ मे बलि के लिये लाए गए थे। विश्वामित्र ने दयावश इनको अग्नि की स्तुति बतला दी थी। अग्निदेव इनको स्तुति से इतने प्रसन्न हुए थे कि जब ये यज्ञकुड मे डाले गए, तब उसमे से अक्षत शरीर बाहर निकल आए। इसके उपरात ये महर्षि विश्वामित्र के यहाँ उनके पुत्रतुल्य होकर रहने लगे। देवीभागवत आदि कुछ पुराणो मे इनके सबध मे कई कथाएँ आई हैं। ऐतरेय ब्राह्मण (हरिश्चद्रोपाख्यान) के अनुसार ये अजीगर्त के पुत्र थे और हरिश्चद्र के यज्ञ मे वरुणदेव की बलि के लिये लाए गए थे। २ कुत्ते का लिंग [को०]।

शुनःसख—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जिनका उल्लेख महाभारत मे है।

शुनःस्कर्ण—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुन¹—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ता। २. वायु। ३. सुख। आराम।

शुन(पु)²—सज्ञा पु० [स० शून्य] दे० 'शून्य'। उ०—रामा हरिजन अगम गति रामनाम सब टेक। एकै माँहि अनेक है एक बिना शुन देक।—राम० धर्म०, पृ० २४१।

शुनक—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ता। कुक्कुर। श्वान। २ छोटा श्वान। कुत्ते का बच्चा। पिल्ला (को०)। ३ महाभारत के अनुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शुनकचचुका—सज्ञा स्त्री० [स० शुनकचञ्चुका] चेंच नाम का साग।

शुनकचिल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] बथुआ।

शुनकी—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्ते की मादा। कुतिया [को०]।

शुनहोत्र—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ भरद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा है।

शुनामुख—सज्ञा पु० [स०] हिमालय के उत्तर ओर के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। अनुमान है कि यह नेपाल के उत्तर का प्रदेश है।

शुनाशीर, शुनासीर—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ वायु और सूर्य। ३ इद्र और वायु. ४. उल्लू। कौशिक [को०]।

शुनासीरी—सज्ञा पु० [स० शुनासीरिन्] इद्र।

शुनासीरीय—वि० [स०] १ इद्र संबधी। इंद्र का। २ वायु देवता के सबध का। ३. सूर्य देवता के सबध का।

शुनि—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कुष्माडी। २. कुतिया [को०]।

शुनीर—सज्ञा पु० [स०] कुतियो का समूह [को०]।

शुनीलागूल—सज्ञा पु० [स० शुनीलागूल] देवीभागवत के अनुसार शुन शेफ के छोटे भाई का नाम।

शुन्य¹—वि० [स०] खाली। शून्य। रिक्त [को०]।

शुन्य²—सज्ञा पु० १ कुतियो का दल या समूह। २. दे० 'शून्य¹' [को०]।

शुब्हा—सज्ञा पु० [अ० शुबहह्] १. सदेह। शक। २. धोखा। वहम। भ्रम।

क्रि० प्र०—करना। —निकालना। —मिटना। —मिटाना। —होना।

शुभकर—वि० [स० शुभङ्कर] १ शुभ या मगल करनेवाला। मगलकारक। शुभकारी। २. प्रसन्न करनेवाला [को०]।

शुभकरी—सज्ञा स्त्री० [स० शुभङ्करी] १ कल्याण करनेवाली, पार्वती। २ शमी वृक्ष।

शुभंयु—वि० [स०] १ मंगलान्वित। मगलमय। २. शुभ।

शुभ भावुक—वि० [स० शुभम्भावुक] सज्जित। भूषित। द्योतित। अलकृत [को०]।

शुभ¹—वि० [स०] १. अच्छा। भला। उत्तम। सुखप्रद। जैसे—शुभ शकुन, शुभ समाचार, शुभ कार्य। २. कल्याणकारी। मगलप्रद। ३ सुदर। लावण्ययुक्त। लोना (को०)। ४ दीप्तियुक्त चमकीला (को०)। ५ भाग्यवान्। भाग्यशाली। ६ वेदप्रवण। वेदविद् (को०)। ७ जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

शुभ²—सज्ञा पु० १ मगल। कल्याण। भलाई। २ विष्कभादि सत्ताईस योगो के अतर्गत एक योग।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस योग मे जन्म लेता है, वह सब लोगो का कल्याण करनेवाला, पडितों का सत्सग करनेवाला और बुद्धिमान् होता है।

३ पदुमाख। एक सुगधित लकडी। पदमकाठ। ४ चाँदी। ५. बकरा। ६ वह जो अजन्मा हो। सर्वशक्तिमान् (को०)। ७ जल (को०)। ८ एक प्रकार का आभूषण (को०)।

शुभक—सज्ञा पु० [स०] सरसो का बीज। सर्षप [को०]।

शुभकथ—वि० [स०] कल्याणप्रद बातें कहनेवाला। अच्छी बात कहनेवाला।

शुभकर—वि० [स०] शुभ या मगल करनेवाला।

शुभकरी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शुभकर्म—सज्ञा पुं० [स०] १. शुभ काम। सत्कर्म। २. वह वृत्ति या आचार जो आदरणीय हो। [को०]।

शुभकर्मा—सज्ञा पुं० [स० शुभकर्मन्] १ वह जो शुभ कर्म करता हो। २. स्कद का एक अनुचर [को०]।

शुभकाम—वि० [स०] शुभ या कल्याण की कामना करनेवाला [को०]।

शुभकूट—सज्ञा पुं० [स०] सिंहल द्वीप या लका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरणचिह्न बने हुए है। ईसाई इन्हे हजरत आदम के चरण चिह्न और बौद्ध महात्मा बुद्ध के चरणचिह्न मानते है।

शुभकृत्—वि० [स०] शुभकर। मगल करनेवाला।

शुभकृत्स्न—सज्ञा पुं० [स०] बौद्ध देवताओ का एक वर्ग।

शुभगधक—सज्ञा पु० [स० शुभगन्धक] बोल नामक गधद्रव्य। गंधवाला।

शुभग—वि० [स०] १. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। २. सुदर। सौंदर्ययुक्त [को०]।

शुभगा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक शक्ति का नाम [को०]।

शुभग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति और शुक्र।

विशेष—ये दोनों ग्रह सौम्य और शुभ माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त बुध ग्रह भी, यदि पापयुक्त न हो तो, शुभ माना जाता है। आधे से अधिक चंद्र भी शुभ कहा गया है।

शुभचिंतक—वि० [सं० शुभचिन्तक] शुभ या भला चाहनेवाला। भलाई की इच्छा रखनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह।

शुभजानि—वि० [सं०] जिसकी स्त्री सुंदर हो [को०]।

शुभताति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्याण। मंगल। शुभ [को०]।

शुभदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभदन्ता] पुराणानुसार पुष्पदंत नामक हाथी की हथिनी का नाम।

शुभदंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके दाँत सुंदर हो [को०]।

शुभद—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का पेड।

शुभद—वि० शुभप्रद। शुभदायक।

शुभदर्श, शुभदर्शन—वि० [सं०] १ जिसका मुँह देखने से कोई शुभ या मंगल बात हो। २. सुंदर। खूबसूरत।

शुभदायी—वि० [सं० शुभदायिन्] शुभ या मंगल करनेवाला। शुभप्रद। शुभद।

शुभदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभ+दृष्टि] १. शुभदर्शन। २ मुँह देखना। मुँह दिखाई। उ०—विवाह के बाद जब दूल्हा वधू के मुख से शुभदृष्टि के अवसर पर पहली बार घूँघट हटाता है।—जनानी०, पृ० ४३०।

शुभनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी, दशमी या पूर्णिमा तिथि।

शुभपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिवन। शालपर्णी।

शुभप्रद—वि० [सं०] शुभ या मंगल करनेवाला। शुभद। मंगलकारी।

शुभफलप्रद—वि० [सं०] सुफल देनेवाला। उ०—सकल शुभफलप्रद एक विधान, बाध माँ, तंत्री के से गान।—गीतिका, पृ० ३५।

शुभमंगल—संज्ञा पुं० [सं० शुभमङ्गल] सौभाग्य। कल्याण [को०]।

शुभर(पु)†—संज्ञा पुं० [?] गड्ढा। उ०—नउसर शुभर दशवें चढिग्रा।—प्राण०, पृ० ८०।

शुभलक्षण—वि० [सं०] जिसके लक्षण शुभ हो। अच्छे लक्षणों से युक्त [को०]।

शुभलग्न—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ समय। शुभ मुहूर्त [को०]।

शुभवक्त्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शुभवार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुभ समाचार [को०]।

शुभवासन—संज्ञा पुं० [सं०] मुख को सुवासित करनेवाली वस्तु [को०]।

शुभविमलगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] बोधिसत्व का नाम।

शुभव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो कार्तिक शुक्ला पंचमी को किया जाता है।

शुभशंसी—वि० [सं० शुभशंसिन्] शुभ करनेवाला। मंगल को सूचित करनेवाला [को०]।

शुभशैल—संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र के अनुसार एक कल्पित पर्वत का नाम।

शुभसूचक—वि० [सं०] दे० 'शुभशंसी' [को०]।

शुभसूचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्याण की सूचना [को०]।

शुभसूचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम जिनकी पूजा का संकल्प किसी शुभ काम के होने की आशा से किया जाता है, और वह शुभ काम हो जाने पर जिनकी पूजा की जाती है। इनकी पूजा प्राय स्त्रियाँ ही करती हैं।

शुभसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'मंगलसूत्र' [को०]।

शुभस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंगल भूमि। पवित्र स्थान। २ यज्ञभूमि।

शुभस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शुभांग—वि० [सं० शुभाङ्ग] सुंदर। सलोना। लावण्ययुक्त [को०]।

शुभांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभाङ्गी] १ कुबेर की पत्नी का नाम। २ कामदेव की पत्नी, रति। ३ महाभारत के अनुसार राजा कुरु की पत्नी का नाम। ४ सुंदरी स्त्री (को०)।

शुभांजन—संज्ञा पुं० [सं० शुभाञ्जन] दे० 'शोभांजन'।

शुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोभा। कांति। छवि। २ इच्छा। ३. वंशलोचन। ४ गोरोचन। ५ शमी। सफेद कीकर। ६ प्रियंगु। वनिता। ७ सफेद दूब। ८ बकरी। ९ अरारोट। १० पुरइन की पत्ता। ११ सोआ। १२. सफेद बच। १३ असबरग। १४ पार्वती की एक सखी का नाम। १५ देवताओं की सभा। १६ प्रकाश। दीप्ति (को०)। १७. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शुभाकांक्षी—वि० [सं० शुभाकाङ्क्षिन्] शुभ की कामना करनेवाला। हित चाहनेवाला। हितैषी।

शुभाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँईआँवला।

शुभाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

शुभागमन—संज्ञा पुं० [सं०] सुख या मंगलसूचक आगमन या अवाई।

शुभाचल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक कल्पित पर्वत का नाम।

शुभाचार—वि० [सं०] पवित्र आचरणवाला। सदाचारी [को०]।

शुभाचारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम।

शुभानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री [को०]।

शुभानुष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल संबंधी कार्य।

शुभान्वित—वि० [सं०] कल्याणयुक्त। मंगलयुक्त [को०]।

शुभापांगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभापाङ्गा] वह स्त्री जिसके नेत्रकोण शुभद हो। सुंदर स्त्री [को०]।

शुभावह—वि० [सं०] मंगलमय। मंगलजनक [को०]।

शुभाशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुभ या भला कहना। २. सद्विचार। सुविचार। उ०—आपकी शुभाशंसा से ही मैंने वह सब लिखा था।—नदी०, पृ० १००।

शुभाशीर्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] मंगलकारक आशीर्वचन [को०]।

शुभाशीष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुभाशीर्वाद'।

शुभाशुभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ भला और बुरा। २ पवित्र और अपवित्र [को०]।

शुभिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्पमाला। पुष्पहार। फूलों का हार [को०]।

शुभेक्षण—वि० [सं०] शुभ दृष्टि या नेत्रोंवाला [को०]।

शुभेक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री।

शुभेतर—वि० [सं०] १ बुरा। खराब। २ अशुभ। अमांगलिक [को०]।

यौ०—शुभेतरक्षति = अशुभ का दूरीकरण या मांगलिकता।

शुभैषिणी—वि० [सं०] शुभ चाहनेवाली। उ०—वह रचनात्मक साहित्य को प्रिय सखा, शुभैषिणी सविका और हृदय स्वामिनी कही जा सकती है।—नया०, पृ० २७।

शुभोदय—वि० [सं०] भाग्यवाला। सौभाग्यपूर्ण [को०]।

शुभोदर्क—वि० [सं०] जिसका अंत आनंददायक हो।

शुभ्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अबरक। २ साँभर नमक। ३ चाँदी। रूपा। ४ कसीस। ५ पद्माख। पदुमकाठ। ६ खस। उशीर। ७ चरबी। ८ रूपामक्खी। ९ सेंधा नमक। १० बसलोचन। ११ फिटकिरी। १२ चीनी। १३ सफेद बिधारा। १४ श्वेत वर्ण। श्वेत रंग (को०)। १५ चदन (को०)। १६ स्वर्ग (को०)।

शुभ्र[2]—वि० १ श्वेत। सफेद। उ०—शोभजति दंतरुचि शुभ्र उर मानिए।—केशव (शब्द०)। २ चमकता हुआ। चमकीला। देदीप्यमान (को०)।

शुभ्रकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर [को०]।

शुभ्रतरु—संज्ञा पुं० [सं०] सिरिस का वृक्ष।

शुभ्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुभ्र का भाव या धर्म। सफेदी। श्वेतता।

शुभ्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुभ्रता' [को०]।

शुभ्रदंत—वि० [सं० शुभ्रदन्त] [वि० स्त्री० शुभ्रदन्ती] दे० 'शुभ्रदत्' [को०]।

शुभ्रदंती—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभ्रदन्ती] पुराणानुसार पुष्पदंत नामक दिग्गज की हथनी का नाम। दे० 'शुभदती'। २. सार्वभौम दिग्गज की हस्तिनी (को०)।

शुभ्रदत्—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुभ्रदती] चमकीले दाँतवाला [को०]।

शुभ्रपर्णी—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद पान।

शुभ्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

शुभ्रभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शुभ्ररश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शुभ्रवेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] शाल्मली। सेमल।

शुभ्रांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

शुभ्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बसलोचन। २ फिटकरी। ३ गंगा (को०)। ४ स्फटिक (को०)। ५ शर्करा। सिता। चीनी (को०)।

शुभ्रालु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भैंसा कद। महिप कंद। २ शखालु।

शुभ्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २. सूर्य [को०]।

शुभ्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शहद से तैयार की हुई चीनी। मधुशर्करा।

शुमार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गिनती। गणना। २ तखमीना। अंदाज। ३ जोड। मीजान। ४ आतंक या भय [को०]।

यौ०—शुमारकुनिंदा = दे० 'शुमारिंदा'। शुमारनवीस = हिसाब किताब करनेवाला।

शुमारिंदा—वि० [फ़ा० शुमारिंदह्] शुमार करनेवाला। गणना करनेवाला। गणक [को०]।

शुमारी—प्रत्य० [फ़ा०] गणना का काम। गिनने की स्थिति या क्रिया। जैसे, मर्दुमशुमारी।

शुमाल—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक जाति। दे० सुमाली'। २ उत्तर दिशा। ३. बायाँ हाथ [को०]।

शुमाली—वि० [फ़ा०] उत्तरी। उत्तर का [को०]।

शुरफा—संज्ञा पुं० [अ० शरीफ का बहु व०] शरीफ लोग। उ०—शुरफा व रूजला एक है दरबार में मेरे। कुछ खास नहीं फैज तो इक आम है मेरा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ७९१।

शुरवा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

शुरू—संज्ञा पुं० [अ० शुरुअ] १ किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन। आरंभ। प्रारंभ। जैसे,—अब तुम यह काम जल्दी शुरू कर डालो। २ वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो। जैसे,—शुरू से आखीर तक।

शुरूआत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आरंभ। प्रारंभ [को०]।

शुल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह महसूल जो घाटों और रास्तों आदि पर राज्य की ओर से वसूल किया जाता है। २ वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले में उसका पिता वर के पिता से लेता है।

विशेष—शास्त्र में इस प्रकार का धन या शुल्क लेने का बहुत अधिक निषेध किया गया है।

३ विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज। दायजा। वैवाहिक उपहार। ४ बाजी। शर्त। ५ किराया। भाड़ा। ६ मूल्य। दाम। ७ वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया या दिया जाय। फीस। जैसे,— प्रवेश शुल्क। ८ फायदा। लाभ (को०)। ९ किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अग्रिम धन (को०)। १० दूल्हे द्वारा दुलहिन को दी हुई भेंट (को०)। ११ श्वान (को०)। १२ कर। टैक्स। महसूल (को०)।

यौ०—शुल्कग्राहक, शुल्कग्राही = कर या शुल्क एकत्र करनेवाला। शुल्कखडन = शुल्क मोषण। शुल्कद = (१) वैवाहिक उपहार देनेवाला। (२) विवाहार्थी। शुल्कमोषण = वह जो करग्राहक को कर देने में धोखा दे टैक्सचोर। कर चोर शुल्कशाला। शुल्कस्थान।

शुल्कता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुल्क का भाव या धर्म।

शुल्कशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहाँ पर घाट या मार्ग आदि का महसूल चुकाया जाता है। महसूल अदा करने की जगह।

शुल्कस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ आने जानेवालो को शुल्क देना पडता हो।

शुल्काध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्रानुसार चुगी का अध्यक्ष।

शुल्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शुल्व'।

शुल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ रस्सी। २ ताँबा।

शुल्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ ताँबा। २ रज्जु। रस्सी। ३ यज्ञकर्म। ४ आचार। ५ नियम। विधि (को०)। ६ जल का सामीप्य। जल की निकटता (को०)।

शुल्वज—संज्ञा पुं० [सं०] पीतल [को०]।

शुल्वल—संज्ञा पुं० [सं०] सत। ऋषि [को०]।

शुल्वसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूत्रग्रथ जिसमे श्रौत कर्मकाडो से सबधित गणितीय आकलन दिए गए हैं।

शुल्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुल्व'।

शुल्वारि—संज्ञा पुं० [सं०] गधक।

शुल्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शुल्व' [को०]।

शुश्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालक की सेवा शुश्रूषा करनेवाली, माता। माँ। जननी।

शुश्रूषक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शुश्रूषा करता हो। सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। जैसे,—शिष्य, दास, अधीनस्थ कर्मचारी आदि।

शुश्रूषण—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शुश्रूषणा] १ शुश्रूषा। शुश्रूषा करने का कार्य। सेवा करना। खिदमतगुजारी। २ सुनने की इच्छा (को०)। ३ कर्तव्यनिष्ठता। आज्ञाकारिता (को०)।

शुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १ सेवा। टहल। परिचर्या। २ खुशामद। ३ कथन। ४ किसी से कुछ सुनने की इच्छा। ५ सम्मान (को०)। ६ कर्तव्यनिष्ठता (को०)।

यौ०—शुश्रूषा पद्धति। शुश्रूषा प्रणाली = सेवा की रीति या ढग।

शुश्रूषिता—वि० [सं० शुश्रूषितृ] सेवक। आज्ञापालक [को०]।

शुश्रूषी—वि० [सं०] दे० शुश्रूषक।

शुश्रूषु—वि० [सं०] १ सुनने को उत्सुक। श्रवणेच्छु। २. सेवा करने के लिये इच्छुक। नौकरी चाकरी चाहनेवाला। ३ आज्ञा पालन करनेवाला। हुक्म माननेवाला [को०]।

शुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिद्र। विवर। गर्त। २. शुष्क होना। शोष। सूखना [को०]।

शुषि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूखना। २ गर्त। बिल। ३ ऐंठन। बल। मरोड। शिकन। ४ सर्प के विष के दाँत का सूराख [को०]।

शुषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुष्कता। खुश्की। प्यास [को०]।

शुषिर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ लौंग। २ अग्नि। ३. मूसा। चूहा। ४ बिल। गड्ढा। विवर। ५ आकाश। ६ वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। जैसे, वंशी, अलगोजा, शहनाई आदि।

शुषिर²—वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। सूराखदार (को०)।

शुषिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। दरिया। २ धरणी। ३ नालिका या नली नाम का गंधद्रव्य।

शुषिल—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा [को०]।

शुषेण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुषेण'।

शुष्क¹—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी या गीलापन न रह गया हो। जो किसी प्रकार सुखा लिया गया हो। आर्द्रतारहित। सूखा। खुश्क। जैसे,—शुष्क काष्ठ। २ जिसमें जल या और किसी तरल पदार्थ का व्यवहार न किया गया हो। ३. जिसमे रस का अभाव हो। नीरस। रसहीन। ४ जिससे मनोरजन न होता हो। जिसमे मन न लगता हो। जैसे,—शुष्क विषय। ५ जिसका कुछ परिणाम न निकलता हो। निरर्थक। व्यर्थ। जैसे,—शुष्क वादविवाद। ६ जिसमें सौहार्द्र आदि कोमल मनोवृत्तियाँ न हो। स्नेह आदि से रहित। निर्मोही। ७ जो बिलकुल पुराना और बेकाम हो गया हो। जीर्ण शीर्ण। ८ निराधार। निष्कारण (को०)। ९ झुर्रीदार। सिकुडन वाला। कृश (को०)।

शुष्क²—संज्ञा पुं० १ काला अगर। कालागुरु। २. कोई भी सूखी हुई वस्तु या पदार्थ (को०)।

शुष्कक—वि० [सं०] शुष्क। सूखा हुआ। क्षीण [को०]।

शुष्ककलह—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यर्थ या निराधार झगडा। अकारण सघर्ष। २ छद्म सघर्ष [को०]।

शुष्ककास—संज्ञा पुं० [सं०] सूखी खाँसी [को०]।

शुष्कक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वितस्ता नदी के किनारे के एक पर्वत का नाम।

शुष्कगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार स्त्रियो का एक रोग जिसमे वायु के प्रकोप से स्त्रियो का गर्भ सूख जाता है।

शुष्कगान—संज्ञा पुं० [सं०] किसी भी प्रकार के उपवाद्य या सह ध्वनि के साथ गाना [को०]।

शुष्कगोमय—संज्ञा पुं० [सं०] कडा। उपला [को०]।

शुष्कचर्चण—संज्ञा पुं० [सं०] निरर्थक बातचीत [को०]।

शुष्कता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुष्क होने का भाव या धर्म। सूखापन।

शुष्कतर्क—संज्ञा पुं० [सं०] मात्र बहस। बेकार बहस।

शुष्कतोय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुष्कतोया] जिसका जल सूख गया हो।

शुष्कपाक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० शुष्काक्षिपाक [को०]।

शुष्कमत्स्य—संज्ञा पुं० [सं०] सूखी या सुखाई हुई मछली [को०]।

शुष्कमास—संज्ञा पुं० [सं०] सुखाया हुआ मास।

शुष्करुदित—संज्ञा पु० [सं०] इस प्रकार रोना जिसमे आँख से आँसू न गिरे [को०]।

शुष्करेवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार एक मातृका का नाम। २ एक प्रकार का बालग्रह जिसके प्रकोप से बालको के अंग सूखने या क्षीण होने लगते है।

शुष्कल—संज्ञा पु० [सं०] १ मास। गोश्त। २ वह जो मास खाता हो। मासभक्षी। ३. सूखा मास (को०)।

शुष्कली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मास। गोश्त। २ सूखा मास (को०)।

शुष्कवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] धव का वृक्ष। धौ।

शुष्कवैर—संज्ञा पु० [सं०] अकारण वैर। निराधार शत्रुता [को०]।

शुष्कव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्रियो का योनिकंद नामक रोग। विशेष दे० 'योनिकंद'। २ सूखा हुआ घाव (को०)।

शुष्कांग¹—संज्ञा पुं० [सं० शुष्काङ्ग] धव का वृक्ष। धौ।

शुष्कांग²—वि० कृश शरीरवाला। दुबला पतला [को०]।

शुष्कांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुष्काङ्गी] १. प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी। २ गोह। गोधिका।

शुष्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियो का योनिकंद नामक रोग।

शुष्काक्षिपाक—संज्ञा पु० [सं०] आँखो का एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमे आँखो की पलकें कठोर और रूखी हो जाती हैं और उनके खोलने बंद करने मे पीडा होती है, आँखो मे जलन होती है और साफ नही देख पडता।

शुष्कार्द्र—संज्ञा पु० [सं०] सूखा अदरक। सोठ।

शुष्कार्द्रक—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शुष्कार्द्र' [को०]।

शुष्कान्न—संज्ञा पु० [सं०] भूसा मिला हुआ अन्न [को०]।

शुष्कार्श—संज्ञा पु० [सं० शुष्कार्शस्] आँखो का एक प्रकार का रोग जिसमे आँख की पलको के भीतर खरखरी और कठिन फुसियाँ उत्पन्न हो जाती है।

शुष्काशुष्क—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

शुष्ण—संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३. बल। शक्ति। ताकत। ४ एक राक्षस (को०)।

शुष्म—संज्ञा पु० [सं०] १ तेज। पराक्रम। २ अग्नि। ३ सूर्य। ४ वायु। ५. पक्षी। चिडिया। ६ प्रकाश। कांति (को०)। ७. लौ। लपट (को०)।

शुष्मा—संज्ञा पु० [सं० शुष्मन्] १ अग्नि। २ चीता। चित्रक। ३. तेज। पराक्रम। ४ प्रकाश। कांति (को०)।

शुष्मी—वि० [सं० शुष्मिन्] १. शक्तिशाली। बलवान्। २ बहुत जल्दी भडक जानेवाला। जैसे, घोडा, साँड, हाथी। ३. प्रतिभाशाली। मेधावी [को०]।

शुहदा—वि० [अ० शहीद का बहुव०] गुडा। बदमाश। चरित्रहीन। ऐश अय्याशी मे रुपया उडानेवाला। दे० 'शोहदा'। उ०—महा-आलसी झूठे शुहदे बेफिकरे बदमासी।—भारतेंदु ग०, भा० १, पृ० ३३३।

यौ०—शुहदापन, शुहदापना = शोहदापन।

शुहरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ शोहरत। प्रसिद्धि। ख्याति। २ दे० 'शोहरत'।

यौ०—शुहरतपसंद, शुहरतपरस्त = प्रसिद्धि का भूखा। नामवरी का इच्छुक। यशलोलुप।

शूडल—संज्ञा पु० [देश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।

विशेष—इसके हीर की लकडी मजबूत, कडी और लाली लिए होती है और अच्छे दामो पर बिकती है। यह इमारतो और पुलो के बनाने के काम मे आती है। इसकी छाल बहुत पतली होती है और उतारने से बारीक कागज के वरको की तरह उतरती है। बंगाल के सुंदरबन मे यह पेड बहुत होता है।

शूक—संज्ञा पु० [सं०] १ अन्न की बाल या सीका जिसमे दाने लगते हैं। २ यव। जौ। ३. एक प्रकार का कीडा। ४. एक प्रकार का तृण जिसे शूकडी कहते हैं और जो दुर्बल पशुओ के लिये बहुत बलकारक माना जाता है। ५. एक प्रकार का रोग जो लिंगवर्धक औषधो के लेप के कारण होता है।

विशेष—इसमे लिंग पर कई प्रकार की फुसियाँ और घाव आदि हो जाते है। यह रोग १८ प्रकार का माना गया है। यथा—सर्षपिका, अष्ठीलिका, ग्रथित, कुंभिका, अलजी, मृदित, संमूढ-पीडका, अधिमथ, पुष्करिका, स्पर्शहानि, उत्तमा, शतपोनका, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मासार्बुद, मासपाक, विद्रधि और तिलकालक।

५. यवादि की बाल का अगला, नुकीला भाग, टूँड। ६ रेशा या रोआँ जो नुकीला हो (को०)। ७ नोक। नुकीला अग्रभाग (को०)। ८. मृदुता। करुणा। कोमलता (को०)। ९ श्मश्रु। दाढ़ी (को०)। १० शोक। दु ख (को०)।

शूकक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का रस नामक धातु। २ टूँड (को०)। ३. दया। दयालुता (को०)। ४. एक प्रकार का अन्न (को०)। ५ पावस। प्रावृट्। वर्षा (को०)।

शूककीट, शूककीटक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का रोएँदार कीडा।

शूकज—संज्ञा पु० [सं०] जवाखार। यवक्षार।

शूकतृण—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की घास जो दुर्बल पशुओ के लिये बहुत बलकारक मानी जाती है। इसे शूकडी या चोरहुली भी कहते हैं।

शूकदोष—संज्ञा पु० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'-५।

शूकधान्य—संज्ञा पु० [सं०] वह अन्न जिसके दाने बालो या सीकों में लगते है। जैसे, गेहूँ, जौ आदि।

शूकपत्र—संज्ञा पु० [सं०] वह साँप जिसमे विष न होता हो। जैसे,—पानी का साँप या डेडहा।

शूकपाक्य—संज्ञा पु० [सं०] जवाखार। शूकज।

शूकपिंडि, शूकपिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकपिण्डि, शूकपिण्डी] कपि-कच्छु। किवाछ। कौंछ।

शूकर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १ सूअर। वाराह। उ०—भजन बिनु कूकर शूकर जैसो।—सूर (शब्द०)। २ विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार। विशेष दे० 'वाराह'।

शूकरकंद—संज्ञा पुं० [सं० शूकरकन्द] वाराही कंद।

शूकरक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। उ०—मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा जो शूकरखेत। समुझी नहिं तस बालपन तब अति रहेउँ अचेत।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, भगवान् विष्णु ने वाराह अवतार धारण करने पर हिरण्यकेशी (हिरण्याक्ष) को यहीं मारा था। आजकल यह स्थान सोरो नाम से प्रसिद्ध है।

शूकरदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअरडाढ़ कहते हैं।

विशेष—यह रोग प्रायः बालकों को होता है। इसमें दाह सहित सूजन हो जाती है, जो पकती, पीड़ा करती और खुजलाती है, और इसके विकार से ज्वर उत्पन्न होता है।

शूकरपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोलशिंबी। सेम की फली।

शूकरशिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकरशिम्बी] सेम की फली।

शूकराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकराक्रान्ता] वराहक्रांता। खैरी साग।

शूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअर की मादा। सुअरी। वाराही। २ खैरी साग। वाराहक्रांता। वाराहीकंद। गेंठी। ४ सुइँस या सूँस नामक जलजंतु। ५ विधारा।

शूकरेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कसेरू। २ मोथा। मुस्तक।

शूकरोग—संज्ञा पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'—५।

शूकल—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जो जल्दी चौंक या भड़क जाता हो।

शूकवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। किवाँच। कौंछ।

शूकवान्—वि० [सं० शूकवत्] १ नुकीला। टूंडवाला। २ दाढ़ीवाला [को०]।

शूकशिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकशिम्बा] कपिकच्छु। किवाँच। कौंछ।

शूकशिंबिका, शूकशिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकशिम्बिका, शूकशिम्बी] कौंछ। केवाँच।

शूकशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूकशिंबा। केवाँच [को०]।

शूका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ।

शूकाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सिरिस। शिरीष।

शूकाढ्य—संज्ञा पुं० [सं०] शूक या शूकरी नामक तृण।

शूकापट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] कहरुवा नामक गोंद जो बरमा की खानों से निकलता और औषध के काम आता है। तृणमणि। विशेष दे० 'कहरुआ—१'।

शूकामय—संज्ञा पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक—५'।

शूकी—वि० [सं० शूकिन्] श्मश्रुल। शूकवाला। टूंडदार [को०]।

शूकुल—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार की सुगंधित घास।

शूक्त—संज्ञा पुं० [सं० शुक्त] सिरका।

शूक्षम(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

शूची—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई। उ०—भक्ति मार तब करत भे, मकर सों परिहास। शूची छिद्र समान वर, देहु नाथ कैलास।—रघुराज (शब्द०)।

शूट—

शूटिंग—१ फिल्म की शूटिंग। २ गोलियाँ आदि चलना। शूट करना। लक्ष्य बनाना।

शूटिंग स्टिक—संज्ञा स्त्री० [अं०] छापेखाने में काम आनेवाली एक लकड़ी जो प्रायः एक बालिश्त लंबी होती है।

विशेष—इसके मुँह पर एक गड्ढेदार पीतल की सामी होती है। इसी में गुल्ली अड़ाकर ठोंकते हैं जिससे वह चूले पर चढ़कर टाइप को कस देती है। किसी किसी में स्टिक सामी नहीं भी होती।

शूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिवृद्धि। बढ़नी [को०]।

शूतिपर्णी—संज्ञा पुं० [सं०] अमलतास। आरग्वध वृक्ष। धनबहेड़ा।

शूद्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री] १ प्राचीन आर्यों के लोकविधान के अनुसार चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण।

विशेष—इसका कार्य अन्य तीन वर्णों की सेवा करना और शिल्पकला के काम करना माना गया है। यजुर्वेद में शूद्रों की उपमा समाजरूपी शरीर के पैरों से दी गई है, इसीलिये कुछ लोग इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के पैरों से मानते हैं। इनके लिये गृहस्थाश्रम के अतिरिक्त और किसी आश्रम में जाने का निषेध है। आजकल इनमें से कुछ लोग अछूत और अंत्यज समझे जाते हैं। साधारणतः कोई इस वर्ण के लोगों का अन्न ग्रहण नहीं करता।

पर्या०—अवर वर्ण। वृषल। दास। पादज। अंत्यजन्मा। जघन्य। द्विजसेवक। अरयवर्ण, द्विजदास। उपासक। जघन्यज।

२. शूद्र जाति का पुरुष। ३ नैऋत्य कोण में स्थित एक देश का नाम। ४ बहुत ही खराब। निकृष्ट। ५ सेवक। दास।

शूद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' का रचयिता महाकवि। २ शूद्र। (डिं०)। ३ शूद्र जाति का एक व्यक्ति जिसका नाम शंबूक था।

विशेष—कहते हैं, यह रामचंद्र के राजत्व काल में था। एक बार एक ब्राह्मण का पुत्र इसकी तपस्या के कारण मर गया। उसने जाकर रामचंद्र जी के यहाँ प्रार्थना की। नारद आदि ऋषियों ने कहा कि इस राज्य में कोई शूद्र तपस्या कर रहा है, उसी के फलस्वरूप इस ब्राह्मण का पुत्र इसके सामने मरा है। इसपर रामचंद्र जी ने इसका पता लगवाया और तब इसका सिर कटवा डाला।

शूद्रकल्प—वि० [सं०] शूद्र के समान। शूद्र तुल्य [को०]।

शूद्रकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र का कार्य। शूद्रों के लिये विहित कर्तव्य [को०]।

शूद्रकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक शिवलिंग का नाम।

शूद्रक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह भूमि जिसका रंग काला हो और जिसमें अनेक प्रकार की घास, तृण, बबूर के वृक्ष तथा नाना प्रकार के धान उत्पन्न हों।

शूद्रघ्न—वि० [सं०] शूद्र की हत्या करनेवाला [को०]।

शूद्रजन्मा—वि० [सं० शूद्रजन्मन्] शूद्र से उत्पन्न होनेवाला [को०]।

शूद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का भाव या धर्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।

शूद्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र होने का भाव या धर्म। शूद्रता। शूद्रपन।

शूद्रद्युति—संज्ञा पुं० [सं०] नीला रंग जो रंगों में शूद्र वर्ण का माना जाता है। उ०—वैश्य श्वेत मिलि पीत होत घृत बरण रुचिर अति। हरित श्याम मिलि होइ शूद्रद्युति तरु तमाल प्रति।—गुरुदास (शब्द०)।

शूद्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्रों का सरदार। उ०—आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई।—सबलसिंह (शब्द०)।

शूद्रप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] पलाडु। प्याज।

शूद्रप्रेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो।

शूद्रभूयिष्ठ—वि० [सं०] जहाँ शूद्रों की संख्या अधिक हो। (राष्ट्र) जो अत्यधिक शूद्रों से युक्त हो [को०]।

शूद्रभोजी—वि० [सं० शूद्रभोजिन्] शूद्र के यहाँ भोजन करनेवाला [को०]।

शूद्रवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्रश्रेणी या सेवक वर्ग [को०]।

शूद्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का आचरण या पेशा [को०]।

शूद्रशासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ शूद्र राज्य। २ शूद्रों के लिये निर्धारित आचार व्यवहार। ३ शूद्र द्वारा लिखा गया प्रतिज्ञापत्र [को०]।

शूद्रसेवन—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र की सेवा।

शूद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

यौ०—शूद्रापरिणयन = दे० 'शूद्रावेदन'। शूद्राभार्य = जिसकी भार्या शूद्र जाति की हो। शूद्रावेदन। शूद्रावेदी। शूद्रासुत।

शूद्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री।

शूद्रान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूद्र से प्राप्त होनेवाली जीविका। २, शूद्र वर्ण के व्यक्ति द्वारा दिया हुआ अन्न आदि [को०]।

शूद्रार्त्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु वृक्ष। वनिता।

शूद्रावेदन—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करना [को०]।

शूद्रावेदी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूद्रावेदिन्] उच्च वर्ण का वह व्यक्ति जिसने शूद्र जाति की किसी स्त्री के साथ विवाह कर लिया हो। मनु के अनुसार ऐसा व्यक्ति पतित माना जाता है।

शूद्रासुत—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो किसी उच्च वर्ण के व्यक्ति के वीर्य से शूद्रा माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो।

शूद्राह्निक—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र का दैनिक कृत्य [को०]।

शूद्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री। शूद्रा। उ०—सो शूद्री पुनि जन्यो कुमारा। नाम तासु कनि कृष्ण उचारा।—रघुराज (शब्द०)।

शून—वि० [सं०] १ शून्य। २ सूजा हुआ। शोथयुक्त। फूला हुआ (को०)। ३ वर्धित। बढ़ा हुआ (को०)।

शूनकचंचु—संज्ञा पुं० [सं० शूनकचञ्चु] क्षुद्रचञ्चु या छोटा चेंच नाम का साग।

शूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे,—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।

विशेष—इन स्थानों में जीवों की जो हत्या होती है, उसी के दोष के परिहार के लिये ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ और पितृयज्ञ करने की आवश्यकता होती है। विशेष दे० 'पंचसूना' और 'पंच महायज्ञ'।

२ तालु के ऊपर की छोटी जीभ। छोटी जीभ। गलशुंडी। ३ थूहर। स्नुही। ४ वधस्थान। बूचड़खाना (को०)।

शून्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जिसमें कुछ भी न हो। खाली स्थान। २ आकाश। ३ एकांत स्थान। निर्जन स्थान। ४. बिंदु। बिंदी। सिफर। ५ अभाव। राहित्य। कुछ न होना। जैसे,—तुम्हारे हिस्से में शून्य है। ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८ ईश्वर। उ०—कहै एक तासों शिवै शून्य एकै। कहै काल एकै महा विष्णु एकै। कहैं अर्थ एकै परब्रह्म जानो। प्रभा पूर्ण एकै सदा शून्य मानो।—केशव (शब्द०)। ९ कान का एक आभूषण (को०)।

शून्य²—वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. निराकार। उ०—रूप रेख कछु जाके नाहीं। तौ का करब शून्य के माहीं।—विश्राम (शब्द०)। ३ जो कुछ न हो। असत्। ४ विहीन। रहित। जैसे,—संज्ञाशून्य।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्द बनाने में अंत में होता है। जैसे, विवेकशून्य।

५. एकांत। निर्जन (को०)। ६ खिन्न। उदास। उत्साहहीन (को०)। ७. तटस्थ। निरपेक्ष (को०)। ८. निर्दोष (को०)। ९. अर्थहीन। निरर्थक (को०)।

शून्यगर्भ¹—संज्ञा पुं० [सं०] पपीता नामक फल।

शून्यगर्भ²—वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। २ जिसमें कुछ भी सार या तत्व न हो। ३ बेवकूफ। मूर्ख।

शून्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यत्व।

शून्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यता।

शून्यदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूनी निगाह। उदास दृष्टि [को०]।

शून्यपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतरिक्ष। आकाश। व्योम। २. सूना रास्ता। निर्जन मार्ग (को०)।

शून्यपदवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मरंध्र।

शून्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी के रिक्त स्थान पर अस्थायी रूप से काम करता हो। एवजी।

शून्यबहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शून्य+बहरी?] पाँव का सुन्न हो जाना या उसमें झुनझुनी चढ़ना।

शून्यमध्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह पदार्थ जिसके बीच का भाग खाली हो। जैसे,—नल, नरसल नरकट।

शून्यमनस्क—वि० [सं०] अन्यमनस्क। अनमना [को०]।

शून्यमना—वि० [सं० शून्यमनस्] दे० 'शून्यमनस्क' [को०]।

शून्यमय—वि० [सं०] निस्सार। व्यर्थ [को०]।

शून्यमूल¹—संज्ञा पुं० [सं०] सेना की एक प्रकार की सजावट।

शून्यमूल²—वि० कौटल्य के अनुसार (सेना) जिसका वह केंद्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते रहे हों।

शून्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी—संज्ञा पुं० [सं० शून्यवादिन्] १ शून्यवाद का माननेवाला, अर्थात् वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२७। २ बौद्ध। ३ नास्तिक।

शून्यहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। उजाला। २ सोना। स्वर्ण।

शून्यहस्त—वि० [सं०] जिसका हाथ खाली हो। रिक्तपाणि [को०]।

शून्यहृदय—वि० [सं०] १ अनमना। शून्यमना। २ खुले हृदयवाला। विशाल हृदय का। संदेहरहित [को०]।

शून्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नलिका या नली नाम का गंधद्रव्य। २ वंध्या स्त्री। बाँझ औरत, जिसे कोई संतान न होती हो। ३ नरकट। नरसल (को०)। ४ थूहर या स्नुही का वृक्ष।

शून्यालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई न हो। एकांत स्थान।

शून्याशून्य—संज्ञा पुं० [सं०] जीवन्मुक्ति।

शूप—संज्ञा पुं० [सं० शूर्प] बेंत, सीक या बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा चौड़ा पात्र जिसमें रखकर अन्न आदि पछोड़ा जाता है। सूप। फटकनी। उ०—तेहि बन शूप बनावनहारे। बेत लेन इक समय सिधारे।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—इसकी लंबाई के बल में एक सिरे पर कुछ ऊँची लंबी बाढ़ होती है, और दूसरा सिरा बिलकुल खाली रहता है। चौड़ाई के बल में दोनों ओर कुछ ऊँची ढालुआँ बाढ़ होती है जो बिलकुल आगे के सिरे पर पहुँचकर खतम हो जाती है।

शूपकार—संज्ञा पुं० [सं० शूर्पकार] दे० 'सूपकार'।

शूम—संज्ञा पुं० [अ०] 'सूम'।

शूरंगम—संज्ञा पुं० [सं० शूरङ्गम] १. एक प्रकार का समाधि। २ एक बोधिसत्व [को०]।

शूरमन्य—वि० [सं० शूरम्मन्य] अपने आपको वीर समझनेवाला [को०]।

शूर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। भट। सिपाही। ३. सूर्य। ४. सिंह। ५. सूअर। शूकर। ६. चीता। ७ शाल। साखू। ८ बदहर। लकुच। ९ मसूर। मांगल्य। १० चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ११ आक। मदार। १२. कृष्ण के पितामह का नाम। १३ विष्णु का एक नाम। १४ जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक देश का नाम। १५ श्वान। कुत्ता (को०)। १६ कुक्कुट। मुर्गा (को०)।

शूर²—वि० [सं०] योद्धा। बहादुर। शौर्यशक्तियुक्त। [को०]।

शूरकीट—संज्ञा पुं० [सं०] कमजोर या साधारण कोटि का वीर।

शूरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूरन। ओल। जमींकंद। विशेष दे० 'सूरन'। २ श्योनाक वृक्ष।

शूरणोद्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] हरियल या हारिल नाम का पक्षी।

शूरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूर होने का भाव या धर्म। शौर्य। बहादुरी। वीरता।

शूरताई—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'शूरता'।

शूरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शूर होने का भाव या धर्म। शूरता। वीरता। बहादुरी।

शूरदेव—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार भविष्य में होनेवाले चौबीस अर्हतों में से एक अर्हत का नाम।

शूरन—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सूरन'।

शूरपुत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अदिति का एक नाम।

शूरबल—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

शूरभू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूरभूमि'।

शूरभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] उग्रसेन की एक कन्या का नाम।

विशेष—भागवत में लिखा है कि वसुदेव के छोटे भाई श्यामक ने इसके साथ विवाह किया था, और उनके वीर्य से इसके गर्भ से हरिकेश और हिरण्याक्ष नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे।

शूरमान—संज्ञा पुं० [सं०] अभिमान। अहंकार [को०]।

शूरमानी—संज्ञा पुं० [सं० शूरमानिन्] वह जिसे अपनी शूरता का बहुत अभिमान हो। अपनी बहादुरी पर बहुत भरोसा रखनेवाला।

शूरवाणेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

शूरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का शून्यवाद का सिद्धांत [को०]।

शूरवादी—वि० [सं० शूरवादिन्] १. बौद्ध। २ नास्तिक [को०]।

शूरविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्ध आदि करने की विद्या।

शूरवीर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।

शूरवीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शौर्य। बहादुरी।

शूरश्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] वीरों के वीरतापूर्ण कृत्यों की कहानी। वीरगाथा।

शूरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २ मथुरा और उसके आस पास के प्रदेश का प्राचीन नाम जहाँ राजा शूरसेन का राज्य था।

शूरसेनप—संज्ञा पुं० [सं०] शूरवीरों की सेना का पालन करनेवाले, कार्तिकेय।

शूरसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूरसेन राजा का पुरी। मथुरा नगरी एक का नाम [को०]।

शूरा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षीरकाकोली नामक अष्टवर्गीय अ.षधि।

शूरा (पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० शूर] सामंत। वीर। उ०—पैठि गुफा मे सब जग देखै, बाहर कछू न सूझै। उलटा बान पारथिव लागे, शूरा होय सो बूझै।—कबीर (शब्द०)।

शूरा[3]—संज्ञा पुं० [सं० शूर (=सूर्य) अथवा सूर्य] सूर्य। उ०—जहाँ चंद न शूरा, तारा नहि जहाँ मोरनिया।—कबीर (शब्द०)।

शूरिमृग—संज्ञा पुं० [सं०] वाराह आदि जंगली पशु।

शूर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ गेहूँ, चावल आदि अन्न पछोड़ने के लिये बना हुआ बाँस या सीक का पात्र। सूप। २ एक प्राचीन तौल जो २०४८ तोले या ३२ सेर की होती थी।

शूर्पक—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जो किसी किसी के मत से कामदेव का शत्रु और किसी किसी के मत स उसका पुत्र था।

शूर्पकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी, जिसके कान सूप के समान होते है। २. गणेश। ३ एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शूर्पकाराति—संज्ञा पुं० [सं०] शूर्पक राक्षस का शत्रु, कामदेव।

शूर्पकारि—संज्ञा पुं० [सं०] शूर्पक नामक राक्षस का शत्रु, कामदेव।

शूर्पखारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की तौल जो १६ द्रोण की होती थी [को०]।

शूर्पणखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहिन थी।

विशेष—कहते हैं, इसके नख सूप के समान थे। राम के वनवास के समय काम से पीड़ित होकर यह राम के पास उनके साथ विवाह करने की इच्छा से गई थी। वहाँ राम के इशारे से लक्ष्मण ने इसकी नाक और कान काट लिए थे। इसी का बदला लेने के लिये रावण सीता को हर ले गया था।

शूर्पणखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सूर्पणखा'।

शूर्पणाय—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शूर्पनखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूर्पणखा'।

शूर्पपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बन मूँग। बन उर्द।

शूर्पवात—संज्ञा पुं० [सं०] सूप की हवा। अनाज फटकते के समय शूर्प से उत्पन्न हवा [को०]।

विशेष—बच्चों को सूप की हवा लगना अशुभ माना जाता है।

शूर्पश्रुति—संज्ञा पुं० [सं०] हस्ती। हाथी।

शूर्पा—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर्प या शूर्पी] बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

शूर्पाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणी भारत के एक पर्वत का नाम। इसे कुछ लोग सूर्याद्रि भी कहते हैं।

शूर्पारक—संज्ञा पुं० [सं०] बंबई प्रांत के थाना जिले के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूर्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा सूप। सुपेली। २ शूर्पणखा का एक नाम। ३ बच्चों के खेलने का एक खिलौना [को०]।

शूर्म—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूर्मि] १ लोहे की बनी हुई मूर्ति। २. निहाई।

शूर्मि, शूर्मिका, शूर्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूर्म' [को०]।

शूल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो प्राय. बरछे के आकार का होता था। २ सूली जिससे प्राचीन काल के लोगों को प्राणदंड दिया जाता था। ३ दे० 'त्रिशूल'। ४ कोई बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द।

विशेष—यह दर्द प्राय पेट, पसली, कलेजे या पेड़ू आदि मे होता है। वैद्यक के अनुसार बहुत अधिक व्यायाम या मैथुन करने, घाड़े पर चढ़ने, रात के समय जागने, बहुत अधिक ठढा जल पीने, रूखे द्रव्यों का सेवन करने, सूखा मास खाने, विरुद्ध भोजन करने, शारीरिक वेगों को रोकने, बहुत अधिक शोक या उपवास करने अथवा बहुत अधिक हँसने के कारण वायु का प्रकोप होता है जिससे पेट मे या उसके आस पास बहुत तीव्र पीड़ा होती है। इस पीड़ा मे ऐसा अनुभव होता है कि कोई अंदर से बहुत नुकीला काटा या शूल गड़ा रहा है, इसी से इसे शूल कहते हैं। यह रोग आठ प्रकार का—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आमज, वातश्लैष्मिक, पित्तश्लैष्मिक और वातपैत्तिक—कहा गया है, और इसे शात करने के लिये स्वेद, अभ्यंग, मर्दन और स्निग्ध तथा उष्ण द्रव्यों के सेवन का विधान है।

६. किसी नुकीली वस्तु के चुभने के समान होनेवाली पीड़ा। कोच। टीस। ७. पीड़ा। क्लेश। दु.ख। दर्द। उ०—(क) तुम लछिमन निज पुरहि सिधारो बिछुरन भेट देहु लघु बंधु जियत न जैहै शूल तुम्हारो।—सूर (शब्द०)। (ख) मन तोसों कोटिक बार कही। समुझ न चरण गहत गोविंद के उर अघ शूल सही।—सूर (शब्द०)। ८ ज्योतिष मे विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों के अंतर्गत नवाँ योग।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस योग मे जन्म लेता है, वह डरपोक, दरिद्र, मूर्ख, विद्याहीन, शूलरोगी, दूसरों का अनिष्ट करनेवाला और अपने बंधु बांधव को शूल के समान खटकनेवाला होता है। इस योग मे किसी प्रकार का शुभ काम करने का निषेध है।

९. छड़। सलाख। सीख। उ०—खाने को बहुधा शूल पर भुना हुआ मास मिलता है, सो भी कुसमय।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। १० मृत्यु। ११. झंडा। पताका। १२. पोस्ते की पत्तियों की वह तह जो अफीम की चक्की जमाने के समय उसके चारों

ओर ओर ऊपर नीचे लगाई जाती है। (बंगाल)। १३ ग्रंथि वात। गठिया (को०)।

शूल²—वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।

शूलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २ दुष्ट या पाजी घोडा। शकल।

शूलकार—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक नीच जाति का नाम।

शूलगजकेसरी रस—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विशेष—यह रस शुद्ध गधक, पारे, कटवबेधी, ताँबे के पत्र आदि के योग से तैयार किया जाता है और शूल रोग के लिये गुणकारी माना जता है।

२ वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली।

विशेष—इसके लिये कौडियो की राख, शुद्ध सिंगी मुहरा, सेंधा नमक, काली मिर्च, पिप्पली इन सब का चूर्ण कर पान के रस मे एक रत्ती के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। ये गोलिया शूल का नाश करती ह।

शूलगव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

शूलगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] मदरास प्रात के एक पर्वत का नाम।

शूलग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० शूलग्रन्थि] माला दूब।

शूलग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ मे त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव।

शूलग्राही—संज्ञा पुं० [सं० शूलग्राहिन्] शिव। महादेव।

शूलघातन—संज्ञा पुं० [सं०] मडूर। लौहकिट्ट।

शूलघ्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] तुंबुरु वृक्ष।

शूलघ्न²—वि० शूल को शमन करनेवाला [को०]।

शूलघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सज्जी मिट्टी। सजिखार। २. नरसल जैसा एक पौधा (को०)।

शूलदावानल रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विशेष—यह दो तरह से बनता है—(१) शुद्ध पारा, शुद्ध सींगी मुहरा, काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ, भुनी हींग, पाँचो नमक, इमली का खार, जभीरी का खार, शखभस्म और नीबू के रस के योग से बनता है और शूल रोग का तत्काल दूर करता है। (२) शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, सिंगी मुहरा, पिप्पली, भूनी हींग, पाँचो नमक, इमली के खार और नीबू के रस मे भुने हुए शख की राख तथा नीबू के रस से बनता है और शूल, अजीर्ण, उदररोग और मदाग्नि को दूर करता है।

शूलद्विट्—संज्ञा पुं० [सं० शूलद्विष्] हींग। हिंगु।

शूलधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० शूलधन्वन्] शिव। महादेव।

शूलधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। शंकर। उ०—गगाधर हर शूलधर, ससिधर शकर बाम। सर्वेस्वर भव शभु शिव, रुद्र कामरिपु नाम।—नद (शब्द०)।

शूलधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शूलधारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। शूलधरा।

शूलधारी—संज्ञा पुं० [सं० शूलधारिन्] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव। महादेव। उ०—सध्यावन्दि पूजन जब होइ शूलधारी को, दुदुभि की ठौर दीजो गरज सुनाइ कै।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

शूलधृक्¹—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

शूलधृक्²—संज्ञा स्त्री० दुर्गा [को०]।

शूलना(पु)—क्रि० अ० [हिं० शूल+ना (प्रत्य०)] १ शूल के समान गडना। २. दुःख देना। पीडा देना। कष्ट देना। उ०—(क) सो सुधि यदुनदन नहिं भूलत। सुमिरि सुमिरि अजहूँ, उर शूलत।—सरल (शब्द०)। (ख) लै लै पिय को नाम ठाँव हमरो नहिं छाडै। कठिन तुम्हारो बोल जाइ हिरदै मे शूलै।—गिरधर (शब्द०)।

शूलनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौवर्चल लवण। २ हींग। ३. पुष्करमूल। ४ वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण।

विशेष—यह चूर्ण शखभस्म, करजमूल, भूनी हींग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और सेंधा नमक के योग से बनाया जाता है और इसका व्यवहार प्राय शूलरोग मे किया जाता है।

शूलनाशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूलरोग का नाश करनेवाली, हींग।

शूलनाशिनी वटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली।

विशेष—इसके लिये हड का छिलका, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध कुचला, शुद्ध गधक, भूनी गधक, भूनी हींग, सेंधा नमक जल से खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। कहते हैं कि प्रात काल इसे गरम जल के साथ सेवन करने से संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मदाग्नि आदि दूर होती है।

शूलनाशी—संज्ञा पुं० [सं० शूलनाशिन्] हींग।

शूलनिर्मूलन—संज्ञा पुं० [सं०] दुःख का नाश करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ मे शूल धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपानि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शूलपाणि] शिव। महादेव। उ०—दारिद्रदमन, दुखदोष दाह—दावानल, दुनि न दयालु दूजो दानि शूलपानि सो।—तुलसी (शब्द०)।

शूलपाल—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्यालय का रक्षक [को०]।

शूलप्रोत—संज्ञा पुं० [सं०] नरक के एक भाग का नाम।

शूलभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] शूलधारी शिव [को०]।

शूलमर्द्दन—संज्ञा पुं० [सं०] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

शूलयोग—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के २७ योगो मे से एक योग। विशेष दे० 'शूल'—८।

शूलशत्रु—संज्ञा पुं० पुं० [सं०] रेंड का पेड़।

शूलशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] पेट की गड़गड़ाहट के कारण होनेवाला शब्द।

शूलस्थ—वि० [सं०] शूली पर चढ़ा हुआ [को०]।

शूलहंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० शूलहन्त्री] शूल का नाश करनेवाली, अजवाइन। यवानी।

शूलहर—संज्ञा पुं० [सं०] पुष्करमूल।

शूलहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ में शूल धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] हिंगु। हींग।

शूलांक—संज्ञा पुं० [सं० शूलाङ्क] शिव। महादेव।

शूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। रंडी। २. सूली जिसके द्वारा प्राचीन काल में लोगों को प्राणदंड दिया जाता था। ३ छड़। सीख। सलाख।

शूलाकृत—संज्ञा पुं० [सं०] लोहे की सीख में खोंसकर भूना हुआ मांस। सीख पर भूना हुआ मांस। कबाब आदि।

शूलारि—संज्ञा पुं० [सं०] हिंगोट। इंगुदी वृक्ष।

शूलि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम। महादेव।

शूलि[२]—वि० शूल या कुंत धारण करनेवाला [को०]।

शूलि[३]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सूली'।

शूलिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ खरगोश। खरहा। २. सीख में गोदकर पकाया हुआ मांस। कबाब। ३ फाँसी देनेवाला। सूली देनेवाला। उ०—इन मघादि तीसरे मंडल के दैत्यगुरु यदि और किसी ग्रह से युक्त जाँय तो पेड़ों के समूह, शबर, शूद्र, पुंड्र, पश्चिम की सीमा का अन्त, शूलिक, वनवासी, द्रविड, समुद्र के पुरुषों का नाश हो जाता है।—बृहत्संहिता (शब्द०)। ४ कुक्कुट। मुर्गा (को०)। ५ ब्राह्मण या क्षत्रिय की वह जारज संतति जो शूद्रा से उत्पन्न हो (को०)।

शूलिक[२]—वि० १ प्रासधारी। शूल धारण करनेवाला। २ सलाख पर भुना हुआ [को०]।

शूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीख में गोदकर भूना हुआ मांस। कबाब। २ वह सीख जिसमें गोदकर मांस भूना जाता है (को०)।

शूलिकाप्रोत—संज्ञा पुं० [सं०] १ भांडीर वृक्ष। वट का वृक्ष। २. गूलर का पेड़। उदुंबर।

शूलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा का एक नाम जो त्रिशूल धारण करनेवाली मानी जाती हैं। २ पान। नागवल्ली। ३ पुत्रदात्री नाम की लता।

शूली[१]—संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] १ त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव। महादेव। उ०—शृंगी शूली धूरजटी, कुंडलीश त्रिपुरारि। वृषा कपर्दी मानहर, मृत्युंजय कामारि।—सबल (शब्द०)। २. खरगोश। शशक। खरहा। ३ शूलरोग से पीड़ित व्यक्ति। वह जिसे शूलरोग हुआ हो। ४. एक नरक का नाम। उ०—(क) तेरहो शूली नरक कहावै। शूली सम दुख तामे पावै। जो नर पाप करै अधिकाई। करि शिकार मृग मारै जाई।—विश्राम (शब्द०)। (ख)—काहू को शस्त्रन ते मारै। तेहि यम शूली नरक मे डारै।—विश्राम (शब्द०)। ५ कुंतधारी व्यक्ति। वह जो शूल धारण किए हो (को०)।

शूली[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सूली'। उ०—नाहक नर शूली धरि दीन्हो। जिन बन माहि ठगाही कीन्हो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) कौन पाप मैं ऐसो कियो। जाते मोकूँ शूली दियो।—सूर (शब्द०)।

शूली[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] पीड़ा। शूल। उ०—सो सुधि भूप हिये महँ भूली। अजहूँ उठत जासु ते शूली।—सबल (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठना।

शूली[४]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास। शूलीपत्री।

विशेष—इस घास को पशु बड़े चाव से खाते है और इसका व्यवहार औषध रूप में भी होता है। वैद्यक के अनुसार यह किंचित उष्ण, गुरु, बलकारक, पित्त तथा दाहनाशक और गौओं तथा भैंसों का दूध बढ़ानेवाली मानी जाती।

शूलोत्खा, शूलोत्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमराजी लता। बकुची।

शूल्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सीख में बेधकर पकाया हुआ मांस। कबाब।

शूल्य[२]—वि० १. सीख पर भूना हुआ। २ शूली पर चढ़ाए जाने या शूली पाने योग्य [को०]।

शूल्यपाक—संज्ञा पुं० [सं०] कबाब।

शूल्यमांस—संज्ञा पुं० [सं०] कबाब।

शूल्यवाण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की भूतयोनि जिसका मान वैदिक काल में होता था।

शूष[१]—वि० [सं०] १ गुंजायमान। २ साहसी (को०)।

शूष[२]—संज्ञा पुं० १ गुंजित होता हुआ स्वर। २ साहस। शक्ति। वेग [को०]।

शृंखल—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खल] १ एक प्रकार का आभरण जो प्राचीन काल में पुरुष लोग कमर में पहनते थे। मेखला। २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जंजीर। साँकल। सिक्कड़। उ०—अंकुस घट सुशृंखल जेऊ। चौदह सहस महा गज लेऊ।—पद्माकर (शब्द०)। ३ हथकड़ी बेड़ी। ४ नियम। ५ मापने की जंजीर (को०)। ६ परंपरा। सिलसिला (को०)। ७ बंधन (को०)।

शृंखलक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खलक] १ ऊँट। २. दे० 'शृंखल'। ३ वह जानवर जिसके पैर बँधे हो (को०)।

शृंखलता—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खलता] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।

शृंखलबद्ध—वि० [सं० शृङ्खलबद्ध] १. नियमबद्ध। २. बंधन या जंजीर से बँधा हुआ [को०]।

शृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] १ क्रम। सिलसिला। २ जंजीर। साँकल। ३ पुरुष का कटिबंधन वस्त्र। मेखला। ४ चाँदी का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं। करधनी। तागडी। ५ श्रेणी। कतार। ६ एक प्रकार का अलंकार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन शृंखला के रूप में सिलसिलेवार किया जाता है।

शृंखलाबद्ध—वि० [सं० शृङ्खलाबद्ध] १. जो क्रम से हो। सिलसिलेवार। २ जो शृंखला से बँधा हुआ हो।

शृंखलि—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खलि] कोकिलाक्ष। तालमखाना।

शृंखलित—वि० [सं० शृङ्खलित] १ क्रमबद्ध। श्रेणीबद्ध। सिलसिलेवार। २ पिरोया हुआ। ३ निगडित। शृंखलाबद्ध (को०)।

शृंखली—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खली] कोकिलाक्ष।

शृंग¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २ गो, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग। उ०—भक्ति बिन बैल बिराने ह्वै हो। पाउ चारि सिर शृंग गुंग मुख तब कैसे गुण गैहो।—सूर (शब्द०)। ३ कँगूरा। उ०—जो कांचनीय रथ शृंग मयूर माली। जाके उदार उर षण्मुख शक्तिशाली।—केशव (शब्द०)। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। सिंगी बाजा। उ०—कस ताल करताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग। मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग।—सूर (शब्द०)। ५ कमल। पद्म। ६ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ७ सोंठ। ८ अदरक। आदी। ९ अगर। १० प्रभुत्व। प्रधानता। ११ काम की उत्तेजना। १२ चिह्न। निशान। १३ स्तन। छाती। १४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। वि० दे० 'ऋष्यशृंग'। १५ पानी का फौवारा या पिचकारी। १६ कूर्चशीर्षक वृक्ष (को०)। १७ उत्तुंगता। ऊँचाई (को०)। १८ चंद्रचूडा। चाँद की नोक (को०)। १९ किसी वस्तु का अग्रभाग। नोक (को०)। २० कोटि। चाप के सिरे का नुकीला अंश (को०)। २१ अभिमान। आत्मश्लाघा (को०)। २२ बाण का नुकीला दंड। बाणकांड (को०)। २३ एक प्रकार का सेना का व्यूह (को०)। २४ हाथी का दाँत (को०)। २५ उत्कर्ष। अभ्युदय (को०)।

शृंग²—वि० नुकीला। तीक्ष्ण। तेज।

शृंगकंद—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गकन्द] सिंघाडा।

शृंगक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गक] १ जीवक वृक्ष। २ सिंगिया नामक विष। ३ सींग (को०)। ४ चंद्रमा की नोक। चंद्रचूडा (को०)। ५ कोई भी नुकीला पदार्थ (को०)। ६ पिचकारी (को०)।

शृंगकूट—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गकूट] एक पर्वत का नाम।

शृंगगिरि—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गगिरि] दे० 'शृंगकूट'।

शृंगग्राहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उचित मार्ग। सीधा मार्ग। सरल विधि। २ एक न्याय। दे० 'शृंगग्राहिता न्याय'।

शृंगग्राहिता न्याय—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गग्राहिता न्याय] एक न्याय जिसका उपयोग उस समय होता है, जब किसी कठिन काम का एक अंश हो जाने पर शेष अंश का संपादन उसी प्रकार सहज हो जाता है, जिस प्रकार सींग मारनेवाले बैल का एक सींग पकड लेने पर दूसरा सींग भी पकड लेना सहज हो जाता है।

शृंगज¹—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गज] १ अगर। अगरु। २ शर। तीर।

शृंगज²—वि० १. शृंगनिर्मित। २ शृंग से उत्पन्न (को०)।

शृंगधर—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गधर] पर्वत। पहाड (को०)।

शृंगनाभ—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गनाभ] एक प्रकार का विष।

शृंगनाम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गनाम्नी] काकडासिंगी। कर्कटशृंगी।

शृंगपुर—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गपुर] दे० 'शृंगवेरपुर'।

शृंगप्रहारी—वि० [सं० शृङ्गप्रहारिन्] सींग से प्रहार करनेवाला (को०)।

शृंगप्रिय—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गप्रिय] शिव (को०)।

शृंगभेदी—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गभेदिन्] गुंदा नामक तृण।

शृंगमूल—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गमूल] सिंघाडा।

शृंगमोही—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गमोहिन्] चंपक वृक्ष। चंपा।

शृंगरुह—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गरुह] सिंघाडा।

शृंगला—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गला] मेढासिंगी।

शृंगवत्—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवत्] पुराणानुसार कुरुवर्ष की सीमा पर के एक पर्वत का नाम।

शृंगवाद्य—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवाद्य] सिंघा। सींग का बना बाजा। सिंगी।

शृंगवान्¹—वि० [सं० शृङ्गवत्] शिखरयुक्त। शृंगयुक्त। चोटीवाला (को०)।

शृंगवान्²—संज्ञा पुं० १ पर्वत। २ शृंगवत् नामक गिरि (को०)।

शृंगवृष—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवृष] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शृंगवेर—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेर] १ आदी। अदरक। २ सोंठ। ३ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ४. दे० 'शृंगवेरपुर'।

शृंगवेरक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेरक] १ अदरक। आदी। २. सोंठ।

शृंगवेरपुर—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेरपुर] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम। उ०—(क) ता दिन शृंगवेरपुर आए। राम सखा ते समाचार सुनि बारि बिलोचन छाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) छलि पुरबासिन को आए शृंगवेरपुर खबरि निषाद राजै कोऊ कही जाइकै।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—रामचंद्र के समय में यह निषाद राजा गुह की राजधानी थी। संभवत प्रतापगढ जिले का सिंगरौरा (आधुनिक इलाहाबाद जिले का गंगातट पर बसा हुआ सिंगरौर) नामक गाँव ही प्राचीन शृंगवेरपुर है। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में इसका एक नाम सिंगरौर भी आया है।

शृंगवेराभमूल—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवेराभमूल] मुदा नामक तृण।

शृंगवेरिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गवेरिका] गोभी।

शृंगसुख—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गसुख] सिंगी या सिंघा नामक बाजा।

शृंगाट—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाट] १. सिंघाडा। २. गोखरू। ३ कँटाई। विककत। ४ कामरूप देश के एक पर्वत का नाम। ५. चौराहा। चौमुहानी।

शृंगाटक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाटक] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था। २ एक मर्मस्थान जो मस्तक मे उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से संबध रखनेवाली चारो शिराएँ मिलती हैं।

विशेष—कहते है, यह मर्मस्थान चार अगुल का होता है और इसके चारो ओर से चारो शिराएँ निकलती हैं, इसी से इसे शृंगाटक कहते हैं। यह भी माना जाता है कि इस स्थान पर चोट लगने से तुरत मृत्यु हो जाती है।

३ सिंघाडा। दे० 'शृंगाट'। ४. तीन चोटियोंवाला पहाड (को०)। ५ द्वार। दरवाजा (को०)। ६ एक प्रकार का सिंघाडे के आकार का पकवान। समोसा (को०)। ७ चौराहा (को०)। ८. काँटा। कटक (को०)।

शृंगाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गाटिका] चौमुहानी। चौराहा।

शृंगाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गाटी] जीवती।

शृंगार—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गार] १ साहित्य के अनुसार नौ रसो मे से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है और प्रधान माना जाता है। उ०—जाको थायी भाव रस, सो शृंगार सुहोत। मिलि विभाव अनुभाव पुनि संचारिन के गोत।—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—इसमे नायक नायिका के परस्पर मिलन के कारण होनेवाले सुख की परिपुष्टता दिखलाई जाती है। इसका स्थायी भाव रति है। आलंबन विभाव नायक और नायिका हैं। उद्दीपन विभाव सखा, सखी, वन, बाग आदि, विहार, चंद्रचंदन, भ्रमर, झंकार, हाव भाव, मुसक्यान तथा विनोद आदि हैं। यही एक रस है जिसमे संचारी विभाव, अनुभाव सब भेदो सहित होता है, और इसी कारण इसे रसराज कहते हैं। इसके देवता विष्णु अथवा कृष्ण माने गए हैं और इसका वर्ण श्याम कहा गया है। यह दो प्रकार का होता है—एक संयोग और दूसरा वियोग या विप्रलंभ। नायक नायिका के मिलने को संयोग और उनके बिछोह को वियोग कहते हैं।

२. स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित और चित्ताकर्षक बनाना। सजावट। संग सखी मोहे विधि बारा। कीन्हे तन षोडश शृंगारा।—रघुनाथ (शब्द०)।

विशेष—शृंगार १६ कहे गए हैं—अंग मे उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना, सेंदुर से माँग भरना, महावर देना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, अरगजा आदि सुगंधित वस्तुओं का प्रयोग करना, आभूषण पहनना, फूलों की माला धारण करना, पान खाना, मिस्सी लगाना। जैसे—अग शुची मंजन वसन, माँग महावर केश। तिलक भाल तिल चिबुक मे भूषण मेंहदी वेश। मिस्सी काजल अरगजा, बीरी और सुगंध। पुष्प कली युत होय कर, तब नव सप्त निबंध।

३ किसी चीज को दूसरे सुदर उपकरणों से सुसज्जित करना। सजावट। बनाव चुनाव। ४ भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमे भक्त अपने आप को पत्नी के रूप मे और अपने इष्टदेव को पति के रूप मे मानते हैं। उ०—शांत दास्य सख्य वात्सल्य और शृंगारु चारु पाँचो रस सार विस्तार नीके गाए हैं।—नाभादास (शब्द०)। ५ वह जिससे किसी चीज की शोभा बढती हो। उ०—यशुमति कोखि सराहि बलैया लेन लगीं ब्रजनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रज को शृंगार।—सूर (शब्द०)। ६ लौंग। ७ सेंदुर। ८. अदरक। ९. चूर्ण। चूरन। १०. काला अगर। ११. सोना। १२ रति। मैथुन। १३ हाथी की सूँड पर निर्मित सिंदूर की रेखाएँ (को०)।

शृंगारक[1]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारक] १ सेंदुर। २ लौंग। ३. अदरक। आदी। ४ काला अगर।

शृंगारक[2]—वि० सींग का बना हुआ। शृंग से निर्मित। सींग सबंधी (को०)।

शृंगारगर्व—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारगर्व] १. प्रेम का गर्व। २. सजावबनाव का अभिमान।

शृंगारचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गारचेष्टा] शृंगारजन्य क्रिया। कामचेष्टा। अनुराग, रति, सभोग आदि को व्यक्त करना (को०)।

शृंगारचेष्टित—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारचेष्टित] दे० 'शृंगारचेष्टा'।

शृंगारजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारजन्मन्] कामदेव या मदन का एक नाम।

शृंगारण—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारण] १. किसी रूपवती स्त्री को देखकर उसपर अपनी कामवासना प्रकट करने की क्रिया। प्रेम प्रदर्शन। मुहब्बत जतलाना। २ शृंगार करना। सजाना। सिंगारना।

शृंगारधारी—वि० [सं० शृङ्गारधारिन्] जिसका शृंगार हुआ हो। जो सजाया गया हो। रंगबिरंगी रेखाओं और भूषणों से शोभित।

शृंगारना—क्रि० स० [सं० शृङ्गार से नाम०] आभूषण आदि से या और किसी प्रकार सँवारना। शृंगार करना। सजाना।

शृंगारभाषित—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारभाषित] प्रेमालाप। प्रणयवार्ता। केलिसलाप (को०)।

शृंगारभूषण—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारभूषण] १. सेंदुर। सिंदूर। २ हड़ताल।

शृंगारमंडल—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारमण्डल] १ ब्रज का एक स्थान जहाँ पर श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था।

२ वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलकर कामक्रीडा करते हो। क्रीडास्थल।

शृगारयोनि—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारयोनि] मदन या कामदेव का एक नाम।

शृगार रस—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार रस] साहित्य शास्त्र के ६ रसो मे पहला रस। विशेष दे० 'शृगार'—१।

शृगारलज्जा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारलज्जा] प्रेम वा कामजन्य अनुरक्ति के कारण उत्पन्न लज्जा (को०)।

शृगारविधि—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गार विधि] दे० 'शृगारवेश'।

शृगारवेश—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारवेश] वह सुदर वेश जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।

शृगारसहाय—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार सहाय] नायक नायिका के प्रेम व्यापार मे सहायता देनेवाला व्यक्ति। प्रेम व्यापार मे मध्यस्थ रहनेवाला व्यक्ति। नर्मसचिव (को०)।

शृगारहाट—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गार+हिं० हाट] १ वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हो। चकला। उ०—पुनि शृंगारहाट भल देसा। किए सिगार बैठि तहँ बेसा।—जायसी (शब्द०)। २ वह बाजार जहाँ शृगार की वस्तुएँ बिकती हो।

शृगारिक—वि० [स० शृङ्गारिक] शृगार सबधी। उ०—ललित लताओ को पहले के अपने सब शृगारिक भाव। हरिणा, नारियो को नयनो की चचलता का सहज स्वभाव।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

शृंगारिणी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारिणी] १ शृगार करनेवाली स्त्री। शृगारप्रिय। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक पाद मे चार रगण (ऽऽ) होते हैं। इसको 'स्रग्विणी', 'कामिनी', 'मोहन', 'लक्ष्मीधारा' और 'लक्ष्मीधर' भी कहते है।

शृगारित—वि० [स० शृङ्गारित] १ जिसका शृगार किया गया हो। सजाया हुआ। सँवारा हुआ। २ भूषित। सज्जित। सजा हुआ (को०)। ३ प्रेमाभिभूत। कामाभिभूत (को०)। ४ चित्रित। रँगा हुआ (को०)।

शृंगारिया—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो देवताओ आदि का शृंगार करता हो। २ नाटक, लीला आदि मे मेक अप करनेवाला। वह जो लीला की मूर्तियो का शृगार करता हो। ३. वह जो तरह तरह के भेस बनाता हो। बहुरूपिया।

शृगारी¹—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारिन्] १ सुपारी। २ मानिक। चुन्नी। ३ हाथी। ४ शृगारयुक्त वा कामोत्तेजनायुक्त व्यक्ति (को०)। ५ वेशभूषा। सजावट (को०)। ६ पान का बीडा बनाना (को०)। ७ सुदर वेशभूषा वाला या सजा हुआ व्यक्ति (को०)।

शृंगारी²—वि० १. प्रेमासक्त। २. शृगार या प्रेम सबधी। ३ सिंदूर या गेरू से चित्रित (को०)।

शृगारुहा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारुहा] सिघाडा। शृगाटक।

शृगालिका, शृगाली—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गालिका, शृङ्गाली] विदारीकद।

शृंगाह्व—सज्ञा पु० [स० शृङ्गाह्व] १ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ सिघाडा।

शृगाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गाह्वा] १. जीवक। शृंगाह्व। २. सिघाडा।

शृगि¹—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गि] सिगी मछली।

शृगि²—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गि] आभूषण मे प्रयुक्त वा आभूषण तैयार करने का सोना (को०)।

शृगि³—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] वह पशु जिसके सिर पर सीग हो। सीगवाला जानवर। उ०—नखी, नदी और शृंगी जो धरत शस्त्र निज पास। राजवस औ नारि मे कर न कबहुँ विश्वास।—सीताराम (शब्द०)।

शृंगिक—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिक] १ सिंगिया विष। २ एक प्रकार का वाद्य। सिंगी (को०)।

शृगिका—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गिका] १ बहुत प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था। सिंगी। २ अतीस। अतिविषा। ३ काकडासिगी। ४ मेढा सिंगी। ५ पिप्पली। पीपल।

शृगिण—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिण] १ जगली मेढा। मेष। २ वह जो सीगवाला हो (को०)।

शृगिणी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गिणी] १ गाय। गौ। २ मल्लिका। मोतिया। ३ मालकगनी। ज्योतिष्मती लता। ४ अतीस। अतिविषा।

शृगी¹—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] १ हाथी। हस्ती। २. वृक्ष। पेड। ३ पर्वत। पहाड। ४ एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्ही के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। उ०—(क) शृगी ऋषि तब कियो विचार। प्रजा दुख कर नृपत गुहार।—सूर (शब्द०)। (ख) जहँ शृगी ऋषिवर तप करही। चर्म नयन सो देखि न परही।—रावा-कृष्ण (शब्द०)। ५ बरगद। ६ पाकड। ७. अमडा। ८ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९. सीगवाला पशु। जैसे,—गौ, बैल, बकरी आदि। १० जीवक नामक ओषधि। ११ सिंगिया नामक विष। १२ सीग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। उ०—शृगी शब्द धधरी करा। जरै सो ठाठ जहाँ पग धरा।—जायसी (शब्द०)। १३ महादेव। शिव। उ०—शृगी शूली धूरजटि, कुंडलीश त्रिपुरारि। वृषा कपर्दी मानहर, मृत्युजय कामारि।—सबल (शब्द०)। १४ एक प्राचीन देश का नाम। उ०—शृगी सिधु कच्छ के राई। आए सकल समेत सहाई।—सबल (शब्द०)। १५. मेष। भेडा (को०)। १६. वृष। बैल (को०)। १७ शिव का एक गण (को०)।

शृगी²—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गी] १ अतीस। २ काकडासिगी। ३ सिंगी मछली। ४ मजीठ। मजिष्ठा। ५ आँवला। ६ पोई का साग। ७ ऋषभक नामक ओषधि। ८ पाकर। ९ वट। बट। १० विष। जहर। ११ वह सोना जिससे गहने बनाए जाते हैं।

शृंगीक—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गीक] काकडासिगी।

शृंगीकनक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गीकनक] वह सोना जिससे गहने बनाए जाते हैं।

शृंगीगिरि—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गीगिरि] एक प्राचीन पर्वत का नाम जिसपर शृंगी ऋषि तप किया करते थे। उ०—पूरण काम ज्ञान गत राजा। शृंगी गिरि गवने यति राजा। जहँ शृंगी ऋषि वर तप करहीं। चर्म नयन सो देखि न परहीं।—राम कृष्ण (शब्द०)।

शृंगेरी—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गेरी] १ मैसूर (दक्षिण भारत) का एक पर्वत। २ शंकराचार्य के मतानुयायी सन्यासियों का एक प्रसिद्ध मठ।

विशेष—यह स्थान मैसूर (दक्षिण भारत) में है। इसके प्रधान अधीश्वर शंकराचार्य कहलाते हैं। आद्य शंकराचार्य द्वारा भारत में स्थापित चार पीठों में यह एक है। शृंगगिरि पर स्थित होने से इसे शृंगेरी कहते हैं।

शृंगोन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गोन्नति] ग्रहों और नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

शृंगोष्णीश—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गोष्णीश] सिंह। मृगेंद्र। पंचास्य [को०]।

शृकाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शृगाल'।

शृग (पु)—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] दे० 'शृगाल'। उ०—बहुतन कंक काक शृग श्वाना। भक्षत करत कटकटी नाना।—विश्राम (शब्द०)।

शृगाल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ गीदड़ नामक जंगली जंतु। सियार। जंबुक। विशेष दे० 'गीदड़'। उ०—व्याघ्र कुरंग शृगाल शशादी। कानन नर वानर चितादी।—सबल (शब्द०)। २ एक दैत्य का नाम। ३. वासुदेव। कृष्ण।

शृगाल[2]—वि० १ कायर। भीरु। डरपोक। २ क्रूर। निष्ठुर। निर्दय। ३ खल। दुष्ट।

शृगालकंटक—संज्ञा पुं० [सं० शृगालकण्टक] भरभाँड़ या सत्यानासी नाम का कँटीला क्षुप।

शृगालकोलि—संज्ञा पुं० [सं०] उन्नाव। कर्कंधु

शृगालघंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृगालघण्टी] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

शृगालजंबु—संज्ञा पुं० [सं० शृगालजम्बु] १ गोड़ुंबा। गोमा ककड़ी। २. कर्कंधु। उन्नाव। ३ तरबूज।

शृगालजंबू—संज्ञा पुं० [सं० शृगालजम्बू] दे० 'शृगालजंबु' [को०]।

शृगालयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरे जन्म में शृगाल रूप में जन्म लेना [को०]।

शृगालरूप—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

शृगालविन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

शृगालवृंता—संज्ञा स्त्री० [सं० शृगालवृन्ता] पृश्निपर्णी [को०]।

शृगालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदारी कंद। २. पृश्निपर्णी। पिठवन। ३. सियारिन। गीदड़ी। ४. लोमड़ी। ५. भय से पलायन की क्रिया।

शृगाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तालमखाना। २. विदारी कंद। ३ गीदड़ की मादा। गीदड़ी। ४ भयजन्य पलायन (को०)।

शृणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गजबाग। अंकुश। आँकुस। २ पैना।

शृत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्वाथ। काढ़ा। २. औटा हुआ दूध।

शृत[2]—वि० १. उद्वेलित। खौलाया हुआ। २. पकाया हुआ [को०]।

शृतपाक—वि० [सं०] पूर्णत. पक्व। पूरी तौर से पकाया हुआ [को०]।

शृतशीत—संज्ञा पुं० [सं०] औटाया हुआ पानी जो प्राय. ज्वर के रोगियों को दिया जाता है और वैद्यक के अनुसार रक्तविकार, वमन, ज्वर और सन्निपात आदि रोगों का नाशक माना जाता है।

शृदर—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप [को०]।

शृद्ध—वि० [सं०] १ आर्द्र। गीला। २. शरीर के भीतर से नीचे की ओर निकाला हुआ (वायु)। जैसे, अपान [को०]।

शृधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. मलद्वार। गुदा। २. बुद्धि।

शृधू[1]—संज्ञा पुं० [सं०] गुदा। मलद्वार।

शृधू[2]—वि० कुत्सित। बुरा। खराब।

शृष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] कंस के आठ भाइयों में से एक। उ०—शृष्टि सुनामा कंक सुहु राष्ट्रपाल न्यग्रोध। शंकु तुष्टि ए शस्त्रवर योधा पूरित क्रोध।—गोपाल (शब्द०)।

शेख[1]—संज्ञा पुं० [अ० शेख] [स्त्री० शेखानी] १. पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २ मुसलमानों के चार वर्गों में सबसे पहला वर्ग। ३. मुसलमान उपदेशक। इसलाम धर्म का आचार्य। ४ पीर। बड़ा बूढ़ा।

शेख (पु)[2]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शेष] दे० 'शेष'।

शेख[3]—संज्ञा पुं० [सं० शैख] पतित ब्राह्मण की संतति। शैख।

शेखचिल्ली[1]—संज्ञा पुं० [अ० शेख+हिं० चिल्ली] १ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत सी विलक्षण और हँसानेवाली कहानियाँ कही जाती हैं। २ बैठे बैठे बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला। झूठमूठ बड़ी बड़ी बातें हाँकनेवाला। ३. मूर्ख मसखरा।

शेखचिल्ली[2]—वि० चंचल। शरारती। नटखट।

शेखड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शैख+हिं० ड़ा (प्रत्य०)] शैख का छोकड़ा। पतित ब्राह्मण का पुत्र।

शेखर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शीर्ष। सिर। माथा। २ सिर का आभूषण। मुकुट। किरीट। ३. सिर पर धारण की जानेवाली माला। ४. सिरा। चोटी। शिखर (पर्वत आदि का)। ५. श्रेष्ठतावाचक शब्द। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ६. टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा (।।ऽ।)। यथा, व्रजनाथ। ७. लवंग। लौंग (को०)। ८. शिग्रु मूल। सहिजन की जड़ (को०)। ९. संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद।

शेखरापीड़ योजन—संज्ञा पुं० [सं० शेखरापीडयोजन] चौंसठ कलाओं में से एक कला का नाम। सिर पर या कंठ में फूलों अनेक प्रकार की रचना करना।

शेखरित—वि० [सं०] १ शेखरयुक्त। चूडायुक्त। २ जिससे शेखर या चूड़ा निर्मित हो। शेखर या चूड़ा के लिये उपयुक्त (को०)।

शेखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बंदा। बंदाक। २ लौंग। देवी पुष्प ३. सहिजन की जड़।

शेखसद्दो—संज्ञा पुं० [अ० शेख + देश० सद्दो] मुसलमान स्त्रियों के उपास्य एक पीर जो कभी कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते हैं।

शेखावत—संज्ञा स्त्री० [अ० शेख ?] क्षत्रियों की एक जाति। कछवाहे राजपूतों की एक शाखा। उ०—शेखावत राजा रह्यो, रह्यो पुरोहित दास। करमैती दुहिता रही, ताही की छविरास।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, किसी मुसलमान शेख या फकीर की दुआ से इस वंश के प्रवर्तक उत्पन्न हुए थे जिनका नाम इसी कारण शेखाजी पड़ा। जयपुर राज्य के अंतर्गत शेखावाटी नामक स्थान में इस शाखा के राजपूत बसते हैं।

शेखी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शेखी] १. गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३ अभिमान भरी बात। डींग।

मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना = बढ़ बढ़कर बातें करना। अभिमान से भरी बातें बोलना। डींग मारना। शेखी झड़ना या निकलना = गर्व चूर्ण होना। मान ध्वस्त होना। ऐसा दंड पाना या हानि सहना कि अभिमान दूर हो जाय। शेखी की बोलना = दे० 'शेखी बघारना'। उ०—अच्छा अच्छा, बस बहुत शेखी को न बोलो।—फिसाना०, भा० २, पृ० ३४।

शेखीबाज—वि० [फ़ा० शेखी + बाज] १. अभिमानी। घमंडी। २. डींग मारनेवाला (व्यक्ति)।

शेज†—संज्ञा पुं० [देश०] अघोरी नामक वृक्ष। (बुंदेल०)।

शेठ†—संज्ञा पुं० [हिं० सेठ] दे० 'सेठ'। उ०—तब ही शेठ शाम जी आए। प्रेमभाव से शीश नवाए।—कबीर सा०, पृ० ४७४।

शेड—संज्ञा पुं० [अं०] १ छाया। छाजन। जैसे, टिन का शेड। २. लैंप का ढक्कन। उ०—पास ही टेबिल पर रखे हुए लैंप का नीलवर्ण 'शेड' उतारकर, चिमनी निकालकर, जयंती एक झाड़न से उसे साफ करने लगी।—सन्यासी, पृ० २७।

शेणघंटा—संज्ञा स्त्री० [सं० शेणघण्टा] दंती। उदुंबरपर्णी।

शेप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष की इंद्रिय। लिंग। शिश्न। २ अंडकोश। फोता (को०)। ३. दुम। पूँछ। लांगूल (को०)।

शेपाल—संज्ञा पुं० [सं०] सेवार। शैवाल।

शेफ—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिंग। शिश्न। २ मुष्क। अंडकोश (को०)। ३. पुच्छ। दुम (को०)।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्गुंडी। नील सिंधुवार का पौधा।

शेयर—संज्ञा पुं० [अं०] १ हिस्सा। भाग। साझा। बाँट। २ किसी कारबार में लगी हुई पूँजी का हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हर एक आदमी लगावे।

शेयर होल्डर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जिसके पास सम्मिलित मूलधन या पूँजी से चलनेवाले किसी कारबार या कंपनी के 'शेयर' या 'हिस्से' हों। हिस्सेदार। अंशी। जैसे,—बैंक के 'शेयर होल्डर', कंपनी के 'शेयर होल्डर'।

शेर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० शेरनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। बाघ। व्याघ्र। नाहर।

यौ०—शेरबबर, शेरबच्चा, शेरमर्द।

मुहा०—शेर का पान = भाँग छानने का कपड़ा। (भंगड़)। (चिराग) शेर करना = बत्ती बढ़ाकर रोशनी तेज करना। शेर का बाल = सिंह की मूँछ के बाल। शेर की खाला या मौसी = बिल्ली। मार्जार। शेर के मुँह में जाना = प्राणसंकट की जगह जाना। शेर के मुँह से शिकार छीनना = अत्यंत बहादुरी करके अपने से प्रबल से कोई वस्तु जबरन् ले लेना। शेर बकरी का एक घाट पर या एक साथ पानी पीना = गरीब और जबर सबके साथ समान न्याय करना। ठीक ठीक इंसाफ करना। शेर होना = निर्भय और धृष्ट होना। डर या दाब में न रहना। स्वच्छंदाचारी और उद्दंड होना।

२. अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। बड़ा बहादुर आदमी। (लाक्षणिक)।

शेर²—संज्ञा पुं० [अ०] फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरण।

शेर गुलाबी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गहरा गुलाबी रंग।

शेरदरवाजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेरदरवाज़ा] सिंहद्वार।

शेरदहाँ¹—वि० [फ़ा०] १ जिसका मुँह शेर का सा हो। २. जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो।

शेरदहाँ²—संज्ञा पुं० १. वह जिसकी मुँडेर शेर के मुँह के आकार की बनी हो। २ वह मकान जो आगे की ओर चौड़ा और पीछे की ओर पतला और सँकरा हो। ३ पुराने ढंग की एक प्रकार की बंदूक।

शेरदिल—वि० [फ़ा०] बहादुर। साहसी। निर्भय (को०)।

शेरनर—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर + सं० नर] वीर पुरुष। उ०—नेकबख्त दिलपाक सखी जवाँमर्द शेरनर।—अकबरी०, पृ० २५।

शेरपंजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर + हिं० पंजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।

शेरबकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] बच्चों का एक खेल।

शेरबचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेरबचह्] दे० 'शेरबच्चा'।

शेरबच्चा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर + हिं० बच्चा] १. शेर का बच्चा। २ वीरपुत्र। पराक्रमी पुरुष। बहादुर आदमी। ३. एक प्रकार की छोटी बंदूक।

शेरबबर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सिंह। केसरी। उ०—चूहा शेरबबर से विरुद्धता कर सके ऐसे ही ये मूर्ख मनुष्यों के ध्यान हैं।—कबीर मं०, पृ० २०६।

शेरमर्द—वि० [फ़ा०] बहादुर। वीर।

शेरमर्दी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बहादुरी। वीरता।

शेरवानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] अंग्रेजी ढग की काट का एक प्रकार का अगा ।

विशेष—यह घुटनो तक लबा होता है। इसमे बालाबर, कली और चौबगले काट काटकर नहीं लगाए जाते। आगे जिस ओर बटन लगाया जाता है, उसके नीचे का आधा भाग अधिक चौडा होता है जिसमे बद या हुक लगाकर दूसरे भाग के नीचे करके बाँधते या बद करते हैं। मुसलमानो मे इसका रवाज अधिक है।

शेल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शल्य] दे० 'सेल'।

शेलक—संज्ञा पुं० [सं०] लिसोडा। लिभेरा। बहुवार वृक्ष।

शेलमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीफल। बिल्व वृक्ष। २ एक प्रकार का फल।

शेलु—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिसोडा। लभेरा। २ बनमेथी नामक शाक।

शेलुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिसोडा। २. मेथी। ३ लोध्र वृक्ष।

शेलुका—संज्ञा पुं० [सं०] बनमेथी।

शेलुष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लिसोड़ा।

शेवतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुलदाउदी।

शेव¹—संज्ञा पुं० [सं०] अभ्युदय। उन्नति। वृद्धि। २ ऊँचाई। ३. धन सपत्ति। ४ शिश्न। लिंग। ५. मछली। ६ सर्प। ७. अग्नि का एक नाम। ८ सोम का एक नाम (को०)।

शेव²—संज्ञा पुं० [अं०] हजामत बनाने का काम। क्षौर कर्म।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।—होना।

शेवधि—संज्ञा पुं० [सं०] १ निधि। खजाना। २. कुबेर की नौ निधियो मे एक का नाम (को०)।

शेवल—संज्ञा पुं० [सं०] सेवार। शैवाल।

शेवलिनि, शेवलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] (जिसमे सेवार हो) नदी। शैवालिनी।

शेवा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिंग का आकार। लिंग (को०)।

शेवा²—संज्ञा पुं० [फा० शेवह्] ढग। तरीका। उ०—ये मातम की खिजाँ का देख शेवा। उरूसे बाग हो गई आज बेवा।—दक्खिनी०, पृ० १९१।

शेवाल—संज्ञा पुं० [सं०] सेवार। शैवाल।

शेवाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशमासी। जटामासी का एक भेद।

शेष¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो। बची हुई वस्तु। बाकी। २. वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ३. बडी सख्या मे से छोटी सख्या घटाने से बची हुई सख्या। बाकी। ४. समाप्ति। अंत। खातमा। ५ परिणाम। फल। ६. स्मारक वस्तु। यादगार की चीज। ७ मरण। नाश। ८. पुराणानुसार सहस्र फनो के सर्पराज जो पाताल मे है और जिनके फनो पर पृथ्वी ठहरी है।

विशेष—ये 'अनत' कहे गए है और विष्णु भगवान् क्षीर सागर मे इन्ही के ऊपर शयन करते हैं। विष्णुपुराण मे शेष, वासुकि और तक्षक तीनो कद्रु के पुत्र माने गए है। पाताल के राजा कही वासुकी कहे गए है और कही शेष। कुछ पुराणो के अनुसार गर्ग ऋषि ने ज्योतिष विद्या इन्ही से पाई थी। लक्ष्मण और बलराम शेष के अवतार कहे गए है।

९. लक्ष्मण। उ०—सोहत शेष सहित रामचद्र कुश लव जीति कै समर सिंधु साँचेहु सुधारचो है।—केशव (शब्द०)। १०. बलराम। ११. एक प्रजापति का नाम। १२ दिग्गजो मे से एक। १३. अनत। परमेश्वर। १४. पिंगल मे टगण के पाँचवें भेद का नाम। १५. छप्पय छद के पचीसवें भेद का नाम जिसमे ४६ गुरु, ६० लघु, कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। १६. हनन। घातन। वध (को०)। १७. प्रसाद (को०)। १८ हाथी। १९ जमालगोटा।

शेष²—वि० १ जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो। बचा हुआ। बाकी। उ०—यह जीवन का निमेष था, पर आगे यह काल शेष था।—साकेत, पृ० ३४९। २ अत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम। जैसे,—कार्य शेष होना। उ०—(क) बातै करत शेष निशि आई ऊधो गए अन्हान।—सूर (शब्द०)। (ख) कर स्नान शेष, उन्मुक्त केश, सासु जा रहस्य स्मित सुवेश, आई करने को बातचीत।—अनामिका, पृ० १२५। ३. अतिरिक्त। और दूसरे।

शेषक—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग (को०)।

शेषकाल—संज्ञा पुं० [सं०] अतिम समय। मृत्युकाल (को०)।

शेषजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] गणित मे बचे हुए अक को लेन की क्रिया।

शेषता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शेष का भाव या क्रिया। शेषत्व (को०)।

शेषत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपकारिता। २ दे० 'शेषता' (को०)।

शेषधर—संज्ञा पुं० [सं०] (शेष अर्थात् सर्प को धारण करनेवाले) शिव जी। उ०—शेषधर नाग मुख ब्रह्म विष्णु इनका कलेवर तौ काल को कवरु है।—केशव (शब्द०)।

शेषनाग—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पराज। शेष। विशेष दे० 'शेष'—८।

शेषपति—संज्ञा पुं० [सं०] व्यवस्थापक। मैनेजर (को०)।

शेषभुक्—वि० [सं०] उच्छिष्टभोजी। भोजन से बचे अश को खानेवाला।

शेषभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम (को०)।

शेषभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] उच्छिष्ट वस्तु का भक्षण (को०)।

शेषर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शेखर] दे० 'शेखर'।

शेषराज—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण होते है। विद्युल्लेखा।

शेषरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात का पिछला पहर। रात्रि का अतिम याम।

शेषव—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य द्वारा कारण का निश्चय। एक अनुमान (को०)।

शेषवत्—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में अनुमान का एक भेद। कार्य को देखकर कारण का निश्चय। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशयन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शेषशायी'। उ०—लगे शंकाकुल हो गए अतुल बल शेषशयन।—अपरा०, पृ० ४१।

शेषशायी—संज्ञा पुं० [सं० शेषशायिन्] शेष नाग पर शयन करनेवाले विष्णु।

विशेष—पुराणों के अनुसार प्रलय काल में विष्णु भगवान् तीनों लोकों को अपने पेट में धारण कर क्षीर सागर में शेषनाग की शैया बनाकर उसपर शयन करते हैं। कुछ काल के उपरांत उनकी नाभि से एक कमल निकलता है जिसपर ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है और सृष्टि का क्रम फिर से चलता है।

शेषांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. बचा हुआ अंश। अवशिष्ट भाग। २. अंतिम अंश। आखिरी भाग।

शेषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता का चढ़ी हुई वस्तु जो दर्शकों या उपासकों को बाँटी जाय। प्रसाद।

शेषाचल—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का पर्वत। उ०—मुरि मुनीश शेषाचल माहीं। बैठे आगे धरि पटकाहीं।—रघुराज (शब्द०)।

शेषावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था (को०)।

शेषाहि—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग (को०)।

शेषोक्त—वि० [सं०] अंत में कहा या लिखा हुआ।

शेष्य—वि० [सं०] उपेक्षणीय। त्याज्य (को०)।

शै—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चीज। वस्तु। पदार्थ द्रव्य। उ०—(क) सब करामत उस कँकर ते है मुझे। जे मंगूँ सो होवे हाजिर शै मुझे।—दक्खिनी०, पृ० १८४। (ख) लगा के बर्फ में साकी सुराहिए मै ला। जिगर की आग बुझे जल्द जिससे वह शै ला।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६६। २. बात (को०)। ३ अभिवृद्धि। बढ़ती (को०)।

शैक्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिक्य। २ झोंका। सिकहर। छींका। ३ बर्तन जो छीके पर लटकाया हुआ हो (को०)।

शैक्य[2]—वि० १ जो सिकहर पर लटक या हो। २. धारदार। चोखा। नोकदार। नुकीला (को०)।

शैक्यायस—संज्ञा पुं० [सं०] इस्पात लोहा।

शैक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. आचार्य के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला मनुष्य। २ शिक्षा देने योग्य। वह शिष्य जो प्रारंभिक शिक्षाप्राप्त कर रहा हो।

शैक्ष[2]—वि० शास्त्रशास्त्रादि शिक्षा संपन्न। शिक्षा के अनुकूल व्यवहारयुक्त (को०)।

शैक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा विषय को जाननेवाला। 'शिक्षा' का ज्ञाता।

शैक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] पांडित्य। पाटव। नैपुण्य (को०)।

शैख[1]—संज्ञा पुं० [सं०] पतित ब्राह्मण की संतान। व्रात्य (स्मृति)।

शैख[2]—संज्ञा पुं० [अ० शेख] दे० 'शेख' (को०)।

शैखरिक, शैखरेय—संज्ञा पुं० [सं०] ओंगा। अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

शैखिन—वि० [सं०] शिखी। तपस्वी। मयूरसदृशी। मयूर का (को०)।

शैख्य—वि० [सं०] जिसमें शिखा अर्थात् नोक हो। नोकदार। नुकीला (को०)।

शैग्रव—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन के बीज। शिग्रुबीज।

शैघ्र, शैघ्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

शैघ्र, शैघ्य[2]—वि० ज्योतिष के योग से संबंध रखनेवाला।

शैतान—संज्ञा पुं० [अ०] १ ईश्वर के समान सत्कार्य का विरोध करनेवाली शक्ति या देवता। तमोगुणमय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर सर्वदा बुरे काम के अवसर में रहा करता है।

विशेष—यहूदी, ईसाई और इसलाम तीनों पैगंबरी मतों में दो परस्पर विरुद्ध शक्तियाँ मानी गई हैं—एक सत् दूसरी असत्। सत्स्वरूप ईश्वर के समकक्ष ही, असत् शक्ति सदा विश्व जीवन में तत्पर रहता है। आदि पैगंबर मूसा ने 'तौरेत' में लिखा है कि पहले आदम और हौवा ईश्वर की आज्ञा में रहकर बड़े आनंद से स्वर्ग के उद्यान में रहा करते थे। शैतान ने हौवा को बहकाकर ज्ञान का वह फल खाने के लिए कहा जिसका ईश्वर ने निषेध किया था। इस अपराध पर आदम और हौवा स्वर्ग से निकाल दिए गए और इस पृथ्वी पर आए। इन्हीं से यह मनुष्यसृष्टि चली। ऐसा लिखा है कि शैतान भी पहले ईश्वर का खुदा का एक फरिश्ता (पारिषद) था। जब ईश्वर ने आदम या मनुष्य उत्पन्न किया, तब वह ईर्ष्यावश ईश्वर से विद्रोही हो गया और उनकी सृष्टि में उत्पात करने लगा। ईश्वर ने उस स्वर्ग से निकालकर नरक में भेज दिया जहाँ का वह राजा हुआ। सत् और असत् इन दो नित्य शक्तियों की भावना यहूदियों के पैगंबर मूसा को खाल्दियों (बाबुलवालों) और पारसीकों आदि प्राचीन सभ्य जातियों से मिली थी। जरतुश्त ने भी अवस्ता में अहुरमज्द (सत् शक्ति) और अहमान (असत् शक्ति) दो शक्तियाँ कही हैं।

मुहा०—शैतान का कान में फूँकना = शैतान का बहकाना। शैतान का धक्का = कुवृत्त। बुरा प्रेरणा। शैतान का बच्चा = बहुत दुष्ट आदमी। शैतान की आँत = बहुत लंबा वस्तु। शैतान की खाला = बहुत दुष्ट या पाजी औरत। (गाली)। शैतान की सूरत = भय रूप। राक्षस की आकृति का।

२ दुष्ट देवयोनि। भूत। प्रेत।

मुहा०—शैतान उतरना = (१) भूतप्रेतादि का आवेश शांत होना। (२) क्रोधावेश दूर होना। (३) शरारतापन न रहना। शैतान चढ़ना या लगना = (१) भूत प्रेत का आवेश होना। प्रेत का भाव पड़ना। (२) क्रोधावश से आगबबूला हो जाना। शैतान का कान काटना = शैतान से भी बढ़ जाना। (सिर पर) शैतान

सवार होना। (१) किसी का अत्यंत क्रुद्ध होना। (२) किसी बात की हठ पकडना। जिद चढना। (३) शैतानी करना।

यौ०—शैतानसीरत = शैतान की प्रकृतिवाला। महादुष्ट। शैतान सूरत = शैतान की आकृति का। डरावना।

३ बहुत ही दुष्ट या क्रूर मनुष्य। घोर अत्याचारी। (लाक्षणिक)। ४ बहुत ही नटखट मनुष्य। बहुत शरारती आदमी। (लाक्षणिक)। ५ क्रोध। तामस। गुस्सा। ६ झगडा। टटा। फसाद। उपद्रव।

मुहा०—शैतान उठाना = झगडा खडा करना। उपद्रव मचाना।

शैतानी[१]—सज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।

शैतानी[२]—वि० १ शैतान सबधी। शैतान का। जैसे,—शैतानी गोल। २ नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण। जैसे,—शैतानी हरकत। ३ निकृष्ट। बुरा। पापमय (को०)।

शैत्य – सज्ञा पु० [स०] शीत। ठढक।

शैथिलिक— वि० [स०] आलसी। मद। ढीलाढाला [को०]।

शैथिल्य—सज्ञा पु० [स०] १. शिथिल होने का भाव। शिथिलता। ढिलाई। २ तत्परता का अभाव। फुरती का न होना। सुस्ती। ३. दीर्घसूत्रता (को०)। ४. दुर्बलता। भीरुता (को०)। ५ अस्थिरता। चचलता (को०)। ६ दृष्टि की शून्यता या रिक्तता (को०)। ७. अवहेला। अवज्ञा। उपेक्षा (को०)।

शैदा— वि० [फा०] आशिक। आसक्त। मुग्ध। उ०—तुझ हुस्न आलमताब का जो आशिको शैदा हुआ। हर खूबरू के हुस्न के जलवा सूं बेपरदा हुआ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ८। २. बहुत अधिक इच्छुक या आतुर (को०)। ३. उन्मत्त। पागल (को०)।

यौ०—शैदाए इल्म = ज्ञान प्राप्त करने का अभिलाषी। शैदाए वतन = देशभक्त। शैदाए हुस्न = सौंदर्य प्रेमी।

शैनेय—सज्ञा पु० [स०] शिनि का पुत्र सात्यकि नामक वीर यादव, जो कृष्ण का सारथी था।

विशेष—यह अर्जुन का शिष्य था और महाभारत की लडाई मे भूरिश्रवा को इसी ने मारा था। यादवो के पारस्परिक मुसलयुद्ध मे यह मारा गया था।

शैन्य—सज्ञा पुं० [स०] शिनि के वशज जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए थे।

शैब्य—वि० सज्ञा पु० [स०] दे० 'शैव्य' [को०]।

शैरस—सज्ञा पु० [स०] पलग या चारपाई का सिरहाना [को०]।

शैरिक—सज्ञा पु० [स०] नीले फूल की कटसरैया।

शैरीयक, शैरेयक सज्ञा पु० [स०] दे० 'शैरिक' [को०]।

शैल[१]—वि० [स०] १. शिला सबधी। पत्थर का। २. पथरीला। चट्टानी। ३ कडा। कठोर।

शैल[२]—सज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड। उ०—दीन्हो डारि शैल ते भू पर पुनि जल भीतर डारचो।—सूर (शब्द०)। २ चट्टान। शिला। ३ छरीला। शैलेय। ४. रसौत। रसवत। ५. शिलाजीत। ६. लिसोडा। बहुवार। ७. बाँध। बधा (को०)। ८ एक प्रकार का अजन। सुरमा (को०)। ९. पत्थरो का ढेर। प्रस्तरनिचय। प्रस्तरसमूह (को०)। १० सात की सख्या का बोधक शब्द (को०)।

शैलकंपी—सज्ञा पु० [स० शैलकम्पिन्] १. स्कद का एक अनुचर।

शैलक—सज्ञा पु० [स०] १ छरीला। शैलेय। २ गूगुल (को०)।

शैलकटक—सज्ञा पु० [स०] पहाड की ढाल।

शैलकन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शैलकुमारी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती। उ०—पुनि चढि नदी चले पुरारी। पाणि जोरि तब शैलकुमारी।—रघुराज (शब्द०)।

शैलकूट—सज्ञा पु० [स०] पहाड की चोटी [को०]।

शैलगग, (पु) शैलगगा—सज्ञा स्त्री० [स० शैलगङ्गा] गोवर्धनपर्वत की एक नदी जिसमे श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था। उ०—इन्हहिं आदि तीरथ सकल शैलगग प्रति आँहि। जेहि दरसे परसे परम गति कहँ मानव जाहि।—गोपाल (शब्द०)।

शैलगध—सज्ञा पु० [स० शैलगन्ध] शबर चदन। बर्बर चदन।

शैलगर्भाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिंहली पीपल। २ पखानभेद। पत्थरचूर।

शैलगुरु[१]—सज्ञा पु० [स०] हिमालय [को०]।

शैलगुरु[२]—वि० पहाड जैसा भारी [को०]।

शैलज—सज्ञा पुं० [स०] १ पथरफूल। छरीला। २ शिलाजतु। शैलाज।

शैलजन—सज्ञा पु० [स०] पहाडी मनुष्य [को०]।

शैलजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पर्वत से उत्पन्न। पार्वती। दुर्गा। २. सिंहपिप्पली। ३ गजपिप्पली। ४ पाषाणभेद।

शैलजात—सज्ञा पुं० [स०] छरीला। पथरफूल।

शैलजाता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोल मिर्च। काली मिर्च। २ गजपिप्पली।

शैलतटी—सज्ञा स्त्री० [स०] पहाड की तराई। उ०—जब वह मेरे साथ टहलने शैलतटी मे जाता था। अपनी अमृतमय वाणी से प्रेमसुधा बरसाता था।—श्रीधर (शब्द०)।

शैलतनया—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती [को०]।

शैलता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शैलत्व'।

शैलत्व—सज्ञा पु० [स०] शैल होने का भाव [को०]।

शैलदुहिता—सज्ञा स्त्री० [स० शैलदुहितृ] पार्वती।

शैलधन्वा—सज्ञा पु० [स० शैलधन्वन्] महादेव। शिव।

शैलधर—सज्ञा पु० [स०] गिरिधर। श्रीकृष्ण।

शैलधातु - सज्ञा पु० [स०] खनिज द्रव्य। धातु [को०]।

यौ०—शैलधातुज = शिलाजतु।

शैलधातुक, शैलधातुज—सज्ञा पु० [स०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलनदिनी — सज्ञा स्त्री० [स० शैलनन्दिनि] पार्वती।

शैलनिर्यास—सज्ञा पु० [स०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलपति—सज्ञा पुं० [स०] हिमालय पहाड।

शैलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बेल । बिल्व वृक्ष ।

शैलप्रतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला पर चित्रित, अंकित या टंकित आकृति (को०) ।

शैलपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २. नौ दुर्गाओं में से एक दुर्गा का नाम । ३ गंगा नदी ।

शैलपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजतु । शिलाजीत ।

शैलबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा झरना । निर्झरिणी । निर्झरी ।

शैलबीज—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ । भेला ।

शैलभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्थर को तोड़ने या काटने का औजार । टाँकी । छेनी (को०) ।

शैलभेद—संज्ञा पुं० [सं०] पखानभेद ।

शैलमल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुटज । कोरैया ।

शैलमृग—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बकरा (को०) ।

शैलरंध्र—संज्ञा पुं० [सं० शैलरन्ध्र] गुफा ।

शैलराज—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत ।

यौ०—शैलराजतनया, शैलराजपुत्री, शैलराजसुता = पार्वती ।

शैलरोही—संज्ञा पुं० [सं०] मोगरा चावल ।

शैलवल्कला—संज्ञा पुं० [सं०] पाषाणभेद । श्वेत पाषाण ।

शैलशिखर—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत की चोटी (को०) ।

शैलशिविर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र । सागर ।

विशेष—कहते हैं, जब इंद्र ने पर्वतों पर चढ़ाई की थी, तब कुछ पर्वत समुद्र में जा छिपे थे । इसी से समुद्र का यह नाम पड़ा है ।

शैलशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी ।

शैलशृंग—संज्ञा पुं० [सं० शैलशृङ्ग] दे० 'शैलकूट' (को०) ।

शैलसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलसन्धि] पर्वत के बीच की संधि । दर्रा । घाटी (को०) ।

शैलसंभव—संज्ञा पुं० [सं० शैलसम्भव] शिलाजीत ।

शैलसंभूत—संज्ञा पुं० [सं० शैलसम्भूत] गेरू ।

शैलसार—वि० [सं०] पर्वत के समान अचल या स्थिर । दृढ़ (को०) ।

शैलसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २ ज्योतिष्मती (को०) ।

शैलसेतु—संज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तर निर्मित पुल या बाँध (को०) ।

शैलाख—संज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम (को०) ।

शैलाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थरफूल । छरीला । २ शिलाजीत ।

शैलाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी (को०) ।

शैलाज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शैलज' ।

शैलाट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़ी आदमी । परबतिया । २ किरात । ३ सिंह । ४ देवलक । देवल का पुजारी (को०) । ५. स्फटिक । बिल्लौर ।

शैलादि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के गण, नंदी ।

शैलाधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वतों का आधार, पृथिवी (को०) ।

शैलाधिप, शैलाधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत ।

यौ०—शैलाधिपतनया, शैलाधिराजतनया = पार्वती ।

शैलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेव में से एक ।

शैलाली—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाली । नट ।

शैलासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैठने का एक ढंग । २ लकड़ी या पत्थर का बना हुआ एक प्रकार का आसन (को०) ।

शैलासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शैलपुत्री । पार्वती (को०) ।

शैलाह्व—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत ।

शैलिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत ।

शैलिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] मतलिंगी । वह व्यक्ति जिसके मन, वचन, कर्म में ऐक्य न हो । पाखंडी व्यक्ति ।

शैली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल । ढब । ढंग । २ परिपाटी । प्रणाली । तर्ज । तरीका । ३. रीति । प्रथा । रस्म रिवाज । ४. लिखने का ढंग । वाक्यरचना का प्रकार । विचारों या भावों को अभिव्यक्त करने की रीति या कौशल । उ०—शैली श्रेष्ठ कवीन की, गुरु का गुन है जौन । भाव चरित बखानि के, वह होय मति तौन ।—रघुराज (शब्द०) । ५. पढ़ाना । पढ़ाई । मस्ती । ६ व्याकरण संबंधी या व्याकरण के सूत्र या वचनों की संक्षिप्त निवृत्ति (को०) । ७. प्रस्तरमूर्ति । शिला-प्रतिमा (को०) ।

शैलीकार—संज्ञा पुं० [सं० शैली+कार] कला, साहित्य में विशिष्ट शैली का निर्माण या उनको विशेष ढंग से अभिव्यक्त करनेवाला व्यक्ति ।

शैलू¹—संज्ञा पुं० [सं०] लिसोढ़ा । लभेरा ।

शैलू²—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चटाई जिसका व्यवहार दक्षिण और गुजरात में होता है ।

शैलूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुवार वृक्ष । लिसोढ़ा । लभेरा । २ कमलकंद । भसींड़ ।

शैलूकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलकंद । भसींड़ ।

शैलूष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिनय करनेवाला । नाटक खेलनेवाला । सूत्रधार । नट । २ गंधर्वों का स्वामी, रोहितक । (रामायण) । ३ धूर्त । ४ बिल्व वृक्ष । बेल । ५ वह जो संगीत में ताल देता हो (को०) । ६ तालधारक (को०) ।

शैलूषभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल ।

शैलूषिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शैलूषिकी] नट वृत्ति से जीवन निर्वाह करनेवाली एक जाति । शिलाली । नट ।

शैलूषिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नटी । शैलूष जाति की स्त्री (को०) ।

शैलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शैलेन्द्र] हिमालय ।

यौ०—शैलेंद्रजा, शैलेंद्रदुहिता, शैलेंद्रसुता—(१) हिमालय की पुत्री । पार्वती । (२) गंगा ।

शैलेंद्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं० शैलेन्द्रस्थ] भोजपत्र । भूर्जपत्र का वृक्ष ।

शैलेय[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शैलेयी] १ पत्थर का। पथरीला। २ पहाड़ी। ३ पत्थर से उत्पन्न। ४ शिलातुल्य। पत्थर की तरह कठोर (को०)। ५ जो डिगाया न जा सके। अचल।

शैलेय[2]—संज्ञा पुं० १. दे० 'छरीला'। २ शिलाजीत। ३. मूसली। तालपर्णी। ४ सेंधा नमक। ५ सिंह। ६ भ्रमर।

शैलेयक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शैलेय'।

शैलेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती। शैलपुत्री।

शैलेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शैलोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाल्मीकि रामायण और महाभारत में वर्णित उत्तर दिशा की एक नदी।

शैलोद्भूदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाषाणभेद। क्षुद्र पाषाण।

शैल्य[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शैल्या] १ पत्थर का। २ पथरीला। ३ कड़ा। कठोर।

शैल्य[2]—संज्ञा पुं० शिलापन। कड़ापन। कठोरता [को०]।

शैव[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शैवी] शिव संबंधी। शिव का। जैसे,—शैव दर्शन।

शैव[2]—संज्ञा पुं० १ शिव का अनन्य उपासक। महादेव का भक्त।

विशेष—उपासनाभेद से आधुनिक हिंदू धर्म में तीन मुख्य संप्रदाय प्रचलित हैं—शैव, शाक्त और वैष्णव। शैव लोग परमेश्वर को शिवरूप ही मानते हैं। उनके अनुसार शिव ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार तीनों करते हैं। पूजा के लिये शिव की प्रतिमा नहीं बनाई जाती, लिंग ही उनका प्रतीक माना जाता है। (विशेष दे० 'लिंग')। शैव लोग शरीर में भस्म लगाते, गले में रुद्राक्ष की माला पहनते और माथे पर त्रिपुंड (तीन आड़ी रेखाएँ) लगाते हैं। शैवों के अनेक भेद हैं जो अधिकतर दक्षिण में पाए जाते हैं। काश्मीर में भी शैव मत का विशेष रूप से प्रचार था। शंकराचार्य के अनुयायी अद्वैतवादी भी उपासनाक्षेत्र में शैव ही होते हैं। शिव की उपासना भारत तथा उसके निकटवर्ती देशों में बहुत प्राचीन काल में भी प्रचलित थी। नैपाल, तिब्बत आदि में बौद्ध धर्म के साथ उसमें मिली हुई शिव की उपासना बहुत दिनों से प्रचलित चली आती है। ईसा के पूर्व के सिक्कों में भी त्रिशूल, नंदी आदि पाए जाते हैं। ऐसे सिक्के खुरासान तक में पाए गए हैं। शकों और हूणों में भी शैव धर्म प्रचलित था।

२ पाशुपत अस्त्र। ३ धतूरा। ४ वासक। अड़ूसा। ५ शुभ। कल्याण। शुभता (को०)। ६ आचारभेद तंत्र के अनुसार देवी की उपासना का एक विशेष आचार (को०)। ७ शिवपुराण (को०)। ८ तंत्र का एक ग्रंथ (को०)। ९ शैवाल। १० पाँचवें कृष्ण। वासुदेव। (जैन)।

शैवपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढ़ती हैं। बेल।

शैवपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] शिवपुराण।

शैवमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिंगिनी नाम की लता। पँचगुरिया।

शैवल—संज्ञा पुं० [सं०] १ पद्माख। पद्मकाष्ठ। पद्‌माख। २. सेवार। ३ एक पर्वत। ४ एक नाग का नाम। (बौद्ध)।

शैवलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

शैवाल—संज्ञा पुं० [सं०] सिवार। सेवार।

शैवी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ मनसा नाम की देवी। ३ कल्याण। मंगल।

शैवी[2]—वि० स्त्री० शिव संबंधिनी। शिव की। जैसे,—शैवी उपासना, शैवी शक्ति।

शैव्य[1]—वि० [सं०] १. शिव संबंधी। २ शिवी नरेश या जनपद संबंधी।

शैव्य[2]—संज्ञा पुं० १ पांडवों का एक सेनापति। २ श्रीकृष्ण का एक घोड़ा। ३ अश्व। घोड़ा (को०)।

शैव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडकौशिक के अनुसार अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम। २ महाभारत के अनुसार प्रवीर नरेश की पत्नी का नाम (को०)। ३ सूर्यवंशी राजा सगर की पत्नी जिसका पुत्र असमंज था (को०)।

शैशव[1]—वि० [सं०] शिशु संबंधी। बच्चा का। २. बाल्यावस्था संबंधी।

शैशव[2]—संज्ञा पुं० १ अनजान बालक की अवस्था। बचपन। २ बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।

शैशिर[1]—वि० [सं०] १ शिशिर संबंधी। २ शिशिर में उत्पन्न। ३. बर्फ से युक्त। हिमण्य। बर्फीला (को०)।

शैशिर[2]—संज्ञा पुं० १. ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम। २ कृष्ण चातक पक्षी। काले रंग का पपीहा।

शैशिरीय—वि० [सं०] दे० 'शैशिर[1]'।

शैशिरीय (शाखा)—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋग्वेद की साकल शाखाओं में से एक।

शैशुनाग—संज्ञा पुं० [सं०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वंशज।

शैशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुमार संबंधी।

शैश्न्य—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन। रति [को०]।

शैष—संज्ञा पुं० [सं०] शिशिर ऋतु। ठंढ का मौसिम [को०]।

शैषिक—वि० [सं०] शेष या शेषांश संबंधी [को०]।

शैसीक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

शोक—संज्ञा पुं० [सं०] इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से उत्पन्न मनोविकार। किसी प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा आदि से अथवा दुःखदायी घटना से उत्पन्न क्षोभ। रंज। गम।

विशेष—साहित्य में 'शोक' नौ स्थायी भावों में से एक है और करुण रस का मूल है। पुराणों में 'शोक' मृत्यु का पुत्र कहा गया है।

यौ०—शोककर्षित। शोकचर्या। शोकनाश। शोकनिहित, शोकपरायण, शोकपरिप्लुत, शोकपीडित, शोकविकल, शोकविह्वल, शोकग्रस्त, शोक संतप्त = शोक से ग्रस्त। शोक से व्याकुल।

शोककर्षित—वि० [स०] शोक से पीडित। शोक से दुखी [को०]।

शोककारक—वि० [स०] शोक उत्पन्न करनेवाला।

शोकघ्न—सज्ञा पुं० [स०] अशोक वृक्ष।

शोकचर्चा—सज्ञा स्त्री० [स०] शब्द की चरचा करना। शोक व्यक्त करना [को०]।

शोकनाश, शोकनाशक, शोकनाशन—सज्ञा पुं० [स०] १ अशोक वृक्ष। २ वह जिससे शोक का नाश हो।

शोकसारण—वि० [स० शोक+सारण] शोक या दुख को दूर करनेवाला। उ०—शोकसारण करण कारण, तरण तारण विष्णु शंकर।—अर्चना, पृ० ८८।

शोकसूचक—वि० [स०] शोक या दुख को बतानेवाला। शोक को व्यक्त करनेवाला।

शोकस्थान—सज्ञा पु० [स०] शोक का कारण [को०]।

शोकहर—सज्ञा पुं० [स०] एक छद का नाम जिसके प्रत्येक पद में ८, ८, ८, ६ के विश्राम से (अंत गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद से दूसरे, चौथे और छठे चौकल मे जगण न पडे। इसको शुभागी भी कहते हैं।

शोकहारी—सज्ञा स्त्री० [स०] वन वर्बरी। अजगधा।

शोकाकुल—वि० [स०] शोक से व्याकुल।

शोकातुर—वि० [स०] शोक से विह्वल वा व्याकुल।

शोकापनोद, शोकापनोदन—सज्ञा पुं० [स०] शोक को दूर करना। शोक का निवारण करना [को०]।

शोकाभिभूत—वि० [स०] शोकार्त। शोकातुर।

शोकारि—सज्ञा पु० [स०] कदम। कदब वृक्ष।

शोकार्त—वि० [स०] शोक से आर्त। शोक से विकल।

शोकाविष्ट—वि० [स०] जो शोक मे अत्यत सतप्त और व्याकुल हो।

शोकावेग—सज्ञा पुं० [स०] बार बार या रह रहकर शोक का अनुभव होना [को०]।

शोकी—सज्ञा स्त्री० [स०] रात्रि। रात।

शोकोपहत—वि० [स०] शोक से विकल।

शोख—वि० [फा० शोख] १ ढीठ। धृष्ट। प्रगल्भ। २ शरीर। नटखट। ३. चचल। चपल। ४. जो मद या धूमिल न हो। गहरा और चमकदार। चटकीला। जैसे,—शोख रग।

यौ०—शोखबयानी = चटपटा या धृष्टतापूर्ण बयान। उ०—चरब जुबानी हाय हाय। शोखबयानी हाय हाय।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ६७८।

शोखी—सज्ञा स्त्री० [फा० शोखी] १. धृष्टता। ढिठाई। १. नटखटपना। ३. चचलता। चपलता। ४ तेजी। चटकीलापन। जैसे,—रग की शोखी।

शोग(पु)—सज्ञा पु० [स० शोक] दे० 'सोग'। उ०—आज्ञा भई फिरयो मत्र लोगा। सब कहँ भयो राम कर शोगा।—कबीर सा०, पृ० ३६।

शोच—सज्ञा पुं० [स० शोचन] १ दुख। रंज। शोक। अफसोस। २ पीडा। वेदना (को०)। ३ चिंता। फिक्र। खटका।

शोचन—सज्ञा पु० [स०] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १ शोक करना। रंज करना। २ चिंता करना। ३. शोक। रज।

शोचनीय—वि० [स०] १. शोक करने योग्य। जिसकी दशा देखकर दुख हो। २ जिससे दुख उत्पन्न हो। दुखोत्पादक। ३ जो बहुत हीन या बुरा हो।

शोचि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लौ। लपट। २ दीप्ति। चमक। ३ वर्ण। रग।

शोचितव्य—वि० [सं०] दे० 'शोचनीय' [को०]।

शोचिष्केश—सज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ चित्रक वृक्ष। चीता।

शोच्य—वि० [सं०] दे० 'शोचनीय' [को०]।

शोटीर्य—सज्ञा पु० [सं०] बल वीर्य। पराक्रम।

शोठ—वि० [स०] १. मूर्ख। वेवकूफ। २. नीच। खोटा। ३ आलसी। निकम्मा। ४. धूर्त। ठग।

शोण[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३. अग्नि। आग। ४ सिंदूर। सेंदुर। ५ रक्त। रुधिर। खून। ६. पद्मराग मणि। मानिक। ७. रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना। ८. सोना पाठा। ९. लाल गन्ना। १०. एक नद का नाम। विशेष दे० 'सोन'। ११. ललाई लिए भूरे रग का, भिग वर्ण का घोडा (को०)। १२. मगल ग्रह (को०)।

शोण[2]—वि० १ लाल। गहरा लाल। २ लाख के रंग का। लालिमा युक्त भूरा। ३. पीत। पीला [को०]।

शोणक—सज्ञा पु० [स०] १. सोनापाठा। २. लाल गदहपूरना। ३. लाल गन्ना।

शोणगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] एक पहाडी का नाम जिसपर मगध देश की पुरानी राजधानी 'राजगृह' थी।

शोणझिंटिका, शोणझिंटी—सज्ञा स्त्री० [स० शोणझिंटिका, शोणझिंटी] पीली कटसरैया।

शोणपत्र—सज्ञा पुं० [स०] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

शोणपद्म—सज्ञा पुं० [स०] लाल कमल।

शोणपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] कचनार। कोविदार वृक्ष।

शोणपुष्पक—सज्ञा पुं० [स०] १. दे० 'शोणपुष्प'। २. वह जिसके फूल शोण वर्ण के हो [को०]।

शोणपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंदूरपुष्पी। सेंदुरिया।

शोणभद्र—सज्ञा पु० [स०] सोन नदी।

शोणमणि—सज्ञा स्त्री० [स०] पद्मराग मणि। मानिक [को०]।

शोणरत्न—सज्ञा पुं० [स०] मानिक। लाल।

शोणसंभव—संज्ञा पुं० [सं० शोणसम्भव] पिपलामूल। पिप्पलीमूल।

शोणहय—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार द्रोणाचार्य का एक नाम। (कौ०)।

शोणांबु—संज्ञा पुं० [सं० शोणाम्बु] प्रलय काल के मेघों में से एक मेघ का नाम।

शोणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका वर्ण शोण हो (कौ०)। २ सोन नदी। ३ लाल कटसरैया। ४. श्योनाक। सोनापाठा (कौ०)।

शोणाक—संज्ञा पुं० [सं०] श्योनाक वृक्ष (कौ०)।

शोणाश्म—संज्ञा पुं० [सं० शोणाश्म] १. लाल पत्थर। २. पद्मराग। मानिक (कौ०)।

शोणित¹—वि० [सं०] लाल। रक्त वर्ण का।

शोणित²—संज्ञा पुं० १ रक्त। रुधिर। खून। उ०—आहत जन के शोणित पर ही गिरी भरत रोदन धारा।—साकेत, पृ० ३८१। २. पौधों का रस। ३ केसर। जाफरान। ४. ईंगुर। शिंगरफ। ५ ताम्र धातु। तांबा। ६ तृणकेशर।

शोणितचंदन—संज्ञा पुं० [सं० शोणितचन्दन] लाल चंदन।

शोणितप—वि० [सं०] रक्त पीनेवाला (कौ०)।

शोणितपारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपवास आदि के बाद खून या मांस का भोजन (कौ०)।

शोणितपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रक्तवाहिनी शिराएँ फट जाती हैं और रक्तस्राव होने लगता है (कौ०)।

शोणितपुर—संज्ञा पुं० [सं०] बाणासुर की राजधानी।

शोणितभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] शरीरधारी। शरीरवाला। शरीरी (कौ०)।

शोणितमेह—संज्ञा पुं० [सं०] लाल प्रमेह।

शोणितमेही—संज्ञा पुं० [सं० शोणितमेहिन्] शोणित मेह का रोगी। प्रमेह का रक्त रोगी (कौ०)।

शोणितशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शहद की चीनी।

शोणितशोण—वि० [सं०] खून से लाल।

यौ०—शोणितशोणपाणि = खून से लाल लाल हाथोंवाला।

शोणितार्बुद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शूक रोग जिसमें लिंग पर फुंसियाँ निकलती हैं।

शोणितार्श—संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पलक का एक रोग जिसमें पलकों की कोर पर कोमल और लाल रंग का मांस का अंकुर उत्पन्न होता है।

शोणिताह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] केसर। कुंकुम।

शोणितोत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। कोकनद (कौ०)।

शोणितोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मानिक। लाल। शोणाश्म। २. लाल वर्ण का पत्थर (कौ०)।

शोणिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शोणिमन्] अरुणिमा। लालिमा (कौ०)।

शोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसके शरीर का रंग लाल कमल के समान हो। रक्तोत्पल वर्ण की स्त्री। २. शोण वर्ण की वडवा (कौ०)।

शोणोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मानिक। लाल। २ लाल वर्ण का पत्थर (कौ०)।

शोथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम। २. अंग में सूजन होने का रोग। वरम।

विशेष—जब दूषित रक्त, पित्त या कफ कुपित वायु से नसों में रुद्ध हो जाता है, तब सूजन होती है। शोथ तीन प्रकार का कहा गया है—वातज, पित्तज और कफज। आमाशय में दोष होने से छाती के ऊपर, पक्वाशय में होने से छाती के नीचे और मलाशय में होने से कमर से पैर तक सारे शरीर में शोथ होता है। शरीर के मध्य भाग या सर्वांग का शोथ कष्टसाध्य कहा गया है। जो शोथ केवल अर्धांग में उत्पन्न होकर ऊपर की ओर बढ़ता हो, वह प्रायः घातक होता है। पर पांडु आदि रोगों में पैर से ऊपर की ओर बढ़नेवाला शोथ घातक नहीं होता। स्त्रियों की कुक्षि, उदर, गर्भस्थान या गले का शोथ असाध्य होता है। जो शोथ बहुत भारी और कड़ा हो और जिसमें श्वास, प्यास, दुर्बलता, अरुचि आदि उपद्रव भी उत्पन्न हों, वह भी असाध्य कहा गया है।

शोथक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'शोथ'। २ मुरदासंग।

शोथघ्न—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'शोथजित्' (कौ०)।

शोथघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गदहपूरना। पुनर्नवा। २. शालपर्णी। सरिवन।

शोथजित्¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. भिलावाँ। भल्लातक। २. पुनर्नवा।

शोथजित्²—वि० शोथ दूर करनेवाला। जिससे शोथ रोग दूर हो।

शोथजिह्वा—संज्ञा पुं० [सं०] पुनर्नवा। गदहपूर्णा।

शोथरोग—संज्ञा पुं० [सं०] शोथ या सूजन का रोग।

शोथहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ। भल्लातक।

शोथारि—संज्ञा पुं० [सं०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शोद्धव्य—वि० [सं०] जिसे शुद्ध करना हो। शोधने योग्य।

शोध—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धि संस्कार। सफाई। २ ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३ चुकता होना। अदा होना। बेबाक होना। जैसे,—ऋण का शोध होना। ४. जाँच। परीक्षा। ५. प्रतिकार। प्रतिशोध। बदला (कौ०)। ६. खोज। ढूँढ़। तलाश। अनुसंधान। अन्वेषण। उ०—करते हैं ज्ञानी विज्ञानी नित्य नए सत्यों का शोध।—साकेत, पृ० ३७३।

शोधक¹—वि० [वि० स्त्री० शोधका, शोधिका] शोध करनेवाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधक²—संज्ञा पुं० [सं०] १. शोधनेवाला। शुद्ध या साफ करनेवाला। उ०—संसार को बहुधा विरोध कुचित्त शोधक जानि। ठाढ़ो भई वह शांति सों करुणा सखी सुख मानि।—केशव (शब्द०)। २. सुधार करनेवाला। सुधारक। संशोधक। ३. ढूँढ़नेवाला। खोजनेवाला। अनुसंधान करनेवाला। ४. गणित में वह संख्या जिसे घटाने से ठीक वर्गमूल निकले। ५. रेचक। रेचन करनेवाला। जैसे, मलशोधक (कौ०)।

शोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य, शोधयत्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। जैसे,—लेखशोधन। ३ धातुओं का औषध रूप मे व्यवहार करने के लिये संस्कार। जैसे,—पारद का शोधन। ४ छानबीन। जाँच। ५ खोजना। ढूँढना। तलाश करना। अनुसंधान करना। ६ ऋण चुकाना। अदा करना। बेबाक करना। ७ किसी पाप से शुद्ध होने का संस्कार। प्रायश्चित्त। ८ चाल सुधारने के लिये कष्ट। सजा। ९ हटाकर साफ करना। सफाई के लिये दूर करना। साफ करना। १० दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन। ११ मुर्दासंग। कसीस। १२ मल। विष्ठा। १३ घटाना। बाकी करना। (गणित)। १४ नीबू। १५. हीरा कसीस। १६. उन्मूलन। उत्पाटन। हटाना। दूर करना। जैसे,—कंटकशोधन। १७ ज्योतिष के अनुसार किसी शुभ कार्य का शुभाशुभ दिन, मास योगादि का विचार। जैसे,—लग्नशोधन (क्व०)। १८. बदला। प्रतिशोध। जैसे,—वैरशोधन (को०)।

शोधन¹—वि० शुद्धि करनेवाला। साफ करनेवाला (को०)।

शोधनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल के न्यायालय या धर्मसभा का स्थान साफ और ठीक करनेवाला अधिकारी, कर्मचारी।

शोधना—क्रि० स० [सं० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ करना। मैला आदि निकालकर स्वच्छ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। त्रुटि या दोष दूर करना। सुधारना। जैसे,—लेख शोधना। ३. औषध के लिये धातु का संस्कार करना। जैसे,—पारा शोधना। ४ ढूँढना। खोजना। अन्वेषण करना। तलाश करना। उ०—अरुबल, लग्न, नक्षत्र शोधि कीनी वेदध्वनि।—सूर (शब्द०)।

शोधनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्जनी। झाड़ू। बुहारी। २ ताम्रवल्ली। ३ नील। ४ गृहदि नामक क्षुद्रगोंद औषधि।

शोधनीबीज—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटे का बीज।

शोधनीय—वि० [सं०] १ शुद्ध करने योग्य। २. चुकाने योग्य। ३ ढूँढने योग्य।

शोधवाना—क्रि० स० [सं० शोधना का प्रे० रूप] १ शोधने का काम कराना। शुद्ध कराना। दुरुस्त कराना। २ ढुँढवाना। तलाश कराना।

शोधवैया—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शोधैया'।

शोधा—वि० [सं० शोधक] धातु शोधन करनेवाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधित—वि० [सं०] १. शुद्ध किया हुआ। स्वच्छ। संस्कृत। २ छाना हुआ। ४ संशोधित। जिसका सुधार किया गया हो। ५ जो चुकता कर दिया गया हो। जैसे, कर्ज। ६ जिसका अन्वेषण किया गया हो। अन्वेषित। ७ हटाया हुआ। दूर किया हुआ (को०)।

शोधैया—संज्ञा पुं० [हिं० शोध+ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला। सुधारक। उ०—मंगल सदा ही करैं राम युगलेश कहै राग रसिकावली शोधैया औ बोधैया को।—रघुराज (शब्द०)।

शोध्य¹—वि० [सं०] शोधन करने योग्य (को०)।

शोध्य²—संज्ञा पुं० १. [illegible] जो [illegible] पर अभियोग [illegible] न सका हो। वह जिसपर अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त (को०)।

शोन—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]

शोफघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ [illegible] २ [illegible] (वा०)।

शोफजित्—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] (को०)।

शोफनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] नीम का वृक्ष। २. [illegible] (वा०)।

शोफर—संज्ञा पुं० [फा० > अं० [illegible]] मोटर चलानेवाला। मोटर का ड्राइवर। उ०—[illegible] मोटर पर आ [illegible] शहर का रहा।—[illegible] पृ० २/८।

शोफहारी—संज्ञा पुं० [सं० [illegible]] [illegible]।

शोफान्—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]।

शोफार—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]।

शोफित—वि० [सं०] [illegible] हुआ।

शोब—संज्ञा पुं० [फा०] १ [illegible] २ धोना [illegible]।

शोबदा—संज्ञा पुं० [अ०] १ [illegible]। [illegible]। [illegible]। नजरबंदी। बाजीगरी। २. [illegible] (को०)।

यौ०—शोबदबाज = (१) बाजीगर। (२) धूर्त (को०)।

शोबा—संज्ञा पुं० [अ० शोबह्] १ टुकड़ा। [illegible]। हिस्सा। २. [illegible] ३ [illegible] विभाग (को०)।

शोभ¹—वि० [सं०] [illegible]। सुंदर। सजीला।

शोभ²—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार के देवता। २ एक प्रकार [illegible] ३ (यौगिक शब्दों में प्रयुक्त) शोभा। कांति।—जैसे—[illegible]।

शोभ³—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] दे० 'शोभा'।

शोभक—वि० [सं०] सुंदर। शोभित। सजीला।

शोभकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ [illegible] २. ज्योतिष मे ६० संवत्सरों में से ३७ वाँ अथवा ३६ वाँ संवत्। एक संवत्सर का नाम (को०)।

शोभन¹—वि० [सं०] १ शोभायुक्त। दीप्त। सुंदर। सजीला। २. सुहावना। रमणीय। ३ उत्तम। अच्छा। भला। श्रेष्ठ। ४. सदाचारी। पुण्यात्मा। ५ उचित। उपयुक्त। सुहाता हुआ। ६ शुभ। मंगलदायक।

शोभन²—संज्ञा पुं० १ अग्नि का नाम। २ शिव का नाम। ३. इष्टि योग। ४. ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से पाँचवाँ योग। ५ ग्रह। ६. बृहस्पति का ग्यारहवाँ संवत्सर। ७. २४ मात्राओं का एक छंद जिसमें १४ और १० मात्रा पर यति होती है और अंत में जगण होता है। इसका दूसरा नाम 'सिंहिका' है। ८. मालकोश राग का पुत्र। एक राग। ९.

कमल। १० गंगा। ११ आभूषण। गहना। १२ मगल। कल्याण। शुभ। १३. धर्म। पुण्य। १४ दीप्ति। सौंदर्य। १५ सिंदूर। सेँदुर। १६ कंकुष्ठ। १७ अच्छे फल की प्राप्ति के लिये अग्नि मे दी हुई आहुति (को०)।

शोभनक—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन या शोभांजन का वृक्ष।

शोभनतम—वि० [सं० शोभन+तम (प्रत्य०)] अत्यंत सुंदर। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम, लता कलित शुचि सानु शरीर।—कामायनी, पृ० २९।

शोभना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदरी स्त्री। २. हल्दी। हरिद्रा। ३ गोरोचन। ४ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

शोभना²—क्रि० स० [सं० शोभन] शोभित होना। सोहना। उ०—फूल की झालर बनी ह शोभती, गंध सौरभ वायु मडल की तहें।—झरना, पृ० ३५।

शोभनिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नट या अभिनयकर्ता।

शोभनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो मालकोश राग की स्त्री कही जाती है।

शोभनीय—वि० [सं०] सुदर। मनोहर [को०]।

शोभनीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोरखमुडी।

शोभांजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] सहिजन का पेड।

शोभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीप्ति। कांति। चमक। २ छवि। सुदरता। छटा। सजीलापन। रुचिरता।

मुहा०—शोभा देना=अच्छा लगना। सुंदर लगना। शोभा बरसना=शोभा या सौंदर्य की अधिकता होना।

३ सजावट। ४. उत्तम गुण। ५ वर्ण। रंग। ६ बीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे क्रम से यगण, मगण, दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं तथा ६, ७ और ६ पर यति होती है। ७ हलदी। हरिद्रा। ८ गोरोचन। ९ फारसी सगीत मे मुकाम की स्त्रियाँ जो चौबीस होती हैं। १०. काव्य के दस गुणो मे से एक (को०)। ११ एक काव्यालकार (को०)।

शोभाकर¹—वि० [सं०] सौंदर्यकारक। शोभित करनेवाला।

शोभाकर²—संज्ञा पुं० १. शोभा की खान। २. अत्यंत सुंदर व्यक्ति। सौंदर्य का आकर।

शोभातिशायी—वि० [सं० शोभा+अतिशायिन्] शोभावर्धक। सौंदर्य बढानेवाला। उ०—आचार्यों ने भी अलकारो को काव्यशोभाकर, शोभातिशायी आदि ही कहा है।—रस०, पृ० ५२।

शोभाधर—वि० [सं०] मनोहर [को०]।

शोभाधायक—वि० [सं०] उपकारक। जिससे सौंदर्य मे वृद्धि हो। शोभाकर। उ०—किंतु वामन ने उस व्यग्यार्थ को भी वाच्यार्थ का उपकारक (शोभाधायक) बनाकर अलकारो की कुक्षि (कोख) मे ही रख दिया था।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४४२।

शोभाधारक—वि० [सं०] दे० 'शोभाधर' [को०]।

शोभानक—संज्ञा पुं० [सं०] शोभांजन वृक्ष। सहिजन।

शोभान्वित—वि० [सं०] शोभा से युक्त। सुदर। सजीला।

शोभामय—वि० [सं०] सुंदरता से पूर्ण [को०]।

शोभायमान—वि० [सं०] सोहता हुआ। सुदर।

शोभित—वि० [सं०] १ शोभा से युक्त। सुदर। सजीला। २ अच्छा लगता हुआ। सजा हुआ। ३ विद्यमान। उपस्थित। विराजता हुआ। जैसे,—सिंहासन पर शोभित होना।

शोभिनी—वि० [सं०] शोभा देनेवाली। सुंदरी [को०]।

शोभी—वि० [सं० शोभिन्] १. दीप्तिमान्। कांतिमान्। २ शोभायुक्त। सुदर। मनोहर [को०]।

शोर—संज्ञा पुं० [फा०] १ जोर की आवाज। हल्ला। गुल गपाडा। कोलाहल। उ०—(क) जहाँ तहाँ शोर भारी भीर नर नारिन की सबही की छूटि गई लाज यहि भाइ कै।—केशव (शब्द०)। (ख) घननि की घोर सुनि मोरनि के शोर सुनि सुनि सुनि केशव अलाप आली जन को।—केशव (शब्द०)। २. धूम। प्रसिद्धि। जैसे,—उसके बडप्पन का शोर हो गया है। उ०—आप द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाइ। प्रद्युम्न लरे सप्त दश दो दिन रच हार नहिं माने।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—मचाना।

यौ०—शोरगुल=हल्ला। कोलाहल। धमाचौकडी।

३. खारी नमक (को०)। ४. ऊसर भूमि (को०)। ५ उन्माद। पागलपन (को०)।

शोरबा—संज्ञा पुं० [फा०] १ किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। झोल। जूस। रसा। २. पके हुए मांस का पानी।

शोरा—संज्ञा पुं० [फा० शोरह्] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी से निकलता है।

विशेष—यह बहुत ठढा होता है और इसीलिये पानी ठढा करने के काम मे आता है। बारूद मे भी इसका योग रहता है और सुनार इससे गहने भी साफ करते हैं। खारी मिट्टी मे क्यारियाँ बनाकर इसे जमाते हैं। साफ किए हुए बढिया शोर को कलमी शोरा कहते ह।

मुहा०—शोरे की पुतली=बहुत गोरी स्त्री।

शोरा आलू—संज्ञा पुं० [हिं० शोरा+आलू] बन आलू।

शोरापुश्त—वि० [फा०] लडाका। झगडालू। फसादी।

शोरिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खलबली। हलचल। २ बलवा। बगावत। उपद्रव। दगा।

शोरी—संज्ञा पुं० [फा० शोर] १. फारसी सगीत मे एक मुकाम का पुत्र। २. एक पजाबी प्रसिद्ध गवैया जिसने टप्पा नाम का गीत निकाला था।

शोला¹—संज्ञा पुं० [देश०] एक छोटा पेड़ जिसकी लकडी बहुत हल्की होती है।

विशेष—पानी पर तैरनेवाले जाल मे इसकी लकडी लगाई जाती है। लकडी का सफेद हीर फूल, खिलौने तथा विवाह के मुकुट बनाने के काम मे आता है।

शोला¹—संज्ञा पुं० [अ०] आग की लपट। ज्वाला।

यौ०—शोलाबारी = अग्निवर्षा। आग बरसना। शोलामिजाज = अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का। गुस्सैल। शोलारू, शोलारुख = लाल लाल गालोंवाला। रक्ताभ कपोलोंवाला।

शोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनहलदी। वनहरिद्रा।

शोलेप—संज्ञा पुं० [सं०] वाल्मीकि रामायण में वर्णित एक प्रकार का अस्त्र।

शोशा—संज्ञा पुं० [फा० शोशह्] १ निकली हुई नोक। २. अरबी फारसी के सीन या शीन अक्षर का दंदाना या नोक (को०)। ३ अद्भुत या अनोखी बात। चुटकुला। ४ झगड़ा खड़ा करनेवाली बात। ५ लगती बात। व्यंग्य।

क्रि० प्र०—छोड़ना।

६ खंड। टुकड़ा (को०)। ७ सोने या चाँदी का डला (को०)।

शोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूखने का भाव। खुश्क होना। रस या गीलापन दूर होने का भाव। २ सोखने का भाव। खुश्की। ३ शरीर का घुलना या क्षीण होना। ४ एक रोग जिसमें शरीर घुलता या क्षीण होता जाता है। राजयक्ष्मा का भेद। सूखी।

विशेष—वैद्यक में शोष रोग के छह कारण बताए गए हैं—अधिक शोक, जरावस्था, अधिक मार्ग चलना, अधिक व्यायाम, अधिक स्त्रीप्रसंग और हृदय में चोट लगना। इस रोग में शरीर क्षीण होता जाता है, मंद ज्वर और खाँसी रहती है, पसली, छाती और कमर में पीड़ा रहती है तथा अतिसार भी हो जाता है।

५. बच्चों का सुखंडी रोग। ६ खुश्की। सूखापन।

शोषक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १ जल, रस या तरी सोखनेवाला। सोखनेवाला। २ सुखानेवाला। खुश्क करनेवाला। ३. घुलानेवाला। क्षीण करनेवाला। ४. नाश करनेवाला। ५. दूर करनेवाला। ६ समाज का वह व्यक्ति या वर्ग जो स्वल्पतम मूल्य देकर परिश्रम करनेवालों के परिश्रम का फल भोगता हो।

विशेष—मार्क्सवाद के अनुसार समाज दो वर्गों में विभक्त है। शोषक और शोषित। शोषक वह वर्ग है जो पैसा लगाकर दूसरों से काम कराकर मुनाफा कमाता है और सभी सुविधाओं का उपभोग करता है। जो वर्ग मजदूर है, मेहनत करता है और सुविधा से वंचित रहता है वह शोषित वर्ग है।

शोषकवर्ग—संज्ञा पुं० [सं० शोषक+वर्ग] शोषकों का समूह। दे० 'शोषक'—५।

शोषघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] वनप्याज।

शोषण¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोषी, शोषित, शोषणीय] १. जल या रस सोखना। सोखना। २ सुखाना। खुश्क करना। तरी या गीलापन दूर करना। ३ हरापन या ताजापन दूर करना। ४. घुलाना। क्षीण करना। क्षय करना। ५. नाश करना। दूर करना। न रहने देना। ६. कामदेव के एक बाण का नाम। ७. सोंठ। शुंठि। ८ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ९. पिप्पली। पीपल। १० एक प्रकार की क्रिया (को०)। ११ किसी के धन या संपत्ति का नाजायज उपयोग (को०)।

शोषण²—वि० शोष करनेवाला। नाश करनेवाला।

शोषणीय—वि० [सं०] सोखने या सुखाने योग्य।

शोषयितव्य—वि० [सं०] १. जो सोखा जानेवाला हो। २. जिसे सुखाना हो।

शोषयिता—वि० [सं० शोषयितृ] सुखानेवाला (को०)।

शोषयित्नु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य (को०)।

शोषसंभव—संज्ञा पुं० [सं० शोषसम्भव] सिलारस।

शोषहा—संज्ञा पुं० [सं० शोषहन्] (शोष रोग का नाश करनेवाला)] घास। कुश। दर्भ।

शोषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूर्वा।

शोषिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोषण। तेज नाक या [illegible] (को०)।

शोषित—वि० [सं०] १ सोखा हुआ। सुखाया हुआ। ३. क्षीण किया हुआ (को०)। ४ [illegible] किया हुआ (को०)। ५ चूसा हुआ। [illegible] हुआ।

शोषितवर्ग—संज्ञा पुं० [सं० शोषित+वर्ग] समाज का वह वर्ग जिसका शोषण किया गया हो। दे० 'शोषक'—५।

शोषी—वि० संज्ञा पुं० [सं० शोषिन्] [स्त्री० शोषिणी] १ सोखनेवाला। २ सुखानेवाला।

शोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] जलादि की [illegible]। विराम। ध्यान (को०)।

शोष्य—वि० [सं०] जिसे सोखा या सुखाया जाय। सुखाने या सोखने के योग्य।

शोहदा—संज्ञा पुं० [अ०। हि० स०+सुहृद ?] १ व्यभिचारी। लंपट। २. गुंडा। बदमाश। लुच्चा। ३ छैल चिकनिया। बहुत बनाव सिंगार करनेवाला।

शोहदापन—संज्ञा पुं० [हि० शोहदा+पन (प्रत्य०)] १. लुच्चापन। २. छैलापन।

शोहरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ नामवरी। ख्याति। प्रसिद्धि। २. खूब फैली हुई खबर। धूम। जोर। उ०—शहर में शोहरत हो गई है।

शोहरा—संज्ञा पुं० [अ० शोहरत] १ ख्याति। प्रसिद्धि। २ दूर तक फैली हुई खबर। चर्चा। उ०—भो रघुराज दूत आगत अवध माहि, तारका विनाश का विपत्ति सुन शोहरा।—रघुराज (शब्द०)।

शौंग—संज्ञा पुं० [सं० शौङ्ग] भरद्वाज ऋषि का एक नाम जो शुंग के अपत्य थे।

शौंगिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं० शौङ्गिपुत्र] एक वैदिक आचार्य का नाम।

शौंगेय—संज्ञा पुं० [सं० शौङ्गेय] १. गरुड़। २. श्येन पक्षी। बाज।

शौंड¹—संज्ञा पुं० [सं० शौण्ड] १. मुर्गा। कुक्कुट पक्षी। २. पुनेरा। देवधान्य। ३. वह जो मद्य पीकर मतवाला हुआ हो। मस्त। मत्त।

शौंड²—वि० १ मद्यप। शराबी। २ उत्तेजित। नशे मे चूर। ३ (समास मे) कुशल। दक्ष [को०]।

शौंडता—संज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डता] मत्तता। बदमस्ती।

शौंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डा] मद्य। शराब [को०]।

शौंडायन—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डायन] प्राचीन काल की एक योद्धा जाति का नाम।

शौंडि—वि० [सं० शौण्डि] १ चतुर। दक्ष। कुशल। २. आसक्त। अनुरक्त [को०]।

शौंडिक—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डिक] [स्त्री० शौण्डिकी] १ प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध जाति जिसका व्यवसाय मद्य बनाना और बेचना था।

विशेष—पराशरपद्धति मे इस जाति की उत्पत्ति कैवर्त पिता और गाधिक माता से लिखी है, और मनु ने कहा है कि इस जाति के आदमी के घर भोजन नही करना चाहिए।

२ पिप्पलीमूल।

शौंडिकप्रिय—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डिकप्रिय] आम।

शौंडिकागार—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डिकागार] शराब की दूकान। शराबखाना। हौली। कलवरिया।

शौंडिकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डिकी] शौंडिक जाति की स्त्री [को०]।

शौंडिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डिनी] दे० 'शौंडिकी'।

शौंडी¹—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डिन्] प्राचीन काल की शौंडिक नामक जाति।

शौंडी²—संज्ञा स्त्री० [सं० शौण्डी] १ पीपल। पिप्पली। २. चव्य। चविका। कटभी वृक्ष। ३ मिर्च।

शौंडिर—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शौण्डिर] दे० 'शौंडीर'।

शौंडीर¹—वि० [सं० शौण्डीर] १ बहुत घमड करनेवाला। अहकारी। अभिमानी। २ उत्तुग। उन्नत (को०)। ३ समर्थ (को०)।

शौंडीर²—संज्ञा पुं० अभिमान। गर्व। घमड [को०]।

शौंडीर्य—संज्ञा पुं० [सं० शौण्डीर्य] १. शूरत्व। नायकत्व। २ अभिमान। घमड। गर्व। शान [को०]।

शौक—संज्ञा पुं० [अ० शौक] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या निरतर भोग के लिये अथवा कोई कार्य करते रहने के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा या कामना। प्रबल लालसा। जैसे,—मोटर का शौक, सफर का शौक, खाने पीने का शौक, जूए का शौक, किताबो का शौक।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

मुहा०—शौक करना = किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। जैसे,—तबाकू आ गया, शौक कीजिए। शौक चर्राना या पैदा होना = मन मे प्रबल कामना होना। तीव्र लालसा होना (—)। जैसे—अब आप को भी घोडे पर चढने का शौक चर्राया है। शौक पूरा करना या मिटाना = किसी बात की प्रबल इच्छा की पूर्ति करना। जैसे,—जाइए, आप भी शतरंज का शौक पूरा कर (मिटा) लीजिए। शौक फरमाना = दे० 'शौक करना'। शौक से = प्रसन्नतापूर्वक। आनद से। जैसे—हाँ हाँ, आप भी शौक से चलिए।

२ आकाक्षा। लालसा। हौसिला। जैसे,—मुझे आज तक इस बात का शौक ही रहा कि लोग तुम्हारी तारीफ करते। ३ व्यसन। चसका। चाट। जैसे—(क) आजकल उसे शराब का शौक हो गया है। (ख) आपको गगास्नान का शौक कब से हुआ ?

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।—होना।

४ प्रवृत्ति। झुकाव। जैसे,—जरा आपका शौक तो देखिए, पेड पर चढने चले हैं।

शौक²—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुकसमूह। तोतो का झुड। २ रतिबध का एक प्रकार (को०)। ३ शोक की अवस्था। शोकदशा। शोकपूर्णता (को०)।

शौकत—संज्ञा स्त्री० [अ० शौकत] ठाठ बाट। शान। उ०—हशमत व शौकत थिर नही मत देख हो मगरूर।—चरण० बानी, पृ० ११४।

यौ०—शान शौकत।

२. आतक। दबदबा। वि० दे० 'शान'।

शौकर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाराहीकद। गेंठी।

शौकि—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौकिया¹—क्रि० वि० [अ० शौकियह] शौक के कारण। शौक पूरा करने के लिये। प्रवृत्ति के वश होकर। जैसे,—(क) मुझे तमाकू पीने की आदत तो नही है, पर हाँ कभी कभी शौकिया पी लिया करता हूँ। (ख) उन्हे कोई जरूरत तो न थी, सिर्फ शौकिया फारसी सीख ली थी।

शौकिया²—वि० शौक से भरा हुआ। जैसे,—शौकिया सलाम।

शौकीन—संज्ञा पुं० [अ० शौक + हिं० ईन (प्रत्य०)] १ वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। चाव रखनेवाला। जैसे,—आप गाने बजाने के बडे शौकीन हैं। २ वह जो सदा छैला बना रहता हो। सदा बना ठना रहनेवाला। ३. रडीबाज। ऐयाश। तमाशबीन।

शौकीनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शौकीन + ई (प्रत्य०)] १. शौकीन होने का भाव या काम।

क्रि० प्र०—करना।—छाँटना।—दिखाना।—बघारना।

२. तमाशबीनी। रडीबाजी। ऐयाशी।

शौकेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शौक्त[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

शौक्त[2]—वि० १ अम्लयुक्त। क्षारयुक्त। तेजाबी। २ शुक्ति का बना हुआ (को०)।

शौक्तिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न, मोती। मुक्ता।

शौक्तिक[2]—वि० १ सीपी से या मोती से संबंधित। २ क्षार या अम्ल युक्त। तेजाबी (को०)।

शौक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप।

शौक्तिकेय, शौक्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] मोती, जो शुक्ति या सीपी से उत्पन्न होता है।

शौक्र—वि० [सं०] १ शुक्र ग्रह संबंधी। शुक्र का। २ वीर्य संबंधी (को०)।

शौक्ल[1]—वि० [सं०] शुक्ल संबंधी। शुक्ल का।

शौक्ल[2]—संज्ञा पुं० दे० 'शौक्त'[1]।

शौक्लिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हलका विष (को०)।

शौक्ल्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेदी। उज्वलता (को०)।

शौग्र—संज्ञा पुं० [सं०] सिग्रु, सहिजन का बीज।

शौच—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुचि होने का भाव। शुद्धता। पवित्रता। पाकीजगी। २ शास्त्रीय परिभाषा में पवित्रतापूर्वक धर्माचरण करना, शरीर और मन शुद्ध रखना, सत्य बोलना और निषिद्ध पदार्थों तथा कार्यों आदि का त्याग करना। सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना।

विशेष—मनु के अनुसार यह धर्म के दस लक्षणों में से पाँचवाँ लक्षण है, और योगशास्त्र के पाँच नियमों में से पहला नियम है। कुछ लोगों ने इसके बाह्य और आभ्यंतर ये दो भेद माने हैं। शरीर का बाह्य शौच मिट्टी और जल आदि से होता है, और अपने चित्त का भाव सब प्रकार से शुद्ध रखने से आभ्यंतर शौच होता है। जैनों के अनुसार संयमवृत्ति को निष्कलंक रखना शौच कहलाता है।

३ वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। जैसे,—पाखाने जाना, मुँह हाथ धोना, नहाना, संध्या वंदन करना आदि। ४ पाखाने जाना। जंगल जाना। टट्टी जाना। ५ दे० 'अशौच'। ६ खरापन। ईमानदारी (को०)। ७ तर्पण का जल (को०)।

शौचकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] लोकव्यवहार या शास्त्रानुसार शुद्ध होने की क्रिया (को०)।

शौचकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शौचकर्म' (को०)।

शौचकूप—संज्ञा पुं० [सं०] शौचगृह। संडास (को०)।

शौचगृह—संज्ञा पुं० [सं०] पाखाना (को०)।

शौचविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का त्याग करना। शौच आदि से निवृत्त होना। निपटना।

शौचागार—संज्ञा पुं० [सं०] शौचगृह। पाखाना।

शौचाचार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शौचकार्य' (को०)।

शौचादिरेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शौचालय—संज्ञा पुं० [सं० शौच+आलय] शौचगृह। शौचागार।

शौचिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौंडिक पिता और कैवर्त माता से कही गई है। २ शुद्ध, पवित्र या साफ करनेवाला (को०)।

शौची—वि० [सं० शाचिन्] विशुद्ध। पवित्र।

शौचेय—संज्ञा पुं० [सं०] रजक। धोबी।

शौटीर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर। बहादुर। २ शौर्य। पराक्रम। साहस (को०)। ३. संन्यासी या त्यागी व्यक्ति। ४ अभिमानी। मनुष्य।

शौटीर[2]—वि० १ गर्वयुक्त। गर्वीला। प्रगल्भ। २ उदार (को०)।

शौटीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शौटीर का भाव या धर्म। २ वीरता। बहादुरी। ३ त्याग। ४ अभिमान। अहंकार। गर्व।

शौटीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर्य। शुक्र। २ गर्व। अभिमान। ३ वीरता। बहादुरी।

शौत पु—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—पेरे आगे की यह गढी। अब भइ सौत बदन पर चढी।—लल्लूलाल (शब्द०)।

शौद्धोदनि—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव, जो शुद्धोदन के पुत्र थे।

शौद्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के वीर्य से शूद्रा से उत्पन्न पुत्र।

विशेष—यह बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का पुत्र माना जाता है। ऐसा पुत्र अपने पिता के गोत्र का नहीं होता और न उसको संपत्ति का अधिकारी ही हो सकता है।

शौद्र[2]—वि० शूद्र या शूद्र जाति से संबंधित (को०)।

शौध पु[1]—वि० [सं० शुद्ध] निर्मल। पवित्र (डिं०)। उ०—कटि कातो पगवतिका नाभि द्वारिका शोध। हृदमाया कंठ मथुरा काशि प्राण शिर औध।—विश्राम (शब्द०)।

शौध पु[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुध'।

शौधिका संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तकंगु। लाल कँगनी।

शौन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वधालय में रखा हुआ मांस। वह मांस जो बिक्री के लिये रखा हो।

शौन[2]—वि० श्वान संबंधी। कुत्ते का।

शौनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे।

विशेष—ये नैमिषारण्य में तपस्या करते थे और इन्होंने एक बार एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था जो बारह वर्षों तक होता रहा। ये बड़े तत्वदर्शी थे। इनके नाम से ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य कई ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

शौनकायन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शुनक ऋषि के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

शौनकीपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शौनायण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मास वेचनेवाला। कसाई। २ शिकार। आखेट। मृगया। ३ शिकारी। व्याध। बहेलिया (को०)।

शौनिकशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमे शिकार खेलने, घोडो आदि पर चढने और पशुओ आदि को लडाने की विद्या का वर्णन हो।

शौभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिकनी सुपारी। २. देवता। ३ राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश मे मानी जाती है।

शौभनेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोभना अर्थात् सुंदरी स्त्री का पुत्र। २ वह जो शोभन सबधी हो (को०)।

शौभाजन¹—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] सहिजन नामक वृक्ष। शोभाजन। विशेष दे० 'सहिजन'।

शौभायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक योद्धा जाति का नाम।

शौभिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्रजाल का तमाशा करनेवाला। इंद्रजालिक। जादूगर। २. शिकारी। व्याध (को०)। ३ यज्ञ का यूप या स्तभ (को०)।

शौभ्रायण—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल के एक देश का नाम। २. इस देश के निवासी।

शौभ्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शुभ्र वस्तु वा व्यक्ति से संबद्ध हो। २ एक युद्धक जाति।

शौर(पु)—संज्ञा पुं० [फा० शोर] शोर। चखचख। उ०—ऋषि शोर सुनो जब काना। मन मे उपज्यो तब ज्ञाना।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १३६।

शौरसेन¹—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्रजमंडल का प्राचीन नाम जहाँ पहले राजा शूरसेन का राज्य था।

शौरसेन²—वि० शूरसेन सबंधी। शूरसेन का।

शौरसेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शौरसेनी'।

शौरसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा जो शूरसेन (वर्तमान व्रजमडल) प्रदेश मे बोली जाती थी।

विशेष—यह मध्य देश की प्राकृत थी और शूरसेन देश मे इसका प्रचार होने के कारण यह शौरसेनी कहलाई। मध्यदेश मे ही साहित्यिक संस्कृत का अभ्युदय हुआ था और यहीं की बोलचाल की भाषा से साहित्य की शौरसेनी प्राकृत का जन्म हुआ। इसपर संस्कृत का बहुत अधिक प्रभाव पडा था और इसी लिये इसमे तथा संस्कृत मे बहुत समानता है। यह अपेक्षाकृत अधिक पुरानी, विकसित और शिष्ट समाज की भाषा थी। वर्तमान हिंदी का जन्म शौरसेनी और अर्धमागधी प्राकृतो तथा शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशो से हुआ है।

२. प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध अपभ्रंश भाषा जिसका प्रचार मध्यदेश के लोगो और साहित्य मे था। यह नागर भी कहलाती थी।

शौरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ कृष्ण। ३ बलदेव। ४ शनैश्चर ग्रह।

शौरिप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।

शौरिरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।

शौर्प—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शौर्पी] १ सूप संबंधी। सूप से नापा हुआ। सूप के बराबर (को०)।

शौर्पारक—संज्ञा पुं० [सं०] काले रंग का एक प्रकार का हीरा जो प्राचीन काल मे शूर्पारक प्रदेश मे पाया जाता था।

शौर्पिक—वि० [सं०] दे० 'शौर्प' (को०)।

शौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव। शूरता। पराक्रम। वीरता। बहादुरी। २ शूर का धर्म। ३ नाटक मे आरभटी नाम की वृत्ति। विशेष दे० 'आरभटी'—२।

शौल—संज्ञा पुं० [सं०] हल के एक भाग का नाम (को०)।

शौलायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम जो कौलायन भी कहलाते थे।

शौलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल के एक देश का नाम जो शूलिक भी कहलाता था। २. इस देश का निवासी।

शौलिकि—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार धौति, नेति आदि छह प्रकार के कर्मो मे से एक कर्म। इसमे दाहिने नथने से धीरे धीरे साँस खीचते हुए बाएँ नथने से छोडते हैं, और फिर बाएँ नथने से खीचते हुए दाहिने नथने से छोडते हैं। कहते हैं, इस क्रिया द्वारा कफ के दोष का शमन होता है।

शौल्क¹—वि० [सं०] शुल्क सबधी। शुल्क का।

शौल्क²—संज्ञा पुं० एक साम का नाम।

शौल्कशालिक—संज्ञा पुं० [सं०] वे अधिकारी जो प्रत्येक माल की संख्या, परिमाण, गुण आदि की जाँच पडताल करते थे। उ०—रात्रि के समय भी शौल्कशालिक अधिकारी नियुक्त रहते थे।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६६।

शौल्कायनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो वेददर्शी के शिष्य थे और जिनका उल्लेख भागवत मे आया है।

शौल्किक—संज्ञा पुं० [सं०] वह अधिकारी जो लोगों से शुल्क लेता हो। कर या महसूल आदि वसूल करनेवाला अफसर। शुल्काध्यक्ष।

शौल्किकेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष।

शौल्फ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौफ। शतपुष्पा। २. सुलफा नाम का साग।

शौल्विक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति का नाम। २. ठठेरा। कसेरा।

शौव[1]—वि० [सं०] [स्त्री० शौवी] १ कुक्कुर संबंधी २ पर या उत्तर दिवस संबंधी। आगामी कल का। आनेवाले कल से संबंध रखनेवाला [को०]।

शौव[2] संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्तों का समूह। २ कुत्ते की प्रकृति, स्वभाव या स्थिति [को०]।

शौवन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्ते का मांस। २ कुत्तों का झुंड। ३ कुत्ते का पिल्ला (को०)। ४ कुत्ते की प्रकृति या स्वभाव (को०)।

शौवन[2]—वि० [वि० स्त्री० शौवनी] १. श्वान संबंधी। कुत्ते का। २ जिसकी प्रकृति या स्वभाव कुत्ते की तरह हो (को०)।

शौवस्तिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शौवस्तिकी] वह पदार्थ जो भविष्य में व्यवहार करने के विचार से संग्रह करके रखा गया हो।

शौवस्तिक[2]—वि० १ जो दूसरे दिन तक टिक सके या खराब न हो। २. परेद्यु संबंधी [को०]।

शौवापद—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शौवापदी] १. श्वापद या वन्य पशु से संबंध रखनेवाला। २ जंगली।

शौष्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ मांस का विक्रेता। मांस बेचनेवाला। २ जिसका स्वभाव मांस खाने का हो। मांसभक्षी। मत्स्य-मांस भक्षी। ३ सूखे मांस का मूल्य [को०]।

शौहर[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] स्त्री का पति। स्वामी। खाविंद। मालिक। विशेष दे० 'पति—२'।

श्चोत, श्चोतन, श्च्योत, श्च्योतन—संज्ञा पुं० [सं०] निकलना। बहना। रिसना [को०]।

श्नाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

श्नुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैदिक काल का 'समय' का एक परिमाण। २ छोटी ढेरी या अन्न नापने का छोटा नाप (को०)।

श्नौष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

श्म—संज्ञा पुं० [सं० श्मन्] १ मुख। आनन। २. देह। शरीर। ३. मृत शरीर। शव। मुर्दा [को०]।

श्मशान—संज्ञा पुं० [सं० श्म (=शव)+शान (=शयन)] १ वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। शवदाह करने का स्थान। मसान। मरघट।

पर्या०—पितृवन। शतानक। रुद्राक्रीड। दाहसर। अंतशय्या। पितृकानन।

२ पितरों के लिये दी जानेवाली बलि या पिंड (को०)।

श्मशान कालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की काली जिनका पूजन मांस, मछली खाकर, मद्य पीकर और नंगे होकर श्मशान में किया जाता है।

श्मशान काली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्मशान कालिका' [को०]।

श्मशानगोचर—वि० [सं०] मसान में घूमनेवाला [को०]।

श्मशाननिलय—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान में रहनेवाले, महादेव। शिव।

श्मशाननिवासी[1]—वि० [सं० श्मशाननिवासिन्] श्मशान में रहने-वाला (चांडाल)।

श्मशाननिवासी[2]—संज्ञा पुं० १ शिव। २ भूत प्रेत [को०]।

श्मशानपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्मशान के स्वामी, शिव। २ एक प्रकार के ऐंद्रजालिक।

श्मशानपाल—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान का रक्षक, चांडाल।

श्मशानभाक्—संज्ञा पुं० [सं० श्मशानभाज्] शिव [को०]।

श्मशान भैरवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तांत्रिकों के अनुसार वे देवियाँ जो श्मशान में रहती हैं। २ दुर्गा का एक नाम।

श्मशानवर्ती—संज्ञा पुं० [सं० श्मशानवर्तिन्] दे० 'श्मशानवासी'[को०]।

श्मशानवाट—संज्ञा पुं० [सं०] मसान का घेरा [को०]।

श्मशानवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काली।

श्मशानवासी—संज्ञा पुं० [सं० श्मशानवासिन्] १ महादेव। शिव। २. चांडाल। ३ भूत प्रेत आदि (को०)।

श्मशानवेताल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की भूतयोनि।

श्मशानवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० श्मशानवेश्मन्] महादेव। शिव। २ भूतप्रेत (को०)।

श्मसानवैराग्य—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान में शरीर की नश्वरता को देखकर होनेवाला क्षणिक वैराग्य [को०]।

श्मशानशूल—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान भूमि में स्थित सूली जिससे प्राचीन काल में प्राणदंड दिया जाता था।

श्मशानसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] भूत प्रेतों को वश में करने के लिये श्मशान भूमि में शव पर बैठकर का जानेवाली तांत्रिक क्रिया [को०]।

श्मशानाग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] मरघट की आग [को०]।

श्मशानालय—संज्ञा पुं० [सं०] मरघट। मसान।

यौ०—श्मशानालयवासिनी = काली।

श्मशानक—वि० [सं०] श्मशान में रहनेवाला [को०]।

श्मशानी—वि० [सं० श्मशानिक्] मरघट पर रहनेवाला। श्मशान का। श्मशान संबंधी। उ०—यह जिसके मन में प्रवेशित होता है वह जीवित श्मशानी भूत है।—कबीर मं०, पृ० १८७।

श्मश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] होंठों, गालों और ठोढ़ी आदि पर होनेवाले बाल। मुँह पर के बाल। दाढ़ी मूँछ।

श्मश्रुकर—संज्ञा पुं० [सं०] दाढ़ी की सफाई करनेवाला, हज्जाम। नापित।

श्मश्रुकर्म—संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रुकर्मन्] दाढ़ी बनवाना। हजामत बनवाना। क्षौर कर्म।

श्मश्रुधर—वि० [सं०] दाढ़ीवाला [को०]।

श्मश्रुधारी—वि० [सं० श्मश्रुधारिन्] श्मश्रुयुक्त। मूँछ दाढ़ीवाला।

श्मश्रुप्रवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दाढ़ी का बढ़ना [को०]।

श्मश्रुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके गालों और ऊपरी होंठ पर दाढ़ी और मोंछ के बाल हों।

विशेष—ऐसी स्त्री क्रूर, कुलक्षणी और दुश्चली समझी जाती है।

श्मश्रुल—वि० [सं०] दाढी मूँछ से युक्त [को०]।

श्मश्रुवर्द्धक—संज्ञा पुं० [सं०] हज्जाम।

श्मश्रुशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] नारियल का वृक्ष।

श्मीलन—संज्ञा पुं० [सं०] आँख झपकाना या मुलकाना [को०]।

श्मीलित¹—वि० [सं०] निमीलित। आँख झपकाया हुआ। मुलकाया हुआ [को०]।

श्मीलित²—संज्ञा पुं० पलक झपकाना, गिराना या मारना [को०]।

श्यश्मनाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम। उ०—विनायक, फल्गुचंडी, श्यश्मनाक्षी और मंगला की गया क्षेत्र मे उपासना होती थी।—प्रा० भा० प०, पृ० ४२०।

श्यान¹—वि० [सं०] १. गया हुआ। गत। २. जमा हुआ। गाढा। ३. क्षीण। क्षाम। सिकुडा हुआ। ४. घनीभूत। सांद्र। चिक्कण (को०)।

श्यान²—संज्ञा पुं० धुआँ [को०]।

श्याना †—वि० [हिं० सयाना] वयस्क। दे० 'सयाना'। उ०—कितक दिन कूँ ओ ज्यों के श्याना हुआ। ओ हर एक हुनर-मन मे दाना हुआ।—दक्खिनी०, पृ० ३६०।

श्यापीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक शाखा का नाम।

श्याम¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारण पड़ा था। उ०—एक बार हरि निज पुर छए। हलधर जी वृंदावन गए। यह देखत लोगन सुख पाए। जान्यो राम श्याम दोउ आए।—सूर (शब्द०)। २. प्रयाग के अक्षयवट का नाम। ३. साँवाँ नामक धान्य (डिं०)। ४. एक राग जो श्रीराग का पुत्र माना जाता है। यह राग उत्सवों आदि के समय गाया जाता है, और हास्य रस के लिये भी उपयुक्त होता है। इसके गान का समय सन्ध्या के समय १ दंड से ५ दंड तक है। इसे श्यामकल्याण भी कहते हैं। उ०—नित मलार जु मलार सुनाई। श्याम गूजरी पुनि भल गाई।—जायसी (शब्द०)। ५. सेंधा या समुद्री नमक। ६. धतूरा। ७ विधारा। ८. मेघ। बादल। ९. दौना का क्षुप। दमनक। १०. एक प्रकार का तृण। गंधतृण। ११. काली मिर्च। छोटा या काली मिर्च। १२. पीलू वृक्ष। १३. कोयल। कोकिल। १४. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। १५ स्याम नामक देश। वि० दे० 'स्याम'। १६. काला रंग (को०)। १७ गहरा हरा रंग (को०)।

श्याम²—वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। गहरा हरा। २ काला। साँवला। उ०—अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार। जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार। (शब्द०)। ३. धूसर। भूरा (को०)। ४. विवर्ण। उदास। जैसे, श्याम मुख।

श्यामकंठ—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकण्ठ] १ मोर। मयूर। २. नीलकंठ नामक पक्षी। ३. शिव का एक नाम।

श्यामकंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामकन्दा] अतीस। अतिविषा।

श्यामक—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँवाँ का चावल। २ गंधतृण नामक तृण। रामकपूर। ३ स्याम नामक देश। ४. भागवत के अनुसार शूर के एक पुत्र और वसुदेव के भाई का नाम।

श्यामकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला होता है। उ०—श्यामकर्ण हय चामर आवै।—चमर छत्र तापर छवि छावै।—सबलसिंह (शब्द०)।

विशेष—अश्वमेध यज्ञ मे यही श्यामकर्ण अश्व रखा जाता था।

श्यामकांडा, श्यामकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामकाण्डा, श्यामकान्ता] गाँडर दूब।

श्यामग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामग्रन्थि] गाँडर दूब।

श्यामचटक—संज्ञा पुं० [सं०] श्यामा नामक पक्षी।

श्याम चिरैया—संज्ञा स्त्री० [सं० श्याम+हिं० चिरैया] एक विशेष पक्षी। श्यामा पक्षी। उ०—एक सूखे पेड़ की टहनी पर श्यामचिरैया का जोड़ा प्रणयाकुल हो रहा था।—भस्मावृत०, पृ० ११।

श्यामचूड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामचूडा] कृष्ण चटक या श्यामा नामक पक्षी।

श्यामजीरा—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+जीरक] १. एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रखा जा सकता है। २. काला जीरा। कृष्ण जीरक।

श्याम टीका—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+हिं० टीका] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है। डिठौना। उ०—पठवहिं मातु भूप दरबारे टीका श्याम लगाई।—रघुराज (शब्द०)।

श्यामता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्याम का भाव या धर्म। २ कालापन। साँवलापन। कृष्णता। ३. मलिनता। उदासी। जैसे,—यह बात सुनते ही उसके मुँह पर श्यामता छा गई। ४. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर का रंग काला होने लगता है।

श्याम तीतर—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+हिं० तीतर] प्रायः डेढ़ बालिश्त लंबा एक प्रकार का पक्षी जो अकेला रहता है और पाला भी जा सकता है।

विशेष—यह काश्मीर, भूटान और दक्षिण हिमालय में पाया जाता है। ऋतुभेदानुसार यह स्थानपरिवर्तन करता रहता है। इसकी चोंच लंबी होती है और यह बहुत तेज उड़ता है। इसका शब्द धीमा पर विचित्र होता है। इसका मांस स्वादिष्ट होता है, इसलिये इसका शिकार भी किया जाता है।

श्यामत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्यामता'।

श्यामपट्ट—संज्ञा पुं० [सं० श्याम+पट्ट] कक्षाओं में लगा हुआ वह काला तख्ता जिसपर खड़िया से लिखकर अध्यापक छात्रों को समझाता है (अं० ब्लैक बोर्ड)।

श्यामपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] तमाल वृक्ष।

श्यामपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जामुन का वृक्ष।

श्यामपर्ण—संज्ञा पु० [सं०] सिरिस का पेड। शिरीष का वृक्ष।

श्यामपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'चाय'।

श्यामपूरवी—संज्ञा पु० [सं० श्याम + हिं० पूरबी] एक प्रकार का सकर राग। इसमे और सब तो शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है।

श्यामभूपण—संज्ञा पु० [सं०] मिर्च।

श्याम मजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्याम + मञ्जरी] काले रग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे वैष्णव लोग माथे पर तिलक लगाते है यह मिट्टी प्राय: जगन्नाथ जी के आसपास की भूमि में पाई जाती है।

श्यामल[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। २ सिरिस का पेड। शिरीष। ३. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला बिच्छू। ४ भौंरा। भ्रमर (को०)। ५ काली मिर्च (को०)। ६ काला रग। श्याम वर्ण (को०)। ७. दे० 'पूतिका' (को०)।

श्यामल[2]—वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला। साँवला।

श्यामलचूड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुजा। घुँघची।

श्यामलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्यामल या काले रग के होने का भाव। साँवलापन। कालापन।

श्यामला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अश्वगध। असगध। २. कटभी। ३ जामुन। ४. कस्तूरी। मृगमद। ५ पार्वती का एक नाम।

श्यामलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली।

श्यामलित—वि० [सं०] श्याम या काला किया हुआ [को०]।

श्यामलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामलियन्] श्यामता। कालापन। श्यामलता [को०]।

श्यामली[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्यामला'।

श्यामली[2]—वि० स्त्री० [सं० श्यामल] श्याम वर्ण की। साँवली। उ०—काढूँ कैसे हृदय तल से श्यामली मूर्ति न्यारी।—प्रिय०, पृ० २४६।

श्यामलेक्षु—संज्ञा पु० [सं०] काले रग की ईख।

श्यामवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० श्यामवर्त्मन्] एक प्रकार का नेत्ररोग।

विशेष—इसमे आंख की पलकें बाहर तथा भीतर से काली होकर फूल जाती हैं और उनमे पीडा होती है।

श्यामवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] काली मिर्च [को०]।

श्यामशबल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो उनके द्वार पर पहरा देने का काम करते है।

विशेष—ये चार आंखोवाले कहे गए हैं। इन्हे सतुष्ट करने के लिये एक प्रकार का व्रत करने का भी विधान है।

श्यामशर—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की ईख जो बहुत अच्छी और गुणवाली मानी जाती है।

श्यामशालि—संज्ञा पु० [सं०] काला शालिधान्य।

श्यामसार—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण खदिर का वृक्ष।

श्यामसुदर—संज्ञा पु० [सं० श्यामसुन्दर] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। उ०—लिये उठाय श्यामसुदर को थन गहि कै मुख लीन्हो।—सूर (शब्द०)। २ एक प्रकार का वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष कद मे बहुत ऊँचा होता है। इसकी छाल प्रारभ मे उज्वल होती है, परतु ज्यो ज्यो यह पुराना होता जाता है, त्यो त्यो छाल काली होती जाती है। इसके हीर की लकडी चमकदार होती है। पहाडो पर यह चार हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी लकडी प्राय बढिया चीजो के बनाने मे काम आती है। इससे खेती के औजार भी बनाए जाते है।

श्यामाग[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाङ्ग] बुध ग्रह, जिसका वर्ण दूर्वा की तरह या प्रियगुकलिका की तरह श्याम माना गया है।

श्यामाग[2]—वि० जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो। काले या साँवले रगवाला।

श्यामागी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामाङ्गी] नीलो दूब।

श्यामा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राधा या राधिका का एक नाम, जो श्याम या श्रीकृष्ण के साथ उनका प्रेम होने के कारण पडा था। उ०—मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्याम श्यामा गुप्त लीला ···।—सूर (शब्द०)। २ एक गोपी का नाम। उ०—श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि।—सूर (शब्द०)। ३. प्राय: सवा या डेढ़ बालिश्त लबा एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—इसका रग काला और पैर पीले होते है। यह पजाब के अतिरिक्त सारे भारत मे मिलता है। यह एक ही स्थान पर स्थिर रूप से रहता है और पहाड पर नही जाता। यह प्राय. घने जगलो मे रहता है। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। यह पत्ती और घास से घोसला बनाता है और एक बार मे चार अडे देता है।

४ सोलह वर्ष की तरुणी। षोडशी। ५ काले रग की गाय। ६ कबूतरी। मादा कबूतर।—बृहत्०, पृ० ४१०। ७ काला अनतमूल। श्यामा लता। ८ काली निसोथ। ९ प्रियगु। वनिता। १० बकुची। सोमराजी। ११ नील। १२. गुग्गुल। १३ सोम लता। सोमवल्ली। १४ भद्रमोथा। १५ गुडुच। गिलोय। १६. बदा। बंदाक। बभा। १७. कस्तूरी। मुश्क। १८. वटपत्री। पाषाणभेदी। १९. पीपल। पिप्पली। २० हल्दी। हरिद्रा। २१ हरी दूब। २२. तुलसी। सुरसा क्षुप। २३ कमलगट्टा। २४ विधारा। २५ शिशपा वृक्ष। शीशम। २६ सावाँ नामक अन्न। २७ काली गदहपूरना। २८. गोलोचन। गोरोचन। २९. एरका या गुदा नामक घास। ३०. लता कस्तूरी। मुश्क दाना। ३१ मेढासिंगी। ३२. हरीतकी। हर्रे। ३३. कोयल नामक पक्षी। ३४ यमुना। ३५ रात। रात्रि। ३६ स्त्री। औरत। ३७. श्याम वर्ण की स्त्री। साँवली औरत (को०)।

३८ वह स्त्री जिसको संतान न हुई हो। अप्रसूता स्त्री (को०)। ३९ तपे हुए सोने के वर्ण की एक विशिष्ट प्रकार की स्त्री। वह स्त्री जो शीतऋतु से सुखद ऊष्मायुक्त और ग्रीष्म में सुखद शीतल हो (को०)। ४० छाया। ४१ कालिका देवी का एक नाम।

श्यामा²—वि० १. तपाए हुए सोने के समान वर्णवाली। २. श्याम रंगवाली। काली।

श्यामाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँवाँ नामक अन्न। २ एक देश। —बृहत्०, पृ० ८६।

श्यामाढकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काले फूल की अरहर।

विशेष—यह वैद्यक के अनुसार दीपन और पित्त तथा दाह की नाशक मानी जाती है।

श्यामायन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम जो गोत्रप्रवर्तक ऋषि थे।

श्यामायनि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

श्यामायनी—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैशंपायन के शिष्यों का संप्रदाय। वह जो इस संप्रदाय में हो।

श्यामायमाना—वि० स्त्री० [सं०] १ श्यामतायुक्त। हरीभरी। हरीतिमायुक्त। २ श्याम अर्थात् कृष्ण के न रहने पर भी जो श्याममुक्त सी प्रतीत होती हो (लाक्ष०)। उ०—वे आए जिस काल कांत व्रज में देखा महा मुग्ध हो, श्रीवृंदावन की मनोज्ञ मधुरा श्यामायमाना मही।—प्रिय०, पृ० ९८।

श्यामालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] काला अनंतमूल। कृष्ण शारिवा।

श्यामाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिप्पली। पीपल।

श्यामिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काला रंग। कृष्ण वर्ण। २ कालापन। श्यामता ३ मलिनता। उदासी। ४ अपवित्रता (को०)। ५ खोटाई। खोटापन। ६. मैल या किट्ट जो किसी धातु पर हो (को०)।

श्यामित—वि० [सं०] काला बनाया या किया हुआ [को०]।

श्यामेक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] काला ईख। कजली ईख।

श्यार(पु)†—संज्ञा पुं० [फा० शहर] दे० 'शहर'। उ०—श्यार के वो पापी पावाँ मुज पो आ सकते नईं। मैं तो मैं मेरी गरद को बी वो पा सकते नईं।—दक्खिनी०, पृ० २९६।

श्याल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्नी का भाई। साला। उ०—बार बार सत्कार करि, कीन्हो श्याल निहाल।—रघुराज (शब्द०)। बहन का पति। बहनोई। भगिनीपति। (ब्रह्मवैवर्त)।

श्याल²—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड। सियार। उ०—रोव वृषभ तुरग अरु नाग, श्याल दिवस निशि बोले काग।—सूर (शब्द०)।

श्यालक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्यालिका] पत्नी का भाई। साला।

श्याल काँटा—संज्ञा पुं० [श्याल ?+हिं० काँटा] स्वर्णक्षीरी। सत्यानाशी। भरभाँड़।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी की बहन। साली।

श्याव¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० श्यावा, श्यावी] कृष्ण और पीत मिश्रित (वर्ण)। काला और पीला मिला हुआ (रंग)। कपिश।

श्याव²—संज्ञा पुं० १ काला पीला मिला हुआ रंग। कपिश वर्ण। २ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बिच्छू जिसका विष बहुत तेज नहीं होता।

श्यावक—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि का नाम।

श्यावता—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्याव (वर्ण) का भाव या धर्म। कपिशता।

श्यावतैल—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।

श्यावदत—संज्ञा पुं० [सं० श्यावदन्त] १. दाँतों का एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या नीले हो जाते हैं।

२. वह जिसके दाँत स्वभावतः काले रंग के हों। ३ वह व्यक्ति जिसके आगे के दो दाँतों के बीच छोटा सा दाँत हो या उनके ऊपर दाँत हो (को०)।

श्यावदंतक—संज्ञा पुं० [सं० श्यावदन्तक] दे० 'श्यावदत'।

श्यावनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्यावरथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्याववर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० श्याववर्त्मन्] आँखों का श्यामवर्त्मन् नामक रोग। वि० दे० 'श्यामवर्त्म'।

श्यावाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्यावास्य—वि० [सं०] जिसका मुख श्याम रंग का हो [को०]।

श्येत¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० श्येता, श्येती] श्वेत। सफेद। शुक्ल। (वर्ण)।

श्येत²—संज्ञा पुं० सफेद रंग। श्वेतवर्ण।

श्येतकोलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

श्येन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकरा या बाज नामक प्रसिद्ध पक्षी जो प्रायः छोटे छोटे पक्षियों का शिकार किया करता है। उ०—शून्याश्रम से इधर दशानन, मानो श्येन कपोती को। हर ले चला विदेहसुता को, भय से अबला रोती को।—साकेत, पृ० ३८४।

पर्या०—शशघातन। शशाद। शशादन। कपोतारि। क्रूर। वेगी। खगांतक। करग। ग्राहक। लवकर्ण। नीलपिच्छ। रणप्रिय। रणपक्षी। भयंकर। स्थूलनील। पिच्छबाण। मारक। घातिपक्षी।

२. दोहे के चौथे भेद का नाम। इसमें १९ गुरु और १० लघु मात्राएँ होती हैं। ३. पीला रंग। पांडुर वर्ण। ४. श्वेत वर्ण। सफेद रंग (को०)। ५. धवलिमा। श्वेतता (को०)। ६. हिंसा।

हिंसन (को०)। ७ अश्व। घोड़ा (को०)। ८ एक प्रकार का सैनिक व्यूह। श्येन व्यूह (को०)।

श्येनकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम को उतनी ही तेजी और दृढ़ता से करना जितनी तेजी और दृढ़ता से बाज झपटकर अपने शिकार को पकड़ता है। २ जल्दबाजी। शीघ्रता। उतावलापन। हड़बड़ी (को०)।

श्येनकरणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्येनकरण' (को०)।

श्येनगामी—संज्ञा पुं० [सं० श्येनगामिन्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

श्येनघंटा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनघण्टा] दंती वृक्ष। उदुंबरपर्णी। विशेष दे० 'दंती'।

श्येनचित्—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ आदि में अग्नि स्थापित करने की वह वेदी जिसका आकार श्येन या बाज पक्षी के समान होता है। २ श्येनजीवी (को०)।

श्येनचित संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की अग्नि। २ 'श्येनचित्'–१ (को०)।

श्येनजीवी—संज्ञा पुं० [सं० श्येनजीविन्] वह जो श्येन या बाज पकड़ और बेचकर जीविका निर्वाह करता हो।

विशेष—मनु ने ऐसे आदमी के साथ एक पंक्ति में बैठकर खाने पीने का निषेध किया है।

श्येनपात्—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाज की तरह झपटना या झपट्टा मारना। २ ऐंद्रजालिकों का अनुकूल अद्भुत कार्य (को०)।

श्येनभृत—संज्ञा पुं० [सं०] श्येन द्वारा लाया हुआ, सोम (को०)।

श्येनव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह दंडव्यूह जिसमें पक्ष और कक्ष को स्थिर रखकर उरस्य को आगे बढ़ाया जाय।

श्येनहृत्, श्येनाहृत—संज्ञा पुं० [सं०] सोम लता।

श्येनिका¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं, और मात्रा के अनुसार उनका क्रम इस प्रकार होता है—र, ज, र, ल, ग (SIS, ISI, SIS, I, S)। इसका दूसरा नाम 'श्येनी' भी है।

श्येनिका²—संज्ञा स्त्री० बाज पक्षी की मादा।

श्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'श्येनिका'। २. मार्कंडेयपुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या का नाम।

विशेष—यह दक्ष की पुत्री ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। कहते हैं, बाज, तोते, कबूतर आदि पक्षी इसी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

श्यैनंपात—संज्ञा पुं० [सं० श्यैनम्पात] १ श्येन छोड़ने का उपयुक्त स्थान। २ दे० 'श्यैनंपाता' (को०)।

श्यैनंपाता—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यैनम्पाता] १ मृगया। शिकार। श्येन पक्षी द्वारा शिकार करना (को०)। २. श्येन छोड़ने की उपयुक्त भूमि (को०)।

श्यैन—वि० [सं०] श्येन या बाज संबंधी (को०)।

श्यैनिक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का याग, जो एक दिन में होता था।

श्यैनिक शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] मृगया करने का ढंग बतानेवाला ग्रंथ (को०)।

श्यैनेय—संज्ञा पुं० [सं०] जटायु का एक नाम।

श्योणाक, श्योनाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोनापाढ़ा वृक्ष।—बृहत्संहिता, पृ० ३५६। २ लोध्र। लोध।

श्योरा—संज्ञा पुं० [अनु०] बड़ी मेख।

क्रि० प्र०—ठोंकना।—मारना।

श्रंग¹—संज्ञा पुं० [सं० श्रङ्ग] गमन। जाना।

श्रंग²—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्ग] शृंग। (डिं०)।

श्रथ—संज्ञा पुं० [सं० श्रन्थ] १. संसार के बंधन से छुड़ानेवाले, विष्णु। २ बंधन। ३ मोक्ष। ४ ढीला या शिथिल करना (को०)। ५ शिथिलता। ढीलापन (को०)। ६ छोड़ना या मुक्त करना (को०)।

श्रंथन—संज्ञा पुं० [सं० श्रन्थन] १ खोलना। छोड़ना। ढीला करना। २ हिंसन। घातन। ३. नष्ट या विध्वस्त करना। ४ बाँधना। अच्छी तरह संबद्ध करना। ५. ग्रथन करना। रचना। जैसे, गद्य या पद्यात्मक कृति (को०)।

श्रथित—वि० [सं० श्रन्थित] १ बँधा हुआ। एक साथ बाँधा हुआ। २ शिथिलित। ढीला किया हुआ। ३. मुक्त। ४ एक दूसरे से संबद्ध। परस्पर संबद्ध। ५ क्षोदित। घाव खाया हुआ। घायल (को०)। ६ विनष्ट। ध्वस्त (को०)। ७. अभिभूत। पराभूत (को०)। ८ प्रसन्न। हर्षित। खुश।

श्रसन—संज्ञा पुं० [सं०] वह औषधि जो पेट में जमे हुए मल या गाँठ को बाहर निकालती हो। जैसे, अमलतास का गूदा।

श्रक(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रक्] माला। उ०—माला स्रक स्रज गुनवती यह जु नाम की दाम।—अनेकार्थ०, पृ० ७८।

श्रग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग>सर्ग>स्रग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—दादू स्रग पयाल में, साचा लेवै नांव। सकल लोक सिरि देखिए, परगट सबही ठाँव।—दादू० बानी, पृ० ५२।

श्रग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्रक्] माला।

श्रज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रज्, स्रक्] माला।—अनेकार्थ०, पृ० ७८।

श्रथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। वध। हत्या। २ अलग करना। बंधन से मुक्त करना। खोलना। ३ शिथिल या ढीला करना (को०)। ४. यत्न। कोशिश। ५ बाँधना। बंधन में डालना (को०)। ५ बारबार प्रसन्न करना (को०)।

श्रद्‌धान—वि० [सं०] विश्वास रखनेवाला। आस्थावान्। श्रद्धापूर्ण (को०)।

श्रद्दान—संज्ञा पुं० [सं०] आस्था। विश्वास (को०)।

श्रद्ध—वि० श्रद्धा या विश्वास करनेवाला। श्रद्धालु। आस्थावान् (को०)।

श्रद्धांजलि—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धाञ्जलि] श्रद्धायुक्त प्रणाम। श्रद्धा सहित किसी के समक्ष में विनयपूर्वक कुछ कथन या निवेदन। उ०—श्रद्धांजलि स्वीकार करें गुरुदेव शिष्य की, आज श्राद्ध वासर के वाष्प नयन अवसर पर।—युगपथ, पृ० १०६।

श्रद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की मनोवृत्ति, जिसमे किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता है। बडे के प्रति मन मे होनेवाला आदर और पूज्य भाव। उ०—(क) महिमा वेद पुराण सबै बहु भाँति बखानत। यथा सहित सब करत सहित श्रद्धा गुण गानत।—केशव (शब्द०)। (ख) पूजत श्रद्धा भक्ति जु कोई। ताके वश्य जगत हम दोई।—सबलसिंह (शब्द०)। २. बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध, धर्म और संघ मे विश्वास। ३ वेदादि-शास्त्रो और आप्त पुरुषो के वचनो पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता। ६. कर्दम मुनि की कन्या का नाम।

विशेष—भागवत के अनुसार श्रद्धा कर्दम की पत्नी देवहूति के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और अत्रि ऋषि की पत्नी थी। इन्हे मनु की पत्नी भी कहा गया है। आस्था, विश्वास, दृढता, सत्यता की देवी के रूप मे इसका प्राचीन ग्रंथो मे अनेक जगह अनेक रूपो मे उल्लेख आया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे प्रजापति की कन्या, शतपथ मे सूर्य की पुत्री, महाभारत मे दक्ष की कन्या और धर्म की पत्नी के रूप मे इनका उल्लेख आया है और मार्कंडेय-पुराण मे श्रद्धा काम की माता कही गई है। ७ घनिष्ठता। परिचय (को०)। ८ गर्भिणी महिला का दोहद (को०)। ९. प्रबल या उत्कट इच्छा (को०)।

श्रद्धाकृत—वि० [सं०] श्रद्धावान होकर किया हुआ। जो श्रद्धायुक्त होकर किया गया हो (को०)।

श्रद्धाजाड्य—संज्ञा पुं० [सं०] श्रद्धा के कारण उत्पन्न जडता। अध-विश्वास (को०)।

श्रद्धातव्य—वि० स्त्री० [सं०] जिसपर श्रद्धा की जा सके। श्रद्धा करने के योग्य।

श्रद्धादेय—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वास। विश्रंभ। प्रत्यय (को०)।

श्रद्धादेव—वि० [सं०] जो श्रद्धा पर पूर्ण विश्वास करता हो। श्रद्धालु (को०)।

श्रद्धादेही—वि० स्त्री० [सं० श्रद्धा+देही] श्रद्धास्वरूपिणी। श्रद्धारूपी देहवाली। उ०—श्रद्धादेही आशागेही, स्नेही रूपलता। श्री लाई तुम, शोभा लाई, लाई मधुमयता।—अग्नि०, पृ० २३।

श्रद्धान—संज्ञा पुं० [सं०] श्रद्धा।

श्रद्धान्वित—वि० [सं०] श्रद्धावान्। श्रद्धायुक्त।

श्रद्धामय, श्रद्धायुक्त—वि० [सं०] श्रद्धा से पूर्ण। श्रद्धावान्। श्रद्धालु (को०)।

श्रद्धारहित—वि० [सं०] जो श्रद्धायुक्त न हो। श्रद्धाविरहित (को०)।

श्रद्धालु—वि० [सं०] १ जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धा रखनेवाला। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्। २. (स्त्री) जिसके मन मे, गर्भावस्था को अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ हो। दोहदवती।

श्रद्धावान्—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धावत्] १. वह जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु पुरुष। २. जिसके मन मे धर्म के प्रति निष्ठा हो। धर्मनिष्ठ।

श्रद्धाविरहित—वि० [सं०] दे० 'श्रद्धारहित' (को०)।

श्रद्धासमन्वित—वि० [सं०] श्रद्धान्वित। श्रद्धायुक्त (को०)।

श्रद्धास्पद—वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धापात्र। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धी—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धिन्] जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धावान्।

श्रद्धेय—वि० [सं०] [संज्ञा श्रद्धेयत्व] जिसपर श्रद्धा की जाय। श्रद्धा करने के योग्य। श्रद्धा का पात्र। श्रद्धास्पद।

श्रद्धेयता—संज्ञा पुं० [सं०] श्रद्धेय होने का भाव वा कर्म।

श्रद्धेयत्व—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्रद्धेयत्व'। श्रद्धेय होने की पात्रता या भाव।

श्रपण¹—संज्ञा पुं० [सं०] गार्हपत्य या आहवनीय अग्नि जिसके द्वारा चरु पकाया जाय। उबालना चरु आदि पकाने की क्रिया।

श्रपणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्रपण'।

श्रपित¹—वि० [सं०] पका हुआ। पक्व। सिझाया वा उबाला हुआ।

श्रपित²—संज्ञा पुं० [सं०] पकाया या उबाला हुआ मास आदि (को०)।

श्रपिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काँजी। काजिक। २ चावल की माँड।

श्रप्प—संज्ञा पुं० [सं० सर्प] दे० 'सर्प'। उ०—अगनि होत्र वरमेद, मध्य जग मेध श्रप्प वर।—पृ० रा०, ५५।४०।

श्रब(पु)—वि० [सं० सर्व] दे० 'सब'। उ०—षबरि श्रब धुमान दिन्नं नृप आदि सूर सामंत। अनंगपाल तप सरन दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं —पृ० रा०, १९।९५।

श्रब्बदा—अव्य० [सं० सर्वदा] दे० 'सर्वदा'। उ०—वही तत्त त्रैलोक संसार सारं। वही तारनं सत्त भौसिंघ पारं। जगत्त अधारं निराधार वोही। वही श्रब्बदा सपदा नित्य सोही।—पृ० रा०, १७७२।

श्रब्बर(पु)—सर्व० [सं० सर्व] दे० 'सब'। उ०—बटि दियौ प्रथिराज भाग किन्ने सह श्रब्बर —पृ० रा०, २४।४८४।

श्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य के सपादन मे होनेवाला शारीरिक अभ्यास। शरीर के द्वारा होनेवाला उद्यम। परिश्रम। मेहनत। मशक्कत। उ०—दूरि तीर्थन श्रम करि जाहि। जहाँ रहैं तहँ लख्यो न ताहि।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पडना।—होना।

२. थकावट। क्लाति।

मुहा०—श्रम पाना=परिश्रम करना। मेहनत करके थकना। उ०—आजु कहा उद्यम करि आए। कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए।—सूर (शब्द०)।

३ साहित्य मे संचारी भावो के अतर्गत एक भाव। कोई कार्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना। ४ क्लेश। दु:ख। तकलीफ। ५ दौड धूप। परेशानी। ६ पसीना। स्वेद। ७. व्यायाम। कसरत। ८ शस्त्रो का अभ्यास। सैनिक कवायद। ९ चिकित्सा। इलाज। १० खेद। ११ तप। १२. प्रयास। १३. (शास्त्रादि का) अभ्यास।

श्रमकण—संज्ञा पुं० [सं०] पसीने की बूँदें, जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। स्वेदबिंदु।

श्रमकन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रमकण] स्वेदबिंदु। श्रमकण। उ०—(क) श्यामल तन श्रमकन राजत ज्यों नवघन सुधा सरोवर भरे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मुझे व्यजन सा हिलकर अविरल शीतलता सरसाने दो। अपने मुख से जगच्चिंता के श्रमकन सदय! सुखाने को।—वीणा, पृ० २०।

श्रमकर—वि० [सं०] खेदकारक। थकानेवाला [को०]।

श्रमकर्षित—वि० [सं०] मेहनत से थका हुआ [को०]।

श्रमक्लांत—वि० [सं० श्रमक्लान्त] मेहनत से थका हुआ। श्रम से शिथिल [को०]।

श्रमघ्न—वि० [सं०] जिससे श्रम दूर हो। थकावट दूर करनेवाला।

श्रमघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मीठा कद्दू या कुम्हड़ा। मीठी लौकी [को०]।

श्रमजर्जर—वि० [सं० श्रम+जर्जर] परिश्रम से थका हुआ या चूर। उ०—वे ढाल ढाल कर उर अपने, है बरसा रही मधुर सपने। श्रमजर्जर विधुर चराचर पर, गा गीत स्नेह वेदना-सने।—युगांत, पृ० १६।

श्रमजल—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। स्वेद। प्रस्वेद। उ०—(क) श्रमजल बिंदु इंदु आनन पर राजत अति सुकुमार। मानों विविध भाँत मिल विलसत मगन सिंधु रस सार।—सूर (शब्द०)। (ख) कुचकुम आठ श्रवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छवि छीट चली री।—सूर (शब्द०)।

श्रमजित—वि० [सं० श्रम+सं० जित् या हिं० जीतना] जो मनमाना परिश्रम करने पर भी न थके। श्रम को जीत लेनेवाला। उ०—स्वामि भक्त श्रमजित सुधी, सेनापति सु अभीत। अनालसी जन प्रिय जसी, सुख संग्राम अजीत।—केशव (शब्द०)।

श्रमजीवी¹—वि० [सं० श्रमजीविन्] १ शारीरिक परिश्रम करनेवाला। मेहनत करके पेट पालनेवाला। उ०—चींटी है प्राणी सामाजिक वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।—युगवाणी, पृ० २२। २ बौद्धिक परिश्रम करके जीविका चलानेवाला। जैसे, श्रमजीवी पत्रकार, श्रमजीवी लेखक।

श्रमजीवी²—संज्ञा पुं० मजदूर। कुली। उ०—ये नाप रहे निज घर का मग, कुछ श्रमजीवी धर डगमग पग, भारी है जीवन भारी पग।—युगांत, पृ० २०।

श्रमण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्ध या जैन मतावलंबी संन्यासी। २ यति। मुनि। ३ वह जो नीच कर्म करके जीविका निर्वाह करता हो। नीच। घृणित। ४ श्रमजीवी। मजदूर। ५ भिक्षुक (को०)।

श्रमण²—वि० १ श्रम करनेवाला। २ नीच। निम्न कोटि का। ३ नंगा [को०]।

श्रमणक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध या जैन भिक्षु [को०]।

श्रमणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर्शना नामक ओषधि। २ जटा। मासी। बालछड़। ३ मुंडी। मुड़ी। श्रावणिका। ४. शबर जाति की एक स्त्री का नाम। ५ संन्यासिनी। ६ लावण्यमयी स्त्री (को०)। ७. कठिन परिश्रम करनेवाली स्त्री (को०)।

श्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिक्षुणी। बौद्ध संन्यासिनी। दे० 'श्रमणा' [को०]।

श्रमदान—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वजनिक कार्य में स्वेच्छया बिना मजदूरी लिए शारीरिक मेहनत करना [को०]।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमबिन्दु] पसीने की बूँदें जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। श्रमकण। स्वेद।

श्रमभंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रमभञ्जनी] नागवल्ली लता, जो थकावट दूर करनेवाली मानी जाती है। पान। नागवल्ली।

श्रममोहित—वि० [सं०] श्रम के कारण जिसकी बुद्धि व्यवस्थित न हो [को०]।

श्रमवारि—संज्ञा पुं० [सं०] परिश्रम के कारण शरीर से निकलनेवाला पसीना। श्रमकण।

श्रमविंदु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमविन्दु] स्वेद। श्रमबिंदु।

श्रमविनयन—वि० [सं०] थकान को दूर करनेवाला। [को०]

श्रमविनोद—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जिससे थकान दूर हो जाए [को०]।

श्रमविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य के भिन्न भिन्न अंगों के संपादन के लिये, अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति। परिश्रम या काम का विभाग। जैसे,—किसी का रूई ओटना, किसी का सूत कातना, किसी का कपड़ा बुनना, किसी का अनाज पीसना, किसी का रोटी पकाना। २. श्रमिकों के हित आदि से संबंधित मामलों की देखभाल करनेवाला सरकारी महकमा।

श्रमशीकर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रम से होनेवाला पसीना। श्रमकण।

श्रमशील—वि० [सं०] मेहनती। परिश्रम करनेवाला [को०]।

श्रमसहिष्णु—वि० [सं०] जो यथेष्ट श्रम कर सकता हो। मेहनती। परिश्रमी।

श्रमसाध्य—वि० [सं०] जिसके संपादन में श्रम करना पड़े। जो सहज में या बिना परिश्रम न हो सके।

श्रमसीकर—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। श्रमबिंदु। उ०—(क) कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रमसीकर के दाग।—सूर० (शब्द०)। (ख) सूखे श्रमसीकर वे, छवि के निर्झर झरे नयनों से, शक्त शिराएँ हुईं रक्तवाह से।—अनामिका, पृ० १४७।

श्रमस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रम करने का स्थान। व्यायामभूमि। कारखाना [को०]।

श्रमांबु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमाम्बु] पसीना। स्वेद [को०]।

श्रमार्त—वि० [सं०] श्रम से थका हुआ या चूर। उ०—हमारे देश में भी नाट्याचार्य ने नाटक की विशेषता बताते हुए लिखा कि यह दुःखी, श्रमार्त, शोकार्त को विश्रांतिदायक होता है।—स० शास्त्र, पृ० १६।

श्रमित—वि० [सं० श्रम] जो श्रम से शिथिल हो गया हो। श्रांत। थका हुआ। उ०—चारो भ्रातन श्रमित जानि कै जननी तब पौढाए। चापत चरण जननि अपनी अपनो कछुक मधुर स्वर गाए।—सूर (शब्द०)।

श्रमितचरण—वि० [सं० श्रमित+चरण] जिसके पाँव थक गए हों। उ०—श्रमित चरण लौटे गृहिजन निज निज द्वार।—अपरा, पृ० ३५।

श्रमी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्रमिन्] १ मेहनती। परिश्रमी। उ०—थके श्रमी जीवों के पसीने भरे सीने लग, जीने को सफल करने के लिये सोते चलो।—झरना, पृ० ४१ २ दे० 'श्रमजीवी'।

श्रय—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। श्रयण (को०)।

श्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय।

श्रयना(पु)—वि० स० [सं० स्रवण] श्रयण करना। आश्रय करना या लेना। उ०—इकै अइ कीरति अमृत एक। कढ्ढक कवित्त सुधारै विसेक।—पृ० रा०, १२ ३३४। २ गिराना। बहाना। दे० 'श्रवना'।

श्रवंतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रवन्तिनी] नदी।

श्रव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिससे सुना जाय, कान (डिं०)।

यौ०—श्रवपत्र = एक आभूषण। कर्ण फूल।

२. जो सुना जाय, शब्द। ३. श्रवण करना। सुनना जैसे, सुखश्रव (को०)। ४. त्रिभुज का कर्ण (को०)। ५. स्रवित होना। क्षरण (को०)। ६. कीर्ति। यश (को०)। ७ अन्न। धान्य (को०)। ८. धन। संपत्ति (को०)।

श्रव(पु)²—सर्व० [सं० सर्व] सब। उ०—राजकुँवर श्रव वर्णिया, सयल सभा रामलो हो सजोग।—बी० रासो, पृ० १००।

श्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। श्रुति। २ वह ज्ञान जो श्रवणेंद्रिय द्वारा होता है। ३ सुनना। श्रवण करने की क्रिया। शास्त्रीय परिभाषा मे शास्त्रो मे लिखी हुई बातें सुनना और उनके अनुसार कार्य करना अथवा देवताओं आदि के चरित्र सुनना। उ०—श्रवण कीर्त्तन सुमिरन करै। पद सेवन अर्चन उर धरै।—सूर (शब्द०)। ४ नौ प्रकार की भक्तियों मे से एक प्रकार की भक्ति। उ०—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पद रत, अरचन, वंदन दास। सख्य और आत्मा निवेदन प्रेम लक्षण जास।—सूर (शब्द०)। ५ वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र का नाम। ६. राजा मेघध्वज के पुत्र का नाम। उ०—ता सगति नव सुत मिल जाए। श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाए।—सूर (शब्द०)। ७. अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों मे से बाइसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार शर या तीर का सा माना गया है।

विशेष—इसमे तीन तारे है, और इसके अधिपति देवता हरि कहे गए हैं। फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस नक्षत्र मे जन्म लेता है, वह शास्त्रों से प्रेम रखनेवाला, बहुत से लोगों से मित्रता रखनेवाला, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाला और अच्छी संतानवाला होता है।

८. किसी त्रिभुज का कर्ण (को०)। ९ अध्ययन (को०)। १०. यश। कीर्ति (को०)। ११ धन। संपत्ति (को०)। १२. बहना। क्षरण। स्रवित होना (को०)।

श्रवणकातरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुनने की लालसा (को०)।

श्रवणगोचर—वि० [सं०] १. जो सुना जा सके। २. जहाँ से सुनाई पड़े (को०)।

श्रवण द्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों मास के शुक्ल पक्ष की वह द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र से युक्त हो। उ०—अस कहि शुभ दिन शोधि ब्रह्म ऋषि तुरत सुमत बोलायो। भादौं मास श्रवण द्वादशि को सुदिवस सुखद सुनायो।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—यह बहुत पुण्य तिथि मानी जाती है। इसे वामन द्वादशी भी कहते है। कहते है, वामनावतार इसी दिन हुआ था।

श्रवणपथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रवणेंद्रिय। कान।

श्रवण परुष—वि० [सं०] जो सुनने मे कठोर हो। श्रवणकटु।

श्रवणपालि, श्रवणपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कान की ललरी (को०)।

श्रवणपुट, श्रवणपुटक—संज्ञा पुं० [सं०] कर्णरध्र (को०)।

श्रवण पूरक—संज्ञा पुं० [सं०] कान का आभूषण।

श्रवण फूल—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण+हिं० फूल] करनफूल।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० १९३।

श्रवणभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] कान का आभूषण।

श्रवणविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जो श्रवण इंद्रिय के संपर्क से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है। जैसे, संगीतशास्त्र।

श्रवणविवर—संज्ञा पुं० [सं०] कान का छेद (को०)।

श्रवणविषय—[सं०] १. दे० 'श्रवणपथ'। २ श्रवण की सीमा में आनेवाला विषय, वस्तु आदि।

श्रवणवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रवण+वृत्ति] सुनने की वृत्ति। श्रवण। सुनने की ललक। उ०—जिस प्रकार दर्शन वृत्ति की बोध दशा और रागात्मिका दशा ये दो दशाएँ होती है, उसी प्रकार श्रवण वृत्ति की भी।—रस०, पृ० ७२।

श्रवणशीर्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रावणी वृक्ष। गोरखमुंडी। बड़ी मुंडी।

श्रवणसुभग—वि० [सं०] कर्णेंद्रिय को सुख देनेवाला। जो सुनने मे अच्छा लगे (को०)।

श्रवणहारी—संज्ञा पुं० [सं० श्रवणहारिन्] वह जो कानों को भला लगे। सुनने मे अच्छा जान पड़नेवाला। कर्णमधुर।

श्रवणा—संज्ञा स्त्री०[सं०] १ बड़ी मुंडी। २ पु (मुं०) डेरी। ३ अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों के अंतर्गत बाईसवाँ नक्षत्र। विशेष दे० 'श्रवण'—७।

श्रवणाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० श्रवणाधिकारिन्] वह जो बोल रहा हो। वक्ता (को०)।

श्रवणावभास—संज्ञा पुं० [सं०] श्रुतिपथ। कर्ण-श्रवण-पथ (को०)।

श्रवणाह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्विषी नामक तृण। २. जल चौलाई।

श्रवणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पु (मुं०) डेरी। २ गोरखमुंडी। महामुंडी।

श्रवणीय—वि० [स०] सुनने लायक। श्रवण करने योग्य।

श्रवणेंद्रिय—सज्ञा पुं० [स० श्रवणेन्द्रिय] कान। कर्ण।

श्रवणोत्पल—सज्ञा पु० [स०] आभूषण की दृष्टि से कान मे लगाया हुआ कमल [को०]।

श्रवणोदर—सज्ञा पुं० [स०] कर्णरंध्र। कर्णविवर। कान [को०]।

श्रवती(पु)—सज्ञा स्त्री० [सं० श्रवन्तिनी या हिं०] नदी।—नद० ग्रं० पृ०, ९८।

श्रवन(पु)—सज्ञा पु० [स० श्रवण] १ श्रवण। कान। उ०—(क) नयन बैन औ श्रवन ये सबही तोर प्रसाद। सेवा मोर यही नित बोलौं आसिरबाद।—जायसी (शब्द०)। (ख) नैन राच्यो रूप सो श्रवनू राच्यो नाद।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १८०। २ दे० 'श्रावण'। उ०—श्रवन मास नौमी तिथि लग्गिय।—प० रासो, पृ० १५९। ३. आकर्णन। अकनना। श्रवण करना। सुनना।

श्रवना(पु)[1]—क्रि० अ० [स० स्राव] बहना। चूना। रसना। उ०—राति दिवस रस श्रवत सुधा मे कामधेनु दरसाई। लूट लूट दधि खात सखन सँग तैसो स्वाद न पाई।—सूर (शब्द०)।

श्रवना[2]—क्रि० स० गिराना। बहाना। उ०—खर भर लक सशक, दशानन गर्भ श्रवहि अरि नारि।—तुलसी (शब्द०)।

श्रवनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरनी] दे० 'सुमिरनी'। उ०—हस दशा धरि पथ चलावे। श्रवनी कठी तिलक लगावे।—कबीर सा०, पृ० २२१।

श्रवस्यु—सज्ञा पु० [स०] १ प्रसिद्धि। यश। ख्याति। २ ख्यातिदायक कार्य [को०]।

श्रवाप्य, श्रवाय्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] वलिपशु [को०]।

श्रवाप्य, श्रवाय्य[2]—वि० प्रशसनीय [को०]।

श्रवित(पु)—वि० [स० स्राव] बहा हुआ। रसा या चुआ हुआ। उ०—काचे घट मे जल जथा श्रवित होत अति जाय।—दीन ग्र०, पृ० ७९।

श्रविष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

श्रविष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] धनिष्ठा नक्षत्र।

श्रविष्ठाज—सज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।

श्रविष्ठारमण—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

श्रविष्ठाभू—सज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।

श्रव्य—वि० [स०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे,—संगीत।

यौ०—श्रव्य काव्य = वह काव्य जो केवल सुना जा सके। वह काव्य जो अभिनय आदि के रूप मे देखा जा न सके। इसके तीन भेद हैं—(१) गद्य, (२) पद्य और (३) गद्य-पद्य-मय। विशेष दे० 'काव्य'।

श्रात—वि० [स० श्रान्त] १ जितेंद्रिय। शात। ३. जो अधिक श्रम करने के कारण थक गया हो। परिश्रम से थका हुआ। ४. दु.खी। खिन्न। रजीदा। ५ निवृत्त। ६ जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो।

यौ०—श्रातचित्त, श्रातमना श्रातहृदय = दुखी। उदास। श्रातसंवाह, श्रातसवाहना = थके व्यक्ति को आराम देना।

श्राति—सज्ञा स्त्री० [स० श्रान्ति] १, श्रम। परिश्रम। मेहनत। २ थकावट। उ०—सध्या पर्यंत मार्ग मे चलती रही, इससे अत्यत श्राति मालूम हुई।—प्रतापनारायण (शब्द०)। ३ खेद। दु.ख। ४ विश्राम। आराम।

श्राण[1]—वि० [स०] १ घी, दूध या जल में पका हुआ। सिद्ध। पक्व। भूना हुआ (को०)। ३. उबाला या पकाया हुआ। ४ आर्द्र। तर (को०)।

श्राण[2]—सज्ञा पु० [स०] उबाला हुआ मास [को०]।

श्राणा—सज्ञा स्त्री० [स०] माँड की काँजी जिसका व्यवहार पथ्य रूप मे होता है। यवागू। विशेष दे० 'यवागू'।

श्राणिक—सज्ञा पु० [स०] वे भृत्य जिनको केवल—भाजी (या यवागू) दी जाती थी।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २४९।

श्राद्ध—सज्ञा पु० [स०] १ वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। श्रद्धा से किया जानेवाला काम। २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरो के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे पितरो के उद्देश्य से तर्पण और पिंडदान करना तथा ब्राह्मणो को भोजन कराना। उ०—श्राद्ध करत पितरन को तर्पण करि बहु भाँति। कहुँ विप्रन को देत दक्षिणा कहुँ भोजन की पाँति।—सूर (शब्द०)।

विशेष—कुछ लोगो के मत से श्राद्ध पाँच प्रकार का है—नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण और कुछ लोग इन पाच प्रकार के श्राद्धो के अतिरिक्त नीचे लिखे सात प्रकार के और भी (कुल बारह प्रकार के) श्राद्ध मानते हैं—सपिंडन, गोष्ठी, शुद्धयर्थ, कर्मांग, दैविक, यात्रार्थ और पुष्ट्यर्थ।

३ आश्विन कृष्ण पक्ष जिसमे पितरो के उद्देश्य से विशेष रूप से पिंडदान किया और ब्राह्मणभोजन कराया जाता है। पितृपक्ष। ४ विश्वास। ५ प्रीति।

श्राद्धकर्म—सज्ञा पुं० [सं०] १. अत्येष्टि क्रिया। २. मृत की वार्षिक तिथि पर पिंडदान आदि करना [को०]।

श्राद्धकर्ता—सज्ञा पु० [स० श्राद्धकर्तृ] श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति। श्राद्धकारक।

श्राद्धकृत्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धत्व—सज्ञा पु० [स०] श्राद्ध का भाव या धर्म।

श्राद्धद—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'श्राद्धकर्ता'।

श्राद्धदिन—सज्ञा पुं० [स०] श्राद्धकृत्य करने का दिन। मृत व्यक्ति की वह वार्षिक तिथि जिस दिन मृत का श्राद्धकर्म किया जाय।

श्राद्धदेव—सज्ञा पुं० [सं०] १. धर्मराज। २ यमराज। ३ श्राद्ध मे निमंत्रित ब्राह्मण। ४ मार्कडेय पुराण के अनुसार वैवस्वत मनु का एक नाम। ५. एक वैश्वेदेव (को०)। ६ वह लोक जहाँ मरने पर पितर लोग जाते हैं। पितृलोक। ७ प्रजापति। पितर (को०)।

श्राद्ध पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] तर्पण, पिंडदान आदि के लिये निश्चित आश्विन मास का कृष्ण पक्ष। पितृपक्ष।

श्राद्धभुक्[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्धभुज्] पितर [को०]।

श्राद्धभुक्[2]—वि० श्राद्धान्न भोजन करनेवाला [को०]।

श्राद्धमोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्धभोक्तृ] पितर [को०]।

श्राद्धमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार वह व्यक्त जो श्राद्धकर्म के अवसर पर मित्र बनावे या मित्रता करे [को०]।

श्राद्धशाक—संज्ञा पुं० [सं०] नाडी शाक। कालशाक।

श्राद्धसूतक—संज्ञा पुं० [सं०] श्राद्ध के उद्देश्य से बनाया हुआ भोजन। पितरो के उद्देश्य से ब्राह्मणो को खिलाने के लिये बनाया हुआ भोजन।

श्राद्धिक[1]—वि० [सं०] श्राद्ध संबंधी। श्राद्ध का।

श्राद्धिक[2]—संज्ञा पुं० १ वह जो श्राद्ध के अवसर पर पितरो के उद्देश्य से भोजन करता हो। श्राद्ध मे दी हुई वस्तु को स्वीकार करनेवाला। २ श्राद्ध मे दी हुई वस्तु [को०]।

श्राद्धी—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्धिन्] श्राद्ध मे भोजन करनेवाला। श्राद्धिक।

श्राद्धीय—वि० [सं०] श्राद्ध सबंधी। श्राद्ध का।

श्राद्धेय—वि० [सं०] श्राद्ध के योग्य। श्राद्ध मे प्रयुक्त होने योग्य। जैसे, श्राद्धेय अन्न [को०]।

श्राप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप'। उ०—राछसन मारि विश्वामित्र सा करायो यज्ञ तारी रिषि नारी सिला श्राप सो भई रहा।—रघुनाथ बंदीजन (शब्द०)।

श्रापी—संज्ञा पुं० [सं० श्रापिन्] वह जो भोजन बनाता हो। रसोइया।

श्राम—संज्ञा पुं० [सं०] १. मास। महीना। २ मडप। छाजन। घर। ३. काल। समय।

श्रामणेर श्रामणेरक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नया बौद्धभिक्षु हुआ हो [को०]।

श्राय—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय।

श्रावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मपत्तन। धर्मपुरा। दे० 'श्रावस्ती' [को०]।

श्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रवण। कान। २. गधाबिरोजा। ३. दे० 'स्रवण'।

श्रावक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध धर्म को माननेवाला सन्यासी। २. जैन धर्म को माननेवाला सन्यासी। ३. वह जो जैन धर्म का अनुयायी हो। ४. नास्तिक। पाखडी। उ०—यह नरक को काउ जीव है जिनि याहि देखि डेराहि। निज जानियै यह श्रावका श्रात दूर ते तजि ताहि। —केशव (शब्द०)। ५. दूर की आवाज। दूर का शब्द। ६ कौआ। काक। ७. छात्र। शिष्य।

श्रावक[2]—वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।

श्रावग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'। उ०—अजहूँ, श्रावग ऐसो करै। ताही को मारग अनुसरै।—सूर (शब्द०)।

श्रावगी—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैन धर्म को माननेवाला। जैनी।

श्रावण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चैत आदि महीनो मे से एक महीने का नाम। असाढ के बाद और भादो के पहले का महीना।

विशेष—गणना मे यह पाँचवाँ महीना होता है और वर्षा ऋतु मे पडता है। इस मास की पूर्णमासी श्रवण नक्षत्र से युक्त होती है इसी लिये इसे श्रावण कहते है। सावन।

२ एक प्रकार का वर्ष।

विशेष—यदि श्रवण अथवा धनिष्ठा नक्षत्र मे वृहस्पति उदय हो तो उस दिन से एक वर्ष तक का समय श्रावण कहलाता है। कहते है, इस वर्ष मे धान्य खूब पकते है, सब लोग बहुत सुखी होते है, पर पाखडी मनुष्य तथा उनके अनुयायी पीड़ित होते हैं।

३. श्रावण मास की पूर्णिमा। ४. शब्द, जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय द्वारा होता है। आवाज। ५. श्रवण करने से प्राप्त ज्ञान। श्रवणजन्य ज्ञान (को०)। ६. श्रवण नामक तपस्वी (को०)। ७. नास्तिकता। पाखड। ८ वचक। पाखडा (को०)। ९ मार्कंडेय पुराण के अनुसार, योगियो के योग मे होनेवाले पाच प्रकार के विघ्न या उपसर्ग जिसमे योगी हजार योजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयगम करता है।

श्रावण[2]—वि० १. श्रवण नक्षत्र संबंधी। श्रवण नक्षत्र का। २.श्रवण नक्षत्र मे उत्पन्न (को०)। ३. श्रवणेंद्रिय या कान से सबंधित (को०)। ३ वेदविहित वेदोक्त। वैदिक (को०)।

यौ०—श्रावण ज्ञान, श्रावण प्रत्यक्ष=श्रवणेंद्रिय द्वारा प्राप्त ज्ञान वा अनुभूति।

श्रावणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भुँइ कदब। २. सुदर्शना नामक वृक्ष।

श्रावणिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रावण मास। सावन। २. एक प्रकार की अग्नि।

श्रावणिक[2]—वि० श्रावण सबंधी। श्रावण का।

श्रावणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुडी।

श्रावणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा। सावन मास की पूर्णमासी।

विशेष—इस दिन ब्राह्मणो का प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षाबंधन' या 'सलोनो' तथा कुछ और कृत्य या पूजन आदि होते हैं। इस दिन लोग यज्ञोपवीत का पूजन करते और नवीन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं।

२. मुडी। घुडी। ३. भुइँ कदब। ४. वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ५. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधी।

श्रावना[1](पु)—क्रि० स० [सं० स्राव(=बहाना), हिं० स्रवना] गिराना। बहाना। उ०—रुचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल सींचि ध्यान झर लागी। ताके प्रेम सुफल मुनिश्रावन श्याम सुरँग अनुरागी। —सूर (शब्द०)।

श्रावन[2](पु)—संज्ञा पुं० ढरकाने या बहाने या द्रवित करने की क्रिया या भाव।

श्रावस्त—संज्ञा पु० [स०] हरिवंश के अनुसार राजा श्राव के पुत्र का नाम, जिन्होंने श्रावस्तकी नगरी बसाई थी।

श्रावस्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती'।

श्रावस्ती—संज्ञा स्त्री० [स०] उत्तर कोशल मे गगा के तट पर बसी हुई एक बहुत प्राचीन नगरी।

विशेष—यह अब एक छोटे से गाँव के रूप मे रह गई है और सहेत महेत कहलाती है। आजकल यह स्थान बलरामपुर राज्य के अतर्गत है। यहाँ श्रीरामचद्र के पुत्र लव की राजधानी थी। जैनी इसे 'सावत्थी' कहते हैं और अपने नवें तीर्थंकर सुदृढनाथ का कल्याणक बतलाते हैं। यह राजा प्रसेनजित् की राजधानी भी कही जाती है। यहाँ एक बार कुछ दिनो तक भगवान् बुद्ध ने भी निवास किया था, इसलिये बौद्धो की दृष्टि म यह एक बहुत पुण्यस्थल है। बुद्ध के समय मे और उनसे पहले भी यह नगरी बहुत आसपन्न थी।

श्रावा—संज्ञा स्त्री० [स०] माँड। पसावन। पीच।

श्रावित¹—वि० [स०] कहा हुआ। बताया हुआ। सुनाया हुआ [को०]।

श्रावित²—संज्ञा पु० १ पुकार। गुहार। २. निवेदन [को०]।

श्राविता—वि० [स० श्रावितृ] श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता [को०]।

श्राविष्ठ, श्राविष्ठीय—वि०[स०] १. श्रविष्ठ या श्रवण नक्षत्र सबधी। २. श्रविष्ठा मे उत्पन्न या जात [को०]।

श्रावी¹—संज्ञा पु० [स० श्राविन्] सज्जी। स्वर्जिका क्षार।

श्रावी²—वि० श्रवण करनेवाला।

श्राव्य—वि० [स०] १. सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य। २ स्फुट। व्यक्त। श्रोत्रेंद्रिय द्वारा ग्राह्य (को०)।

श्रित—वि० [स०] १ आश्रय मे पहुँचा हुआ। २ चिपका, लगा हुआ। सहारा लिया हुआ। अधिष्ठित। ३. मीलित। सबद्ध। ४ रक्षित। बचाया हुआ। ५. समानित। सेवित ६ अनुजीवी। सहकारी। ७. आच्छादित। ८. पूरित। ९ एकत्रित। समवेत। १० संपन्न। ११. पकाया हुआ [को०]।

यौ०—श्रितक्षम = अक्षुब्ध। शातमना। स्वस्थ। श्रितसत्व = धैर्ययुक्त। साहस युक्त।

श्रीतवान—वि० [स० श्रुतवत्] १. आश्रय लेनेवाला। सेवक।

श्रिति—संज्ञा स्त्री० [स०] अवलब। सहारा [को०]।

श्रियमन्य—वि० [स० श्रियम्मन्य] [वि० स्त्री० श्रियमन्या] अपने को श्रीयुक्त माननेवाला। अभिमानी। घमडी [को०]।

श्रिय¹—संज्ञा स्त्री० [स० श्रिया] मगल। कल्याण। उ०—लखी जोति जो वाम्हन लोगा। तिनके बचन न ससय जोगा। इनकी बानि सग श्रिय रहही। ये नहिं कवहुँ मृषा कछु कहही। —सीताराम (शब्द०)।

श्रिय(पु)²—संज्ञा स्त्री० [स० श्री] शोभा। प्रभा। उ०—दुहुन बीच सकेत राधिका नदकुँवर को। सो श्रिय को कहि सकै भेदु पिय प्यारी घर को।—सूदन (शब्द०)।

श्रिया—संज्ञा स्त्री० [स०] विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी।

श्रियावास—संज्ञा पु० [स०] वह जिसके पास यथेष्ट लक्ष्मी हो। धनवान्। अमीर।

श्रियावासी—संज्ञा पु० [स० श्रियावासिन्] महादेव। शिव।

श्री¹—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। उ०—तजि बैकुंठ गरुड तजि श्री तजि निकट दास के आयो।—सूर (शब्द०)। २. सरस्वती। ३ धूप। सरल वृक्ष। ४ लवग। लौग। ५ कमल। पद्म। ६ बेल। बिल्व वृक्ष। ७ ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ८. सफेद चदन। सदल। ९. धर्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। १० सपत्ति। धन। दौलत। ११. विभूति। ऐश्वर्य। १२ उपकरण। १३ अविकार। १४ कीर्ति। यश। १५ प्रभा। शोभा। १६ काति। चमक। १७ वृद्धि। १८ सिद्धि। १९ एक प्रकार का पद-चिह्न। उ०—स्वस्तिक अष्टकोण श्री केरा। हल मूसल पन्नग शर हेरा।—विश्राम (शब्द०)। २० स्त्रियो का वेंदी नामक आभूषण। उ०—श्री जो रतन माँग बैठारा। जानहु गगन टूट निस तारा।—जायसी (शब्द०)। २१. ऊर्ध्व पुड्र के बीच की लंबी नोकदार लाल रग की रेखा। २२. चद्रमा की बारहवीं कला (को०)। २३ सजावट। रचना (को०)। २४. उक्ति। वाणी (को०)। २५ ऋक्, साम और यजुर्वेद। वेदत्रयी (को०)। २५ पक्व करना। एकदिल करना। पकान। (को०)। २६ समझ। ज्ञान। बुद्धि (को०)। २७. आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि मे लिखा जाता है।

विशेष—सन्यासी, महात्माओ के नाम के आगे श्री १०८ लिखा जाता है। माता, पिता और गुरु के लिये श्री के साथ ६, स्वामी के लिये ५, शत्रु के लिये ४, मित्र के लिये ३, नौकर के लिये २ और शिष्य, सुत और स्त्री के लिये श्री के साथ १ लिखने की प्राचीन प्रणाली है।

श्री²—संज्ञा पु० १ कुबेर। (डिं०)। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ वैष्णवो का एक सप्रदाय। ५ एक वृत्त का नाम। यह एकाक्षरा वृत्ति है। इसके प्रत्येक पद मे एक गुरु होता है। यथा—गो। श्री। धी। ह्री। ६ सपूर्ण जाति का एक राग, जो हनुमत् के मत से छह रागो के अतर्गत पाँचवाँ राग है।

विशेष—यह धैवत स्वर की संतान और पृथ्वी की नाभि से उत्पन्न माना गया है। इसकी ऋतु शरद् और वार शुक्र है। कहते हैं, इस राग को शुद्धतापूर्वक गाने से सूखा वृक्ष भी हरा हो जाता है। शास्त्र के अनुसार इस राग की रागिनियाँ ये हैं—गौरी, पूरबी, मालवी, मुलतानी, और जयती। इसका सहचर मगलराग और सहचरी चद्रावती रागिनी है। श्यामकल्याण, मारू, एमन, मौन ध्यान और गौड इसके पुत्र है। भीमपलाश्री, धनाश्री, मालश्री, बारवा, चित्राचकोरी इसकी पुत्रवधुएँ है। हनुमत् के अनुसार मारवा, पूरवा, श्याम, हेम, चैत्र, हविरिक, भूपाल, जेतरा, कल्याण, ध्यानकल्याण इसके पुत्र हैं। इसकी स्त्रियाँ मालवी, त्रिवेणी, गौरी, गौरा

और पूरबी है, तथा इनकी प्रियाएँ एमनि, टकी, माली, गौरा, नागध्वनि और चेतकी हे ।

श्री³—वि० १. योग्य । २. सुदर । श्रेष्ठ । ४ मिश्र । मिश्रित । ५ शुभ ।

श्रीकठ—सज्ञा पु० [स० श्रीकण्ठ] १. महादेव । उ०—श्रीकठ उर वासुकि लसत सर्वमगला गार ।—केशव (शब्द०) । २ हस्तिनापुर के उत्तर पश्चिम का कुरु जागल देश । ३ सस्कृत के नाटककार भवभूति का एक नाम ।

यौ०—श्रीकठपदलाछन = श्रीकठ नामवाला, भवभूति का एक नाम ।

४ एक राग का नाम (को०) । ५ सुंदर कठवाला एक पक्षी (को०) ।

श्रीकठसखा—सज्ञा पु० [स० श्रीकण्ठसखा] कुबेर का एक नाम ।

श्रीकदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीकन्दा] वध्या कर्कोटकी । खेखसा । वनपरवल ।

श्रीकर¹—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु । २ लाल कमल । ३. नौ उपनदो मे से एक ।

श्रीकर²—वि० १. शोभा बढानेवाला । सौंदर्य बढानेवाला । २ कल्याण करनेवाला ।

श्रीकरण—सज्ञा पु० [स०] १ कलम । लेखनी । २ कायस्थों की शाखा या उपजाति का नाम । १ उत्तर कोशल की राजधानी का नाम (को०) ।

श्रीकर्ण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का पक्षी । (बृहत्सहिता) ।

श्रीकात—सज्ञा पु० [स० श्रीकान्त] लक्ष्मी के पति, विष्णु ।

श्रीकाम—वि० [स०] कीर्ति या यश चाहनेवाला । अभ्युदय की आकाक्षा करनेवाला ।

श्रीकाम—सज्ञा स्त्री० [सं०] राधिका का एक नाम (को०) ।

श्रीकारी—सज्ञा पु० [स० श्रीकारिन्] एक प्रकार का मृग । कुरग ।

पर्या०—महायव । शिखिपूप । यवन । जघाल ।

श्रीकीर्ति—सज्ञा पु० [स०] सगीतदामोदर के अनुसार ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक भेद । इसमे दो गुरु और दो लघु मात्राएँ होती है (सगीतदामोदर) ।

श्रीकुज—सज्ञा पुं० [स० श्रीकुञ्ज] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम, जो सरस्वती नदी के तट पर था ।

श्रीकुड—सज्ञा पु० [स० श्रीकुण्ड] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

श्रीकृच्छ्—सज्ञा पु० [स०] एक व्रत जिसमें केवल श्रीफल (वेल) खाकर रहते हैं ।

श्रीकृष्ण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'कृष्ण'—१ ।

यौ०—श्रीकृष्णस्मरण = पुष्टिमार्गीय जनो का नमस्कार । उ०—तब उन वैष्णव को श्रीकृष्णस्मरण करि वोहोत आदर करि वैठारे ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७७ ।

श्रीक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] जगन्नाथ पुरी तथा उसके आसपास के प्रदेश का नाम, जो पुण्य क्षेत्र माना जाता है ।

श्रीखंड—सज्ञा पुं० [स० श्रीखण्ड] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का चदन जो हरिचंदन भी कहलाता है । मलयागिरि चंदन । उ०—मुकता माल नद नदन उर अर्घ सुधा घट काति । तनु श्रीखड मेघ उज्जवल अति देखि महाबल भाँति ।—सूर (शब्द०) । २ एक पेय पदार्थ । दे० 'शिखरण' । उ०—कलिया अरु कबाब वर स्वादू । तिमि श्रीखड करन अहलादू ।—रघुराज (शब्द०) । ३ वैश्यों की एक जाति ।

श्रीखड शैल—सज्ञा पुं० [स० श्रीखण्ड शैल] मलय पर्वत, जहाँ श्रीखंड (चदन) होता है ।

श्रीखडा—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'श्रीखड' ।

श्रीगध—सज्ञा पु० [स० श्रीगन्ध] सफेद चदन । संदल ।

श्रीगणेश—सज्ञा पुं० [स०] आरंभ । प्रारभ । शुरुआत ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

श्रीगदित—सज्ञा पुं० [स०] उपरूपक के अठारह भेदो मे से एक भेद ।

विशेष—इसकी रचना प्राय किसी पौराणिक घटना के आधार पर होती है । इसका दूसरा नाम श्रीरामिका भी है ।

श्रीगर्भ—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु । २. खड्ग । तलवार । ३. राजा का शयनकक्ष (को०) ।

श्रीगुरु—सज्ञा पुं० [स०] वैश्यो की एक जातिविशेष ।

श्रीगेह—सज्ञा पु० [स०] कमल । पद्म ।

श्रीगोड—सज्ञा पु० [स० श्री + हिं० गोड] वैश्यो की एक जाति विशेष ।

श्रीग्रह—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ चिडियो के पानी पीने का प्रबंध हो ।

श्रीग्रामर—सज्ञा पु० [स०] नारायण । विष्णु (को०) ।

श्रीघन—सज्ञा पु० [स०] १. दही । दधि । २. बुद्धदेव का एक नाम । ३. बौद्ध यति या संन्यासी ।

श्रीचदन—सज्ञा पु० [स० श्रीचन्दन] सफेद चदन । सदल ।

श्रीचक्र—सज्ञा पु० [स०] १. तान्त्रिको के अनुसार एक प्रकार का चक्र या यत्र ।

विशेष—इसका व्यव्हार देवी के पूजन मे, विशेषत. त्रिपुरासु दरी देवी के पूजन मे होता हैं ।

२. भूमडल । ३. इद्र के रथ का एक चक्र (को०) ।

श्रीचमरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का हिरन ।

श्रीज—सज्ञा पु० [स०] १. कामदेव । मदन । २. शाव का एक नाम ।

श्रीटंक—सज्ञा पु० [स० श्रीटङ्क] संगीत मे एक प्रकार का राग, जिसमे सब कोमल स्वर लगते हैं ।

श्रीणा—सज्ञा स्त्री० [स०] रात । रात्रि ।

श्रीतरु—सज्ञा पुं० [स०] सर्ज वृक्ष । साल का पेड । शाल ।

श्रीतल—सज्ञा पु० [स०] विष्णुपुराण के अनुसार एक नरक का नाम ।

श्रीताल—सज्ञा पुं० [स०] ताड़ या ताल के वृक्ष से मिलता जुलता एक प्रकार का वृक्ष जिसे हिंताल भी कहते हैं ।

विशेष—यह मलाया देश मे उत्पन्न होता है । वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कुछ कुछ खट्टा, कफकारक, किंचित् वायु को कुपित करनेवाला तथा पित्त का नाश करनेवाला माना गया है ।

पर्या०—मृदुनाल। लक्ष्मीनाल। मृदुच्छद। विशालपत्र। मसोलेखन्ल। शिरालपत्रक।

श्रीतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीतेज, श्रीतेजा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीतेजस्] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

श्रीद¹—संज्ञा पुं० [सं०] धन देनेवाले, कुबेर।

श्रीद²—वि० १. श्री बढ़ानेवाला। २ शोभा बढ़ानेवाला।

श्रीदयित—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

श्रीदामा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीदामन्] श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम, जिन्हें सुदामा भी कहते हैं। उ०—हँसि हँसि तारी देत सखा सब भए श्रीदामा चोर। सूरदास हँसि कहति यशोदा जीत्यो है सुत मोर।—सूर (शब्द०)।

श्रीदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसुदेव की पत्नी सुदेवा का एक नाम।

श्रीद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्रीवृक्ष' (को०)।

श्रीधन्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीधर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। उ०—धनि धनि नद धन्य निशिवासर धनि यशुमति जिन श्रीधर जाए।—सूर (शब्द०)। २ शालग्राम शिलाचक्र (को०)। ३ जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर का नाम। ४ श्रीधर स्वामी। श्रीमद्भागवत के एक ख्यातनामा टीकाकार।

श्रीधर²—वि० तेजस्वी। तेजवान्।

श्रीधाम—संज्ञा पुं० [सं०] १ लक्ष्मी का निवासस्थान। २. पद्म।

श्रीनंदन—संज्ञा पुं० [सं० श्रीनन्दन] १. कामदेव। २ एक ताल का नाम (को०)।

श्रीनगर—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर राज्य की आधुनिक राजधानी। २ राजतरंगिणी में उल्लिखित दो नगर जिनमें एक कानपुर और दूसरा बुंदेलखंड में था (को०)।

श्रीनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

श्रीनाथजी द्वार—संज्ञा पुं० [सं० श्रीनाथ+हिं० जी+सं० द्वार] वल्लभ मतानुयायियों का एक पवित्र तीर्थ जो उदयपुर में है। उ०—ऐसे करत कछुक दिन में श्री गुसाईं जी द्वारिकाजी तें श्रीनाथजी द्वार पधारे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

श्रीनिकेत—संज्ञा पुं० [सं०] १ लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुंठ। उ०—श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अवर सुधा पिआइ बिछुरे पठै दीनो ज्ञान।—सूर (शब्द०)। २ गंधाबिरोजा। सरल निर्यास। ३. लाल कमल। ४. स्वर्ण। सोना।

श्रीनिकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुंठ। ३ गंधाबिरोजा। सरल निर्यास।

श्रीनितंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीनितम्बा] राधा का एक नाम।

श्रीनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम।

श्रीनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। २ श्री या लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुंठ। उ०—श्रीनिवास पुर तें अधिक रचना विविध प्रकार।—मानस, १।१२९।

श्रीनिवासक—संज्ञा पुं० [सं०] कटसरैया।

श्रीपंचमी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीपञ्चमी] माघ शुक्ल पंचमी। वसंत पंचमी।

श्रीपत (पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रीपति] विष्णु। (डिं०)।

श्रीपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। नारायण। हरि। उ०—(क) श्रीपति निज माया तब प्रेरी।—मानस, १।१२९। (ख) जाके सखा श्यामसुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता।—सूर (शब्द०)। २ रामचंद्र। उ०—बार बार आवत कहै केवट नहिं माने।—सूर (शब्द०)। ३ कृष्ण। उ०—जो हम कछु न बसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै।—सूर०, १।२७५। ४ कुबेर। ५. पृथ्वीपति। नृप। राजा।

श्रीपथ—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी और चौड़ी सड़क। राजमार्ग। राजपथ।

श्रीपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वार्षिकी पुष्पवृक्ष। मल्लिका। बेला।

श्रीपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

श्रीपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। पद्म। २. अग्निमथ वृक्ष। अरनी। गनियारी।

श्रीपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कटफल। कायफल। २. गंभारी। ३. गनियारी। अरनी। ४ पृश्निपर्णी। पिठवन। ५. सेमल का पेड़। शाल्मलि।

श्रीपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कायफर। कायफल। २ गंभारी। ३. गनियारी। अरनी। ४ पिठवन। ५. सेमल का पेड़।

श्रीपर्वत—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

श्रीपा—वि० [सं०] श्री की रक्षा करनेवाला। समृद्धि का रक्षण करनेवाला।

श्रीपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो चरण पूजने योग्य हो। पूज्य। श्रेष्ठ। २ धनवान्। संपन्न।

श्रीपिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] सरल वृक्ष का रस। गंधाबिरोजा।

श्रीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ अश्व। घोड़ा। २ कामदेव। ३ चंद्रमा (को०)। ४ इंद्र का अश्व (को०)।

श्रीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का मणिद्वीप नामक स्थान।

विशेष—यह वाममार्गी शाक्तों का प्रधान स्थान है। यहीं ये लोग मुक्ति का सुख अनुभव करते हैं।

श्रीपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ लौंग। लवंग। २ पद्मकाष्ठ। पदुमाख। ३ पुंडेरी। ४ सफेद कमल।

श्रीप्रद—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो श्री या सौभाग्य प्रदान करता हो।

श्रीप्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राधा का एक नाम।

श्रीप्रसून—संज्ञा स्त्री० [सं०] लौंग। लवंग।

श्रीप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल।

श्रीफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. बेल। २. नारियल। उ०—(क) श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिउरा अरु नव धानी।

—सूर (शब्द०)। (ख) हिया थार कुच कनक कचूरा। जानहुँ दोऊ श्रीफल जूरा।—जायसी (शब्द०)। ३. खिरनी। राजादनी वृक्ष। ४ आँवला। ५ कच्ची चिकनी सुपारी। ६ द्रव्य। धन। उ०—श्रीफल को अभिलाप प्रगट कवि कुल के जी मे।—केशव (शब्द०)।

श्रीफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीली। नील का पौधा। २ करेली। क्षुद्र कारवेली। ३ आँवला।

श्रीफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षुद्र कारवेली। करेली। २. महानीली का पौधा।

श्रीफली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आँवला। २. नील। ३ बडी मालकँगनी। महाज्योतिष्मती लता।

श्रीबधु—संज्ञा पुं० [सं० श्रीबन्धु] १. अमृत। २ चद्रमा।—अनेकार्थ०, पृ० ३०।

श्रीबन—संज्ञा पु० [सं० श्री+बन] वृंदावन। उ०—प्रीतम के शृ गार के अर्थ श्रीबन (निधि बन) की लताओ मे गु जा एकत्रित कर उसकी माला पिरोवै।—पोद्दार अभि० ग्र० पृ० १९६।

श्रीबीज—संज्ञा पु० [सं०] ताड। ताल वृक्ष।

श्रीभक्ष—संज्ञा पु० [सं०] मधुपर्क जो देवताओ के सामने रखा जाता या दान किया जाता है। विशेष दे० 'मधुपर्क'—१।

श्रीभद्र—संज्ञा पु० [सं०] मुस्तक। मोथा।

श्रीभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भद्रमोथा। भद्रमुस्तक।

श्रीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, जिनका जन्म सत्यभामा के गर्भ से हुआ था।

श्रीभ्राता—संज्ञा पुं० [सं० श्रीभ्रातृ] अश्व, चद्र, अमृत आदि चौदह रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी या श्री के भाई कहे जाते हैं।

श्रीमगल—संज्ञा पु० [सं० श्रीमङ्गल] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीमजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीमञ्जरी] तुलसी। सुरसा।

श्रीमजु—संज्ञा पु० [सं० श्रीमञ्जु] एक पर्वत का नाम।

श्रीमडप—संज्ञा पु० [सं० श्रीमण्डप] एक पर्वत का नाम।

श्रीमत[1]—संज्ञा पु० [सं० श्रीमन्त] १. एक प्रकार का शिरोभूषण। उ०—शीश सचिक्कन केश हो बिच श्रीमत सँवारि।—सूर (शब्द०)। २ स्त्रियो के सिर के बीच की माँग।

श्रीमत[2]—वि० १. श्रीमान्। धनवान्। धनाढ्य। धनी। २ सुंदर। सौंदर्यशाली।

श्रीमकुट—संज्ञा पु० [सं०] सोना। स्वर्ण (को०)।

श्रीमत्[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ तिल पुष्प। २ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। ३ विष्णु का एक नाम। ४ शिव का एक नाम। ५ कुवेर। ६ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ७ हल्दी का पौधा। ८ शुक। सुग्गा (को०)। ९ प्रजनन कराने के लिये रखा हुआ वृष (को०)। १० पुरुष एव ग्रथादि के नाम के आदि मे प्रयुक्त शब्द।

श्रीमत्[2]—वि० १ जिसके पास बहुत अधिक धन हो। धनवान्। अमीर। २ जिसमे श्री या शोभा हो। ३. सुदर। खूबसूरत। ४ प्रसिद्ध। ख्यात। आदरणीय (को०)।

श्रीमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'श्रीमान्' का स्त्रीलिंग वाचक शब्द। स्त्रियो के लिये आदरसूचक शब्द। जैसे,—श्रीमती सुभद्रा देवी। २ लक्ष्मी। ३ राधा का एक नाम। ४ मुडिका। मु डी। ५ पत्नी (को०)।

श्रीमत्कुभ—संज्ञा पु० [सं० श्रीमत्कुम्भ] सोना।

श्रीमत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ 'श्रीमत्' या 'श्रीमान्' होने का भाव या धर्म। २ सपन्नता। अमीरी।

श्रीमद—संज्ञा पुं० [सं०] धनमद। सपत्ति का गर्व। उ०—(क) श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बघिर न काहि। मृगलोचनि के नैनसर को अस लाग न जाहि।—मानस, ७।७०। (ख) ऐ परि यह श्रीमद है जैसो। बड अनर्थकर अवर न ऐसो।—नद० ग्र०, पृ० २५२।

श्रीमय—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

श्रीमलापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तमाखू। तमाकू।

श्रीमस्तक—संज्ञा पु० [सं०] १ लहसुन। २ लाल आलू।

श्रीमहिमा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीमहिमन्] शिव। महादेव।

श्रीमान्[1]—वि० [सं० श्रीमत्] १ लक्ष्मीवान्। धनवान्। अमीर। २ शोभायुक्त। शोभावान्। ३ सुदर। ४ यशस्वी। प्रसिद्ध (को०)। ५ प्रसन्न। भाग्यशाली (को०)।

श्रीमान्[2]—संज्ञा पुं० १. तिल पुष्पी। २ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। ३ हल्दी। हरिद्रा। ४ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ कुवेर। ८ सुग्गा। शुक (को०)। ९ साँड (को०)।

श्रीमान—संज्ञा पु० [सं० श्रीमत्] आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि मे रखा जाता है। उ०—जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जगत अधार।—सूर (शब्द०)।

श्रीमाल[1]—संज्ञा पु० [देश०] वश्यो की एक जाति।

श्रीमाल[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री+माला] गले मे पहनने का एक आभूषण। कठश्री। उ०—चिबुक तर कठ श्रीमाल मोतीन छवि कुच उच्चनि हेम गिरि अतिहि लाजै।—सूर (शब्द०)।

श्रीमुख—संज्ञा पु० [सं०] १ शोभित या सुदर मुख। उ०—आगम कल्प रमण तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान।—सूर (शब्द०)। २ बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे मे सातवाँ सवत्सर। ३. विष्णु का मुख, वेद। ४ सूर्य। उ०—व्योम मे मुनि देखिए अति लाल श्रीमुख साजही।—केशव (शब्द०)। ५. वह पत्र लेख आदि जिसके प्रारभ मे स्वतिवाचक शब्द श्री लिखा हुआ हो।

श्रीमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैष्णवों का तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है।

श्रीमूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु की मूर्ति। २ लक्ष्मी की प्रतिमा। प्रतिमा। मूर्ति (को०)।

श्रीवृक्षक—संज्ञा पु० [सं०] १. घोडे की छाती पर की एक भँवरी जो शुभ मानी जाती है। २ एक व्रत का नाम।

श्रीवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बोधिद्रुम पर की एक देवी। (ललितविस्तर)। २ समृद्धि। वृद्धि। संपन्नता। उ०—अत्यंत प्रसन्नता का अवसर है कि ईश्वर हमारी भाषा और हमारे साहित्य की उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि होती जा रही है —रस क० (प्रा०), पृ० १।

श्रीवेष्ट, श्रीवेष्टक—संज्ञा पु० [सं०] १ सरल द्रव। गंधाबिरोजा। २ तारपीन का तेल। सरल वृक्ष।

श्रीवैष्णव—संज्ञा पु० [सं०] रामानुज के अनुयायी वैष्णव। वैष्णवों का एक संप्रदाय।

श्रीश—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

श्रीसंज्ञ—संज्ञा पु० [सं०] लौंग। लवंग।

श्रीसंपदा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीसम्पदा] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

श्रीसंभूता—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीसम्भूता] ज्योतिष में कर्म मास की छठी रात्रि।

श्रीसदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रजनी। निशि। रात्रि। उ०—निसि श्रीसदा विभावरी, रात्रि त्रिजामा सोय।—अनेकार्थ (शब्द०)।

विशेष—इस अर्थ में यह शब्द संस्कृत कोशों में नहीं मिलता।

श्रीसमाघ—संज्ञा पु० [सं०] एक राग जो श्री, शुद्ध, मालश्री, भीम पलाश्री और टंक को मिलाकर बनाया जाता है।

श्रीसहोदर—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा। (चंद्रमा और लक्ष्मी दोनों समुद्र से उत्पन्न हैं)।

श्रीसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के अनुसार सोलहवाँ योग (को०)।

श्रीसूक्त—संज्ञा पु० [सं०] ऋग्वेदोक्त एक सूक्त का नाम (को०)।

श्रीहट्ट—संज्ञा पु० [सं०] एक नगर का नाम। सिलहट।

श्रीहत—वि० [सं०] १ शोभारहित। २ निस्तेज। निष्प्रभ। प्रभाहीन। उ०—(क) नमित सीस सोचहिं सलज्ज सब श्रीहत सरीर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) वे शेर हो गए आज रण भए में श्रीहत खंडित।—अपरा, पृ० ४७।

श्रीहरि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु (को०)।

श्रीहर्ष—संज्ञा पु० [सं०] १ नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि जो कान्यकुब्ज के गहड़वार राजा के आश्रित थे। २ रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवत कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।

श्रीहस्तिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हस्तिशुंडी। नागदंती। २. सूर्यमुखी का पौधा।

श्रुग(पु)—संज्ञा पु० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—सुवर सूर सामंत गुन, श्रुग मत्त मति भोग।—पृ० रा०, २५।६६२।

श्रुग्वारु—संज्ञा पुं० [सं०] विकंकत। कटाई। कंज वृक्ष।

श्रुघ्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जीखार।

श्रुतवर—संज्ञा पु० [सं० श्रुतन्वर] वास्तुविद्या में एक प्रकार का मंडप।

श्रुत—वि० [सं०] १ सुना हुआ। जो श्रवणगोचर हुआ हो। २. जिसे परंपरा से सुनते आते हो। ३ ज्ञात। प्रसिद्ध। ख्यात। ४ सीखा हुआ। समझा हुआ (को०)। ५ प्रतिज्ञात।

श्रुत[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुनने का विषय। श्रुतिविषय शब्दादि। २ वेद। ३. विद्या। ४ सुनने की क्रिया (को०)।

श्रुतकाम—वि० [सं०] वेदादि पवित्र ज्ञान का इच्छुक।

श्रुतकीर्ति[१]—वि० [सं०] जिसकी कीर्ति प्रसिद्ध हो। कीर्तियुक्त।

श्रुतकीर्ति[२]—संज्ञा पुं० १ अर्जुन के एक पुत्र का नाम। २. उदार चरित व्यक्ति (को०)। ३ संत। ऋषि (को०)।

श्रुतकीर्ति[३]—संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।

श्रुतकेवली—संज्ञा पु० [सं० श्रुतकेवलिन्] एक प्रकार के अर्हंत जो छह कहे गए हैं। (जैन)।

श्रुतदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

श्रुतधर[१]—संज्ञा पु० [सं०] १. कान। २. पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के ब्राह्मणों की संज्ञा।

श्रुतधर[२]—वि० सुनी हुई बात का स्मरण रखनेवाला (को०)।

श्रुतनिगदी—वि० [सं० श्रुतनिगदिन्] जो एक बार सुने हुए पद्य आदि को ज्यों का त्यों कह सके।

श्रुतनिष्क्रय—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा प्राप्त करने के बदले दिया जानेवाला धन। शिक्षा शुल्क। (अं० ट्यूशन फीस)।

श्रुतपूर्व—वि० [सं०] जो पहले सुना गया हो। जानाबूझा।

श्रुतर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] ऋषि विशेष (को०)।

श्रुतवास—वि० [सं० श्रुत+वास] वेदज्ञ। विद्वान्। उ०—सिद्धि श्री श्रीनिवास, धाम, श्रुतवास महायक।—नंद० ग्रं०, पृ० २०५।

श्रुतविज्ञ—वि० [सं०] वेदज्ञ। वेद शास्त्र का पंडित (को०)।

श्रुतवित्त—वि० [सं०] वैदिक। वेदज्ञ। श्रुताढ्य (को०)।

श्रुतवृद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्।

श्रुतशील[१]—वि० [सं०] विद्वान् और सदाचारी।

श्रुतशील[२]—संज्ञा पुं० विद्या और सदाचार (मनु०)।

श्रुतश्रवा—संज्ञा पुं० [सं० श्रुत श्रवस्] शिशुपाल के पिता का नाम (को०)।

श्रुतश्रवानुज—संज्ञा पु० [सं०] शनिग्रह (को०)।

श्रुतश्रेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १, मूषाकानी। २ नदी (को०)।

श्रुता—वि० स्त्री० [सं० श्रुत] ख्यात। प्रसिद्ध। श्रुत। उ०—वह देव निम्नगा, स्वर्गंगा, वह सगर पुत्र तारिणी, श्रुता।—ग्राम्या, पृ० ४२।

श्रुतादान—संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यवाद (को०)।

श्रेणीभुक्त—वि० [स०] जो श्रेणी या पंक्ति मे कर लिया गया हो। श्रेणी मे आया या मिला हुआ (को०)।

श्रेणीसंघर्ष—सज्ञा पु० [स० श्रेणी+सङ्घर्ष] समानधर्मियो के एक वर्ग या श्रेणी का दूसरे से सघर्ष वर्गसघर्ष। (अ० क्लास वार)। उ०—वे लोग सुधारवादी ढग के विरोधी थे और श्रेणीसघर्ष के द्वारा श्रमजीवियो की अवस्था को सुधारना चाहते थे।—मा० वि०, पृ० ७२।

श्रेणीहित—सज्ञा पुं० [स०] वर्ग का हित। वर्गीय स्वार्थ। (अ० क्लास इटेरेस्ट)। उ०—मजदूरो के दृष्टिकोण को—उनके श्रेणीहित के साधनों का—न अपना सके।—'आज', पृ० ३, (३।१०।५१)।

श्रेय[1]—वि० [स० श्रेयस्] [वि० स्त्री० श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। प्रशस्त। ३ मगलदायक। शुभ। कल्याणकारी। ४. यश देनेवाला। कीर्तिकर। ५ अधिक सौभाग्यशाली (को०)। ६ अत्यत प्रिय। प्रियतर (को०)। ७ उपयुक्त (को०)।

श्रेय[2] सज्ञा पु० १ अच्छापन। २ भलाई। बेहतरी। कल्याण। मगल। ३ धर्म। पुण्य। सदाचार। ४. एक साम का नाम। ५ ज्योतिष मे दूसरा मुहूर्त। ६ वर्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत्। (जैन)। ७ मुक्ति। मोक्ष (को०)। ८ शुभ अवसर (को०)। ९ सुख (को०)।

श्रेयसी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरीतकी। हर्रे। २ पाठा। पाठी। ३ गज पीपल। ४ रास्ना। ५ प्रियगु।

श्रेयसी[2]—वि० स्त्री० कल्याणमयी। श्रेययुक्ता (को०)।

श्रेयस्कर—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्रेयस्करी] कल्याण करनेवाला। शुभदायक।

श्रेयस्त्व—सज्ञा पुं० [स०] उत्तमता। श्रेष्ठता (को०)।

श्रेयासनाथ—सज्ञा पु० [स०] वर्त्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत् या तीर्थंकर (जैन)।

श्रेष्ठ[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्रेष्ठा] १ सर्वोत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २ मुख्य। प्रधान। प्रथम। ३. पूज्य। बडा। ४ वृद्ध। ज्येष्ठ। ५ कल्याण भाजन। ६ प्रियतम। अत्यत प्रिय (को०)।

श्रेष्ठ[2]—सज्ञा पुं० १. कुबेर। २. विष्णु। ३ द्विज। ब्राह्मण। ४ राजा। नृप (को०)। ५ गोदुग्ध। गाय का दूध (को०)। ६ तांबा (को०)। ७ शिव। महादेव (को०)।

श्रेष्ठकाष्ठ—सज्ञा पु० [स०] १ सागौन। सागवान का पेड। २ घर मे लगा प्रधान स्तभ।

श्रेष्ठतम—वि० [स०] सबसे श्रेष्ठ। सबसे बडा या ज्येष्ठ। सर्वोत्तम।

श्रेष्ठता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तमता। २ प्रधानता। गुरुता। बडाई। बडप्पन।

श्रेष्ठवाक्—वि० [स० श्रेष्ठवाच्] वावदूक। मुखर। श्रेष्ठ वक्ता (को०)।

श्रेष्ठवेधिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कस्तूरी। मृगमद (को०)।

श्रेष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बहुत उत्तम स्त्री। २ स्थल कमल। ३. मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ४ त्रिफला।

श्रेष्ठाम्ल—सज्ञा पुं० [स०] इमली (को०)।

श्रेष्ठाश्रम—सज्ञा पु० [स०] १ गृहस्थाश्रम। २ गृहस्थ (को०)।

श्रेष्ठिकन्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवसायी की पुत्री। सेठ महाजन की कन्या। उ०—ववराओ मत श्रेष्ठिकन्ये।—स्कद०, पृ० ८४।

श्रेष्ठिचत्वर—सज्ञा पुं० [स०] नगर का वह भाग जहाँ बडे बडे व्यापारी रहते हैं (को०)।

श्रेष्ठी—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठिन्] १ व्यापारियो या वणिकों का मुखिया। प्रतिष्ठित व्यवसायी। महाजन। सेठ। २ बडा व्यापारी। श्रेष्ठ व्यापारी।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७८।

श्रेष्ठ्य—सज्ञा पुं० [स०] सर्वोत्कृष्टता। सबसे श्रेष्ठ होने का भाव (को०)।

श्रोण[1]—वि० [स०] पगु। खंज।

श्रोण[2]—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का रोग (को०)।

श्रोण(पु)[3]—सज्ञा पुं० [स० शोण] दे० 'शोण'। उ०—श्रोण की सरिता दुरत अनत रूप सुनत।—केशव (शब्द०)।

श्रोणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कांजी। भात का मांड। २ श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटि। कमर। २. नितव। चूतड। ३ यज्ञ की वेदी का किनारा। ४ पथ। मार्ग।

यौ०—श्रोणितट = नितव की उतार या ढाल। श्रोणिफल, श्रोणिफलक = बडा नितंब। कटिप्रदेश। श्रोणिबिंब = (१) कटिसूत्र। (२) गोलाकार नितब। श्रोणिसूत्र।

श्रोणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रोणि'।

श्रोणित(पु)†—सज्ञा पुं० [स० शोणित] दे० 'शोणित'।

श्रोणिसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] १. करधनी। मेखला। खड्गबधन का सूत्र परतला। तलवार का पट्टा (को०)।

श्रोणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कटि। कमर। २ चूतड। नितब। ३ मध्य भाग। कटि प्रदेश। ४ पथ। मार्ग (को०)।

श्रोत.आपत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्ति या निर्वाणसाधना की प्रथम अवस्था जिसमे बधन ढीले होने लगते हैं।

विशेष—बौद्ध शास्त्र मे पाँच प्रतिबंध माने गए हैं—आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा और मोह। श्रोत.आपन्न को ये पांचो बधन छोडते तो नही पर क्रमश ढीले होते जाते हैं। इस अवस्था को प्राप्त साधक को केवल सात बार और जन्म लेना पड़ता है। इस अवस्था के उपरात 'सकृदागामी' की अवस्था है जिसमे प्रथम तीन बधन सर्वथा छूट जाते हैं और एक ही जन्म और लेना रह जाता है।

श्रोत आपन्न—वि० [स० स्रोतस्+आपन्न] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्ति या निर्वाण की साधना मे प्रथम अवस्था को प्राप्त जिसमे क्रमश बधन ढीले होने लगते हैं।

श्रोत—संज्ञा पुं० [सं० श्रोतम्] १ श्रवणेंद्रिय । कान । २ हाथी की सूँड (को०) । ३. इंद्रिय । ज्ञानेंद्रिय (को०) । ४ धारा । प्रवाह (को०) ।

श्रोतक—वि० [सं०] १ सुनने योग्य । श्रवणीय । २. जिससे सुनना हो ।

श्रोतव्य—वि० [सं०] १ सुनने के योग्य । उ०—श्रोत्र सु अध्यातम प्रगट श्रोतव्य अधिभूत । दिशा तत्र है देवता यह त्रिपुटी इहि सूत —सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ६८ ।

श्रोता—संज्ञा पुं० [सं० श्रोतृ] १ सुननेवाला । श्रवणकर्ता । २. कथा या उपदेश सुननेवाला । शिक्षार्थी ।

श्रोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रवणेंद्रिय । कान । २ वेदज्ञान । वेद मे निपुणता । वेद संबंधी प्रवीणता । ३ वेद । श्रुति (को०) ।

यौ०—श्रोत्रपदवी = श्रवणगोचरता । श्रवण की सीमा । श्रोत्रपदानुग = श्रुतिप्रिय । श्रोत्रपालि = कान की लोर या ललरी । श्रोत्रपुट = (१) कर्णपुट । (२) कान की ललरी । श्रोत्रपेय = कानो द्वारा पान करने योग्य । सुननेयोग्य । श्रवणीय । श्रोत्रमार्ग = कर्ण । कान श्रोत्रमूल = कान की जड । कर्णमूल । श्रोत्रवर्त्म = कर्ण । कान । श्रोत्रवादी = आज्ञापालक । आज्ञाकारी । सुनने के साथ ही आज्ञापालन करनेवाला । श्रोत्रसुख = कानो को सुखद । श्रवणमधुर । श्रुतिमधुर । श्रोत्रहीन = कर्णरहित । श्रवणशक्ति विहीन । बधिर । बहरा ।

श्रोत्रकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रोत्रकान्ता] एक पौधा जो औषध के काम मे आता है ।

श्रोत्रिय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेद वेदांग मे पारगत हो । वेदज्ञ । २. ब्राह्मणो का एक वर्तमान भेद । (को०) ।

श्रोत्रिय²—वि० १ वेदज्ञ । वेद में पारगत । २ विनेय । अनुशासनीय । वश्य । ३. सभ्य । शिष्ट । सुसंस्कृत (को०) ।

श्रोत्रियता—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रोत्रिय होने का भाव या धर्म ।

श्रोत्रियत्व—संज्ञा पुं० [सं०] श्रोत्रियता (को०) ।

श्रोत्री - संज्ञा पुं० [सं० श्रोत्रिय] दे० 'श्रोत्रिय' ।

श्रोन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोण, हिं० श्रोण] दे० 'शोण' । उ०—लिए नृकपाल नृदेह कराल । करे नर मुंडनि की उर माल । पिए नर श्रोन मिल्यो मदिरा सो । कपालि कुं देखिए भीम प्रभा सो ।—केशव (शब्द०) ।

श्रोनित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोणित] दे० 'शोणित' । उ०—श्रोनित श्रवत लसै तनु कैसे । परम प्रफुल्लित किंसुक जैसे ।—मधुसूदन (शब्द०) ।

श्रौत¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० श्रौती] १. श्रवण संबंधी । कर्ण संबंधी । २ श्रुति या वेद संबंधी । ३ श्रुतिविहित । वेद प्रतिपादित । जो वेद के अनुसार हो । ४ यज्ञ संबंधी । जैसे,—श्रौतकर्म, श्रौत सूत्र । ५ श्रोत्र ग्राह्य । जो अस्फुट न हो (को०) ।

श्रौत—संज्ञा पुं० १ तीनो प्रकार की अग्नि । गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण नाम की अग्नि । २. वेद प्रतिपादित धर्म । ३. यज्ञाग्नि का रक्षण या भरण (को०) ।

यौ०—श्रौतकर्म = दे० 'श्रौतकर्म' । श्रौतजन्म = यज्ञोपवीत संस्कार । श्रोत्रजन्म । श्रौतमार्ग = (१) श्रुतिविहित मार्ग । (२) श्रवण । कर्णपथ । श्रौतरंध्र ।

श्रौतश्रव - संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल का एक नाम ।

श्रौतसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञादि के विधानवाले सूत्र । कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमे पौर्णमास्येष्टि से लेकर अश्वमेध पर्यंत यज्ञो का विधान है ।

विशेष—दो प्रकार के वैदिक सूत्र ग्रंथ मिलते है—श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र । श्रौत सूत्रो मे यज्ञो का विधान है । सूत्रकार कई हैं । जैसे,—आश्वलायन, आपस्तंब, कात्यायन, नारायण ।

श्रौतहोम—संज्ञा पुं० [सं०] सामवेद का एक परिशिष्ट ।

श्रौत्र¹—वि० [सं०] श्रवणेंद्रिय संबंधी । श्रवण संबंधी ।

श्रौत्र²—संज्ञा पुं० १ वेद मे दक्षता । वेदज्ञता । वैदिक वाङ्मय या कार्यो मे पारगत होना । २. श्रवण । कर्ण (को०) ।

श्रौत्रकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] वेदविहित यागादि कर्म । यज्ञ ।

श्रौत्रजन्म—संज्ञा पुं० [सं० श्रौत्रजन्मन्] द्विजो का उपनयन संस्कार जिसमे वे वेद के अधिकारी होकर द्वितीय जन्म प्राप्त करते है ।

श्रौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] दे० 'श्रवण' । उ०—पीतम श्रौन समीप सदा बजो यों कहकै पहिले पहिरायो ।—मतिराम (शब्द०) ।

श्लाह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल । पद्म । २. गंधाबिरोजा । सरल द्रव्य ।

श्लक्ष्ण¹—वि० [सं०] १. कोमल । मृदु । सौम्य । जैसे, शब्द । २. चिकना, चमकदार । ३ स्वल्प । पतला । सूक्ष्म । ४ सुंदर । लावण्यमय । ५ सच्चा । ईमानदार । निश्छल । खरा (को०) ।

यौ०—श्लक्ष्णत्वक् = (१) वृक्ष की चिकनी छाल या बक्कल । (२) अश्मंतक नामक वृक्ष । कचनार । श्लक्ष्णत्वक = आवर्तक या कोविदार । श्लक्ष्णपिष्ट = खूब महीन या चिकना पीसा हुआ । श्लक्ष्णवाक् = मधुर वचन । श्लक्ष्णवादी = मृदु या मधुर बोलनेवाला ।

श्लक्ष्णक¹—वि० [सं०] १. कोमल । चिकना । २ सुंदर (को०) ।

श्लक्ष्णक²—संज्ञा पुं० सुपारी । पूगफल (को०) ।

श्लथ—वि० [सं०] १ शिथिल । ढीला । उ०—सीता सरस ज्यौं चिह्न म्लान, छाया श्लथ ।—तुलसी प०, पृ० ५ । २ मंद । धीमा । ३ दुर्बल । अशक्त । ४ गिरा हुआ । च्युत (को०) । ५. न बँधा हुआ । बिखरा हुआ । छूटा हुआ । मैला, रस ।

श्लथगात—वि० [सं०] शिथिल शरीरवाला । उ०—श्लथगात, सुर मे ज्यो रही म बद्ध हो ।—अपरा, पृ० १८५ ।

श्लथबंधन—वि० [सं० श्लथबन्धन] जिसके बंधन ढीले हो गए हों ।

श्लथांग—वि० [सं० श्लथाङ्ग] जिसके अंग शिथिल हों । श्लथगात ।

श्लथोद्यम—वि० [सं०] चेष्टा या उद्यम को विश्राम देने या शिथिल करनेवाला (को०) ।

श्लाघन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लाघित, श्लाघी, श्लाघनीय, श्लाघ्य] १ प्रशंसा करना। प्रशस्ति गान। २ खुशामद या चाटुकारिता। चापलूसी। ३ अपनी प्रशंसा करना। डींग हाँकना।

श्लाघन[2]—वि० अपनी प्रशंसा करनेवाला।

श्लाघनीय—वि० [सं०] १ प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। बड़ाई। ३ खुशामद। चापलूसी। ४ इच्छा। चाह। उ०—अच्छा तो ज्ञात हुआ कि कदाचित् तुम्हारी श्लाघा है कि मैं तुमको इनसे भी नीचतर समझूँ।—अयोध्यासिंह (शब्द०)। ५ आज्ञापालन। सेवा। ६ आत्मप्रशंसा (को०)।

यौ०—श्लाघाविपर्यय=आत्म प्रशंसा या चापलूसी का अभाव।

श्लाघित—वि० [सं०] १ जिसकी तारीफ हुई हो। प्रशंसित। २. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघी—वि० [सं० श्लाघिन्] १ सदर्प। साहंकार। मदोद्धत। २ अभिमानी। प्रगल्भ। धृष्ट। डींग हाँकनेवाला। ३ प्रख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

श्लाघ्य—वि० [सं०] १. सराहने योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. श्रेष्ठ। अच्छा। ३ आदरणीय। श्रद्धेय (को०)।

श्लिकु—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंपट। कामुक। २ सेवक। दास। ३ आश्रित। ४ नक्षत्र विद्या। फलित ज्योतिष (को०)।

श्लिक्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामुक। लंपट। २. आश्रित। दास। सेवक।

श्लिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। संयुक्त होना। २. परिरंभण। आलिंगन।

श्लिष्ट—वि० [सं०] १ मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। सटा हुआ। लगा हुआ। २ अच्छी तरह जमा हुआ। चिपका हुआ। खूब बैठा हुआ (वस्त्र आदि)। ३ आलिंगित। भेंटा हुआ। ४ (साहित्य में) श्लेषयुक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों। ५ टिका हुआ। झुका हुआ (को०)।

श्लिष्ट रूपक—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक अलंकार का एक भेद। जहाँ शब्दों द्वारा रूपक का विधान किया जाय। जैसे,—देखत ही सुबरन हीरा हरिबे का पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं।—भिखारी ग्रं०, भाग २, पृ० १००।

श्लिष्टवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० श्लिष्टवर्त्मन्] एक नेत्र रोग, पलकों की बरौनियों का आपस में चिपक जाना (को०)।

श्लिष्टि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जोड़। मिलान। लगाव। २ आलिंगन। परिरंभण।

श्लिष्टि[2]—संज्ञा पुं० ध्रुव के एक पुत्र का नाम।

श्लिष्टोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उक्ति कथन जो श्लेषयुक्त हो। द्वयर्थक उक्ति।

श्लीपद—संज्ञा पुं० [सं०] टाँग सूजने का रोग। फीलपाँव।

विशेष—इस रोग में प्रथम पेड़ू, अंडकोष और जंघा की संधियों में पीड़ासहित और ज्वरयुक्त सूजन होकर पाँव में उतर आती है और पैर हाथी के पैर के समान मोटा हो जाता है। वैद्यक के अनुसार यह रोग हाथ, नाक, कान, आँख, लिंग और होंठ में भी होता है। यह चार प्रकार का होता है, अर्थात् वातज, पित्तज, श्लेष्मज और सन्निपातज। एक वर्ष बाद यह रोग असाध्य हो जाता है।

यह रोग तालाब आदि का पुराना जल पीने, शीत देश में अधिक निवास करने तथा जिन स्थानों में सदा पुराना पानी जमा रहता है, वहाँ रहने से उत्पन्न होता है।

श्लीपदप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ (को०)।

श्लीपदापह—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्रजीव वृक्ष।

श्लीपदी—वि० [सं० श्लीपदिन्] जिसे श्लीपद रोग हो गया हो।

श्लील—वि० [सं०] १ उत्तम। नफीस। श्रेष्ठ। २. जो अश्लील न हो। जो भद्दा न हो। भद्र या सभ्य समाज में स्त्री, पुरुष, बच्चे आदि सभा के बोलने, पढ़ने या दिखाए जाने योग्य। ३ भाग्यशाली। मंगलदायक। पुन। दे० 'श्रील' (को०)।

श्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। एक में सटने या लगने का भाव। २. संयोग। जोड़। मिलान। ३. आलिंगन। परिरंभण। भेंटना। ४ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं। दो अर्थवाले शब्दों का प्रयोग। ५. मैथुन। संभोग (को०)। ६ दाह। जलन (को०)। ७. व्याकरण में वृद्धि या आगम (को०)।

श्लेषक[1]—वि० [सं०] मिलानेवाला। जोड़नेवाला।

श्लेषक[2]—संज्ञा पुं० १ दे० 'श्लेष'। उ०—केशव दशम प्रभाव में, श्लेषक कवित विलास। वर्णन के विमु प्रगटही, बरषा शरद प्रकाश।—केशव (शब्द०)। २. कफ का एक भेद।

विशेष—कफ के अवलंबक, क्लेदक, बोधक, तर्पक और श्लेषक पाँच भेद हैं।

श्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। एक में सटाना। संयुक्त करना। २ परिरंभण। आलिंगन।

श्लेषभित्तिक—वि० [सं०] जो श्लेष पर आधारित हो (को०)।

श्लेषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आलिंगन। भेंटना।

श्लेषार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग (को०)।

श्लेषी—वि० [सं० श्लेषित] श्लेषण करनेवाला। आलिंगन करनेवाला (को०)।

श्लेषोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्लेषयुक्त कथन। द्वयर्थक वचन। श्लिष्टोक्ति (को०)।

श्लेषोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं। उ०—सगुन, सरस, सब अंग रागरंजित है

सुनहु सुभाग। बडे भाग बाग पाइए। चातुरी की शाला मानि आतुर ह्वैं, नदलाल। चपे की माला वाला उर उरझाइए। —केशव (शब्द०)। यहाँ सगुन (गुणयुक्त, सूत्रयुक्त), सरस आदि शब्द बाला और चपकमाला दोनो मे लग जाते हैं।

श्लेष्म, श्लेष्मक—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा।

श्लेष्म कटाहक—सज्ञा पु० [स०] निष्ठीवन का पात्र। पीकदान (को०)।

श्लेष्मघन—सज्ञा पु० [स०] १. केतकी। २ चमेली या जूही।

श्लेष्मघ्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ त्रिपुर मल्लिका। २. मल्लिका। मोतिया का एक भेद। ३. केतकी। केवडा। ४ महाज्योतिष्मती लता। ५ तीन कडवे मसाले। त्रिकटु।

श्लेष्मघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्लेष्मघ्ना'।

श्लेष्मज अर्श—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा (कफ) से उत्पन्न बवासीर रोग।—माधव०, पृ० ५४।

श्लेष्मण—वि० [स०] १. कफवाला। कफ प्रकृतिवाला। २. कफ सबंधी। श्लेष्मल।

श्लेष्मणा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पौधा।

श्लेष्मधातु—सज्ञा पु० [स०] कफ प्रकृति। कफ स्वभाव (को०)।

श्लेष्मभू—सज्ञा पु० [स०] फुफ्फुस (को०)।

श्लेष्मल¹—सज्ञा पु० [स०] लिसोडा। बहुवार वृक्ष।

श्लेष्मल²—वि० कफयुक्त। श्लेष्मयुक्त। श्लेष्मण। कफ सबधी।

श्लेष्मह—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा को हरनेवाला। कायफल। कटफल।

श्लेष्महर—वि० [स०] श्लेष्मा का हरण करनेवाला। बलगम दूर करनेवाला (को०)।

श्लेष्मातक—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मान्तक] लिसोडा। लभेरा। बहुवार वृक्ष।

श्लेष्मा—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मन्] १ वैद्यक के अनुसार शरीर की तीन धातुओं या विकारो मे से एक। कफ। बलगम। २. रस्सी। बधन। बाँधने की रस्सी। ३. लिसोडे का फल। लभेरा।

श्लेष्मात, श्लेष्मातक—सज्ञा पु० [स०] लिसोडा। लभेरा।

श्लेष्मातक वन—सज्ञा पु० [स०] गोकर्णतीर्थ के पास का जगल जिसमे शिव एक बारहसिंघे के रूप मे छिपे थे। (पुराण)।

श्लेष्मातिसार—सज्ञा पु० [स०] कफ के विकार से होनेवाला सग्रहणी या पेचिश का रोग (को०)।

श्लेष्मिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्लेष्मिकी] १ कफ संबधी। श्लेष्मल। २. कफ बढानेवाला। बलगम पैदा करनेवाला। कफकारक (को०)।

श्लेष्मी—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मिन्] १. गधा बिरोजा। २ लोबान।

श्लेष्मोज—सज्ञा पु० [स०] कफप्रकृति। दे० 'श्लेष्मधातु' (को०)।

श्लेष्मोदर—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का उदर रोग। उ०—श्लेष्मोदर रोग मे हाथ पैर आदि अगो मे शून्यता होय और जकड जाँय।—माधव०, पृ० १६४।

विशेष—इसमे कफ के विकार के कारण हाथ, पैर आदि में शून्यता आ जाती है। पेट चिकना, सफेद, कडा तथा ठढा मालूम पडने लगता है।

श्लैष्मिक—वि० [स०] श्लेष्म संबधी। कफवाला।

श्लोक—सज्ञा पुं० [स०] १ शब्द। ध्वनि। आवाज। २ पुकार। आह्वान। ३ स्तोत्र। स्तुति। ४ पद्यबद्ध कीर्तिगान या प्रशसा। ५ स्तवन या प्रशसा का विषय वा आस्पद (को०)। ६ नाम। कीर्ति। यश। जैसे,—पुण्यश्लोक। ७ सस्कृत का सबसे अधिक व्यवहृत छद। अनुष्टुभ छद। ८. सस्कृत का कोई पद्य। ९ किंवदती। कहावत (को०)। १०. इष्टमित्र (को०)।

यौ०—श्लोककार = कवि। छदबद्ध कविता करनेवाला। श्लोकनिबद्ध, श्लोकबद्ध = छदबद्ध। पद्यबद्ध। श्लोकभू = ध्वनि या शब्द से उत्पन्न होनेवाला।

श्लोकत्व—सज्ञा पुं० [स०] श्लोक होने का भाव या धर्म।

श्लोक्य—वि० [स०] स्तुत्य। प्रशस्य (को०)।

श्लोण—सज्ञा पु० [स०] लँगडा मनुष्य (को०)।

श्व—अव्य० [स० श्वस्] आनेवाले दूसरे दिन। कल। २ (समास मे) भविष्यत् काल मे (को०)।

यौ०—श्व:श्रेयस = (१) प्रसन्न। समृद्ध। (२) प्रसन्नता। समृद्धि। (३) ब्रह्म या परमात्मा।

श्वकटक—सज्ञा पु० [स० श्वकण्टक] व्रात्य और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुरुष (स्मृति)।

श्वक—सज्ञा पु० [स०] भेडिया। वृक।

श्वक्रीडी—सज्ञा पुं० [स० श्वक्रीडिन्] करतबी या खिलाडी कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति (को०)।

श्वगण—सज्ञा पु० [स०] कुत्ते का झुंड (को०)।

श्वगणिक—सज्ञा पु० [स०] १ शिकारी। २ कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति (को०)।

श्वग्रह—सज्ञा पुं० [स०] १ बालग्रह या रोग। २ बच्चो को कष्ट देनेवाला एक प्रेत। वह जो कुत्तो को पकडता है (को०)।

श्वचिल्ली—सज्ञा पु० [स०] कुकुरबदा।

श्वज (पु)—अव्य० [स० स्वयम्] स्वयम्। खुद। उ० —बिन पत्त मत्त जनु डड डक, रभ थंभ कर कटिय श्वज।—पृ० रा०, ५।५१।

श्वजीविका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्तो की जीविका। दासता। गुलामी (को०)।

श्वदष्ट्रक—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ते का दाँत। २ गोखरू।

श्वदंष्ट्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुत्ते की दाढ। २ गोखरू।

श्वदयित—सज्ञा पु० [स०] हड्डी जो कुत्तो को प्रिय है (को०)।

श्वधूर्त—सज्ञा पुं० [स०] शृगाल। गीदड।

श्वन्—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता। कुक्कुर।

विशेष—समास मे इस शब्द का पूर्वपद केवल 'श्व' रह जाता है। जैसे,—श्वकर्ण, श्वपच।

श्वनर—संज्ञा पुं० [सं०] नीच व्यक्ति। कमीना आदमी [को०]।

श्वनिश—संज्ञा पुं० [सं०] वह रात्रि जिस दिन कुत्ते भौंकते हैं अथवा नहीं खाते। कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि। उ०—वर्तमान काल में भी यत्र तत्र इस प्रकार के कुत्ते सुने गए हैं जो उक्त तिथि को नहीं खाते। इस तिथि के लिये श्वनिश तथा श्वनिशा (२।४।५) शब्द प्रचलित थे।—मपूर्णा०, अभि० ग्र०, पृ० २४८।

श्वनिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्वनिश'।

श्वपच्, श्वपच—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वपचा, श्वपची] १ कुत्ते का मांस पकाकर खानेवाला। २ एक प्रकार का चांडाल। डोम।

विशेष—भिन्न भिन्न स्मृतियों में इसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न कही गई है। जैसे,—कहीं चांडाल और ब्राह्मणी से, कहीं निष्ट्य और किरातों से, कहीं क्षत्रिय और उग्र जाति की स्त्री से, कहीं अंबष्ठ और ब्राह्मणी से इत्यादि।

३ कुत्ते को खिलानेवाला (को०)। ४ वधिक। जल्लाद (को०)।

श्वपति—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते का मालिक [को०]।

श्वपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्ते का पैर। २ कुत्ते के पदचिह्न का निशान [को०]।

विशेष—मनु ने इसे चोरों के सिर पर लगाने के लिये कहा है।

श्वपाक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वपाकी] दे० 'श्वपच'। चांडाल।

श्वपामन—संज्ञा पुं० [सं०] पपरी नाम का पौधा जिसकी कड़वी जड़ रेचक होती है और औषध के काम में आती है। काकजंघ्रि।

श्वपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृश्चिक। बिच्छू। २ कुत्ते की पूँछ (को०)।

श्वपुच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

श्वफल—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू। बीजपूर वृक्ष।

श्वफल्क—संज्ञा पुं० [सं०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।

श्वभीरु—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कुत्ते से डरता हो, शृगाल। गीदड़।

श्वभ्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ दरार। छेद। गड्ढा। २ एक नरक। ३ वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ३ गुफा। कंदरा (को०)।

श्वभ्रित—वि० [सं०] छिद्रों से भरा हुआ [को०]।

श्वमुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक जंगली जाति।

श्वय—संज्ञा पुं० [सं०] शोथ। सूजन।

श्वयथु—संज्ञा पुं० [सं०] शोथ। सूजन।

श्वयीचि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा [को०]।

श्वयीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीमारी। रोग [को०]।

श्वयूथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्तों का झुंड [को०]।

श्ववृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीच सेवा की वृत्ति। निकृष्ट नौकरी द्वारा निर्वाह। २ कुत्ते की सी जीवन वृत्ति (को०)।

श्वव्याघ्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंस्र पशु। २ व्याघ्र। ३ चीता।

श्वहन्—संज्ञा पुं० [सं०] शिकारी [को०]।

श्वशुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पति या पत्नी का पिता। ससुर। २. आदरणीय व्यक्ति (को०)।

श्वसुरक—संज्ञा पुं० [सं०] ससुर [को०]।

श्वशुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पति या पत्नी का भाई। देवर या साला।

श्वश्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पति या पत्नी की माता। सास।

श्वसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्वसनीय, श्वसित] १ साँस लेना। दम लेना। २ हाँफना। ३ फूँकना। मुँह से हवा छोड़ना। ४. फूत्कार करना। फुफकारना। ५ लंबी साँस खींचना। आह भरना। ६ वायु। हवा। पवन। ७ एक वसु का नाम। ८ मैनफल। मदनफल। ९ एक राक्षस का नाम जिसे इंद्र ने मारा था (को०)।

श्वसनरंध्र—संज्ञा पुं० [सं० श्वसनरन्ध्र] नाक। नासिका [को०]।

श्वसनव्यापार—संज्ञा पुं० [सं० श्वसन+व्यापार] श्वास लेने और छोड़ने की क्रिया। उ०—श्वसन व्यापार, जीभ की क्रियाएँ, शुद्ध उच्चारण सुनने का अभ्यास आदि की सहायता भी लेनी चाहिए।—भा० शिक्षा, पृ० ४७।

श्वसनसमीरण—संज्ञा पुं० [सं०] साँस [को०]।

श्वसनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] वायु भक्षण करनेवाला, सर्प। साँप।

श्वसनेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन वृक्ष।

श्वसनोत्सुक—संज्ञा पुं० [सं०] साँप। सर्प।

श्वसनोर्मि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवा का झोंका [को०]।

श्वसान—वि० [सं०] साँस लेता हुआ। जीवित [को०]।

श्वसित[1]—वि० [सं०] १ श्वासमय। श्वासयुक्त। उ०—चित्रित से उपवन में शत रंगों में आतप छाया, सुरभि श्वसित मारुत, पुलकित कुसुमों की कंपित काया।—ग्राम्या, पृ० ७६। २ साँस लेनेवाला। जीवित (को०)। ३ आह भरनेवाला (को०)।

श्वसित[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँस। २. ऊँची साँस लेना। आह भरना [को०]।

श्वसुत, श्वसुन—संज्ञा पुं० [सं०] कुकुंदर। कुकरौंधा नामक पौधा।

श्वस्तन[1]—वि० [सं०] आनेवाले दिन का। कल का।

श्वस्तन[2]—संज्ञा पुं० कल का दिन। आनेवाला दूसरा दिन।

श्वस्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल का दिन। आनेवाला दूसरा दिन।

श्वस्त्य—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वस्तन' [को०]।

श्वहा—संज्ञा पुं० [सं० श्वहन्] आखेटक। शिकारी [को०]।

श्वास्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो काँसे, रूपे, शंख, कुमुद आदि के रंग का कहा गया है। (रत्नपरीक्षा)।

श्वा—संज्ञा पुं० [सं० श्वन्] कुक्कुर। कुत्ता [को०]।

श्वाकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते का कान [को०]।

श्वागणिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वगणिक' [को०]।

श्वाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते की पूँछ [को०]।

श्वाघ्निक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकारी। २. कुत्ता पालनेवाला [को०]।

श्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] श्वानभक्षक। श्वपाक।

श्वान—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता। कुक्कुर। उ०—गोकुल चले प्रेम आतुर ह्वै खुलि गए कपट कपाट। सोए श्वान, पहरुआ सोए, सबै मुक्त भई बाट।—सूर (शब्द०)। २ दोहे का इक्कीसवाँ भेद। इसमे दो गुरु और ४४ लघु होते हैं। ३ छप्पय का पंद्रहवाँ भेद। इसमे ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण, १५२ मात्राएँ होती हैं।

श्वानचिल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बथुआ नामक शाक।

श्वाननिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी नींद जो थोड़े खटके से भी चट खुल जाय। हलकी नींद। झपकी।

श्वानवैखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुत्ते की गुर्राहट [को०]।

श्वानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुनी। कुतिया।

श्वान्नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारंगी। बमनेटी। ब्राह्मणयष्टिका।

श्वापद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] हिंसक पशु। व्याघ्र आदि।

श्वापद[2]—वि० खौफनाक। जंगली। बर्बर [को०]।

श्वापुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ते की पूँछ।

श्वाचित्, श्वाविद्, श्वाविध्—संज्ञा पुं० [सं०] साही नामक जंतु। शल्य।

श्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १. नासिका के मार्ग से प्राणवायु के भीतर जाने और बाहर निकलने की क्रिया। प्राणियों का नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। उ०—ताती ताती श्वासन बिनास्यो रूप होठन।—शकुंतला, पृ० १०९।

क्रि० प्र०—लेना।—छोड़ना।—निकलना।—खींचना।—रोकना।

मुहा०—श्वास रहते = प्राण रहते। जीते जी। श्वास खींचना या चढ़ाना = साँस रोके रहना। श्वास छूटना = मृत्यु होना।

२ व्यंजनों के उच्चारण के प्रयत्न मे मुँह से हवा छूटना। ३ जल्दी जल्दी साँस लेना। हाँफना। ४. वायु। हवा (को०)। ५ निश्वास लेना। आह भरना (को०)। ६. एक रोग जिसमे साँस अधिक वेग से और जल्दी जल्दी चलती है। दम फूलने का रोग। दमा।

यौ०—श्वासकास।

विशेष—आयुर्वेद मे श्वास रोग पाँच प्रकार का कहा गया है—महाश्वास, ऊर्ध्व श्वास, छिन्न श्वास, तमक श्वास और क्षुद्र श्वास। इनमे से प्रथम तीन असाध्य, चौथा कष्टसाध्य और पाँचवाँ साध्य कहा गया है।

श्वासकष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] साँस लेने मे होनेवाला कष्ट। श्वासकास।

श्वासकास—संज्ञा पुं० [सं०] १ दमा और खाँसी। २ दमे की खाँसी। दमा।

श्वासकुठार—संज्ञा पुं० [सं०] श्वास रोग मे उपकारी एक रसौषध।

विशेष—इसे बनाने के लिये शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक की कजली, सिंगी मुहरा, चूना, सोहागा, मैनसिल, काली मिर्च, सोंठ और पिप्पली के चूर्ण को अदरक के रस की एक पुट देकर सिद्ध करते हैं।

श्वासधारण—संज्ञा पुं० [सं०] कात्यायन श्रौतसूत्र के अनुसार श्वास को रोक रखना। साँस रोकने की क्रिया।

श्वासप्रश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] साँस लेने की क्रिया। श्वाँस की रेचक और पूरक क्रिया। साँस लेना और निकालना।

श्वासरोग—संज्ञा पुं० [सं० श्वास + रोग] दे० 'श्वास—४'।—माधव०, पृ० ९४।

श्वासरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँस रोकना। साँस को बाहर निकलने से रोके रहना। २ दम घुटना। साँस भीतर न समाना।

श्वासहिक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की हिचकी [को०]।

श्वासहीन—वि० [सं०] जो श्वासग्रहण की क्रिया से रहित हो। मृत। मुर्दा।

श्वासहेति—संज्ञा स्त्री० [सं०] (दमा को हटानेवाली) निद्रा। नींद।

श्वासा पु—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १ साँस। दम। जैसे,—जब तक श्वासा तब तक आशा। उ०—श्वासा तासु भए श्रुति चार। करि सो स्तुति या परकार।—सूर (शब्द०)। २. प्राण। प्राणवायु।

श्वासारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुष्कर मूल। २. कुष्ठ नामक पौधा। कूट।

श्वासी—संज्ञा पुं० [सं० श्वासिन्] १ श्वास लेनेवाला जीव। जीवित प्राणी। २ वायु। हवा।

श्वासोच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] वेग से साँस खींचना और निकालना।

क्रि० प्र०—लेना।

श्वित[1]—वि० [सं०] श्वेत। श्वेत। धवल।

श्वित[2]—संज्ञा पुं० श्वैत्य। धवलिमा। सुफेदी [को०]।

श्वितान—वि० [सं०] धवल। श्वेत [को०]।

श्विति—संज्ञा स्त्री० [सं०] धवलिमा। उज्वलता [को०]।

श्वित्न, श्वित्न्य, श्वित्य—वि० [सं०] श्वेत। सफेद। धवल [को०]।

श्वित्र[1]—वि० [सं०] १. सफेद। श्वेत। २ सफेद कोढ़वाला।

श्वित्र[2]—संज्ञा पुं० १. श्वेत कुष्ट। सफेद कोढ़। सफेद दागवाला कोढ़।

विशेष—इस रोग मे शरीर के चमड़े के ऊपर सफेद दाग पड़ जाते हैं। यह रुधिर, मांस और मेद मे रहता है। अन्य प्रकार के कुष्ठों की तरह यह पकता, बहता और पीड़ा नहीं करता। जिसमे केश सफेद न हुए हों तथा जिसमे दाग परस्पर मिलकर एक न हो गए हों, वह साध्य है।

२ शरीर के चर्म पर पड़ा हुआ श्वेत कुष्ट का दाग। सुफेद कोढ का धब्बा (को०)।

श्वित्रघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली। पीतपर्णी। बिछाली का पौधा।

श्वित्रनाशन, श्वित्रहर—वि० [स०] कुष्ट रोग दूर करनेवाला।

श्वित्रारि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी।

श्वित्री—वि० [स० श्वित्रिन्] [वि० स्त्री० श्वित्रिणी] १. श्वित्र रोगी। सफेद कोढवाला। २. श्वित्र रोग संबंधी।

श्वेत¹—वि० [स०] १ जिसमे कोई रग न मालूम हो। बिना रग का। सफेद। धौला। चिट्टा।

विशेष—विज्ञान से सिद्ध है कि श्वेत रग में सातो रगो का अभाव नहीं है बल्कि उनका गूढ मेल है। सूर्य की किरनें देखने में सफेद जान पडती है, पर रश्मि विश्लेषण क्रिया से सातो रगो की किरणें अलग अलग हो जाती हैं।

२. शुभ्र। उज्वल। साफ। निर्मल। ३. निर्दोष। निष्कलक। ४ जो साँवला न हो। गोरा।

श्वेत²—संज्ञा पुं० १ सफेद रग। श्वेत वर्ण। २ चाँदी। रजत। ३. कौडी। कपर्दक। ४ पुराणानुसार एक द्वीप। ५ आयुर्वेद में तीसरी त्वचा की संज्ञा। शरीर के चमडे की तीसरी तह। ६ एक पर्वत। ७. स्कद के एक अनुचर का नाम। ८ शोभाजन वृक्ष। सहिजन। ९ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १०. शख। ११ शुक्र ग्रह। १२ सफेद घोडा। १३ सफेद बादल। १४. एक केतु या पुच्छल तारा। १५ सफेद जीरा। श्वेत जीरक। १६ शिव का एक अवतार। १७ वराह-मूर्ति-भेद। श्वेत वराह। १८. पुराण के अनुसार हिरण्मय वर्ष और रम्यक वर्ष के बीच का एक पर्वत। १९ सफेद बकरा (को०)। २० आँखो की सफेदी। नेत्र का श्वेत रग (को०)। २१. अग्निपुराण मे वर्णित एक राजा का नाम (को०)। २२. भागवत के अनुसार एक नाग (को०)। २३. तक्र या मट्ठा जिसमे समानुपात में जल मिलाया हो (को०)।

श्वेतकटकारी—संज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकण्टकारी] सफेद कटकारी। श्वेत पुष्पवाली कटकारी [को०]।

श्वेतकंद—संज्ञा पुं० [स० श्वेतकन्द] प्याज।

श्वेतकंदा—संज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकन्दा] अतिविषा। अतीस नामक ओषधि।

श्वेतक—संज्ञा पु० [स०] १ चाँदी। रजत। रौप्य। २ कौडी। कपर्दक। ३ काँसा। ४ एक नाग का नाम।

श्वेतकपोत—संज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का चूहा। २. एक प्रकार का साँप।

श्वेतकमल—संज्ञा पुं० [स०] उज्वल कमल। पुडरीक [को०]।

श्वेतकल्प—संज्ञा पुं० [स०] एक कल्प का नाम [को०]।

श्वेतकाडा—संज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकाण्डा] सफेद दूब। श्वेत दूर्वा।

श्वेतकाक—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कौआ अर्थात् असमर्व बात।

श्वेतकाकीय—वि० [स०] असभव। व्यर्थ। बेकार [को०]।

श्वेतकापोती—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा [को०]।

श्वेतकि—संज्ञा पुं० [स०] महाभारत मे वर्णित एक धर्मपरायण राजा।

श्वेतकिणही—संज्ञा स्त्री० [स०] शतपत्रा। विषघ्निका नामक वृक्ष [को०]।

श्वेतकुजर—संज्ञा पुं० [स० श्वेतकुञ्जर] १ श्वेत वर्ण का हाथी। २ इद्र का ऐरावत हाथी [को०]।

श्वेतकुक्षि—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

श्वेतकुश—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का तृण। सित दर्भ [को०]।

श्वेतकुष्ठ—संज्ञा पु० [स०] सफेद दागवाला कोढ़। श्वित्र।

श्वेतकृष्ण—संज्ञा पुं० [स०] १ सफेद और काला। २ यह पक्ष और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात। जैसे,—हम श्वेत कृष्ण कुछ न कहेंगे। ३ एक प्रकार का विषैला कीडा। (सुश्रुत)।

श्वेतकृष्णा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक विषैला कृमि को०]।

श्वेतकेतु—संज्ञा पुं० [स०] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. बोधिसत्व की अवस्था मे गौतम बुद्ध का नाम। ३. केतु ग्रह-विशेष।

श्वेतकेश—संज्ञा पुं० [स०] १. लाल फूल का सहिजन का पेड। २ सफेद बाल।

श्वेतकोल—संज्ञा पु० [स०] पोठी या पोठिया नाम की मछली। शफर [को०]।

श्वेतक्षार—संज्ञा पुं० [स०] शोरा [को०]।

श्वेतगज—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी। उ०—अप्सरा पारिजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पाँच नरपतिहि दीने।—सूर (शब्द०)।

श्वेतगरुत्, श्वेतगरुत—संज्ञा पुं० [सं०] हस [को०]।

श्वेतगुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतगुञ्जा] सफेद घुँघची [को०]।

श्वेतघटा—संज्ञा स्त्री० [स० श्वेतघण्टा] नागदती।

श्वेतचदन—संज्ञा पु० [सं० श्वेतचन्दन] श्वेत मलयागिरि चदन। दे० 'चदन'।

श्वेतचरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक पक्षी।

श्वेतचिलिका, श्वेतचिल्ली—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का शाक। बथुआ [को०]।

श्वेतच्छद—संज्ञा पुं० [स०] १. गधपत्र। वनतुलसी। २. हस।

श्वेतजीरक—संज्ञा पु० [स०] सफेद जीरा।

श्वेतटकक—संज्ञा पुं० [स० श्वेतटङ्कक] सोहागा। श्वेत टकण [को०]।

श्वेतटंकण—संज्ञा पुं० [स० श्वेतटङ्कण] सोहागा।

श्वेतता—संज्ञा स्त्री० [स०] सफेदी। उज्वलता। शुक्लता। उ०—उसने देखा मक्रील की फेनिल श्वेतता युवती की सुघडता पर विराज रही है।—पिंजरे०, पृ० १३।

श्वेतद्युति—संज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

श्वेतद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वरुण वृक्ष।

श्वेतद्विप—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐरावत हाथी। २ सफेद रंग का हाथी (को०)।

श्वेतद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार क्षीरसागर के पास एक अत्यंत उज्वल द्वीप जहाँ विष्णु भगवान् निवास करते हैं। २. वह स्थान या देश जहाँ श्वेत रंग के व्यक्ति या गोरे रहते है। योरप। उ०—यूरप या श्वेतद्वीप मानो पश्चिमीय सभ्यता का मायका।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५६।

श्वेतधातु—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत रंग के खनिज पदार्थ। २ खड़िया मिट्टी। ३ दूधिया पत्थर (को०)।

श्वेतधामा—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतधामन्] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. समुद्र फेन। ४. अपामार्ग। चिचड़ा। ५ अपराजिता।

श्वेतनील—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

श्वेतपटल—संज्ञा पुं० [सं०] जस्ता नामक धातु।

श्वेतपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हंस। २. किसी प्रकार की राजनीतिक वार्ता या संधिचर्चा के अंत मे उसमे तै की हुई शर्तों आदि की लिखित घोषणा (अं० ह्वाइट पेपर)।

श्वेतपत्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा (को०)।

श्वेतपर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलकुंभी। वारिपर्णी।

श्वेतपर्णास—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी (को०)।

श्वेतपाटला—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत वर्ण के फूलवाला पाटल या पाडर वृक्ष (को०)।

श्वेतपाद—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

श्वेतपिंग—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्ग] सिंह (को०)।

श्वेतपिंगल—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्गल] १. सिंह। २ महादेव। शिव। ३ वह जिसका वर्ण श्वेत और कपिल रंग का हो (को०)।

श्वेतपिंगलक—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतपिङ्गलक] सिंह।

श्वेतपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. निर्गुंडा। सफेद फूल।

श्वेतपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागपुष्पा। २. तारई। ३ सन। ४. सेंधुआर। सभालु। ५. नागदंता। ६ सफेद अपराजिता।

श्वेतपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्रदात्री लता। २ बड़ी सनपुष्पी।

श्वेतप्रदर—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफेद रंग की धातु गिरती है।

श्वेतप्रस्तर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वेतधातु' (को०)।

श्वेतबर्बर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

श्वेतबिंदुका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतबिन्दुका] १. वह कन्या जिसके शरीर पर सफेद धब्बे या दाग हो। (यह विवाह के अयोग्य मानी जाती है)। २. कोई भी श्वेत बूँदोंवाली वस्तु।

श्वेतबुह्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] बनतिक्ता।

श्वेतभंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतभण्डा] सफेद फूलोंवाली अपराजिता (को०)।

श्वेतभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

श्वेतभिक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी साधु। धूर्त (को०)।

श्वेतभुजग—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतभुजङ्ग] ब्रह्मा का एक अवतार।

श्वेतमंडल—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतमण्डल] एक प्रकार का साँप। (सुश्रुत)।

श्वेतमंदारक—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतमन्दारक] सफेद फूलोंवाला अर्क वृक्ष। सुफेद मदार (को०)।

श्वेतमध्य—संज्ञा पुं० [सं०] मुस्तक। मोथा।

श्वेतमयूख—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

श्वेतमरिच—संज्ञा पुं० [सं०] १. शोभांजन बीज। सहिंजन के बीज। २ सफेद मिर्च।

श्वेतमाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २ धूम्र। धुआँ।

श्वेतमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदहपूरना। पुनर्नवा का एक भेद।

श्वेतयावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] (श्वेत बहनेवाली) एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद में आया है।

श्वेतरंजन—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतरञ्जन] सीसा धातु।

श्वेतरक्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] गुलाबी रंग।

श्वेतरक्त²—वि० गुलाबी रंगवाला (को०)।

श्वेतरथ—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्र ग्रह।

श्वेतरस—संज्ञा पुं० [सं०] तक्र या मट्ठा जिसमें जल का अनुपात समान हो (को०)।

श्वेतराजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिचिंडा (जिसकी तरकारी होती है)।

श्वेतरावक—संज्ञा पुं० [सं०] निर्गुंडी।

श्वेतरोचिस्—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

श्वेतरोहित—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड का एक नाम। २. एक प्रकार का पौधा जिसका फूल सफेद और फल लाल होता है।

श्वेतलोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोध। पट्टिका लोध।

श्वेतवक्, श्वेतवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद के एक अनुचर का नाम।

श्वेतवचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेद वच। २. अतिविषा। अतीस।

श्वेतवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १. गूलर। उदुंबर वृक्ष। २. सफेद रंग की छाल।

श्वेतवह—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० श्वेतोहा] इंद्र।

श्वेतवाजी—संज्ञा पुं० [श्वेतवाजिन्] १. सफेद घोड़ा। २. चंद्रमा। ३. अर्जुन। ४ कपूर (को०)।

श्वेतवाराह—संज्ञा पुं० [सं०] १ वाराह भगवान् की एक मूर्ति। २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है। ३. एक तीर्थ।

श्वेतवासा—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी सन्यासी। २. वह जिसने श्वेत परिधान धारण किया हो (को०)।

श्वेतवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. (सफेद घोड़ोंवाले) इंद्र। २. अर्जुन।

श्वेतवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा । २. अर्जुन का एक नाम । ३ समुद्र का मकर । ४ शिव का एक रूप या मूर्ति । ५ कपूर (को०) । ६ हरिवंश के अनुसार एक राजा जो विदूरथ का पौत्र था (को०) ।

श्वेतवाही—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतवाहिन्] अर्जुन (को०) ।

श्वेतवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण नाम का वृक्ष (को०) ।

श्वेतशिंशपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत वर्ण का शिशपा वृक्ष (को०) ।

श्वेत शिग्रु—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत पुष्पवाला सहिजन वृक्ष (को०) ।

श्वेतशुंग, श्वेतशृंग—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतशुङ्ग, श्वेतशृङ्ग] जौ । यव ।

श्वेतसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण वृक्ष । २ सफेद साँप ।

श्वेतसर्षप—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली सरसों ।

श्वेतसार—संज्ञा पुं० [सं०] खैर । कत्था । खदिर ।

श्वेतसिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शाक ।

श्वेतसिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद के एक अनुचर का नाम ।

श्वेतसुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद फूल की निर्गुंडी ।

श्वेतस्पदा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतस्पन्दा] अपराजिता (को०) ।

श्वेतहनु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप । (सुश्रुत) ।

श्वेतहय—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोड़ा । उच्चैःश्रवा । २ अर्जुन । ३ इंद्र (को०) । ४ श्वेत वर्ण का अश्व ।

श्वेतहस्ती—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐरावत । २ श्वेत वर्ण का हाथी ।

श्वेतांग¹—वि० [सं० श्वेताङ्ग] १. श्वेत अंगवाला । गोरा । गौरांग । २ श्वेत वर्णवाला ।

श्वेतांग²—संज्ञा पुं० यूरोप का निवासी । यूरोपियन । अंग्रेज । उ०—(क) भारत भर आज श्वेतांग होने की अभिलाषा से ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५६ । (ख) जो आज श्वेतांग लोग करते हैं ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५८ ।

श्वेतांबर—संज्ञा पुं० [सं० श्वेताम्बर] १. सफेद वस्त्र धारण करनेवाला । २ जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक ।

विशेष—ये लोग चँवरी रखते, बाल उखड़वाते, श्वेत वस्त्र पहनते, क्षमायुक्त रहते और भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं । ये स्त्रियों को भी अपवर्ग मानते हैं ।

३ शिव का एक रूप ।

श्वेतांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा ।

श्वेता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । २ कौड़ी । ३ भोजपत्र का पेड़ । ४. श्वेत पाटला । काष्ठ पाटला । ५ श्वेत या शंख नामक हस्ती की माता । शंखिनी । ६ अतीस । अतिविषा । ७ अपराजिता लता । ८ सफेद वन भंटा । ९ श्वेत कटकारी । भटकटैया । १०. पाषाणभेद । पखानभेद । ११ वंशलोचन । १२. श्वेत पुनर्नवा । सफेद गदहपूरना । १३. शिलावाक । १४ फिटकरी । १५ चीनी । शक्कर । १६. मिस्री । १७. सफेद बच । १८. क्षुरपत्री । पर्वमूला ।

विशेष—यह तृण बरसात में उगता है और जाड़े में नष्ट हो जाता है । यह एक या डेढ़ बालिश्त ऊँचा और छत्तनारा होता है । पत्तियाँ छोटी, फूल नीले या बैंगनी रंग के और बीज छोटे छोटे दानों की तरह के होते हैं । क्षुरपत्री मधुर, शीतल और स्त्रियों का दूध बढ़ानेवाली कही गई है ।

१९ स्कंद की अनुचरी एक मातृका । २० कश्यप की क्रोधवशा नाम्नी पत्नी से उत्पन्न एक कन्या जो दिग्गजों की माता है ।

श्वेता²—वि० श्वेत वर्ण की । गोरी । गौरवर्णा ।

श्वेताक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सोमलता ।

श्वेताद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेत नाम का पर्वत । २ कैलाश पर्वत (को०) ।

श्वेताभ—वि० [सं०] आभायुक्त । श्वेतकांतिवाला ।

श्वेताम्ल—संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली ।

श्वेतारण्य—संज्ञा पुं० [सं०] कावेरी नदी के किनारे का एक वन जो तीर्थ माना गया है ।

श्वेतार्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा । २ श्वेत मदार का वृक्ष ।

श्वेतार्चि—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतार्चिस्] चंद्रमा ।

श्वेतालु—संज्ञा पुं० [सं०] महिष कंद । भैंसाकंद ।

श्वेतावार—संज्ञा पुं० [सं०] सितावर शाक ।

श्वेताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन का एक नाम ।

श्वेताश्वतर—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा । २ उपनिषद् विशेष ।

विशेष—कृष्ण यजुर्वेद की यह उपनिषद् छह अध्यायों की है । इसमें वेदांत के प्रायः सब सिद्धांतों के मूल पाए जाते हैं । भगवद्गीता के बहुत से प्रसंग इससे लिए हुए जान पड़ते हैं । इसकी संस्कृत बड़ी ही सरल और स्पष्ट है । वेदांत के प्रसंगों के अतिरिक्त इसमें योग और सांख्य के सिद्धांतों के मूल भी मिलते हैं । वेदांत, सांख्य और योग तीनों शास्त्रों के कर्ताओं ने मानों इसी के मूल वाक्यों को लेकर ब्रह्म के स्वरूप तथा पुरुष-प्रकृति भेद आदि का विस्तार किया है ।

श्वेताह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत पाटला ।

श्वेतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ ।

श्वेतित—वि० [सं०] श्वेत या सफेद बनाया हुआ या किया हुआ (को०) ।

श्वेतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतिमन्] शुक्लत्व । शुभ्रता । धवलिमा । सफेदी (को०) ।

श्वेतेक्षु—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ईख । सफेद ईख (को०) ।

श्वेतोदर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर । २. एक प्रकार का साँप । (सुश्रुत) । ३ मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक पर्वत ।

श्वेतौही—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्राणी । शची ।

श्वेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कोढ़ ।

श्वैत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्वेतता । शुभ्रता । २ सफेद कुष्ट (को०) ।

श्वैत्र, श्वैत्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कोढ़ (को०) ।

ष

ष—सस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णो मे ३१ वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारणस्थान मूर्धा है। इससे यह मूर्धन्य वर्णों मे कहा गया है। इसका प्रयोग केवल सस्कृत के शब्दो मे होता है और उच्चारण दो प्रकार से होता है। कुछ लोग 'श' के समान इसका उच्चारण करते है और कुछ लोग 'ख' के समान। इसी से हिंदी की पुरानी लिखावट मे इस अक्षर का व्यवहार कवर्गीय 'ख' के स्थान पर होता था। जैसे,—देषि (देखि), लषन (लखन) इत्यादि।

अनेक धातुएँ जो दत्य 'स' से आरंभ है वे सस्कृत धातुपाठ मे मूर्धन्य 'ष' से लिखी गई है इस अक्षर का परिवर्तन अधिकतर 'श', 'स' और 'ख' के रूप मे होता है। एक तरह से इसका शुद्ध उच्चारण, 'ऋ' की तरह, लुप्तप्राय है। व्रज और अवधी मे यह 'स' लिखा जाता है।

षजन—सज्ञा पु० [स० पञ्जन] १. आलिंगन। २ मिलना। समागम।

षड—सज्ञा पु० [स० षण्ड] १. राशि। समूह। २. झाड़ी। ३ प्रजनन के लिये पालित वृष। छुट्टा साँड। ४ भेड़ बकरो का झुड (को०)। ५. हीजडा। नपुसक। नामर्द।

विशेष—कुछ विद्वान् इनके १४ तथा कुछ २० प्रकार मानते है।

६ कमलो का समूह। ७. शिव का एक नाम। ८ लिंग। चिह्न। लक्षण (को०)। ९. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

षडक—सज्ञा पु० [स० षण्डक] हीजडा। नपुसक (को०)।

षडत्व—सज्ञा पु० [स० षण्डत्व] नामर्दी। हीजडापन। पुरुत्व का अभाव।

षडयोनि—सज्ञा स्त्री० [स० षण्डयोनि] वह स्त्री जिसे मासिक धर्म न हो और जिसके स्तन न हो, अर्थात् जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

षडव(पु)—सज्ञा पु० [स० खाण्डव] दे० 'खाडव'। उ०—रवि षडव षडव लष्षि ग्रह।—पृ० रा०, १२। ४७।

षडवेश—सज्ञा पु० [स० षण्डवेस] दे० 'षडवेश'।

षडामर्क—सज्ञा पु० [स० षण्डामर्क] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम। उ०—कविसुत असुर वश गुरु आमा। षडामर्क रह्यो अस नामा।—रघुराज (शब्द०)।

षडाली—सज्ञा स्त्री० [स० षण्डाली] १. तेल नापने की एक छोटी घरिया जिसमे एक छटाँक वस्तु आ सकती हो। २. दुश्चरित्रा स्त्री। व्यभिचारिणी। ३. ताल। तलैया।

षडी—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ड] वह स्त्री जिसे मासिक धर्म न होता हो, स्तन छोटे हो, और जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

षढ—सज्ञा पु० [स० षण्ढक] दे० 'षड'।

षढक—सज्ञा पु० [स० षण्ढक] दे० 'षडक' (को०)।

यौ०—षढकतिल = दे० 'षढतिल'।

षढतिल—सज्ञा पु० [स० षण्ढतिल] १ बाँझपन का तिल। २. (लाक्ष०) निकम्मा आदमी (को०)।

षढवेश—सज्ञा पु० [स० षण्ढवेश] १. वह जो हिजडे का वेश धारण करे। २. जनखा। हीजडे के वेश मे रहनेवाला।

षढा—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ढा] वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषो की सी हो।

षाढता—सज्ञा स्त्री० [स० षाण्ढता] दे० 'षंडा' (को०)।

षढीयोनि—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ढीयोनि] दे० 'षडयोनि' (को०)।

ष[1]—सज्ञा पु० १. विद्वान् पुरुष। आचार्य। २. कुच। चूचुक। ३. नाश। ४. शेष। बाकी। ५ प्राप्त ज्ञान का क्षय। ६. मुक्ति। मोक्ष। ७ स्वर्ग। ८ अंत। समाप्ति। अवधि। ९. गर्भ। १० धैर्य। सहिष्णुता। ११. निद्रा। नीद (को०)। १२ कच। केश। बाल (को०)। १३. गर्भविमोचन (को०)।

ष[2]—वि० १ बहुत अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २ विद्वान् (को०)।

षट[1]—वि० [स०] गिनती मे ६। छह्।

षट्[2]—सज्ञा पुं० १. छह् की संख्या। २ षाडव जाति का एक राग।

विशेष—यह राग दीपक राग का पुत्र माना गया है। इसके गाने का समय प्रात १ दड से ५ दड तक है। इसमे सब कोमल स्वर लगते हैं। कोई कोई इसे आसावरी, ललित, टोड़ी और भैरवी आदि रागिनियो से उत्पन्न सकर राग मानते हैं।

षटक(पु)—सज्ञा पु० [स० षट्क] दे० 'षट्कर्म'। उ०—तौ पंडित आये वेद भुलाए षटक रमाए अपनाए।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २३७।

षटतुकी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० षट्+हिं० तुक+ई (प्रत्य०)] छप्पय छद। उ०—किए कवित षटतुकी बहुरि मनहर अरु इदव। कुडलिया पुनि साषि भक्ति विमुखान को निंदव।—सुदर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० १४४।

षटबदन(पु)—सज्ञा पुं० [स० षट्+वदन] (छह् मुँहवाले) कार्तिकेय। उ०—तब जनमेउ षटबदन कुमारा। तारकु असुर समर जेहि मारा।—मानस, १। १०३।

षट्क[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. छह्। ६ की सख्या। २. छह् वस्तुओ का समूह।

विशेष—इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु ख और ज्ञान के समूह को प्राय षट्क कहते हैं।

३. दे० 'षड्विकार'।

षट्क[2]—वि० छह् सबधी। छह् का। छह्वाला।

षट्कर्ण[1]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार को वीणा या सितार जिसमे छह् कान होते है।

षट्कर्ण[2]—वि० १. छह् कानो से सुना गया। वक्ता या श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे आदमी से भो सुना गया। २. जिसे छह् कान हो (को०)।

षट्कर्म—सज्ञा पु० [स० षट्कर्मन्] १. ब्राह्मण के छह् कर्म—(१) यजन, (२) याजन, (३) अध्ययन, (४) अध्यापन,

(५) दान देना और (६) दान लेना । २. स्मृतियों के अनुसार छह् काम जिनके द्वारा आपत्काल में ब्राह्मण अपनी जीविका कर सकता है (१) उंछ वृत्ति (कटे हुए खेतों में दाने बिनना), (२) दान लेना, (३) याचना करना, (४) कृषि, (५) वाणिज्य और (६) गोरक्षा (अथवा किसी किसी के मत से सूद पर रुपया देना)। ३ तांत्रिकों के वध आदि छह कर्म—(१) शांति, (२) वशीकरण, (३) स्तंभन, (४) विद्वेष, (५) उच्चाटन तथा (६) मारण। ७. योगाभ्यास संबंधी छह् क्रियाएँ (१) धौती, (२) वस्ती, (३) नेती, (४) नौलिकी या नौलिक, (५) त्राटक तथा (६) कपालभाती (को०)।

षट्कर्मा—संज्ञा पुं० [सं०] १ यजन याजन आदि नियत कर्मों को करनेवाला ब्राह्मण। कर्मनिष्ठ ब्राह्मण। २ तांत्रिक।

षट्कल—वि० [सं०] (मुहूर्त आदि) जो छह् कलाओं तक रहे [को०]।

षट्कला—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक भेद।

षट्कसंपत्ति—संज्ञा पुं० [सं० षट्कसम्पत्ति] छह् प्रकार के कर्म—(१) शम, (२) दम (३) उपरति, (४) तितिक्षा, (५) श्रद्धा और (६) समाधान।

षट्कुलीय—वि० [सं०] छह् कुलोंवाला [को०]।

षट्कूटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भैरवी का एक रूप [को०]।

षट्कोण[1]—वि० [सं०] छह् कोनोंवाला। छह्कोना। छह्पहला।

षट्कोण—संज्ञा पुं० ज्योतिष में लग्न से छठा घर जो रिपुक स्थान कहा जाता है। २. एक प्रकार का यंत्र जिसमें छह् कोणों की आकृति रहती है। ३ इंद्र का वज्र। ४ हीरा [को०]।

षट्कोप—संज्ञा पुं० [सं०] एक पुराने आचार्य का नाम।

षट्खंड—वि० [सं० षट्खण्ड] जिसमें ६ खंड हों। छह् खंडों या विभागोंवाला [को०]।

षट्चक्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग में माने हुए कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छह् चक्र जो मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा चक्र कहे गए हैं।

षट्चक्र[2]—संज्ञा पुं० [सं० षट् + चक्र (= चक्कर या घेरा)] किसी के विरुद्ध आयोजन। भीतरी चाल। षड्यंत्र।

क्रि० प्र०—चलाना।—खड़ा करना।—रचना।

षट्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रमर। भौंरा। २. जूँ। यूका (को०)। ३ टिड्डा (को०)।

षट्चिति, षट्चितिक—वि० [सं०] छह् स्तरों या तहोंवाला [को०]।

षट्तंत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० षट्तन्त्री] छह् दर्शनों का एक नाम षड्दर्शन [को०]।

षट्तक्रतैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक का एक तेल जिसमें तेल से छह् गुना अधिक तक्र (मट्ठा) मिलाया जाता है।

षट्ताल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मृदंग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है।

विशेष—इसमें पहले २ आघात, १ खाली, फिर ४ आघात और अंत में एक खाली होता है।

२ एक प्रकार का ख्याल जो एकताला ताल पर बजाया जाता है।

षट्तिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम। इसमें तिल के व्यवहार और दान का बहुत फल कहा गया है। उ०—षट्तिला नाम षट्तिला अहई। करि व्रत नेम निकर अघ दहई।—विश्रामसागर (शब्द०)।

षट्तिली—संज्ञा पुं० [सं० षट्तिलिन्] तिल को ६ प्रकार से व्यवहार करनेवाला व्यक्ति।

विशेष—इसके व्यवहार के ढंग ये हैं—(१) तिलोद्वर्तन, (२) तिलस्नान, (३) तिलहोम, (४) तिल का दान, (५) तिलभक्षण और (६) तिलवपन।

षट्त्रिंश—वि० [सं०] छत्तीसवाँ [को०]।

षट्त्रिंशत्—संज्ञा पुं० [सं०] छत्तीस की संख्या [को०]।

षट्पंचाशत्—संज्ञा पुं० [सं० षट्पञ्चाशत्] छप्पन की संख्या [को०]।

षट्पत्र—वि० [सं०] छह् पत्तों या दलों से युक्त। जिसमें छह् पत्ते हों [को०]।

षट्पद[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षट्पदा] छह् पैरवाला।

षट्पद[2]—संज्ञा पुं० १ भ्रमर। भौंरा। २. किलनी। ३. छह् पदोंवाला छंद। गाति छंद (को०)।

षट्पदज्य—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का धनुष जो भ्रमरश्रेणी का बना माना जाता है [को०]।

षट्पदप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ नागकेशर का वृक्ष।

षट्पदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राकृत छंद [को०]।

षट्पदातिथि—संज्ञा पुं० [सं०] १ (जहाँ भ्रमर अतिथि रूप में हो अर्थात्) आम का वृक्ष। २ चंपक। चंपा।

षट्पदानंदवर्धन—संज्ञा पुं० [सं० षट्पदानन्दवर्धन] (भ्रमर के आनंद का बढ़ानेवाला) किंकरात का वृक्ष।

षट्पदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'षट्पदा' [को०]।

षट्पदी[1]—वि० स्त्री० [सं०] छह् पैरवाली।

षट्पदी[2]—संज्ञा स्त्री० १ भ्रमरी। भौंरी। २ एक छंद जिसमें छह् पद या चरण होते हैं। छप्पय। ३. किलनी या जूँ (को०)। ४ भूख प्यास, शोक अव्यवस्थित चेतना, वार्धक्य तथा मृत्यु नाम की छह् स्थितियाँ। ५ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मान नाम की छह् भावनाएँ (को०)।

षट्पाद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षट्पद' [को०]।

षट्पितापुत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ताल का एक भेद जिसमें १२ मात्राएँ होती हैं। एक प्लुत, एक लघु, दो गुरु, एक लघु, एक प्लुत, यह इसका प्रमाण है।

षट्प्रज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्थ और तत्वार्थ का ज्ञाता। २. उच्छृंखल। ३. कामुक। ४. अच्छे स्वभाववाला पड़ोसी (को०)।

षट्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय। उ०—गिरिवेष षट्मुख जीति तारकनद को जब ज्यो हस्यो।—केशव (शब्द०)।

षट्रस—संज्ञा पुं० [सं०] छह प्रकार के रस या स्वाद। विशेष दे० 'षड्रस'।

यौ०—षट्रस भोजन।

षट्राग—संज्ञा पुं० [सं० षट्+राग] १ संगीत के ६ राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल मालकोस और दीपक। २. बखेडा। जंजाल। आडंबर। जैसे—इसमें बडा षट्राग है, हमसे न होगा। ३. झंझट।

षट्रिपु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के ६ दर्शन।

षट्शास्त्री—संज्ञा पुं० [सं० षटशास्त्रिन्] छह दर्शनों का जाननेवाला।

षट्वांग—संज्ञा पुं० [सं० षट्वाङ्ग] खट्वांग नामक राजर्षि जिन्हें केवल दो घडी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी। उ०—एक षट्वांग राजऋषि भयऊ। असुर विजय हित सो दिवि गयऊ।—रघुराज (शब्द०)। २ शिव का एक शस्त्र। दे० 'खट्वांग।'

षडंग[1]—संज्ञा पुं० [सं० षडङ्ग] १. वेद के छह अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २ शरीर के छह अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड। तथा कुछ लोगों के मत से हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच तथा अस्त्र।

३. गाय से प्राप्त होनेवाली पवित्र छह वस्तुएँ—गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, गोरोचन (को०)। ४. छह वस्तुओं का समाहार (को०)। ५. छठा भाग। षष्ठांश (को०)। ६ छोटा गोखरू (को०)।

षडंग—वि० जिसके छह अंग या अवयव हों।

षडंगजित्—संज्ञा पुं० [सं० षडङ्गजित्] सब अंगों को वश में करनेवाले विष्णु।

षडंगधूप—संज्ञा पुं० [सं० षडङ्गधूप] एक प्रकार का धूप जिसमें ६ वस्तुएँ मिली रहती हैं।

षडंगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० षडङ्गिनी] अपने सभी अंगों से पूर्ण सेना (को०)।

षडंघ्रि—संज्ञा पुं० [सं० षडङ्घ्रि] भ्रमर। भौंरा।

षडक्षरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैष्णवों के रामानुज संप्रदायवालों का मुख्य मंत्र।

षडक्षीण—संज्ञा पुं० [सं०] मछली जिसे छह आँखें कही जाती हैं।

षडग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कर्मकांड के अनुसार छह प्रकार की अग्नि।

विशेष—इनके नाम इस प्रकार कहे गए हैं—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि। इनमें से प्रथम तीन प्रधान हैं। कुछ लोगों ने अग्नि के ये ६ भेद किए हैं—धूमाग्नि, मंदाग्नि, दीप्ताग्नि, मध्यमाग्नि, खराग्नि और भयाग्नि।

षडधिक—वि० [सं०] छह से अधिक जैसे, षडधिक दस = सोलह (को०)।

षडभिज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध या बोधिसत्व।

षडष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का योग (को०)।

षडशीत—वि० [सं०] छियासीवाँ (को०)।

षडशीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छियासी की संख्या। २ सूर्य का एक राशि से दूसरे राशि पर जाने का चार मार्ग (को०)।

षडह—संज्ञा पुं० [सं०] छह दिनों का समय (को०)।

षडात्मा—वि० [सं० षडात्मन्] अग्नि जो छह रूपोंवाला है (को०)।

षडानन[1]—वि० [सं०] जिसे छह मुँह हों।

षडानन[2]—संज्ञा पुं० १ कार्तिकेय। २ संगीत में स्वरसाधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है—आरोही सा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प म ग नि ध प म ग रे, ध म प ग रे सा।

षडाम्नाय—संज्ञा पुं० [सं०] छह तंत्र (को०)।

षडायतन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] छह इंद्रियों के छह स्थान (को०)।

षडायतन[2]—वि० १ जो षट् आयतन से युक्त हो। २ विज्ञान, भूमि, जल, आकाश, अग्नि और वायु के आयतनवाला (को०)।

षडायतन भेदक—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध (को०)।

षडार—वि० [सं०] जिसमें छह किनारे या कोण हों (को०)।

षडूषण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में ये छह गरम मसाले—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ और काली मिर्च।

षड्गया—संज्ञा स्त्री० [सं०] गयादित्य, गयागज, गायत्री, गदाधर, गयासुर तथा गया क्षेत्र—जो मोक्षदायक हैं (को०)।

षड्गव—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह बैलों की जोडी। २ वह जुआ जिसमें छह बैल जोते जायँ (को०)।

षड्गवीय—वि० [सं०] छह बैलों से खींचा जानेवाला (को०)।

षड्गुण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह गुणों का समूह। २ राजनीति की छह बातें—संधि, विग्रह, यान (चढाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय।

षड्गुण[2]—वि० १. छगुना। २ जो छह गुणों से युक्त हो (को०)।

षड्ग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं० षड्ग्रन्थ] १ मीठी वच। विशेष दे० 'वच'। २. करंज का एक भेद (को०)।

षड्ग्रंथा—संज्ञा स्त्री० [सं० षड्ग्रन्था] १ एक प्रकार की जड जो काश्मीर और काबुल से आती है। २ वच। ३. श्वेत वच (को०)। ४ शटी (को०)। ५ महाकरंज (को०)।

षड्ग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० षड्ग्रन्थि] दे० 'षड्ग्रंथिका'।

षड्ग्रंथिका—संज्ञा स्त्री० [सं० षड्ग्रन्थिका] १. पीपलामूल। पिपरामूल। २ शटी। शठी।

षड्ज—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर।

विशेष—यह मयूर के स्वर से मिलता जुलता माना गया है। इसके उच्चारणस्थान छह कहे गए हैं—नासा, कंठ, उर, तालु, जिह्वा और दंत, इसी से इसका नाम षड्ज पड़ा। मूल

स्थान दंत और अंत स्थान कंठ है। देवता इसके अग्नि हैं। वर्ण रक्त, आकृति ब्रह्मा की, ऋतु हिम, वार रविवार, छंद अनुष्टुप् और संतति इसकी भैरव राग है। कुछ के मतानुसार यह प्रथम स्वर है और मोर के स्वर से मिलता जुलता है।

षड्दरशनी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० षड्दर्शन + हिं० ई (प्रत्य०)] दर्शनों का जाननेवाला। ज्ञानी। उ०—षड्दरशनी अभाव सर्वथा घट करि मानै।—(शब्द०)।

षड्दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छह् दर्शन।

षड्धा—अव्य० [सं०] छह् प्रकार का। छह् प्रकार से [को०]।

षड्दुर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] छह् प्रकार के दुर्ग जिनके नाम धन्व दुर्ग, मही दुर्ग, गिरि दुर्ग, मनुष्य दुर्ग, मृद् दुर्ग और वन दुर्ग हैं [को०]।

षड्विंदु—संज्ञा पुं० [सं० षड्बिन्दु] विष्णु। दे० 'षड्विंदु'।

षड्भाग—संज्ञा पुं० [सं०] छठा हिस्सा। छठा भाग या अंश [को०]।

षड्भुज[1]—वि० [सं०] १. छह् भुजाओंवाला। २ छह् पहल का।

षड्भुज[2]—संज्ञा पुं० १. चैतन्यदेव का एक नाम। षड्भुज क्षेत्र [को०]।

षड्भुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खरबूजा। २ दुर्गा का एक नाम (को०)।

षड्यंत्र—संज्ञा पुं० [सं० षड् (= छह्) + यन्त्र (कौशल)] १ किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई काररवाई। भीतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—रचना।

षड्योग—संज्ञा पुं० [सं०] योगाभ्यास में प्रयुक्त छह् प्रकार के तरीके [को०]।

षड्योनि—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत। शिलाजतु।

विशेष—राँगा, सीसा, ताँबा, रूपा, सुवर्ण और लोहा इन छह् धातुओं में से किसी एक की सुगंध शिलाजीत में अवश्य आती है, इसी से इसे षड्योनि कहते हैं। कारण यह है कि ऊपर कही हुई धातुओं में से जिस किसी एक धातु का अंश जिसमें होगा उसी पर्वत से शिलाजीत की उत्पत्ति होगी।

षड्रस—संज्ञा पुं० [सं०] छह् प्रकार के रस या स्वाद—मधुर लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल अर्थात् मीठा, नमकीन, तीता, कड़ुआ, कसैला और खट्टा।

यौ०—षड्रस भोजन = अनेक प्रकार के व्यंजन या खाद्य पदार्थ।

षड्रसायन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'लसीका'।

षड्राग—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षट्राग'।

षड्रात्र—संज्ञा पुं० [सं०] छह् रात का समय [को०]।

षड्रिपु—संज्ञा पुं० [सं०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छह् विकार।

षड्रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा।

षड्वक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय। षडानन।

षड्वदन—संज्ञा पुं० [सं०] षडानन। कार्तिकेय।

षड्वर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] छह् वस्तुओं का समूह या वर्ग। १ ज्योतिष में क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश जो षड्वर्ग कहलाते हैं। २ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह।

षड्विंदु—संज्ञा पुं० [सं० षड्बिन्दु] १ विष्णु। २. गुबरैले की जाति का एक कीड़ा जिसकी पीठ पर छह् गोल बिंदियाँ होती हैं। इसे पूरब में 'छर्बुंदवा' कहते हैं।

षड्विंदुतैल—संज्ञा पुं० [सं० षड्बिन्दुतैल] वैद्यक का एक तैल जिसकी छह् बूँद नास लेने से सिर का दर्द दूर होता है और आँख तथा दाँत को लाभ पहुँचता है।

विशेष—रेंड की जड़, तगर, सोंफ, सेंधा नमक, पुत्रजीवा, रास्ना, जलभँगरा, वायविडंग, मुलेठी, सोंठ, इन सबका चौगुना दूध, भँगरे का रस और आठ गुना तेल इन सबको कड़ाही में मंद-मंद पकावे। जब रसादिक जलकर तेल मात्र रह जाय, तो छान ले।

षड्विंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ सामवेद का एक ब्राह्मण।

षड्विंशति—संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीस की संख्या [को०]।

षड्विकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राणी के छह् विकार या परिणाम, अर्थात् (१) उत्पत्ति, (२) शरीरवृद्धि, (३), बालपन (४) प्रौढता, (५) वृद्धता और (६) मृत्यु। २ काम, क्रोध आदि छह् विकार।

षड्विध—संज्ञा पुं० [सं०] छह् प्रकार का। छहगुना [को०]।

षण्णवति—संज्ञा स्त्री० [सं०] छानवे की संख्या।

षण्णाडीचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का चक्र।

षण्णाभि, षण्णाभिक—वि० [सं०] चक्र या पहिया जिसमें छह् नाभि हों।

षण्मतस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य [को०]।

षण्मास—संज्ञा पुं० [सं०] छह् महीने की अवधि [को०]।

षण्मासनिचय—वि० [सं०] छह् मास की भोजनसामग्री इकट्ठा करनेवाला [को०]।

षण्मासिक—वि० [सं०] अर्धवार्षिक [को०]।

षण्मुख[1]—वि० [सं०] छह् मुँहवाला।

षण्मुख[2]—संज्ञा पुं० षडानन। कार्तिकेय।

षण्मुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा [को०]।

षन्मुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० षण्मुख] दे० 'षण्मुख', उ०—जग जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।—मानस, १।१०३।

षप्र(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० खप्पर] दे० 'खप्पर'। उ०—भरि रुद्धि षप्र जुगनीय ईस मुंडन भर वथ्थिय। पलचर रुधिचर पूरि सवक करि कारज सथ्थिय।—पृ० रा०, २।२६३।

षर्षपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

षष्ट—वि० [सं०] साठवाँ।

षष्टि[१]—वि० [सं०] जो गिनती में पचास से दस अधिक हो। साठ।

षष्टि[२]—संज्ञा स्त्री० साठ की संख्या।

षष्टिक[१]—वि० [सं०] १. साठवाला। २. जो साठ पर खरीदा जाय।

षष्टिक[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान जो बहुत जल्दी तैयार होता हैं। साठी धान।

षष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साठी धान [को०]।

षष्टिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह खेत जिसमे साठी धान बोया गया हो। २. वह खेत जो साठी धान बोने लायक हो। ३ साठी धान से परिपूर्ण खेत [को०]।

षष्टितम—वि० [सं०] साठवाँ। उनसठ के बाद का [को०]।

षष्टिभाग—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

षष्टिमत—स्त्री० पुं० [सं०] दे० 'षष्ठिमत्त'।

षष्टियोजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साठ योजन की यात्रा या दूरी [को०]।

षष्टिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भ्रमरमारी नाम का पौधा। विशेष दे० 'भ्रमरमारी' [को०]।

षष्टिवर्षी—वि० [सं० षष्टिवर्षिन्] जो साठ वर्ष का हो।

षष्टिवासरज—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान। षष्टिक [को०]।

षष्टिशालि—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान।

षष्टिसंवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] साठ वर्ष की अवधि। साठ वर्ष का समय। प्रभव आदि साठ संवत्सर या वर्ष [को०]।

षष्टिहायन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० षष्ठिहायन' [को०]।

षष्टिह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

षष्ठ्यंशक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यंत्र जिससे जहाज पर नक्षत्रों की स्थिति देखकर यह स्थिर करते हैं कि जहाज पृथ्वी के किस भाग मे है।

षष्ठ—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षष्ठी] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठक—वि० [सं०] छठा [को०]।

षष्ठकाल—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का छठा समय जो तीसरे दिन का सायंकाल है [को०]।

षष्ठकालोपवास—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत। दे० 'षष्ठान्नकाल'।

षष्ठभक्त[१]—वि० [सं०] छठे समय अर्थात् तीसरे दिन शाम को भोजन करनेवाला [को०]।

षष्ठभक्त[२]—संज्ञा पुं० छठा भोजन। षष्ठकाल का आहार [को०]।

षष्ठम—वि० [सं०] छठा [को०]।

षष्ठमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] षष्ठी तिथि [को०]।

षष्ठांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. छठा हिस्सा। २. कर के रूप मे दिया जानेवाला उपज का छठा भाग या हिस्सा। राजस्व के रूप मे राजा को दिया जानेवाला कृषि का छठा अंश [को०]।

षष्ठांशवृत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] नरेश। वह जिसकी वृत्ति राजस्व के रूप मे प्राप्त कृषि का छठा भाग हो। राजा जो कर के रूप मे मिले कृषि के छठे अंश द्वारा कार्यवृत्ति संपादित करता है [को०]।

षष्ठान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह भोजन जो तीन दिनों के बीच मे केवल एकबार किया जाय। षष्ठान्नकाल नाम के व्रत की विधि के अनुसार तीसरे दिन सायंकाल किया जानेवाला आहार।

षष्ठान्नकाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जिसमे तीन दिन मे केवल एक बार, विशेषत सायंकाल के समय, भोजन किया जाता है।

षष्ठान्नकालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] षष्ठान्नकाल व्रत के अनुसार भोजन करना [को०]।

षष्ठान्नकालक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षष्ठालुकालुक' [को०]।

षष्ठालुकालुक—संज्ञा पुं० [सं०] तीन दिन मे केवल एक बार किया जानेवाला भोजन [को०]।

षष्ठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक देवी। षष्ठी देवी। २. जातक के जन्म से छठे दिन का उत्सव जिसमे षष्ठी देवी की पूजा विधेय है [को०]।

षष्ठिमत्त—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। वह हाथी जो साठ वर्ष का हो।

विशेष—कहते है कि हाथी को साठ वर्ष की अवस्था होने पर उसके गंडस्थल से मदस्राव होता है।

षष्ठिहायन—संज्ञा पुं० १. हाथी। २. साठी धान।

षष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी पक्ष का छठा दिन। शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षोडश मातृकाओं मे से एक। देवसेना। ३. कात्यायनी। दुर्गा। ४ (व्याकरण मे) संबंध कारक। ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

यौ०—षष्ठीजाय = जिसने छठा विवाह किया हो। षष्ठीतत्पुरुष = तत्पुरुष समास का एक भेद जिसने पूर्वपद मे षष्ठी विभक्ति होती है। षष्ठीपूजन = प्रसव के छठें दिन होनेवाला पूजा। षष्ठीव्रत = व्रतविशेष। षष्ठी समास = दे० 'षष्ठी तत्पुरुष।

षष्ठीप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद। कार्तिकेय [को०]।

षष्ठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] छठा हिस्सा। छठा अंश।

षहसानु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मयूर। मोर। २. यज्ञ [को०]।

षहसानु[२]—वि० सहिष्णुता से परिपूर्ण [को०]।

षाड—संज्ञा पुं० [सं० षाण्ड] शिव का एक नाम। षंड।

षाड्य—संज्ञा पुं० [सं० षाण्ड्य] हीजड़ापन। नपुंसकता।

षाट्कौशिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षाट्कौशिकी] जो ६ कोश या तह मे लिपटा हुआ हो [को०]।

षाट्पौरुषिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षाट्पौरुषिकी] ६ पीढ़ियों से संबंध र... [पी]ढ़ी या पुश्त का [को०]।

षाड़व—संज्ञा ... १ राग का एक जाति जिसमे ... छह ... ष और ध) लगते हैं और निषाद ... है ... मेघ। षाड़व दो प्रकार का

(१) शुद्ध पाडव और (२) ग्राह्य पाडव। २ मिठाई। ३ हलवाई का काम। ४ मनोराग। मनोविकार। ५ गाना। संगीत (को०)।

षाडविक—संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई बनानेवाला। हलवाई [को०]।

षाड्गुण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह उत्तम गुणो का समूह। २ नीति के छह अंग। विशेष दे० 'षड्गुण'। ३ किसी वस्तु का छह से गुणा करने से प्राप्त गुणनफल। ४, तत्व (को०)।

यौ०—षाड्गुण्य प्रयोग = राजनीति के ६ अगो का प्रयोग करना षाड्गुण्यवेदी = नीति के छहो अगो का जानकार। षाड्गुण्य युत, षाड्गुण्यसयुत = ६ गुणो से युक्त जो नीति के छहो अगों से युक्त हो।

षाड्रसिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसे छहो रसो का ज्ञान हो। २ वह जिसमे छहो रसो का स्वाद प्राप्त हो।

षाड्वर्गिक—वि० [सं०] पाचो ज्ञानेंद्रियो और मन से संबंध रखनेवाला [को०]।

षाण्मातुर—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय (जिनका पालन छह कृत्तिकाओ ने किया था)।

षाण्मासिक¹—वि० [सं०] १ छह महीने का। २ छह महीने मे होनेवाला। ३ छठे महीने मे पडनेवाला।

षाण्मासिक²—संज्ञा पुं० मृतक संबंधी एक कृत्य जो किसी की मृत्यु के छह महीने पीछे किया जाता है। छमसी। छमासी।

षादतर—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत मे एक बनावटी सप्तक जो मंद से भी नीचा होता है। यह सप्तक केवल बजाने के काम मे आता है।

षाष्टिक—वि० [सं०] साठ वर्ष की अवस्थावाला [को०]।

षाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] छठा [को०]।

षाष्ठिक¹—वि० [सं०] छठे से संबंधित [को०]।

षाष्ठिक²—संज्ञा पुं० चार मास का एक व्रत जिसमें प्रति छठे दिन खाया जाता है [को०]।

षिंग—संज्ञा पुं० [सं० षिड्ग] १ व्यभिचारी। स्त्रैण। कामुक। २ शूरवीर।

षिड्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामुक व्यक्ति। २ विट। ३. वेश्या रखनेवाला पुरुष [को०]।

षु, षू—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव [को०]।

षेध—संज्ञा पुं० [सं०] निषेध। वारण [को०]।

षोडत्—संज्ञा पुं० [सं० षोडत्] छह दांत का बैल। जवान बैल।

षोड़श¹—वि० [सं० षोडश] [वि० स्त्री० षोडशी] सोलहवाँ।

षोड़श²—वि० [सं० षोडशन्] जो गिनती मे दस से छह अधिक हो। सोलह।

षोड़श³—संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।

षोडशक¹—वि० [सं०] जिसमे सोलह अंश हो [को०]।

षोडशक²—संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।

षोडशकल—वि० [सं०] सोलह कलाओ या अंशो से युक्त।

षोड़शकला—संज्ञा स्त्री० [सं० षोडशकला] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं। विशेष दे० 'कला'—२।

षोडशगण—संज्ञा पुं० [सं० षोडशगण] पाच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय, पाच भूत और एक मन इन सबका समूह।

षोडशदान—संज्ञा पुं० [सं०] सोलह प्रकार के दान जो ये हैं—(१) भूमि, (२) आसन, (३) पानी, (४) कपडा, (५) दीपक, (६) अन्न, (७) पान, (८) छत्र, (९) सुगंध, (१०) फूलमाला, (११) फल, (१२) सेज, (१३) खडाऊँ, (१४) गाय, (१५) सोना और (१६) चाँदी।

षोडशधूप—संज्ञा पुं० [सं०] 'तत्रसार' के अनुसार एक धूप जो सोलह वस्तुओ के मिश्रण से तयार होता है और देव पितृ कार्यो मे इसका प्रयोग विहित है [को०]।

षोडशपक्षशायी—संज्ञा पुं० [सं० षोडशपक्षशायिन्] मेढक, जो सोलह पक्ष तक निश्चेष्ट रहता है [को०]।

षोडशपूजन—संज्ञा पुं० [सं० षोडशपूजन] सोलहो सामग्री के साथ पूजन। विशेष दे० 'षोडशोपचार'।

षोडशभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी का एक रूप [को०]।

षोडशभेदित—वि० [सं०] जो सोलह भागो मे विभक्त हो। सोलह भागो मे बँटा हुआ [को०]।

षोड़शमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं० षोडशमातृका] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं—(१) गौरी, (२) पद्मा, (३) शची, (४) मेधा, (५) सावित्री, (६) विजया, (७) जया, (८) देवसेना, (९) स्वधा, (१०) स्वाहा, (११) शांति (१२) पुष्टि, (१३) धृति, (१४) तुष्टि, (१६) आत्मदेवता।

षोडशविध—वि० [सं०] सोलह प्रकार का। सोलह भेद का [को०]।

षोडश शृंगार—संज्ञा पुं० [सं० षोडशशृङ्गार] पूर्ण शृंगार जिसके अंतर्गत सोलह बातें हैं। पूरा सिंगार। विशेष दे० 'शृंगार—२' तथा 'सोलह सिंगार'।

विशेष—प्राचीन संस्कृत साहित्य मे षोडश शृंगार की गणना अज्ञात प्रतीत होती है। अनुमानत यह गणना वल्लभदेव की सुभाषितावली (१५वी शती या १२वी शती) मे प्रथम बार आती है। उनके अनुसार वे इस प्रकार हैं—

आदौ मज्जनचीरहारतिलक नेत्राञ्जन कुंडले,
नासामौक्तिककेशपाशरचना सत्कञ्चुक नूपुरौ।
सौगन्ध्य करकङ्कण चरणयो रागो रणन्मेखला,
ताम्बूल करदर्पण चतुरता शृंगारका षोडश॥

अर्थात् (१) मज्जन, (२) चीर, (३) हार, (४) तिलक, (५) अंजन, (६) कुंडल, (७) नासामुक्ता, (८) केशविन्यास, (९) चोली (कचुक), (१०) नूपुर, (११) अंगराग (सुगंध), (१२) कंकण, (१३) चरणराग, (१४) करधनी, (१५) तांबूल तथा (१६) करदर्पण (आरसी नामक अंगूठी)।

पुन १६वी शती मे श्रीरूपगोस्वामी के उज्वलनीलमणि मे शृंगार की यह सूची इस प्रकार गिनाई गई है—

स्नातानासाग्रजाग्रन्मणिरसितपटा सूत्रिणी बद्धवेणि.
सोत्तसा चर्चिताङ्गी कुसुमितचिकुरा स्रग्विणी पद्महस्ता ।
ताम्बूलास्योरुबिन्दुस्तबकितचिबुका कज्जलाक्षी सुचित्रा
राधालक्तोज्वलाङ्घ्रि स्फुरति तिलकिनी षोडशाकल्पिनीयम् ॥

उक्त प्रमाण से शृंगारो की यह सूची बनती है—

अर्थात् (१) स्नान (२) नासा मुक्ता, (३) असित पट, (४) कटि सूत्र (करधनी), (५) वेणीविन्यास, (६) कर्णावतस, (७) अगो का चर्चित करना, (८) पुष्पमाल, (९) हाथ मे कमल, (१०) केश मे फूल खोसना, (११) तावूल, (१२) चिबुक का कस्तूरी से चित्रण, (१३) काजल, (१४) शरीर पर पत्रावली, मकरीभग आदि का चित्रण, (१५) अलक्तक और (१६) तिलक ।

यहाँ वल्लभदेव के तथा श्रीरूपगोस्वामी के काल तक को शृंगार सूची मे विभिन्नता स्पष्ट है ।

हिंदी कवियो मे जायसी के अनुसार ये शृंगार यो है—(१) मज्जन, (२) स्नान (जायसी ने मज्जन, स्नान को अलग रखा है), (३) वस्त्र, (४) पत्रावली, (५) सिंदूर, (६) तिलक, (७) कुंडल, (८) अजन, (९) अधरो का रँगना, (१०) तावूल, (११) कुसुमगंध, (१२) कपोलो पर तिल, (१३) हार, (१४) कचुकी, (१५) छुद्रघटिका और (१६) पायल ।

रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह शृंगार की गणना इस प्रकार की है—

प्रथम सकल सुचि, मजन अमल वास,
जावक, सुदेस केस पास को सम्हारिवो ।
अगराग, भूपन, विविध मुखवास-राग,
कज्जल ललित लोल लोचन निहारिवो ।
वोलन, हँसन, मृदुचलन, चितौनि चारु,
पल पल पतिव्रत प्रन प्रतिपालिवो ।
'केसौदास' सो बिलास करहु कुँवरि राधे,
इहि विधि सोरहै सिंगारन सिंगारिवो ।

उक्त छद की टीका करते हुए सरदार कवि ने ये शृंगार यो गिने हैं—(१) उबटन, (२) स्नान, (३) अमल पट्ट, (४) जावक, (५) वेणी गूँथना, (६) माँग मे सिंदूर, (७) ललाट मे खोर, (८) कपोलो मे तिल, (९) अग मे केसर लेपन, (१०) मेहदी, (११) पुष्पाभूषण, (१२) स्वर्णाभूषण, (१३) मुखवास (१४) दंत मजन, (१५) तावूल और (१६) काजल । यहाँ स्पष्ट है कि टीकाकार ने कई उपकरण अपनी ओर से जोडे है ।

नगेंद्रनाथ वसु ने हिंदी विश्वकोश में इन शृंगारो को गणना निम्नलिखित दी है—

(१) उबटन, (२) स्नान, (३) वस्त्रधारण, (४) केश प्रसाधन, (५) काजल, (६) सिंदूर से माँग भरना, (७) महावर, (८) तिलक, (९) चिबुक पर तिल, (१०) मेहदी, (११) सुगध लगाना, (१२) आभूपण, (१३) पुष्पमाल, (१४) मिस्सी लगाना, (१५) तावूल, और (१६) अधरो को रँगना ।

उक्त विभिन्न सूचियो से पता चलता है कि षोडश शृंगार की कोई निश्चित परिभाषा या सूची नही रही है । देश और काल के अनुसार उसमे भिन्नता होती रही ।

षोड़श संस्कार—सज्ञा पुं० [स० षोडश सस्कार] वैदिक रीति के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ सस्कार जो द्विजातियो के लिये कहे गए ह । विशेष दे० 'सस्कार' ।

षोडशांग¹—वि० [स० षोडशाङ्ग] सोलह अगोवाला । जिसके सोलह भाग या प्रकार हो [को०] ।

षोड़शांग²—सज्ञा पु० दे० 'षोडशधूप' ।

षोड़शांग चूर्ण—सज्ञा पु० [स० षोडशाङ्ग चूर्ण] वैद्यक मे एक चूर्ण जो विपमज्वर मे दिया जाता है ।

विशेष—चिरायता, नीम की छाल, कुटकी, गिलोय, हड का छिलका, नागर मोथा, धनिया, अडूसा, त्रायमाणा, कटियाली, काकडासिंगी, सोठ, पित्तपापडा, प्रियगु पुष्प, पेठल, पीपल, कचूर सब सामान लेकर पीस डाले और ११ टक प्रति दिन ठढे जल से आठ दिन तक सेवन करे ।

षोड़शांगुलक—वि० [स० षोडशाङ्गुलक] जो सोलह अगुल माप का हो । सोलह अगुल के नाप की चौडाई का [को०] ।

षोड़शांघ्रि—सज्ञा पु० [स० षोडशाङ्घ्रि] केकडा ।

षोड़शांशु—सज्ञा पु० [स० षोडशांशु] शुक्र ग्रह, जिसमे सोलह किरनें मानी गई है ।

षोडशात्मक—सज्ञा पु० [स०] आत्मा [को०] ।

षोडशार¹—वि० [स०] १ सोलह अराओ वाला । जैसे, षोडशार चक्र । २ जिसमे सोलह पखडियाँ हों [को०] ।

षोडशार²—सज्ञा पुं० एक प्रकार का कमल ।

षोडशार्चि—सज्ञा पु० [स०] शुक्र ग्रह [को०] ।

षोडशावर्त—सज्ञा पु० [स० षोडशावर्त] शख ।

षोड़शाश्रि—सज्ञा पु० [स० षोडशाश्रि] वह घर या मंदिर जो सोलह कोनो का हो । ऐसे घर मे सदा अँधेरा रहता है । (वृहत्सहिता) ।

षोडशाह—सज्ञा पुं० [स०] व्रत या उपवास आदि जो सोलह दिनो तक चलता रहे [को०] ।

षोड़शिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० षोडशिकी] दे० 'षोडशक' ।

षोडशिका—सज्ञा स्त्री० [स० षोडशिका] एक प्राचीन तौल जो मागधी मान से १६ माशे और व्यावहारिक मान से एक ताले के बराबर होती थी ।

षोडशिकाम्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की तौल जिसे पल कहते हैं [को०] ।

षोड़शी¹—वि० स्त्री० [स० षोडशी] १. सोलहवीं । २. सोलह वर्ष की (लडकी या स्त्री) । जैसे,—षोडशी बाला ।

षोड़शी²—सज्ञा स्त्री० १ सोलह वर्ष की स्त्री । नव यौवना स्त्री । २. दस महाविद्याओ मे से एक । ३. एक यज्ञपात्र । ४. एक

प्राचीन तौल। पल का एक भेद जो मागधी मान से ५ तोले और व्यावहारिक मान से ४ तोले के बराबर होता था। ५ इन सोलह पदार्थों का समूह–ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इंद्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम। ६ मृतक संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

यौ०––षोड़शी सपिंडी।

षोडशी[२]––संज्ञा पुं० [सं०] १. सोमयुक्त पात्र विशेष। २. अग्निष्टोम यज्ञ का विभेद या रूपांतर विधान [को०]।

यौ०––षोडशीग्रह = अग्निष्टोम यज्ञ मे देवता के निमित्त दिया हुआ पेयनिषेक वातर्पण।

षोड़शोपचार––संज्ञा पुं० [सं० षोडशोपचार] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं।

विशेष––इनके नाम इस प्रकार हैं––(१) आवाहन, (२) आसन, (३) अर्घ्यपाद्य, (४) आचमन, (५) मधुपर्क, (६) स्नान, (७) वस्त्राभरण, (८) यज्ञोपवीत, (९) गंधन (चंदन), (१०) पुष्प, (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) तांबूल, (१५) परिक्रमा और (१६) वंदना। तंत्रसार के अनुसार इनके नाम इस प्रकार है–(१) आसन, (२) स्वागत, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) मधुपर्क, (७) आचमन, (८) स्नान (९) वस्त्र, (१०) आभरण, (११) गंध, (१२) पुष्प, (१३) धूप, (१४) दीप, (१५) नैवेद्य और (१६) वंदना।

षोढा––क्रि० वि० [सं०] छह ढंग से। छह प्रकार से। छह्या [को०]।

षोढान्यास––संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र में छह प्रकार अंगन्यास [को०]।

षोढामुख––संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय जिनके छह मुख कहे जाते हैं षण्मुख [को०]।

षोदत्––संज्ञा पुं० [सं०] जवान वृष। दे० 'षोडत्' [को०]।

ष्ठीवन––संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ष्ठीवित, ष्ठ्यूत] १. थूकना। २. लाला। लार [को०]।

ष्ठीवित––वि० [सं०] दे० 'ष्ठ्यूत' [को०]।

ष्ठेव, ष्ठेवन––संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ष्ठीवन' [को०]।

ष्ठेविता––वि० [सं० ष्ठेवितृ] थूकनेवाला।

ष्ठ्यूम––संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. प्रकाश। ३. जल। ४. सूत्र। डोरा। ५ शुभता। कल्याण [को०]।

ष्ठ्यूत––वि० [सं०] थूका हुआ।

ष्ठ्यूति––संज्ञा स्त्री० [सं०] थूकना। ष्ठीवन करना।